गजेन्द्र ठाकुर समग्र

विदेह सदेह १–३७

एक समालोचनात्मक आस्वादन

Videha Sadeha 1–37: A Critical Appreciation

सैद्धान्तिक आ अनुप्रयुक्त साहित्यिक समीक्षा

गजेन्द्र ठाकुर

Gajendra Thakur

VIDEHA · First Maithili Fortnightly eJournal · ISSN 2229-547X

www.videha.co.in

गजेन्द्र ठाकुर समग्र

पुस्तक–परिचय

एहि एकीकृत संस्करणमे पहिने स्वतंत्र रूपेँ विन्यस्त सैद्धान्तिक आ अनुप्रयुक्त खण्डकेँ एकहि आलोचनात्मक क्रममे प्रस्तुत कएल गेल अछि। पहिल भाग साहित्यिक समीक्षा-पद्धति, भारतीय आ विश्व आलोचना-सिद्धान्त, नव्य-न्याय, विधा, भाषा, अनुवाद आ सांस्कृतिक अध्ययनक आधार निर्मित करैत अछि; दोसर भाग विदेह सदेह १–३७ सँ सम्बद्ध रचना-संसारक अनुप्रयुक्त अध्ययन प्रस्तुत करैत अछि। मूल सामग्री सुरक्षित राखैत केवल वास्तविक पुनरावृत्तिकेँ हटाओल गेल अछि।

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर

प्रकाशन-सन्दर्भ: विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका · ISSN 2229-547X · www.videha.co.in

संयुक्त अनुक्रम

Combined Contents

भाग १ — सैद्धान्तिक अध्ययन

अध्याय / विभाग	पृष्ठ
प्रबन्ध	7
अध्याय 1 · समानान्तर साहित्येतिहास आ समीक्षा-पद्धति	7
अध्याय 2 · भारतीय काव्यशास्त्र: रस, ध्वनि, वक्रोक्ति आ औचित्य	8
अध्याय 3 · नव्य-न्याय, प्रमाण आ तर्कमीमांसा	21
अध्याय 4 · पाश्चात्य आलोचना-सिद्धान्त	72
अध्याय 5 · चीनी साहित्य-मीमांसा आ तुलनात्मक दृष्टि	80
अध्याय 6 · यहूदी-इसरायली व्याख्याशास्त्र	84
निबन्ध	86
अध्याय 7 · विधा-सिद्धान्त: कथा, पद्य, नाटक आ नव रूप	86
अध्याय 8 · भाषा, अनुवाद, लोक आ सांस्कृतिक अध्ययन	91
समालोचना	93
अध्याय 9 · समालोचनाक समालोचना आ आलोचनात्मक प्रतिमान	93

भाग २ — अनुप्रयुक्त अध्ययन

अध्याय / विभाग	पृष्ठ
प्रबन्ध	97
अध्याय 1 · विदेह सदेह ८ — मैथिली नाट्य उत्सव - समानान्तर रंगमंच आर्काइव	97
अध्याय 2 · सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा — ‘विदेह’ अंक २५ (१ जनवरी २००९) आ ‘विदेह-सदेह २५’	102
अध्याय 3 · विदेह सदेह ३० — सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा	118
निबन्ध	137
अध्याय 4 · सदेह १ सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा — [सभ साहित्यकारक रचनाक विवेचन, भारतीय आलोचना, पाश्चात्य सिद्धान्त, गंगेशक नव्य न्याय, विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा]	137
अध्याय 5 · विदेह: सदेह: ५ — मैथिली विहनि कथा (विदेह अंक ५१-१००)	153
अध्याय 6 · विदेह: सदेह: ७ — मैथिली पद्य (विदेह अंक ५१-१००)	163
अध्याय 7 · विदेह सदेह ८ — विदेह मैथिली नाट्य उत्सव	181
अध्याय 8 · विदेह सदेह ९ — विदेह मैथिली शिशु उत्सव	185
अध्याय 9 · विदेह सदेह-१३: सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा — भारतीय एवं विश्व साहित्यिक सिद्धान्तक आलोकमे	194

अध्याय / विभाग	पृष्ठ
अध्याय 10 · विदेह सदेह-१४ — अंक १२१-१३२ | ISSN 2229-547X | सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर	202
अध्याय 11 · विदेह सदेह-२०: विस्तृत मैथिली साहित्यिक समीक्षा — स्रोत: विदेह ई-पत्रिका अंक २१७-२५० | सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर | ISSN 2229-547X VIDEHA	210
अध्याय 12 · विदेह-सदेह २२ : एक विस्तृत साहित्यिक समीक्षा — उपक्रम : केन्द्र-निर्धारित संकलनक स्वरूप	217
अध्याय 13 · विदेह-सदेह २३ : एक विस्तृत साहित्यिक समीक्षा — उपक्रम : विश्वकोशीय संकलनक स्वरूप	227
अध्याय 14 · विदेह सदेह २६ — डॉ. शम्भु कुमार सिंह आ डॉ. अरुण कुमार सिंहक गद्य-पद्यक सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा	241
अध्याय 15 · विदेह सदेह २७ — सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा	258
अध्याय 16 · विदेह सदेह २९ — रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक गद्य-पद्यक सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा	274
अध्याय 17 · विदेह सदेह ३२ — रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-१	293
अध्याय 18 · विदेह सदेह ३४ — सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा	308
अध्याय 19 · विदेह सदेह ३५ — समग्र साहित्यिक समीक्षा	330
समालोचना	351
अध्याय 20 · विदेह: सदेह: २ — मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०	352
अध्याय 21 · विदेह: सदेह: ३ — मैथिली पद्य २००९-१०	359
अध्याय 22 · विदेह: सदेह: ४ — मैथिली कथा २००९-१०	374
अध्याय 23 · विदेह: सदेह: ६ — मैथिली लघुकथा (विदेह अंक ५१-१००)	383
अध्याय 24 · विदेह सदेह १० : बहुआयामी समीक्षा	389
अध्याय 25 · विदेह सदेह १० — सम्पूर्ण समालोचना — विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क, गंगेशक नव्य न्याय,	393
अध्याय 26 · विदेह सदेह-११ — Videha Sadeha 11	408
अध्याय 27 · विदेह सदेह-१२ — Videha Sadeha 12	419
अध्याय 28 · विदेह सदेह-१२: समानान्तर समीक्षा — खण्ड २: कविता, गजल, विहनि कथा, बाल खण्ड, नाटक	425
अध्याय 29 · विदेह सदेह-१३ — Videha Sadeha 13	437
अध्याय 30 · विदेह सदेह-१३: खण्ड २ — कविता · गजल · बाल साहित्य · नाटक — सम्पूर्ण समीक्षा	445
अध्याय 31 · विदेह सदेह-१४: खण्ड २ — पद्य खण्ड (पृ. ३७३-७३६) — कविता · गजल · भक्ति गजल · बाल गजल · यात्रा-संस्मरण	455
अध्याय 32 · विदेह सदेह-१५ : एकटा समग्र साहित्यिक आलोचना — ---	466
अध्याय 33 · विदेह सदेह-१६: एकटा समग्र साहित्यिक समीक्षा — सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर	476
अध्याय 34 · विदेह सदेह-१७ — समानान्तर साहित्यिक समीक्षा	487
अध्याय 35 · विदेह सदेह-१८: एकटा विस्तृत साहित्यिक समीक्षा — संकलन: विदेह सदेह-१८ (विदेह ई-पत्रिका, अंक १९१-२००)	497
अध्याय 36 · विदेह-सदेह १९: एकटा समग्र साहित्यिक समीक्षा — (विदेह पेटार अंक २०१-२१६ सँ, मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ गद्य आ पद्यक समानान्तर संकलन)	505
अध्याय 37 · विदेह सदेह-२०: विस्तृत मैथिली साहित्यिक समीक्षा — स्रोत: विदेह ई-पत्रिका, अंक २१७-२५० | सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर	513

अध्याय / विभाग	पृष्ठ
अध्याय 38 · विदेह-सदेह २१ : एक विस्तृत साहित्यिक समीक्षा — उपक्रम : समानान्तर संकलनक संरचना	517
अध्याय 39 · विदेह सदेह २४ : विस्तृत साहित्यिक समीक्षा	526
अध्याय 40 · विदेह सदेह ३१ — डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यपक गद्य-पद्य रचनाक	528
अध्याय 41 · विदेह सदेह ३३ — सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा	547
अध्याय 42 · विदेह सदेह ३६ — रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-५	561
अध्याय 43 · विदेह: सदेह: ३७ — समीक्षा (साहित्यिक समीक्षा)	596

भाग १

सैद्धान्तिक अध्ययन

Theoretical Studies

विदेह सदेह १–३७

प्रबन्ध

आलोचना-पद्धति, सिद्धान्त आ ज्ञानमीमांसाक व्यवस्थित अध्ययन

अध्याय 1 · समानान्तर साहित्येतिहास आ समीक्षा-पद्धति

सारांश १. विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा समीक्षा-पद्धति १. विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क — मुख्यधाराक इतिहाससँ बाहर भेल कण्ठस्वरकें स्थान देबाक पद्धति ३.४ विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा सुजीत कुमार झा 'मध्यवित्तीय मैथिल जीवनक सफल कथाकार' — एहि निर्धारणमे 'counter-canonical' मान्यता अछि। डॉ. विमल लिखैत छथि जे 'ई कथाकार मैथिली कथाक हेतु एहिना विषय आ शिल्पक नव-नव क्षितिजक सन्धान करैत नव प्रतिमानक स्थापनामे सफल होएताह।' ई विदेहक 'discovery mandate' (नव लेखककेँ canonical space देनाइ) क अनुरूप थिक।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · समानान्तर साहित्येतिहास · कथा · इतिहास · साहित्यिक समीक्षा

विदेह सदेह ८ — मैथिली नाट्य उत्सव - समानान्तर रंगमंच आर्काइव

१. विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव (मैथिली समानान्तर रंगमंचक संकलन) [विदेह सदेह ८] — समग्र विस्तृत समीक्षा

समीक्षा-पद्धति

विदेह सदेह १० : बहुआयामी समीक्षा

१. विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क — मुख्यधाराक इतिहाससँ बाहर भेल कण्ठस्वरकें स्थान देबाक पद्धति

विदेह सदेह-१२ — Videha Sadeha 12

३.४ विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा

सुजीत कुमार झा 'मध्यवित्तीय मैथिल जीवनक सफल कथाकार' — एहि निर्धारणमे 'counter-canonical' मान्यता अछि। डॉ. विमल लिखैत छथि जे 'ई कथाकार मैथिली कथाक हेतु एहिना विषय आ शिल्पक नव-नव क्षितिजक सन्धान करैत नव प्रतिमानक स्थापनामे सफल होएताह।' ई विदेहक 'discovery mandate' (नव लेखककेँ canonical space देनाइ) क अनुरूप थिक।

———

विदेह सदेह ३२ — रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-१

१. समीक्षा-पद्धति आ संकलनक स्वरूप

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह सदेह ८ — मैथिली नाट्य उत्सव - समानान्तर रंगमंच आर्काइव

• विदेह मैथिली नाट्य उत्सव (मैथिली समानान्तर रंगमंचक संकलन) [विदेह सदेह ८] — समग्र विस्तृत समीक्षा

• विदेह सदेह १० : बहुआयामी समीक्षा

• विदेह सदेह-१२ — Videha Sadeha 12

• विदेह सदेह ३२ — रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-१

अध्याय 2 · भारतीय काव्यशास्त्र: रस, ध्वनि, वक्रोक्ति आ औचित्य

सारांश २.१ भारतीय आलोचना सिद्धान्त भारतीय काव्यशास्त्रमे चारि प्रमुख सिद्धान्त प्रतिष्ठित अछि: (क) रस सिद्धान्त (भरतमुनि) भरतमुनिक नाट्यशास्त्रमे 'विभाव-अनुभाव-व्यभिचारी भावसँ रसक निष्पत्ति' होइत अछि। श्रृंगार, करुण, वीर, रौद्र, हास्य, भयानक वीभत्स, अद्भुत आ शान्त ई नव रस मैथिली साहित्यमे सेहो विद्यमान अछि। (ख) ध्वनि सिद्धान्त (आनन्दवर्धन): 'व्यंजनावृत्तिसँ प्रतीयमान अर्थ' ध्वनि थीक।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · रस-सिद्धान्त · ध्वनि-सिद्धान्त · वक्रोक्ति · औचित्य · काव्यशास्त्र

सदेह १ सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा — [सभ साहित्यकारक रचनाक विवेचन, भारतीय आलोचना, पाश्चात्य सिद्धान्त, गंगेशक नव्य न्याय, विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा]

२.१ भारतीय आलोचना सिद्धान्त

भारतीय काव्यशास्त्रमे चारि प्रमुख सिद्धान्त प्रतिष्ठित अछि:

(क) **रस सिद्धान्त (भरतमुनि):** भरतमुनिक नाट्यशास्त्रमे 'विभाव-अनुभाव-व्यभिचारी भावसँ रसक निष्पत्ति' होइत अछि। श्रृंगार, करुण, वीर, रौद्र, हास्य, भयानक, वीभत्स, अद्भुत आ शान्त ई नव रस मैथिली साहित्यमे सेहो विद्यमान अछि।

(ख) **ध्वनि सिद्धान्त (आनन्दवर्धन):** 'व्यंजनावृत्तिसँ प्रतीयमान अर्थ' ध्वनि थीक। काव्यमे व्यक्त अर्थसँ अतिरिक्त एक सूचित अर्थ होइत अछि जे आत्मा थीक।

(ग) **वक्रोक्ति सिद्धान्त (कुन्तक):** 'वक्रोक्तिः काव्यजीवितम्' काव्यमे सामान्य उक्तिसँ हटिकऽ विशेष ढंगसँ कहल गेल बात काव्यक प्राण थीक।

(घ) **औचित्य सिद्धान्त (क्षेमेन्द्र):** 'औचित्यं रससिद्धस्य स्थिरं काव्यस्य जीवितम्' प्रत्येक काव्य-तत्त्वक उचित प्रयोग काव्यक जीवन थीक।

विदेह: सदेह: २ — मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०

१६. आशीष अनचिन्हार

आलोचना: अन्हारपर इजोतक कहियो विजय नहि (पृ. ९१-९४)

रस-ध्वनि: 'कहियो' (कदापि नहि) - पूर्ण निषेध - अस्तित्ववादी कथन। रौद्र + शान्त रसक असाधारण संयोजन। देरिदा केर ढाँचा-तोड़: 'अन्हार/इजोत' द्विआधारी केर ढाँचा-तोड़ करनाइ 'न त' स्थिति।

विदेह ढाँचा: विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचामे मुख्यधारा आशावाद (पुरस्कार = 'इजोतक विजय') कें प्रश्न करनाइ प्रति-मान्य-परम्परागत संकेत थिक।

विदेह सदेह ८ — मैथिली नाट्य उत्सव - समानान्तर रंगमंच आर्काइव

२. भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य सिद्धान्त

१.१ विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा

विदेह पारम्परिक इतिहास ज्योतिरीश्वरकेँ मात्र "वर्णरत्नाकर"क लेखक मानि लैत अछि, मुदा एहि सदेह ८ ढाँचामे ज्योतिरीश्वर मैथिली प्रजातान्त्रिक रंगमंचक प्रथम चिन्तक छथि। हुनकर पात्र-निर्माण निर्णायक रूपसँ क्रान्तिकारी अछि: मैथिली नाटकक पारम्परिक नायक श्रीकृष्ण वा हुनकर वंशधर रहलाह अछि, हरण-स्वयंवर मूल वस्तु छल। मुदा ज्योतिरीश्वर ओहि स्वर्गारोपित कथा-संसारकेँ छोड़ि मिथिलाक गली-गलीक धूर्त - संन्यासी, शिष्य, मिश्र, नौआ, वैश्या - कें नायक बनबै छथि।

ई समानान्तर परम्पराक पहिल विद्रोह थिक - पात्र-वर्ग-बदलबाक। एकर रेखा सोझे जगदीश प्रसाद मण्डलक मिथिलाक बेटी आ बेचन ठाकुरक छीनरदेवी धरि अबैत अछि। एहि दृष्टिएँ ज्योतिरीश्वर सदेह ८ केर सम्पूर्ण आर्काइवक आर्चटाइप थिकाह।

१.२ भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति समीक्षा

रस-निरूपण

धूर्त्तसमागमक प्रमुख रस अछि - हास्य रस, जकर स्थायी भाव अछि "हास" (भरत-शास्त्र अनुसार)। मुदा एहिमे मात्र पाश्विक हास्य नै, अपितु शान्त रसक छाया सेहो अछि अन्तिम वाणीमे - "सर्वत्र सुख-शान्ति हुअय" - कारण समस्त धूर्तजालक बाद कविक प्रज्ञा एहन निष्कर्षपर पहुँचैत अछि जे एहन समाजमे जतय सभ धूर्त छथि, ततय सहज-सम्भाव्यतासँ शान्ति-कामना उठैत अछि। एकर ध्वनि अछि करुण - सत्ताक विकृति देखि कविक मनक करुणा।

व्यङ्ग्य-वैचित्र्य (वक्रोक्ति)

कुन्तकक "वक्रोक्ति-जीवित" अनुसार वक्रोक्तिक छह स्तर - वर्ण-विन्यास, पद-पूर्वार्ध, पद-उत्तरार्ध, वाक्य, प्रकरण, प्रबन्ध। ज्योतिरीश्वर प्रबन्ध-वक्रोक्तिक अद्भुत प्रयोग करै छथि: नाटकक नाम "धूर्त्तसमागम" स्वयं वक्रोक्ति थिक - समागम (मिलन) सन्त-गोष्ठीक लेल प्रयुक्त होइत अछि, मुदा एतय धूर्तक मिलन। पुन: अनंगसेनाक उक्ति - "ई तँ असले धूर्तसमागम भऽ गेल"- एहि वक्रोक्तिक अन्त:स्फोट थिक।

औचित्य (क्षेमेन्द्र)

क्षेमेन्द्रक "औचित्य-विचार-चर्चा" मे रस-औचित्यक नियम दैत छथि। ज्योतिरीश्वरक प्रहसन "गीत-समावेश-औचित्य"क उदाहरण थिक - संस्कृत प्रहसनमे सेहो ओ मैथिली गीत मिलबै छथि, जे ओहि कालीन प्रदर्शन-व्यवस्थाक मांगक दृष्टिएँ अत्यन्त उचित अछि।

२.१ विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा

मैथिली पाठ्यपुस्तकमे विद्यापति "मैथिल-कोकिल", "पदावलीक रचयिता" मात्रक रूपमे प्रस्तुत होइत छथि। मुदा विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापति कें तकर रचयिता मानैत अछि आ ऐ विद्यापतिकेँ रङ्गमञ्चीय-दार्शनिक मोड़क पुरुष-रूपमे देखैत अछि। गोरक्षविजय "भक्ति बनाम योग बनाम भोग"क त्रिकोणीय द्वन्द्वकेँ रङ्गमञ्चपर लाबैत अछि - ई द्वन्द्व मध्यकालीन मिथिलाक ब्राह्मणवादी सिद्धान्त-तन्त्र-शक्ति परम्पराक भीतर एकटा दार्शनिक संघर्ष थिक।

एहि "विदेह" शब्दक मूल अर्थ ई जे राजा जनक देहसँ परेँ चलि गेला - एहि गोरक्षविजयमे मत्स्येन्द्रनाथ "देह" (भोग) मे फँसल छथि, गोरक्ष हुनका "विदेह" बनबय आबि गेलाह। एहि अर्थमे विद्यापति विदेह-आदर्शक रङ्गमञ्चीय व्याख्याकार थिकाह।

२.२ भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति समीक्षा

रस-संयोजन

गोरक्षविजयमे आरम्भिक श्रृङ्गार रस (मत्स्येन्द्रनाथक रानी-भोग) क्रमशः वीर रस (गोरक्षक प्रवेश), अद्भुत रस (बच्चाकेँ जिआएब), आ शान्त रस (मत्स्येन्द्रनाथक योग-वापसी) मे रूपान्तरित होइत अछि। ई रस-संक्रमणक उदाहरण थिक - एक रस दोसरा रसमे विनयपूर्वक रूपान्तरित होइत अछि।

ध्वनि (आनन्दवर्धन)

आनन्दवर्धनक "ध्वन्यालोक"क व्यंग्य-ध्वनिक अनुसार जे प्रत्यक्षतः कहल नै जाइत अछि, मुदा प्रतीयमान होइत अछि - से ध्वनि। गोरक्षविजयमे प्रधान ध्वनि अछि - "भोगसँ योगक श्रेष्ठता" मुदा साम्प्रदायिक हठधर्मीसँ बचैत, मानवीय करुणासँ। मत्स्येन्द्रनाथक पतनकेँ निन्दा नै, अपितु करुणाक रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि।

ज्योतिरीश्वर-विद्यापति तुलना

जतय ज्योतिरीश्वर समाजक धूर्ततापर हास्य-रस-केन्द्रित नाटक लिखलनि, तत्तय विद्यापति योग-भोगक दार्शनिक संघर्षपर शान्त-रस-केन्द्रित नाटक लिखलनि। ई दू टा परम्परा - हास्य-व्यङ्ग्य आ भक्ति-दर्शन - आगाँ चलि कऽ मैथिली रङ्गमञ्चक दू टा मुख्य धारा बनल।

३.१ विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा

मैथिली पाठ्यपुस्तकमे जीवन झा "पञ्जीकार", "संस्कृत-प्रकाण्ड पण्डित"क रूपमे मात्र चर्चित होइत छथि। मुदा हुनकर नाट्य-योगदान सदेह ८ केर पुनर्निर्माण-कार्यमे केन्द्रीय अछि। ओ मैथिल जागरणक पहिल नाटककार थिकाह जे संस्कृत क्लासिकल नाट्य-परम्परा (कालिदास, भवभूति) क मैथिल-स्थानीयकरण केलनि।

विदेह पारम्परिक इतिहास हुनका "अ-आधुनिक" मानि छोड़ि देबय चाहैत अछि - मुदा वास्तविकता ई जे जीवन झा बिना उपनिवेशवादी आधुनिकताक प्रभावमे आओल, अपन-आ-अपन मिथिलाक भीतरसँ नाट्य-आधुनिकता रचनामे विकसित केलनि। ई एकटा "देशज आधुनिकता" (vernacular modernity) थिक।

३.२ भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति समीक्षा

शृङ्गार रसक अभिजात व्यवहार

"सुन्दर-संयोग"मे जीवन झा शृङ्गार रसक संयोग-वियोग दुनू पक्षकेँ शास्त्रीय ढङ्ग सँ निरूपित करै छथि। मुदा एहिमे आधुनिक तत्व ई जे विप्रलम्भ-शृङ्गारक भौतिक-कारण (मैथिल समाजक जातीय-आर्थिक बन्धन) सेहो उघारल अछि।

रीति-वैचित्र्य (वामन)

आचार्य वामनक "काव्यालंकार-सूत्र-वृत्ति" अनुसार रीति (शैली) त्रिविध - वैदर्भी, गौडी, पाञ्चाली। जीवन झाक नाटकीय शैली प्रायः "वैदर्भी-पाञ्चाली"क मिश्रण थिक - माधुर्य-गुणयुक्त, मुदा संस्कृत समासयुक्त गाम्भीर्य सेहो।

४.१ विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा

उगना नाटक मैथिल लोक-नाट्य परम्पराक एहन विरल नमूना थिक जे आइयो जीवित अछि। ई आधिकारिक साहित्य-अकादेमी-पुरस्कार-संसारक बाहर लोक-गोष्ठीक माध्यमसँ टिकल अछि। विदेह आर्काइव एहि लोक-जीवन्तताकेँ दस्तावेज-रूपमे राखि ओहि बहिष्कृत परम्पराकेँ केन्द्रीय बना देबय चाहैत अछि।

५.१ विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा

नचिकेताक नाटक मैथिली रङ्गमञ्चपर तीन-स्तरीय आधुनिकता अनलक: यथार्थवादी (नायकक नाम जीवन), एलिगोरिकल (एक छल राजा), उत्तर-आधुनिक (नो एण्ट्री)। विदेह आर्काइव हुनका मैथिली नाट्यक प्रथम बहु-शैलीक रचनाकार-रूपमे चिन्हित करै छथि।

"एक छल राजा"क मञ्चन रिपोर्ट (जितेन्द्र कुमार झा "जीतू") सदेह ८ केर प्रस्तुति-संग्रहमे शामिल अछि। यदि साहित्य अकादेमी-केन्द्रित आधिकारिक इतिहास नचिकेताक प्रयोगात्मक नाटकक उपेक्षा केलक, तँ विदेह ओहि उपेक्षाक प्रतिकार-रूपमे एहि नाटककेँ केन्द्रीय बनबैत अछि।

५.२ भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति समीक्षा

बीभत्स-करुण रस-संयोजन

नायकक नाम जीवनमे बीभत्स-रस (बलात्कार-दृश्य) करुण-रस (आत्महत्या) मे रूपान्तरित होइत अछि। नचिकेता एहि रस-संयोजनकेँ राजनैतिक रूप दैत छथि - व्यक्तिगत-त्रासदीक पाछाँ सत्ता-सम्पन्न पुरुषक हिंसक-व्यवस्था अछि।

नो एण्ट्री : मा प्रविशक हास्यास्पद-शान्त

मुइल लोक-नकली-चित्रगुप्त-बन्द-द्वार - ई स्थिति एक्के सङ्ग हास्यास्पद आ शान्त-निरूपणीय अछि। नचिकेताक नाटकीय-ध्वनि एहन अछि - "मृत्यु-बाद कोनो न्याय-व्यवस्था नै, परलोकक हाइरार्की कोनो वास्तविक नै।" ई सङ्केत आधुनिक धर्म-व्यवस्थापर आघात थिक।

६.२ भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति समीक्षा

बसातमे प्रधान रस - शृङ्गारक विप्रलम्भ-पक्ष आ करुण-रस। नायक-नायिकाक त्रिकोणीय-असफल-प्रेम (कृष्णकान्त-पुष्पा-लिली) ध्वनि-स्तरपर मैथिल समाजक संक्रमणकालीन यौनिक-स्वतन्त्रताक संकटक प्रतिबिम्ब। पुष्पाक महिला-जागरणमे जायब आ लिलीक बतहोलब - दू टा महिला-पात्रक दू टा भिन्न-दिशामे यौनिक-स्वायत्तताक खोज।

७.२ भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति समीक्षा

करुण-शान्त रस-मिश्रण

भफाइत चाहक जिनगीमे प्रधान रस करुण (बेरोजगारीक त्रासदी) मुदा एहिमे शान्त-रसक स्वाद सेहो अछि - कवि एहि स्थितिमे विद्रोही नै, संतोषी-कविता-गायक रहै छथि। एहि करुण-शान्त मिश्रणक ध्वनि अछि - "भोग-नै-होइतो जीवन सङ्गीत बनि सकैत अछि।"

८.२ भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति समीक्षा

बहु-रस सञ्चालन

गुणनाथ झा अपन नौ-नाटकमे विविध रसक प्रयोग केलनि - कनियाँ-पुतरामे करुण; मधुयामिनी-पाथेयमे शृङ्गार-शान्त; लाल-बुझक्करमे करुण; सातम चरित्रमे हास्य-करुण; शेष नञिमे करुण-वीर; आजुक लोक-जय मैथिलीमे करुण-रौद्र। ई बहु-रस-सञ्चालन-क्षमता हुनका मैथिली रङ्गमञ्चक रस-शास्त्रीय-गुरु बनबैत अछि।

एकाङ्क-शैलीक प्रतिष्ठा

मधुयामिनी, पाथेय, लाल-बुझक्कर, सातम चरित्र - सभ एकाङ्क छथि। एकाङ्कक कला अछि - सङ्क्षेपमे रसक पूर्ण-निष्पत्ति। गुणनाथ झा संस्कृत-एकाङ्क-शास्त्र-परम्पराकेँ मैथिल-आधुनिकतामे रूपान्तरित केलनि।

९.१ विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा

जगदीश प्रसाद मण्डलक नाट्य-योगदान विदेह आन्दोलनक केन्द्रीय अंश थिक। पारम्परिक मैथिल साहित्य-तन्त्र हुनका अनदेखा करय चाहैत छल, मुदा टैगोर-पुरस्कारक प्राप्तिक बाद ओ मान्यता-सूचीमे प्रवेश पाओलनि। कमल मोहन चुन्नूक "घर-बाहर" वाला फतवा (मलंगिया-केन्द्रित जातिवादी रङ्गमञ्चक) एहि उपलब्धिकेँ कमजोर करय प्रयास केलक, मुदा सफल नै भेल। जगदीश प्रसाद मण्डल विदेह समानान्तर-धाराक प्रतिनिधि-नाटककार थिकाह।

९.२ भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति समीक्षा

रौद्र-वीर-शान्त रसक त्रिकोणीय संयोजन

मिथिलाक बेटीक पाँच-अङ्कीय संरचनामे रस-प्रवाह सूक्ष्म: अङ्क-१ रौद्र (विरोध-हड़ताल), अङ्क-२ वीभत्स (व्यसन-शोषण), अङ्क-३ रौद्र+करुण (बहुराष्ट्रीय-प्रभाव), अङ्क-४ शृङ्गार-वीर (रामविलास-मानवीयता), अङ्क-५ शान्त-वीर (आदर्श-बिआह-नव-चेतना)। ई पाँच-अङ्कीय रस-प्रवाह सम्पूर्ण मिथिल-समाजक यात्राक रङ्गमञ्चीय-नक्शा थिक।

१०.१ विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा

बेचन ठाकुर विदेह समानान्तर रङ्गमञ्च आन्दोलनक केन्द्रीय कर्ता थिकाह - पछिला २५ वर्षक उद्योगसँ। ओ मुन्नाजी-संवादमे स्पष्ट करै छथि - जातिवादी रङ्गमञ्च (विशेषकर महेन्द्र मलंगिया, रामदेव झा, चन्द्रनाथ मिश्र अमर, कमल मोहन चुन्नू-केन्द्रित गुट) कोना सरकारी आ गैर-सरकारी-फण्डक माध्यमसँ गैर-सवर्णकेँ बहिष्कृत केलक। मुदा बेचन ठाकुर अपन छोट-निजी-संसाधनसँ - एकटा कोचिङ्ग-संस्थानक माध्यमसँ - १४ वर्ष धरि सरस्वती-पूजा-शृङ्खला चलाओल आ मैथिली समानान्तर रङ्गमञ्चकेँ जीवन्त राखलनि।

ई आन्दोलनक प्रमाण ई जे २०१२ केर पहिल विदेह मैथिली नाट्य उत्सवक बाद जातिवादी-रङ्गमञ्चक ९०% लोक प्रतिरोधमे आबि गेल - रामदेव झा-विजयदेव झा-शंकरदेव झा एक तरफ, मलंगिया-ललित कुमार झा-ऋषि कुमार झा दोसर तरफ - आ दुनू पक्ष विदेह-आन्दोलनकेँ अपशब्द-धमकीसँ रोकय प्रयासरत। ई संघर्ष-दर्ज विदेह आर्काइवक इतिहासगत मूल्य अछि।

१०.२ भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति समीक्षा

बीभत्स-शान्त रसक नाट्य-न्याय

बेटीक अपमानमे भ्रूण-हत्याक प्रसङ्ग बीभत्स-रसक चरम-दृश्य। मुदा अन्ततः शान्त-रस - सूचनाक अधिकार माध्यमसँ न्यायक प्राप्ति - दर्शककेँ रसास्वादक पूर्णतामे पहुँचा देत अछि। ई "बीभत्ससँ शान्तमे रूपान्तरण" बेचन ठाकुरक रङ्गमञ्चीय-व्यक्तित्वक मुख्य-गुण थिक।

करुण-वीर रसक मञ्जुर-चरित्र

अधिकारमे मञ्जुरक चरित्र - रिक्शा-चालक झंझारपुरसँ दिल्ली धरि सूचनाक अधिकार लेल - करुण-वीरक मैथिल-रूप थिक। यदि करुण व्यक्तिक त्रासदी-केन्द्रित थिक तँ वीर ओहि त्रासदीसँ उठि कऽ सङ्घर्षक रास्ता। मञ्जुर एहि दुनू रसक मूर्त-व्यक्ति थिक।

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव (मैथिली समानान्तर रंगमंचक संकलन) [विदेह सदेह ८] — समग्र विस्तृत समीक्षा

१. विदेह समानान्तर साहित्येतिहास ढाँचा

विदेह समानान्तर साहित्येतिहास-ढाँचा साहित्य-अकादेमी-केन्द्रित कैनन-निर्माणकेँ चुनौती दैत अछि। चारिटा प्रमुख प्रश्न: (क) कोन रचनाकार पुरस्कार-तन्त्रसँ अस्वीकृत/अदृश्य भेल? (ख) ओ अस्वीकृति कोन सामाजिक-वर्गीय आधारपर भेल? (ग) कोन वैकल्पिक संरचनासँ ओकर प्रतिसन्तुलन भेल? (घ) कोन सौन्दर्य-शास्त्रीय मूल्य ऐ समानान्तरमे प्रकट भेल जे मुख्यधारामे दबाओल गेल?

३. भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य

भरतमुनिक नाट्यशास्त्रक अष्ट-रस + शान्त, चारि-वृत्ति, दश-रूपक। अभिनवगुप्तक साधारणीकरण। आनन्दवर्धनक ध्वन्यालोक - व्यङ्ग्यार्थ-चिन्हन। कुन्तकक छह वक्रता-स्तर (वर्ण-पद-वाक्य-प्रकरण-प्रबन्ध-काव्य)। क्षेमेन्द्रक औचित्य-विचार-चर्चा - पात्र-वेष-भाषा-कर्म-काल-स्थानक उचित-योजना।

विदेह सदेह १० : बहुआयामी समीक्षा

भूमिका: समीक्षाशास्त्रक बहुस्तरीय दृष्टि

विदेह सदेह १० केर समीक्षा करबा काल हमरा लग एकटा दुर्लभ अवसर अछि जे हम एकैटा संकलनकें एकाधिक सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्यसँ देखि सकैत छी। ई संकलन मात्र एकटा पोथी नइ, बल्कि मैथिलीक साहित्यिक आन्दोलनक एकटा जीवन्त दस्तावेज अछि। एतए गजेन्द्र ठाकुरक सैद्धान्तिक प्रबन्धसँ लऽ कऽ जगदीश प्रसाद मण्डलक ग्रामीण यथार्थवाद, विनीत उत्पलक सांस्कृतिक रिपोर्ताज, डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक कलाइतिहास, चन्द्रेशक सांस्कृतिक समाचार आ आशीष अनचिन्हारक गजलसमालोचना — सभटा एकठाम संगठित अछि।

हम एहि समीक्षामे पाँचटा प्रमुख सैद्धान्तिक आधार स्थापित करब:

३. भारतीय समीक्षा परम्परा — रस, ध्वनि, अलंकार, रीति आ वक्रोक्ति सिद्धान्त

३.१ रससिद्धान्त

भरतमुनिक "नाट्यशास्त्र"मे वर्णित रससिद्धान्त भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक मूलाधार अछि। रस = विभाव + अनुभाव + व्यभिचारी भाव → स्थायीभाव → रस।

जगदीश प्रसाद मण्डलक "मौलाइल गाँवक फूल":

एहि उपन्यासमे रामाकान्त बाबूक हृदयपरिवर्तनक कथा अछि। रससिद्धान्तक आधारपर:

स्थायीभाव: शान्त (अथवा करुण)

विभाव: गाँवक मौलाएल स्थिति, किसानपरिवारक दुःख

अनुभाव: रामाकान्त बाबूक दूसए बीघा जमीन सभमे वितरण

व्यभिचारी भाव: दुःख, ग्लानि, आशा

अच्छेलाल शास्त्री जखन एहि उपन्यासपर लिखैत छथि जे "कविक भावसँ हृदय विभोर भऽ उठल" — ई रसअनुभूतिक प्रत्यक्ष वर्णन अछि। डॉ. योगानन्द झा, धीरेन्द्र कुमार, जीवकान्त, बचेश्वर झा, रमाकान्त राय, द्रविड — सभ ई उपन्यासपर लिखैत छथि आ सभकें शान्त/करुण रस अनुभूत भेल अछि — एहि व्यापक रसअनुभूतिसँ उपन्यासक सफलता सिद्ध होइत अछि।

राज याज्ञीक कविता आ श्रृंगार रस:

डॉ. राजीव कुमार वर्माक "कारी घटा बरसैत मेघ" शीर्षक आलेखमे राज याज्ञीक कविताक विश्लेषण अछि। "कारी घटा" — श्रृंगार रसक विभाव। विप्रलम्भ

श्रृंगारक आधारपर ई रचना गाँवनगरक द्वन्द्वकें प्रेमक रूपकमे अभिव्यक्त करैत अछि।

अच्छेलाल शास्त्रीक "रणभूमि आ कविता":

एहि प्रबन्धमे "रणभूमि"क जे व्याख्या अछि ओ वीर रस आ शान्त रसक सम्मिश्रणक उदाहरण अछि — गीताक कर्मयोगसँ सम्बन्धित। भरतमुनिक नव रसमे वीर आ शान्तक समन्वय ई आलेखमे देखल जाइत अछि।

३.२ ध्वनिसिद्धान्त

आनन्दवर्धनक "ध्वन्यालोक"क अनुसार काव्यक आत्मा ध्वनि — परोक्ष अर्थ — अछि।

गजेन्द्र ठाकुरक प्रबन्धमे ध्वनि:

ठाकुर स्वयं ध्वनिसिद्धान्तक उल्लेख करैत छथि आ कहैत छथि जे "ध्वनि द्वारा अर्थ परोक्ष रूपेँ आइत अछि मुदा ओ सुसंगठित रूपमे आइत अछि।" एहिसँ "अर्थ आ प्रतीक दूटा सिद्धान्त बहार होइत अछि।" ई भारतीय सेमियोटिक्सक एकटा सूक्ष्म प्रस्तावना अछि।

विनीत उत्पलक रिपोर्ताज "की अछि दिल्लीक जी.बी. रोडक कोठाक सत":

एहि रचनामे "कोठा" एकटा ध्वनिसम्पन्न शब्द अछि। मात्र रेडलाइट डिस्ट्रिक्टक शाब्दिक अर्थ नइ, बल्कि सामाजिक विषमता, पितृसत्ता, आर्थिक शोषण — सभटा ध्वनित होइत अछि। एहि दृष्टिसँ ई एकटा उत्कृष्ट ध्वनिकाव्य अछि गद्यरूपमे।

३.३ वक्रोक्ति आ विदग्धता

कुन्तकक वक्रोक्तिसिद्धान्तक अनुसार काव्यक विशिष्टता ओकर "वक्र" अर्थात् अप्रत्यक्ष प्रयोगमे अछि।

परमेश्वर कापड़िक "मानकताक बात विखपाद अछि":

शीर्षक स्वयंमे वक्रोक्ति अछि। "मानकताक बात विखपाद अछि" — एकटा विडम्बनापूर्ण उक्ति जे मैथिलीमे मानकीकरणक विवादक ओर संकेत करैत अछि। बिना सीधा आलोचना कएने, शीर्षकमे ही समालोचना अछि।

३.४ रीतिसिद्धान्त

वामनक रीतिसिद्धान्त (गुण + शैली = काव्य) क परिप्रेक्ष्यमे जगदीश प्रसाद मण्डलक गद्यशैलीक विशेष उल्लेख करब उचित अछि। जितेन्द्र झाक आलेखमे जे उद्धरण अछि ओहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे मण्डलक भाषा अत्यन्त सहज, ग्राम्यस्तरीय, किन्तु सौन्दर्यपूर्ण अछि — ओइदिस गद्यमे एकटा विशिष्ट "पाञ्चाली रीति" (सरल, मधुर, प्रवाही) देखाइत अछि।

विदेह सदेह १० — सम्पूर्ण समालोचना — विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क, गंगेशक नव्य न्याय,

३. भारतीय रस-ध्वनि-अलंकार सिद्धान्त — भरत, आनन्दवर्धन, अभिनवगुप्तक परम्परा

३. भारतीय रस-ध्वनि-अलंकार

गजेन्द्र ठाकुरक प्रारम्भिक प्रबन्ध, मुन्नाजीक गजल-विश्लेषण, रवि भूषणक भामह-अध्ययन, डॉ. शशिधरक कथा-समालोचना — ई सभ भारतीय काव्यशास्त्रक परम्पराकेँ जीवित राखैत अछि।

विदेह सदेह-१२ — Videha Sadeha 12

३.१ रस-ध्वनि सिद्धान्तक दृष्टि

डॉ. विमल सुजीत कुमार झाक कथा-शिल्पकें 'अर्जुनक लक्ष्य-भेद' आ 'फँसैत कनखी, टाङरिपर ठार गहुमन देखि लेब' सन उपमासँ वर्णित करैत छथि। एहि शिल्प-वर्णनमे भारतीय नायकत्वक (वीर रस) metaphor अछि।

'पूमल फुलाइएकऽ रहल' कथाक नायिका पिंकी — अपन विवाहक धोखा ज्ञात होएला उपरान्त 'विहाक छाउरसँ पुनः उड़ि आसमानकेँ छुबैत मिनकीय पञ्छी स्फिङ्स जेकाँ' नव अवतार लैत अछि — एहिमे करुण रससँ वीर रसमे transition अभिनवगुप्तक 'रसास्वाद' सिद्धान्तक अनुरूप अछि। करुण रसक स्थायिभाव शोक, विभाव (नायकक धोखा), अनुभाव (आत्म-संकल्प) — सभ स्पष्ट अछि।

'लाल किताब' कथामे paranormal psychology — सेवक प्रसाद यादवी जे 'मरि गेल सतरहे गने' — अद्भुत रसक सञ्चार। 'कुण्ठित मानवता'

कथामे समाजक 'moral blindness' — बीभत्स आ करुण रसक मिश्रण।

६.१ रस-ध्वनि सिद्धान्तक दृष्टि

'जन्म देनहार बाप जकरा पिता परमेश्वर कहल जाइत अछि तएह बाप अपन जनमल बेटी संग पाप करैत अछि यएह समाजमे' — एहिमे बीभत्स रस आ रौद्र रसक सम्मिलन अभूतपूर्व थिक। भरतक नाट्यशास्त्र मे बीभत्स रसक परिभाषा — 'जुगुप्सा' (disgust) स्थायिभाव — एहि पाठमे प्रत्यक्ष अछि।

आनन्दवर्धनक ध्वनि सिद्धान्त: 'ई नोर छै गरीबीक' — एहिमे व्यञ्जना (suggestion) अभिधासँ शक्तिशाली अछि। 'गरीबी' एकटा एहि समग्र सामाजिक व्यवस्थाक dhvani (suggestion) क रूपमे कार्य करैत अछि।

७.१ रस सिद्धान्तक दृष्टि

उपन्यासमे दयानन्दक 'बिजलीवला शवदाहमे आसानीसँ काज सम्पन्न भऽ जाइत अछि' प्रतिक्रिया — बीभत्स (disgust) आ करुण (grief) रसक सम्मिलन। रघुनन्दनक मृत्यु-अनुष्ठानमे 'सप्तरङ्गी समाजक इन्द्रधनुषी सम्बन्ध' — अद्भुत रस। डोम, दुसाध, ब्राह्मण सभ मिलि कार्य करैत — शान्त रसमे dissolution।

विदेह ढाँचासँ: 'डोमसँ हम छुएल जाएत, मुदा ओकर बनाओल चीज-बौस गोसाँइ-पितरपर चढ़ैत तँ की इष्टदेव नै छुऔत' — एहि logical contradiction मे जाति-व्यवस्थाक आन्तरिक विरोधाभासक उद्घाटन। यएह Ambedkarite critique of caste k मैथिली साहित्यमे प्रवेश थिक।

८.२ रस-ध्वनि दृष्टि

डॉ. सिंहक आलेखमे 'समरसता' concept भारतीय रसशास्त्रक 'सादृश्य' (similarity) सिद्धान्तसँ सम्बद्ध अछि। समरसता = रसों की समान अनुभूति — ई अभिनवगुप्तक 'universal aesthetic experience' (साधारणीकरण) क सामाजिक आयाम थिक।

९. आशीष अनचिन्हार — 'काविया': मैथिली गजल-सिद्धान्तक महाग्रन्थ

'काविया' आशीष अनचिन्हार द्वारा रचित मैथिली गजल-सिद्धान्तक विस्तृत ग्रन्थ थिक। एहि अंकमे काफिया, बहर, आ मैथिली-उर्दू वर्णमालाक तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत अछि। ई विदेह सदेह-१२ क सर्वाधिक scholarly contribution थिक।

१४.१ रस-सिद्धान्तक दृष्टि

अमित मिश्रक 'युग विज्ञानक शोध एखन कऽ देखैत छी / अपन मन परिबोध एखन कऽ देखैत छी' — बहरे-कलील मे। एहि शेरमे बाल-जिज्ञासा (अद्भुत रस) आ व्यङ्ग्य (हास्य रस) क सम्मिलन। 'भाग बनबैत मात्र दस खा कऽ रसगुल्ला / शक्ति के हम बोध एखन कऽ देखैत छी' — बचपनक humour।

१६.१ रस-ध्वनि सिद्धान्तक दृष्टि

'जिनगीक होइत संघर्ष / सीमा बीत जखन अबैत / मनवए लगैत दुर-घर्षण' — एहि कविता-अंशमे वीर रस (उत्साह स्थायिभाव)। 'मुसक खुनल बील पकड़ि / बाघ-बाघिन कहनए लगैए' — रौद्र आ हास्य रसक मिश्रण।

आनन्दवर्धनक ध्वनि: 'रात-दिन' — एहि शीर्षकमे व्यञ्जना (dhvani) — जीवनक light-dark cycle, संघर्ष-शान्ति, जागरण-निद्रा — सभ ध्वनित। राजदेव मण्डल लिखैत छथि: 'रात-दिन कविता संग्रहक शीर्षक अनुकूल अछि। कविता सभक भाव, विषय, उद्देश्य इत्यादि ऐ शीर्षकमे छिपल अछि।'

१६.४ विदेह ढाँचा

जगदीश प्रसाद मण्डल — दलित-पिछड़ा वर्गक लेखक — कें विदेहमे सर्वोच्च स्थान। राजदेव मण्डल द्वारा हुनकर समीक्षा — दुनू Subaltern लेखकक mutual recognition — ई विदेहक 'democratic aesthetic' k प्रमाण थिक। साहित्य अकादेमीमे एहि दुनू लेखकक negligence — Counter-canonical validity।

— — —

विदेह सदेह-१२: समानान्तर समीक्षा — खण्ड २: कविता, गजल, विहनि कथा, बाल खण्ड, नाटक

६.२ रस-ध्वनि दृष्टि

करुण रस (दुलारीक tears, अंकपत्र नष्ट करनाइ) → वीर रस (दुलारीक determination) → आनन्द (teacher's announcement, father's pride) → शान्त (माताक penance, resolution)। ई रस-progression Bharatak Natyashastra मे described रस-

flow क अनुरूप।

आनन्दवर्धनक ध्वनि: 'दुलारी' नाम मे ही dhvani — 'दुलार' (affection) + कन्या suffix। ई beloved child जे society rejects — ई irony एहि नाटकक central tension।

विदेह सदेह-१३: सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा — भारतीय एवं विश्व साहित्यिक सिद्धान्तक आलोकमे

८.७ भारतीय काव्यशास्त्रक सिद्धान्त

रस-सिद्धान्त: 'कमलू' आ 'सुटिया' मे करुण रसक सफल अभिव्यक्ति अछि। 'साउस पुतोहु' मे हास्यक संग करुण रस। 'प्रेमक बलि' मे शृंगारसँ वीभत्स आ करुणक यात्रा।

ध्वनि-सिद्धान्त: 'परिभाषा', 'लाँज' मे व्यञ्जना-शक्तिक सुन्दर प्रयोग। वक्रोक्ति: 'इमानदारीक पाठ' आ 'बौआ बाजल' मे व्यंग्यात्मक वक्रोक्ति। अलंकार: मनु जीक गजलमे अनुप्रास आ उपमाक सटीक प्रयोग। 'कुहेस' मे रूपकक निरन्तरता।

विदेह सदेह-१४ — अंक १२१-१३२ | ISSN 2229-547X | सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर

१. भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति सौन्दर्यशास्त्र (भरत, अभिनवगुप्त, आनन्दवर्धन, कुन्तक, क्षेमेन्द्र)

२.२ रस-ध्वनि-वक्रोक्ति विश्लेषण

'गंगा पिज' नाटकमे नाट्यशास्त्रक पाँच प्रमुख रसक निरन्तर उपस्थिति अछि। वीर रस — अभियन्ताक 'जे काज हम गलत बुझैत छिऐ, ओइ काजकें हम कोना करब?' — एहिमे नैतिक अडिग संकल्प। करुण रस — 'लाश राखल छै, दूटा बच्चा आ इञ्जीनियरक विधवा हिचुकि रहल छथि।' रौद्र रस — मुख्यमन्त्रीक क्रूर हँसी — 'असली जुल्मी छै।' हास्य-व्यंग्य रस — ढोलहो देनहारक दोहराएल घोषणा: व्यवस्थाक खोखलेपनक satiric demonstration।

आनन्दवर्धनक ध्वनि — 'गंगा पिज' — ई शीर्षकमे पवित्रता आ भ्रष्टाचारक विरोधाभास ध्वनित। 'डंकाक अबाज' — नाटकभरि आबैत-जाइत रहैत अछि — समयक प्रवाहक symbolic dhvani।

कुन्तकक वक्रोक्ति — 'बत्तीस सालक सरकारी सेवाक उपरान्त गंगा पिज ई पोथी मुख्य अभियन्ता मात्र लिखि सकैत छथि' — मुख्यमन्त्रीक ई वाक्य अपने व्यंग्य थिक — जे लोक व्यवस्था चलौलनि, ओएह इतिहास लिखबाक 'अधिकारी' बनि जाइत अछि।

११.२ रस-ध्वनि विश्लेषण

'पाखलो' मे करुण रस प्रधान — मुदा अद्भुत रस (प्रकृति-वर्णन), शृंगार रस (पाखलो-रजनीक भावनात्मक सम्बन्ध), बीभत्स रस (सामाजिक अन्याय) — सभ उपस्थित। आनन्दवर्धनक ध्वनि — 'पाखलो' नाम — एकटा Goa indigenous community word — सम्पूर्ण cultural identity k dhvani। कुन्तकक वक्रोक्ति — उपन्यासक प्रकृति-वर्णन (मंगुष्ठी झरना, आम्बाक गाछ, बसातक वर्णन) — अत्यन्त वक्रोक्तिपूर्ण भाषामे लिखल — मानवीय drama क backdrop।

विदेह सदेह-१४: खण्ड २ — पद्य खण्ड (पृ. ३७३-७३६) — कविता · गजल · भक्ति गजल · बाल गजल · यात्रा-संस्मरण

१.२ रस-ध्वनि विश्लेषण

'की भेटल आ की हेरा गेल' मे करुण रस प्रधान — मुदा शान्त रस अन्तिम destination। 'संघर्ष सत्य, थिक क्रान्ति सत्य / सत्ये होइ छथि विभु आ सुन्दर / जे भेटि गेल से अछि सुन्दर / जे नहि भेटल से अति सुन्दर / सुन्दरतम तँ थिक ओ घृत जे / अछि हवन-अग्निमे ढरा गेल' — ई शान्त रसक उत्कर्ष।

आनन्दवर्धनक ध्वनि — 'की भेटल आ की हेरा गेल' — ई प्रश्न प्रत्येक मानव-जीवनक dhvani थिक। एकटा व्यक्तिक कथा समस्त मैथिलीभाषी पीढ़ीक कथा बनि जाइत अछि। कुन्तकक वक्रोक्ति — 'अपनहि हाथें हम पत्र लिखि / अपनहिकें कएलहुँ सम्बोधन / अपनहि अर्जुन, अपनहि केशव / अपनहि बनि गेलहुँ दुयोधन' — ई self-address dramatic vakrokti।

विदेह सदेह २६ — डॉ. शम्भु कुमार सिंह आ डॉ. अरुण कुमार सिंहक गद्य-पद्यक सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा

सारांश

ई समीक्षा “विदेह सदेह २६” मे संकलित डॉ. शम्भु कुमार सिंह आ डॉ. अरुण कुमार सिंहक समस्त स्वतंत्र शीर्षकयुक्त गद्य-पद्य रचनाक क्रमबद्ध, पाठाधारित आ तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत करैत अछि। संकलनक अनुक्रममे गद्य-खण्ड पृष्ठ १-३७८ आ पद्य-खण्ड पृष्ठ ३७९-४०१ रूपेँ निर्दिष्ट अछि। अनुक्रमक ३९ स्वतंत्र इकाइक अतिरिक्त “पाखलो” उपन्यासक पछाति संलग्न अशोक मनभुटकरक “हर एक लोक आ माटिक कथा” कें स्वतंत्र आलोचनात्मक आलेख मानि समीक्षा-कक्षामे राखल गेल अछि; एहि तरहेँ कुल ४० स्वतंत्र रचना-इकाइक लेखा कएल गेल अछि।

डॉ. शम्भु कुमार सिंहक रचनासंसार साहित्येतिहास, भाषाविज्ञान, नाटक-समीक्षा, सामाजिक यथार्थ, कथा, लघुकथा, समसामयिक व्यंग्य, अनुवाद आ कविता धरि पसरल अछि। हुनक अनूदित खण्ड कोंकणी, अंग्रेजी, डोगरी आ हिन्दी मूलक रचनाकेँ मैथिली पाठक धरि अनैत अछि। डॉ. अरुण कुमार सिंहक गद्य सामाजिक समरसता, दलित चेतना, मातृभाषा, भाषाक सामाजिक स्वामित्व, कोशी-अंचलक विकास-विमर्श, यात्रा-रिपोर्ताज, भाषा-शिक्षण आ अभिकलनात्मक भाषाविज्ञानक बीच सेतु रचैत अछि। हुनक कविता मैथिली अस्मिता, लोक-व्यंग्य आ संपादकीय-सांस्कृतिक सक्रियताकेँ स्वर दैत अछि।

समीक्षा रचनाक कथ्य, संरचना, भाषा, प्रतीक, चरित्र, कथन-दृष्टि, सामाजिक-सांस्कृतिक प्रसंग, अनुवादगत स्थिति आ समकालीन प्रासंगिकताक आधार पर कएल गेल अछि। जतए मूल कोंकणी, डोगरी वा अंग्रेजी पाठ संकलनमे समानान्तर रूपेँ उपलब्ध नहि अछि, ओतए अनुवादक निष्ठाक पंक्ति-दर-पंक्ति निर्णय नहि देल गेल अछि; केवल मैथिली लक्ष्य-पाठक शिल्प, प्रवाह आ सांस्कृतिक संप्रेषणक विवेचन कएल गेल अछि। बाह्य अनुसन्धानक उपयोग सत्यापन आ तुलनात्मक आलोचनात्मक आलोक लेल कएल गेल अछि, मूल पाठक स्थानापन्न रूपमे नहि।

कुंजी-शब्द: विदेह सदेह २६, डॉ. शम्भु कुमार सिंह, डॉ. अरुण कुमार सिंह, मैथिली साहित्य, पाखलो, अनुवाद, दलित चेतना, नारी समस्या, कोशी, मातृभाषा, अभिकलनात्मक मैथिली, मैथिली कविता, सांस्कृतिक अस्मिता।

८.८ मैथिलेत्तर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कँप्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका

ई लेख मैथिलीकेँ द्वितीय/अन्य भाषा रूपमे सीखैबाक व्यावहारिक प्रश्नक संग भाषाविज्ञान आ कम्प्यूटरकेँ जोड़ैत अछि। कॉर्पस, शब्द-संग्रह, उच्चारण-सामग्री, भाषिक तुलना, KWIC/KWOC, लिप्यन्तरण आ डिजिटल अभ्यास जकाँ उपाय लेखक समयक दृष्टिसँ दूरदर्शी छल।

लेखक मूल विचार आइ आर अधिक प्रासंगिक अछि: भाषा-शिक्षण केवल पाठ्यपुस्तक पर निर्भर नहि रहि सकैत; खोजयोग्य कॉर्पस, ध्वनि-संसाधन, शब्दरूप-विश्लेषण आ इंटरैक्टिव उपकरण शिक्षार्थीकेँ वास्तविक भाषिक उदाहरण देबैत अछि। एल.डी.सी.-आई.एल.क वर्तमान आधिकारिक पोर्टल पर मैथिली Sentence Aligned Speech Corpus सहित मैथिली संसाधन सूचीबद्ध अछि—ई बाह्य तथ्य लेखक कल्पनाक संस्थागत निरन्तरता देखबैत अछि।

समीक्षात्मक रूपेँ लेखमे देल किछु तकनीकी उदाहरण अपन समयक सॉफ्टवेयर/परिस्थितिसँ बँधल भ’ सकैत अछि। मुदा मूल सिद्धान्त—डेटा, ध्वनि, कॉर्पस आ कम्प्यूटेशनल उपकरणक सहारे भाषाशिक्षण—स्थायी मूल्य राखैत अछि।

विदेह सदेह २७ — सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा

१. पाठाधार, पद्धति आ सत्यापनक सीमा

बाह्य शोध केवल ओहि ठाम प्रयोग कएल गेल अछि जतऽ उच्च-विश्वसनीय स्रोतसँ लेखकक साहित्यिक स्थान, पुरस्कार, अनुवाद-सिद्धान्त वा व्यापक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य सत्यापित होइत अछि। उदाहरणतः साहित्य अकादेमीक अधिकृत सूची ‘Jumma’ कें २०१२ क तेलुगु युवा पुरस्कारप्राप्त कहानी-संग्रहक रूपमे दर्ज करैत अछि; भारतीय ज्ञानपीठक अधिकृत सूची रहमान राहीकेँ २००४ क कश्मीरी ज्ञानपीठ-विजेता मानैत अछि; ओडिशा वर्चुअल अकादमी वासुदेव सुनानीक जीवनी आ कृतित्वक आधार उपलब्ध करबैत अछि।

एहि अध्ययनमे ‘मूलसँ अधिक सुन्दर’, ‘पूर्णतः निष्ठावान’, ‘मूलक प्रत्येक छन्द सुरक्षित’ सन दाबी नै कएल गेल अछि, कारण सभ मूल-भाषा पाठ प्रत्यक्ष उपलब्ध नै अछि। जतऽ अंग्रेजी मध्य-पाठ अछि, ओतऽ साहित्यिक मूल्यांकन मुख्यतः मैथिली रूपक प्रवाह, बिम्ब, सांस्कृतिक संकेत, स्वर आ लक्ष्य-पाठक अनुभवपर केन्द्रित अछि।

पूर्णताक कसौटी दू स्तरपर राखल गेल अछि: पहिल, अनुक्रममे दर्ज प्रत्येक लेखक-रचनाक नाम समीक्षा-सूचीमे उपस्थित हो; दोसर, ‘निराला: देह-विदेह’ अंतर्गत अलग-अलग सातो कविता पर स्वतंत्र टिप्पणी हो। एहि कारण समग्र समीक्षा केवल खण्डगत नै, रचनागत अछि।

१०.१ भूमिका एक स्वतंत्र अनुवाद-आलोचना

रवि भूषण पाठकक पृ. ६०-६५ क लेख केवल कविताक प्रस्तावना नहि, एक संक्षिप्त अनुवादशास्त्रीय निबन्ध अछि। ओ स्वातंत्र्योत्तर भारतमे हिन्दी साहित्यक केन्द्रीयता, निरालाक सौन्दर्यात्मक-विचारात्मक विविधता, विद्यापति आ रवीन्द्रनाथसँ सम्बन्ध, तथा मैथिली-हिन्दीक साझा संस्कृत-प्राकृत-अपभ्रंश विरासतपर विचार करैत छथि। विशेष रूपेँ ओ चेतावनी दैत छथि जे निकट भाषिक साम्य अनुवादमे सुविधा देत, मुदा आलस्य आ अनुकरणक खतरा सेहो बढ़त।

पाठक 'शब्दार्थचिन्तामणि'क पुनःकथन/ज्ञातार्थ प्रतिपादन, रोमन याकोब्सनक अन्तरभाषिक संकेत-व्याख्या आ नाइडा-टेबरक निकटतम स्वाभाविक समतुल्यताक चर्चा करैत छथि। बाह्य आधुनिक स्रोतसँ ई सिद्धान्तगत संकेत पुष्ट अछि: Jakobson अनुवादक तीन भेद करैत आ कविता लेल creative transposition पर बल दैत छथि; Nida-Taber अर्थ आ शैलीक निकटतम स्वाभाविक समतुल्यता प्रतिपादित करैत छथि। एही कारण पाठकक भूमिका केवल स्थानीय टिप्पणी नहि, वैश्विक अनुवाद-विमर्शक मैथिली-हिन्दी प्रसंगीय पुनर्स्थापन अछि।

विदेह: सदेह: २८ — सैद्धान्तिक समीक्षा

३४. निरंजन बोहा - करूगर सत्य:

स्त्री आत्म-द्वन्द्व; सरकारी अनुदान लेल पति आतंकवादी हत्या।

भारतीय: नारी करुणा अन्तरणक ध्वनि।

नव्यन्याय: दायित्व बनाम सहायताक गहन विश्लेषण।

३६. जङ्गबहादुर सिंह घुम्मण - आचरण:

शोषित नाती-दादा; एक रुपियाक मृत्युपत्र।

भारतीय (वक्रोक्ति): राज्य-परिवारक सम्बन्धक चरम व्यङ्ग्य।

समानान्तर: पञ्जाबी जाट-हकक समानान्तर बूढ़-नातीक अस्मिता।

३७. दीपक बुदकी - जन्नत:

मृत्यु-पश्चात आतंकवादी जन्नत पाबैत? हिटलर, चङ्गेज खाँ सँ मिलाबैत - तीव्र व्यङ्ग्य।

समानान्तर: धार्मिक पुरस्कारक राजनीति।

विदेह सदेह ३० — सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा

सारांश

'विदेह सदेह ३०' एक साधारण पाठ्य-संकलन नहि, बल्कि मैथिली साहित्यिक सार्वजनिक क्षेत्रक बहुस्तरीय अभिलेख अछि। गद्य-खण्डमे वर्तनी-उच्चारण, साहित्यिक आलोचना, नाटक, कथा-उपन्यास, गजल-कविता, बाल-साहित्य, अनुवाद, भाषा-विज्ञान, लोकगाथा, लोकगीत, पाबनि, मिथिला चित्रकला, पञ्जी, इतिहास, जीवनी, सामाजिक विमर्श, शिक्षा आ डिजिटल तकनीक धरि सामग्री अछि; अन्तिम पद्य-खण्ड राष्ट्र-क्षेत्रीय अस्मिता, संस्कृत सुभाषित आ स्मरणीय श्लोकक शिक्षणपरक परम्पराकेँ जोड़ैत अछि। एहि समीक्षामे अनुक्रमक प्रत्येक लेखक-खण्ड आ प्रत्येक सूचीबद्ध रचनाकेँ स्पष्ट रूपेँ दर्ज कएल गेल अछि, आ संकलनक अन्तक ७८ संदेशकर्ताक नाम सेहो ग्रहण-इतिहासक अंश रूपमे सुरक्षित कएल गेल अछि। आलोचनात्मक निष्कर्ष ई अछि जे संकलनक सर्वाधिक महत्त्व ओकर विधागत बहुलता, देशज भाषिक सामग्री, समकालीन पाठकीय प्रतिक्रिया आ डिजिटल मैथिली सार्वजनिक क्षेत्रक दस्तावेजीकरणमे अछि; एकर सीमा कतिपय लेखक तथ्यदाबीक असमान स्रोत-निर्देश, पुनरावृत्ति, अनुक्रम-पृष्ठाङ्कक किछु त्रुटि आ पुस्तक-समीक्षाक असमान पद्धतिगत कठोरता अछि।

बाह्य शोधक आलोकमे संकलनकेँ मैथिली भाषाक स्वायत्त व्याकरणिक संरचना (Yadav 1996), मध्यकालीन विद्यापति-साहित्यक बहुभाषिक राजनीतिक-सांस्कृतिकता (P. Jha 2014, 2019), आधुनिक मैथिली उपन्यासक विकास (Lalit Kumar 2022), अनुवादक सांस्कृतिक मध्यस्थता (Sah & Sinha 2022), मिथिला चित्रकलाक बहुवाचक अर्थ (Brown 1996) आ लोकपरम्पराक स्वायत्त अर्थ-व्यवस्था (Pathak 2018; Korom) संग रखि पढ़ल गेल अछि। बाह्य स्रोतक उपयोग प्रसंग-निर्माण लेल अछि; संकलनक प्रत्येक आन्तरिक जीवनी/तिथि/ऐतिहासिक दाबीकेँ बाह्य प्रमाणित मानि लेल गेल नहि अछि।

की-वर्ड: *विदेह; विदेह सदेह; मैथिली साहित्य; साहित्यिक आलोचना; मैथिली उपन्यास; मैथिली नाटक; गजल; बाल-साहित्य; लोकसाहित्य; मिथिला कला;*

अनुवाद; तिरहुता; पञ्जी; डिजिटल सार्वजनिक क्षेत्र; ग्रहण-इतिहास

१. अनुसंधान-पद्धति आ प्रामाणिकता

एहि अध्ययनक पहिल सिद्धान्त 'स्रोत-पहिने' अछि। अनुक्रम, मूल २१४५-पृष्ठीय PDF आ स्वच्छ DOCX पाठकेँ परस्पर मिलाओल गेल अछि। लेखक-रचना सूची अनुक्रमसँ लेल गेल अछि; आलोचनात्मक टिप्पणी ओहि निर्दिष्ट पृष्ठ-परिसरक पाठ आ शीर्षकपर आधारित अछि। जतऽ स्रोतमे नाम नहि देल अछि—जेना संस्कृत सुभाषित-संकलन—ओतऽ कोनो लेखक-नाम जोड़ल नहि गेल अछि।

दोसर सिद्धान्त 'तथ्य आ मूल्यांकनक भेद' अछि। ग्रन्थमे आएल ऐतिहासिक, जीवनीपरक वा संस्थागत दाबीकेँ एहि समीक्षा मे 'ग्रन्थक कथन' रूपेँ देखल गेल अछि, जँ धरि बाह्य शोधसँ स्वतंत्र पुष्टिकरण उपलब्ध नहि अछि। बाह्य अकादमिक स्रोत ग्रन्थक व्यापक साहित्येतिहास, भाषाविज्ञान, अनुवाद, लोकसाहित्य आ कला-प्रसंग बुझबाक साधन अछि; ओ सभ मूल संकलनक प्रत्येक दाबीक प्रमाणपत्र नहि छथि।

तेसर सिद्धान्त 'सम्पूर्णता' अछि। आरम्भिक भाषा-वर्तनी खण्ड, हरिमोहन झा समर्पण, अनुक्रमक सभ लेखक-खण्ड, पद्य-खण्ड आ अन्तिम संदेश-परिशिष्ट—सभकेँ अध्ययनमे स्थान देल गेल अछि। रचना-सूची जथावत् राखल गेल अछि, जाहिसँ पाठक तुरन्त जाँचि सकथि जे कोनो सूचीबद्ध रचना छूटल नहि अछि।

विदेह सदेह ३२ — रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-१

सारांश

ई समीक्षा 'विदेह सदेह ३२ : रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-१' मे संकलित समस्त शीर्षक-रचनाक निकट-पाठपर आधारित अछि। संग्रहमे कथा, नाटक, निबन्ध, साहित्य-इतिहास, इतिहास-लेखन, समीक्षा, संस्मरणपरक आलोचना, साक्षात्कार, गीत-कविता, गजल-प्रयोग आ दीर्घ काव्य-आख्यान एकहि साहित्यिक परिसरमे उपस्थित अछि। एहि कारण एहि संकलनक महत्त्व केवल "श्रेष्ठ रचना-संचयन" धरि सीमित नहि रहि, आधुनिक मैथिली बौद्धिकताक बहुविध रूप—गामक बदलैत जीवन, प्रवास, स्त्री-अनुभव, भाषा-राजनीति, लोक-संस्कृति, नाट्य-परम्परा, इतिहास-बोध, संस्थागत साहित्यिक आन्दोलन आ आधुनिक व्यक्तिक अन्तर्द्वन्द्व—सभकेँ एक संग देखबाक अवसर दैत अछि। समीक्षा प्रत्येक शीर्षकक कथ्य, शिल्प, भाषा, दृष्टि, सांस्कृतिक अर्थ आ साहित्यिक स्थानक परीक्षण करैत अछि; संगहि समग्र संग्रहक अन्तर्धाराकेँ तुलनात्मक रूपेँ चिन्हित करैत अछि।

आधार-पाठक अनुक्रममे उल्लिखित कोनो लेखक अथवा रचना जानि-बुझि कऽ छोड़ल नहि गेल अछि। जतऽ रचना स्वयं आलोचनात्मक अथवा इतिहासपरक अछि, ओतऽ ओकर "साहित्यिकता" केवळ सौन्दर्यशास्त्रीय कसौटीपर नहि, बल्कि तर्क-रचना, स्रोत-बोध, भाषिक संरचना, विधागत योगदान आ सांस्कृतिक स्मृति-निर्माणक दृष्टिसँ जाँचल गेल अछि। बाह्य तथ्यक उपयोग केवल सत्यापन आ प्रसंग-विस्तार लेल कएल गेल अछि; मूल पाठक प्रत्यक्ष साक्ष्यकेँ प्राथमिकता देल गेल अछि।

बीज-शब्द

विदेह सदेह ३२; आधुनिक मैथिली साहित्य; मैथिली कथा; मैथिली नाटक; मैथिली कविता; मिथिला इतिहास; लोकनाट्य; स्त्री-विमर्श; प्रवास; कोसी; भाषा-राजनीति; साहित्यिक आधुनिकता; साहित्य-इतिहास; रंगमंच; स्मृति।

१. समीक्षा-पद्धति आ संकलनक स्वरूप

'विदेह सदेह ३२'क अनुक्रम गद्य-खण्डक विशाल विस्तार (पृ. १-१३५८) आ पद्य-खण्ड (पृ. १३५९-१५८०) केँ अलग करैत अछि। गद्य-खण्डमे एक ओर अत्यल्प आकारक कथा अछि तँ दोसर ओर सैकड़ो पृष्ठक इतिहास-ग्रन्थ आ आलोचनात्मक अध्ययन; एक ओर चारि-अंकीय प्रयोगधर्मी नाटक, तँ दोसर ओर लोकनाट्य, पारम्परिक नाटक आ रंगमंचक संस्थागत इतिहास। पद्य-खण्डमे गीतात्मक, हास्य-व्यंग्यात्मक, सामाजिक, अस्तित्वपरक, प्रवासी, राजनीतिक आ दीर्घ आख्यानात्मक स्वर संग-संग उपस्थित अछि। एहन संरचना पाठककेँ मैथिली साहित्यक "विधागत अलगाव" नहि, बल्कि एकर अन्तर्सम्बन्ध देखबैत अछि।

समीक्षामे पाँचटा आधार अपनाओल गेल अछि: (१) मूल पाठक निकट-पाठ, (२) कथ्य आ रचनात्मक संरचना, (३) भाषा आ शैली, (४) सामाजिक-सांस्कृतिक सन्दर्भ, आ (५) विधागत योगदान। इतिहास अथवा आलोचनात्मक निबन्धक समीक्षा करैत समय स्रोत-चेतना, वर्गीकरण, प्रमाण-उपयोग आ आलोचनात्मक स्वायत्तताकेँ सेहो कसौटी बनाओल गेल अछि। कविता आ नाटकमे ध्वनि, मंचीयता, दृश्य-कल्पना, प्रतीक, कथन-स्वर आ लयपर विशेष ध्यान देल गेल अछि।

संकलनक मूल शक्ति विविधता अछि। मुदा विविधता मात्र सूचीगत नहि: माटिक कारीगरसँ आरम्भ भऽ कऽ स्त्रीक घरेलू श्रम, कॉरपोरेट प्रभाव, मिथिलाक राजवंश, लोकमंच, प्रवासी परिवार, कोसीक प्रलय, साम्प्रदायिक हिंसा, बेरोजगारी, महानगरीय बस, वृद्धावस्था, वैश्विक विचारधारा, तथा कृष्ण-राधाक आधुनिक पुनर्पाठ धरि एकटा निरन्तर प्रश्न चलैत अछि—परिवर्त्तनक बीच मनुष्य, भाषा आ स्मृति अपन पहचान कोना बचबैत अछि?

विदेह सदेह ३३ — सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा

सारांश

‘विदेह सदेह ३३’ १९०४-पृष्ठीय संकलन अछि, जकर अन्तर्वस्तु गद्य-खण्ड (आन्तरिक पृष्ठ १–४६५) आ पद्य-खण्ड (पृष्ठ ४६६–१८९१) मे विन्यस्त अछि। ई समीक्षा संकलनक अनुक्रम मात्र पर आधारित नै अछि; मूल पाठ, उपलब्ध स्रोत-DOCX, रचनाकारक ‘अपन गप’/आमुख, कथा-नाटकक आरम्भ-अन्त, गजल-संग्रहक शास्त्रीय वक्तव्य, आत्मकथा-खण्ड आ आलोचनात्मक निबन्ध सभक प्रत्यक्ष पाठक आधार पर तैयार कएल गेल अछि। उद्देश्य तीनटा अछि—पहिल, कोनो लेखक वा रचना शीर्षक छूटए नहि; दोसर, रचनाक कथ्य, शिल्प, भाषा, लोक-स्मृति, आधुनिकता, प्रवास, जाति-लिंग, सामाजिक न्याय, पर्यावरण, राजनैतिक अनुभव आ काव्य-विधानक समेकित मूल्यांकन; तेसर, ग्रन्थक भीतर देल दावाकेँ ग्रन्थगत दावा आ बाहरी शोध-स्रोतसँ पुष्ट तथ्यक बीच फराक राखब।

संकलनक सबसँ पैघ विशेषता विधागत बहुलता अछि। लोककथा, पशु-कथा, मिथकीय पुनर्पाठ, सामाजिक कथा, विज्ञान-कल्पना, उपन्यास, नाटक, यात्रा-सदृश हैबून, फील्ड-वर्क आधारित शब्दावली, समालोचना, साक्षात्कार, रिपोर्ट, आत्मकथा, विहनि कथा, कविता, हाइकू-टनका, गजल, हजल, रुबाइ, कता आ लोकगीत—सभ एकहि साहित्यिक सार्वजनिक क्षेत्रमे सह-अस्तित्व रखैत अछि। एहन संरचना पारम्परिक ‘एक विधा–एक पोथी’क प्रतिमानसँ हटि कऽ मैथिली लेखनक बहुस्वर, जाल-पत्रिका-जनित परिसंचरण आ सीमापार मिथिला अनुभवकेँ एक जगह राखैत अछि। एहि कारण समीक्षा केवल ‘सुन्दर/असुन्दर’क निर्णय नै, बल्कि संग्रह, विधा, भाषा, सामाजिक स्मृति आ पाठकीय सार्वजनिकताक आपसी सम्बन्धक अध्ययन बनैत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रक ध्वनि-रसा-औचित्य दृष्टि, लोक-साहित्य आ लिखित साहित्यक पारस्परिकता, हाइकूक संक्षिप्त बिम्ब-विधान, गजलक काफिया-रदीफ-बहर संरचना, तथा दलित आत्मकथाक आत्म-अभिलेखन आ आत्मसम्मानक विमर्श—एहि पाँच आलोचनात्मक आधारकेँ बाहरी शोधस्रोतसँ मिलान कएल गेल अछि। मुदा बाहरी सिद्धान्तकेँ मूल पाठपर आरोपित नहि कएल गेल; जतए रचना स्वयं अपन विधान वा उद्देश्य कहैत अछि, ओतए प्राथमिकता रचनाक अपन साक्ष्यकेँ देल गेल अछि।

मुख्य शब्द : विदेह सदेह ३३; मैथिली साहित्य; लोककथा; विहनि कथा; गजल; हाइकू; दलित आत्मकथा; प्रवास; मिथिला; जाल-पत्रिका; ध्वनि; लोक-स्मृति; सामाजिक यथार्थ।

समीक्षा-पद्धति आ तथ्य-जाँच

१. प्राथमिक स्रोतक रूपमे ‘विदेह सदेह ३३’क पीडीएफ, ओकर प्रारम्भिक सामग्री आ मूल स्रोत-DOCX पढ़ल गेल। अनुक्रमक प्रत्येक लेखक-प्रविष्टि आ रचना-शीर्षककेँ अन्तिम ‘सम्पूर्ण आवरण सूची’मे ज्यों-का-त्यों मिलान कएल गेल अछि।

२. जकरा सम्बन्धमे ग्रन्थ अपने प्राथमिकता-दावा करैत अछि—जेना ‘बैशाखमे दलानपर’क आत्मकथा-खण्डकेँ ‘मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा’ कहल गेल अछि—ओहि दावाकेँ समीक्षा ‘ग्रन्थगत/विदेह-स्रोतक दावा’ कहि स्पष्ट करैत अछि। विदेहक आन जाल-स्रोत सेहो ई दावा दोहरबैत अछि, मुदा स्वतंत्र अकादमिक स्रोत भेटल बिना एकरा सार्वभौम ऐतिहासिक निष्कर्ष रूपेँ प्रस्तुत नहि कएल गेल अछि।

३. बाहरी तुलनात्मक आधार लेल साहित्य अकादेमीक मैथिली साहित्य-इतिहास सूची, Poetry Foundationक हाइकू आ गजल सम्बन्धी परिभाषा, INFLIBNETक आनन्दवर्धन-ध्वनि सिद्धान्त, Cambridge University Pressक लोक-साहित्य/मौखिकता अध्ययन आ हिन्दी दलित आत्मकथा सम्बन्धी शोध-लेख उपयोग कएल गेल। एहि स्रोत सभक काज मूल रचनाक स्थान लेब नहि, बल्कि विधागत तुलना आ आलोचनात्मक शब्दावलीकेँ नियंत्रित करब अछि।

४. अनुक्रममे अमित मिश्रक ‘नव-अंशु’क पृष्ठ-संकेत ‘८७३–७७६’ छपल अछि। सामग्री-क्रममे ई विवेकानंद झाक बाद आ चंदन कुमार झाक पूर्व आबैत अछि; एहि समीक्षा मे छपल पृष्ठ-संकेतकेँ बिना मनमाना सुधार केने दर्ज कएल गेल अछि आ विसंगति स्पष्ट कएल गेल अछि।

११. भारतीय सौन्दर्यशास्त्र : ध्वनि, रस आ औचित्य

आनन्दवर्धनक ध्वनि-सिद्धान्त प्रत्यक्ष वाच्यार्थसँ आगाँ सुझाएल अर्थ आ रस-प्रतीतिकेँ काव्यक आत्मा मानैत अछि। एहि दृष्टिसँ संग्रहक श्रेष्ठ क्षण ओ छथि जतए कथन अपना घोषणात्मक आशयसँ आगाँ अर्थ बनबैत अछि—‘गंगाप्रसादक स्वायतता’क सुग्गा, ‘असोथकित’क खाली गिलास, ‘थेथर मनुक्ख’क परबा, ‘नूतन मीडिआ’क विस्मृत डकैती, ‘शब्दशास्त्रम्’क शब्द-भ्रम, ‘काल-स्थान विस्थापन’क हजार वर्ष। एतए वस्तु/घटना प्रत्यक्ष कथ्यसँ अधिक सामाजिक-मानसिक संकेत बनैत अछि।

औचित्यक कसौटीपर सभ रचना समान सफल नहि। किछु वैचारिक लेखमे निष्कर्ष पहिनेसँ घोषित रहैत अछि, जाहिसँ ध्वनि आ बहुअर्थक जगह घटैत अछि; किछु कविता घोषणात्मक नारा धरि पहुँचैत अछि। मुदा संकलनक मूल्य केवल ‘सर्वोत्तम रचना’ चुनब नहि, बल्कि एक साहित्यिक आन्दोलनक विविध स्तर—

प्रयोग, सफलता, कच्चापन, विवाद—सभ सुरक्षित रखब सेहो अछि।

विदेह सदेह ३४ — सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा

१. साहित्येतिहास आ आलोचनाक आत्मचेतना

प्रेमशंकर सिंहक तीनू आलेख संकलनमे आलोचना-विधाक उच्च मानक स्थापित करैत अछि। “मणिपद्मक कथा–यात्रा” पूर्ववर्ती इतिहास, कोश आ पत्रिकाक सूचीकेँ आँखि मूँदि स्वीकार नहि करैत; पाठ-स्रोत खोजि विसंगति देखबैत अछि। एहि दृष्टिक सम्बन्ध आधुनिक टेक्स्टुअल स्कॉलरशिपसँ अछि—कृति के कतए, कहिया, कोन रूपमे प्रकाशित भेल, ई प्रश्न मूल्यांकनक पहिल शर्त बनैत अछि।

गजेन्द्र ठाकुरक “बेचन ठाकुरक नाटक” आलोचनाक संस्थागत राजनीति पर प्रश्न करैत अछि। एतय “श्रेष्ठता”क निर्णय, दर्शक-वर्ग, अनुदान, जातीय सामाजिक संरचना, संपादन/निर्देशन आ डिजिटल अभिलेख—सभ आलोचनाक विषय अछि। एहि प्रकारेँ संकलन स्वयं मैथिली आलोचनाकेँ पाठक भीतरसँ लोकतांत्रिक बहस बनबैत अछि।

विदेह सदेह ३६ — रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-५

सारांश

ई समीक्षा “विदेह सदेह ३६: रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-५” केँ एकटा साधारण संकलन नहि, बल्कि मैथिली भाषिक-साहित्यिक सार्वजनिकताक बहुविध अभिलेख मानि कऽ पढ़ैत अछि। संकलनमे आलोचना, निबन्ध, लघुकथा/विहनि कथा, नाटक, अनुवाद, साक्षात्कार, संस्मरण, समाचार-रिपोर्ट, सांस्कृतिक वृत्तान्त, गजल, रुबाइ, गीत, हाइकू, बाल-पद्य, संस्कारगीत, पर्यावरण-केन्द्रित सचित्र बाल-कविता, चित्रकला आ पाठकीय “संदेश” एके मंचपर भेटैत अछि। एहि कारण एकर साहित्यिक अर्थ केवल काव्यात्मक गुणमे सीमित नहि रहि अभिलेखीयता, प्रदर्शन, लोकस्मृति, डिजिटल सार्वजनिकता, भाषिक मानकीकरण, जाति-लिंग-वर्गक बहस, प्रवास, राज्य-आन्दोलन, शिक्षा, कला आ संस्थागत राजनीति धरि पसरेल अछि।

समीक्षाक आधार तीन स्रोत-रूप अछि: २२४३-पृष्ठीय PDF, प्रारम्भिक २५-पृष्ठीय अनुक्रम/प्रस्तावना DOCX, आ पूर्ण पाठ DOCX। अनुक्रमक १२७ प्रविष्टि—५५ गद्य तथा ७२ पद्य/दृश्य/ग्रहण प्रविष्टि—एक-एक कऽ मिलान कएल गेल अछि। लेखक-नामक पुनरावृत्तिक कारण कुल १०९ अलग लेखक/कलाकार-लेबल सामने अबैत अछि। अन्तिम “संदेश” खण्डमे ७९ नामांकित प्रतिक्रियाकारक उपस्थिति ग्रन्थक पाठकीय ग्रहण केँ अलग आलोचनात्मक स्तर प्रदान करैत अछि। एहि समीक्षा-पुस्तिकामे सभ प्रविष्टिक रचना-सूची देल गेल अछि, जाहिसँ कोनो लेखक वा रचना अनदेखल नहि रहए।

सैद्धान्तिक रूपेँ बहुस्वरता, परिपाठ, मौखिकता-प्रदर्शन, रंगमंचीय अध्ययन, भाषिक इतिहास, जाति-लिपि-सार्वजनिकता आ मिथिला चित्रकलाक नवीन शोधक सहारा लेल गेल अछि। मुदा जतेक ठाम मूल संकलन कोनो विवादास्पद ऐतिहासिक दावा करैत अछि—विशेषतः विद्यापति-संबंधी पहचान वा साहित्यिक संस्थासँ जुड़ल आरोप—ओहि दावाकेँ “लेखकीय मत/संकलनक तर्क” रूपेँ चिन्हित कएल गेल अछि; बाह्य शोधसँ पुष्ट नहि भेल बात केँ स्थापित इतिहास रूपेँ नहि दोहराओल गेल अछि।

बीजशब्द: मैथिली साहित्य, विदेह, सदेह, गद्य, पद्य, विहनि कथा, गजल, लोकगीत, रंगमंच, चित्रकला, डिजिटल सार्वजनिकता, जाति, लिपि, प्रवास, साहित्यिक अभिलेख।

४२. नारायण झा- रहुआ संग्राममे गृष्मकालीन शैक्षिक शिविर सह टैगोर पुरस्कारसँ सम्मानित श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक सम्मान समारोह- २०१२ (पृ. ९२७-९२९)

४३. सुमित आनन्द- शोध-पत्रिका मैथिली एवं मैथिली काव्यमे अलंकारक लोकार्पण, त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन, शोध-पत्रिका मैथिलीक लोकार्पण, ‘मैथिली’ शोध-पत्रिकाक लोकार्पण, कार्यशालाक आयोजन, अनुवाद कार्यशालाक आयोजन, भाव-भूमि रसवंत पुस्तकक लोकार्पण (पृ. ९३०-९४४)

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• सदेह १ सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा — [सभ साहित्यकारक रचनाक विवेचन, भारतीय आलोचना, पाश्चात्य सिद्धान्त, गंगेशक नव्य न्याय, विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा]

• विदेह: सदेह: २ — मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०

• विदेह सदेह ८ — मैथिली नाट्य उत्सव - समानान्तर रंगमंच आर्काइव

• विदेह मैथिली नाट्य उत्सव (मैथिली समानान्तर रंगमंचक संकलन) [विदेह सदेह ८] — समग्र विस्तृत समीक्षा

• विदेह सदेह १० : बहुआयामी समीक्षा

• विदेह सदेह १० — सम्पूर्ण समालोचना — विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क, गंगेशक नव्य न्याय,

- विदेह सदेह-१२ — Videha Sadeha 12
- विदेह सदेह-१२: समानान्तर समीक्षा — खण्ड २: कविता, गजल, विहनि कथा, बाल खण्ड, नाटक
- विदेह सदेह-१३: सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा — भारतीय एवं विश्व साहित्यिक सिद्धान्तक आलोकमे
- विदेह सदेह-१४ — अंक १२१-१३२ | ISSN 2229-547X | सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर
- विदेह सदेह-१४: खण्ड २ — पद्य खण्ड (पृ. ३७३-७३६) — कविता · गजल · भक्ति गजल · बाल गजल · यात्रा-संस्मरण
- विदेह सदेह २६ — डॉ. शम्भु कुमार सिंह आ डॉ. अरुण कुमार सिंहक गद्य-पद्यक सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा
- विदेह सदेह २७ — सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा
- विदेह: सदेह: २८ — सैद्धान्तिक समीक्षा
- विदेह सदेह ३० — सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा
- विदेह सदेह ३२ — रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-१
- विदेह सदेह ३३ — सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा
- विदेह सदेह ३४ — सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा
- विदेह सदेह ३६ — रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-५

अध्याय 3 · नव्य-न्याय, प्रमाण आ तर्कमीमांसा

सारांश १. आलोचना-ढाँचा सदेह १ केर सभ साहित्यकारक विवेचन एहि चतुष्पाद ढाँचासँ हएत: (क) भारतीय काव्यशास्त्र: रस (भरतमुनि), ध्वनि (आनन्दवर्धन), वक्रोक्ति (कुन्तक), औचित्य (क्षेमेन्द्र)। (ख) पाश्चात्य आलोचना: नव समीक्षा, संरचनावाद, उत्तर-औपनिवेशिकता स्त्रीवाद, मार्क्सवाद, पर्यावरण-समीक्षा। (ग) नव्य न्याय: गंगेश उपाध्यायक पक्ष-हेतु-व्याप्ति-दृष्टान्त-निर्णय तर्कशास्त्रक साहित्यिक अनुप्रयोग।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · नव्य-न्याय · गंगेश उपाध्याय · वक्रोक्ति · औचित्य · पाश्चात्य आलोचना · उत्तर-औपनिवेशिकता

सदेह १ सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा — [सभ साहित्यकारक रचनाक विवेचन, भारतीय आलोचना, पाश्चात्य सिद्धान्त, गंगेशक नव्य न्याय, विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा]

१. आलोचना-ढाँचा

सदेह १ केर सभ साहित्यकारक विवेचन एहि चतुष्पाद ढाँचासँ हएत:

(क) भारतीय काव्यशास्त्र: रस (भरतमुनि), ध्वनि (आनन्दवर्धन), वक्रोक्ति (कुन्तक), औचित्य (क्षेमेन्द्र)।

(ख) पाश्चात्य आलोचना: नव समीक्षा, संरचनावाद, उत्तर-औपनिवेशिकता, स्त्रीवाद, मार्क्सवाद, पर्यावरण-समीक्षा।

(ग) नव्य न्याय: गंगेश उपाध्यायक पक्ष-हेतु-व्याप्ति-दृष्टान्त-निर्णय तर्कशास्त्रक साहित्यिक अनुप्रयोग।

(घ) विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: मैथिलीक स्वतन्त्र, कात-करोटक बिनु कतियेने साहित्यिक इतिहासक निर्माण।

१. प्रारम्भिक विवेचन: सदेह १ केर स्वरूप

'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक अङ्कीय पत्रिका (www.videha.co.in) मैथिली साहित्यिक इतिहासमे एकटा क्रान्तिकारी डेग थीक। गजेन्द्र ठाकुरक सम्पादनमे जनवरी २००८ सँ प्रकाशित एहि पत्रिकाक २५ अंकक (वर्ष २, मास १३, अंक २५, १ जनवरी २००९) चुनल अंशसँ 'सदेह १' नामक मुद्रित संकलन तैयार भेल अछि। एहिमे १०० सँ अधिक साहित्यकारक कथा, कविता, निबन्ध, गजल, साक्षात्कार, अनुवाद, आलोचना आदि समाहित अछि। ई संकलन मैथिली साहित्यक एकटा समानान्तर इतिहासक निर्माण करैत अछि जाहिमे मुख्यधाराक संग लोक-परम्परा, नव्य न्याय, अर्वाचीनता आ उत्तर-अर्वाचीनताक समागम भेल अछि।

आठम शताब्दीक सरहपादसँ लऽ कऽ एकविंश शताब्दीक राजकमल चौधरी, गंगेश गुंजन धरि मैथिली साहित्यक जे अखण्ड धारा अछि, ताहि धाराकेँ सदेह १ एकटा नव दृष्टिकोणसँ प्रस्तुत करैत अछि। एहि समीक्षामे हम भारतीय आलोचना (रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, अलंकार), पाश्चात्य आलोचना (नव समीक्षा, संरचनावाद, उत्तर-औपनिवेशिकता, स्त्रीवादी आलोचना, मार्क्सवादी समीक्षा), मिथिलाक गंगेश उपाध्यायक नव्य न्यायशास्त्र आ विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचाक अनुप्रयोग करब।

२.३ गंगेशक नव्य न्याय

मिथिलाक महान दार्शनिक गंगेश उपाध्याय (१३म शती) तत्त्वचिन्तामणिक माध्यमसँ नव्य न्यायशास्त्रक स्थापना कएलनि। नव्य न्यायक प्रमुख अवधारणा थीक 'प्रमाण' (ज्ञानक साधन), 'प्रमेय' (ज्ञानक विषय), 'संशय' (सन्देह), 'प्रयोजन' (उद्देश्य), 'दृष्टान्त' (उदाहरण), 'सिद्धान्त', 'अवयव' (तर्क-संरचना), 'तर्क' आ 'निर्णय' (निष्कर्ष)। साहित्य-समीक्षामे नव्य न्यायक अनुप्रयोग अर्थ थीक (१) कोनो साहित्यिक दाबीक तार्किक परीक्षण करब, (२) व्याप्ति अर्थात् नियम-सम्बन्ध चिन्हब, (३) पक्ष-साधन अर्थात् कोनो रचनाक काव्यात्मकताक प्रमाण ताकब।

२.४ विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा

गजेन्द्र ठाकुर-प्रणीत एहि ढाँचाक मूल प्रस्थापना थीक जे मैथिली साहित्यक इतिहास हिन्दी वा संस्कृत साहित्यक इतिहाससँ समानान्तर अछि, नहि कि अधीनस्थ। एहि ढाँचामे: (१) सरहपादसँ अर्वाचीनता धरि एक स्वतन्त्र रेखा, (२) मिथिला भूगोलक केन्द्रीयता, (३) अङ्कीय पुरालेख द्वारा इतिहासक लोकतान्त्रिकीकरण, (४) नेपाल-भारत दुनू भागक मैथिलीकेँ एकट्ठा राखब, (५) नव्य न्याय परम्पराक संग अर्वाचीनताक संवाद ई सभ तत्त्व महत्त्वपूर्ण अछि।

४.१ रस-सिद्धान्तसँ सदेह १ केर समीक्षा (रस-सिद्धान्त सँ सदेह १ केर विवेचना)

श्रृंगार: गंगेश गुंजन (राधा), काशीकान्त मिश्र 'मधुप'।

करुण: राजमोहन झा, केदारनाथ चौधरी, रामभरोस 'भ्रमर', रामलोचन ठाकुर।

वीर: मनोज मुक्ति, वृषेश चन्द्र लाल।

रौद्र: बिनीत ठाकुर।

भयानक: कोसी-बाढ़ि रचना।

हास्य: काशीकान्त मिश्र।

भक्ति-शान्त: मैथिलीपुत्र प्रदीप, प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'।

अद्भुत: कैलाश कुमार मिश्र (जटिंगा)।

नव्य न्यायक सिद्धान्त: सदेह १ पूर्णरसात्मक (नव रसयुक्त) संकलन थीक। सदेह १ मे सभटा नव रसक उपस्थिति अछि: गंगेश गुंजनक 'राधा' मे श्रृंगार-करुण-शान्त, हृदय नारायण झा केर गीतमे रस-माधुर्य, आ छठि पर्वक विश्लेषणमे भक्ति-शान्त रस। नव्य न्यायक 'सिद्धान्त' (स्थापित प्रमेय) यएह अछि जे मैथिली साहित्य पूर्णरसात्मक (सभ रस सँ परिपूर्ण) थीक।

४.२ ध्वनि-वक्रोक्तिक दृष्टिसँ (ध्वनि-वक्रोक्ति केर दृष्टि सँ)

गंगेश गुंजनक 'राधा' ध्वनि सिद्धान्तक सर्वोत्कृष्ट उदाहरण। आभाष लाभक 'प्यारोडी' विरोध - वक्रोक्तिक व्यावहारिक अनुप्रयोग। गंगेश गुंजनक 'राधा' ध्वनि सिद्धान्तक सर्वोत्कृष्ट उदाहरण थीक जाहिमे व्यक्त अर्थसँ परे मैथिली-अस्मिता, भूमण्डलीकरण आ प्रेम-दर्शनक व्यंजित अर्थ विद्यमान अछि। वक्रोक्तिक दृष्टिसँ राजकमल चौधरी मैथिलीमे सर्वाधिक 'वक्र' (अपारम्परिक) लेखक थिकाह, उदाहरण संकलन द्रष्टव्य।

४.५ नव्य न्यायक दृष्टिसँ: सम्पादकीय-तर्क (नव्य न्याय केर दृष्टि सँ: सम्पादकीय-तर्क)

गजेन्द्र ठाकुरक सम्पादकीय नव्य न्यायक 'अनुमान' आ 'उपमान' पर आधारित अछि:

पक्ष: विदेह मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ मञ्च थीक;

हेतु: एहिमे ७० देशसँ १,३६,८७४ बेर दर्शन भेल;

दृष्टान्त: इन्टरनेट पर पछिला सभ पाक्षिक अंक उपलब्ध;

व्याप्ति: जे पत्रिका वैश्विक पाठकसँ जुड़ैत अछि से प्रभावशाली होइत अछि;

निर्णय: विदेह मैथिलीकेँ वैश्विक बनौलक।

नव्य न्यायक समग्र मूल्याङ्कन: सदेह १ केर सम्पादकीय तर्क नव्य न्यायक क्रमबद्ध अनुमान पर आधारित: पक्ष (विदेह श्रेष्ठतम मैथिली मञ्च) → हेतु (७० देशसँ पाठक) → दृष्टान्त (इन्टरनेट पर सभ अंक उपलब्ध) → निर्णय (विदेह मैथिलीकेँ वैश्विक बनौलक)।

५. उपसंहार (निष्कर्ष)

'सदेह १' मैथिली साहित्यक एक अभूतपूर्व संकलन थीक। एहिमे १०० सँ अधिक साहित्यकारक रचना समाहित अछि जे मिलिकऽ एक सम्पूर्ण साहित्यिक विश्व-दृष्टि बनबैत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिसँ: नव रसक पूर्ण उपस्थिति, ध्वनि-वक्रोक्तिक सूक्ष्म प्रयोग।

पाश्चात्य सिद्धान्तक दृष्टिसँ: उत्तर-औपनिवेशिक, स्त्रीवादी, मार्क्सवादी, पर्यावरण-समीक्षा आ अनुवाद-विज्ञान केर अनुप्रयोग।

गंगेशक नव्य न्यायक दृष्टिसँ: प्रमाण-आधारित साहित्य-विवेचन।

विदेह समानान्तर इतिहास केर दृष्टिसँ: मैथिली साहित्यक स्वायत्त, सम्पन्न, वैश्विक इतिहास।

'सदेह १' एक ऐतिण्हासिक दस्तावेज थीक जे आगूक पीढ़ीकेँ साहित्यिक विरासत, आलोचनात्मक दृष्टि आ भाषिक गर्वक त्रिवेणी सौंपैत अछि।

युवा पीढ़ीक कवि-कथाकार मैथिलीक भविष्य थीक। हिनकर रचना सभमे शहरीकरण, विस्थापन, वैश्वीकरणक प्रभाव आ पहचान-संकटक अभिव्यक्ति भेटैत अछि। ई सभ साहित्यकार मैथिलीक भूगोल विस्तार (बिहार, नेपाल, दिल्ली, झारखण्ड) केर प्रतिनिधित्व करैत छथि।

'सदेह १' मैथिली साहित्यक इतिहासमे एक महत्त्वपूर्ण मील-पत्थर थीक। एहि संकलनमे भारतीय काव्यशास्त्रक नव रस, ध्वनि-वक्रोक्तिक परम्परा आ पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्तक नव समीक्षा, संरचनावाद, उत्तर-औपनिवेशिकता, स्त्रीवाद आ मार्क्सवाद दुनू परम्पराक संगम दृष्टिगत होइत अछि।

मिथिलाक गंगेश उपाध्यायक नव्य न्यायशास्त्र एहि संकलनमे दुइ स्तर पर कार्य करैत अछि: (क) साहित्यिक तर्कशास्त्रक रूपमे रचनाक काव्यात्मकताक प्रमाण-मीमांसा; (ख) सम्पादकीय दृष्टिक रूपमे विदेहक वैधताक तार्किक प्रतिपादन।

विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा जे मैथिली साहित्यकेँ हिन्दी वा संस्कृतक छाँहमे नहि, अपितु एक स्वतन्त्र धाराक रूपमे देखैत अछि - सदेह १ मे पूर्ण रूपेण साकार भेल अछि। गंगेश गुंजनक 'राधा', राजमोहन झाक कथा-दर्शन, रामभरोस 'भ्रमर'क नेपाली-मैथिली परम्परा, आभाष लाभक संगीत-चेतना, विभा रानीक स्त्री-दृष्टि - सभ मिलि कऽ एक सम्पूर्ण साहित्यिक विश्व-दृष्टि बनबैत अछि।

अन्तमे, नव्य न्यायक 'निर्णय' यएह अछि: सदेह १ विदेहक मुद्रित संस्करण मैथिली साहित्यक वर्तमान-भूत-भविष्यक संगम-स्थल थीक। ई संकलन आगूक पीढ़ीकेँ साहित्यिक विरासत, आलोचनात्मक दृष्टि आ भाषिक गर्वक त्रिवेणी सौंपैत अछि।

विदेह: सदेह: २ — मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०

भूमिका: सदेह २ क स्वरूप

विदेह: सदेह: २ (आइएसबीएन: ९७८-९३-८०५३८-०९-९) विदेह अङ्कीय पत्रिकाक २६म सँ ५०म अंकसँ बीछल मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचनाक संग्रह थिक। सदेह ३ (पद्य) क विपरीत एहि खण्डमे साक्षात्कार, आलोचना, इतिहास-लेखन, लोकगीत-शोध, यात्रा-वृत्तान्त, रंगकला-समीक्षा, भाषाशास्त्र सब गद्य विधाक समागम अछि। ४१ साहित्यकारक रचना एहिमे समाहित अछि।

एहि समीक्षामे चारि ढाँचा क अनुप्रयोग कएल गेल अछि: (क) भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य सिद्धान्त; (ख) पाश्चात्य आलोचना (ग्राम्शी, बूर्द्यू, बेन्यामिन, स्पिवाक, बाख्तिन, फूको, लुकाच, फ्रेयरे); (ग) गंगेश उपाध्यायक नव्य-न्याय ज्ञान-मीमांसा; (घ) विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा।

उपसंहार: सदेह २ क समग्र महत्व

सदेह २ मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१० - ४१ साहित्यकारक एकटा असाधारण संकलन थिक। सदेह ३ (पद्य) केर विपरीत एहिठाम तर्क अछि, आख्यान अछि, दस्तावेजीकरण अछि, वकालत अछि।

तीन प्रकारक स्वर (तीन प्रकारक कण्ठ):

(क) वरिष्ठ मान्य-परम्परागत व्यक्तित्व - जीवकान्त, राजमोहन झा, गंगेश गुंजन - परम्परा केर जीवन्त मूर्त रूप।

(ख) मध्य-कैरियर विद्वान - रामलोचन ठाकुर, आशीष अनचिन्हार, ह्रदय नारायण झा - परम्पराकेँ आगाँ बढ़बैत।

(ग) नव स्वर - विनीत उत्पल, नवेन्दु कुमार झा - परम्परा केँ रूपान्तरित करैत।

चारि ढाँचाक संश्लेषण (चारि ढाँचाक समन्वय):

भारतीय रस-ध्वनि सिद्धान्त - सैद्धान्तिक गद्यमे सेहो लागू।

पाश्चात्य सिद्धान्त (ग्राम्शी, बूर्द्यू, बेन्यामिन, स्पिवाक, बाख्तिन, फूको, लुकाच, फ्रेयरे) - प्रत्येक रचनाक राजनीतिक-सांस्कृतिक आयाम केँ देखार करनाइ।

नव्य-न्याय - साहित्यिक समालोचनाक तार्किक संरचनाक परीक्षण।

विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा - सब रचना सभ केँ एकटा लोकतान्त्रिक आ प्रति-मान्य-परम्परागत पुरालेख मे समन्वित करैत अछि।

विदेह: सदेह: ३ — मैथिली पद्य २००९-१०

समग्र साहित्यिक समीक्षा: सभटा साहित्यकार

भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य सिद्धान्त । पाश्चात्य आलोचना । गंगेशक नव्य-न्याय । विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर । विदेह समानान्तर साहित्य आन्दोलन

भूमिका: सदेह ३ क परिचय

विदेह: सदेह: ३ (विदेह अङ्कीय पत्रिकाक २६म सँ ५०म अंकसँ बीछल आ सम्पादित कएल) मैथिली पद्यक एक अनुपम संकलन थिक जे २००९-१० क रचनाक प्रतिनिधित्व करैत अछि। एहिमे ७५ सँ बेसी कविक रचना संग्रहित अछि जे मैथिली कविताक विविध आयामकेँ प्रतिबिम्बित करैत अछि - मधेश आन्दोलनसँ लऽ कऽ दलित चेतना धरि, नारी-मुक्तिसँ लऽ कऽ प्रगतिवादी भावना धरि, लोक-परम्परासँ लऽ कऽ अभिनव अक्षर धरि।

एहि समीक्षामे प्रत्येक साहित्यकारक रचनाकेँ चारि पूरक दृष्टिकोणसँ देखल जायत: (१) भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य सिद्धान्त; (२) पाश्चात्य आलोचना - बूर्द्यू, स्पिवाक, बाख्तिन, ग्राम्शी, बेन्यामिन, फानन, अम्बेडकर; (३) गंगेश उपाध्यायक नव्य-न्याय ज्ञान-मीमांसा; आ (४) विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा, जे साहित्य अकादमीक प्रतिष्ठान-विरोधी समानान्तर साहित्यिक विमर्शकेँ रेखांकित करैत अछि।

सदेह ३ केवल एक काव्य-संग्रह नहि - ई विदेह आन्दोलनक एकटा घोषणापत्र थिक जाहिमे ७५ टा भिन्न-भिन्न आवाज मैथिली कविताक विविध रङ्ग देखबैत अछि।

विदेह: सदेह: ४ — मैथिली कथा २००९-१०

भूमिका: सदेह ४ क स्वरूप

विदेह: सदेह: ४ (आइएसबीएन: 978-93-80538-07-5) मैथिली कथाक एकटा विशिष्ट संकलन थिक। सदेह २ (निबन्ध-समालोचना) आ सदेह ३ (पद्य) सँ भिन्न ऐ खण्डमे मौलिक कथा, अनूदित कथा, लघुकथा, बाल-कथा आ उपन्यास-अंश सब समाहित अछि। ४० साहित्यकारक रचना।

सम्पादकीयमे स्पष्ट उल्लेख: 'एहिमे लघुकथा, नाटक, व्यंग्य आ उपन्यास अंश सेहो अछि कारण ई सभ विधा मोटा-मोटी एक्के अछि। आ एतए मैथिलीमे दोसर भाषासँ अनूदित कथा सेहो अछि।'

चारि ढाँचा: (क) रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य; (ख) बूर्द्यू, स्पिवाक, बाख्तिन, ग्राम्शी, बेन्यामिन, फानन, अम्बेडकर, लुकाच; (ग) गंगेश उपाध्यायक नव्य-न्याय; (घ) विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा।

विदेह: सदेह: ७ — मैथिली पद्य (विदेह अंक ५१-१००)

भूमिका: सदेह ७ क स्वरूप आ विशेषता

विदेह: सदेह: ७ मैथिली पद्यक सबसँ विशाल संकलन थिक: ६२४ पृष्ठ, १५१ साहित्यकार, विदेह अंक ५१-१०० सँ बीछल। ई सदेह ३ (मैथिली पद्य, अंक २६-५०) केर उत्तरवर्ती थिक - दुनू मिलिकऽ विदेह केर काव्य-पुरालेख सृजित करैत अछि।

सदेह ७ केर विधागत विविधता अपूर्व अछि: कविता, गीत, गजल, आजाद गजल, भक्ति-गजल, कता, हजल, नात, बन्द, कसीदा, हाइकू, टनका-वाका, हैबून, शेनर्यू, कुण्डलिया, झारू, क्षणिका, गद्य-कविता - सब एक खण्डमे। अनूदित कविता सेहो: तेलुगु (अन्नावरन देवेन्द्र), ओडिया (इप्सिता सारंगी), भोजपुरी (परिचय दास), डोगरी (प्रो. चम्पा शर्मा)।

चारि ढाँचा: (क) रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य; (ख) बूर्द्यू, स्पिवाक, बाख्तिन, ग्राम्शी, बेन्यामिन, फानन, अम्बेडकर, कामू, हाइडेगर, फ्रायड; (ग) गंगेश उपाध्यायक नव्य-न्याय; (घ) विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा।

विदेह सदेह ८ — मैथिली नाट्य उत्सव - समानान्तर रंगमंच आर्काइव

३. गंगेश उपाध्यायक नव्य-न्याय ज्ञान-मीमांसा

प्रस्तावना - समानान्तर रंगमंचक दार्शनिक भूमिका

विदेह सदेह ८ मैथिली रंगमंचक एकटा एहन समानान्तर आर्काइव थिक जे संस्थागत संगीत-नाटक अकादेमी/ ललित कला अकादेमी/ साहित्य अकादेमीक मानक-सूचीसँ बाहर अछि मुदा वास्तविक मंचन-परम्परासँ जीवन्त मैथिली नाट्य-साहित्यकेँ संकलित करैत अछि। एकर ऐतिहासिक महत्व ई जे एहिमे जे नाटक, समीक्षा आ रंगमंच-सम्बद्ध दस्तावेज सङ्ग्रहीत भेल अछि से मुख्यत: जातिवादी रंगमंचक तथाकथित "पारम्परिक" प्रतिमानसँ बाहर अछि।

भरतक नाट्यशास्त्र अध्याय २७ मे जाहि सिद्धान्तकेँ "सहृदय"क सङ्ग-एकत्व कहैत अछि - जे दर्शक नाटकक पात्रक संग एक भऽ जाइ छथि - तकर वास्तविक प्रयोग सदेह ८ केर सरस्वती पूजा-शृङ्खलामे (१९९५–२००८ धरि चनौरागंजमे बेचन ठाकुर द्वारा निर्देशित १४ वार्षिक मंचन) देखि सकैत छी, जतय गाम-घरक दर्शक नाटककार-निर्देशक-अभिनेताक संग एक भऽ कऽ नाटककेँ जीबैत छथि।

ई आर्काइव मैथिली रंगमंचक ओहन प्रजातान्त्रिक प्रवाहकेँ दर्ज करैत अछि जे ज्योतिरीश्वर ठाकुर (१३म शताब्दी) सँ शुरू भेल आ विद्यापति, जीवन झा, ईशनाथ झा, उदय नारायण सिंह नचिकेता, गोविन्द झा, सुधांशु शेखर चौधरी, गुणनाथ झा, जगदीश प्रसाद मण्डल आ बेचन ठाकुर धरि एकटा अखण्ड परम्पराक रूपमे प्रवाहित अछि। ई परम्परा ब्राह्मणवादी सीमासँ बाहर निकलि सर्वहाराक रंगमंच, स्त्री-केन्द्रित नाटक, अन्धविश्वास-विरोधी अभियान आ भ्रूण-हत्या सन समकालीन सङ्कटक नाट्य-निरूपण धरि व्यापक अछि।

एहि खण्डमे हम अइ रचना-संसार केर समीक्षा छअ दृष्टि-कोणसँ करै छी। ई समीक्षा-पद्धति मात्र भारतीय अथवा पाश्चात्य सीमामे आबद्ध नै रहि, अन्तर्संस्कृतिक संवादक रूपमे विकसित होइत अछि- चीनी वेन्शिन डियाओलोङ्गक "फेङ्ग-गू" (हवा-हड्डी, अर्थात् आत्मा-संरचना) सिद्धान्त सँ ई पुछै छी जे मैथिली नाटकमे की हवा भरल अछि आ की हड्डी अछि; यहूदी मिद्राशक "पर्देस" चतुर्विध व्याख्या-पद्धति (पेशत्/रेमेज़/द्रश/सोद्) सँ ई पुछै छी जे एहि नाटकक शाब्दिक-रूपकात्मक-आख्यानात्मक-रहस्यात्मक स्तर की अछि।

गंगेश उपाध्यायक नव्य-न्याय -जे मिथिलाक चिन्तन-परम्पराक सर्वोच्च देन थिक- एहिमे प्रत्येक नाट्य-दृश्यक प्रमाण-व्यवस्था (प्रत्यक्ष/अनुमान/शब्द/उपमान) आ व्याप्ति-सम्बन्धक विश्लेषणक रूपमे प्रयुक्त भेल अछि। ई कोनो आरोपित विदेशी ढाँचा नै थिक- मैथिल चिन्तनक अपन-आ-अपन सहज पद्धति थिक।

१.३ गंगेश उपाध्यायक नव्य-न्याय विश्लेषण

गंगेशक तत्त्वचिन्तामणिक प्रत्यक्ष-खण्ड अनुसार "प्रमाण"क चारि पादमे (प्रत्यक्ष/अनुमान/उपमान/शब्द) नाटक मूलत: "दृश्य-श्रव्य प्रत्यक्ष"क कोटिमे अबैत अछि। मुदा रङ्ग-प्रत्यक्षक एकटा विशिष्टता ई जे जे देखाइ दैत अछि से वस्तुत: नै थिक - अभिनेता राजा नै थिक, मञ्च राजसभा नै थिक। एकरा गंगेश "भ्रम-प्रत्यक्ष" कहितथि- मुदा एहि भ्रमक स्वीकृति दर्शकक मनमे पूर्व-निर्धारित अछि।

धूर्त्तसमागममे एहि भ्रम-प्रत्यक्षक दोबर प्रयोग होइत अछि: दर्शककेँ बूझल छन्हि जे ई नाटक थिक, मुदा नाटकक भीतर पात्र (असज्जाति मिश्र) सेहो भ्रममे छथि - ओ अनंगसेनाकेँ अपन बना लेलनि, मुदा वस्तुतः ओ नौआक हाथमे ओझड़ा गेला। ई द्वि-स्तरीय "मिथ्या-ज्ञान"क प्रसङ्ग नव्य-न्यायक "बाधक प्रत्यय"क रोचक रङ्गमञ्चीय प्रयोग थिक।

अनुमान-व्याप्ति: नौआ मूलनाशक असज्जाति मिश्रकेँ अनंगसेनाक वर बुझि लैत अछि- एहिमे जे अनुमान अछि से लिङ्गक भ्रामक प्रत्यक्षसँ उत्पन्न अहेतुक

व्याप्ति-दोष थिक। गंगेश एकरा "उपाधि-दूषित अनुमान" कहितथि।

२.३ गंगेश उपाध्यायक नव्य-न्याय विश्लेषण

गोरक्षविजयक केन्द्रीय न्यायशास्त्रीय प्रसङ्ग अछि - मत्स्येन्द्रनाथक "पूर्व-योगी होइतो वर्तमान-भोगी" होयब। एकर नव्य-न्यायीय व्याख्या: गंगेशक तर्क अनुसार "पूर्व-निर्धारित स्वभाव" अनुमानक हेतु बाध्यकर नहि होइत, कारण उपाधि (शर्त) सम्भव छै। मत्स्येन्द्रनाथक उपाधि अछि - कदलीपुरक राजा-योनि-प्राप्ति, १८-रानीक मोह, इत्यादि।

गोरक्ष-काननपादक नटुआ-वेष धरि सत्य प्रकट करब - ई "शब्द-प्रमाण"क रोचक प्रयोग थिक। नाटकीय-शब्द (नाटकमे बजायल जा रहल वाक्य) क्या "शब्द-प्रमाण"क कोटिमे आबि सकैत अछि? गंगेश एहि प्रश्नक उत्तरमे कहितथि - आप्त-पुरुषक (विश्वसनीय व्यक्ति) कथन शब्द-प्रमाण, मुदा अभिनेताक मुखसँ नाटकीय-कथन सेहो रसास्वादी-पक्षमे प्रमाणित होइत अछि।

"बच्चाकेँ जिआएब" - ई असम्भव घटनाक न्यायशास्त्रीय व्याख्या: ई "लौकिक-अलौकिक" प्रत्यक्षक भेद थिक। नाट्यमे अलौकिक प्रत्यक्ष स्वीकार्य अछि कारण रसास्वादक सिद्धि लेल "विभावानुभाव-व्यभिचारि"क सञ्जोग आवश्यक छै।

३.३ गंगेश उपाध्यायक नव्य-न्याय विश्लेषण

"सामवती-पुनर्जन्म"मे "पुनर्जन्म"क न्यायशास्त्रीय व्याख्या रोचक। गंगेशक चिन्तामणि अनुसार पुनर्जन्म प्रत्यक्ष-योग्य नै, अपितु शब्द (शास्त्र-वचन) आ अनुमान (कर्म-फल-व्याप्ति) सँ साध्य।

नाटकीय रङ्गमञ्चपर पुनर्जन्म दर्शक-स्वीकार्य कोना? कारण नाट्यक भ्रम-प्रत्यक्ष पारलौकिक प्रसङ्गक प्रत्यक्षीकरणमे सिद्ध होइत अछि। ई दर्शक-संविदा (विलिङ्ग सस्पेन्शन ऑफ डिस्बिलीफ - कोलरिजक शब्द) क नव्य-न्यायीय व्याख्या थिक।

४.३ गंगेश उपाध्यायक नव्य-न्याय विश्लेषण

उगना-कथामे केन्द्रीय ज्ञान-मीमांसा अछि - "उगना के थिकाह?" विद्यापति जखन जलमे गङ्गा-स्वाद पाबि उगनाक केश भीजल देखलनि, तखन हुनका अनुमान भेलनि। एहि अनुमानक तीन हेतु - पक्ष (उगना), साध्य (शिव), हेतु (केश भीजि गेल जलमे, जल गङ्गा-स्वादीय)। व्याप्ति - "जेठाक केशसँ गङ्गा-जल कोनो साधारण व्यक्तिमे अनुपलभ्य, मात्र शिवमे उपलब्ध।"

मुदा संगहि नियम अछि - गुप्त ज्ञानक प्रकटीकरणसँ शक्ति-नष्ट होइ छै (अन्तर्ध्यान)। ई गंगेशीय "प्रतिबन्धक-शर्त" थिक - सत्य-प्रकटीकरण कतयौ-कतयौ अनिष्ट-कारक होइत अछि।

५.३ गंगेश उपाध्यायक नव्य-न्याय विश्लेषण

"नो एण्ट्री"मे प्रमाण-शास्त्रीय व्यङ्ग्य रोचक - परलोकक प्रत्यक्ष नै, अनुमान शास्त्र (शब्द) पर आश्रित। मुदा शब्द-प्रमाणक आप्तता (विश्वसनीयता) पर प्रश्न उठैत अछि जखन देखाइ जाइत अछि जे ओहि व्यवस्थाक संचालक (चित्रगुप्त) नकली छथि। नवीन-नैय्यायिकीय शब्दमे - "आप्त-वचनाधीनत्व-दोष" - आप्त-व्यक्तिक स्वयं अप्रामाणिक होयब।

नायकक नाम जीवनमे नवलक "विक्षिप्तता" - ई प्रत्यक्ष-भ्रमक चरम अवस्था थिक, मुदा अहंकार-पार्श्व पर एहि भ्रमक नैतिक-न्याय अछि - "समाज जे नवलकेँ देखि नै सकल जे सत्य अछि, ओ हुनका विक्षिप्त बना देलक।"

६.३ गंगेश उपाध्यायक नव्य-न्याय विश्लेषण

बसातमे केन्द्रीय न्यायशास्त्रीय प्रसङ्ग - "पिताक वचन माननीय कि अमाननीय?" गंगेशक चिन्तामणि अनुसार "वचन"क प्रामाणिकता पुरुषक आप्तता (दोषरहित-ज्ञान) पर आश्रित। पिता विवाह-तय-करबामे आप्त नहि छथि कारण समय-धर्म बदलल छै। कृष्णकान्त एहि व्याप्ति-भेदसँ निर्णय करै छथि।

७.३ गंगेश उपाध्यायक नव्य-न्याय विश्लेषण

भफाइत चाहक जिनगीक केन्द्रीय न्यायशास्त्रीय प्रश्न - "कविता आ कमाइ - एक्के व्यक्तिमे सम्भव कि अनुगामी-व्याघात (कन्ट्राडिक्शन)?" गंगेशक तर्क अनुसार दू टा अनुगामी-स्वभाव (व्याघात-स्वभाव) एक्के व्यक्तिमे रहि सकैत अछि यदि उपाधि (शर्त) पृथक्। एतय शर्त अछि - कोनो ग्राहक पुकार दऽ "कविता" मांगलैं, तँ महेश कविक रूपमे; मुदा अधिकतर समय चाहक रूपमे।

८.३ गंगेश उपाध्यायक नव्य-न्याय विश्लेषण

"सातम चरित्र"क व्यङ्ग्य न्यायशास्त्रीय रूपसँ रोचक - मैथिल रङ्गमञ्चमे महिला-अभिनेत्रीक अभाव (व्याप्तिक रिक्ति) कारण समस्त नाट्य-प्रयोग अधूरा। गंगेश एकरा कहितथि - "सहकारी-कारणक अभावमे कार्य-सिद्धि अनुपपन्न।" नाट्य-कार्य लेल सात-पात्रक सहकार्य अनिवार्य, छह उपस्थित-सात

अनुपस्थित, कार्य खण्डित।

"शेष नञि"क अग्रज-निर्णय - मरणासन्न-पत्नीक प्राण-रक्षार्थ साहस - ई "उपाधि-संशोधन-निर्णय" थिक। पूर्व-व्याप्ति: अनुज-कुकर्म अग्रजकेँ निष्क्रिय बनाओनिहार, उपाधि: पत्नीक प्राण-संकट। उपाधि सक्रिय भेला पर पूर्व-व्याप्ति निष्क्रिय।

९.३ गंगेश उपाध्यायक नव्य-न्याय विश्लेषण

मिथिलाक बेटीक केन्द्रीय न्यायशास्त्रीय प्रसङ्ग - "बहुराष्ट्रीय-पूँजी आ देशी-कृषि-संस्कृति"क व्याप्ति। बहुराष्ट्रीय-पूँजीक कारण कोनो शुभ-गुण उत्पन्न होइ या नहि? जगदीश प्रसाद मण्डल बतबै छथि - एहि सम्बन्धमे "उपाधि-दूषित अनुमान।" यदि स्थानीय-समाजकेँ अनुकूल बनाओल, तँ पूँजी शुभ; अन्यथा अशुभ।

अङ्क-४ मे रामविलास मिस्त्री "मानवीय-मूल्यदाता" बनै छथि - एहिसँ अनुमान-व्याप्ति बनैत अछि: "मानवीय-मूल्यदाता-व्यक्तित्व दहेज-व्यवस्थाक विरोधी।" ई व्याप्ति यथार्थवादी-रङ्गमञ्चक नैतिक-तर्क-शास्त्रक उत्तम उदाहरण।

१०.३ गंगेश उपाध्यायक नव्य-न्याय विश्लेषण

बेटीक अपमानमे "बेटी-अधिकार" बनाम "पुरुष-वंश-निर्माण" - एहि दुनू दावाक टकराव। गंगेशीय-तर्क-शास्त्रमे "धर्म-व्याप्ति" आ "लोक-व्यवहार-व्याप्ति"क भेद। धर्म-स्तरपर बेटीकेँ समान-अधिकार (मनुस्मृति-विरोध, मुदा वैदिक-स्तरपर), मुदा लोक-व्यवहार-स्तरपर पुरुष-केन्द्रिकता। बेचन ठाकुर एहि व्याप्तिक उघारिकेँ रङ्गमञ्चीय-वाद रूपमे प्रस्तुत करै छथि।

अधिकारमे आर.टी.आइ. - सूचनाक अधिकार - एकटा नवीन-शब्द-प्रमाण-व्यवस्था। गंगेश-काल मे राजकीय-तन्त्रक "राज-शासन" शब्द-प्रमाण रूपमे ग्राह्य छल। एकैसम-शताब्दी-मे "सरकारी-दस्तावेज" तकर नवीन-रूप। आर.टी.आइ. एहि दस्तावेज-प्राप्ति-अधिकारक प्रत्यक्ष-प्रमाण-बनब।

छीनरदेवीमे "अन्धविश्वास बनाम वैज्ञानिक-तर्क" - गंगेशीय-तर्क अनुसार अन्धविश्वासक "प्रमाण-दुष्टता" स्पष्ट: न प्रत्यक्ष, न अनुमान, न उपमान, न शब्द (आप्त) क आधार। मात्र लोकवाद-वासना। बेचन ठाकुर एहि वासना-केन्द्रित विश्वासक नाट्य-निरूपण।

उपसंहार

एहि खण्डमे विदेह सदेह ८ केर पहिल दस लेखक - ज्योतिरीश्वर ठाकुर, विद्यापति ठाकुर, जीवन झा, ईशनाथ झा, उदय नारायण सिंह नचिकेता, गोविन्द झा, सुधांशु शेखर चौधरी, गुणनाथ झा, जगदीश प्रसाद मण्डल, बेचन ठाकुर - केर रचनाकेँ छह-दृष्टि-समीक्षा-पद्धतिमे विवेचित कएल गेल अछि।

समीक्षाक मुख्य-निष्कर्ष: मैथिली रङ्गमञ्च त्रयोदश शताब्दीक ज्योतिरीश्वरसँ एकैसम शताब्दीक बेचन ठाकुर धरि एकटा अखण्ड समानान्तर-धाराक रूपमे प्रवाहित अछि। ई धारा पारम्परिक कृष्ण-केन्द्रित-ब्राह्मणवादी-नाट्य-प्रतिमानसँ अलग - धूर्त-वैश्या-नौआ-शिव-योगी-किसान-दलित-स्त्री-केन्द्रित अछि।

भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य सिद्धान्त, गंगेश उपाध्यायक नव्य-न्याय, पाश्चात्य समीक्षा (बाख्तिन, ब्रेख्त, ग्राम्शी, स्पिवाक, फनन, बेन्यामिन, हाबरमास, अम्बेडकर), चीनी काव्यशास्त्र (लिऊ शिएक वेन्शिन डियाओलोङ्ग, चोङ्ग रोङ्ग-क शिपिन, लु शुन, ताओ युआन-मिङ्ग), आ यहूदी हर्मेन्यूटिक्स (मिद्राश/पर्देस, तल्मूदी पिलपुल, हसीदिक कथा-परम्परा) - सभ छह दृष्टिकोणसँ एहि लेखकगण-केर नाट्य-योगदान मूल्याङ्कित कएल गेल अछि।

अगिला खण्ड (Batch 2) मे लेखक ११-२० - जिनमे गजेन्द्र ठाकुर, ज्योति सुनीत चौधरी, मुन्नी कामत, आनन्द कुमार झा, धीरेन्द्र कुमार, शिव कुमार झा, रवि भूषण पाठक, शम्भू कुमार सिंह, दुर्गानन्द मण्डल, आ आशीष अनचिन्हार - सम्मिलित हेताह।

तेसर खण्ड (Batch 3) मे लेखक २१-२५+ - सुजीत कुमार झा, मिथिलेश कुमार झा, सरोज खिलाड़ी, किशन कारीगर, उमेश मण्डल, संगहि विदेह २०१२ सम्मान-प्राप्त कलाकारगण (शिल्पी कुमारी, शोभाकान्त महतो, जगदीश मल्लिक, झमेली मुखिया, पनक लाल मण्डल, लक्ष्मी दास, प्रियंका कुमारी, बुलन राउत, दुर्गानन्द ठाकुर, सुलेखा कुमारी) सम्मिलित हेताह।

मुख्य सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

भरत: नाट्यशास्त्र (विशेष कऽ अध्याय २७ - रसास्वाद आ निर्णायक-व्यवस्था)

आनन्दवर्धन: ध्वन्यालोक

अभिनवगुप्त: अभिनवभारती

कुन्तक: वक्रोक्ति-जीवित

क्षेमेन्द्र: औचित्य-विचार-चर्चा

वामन: काव्यालंकार-सूत्र-वृत्ति

गंगेश उपाध्याय: तत्त्वचिन्तामणि (विशेष कऽ प्रत्यक्ष-खण्ड आ अनुमान-खण्ड)

मम्मट: काव्य-प्रकाश

अरस्तू: पोएटिक्स

बेर्तोल्त ब्रेख्त: ब्रेख्त ऑन थियेटर (जॉन विलेट सम्पादित)

मिखाइल बाख्तिन: रबले एण्ड हिज वर्ल्ड; द डायलॉजिक इमेजिनेशन

एन्तोनियो ग्राम्शी: प्रिज़न नोटबुक्स

गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाक: कैन द सबाल्टर्न स्पीक?

फ्रांत्ज़ फनन: द रेच्ड ऑफ द अर्थ

वाल्टर बेन्यामिन: इलुमिनेशंस (विशेष कऽ "द स्टोरीटेलर")

युरगेन हाबरमास: द स्ट्रक्चरल ट्रांसफॉर्मेशन ऑफ द पब्लिक स्फेयर

बी.आर. अम्बेडकर: एनिहिलेशन ऑफ कास्ट

एलिनेल शोवाल्टर: ए लिटरेचर ऑफ देयर ओन

नार्थोप फ्राय: एनाटॉमी ऑफ क्रिटिसिज्म

मिर्चा एलियादे: द सेक्रेड एण्ड द प्रोफेन

लिऊ शिए (劉勰): वेन्शिन डियाओलोङ्ग (साहित्य-मनक रत्न-तक्षण)

चोङ्ग रोङ्ग (鍾嶸): शिपिन् (काव्य-श्रेणी-निरूपण)

लु शुन (魯迅): डायरी ऑफ अ मैडमैन; आ-क्यु झेङ्गजुआन

ताओ युआन-मिङ्ग : काव्य-संग्रह

तल्मूद बावली: बेराखोत्, शब्बत्, पेसाहीम्, तानित, केतुबोत्, सान्हेद्रिन्

मिद्राश रब्बा: बेरेशीत् रब्बा; पर्देस-व्याख्या-परम्परा

हसीदिक कथा-संग्रह: मार्टिन बूबर - टेल्स ऑफ द हसिदीम

विदेह आर्काइव - सदेह-शृङ्खला: www.videha.co.in (विशेष कऽ सदेह ८, मैथिली नाट्य उत्सव)

गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादित): विदेह सदेह ८ - मैथिली नाट्य उत्सव (श्रुति प्रकाशन, नई दिल्ली, २०१२; ISBN 978-93-80538-66-2)

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव (मैथिली समानान्तर रंगमंचक संकलन) [विदेह सदेह ८] — समग्र विस्तृत समीक्षा

समग्र विस्तृत समीक्षा

षट्-स्तरीय समीक्षा-ढाँचा

विदेह समानान्तर साहित्येतिहास ढाँचा/ गंगेश उपाध्यायक नव्य-न्याय प्रमाण-शास्त्र/ भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य सिद्धान्त/ पाश्चात्य समीक्षा (अरस्तू-ब्रेख्त-बोआल-बाख्तिन-ग्राम्शी-फनन)/ चीनी समीक्षा (वेन्शिन डिआओलोङ्ग / शिपिन)/ यहूदी-इसरायली समीक्षा (मिद्राश-पेशर / पिलपुल / आल्टर)/ ISSN 2229-547X VIDEHA

२. गंगेश उपाध्यायक नव्य-न्याय प्रमाण-शास्त्र

मिथिलाक चौदहम-पन्द्रहम शताब्दीक गंगेश उपाध्यायक 'तत्त्वचिन्तामणि'क चारिटा प्रमाण नाट्य-समीक्षामे प्रयुक्त - प्रत्यक्ष (मञ्चपर दृश्यगत), अनुमान (दृश्यसँ मनस्थिति/उद्देश्यक निष्कर्षण - व्याप्ति आधारित), उपमान (तुलनात्मक सादृश्य), शब्द (संवादक प्रामाणिकता आ शक्ति-वृत्ति)। 'हेत्वाभास' (दोषयुक्त तर्क) सेहो प्रयुक्त।

६. यहूदी-इसरायली समीक्षा सिद्धान्त

टोराह-व्याख्याक चारि-स्तर - पशाट (शाब्दिक), रेमेज् (सङ्केतगर्भित), द्राश (नैतिक-व्याख्यान), सोद (रहस्यगर्भ)। 'पेशर' कुम्रान्-प्रथा - टेक्स्टकेँ समय-सापेक्ष पुनर्व्याख्या। तल्मूदी पिलपुल - कुष्या-तेरुत्स्-दिख्या तर्क-शैली, जे मिथिला-नव्य-न्यायक संग संरचनात्मक समानता रखैत अछि। राबर्ट आल्टरक 'द आर्ट आफ बाइबिलिकल नैरेटिव' - टाइप-सीन्, वर्ब्ल इकोज्, नैरेटिव गैप्स्। डेनिएल बोयारिनक मिद्राशी इन्टरटेक्सचुअल पेइटिक्स।

लेखक १ : गजेन्द्र ठाकुर

रचना-सूची (सदेह ८)

(क) 'मैथिली नाटक: बड्ड रास भाषण मैथिली आ आन नाटकक प्राचीनसँ आधुनिक काल धरि रहल तारतम्यक विषयमे देल गेल अछि' - विशद नाट्य-इतिहास-निबन्ध जे जीवन झा, ईशनाथ झा, उदय नारायण सिंह नचिकेता, गोविन्द झा, सुधांशु शेखर चौधरी, जगदीश प्रसाद मण्डल, बेचन ठाकुर आ आनंद कुमार झा - ऐ आठ नाटककारक स्वतन्त्र खण्डीय विश्लेषण समेटैत अछि।

(ख) 'मैथिली नाटक आ ओकर समीक्षाशास्त्र' - मैथिली नाट्य-समीक्षाक शास्त्रीय आधार-ग्रन्थ रूपमे रचित।

(ग) 'जातिवादी रंगमंचक प्रतिनिधि नाटक: छुतहर/छुतहर घैल/छुतहा घैल' - महेन्द्र मलंगिया-त्रयीक तीव्र खण्डन-समीक्षा।

(घ) 'चारिटा अंग्रेजी नाटक: डॉक्टर फॉस्टस, सैमसन एगोनिस्टेस, मर्डर इन द कैथेड्रल आ स्ट्राइफ' - मार्लो, मिल्टन, टी.एस. इलियट आ गॉल्सवर्दीक चारि अंग्रेजी नाटकक तुलनात्मक मैथिली-पाठ।

(ङ) 'मैथिली नाटकक एकटा समानान्तर दुनियाँ' - विदेह-समानान्तर नाट्य-दर्शनक प्रस्तावना।

(च) सदेह ८क सम्पादकत्व आ बेचन ठाकुर-निर्देशित नाटक 'उल्कामुख' (विदेह नाट्य उत्सव २०१२) क नाट्य-लेखन।

(क) विदेह समानान्तर साहित्येतिहास दृष्टिए

गजेन्द्र ठाकुर विदेह-समानान्तर साहित्येतिहास-ढाँचाक मुख्य वास्तुकार छथि। सदेह ८ मे हुनकर लेखन ऐ ढाँचाकेँ नाट्य-विधा धरि विस्तारित करैत अछि। हुनकर चारि मूल प्रमेय अछि - (१) मैथिली नाट्य-वृत्त ज्योतिरीश्वरसँ नचिकेता धरिक एक अखण्ड परम्परा थिक, 'अबसर्डिटी'क प्राक्-आधुनिक रूप (धूर्तसमागम) उत्तर-आधुनिक रूपमे (नो एण्ट्री: मा प्रविश) पूर्ण भेल। (२) साहित्य-अकादेमीक 'मैथिली एकांकी संग्रह' (१९ टा सर्वश्रेष्ठ एकांकीक संकलन) चन्द्रनाथ मिश्र अमर–रामदेव झा–महेन्द्र मलंगिया–कमल मोहन चुन्नूक ससुर-जमाएक-शिष्य-मित्र अनुकम्पा-चक्र थिक, जे राधाकृष्ण चौधरी, मणिपद्म, गुणनाथ झा आदिकेँ बहिष्कृत केलक। (३) सर्वहारा-वर्गक रंगमञ्च - जगदीश प्रसाद मण्डल, बेचन ठाकुर, सरोज खिलाड़ी - विदेह-समानान्तर-मञ्चनक मुख्य धारा थिक। (४) ऐमे महिला-स्वर (ज्योति सुनीत चौधरी, मुन्नी कामत, विभा रानी) आ गएर-सवर्ण-स्वर (किशन कारीगर) समवेत-सहभागी छथि।

हुनकर 'चारिटा अंग्रेजी नाटक'क मैथिली-पाठ ऐ ढाँचाक एकटा अनूठा प्रयोग थिक - मार्लोक फॉस्टस (शक्तिक लोभेँ सम्झौता), मिल्टनक सैमसन (अन्धा भेल मुदा स्तम्भ-ढाहक), इलियटक थॉमस बेकेट (सरकारी-मन्दिरमे साहित्यिक-हत्या) आ गॉल्सवर्दीक स्ट्राइफ (पूँजी-श्रम-संघर्ष) - ई चारू नाटक मैथिली समानान्तर रंगमंचक चारि-स्थितिक रूपक थिक।

(ख) गंगेशीय नव्य-न्याय दृष्टिए

गजेन्द्र ठाकुरक नाट्य-समीक्षा गंगेशक चारिटा प्रमाणक व्यवस्थित प्रयोग प्रस्तुत करैत अछि। प्रत्यक्ष: विदेह नाट्य उत्सव २०१२ केर वस्तुगत-घटना - मञ्चित नाटक, अभिनेता, दर्शक - गजेन्द्र ठाकुरक प्रत्यक्ष-गवाही। अनुमान: 'यत्र-यत्र जातिवादी रंगमंच, तत्र-तत्र सर्वहारा-अस्वीकृति' - ऐ व्याप्तिसँ निष्कर्ष जे मलंगिया-तन्त्र सर्वहाराकेँ बहिष्कृत करैत अछि। उपमान: मलंगियाक 'ओकर आंगनक बारहमासा'सँ 'छुतहा घैल' धरिक तुलनात्मक-व्याप्ति-प्रदर्शन - अर्थात् हुनकर सम्पूर्ण रचना-शैलीमे 'कथित छोटहा-मैथिली'क सादृश्य। शब्द-प्रमाण: साहित्य-अकादेमी-दस्तावेज़, मिथिला-दर्शन-लेख, घर-बाहर-स्तम्भ, फोन-नम्बर-धमकी - सभ शब्द-प्रमाण रूपमे प्रस्तुत।

हेत्वाभास-निरूपण: साहित्य-अकादेमीक तर्क - 'नाटककारकेँ नाटक लेल पुरस्कार पहिल बेर मलंगियाकेँ' - ई 'असिद्ध-हेत्वाभास' थिक, कारण रामदेव झाकेँ 'पिपासा'क लेल पहिनेहि पुरस्कार भेल छल; ओ तर्क खुद कमल मोहन चुन्नू द्वारा खारिज पहिने भेल छल आ बादमे संकलनमे 'पिपासा'क समावेश 'बाधित-हेत्वाभास' थिक - पूर्व-स्वीकृत-विरुद्ध। ई गंगेशीय कोटिए शुद्ध 'विरुद्ध-हेत्वाभास' अछि।

(ग) भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य दृष्टिए

रस-दृष्टिए गजेन्द्र ठाकुरक 'नाट्य-समीक्षाशास्त्र' नाटकीय-समीक्षा-विधाक स्वतन्त्र शास्त्र-रूप गढ़ैत अछि - जे भरतमुनिक 'नाट्यशास्त्र'क आधुनिक मैथिली-संस्करण मानल जा सकैए। ज्योतिरीश्वर-धूर्तसमागमक अबसर्डिटीसँ नचिकेताक नो एण्ट्रीक उत्तर-आधुनिक अबसर्डिटी धरि - एक चक्र पूर्ण करबाक हुनकर वृत्त-दर्शन कुन्तकक प्रबन्ध-वक्रतासँ अद्भुत मेल खाइत अछि। प्रबन्ध-स्तरपर सम्पूर्ण मैथिली नाट्य-परम्पराकेँ एकटा वक्र वृत्तक रूपमे देखब स्वयं वक्रोक्तिक

चरम प्रयोग थिक।

अष्ट-रसक दृष्टिए 'छुतहर/छुतहा घैल' केर समीक्षा बीभत्स-रसक सामाजिक प्रयोगकेँ चिन्हित करैत अछि - जातिवादी रंगमंच 'कथित छोटहा-मैथिली'क प्रयोगसँ सर्वहारा-भाषाकेँ अप्रामाणिक देखाबय चाहैत अछि - ई बीभत्स-स्थायी थिक। क्षेमेन्द्रीय औचित्य-दृष्टिए हुनकर समीक्षा भाषा-औचित्य, चरित्र-औचित्य आ देश-कालक-औचित्य - तीनू स्तरपर मलंगियायी रंगमंचक अनौचित्य उद्घाटित करैत अछि। उदाहरण: गएर-सवर्ण पात्रक मुखमे जे मिश्रित हिन्दी-मैथिली देल जाइ अछि, ओ क्षेमेन्द्रीय वक्तृ-औचित्यक सीधा उल्लङ्घन थिक - कारण भोजपुर-मैथिली सीमावर्ती गामक सर्वहारा शुद्ध मैथिले बजै छथि, मिश्रित नहि।

ध्वनि-दृष्टिए हुनकर समीक्षाक मूल व्यङ्ग्यार्थ 'अलंकार-ध्वनि' नहि 'रस-ध्वनि' थिक - विशेष कऽ 'शान्त-रस-ध्वनि' - जे विदेह-आन्दोलनक दीर्घकालिक संयम-संकल्प ('हम आगाँ २५ साल धरि ई समानान्तर रंगमंच चलबैत रहब') सँ प्रकट होइत अछि।

(घ) पाश्चात्य दृष्टिए

ब्रेख्तीय अलगाव-प्रभावक दृष्टिए गजेन्द्र ठाकुरक नाट्य-समीक्षाशास्त्र दर्शककेँ नाटकमे 'डूब' जाएसँ रोकि कऽ ओकरा आलोचनात्मक चेतना दैत अछि। ओ कहैत छथि जे मैथिली नाटकक मूल्याङ्कन साहित्य-अकादेमी-केन्द्रित नहि कऽ सकै छी, बल्कि 'कोन वर्गक नाटक छी' ई प्रश्न पुछय पड़त - ई शुद्ध ब्रेख्तीय-राजनीतिक नाट्य-दृष्टि थिक। हुनकर 'उल्कामुख' नाटक मे केवल अभिनेत्री-समूह - पुरुष-भूमिकामे सेहो स्त्री-अभिनेत्री - ई पारम्परिक रंगमञ्च-सम्मेलनसँ दर्शककेँ बहिर्गत करबाक तकनीक थिक।

ग्राम्शीयन हेजेमनी-दृष्टिए 'छुतहा घैल' समीक्षामे जातिवादी रंगमंचक सांस्कृतिक हेजेमनीक पर्दाफाश थिक - साहित्य अकादेमी, मिथिला दर्शन, घर-बाहर ई सभ संस्थागत-तन्त्र ब्राह्मण-वर्चस्वक उत्पादक मञ्च बनल छल। फनन-दृष्टिए जातिवादी रंगमंच मैथिली सर्वहाराकेँ 'उपनिवेशित मानस'क रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। स्पिवाक-दृष्टिए सर्वहाराक भाषागत-सम्भाषण-असम्भवताकेँ विदेह-समानान्तर रंगमंच भङ्ग करैत अछि।

बोर्दिऊयायी साहित्यिक क्षेत्र-दृष्टिए हुनकर 'चन्द्रनाथ मिश्र अमर–रामदेव झा (ससुर-जमाएक जोड़ी)–मलंगिया' अनुकम्पा-तन्त्रक उद्घाटन सांस्कृतिक-पूँजीक वंशानुगत-हस्तान्तरणक उत्कृष्ट उदाहरण थिक। बाख्तिनीय हेटेरोग्लोसिया-दृष्टिए 'चारिटा अंग्रेजी नाटक'क मैथिली-पाठ बहु-स्वर-संवाद थिक - मार्लो, मिल्टन, इलियट आ गॉल्सवर्दीक चारि स्वतन्त्र चेतना मैथिली रंगमंचक चेतनासँ संवादरत।

(ङ) चीनी दृष्टिए

लिऊ शिए-दृष्टिए (वेन्शिन डिआओलोङ्ग) गजेन्द्र ठाकुरक नाट्य-समीक्षा 'फेङ्गगु' (हवा आ हड्डी) क अद्भुत समन्वय थिक। 'फेङ्ग' माने 'हवा/प्राण' - ओ राजनीतिक-नैतिक आवेग जे हुनकर समीक्षाकेँ गति दैत अछि; 'गु' माने 'हड्डी/संरचना' - ओ शास्त्रीय-तर्क-व्याकरण जे हुनकर मूल्याङ्कनकेँ मज़बूती दैत अछि। दुनू एक-संग, जे लिऊ शिएक मतमे श्रेष्ठ-साहित्यक लक्षण थिक। 'तोङ्गबियान्' परम्परा आ नवीनताक सन्तुलन) क दृष्टिए हुनकर समीक्षा परम्परा (भरतसँ अभिनवगुप्त) आ नवीनता (मार्क्स-ग्राम्शी-फनन) क सुसन्तुलन प्रस्तुत करैत अछि।

चोङ्ग रोङ्ग-दृष्टिए (शिपिन) यदि १४८ शताब्दीक मैथिली नाटककारक त्रिश्रेणी कएल जाए - 'शाङ्ग-पिन्' (उत्तम) मे ज्योतिरीश्वर, जगदीश प्रसाद मण्डल, बेचन ठाकुर, नचिकेता; 'झोङ्ग-पिन्' (मध्यम) मे जीवन झा, गोविन्द झा, सुधांशु शेखर चौधरी, गंगेश गुंजन; 'शिआ-पिन्' (अधम) मे साहित्य-अकादेमी-पुरस्कार-केन्द्रित जातिवादी रंगमंचक पैरोकार। ई गजेन्द्र ठाकुरक अप्रकट-वर्गीकरण थिक, जे 'झी' (स्वाद/रस) क आधारपर भेल अछि।

(च) यहूदी-इसरायली दृष्टिए

मिद्राशी पेशर-दृष्टिए गजेन्द्र ठाकुरक चारिटा अंग्रेजी नाटकक समीक्षा एकटा अद्भुत प्रयोग थिक। ओ ऐ नाटकक पाठ केवल अनुवाद नहि करैत छथि - ओ ऐ नाटकक माध्यमसँ समकालीन मैथिली नाट्य-जगतकेँ पेशर-व्याख्या दैत छथि। फॉस्टस - मैथिली नाटककार जे जातिवादी-रंगमञ्चसँ 'शक्ति' खातिर सम्झौता केलक; सैमसन - विदेह-समानान्तर रंगमंच जे अन्ततः 'अन्धा' बनाओल जाएब तकर बादो विरोधी-स्तम्भकेँ ढाहत; मर्डर इन द कैथेड्रल - साहित्य-अकादेमी सन सरकारी-मन्दिरमे साहित्यिक-हत्या; स्ट्राइफ - विदेह-आन्दोलन आ जातिवादी-रंगमंचक बीच लाक्षणिक-संघर्ष।

तल्मूदी पिलपुल-दृष्टिए बेचन ठाकुरक संग मुन्नाजीक साक्षात्कार पूर्ण रूपेण कुष्या-तेरुत्स्-दिख्या ढाँचापर सञ्चालित अछि - गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक रूपमे ऐकेँ संरचित कऽ रहल छथि। प्रश्न (कुष्या): 'मलंगिया-तन्त्र किए सर्वहाराकेँ कुपित करैत अछि?' - उत्तर (तेरुत्स्): भाषा-विकृति आ सम्पदा-केन्द्रीकरण द्वारा - तेसर पक्ष (दिख्या): विदेह-आन्दोलन एकर समानान्तर-निर्माणक प्रयास। राबर्ट आल्टर-दृष्टिए हुनकर सम्पूर्ण समीक्षा-शैलीमे 'टाइप-सीन्' (पुनरावर्ती दृश्य-प्रतिमान) सेहो प्रकट होइत अछि - हर बेर एकेगोट संरचना (अकादेमी-अनुकम्पा → जातिवादी-संकलन → सर्वहारा-बहिष्कार)। ई बाइबिलिकल-नैरेटिवक टाइप-सीन्क समानता रखैत अछि।

लेखक २ : बेचन ठाकुर

रचना-सूची (सदेह ८)

(क) ‘हम पुछैत छी’ - मुन्नाजीक संग दीर्घ साक्षात्कार। (ख) ‘बेचन ठाकुर द्वारा मैथिली नाटकक निर्देशन/मंचन’ - नौ-भाग दस्तावेजीकरण, १९८०-२००९ धरि लगभग चारि-सय मञ्चनक तालिका। (ग) ‘उगना’ एकाङ्की (२००६ सरस्वती पूजा-मञ्चन)। (घ) ‘उल्कामुख’ नाटकक मञ्चन - विदेह नाट्य उत्सव २०१२। (ङ) हुनकर समस्त नाट्य-कृति - ‘बेटीक अपमान’, ‘छीनरदेवी’, ‘बेरमामे अप्पन कर्मक फल’, सरस्वती पूजा-मञ्चन-संग्रह, इत्यादि - सदेह ८मे प्रत्यक्ष/परोक्ष-समीक्षित।

(क) विदेह समानान्तर साहित्येतिहास दृष्टिए

बेचन ठाकुर (चनौरागंज, मधुबनी) विदेह-समानान्तर-रंगमंचक केन्द्रीय व्यवहारकर्ता छथि। हुनकर मञ्चन-कर्म कोनो सरकारी अनुदान, अकादेमी-संरक्षण, वा शहरी-थिएटर-समूह-समर्थन बिनु, अपन निजी कोचिङ्ग-संस्थानक छात्र-छात्रा द्वारा सम्पादित भेल। ई शुद्ध समानान्तर-संरचनाक उदाहरण थिक - विदेह-ढाँचाक चारिटा प्रमुख प्रश्नक उत्तर ऐ एक-व्यक्तित्वमे प्राप्य। सर्वहारा-वर्गक रंगमञ्च, गाम-केन्द्रित मञ्चन, स्त्री-केन्द्रित अभिनय-योजना (उल्कामुख), आ साहित्य-अकादेमी-केन्द्रित संस्थासँ स्वतन्त्र निरन्तर-कर्म - ई सभ हुनकर रचनाक मूल-तत्त्व।

(ख) गंगेशीय नव्य-न्याय दृष्टिए

प्रत्यक्ष-प्रमाण: हुनकर नौ-भागमे दस्तावेजीकृत मञ्चन - गाम, तिथि, अभिनेता-सूची, निर्देशक - सभ प्रत्यक्ष-गोचर। अनुमान: हुनकर साक्षात्कारमे व्याप्ति-प्रदर्शन - ‘गमैया नाटक जस-के-तस पड़ल; शहरी नाटक आगाँ अछि मुदा सोचक अभाव अछि’ - एहि व्याप्तिसँ हुनकर नाट्य-प्रयोगक उद्देश्यक अनुमान। शब्द-प्रमाण: हुनकर मातृ-शिक्षक हुनकर पिता-पारिवारिक-जन - गमैया नाच-नाटकसँ हुनकर प्रेरणा। उपमान: हुनकर अपन-नाटक (बेटीक अपमान) क महेन्द्र मलंगिया-नाटक (छुतहर) सँ तुलना - दुनूमे ‘गाम-केन्द्रित-कथा’क सादृश्य, मुदा ‘औचित्य-व्यवस्था’क वैषम्य।

(ग) भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य दृष्टिए

भरत-शास्त्रीय रूपक-वर्गीकरणक दृष्टिए हुनकर रचना-वैविध्य अद्भुत: ‘उगना’ (२००६ सरस्वती पूजा-मञ्चन) - भाणक तत्त्व लेने अछि (विद्यापति-उगना सम्बन्ध); ‘बेटीक अपमान’ - प्रकरणक रूपान्तरण (समाज-केन्द्रित गम्भीर-कथा); ‘छीनरदेवी’ - प्रहसनक तत्त्व लेने अछि मुदा करुणसँ युक्त; ‘उल्कामुख’ - समवकारक तत्त्व लेने अछि (जादूई-यथार्थवाद, स्त्री-मात्र-अभिनेत्री-योजना)। एकर अद्भुत-रसक स्तर ‘ऐमे पुरुख पात्रक अभिनय सेहो महिला कलाकार द्वारा भेल’ - सूत्रसँ प्रकट होइत अछि।

क्षेमेन्द्रीय औचित्य-दृष्टिए हुनकर पात्र-वेष-भाषा-कर्मक समायोजन गाम-घरक यथार्थसँ खाँटी मेल खाइत अछि। हुनकर नाट्य-कर्म गमैया-विषय-गहराइ + शहरी-शिल्प-कौशल केर सन्तुलित-संयोग थिक। हास्य-करुण-वीर-शान्त - चारि-मुख्य-रसक हुनकर बहु-नाटकीय व्याप्ति। ‘बेटीक अपमान’क करुण-रौद्र-संयोग गर्भपातक विरुद्ध समाज-जागृति लेल आधार-रस अछि।

(घ) पाश्चात्य दृष्टिए

आगुस्तो बोआल-दृष्टिए बेचन ठाकुर ‘उत्पीड़ितक रंगमंच’क मैथिली-व्यवहारकर्ता छथि। हुनकर निजी कोचिङ्ग-संस्थानक छात्र-छात्रासँ नाटक मञ्चित कराएब - विद्यार्थीकेँ स्पेक्ट-एक्टरमे परिवर्तित करबाक राजनीतिक प्रक्रिया थिक। ‘बेटीक अपमान’ मञ्चन गाम-दर-गाम - फोरम थिएटरक प्रक्रिया - दर्शक भू-स्थानीय-समस्या (कन्या-भ्रूण-हत्या)सँ साक्षात्कार कऽ सक्रिय-समाधान-प्रस्तुति दिश आगू बढ़ैत अछि।

ब्रेख्तीय अलगाव-प्रभाव: ‘उल्कामुख’ मे केवल अभिनेत्री-समूह - पुरुष-भूमिकामे सेहो अभिनेत्री - पारम्परिक रंगमञ्च-सम्मेलनसँ दर्शककेँ बहिर्गत करबाक तकनीक। दर्शक पात्रक संग ‘आत्म-तादात्म्य’ नहि कऽ पबैत अछि, बल्कि लिङ्ग-राजनीतिक-प्रश्नकेँ सोचय पड़ैत अछि। बोर्दिऊयायी हाबिटस: हुनकर सम्पूर्ण नाट्य-कर्म एक नव हाबिटसक सर्जन - गाम-केन्द्रित नाट्य-संस्कार, साहित्य-अकादेमीसँ स्वतन्त्र अपन सांस्कृतिक-स्थान। ग्राम्शीयन ‘आर्गेनिक-इन्टेलेक्चुअल’क रूपमे बेचन ठाकुर - गाम-शिक्षक, गाम-कलाकार, गाम-नाटककार - सर्वहारा-वर्गक स्वयं-जनित बुद्धिजीवी।

(ङ) चीनी दृष्टिए

लिऊ शिए-दृष्टिए हुनकर नाट्य-कर्म ‘फेङ्गगु’क आदर्श-उदाहरण - फेङ्ग (प्राण): गाम-जीवनक आवेग; गु (हड्डी): भरत-शास्त्रीय रूपक-संरचना। तोङ्गबियान्: गमैया-परम्परा + आधुनिक-समकालीन-विषय। चोङ्ग रोङ्गक शिपिन-वर्गीकरणमे बेचन ठाकुरक स्थान ‘शाङ्ग-पिन्’ - कारण हुनकर रचनामे ‘झी’ (रस) क स्पष्ट उपस्थिति। यान् यू-दृष्टिए हुनकर ‘मियाओ्वू’ (सहज-गहन-बोध) - साक्षात्कारक एक वाक्य ‘हम एकटा निजी शिक्षकक दृष्टिए अपन विद्यार्थीक बौद्धिक विकास हेतु अपन कोचिङ्गक प्रांगणमे रंगमंचीय सांस्कृतिक कार्यक्रमक बेबस्था करै छी’ - ई शुद्ध मियाओ्वूक स्थिति - कोनो विशेष-अकादेमिक-तर्क बिनु, सहज-नैतिक-कर्तव्यक प्रकटीकरण।

(च) यहूदी-इसरायली दृष्टिए

तल्मूदी पिलपुल-दृष्टिए मुन्नाजीक संग हुनकर साक्षात्कार आदर्श कुष्या-तेरुत्स्-दिख्या-चक्र। प्रश्न (कुष्या): ‘मैथिली नाट्य-समानान्तर किए चाही?’ - उत्तर

(तेरुत्स्): जातिवादी रंगमंचक ‘कथित छोटहा-मैथिली’क प्रयोग द्वारा सर्वहाराक भाषा-अप्रामाणीकरणकेँ रोकय खातिर - तेसर पक्ष (दिख्या): विदेह-समानान्तर-मञ्चन एकर वैकल्पिक-समाधान।

मिद्राशी पेशर-दृष्टिए ‘उल्कामुख’ नाटकक स्त्री-मात्र-अभिनेत्री-योजना मैथिली-संस्कृतिक प्राचीन-स्त्री-केन्द्रित-कीर्तनिञा-परम्पराक पुनर्व्याख्या थिक - अर्थात् ओ प्राक्-आधुनिक मैथिली-स्त्री-कलाक समकालीन-राजनीतिक-पेशर। राबर्ट आल्टर-दृष्टिए नौ-भागमे विभाजित मञ्चन-दस्तावेजीकरण ‘नैरेटिव गैप्स्’क उत्तम-उदाहरण - हर भाग पूर्ण नहि, मुदा एक संयुक्त-अखण्ड-कथा रचैत अछि। डेनिएल बोयारिनक इन्टरटेक्सचुअल-दृष्टिए हुनकर नाटक नचिकेता, सुधांशु शेखर चौधरी आ जगदीश प्रसाद मण्डलक नाटकक संग गुप्त-अन्तरपाठीयता रखैत अछि - हुनकर ‘उगना’ विद्यापति-परम्पराक सङ्ग।

लेखक ३ : ज्योति सुनीत चौधरी

रचना-सूची (सदेह ८)

‘केसर’ - पूर्ण मैथिली नाटक। नायिका केसर एकटा मध्यम-वर्गीय परिवारक उच्च-महत्वाकांक्षी प्रवासी-भारतीय किशोरी। ओ विदेशी छात्र-वीसा आ स्कॉलरशिप पबि कऽ शोध-कार्य हेतु विदेश जाइ छथि। ओतय एक डिपार्टमेण्टल-स्टोरमे पार्ट-टाइम कैशियरक काज पकड़ैत छथि, जतय हुनकर मूल-नाम ‘केसर’ ‘कैश’मे रूपान्तरित होइत अछि। नाटकमे हुनकर भारतीय-नानी-दादीक सेवा-केन्द्रित-जीवन आ अपन स्वाधीनता-केन्द्रित-जीवनक बीच मानसिक-संघर्ष; एकटा भारतीय-मूल-नवयुवती-ग्राहक हुनकासँ कहैत अछि - ‘हम सभकेँ अपन देशक उन्नति लेल योगदान देबाक चाही, तखन तँ निर्णय अहाँकेँ लेबाक अछि जे अहाँ कैश बनए चाहैत छी आकि केसर।’

(क) विदेह समानान्तर साहित्येतिहास दृष्टिए

ज्योति सुनीत चौधरी विदेह-आन्दोलनक प्रमुख महिला-नाटककारिणी छथि। हुनकर ‘केसर’ नाटक मैथिली नाट्य-साहित्यमे एक नूतन-विषयक प्रवेश कराबैत अछि - मैथिली-डायस्पोरा अनुभव, विशेषत: स्त्री-डायस्पोरा। ई विषय जातिवादी-रंगमंच द्वारा अछूत राखल गेल छल, कारण हुनकर रंगमंच गामक-जातीय-संघर्ष धरि सीमित। ज्योति सुनीत चौधरी ओहि सीमाकेँ तोड़ि कऽ वैश्विक-मैथिली-स्त्री-अनुभवकेँ रंगमंचपर अनलनि। विदेह-समानान्तर-ढाँचामे हुनकर स्थान - स्त्री-स्वर + वैश्विक-दृष्टि + भाषा-संरक्षण।

(ख) गंगेशीय नव्य-न्याय दृष्टिए

प्रत्यक्ष-प्रमाण: नाटकमे डिपार्टमेण्टल-स्टोर-काउण्टर, बार-कोड-स्कैनर, पाश्र्व-ध्वनि-व्यवस्था - सभ नूतन-प्रत्यक्ष-तत्त्व मैथिली रंगमंचमे। अनुमान: ‘केसर → कैश’ नामान्तरणसँ हुनकर अस्मिता-संकटक अनुमान। ‘यत्र-यत्र विदेश-प्रवास, तत्र-तत्र नामान्तरण’ - एहि व्याप्तिसँ नाटककी ‘धन-मूल्य-केन्द्रित-सभ्यता’क-समीक्षाक उद्घाटन। शब्द-प्रमाण: ‘हमर नानी-दादी सभ तँ अपन समस्त जिनगी परिवारक नामे कऽ देने छली’ - ई वाक्य अनुमानसँ बेसी ‘स्मृति-शब्द-प्रमाण’ रूपमे प्रयुक्त।

(ग) भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य दृष्टिए

रस-दृष्टिए ‘केसर’ नाटकक स्थायी-रस वियोग-शृङ्गार (देश-वियोग) + करुण (पारिवारिक-संस्कारक-वियोग) + वीर (अपन-निर्णय-शक्ति) - ई त्रि-रस-संयोग नाटकक प्राण। शान्त-रस अन्तिम-संवाद ‘कैश बनए चाहैत छी आकि केसर’क प्रश्नमे शान्त-निर्णयक-स्थिति। ध्वनि-दृष्टिए केसर (मसाला, सुगन्ध, मूल्यवान्) आ कैश (नकद, ठण्ढा, यान्त्रिक) क बीच नामान्तरण ‘अर्थ-ध्वनि’क उत्कृष्ट-उदाहरण - मूल नाम ‘केसर’ क मसालावाची-अर्थ-संग संगति, ‘कैश’ क पाश्चात्य-नकद-अर्थ-संग वैधर्म्य।

कुन्तकीय वक्रोक्ति-दृष्टिए ‘केसर → कैश’ शब्द-स्तरीय अर्थ-वक्रता (कुन्तकीय पद-वक्रता)। ज्योति सुनीत चौधरीक नाट्य-शिल्पमे ई वक्रता मात्र शाब्दिक नहि - ओ सम्पूर्ण-नाटकीय-वक्रता थिक, कारण नाटकक मूल-प्रश्न यएह वक्रतापर टिकल अछि। क्षेमेन्द्रीय औचित्य-दृष्टिए नाटकक भाषा-औचित्य अनूठा - केसरक पात्र मैथिली-अङ्ग्रेजी-कोड-स्विचिङ्ग न्यूनतम राखि कऽ शुद्ध मैथिली-वैचारिक-संवादमे रहैत अछि - ई जातिवादी-रंगमंचक ‘मिश्रित-कथित-छोटहा-मैथिली’-प्रवृत्तिक प्रत्यक्ष-विरोध।

(घ) पाश्चात्य दृष्टिए

ब्रेख्तीय एपिक-थिएटर-दृष्टिए नाटकक मुख्य-तकनीक ‘पाश्र्वध्वनि’ - जे दृश्यक पहिले परिस्थिति-वर्णन प्रस्तुत करैत अछि - ई ब्रेख्तीय-नैरेटर-प्रथाक मैथिली-व्यवहार। दर्शक नाटकमे ‘डूब’ नहि सकैत अछि, बल्कि लगातार आलोचनात्मक-दूरी पकड़ने रहैत अछि।

स्पिवाक-दृष्टिए ‘क्या उपालटर्न बजा सकैत अछि?’ - एहि प्रश्नक नूतन-संस्करण नाटकमे - ‘क्या प्रवासी-मैथिल-स्त्री अपन भाषामे बजि सकैत अछि?’ नाटकक उत्तर: हँ, मुदा क्षणिक - कारण विदेशी-संस्थागत-व्यवस्था (कैशियर-काउण्टर, बार-कोड-स्कैनर) ओकर भाषा-अस्मिताकेँ निरन्तर मिटाबय चाहैत अछि। बाख्तिन-दृष्टिए नाटक हेटेरोग्लोसिया-समृद्ध - केसरक मातृ-भाषा, कैशियरक यान्त्रिक-वार्तालाप, सैम्युएलाक विदेशी-मूल-स्वर, नवयुवती-ग्राहकक

प्रवचनात्मक-स्वर - चारि स्वतन्त्र-स्वर सङ्गहि उपस्थित।

बेन्यामिन-दृष्टिए वृद्धा-स्त्रीक रस्तामे-दर्शन 'कथावाचक'क प्रतीक - पुरान-स्मृति-वाहक - आधुनिक-समयमे विलुप्तप्राय। पियरे बोर्दिऊ-दृष्टिए 'केसर' नाम 'सांस्कृतिक-पूँजी'क प्रतीक, 'कैश' 'आर्थिक-पूँजी'क - दुनूक बीच रूपान्तरणक मनोवैज्ञानिक-मूल्य ज्योति सुनीत चौधरीक मूल-तर्क।

(ङ) चीनी दृष्टिए

लिऊ शिए-दृष्टिए 'केसर'क 'फेङ्गगु' बहुत-सुन्दर - फेङ्ग (प्राण): स्त्री-अस्मिता-संकटक भावप्रवाह, गु (संरचना): पाश्र्वध्वनि-केन्द्रित दृश्य-व्यवस्था। तोङ्गबियान्: मैथिली-गाम-केन्द्रित-नाट्य-परम्परा + वैश्विक-डायस्पोरा-नूतन-विषय। चोङ्ग रोङ्ग-दृष्टिए ज्योति सुनीत चौधरीक स्थान शिपिनमे 'शाङ्ग-पिन्'क समीप - कारण नाटकमे 'झी' (रस) क उपस्थिति प्रबल। यान् यू-दृष्टिए मियाओ्वू - 'कैश बनए चाहैत छी आकि केसर' - एक वाक्यमे सम्पूर्ण-नाटकक-दर्शन-संक्षेपन, गहन-सहज-बोधक चरम।

(च) यहूदी-इसरायली दृष्टिए

राबर्ट आल्टर-दृष्टिए 'केसर' नाटक टाइप-सीन्क उत्तम-उदाहरण - रोज-रस्तामे-वृद्धासँ-मुलाकात, रोज-दोकानमे-काज, रोज-स्मृति-वार्तालाप - पुनरावर्ती-दृश्य-प्रतिमान जे नाटकमे ध्यानात्मक-दृष्टि उत्पन्न करैत अछि। 'वर्ब्ल इकोज्': नानी-दादी-स्मृति बारम्बार पुनरावर्तित, हर बेर नूतन-संदर्भमे। 'नैरेटिव गैप्स्': पारिवारिक-पृष्ठभूमिक विस्तार नहि देल - दर्शकक कल्पनापर छोड़ल।

मिद्राशी पेशर-दृष्टिए 'केसर' नाम स्वयं एकटा पेशर थिक - कश्मीरी-इरानी-मूलक सुगन्धित-मसाला, जे मिथिला-संस्कृतिक उत्सव-व्यञ्जनमे प्रयोग होइ अछि (केसरिया-दूध, केसर-हलवा)। हुनकर पाश्चात्यीकरण 'कैश'मे - मूल-भारतीय-संस्कृतिक-कोष-संक्षयक प्रतीक। पिलपुल-दृष्टिए नाटकक प्रत्येक-दृश्य कुष्या-तेरुत्स्-दिख्या ढाँचा अपनबैत अछि - हर दृश्य एक नैतिक-प्रश्न उठबैत अछि, मीमांसा करैत अछि, तेसर-पक्ष-प्रस्तुति करैत अछि।

लेखक ४ : मुन्नी कामत

रचना-सूची (सदेह ८)

'अंधविश्वास' - पूर्ण-दृश्य मैथिली नाटक। नायक रघुनाथक माध्यमसँ ग्रामीण-समाजमे प्रचलित अंधविश्वास-प्रथा - विशेष कऽ बीमार-बच्चाक जान बचेबा खातिर माँ-कालीकेँ पशु-बलि वा अन्य-तान्त्रिक-कर्म - क विरुद्ध तीव्र-प्रहार। रघुनाथक प्रसिद्ध-संवाद: 'हे कक्का, एगो बातक जबाब तूँ सभ ग्रामीण मिल कऽ दए। तोरा दुगो पुत्र छऽ, एगो बिमार छऽ तँ कि तूँ एगो पुत्रक जान लऽ कऽ दोसर पुत्रक जान बचेबहक, नइ ने। तँ फेर माँ काली ई कोना करथिन। हुनका लेल तँ अइ संसारमे रहैबला हर जीव माँक संतान छी। फेर ओ ई कोना करथिन। अंधविश्वासक चादरमे नइ लिपटल रहऽ। जागऽ ... आबो तँ जागऽ।' नाटकक अन्तमे काव्यात्मक-समापन - 'अछि ई अंधविश्वासक बाइन।'

(क) विदेह समानान्तर साहित्येतिहास दृष्टिए

मुन्नी कामत विदेह-आन्दोलनक प्रमुख गएर-सवर्ण महिला-नाटककारिणी छथि। हुनकर 'अंधविश्वास' नाटक हरिमोहन झाक प्राक्-आधुनिक-अंधविश्वास-विरोधी-परम्पराक (मुदा हास्य-केन्द्रित) समानान्तर - सीधा-तीक्ष्ण-नैतिक-संवाद-केन्द्रित-परम्पराक प्रस्तुति। ई परम्परा साहित्य-अकादेमी-केन्द्रित-कैनन-मे अनुपस्थित - कारण ओ ब्राह्मण-केन्द्रित-हास्य-पद्धतिक प्राधान्य रखैत अछि, सर्वहारा-केन्द्रित-नैतिक-प्रहार-पद्धतिक नहि। विदेह-समानान्तर-ढाँचा ऐ बहिष्कृत-धाराकेँ केन्द्रमे आनैत अछि।

(ख) गंगेशीय नव्य-न्याय दृष्टिए

अनुमान-प्रमाणक अद्भुत-उदाहरण रघुनाथक मूल-तर्कमे। ओ माँ-कालीक पशु-बलि-स्वीकृति-तर्ककेँ कैनरूप अनुमान-दोष द्वारा खण्डित करैत छथि: 'तोरा दुगो पुत्र छऽ, एगो बिमार छऽ तँ कि तूँ एगो पुत्रक जान लऽ कऽ दोसर पुत्रक जान बचेबहक, नइ ने। तँ फेर माँ काली ई कोना करथिन।' ई शुद्ध 'विरुद्ध-धर्म-व्यभिचार' (cross-instantiation falsification) क प्रयोग थिक - माँ-काली केर 'समस्त-जीव-मातृत्व'क व्याप्ति, ओकर 'किछु-जीव-बलिप्रति-उदासीनता'क व्याप्तिसँ टकराइत अछि। ई दुनू-व्याप्ति एक-साथ नहि टिकि सकैत - एकर खण्डन अनिवार्य। मुन्नी कामत गंगेश-शैलीक तर्क ग्राम-मञ्चपर प्रस्तुत करैत छथि।

(ग) भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य दृष्टिए

रस-दृष्टिए नाटकक मूल-रस वीर (नैतिक-वीर) + करुण (बच्चाक-बीमारीक-दुख) + रौद्र (अंधविश्वासी-समाजक-विरुद्ध)। रौद्र-रसक चरम 'जागऽऽऽऽऽऽऽ' केर एगारह-बेर लम्बायित-स्वरमे - ई स्थूल-नैरन्तर्यसँ रौद्र-रस-निर्माणक भरत-शास्त्रीय-तकनीक। ध्वनि-दृष्टिए 'अंधविश्वासक बाइन' - 'बाइन' शब्दक बहु-अर्थ - रस्सी (बन्धन) आ बाँध (अवरोध) - दुनू-अर्थ नाटकक मूल-सन्देशमे प्रकट।

क्षेमेन्द्रीय औचित्य-दृष्टिए नाटकक पात्र-वेष-भाषा-समायोजन उत्कृष्ट - रघुनाथक मैथिली कामत-समुदायक प्राकृत-मैथिली, मुदा हुनकर तर्क-शक्ति शास्त्रीय। ई 'वक्तृ-औचित्य'क अनूठा-व्यवस्था - सर्वहारा-पात्र, मुदा शास्त्रीय-तर्क-वक्ता।

(घ) पाश्चात्य दृष्टिए

बोआल-दृष्टिए 'अंधविश्वास' नाटक उत्पीड़ितक रंगमंचक चरम-उदाहरण - रघुनाथक ग्रामीण-समाजसँ सीधा संवाद, दर्शककेँ नैतिक-निर्णय हेतु जबाबदेह बनाएब। ब्रेख्तीय-दृष्टिए 'जागऽ ... आबो तँ जागऽ' - एगारह-बेर पुनरावृत्ति - आलिएनेशन-इफेक्टक उत्तम-उदाहरण - दर्शक नाटकमे डूबि कऽ रोएब छोड़ि कऽ 'जागैत' अछि, चेतना-स्तरपर सक्रिय बनैत अछि।

ग्राम्शीयन-दृष्टिए मुन्नी कामत आर्गेनिक-इन्टेलेक्चुअल - कामत-समुदायक स्वयं-जनित बुद्धिजीवी जे अपन-समुदायक-धार्मिक-संरचनाकेँ चुनौती दैत छथि। फनन-दृष्टिए ओ 'उपनिवेशित-मानस'क-विमुक्ति-कर्म करैत छथि - कारण अंधविश्वास उपनिवेशवादक-प्राक्-आधुनिक-संरूप थिक (ब्राह्मण-केन्द्रित-तन्त्र-शास्त्र द्वारा सर्वहाराकेँ धार्मिक-दण्ड-भयसँ बान्धल जाएब)।

(ङ) चीनी दृष्टिए

लिऊ शिए-दृष्टिए नाटकक फेङ्गगु बहुत-सशक्त - फेङ्ग (प्राण): नैतिक-आक्रोश, गु (हड्डी): तर्क-संरचना। तोङ्गबियान्: पुरान-अंधविश्वास-विरोधी-परम्परा (हरिमोहन झा) + नूतन-तर्क-शैली। चोङ्ग रोङ्ग-दृष्टिए मुन्नी कामतक स्थान 'झोङ्ग-पिन्'क उच्च-छोर वा 'शाङ्ग-पिन्'क निम्न-छोर - कारण 'झी' क उपस्थिति अद्भुत मुदा नाटकक प्रबन्ध-विस्तार सीमित। यान् यू-दृष्टिए 'जागऽ ... आबो तँ जागऽ' - एक वाक्यांश मे 'मियाओ्वू'क चरम-व्यवहार।

(च) यहूदी-इसरायली दृष्टिए

मिद्राशी पेशर-दृष्टिए नाटक माँ-कालीक देवी-स्थिति केर पेशर-व्याख्या प्रस्तुत करैत अछि - मूल-शास्त्रीय-काली (वैदिक-तान्त्रिक-संरचनामे विनाश-शक्ति) समकालीन-संदर्भमे 'समस्त-जीव-मातृत्व'क प्रतीक रूपमे पुनर्व्याख्यायित। ई शास्त्रीय-काली-पाठक मानवीय-नैतिक-पेशर। पिलपुल-दृष्टिए रघुनाथक प्रसिद्ध-तर्क-संवाद आदर्श कुष्या-तेरुत्स्-दिख्या - कुष्या: 'किए माँ-काली पशु-बलि स्वीकार करय?'; तेरुत्स्: 'मातृत्वक तर्कसँ ई असम्भव'; दिख्या: 'अंधविश्वासक चादर तोड़ब अनिवार्य।'

राबर्ट आल्टर-दृष्टिए नाटकक 'वर्ब्ल इकोज्' - 'अंधविश्वास', 'चादर', 'बाइन' - ई शब्द बारम्बार पुनरावर्तित, हर बेर नूतन-अर्थमे। डेनिएल बोयारिनक इन्टरटेक्सचुअल-दृष्टिए मुन्नी कामतक नाटक हरिमोहन झा-परम्पराक संग, मुदा हरिमोहन झाक हास्य-केन्द्रित-शैलीसँ भिन्न - सीधा-नैतिक-प्रहार-केन्द्रित। ई इन्टरटेक्सचुअल-रूपान्तरण।

लेखक ५ : धीरेन्द्र कुमार

रचना-सूची (सदेह ८)

(क) 'उदय नारायण सिंह नचिकेताक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश' - विशद-समीक्षा। (ख) 'जड़ैत मोमबत्ती' - समीक्षा।

(क) विदेह समानान्तर साहित्येतिहास दृष्टिए

धीरेन्द्र कुमार विदेह-समानान्तर-समीक्षक-समूहक प्रमुख-सदस्य छथि जे ज्योतिरीश्वर-धूर्तसमागम → नचिकेता-नो-एण्ट्री वृत्तकेँ पूर्ण-कऽ-देखबा-केर-समीक्षात्मक-कार्य करैत छथि। नचिकेताक 'नो एण्ट्री: मा प्रविश' ज्योतिरीश्वर-धूर्तसमागमक उत्तर-आधुनिक-अबसर्डिटी-संस्करण थिक - ई गजेन्द्र ठाकुरक मुख्य-प्रमेय - आ धीरेन्द्र कुमार ओहि-प्रमेयक विशद-समर्थक-प्रमाण प्रस्तुत करैत छथि। हुनकर समीक्षा-कार्य विदेह-ढाँचाक चौथा-प्रश्न ('कोन सौन्दर्य-शास्त्रीय मूल्य ऐ समानान्तरमे प्रकट?') क प्रत्यक्ष-उत्तर थिक।

(ख) गंगेशीय नव्य-न्याय दृष्टिए

उपमान-प्रमाणक उत्कृष्ट-उदाहरण धीरेन्द्र कुमारक समीक्षामे - नो एण्ट्री-नो-एण्ट्रीक तुलना धूर्तसमागम-संगहि अन्य-अबसर्ड-नाटकसँ (बेकेट-वेटिङ्ग-फॉर-गोदो, इओनेस्को-बाल्ड-सोप्रानो) - ई उपमान-प्रमाण नचिकेता-नाटकक वैश्विक-स्थापना करैत अछि। शब्द-प्रमाण: नचिकेताक स्वयंक नाटकीय-संवाद, ज्योतिरीश्वरक पाठ - दुनू शब्द-प्रमाण रूपमे प्रस्तुत।

(ग) भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य दृष्टिए

रस-दृष्टिए नो एण्ट्री: मा प्रविशक मूल-रस 'अद्भुत' + 'शान्त' - अद्भुत कारण 'प्रवेश-निषेध-निषेध'क द्वि-स्तरीय-तर्क, शान्त कारण 'प्रवेश-आकाङ्क्षा'क मूलभूत-निरर्थकता-बोध। ध्वनि-दृष्टिए 'मा प्रविश' - संस्कृत-व्याकरणक प्रसिद्ध-निषेध-प्रयोग - पाणिनीय-संदर्भकेँ नाटकीय-संदर्भमे अनलकेँ धीरेन्द्र कुमार 'ध्वनि-काव्यक चरम' रूपमे चिन्हित करैत छथि। कुन्तकीय वक्रोक्ति-दृष्टिए 'मा प्रविश' - पद-वक्रता; 'नो एण्ट्री' अङ्ग्रेजी-संकेतसँ सम्पूर्ण-वाक्य-वक्रता; ई द्वि-स्तर ज्योतिरीश्वर-धूर्तसमागमक मैथिली-संस्कृत-कोड-मिश्रणक नूतन-रूपान्तरण।

(घ) पाश्चात्य दृष्टिए

अरस्तू-दृष्टिए नो एण्ट्री: मा प्रविशिक मुख्य-तत्त्व ‘कथानक’ नहि ‘विचार’ (dianoia) थिक - ई अरस्तूय-संरचनाक उल्लङ्घन, मुदा बेकेट-इओनेस्को-कैम्यू-केर अब्सर्डिस्ट-ट्रेडिशनक अनुसरण। ब्रेख्तीय-दृष्टिए नाटकक प्रवेश-निषेध स्वयं अलगाव-प्रभाव - दर्शक ‘प्रवेश’क सामान्य-अपेक्षासँ बहिर्गत भऽ कऽ ‘प्रवेश-निषेध’क राजनीतिक-दर्शनिक-अर्थ सोचय पड़ैत अछि।

बाख्तिनीय कार्निवल-दृष्टिए ‘प्रवेश-निषेध’ कार्निवलक उल्टा - कार्निवलमे सभकेँ प्रवेश, ऐ नाटकमे सभकेँ निषेध। ई व्युत्क्रम-कार्निवल - अधिकार-वाला-संस्थागत-तन्त्रक प्रतीक। फनन-दृष्टिए ‘नो एण्ट्री’ उपनिवेशवादक मूल-संरचना - अधिकार-धारी-केन्द्र, बहिष्कृत-परिधि - ई धीरेन्द्र कुमारक मुख्य-समीक्षात्मक-व्याख्या।

(ङ) चीनी दृष्टिए

लिऊ शिए-दृष्टिए नो एण्ट्री: मा प्रविशिक फेङ्गगु कनेक नाजुक - फेङ्ग (अद्भुत-शान्त-प्रवाह) सशक्त, मुदा गु (संरचना) न्यूनतम - ई बात धीरेन्द्र कुमार चिन्हित करैत छथि। चोङ्ग रोङ्ग-दृष्टिए नचिकेताक स्थान शिपिनमे ‘शाङ्ग-पिन्’ - कारण हुनकर रचनामे ‘झी’ (रस) क अद्भुत-स्तरीय उपस्थिति। यान् यू-दृष्टिए ‘मा प्रविश’ - मियाओ्वूक चरम - एक वाक्यांशमे सम्पूर्ण-दर्शन-संक्षेपन।

(च) यहूदी-इसरायली दृष्टिए

मिद्राशी पेशर-दृष्टिए ‘नो एण्ट्री: मा प्रविश’ ‘प्रवेश-निषेध’क बहु-स्तर-व्याख्या प्रस्तुत करैत अछि - पशाट (शाब्दिक): भौतिक-प्रवेश-निषेध; रेमेज् (सङ्केतगर्भित): सामाजिक-वर्ग-प्रवेश-निषेध; द्राश (नैतिक): आत्म-प्रवेश-निषेध (आत्म-निरीक्षण-असम्भवता); सोद (रहस्यगर्भ): अस्तित्व-गत-प्रवेश-निषेध। धीरेन्द्र कुमार ऐ चारिटा-स्तर-व्याख्याकेँ मैथिली-समीक्षा-शैलीमे विकसित करैत छथि।

पिलपुल-दृष्टिए हुनकर समीक्षा-शैलीमे कुष्या-तेरुत्स्-दिख्या-चक्र प्रकट - कुष्या: ‘नचिकेता-नाटकमे प्रवेश किए निषेधित?’; तेरुत्स्: ‘प्रवेशक भ्रम-त्रासदी निवारणार्थ’; दिख्या: ‘मुदा भ्रम स्वयं प्रवेश-निषेधसँ भिन्न अछि।’

लेखक ६ : शिव कुमार झा

रचना-सूची (सदेह ८)

(क) ‘भफाइत चाहक जिनगी’ - सुधांशु शेखर चौधरीक नाटकक विस्तृत-समीक्षा। (ख) ‘मिथिलाक बेटी’ - जगदीश प्रसाद मण्डलक नाटकक समीक्षा। (ग) ‘मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान’ - आनंद कुमार झा-केन्द्रित-निबन्ध। (घ) ‘गजेन्द्र ठाकुरक नाटक संकर्षण’ - समीक्षा। (ङ) ‘विभारानीक नाटक बलचन्दा’ - समीक्षा।

(क) विदेह समानान्तर साहित्येतिहास दृष्टिए

शिव कुमार झा सहायक-सम्पादक रूपमे विदेहक सक्रिय-संरचनाक हिस्सा छथि। हुनकर समीक्षात्मक-कार्य पाँच नाटक - सुधांशु शेखर चौधरी, जगदीश प्रसाद मण्डल, आनंद कुमार झा, गजेन्द्र ठाकुर, विभारानी - पर केन्द्रित, जे विदेह-समानान्तर-कैननक मुख्य-नाटककार। शिव कुमार झाक समीक्षा एहि कैननकेँ शास्त्रीय-वैधता-प्रदान करैत अछि।

(ख) गंगेशीय नव्य-न्याय दृष्टिए

प्रत्यक्ष-प्रमाण: नाटकक पाठ-गत-दृश्य-संवाद-विवरण। अनुमान: नाटकीय-संवादसँ पात्रक-मनस्थिति-निष्कर्षण। विशेष-व्याप्ति-प्रयोग ‘भफाइत चाहक जिनगी’-समीक्षामे - ‘यत्र-यत्र दीर्घसूत्री-कर्म-त्याग, तत्र-तत्र अधलाह-कर्म-स्वीकार’ - महेशक चाह-दोकानक माध्यमसँ। शब्द-प्रमाण: सुधांशु शेखर चौधरीक स्वयंक-कथन - आत्मकथ्य।

हेत्वाभास-निरूपण: सुधांशु शेखर चौधरीक आत्मकथ्यमे ‘हमर किछु मोजर अछि’ - ई शिव कुमार झा द्वारा ‘अहं-हेत्वाभास’ रूपमे चिन्हित। गंगेशीय कोटिए ‘असम्बद्ध-स्व-स्तुति-हेत्वाभास’।

(ग) भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य दृष्टिए

रस-दृष्टिए ‘भफाइत चाहक जिनगी’क मूल-रस हास्य-करुण-संयोग। शिव कुमार झा एकर अद्भुत-विश्लेषण प्रस्तुत करैत छथि - चाहक भफ-अल्पकालिकता-प्रतीक, मुदा भनसिया-आत्मविश्वास-संग सुस्वादु-निर्माण। ई ‘भफाइत-चाह’क बिम्ब कुन्तकीय वाक्य-वक्रताक चरम-उदाहरण - सामान्य-वस्तुक माध्यमसँ अस्तित्व-दर्शन। ध्वनि-दृष्टिए ‘भफाइत चाहक जिनगी’ - रस-ध्वनि (शान्त) + वस्तु-ध्वनि (अल्पकालिकता) - द्वि-स्तरीय।

क्षेमेन्द्रीय औचित्य-दृष्टिए शिव कुमार झा सुधांशु शेखर चौधरीक एक-दोषक-चिन्हन सेहो करैत छथि - ‘बटुक भाय आ गजेन्द्र नारायण चौधरीक प्रति कृतज्ञता-ज्ञापनमे महिमा-मण्डन’ - ई ‘कर्तृ-औचित्य-दोष’ थिक। मुदा एकर बाबजूद ‘भफाइत चाहक जिनगी’क मर्यादा क्षीण नहि - ई शिव कुमार झाक सन्तुलित-समीक्षात्मक-निष्कर्ष।

(घ) पाश्चात्य दृष्टिए

बेन्यामिन-दृष्टिए शिव कुमार झा 'भफाइत चाहक जिनगी'क 'कथावाचक-तत्त्व' चिन्हित करैत छथि - महेश, चाह-दोकानदार-कवि, बेन्यामिनीय-कथावाचक थिक - पुरान-संस्कृतिक स्मृति-वाहक। बोर्दिऊयायी हाबिटस-दृष्टिए महेशक पात्र दीर्घसूत्री-कुल-वंशक हाबिटसकेँ चुनौती दैत अछि - सुशिक्षित-व्यक्ति-कर्मक-प्रतिस्पर्धामे असफल, तखन 'अधलाह-मानल-गेल-कर्म'केँ स्वीकार। ब्रेख्तीय-दृष्टिए चाह-दोकान-कविता-पाठक संयोग आलिएनेशन-इफेक्ट उत्पन्न करैत अछि।

ग्राम्शीयन-दृष्टिए महेश आर्गेनिक-इन्टेलेक्चुअल - बेरोजगार-वर्गक स्वयं-जनित बुद्धिजीवी। फनन-दृष्टिए सुधांशु शेखर चौधरीक नाटक 'अधलाह-कर्म'क सामाजिक-कलङ्ककेँ चुनौती दैत अछि - ई उपनिवेशीय-वर्ग-संस्कृतिक-विमुक्ति-कर्म।

(ङ) चीनी दृष्टिए

लिऊ शिए-दृष्टिए शिव कुमार झा द्वारा 'भफाइत चाहक जिनगी'क 'मरूभूमिमे नीरक सदृश'-विशेषण - ई शुद्ध फेङ्गगु-दृष्टिक प्रकटीकरण - मरूभूमि (परिवेश-शुष्कता) मे नीर (फेङ्ग-प्राण) क उपस्थिति। तोङ्गबियान्-दृष्टिए सुधांशु शेखर चौधरी पुरान-गोविन्द-झा-राधाकृष्ण-चौधरी-परम्पराकेँ नूतन-अस्तित्व-दर्शन-केन्द्रित-शैलीमे रूपान्तरित करैत छथि। चोङ्ग रोङ्ग-दृष्टिए हुनकर स्थान 'शाङ्ग-पिन्' - कारण 'झी' (रस) क अद्भुत उपस्थिति।

(च) यहूदी-इसरायली दृष्टिए

मिद्राशी पेशर-दृष्टिए 'भफाइत चाह' बहु-स्तरीय-व्याख्या - पशाट: नीर-दूधक भनसा; रेमेज्: जीवनक अल्पकालिकता; द्राश: नैतिक-कर्म-निरन्तरता; सोद: अस्तित्वगत-शाश्वतताक भ्रम। राबर्ट आल्टर-दृष्टिए नाटकक 'टाइप-सीन्' - चन्द्रमाक हर-बेर-दोकान-आगमन, सरिताक आगमन - पुनरावर्ती-दृश्य। पिलपुल-दृष्टिए शिव कुमार झाक सम्पूर्ण-समीक्षा-शैलीमे कुष्या-तेरुत्स्-दिख्या ढाँचा सक्रिय।

लेखक ७ : रवि भूषण पाठक

रचना-सूची (सदेह ८)

'विभा रानीक नाटक भाग रौ' - विशद-समीक्षा। उप-शीर्षक: 'सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ'। समीक्षा-केन्द्र: नाटकक प्रासङ्गिकता-तत्त्व आ रंगमंचीयता-तत्त्व।

(क) विदेह समानान्तर साहित्येतिहास दृष्टिए

रवि भूषण पाठकक समीक्षा विभा रानीक स्थान विदेह-समानान्तर-कैननमे प्रतिष्ठित करैत अछि। ओ नाटकक केन्द्र-कथा 'दानापुर-दाना-दाना-चुगएबला-कर्मठ-वर्ग' - सर्वहारा-जन - मे चिन्हित करैत छथि। ई शुद्ध समानान्तर-दृष्टिक-समीक्षा थिक - मुख्यधारा-समीक्षा विभा रानीक नाटककेँ 'स्त्री-लेखन'क सीमामे राखैत रहल, मुदा रवि भूषण पाठक ओकर सर्वहारा-वर्ग-केन्द्रित-वर्ग-राजनीतिक-दृष्टिकेँ प्रस्तुत करैत छथि।

(ख) गंगेशीय नव्य-न्याय दृष्टिए

अनुमान-प्रमाण: नाटकक प्रासङ्गिकता आ रंगमंचीयता - द्वि-तत्त्व-व्याप्ति-निरूपण। 'यत्र-यत्र पात्र-स्वगत-पैघ, तत्र-तत्र रंगमंचीयता-संदिग्ध' - एहि व्याप्तिसँ दोसर-अंक-पहिल-दृश्यक एक-पृष्ठ-स्वगतक रंगमंचीयता-त्रुटि-निष्कर्षण। ई शुद्ध गंगेशीय व्याप्ति-प्रयोग। हेत्वाभास-निरूपण: नाटकक कविता-तत्त्वक शमशेर-कविता-समानता-तर्ककेँ रवि भूषण पाठक 'असम्बद्ध-हेत्वाभास' रूपमे खारिज करैत छथि - कारण ओ कविता नाटकक मुख्य-भाग नहि।

(ग) भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य दृष्टिए

रस-दृष्टिए 'भाग रौ'क मूल-रस करुण + वीर - दानापुरक भिखमंगा-वर्गक करुण-स्थिति, हुनकर जीविका-संघर्षक वीर-तत्त्व। क्षेमेन्द्रीय औचित्य-दृष्टिए रवि भूषण पाठक 'प्रथम-अङ्क-दृश्य-जीवन्तता' बनाम 'द्वितीय-अङ्क-गुरुत्वाकर्षण-कमी'क-विश्लेषण करैत छथि। ई 'प्रबन्ध-औचित्य'क उच्च-स्तरीय-निरूपण।

(घ) पाश्चात्य दृष्टिए

ब्रेख्तीय-दृष्टिए 'भाग रौ' एपिक-थिएटरक मैथिली-व्यवहार - भिखमंगाक-वर्ग-संघर्ष राजनीतिक-दर्शकीय-चेतनाकेँ जगाएब। बोआल-दृष्टिए 'फोरम थिएटर' - दर्शक-समावेश-व्यवस्था। ग्राम्शीयन-दृष्टिए दानापुरक भिखमंगा-वर्ग 'सब-आल्टर्न' - स्पिवाक-दृष्टिए हुनकर भाषागत-सम्भाषण-क्षण।

पियरे बोर्दिऊ-दृष्टिए नाटक-समीक्षाक रवि भूषण पाठक-शैली शुद्ध साहित्यिक-क्षेत्र-विश्लेषण थिक - ओ पत्रकार आ प्रेस-बला संदर्भक अपूर्णतापर ध्यान आकृष्ट करैत छथि - ई मीडिया-संरचनाक प्रतीकात्मक-हिंसा।

(ङ) चीनी दृष्टिए

लिऊ शिए-दृष्टिए विभा रानीक ‘भाग रौ’क फेङ्गगु - फेङ्ग सशक्त (दानापुरक-भिखमंगा-जीवन-आवेग), मुदा गु अंशत: कमजोर (दोसर-अंकमे)। ई रवि भूषण पाठकक चिन्हन - चीनी-शास्त्रीय-शब्दावलीमे शुद्ध फेङ्गगु-दोष-चिन्हन। तोङ्गबियान्-दृष्टिए विभा रानी पुरान-स्त्री-लेखन-परम्परा (मणिपद्म-झुमकी) केँ नूतन-वर्ग-राजनीतिक-शैलीमे रूपान्तरित करैत छथि।

(च) यहूदी-इसरायली दृष्टिए

पिलपुल-दृष्टिए रवि भूषण पाठकक समीक्षा-शैली - कुष्या: ‘किए दोसर-अंक प्रथम-अंकसँ कमजोर?’; तेरुत्स्: ‘स्वगतक अधिकता + नियन्त्रण-कमी’; दिख्या: ‘मुदा विषयवस्तुक नवोन्मेष आ ट्रीटमेन्टक अभिनवता ऐ कमीकेँ पूरा करैत अछि।’ ई शुद्ध पिलपुलीय-त्रि-स्तर-विश्लेषण। राबर्ट आल्टर-दृष्टिए नैरेटिव-गैप्स्क चिन्हन - पत्रकार-प्रेस-संदर्भक अधूरापन।

लेखक ८ : शम्भू कुमार सिंह

रचना-सूची (सदेह ८)

(क) ‘मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र-बिन्दु: नारी समस्या’ - विस्तृत-शास्त्रीय-निबन्ध। (ख) ‘आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित निर्धनताक समस्या’ - सामाजिक-आर्थिक-विश्लेषण।

(क) विदेह समानान्तर साहित्येतिहास दृष्टिए

शम्भू कुमार सिंह विदेहक प्रमुख-समाजशास्त्रीय-समीक्षक छथि। हुनकर दू-निबन्ध - नारी-समस्या आ निर्धनता-समस्या - मैथिली-नाटकक दू-केन्द्रीय-थीमक शास्त्रीय-समीक्षात्मक-मानचित्रण प्रस्तुत करैत अछि। ई थीम मुख्यधारा-समीक्षामे प्राय: ‘विषयगत’-स्तरपर देखाओल जाइ छल, मुदा शम्भू कुमार सिंह एकर ‘संरचनात्मक’-स्थान चिन्हित करैत छथि - ई दू-थीम मैथिली-नाटकक ‘मूल-केन्द्र-बिन्दु’ थिक, सीमावर्ती-थीम नहि। ई शुद्ध विदेह-समानान्तर-दृष्टि।

(ख) गंगेशीय नव्य-न्याय दृष्टिए

व्याप्ति-निरूपणक अद्भुत-उदाहरण - ‘यत्र-यत्र मैथिली-सामाजिक-नाटक, तत्र-तत्र नारी-समस्या-केन्द्र-स्थापन’ - ई व्याप्तिकेँ शम्भू कुमार सिंह विभिन्न नाटकक उदाहरणसँ सिद्ध करैत छथि। ई गंगेशीय अव्यभिचारी-सम्बन्ध। उपमान-प्रमाण: एक-नाटक (सुन्दर-संयोग, जीवन झा) क दोसर-नाटक (मिथिलाक बेटी, जगदीश प्रसाद मण्डल) सङ्ग तुलनात्मक-सादृश्य - दुनूमे नारी-समस्या केन्द्र-स्थानमे।

(ग) भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य दृष्टिए

रस-दृष्टिए शम्भू कुमार सिंह नारी-समस्या-केन्द्रित-नाटककेँ करुण-रौद्र-संयोगक रस-व्यवस्था रूपमे चिन्हित करैत छथि - नारी-दुख (करुण) + सामाजिक-अन्याय-विरुद्ध-आक्रोश (रौद्र)। निर्धनता-नाटककेँ करुण-वीर-संयोग रूपमे - निर्धन-वर्गक-दुख (करुण) + जीविका-संघर्ष-वीर (वीर)। क्षेमेन्द्रीय औचित्य-दृष्टिए हुनकर समीक्षा देश-काल-वस्तु-औचित्यकेँ चिन्हित करैत अछि - मैथिली नाटकक नारी-समस्या-निर्धनता-केन्द्रीयता मिथिलाक देश-काल-वस्तु-यथार्थक प्राकृतिक-प्रकटीकरण थिक।

(घ) पाश्चात्य दृष्टिए

ग्राम्शीयन-दृष्टिए शम्भू कुमार सिंह ‘निर्धनता’-केन्द्रित-समीक्षा वर्ग-संघर्ष-केन्द्रित-समीक्षाक मैथिली-व्यवहार थिक। हुनकर ‘नारी-समस्या’-केन्द्रित-समीक्षा सिमोन द बोव्वार-स्त्रीवादक ‘द्वितीय-लिङ्ग’-दृष्टिक मैथिली-व्यवहार। पियरे बोर्दिऊ-दृष्टिए - सामाजिक-वर्ग-संरचना आ सांस्कृतिक-पूँजी द्वारा नारी आ निर्धन-वर्गक स्थान-निर्धारण।

फनन-दृष्टिए मैथिली नारी आ मैथिली निर्धन वर्ग दुनू उपनिवेशित-मानसक-शिकार - ब्राह्मण-पुरुष-केन्द्रित-संरचना द्वारा। शम्भू कुमार सिंहक समीक्षा हुनकर विमुक्ति-दृष्टिकेँ शास्त्रीय-वैधता दैत अछि।

(ङ) चीनी दृष्टिए

लिऊ शिए-दृष्टिए शम्भू कुमार सिंह स्वयं फेङ्गगु-समीक्षक छथि - फेङ्ग (समाजशास्त्रीय-आवेग) + गु (शास्त्रीय-संरचना)। हुनकर शास्त्रीय-निबन्ध-शैली ‘तोङ्गबियान्’क उदाहरण - पुरान-भरत-शास्त्रीय-नाट्य-समीक्षा + नूतन-मार्क्सीय-स्त्रीवादी-दृष्टि। चोङ्ग रोङ्ग-दृष्टिए हुनकर समीक्षात्मक-‘झी’ (स्वाद) निर्धनता-संवेदनशीलतापर निर्भर - सर्वहारा-वर्गक-स्वाद।

(च) यहूदी-इसरायली दृष्टिए

मिद्राशी पेशर-दृष्टिए शम्भू कुमार सिंहक निबन्ध ‘नारी-समस्या’ आ ‘निर्धनता’केँ मैथिली-नाटकक चारिटा-व्याख्या-स्तर मे चिन्हित करैत अछि - पशाट (पाठगत-यथार्थ), रेमेज् (सङ्केतगर्भित-वर्ग-राजनीति), द्राश (नैतिक-समाज-सुधार), सोद (दर्शन-गत-समानता)। पिलपुल-दृष्टिए हुनकर निबन्ध आदर्श-त्रि-

स्तर-विश्लेषण - कुष्या-तेरुत्स्-दिख्या।

लेखक ९ : दुर्गानन्द मण्डल

रचना-सूची (सदेह ८)

'नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि' - बेचन ठाकुर-निर्देशित-नाटकक विस्तृत-समीक्षा। दुर्गानन्द मण्डल विदेह-संगीत-कला-सम्मान-कार्यक्रमक मञ्च-सञ्चालक सेहो छथि (सदेह ८मे प्रत्यक्ष-दस्तावेजीकृत - श्री बहादुर रामक संगीत-कला-सम्मान-समारोह)।

(क) विदेह समानान्तर साहित्येतिहास दृष्टिए

दुर्गानन्द मण्डल मैथिल-गएर-सवर्ण-समीक्षकक उत्तम-उदाहरण - हुनकर समीक्षा-शैली बेचन ठाकुरक 'बेटीक अपमान'केँ मात्र-समीक्षित-नहि करैत अछि, बल्कि ओकर सामाजिक-संदेश-कन्या-भ्रूण-हत्या-विरुद्ध-जागृति-केर पैरोकारी सेहो करैत अछि। ई शुद्ध समानान्तर-समीक्षा - जे नाटककेँ केवल साहित्यिक-वस्तु नहि, सामाजिक-कर्म-प्रकल्प रूपमे देखैत अछि।

(ख) गंगेशीय नव्य-न्याय दृष्टिए

दुर्गानन्द मण्डलक समीक्षाक मुख्य-अनुमान - 'यत्र-यत्र गर्भपात-सामाजिक-स्वीकृति, तत्र-तत्र मैथिली-भाषा-संस्कृतिक-क्षय' - एहि व्याप्ति-निरूपण द्वारा ओ बेचन ठाकुरक नाटक-संदेशकेँ मूल-धरातलपर स्थापित करैत छथि - 'मैथिल होइतो दोसर-भाषा-दासताक-शिकार भेल छी, बुझाइत अछि जेना मैथिलीक लेल एठामक माटिये उसाह भऽ गेल अछि, जइपर गदपुरनि मात्र उपजि सकैए।' ई शुद्ध गंगेशीय व्याप्ति-निरूपण।

(ग) भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य दृष्टिए

रस-दृष्टिए 'बेटीक अपमान' - करुण-रौद्र-संयोगक रस-व्यवस्था; दुर्गानन्द मण्डल समीक्षाक अन्तिम-पङ्क्ति 'ऐ माटिमे अखनो ओतेक शक्ति बचल अछि जइपर केसरो उपजि सकैत अछि' - ई वीर-रसक चरम-व्यवहार। ध्वनि-दृष्टिए 'केसर'क प्रयोग - ज्योति सुनीत चौधरीक नाटक 'केसर'क-स्मरण-ध्वनि, मुदा कन्या-भ्रूण-हत्या-संदर्भमे - गहन-इन्टरटेक्सचुअल-ध्वनि-व्यवहार। 'गदपुरनि' (कद्दू-पुदीना - ग्रामीण-स्वल्प-मूल्य-वनस्पति) आ 'केसर' (मूल्यवान्-मसाला) - ऐ बिम्ब-विरोधमे क्षेमेन्द्रीय वस्तु-औचित्यक उत्कृष्ट प्रयोग।

(घ) पाश्चात्य दृष्टिए

बोआल-दृष्टिए दुर्गानन्द मण्डलक समीक्षा बेचन ठाकुरक उत्पीड़ितक-रंगमंचक मूल-कार्यक्षेत्रकेँ चिन्हित करैत अछि - गाम-गाम मञ्चन, स्थानीय-समस्या (गर्भपात) क मञ्चीय-निरूपण, दर्शक-सक्रिय-समाधान-प्रक्रिया। फनन-दृष्टिए हुनकर समीक्षाक मुख्य-तर्क - मैथिली-भाषा-संस्कृति आ नारी-अधिकार दुनू उपनिवेशीय-शिकार थिक, मुदा बेचन ठाकुरक नाट्य-कर्म ओकर विमुक्ति-कर्म थिक।

बोर्दिऊ-दृष्टिए दुर्गानन्द मण्डल बेचन ठाकुरक सांस्कृतिक-पूँजी-स्थापनमे सक्रिय-योगदान दैत छथि - हुनकर समीक्षासँ बेचन ठाकुरक स्थान विदेह-कैनन मे प्रतिष्ठित होइत अछि। हाबरमासीय सार्वजनिक-क्षेत्र-दृष्टिए सदेह ८-मे प्रकाशित समीक्षा 'मैथिली-नाट्य-सार्वजनिक-क्षेत्र'क निर्माणमे सहायक।

(ङ) चीनी दृष्टिए

लिऊ शिए-दृष्टिए दुर्गानन्द मण्डलक समीक्षाक फेङ्गगु - फेङ्ग (मैथिल-संस्कृतिक-संरक्षण-आवेग) + गु (समाजशास्त्रीय-संरचना)। तोङ्गबियान्: मिथिला-संस्कारक-परम्परा + समकालीन-कन्या-भ्रूण-हत्या-समस्या। चोङ्ग रोङ्ग-दृष्टिए हुनकर 'झी' (स्वाद) माटि-केन्द्रित - ग्रामीण-यथार्थक स्वाद।

(च) यहूदी-इसरायली दृष्टिए

मिद्राशी पेशर-दृष्टिए 'केसर'क-संदर्भ बहु-स्तरीय - पशाट: मसाला; रेमेज्: ज्योति सुनीत चौधरीक नाटकक संकेत; द्राश: मैथिल-नारीक-मूल्य-संरक्षणक नैतिक-संदेश; सोद: स्त्री-शक्तिक रहस्यगर्भ-दर्शन। पिलपुल-दृष्टिए दुर्गानन्द मण्डलक समीक्षा त्रि-स्तर-तर्क - कुष्या: 'किए नाटक मञ्चन?'; तेरुत्स्: 'कन्या-भ्रूण-हत्या-विरुद्ध-जागृति'; दिख्या: 'मात्र-जागृति नहि, मैथिल-संस्कृति-संरक्षणक-संग।'

लेखक १० : आशीष अनचिन्हार

रचना-सूची (सदेह ८)

(क) 'बेचन ठाकुरक नाटक छीनरदेवी' - विशद-समीक्षा। (ख) 'बेटीक अपमान' - समीक्षा (दुर्गानन्द मण्डलसँ भिन्न-दृष्टिकोणसँ)। आशीष अनचिन्हार मैथिली ग़ज़ल-प्रसोडीक मुख्य-सिद्धान्तकार छथि (अनचिन्हार-फॉर्मूला), तँए हुनकर नाट्य-समीक्षामे काव्य-शास्त्रीय-दृष्टिक प्राबल्य प्रकट होइत अछि।

(क) विदेह समानान्तर साहित्येतिहास दृष्टिए

आशीष अनचिन्हार विदेह-कैननक सबसँ-महत्वपूर्ण-समीक्षात्मक-स्तम्भ छथि। हुनकर समीक्षाक मुख्य-दृष्टिकोण - विदेह-समानान्तर-नाटककार (बेचन ठाकुर)

क स्थान मैथिलीक प्राक्-आधुनिक-समाज-सुधारवादी-परम्परा (हरिमोहन झा)क संग संगति-स्थापना। ई शुद्ध समानान्तर-कैनन-निर्माणक कार्य। आशीष अनचिन्हार पुछैत छथि - 'प्रो. झा ६०-७० साल बाद बेचन जीकेँ ऐपर कलम चलेबाक जरूरति किए पड़लनि?' - ई प्रश्न-स्वयं विदेह-कैननक मूल-तर्क प्रस्तुत करैत अछि - हरिमोहन झा-परम्पराक निरन्तरता बेचन ठाकुर-धरि।

(ख) गंगेशीय नव्य-न्याय दृष्टिए

अनुमान-प्रमाणक उत्कृष्ट-उदाहरण - 'यत्र-यत्र अंधविश्वास, तत्र-तत्र साहित्यिक-प्रहार-आवश्यकता' - एहि व्याप्तिसँ बेचन ठाकुरक छीनरदेवीक-आवश्यकता-निरूपण। प्रत्यक्ष-प्रमाण: 'आइयो गाम आ अर्धशहरी इलाकामे एलोपैथीक संगे-संग भस्म-विभूति आ ब्रम्हथानक माटि उपचारमे लाएल जाइत अछि' - आशीष अनचिन्हारक ग्राम-यात्रा-आधारित प्रत्यक्ष-अनुभव। शब्द-प्रमाण: प्रो. हरिमोहन झाक रचना, बेचन ठाकुरक नाटक।

हेत्वाभास-निरूपण: ओ दूटा-सम्भावित-कारणक विश्लेषण करैत छथि - पहिल (बेचन ठाकुरकेँ कोनो-विषय-नहि-भेटल-मजबूरी) ओ 'असम्भव-हेत्वाभास' रूपमे खारिज करै छथि कारण ग्राम-यात्राक प्रत्यक्ष-प्रमाणसँ ई कारण निरस्त। दोसर (अंधविश्वास-निरन्तरता)केँ स्वीकार करै छथि। ई शुद्ध गंगेशीय हेत्वाभास-निरूपण।

(ग) भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य दृष्टिए

रस-दृष्टिए 'छीनरदेवी'क मूल-रस हास्य-करुण-बीभत्स-संयोग - आशीष अनचिन्हार ऐकेँ चिन्हित करैत छथि। 'छिनरधत्त'क संकल्पना - स्त्री-छिनरकेँ अंधविश्वासी-समाज जे रूप दैत अछि - ओकर बीभत्स-रस-केन्द्रित-निरूपण। ध्वनि-दृष्टिए 'छीनरदेवी' नामक-वक्रोक्ति - छीनर (निम्न-कोटिक स्त्री) + देवी (दिव्य-स्त्री) - एहि असम्भव-संयोगमे शक्तिशाली-व्यङ्ग्यार्थ। कुन्तकीय वक्रोक्ति-दृष्टिए ई पद-वक्रताक अद्भुत-स्तर।

क्षेमेन्द्रीय औचित्य-दृष्टिए आशीष अनचिन्हार बेचन ठाकुरक नाटक-संरचनाक उच्च-स्तरीय-औचित्य चिन्हित करैत छथि - पात्र-भाषा-कर्म-सभक सामञ्जस्य।

(घ) पाश्चात्य दृष्टिए

बेन्यामिन-दृष्टिए आशीष अनचिन्हार बेचन ठाकुरकेँ कथावाचक रूपमे चिन्हित करैत छथि - पुरान-संस्कृतिक-स्मृति-वाहक जे आधुनिक-संदर्भमे ओकर-नैतिक-तर्क प्रस्तुत करैत अछि। बोआल-दृष्टिए बेचन ठाकुरक 'निजी कोचिङ्ग-संस्थान-छात्र-छात्रा-द्वारा-मञ्चन' शुद्ध उत्पीड़ितक-रंगमंच - आशीष अनचिन्हार ऐकेँ स्वीकार करैत छथि।

ब्रेख्तीय-दृष्टिए 'छीनरदेवी'क अंधविश्वास-प्रहार-शैली अलगाव-प्रभावक मैथिली-व्यवहार - दर्शक नाटकमे डूब नहि सकैत अछि, बल्कि स्वयंक-ग्राम-परिवेशक अंधविश्वास-स्थितिकेँ पुनर्विचार करय पड़ैत अछि। ग्राम्शीयन-दृष्टिए बेचन ठाकुर सर्वहारा-वर्गक-स्वयं-जनित बुद्धिजीवी; आशीष अनचिन्हार ओहि कैनन-निर्माणमे मुख्य-सूत्रधार।

(ङ) चीनी दृष्टिए

लिऊ शिए-दृष्टिए आशीष अनचिन्हारक समीक्षाक फेङ्गगु - फेङ्ग (हरिमोहन-झा-परम्परा-अध्ययनक आवेग) + गु (नव्य-न्याय-संरचना)। तोङ्गबियान्: प्राक्-आधुनिक-समाज-सुधार-परम्परा + समकालीन-दिशा। चोङ्ग रोङ्ग-दृष्टिए हुनकर समीक्षाक 'झी' (स्वाद) नैतिक-शास्त्रीय - जे हुनकर ग़ज़ल-शास्त्रीय-समीक्षाक संग 'तोङ्ग' (निरन्तरता) रखैत अछि।

यान् यू-दृष्टिए हुनकर मियाओ्वू - 'प्रो. झाक प्रहारक बाबजूदो अंधविश्वास मेटाएल नै' - ई एक वाक्यमे साठि-वर्षीय-सामाजिक-इतिहासक-सहज-गहन-निष्कर्षण।

(च) यहूदी-इसरायली दृष्टिए

मिद्राशी पेशर-दृष्टिए 'छीनरदेवी' नामक-पेशर-व्याख्या - पशाट: नायिकाक-नाम; रेमेज्: स्त्री-शक्ति-विकृति; द्राश: अंधविश्वासी-समाजक-नैतिक-दृष्टि-दोष; सोद: स्त्री-दिव्यताक-सामाजिक-अध:पतन। आशीष अनचिन्हार बहु-स्तर-व्याख्या प्रस्तुत करैत छथि - स्पष्ट-पेशर-दृष्टि।

पिलपुल-दृष्टिए हुनकर समीक्षा शुद्ध त्रि-स्तर-विश्लेषण - कुष्या: 'प्रो. झाक-बाद नाटककार किए चुप रहलाह?' तेरुत्स्: 'अंधविश्वासक निरन्तरता बेचन ठाकुरकेँ कलम उठेबा बाध्य केलक।' दिख्या: 'मुदा ई कोनो-व्यक्तिक-हारि नहि, हरेक-लेखकक-सीमाक-यथार्थ।' डेनिएल बोयारिनक इन्टरटेक्सचुअल-दृष्टिए - बेचन ठाकुरक छीनरदेवी हरिमोहन झा-परम्पराक संग गुप्त-अन्तरपाठीयता, मुदा शैली-गत-रूपान्तरण। राबर्ट आल्टर-दृष्टिए 'टाइप-सीन्' - ग्राम-यात्रा, अंधविश्वास-प्रत्यक्षीकरण - पुनरावर्ती-प्रतिमान।

बैच १ - समापन-निष्कर्ष

विदेह सदेह ८क पहिल १० लेखक - गजेन्द्र ठाकुर, बेचन ठाकुर, ज्योति सुनीत चौधरी, मुन्नी कामत, धीरेन्द्र कुमार, शिव कुमार झा, रवि भूषण पाठक, शम्भू कुमार सिंह, दुर्गानन्द मण्डल, आ आशीष अनचिन्हार - मैथिली समानान्तर रंगमंच-आन्दोलनक प्रथम-वर्तुलक-केन्द्रीय-व्यक्तित्व छथि। हुनक रचना षट्-

स्तरीय-समीक्षा-ढाँचाक प्रत्येक-स्तरपर समृद्ध-अर्थ प्रकट करैत अछि।

(क) विदेह-समानान्तर-साहित्येतिहास-दृष्टिए ई दस लेखक साहित्य-अकादेमी-केन्द्रित-कैननसँ अदृश्य/अस्वीकृत बहुत-किछुकेँ केन्द्रमे आनैत छथि - सर्वहारा-वर्गक रंगमञ्च, गाम-केन्द्रित-मञ्चन, स्त्री-स्वर, गएर-सवर्ण-स्वर, डायस्पोरा-अनुभव, अंधविश्वास-विरुद्ध-नैतिक-प्रहार, वर्ग-राजनीतिक-दृष्टि।

(ख) गंगेशीय नव्य-न्याय-दृष्टिए चारिटा प्रमाण (प्रत्यक्ष-अनुमान-उपमान-शब्द) आ हेत्वाभास-निरूपणक व्यवस्थित-प्रयोग ऐ समीक्षात्मक-संग्रहक एक प्रमुख-शास्त्रीय-योगदान थिक।

(ग) भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य-दृष्टिए नौ-रसक विविध-संयोग, ध्वन्यालोकीय-व्यङ्ग्यार्थ-चिन्हन, कुन्तकीय वक्रता-स्तर, क्षेमेन्द्रीय औचित्य-व्यवस्था - सभ प्रकट।

(घ) पाश्चात्य-दृष्टिए ब्रेख्त-बोआल-बाख्तिन-ग्राम्शी-फनन-स्पिवाक-बेन्यामिन-बोर्दिऊ - सम्पूर्ण आधुनिक-समीक्षा-शस्त्रागार प्रयुक्त।

(ङ) चीनी-दृष्टिए लिऊ शिएक फेङ्गगु आ तोङ्गबियान्, चोङ्ग रोङ्गक शिपिन-त्रिश्रेणी, यान् यूक मियाओवू - सभ प्रयुक्त।

(च) यहूदी-इसरायली-दृष्टिए मिद्राशी चारि-स्तर, पिलपुलीय त्रि-स्तर-तर्क, राबर्ट आल्टरक टाइप-सीन्/वर्ब्ल-इकोज्/नैरेटिव-गैप्स्, डेनिएल बोयारिनक इन्टरटेक्सचुअल-पेइटिक्स - सभ प्रयुक्त।

बैच २मे शेष-लेखक - सुजीत कुमार झा, मिथिलेश कुमार झा, सरोज खिलाड़ी, किशन कारीगर, उमेश मण्डल, मनोज कुमार कर्ण (मुन्नाजी), पूनम मण्डल, रोशन झा, दिनेश मिश्र, श्यामसुन्दर शशि - समीक्षित हएता।

विदेह सदेह ८ — विदेह मैथिली नाट्य उत्सव

लेखक ११ : सुजीत कुमार झा

रचना-सूची (सदेह ८)

'मिथिला नाट्यकला परिषद, जनकपुर (मिनाप)' — विस्तृत संस्थागत-इतिहास, उपलब्धि-सूची, स्थापना-विवाद-निरूपण, वित्त-प्रबन्धन-रिपोर्ट। सदेह ८मे मिनापक रिपोर्टर आ इतिहासकार रूपमे तीनटा रिपोर्ट — (क) 'मैथिली नाटक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न', (ख) 'मैथिला भाषाक सड़क नाटक प्रदर्शन', (ग) 'उपप्रधानमन्त्री मिनापमे'।

(क) विदेह समानान्तर साहित्येतिहास दृष्टिए

सुजीत कुमार झा विदेह-समानान्तर-ढाँचाक नेपाल-धुरीक मुख्य-प्रतिनिधि छथि। हुनकर मिनाप-इतिहास विदेह-समानान्तर-इतिहास-ढाँचाक उदाहरण थिक — मिनाप (मिथिला नाट्यकला परिषद, जनकपुर) नेपालमे मैथिली समानान्तर रंगमंचक सबसँ-महत्वपूर्ण-संरचना थिक। स्थापना-विवाद — 'मिनापक संस्थापक के छथि' — ई प्रश्न विदेह-ढाँचाक पहिल-प्रश्नक नेपाली-संस्करण थिक: 'क्रेडिट-प्राप्ति-राजनीति' बनाम 'सामूहिक-सृजन'। ई शुद्ध विदेह-समानान्तर-दृष्टि — कोनो एक-व्यक्ति-केन्द्रित-कैनन-निर्माण नहि, बल्कि 'डा. धीरेन्द्रक प्रेरणा + योगेन्द्र साह नेपालीक भाषाप्रेम + बलराम प्रसाद राय + सुदर्शन लाल कर्ण' — सामूहिक-संस्थापन।

हुनकर रिपोर्टमे 'उपप्रधानमन्त्री मिनापमे' ई नेपाल-राजनीति-स्तरपर मिनापक स्वीकृति-दस्तावेजीकरण थिक — विदेह-समानान्तर-ढाँचाक तेसर-प्रश्न (वैकल्पिक-संरचना) क नेपाली-उत्तर: मिनाप नेपाल-सरकारक-सर्वोच्च-स्तरपर मान्यता-प्राप्त भेल।

(ख) गंगेशीय नव्य-न्याय दृष्टिए

प्रत्यक्ष-प्रमाण: मिनाप-स्थापना-बैसार (राजदेव मिश्रक-अध्यक्षतामे), संस्थापक-कमिटी-नाम-सूची, 'डोमकछ' नाटकक २५म प्रस्तुति, फुलकुमारी-महतो-पुरस्कार (दू-लाख-एक-हजार)। उपमान-प्रमाण: मिनापक विभिन्न-पुरस्कार (सर्वनाम, रामानन्द-युवा-क्लव, सांस्कृतिक-संस्थान-काठमाण्डू) — ई पुरस्कार-तुलना मिनापक सांस्कृतिक-पूँजीक-अनुमान करैत अछि। अनुमान: 'यत्र-यत्र सांस्कृतिक-संस्था-विवाद, तत्र-तत्र क्रेडिट-राजनीति' — मिनापक-संस्थापन-विवाद एहि-व्याप्तिक-उदाहरण।

(ग) भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य दृष्टिए

रस-दृष्टिए हुनकर निबन्ध-शैली 'अद्भुत-रस' उत्पन्न करैत अछि — १९५० ई.मे जनकपुरमे आधुनिक नाट्य कला मन्दिरसँ शुरू भेल संस्था अखन नेपाल-सरकारक उपप्रधानमन्त्री-आतिथ्य-प्राप्त-राष्ट्रीय-संस्था। ई यात्रा अद्भुत-रस उत्पन्न करैत अछि। क्षेमेन्द्रीय औचित्य: सुजीत कुमार झाक निबन्ध-शैली संस्थागत-इतिहासक-औचित्य-रखैत अछि — आवश्यक-व्यक्तित्व, उपलब्धि, विवाद — सभ उचित-अनुपातमे।

(घ) पाश्चात्य दृष्टिए

हाबरमासीय सार्वजनिक-क्षेत्र-दृष्टिए मिनाप मैथिली-नाट्य-सार्वजनिक-क्षेत्रक निर्माण-प्रक्रियाक उदाहरण थिक — नाटक-मञ्चन, टिकट-बिक्री, भवन-निर्माण, पोथी-प्रकाशन — ई सभ हाबरमासीय-संरचना। बोर्दिऊयायी-दृष्टिए मिनापक 'फुलकुमारी-महतो-पुरस्कार-प्राप्ति' — दू-लाख-एक-हजार — सांस्कृतिक-पूँजीक-आर्थिक-पूँजीमे-रूपान्तरण। ग्राम्शीयन-दृष्टिए मिनाप नेपालमे मैथिली-सर्वहारा-वर्गक-हेजेमनीक-प्रतिपक्ष — नेपाली-शासक-वर्गक-भाषाक-विरुद्ध मैथिली-आत्म-प्रतिष्ठाक-संघर्ष।

फनन-दृष्टिए मिनापक-उपलब्धि नेपाली-आन्तरिक-उपनिवेशवादक-विरुद्ध मैथिली-संस्कृतिक-विमुक्ति-संग्रामक-मूर्त-रूप। बाख्तिनीय-हेटेरोग्लोसिया: मिनापमे 'नेपाली-राजनीतिक-दबाव + मैथिली-भाषिक-आग्रह + डोमकछ-लोक-नाट्य-परम्परा + आधुनिक-थिएटर-तकनीक' — बहु-स्वर।

(ङ) चीनी दृष्टिए

लिऊ शिए-दृष्टिए सुजीत कुमार झाक लेखन-शैली 'फेङ्गगु' — फेङ्ग (मैथिली-भाषा-संरक्षण-आवेग) + गु (संस्थागत-तथ्य-संरचना)। तोङ्गबियान्: मिनापक-इतिहास ई.सं.२०२४ सँ वर्तमान — परम्परा + नवीनता-सन्तुलन। चोङ्ग रोङ्ग-दृष्टिए: सुजीत कुमार झाक लेखन 'झोङ्ग-पिन्' — कारण 'झी' (रस) संस्थागत-तथ्य-केन्द्रिततासँ किछु सीमित।

(च) यहूदी-इसरायली दृष्टिए

राबर्ट आल्टर-दृष्टिए मिनाप-इतिहासमे 'टाइप-सीन्' — हर बेर एकेगोट संरचना: स्थापना-विवाद → नव-नेतृत्व → उपलब्धि → अगिला-पीढ़ी-समावेश। 'वर्ब्ल इकोज्': 'मैथिली' शब्दक बारम्बार-पुनरावृत्ति — हर बेर नूतन-स्तरपर। मिद्राशी पेशर: 'डोमकछ' — एकटा लोकनाट्य-परम्परा — मिनाप द्वारा आधुनिक-सन्दर्भमे पुनर्व्याख्यायित। पिलपुल: 'मिनापक संस्थापक के?' — कुष्या-तेरुत्स्-दिख्या — उत्तर: 'सामूहिक-संस्थापन, कोनो एक-व्यक्ति नहि।'

लेखक १४ : सरोज खिलाड़ी

रचना-सूची (सदेह ८)

सरोज खिलाड़ी — नेपालक पहिल मैथिली रेडियो नाटक संचालक। तीनटा एकल-नाटक:

(क) 'बोतल राम' — मैथिली एकल नाटक। एकटा गरीब-व्यक्ति सड़कपर सुतल अछि। भोरमे उठि कऽ दारुक-बोतलकेँ पूजा करैत अछि, 'अमृत-आरती' गाबैत अछि। 'दारु महराज' नामक पात्रसँ संवाद-क्रममे ओ अपन घर-घराड़ी, सम्मान, परिवार-सभ गँवेबाक कहानी सुनैत अछि। अन्तमे अपन देहसँ सब-दारुक-शीशी उतारि-फोड़ि कऽ दारुकेँ समाजसँ खोजि-हटेबाक संकल्प।

(ख) 'सोच' — भैसा नामक पात्र बरियाती जेबाक-योजनामे कैलकुलेटरसँ मिठाइक-गणना करैत अछि — 'लगभग रसबरी २२० पिस, लालमोहन ११० पिस, लड्डू ८० पिस' — मुदा भुखले रहि-कऽ। हथियारधारी-बन्दूकधारीसँ माय-मुक्ति-संघर्ष। 'माय' — 'हम तखनिए कहलियौ कि केउ मारतै ककरो तँ चोट हमरे लागत।'

(ग) 'ललका कपड़ा' — दहेज-प्रथाक विरुद्ध बहु-दृश्य-नाटक। 'दहेज' राक्षस रूपमे — गाम-गाम लूट, अपहरण। युवा-वर्ग 'आदर्श विवाह' लिखल लाल-बैनर/गंजी/रुमाल देखाबैत राक्षस-दहेजकेँ भगाबैत अछि — 'ललका कपड़ासँ दहेजकेँ झाँपि दैत अछि — ओइठाम छाउर मात्र रहैत अछि।'

(क) विदेह समानान्तर साहित्येतिहास दृष्टिए

सरोज खिलाड़ी — नेपाल-मैथिली-समानान्तर-रंगमंचक-सबसँ-अभिनव-प्रयोगकर्ता। 'बोतल राम'मे दारु-समस्या, 'सोच'मे हथियारधारी-हिंसा, 'ललका कपड़ा'मे दहेज — ई तीनू-विषय साहित्य-अकादेमी-केन्द्रित-मैथिली-नाटककमे प्राय: अनुपस्थित। 'नेपालक पहिल मैथिली रेडियो नाटक संचालक' — ई स्वयं विदेह-समानान्तर-ढाँचाक-नव-संरचना-उदाहरण: रेडियो माध्यमसँ मैथिली-नाटकक विस्तार। 'ललका कपड़ा'क 'आदर्श विवाह' — दहेज-विरोधक-प्रतीकात्मक-विजय — ई विदेह-समानान्तर-सौन्दर्य-शास्त्रीय-मूल्य थिक।

(ख) गंगेशीय नव्य-न्याय दृष्टिए

अनुमान-प्रमाण 'बोतल राम'मे: 'यत्र-यत्र दारु-सेवन, तत्र-तत्र सामाजिक-विपत्ति' — 'दारु महराज'क संवादमे यएह व्याप्ति-निरूपण — 'रहऽ बला घर-घरारी सभ बिका देलियौ, प्रतिष्ठाक नास कऽ देलियौ, छोट-छोट भाइ सभसँ पिटबौलियौ।' 'सोच'मे उपमान: मायक-व्यथा = सन्तानक-चोट — ई सादृश्य नाटकमे प्रत्यक्ष-निरूपित। 'ललका कपड़ा'मे अनुमान: 'यत्र-यत्र आदर्श-विवाह-जागरूकता, तत्र-तत्र दहेज-राक्षस-निर्बल' — युवा-समूहक-लाल-बैनर-दर्शनसँ दहेज-पराजय।

(ग) भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य दृष्टिए

'बोतल राम'क मूल-रस: आरम्भमे हास्य + करुण-अन्त-प्रवेश + वीर-संकल्प — त्रि-रस-संयोजन। 'दारुए अमृत लगैय' — हास्य-रस; 'चोट हमरे मायकेँ लागत' — करुण-रस; 'सब-शीशी-फोड़ब' — वीर-रस। ध्वनि-दृष्टिए 'बोतल राम' — 'भगवान राम'क सादृश्य-ध्वनि — आ 'दारु महराज' — ई नाम-वक्रता

शक्तिशाली-व्यङ्ग्यार्थ-वाहक। कुन्तकीय वाक्य-वक्रता: 'हमरा दुधिएक बोतल भगवान लगैय' — व्यङ्ग्यात्मक-वाक्य।

'सोच'क मूल-रस हास्य + करुण। 'भैसा' — नाम-वक्रता (मूर्ख-प्रतीक) — मुदा 'भैसा' सत्य आ इमानदार पात्र। ई नाम-वक्रोक्ति समाजक-नामाभिधान-प्रक्रियाक-व्यङ्ग्य। 'ललका कपड़ा'क मूल-रस रौद्र (दहेज-राक्षसक विरुद्ध) + वीर (युवा-संघर्ष) + शान्त (अन्त — 'ओइठाम छाउर मात्र')। ध्वनि: 'ललका कपड़ा' — लाल-रङ्ग-शौर्य + परिधान-संस्कृति।

(घ) पाश्चात्य दृष्टिए

बोआल-दृष्टिए सरोज खिलाड़ीक तीनू-नाटक उत्पीड़ितक-रंगमंचक-उत्कृष्ट-उदाहरण — 'बोतल राम' (दारु-उत्पीड़न), 'सोच' (हथियारधारी-हिंसा-उत्पीड़न), 'ललका कपड़ा' (दहेज-उत्पीड़न)। ब्रेख्तीय-दृष्टिए 'दारु महराज' — ब्रेख्तीय-नैरेटर-पात्र — दर्शककेँ दारु-समस्याकेँ आलोचनात्मक-दूरीसँ देखेबाक-तकनीक। 'ललका कपड़ा'मे 'दहेज' राक्षस-रूपमे — ब्रेख्तीय-कार्निवल-पद्धति।

फनन-दृष्टिए 'ललका कपड़ा'क दहेज-राक्षस नेपाल-मधेश-आन्तरिक-उपनिवेशवादक-प्रतीक। 'युवा-वर्गक-आदर्श-विवाह-बैनर' — उपनिवेशित-मानसक-विमुक्ति-संकेत। स्पिवाक-दृष्टिए 'सोच'मे 'माय' — उपालटर्न-स्त्री — जकर 'शरीर-से-सन्तानक-दर्द' सामाजिक-व्यवस्था-सँ-प्रकट-सत्य। बाख्तिनीय-कार्निवल: 'बोतल राम'क 'दारु-आरती' — धार्मिक-कर्मकाण्डक व्युत्क्रम।

(ङ) चीनी दृष्टिए

लिऊ शिए-दृष्टिए तीनू-नाटकक फेङ्गगु — फेङ्ग (समाज-परिवर्तन-आवेग) + गु (एकल-नाटक-संरचना)। तोङ्गबियान्: लोक-नाट्य-परम्परा + आधुनिक-सामाजिक-विषय। चोङ्ग रोङ्ग-दृष्टिए 'शाङ्ग-पिन्' — तीनू-नाटकमे 'झी' (रस/स्वाद) असाधारण। यान् यू-दृष्टिए मियाओ्वू — 'ललका कपड़ासँ झाँपल दहेज — ओइठाम छाउर मात्र' — एक-दृश्यमे सम्पूर्ण-दहेज-विरोधक-दर्शन।

(च) यहूदी-इसरायली दृष्टिए

मिद्राशी पेशर: 'बोतल राम' — पूजा-परम्पराक पेशर: परम्परागत-आरती (देवी-भजन) → दारु-आरती। ई व्युत्क्रम-पेशर — धार्मिक-कर्म-संरचनाक-विनाशकारी-व्यसन-रूपमे-पुनर्व्याख्या। 'ललका कपड़ा'क 'दहेज' — टोराहक 'सर्प' (ईडन-उद्यान) क पेशर — प्राचीन-उपद्रवकारी-शक्ति-समकालीन-ग्रामीण-संदर्भमे। पिलपुल: तीनू-नाटक-कुष्या-तेरुत्स्-दिख्या। 'बोतल राम'क कुष्या: 'दारु किए पिअब?'; तेरुत्स्: 'घर-घराड़ी-गेल-छाउर-रूपे'; दिख्या: 'आब ने, आब हटाएब।' डेनिएल बोयारिन: तीनू-नाटकक-इन्टरटेक्सचुअलिटी — 'बोतल राम' मुन्नी-कामत-अंधविश्वाससँ, 'ललका कपड़ा' मुन्नाजीक-समाज-सुधार-परम्परासँ।

लेखक १५ : किशन कारीगर

रचना-सूची (सदेह ८)

'आब मानि जाउ ने' — हास्य रेडियो नाटक। पात्र: राजेश (नायक), कमला (पाहीवाली — नायिका), मनोहर (राजेशक लंगोटिया दोस्त), विमला (ठाढ़ीवाली — मनोहरक पत्नी), नीलू आ सोनी (विमलाक सहेली), मदन (दोस्त)। मुख्य-कथा: राजेश दारु-नशामे घर आएल। पत्नी कमला रूसल। मनोहरक पत्नी विमला नैहर गेल (मनोहरक दारु-पीबाक-हिसकक-कारण)। राजेश मनोहरक संग विमलाकेँ मनेबाक-लेल अन्धरा-ठाढ़ी गेल। बजारसँ कमला-लेल फरमाइशी-रेडियो-खरीदि-आनल। 'आब मानि जाउ ने।' — शीर्षक-संवाद सम्पूर्ण-नाटकमे बारम्बार।

(क) विदेह समानान्तर साहित्येतिहास दृष्टिए

किशन कारीगर — मैथिली-हास्य-रेडियो-नाटकक-अग्रणी-व्यवहारकर्ता। 'आब मानि जाउ ने' विदेह-समानान्तर-ढाँचाक-नूतन-विधा-विस्तार थिक — रेडियो-नाटक जे मैथिली-नाट्य-साहित्यमे प्राय: उपेक्षित विधा। जातिवादी-रंगमंच 'स्लैपस्टिक-ह्यूमर'क-बोझतले छल, किशन कारीगर ओहिसँ भिन्न — 'पारिवारिक-हास्य' जे सर्वहारा-परिवारक-यथार्थ आ उमंगकेँ प्रस्तुत करैत अछि। 'पाहीवाली' आ 'ठाढ़ीवाली' — ई सम्बोधन-नामावली स्वयं गाम-घरक-विनोदपूर्ण-भाषा-परम्पराक-प्रकटीकरण।

(ख) गंगेशीय नव्य-न्याय दृष्टिए

उपमान-प्रमाण: 'राजेश-कमला' + 'मनोहर-विमला' — दू-युगल-पात्रक-समान्तर-तुलना — 'राजेशक-फरमाइश-पूरा + मनोहरक-दारु-छोड़बाक-संकल्प' — दुनू-समस्याक-समान्तर-समाधान। अनुमान: 'यत्र-यत्र रूसल-पत्नी, तत्र-तत्र पति-उपाय-खोज' — ई व्याप्ति सम्पूर्ण-नाटकक-मूल-संरचना। शब्द-प्रमाण: 'आब मानि जाउ ने' — बारम्बार-आवृत्ति — ई 'प्रत्यक्ष-विनती-शब्द' पत्नी-मनाने-शास्त्रक-प्रमाण।

(ग) भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य दृष्टिए

रस-दृष्टिए 'आब मानि जाउ ने' हास्य-शृङ्गार-संयोजन — पारिवारिक-हास्य (विनोद) + वियोग-शृङ्गार (रूसल-पत्नी) + संयोग-शृङ्गार (मनाएब)। भरत-

शास्त्रीय दृष्टिए 'प्रहसन'-विधा — हास्य-केन्द्रित, किन्तु 'गृहस्थ-जीवन-यथार्थ'सँ युक्त। ध्वनि-दृष्टिए 'पाहीवाली' — पाँव-पास-बला (भूगोलिक-पहिचान) → नायिका-सम्बोधन — एहि-नामान्तरणमे सौन्दर्यगत-ध्वनि। 'आब मानि जाउ ने' — शीर्षक-ध्वनि बारम्बार-आवृत्तिसँ रस-ध्वनि-निर्माण।

कुन्तकीय वक्रोक्ति: 'राजेश दारुक-निशामे गाबैत अछि — भिजल ठोर अहाँक — कमला कहैत अछि — हमर ठोर मुँह सुखा गेल' — ई वाक्य-वक्रता। क्षेमेन्द्रीय औचित्य: नाटकक-पात्र-भाषा-कर्म-सभ गाम-घरक-यथार्थसँ सटीक-समायोजित। 'मदन — खैनी-चुनेबाक पटपट', 'राजेश — दारुक निशामे बड़बड़ाएब' — ध्वनि-प्रभाव-केन्द्रित-भाषा।

(घ) पाश्चात्य दृष्टिए

अरस्तूक कॉमेडी-दृष्टिए 'आब मानि जाउ ने' — 'बातर्मिन्दान' (heros) नहि 'अनुकरणीय-सामान्य-मनुष्य' — ई अरस्तूय-कॉमेडीक-आधार। कथार्सिस — हास्यसँ दर्शकक-दैनंदिन-तनावक-विरेचन। बाख्तिनीय-कार्निवल: रूसल-पत्नी-कथा गृहस्थ-जीवनक-कार्निवल — पात्रक-उलट-पुलट, विनोदात्मक-उत्सव। बेन्यामिनीय-कथावाचन: 'पार्क-मे-बातचीत', 'बजारक-दृश्य', 'भनसा-घरक-दृश्य' — जीवन-यापनक-विभिन्न-स्थानक-कथावाचन।

बोर्दिऊयायी-हाबिटस: नाटकमे परवाहा-गामक-जीवन-हाबिटस — मॉर्निंग-वॉक, बजार, खैनी, साइकिल — ई सभ मैथिली-सर्वहारा-जीवन-हाबिटसक-प्रकटीकरण। स्पिवाक-दृष्टिए — नाटकमे 'ठाढ़ीवाली' आ 'पाहीवाली' — स्त्री-स्वर जे रूसब, फरमाइश-करब, मनेबाक-मर्यादा-थापब — ई उपालटर्न-स्त्री-जे-बजा-सकैत-अछि।

(ङ) चीनी दृष्टिए

लिऊ शिए-दृष्टिए 'आब मानि जाउ ने'क 'फेङ्ग' (पारिवारिक-प्रेम-आवेग) + 'गु' (रेडियो-नाटक-संरचना — ध्वनि-प्रभाव, संवाद-नियोजन)। तोङ्गबियान्: गाम-घरक-परम्परागत-पारिवारिक-विनोद + आधुनिक-रेडियो-माध्यम। चोङ्ग रोङ्ग-दृष्टिए 'झोङ्ग-पिन्' — कारण 'झी' (रस) पारिवारिक-हास्यक-स्तरपर उत्कृष्ट, मुदा गहन-दार्शनिक-स्तर न्यून। यान् यू-दृष्टिए 'मियाओ्वू' — 'आब मानि जाउ ने' — एक-वाक्यमे पारिवारिक-जीवन-दर्शन।

(च) यहूदी-इसरायली दृष्टिए

मिद्राशी पेशर: 'आब मानि जाउ ने' — विनती-प्रार्थना-संरचनाक पेशर — 'शमा इस्राएल' (हे प्रभु, सुनू) जकाँ पत्नी-विनती-संरचना। पिलपुल: 'रूसल-पत्नी-तर्क-चक्र' — कुष्या: 'किए रूसलहुँ?'; तेरुत्स्: 'फरमाइश-पूरा-नहि'; दिख्या: 'रेडियो-अनलहुँ, आब मानि जाउ।' — ई त्रि-चक्र पूर्ण पिलपुलीय-संरचना। राबर्ट आल्टर-दृष्टिए 'टाइप-सीन्': 'रूसल-पत्नी → दोस-समझाएब → मनाएब-प्रयास → बजार-जाएब → उपहार-आएब → मनाएब' — पुनरावर्ती-प्रतिमान।

लेखक १६ : उमेश मण्डल

रचना-सूची (सदेह ८)

(क) 'मैथिलीमे ई-पत्रकारिता' — विशद-निबन्ध जे विदेह-केन्द्रित मैथिली-डिजिटल-साहित्य-संरचनाक सम्पूर्ण-वर्गीकरण प्रस्तुत करैत अछि: विदेह-ई-पत्रिका (१०३ अंक, ११६-देश, ७२,०४३-पाठक), विदेह-मैथिली-पोथी (२०० सँ बेसी पोथी), ११,०००+ तालपत्र-स्कैनिङ्ग, विदेह-ऑडियो (५० घण्टा), विदेह-वीडियो (५,०००+ घण्टा), विदेह-चित्रकला, विदेह-फेसबुक (८,४०० सदस्य), विदेह-रेडियो, विदेह-ब्रेल, नेना-भुटका-साइट, मानक-मैथिली-साइट, समदिया (पूनम-मण्डल-प्रियंका-झा)। (ख) 'विदेह गोष्ठी' — निर्मली-गोष्ठी-विवरण (२००८-२०१२)।

(क) विदेह समानान्तर साहित्येतिहास दृष्टिए

उमेश मण्डल विदेह-समानान्तर-साहित्येतिहास-ढाँचाक डिजिटल-वास्तुकार छथि। हुनकर 'मैथिलीमे ई-पत्रकारिता' विदेह-समानान्तर-ढाँचाक सम्पूर्ण-संस्थागत-संरचनाक-मानचित्र थिक। मुख्य-दावा: 'एकर अतिरिक्त ११,०००+ तिरहुता-तालपत्र विदेह द्वारा स्कैन कऽ ओकर देवनागरी-लिप्यंतरणक-संग उपलब्ध — सरकारी-आ-गएर-सरकारी-संस्था-द्वारा-अखन-धरि-कएल-समस्त-प्रयाससँ ई लगभग १०० गुणा बेसी।' — ई विदेह-समानान्तर-संरचनाक-श्रेष्ठता-प्रमाण। समदिया-पोर्टल — 'साहित्यिक-पत्रकारिताक-लीकसँ-हटि-न्यूज-पोर्टलक-रूपमे' — ई विदेह-समानान्तर-इतिहासक-नूतन-पत्रकारिता-शाखा।

(ख) गंगेशीय नव्य-न्याय दृष्टिए

प्रत्यक्ष-प्रमाण: गूगल एनेलेटिक्स-डेटा — '७२,०४३ गोटे द्वारा ३,३६,७०७ बेर देखल गेल' — गंगेशीय-प्रत्यक्ष-प्रमाणक डिजिटल-संस्करण। अनुमान: 'यत्र-यत्र भौगोलिक-दूरीक-अन्त, तत्र-तत्र मैथिली-पाठक-वृद्धि' — ई-पत्रकारिताक मूल-व्याप्ति। उपमान: 'ब्रेल-तिरहुता दुनू' — दृष्टि-बाधित + लिपि-अज्ञ — दुनू-वर्गक-सेवाक-तुलनात्मक-सादृश्य। शब्द-प्रमाण: ५ जुलाइ २००४ — विदेह-प्रारम्भ-तिथि — ऐतिहासिक-शब्द-प्रमाण।

(ग) भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य दृष्टिए

रस-दृष्टिए उमेश मण्डलक निबन्ध 'अद्भुत-रस' — '५ जुलाइ २००४ सँ ११६ देश, ७२,०४३ पाठक' — ई संख्या अद्भुत। वीर-रस: '१०,०००+ घण्टाक श्रम

लगाओल' — ई कर्म-वीरताक-आवाहन। ध्वनि: 'भालसरिक गाछ' — विदेहक-पूर्व-नाम — मिथिला-लोक-वनस्पतिसँ-जुड़ल-ध्वनि। 'विदेह सदेह' — 'विदेह' (नाम-रहित, शरीर-रहित) + 'सदेह' (शरीर-सहित) — विरोध-ध्वनि-समन्वय।

(घ) पाश्चात्य दृष्टिए

हाबरमासीय सार्वजनिक-क्षेत्र-दृष्टिए विदेह-ई-पत्रकारिता मैथिली-डिजिटल-सार्वजनिक-क्षेत्रक-निर्माण-प्रक्रिया थिक — ई-पत्रिका, फेसबुक-चौबटिया, गोष्ठी, समदिया-पोर्टल — सभ हाबरमासीय-संरचना। बोर्दिऊयायी-सांस्कृतिक-पूँजी: ११,०००+ तालपत्र-स्कैनिङ्ग — मैथिली-सांस्कृतिक-पूँजीक-डिजिटलीकरण। ग्राम्शीयन-दृष्टिए विदेह-फेसबुक (८,४०० सदस्य, प्रतिदिन-१५०+ कॉमेंट) — मैथिली-सर्वहारा-वर्गक-डिजिटल-हेजेमनी-प्रतिपक्ष।

बेन्यामिनीय-दृष्टिए — 'यान्त्रिक-पुनरुत्पादनक-युगमे-मैथिली-कला' — विदेह-ई-पत्रकारिता एकरा संकटसँ मुक्त करैत अछि — डिजिटल-पुनरुत्पादन मैथिली-साहित्यक-'आभा' (aura) कैँ नष्ट नहि, बल्कि विस्तारित करैत अछि।

(ङ) चीनी दृष्टिए

लिऊ शिए-दृष्टिए उमेश मण्डलक निबन्ध 'फेङ्ग' (मैथिली-भाषा-संरक्षण-आवेग) + 'गु' (डिजिटल-संरचना-तथ्य-संकलन)। तोङ्गबियान्: प्राचीन-तालपत्र (५०० वर्ष पुरान) + आधुनिक-डिजिटल-प्रसारण — परम्परा-नवीनताक-सर्वश्रेष्ठ-संयोजन। चोङ्ग रोङ्ग-दृष्टिए 'शाङ्ग-पिन्' — ई निबन्ध अप्रतिस्थापनीय-दस्तावेज।

(च) यहूदी-इसरायली दृष्टिए

मिद्राशी पेशर: '५ जुलाइ २००४' — विदेहक-प्रारम्भ-तिथि — एकटा 'सृष्टि-कथा'क प्रारम्भ-बिन्दु जेना बाइबिलक 'बेरेशित' (आरम्भमे)। 'भालसरिक गाछ' — ई नाम विदेहक-पेशर — मिथिला-लोकनाट्यक-गाछतर-प्रदर्शनसँ डिजिटल-मञ्च धरि। पिलपुल: '१०,००० घण्टाक श्रम + शून्य-सरकारी-सहयोग = सरकारी-प्रयाससँ १०० गुणा अधिक' — कुष्या-तेरुत्स्-दिख्या। राबर्ट आल्टर: 'वर्ब्ल इकोज्' — 'विदेह' शब्द सम्पूर्ण-निबन्धमे — हर-साइटक-नामसँ।

लेखक १८ : पूनम मण्डल

रचना-सूची (सदेह ८)

(क) 'जानकी नवमीपर जनकपुरमे बम विस्फोट द्वारा संस्कृतिकर्मी सभक हत्या' (रिपोर्ट)। (ख) 'नाटककार जगदीश प्रसाद मण्डल जी कैँ हुनकर मैथिली लघुकथा संग्रह गामक जिनगी लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११' (रिपोर्ट)। (ग) मैथिलोत्सव २०११ रिपोर्ट (मुन्नाजीक संग-संग)। (घ) सदेह ८क 'सम्पादक-सम्पर्क-समाद' विभागक सम्पादकीय-दायित्व।

(क) विदेह समानान्तर साहित्येतिहास दृष्टिए

पूनम मण्डल विदेह-समानान्तर-पत्रकारिताक-स्तम्भ छथि — समदिया-पोर्टलक-सह-संस्थापक (प्रियंका-झासँ)। 'जानकी-नवमी-जनकपुर-बम-विस्फोट' रिपोर्ट साहसिक-सोद्देश्य-मैथिली-पत्रकारिताक-उदाहरण थिक — सांस्कृतिककर्मी-हत्याक-दस्तावेजीकरण। जगदीश-प्रसाद-मण्डल-टैगोर-पुरस्कार-रिपोर्ट विदेह-समानान्तर-कैननक-मुख्य-लेखकक-राष्ट्रीय-स्वीकृतिक-दस्तावेजीकरण — ई शुद्ध समानान्तर-इतिहास-पूरक-कार्य।

(ख-च) षट्-स्तरीय संक्षिप्त-विश्लेषण

गंगेशीय-दृष्टिए: प्रत्यक्ष — विस्फोट-तिथि, पीड़ित-संख्या, पुरस्कार-राशि। पाश्चात्य-दृष्टिए: हाबरमासीय — 'जानकी-नवमी-बम-विस्फोट' रिपोर्ट मैथिली-डिजिटल-सार्वजनिक-क्षेत्रमे सांस्कृतिक-हत्याकेँ सार्वजनिक करैत अछि। फनन-दृष्टिए — सांस्कृतिककर्मी-हत्या उपनिवेशीय-हिंसाक-सर्वश्रेष्ठ-उदाहरण — विदेहक-पत्रकारिता ओकर-प्रतिरोध। भारतीय-रस-दृष्टिए: 'जानकी-नवमी' रिपोर्टमे करुण-रौद्र; 'जगदीश-प्रसाद-मण्डल-पुरस्कार' रिपोर्टमे उत्साह-वीर-रस। चीनी-दृष्टिए: 'फेङ्ग' (पत्रकारीय-नैतिक-आवेग) + 'गु' (रिपोर्ट-संरचना)। यहूदी-दृष्टिए: 'जानकी-नवमी' — धार्मिक-उत्सवमे-हिंसा — मिद्राशी-'लमेन्टेशन' (विलाप-काव्य) क समान।

लेखक २० : रंगमञ्च-गतिविधि-रिपोर्टर-समूह

लेखक-रचना सूची

(क) दिनेश मिश्र — 'मिथियात्रिक-झंकार' रिपोर्ट।

(ख) श्यामसुन्दर शशि — 'युवा नाट्यकला परिषद परवाहा देउरी — बिक्रमी सम्वत २०६९ पूर्व सन्ध्यामे अन्तरराष्ट्रिय मैथिली नाटक महोत्सव' रिपोर्ट।

(ग) जितेन्द्र कुमार झा 'जीतू' — 'नचिकेताक एक छल राजाक मंचन' रिपोर्ट।

(घ) सत्यनारायण झा — 'आशुतोष अभिज्ञकेँ शैलबाला पुरस्कार आ रीतू कर्णकेँ कामेश्वरी देवी पुरस्कार' रिपोर्ट।

(ङ) मनोज कुमार मण्डल — 'बाप भेल पित्ती आ अधिकार नाटकक सफल मंचन' रिपोर्ट।

(च) बृषेश चन्द्र लाल — 'झिझिया प्रस्तुति' रिपोर्ट।

(क) विदेह समानान्तर साहित्येतिहास दृष्टिए

ई छह-रिपोर्टर-समूह विदेह-समानान्तर-साहित्येतिहास-ढाँचाक 'सामूहिक-दस्तावेजीकरण-प्रकल्प'क जीवित-उदाहरण थिक। प्रत्येक-रिपोर्टर अपन-क्षेत्रमे-आयोजित-नाट्य-गतिविधिकेँ केन्द्रीय-साहित्यिक-तन्त्रक-समक्ष-प्रस्तुत करैत अछि। श्यामसुन्दर शशिक 'परवाहा-देउरी-नाटक-महोत्सव' — जे नेपाल-मधेशक-सुदूर-गाम-टोलमे अन्तरराष्ट्रिय-नाट्य-महोत्सव — ई शुद्ध समानान्तर-दस्तावेजीकरण। 'झिझिया' (बृषेश चन्द्र लाल) — लोक-नृत्य-नाट्य-विधाक-पुनरुत्थापन — विदेह-ढाँचाक-लोक-परम्परा-पक्ष।

(ख) गंगेशीय नव्य-न्याय दृष्टिए

प्रत्यक्ष-प्रमाण: प्रत्येक-रिपोर्ट-स्वयं-प्रत्यक्ष-दस्तावेज — तिथि, स्थान, पुरस्कार-राशि, पात्र-नाम। उपमान: विभिन्न-क्षेत्रक-रिपोर्टमे-समान-संरचना (आयोजन → प्रदर्शन → समीक्षा → भविष्य-योजना) — सभ-रिपोर्टमे एकेगोट-प्रतिमान। अनुमान: 'यत्र-यत्र मैथिली-नाट्य-प्रेमी-समूह, तत्र-तत्र स्वत:स्फूर्त-नाट्य-आयोजन' — रिपोर्टर-समूहक-सामूहिक-व्याप्ति।

(ग) भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य दृष्टिए

रस-दृष्टिए रिपोर्टर-समूहक-लेखन-शैलीमे 'उत्साह-वीर' — प्रत्येक-रिपोर्टमे उत्साह-आवेग। ध्वनि-दृष्टिए 'मिथियात्रिक-झंकार' — 'मिथिला + यात्रा + आत्रिक (सूत्र) + झंकार' — शब्द-वक्रोक्तिक उत्तम-उदाहरण। 'झिझिया' — स्वयं-ध्वनि-नाम — लोक-नाट्य-ध्वनि-परम्पराक-स्मृति।

(घ) पाश्चात्य दृष्टिए

बेन्यामिनीय-दृष्टिए रिपोर्टर-समूह 'कथावाचक-समूह' थिक — प्रत्येक-रिपोर्टर अपन-क्षेत्रक-नाट्य-स्मृतिकेँ लिखित-रूपमे-संरक्षित करैत अछि। बोर्दिऊयायी-सांस्कृतिक-पूँजी: ई सभ-रिपोर्ट मिलिकऽ मैथिली-नाट्य-सांस्कृतिक-पूँजीक-संवर्धन करैत अछि। हाबरमासीय-सार्वजनिक-क्षेत्र: सदेह ८मे प्रकाशित-रिपोर्ट मैथिली-नाट्य-सार्वजनिक-क्षेत्रमे हुनकर-गतिविधिकेँ मान्यता दैत अछि।

(ङ) चीनी दृष्टिए

लिऊ शिए-दृष्टिए रिपोर्टर-समूहक-सामूहिक-लेखन 'फेङ्ग' (मैथिली-नाट्य-संरक्षण-सामूहिक-आवेग) + 'गु' (प्रत्येक-रिपोर्टक-संरचना)। तोङ्गबियान्: 'झिझिया' (लोक-परम्परा) + 'एक छल राजा' (आधुनिक-नाटक) — परम्परा-नवीनता-सन्तुलन एक-संकलनमे। चोङ्ग रोङ्ग-दृष्टिए: ई-रिपोर्ट-समूह 'झोङ्ग-पिन्'–'शाङ्ग-पिन्'क-बीच — अलग-अलग।

(च) यहूदी-इसरायली दृष्टिए

मिद्राशी-'मिशनाह' (मिशनाह — मौखिक-स्मृतिक-लिखित-संकलन) पद्धतिसँ रिपोर्टर-समूहक-कार्य-सादृश्य — बिखरल-मौखिक-स्मृतिकेँ एक-संकलनमे-आनब। पिलपुल: 'परवाहा-देउरी-नाटक-महोत्सव — अन्तरराष्ट्रिय?' — कुष्या: ई दावा-कोना-सम्भव?; तेरुत्स्: भारत-नेपाल-सीमापारक-मैथिली-भाषी-समुदायक-भागीदारी; दिख्या: तँ 'अन्तरराष्ट्रिय' शब्द-उचित। राबर्ट आल्टर-दृष्टिए 'टाइप-सीन्' — हर-रिपोर्टमे: 'आयोजन-सफल → पुरस्कार-वितरण → नूतन-संकल्प' — पुनरावर्ती-प्रतिमान।

बैच २ — समापन-निष्कर्ष

विदेह सदेह ८क सम्पूर्ण-लेखक-वर्ग — बैच १ (लेखक १-१०) + बैच २ (लेखक ११-२०) — एकत्रित मैथिली-समानान्तर-रंगमंचक-एकटा-जीवित-पारिस्थितिकी-तन्त्र (ecosystem) निर्मित करैत अछि।

(क) विदेह-समानान्तर-साहित्येतिहास-दृष्टिए: ई संकलन साबित करैत अछि जे मैथिली-रंगमञ्च साहित्य-अकादेमी-केन्द्रित-जातिवादी-मञ्चसँ बहुत व्यापक अछि — ई पजुआरिडीहक-टोलसँ जनकपुरक-मिनाप धरि, गजेन्द्र ठाकुरक-दिल्ली-केन्द्रित-सम्पादकत्वसँ सरोज खिलाड़ीक-नेपाल-मैथिली-रेडियो-नाटक-संचालन धरि, बेचन ठाकुरक-चनौरागंज-मधुबनी-ग्रामीण-कोचिङ्ग-नाट्य-प्रयोगसँ किशन कारीगरक-हास्य-रेडियो-नाटक धरि — एक अखण्ड-समानान्तर-जीव-जगत।

(ख) गंगेशीय-नव्य-न्याय-दृष्टिए: चारिटा-प्रमाण (प्रत्यक्ष-अनुमान-उपमान-शब्द) आ हेत्वाभास-निरूपण ऐ-समस्त-लेखकमे प्रयुक्त — मिथिला-न्याय-परम्परा आ मैथिली-नाट्य-परम्पराक-अद्भुत-समन्वय।

(ग) भारतीय-रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य-दृष्टिए: नौ-रसक-सम्पूर्ण-वर्णक्रम सदेह ८मे उपस्थित — शृङ्गार (केसर, आब-मानि-जाउ-ने), हास्य (बोतल-राम,

सोच, किशन-कारीगर), करुण (बेटीक-अपमान, ललका-कपड़ा), रौद्र (छुतहा-घैल-समीक्षा), वीर (बेचन-ठाकुर-बीस-वर्ष-कर्म), भयानक (दहेज-राक्षस), बीभत्स (जातिवादी-भाषा-विकृति), अद्भुत (मिनाप-उपलब्धि, उल्कामुख), शान्त (रमेश-रंजन-दर्शन)।

(घ) पाश्चात्य-दृष्टिए: ब्रेख्त-बोआल-बाख्तिन-ग्राम्शी-फनन-स्पिवाक-बेन्यामिन-बोर्दिऊ-हाबरमास-अरस्तू — दश-पाश्चात्य-सिद्धान्तक-पूर्ण-परिवेशन सदेह ८मे।

(ङ) चीनी-दृष्टिए: लिऊ-शिए-फेङ्ग-ഉള्ള, चोङ्ग-रोङ्ग-झी, यान्-यू-मियाओ्वू — तीनू-चीनी-सिद्धान्त सदेह ८क विभिन्न-लेखकमे प्रयुक्त।

(च) यहूदी-इसरायली-दृष्टिए: मिद्राशी-पेशर, तल्मूदी-पिलपुल, राबर्ट-आल्टर, डेनिएल-बोयारिन — नव्य-न्यायसँ-संरचनात्मक-समानतावाली-यहूदी-समीक्षा-पद्धति मैथिली-नाट्य-समीक्षामे-प्रथम-बेर-प्रयुक्त।

विदेह सदेह ८ — 'विदेह मैथिली नाट्य उत्सव' — मैथिली साहित्यक सबसँ-व्यापक-नाट्य-दस्तावेज थिक जे एक साथ इतिहास, समीक्षा, साक्षात्कार, नाटक, रिपोर्ट, आ संस्थागत-विश्लेषण — छह-विधाकेँ एक-स्थानमे समेटैत अछि। विदेह-समानान्तर-साहित्येतिहास-ढाँचाक-दृष्टिए ई संकलन ओहि-महान-परम्पराक प्रमाण थिक जे कहैत अछि — मैथिली-रंगमञ्च केवल शहरी-मञ्चपर नहि, हर-गाम-टोलमे, हर-काली-पूजामे, हर-रेडियो-आकाशवाणीमे, हर-डिजिटल-स्क्रीनपर जीवित अछि।

विदेह सदेह ९ — विदेह मैथिली शिशु उत्सव

१. भूमिका — छह समीक्षा-दृष्टिक परिचय

विदेह सदेह ९, मैथिली शिशु-बाल-किशोर साहित्यक एकटा ऐतिहासिक संकलन थिक। श्रुति प्रकाशन, नई दिल्लीसँ २०१२ मे प्रकाशित ई पोथी विदेह पाक्षिक ई-पत्रिकाक अंक ५१–१०० मे प्रकाशित सामग्री सँ संचित अछि। ई पोथीक अध्ययन मात्र एकटा साहित्यिक समीक्षाशास्त्रसँ नै, अपितु छह सम्पूरक समीक्षा-दृष्टिसँ कएल जाएत — (अ) विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क, (आ) गंगेशोपाध्यायक नव्य न्याय, (इ) भारतीय काव्यशास्त्र, (ई) पाश्चात्य साहित्यिक समीक्षा, (उ) चीनी साहित्यिक समीक्षा, (ऊ) यहूदी-इसरायली साहित्यिक व्याख्याशास्त्र।

अ. विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क

गजेन्द्र ठाकुरक विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्कक केन्द्रीय प्रस्थापना अछि जे मिथिलाक साहित्यिक इतिहासक एकमात्र मुख्यधाराक दृष्टिसँ नहि, अपितु समानान्तर एवं प्रतिस्पर्धी दृष्टि बिन्दुसँ देखल जाएत। एहि अनुसार शिशु-बाल साहित्यक मूल्यांकन तखनि सम्भव होएत जखन हम राजकीय, उच्चजातीय, एवं केन्द्रीय आख्यानक पाश्र्वमे स्थापित लोक-कथा, लोक-गीत, एवं सीमान्त समुदायक आवाजक समानान्तर स्थान दी।

आ. गंगेशोपाध्यायक नव्य न्याय

मिथिलाक महाकवि-तार्किक गंगेशोपाध्याय (तेरहम शताब्दी) 'तत्त्वचिन्तामणि' मे प्रमाण-शास्त्रक नवीन व्याख्या देलथि। नव्य न्यायक अनुसार कोनो प्रतिज्ञाक प्रामाणिकताक परीक्षण 'व्याप्ति' (कारण-कार्य सम्बन्ध), 'पक्षता' (विषय-प्रासंगिकता), एवं 'हेतु' (आधार) सँ होइत अछि। बाल साहित्यमे एहि पद्धतिसँ कोनो रचनाक 'सत्यता-दावा', ओकर आन्तरिक तर्क-संगति, एवं पाठक-प्रभावक मूल्यांकन सम्भव अछि।

इ. भारतीय काव्यशास्त्र

भरतमुनिक नाट्यशास्त्रमे वर्णित नवरस-सिद्धान्त, आनन्दवर्धनक ध्वनि-सिद्धान्त, कुन्तकक वक्रोक्ति-जीवित, एवं मम्मटक काव्यप्रकाशक परम्परामे बाल साहित्यक मूल्यांकन सम्भव अछि। विशेषतः श्रृंगार, वात्सल्य, अद्भुत, एवं शान्त रसक दृष्टिसँ एहि संकलनक रचनाक मूल्यांकन करब अत्यन्त समीचीन अछि।

ई. पाश्चात्य साहित्यिक समीक्षा

टी.एस. इलियटक 'Tradition and the Individual Talent', रोलाँ बार्थक 'Death of the Author', आ मिखाइल बाख्तिनक बहुस्वरता (Polyphony) एवं संवादिता (Dialogism) — एहि त्रय-दृष्टिसँ पाश्चात्य समीक्षाक प्रयोग कएल जाएत। फेमिनिस्ट क्रिटिसिज्म, पोस्टकोलोनियल थ्योरी, एवं न्यू हिस्टोरिसिज्मक दृष्टिकोण सेहो प्रासंगिक अछि।

उ. चीनी साहित्यिक समीक्षा

कन्फ्यूशियसक 'जेंग मिंग' (Zhengming — नामक शुद्धता), दाओवादी चिन्तनक 'वू वेई' (Wu Wei — अकर्म-कर्म), एवं 'यि' (Yi — अर्थ-व्यंजना) — एहि त्रिक दृष्टिसँ चीनी परम्पराक प्रयोग होएत। जुआङझीक भाषा-सिद्धान्त अनुसार कोनो रचनाक परम सत्य भाषाक सीमाक परे अछि।

ऊ. यहूदी-इसरायली साहित्यिक व्याख्याशास्त्र

मिद्राश-परम्पराक पुनर्कथन (Midrash — पाठक पुनर्सृजन), वाल्टर बेंजामिनक 'एलेगरी' एवं 'मेसियैनिक टाइम', ज़ाक देरिदाक 'डिकन्स्ट्रक्शन' (जे यहूदी परम्परासँ गहरोमे जुड़ल अछि), एवं एमानुएल लेवीनासक 'अदरनेस' (Otherness) — एहि परम्पराक दृष्टिसँ बाल साहित्यक नैतिक एवं

आध्यात्मिक आयामक मूल्यांकन कएल जाएत।

३. ज्योति सुनीत चौधरी — ध्वनि-प्रतिध्वनि · अदृश्य बन्धन · नानीक खिस्सा (पाँच कथा)

ज्योतिजी संकलनक सर्वाधिक प्रतिभाशाली रचनाकार छथि। हिनकर रचनाक तीन भाग अछि — (क) ध्वनि-प्रतिध्वनि — एकटा पहाड़ी आख्यानकथा, (ख) अदृश्य बन्धन — एकटा मनोवैज्ञानिक गल्प, (ग) नानीक खिस्सा — भलुनिया मौसी, सिंदूरक पुल, एक राजाक सात मेहरी, पदसाया कुमारि, सुहान बोन — पाँच लोककथा।

विदेह समानान्तर इतिहास दृष्टि

'ध्वनि-प्रतिध्वनि' मे प्रतिध्वनि-चरित्र राजकुमारसँ प्रेम करैत अछि मुदा राजकुमार हुनकर बहिन ध्वनिसँ विवाह करैत अछि। प्रतिध्वनि पहाड़ीसँ कूदि प्राण दैत छथि, एवं हिनकर आत्मा पहाड़ी खाँचिमे भटकैत रहैत अछि। ई 'Echo' पुराण-कथाक मैथिलीकरण थिक — समानान्तर इतिहास अनुसार पाश्चात्य यूनानी मिथक एवं मैथिली लोककथाक बीच मौलिक साम्य अछि।

नव्य न्यायक दृष्टि

'अदृश्य बन्धन' मे माया — एक बाल-मनोवैज्ञानिक — अपन क्षेत्रीय ज्ञान (लोक-ज्ञान) एवं व्यावसायिक ज्ञानक बीच द्वंद्वक सामना करैत छथि। नव्य न्यायक 'व्याप्ति' अनुसार — 'व्यावसायिक सफलता' एवं 'व्यक्तिगत सुख' — एहि दुनूक बीच कारण-कार्य सम्बन्ध सीधा नहि अछि। माया अन्ततः मातृत्वक 'अदृश्य बन्धन' मे बँधि जाइत छथि — ई नव्य न्यायक 'पक्षता' (सर्वाधिक प्रासंगिक प्रमाण) थिक।

भारतीय काव्यशास्त्र

नानीक पाँचों खिस्सामे वात्सल्य रस प्रबल अछि — 'सुहान बोन' मे साधुबाबाक वरदान एवं अन्धी रानीक आँखिक पुनःप्राप्ति — ई करुण रसक चरमोत्कर्ष एवं ततपश्चात् शान्त रसक उत्थान थिक। ध्वनि-सिद्धान्त अनुसार 'सिंदूरक पुल' मे नाग-मणिक ध्वनि अनेक स्तरक अभिव्यंजना करैत अछि।

पाश्चात्य दृष्टि

'एक राजाक सात मेहरी' — एहि कथामे बाख्तिनक बहुस्वरता स्पष्टतः देखाइत अछि। सात रानीक आवाज, बड़कीरानीक षड्यन्त्र, सियारनीक मातृत्व, चिड़ोड़ीक पालन-पोषण — एहि बहुविध आवाजक सम्मिलनसँ एकटा जटिल कथा-संरचना निर्मित होइत अछि। फेमिनिस्ट क्रिटिसिज्म अनुसार छोटकी रानीक उपेक्षा एवं अन्तिम न्याय पितृसत्तात्मक व्यवस्थाक आलोचना थिक।

चीनी दृष्टि

'भलुनिया मौसी' मे दुखनी एवं सुखनीक विपरीत नियति दाओवादी 'वू वेई' — सहज कर्म — एवं लोभ-विनाशक सिद्धान्तक अनुरूप अछि। दाओ दे जिंग (Tao Te Ching) अनुसार जे व्यक्ति स्वाभाविक रूपसँ दूसराक सेवा करैत अछि, ओकरा स्वतः पुरस्कार मिलैत अछि।

यहूदी-इसरायली दृष्टि

'पदसाया कुमारि' मे पानक पाताल-राजकुमारीक रूपान्तरण — ई यहूदी कब्बाला परम्पराक 'एन सोफ' (सीमाहीन ईश्वरीय सत्ता) एवं सृष्टि-खेलक अनुरूप अछि। लेवीनासक 'अदरनेस' अनुसार 'पहुनाइ' राजकुमारी — जे 'पहुना' अर्थात् 'अन्य' अछि — ओ ओकर 'अदरनेस' (परकीयता) क सर्वोच्च प्रतीक अछि।

विदेह सदेह १० : बहुआयामी समीक्षा

२. गंगेश उपाध्यायक नव्य न्याय — तर्क, प्रमाण आ अनुमानक आधारपर साहित्यिक विश्लेषण

खण्ड २: गंगेश उपाध्यायक नव्य न्यायक परिप्रेक्ष्यमे

२.१ नव्य न्यायक परिचय

मिथिलामे १३म शताब्दीमे गंगेश उपाध्याय "तत्त्वचिन्तामणि" लिखलन्हि जे भारतीय तर्कशास्त्रकें नव्य न्यायक रूप देलक। नव्य न्यायक मुख्य योगदान अछि — व्याप्ति (universal relationship), पक्षधर्मता (property of subject), हेतु (reason/middle term), साध्य (conclusion) आ व्यभिचार (logical deviation) जेँकाँ अवधारणाक सूक्ष्म विश्लेषण।

नव्य न्यायमे प्रमाण चारि प्रकारक अछि: प्रत्यक्ष (direct perception), अनुमान (inference), उपमान (comparison) आ शब्द (testimony)।

२.२ नव्य न्यायक तराजूपर साहित्यिक दावा

गजेन्द्र ठाकुरक प्रबन्धमे तार्किक संरचना:

गजेन्द्र ठाकुर जखन समीक्षाशास्त्रक आवश्यकता सिद्ध करैत छथि तँ हुनकर तर्कसंरचना नव्य न्यायक पद्धतिसँ मेल खाइत अछि:

साध्य: मैथिलीक लेल स्वतन्त्र समीक्षाशास्त्रक आवश्यकता अछि।

हेतु: सकल साहित्यिक परम्पराक संश्लेषणात्मक समीक्षा प्रणाली मैथिलीमे अनुपस्थित अछि।

व्याप्ति: जाहि भाषामे स्वतन्त्र समीक्षाशास्त्र नइ, ओहि भाषाक साहित्यिक विकास अवरुद्ध रहैत अछि।

दृष्टान्त: ओ प्लेटो, अरिस्टोटल, भरत, आनन्दवर्धन सभकें उद्धृत करैत छथि — शब्द प्रमाण (testimony)।

नव्य न्यायक कसौटीपर ई तर्क काफी बलशाली अछि। मुदा एकटा व्यभिचार (logical exception) सेहो अछि — संस्कृतमे एतेक विकसित समीक्षाशास्त्र छल तैयो संस्कृत साहित्यक एक कालखण्डमे ह्रास भेल। तेँ समीक्षाशास्त्र आ साहित्यिक विकासक बीच व्याप्ति पूर्ण नइ, आंशिक अछि।

अशोकक "बनैत कम बिगड़ैत बेशी" समीक्षामे अनुमान:

अशोक जखन सुभाष चन्द्र यादवक कियासंग्रहक विश्लेषण करैत छथि तँ ओ मूलतः अनुमानप्रमाणपर आधारित छथि — कियावर्णनसँ समाजदशाक अनुमान। नव्य न्यायमे एकरा "लिंगज अनुमान" (inference from sign) कहल जाइत अछि। अशोक कहैत छथि जे वर्तमान समाज "बनैत कम, बिगड़ैत बेशी" देखाइत अछि — ई एकटा साहसी सामाजिक निदान अछि जे कियासाहित्यसँ अनुमान कएल गेल अछि।

मुदा नव्य न्यायक दृष्टिसँ एहि अनुमानक "उपाधि" (condition) की अछि? कियावर्णन आ समाजदशाक बीच प्रत्यक्ष सम्बन्ध की अछि? ई स्थापित नइ भेल अछि — एहि दृष्टिसँ समीक्षा कमजोर पड़ैत अछि।

तारानन्द वियोगीपर समीक्षाक नव्य न्याय परीक्षण:

रमेश "प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर किया" पर समीक्षामे लिखैत छथि जे तारानन्द वियोगी "साहित्यिक चोरि"क आरोप लगबैत छथि। ई एकटा गम्भीर प्रमाणसम्बन्धी प्रश्न अछि। नव्य न्यायमे "प्रत्यक्ष प्रमाण" (direct evidence) सर्वोपरि अछि। मात्र आरोपसँ व्यभिचार सिद्ध नइ होइत। एहि संकलनमे ई विवाद उठाओल गेल अछि मुदा प्रमाणसंरचना कमजोर अछि।

खण्ड ७: संकलनक लेखकदरलेखक समग्र मूल्यांकन

गजेन्द्र ठाकुर — "प्रबन्धनिबन्धसमालोचना, समीक्षाशास्त्र आ समालोचनाक समालोचना"

शक्ति: विश्वव्यापी साहित्यिक सिद्धान्तक सर्वेक्षण करैत मैथिलीक लेल एकटा समन्वित समीक्षादृष्टि प्रस्तावित करब। भारतीय, पाश्चात्य, माक्सर्वादी, नारीवादी — सभकें एकत्र राखब दुर्लभ साहस अछि।

सीमा: एतेक विस्तृत सर्वेक्षणमे गहराई कमि जाइत अछि। गजेन्द्र ठाकुर जे सिद्धान्त उद्धृत करैत छथि — देरीदा, फुकोल्ट, लाकान — ओकर मैथिली रचनापर प्रयोग नइ करैत छथि। "समीक्षाशास्त्रक आलोचना" घोषित होइत अछि मुदा "समीक्षाक आचरण" नइ होइत।

अशोक — "बनैत कम बिगड़ैत बेशी"

शक्ति: सुभाष चन्द्र यादवक कियासंग्रहपर सूक्ष्म विश्लेषण। भाषाशैली, कथ्य, शिल्प सभ पहलूकें छुबैत छथि।

सीमा: समालोचना अन्तमे उपदेशात्मक भऽ जाइत अछि — "किया एहन लिखू जे प्रेरित करए।" भारतीय रससिद्धान्तसँ आ पाश्चात्य समीक्षासँ — दुनू दृष्टिसँ — समालोचक लेल पाठकक भावना ओ रुचिमे "सुधार" करबाक अधिकार प्रश्नवाचक अछि।

उमेश मण्डल — रिपोर्ताज श्रृंखला

शक्ति: मैथिली साहित्यिक गतिविधिक एक जीवन्त इतिहासदस्तावेज। एहि संकलनमे उमेश मण्डलक रिपोर्ताज सबसँ इतिहासमूल्यक अछि। एक सयक बाद लोक जखन मैथिलीक २०१०११ क साहित्यिक परिदृश्य बुझए चाहत तँ ई रिपोर्ताज अमूल्य होएत।

सीमा: साहित्यिक विश्लेषण कम, रिपोर्टिंग बेशी। मुदा ई उद्देश्यित सेहो अछि।

जगदीश प्रसाद मण्डल — "अवतारवाद", "मैथिली उपन्यास साहित्यमे ग्रामीण चित्रण"

शक्ति: ग्रामीण जीवनक प्रत्यक्ष अनुभवसँ उपजल आन्तरिक ज्ञान। जे लेखक स्वयं किसानजीवनसँ जुड़ल छथि हुनकर विश्लेषणमे authenticity अछि।

सीमा: सैद्धान्तिक आधार स्पष्ट नइ। मुदा ई भारतीय "अनुभवज्ञान" परम्पराक अनुकूल अछि।

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र — "मिथिला चित्रकला: भूत, वर्तमान आ भविष्य" तथा "यायावरी"

शक्ति: बहुविध — कलाइतिहास, यात्रावृत्तान्त, सामाजिक विश्लेषण। मिथिला चित्रकलाक व्यावसायिक संकट, पहचानक राजनीति, अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता — सभकें स्पर्श करैत छथि।

सीमा: आलेख अधिकतः वर्णनात्मक अछि, विश्लेषणात्मक कम। नारीवादी कलाइतिहासक दृष्टिसँ गहरा विश्लेषणक अवसर नइ उठाओल गेल।

शेफालिका वर्मा — "नारी तत्त्व"

शक्ति: मैथिलेतर परम्परासँ तुलना — तमिल कवयित्री सम्मेलनक उल्लेख — एकटा तुलनात्मक साहित्यक (comparative literature) कदम अछि।

सीमा: "नारी तत्त्व" — एहि अवधारणाक आलोचनात्मक विमर्श अनुपस्थित अछि। "नारी तत्त्व" कें essentialist (स्वभावजन्य गुण) रूपमे देखल गेल अछि कि समाजनिर्मित — ई प्रश्न उठेबाक अवसर चूकल गेल।

बिपिन झा — "यान्त्रिक अनुवाद आ Polysemy"

शक्ति: भाषाविज्ञानक अत्याधुनिक प्रश्नकें मैथिलीमे उठेबाक साहस। Polysemy (एकाधिक अर्थ) आ यान्त्रिक अनुवादक बीच सम्बन्धक प्रश्न डिजिटल युगमे अत्यन्त प्रासंगिक अछि।

सीमा: आलेख बहुत संक्षिप्त अछि। नव्य न्यायक शब्दशास्त्र आ आधुनिक linguistics दुनूक दृष्टिसँ विस्तारित होएबाक क्षमता रखैत अछि।

उपसंहार: पाँचों दृष्टिक संश्लेषण

विदेह सदेह १०कैं हम पाँचों सैद्धान्तिक दृष्टिसँ पढ़लाक बाद कोन निष्कर्ष पर आबैत छी?

विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्कसँ: ई संकलन एकटा वास्तविक समानान्तर इतिहासनिर्माणक प्रयास अछि। मैथिलीक मुख्यधाराक साहित्यिक इतिहाससँ बाहर जे किसानदलितस्त्रीप्रवासी अनुभव अछि ओकरें स्थान देबाक ई ठोस कदम अछि।

गंगेश नव्य न्यायसँ: एहि संकलनमे प्रमाण, तर्क आ अनुमानक स्तर असमान अछि। कोनोकोनो समालोचना सुस्थापित अछि, कोनोकोनो मात्र आरोपप्रत्यारोप। मैथिली समीक्षाशास्त्रकें नव्य न्यायक सूक्ष्म तर्कपद्धति आत्मसात् करबाक अवश्यकता अछि।

भारतीय समीक्षासँ: रस, ध्वनि, वक्रोक्ति — तीनू सिद्धान्तकें एहि संकलनमे जीवन्त सामग्री भेटैत अछि। जगदीश प्रसाद मण्डलक रचना विशेष रूपसँ रससिद्धान्तक परिप्रेक्ष्यमे विश्लेषणयोग्य अछि।

पाश्चात्य समीक्षासँ: मार्क्सवादी वर्गचेतना, नारीवादी दृष्टि, आ उत्तरउपनिवेशवादी प्रतिरोध — तीनू एहि संकलनमे अपनअपन रूपमे विद्यमान अछि। मुदा ई चेतना अधिकांशतः अचेतन (unconscious) अछि — सैद्धान्तिक रूपसँ articulate नइ भेल अछि।

चीनी आ यहूदी परम्परासँ: yijing (कविमानसक परिदृश्य), qiyun (जीवनस्पन्दन), midrashic बहुस्तरीय पठन — ई सभ एहि संकलनकें अन्तर्राष्ट्रीय साहित्यिक परम्परासँ जोड़बाक सम्भावना देखबैत अछि। diaspora अनुभव आ "Anxiety of Influence" — मैथिलीक सन्दर्भमे ई दुनू अत्यन्त उर्वर अवधारणा अछि।

अन्तमे कहबाक जे विदेह सदेह १० एकटा अपूर्ण किन्तु महत्वपूर्ण पदचिह्न अछि मैथिलीक साहित्यिक आत्मजागरणक राहपर। एकर महत्त्व एकर पूर्णतामे नइ, एकर संकल्पमे अछि — ई संकल्प जे मैथिली साहित्य केवल अकादमिक संस्थाक कृपापर निर्भर नइ, अपन शक्तिसँ ठाढ़ हएत।

"विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्"

— मनुष्यमे ही संस्कृतिक वास अछि।

विदेह सदेह १० — सम्पूर्ण समालोचना — विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क, गंगेशक नव्य न्याय,

२. गंगेशक नव्य न्याय — तर्क, प्रमाण आ अन्वयव्यतिरेकक कसौटी

२. गंगेशक नव्य न्याय

संकलनमे जे साहसी तार्किक रचनाएँ अछि — भाषा-मानकीकरणपर कापड़ि, साहित्यिक चोरीपर रमेश, यान्त्रिक अनुवादपर बिपिन झा — ओ नव्य न्यायक प्रमाण-आधारित चिन्तनक आधुनिक मैथिली अनुवाद छथि।

विदेह सदेह-११ — Videha Sadeha 11

समानान्तर मैथिली साहित्य इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे

A Critical Appreciation in the Framework of Parallel Maithili Literary History

चारि सैद्धान्तिक धुरी:

I. भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति सौन्दर्यशास्त्र (भरत, अभिनवगुप्त, आनन्दवर्धन, कुन्तक, क्षेमेन्द्र)

II. पाश्चात्य समालोचना सिद्धान्त

III. गङ्गेश उपाध्यायक नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसा

IV. विदेह समानान्तर साहित्य इतिहास ढाँचा

ISSN 2229-547X VIDEHA | श्रुति प्रकाशन, नई दिल्ली, २०१२

ISBN: 978-93-80538-86-0

२.१ गजेन्द्र ठाकुर — सम्पादकीय

गजेन्द्र ठाकुरक सम्पादकीय अत्यन्त बहुस्तरीय अछि। एहिमे टॉमस ट्रांसट्रोमरक नोबेल पुरस्कार (२०११) पर प्रतिक्रिया, विदेह साहित्य उत्सव २०१२, दूभि-अवत षड्यन्त्र (मैथिलीक पाठ्यपुस्तकमे), मैथिली-सुरजापुरी-राजबंशी भाषाशास्त्र, विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३, विद्यापतिक समानान्तर परम्परा — एतेक विषयक विवेचन एकेटा सम्पादकीयमे।

रस-ध्वनि दृष्टिसँ: ट्रांसट्रोमरपर टिप्पणी — 'ओ अपन घनगर पारदशी बिम्बसँ सत्यक एकटा नव द्वारक परिचय करेलनि' — एहिमे ध्वनिक सिद्धान्त (अभिव्यञ्जना > अभिधा) स्पष्ट अछि। स्वीडन अकादेमीक उद्धरणसँ सम्पादक दर्शबैत छथि जे काव्यक घनता (dens imagery) रससञ्चारक माध्यम थिक — आनन्दवर्धनक ध्वनिवाद एहिसँ साम्य राखैत अछि।

वक्रोक्ति-विश्लेषण: 'दूभि-अवत' शीर्षक अन्तर्गत सम्पादक लिखैत छथि जे बिहार राज्य पाठ्यपुस्तक निगम 'दूवित' नामक नवम वर्गक किताब छापने अछि जाहिमे मिथिलाक एकटा जिलाक स्थायी बन्दोबस्तीबला जमींदारक जीवनी पढ़ाओल गेल अछि। एहि वक्रोक्तिपूर्ण आलोचनामे कुन्तकक वक्रोक्ति-जीवित सिद्धान्त — अर्थात् काव्यात्मक विचलन द्वारा वास्तविकताक प्रकाशन — क क्रियाशील रूप देखि पड़ैत अछि।

पाश्चात्य दृष्टिसँ: एन्टोनियो ग्राम्शीक 'hegemony' (वर्चस्व) सिद्धान्तसँ विश्लेषण करी तँ 'दूभि-अवत' षड्यन्त्रक विवेचन दर्शबैत अछि जे राज्यसत्ता किएना भाषायी पाठ्यक्रमकेँ सांस्कृतिक वर्चस्वक औजार बनबैत अछि। एहि विरुद्ध गजेन्द्र ठाकुरक सम्पादकीय counter-hegemonic discourse थिक।

नव्य-न्याय दृष्टिसँ: गजेन्द्र ठाकुर मैथिली-सुरजापुरी-राजबंशी खण्डमे तीन भाषाक समान संरचना देखबैत 'व्याप्ति' (pervasive relation) निर्मित करैत छथि। ऐहि भाषाशास्त्रीय तर्कमे अन्वयव्यतिरेकी पद्धतिक (गङ्गेशक अन्वयव्यतिरेकमूलक व्याप्तिग्रह) प्रयोग अछि।

विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान-विजेताक सूची — गोविन्द झा, रमानन्द रेणु, जगदीश प्रसाद मण्डल, मायानाथ झा, आनन्द कुमार झा, रामलोचन ठाकुर — स्पष्ट करैत अछि जे ई संस्था उन लेखकक सम्मान करैत अछि जकर साहित्य अकादेमी नज़रअन्दाज़ करैत रहल अछि।

११.१ चारि सैद्धान्तिक धुरीमे संकलनक स्थान

I. भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति सौन्दर्यशास्त्र

विदेह सदेह-११ मे नौ रसक लगभग सभ प्रयोग भेटैत अछि — करुण (जगदानन्द झा मनु, लोहनावाली), वीर (विनीत उत्पल, 'बारुद'), शृङ्गार (कामिनी कामायनी, फागुन राग), हास्य (ठकबुद्धि, आठ लाखक कार), रौद्र (मैथिली संस्थाविरोधी लेख), बीभत्स (कुण्ठित मानवता), अद्भुत (बुच्चू भइया), शान्त (राजदेव मण्डल), भयानक (मार बाढ़नि — पितृसत्तापर)।

आनन्दवर्धनक ध्वनिसिद्धान्त: संकलनक श्रेष्ठ रचनाकारक रचनामे 'व्यंग्यार्थ' (suggestion) अभिधासँ शक्तिशाली अछि। 'जबाव भोज', 'ठकबुद्धि', 'एक करोड़क दहेज' — सभमे व्यंग्य ध्वनि मुखर।

कुन्तकक वक्रोक्ति: सम्पूर्ण संकलनक editorial practice स्वयं वक्रोक्ति थिक — साहित्य अकादेमीक विरुद्ध समानान्तर अकादेमी।

II. पाश्चात्य समालोचना

Marxist literary theory: संकलनमे class struggle, rural-urban divide, labour dignity — सभ अछि। मण्डल-ठाकुरक कथा 'dialectical materialism' क व्यावहारिक साक्ष्य थिक।

Postcolonial studies: Mithila राज्य माँग, भाषायी अधिकार, सांस्कृतिक sovereignty — सभ Fanon, Bhabha, Spivak क framework मे विश्लेषणीय।

Feminist literary criticism: महिला-रचनाकारक (शान्तिलक्ष्मी चौधरी, कामिनी कामायनी, ज्योति झा चौधरी, रूबी झा, मुन्नी कामत, नवीन कुमार 'आशा') उपस्थिति विदेहक gender inclusivity प्रमाणित करैत अछि।

Subaltern studies: दलित-पिछड़ावर्गक स्वर (किशन कारीगर, राजदेव मण्डल, जगदीश प्रसाद मण्डल) — Spivak क 'Can the subaltern speak?' क उत्तर एहि संकलन थिक — हँ, ओ बाजि सकैत अछि।

III. नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसा

गङ्गेश उपाध्यायक तत्त्वचिन्तामणिमे 'अन्वय-व्यतिरेक' (positive-negative concomitance) द्वारा व्याप्ति-स्थापना एहि संकलनमे एना अछि: जतय साहित्य अकादेमी 'अछि', ओतय लोकतान्त्रिक साहित्य 'नहि' आ जतय विदेह 'अछि', ओतय समावेशी साहित्य 'अछि' — ई व्याप्ति विदेहक समानान्तरताक औचित्य प्रमाणित करैत अछि।

'प्रत्यक्ष प्रमाण' (direct knowledge): फेसबुक संवाद, कवि-सम्मेलनक रिपोर्ट — ई प्राथमिक स्रोत एहि संकलनक ज्ञानमीमांसीय प्रामाणिकता बढ़बैत अछि।

'अनुमान' (inference): किशन कारीगरक 'अकल भेल वी' — परिस्थितिसँ जातिव्यवस्थाक अनुमान। जगदानन्द झाक 'जबाव भोज' — श्राद्ध-खर्चसँ पारिवारिक अर्थनीतिक अनुमान।

IV. विदेह समानान्तर साहित्य इतिहास

विदेह सदेह-११ विदेहक समानान्तर साहित्य इतिहास-परियोजनाक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण खण्ड थिक। एहिमे:

(क) Excluded voices: राजदेव मण्डल, जगदीश प्रसाद मण्डल, बेचन ठाकुर, किशन कारीगर — जे साहित्य अकादेमीक 'canonical list' मे नहि छथि — हुनकर केन्द्रीय उपस्थिति।

(ख) Democratic aesthetic: गद्य, पद्य, बाल साहित्य, गजल, लोकनाटक, साक्षात्कार, समालोचना — सभ विधाक समान आदर।

(ग) Anti-brahmanist literary tradition: सुबाल्टर्न लेखकक जातिव्यवस्था-विरोधी स्वर केन्द्रमे।

(घ) Geographical democracy: दिल्ली, मुम्बई, कोलकाताक अतिरिक्त मधुबनी, सुपौल, सहरसा, हजारीबागक लेखक।

— — —

१२. निष्कर्ष

विदेह सदेह-११ केवल एकटा साहित्यिक संकलन नहि अछि — ई एकटा cultural manifesto, एकटा institutional counter-narrative, आ एकटा democratic archive थिक। एहिमे जे ५०-६० रचनाकार स्थान पेने छथि, हुनका सभकेँ मिलाकेँ जे साहित्यिक ecosystem निर्मित होइत अछि, ओ मैथिली साहित्यक भविष्यक रूपरेखा थिक।

भारतीय रस-सिद्धान्तक दृष्टिसँ: करुण, वीर, आ शान्त — ई तीन रस प्रधान अछि। पाश्चात्य दृष्टिसँ: Marxism, Feminism, Postcolonialism, Subaltern Studies — सभ एकसाथ। नव्य-न्यायसँ: empirical evidence, rational inference, democratic validation। विदेह ढाँचासँ: एहि संकलनक प्रत्येक पृष्ठ समानान्तर इतिहासक एकटा पाँत थिक।

गजेन्द्र ठाकुरक सम्पादकीय दृष्टि — जे मैथिलीकेँ जातिमुक्त, लोकतान्त्रिक, समावेशी भाषा-संस्कृतिक रूपमे देखैत अछि — एहि संकलनक प्रत्येक रचनामे प्रतिध्वनित होइत अछि। 'मानुषीमिह संस्कृताम्' — ई आदर्श एहि संकलनमे साकार भेल अछि।

विदेह सदेह-११ मैथिली साहित्यक parallel canon क एकटा महत्त्वपूर्ण स्तम्भ थिक। अवगन्तव्य: एहि संकलनमे अनेक रचनाकार अछि जनकर अलग-अलग विस्तृत अध्ययन अपेक्षित अछि — विशेषतः राजदेव मण्डल, जगदीश प्रसाद मण्डल, बेचन ठाकुर, जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', आ चन्दन कुमार झापर। ओ अलग अध्ययनक विषय भऽ सकैत अछि।

— समीक्षक: विदेह समानान्तर साहित्य इतिहास शोध परियोजना —

विदेह सदेह-१२ — Videha Sadeha 12

समानान्तर मैथिली साहित्य इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे — भारतीय आ विश्व साहित्यिक सिद्धान्तसँ सम्पूर्ण समीक्षा

A Comprehensive Critical Appreciation in Indian & World Literary Theoretical Frameworks

चारि सैद्धान्तिक धुरी:

I. भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति सौन्दर्यशास्त्र (भरत, अभिनवगुप्त, आनन्दवर्धन, कुन्तक, क्षेमेन्द्र)

II. पाश्चात्य समालोचना सिद्धान्त (Marxism, Feminism, Postcolonialism, Subaltern Studies, Narratology)

III. गङ्गेश उपाध्यायक नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसा (Tattvacintamani Framework)

IV. विदेह समानान्तर साहित्य इतिहास ढाँचा (Counter-Canonical Democratic Literary History)

२.१ सुभाष चन्द्र यादव आ जातिवादी मानसिकता

सुभाष चन्द्र यादवक 'ततैत-बिगड़ैत' पर मोहन भारद्वाज, योगानन्द झा, रामदेव झा आदिक जातिवादी विरोधक विस्तृत विवेचना सम्पादकीयमे अछि। सम्पादक स्पष्ट करैत छथि जे यादव जी 'जे कम्यूनिटीसँ आबैत छथि ओकरा धोखा नै दै छथि, ओकर समस्या, ओकर भाषा लेल संघर्षरत छथि, समझौता नै करैत छथि, आइडियोलोजीमे स्थिरता छन्हि' — यएह कारण छनि जे जातिवादी मानसिकताक कोपक शिकार छथि।

रस-ध्वनि दृष्टिसँ: एहि सम्पादकीयमे रौद्र रसक सञ्चार प्रत्यक्ष अछि। कुन्तकक वक्रोक्ति — काव्यात्मक विचलन द्वारा सत्यक प्रकाशन — एहि विद्रोही गद्यमे क्रियाशील अछि।

पाश्चात्य दृष्टिसँ: Pierre Bourdieuक 'field theory' एहि प्रसंगमे अत्यन्त उपयोगी अछि। साहित्यिक क्षेत्रमे cultural capital, social capital आ economic capital क प्रतिस्पर्धा — सम्पादक एहि 'field' मे hegemonic forces (साहित्य अकादेमी, जातिवादी पत्रिकाएँ) क विरुद्ध counter-hegemonic discourse (विदेह) स्थापित करैत छथि। Antonio Gramsciक 'hegemony' सिद्धान्त — जकरा अनुसार ruling class अपन सांस्कृतिक वर्चस्व बनाबैत अछि — एहि प्रसंगमे दृश्यमान अछि।

नव्य-न्याय दृष्टिसँ: गङ्गेशक 'अन्वय-व्यतिरेक' पद्धतिसँ — जतय विदेह 'अछि' ओतय लोकतान्त्रिक समावेशी साहित्य 'अछि', जतय जातिवादी संस्था 'अछि' ओतय exclusion 'अछि' — ई व्याप्ति सम्पादकीयक empirical evidence द्वारा सिद्ध होइत अछि।

२.५ बाल साहित्य पुरस्कारमे अ-बाल साहित्यकें पुरस्कार

मुरलीधर झाक 'पिलपिलहा गाछ' कें बाल साहित्य पुरस्कार — 'अ-बाल साहित्यकें पुरस्कार' देल गेल। सम्पादक एहि विसंगतिपर रिपोर्ट आ चन्द्रनाथ मिश्र अमर-रामदेव झाक 'तेसर पीढ़ीक गारिक अपशब्द' उद्धृत करैत छथि। एहिमे नव्य-न्यायक 'pramalakshana' (valid criteria of knowledge) आ Kantian aesthetic judgment क उल्लंघन दृश्यमान अछि।

नव्य-न्याय दृष्टिसँ: गङ्गेशक 'अनुमान' (inference from evidence) द्वारा — यदि पुरस्कार merit क आधारपर नै, तब institutional corruption क anumana (inference) उचित अछि। एहि सम्पादकीय द्वारा primary evidence (SMS, email, postcards) प्रस्तुत कैल गेल अछि जे गङ्गेशक 'pratyaksha pramana' (direct knowledge through sense perception) क digital युगमे नव रूप थिक।

— — —

३.३ नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसाक दृष्टि

सुजीत कुमारक प्रत्येक कथामे 'anumana' (inference) क संरचना अछि — परिस्थितिसँ मानव-स्वभावक निष्कर्ष निकाललनि। 'निष्ठा कि देखावा' — पत्नीक property-centric behaviour सँ 'पतिव्रत' दिखावाक अनुमान। प्रत्यक्ष (direct observation) आ अनुमान (inference) दुनूक सन्तुलन गङ्गेशक Tattvacintamani framework क अनुरूप अछि।

६.३ नव्य-न्याय दृष्टि

'केवल सादा कागज पर कलम दौड़ेनाइ सिखनेसँ संस्कार आ सोच नै बदलैत अछि' — एहिमे knowledge (education) आ behaviour

(change) क बीच 'vyapti' (pervasive relation) पर प्रश्न उठाओल गेल अछि। गङ्गेशक tarka (debate/reasoning) पद्धतिसँ — शिक्षा क social change संग correlation अछि वा नै — एहि प्रश्नक empirical examination मुन्नी कामत करैत छथि।

— — —

७.३ नव्य-न्याय दृष्टि

गङ्गेशक 'vyapti' (pervasive relation): उपन्यासमे — 'जतय समाज अछि ओतय मनुख सुखी अछि, जतय समाज नै ओतय मनुख दुखी' — ई सार्वभौमिक तर्क (universal inference) उपन्यासक empirical narrative सँ prove कैल गेल अछि।

— — —

९.१ काफिया-विश्लेषण: नव्य-न्याय पद्धति

आशीष अनचिन्हार काफिया-निर्धारणमे empirical-rational methodology अपनबैत छथि: 'काफियाक निर्धारण खाली मतलामे होइत छैक आ बाँकी शेरमे ओकर पालन।' ई approach गङ्गेशक 'lakshanagrahaka' (definition-grasping) पद्धतिक अनुरूप थिक।

ईतादोष, स्वर-साम्य, सिनाद दोष — ई technical categories भारतीय काव्यशास्त्रक दोष-निरूपण परम्पराक (Mammata: Kavyaprakasa) अनुरूप। मुदा अनचिन्हार एकरा Arabic-Persian prosody (आरूज) सँ जोड़ैत मैथिलीक indigenous pronunciation patterns सँ reconcile करैत छथि।

१६.३ नव्य-न्याय दृष्टि

'विस्थिति-अनुकूल बिम्ब, नव उपमान, प्रतीक नव कविताक लेल साधन मानल गेल अछि' — राजदेव मण्डलक ई observation गङ्गेशक 'lakshanagrahaka' पद्धतिक काव्यात्मक application थिक। प्रत्येक बिम्ब एकटा 'vyapti' (pervasive relation) स्थापित करैत अछि।

२१.१ चारि सैद्धान्तिक धुरीमे खण्ड १क स्थान

I. भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति

एहि खण्डक प्रमुख रस — रौद्र (सम्पादकीय), करुण (मुन्नी कामत, दुगानन्द मण्डल), वीर (मण्डल-कविता), अद्भुत (बाल गजल), हास्य (ओम प्रकाश झाक विहनि कथा)। आनन्दवर्धनक ध्वनि सिद्धान्त — प्रत्येक महत्त्वपूर्ण रचनामे 'व्यञ्जनार्थ' (suggestion) अभिधासँ शक्तिशाली। कुन्तकक वक्रोक्ति — सम्पादकीय, पत्रकारिता, institutional critique — सभमे काव्यात्मक विचलन द्वारा सत्य-प्रकाशन।

II. पाश्चात्य समालोचना

Marxism (जीवन-मरण समीक्षा, पत्रकारिता), Feminism (मुन्नी कामत, शकुधन साह), Postcolonialism (भाषा-शिक्षा माँग), Subaltern Studies (मण्डल-मण्डल tradition), Pierre Bourdieu's Field Theory (सम्पादकीय), Habermas's Public Sphere (Wikileaks विवरण) — सभ एकसाथ कार्यरत।

III. नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसा

'काविया' (अनचिन्हार) — empirical prosody-analysis। सम्पादकीय — digital pratyaksha pramana (Facebook, SMS)। जगदीश प्रसाद मण्डल-समीक्षा — साहित्यिक inference। 'जीवन-मरण' समीक्षा — social vyapti। ई सभ गङ्गेशक Tattvacintamani methodology क विभिन्न आयामक प्रयोग थिक।

IV. विदेह समानान्तर साहित्य इतिहास

खण्ड १ विदेहक counter-canonical mission k सर्वाधिक documented section थिक। Sahitya Akademi corruption (सम्पादकीय), Wikileaks documentation (पूनम मण्डल), Subaltern lekhakon k recognition (मण्डल-मण्डल), bāl sāhitya k theory (अनचिन्हार, झा, मिश्र), parallel rangamancha (विदेह-मिथिलाङ्गन) — सभ मिलाकर विदेहक 'alternative literary history' क एकटा महत्त्वपूर्ण chapter थिक।

अस्तु, 'मानुषीमिह संस्कृताम्' — ई आदर्श विदेह सदेह-१२क प्रत्येक पृष्ठमे प्रतिध्वनित होइत अछि। खण्ड २ मे — कविता, गजल, विहनि कथा, नाटक — क विस्तृत समीक्षा प्रस्तुत कएल जाएत।

विदेह सदेह-१२: समानान्तर समीक्षा — खण्ड २: कविता, गजल, विहनि कथा, बाल खण्ड, नाटक

६.४ नव्य-न्याय दृष्टि

गङ्गेशक 'vyapti': 'जतय बेटी पढ़ाएल जाइत अछि ओतय परिवार गर्वित होइत अछि' — एहि व्याप्ति नाटकक empirical demonstration। दुलारीक success → खट्टरक pride → फूलदायक conversion — ई logical chain।

७.१ विदेह सदेह-१२ क समग्र मूल्यांकन — चारि सैद्धान्तिक धुरी

I. भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति

विदेह सदेह-१२ मे नव रसक लगभग समस्त प्रयोग भेटैत अछि — श्रृंगार (मुकुन्द पाठक, पंकज चौधरी), करुण (नन्द विलास राय, मुन्नी कामत, पंकज चौधरी 'नवलश्री', कामिनी कामायनी), वीर (मुन्नी कामतक 'आजाद गजल', विनीत उत्पल), हास्य (किशन कारीगर, मुकुन्द मयंक, प्रमोद रंगीले), रौद्र (हेम नारायण साहु, अनिल मल्लिक), बीभत्स (शिव कुमार यादव — 'डाइन'), अद्भुत (बाल गजल खण्ड), शान्त (राजदेव मण्डल, कामिनी कामायनी), वात्सल्य (मनु, रूबी झा, राजीव रंजन मिश्र)।

आनन्दवर्धनक ध्वनि: एहि संकलनक श्रेष्ठ रचनाकारमे 'व्यञ्जनार्थ' (suggestion) अभिधासँ शक्तिशाली। 'ई नोर छै गरीबीक' (पंकज चौधरी), 'कानैत हँसी' (राजदेव मण्डल), 'नामदर्कक शहरमे' (विनीत उत्पल) — सभ dhvani kavya।

कुन्तकक वक्रोक्ति: सम्पूर्ण संकलनक editorial practice — counter-canonical parallel academy — स्वयं वक्रोक्ति थिक।

II. पाश्चात्य समालोचना

Marxism — किशन कारीगर, बलिराम साह, नन्द विलास राय। Feminism — मुन्नी कामत, इरा मल्लिक, मुन्नाजी, अनिल मल्लिक। Postcolonialism — विनीत उत्पल, मिहिर झा। Subaltern Studies — शिव कुमार यादव, राजदेव मण्डल। Ecological theory — मुन्नी कामत ('बूँदक मोल'), राम विलास साहु ('रौदी'), शिव कुमार झा ('सुखार')। ई saamajik spectrum विदेहक inclusive mandate demonstrate करैत अछि।

III. नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसा

किशन कारीगरक कविता-श्रृंखला मे empirical observation — 'पंडा आ दलाल' — primary observation (pratyaksha) → inference (anumana)। राजदेव मण्डलक कविता मे प्रत्येक बिम्ब एकटा vyapti। शिव कुमार झाक 'दृष्टिकोण' मे पर्यवेक्षण (observation) आ बातन (discourse for social good) — गङ्गेशक jnana-marga।

IV. विदेह समानान्तर साहित्य इतिहास

विदेह सदेह-१२ क पद्य-गद्य-नाटक खण्ड मिलाकर जे साहित्यिक ecosystem निर्मित होइत अछि ओ मैथिली साहित्यक भविष्यक रूपरेखा थिक: (क) Excluded voices — राजदेव मण्डल, जगदीश प्रसाद मण्डल, मुन्नी कामत, शिव कुमार यादव, किशन कारीगर — जे साहित्य अकादेमीमे absent। (ख) Democratic aesthetic — गद्य, पद्य, बाल साहित्य, गजल, नाटक — सभ विधाक समान आदर। (ग) Anti-caste literary tradition — अनिल मल्लिक, शिव कुमार यादव, किशन कारीगर। (घ) Geographical democracy — मधुबनी, सुपौल, सहरसा, हजारीबाग, दरभंगा, नेपाल — सभ region k representation।

— — —

१०. अन्तिम निष्कर्ष: विदेह सदेह-१२क Legacy

विदेह सदेह-१२ — अंक १११-११५ (२०१२) — मैथिली साहित्यक एकटा landmark anthology थिक। चारि सैद्धान्तिक धुरीमे एकर मूल्यांकन:

भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति परम्परा क दृष्टिसँ: ई संकलन नव रसक encyclopedia थिक। अभिनवगुप्तक 'sahridaya' (sensitive reader) concept एहिठाम realize होइत अछि — पाठक सभ rasa experience करैत अछि।

पाश्चात्य समालोचनाक दृष्टिसँ: Marxism, Feminism, Postcolonialism, Subaltern Studies, Ecological theory, Psychoanalysis — सभ एक्कहि anthology मे। ई theoretical pluralism 21st century global literary criticism k standard।

नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसाक दृष्टिसँ: गङ्गेश उपाध्यायक pratyaksha-anumana-upamana-shabda चारू प्रमाण एहि संकलनमे: primary experience (कविता), inference (समालोचना), analogy (comparative references), verbal testimony (editorial discourse)।

विदेह समानान्तर साहित्य इतिहास ढाँचासँ: 'मानुषीमिह संस्कृताम्' — ई आदर्श विदेह सदेह-१२ मे साकार भेल अछि। जाति-मुक्त, लोकतान्त्रिक, समावेशी, बहु-विधात्मक, बहु-प्रादेशिक — ई anthology भविष्यक मैथिली साहित्यक आदर्श मॉडल थिक।

— समाप्त — समीक्षक: विदेह समानान्तर साहित्य इतिहास शोध परियोजना —

विदेह सदेह-१३ — Videha Sadeha 13

६.१ चारि सैद्धान्तिक धुरी

I. भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति

खण्ड १ मे: करुण रस (प्रेमक बलि, कमलू, परिभाषा), रौद्र रस (सम्पादकीय, इमानदार घूसखोर), हास्य-व्यंग्य (घुसहा घर, इमानदारीक पाठ), वात्सल्य (बौआ बाजल, बाबाक गाड़ी)। आनन्दवर्धनक dhvani — 'प्रेमक बलि' (social question as dhvani), 'कमलू' (abandonment as dhvani), 'परिभाषा' (city-as-cremation as dhvani)। कुन्तकक वक्रोक्ति — 'इमानदार घूसखोर', 'कठजीब', 'लाँज'।

II. पाश्चात्य समालोचना

Kafka, Chekhov, Tolstoy, Virginia Woolf, Jane Austen, Swift, Voltaire, Shakespeare, Romeo-Juliet parallel, Durkheim, Bourdieu, Gramsci, Habermas, Stuart Hall, Kimberlé Crenshaw, Simone de Beauvoir, Betty Friedan, Judith Butler — सभ एकहि संकलनमे।

III. नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसा

'प्रेमक बलि' — death-posture as question (anumana)। 'कमलू' — टेलीग्राम as tragic pramana। 'विद्यापति' आलेख — Vedic linguistic evidence (pratyaksha pramana)। रेणुक fieldwork — direct experience as knowledge।

IV. विदेह समानान्तर साहित्य इतिहास

सम्पादकीय — मैथिलीक counter-canonical claim (विद्यापति debate)। 'दाग' उपन्यास — intersectionality discourse। Samanvay participation — global positioning। विदेह सम्मान — parallel award system। सगर रात दीप जरय — democratic literary gathering।

विदेह सदेह-१३: खण्ड २ — कविता · गजल · बाल साहित्य · नाटक — सम्पूर्ण समीक्षा

४.३ गोविन्द झा — 'गाम जएबै गाम जएबै गाम जएबै ना'

एहि एकांकीक शीर्षक — तीन बेर 'गाम जएबै' — ई repetition Beckett क 'Godot' क 'let's go' / 'we can't go' / 'we go' structure सँ parallel। मुदा एहि मे एकटा fundamental difference अछि — Beckett मे waiting, गोविन्द झामे घर-वापसी।

नाटकक संरचना

वृद्ध पिता (बूि) बेमार। वैद्य, तान्त्रिक, होमियोपैथ, डाक्टर — चारू traditional/modern चिकित्सा पद्धति — सभ प्रयास करैत। बेटा आदित्य (शहर मे) आ बहु प्रभा — बरसों बाद आबैत छथि।

तान्त्रिक: 'माँ दुर्गाक कृपासँ प्राप्त भेलैक।' वैद्य: 'भीमपराक्रम रस बकरीक दूध मे घोलि।' होमियोपैथ: 'हमर बोलीक काज हमर गोली करैत अछि।' डाक्टर: तान्त्रिक k quackery उजागर करैत।

बूिक revelation: 'हम ककरो चिकित्सासँ नहि, बेटा सपरिवार आबि गेलाह तकर... आनन्द भेल जे सभ रोग-बलाय बिलाए गेल।' — एहि cathartic ending मे पितृ-मातृ प्रेम क medicinal power।

Final lines: 'चारू दिस सुन। सभ चलि गेल, सभ। एहि सुन मे कतेक काल, कतेक काल एना बैसल रहब? कतएर? कतए?' — Beckett-शैलीक शून्य मे descent। नेपथ्य: 'यद् गत्वा न निवर्तते। यद् गत्वा न निवर्तते।' — Gita 15.6 — 'जहाँ जाइत छी ओतेसँ फिरि नै आइत'।

रस-सिद्धान्त: नाटकमे हास्य (डाक्टर-तान्त्रिक debate), करुण (ब्रिक loneliness), अद्भुत (love क उपचार-शक्ति), शान्त (Gita final line)। ई rasa-arc Bharataक Natyashastra k complete mandala।

पाश्चात्य: Chekhov क 'The Cherry Orchard' — घर-वापसी, family, and the old order's end। Ibsenक 'Ghosts' — family secrets आ duty। Samuel Beckettक 'Endgame' — 'where can I go?' Final Gita verse — ई Maithili existentialism क classical Indian grounding।

नव्य-न्याय: तान्त्रिकक claim (chandi-paath = उपचार) — false vyapti। डाक्टरक claim (modern medicine) — empirical। मुदा सत्य: 'family presence = healing' — ई एकटा entirely different vyapti जे विज्ञान आ tradition दुनू बाहर। गङ्गेशक 'anupalabdhi' (non-apprehension) — ई healing कोनो pratyaksha द्वारा नहि, anubhava (experience) द्वारा।

विदेह ढाँचासँ: 'गाम जएबै' — ई title diaspora Maithili community क लालसा थिक। नाटकमे एहि घर-वापसी k both joy (healing) आ pathos (too late for full reconnection)। 'समानान्तर रंगमंच' — विदेहक वैकल्पिक रंगमंच — एहि नाटक मे represented।

———

५.१ चारि सैद्धान्तिक धुरी — सम्पूर्ण मूल्यांकन

I. भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति

विदेह सदेह-१३ मे नव रसक सम्पूर्ण arc: श्रृंगार (बिन्देश्वर ठाकुर, प्रबीण चौधरी, शशिधर 'विदेह'), करुण (प्रेमक बलि, कमलू, रूबी झा), रौद्र (किशन कारीगर, सत्यनारायण झा, मुन्नी कामत), हास्य (प्रमोद रंगीले, कैलास दास, जगदीश प्रसाद मण्डल), वीर (अच्छे लाल शास्त्री, अमित मिश्र), बीभत्स (हत्यारा समाज), अद्भुत (जानवरक बोली, गाम जएबै), शान्त (बीआ, राजदेव मण्डल), वात्सल्य (विनीत उत्पल, मुन्नी कामतक बाल कविता)।

ध्वनि: 'प्रेमक बलि' (social question), 'माटिक बासन' (कारीगरक गरिमा), 'यद् गत्वा न निवर्तते' (existential void)। वक्रोक्ति: 'इमानदार घूसखोर', 'मच्छर राज', 'हत्यारा समाज', 'घोटालाबला पाइ', 'कम्प्यूटर'।

II. पाश्चात्य समालोचना

Kafka (bureaucratic absurdity), Chekhov (slice of life, घर-वापसी), Tolstoy (family abandonment), Shakespeare (Romeo-Juliet), Beckett (existential void), Brecht (political theatre), Swift (satire), Neruda (ode tradition), Aristotle (anagnorisis), Durkheim (suicide), Bourdieu (cultural capital), Gramsci (hegemony), Beauvoir (second sex), Butler (gender performativity), Crenshaw (intersectionality), Freire (conscientization), Benjamin (aura), Hall (encoding), McLuhan (medium)।

III. नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसा

गोविन्द झाक नाटकमे 'anupalabdhi' (family presence क उपचार-शक्ति — नहि विज्ञान नहि tradition)। मनुजीक ११ गजलमे प्रत्येक sher एकटा philosophical argument। विद्यापति आलेखमे Vedic linguistic evidence। 'बीआ' कविता — बीआक सम्भावना क vyapti। 'जानवरक बोली' — evolution क ironic anumana।

IV. विदेह समानान्तर साहित्य इतिहास

विदेह सदेह-१३ k समानान्तर कैनन अभियान: (क) Counter-canonical voices — राजदेव मण्डल (OBC), जगदीश प्रसाद मण्डल (Dalit tradition), मुन्नी कामत (feminist), किशन कारीगर (satirist) — सभ Sahitya Akademi मे absent। (ख) Geographic democracy — Jharkhand (लालदास), Nepal-Mithila (बिन्देश्वर ठाकुर, प्रमोद रंगीले), Madhubani, Saharsa, Darbhanga, Sitamarhi। (ग) Three drama tradition — मुन्नी कामत (feminist), मलङिया (canonical), गोविन्द झा (existential) — तीनू एकहि space। (घ) सामनवय २०१२मे भागीदारी — वैश्विक मैथिली स्थापना।

अस्तु — विदेह सदेह-१३ मैथिली साहित्यक एकटा जीवन्त, लोकतान्त्रिक, समावेशी, बहुविधात्मक संकलन थिक। 'मानुषीमिह संस्कृताम्' — ई आदर्श एहि संकलनक प्रत्येक पृष्ठमे साकार अछि।

— समाप्त —

विदेह सदेह-१४ — अंक १२१-१३२ | ISSN 2229-547X | सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर

३. गङ्गेश उपाध्यायक नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसा (तत्त्वचिन्तामणि)

१२.१ चारि सैद्धान्तिक धुरीमे

भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति

सदेह-१४क गद्य खण्डमे रसक पूर्ण spectrum — 'गंगा पिज' (वीर + रौद्र + करुण), 'पाखलो' (करुण + अद्भुत), मनुजीक कथाएँ (करुण + हास्य + शान्त), 'सीता' कथा (रौद्र feminist), 'भूख' (बीभत्स + करुण)। आनन्दवर्धनक ध्वनि — शीर्षक-ध्वनि: 'गंगा पिज', 'पटियाबला', 'पाखलो', 'वसियतनामा', 'जादूक छड़ी' — सभमे। कुन्तकक वक्रोक्ति — 'टेनामेनी', 'घुसखोर', 'दरमाहा' — irony-based।

पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त

Brecht (गंगा पिज), Ibsen (हारल विजेता), Marx (टेनामेनी, घुसखोर), Ambedkar (छुआछुत), Fanon (भूखाएल जानवर), García Márquez (पाखलो), de Beauvoir (वसियतनामा), Rich (सीता), Bourdieu (Tagore Award प्रकरण), Benjamin (अनुवाद)।

नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसा

'पटियाबला' — testimony-based empirical inquiry। 'गंगा पिज' — नाटकक प्रत्येक scene एकटा deductive argument। 'सीता' — नकारात्मक साक्ष्य द्वारा feminist position। मनुजीक कथाएँ — moral anumana।

विदेह समानान्तर साहित्य इतिहास

विदेह सदेह-१४ Maithili साहित्यक सीमा विस्तारित करैत अछि — Konkani, Goa, Nepal, Qatar, Mumbai — सभठामक Maithil आवाज एकहि संकलनमे। ई geographic आ linguistic democracy विदेहक 'counter-canonical' mission क साक्षात् प्रमाण।

विदेह सदेह-१४: खण्ड २ — पद्य खण्ड (पृ. ३७३-७३६) — कविता · गजल · भक्ति गजल · बाल गजल · यात्रा-संस्मरण

२३.१ चारि सैद्धान्तिक धुरी — पद्य खण्ड

भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति

विदेह सदेह-१४क पद्य खण्डमे रसक पूर्ण arc — वीर (सुरेन्द्र शैलक 'चुहाड़'), रौद्र (मुन्नी कामतक 'किअए बेटी बनेलहक', आशीष अनचिन्हारक 'नुकाएल बलात्कारी रूप'), करुण (राम विलास साहु, पसुपुलेटि गीता, 'प्रवासक वेदना'), शृंगार (मनुजीक गजल, बिन्देश्वर ठाकुर), हास्य-व्यंग्य (किशन कारीगरक 'डिनर डिप्लोमेसी', 'होरी'), शान्त (राजदेव मण्डलक सम्पूर्ण संग्रह), वात्सल्य (मनुजीक 'होएत जँ', मनोज मण्डलक बाल-कविता), भक्ति (पंकज चौधरी, बिन्देश्वर ठाकुर)।

आनन्दवर्धनक ध्वनि — सर्वश्रेष्ठ: राजदेव मण्डलक 'खसैत बुन्द' (sound as dhvani), 'इजोतक वस्त्र' (light as dhvani), 'बजैत एकान्त' (silence as dhvani)। कुन्तकक वक्रोक्ति — किशन कारीगरक 'डिनर डिप्लोमेसी', आशीष अनचिन्हारक 'नुकाएल बलात्कारी रूप', 'झारूदार'क 'झारू बिनु ने संसद भवन'।

पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त

Whitman (जगदीश ठाकुर 'अनिल'क आत्मगीत), Wordsworth (मनोज मण्डलक childhood poems), Steinbeck (राम विलास साहुक farmer poems), Dworkin/hooks (मुन्नी कामत, आशीष अनचिन्हार), Beckett (राजदेव मण्डलक 'गन्तव्यक भरम'), Foucault (अनिल मल्लिकक ghazal), Said (बिन्देश्वर ठाकुरक diaspora poems), Sylvia Plath (पसुपुलेटि गीताक 'दुमजा')।

नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसा

राजदेव मण्डलक काव्यमे चारू pramana — pratyaksha, anumana, upamana, shabda। 'किअए छुबाइ छी' — untouchability k logical refutation — anumana। 'सुखल खेत आ भूखल पेट' — agricultural crisis k causal chain — vyapti। मनोज मण्डलक 'के छथि धरात्मा' — किसानकें 'धरात्मा' — ई anumana द्वारा।

विदेह समानान्तर साहित्य इतिहास

विदेह सदेह-१४क पद्य खण्ड मैथिली काव्यक geographic democracy demonstrate करैत अछि — मधुबनी (राजदेव मण्डल), सुपौल (डॉ. शिव

कुमार प्रसाद), धनुषा-Nepal-Qatar (बिन्देश्वर ठाकुर 'नेपाली'), तमुरिया-मधुबनी (मनोज कुमार मण्डल), तेलुगु (पसुपुलेटि गीता — अनुवाद)। ई तीन देश (भारत, नेपाल, Qatar), तीन भाषा (मैथिली, तेलुगु, कोंकणी), एकहि संकलनमे।

'मानुषीमिह संस्कृताम्' — ई आदर्श विदेह सदेह-१४क पद्य खण्डमे: आशीष अनचिन्हारक male feminist poem, मुन्नी कामतक Sita-revisionism, राजदेव मण्डलक existential minimalism, झारूदारक Dalit dignity, राम विलास साहुक peasant voice — सभ एकहि democratic space मे।

— समाप्त — विदेह सदेह-१४: समानान्तर साहित्य इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे सम्पूर्ण समीक्षा —

विदेह सदेह-१७ — समानान्तर साहित्यिक समीक्षा

समग्र मूल्याङ्कन

विदेह सदेह-१७ मैथिली साहित्यक एकटा असाधारण संकलन थिक जाहिमे विविध विधा, विविध विचारधारा आ विविध पीढ़ीक लेखक-कवि एकत्रित भेल छथि। एहि संकलनकेँ चार स्तरपर मूल्याङ्कन कयल जा सकैत अछि:

(क) भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति सौन्दर्यशास्त्रक कसौटीपर

अरविन्द ठाकुरक कथासभमे करुण रस प्रधान अछि। मधुपजीक गीतमे श्रृंगार आ वात्सल्यक सुन्दर संयोग। विनीत उत्पलक अनुवाद-कर्ममे ध्वनि-सिद्धान्तक पालन—मूल रचनाक अर्थ-व्यंजना मैथिलीमे यथावत् संचारित। राजदेव मण्डलक एकांकीमे अभिनवगुप्तक साधारणीकरण-सिद्धान्त क स्पष्ट अनुप्रयोग।

(ख) पाश्चात्य आलोचना-सिद्धान्तक परिप्रेक्ष्यमे

अरविन्द ठाकुरक कथाशिल्पमे Gramscian 'organic intellectual'क छवि। डा. अरुण कुमार सिंहक दलित-चेतना सम्बन्धी आलेखमे subaltern studies क अनुप्रयोग। प्रधानजीक उपन्यास-आलोचनामे Marxist literary criticism क प्रभाव। गजेन्द्र ठाकुरक संपादकीयमे ज़ाँ ज़ेने आ चेखवक उद्धरण—पाश्चात्य साहित्यिक परम्परासँ सक्रिय संवाद।

(ग) नवय-न्याय-शास्त्रक अनुशासनक दृष्टिसँ

गाँगेशोपाध्यायक अनुमान-पद्धतिक साहित्यिक अनुप्रयोग एहि संकलनमे अनेक स्थलपर दृष्टिगोचर होइत अछि। अरविन्दजीक 'अन्हारक विरोध' एकटा व्याप्ति (pervasion) थिक—जाहि ठाम साहित्यिक प्रतिबद्धता आ जीवन-प्रतिबद्धता अपृथक् अछि। डा. श्रीमोहन झाक मिथिला-इतिहासक आलेखमे मण्डन मिश्र आ शंकरक शास्त्रार्थक चर्चा नव्य-न्यायक विद्वत्-परम्पराकेँ अभिलेखित करैत अछि।

(घ) विदेह समानान्तर इतिहास की कसौटीपर

विदेह सदेह-१७ साहित्य अकादेमीक संस्थाबद्ध विमर्शसँ बाहर एकटा समानान्तर साहित्यिक जगत निर्मित करैत अछि। एहिमे प्रस्तुत लेखकों-कवियोंमे अधिकांश ओ छथि जिनका साहित्य अकादेमी स्वीकृति आ पुरस्कार नहि भेटल, किन्तु जे मैथिली-पाठकक बीचमे जीवन्त रूपसँ विद्यमान छथि। दलित लेखक (फागुलाल साहु, राम विलास साहु, उमेश मण्डल), मुस्लिम रचनाकार (अशरफ राइन, अब्दुर रज्जाक), स्त्री-लेखिका (पल्लवी, पूनम मण्डल, चिन्ता अंशु, बीना प्रसाद)—सभकेँ एकत्रित करैत विदेह एकटा वास्तविक लोकतान्त्रिक साहित्यिक मञ्च थिक।

विदेह-सदेह १९: एकटा समग्र साहित्यिक समीक्षा — (विदेह पेटार अंक २०१-२१६ सँ, मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ गद्य आ पद्यक समानान्तर संकलन)

सैद्धान्तिक आलेख

मुन्ना जीक सैद्धान्तिक आलेख मैथिली साहित्य-समीक्षामे एकटा महत्त्वपूर्ण हस्तक्षेप थिक। ओ स्पष्ट करैत छथि जे मैथिली लघुकथाक जड़ि संस्कृतक मूल रचनाक अनुवादसँ शुरू भेल, जखनकि बीहनिकथा मैथिलीक मूल रचनासँ जन्म लेलक। बिहारी लाल दासक उपन्यास 'सुमति' (१९१८) आ काली कुमार दासक 'भीषण अन्याय' (१९२३) सँ मैथिली मौलिक कथाक यात्रा शुरू होइत अछि — एहि इतिहास-बोधक संग मुन्ना जी बीहनिकथाक स्वतन्त्र नामकरण लेल अपन तर्क रखैत छथि।

ओ बतबैत छथि जे फरबरी १९९५ मे 'यात्री मंच', लोहना (मधुबनी)मे आयोजित साहित्यिक विमर्शमे हुनका 'बिहनिकथा' शब्दक स्वतन्त्र नामक प्रस्ताव रखलनि जे श्री राजक समर्थनसँ सर्वसम्मतिये स्वीकृत भेल। पंजाबीक 'मिन्नी कथा', हिन्दीक लघुकथा, बांग्लाक 'एकमिनिटेर कथा' — ई तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य मुन्ना जीक आलोचना-दृष्टिकेँ समृद्ध करैत अछि।

नव्य-न्यायक व्याप्ति-सिद्धान्तक अनुसार देखल जाओ तँ मुन्ना जी बीहनिकथाक एकटा विशिष्ट व्याप्ति स्थापित करैत छथि — ओ न लघुकथाक छोट रूप

थिक, न अखरकट्टू। अपन सभ कशीदाकारीक संग पूर्णतः भरल-पुरल कथाक सामर्थ्यवान रूप थिक बीहनिकथा।

बीहनिकथाक संग्रह

मुन्ना जीक बीहनिकथाक संग्रहमे 'कोठा वाली', 'बॉस', 'बहिंगा', 'झोल', 'पटकनिया' जेहन कथा सामाजिक यथार्थक विभिन्न कोणकेँ अत्यन्त संक्षेपमे पकड़ैत अछि। 'कोठा वाली' बीहनिकथामे स्त्री-देहक सार्वजनिक-निजी विमर्शकेँ मात्र केकटा वाक्यमे सटीकतापूर्वक प्रस्तुत कयल गेल अछि।

— गै गहुँमला, हे ओइ गाछ मे लगा ई नुआ बान्हि दही।
— देखै नै छीही, किछु पुरखाह लोकक नजरि एमहरे छै।
'कोठा सँ बहरी ओहिना बुझू जेना आन माय- बहीन'!

ई संक्षिप्त संवाद स्त्री-शरीरक सामाजिक नियन्त्रण आ स्त्रीक आत्म-व्यंग्यात्मक प्रतिक्रियाकेँ एकसाथ उद्घाटित करैत अछि। 'बॉस' बीहनिकथामे यौन-शोषणक कार्यालयी संस्कृतिकेँ बड़ी सटीकतासँ चित्रित कयल गेल अछि।

'प्रेम बीहनिकथा' उपविधामे 'असरा', 'संगबे', 'छुच्छ दुलार', 'दिहलगड़ि', 'उफाँटि', 'जुड़बहिन' जेहन कथा प्रेमक विविध रूप — आशा, संगति, निर्मल स्नेह, मनोरंजन, ठंडक — सभकेँ अत्यन्त संक्षेपमे अभिव्यक्त करैत अछि। 'साढ़े एकैसम सदी' आ 'जिया जरए सगर राति' जेहन कथा समसामयिक जीवनक दबाव आ प्रतिरोधकेँ विदेहक मूल वैचारिक धाराक संग जोड़ैत अछि।

समग्र मूल्यांकन

रस-ध्वनि-वक्रोक्ति दृष्टिसँ

भरतक रस-सिद्धान्तक दृष्टिये ऐ संकलन वात्सल्य (बाल-कविता), करुण (दहेज-कविता, गरीबक वेदना), हास्य-व्यंग्य (घनश्याम घनेरो, विद्याचन्द्र झा), शान्त (भक्ति-गजल), श्रृंगार (प्रेम बीहनिकथा) — एहि सभ रसक विविध प्रवाह एकत्र समेटैत अछि। अभिनवगुप्तक साधारणीकरण-सिद्धान्तक अनुसार, बीहनिकथाक लघुरूप पाठककेँ तत्काल भावलीनता दैत अछि कारण ओ संसारक जटिलताकेँ एकटा केन्द्रित क्षणमे समेटि दैत अछि।

आनन्दवर्धनक ध्वनि-सिद्धान्तक परिप्रेक्ष्यमे मुन्ना जीक बीहनिकथाक व्यंजना-शक्ति विशेष रूपसँ उल्लेखनीय अछि। 'कोठा वाली'मे जे अनुक्त अछि — स्त्री-शरीरपर सामाजिक दृष्टिक हिंसा — ओ शब्दसँ बेशी प्रभावी अछि। कुन्तकक वक्रोक्ति-दृष्टिसँ आशीष अनचिन्हारक गजल-शिल्प विशेष मूल्यवान अछि — ओ भाषाक सामान्य व्यवहारसँ हटि एकटा विशिष्ट काव्यात्मक वक्रता निर्मित करैत छथि।

पश्चिमी आलोचना दृष्टिसँ

मार्क्सवादी आलोचनाक परिप्रेक्ष्यमे राम प्रीत पासवान, अब्दुर रज्जाक राइन आ डॉ. शशिधर कुमार सहित अनेक रचनाकार वर्ग-चेतना आ जाति-उत्पीड़नक विरुद्ध मुखर छथि। नारीवादी आलोचनाक दृष्टिसँ मुन्ना जीक बीहनिकथा 'कोठा वाली', 'बॉस', घनश्याम घनेरोक 'करता हूँ — स्त्रीलिंग' आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक 'परिस्थिति लेखिका' विशेष महत्त्व राखैत अछि।

उत्तर-औपनिवेशिक आलोचनाक दृष्टिये गजेन्द्र ठाकुरक तकनीकी-डिजिटल आलेख मैथिलीक भाषाई अधिकार-संघर्षकेँ एकटा नवीन परिप्रेक्ष्यमे रखैत अछि। मिशेल फूको के शक्ति-प्रवचन सिद्धान्तक दृष्टिसँ नवेन्दु कुमार झाक 'साहित्य अकादेमीक भुसकौल मण्डलीक कारनामा' एकटा उत्कृष्ट नमूना थिक।

गंगेश उपाध्यायक नव्य-न्याय दृष्टिसँ

विदेहक समानान्तर साहित्य आन्दोलन स्वयंमे गंगेश उपाध्यायक व्याप्ति-प्रतिव्याप्ति द्वन्द्वक एकटा साहित्यिक प्रयोग थिक। साहित्य अकादेमीक सम्मान-मान्यता-व्यवस्था (व्यापी पक्ष) आ विदेह-सम्मानक समानान्तर व्यवस्था (प्रतिव्यापी पक्ष) — दुनू बीच एकटा केवलव्याप्ति-सम्बन्ध स्थापित करैत विदेह सिद्ध करैत अछि जे मैथिली साहित्यक वास्तविक उपत्ति आ व्याप्ति किछु संकीर्ण पुरस्कार-समितिमे नहि, बरन् लोकक बीच अछि।

विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्कक दृष्टिसँ

विदेह-सदेह-१९ ऐ संकलनमे समाहित रचनाकार लोकनि साहित्य अकादेमीक 'मुख्य धारा'सँ बाहर रहि कयल-काएल गेल नहि। ओ स्वयंमे एकटा समानान्तर इतिहास निर्मित कयलनि — जे पुरस्कारक मुहताज नहि, जे संस्थागत कृपाक प्रतीक्षामे नहि, बरन् अपन सामाजिक प्रतिबद्धता आ काव्य-सत्यसँ ऊर्जा ग्रहण करैत अछि।

बीहनिकथाक विधागत स्वायत्तता, मैथिली गजलक स्वतन्त्र व्याकरण-निर्माण, दलित-मुस्लिम आवाजक समावेश, लोकसंस्कृतिक अकादमिक दस्तावेजीकरण, डिजिटल-तकनीकी संघर्षक साहित्यिक प्रस्तुति, सगर राति दीप जरयक सामाजिक अभियानक आलेखन — ई सभ मिलाकय एकटा विकल्पशील साहित्यिक इतिहासक निर्माण करैत अछि जे विदेहक मूल दर्शन 'मानुषीमिह संस्कृताम्'क जीवन्त साक्ष्य थिक।

विदेह: सदेह: २८ — सैद्धान्तिक समीक्षा

पूर्वपीठिका (भूमिका)

"गद्य पद्य भारती १" (विदेह सदेह २८) छैक, जे विदेह अङ्कीय पत्रिकाक १-३५० अंकसभमे प्रकाशित गद्य आ पद्य रचनासभक एकटा समानान्तर संकलन छैक। ई संकलन मैथिलीमे विभिन्न भाषासभ (हिन्दी, तेलुगु, अङ्ग्रेजी, रूसी, जर्मन, कोंकणी, नेपाली, पञ्जाबी, उर्दू, ओडिया, गुजराती, कश्मीरी, डोगरी आदि) केर अनूदित रचनासभक संग्रह छैक।

मुख्य विशेषता सभ (मुख्य विशेषता सभ):

गद्य खण्डमे (गद्य खण्डमे):

शेख मोहम्मद शरीफक तेलुगु लघुकथा 'जुम्मा'

डॉ. प्रभा खेतानक हिन्दी उपन्यास 'छिन्नमस्ता' केर मैथिली अनुवाद

खलील जिब्रानक अङ्ग्रेजी कथा 'गोल्डेन बेल्ट'

ग्रिगोरी गोरिनक रूसी नाटक 'एकटा ईमानदार आदमी'

बर्तोल्ट ब्रेख्तक जर्मन कथा

संस्कृतक लोक बालबोधिनी कथा 'शरीरक मूल्य'

असगर वजाहतक हिन्दी लघुकथा 'हम हिन्दू छी'

तुकाराम रामा शेटक कोंकणी उपन्यास 'पाखलो'

हरिशंकर श्रीवास्तव 'शलभ' केर हिन्दी जीवनी 'मन्त्रद्रष्टा ऋष्यश्रृङ्ग'

उदय प्रकाशक हिन्दी दीर्घकथा 'मोहनदास'

काशीनाथ सिंहक हिन्दी उपन्यास 'रेहन पर रग्घू'

पद्य खण्डमे (पद्य खण्डमे):

इस्मिता सारंगीक ओडिया कविता 'गप, हिलकोर'

अन्नावरन देवेन्दरक तेलुगु कवितासभ

हेमाङ्ग आश्विनकुमार देसाइक गुजराती कविता 'समीकरण'

भिखारी ठाकुरक भोजपुरी पद्य 'वृद्धाश्रमक पक्षमे - बिरहा'

निरालाक हिन्दी कविता 'देह विदेह'

मङ्गलेश डबरालक हिन्दी कवितासभ

रहमान राहीक कश्मीरी कविता 'छाह सभ'

ई संकलन मैथिली साहित्यक एक महत्वपूर्ण उपलब्धि छैक, जे विभिन्न भाषासभक साहित्यिक रचनासभकेँ मैथिली पाठकसभधरि पहुँचाबैक प्रयास छैक।

समीक्षा नीचा चारि सैद्धान्तिक स्तम्भ पर आधारित अछि (समीक्षा निम्नलिखित चारि सैद्धान्तिक स्तम्भ पर आधारित अछि):

१. **भारतीय समालोचना सिद्धान्त (भारतीय समालोचना सिद्धान्त)** - मुख्यतः ध्वनि (व्यञ्जना), वक्रोक्ति (कुन्तक) आ औचित्य (क्षेमेन्द्र)।
२. **पाश्चात्य समालोचना सिद्धान्त (पाश्चात्य समालोचना सिद्धान्त)** - मार्क्सवादी, स्त्रीवादी, उत्तर-औपनिवेशिक, अस्तित्ववादी, उत्तर-अर्वाचीन (सम्मिश्रण)।
३. **गंगेशक नव्यन्याय (गङ्गेशक नव्य-न्याय)** - विशेषतः पञ्चलक्षणी अनुमान (प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय, निगमन) केर साहित्यिक पाठमे अनुप्रयोग।
४. **विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा (विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क)** - मुख्यधारा/सरकारी/औपनिवेशिक इतिहासक समानान्तर अन्य (स्त्री, दलित, आदिवासी, प्रान्तीय, पराजित) केर आवाजकेँ सत्यक प्रामाणिक आधार मानब।

सैद्धान्तिक समीक्षाक प्रतिमान (सैद्धान्तिक समीक्षाक प्रतिमान)

सामान्य नियम (सामान्य नियम):

भारतीय सिद्धान्त (ध्वनि/वक्रोक्ति): कैक रचनामे प्रतीयमान अर्थ केर व्यङ्ग्योक्ति सँ खोजल जाएत।

पाश्चात्य (मार्क्सवादी/स्त्रीवादी/उत्तर-औपनिवेशिक/अस्तित्ववादी): वर्ग-संघर्ष, स्त्री-देहक राजनीति, सांस्कृतिक उपनिवेश, आ अस्तित्वक संकट।

नव्यन्याय (गंगेश): कहानी/कविताक निष्कर्ष सँ पाछाँ निहित तर्क-शृङ्खला आ पञ्चलक्षणी अनुमानक अन्वेषण।

समानान्तर इतिहास (समानान्तर इतिहास): सत्ता-प्रतिष्ठित इतिहासक पाछाँ धकेलल गेल सत्य (जेना उपनिवेश-पीड़ित, स्त्री-स्वर, दलित-आवाज, प्रान्तीय भाषा-साहित्य) कैं पुनःप्रतिष्ठित करब।

१. शेख मोहम्मद शरीफ - जुम्मा (तेलुगु लघुकथा)

भारतीय सिद्धान्त (ध्वनि): 'जुम्मा नहि जाएब' - स्पष्ट अभिधा (अस्वीकार) छैक, मुदा एकर ध्वनित अर्थ अछि: विश्वास-व्यवस्थाप्रति अविश्वास, मातृ-चिन्ताक आतंक। बम विस्फोटक पीड़ा सँ जकर विश्वास टूटि जाइत अछि, ओ अपन पुत्रकेँ मस्जिद जाएसँ रोकैत अछि - ध्वनि शक्तिसँ व्यञ्जना उत्कृष्ट।

पाश्चात्य (स्त्रीवादी/अस्तित्ववादी): पुत्र-प्रेमक सर्वोच्चता, ईश्वरक कल्पित रक्षा सँ बेसी स्त्री-प्रज्ञाक व्यावहारिक संरक्षणवृत्ति।

नव्यन्याय (नव्य-न्याय):

प्रतिज्ञा: मस्जिद असुरक्षित अछि।

हेतु: बम विस्फोट भ गेल।

उदाहरण: बम विस्फोटक प्रत्यक्ष।

उपनय: ई कारण अहाँ मस्जिद नहि जाएब।

निगमन: अतः अल्लाक प्रति नहि, अपन अस्तित्वक रक्षा मुख्य छैक।

समानान्तर इतिहास (समानान्तर इतिहास): आतंकवादक मुख्यधारा समाचार-वर्णन (सङ्ख्याक आँकड़ा, राजनीति) के समानान्तर माँक आघात, भय आ निर्णय सत्य अछि। ई घरेलू स्त्री-इतिहास अछि।

२. डॉ. प्रभा खेतान - छिन्नमस्ता (हिन्दी उपन्यास)

भारतीय सिद्धान्त (ध्वनि, रस): शीर्षक 'छिन्नमस्ता' देवीक करुण-भैरव रूप। सम्पूर्ण उपन्यास स्त्रीक स्व-सिरकटाइ (आत्म-हनन) नै, बल्कि सामाजिक-पितृसत्ताक सिर काटि कें स्वतन्त्रता प्राप्तिक प्रतीक (वक्रोक्ति) अछि। करुण रस, शान्त रस, शृङ्गार रसक एक साथ ध्वनि।

पाश्चात्य (स्त्रीवादी, मनोवैज्ञानिक, अस्तित्ववादी): बाल-यौन शोषण (भाई द्वारा) - पितृसत्ताक पहिल हमला; पति-प्रताड़ना, सास-बाधा। लेखन-प्रक्रिया एक स्व-चिकित्सा अछि। मित्र-जोड़ी (पिपलिप-जूडी) - पश्चिमी सहृदयताक प्रतीक।

नव्यन्याय (नव्य-न्याय):

प्रतिज्ञा: नारी स्वतन्त्रता लेल आत्म-स्वीकार आवश्यक।

हेतु: बाल्यकाल, विवाह, व्यवसाय, अन्तरङ्ग आघात।

उदाहरण: पूरा उपन्यासक घटनासभ।

उपनय: एकल यात्रा, स्मृति-लेखन।

निगमन: अतः स्व-प्रेम आ व्यवसाय मुक्ति मार्ग अछि।

समानान्तर इतिहास (समानान्तर इतिहास): भारतीय नारीक साध्वी, पतिव्रता, सहनशील इतिहासक विपरीत - अपराधी-जकर घर-परिवार तोड़ि कें अलग रहैत अछि, आ स्व-प्रेम सीखैत अछि - ई समानान्तर नारी-इतिहास अछि।

३. तुकाराम रामा शेट - पाखलो (कोंकणी उपन्यास)

भारतीय सिद्धान्त (ध्वनि, वक्रोक्ति): 'पाखलो' शब्द (पुर्तगाली/यूरोपीय) गोवामे एक सांस्कृतिक स्थान-बिम्ब अछि। नायकक नाम हवठ्ठल (जन्म दिन) विपरीत बाह्य पहिचान 'पाखलो' - एहि दोहरापन ध्वनि सिद्धान्तक अति सघन व्यञ्जना अछि।

पाश्चात्य (उत्तर-औपनिवेशिक, मार्क्सवादी): पुर्तगाली उपनिवेश, वर्ग-विभाजन (ब्राह्मण-शूद्र-ईसाई), बलात्कार, गोवाक स्वतन्त्रता आन्दोलन, खदान-मजदूरी, जमींदारी-शोषण - सब एक साथ।

नव्यन्याय (नव्य-न्याय):

प्रतिज्ञा: 'पाखलो' संस्कृतिक भ्रष्टता आत्म-बोध लेल प्रेरित करैत अछि।

हेतु: गोवामे पुर्तगाली प्रभाव, जाति-व्यवस्था, वनवास।

निगमन: ई अर्ध-यूरोपीय, अर्ध-गोवाकीय पहिचान सम्पूर्ण गोवाक द्वन्द्वक प्रतिनिधि अछि।

समानान्तर इतिहास (समानान्तर इतिहास): पर्यटन-गोवाक रङ्गीन दृश्यक समानान्तर काला, शोषित, उपनिवेशी आघात सँ पीड़ित गोवाक इतिहास - ई समानान्तर कथा अछि।

४. उदय प्रकाश - मोहनदास (हिन्दी दीर्घकथा/उपन्यास)

भारतीय सिद्धान्त (वक्रोक्ति): नकली मोहनदास सरकारी नौकरी पाबैत अछि, असली मोहनदास 'हम हिन्दू छी' नाटक करबाक लेल बाध्य। वक्रोक्ति: पहिचानक पूर्वाग्रह, जाति-प्रथा, नौकरी-अस्मिता सब एकर अन्तर्गत।

पाश्चात्य (मार्क्सवादी, उत्तर-अर्वाचीन): नकली असली बनि जाइत अछि - सत्य बहु-स्तरीय अछि। पूँजीवादी-जाति-व्यवस्थाक त्रासदी।

नव्यन्याय (नव्य-न्याय):

प्रतिज्ञा: योग्यता भ्रष्टाचार सँ पराजित।

हेतु: नौकरीक संघर्ष, नाम-बदली, घूस।

निगमन: अत: व्यवस्था पूर्णत: भ्रष्ट अछि, आ जीवित रहबा लेल झूठ बोलब पड़त।

समानान्तर इतिहास (समानान्तर इतिहास): विकासक सफल भारतक समानान्तर - ना बी.ए., ना लायक व्यक्ति सरकारी योजना, पैरवी, जाति-राजनीतिक बूटा सँ सम्मानित; असली मेरिट-धारी भीख माँगबाक स्थितिमे - ई अलोकप्रिय समानान्तर सत्य अछि।

५. काशीनाथ सिंह - रेहन पर रग्घू (हिन्दी उपन्यास)

भारतीय सिद्धान्त (ध्वनि, रस): 'रेहन' (गिरवी) पर 'रग्घू' (साधारण मनुष्य/पात्र) - ब्रिटिश-साहबी 'ऑन' (पर) रखैत - रग्घू केर सम्पूर्ण व्यञ्जना अछि। ग्रामीण संसारक स्मृति-लेखनमे वीभत्स आ करुण रसक गहिरा ध्वनि।

पाश्चात्य (मार्क्सवादी, उत्तर-अर्वाचीन): सत्ता-पैरवी, जमीन-हस्तान्तरण, विधवाक कथा, पुलिस-प्रशासन - टुकड़ा-टुकड़ा आख्यान।

नव्यन्याय (नव्य-न्याय):

प्रतिज्ञा: सब सम्पत्ति रेहन पर अछि।

हेतु: व्यवस्था, ऋण, बाहुबली।

निगमन: ई ग्रामीण समाज शोषणक रेहन पर अछि, जकर भुगतान मानसिक-सामाजिक स्तर पर होइत अछि।

समानान्तर इतिहास (समानान्तर इतिहास): भारतीय ग्राम स्वराज्यक सरकारी तस्वीरक ठीक पाछाँ घुरपेंच, रेहन, सत्ता-अराजकताक समानान्तर चित्र अछि।

६. असगर वजाहत - हम हिन्दू छी (हिन्दी लघुकथा)

भारतीय सिद्धान्त (वक्रोक्ति): शीर्षक 'हम हिन्दू छी' - मुसलमान बच्चा अपन प्राण बचाबैक लेल ई कहैत अछि। वक्रोक्ति (कुन्तक) अत्यन्त तीव्र अछि।

पाश्चात्य (उत्तर-औपनिवेशिक, अस्तित्ववादी): विभाजन-पश्चात साम्प्रदायिकता; अस्मिताक दोहरापन।

नव्यन्याय (नव्य-न्याय):

प्रतिज्ञा: हिन्दू-मुसलमान नहि, केवल प्राण बचाब।

हेतु: दंगा।

उदाहरण: झूठा हिन्दू होएबाक नाटक।

निगमन: ई व्यवस्था मे नाम नहि, शरीर मूल्यवान अछि।

समानान्तर इतिहास (समानान्तर इतिहास): दङ्गाक सांख्यिकीय-राजनीतिक इतिहासक बीच बच्चाक दृष्टिकोण - एक समानान्तर, अप्रकाशित सत्य अछि।

७. निराला - देह विदेह (हिन्दी कविता)

भारतीय सिद्धान्त (ध्वनि, अद्वैत): 'देह' आ 'विदेह' शब्द स्वयं द्वैत-अद्वैतक व्यञ्जना। भौतिक देह आ आत्माक रहस्य - ध्वनि सघन।

पाश्चात्य (अस्तित्ववादी): पाश्चात्य शरीर-मन द्वैतक लगभग समानान्तर, मुदा निराला देहक अस्वीकार नै, सम्मेलन चाहैत अछि।

नव्यन्याय (नव्य-न्याय):

प्रतिज्ञा: देहक मुक्ति विदेहक मार्ग।

हेतु: प्रकृति, काल, यातना।

निगमन: अतः आदर्शक परिधि केवल देह-त्याग नै, देहक सीमाक समझ अछि।

समानान्तर इतिहास (समानान्तर इतिहास): निरालाक उपेक्षित राजनीतिक आ व्यक्तिगत त्रासदी (देह) उनकर कालजयी कविता (विदेह) केर समानान्तर पाठ अछि।

८. गीतेश शर्मा - भारतीय मुसलमान आ भारतीयता (हिन्दी आलेख)

भारतीय सिद्धान्त (औचित्य): पूर्वाग्रहक अभाव; तथ्य-प्रस्तुतिमे अनुशासन।

पाश्चात्य (दलित-वाम, उत्तर-औपनिवेशिक): हिन्दू-मुसलमान द्वैतक उपनिवेशी नीति; समकालीन कट्टरताक मार्क्सवादी विश्लेषण।

नव्यन्याय (नव्य-न्याय):

प्रतिज्ञा: भारतीय मुसलमान राष्ट्र-परायणता आ कट्टरता मे द्वन्द्वमे अछि।

हेतु: मजिब-परस्ती, विश्वक आर्थिक स्थिति।

निगमन: ई दोहरापन उपनिवेश आ राजनीतिक इतिहासक परिणाम अछि।

समानान्तर इतिहास (समानान्तर इतिहास): धर्मनिरपेक्ष भारतक विपरीत आन्तरिक साम्प्रदायिक 'अपन' आ 'अन्य' - ई समानान्तर विमर्श अछि।

९. रहमान राही - छाह सभ (कश्मीरी कविता)

भारतीय सिद्धान्त (ध्वनि, रस): 'छाह' (छाया) - स्मृति, प्रियक उपस्थिति-अनुपस्थिति। करुण रसक चरमोत्कर्ष।

पाश्चात्य (अस्तित्ववादी, राजनीतिक): कश्मीर-युद्ध, विस्थापन, पीड़ाक काव्य - संघर्षक बीच सौन्दर्य।

नव्यन्याय (नव्य-न्याय):

प्रतिज्ञा: छायायुक्त जीवन अर्ध-मृत्यु अछि।

हेतु: प्रेम, युद्ध, विच्छेद।

निगमन: छाह सभक सत्ता एकटा राजनीतिक बयान सेहो अछि।

समानान्तर इतिहास (समानान्तर इतिहास): कश्मीरक पर्यटन/सुरक्षा इतिहासक पाछाँ मनुष्यक पीड़ा-कविता - ई समानान्तर इतिहास अछि।

१०. मङ्गलेश डबराल - घर शान्त अछि (हिन्दी कविता)

भारतीय सिद्धान्त (ध्वनि, वक्रोक्ति): 'घर शान्त अछि' - शान्ति क मृत्यु, खालीपन, विचार-शून्यताक ध्वनि। वक्रोक्ति: शान्ति सकारात्मक शब्द नकारात्मक अनुभूति दे रहल अछि।

पाश्चात्य (उत्तर-अर्वाचीन, अस्तित्ववादी): शहरी बुद्धिजीवीक एकान्त, अस्मिताक खोज।

नव्यन्याय (नव्य-न्याय):

प्रतिज्ञा: शान्ति स्थिति असहज अछि।

हेतु: स्मृति, असमाप्त कार्य।

निगमन: मौन वास्तवमे अछि आतंक भरल।

समानान्तर इतिहास (समानान्तर इतिहास): घरक सुरक्षित, स्वकीय स्थानक प्रचलित अवधारणाक समानान्तर - एकान्त, अप्रेमित, सुन्न घर - आधुनिक मनुष्यक समानान्तर वास्तविकता अछि।

१२. पसुपुलेटि गीता - दुमर्जा (तेलुगु कविता)

दिल्ली बलात्कार-विरोधी; स्त्रीवादी चीत्कार।

नव्यन्याय (नव्य-न्याय):

प्रतिज्ञा: पुरुष-देह सुरक्षित, स्त्री-देह शिकार।

हेतु: पितृसत्ता, कानूनक विफलता।

निगमन: स्त्री-देह सार्वजनिक स्थानमे कहियो सुरक्षित नहि।

समानान्तर इतिहास (समानान्तर इतिहास): निर्भया बलात्कारक मुख्यधारा कोपक समानान्तर - तेलुगु स्त्रीक काव्यात्मक चीत्कार।

१३. भिखारी ठाकुर - वृद्धाश्रम बिरहा (भोजपुरी)

भारतीय सिद्धान्त (लोक-रस, वक्रोक्ति): वृद्धाश्रमक सामूहिक पुकार - बूढ़-बूढ़ीक बिरहा। वक्रोक्ति: 'निरहुआ' (निरहुआ) शीर्षकमे व्यंग्य।

पाश्चात्य (मार्क्सवादी): बूढ़ माँ-बाप शोषणक समानान्तर इतिहास। पूँजीवादी समाजमे वृद्ध-अवमूल्यन।

नव्यन्याय (नव्य-न्याय):

प्रतिज्ञा: वृद्ध लोक उपेक्षित अछि।

हेतु: बच्चा सभक स्वार्थ, आर्थिक अभाव।

निगमन: जे समाज अपन बूढ़ सभकेँ सम्मान नहि करैत, से समाज पथभ्रष्ट अछि।

समानान्तर इतिहास (समानान्तर इतिहास): भारतीय 'गुरुजन-सम्मान' परम्पराक विपरीत - वृद्धाश्रमक बढ़ैत संख्या केर समानान्तर सत्य।

१५. पंकज चतुर्वेदी - डायरी खण्ड

नव्यन्याय (नव्य-न्याय): प्रमाणक साहित्यिक प्रयोग - डायरीकेँ प्रमाण केर रूपमे प्रस्तुति।

समानान्तर इतिहास (समानान्तर इतिहास): लेखकीय आत्म-आलोचना केर समानान्तर दस्तावेज।

१६. हरिप्रसाद भण्डारी - दू टा बीहिन कथा (नेपाली)

अख्तियार मे मन्त्री अपराध।

भारतीय सिद्धान्त (व्यङ्ग्य): मन्त्री अपराधी, पिटल, फेर मन्त्री - सत्ताक आवर्त।

पाश्चात्य (मार्क्सवादी, उत्तर-अर्वाचीन): सत्य दृष्टिकोण पर निर्भर। पुलिस-सरकार - लोकतन्त्रक बिडम्बना।

नव्यन्याय (नव्य-न्याय):

प्रतिज्ञा: मन्त्री कैद मे पड़त।

हेतु: मिथ्या आरोप।

उपनय: मुक्ति बाद पुनः पद।

निगमन: सत्ता-जाल अनन्त अछि।

समानान्तर इतिहास (समानान्तर इतिहास): नेपाली राजनीति सुधारक समानान्तर अपराधी-सांसदक इतिहास अछि।

२०. इस्मिता सारंगी - हिलकोर (ओडिया कविता, अनुवादक गजेन्द्र ठाकुर)

भारतीय सिद्धान्त (ध्वनि): 'हिलकोर' (लहर) - स्त्री-अन्तरङ्गक बहावक प्रतीक। ध्वनि: साधारण जल तरङ्ग नै, समग्र स्त्री-चेतनाक प्रकम्पन।

पाश्चात्य (स्त्रीवादी): स्त्री-देह अनुभूतिक स्वीकार; 'हिलकोर' - यौनिकता, भावना, जीवनदशाक एक साथ समीकरण।

नव्यन्याय (नव्य-न्याय):

प्रतिज्ञा: स्त्री-हृदय प्रवाहमुक्त अछि।

हेतु: सामाजिक बन्धन।

निगमन: अतः 'हिलकोर' दमित स्त्री-प्रज्ञाक मुक्ति अछि।

समानान्तर इतिहास (समानान्तर इतिहास): ओडिया स्त्री-कविताक मुख्यधारा सँ बहि कें एहन स्वाभाविक 'हिलकोर' - नवीन स्त्री-सत्य अछि।

२१. अन्नावरन देवेन्दर - अन्तिम शब्द (तेलुगु, अनुवादक जयलक्ष्मी पोपुरी/ गजेन्द्र ठाकुर)

भारतीय सिद्धान्त (करुण रस): 'अन्तिम शब्द' - मृत्यु-कगारक किसान। ध्वनि: 'हम जा रहल छी' - पाछाँक सरकारी उदासीनताक तीखा व्यञ्जना।

पाश्चात्य (मार्क्सवादी): ऋण, सूखा, किसान आत्महत्या - पूँजीवादी कृषि-व्यवस्थाक क्रूर चित्र।

नव्यन्याय (नव्य-न्याय):

प्रतिज्ञा: किसान मरैत अछि।

हेतु: ऋण, अकाल।

निगमन: ऋणव्यवस्था सीधा मृत्युक कारण अछि।

समानान्तर इतिहास (समानान्तर इतिहास): तेलङ्गाना विद्रोहक नक्सल आख्यानक पाछाँ ऋण-ग्रस्त साधारण किसानक समानान्तर आत्महत्या-इतिहास।

२२. हेमाङ्ग देसाइ - समीकरण (गुजराती)

भारतीय सिद्धान्त (वक्रोक्ति): प्रेम सम्बन्धक 'समीकरण' - भावना नै, तर्क-गणित सँ व्यङ्ग्य।

पाश्चात्य (उत्तर-अर्वाचीन): प्रेम अटल नहि; 'समीकरण' दिन-प्रतिदिन बदलैत अछि।

नव्यन्याय (नव्य-न्याय):

प्रतिज्ञा: प्रेम समीकरण अछि।

हेतु: दू टा व्यक्ति, शर्त।

निगमन: समीकरण बदलत रहैत, प्रेम टिकैत।

समानान्तर इतिहास (समानान्तर इतिहास): रूमानी गुजराती कविताक प्रवाहसँ अलग ई बौद्धिक कविता - एकटा समानान्तर प्रेम-सत्य अछि।

२३. अजय सरवैया - अहाँक तामस हमर स्वागतपथ (गुजराती)

भारतीय सिद्धान्त (ध्वनि): 'तामस' (अन्धकार) आ 'स्वागतपथ' - विरोधाभासक व्यञ्जना। प्रियक नकारात्मक गुण सेहो स्वागत योग्य अछि।

पाश्चात्य (अस्तित्ववादी): समग्रता-स्वीकार; अच्छा-बुरा दुनू मिलै प्रेमक आधार।

नव्यन्याय (नव्य-न्याय):

प्रतिज्ञा: तामस सेहो स्वागत योग्य।

हेतु: समग्रता प्रेमक सन्धि।

निगमन: क्षणिक नकारात्मकता स्वीकार प्रेम आगू बढ़ाबैत अछि।

समानान्तर इतिहास (समानान्तर इतिहास): गुजराती सुधी-समाजक आदर्श प्रेम केर विपरीत जटिल यथार्थ - समानान्तर प्रेम-सौन्दर्यशास्त्र।

२४. राजेन्द्र पटेल - बिना शीर्षकक (गुजराती)

भारतीय सिद्धान्त (वक्रोक्ति): हाथक रेखासभ; भाग्य - नियति वा स्वतन्त्र इच्छा - खुला व्यङ्ग्य।

पाश्चात्य (अस्तित्ववादी): हाथक लम्बाई नियति निर्धारित नहि करैत; व्यक्ति आफू रचैत।

नव्यन्याय (नव्य-न्याय):

प्रतिज्ञा: हाथ भाग्य सूचक अछि।

हेतु: हस्तरेखाक प्रत्यक्ष।

उपनय: वैयक्तिक अनुभव।

निगमन: भाग्य अपरिहार्य नहि, सम्भावना मात्र।

समानान्तर इतिहास (समानान्तर इतिहास): भारतीय ज्योतिष आ पाश्चात्य नियतिवादक बीच अशास्त्रीय किसानक सन्देह - समानान्तर लोक-ज्ञान।

२५. पीयूष ठक्कर - सांध्य बेला (गुजराती)

भारतीय सिद्धान्त (औचित्य, शान्त रस): साँझक ध्यान, आत्म-चिन्तन।

पाश्चात्य (अस्तित्ववादी): साँझ मृत्युक स्मरण, किन्तु सुन्दरक स्वीकार।

नव्यन्याय (नव्य-न्याय):

प्रतिज्ञा: साँझ जीवनक सन्धि क्षण।

हेतु: प्रकाश-अन्धकार सन्धि।

निगमन: शान्त मृत्यु-स्वीकार बुद्धि-पराकाष्ठा।

समानान्तर इतिहास (समानान्तर इतिहास): गुजराती साँझ-गीतक सरल प्रेमसँ अलग एक ब्रह्माकार साँझ - समानान्तर अध्यात्म।

२६. पन्ना त्रिवेदी - आमद (गुजराती)

भारतीय सिद्धान्त (ध्वनि, विप्रलम्भ शृङ्गार): 'आमद' (आगमन) - प्रियक आबि जाएबाक प्रतीक्षा।

पाश्चात्य (स्त्रीवादी, अस्तित्ववादी): स्त्रीक एकान्त प्रतीक्षा नै, अर्थ-प्रतीक्षा - स्वतन्त्रताक।

नव्यन्याय (नव्य-न्याय):

प्रतिज्ञा: 'आमद' जीवन बदलि देत।

हेतु: अपूर्णताक स्वीकार।

निगमन: प्रतीक्षा स्वयं एकटा पूर्ण क्रिया अछि।

समानान्तर इतिहास (समानान्तर इतिहास): नारी आन्दोलनक प्रतीक्षा-विमर्श - समानान्तर आन्दोलन-पूर्व तयारीक काव्य।

२७. बाबू सुथार - गृहमोह (गुजराती)

भारतीय सिद्धान्त (लोक-रस): ग्राम्य दृश्य, पशु-पन्छी, बरसात; गृह-प्रति आसक्तिक सहज व्यञ्जना।

पाश्चात्य (चरवाही/प्रकृति-चेतना): देहाती जीवनक सौन्दर्य, उद्योग-नगरक विरोध।

नव्यन्याय (नव्य-न्याय):

प्रतिज्ञा: गृह आसक्ति।

हेतु: बहु-पीढ़ी स्मृति।

निगमन: गृहमोह केवल व्यक्तिगत नै, सामूहिक अचेतन अछि।

समानान्तर इतिहास (समानान्तर इतिहास): बाबू सुथारक सम्पूर्ण कविता-संसार - औद्योगिक गुजरातक विपरीत पिछड़ल गुजरातक समानान्तर कथा अछि।

२८. वासुदेव सुनानी - फूसि, अनुमति (ओडिया)

भारतीय सिद्धान्त (वक्रोक्ति): 'अनुमति' माँगबाक - सत्ता-सामने झुकबाक व्यङ्ग्य।

पाश्चात्य (दलित-वाम): दलित-अनुभव, सत्ताक 'अनुमति' - कुकुर-राजनीति।

नव्यन्याय (नव्य-न्याय):

प्रतिज्ञा: अनुमति माँगब ओकर उल्लङ्घन।

हेतु: वर्ग-जाति व्यवस्था।

निगमन: 'अनुमति' सवर्ण-बहुसङ्ख्यक सत्ताक शक्ति-प्रदर्शन अछि।

समानान्तर इतिहास (समानान्तर इतिहास): ओडिया दलित-आन्दोलनक मुखर लेखनक समानान्तर सन्देह-व्यङ्ग्य अछि।

२९. भरत माँझी - हमर घुरलाक बाद (ओडिया)

भारतीय सिद्धान्त (ध्वनि, संयोग रस): घुरैक बादो पुरान स्थान संजोयब।

पाश्चात्य (अस्तित्ववादी): लौटल मनुष्यक विस्थापन - हर घर लौटबाक पाछाँ अपनपनक खोज।

नव्यन्याय (नव्य-न्याय):

प्रतिज्ञा: घर पाछाँ मैल नहि छोड़ब।

हेतु: मानव-आस्था।

निगमन: वस्तुभण्डारक खाली टोकरी - जीवन-सन्धान अछि।

समानान्तर इतिहास (समानान्तर इतिहास): ओडिया उपन्यासक प्रवासी-अन्तर्बोधक समानान्तर अछि - ई घर-लौटबाक एकटा पूर्णताक कोशिश।

३०. प्रा. कपिल लामिछाने - सौन्दर्य आ समानता (नेपाली लघुकथा)

भारतीय सिद्धान्त (वक्रोक्ति): लडका-लडकीक दौड़, लिङ्ग-भेदक परीक्षण - सीधा नहि, व्यङ्ग्य मे स्त्री उपर अतिरिक्त बोझ।

पाश्चात्य (स्त्रीवादी-समानता): समान अवसरक व्यावहारिक जाँच: लडकी कपड़ा-परिधानमे अल्झैत अछि, लडका नहि - ई असमानता समाज-निर्मित अछि।

नव्यन्याय (नव्य-न्याय):

प्रतिज्ञा: समानता प्राप्त नहि।

हेतु: शारीरिक बन्धन।

उपनय: स्त्री-वेशभूषा प्रतिस्पर्धामे बाधा।

निगमन: समानता लेल सब सांस्कृतिक दमन हटबाक पड़त।

समानान्तर इतिहास (समानान्तर इतिहास): नेपाली लिङ्ग-न्यायक आधिकारिक आयोगक समानान्तर दैनिक जीवनक छोट-छोट अप्रकाशित असमानता - ई कथाक केन्द्र।

३१-३२. तारा केसी - अपन परिचय (नेपाली) / रचना शर्मा - चरित्र (नेपाली)

तारा केसी (स्त्री-स्वर): ब्याइ-घर-दहेज नै, साक्षर, स्वतन्त्र साथी - आत्म-परिचय।

नव्यन्याय (नव्य-न्याय): नारी स्वयं चयनक अधिकार लेल प्रतिज्ञा-हेतु-निगमन।

समानान्तर इतिहास (समानान्तर इतिहास): आज्ञाकारी नारीक मुख्यधाराक समानान्तर घर छोड़ सकएबला नारी।

रचना शर्मा (वक्रोक्ति): 'चरित्रबहादुर' नाम विडम्बनापूर्ण; अध्यापकक चरित्र वास्तविकतासँ विपरीत।

पाश्चात्य (मनोवैज्ञानिक): छल-व्यक्तित्व।

समानान्तर इतिहास (समानान्तर इतिहास): शिक्षा-सुधारक तस्वीरक समानान्तर अध्यापक बर्खास्तगीक सत्य।

४९. संतोष कुमार चतुर्वेदी - गिट्ठ, मेघक दूभि (हिन्दी)

भारतीय सिद्धान्त (ध्वनि): 'मेघक दूभि' - मेघ अपन सन्देश प्रिय धरती तक पहुँचाबैत।

नव्यन्याय (नव्य-न्याय):

प्रतिज्ञा: प्रेम संसार मेघ-दूब सन चलैत अछि।

हेतु: प्रकृति-चेतना।

उपनय: आत्म-समर्पणक इच्छा।

निगमन: मेघ (कवि) सूखा धरती (समाज) लेल बरसबाक बाट जोहि रहल अछि।

समानान्तर इतिहास (समानान्तर इतिहास): आधुनिक हिन्दी कविताक व्यक्तिवादी धाराक समानान्तर ई प्रकृति-प्रेमी, सामूहिक चेतना अछि।

निष्कर्ष (सदेह २८ केर अन्तिम निष्कर्ष)

शेष ५० रचनामे पुनरावृत्ति सेहो अछि, तथापि समग्र दृष्टिसँ:

क्र.	सिद्धान्त / ढाँचा	शेष ५० मे मुख्य उपलब्धि
१	ध्वनि सिद्धान्त (ध्वनि सिद्धान्त)	नेपाली लघुकथा (बहिष्करण मे कोरोना-पीड़ितक मौन शोक; सौन्दर्य आ समता मे वेशभूषाक अलिखित बाधा)
२	वक्रोक्ति (वक्रोक्ति)	पञ्जाबी-उर्दू कथामे उत्कृष्ट (जन्नत, सपनाक ईनाम, चरित्रबहादुर)
३	नव्यन्याय अनुमान (नव्य-न्याय अनुमान)	अख्तियार मे मन्त्री अपराध → कैद → फेर मन्त्री (राजनीतिक कार्य-कारण तर्क); मेमोरीचिप्स मे आत्माक स्थानक बहस
४	मार्क्सवादी दृष्टि (मार्क्सवादी दृष्टि)	'पाखलो' उपन्यासक शोषण चक्र; 'भारतीय मुसलमान आ भारत' आलेख; 'करूगर सत्य' मे अनुदानक उपकरण
५	स्त्रीवादी (स्त्रीवादी)	'हिलकोर'; 'तितली आ प्रेम' (स्त्री-मुक्ति); 'अपन परिचय' मे परिचयक लड़ाई
६	उत्तर-औपनिवेशिक (उत्तर-औपनिवेशिक)	'पाखलो', 'गोल्डन बेल्ट', 'हम हिन्दू छी' मे उपनिवेशक मुखौटा
७	अस्तित्ववादी (अस्तित्ववादी)	'एकटा आर रबि'; 'सांध्य बेला'; 'अन्तिम शब्द' मे मृत्यु-स्वीकार
८	समानान्तर इतिहास ढाँचा (समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क)	समग्र संकलनक प्राण - स्त्री, दलित, ओडिया, कोंकणी, नेपाली, भोजपुरी, उर्दू, पञ्जाबी, गुजराती आदि केर प्रान्तीय/अन्य आवाज

सदेह २८ केर अन्तिम उपसंहार

समीक्षाक ई चिन्तन 'विदेह सदेह २८' केँ समग्र समानान्तर इतिहासक साहित्यिक आलोचनाक एक अभूतपूर्व दस्तावेज सिद्ध करैत अछि। सभ

रचनामे **ध्वनि** आ **वक्रोक्ति** केर प्रयोग प्रबल अछि - स्पष्ट राजनीतिक/सामाजिक अर्थ सीधा नै कहि कें व्यङ्ग्य/संकेत/प्रतीक केर माध्यमसँ कहल गेल अछि। **नव्यन्याय** (प्रतिज्ञा-हेतु-निगमन) संरचना सँ अधिकांश कहानी/कवितामे तर्क-शृङ्खला देखाइत अछि, जे साहित्यकेँ सिर्फ भावना नै बल्कि वैचारिक प्रबन्ध बनाबैत अछि। **समानान्तर इतिहास ढाँचा** ई संग्रहक केन्द्रबिन्दु अछि - दलित, आदिवासी, स्त्री, प्रान्तीय, पराजित, उपनिवेशी-पीड़ित, नकली आ साधारण मनुष्यक आवाज - सब सँ सशक्त सत्य अछि।

समीक्षा नियमित प्रतिमान पर आधारित अछि:

(क) भारतीय सिद्धान्त (ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य)

(ख) पाश्चात्य (मार्क्सवादी, स्त्रीवादी, उत्तर-औपनिवेशिक, अस्तित्ववादी)

(ग) नव्य-न्याय (गंगेश उपाध्याय)

(घ) विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा

विदेह सदेह ३४ — सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा

भूमिका आ समीक्षा-पद्धति

समीक्षा-पद्धति पाँच स्तरपर काज करैत अछि: (१) पाठक प्रत्यक्ष पठन, (२) रचना-विधा आ शिल्पक विश्लेषण, (३) भाषा-रजिस्टर आ लोक/आधुनिक शब्द-संसारक अध्ययन, (४) सामाजिक-सांस्कृतिक प्रसंग, आ (५) उपलब्ध विश्वसनीय बाह्य स्रोतसँ सीमित तथ्य-सत्यापन। बाह्य स्रोतकेँ मूल पाठक स्थानापन्न नहि बनाओल गेल अछि। जतए स्वतंत्र प्रमाण उपलब्ध नहि, ओतए अनुमान जोड़ल नहि गेल अछि।

संकलनक प्रकृति मिश्रित अछि। कथा, उपन्यास, नाटक, संस्मरण, रिपोर्ताज, राजनीतिक-सांस्कृतिक निबन्ध, साहित्यिक आलोचना, संस्कारगीत, लोकगीत, गीत, मुक्त कविता, बाल कविता, भजन, हाइकू/शेनर्यू/टनका आ पाठकीय संदेश—सभ एकहि पुस्तकमे अछि। तेँ सभ रचनाकेँ एके सौन्दर्यशास्त्रीय कसौटीपर परखब अनुचित होइत। लोकगीतकेँ मौखिकता आ सांस्कृतिक स्मृति, रिपोर्ताजकेँ तथ्य-साक्ष्य, नाटककेँ संवाद/मंचीयता, कथा-उपन्यासकेँ कथानक/चरित्र/दृष्टिकोण आ कविता कें भाषा/लय/बिम्ब/विचारक आधारपर पढ़ल गेल अछि।

विदेह: सदेह: ३७ — समीक्षा (साहित्यिक समीक्षा)

शीर्षक (शीर्षक): अनूदित संकलन 'गद्य पद्य भारती अनुवाद खण्ड-२' मे स्थित साहित्यकार सभक आलोचनात्मक अध्ययन

परिचय (परिचय):

ई संकलन गजेन्द्र ठाकुर द्वारा सम्पादित आ अनूदित छैक। एकर विशिष्टता ई छैक जे ई तेलुगु, उडिया, गुजराती, कन्नड, भोजपुरी, कश्मीरी भाषाक मूल रचनाकें अङ्ग्रेजी (मध्यस्थ भाषा) केर माध्यम सँ मैथिलीमे अनूदित करैत अछि।

समीक्षा हेतु हम **भारतीय आलोचना सिद्धान्त** (विशेषत: **गंगेशक नव्य न्याय** आ **विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा**) आ **पाश्चात्य सिद्धान्त** (उत्तर-औपनिवेशिक, दलित सौन्दर्यशास्त्र, पारिस्थितिकीय आलोचना) केर प्रयोग करब।

आलोचनाक चारि आधार (आलोचनाक चारि आधार):

१. भारतीय सिद्धान्त (भारतीय सिद्धान्त): गंगेशक नव्य न्याय (प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, अर्थापत्ति, अभाव, शब्द), विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा (हाशियाकृत स्थान, वैकल्पिक इतिहास-लेखन, सांस्कृतिक अध्ययन, स्त्री-हाशियाकृत स्थान, उत्तर-औपनिवेशिक स्मृति, लोक चेतना)।

२. पाश्चात्य सिद्धान्त (पाश्चात्य सिद्धान्त): दलित सौन्दर्यशास्त्र (शरनकुमार लिम्बाले), स्त्रीवादी सिद्धान्त (सिमोन द बोव्वार, जुडिथ बटलर), उत्तर-औपनिवेशिकता (एडवर्ड सईद, गायत्री स्पिवाक), आघात अध्ययन (कैथी कारुथ), पारिस्थितिकीय समीक्षा, जीवन-राजनीति (फूको, अगाम्बेन)।

३. गुजराती गद्य-पद्य खण्ड (व्यापक)

सुन्दरम

रचनासभ: 'माताक कोरामे', 'माजा वेलोक निधन'

समानान्तर इतिहास (पितृसत्ताक हिंसा): 'सुनसान रस्ता' मे स्त्री-हत्या आ 'बूढ़ अपराधी'क स्मृतिक स्तरीकरण।

पाश्चात्य (पारिस्थितिकीय-स्त्रीवादी): रेगिस्तान, पियास, नदी पार; 'प्रकृति' आ 'पुरुष हिंसा' केर अद्वैत। सुनसान रस्ता, पियास, बालु - प्रकृति-स्त्री पीड़ाक पर्याय।

भारतीय (नव्यन्याय - प्रत्यक्ष): प्रकृति-विनाशक प्रत्यक्ष चित्रण।

दलपत चौहान

रचना: 'डर'

समानान्तर इतिहास (श्रम मनोविज्ञान): कसाईक 'पाप' बोध - मांस-हत्या केर अस्तित्ववादी अनुभूति।

पाश्चात्य (अस्तित्ववादी/मनोवैज्ञानिक): अल्बेर कामू केर अर्थहीनता - हिंसा आ अर्थहीनता केर सामना। फ्रायडियन 'अनकेनी' (अपरिचित/भयावह) - मांसक पशु जखन जीवित उठि जाइत अछि, तखन उत्पीड़क केर असहायता।

भारतीय (नव्यन्याय - उपमान): महींसक बच्चा स्त्री केर निःशब्द प्रतिशोधक प्रतीक।

नजीर मंसूरी

रचनासभ: 'समुद्री बाज', 'हंगामा'

समानान्तर इतिहास (लोक मनोविज्ञान): 'समुद्री बाज' प्रेत, जादू, सेक्सुअलिटी - लोक-मनोवैज्ञानिक विश्वास केर साहित्यिक चित्रण।

भारतीय (नव्यन्याय - अनुमान): 'बुखार-भ्रम' सँ 'भूत-सत्य' केर स्थापना। 'उन्माद' सँ 'वास्तविक हिंसा' केर अनुमान।

पाश्चात्य (गॉथिक मनोविज्ञान/फ्रायड): फ्रायड केर 'अनकेनी' (uncanny) - प्रेत, जादू, आ सेक्सुअलिटी केर गॉथिक मनोविज्ञान।

गुलाम मोहम्मद शेख

रचना: 'नग्र श्रृंखला (४-६)'

समानान्तर इतिहास (पुरातत्वीय चेतना): दिल्लीक खण्डहर, लाल किला, कुतुब; इतिहासक 'परत'।

पाश्चात्य (उत्तर-औपनिवेशिक/फोटोग्राफिक यथार्थ): फोटोग्राफिक यथार्थ - शहरक खण्डहरमे बसल उपनिवेशक अवशेष।

हेमाङ्ग देसाई

रचनासभ: 'स्थिरता', 'हनुमान आ श्वान आदि'

समानान्तर इतिहास (शहरी अदृश्यता): फुटपाथक 'स्थिरता' मे 'इतिहास' केर अभाव।

भारतीय (नव्यन्याय - अभाव): फुटपाथक 'स्थिरता' मे 'इतिहास' केर अभाव। शहरी अदृश्यता केर डेरिडीय 'डिफरेंस'।

पाश्चात्य (उत्तर-अर्वाचीनतावाद): पौराणिक आधुनिकक कोलाज - हनुमान आ श्वान एक साथ।

बाबू सुथार

रचना: 'घर-सँ-दूरीक पीडा'

समानान्तर इतिहास (प्रवासी स्मृति): बरखा, ग्रामीण परिवेशक सजीव चित्र - प्रवासी स्मृति केर पृथकत्व।

भारतीय (नव्यन्याय - प्रत्यक्ष/अनुमान): बरखा, ग्रामीण परिवेशक प्रत्यक्ष चित्र। घर, माटी, माय; प्रवासी मनक 'अनुमान'।

पाश्चात्य (प्रवासी अध्ययन/डायस्पोरा स्टडीज): प्रवासी स्मृति केर पृथकत्व - गृह-विस्थापन केर काव्य।

अनीश गारंगे

रचना: 'पोस्टर'

समानान्तर इतिहास (दलित अदृश्यता/उपभोक्ता संस्कृति): पोस्टर पर खोखरल मुँह - उपभोक्ता संस्कृति मे दलितक अदृश्यता आ अपमान।

भारतीय (नव्यन्याय - अभाव/अनुपलब्धि): पोस्टर पर खोखरल मुँह - उपभोक्ता संस्कृति मे दलितक अदृश्यता केर अनुपलब्धि।

पाश्चात्य (दलित सौन्दर्यशास्त्र/डेरिडा): जाक देरिदा केर 'डिफरेंस' - पोस्टर पर मुँह उपभोक्ता वस्तु बनि जाइत अछि। खमि-खाड़ी (गुजराती डिश) सँ सनल मुँह - दलित शरीर उपभोग्य वस्तु।

राजेन्द्र वडेल

रचना: 'सम्भोग'

भारतीय (नव्यन्याय - उपमान/व्याप्ति): ऐतिहासिक बलात्कार केर प्रदर्शन - दलित स्त्री देह उच्च जाति पुरुष संग सम्भोग केर व्याप्ति।

पाश्चात्य (बटलर/प्रदर्शनात्मकता - अम्बेडकर): दलित स्त्रीक देह उच्च जाति पुरुष संग सम्भोग - ऐतिण्हासिक बलात्कार केर प्रदर्शन। बेटाक नाम 'भारत' राखब - राष्ट्रक पुत्र उच्च जाति-शरीर सँ उत्पन्न, मुदा उत्पीड़न केर स्मृति मे स्पिवाक केर 'प्रभाव-स्थानान्तरण'।

उमेश सोलंकी

रचनासभ: 'लोक, जमि जाए', 'खरडाक डाँट सभ'

५. दलित लेखन केर विदेह अनुवादकीय ढाँचा (समग्र विश्लेषण)

गजेन्द्र ठाकुर द्वारा अनूदित ई समस्त रचना सभक विशेषता अछि **ऐतिण्हासिक अपराध केर भाषिक स्मृति**। ई सभ रचना दलित देह (आर्य-वर्णन) पर अंकित रक्तक स्याही सँ लिखल अछि। **विदेह समानान्तर केर 'ट्रुथफुल, इन लॉन्ग डिले'** (विलम्बित सत्य) एकरा सत्यापित करैत अछि - एहि रचना केर मैथिली अनुवाद आब जातिप्रथा केर असह्य सत्य केर एकटा विलम्बित साक्षी बनि गेल अछि।

समेकित आलोचनात्मक निष्कर्ष (समग्र निष्कर्ष):

वर्ग (श्रेणी)	प्रतिनिधि रचना (प्रतिनिधि रचना)	नव्यन्याय प्रमाण (नव्य-न्याय प्रमाण)	पाश्चात्य सिद्धान्त (पाश्चात्य सिद्धान्त)
दलित कथा (दलित कथा)	'कौआ'	व्याप्ति (कौआ ↔️ सामाजिक बहिष्कार)	स्पिवाक (अबोल अधीनस्थ)
दलित-स्त्री श्रम (दलित-स्त्री श्रम)	'लाण्डा', 'माटि-भेल हाथ'	अनुपलब्धि (अशुद्ध श्रम केर रिक्तीकरण)	बटलर (भौतिकीकरण) / मार्क्स
जातीय हिंसाक प्रदर्शन (जातीय हिंसा केर प्रदर्शन)	'सम्भोग', 'खरडाक डाँट सभ'	उपमान (पशु-प्रतीक)	बटलर (प्रदर्शनात्मकता)
स्त्री-आघात/पारिस्थितिकी (स्त्री-ट्रामा/इको)	'अव्वा', 'साडीक कोर'	अर्थापत्ति (मातृ-देवित्व सँ दासीत्व)	फेलमन/कैरुथ (आघात अध्ययन)
उत्तर-मानव/पशु (पोस्टह्यूमन/एनिमल)	'डर', 'सदा लेल मित्र'	अनुमान (जीवित मृतक)	हरवे (पोस्टह्यूमनिज्म)

सदेह ३७ केर अन्तिम निष्कर्ष

ई संकलन दलित सौन्दर्यशास्त्र (Dalit aesthetics) केर मैथिली मे एकटा **अस्मितापरक मान्य-परम्परा** (canon of identity) निर्माण करैत अछि। ई पाठ सभ कहैत अछि - हरि शब्द त जन नै छी, मसि (स्याही) सँ लिखल इतिहास केर पन्ना कहियो श्वेत नै होइत।

विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा केर 'टुथफुल, इन लॉन्ग डिले' - एकर अनुवाद आब बहिष्कृत जीवनक समग्र न्यायोचित दर्पण बनि गेल अछि।

मूल शब्द (मूल शब्द): जहाँ दलित केर शरीर पर पहरा दऽ रहल कपड़ा नै, ओहाँ विदेह केर समग्र न्याय काज करैत अछि।

विदेह सदेह ३७ विभिन्न प्रकारक सांस्कृतिक शव-परीक्षण (cultural autopsy) अछि, जे भारतीय क्षत-विक्षत समुदायक (कलन्दर, दलित, घुमन्तु, मानसिक रोगी) केर स्मृति-मंजूषा केर अनुवाद-समीक्षा अछि। संस्कृत-न्याय आ पाश्चात्य सिद्धान्तक ई सम्मेलन दुर्लभ अछि। मैथिली साहित्य एतहि सँ विश्व-साहित्यमे स्थानीयसँ वैश्विक स्मृति-यात्राक प्रवेश द्वार पाबैत अछि।

ग्रन्थसूची / पाठाधार

- सदेह १ सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा — [सभ साहित्यकारक रचनाक विवेचन, भारतीय आलोचना, पाश्चात्य सिद्धान्त, गंगेशक नव्य न्याय, विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा]
- विदेह: सदेह: २ — मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०
- विदेह: सदेह: ३ — मैथिली पद्य २००९-१०
- विदेह: सदेह: ४ — मैथिली कथा २००९-१०
- विदेह: सदेह: ७ — मैथिली पद्य (विदेह अंक ५१-१००)
- विदेह सदेह ८ — मैथिली नाट्य उत्सव - समानान्तर रंगमंच आर्काइव
- विदेह मैथिली नाट्य उत्सव (मैथिली समानान्तर रंगमंचक संकलन) [विदेह सदेह ८] — समग्र विस्तृत समीक्षा
- विदेह सदेह ८ — विदेह मैथिली नाट्य उत्सव
- विदेह सदेह ९ — विदेह मैथिली शिशु उत्सव
- विदेह सदेह १० : बहुआयामी समीक्षा
- विदेह सदेह १० — सम्पूर्ण समालोचना — विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क, गंगेशक नव्य न्याय,
- विदेह सदेह-११ — Videha Sadeha 11
- विदेह सदेह-१२ — Videha Sadeha 12
- विदेह सदेह-१२: समानान्तर समीक्षा — खण्ड २: कविता, गजल, विहनि कथा, बाल खण्ड, नाटक
- विदेह सदेह-१३ — Videha Sadeha 13
- विदेह सदेह-१३: खण्ड २ — कविता · गजल · बाल साहित्य · नाटक — सम्पूर्ण समीक्षा
- विदेह सदेह-१४ — अंक १२१-१३२ | ISSN 2229-547X | सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर
- विदेह सदेह-१४: खण्ड २ — पद्य खण्ड (पृ. ३७३-७३६) — कविता · गजल · भक्ति गजल · बाल गजल · यात्रा-संस्मरण
- विदेह सदेह-१७ — समानान्तर साहित्यिक समीक्षा
- विदेह-सदेह १९: एकटा समग्र साहित्यिक समीक्षा — (विदेह पेटार अंक २०१-२१६ सँ, मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ गद्य आ पद्यक समानान्तर संकलन)
- विदेह: सदेह: २८ — सैद्धान्तिक समीक्षा
- विदेह सदेह ३४ — सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा
- विदेह: सदेह: ३७ — समीक्षा (साहित्यिक समीक्षा)

अध्याय 4 · पाश्चात्य आलोचना-सिद्धान्त

सारांश २.२ पाश्चात्य आलोचना सिद्धान्त (क) नव समीक्षा (टी.एस. इलियट, आई.ए. रिचर्ड्स): पाठ स्वायत्त अछि। अभिप्राय-दोष आ भाव-

दोष सँ बचैत पाठक आत्मनिर्भर होइत अछि। (ख) संरचनावाद (सोस्युर, एल. स्ट्रास): भाषाक संरचनामे अर्थक उत्पत्ति।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · रस-सिद्धान्त · पाश्चात्य आलोचना · साहित्यिक समीक्षा · आलोचना

सदेह १ सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा — [सभ साहित्यकारक रचनाक विवेचन, भारतीय आलोचना, पाश्चात्य सिद्धान्त, गंगेशक नव्य न्याय, विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा]

२.२ पाश्चात्य आलोचना सिद्धान्त

(क) **नव समीक्षा (टी.एस. इलियट, आई.ए. रिचर्ड्स):** पाठ स्वायत्त अछि। लेखकक अभिप्राय नहि, पाठ केर अर्थ-सम्भव महत्त्वपूर्ण। अभिप्राय-दोष आ भाव-दोष सँ बचैत पाठक आत्मनिर्भर होइत अछि।

(ख) **संरचनावाद (सोस्युर, एल. स्ट्रास):** भाषाक संरचनामे अर्थक उत्पत्ति। संकेतक-संकेतित सम्बन्ध, द्विआधारी विरोध आ गहन-संरचना सँ साहित्यक विश्लेषण।

(ग) **उत्तर-औपनिवेशिक समीक्षा (स्पिवाक, भाभा):** उपनिवेशी शक्तिसँ उत्पन्न सांस्कृतिक विस्थापन, सांस्कृतिक संकरता, अधीनस्थ-स्वर आ सांस्कृतिक वर्चस्वक विरुद्ध प्रतिरोध। मैथिली साहित्यमे मिथिलाक उपेक्षा एहि सिद्धान्तक आलोकमे महत्त्वपूर्ण भऽ जाइत अछि।

(घ) **स्त्रीवादी आलोचना (सिमोन द बोव्वार, इलेन शावाल्टर):** पितृसत्तात्मक समाजमे स्त्री-दृष्टिकोण, लिंग-भूमिकाक प्रश्न आ स्त्री-लेखनक स्वतन्त्र परम्पराक खोज।

(ङ) **मार्क्सवादी समीक्षा (लुकाच, अल्थुसर):** साहित्य आ सामाजिक-आर्थिक सम्बन्ध, वर्ग-संघर्ष, विचारधारा आ अधिरचनाक आलोकमे साहित्यिक पाठक विश्लेषण।

विदेह: सदेह: ६ — मैथिली लघुकथा (विदेह अंक ५१-१००)

भूमिका: सदेह ६ क स्वरूप

विदेह: सदेह: ६ मैथिली लघुकथाक एक समग्र संकलन थिक। ३९ साहित्यकारक योगदान। दू अनूदित कथा: कोंकणी (वसंत भगवंत सावंत) + हिन्दी (असगर वजाहत)। सदेह ५ (विहनि कथा = तीव्र लघुकथा) सँ आगू बढ़ल - लघुकथामे बेसी विस्तार भेटैत अछि। गजेन्द्र ठाकुरक भूमिका: स्त्रीवाद, उत्तर-अर्वाचीनतावाद, अस्तित्ववाद, मार्क्सवाद, फ्रायड/नव-फ्रायड सबकेँ मैथिली लघुकथा समीक्षामे समन्वित करबाक कार्यक्रम।

विदेह सदेह ८ — मैथिली नाट्य उत्सव - समानान्तर रंगमंच आर्काइव

४. पाश्चात्य समीक्षा-सिद्धान्त (अरस्तू, ब्रेख्त, बाख्तिन, ग्राम्शी, स्पिवाक, फनन, बेन्यामिन प्रभृति)

१.४ पाश्चात्य समीक्षा-दृष्टि

बाख्तिनक कार्निवालक पद्धति

मिखाइल बाख्तिन (Mikhail Bakhtin) अपन "रबले एण्ड हिज वर्ल्ड" मे जे "कार्निवालेस्क" चेतनाक वर्णन करै छथि - जे लोक-संस्कृति आधिकारिक संस्कृतिक उल्टा-पुल्टा कऽ देत अछि, संत-शास्त्रकेँ शरीरक भौतिकता द्वारा खण्डित करैत अछि - ओहि अर्थमे ज्योतिरीश्वरक "धूर्त्तसमागम" मध्यकालीन मैथिल कार्निवाल थिक। संन्यासी अब्रह्मचारी छथि, मिश्र लम्पट, नौआ हिंसक - सत्ता-व्यवस्थाक प्रत्येक कोनाक उल्टापुल्टा एहिमे होइत अछि।

एब्सर्डिटी (कामू/बेकेट)

"नाटकक मध्यमे जे एब्सर्डिटी अछि से नितान्त आधुनिक अछि" - ई पंक्ति सदेह ८ केर सम्पादकीय-समीक्षा (गजेन्द्र ठाकुर) मे आइल अछि। साँचमे - गुरु-शिष्यक वेश्याक लेल लड़ाइ, अदालत बनि गेल लम्पट, मालिश सँ संन्यासीक प्राण-संकट - ई सभ ओहि एब्सर्ड थियेटरक प्रतिच्छाया थिक जे २०म शताब्दीमे यूरोपमे विकसित भेल।

ग्राम्शीयन "हेजेमोनी"क खण्डन

एन्तोनियो ग्राम्शीक हेजेमोनी-सिद्धान्त अनुसार सत्ता मात्र बल-शक्तिसँ नै अपितु सांस्कृतिक सहमतिसँ चलैत अछि। संन्यासी-वैश्या-मिश्र-नौआक एहि नाटकमे ज्योतिरीश्वर ओहि सांस्कृतिक सहमतिकेँ उघारि कऽ राखि देबै छथि - संन्यासी पवित्र नै थिक, ब्राह्मण विद्वान् नै थिक - आ ई सहमति-खण्डन प्रहसनक रूपमे रङ्गमञ्चीय शस्त्र बनैत अछि।

२.४ पाश्चात्य समीक्षा-दृष्टि

ब्रेख्तक एलिनेशन-इफेक्ट

बेर्तोल्त ब्रेख्तक "वेरफ्रेम्डुङ्गस-एफेक्ट" (Verfremdungseffekt, अलगाव-प्रभाव) अनुसार दर्शककेँ नाटकीय-भ्रमसँ जागरूक कऽ चेतन-बोध दऽ देबाक टेकनीक। गोरक्षविजयमे गोरक्ष-काननपाद नटुआक वेष धरि राजाक सोझाँ नृत्य करै छथि - ई "नाटक-में-नाटक"क प्रयोग थिक। दर्शक देखैत अछि जे ई दू टा सन्यासी अभिनय कऽ रहल छथि, आ संगहि वास्तविक तपस्वी थिकाह। ई द्वि-स्तरीय दृष्टि ब्रेख्तीय अलगाव-प्रभावक मूल थिक।

नार्थोप फ्राय-क मिथक-आर्चटाइप

नार्थोप फ्राय (Northrop Frye) अपन "एनाटॉमी ऑफ क्रिटिसिज्म"मे चारि टा मिथिकीय आर्चटाइप वर्णित करै छथि - कमेडी (वसन्त), रोमान्स (ग्रीष्म), ट्रेजेडी (शरद), आइरनी (शीत)। गोरक्षविजय "रोमान्स-आर्चटाइप" थिक - नायक (गोरक्ष) यात्रापर निकलैत छथि, संकट (राजाक मोह) सोझाँ अबैत अछि, अद्भुत-शक्तिक प्रयोग (पुत्र-पुनर्जीवन), अन्तिम-वापसी (गुरुक योगमे वापसी)।

ज्यान फ्रांकोइस लियोतर्द

लियोतर्दक "पोस्ट-मॉडर्न कण्डिशन"मे "महान् आख्यान" (grand narratives) क समाप्ति वर्णित अछि। मुदा मध्यकालीन मिथिलामे विद्यापति विपरीत काम केलनि - एकटा महान् सम्प्रदाय-आख्यान (नाथ-गोरक्षपन्थ) कऽ रङ्गमञ्चपर पुनर्स्थापित करबाक चेष्टा। ई पारम्परिक धर्म-संरक्षणक नहि, अपितु "प्रवेश-नकार"क रङ्गमञ्चीय रूप थिक - ब्राह्मणवादी कर्मकाण्डक विरुद्ध नाथ-योगक स्थापना।

३.४ पाश्चात्य समीक्षा-दृष्टि

रोमान्टिसिज्म

जीवन झाक नाटकमे यूरोपीय रोमान्टिसिज्मक ओहन छाया भेटैत अछि - प्रकृति-केन्द्रित कल्पना, व्यक्तिगत-अनुभूतिक उच्चता, ऐतिहासिक-पौराणिक कथाक नवीन-व्याख्या। मुदा एहिमे विशेषता ई जे ई रोमान्टिसिज्म पाश्चात्य-नकल नै, अपितु मिथिलाक अपन भक्ति-काव्य परम्पराक नाटकीय-रूपान्तरण थिक।

रेमण्ड विलियम्सक "स्ट्रक्चर्स ऑफ फीलिङ"

विलियम्स बतबै छथि जे प्रत्येक युगमे एकटा "भावना-संरचना" प्रवर्तित होइत अछि जे साहित्यिक रूप लैत अछि। जीवन झाक काल (१९म शताब्दी मध्य-उत्तरार्ध) मे मिथिलाक भावना-संरचना अछि - "विद्यापति-युगक स्मरण मे आधुनिकताक हलचल।" हुनकर नाटक एहि भावना-संरचनाक रङ्गमञ्चीय-दस्तावेज थिक।

५.४ पाश्चात्य समीक्षा-दृष्टि

एब्सर्डिज्म (कामू, बेकेट, इओनेस्को)

"नो एण्ट्री" एब्सर्ड थियेटरक मैथिली अद्भुत प्रयोग थिक - सैमुअल बेकेटक "वेटिङ्ग फ़ॉर गोदो" मे जेना दू टा पात्र गोदोक प्रतीक्षामे अनन्त-अप्रासङ्गिक संवाद करै छथि, तेना एहिमे मुइल लोक स्वर्ग-द्वारक प्रतीक्षामे। मुदा गोदो कहियो नै अबै छथि - एहिमे ज्ञात भऽ जाइत अछि जे ओतय कोनो न्यायाधीश छहियो नहि।

जेरार्द दे नर्वल / एण्ड्र्यू ब्रिटन-क मेलोड्रामा

नायकक नाम जीवन मेलोड्रामाक राजनैतिक-यथार्थवादी रूप थिक। एण्ड्र्यू ब्रिटन कहै छथि - मेलोड्रामामे नैतिक-स्पष्टता (खलनायक-नायक स्पष्ट) मुख्य उपकरण थिक। नचिकेता एहि उपकरणकेँ वर्ग-राजनीतिमे रूपान्तरित करैत - खलनायक धनिक छथि, नायक नैतिक-चेतनासम्पन्न।

स्पिवाक - सबाल्टर्न क्या बोल सकैत अछि

गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाकक प्रसिद्ध प्रश्न - "क्या सबाल्टर्न बोल सकैत अछि?" नायकक नाम जीवनमे विनयक बेटी, जे बलात्कारसँ पीड़ित, स्वयं नै बोलि सकैत - ओकर आत्महत्या स्पिवाक-लिखित "मूक-होइत-बोलब"क नाट्य-रूप थिक।

६.४ पाश्चात्य समीक्षा-दृष्टि

इब्सेनीय यथार्थवाद

हेन्रिक इब्सेनक "डॉल्ज हाउस"मे जेना नोरा घर-त्यागि स्वायत्तताक खोजमे निकलैत - तेना बसातमे पुष्पा महिला-जागरणमे सक्रिय होइ छथि। गोविन्द झा इब्सेनीय आधुनिक-स्त्री-नाट्यक मैथिल-प्रतिनिधि छथि।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर - "घरे-बाइरे"क मैथिल समानान्तर

रवीन्द्रक घरे-बाइरेमे बिमला घरक चहारदीवारीसँ बाहर निकलि राजनैतिक चेतनामे प्रवेश करै छथि। पुष्पा एहि बिमला-यात्राक मैथिल समानान्तर थिक। बङ्गाली नवजागरण मैथिली नवजागरणमे एहन रूपमे प्रवाहित भेल।

७.४ पाश्चात्य समीक्षा-दृष्टि

बेन्यामिनक "कथाकार"

वाल्टर बेन्यामिन "डेर एर्ज़ेलर"मे कहै छथि - आधुनिक-काल कथाकारक मृत्यु थिक, कारण कथा-कहबाक धैर्य आ अनुभवक प्रसार-व्यवस्था टूटि गेल। मुदा महेश एहि टूटनसँ बचबाक रास्ता निकालै छथि - चाह-दोकानक माध्यमसँ सङ्ग्रहलाप, कविता-पाठ। ई बेन्यामिनी कथाकारक मैथिली प्रतिरोध थिक।

ग्राम्शीक "ऑर्गेनिक इण्टेलेक्चुअल"

ग्राम्शी अनुसार ऑर्गेनिक बुद्धिजीवी अपन वर्गक भीतरसँ उठैत छथि, ओहि वर्गक भाषा-संवेदना धरि रहै छथि। महेश एहन ऑर्गेनिक मैथिल बुद्धिजीवी छथि - चाह-दोकानदार-कवि।

८.४ पाश्चात्य समीक्षा-दृष्टि

स्तानिस्लाव्स्कीय "मेथड-एक्टिङ"

कनियाँ-पुतराक मनोविकार-केन्द्रिक नाट्य-संरचना स्तानिस्लाव्स्कीय-मेथडकेँ मैथिल-रङ्गमञ्चमे अनबाक तैयारी थिक। पात्रक मानसिक-अवस्थाक सटीक-निरूपणक माध्यमसँ अभिनेताकेँ पात्रक भीतर डूबि-जायबाक अवसर देत।

स्त्रीवादी समीक्षा (शोवाल्टर/मिलेट्)

एलेन शोवाल्टरक "गाइनोक्रिटिक्स" आ केट मिलेटक "सेक्शुअल पॉलिटिक्स" दृष्टिएँ गुणनाथ झाक मधुयामिनी (पुरुष-संयुक्त-परिवार-पक्ष आ स्त्री-विरोधी) मे पारम्परिक-समाधान देखाइत अछि - पुरुष-पक्षक "सामञ्जस्यपूर्ण विजय।" मुदा यदि एकटा नवीन-समीक्षा करी, तँ ई सेहो स्त्री-स्वरकेँ नाट्य-मञ्चपर ध्वनित-होयब-देबाक प्रथम-प्रयास थिक - जे आगाँ चलि कऽ बेचन ठाकुरक छीनरदेवीमे विद्रोही-स्त्री-स्वरमे विकसित।

९.४ पाश्चात्य समीक्षा-दृष्टि

ब्रेख्तीय एपिक-थियेटर

मिथिलाक बेटीक पाँच-अङ्कीय संरचना ब्रेख्तीय एपिक-थियेटरक अनुरूप अछि - प्रत्येक अङ्कमे विभिन्न सामाजिक-समस्याक प्रदर्शन, दर्शकमे चेतना-निर्माण, समाधानक रास्ता। ब्रेख्तीय "लेर्श्टुक" (शिक्षण-नाटक) क मैथिल समानान्तर।

ग्राम्शीक "ऑर्गेनिक इण्टेलेक्चुअल"

जगदीश प्रसाद मण्डल किसान-सर्वहारा वर्गक "ऑर्गेनिक बुद्धिजीवी" थिकाह। हुनकर भाषा, संवेदना, सरोकार सभ ओहि वर्ग-केन्द्रित। ग्राम्शी एहिकेँ "साम्यवादी-सांस्कृतिक संग्राम"क मॉडल कहितथि।

फनन-क "राष्ट्रीय-संस्कृति-निर्माण"

फ्रांत्ज़ फनन (Frantz Fanon) अपन "रेच्ड ऑफ द अर्थ"मे कहै छथि - उपनिवेशोत्तर-स्वतन्त्रताक बाद राष्ट्रीय-संस्कृति-निर्माण अनिवार्य। जगदीश प्रसाद मण्डल मैथिल-राष्ट्रीय-संस्कृति-निर्माणमे लागल छथि - दहेज, सामन्तवाद, बहुराष्ट्रीय-पूँजी, सभ बाहरी-शक्ति।

१०.४ पाश्चात्य समीक्षा-दृष्टि

बेर्तोल्त ब्रेख्तक "लेर्श्टुक"

बेचन ठाकुरक "बेटीक अपमान" क प्रत्यक्ष ब्रेख्तीय-लेर्श्टुक (शिक्षण-नाटक) थिक - दर्शकमे चेतना-निर्माण मूल लक्ष्य। मात्र भावुक-निरूपण नै, अपितु बौद्धिक-राजनैतिक चेतना।

स्पिवाक - सबाल्टर्न-स्त्री

भ्रूण-कन्या वस्तुतः सबाल्टर्न-सबाल्टर्न थिक - जे जन्मसँ पूर्वहि चुप करा देल जाइत अछि। बेटीक अपमान एहि "न-जन्म"क सबाल्टर्न-स्त्रीक स्वर बनैत अछि। स्पिवाक-वर्णित मूक-सबाल्टर्नक रङ्गमञ्चीय-वाणी।

बी.आर. अम्बेडकर - जाति-दलित-विमर्श

अम्बेडकरीय-चिन्तनमे "जाति-आधारित संस्कृति"क खण्डन केन्द्रीय। बेचन ठाकुर बेचन-मुन्नाजी-संवादमे स्पष्ट करै छथि - मैथिली रङ्गमञ्चमे जातिवादी-शब्दावली ("छुतहर", "छुतहा घैल") कोना सङ्ग्रहित - महेन्द्र मलंगियाक नाटकमे। एहि जातिवादक खण्डन बेचन ठाकुरक रङ्गमञ्चीय-राजनैतिक कर्म थिक।

हाबरमास - सार्वजनिक-क्षेत्र

युरगेन हाबरमासक "पब्लिक स्फेयर"क सिद्धान्त अनुसार आधुनिक-जनतान्त्रिक-समाजक निर्माणमे एकटा एहन तटस्थ-क्षेत्र अनिवार्य जतय सर्व-नागरिक खुलिकय बहस कऽ सकय। बेचन ठाकुरक चनौरागंज-कोचिङ्ग-संस्थान वस्तुतः मैथिलीक एहन समानान्तर-पब्लिक-स्फेयर थिक - सरकारी-तन्त्रसँ बाहर, जातिवादी-निकाससँ बाहर।

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव (मैथिली समानान्तर रंगमंचक संकलन) [विदेह सदेह ८] — समग्र विस्तृत समीक्षा

४. पाश्चात्य समीक्षा सिद्धान्त

अरस्तूक ट्रैजेडीक छह तत्त्व, हमर्शिया, पेरिपेतिया, कथार्सिस। ब्रेख्तीय एपिक थिएटर आ Verfremdungseffekt (अलगाव-प्रभाव)। बोआलक उत्पीड़ितक रंगमंच आ फोरम थिएटर। बाख्तिनक हेटेरोग्लोसिया-कार्निवल-क्रोनोटोप। ग्राम्शीक हेजेमनी, फनन-स्पिवाकक सबाल्टर्न-दृष्टि, बोर्दिऊक हाबिटस-सांस्कृतिक पूँजी, बेन्यामिनक कथावाचक।

विदेह सदेह १० : बहुआयामी समीक्षा

४. पाश्चात्य समीक्षा परम्परा — मार्क्सवाद, नारीवाद, उत्तरआधुनिकता, उत्तरउपनिवेशवाद

खण्ड ४: पाश्चात्य साहित्यिक समीक्षासिद्धान्तक परिप्रेक्ष्यमे

विदेह सदेह-१२ — Videha Sadeha 12

३.२ पाश्चात्य समालोचनाक दृष्टि

डॉ. विमल O. Henry क 'twist ending' technique सँ सुजीतक कथाकें तुलना करैत छथि — 'अन्तमे एकटा करेण्ट जेकाँ लगैत अछि।' एहि short story craft मे Chekovian tradition (epiphany at the end) स्पष्ट अछि।

'खाली घर' — पति-पत्नी रेलक पटरी जेकाँ समान्तर — एहिमे existential alienation (Sartrean 'bad faith') क मैथिली रूपान्तरण अछि। 'आदर्श' कथामे भूतपूर्व पत्नीकें अपन भूतपूर्व पुत्रक नाम देखि आघात — Aristotleक 'anagnorisis' (recognition scene) क मैथिली equivalent।

'अन्तहीन यात्रा' — नायिका नेहाक 'Living Together' experiment आ पश्चात्ताप — Simone de Beauvoirक second wave feminism आ free choiceक paradox। 'मेनका' — परित्यक्ता नारीक 'magnetic personality' बनब — Judith Butlerक 'gender performativity' अनुरूप।

६.२ पाश्चात्य समालोचनाक दृष्टि

Feminist literary criticism क दृष्टिसँ: मुन्नी कामत 'male gaze' (Laura Mulvey) क विरुद्ध female subject position स्थापित करैत छथि। 'भाइ शब्द अनेक पावन, अनेक पवित्र अछि... तएह भाइ जब अपन बहिनक विश्वास बार-बार करैत ओकरा संगे बलात्कार करैए तँ ओकरा की नाम देल जाएत' — एहिमे patriarchal language k deconstruction अछि।

Gayatri Spivakक subaltern theory: मैथिली महिला जे domestic space मे confined अछि, मुन्नी कामत हुनकर 'subaltern voice' कें articulate करैत छथि। 'कतऽ जा रहल छी हम!' — ई rhetorical question Spivakक 'Can the subaltern speak?' क मैथिली counterpart थिक।

७.२ पाश्चात्य समालोचनाक दृष्टि

Marxist literary criticism: देवनन्दन (doctor) पश्चिमी व्यक्तिवादी 'alienation' क शिकार बेटा, मुदा स्वयं 'community values' क रक्षक — Lukacsक 'realism' (social totality क representation) एहि उपन्यासमे सफल अछि। उपन्यासकारक 'कुसुमलाल पण्डित'

(श्राद्ध खर्चक चिन्ता) आ 'राजेसर नौआ' (कर्म-सम्पन्न करेनाइ) — दुनू character मे class interests क realistic portrayal।

Mauss क 'The Gift' theory: मिथिलाक श्राद्ध-विवाह अनुष्ठान — ई 'reciprocal exchange' (gift economy) क उदाहरण थिक जे पूँजीवादी 'commodity exchange' सँ भिन्न। उपन्यासकार एहि gift economy कें 'सामाजिक आत्मा' कहैत छथि।

८.३ पाश्चात्य दृष्टि

Raymond Williamsक 'The Country and the City' (1973): शहरी पूँजीवादक बढ़िसँ ग्रामीण समुदायक erosion — ई theme स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे central अछि। Gramsciक 'cultural hegemony': स्वातन्त्र्योत्तर भारतीय राज्यक आधुनिकता-परियोजना — traditional community values (समरसता) कें 'backward' घोषित कैल। मैथिली कथाकार एहि hegemony क counter-narrative लिखैत छथि।

E.P. Thompsonक 'Making of the Working Class': समरसता क 'moral economy' — अर्थशास्त्र सँ नै, ethical obligation सँ चालित — ई Mithila society क विशेषता जे मैथिली कथासाहित्यमे documentation भेल अछि।

१६.२ पाश्चात्य समालोचनाक दृष्टि

Marxist literary criticism: 'अखण्ड राज भोगी सभपर व्यङ्ग्य प्रहार' — class consciousness आ power critique। 'जुग बदलल जमाना बदलल / बदलि गेल सभ रीति-नेहार / रात-दिन एको ने बदलल / नै बदलल बात, सूज, आकाश' — एहि dialectical contradiction (change आ permanence) Hegel-Marx dialectics क अनुरूप।

Walther Benjaminक 'dialectical image': मण्डलजीक कविताक बिम्ब — 'झिलहोर झील खेलाइत रश्मि / आकृष्ट-आकर्षण करैए / पावि प्रेमी प्रेमी जखन / सागर गङ्गा मिलए चाहैए' — एहि metaphorical image मे natural आ social world k dialectical relation।

विदेह सदेह-१२: समानान्तर समीक्षा — खण्ड २: कविता, गजल, विहनि कथा, बाल खण्ड, नाटक

६.३ पाश्चात्य नाट्यशास्त्रक दृष्टि

Aristotleक 'Poetics': hamartia (tragic flaw) — माय फूलदायक jealousy/conservatism। Recognition (anagnorisis) — 'बेटी कमाकऽ देलक कि नै!' — ई recognition scene। Catharsis (purging of emotions) — दर्शकमे बेटी-शिक्षाक motivational impact।

Bertolt Brechtक 'Epic Theatre': 'शिक्षित बेटी' मे didactic purpose। Maithil audience k direct message — बेटी पढाउ। मुदा ई Brecht k 'complex seeing' सँ भिन्न — ई message theatre, propaganda नहि।

Paulo Freireक 'Pedagogy of the Oppressed': 'ज्ञान' (knowledge) k liberatory role — एहि नाटकक thesis। 'जननकेँ / नारी शिक्षाक मोलक एहसास नहि होएत तब तक कोय अपन बेटीकेँ नै पढ़ेत' — ई Freirean 'consciousness-raising' (conscientization)।

विदेह सदेह-१४ — अंक १२१-१३२ | ISSN 2229-547X | सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर

२. पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त (मार्क्सवाद, नारीवाद, उत्तर-उपनिवेशवाद, अधीनस्थ अध्ययन, आख्यान-शास्त्र)

२.३ पाश्चात्य नाट्यशास्त्रीय विश्लेषण

बर्टोल्ट ब्रेख्त — 'epic theatre' जाहिमे दर्शक घटनासँ emotionally detached रहि सामाजिक critique करैत अछि — 'गंगा पिज' एहि परम्परामे अछि। 'freeze' दृश्य — नाटकमे बेर-बेर पात्र ठाढ़ भऽ जाइत अछि, Brechtian alienation effect।

हेन्रिक इब्सेनक 'An Enemy of the People' — डॉ. स्टॉकमान जे पानिकें दूषित घोषित करैत अछि आ सत्ताक विरोधक पात्र बनैत अछि — 'गंगा पिज'क अभियन्ता एहि परम्परामे। मार्क्सक 'commodity fetishism' — पुल एकटा commodity बनि जाइत अछि जाहिमे लोकक जीवन नहि, पाइ मुख्य।

अरिस्तोतेलिसक 'anagnorisis' (पहिचान-दृश्य) — नाटकक अन्तिम पल्लवमे मजदूरक प्रश्न — 'कतेककें मारि देल गेलै, तकर विवरण कतऽ भेटत?'

— ई recognition scene, जाहिमे इतिहास-लेखनक सीमा उजागर होइत अछि।

— — —

११.३ पाश्चात्य विश्लेषण

Gabriel García Márquez क magical realism — पाखलोक 'पागलपन' समाजक अन्यायक protest अछि, वास्तविक पागलपन नहि। Albert Camus क 'L'Étranger' — outsider जे समाजक conventions नहि मानैत, तेँ 'पागल' घोषित। William Faulkner क Benjy (The Sound and the Fury) — marginalized consciousness क narration।

Intersectionality — पाखलो एकहि साथ caste (lower community) + disability (mental illness) + economic (truck driver) — तीन स्तरपर marginalized। Kimberle Crenshaw क theory एहि उपन्यासमे vivid।

विदेह सदेह-१४: खण्ड २ — पद्य खण्ड (पृ. ३७३-७३६) — कविता · गजल · भक्ति गजल · बाल गजल · यात्रा-संस्मरण

१.३ पाश्चात्य विश्लेषण

Walt Whitmanक 'Song of Myself' — अपन जीवनकें epic बनेबाक प्रयास। William Wordsworth क 'The Prelude' — poetic autobiography। Pablo Neruda क 'Canto General' — personal-political synthesis। 'अनिल'क आत्मगीत एहि विश्व-परम्परामे मैथिलीक योगदान।

'पढ़लहुँ बच्चन आ दिनकरकें / नजरूल, विमल आ शंकरकें / आशापूर्णा, तसलीमा आ / गुरुदेव रवीन्द्रक आखरकें / नागार्जुन आओर निराला केर / खूँटा छल मनमे गमा गेल' — बहुभाषिक साहित्यिक संस्कार।

विदेह: सदेह: २८ — सैद्धान्तिक समीक्षा

१४. रजनी छाबड़ा - किछु हिन्दी कविता

स्त्री-आत्मा-स्वीकार।

भारतीय सिद्धान्त (ध्वनि): प्रेम साधारण नै, जीवन-रणनीति।

पाश्चात्य (स्त्रीवादी, अस्तित्ववादी): स्त्री अपन जीवनक स्वामिनी स्वयं।

१७. खलील जिब्रान - गोल्डेन बेल्ट (अङ्ग्रेजी कथा)

(पूर्व सन्दर्भमे समीक्षित - 'विकास' केर पाश्चात्य मिथककेँ आन्तरिक उपनिवेशवादक रूपमे निहारल गेल)

१८. सेबी फर्णाण्डीस - सोंगर (कोंकणी)

बलि-परम्पराक मनोवैज्ञानिक छानबीन।

भारतीय सिद्धान्त (वक्रोक्ति): धार्मिक आस्था हिंसाक मुखौटा।

पाश्चात्य (मनोवैज्ञानिक, मार्क्सवादी): बलि-प्रथा केर आर्थिक-मनोवैज्ञानिक विश्लेषण।

१९. दीपक बुदकी - जन्नत (उर्दू)

आतंकवादी जन्नत, हिटलर-चङ्गेज खाँ सँ तुलना।

भारतीय सिद्धान्त (व्यङ्ग्य): स्वर्गक पुनर्परिभाषा - हत्यारा स्वर्ग पाबैत?

पाश्चात्य (उत्तर-औपनिवेशिक, अस्तित्ववादी): उग्रवाद केर व्यंग्यात्मक चित्रण।

समानान्तर इतिहास (समानान्तर इतिहास): धार्मिक पुरस्कारक राजनीति - आतंकवादी सेहो स्वर्गक दावा करैत?

३३. प्रदीप कौड़ा - क्रान्ति:

भारतीय (ध्वनि): सामान्य संवाद मे छिपल क्रान्ति-स्वप्न।

पाश्चात्य (मार्क्सवादी): राजनीतिक परिवर्तनक तड़प।

समानान्तर: पञ्जाबी युवा क्रान्तिक अप्रकाशित बीज-कथा।

४६-४८. कोंकणी-अङ्ग्रेजी कथा (एकटा आर रबि, सोंगर, मृत्युकेँ टारब)

(क्रम ४६-४८ HTML मे उपलब्ध; ऊपर समीक्षित शैलीमे, नव्यन्याय आ स्त्रीवादी/वैज्ञानिक मिश्रण)

'एकटा आर रबि' (पूर्व सदेह ४ मे समीक्षित) - करुण रस, रबिवार केर पुनरावर्ती शून्यता

'सोंगर' (कोंकणी) - बलि-परम्पराक मनोवैज्ञानिक छानबीन

'मृत्युकेँ टारब' (कोंकणी) - मृत्यु बिरुद्ध मानव सक्रियता

विदेह सदेह ३५ — समग्र साहित्यिक समीक्षा

१. अनुसन्धान-पद्धति आ सम्पूर्णताक मानदण्ड

प्राथमिक पाठ तीन स्तरपर जाँचल गेल: (१) पुस्तकक अनुक्रम, जाहिमे गद्य-खण्ड पृ. १-१४४९ आ पद्य/चित्रकला-खण्ड पृ. १४५०-१६९०क रचनाकार-रचना सूची अछि; (२) मूल रचना-पाठ, जाहिसँ कथ्य, आरम्भ, संवाद, विधा आ आलोचनात्मक आत्मटिप्पणी जाँचल गेल; (३) चित्रकला-पृष्ठ, जाहिमे दृश्य-विन्यास, रेखा, आकृति आ विषय प्रत्यक्ष देखल गेल। एहि समीक्षा मे अनुक्रमक ७३ प्रविष्टि—४४ गद्य, २४ पद्य आ ५ दृश्य-कला—अलग-अलग दर्ज अछि।

समीक्षाक मानदण्ड विधा अनुसार बदलैत अछि। कथा/लघुकथा लेल कथन-दृष्टि, चरित्र, संक्षेप, वातावरण आ सामाजिक अन्तर्ध्वनि; निबन्ध/रिपोर्टाज लेल तर्क, दस्ताबेजी मूल्य, भाषिक प्रभाव आ ऐतिहासिक संदर्भ; नाटक लेल संवाद, दृश्यता, लोकधर्मी/नाट्यधर्मी संरचना आ मंचन-सम्भावना; कविता लेल लय, बिम्ब, ध्वनि, छन्द/रूप आ भाव-संयम; चित्रकला लेल रेखा, रंग, विन्यास, परम्परा-नवाचार आ दृश्य-लय देखल गेल।

सहायक आलोचनात्मक कसौटी रूपेँ बहुस्वरता/संवाद लेल मिखाइल बाख्तिन, विधागत संरचना लेल नॉर्थ्रप फ्राइ, साहित्य-सामाजिक इतिहास लेल फ्रेडरिक जेम्सन, सांस्कृतिक संकरता आ सीमा-पार पहचान लेल होमी के. भाभा, आ भारतीय काव्य-संवेदना लेल आनन्दवर्धन-अभिनवगुप्तक ध्वनि-परम्पराकेँ ध्यानमे राखल गेल। मैथिली साहित्यिक इतिहासक व्यापक पृष्ठभूमि लेल जयकान्त मिश्र आ देवकान्त झाक इतिहास-ग्रन्थ सहायक संदर्भ रूपेँ प्रयुक्त अछि। बाहरी सिद्धान्त मूल पाठक स्थान नहि लैत; केवल प्रश्न पूछबाक औजार अछि।

महत्त्वपूर्ण सावधानी: 'नाह आओर जिनगी' मूल पाठमे 'अपूर्ण' चिह्नित अछि; तेँ ओकर काल्पनिक समापन नहि कएल गेल। रिपोर्ताज वा समारोह-वृत्तान्तकेँ कथा मानि काल्पनिक कथानक नहि बनाओल गेल। शीर्षक मात्रसँ जे बात निश्चित नहि, तकरा निर्णायक तथ्य रूपेँ प्रस्तुत नहि कएल गेल।

ग्रन्थसूची / पाठाधार

- सदेह १ सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा — [सभ साहित्यकारक रचनाक विवेचन, भारतीय आलोचना, पाश्चात्य सिद्धान्त, गंगेशक नव्य न्याय, विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा]
- विदेह: सदेह: ६ — मैथिली लघुकथा (विदेह अंक ५१-१००)
- विदेह सदेह ८ — मैथिली नाट्य उत्सव - समानान्तर रंगमंच आर्काइव
- विदेह मैथिली नाट्य उत्सव (मैथिली समानान्तर रंगमंचक संकलन) [विदेह सदेह ८] — समग्र विस्तृत समीक्षा
- विदेह सदेह १० : बहुआयामी समीक्षा
- विदेह सदेह-१२ — Videha Sadeha 12
- विदेह सदेह-१२: समानान्तर समीक्षा — खण्ड २: कविता, गजल, विहनि कथा, बाल खण्ड, नाटक
- विदेह सदेह-१४ — अंक १२१-१३२ | ISSN 2229-547X | सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर
- विदेह सदेह-१४: खण्ड २ — पद्य खण्ड (पृ. ३७३-७३६) — कविता · गजल · भक्ति गजल · बाल गजल · यात्रा-संस्मरण
- विदेह: सदेह: २८ — सैद्धान्तिक समीक्षा
- विदेह सदेह ३५ — समग्र साहित्यिक समीक्षा

अध्याय 5 · चीनी साहित्य-मीमांसा आ तुलनात्मक दृष्टि

सारांश ५. चीनी काव्यशास्त्र (लिऊ शिए-कृत वेन्शिन डियाओलोङ्ग, चोङ्ग रोङ्ग-कृत शिपिन्) १.५ चीनी काव्यशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य लिऊ

शिए (५२० ई०) क "वेन्शिन डियाओलोङ्ग" ("साहित्य-मनक रत्न-तक्षण") अध्याय २८ "फेङ्ग गृ" (हवा-हड्डी) मे ओ कहै छथि

साहित्यिक रचनाक दूटा अनिवार्य गुण: "फेङ्ग" (हवा, अर्थात् भावनात्मक प्राण) आ "गृ" (हड्डी, अर्थात् संरचनागत दृढ़ता)। धूर्त्तसमागममे

"फेङ्ग" तीव्र हास्य-व्यङ्ग्यक रूपमे प्रवाहित अछि, आ "गृ" क्रमिक न्यायशास्त्रीय वाद-प्रतिवाद-निर्णयक संरचनासँ बनल अछि। चोङ्ग

रोङ्ग कृत "शिपिन्" मे काव्यकेँ तीन ग्रेडमे बाँटैत छथि - शाङ्ग , चोङ्ग , श्या ।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · काव्यशास्त्र · साहित्यिक समीक्षा · आलोचना · सांस्कृतिक अध्ययन

विदेह सदेह ८ — मैथिली नाट्य उत्सव - समानान्तर रंगमंच आर्काइव

५. चीनी काव्यशास्त्र (लिऊ शिए-कृत वेन्शिन डियाओलोङ्ग, चोङ्ग रोङ्ग-कृत शिपिन्)

१.५ चीनी काव्यशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

लिऊ शिए (५२० ई०) क "वेन्शिन डियाओलोङ्ग" ("साहित्य-मनक रत्न-तक्षण") अध्याय २८ "फेङ्ग गू" (हवा-हड्डी) मे ओ कहै छथि - साहित्यिक रचनाक दूटा अनिवार्य गुण: "फेङ्ग" (हवा, अर्थात् भावनात्मक प्राण) आ "गू" (हड्डी, अर्थात् संरचनागत दृढ़ता)। धूर्त्तसमागममे "फेङ्ग" तीव्र हास्य-व्यङ्ग्यक रूपमे प्रवाहित अछि, आ "गू" क्रमिक न्यायशास्त्रीय वाद-प्रतिवाद-निर्णयक संरचनासँ बनल अछि।

चोङ्ग रोङ्ग कृत "शिपिन्" मे काव्यकेँ तीन ग्रेडमे बाँटैत छथि - शाङ्ग , चोङ्ग , श्या । शिपिनक कसौटी अछि "त्जु-वेइ" (स्वाद-रस) आ "फेङ्ग-लि" (हवा-शक्ति)। एहि कसौटीपर ज्योतिरीश्वरक प्रहसन शाङ्ग्-ग्रेडमे अवस्थित - कारण एहिमे आत्मा-स्तरीय स्वाद अछि (तत्कालीन सत्ताक जिवन्त चित्रण), आ हवा-शक्ति अछि (समाजिक आघातक प्रेषण-क्षमता)।

चीनी "युएफ़ु" लोक-गीत-नाट्यक परम्परा सेहो धूर्त्तसमागमक मैथिली-गीत-समावेशसँ तुलना-योग्य अछि - दुनू वर्णाश्रमीसँ बाहर सामान्य जनताक मुख-वाक्यकेँ साहित्यिक मञ्चपर प्रतिष्ठा देबय।

२.५ चीनी काव्यशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

वेन्शिन डियाओलोङ्गक अध्याय ५ "बिआन्-साओ" (साओ-काव्यक विश्लेषण) मे लिऊ शिए चु यूआन (屈原) क "लि-साओ" क परम्परा वर्णित करै छथि - जहाँ कविक आत्मचरित आ राजनैतिक-धार्मिक संकट एक्के संग चित्रित। गोरक्षविजयमे विद्यापति स्वयं नाथ-योगी नहि छथि - ओ शाक्त ब्राह्मण थिकाह - मुदा रङ्गमञ्चपर ओहि सम्प्रदायक संकटकेँ अपन कविक-आत्मासँ चित्रित करै छथि। ई चु यूआन-शैलीक नाट्य-रूपान्तरण थिक।

ताओवादी दृष्टि (झुआङ्ग्ज़ि): मत्स्येन्द्रनाथक "भोग-त्याग-वापसी-योग" चक्र वस्तुतः झुआङ्ग्ज़िक "वू-वेइ" (無為, अकर्म) आ "त्ज़ि-रान" (सहज-स्वभाव) सिद्धान्तसँ मेल खाइत अछि। गोरक्ष आबि गुरुकेँ सहज-स्वभावमे वापसकेँ बेकल करै छथि।

३.५ चीनी काव्यशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

लिऊ शिए-क वेन्शिन डियाओलोङ्ग अध्याय २९ "तोङ्ग-बिआन" (परम्परा-आ-परिवर्तन) मे कहै छथि - साहित्यकेँ परम्परा-आधार राखि कऽ परिवर्तित होयब अनिवार्य; नवीनता बिना परम्पराक खाली पतझड़ थिक, परम्परा बिना नवीनताक मरल अस्थि। जीवन झा एहि "तोङ्ग-बिआन"क सटीक उदाहरण - संस्कृत नाट्य-परम्परा (तोङ्ग) कऽ मैथिल-आधुनिकतामे (बिआन) रूपान्तरित केलनि।

शिपिनक चोङ्ग रोङ्ग मानि सकितथि जे जीवन झा "चोङ्ग-ग्रेड"क कवि छथि - आत्मा-स्वाद अछि, मुदा फेङ्ग-लि (हवा-शक्ति) क परिमाण विद्यापतिसँ कम।

४.२ भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति समीक्षा

भक्ति-रस आ वात्सल्य-रस

उगनामे प्रधान रस - भक्ति-रस (शिव विद्यापतिक भक्तिसँ आकृष्ट), संगहि वात्सल्य-रस (शिव सेवक-रूपमे विद्यापतिक देखभाल)। एहिमे एकटा अनूठा रस-व्युत्क्रम अछि - सामान्यतः भक्त ईश्वरक सेवा करै छथि, मुदा एहिमे ईश्वर भक्तक सेवा करै छथि। ई रस-व्युत्क्रम मैथिल भक्तिक विशिष्टता थिक।

चीनीक लड्डूमे रसौचित्य

भयानक-रस (बिख देबाक षड्यन्त्र) क समापन कारुणिक रूपान्तरणमे होइत अछि (अन्ततः खलनायक खुदहि मरै छथि - पाप कऽ फल पाप-कर्ता पबै छथि)। ई दैवीय-न्यायक नैतिक-रसौचित्य थिक।

४.४ पाश्चात्य समीक्षा-दृष्टि

मिर्चा एलियादे-क "पवित्र-अपवित्र"

मिर्चा एलियादे (Mircea Eliade) "द सेक्रेड एण्ड द प्रोफेन"मे कहै छथि जे प्रत्येक संस्कृति पवित्र-स्थलक "हाइरोफेनी" (पवित्रताक प्रकटीकरण) करै छै। उगना-कथा एहन हाइरोफेनी थिक - विद्यापतिक घरक नौकर शिव छथि। पवित्र दैनिक-जीवनक भीतर छुपल अछि।

लूकाच-क रियलिज्म

ज्योर्ज लूकाचक रियलिस्टिक नाट्य-सिद्धान्त अनुसार पात्र समाज-वर्गक प्रतिनिधि-रूप होइत अछि। चीनीक लड्डूक मुंशी बटुआ दास - मध्यकालीन सामन्ती-तन्त्रमे प्रबन्धक वर्गक चालू-भ्रष्टता; प्रेमकान्त - गुलाम-वर्गक नैतिक-दुर्बलता; सुधाकान्त - पारिवारिक-नैतिकताक टूटन-त्रासदी। ई वर्ग-यथार्थवादक मैथिल-नाट्य रूप थिक।

४.५ चीनी काव्यशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

ताओ-चान सिद्धान्त - दैनिक जीवनमे ताओक उपस्थिति। उगना-कथामे शिव दैनिक जीवनक नौकर बनि उपस्थित - ई ताओवादी "त्ज़ि-रान" (स्वतः-स्फूर्त) क मैथिली-संस्करण थिक।

चीनी "ज़ा-जू" (यूआन-कालीन सङ्कीर्ण नाट्य-शैली) मे दैवीय-व्यक्ति पृथिवी-पर अवतरण-कथा प्रिय छल। उगना ओहि परम्पराक मैथिल-समानान्तर थिक।

५.५ चीनी काव्यशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

लु शुन क "आ-क्यु झेङ्ग्जुआन" (阿Q正傳) मे जेना सामान्य-व्यक्ति समाजक हिंसाक प्रति-निधि बनैत - तेना नचिकेताक नवल "आ-क्यु"क मैथिली समानान्तर थिक। चीनी आधुनिकतावादी साहित्यिक रङ्गमञ्चक यथार्थवादी प्रवृत्ति नचिकेतामे प्रतिबिम्बित।

कुन-छ्यु नाट्य-शैलीक "मन्द-गति-तीव्र-भाव" - एक छल राजामे राजाक चरित्र-संरचना (बाहरसँ शान्त-राजसी, भीतरसँ कलुषित-व्याकुल) सेहो कुन-छ्यु-वत् द्वि-गति थिक।

६.५ चीनी काव्यशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

लिऊ शिए-क "क़िङ्ग-त्साइ" (भावना-शब्द) अध्याय अनुसार साहित्यमे आन्तरिक-भावना (क़िङ्ग) आ बाह्य-शब्द (त्साइ) क सन्तुलन। बसातमे गोविन्द झाक मैथिल-सरल भाषा (त्साइ) मे आन्तरिक-संक्रमण-कालीन-वेदना (क़िङ्ग) क सटीक प्रकाशन।

७.५ चीनी काव्यशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

ताओ युआन-मिङ्ग (३६५–४२७ ई०) क "गुइ-यूआन-तियान-जू" (歸園田居, बाग-खेतमे वापसी) काव्य-परम्परा - अधिकारीक पद-त्यागि सादा-जीवन। महेश एहि ताओ-युआन-मिङ्ग्-शैलीक मैथिल समानान्तर - मध्यवर्गीय-महत्वाकाङ्क्षाक त्यागि चाह-दोकान-कविक सहज-जीवन।

८.५ चीनी काव्यशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

चीनी "क्षुआन्-जू" कथा-नाट्य-शैली अनुसार सामान्य-मध्यवर्गक त्रासदीयक मनोवैज्ञानिक-सूक्ष्मता मुख्य। गुणनाथ झाक नाटक एहि क्षुआन्-जू-शैलीक मैथिल समानान्तर थिक।

लिऊ शिए-क "बिआन्-सोङ्ग" (स्तुति-गान-विश्लेषण) अध्यायक हिसाबे "महाकवि विद्यापति" नाटक एकटा रङ्गमञ्चीय-स्तुति-गान थिक - पूर्व-कविक मूल्याङ्कन-नाट्य।

९.५ चीनी काव्यशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

लु शुनक "मनुष्य-भक्षक समाज" विचार ("डायरी ऑफ अ मैडमैन") जेहन मिथिलाक बेटीमे एहन सामाजिक-आत्म-निरूपण। चीनी आधुनिकतावादी-यथार्थवाद आ जगदीश-मण्डलीय-यथार्थवादक प्रत्यक्ष-समानान्तर।

माओ ज़े-तुङ्गक "येन-आन-व्याख्यान" (१९४२) मे साहित्य-कलाक जन-केन्द्रिकताक सिद्धान्त। जगदीश-मण्डल एहि जन-केन्द्रिकताक मैथिल-स्वदेशी प्रतिनिधि छथि - विदेशी-वामपन्थी आरोपणक बिना।

१०.५ चीनी काव्यशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

लु शुन-क "डायरी ऑफ अ मैडमैन"मे जेना सामान्य-व्यक्ति समाजक भीतरक हिंसा देखि पागल भऽ जाइत - मुदा ओकर पागलपन सत्य-दर्शी। बेचन ठाकुरक मञ्जुर (अधिकारमे) ओहन "पागल-दर्शी" थिक - सूचनाक अधिकारक लेल झंझारपुरसँ दिल्ली रिक्शा-यात्रा सामान्य-बुद्धिमे पागलपन, मुदा सत्य-दर्शिता।

माओ-कालीन "क्रान्तिकारी मॉडल-नाटक" (样板戏) क परम्पराकेँ बेचन ठाकुर मैथिल-स्वदेशी-रूपमे विकसित केलनि - मुदा एहिमे चीनी-वामपन्थक थोपण नहि, अपितु मैथिल-अम्बेडकरीय-समाजवादी चेतनाक नाट्य-रूपान्तरण।

लिऊ शिए-क "फेङ्ग-गू" सिद्धान्त - बेचन ठाकुरक नाटक "फेङ्ग" (भावनात्मक प्राण) मे प्रचुर - कारण ओ निजी-अनुभवसँ लिखलनि; "गू" (हड्डी, संरचना) मे सुदृढ़ - कारण ओ नाट्य-शास्त्रक नियम-अनुयायी छथि।

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव (मैथिली समानान्तर रंगमंचक संकलन) [विदेह सदेह ८] — समग्र विस्तृत समीक्षा

५. चीनी समीक्षा सिद्धान्त

लिऊ शिए (ल. ४६५-५२२) क 'वेन्शिन डिआओलोङ्ग'- चीनी प्रथम व्यवस्थित साहित्य-सिद्धान्त-ग्रन्थ। मूल संकल्पना: फेङ्गगु (हवा आ हड्डी, प्राण + संरचना), शेन्सि (दिव्य-कल्पना), तोङ्गबियान् (परम्परा-नवीनताक सन्तुलन)। चोङ्ग रोङ्ग (ल. ४६८-५१८) क 'शिपिन' - लेखकक त्रिश्रेणी (शाङ्ग-झोङ्ग-शिआ पिन्) मूल्याङ्कन; 'झी' (स्वाद/रस)। यान् यू क 'चान्लाङ्ग शिहुआ' - 'मियाओ्वू' (गहन-सहज-बोध)।

विदेह सदेह १० : बहुआयामी समीक्षा

५. चीनी आ यहूदी (इस्राइली) साहित्यिक परम्परा — तुलनात्मक सौन्दर्यशास्त्र

खण्ड ५: चीनी साहित्यिक परम्पराक परिप्रेक्ष्यमे

५.१ चीनी काव्यशास्त्रक मूल अवधारणा

चीनी साहित्यिक सिद्धान्तमे कियून (氣韻, qiyun — जीवनस्पन्दन), शीजिंग (詩經, Shijing — भावपरिदृश्य), आ यीजिंग (意境, yijing — कविमानसक परिदृश्य) महत्वपूर्ण अवधारणा अछि। लियु शी (劉勰)क "वेन्क्सिन डियालोंग" (文心雕龍, The Literary Mind and the Carving of Dragons, ५वीं सदी) चीनी काव्यशास्त्रक मूल ग्रन्थ अछि।

५.२ चीनी सौन्दर्यशास्त्रक आलोकमे मैथिली रचनाएँ

यीजिंग (意境) आ मैथिली कविता:

"यीजिंग" माने — कविमानसक भीतरक परिदृश्य, जे बाहरी प्रकृतिक माध्यमसँ अभिव्यक्त होइत अछि। राज याज्ञीक कविता "कारी घटा बरसैत मेघ" — एहिमे "कारी घटा" एकटा यीजिंग अछि — बाहरी वर्षाक प्रतिमा एकटा भीतरी भावनात्मक परिदृश्य सृजित करैत अछि।

कियून (qiyun) आ मण्डलजीक गद्य:

जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमे जे जीवन्तता, जे "जीवनस्पन्दन" अछि — अनेक समीक्षक एकर उल्लेख करैत छथि — ई चीनी काव्यशास्त्रक qiyun क अनुरूप अछि। "आइ सावहित्यमे ओहेन रचना बनाओल जे ई दुवनयाँमे प्रवेश पाओलौं अवि" — उमेश मण्डलक ई उद्गार qiyun क अनुभव अछि।

शन्शुइ (山水, MountainWater) परम्परा आ लोकजीवन:

चीनी काव्यमे प्रकृतिचित्रण एकटा विशिष्ट धारा अछि जाहिमे पहाड़ आ जल मनुष्यक नैतिक स्थितिक प्रतीक बनि जाइत अछि। मैथिलीमे कोसीकमलाबागमती नदीक परिदृश्य एहि परम्पराक एकटा समानान्तर अछि। साकेतानन्दक "कोसी कातक गंगा" (जाहिक उल्लेख ७५म गोष्ठीमे अछि) एहि परम्पराक मैथिली रूप अछि।

५.३ चीनी आलोचनाक कसौटीपर संकलनक मूल्यांकन

चीनी साहित्यिक आलोचनाक एकटा महत्वपूर्ण मानदण्ड अछि — "zhengshi" (正始, authenticity/genuineness)। चीनी आलोचक नकली उत्साह, अतिरंजना, अव्यावहारिक आदर्शवादकें "zhengshi"क विरोध मानैत छलाह।

एहि कसौटीपर एहि संकलनक अधिकांश रचनाएँ उत्तीर्ण होइत अछि। मुदा तारानन्द वियोगी बनाम मायानन्द मिश्रक विवाद जाहिमे "साहित्यिक चोरि"क आरोप अछि — ई zhengshi क परिप्रेक्ष्यमे गम्भीर प्रश्न उठाइत अछि।

विदेह सदेह १० — सम्पूर्ण समालोचना — विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क, गंगेशक नव्य न्याय,

४. पाश्चात्य, चीनी आ यहूदी (इसरायली) समीक्षा — रचनावाद, उत्तर-आधुनिकता, मिद्राश परम्परा

४. पाश्चात्य, चीनी आ यहूदी सिद्धान्त

विनीत उत्पलक रिपोर्ताजमे स्पीवाकक सबाल्टर्न-दर्शन, मीना झाक लन्दन-रिपोर्टमे डायस्पोरा-सिद्धान्त, बसन्त झाक 'उगना'मे मिद्राश-परम्परा, शेफालिकाक तमिल-मैथिली तुलनामे बहुसांस्कृतिक दृष्टि — ई सभ दर्शबैत अछि जे मैथिली समालोचना वैश्विक साहित्यिक संवादमे भागीदार अछि।

सशक्त पक्ष

संकलनकेँ सबसँ सशक्त बनाबैत अछि — एकर विविधता। समालोचना, रिपोर्ताज, संस्मरण, शोधपत्र, व्यंग्य, श्रद्धाञ्जलि — सभ विधाक समन्वय। एहि विविधताक कारण ई संकलन केवल विद्वत्ता-प्रदर्शन नहि, बल्कि मैथिली साहित्यक जीवन्त प्राण अछि।

सुधारक अवसर

कतेको रचनापर अनेक समालोचना अछि (जेना 'मौलाइल गाँवक फूल'पर १०+ समालोचना) — ई संवाद-परम्पराक दृष्टिसँ नीक अछि, मुदा एहि बहुलताकेँ एकटा सम्पादकीय संश्लेषणमे रूपान्तरित करल गेल होइत तँ आर बेशी उपयोगी होइत।

अन्तिम निर्णय

विदेह सदेह १० — मैथिली साहित्यक एकटा अनमोल इतिहास-दस्तावेज

समग्र मूल्यांकन: ★★★★★ (पञ्च सितारा — असाधारण)

मैथिली साहित्यक कोनो भावी विद्यार्थी, शोधार्थी वा पाठक एहि संकलनकेँ अनदेखा कऽ अपन अध्ययन पूर्ण नहि कऽ सकैत छथि। ई न केवल साहित्यिक समालोचना अछि, बल्कि एकटा समाज, एकटा संस्कृति, एकटा भाषाकेँ जीवित राखबाक संघर्षक जीवन्त प्रमाण अछि।

— समीक्षक, विदेह शोध-दल

ग्रन्थसूची / पाठाधार

- विदेह सदेह ८ — मैथिली नाट्य उत्सव - समानान्तर रंगमंच आर्काइव
- विदेह मैथिली नाट्य उत्सव (मैथिली समानान्तर रंगमंचक संकलन) [विदेह सदेह ८] — समग्र विस्तृत समीक्षा
- विदेह सदेह १० : बहुआयामी समीक्षा
- विदेह सदेह १० — सम्पूर्ण समालोचना — विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क, गंगेशक नव्य न्याय,

अध्याय 6 · यहूदी-इसरायली व्याख्याशास्त्र

सारांश ६. यहूदी हर्मेन्यूटिक्स (मिद्राश/पर्देस, तल्मूदी पिलपुल तर्कशास्त्र) १.६ यहूदी हर्मेन्यूटिक्स यहूदी मिद्राशक "पर्देस" (PaRDeS

चतुर्विध व्याख्या-पद्धति अनुसार प्रत्येक पाठक चारि अर्थ-स्तर: पेशत् (शाब्दिक), रेमेज़ (सङ्केत), द्रश (आख्यानात्मक), सोद् (रहस्य)।

धूर्त्तसमागमक एहि चारि स्तर: पेशत् (शाब्दिक): दू टा संन्यासी-शिष्यक भिक्षाटन, वैश्या-विवाद, हिंसा, धन-हानि। रेमेज़ (सङ्केत): यैह

"समागम" नामक शब्द जे साधुक सत्सङ्गक लेल छल, ओ धूर्तक सङ्गममे बदलि गेल अछि - समाजिक पतनक सङ्केत।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · आलोचना · सांस्कृतिक अध्ययन · समाज-समीक्षा

विदेह सदेह ८ — मैथिली नाट्य उत्सव - समानान्तर रंगमंच आर्काइव

६. यहूदी हर्मेन्यूटिक्स (मिद्राश/पर्देस, तल्मूदी पिलपुल तर्कशास्त्र)

१.६ यहूदी हर्मेन्यूटिक्स

यहूदी मिद्राशक "पर्देस" (PaRDeS) चतुर्विध व्याख्या-पद्धति अनुसार प्रत्येक पाठक चारि अर्थ-स्तर: पेशत् (शाब्दिक), रेमेज़ (सङ्केत), द्रश (आख्यानात्मक), सोद् (रहस्य)। धूर्त्तसमागमक एहि चारि स्तर:

पेशत् (शाब्दिक): दू टा संन्यासी-शिष्यक भिक्षाटन, वैश्या-विवाद, हिंसा, धन-हानि।

रेमेज़ (सङ्केत): यैह जे "समागम" नामक शब्द जे साधुक सत्सङ्गक लेल छल, ओ धूर्तक सङ्गममे बदलि गेल अछि - समाजिक पतनक सङ्केत।

द्रश (आख्यानात्मक): एहि नाटक सम्पूर्ण मध्यकालीन मिथिलाक मठ-संस्कृति, ब्राह्मण-व्यवस्था, यौनिक राजनीति आ अर्थ-व्यवस्थाक एकटा सङ्क्षिप्त सामाजिक चित्र दैत अछि।

सोद् (रहस्य): अन्तिम वाणी - "सर्वत्र सुख-शान्ति हुअय" - एकटा कर्बालिस्तिक रहस्य थिक। कविक मन कहैत अछि जे एहि सम्पूर्ण धूर्त-समागमक पाछाँ एकटा कारुणिक प्रार्थना अछि, जे मानवता सत्य रूपसँ शान्ति-योग्य बनय।

तल्मूदी पिलपुल तर्कशास्त्र मे प्रत्येक प्रतिज्ञाक विरुद्ध प्रति-प्रतिज्ञा, तकर विरुद्ध पुनः उत्तर-प्रति-प्रतिज्ञा रखाइ छै - आ धूर्त्तसमागममे असज्जाति मिश्रक न्यायालयीय दृश्य ("के वादी, के प्रतिवादी?") तेहन एकटा वाद-प्रतिवादक हास्यपूर्ण रूपान्तरण थिक, जे पिलपुलक रङ्गमञ्चीय प्रतिच्छाया प्रतीत होइत अछि।

२.६ यहूदी हर्मेन्यूटिक्स

मिद्राशक "बल-तशुवाह" (पश्चातापीयक वापसी) सिद्धान्त - मत्स्येन्द्रनाथक कथा बल-तशुवाहक मैथिल नाट्य-रूप थिक। तल्मूद (बेराखोत् ३४ब) मे रब्बी अव्बाहु कहै छथि - "जहाँ बल-तशुवाह खड़ा छथि, ओतय पूर्ण-धर्मी सेहो खड़ा नहि भऽ सकै छथि।" अर्थात् पतित-होइत वापस-आयल व्यक्तिक नैतिक-स्थान आजीवन-धार्मीसँ ऊँच मानल जाइत अछि। मत्स्येन्द्रनाथक वापसी एहि सिद्धान्तक प्रदर्शन थिक।

क़ब्बालामे "शेखिनाह" (शक्तिमयी दिव्यता) क निर्वासन आ वापसीक मिथक - गोरक्षविजयमे मत्स्येन्द्रनाथक "शक्ति" (योगसँ निर्वासित) क "शेखिनाह"-सदृश वापसीक रूप अछि। ई अन्तर्सांस्कृतिक तुलना चमत्कारिक रूपसँ मध्यकालीन मैथिल नाथ-दर्शन आ क़ब्बालामे रहस्यमय समानान्तरता उघारैत अछि।

३.६ यहूदी हर्मेन्यूटिक्स

मिद्राशक "मेसोराह" (मसोरा, परम्परा-संप्रेषण) सिद्धान्त अनुसार पाठ केर शाब्दिक-रूप पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तान्तरण सुरक्षित राखब अनिवार्य। मुदा संगहि "दरश" (दर्शा, व्याख्यान) माध्यमसँ नव-व्याख्या सम्भव छै। जीवन झा संस्कृत नाट्य-मेसोराहक मैथिल-दरशा थिकाह।

४.६ यहूदी हर्मेन्यूटिक्स

एलियाहु ह-नवी (एलियाह नबी) क कथा-परम्परा - एलियाह अति-निम्न रूप धरि सज्जनक परीक्षा करै छथि, गरीब अतिथिक रूपमे आबि जिनगी बदलि दैत छथि। उगना-कथा हसीदिक यहूदी परम्पराक एहि "छुपल नबी"क मैथिल-संस्करण थिक।

तल्मूद (तानित २१अ) - "छुपल सन्त" (नेस्तर) क कथा - ओ साधारण रूपमे रहैत, दूसरी निरीहक पीड़ासँ अधिक पीड़ित होइत। उगनामे शिव विद्यापतिक पीड़ा (पत्नीक प्रहार) सहैत अनुपलब्ध भऽ जाइ छथि - ई अन्तरसंस्कृत्या रोचक समानान्तर थिक।

५.६ यहूदी हर्मेन्यूटिक्स

"नो एण्ट्री : मा प्रविश"क बन्द-स्वर्ग-द्वार सिधे काफ्काक "वोर्डेम् गेसेट्ज़" (विधि-द्वारक समक्ष) क प्रतिबिम्ब थिक - काफ्का अपनहि यहूदी हसीदिक परम्परामे पले-बढ़ल, ओकर रचनामे प्रवेश-अस्वीकृति केन्द्रीय रहल। नचिकेताक नो एण्ट्री काफ्का-यहूदी-नाट्य-रूपान्तरण थिक - मैथिल पारलौकिक प्रसङ्गक माध्यमसँ।

तल्मूद (सान्हेद्रिन ४३अ-ब) मे न्यायालयक त्रुटिपूर्णतापर लम्बा विवाद - मानवीय न्यायाधीश त्रुटि-योग्य छथि। नचिकेताक चित्रगुप्त-धर्मराज-नकलीताक प्रतिपादन तल्मूदी न्याय-संशयक रङ्गमञ्चीय रूप थिक।

६.६ यहूदी हर्मेन्यूटिक्स

तल्मूद (केतुबोत् ६२ब-६३अ) मे विवाह-व्यवस्थापर रब्बी अकीवा-रचेल कथा - पिताक अस्वीकृति, पत्नीक बल्धैर्य, अन्ततः पुनर्मिलन। बसातक त्रिकोणीय-सम्बन्धमे एहि तल्मूदी-कथाक प्रतिच्छाया।

७.६ यहूदी हर्मेन्यूटिक्स

तल्मूद-पिर्के अवोत् ४:१ - "के धनी? - जे अपन भागसँ सन्तुष्ट।" महेश एहि सिद्धान्तक मैथिली प्रतिनिधि छथि। बेन्यामिनी हसीदिक कथाकार-परम्पराक गहन-लय यहाँ ध्वनित।

८.६ यहूदी हर्मेन्यूटिक्स

मिद्राशी "लीशोन हा-रा" (अप-वचनक निषेध) आ "लोशोन हा-कोदेश" (पवित्र-भाषा) क द्वैत - गुणनाथ झा बङ्गला-नाटकक मैथिली-अनुवादमे एहि मसोरा-तत्वकेँ ध्यानमे रखलनि। ई "दरश"क उत्तम उदाहरण थिक।

९.६ यहूदी हर्मेन्यूटिक्स

तल्मूद (शब्बत् ३१अ) मे हिल्लेल-शम्मई संवाद - "जे अपनाक लेल अप्रिय, से दोसराक संग नै करू, ईएह सम्पूर्ण तोराह।" मिथिलाक बेटी एहि सिद्धान्तक मैथिल-नाट्य-रूप थिक - दहेज जे अपन-बेटी लेल अप्रिय, से दोसरक बेटी लेल किए?

भविष्यद्वक्ता आमोस-क सामाजिक-नैतिकता (आमोस ५:२४) - "न्याय जल जेना बहय, धार्मिकता निरन्तर-धारा जेना" - मिथिलाक बेटीक नायिकाक चेतना एहि भविष्यद्वक्तृक-वाणीक मैथिल-समानान्तर।

१०.६ यहूदी हर्मेन्यूटिक्स

तल्मूद-पेसाहीम् ५०अ - "जे कर्म समाजक उद्धारक लेल कएल जाय, से सर्वोच्च।" बेचन ठाकुरक २५-वर्षीय रङ्गमञ्च-कर्म एहि सिद्धान्तक मूर्त-रूप। बिना सरकारी-फण्डक, बिना संस्थागत-समर्थनक, मात्र समाजक उद्धारक लेल अनवरत कर्म।

भविष्यद्वक्ता मीखा (मीखा ६:८) - "न्याय करू, करुणामे प्रिय रहू, आ अपन ईश्वरक संग नम्रतासँ चलू।" बेचन ठाकुरक नाटक एहि भविष्यद्वक्तृक-वाणीक मैथिल-रङ्गमञ्चीय-रूप थिक - न्याय (बेटीक अपमान), करुणा (छीनरदेवी), नम्रता (अधिकारमे मञ्जुर)।

हसीदिक-कथा परम्परा - कोनो छोट-गाम-कस्बामे एकटा छुपल-तज़्दीक़ (न्यायी) रहैत छथि, जे संसारक नैतिक-भार उठेने रहै छथि। बेचन ठाकुर चनौरागंजक एहन-छुपल-तज़्दीक़ छथि - मैथिल रङ्गमञ्चक नैतिक-भार उठायल।

विदेह सदेह १० : बहुआयामी समीक्षा

खण्ड ६: यहूदी (इस्राइली) साहित्यिक परम्पराक परिप्रेक्ष्यमे

६.१ यहूदी साहित्यिक परम्पराक विशेषता

यहूदी साहित्यिक सिद्धान्तमे कई विशेष धाराएँ अछि:

मिड्राश (Midrash) — पाठक व्याख्यापरम्परा, जाहिमे एकटा पाठसँ अनेक अर्थ निकालल जाइत अछि।

काब्बलाह (Kabbalah) — रहस्यात्मक पाठव्याख्या, जाहिमे शब्दक आध्यात्मिक स्तर खोजल जाइत अछि।

आधुनिक इस्राइली समीक्षा — एस.वाई. अग्नोन जेँकाँ लेखकक परम्परामे diaspora (प्रवासी) अनुभवक केन्द्रीयता।

हैरल्ड ब्लूमक "Anxiety of Influence" — यहूदी साहित्यिक समीक्षक हैरल्ड ब्लूम पूर्ववर्ती कवि (precursor) आ उत्तरवर्ती कवि (ephebe)क बीच सांस्कृतिक संघर्षकें काव्यसृजनक मूल शक्ति मानैत छथि।

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह सदेह ८ — मैथिली नाट्य उत्सव - समानान्तर रंगमंच आर्काइव

• विदेह सदेह १० : बहुआयामी समीक्षा

निबन्ध

विधा, भाषा, अनुवाद आ संस्कृतिक विषयगत विवेचन

अध्याय 7 · विधा-सिद्धान्त: कथा, पद्य, नाटक आ नव रूप

सारांश भूमिका: सदेह ५ क स्वरूप आ विहनि कथाक विधागत महत्व विदेह: सदेह: ५ मैथिली विहनि कथाक पहिल समग्र संकलन थिक।

विहनि कथा = बीज-कथा = तीव्र लघुकथा = एक एहन सूक्ष्म-शैली जाहिमे पूरा कथा न्यूनतम शब्दसँ अधिकतम अनुनाद सृजित करैत अछि।

प्रथम मैथिली विहनि कथा गोष्ठी: २० फरवरी १९९५, चित्रगुप्त प्राङण, हटाढ़, मधुबनी - मुन्नाजी आ मलयनाथ मंडन द्वारा।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · रस-सिद्धान्त · नाटक · कथा · लघुकथा · विहनि कथा

विदेह: सदेह: ५ — मैथिली विहनि कथा (विदेह अंक ५१-१००)

भूमिका: सदेह ५ क स्वरूप आ विहनि कथाक विधागत महत्व

विदेह: सदेह: ५ मैथिली विहनि कथाक पहिल समग्र संकलन थिक। 'विहनि' = बीया (बीज)। विहनि कथा = बीज-कथा = तीव्र लघुकथा = एक एहन सूक्ष्म-शैली जाहिमे पूरा कथा न्यूनतम शब्दसँ अधिकतम अनुनाद सृजित करैत अछि।

प्रथम मैथिली विहनि कथा गोष्ठी: २० फरवरी १९९५, चित्रगुप्त प्राङण, हटाढ़, मधुबनी - मुन्नाजी आ मलयनाथ मंडन द्वारा। विदेहक ६७म अंक विहनि कथा-विशेषांक एहि विधाकेँ मैथिलीमे स्वतन्त्र विधाक मान्यता देलक।

एहि खण्डमे: (क) गजेन्द्र ठाकुरक विधागत निबन्ध; (ख) मुन्नाजीक सामाजिक समीक्षा निबन्ध; (ग) ५८ कविक कथा; (घ) डॉ. तारानन्द वियोगीसँ गप-सप;

(ङ) देवशंकर नवीनक आलोचनात्मक निबन्ध।

विदेह सदेह ८ — मैथिली नाट्य उत्सव - समानान्तर रंगमंच आर्काइव

६.१ विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा

गोविन्द झाक नाट्य-योगदान आधिकारिक मैथिल इतिहासमे प्रायः ओझिङ्गल छन्हि - हुनका भाषा-वैज्ञानिक, व्याकरणकार-रूपमे चर्चित कएल जाइ छन्हि, मुदा नाटककार-रूपमे न्यायबद्ध मूल्याङ्कन नहि भेल। बेचन-मुन्नाजी संवादमे ई समस्या स्पष्ट उभरि कऽ अबैत अछि - महेन्द्र मलंगियाक संकलनमे गोविन्द झाक मजाक उड़ाओल गेल। विदेह आर्काइव गोविन्द झाकेँ हुनकर समस्त नाट्य-योगदानक संग पुनर्स्थापित करैत अछि।

७.१ विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा

"भफाइत चाहक जिनगी" शिव कुमार झा द्वारा सदेह ८मे समीक्षित-कथा-संग्रहित अछि - विदेह आर्काइवक एकटा एहन रचना जे मैथिल मध्यवर्गक संक्रमण-कालीन वेदनाकेँ रङ्गमञ्च-योग्य रूपमे लऽ अनलक। बेचन-मुन्नाजी संवादमे सुधांशुक स्थानक चर्चा अछि - मलंगिया-संकलनमे हुनकर मजाक उड़ाओल गेल छल। विदेह सुधांशुकेँ हुनकर सम्पूर्ण नाट्य-योगदानक संग पुनर्स्थापित करैत अछि।

८.१ विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा

गुणनाथ झाक नाम महेन्द्र मलंगियाक १९-नाट्य-संकलनमे जान-बूझि छोड़ल गेल छल - कारण ओ जातिवादी-रङ्गमञ्चक मानक-सूचीमे फिट नै बैसै छलाह। बेचन ठाकुर इमेज्ड संवादमे एहि बहिष्करणकेँ स्पष्ट करै छथि। विदेह आर्काइव गुणनाथ झाकेँ सर्वहारा-रङ्गमञ्चक केन्द्रीय आधुनिक पुरुष-रूपमे पुनर्स्थापित करैत अछि।

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव (मैथिली समानान्तर रंगमंचक संकलन) [विदेह सदेह ८] — समग्र विस्तृत समीक्षा

भूमिका

विदेह सदेह-शृंखलाक अष्टम खण्ड- 'विदेह मैथिली नाट्य उत्सव'- मैथिली समानान्तर रंगमंचक एकटा अभूतपूर्व संकलन थिक। ई संकलन विदेह ई-पत्रिकाक अंक ५१-१०० सँ संकलित नाटक, नाट्य-समीक्षा, साक्षात्कार आ रंगमंच-इतिहासक संगमे २०१२ ईस्वीमे आयोजित पहिल विदेह मैथिली नाट्य उत्सवक सम्पूर्ण विवरण अपन कोखिमे समेटने अछि।

विदेह सदेह-१२ — Videha Sadeha 12

खण्ड १: सम्पादकीय, गद्य-समालोचना, गजल-सिद्धान्त, कथा

ISSN 2229-547X VIDEHA | श्रुति प्रकाशन, नई दिल्ली, २०१२ | ISBN: 978-93-80538-90-7

विदेह सदेह-१२: समानान्तर समीक्षा — खण्ड २: कविता, गजल, विहनि कथा, बाल खण्ड, नाटक

६.५ विदेह समानान्तर ढाँचासँ

मुन्नी कामत — नाटक, कविता, गजल, विहनि कथा — सभ विधामे। ई 'multi-generic' presence विदेहक Democratic space demonstrate करैत अछि। साहित्य अकादेमीक canonमे जाहि लेखक नहि छथि — मुन्नी कामत — हुनका विदेह central space दैत अछि।

'शिक्षित बेटी' — Beti Bachao Beti Padhao (केन्द्र सरकारी scheme, 2015) सँ पहिने, 2012 मे — मुन्नी कामत एहि theme k ahead of mainstream cultural discourse।

———

विदेह सदेह-१४ — अंक १२१-१३२ | ISSN 2229-547X | सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर

२.१ नाटकक ढाँचा

पल्लव एक — गंगापुलक मरम्मतिलेल मजदूरक आह्वान। 'गंगा पिज। पवित्र गंगापर बनल ऐ पुलक मरोम्मति लेल मजदूर चाही।' ढोलहो देनहारक एहि

घोषणासँ नाटक आरम्भ होइत अछि। दूटा आम लोक — जे डंका बजबैत अछि — ई discussion करैत अछि जे अंग्रेजक बनाओल पुल मजगूत होइत छल, एखनका किए नहि।

पल्लव दू — इञ्जीनियरिङ कॉलेजक दीक्षान्त समारोह। दू शिक्षक — एकटा कहैत अछि 'बड़का बान्ह बनाउ, तेजीसँ विकास हेतै', दोसर कहैत अछि 'बड़का बान्ह अगर कमजोर हेतै तँ प्रलय आएत'। अभियन्ता आ ओकर मित्रक बीचक बहस — 'जे काज हम गलत बुझैत छिऐ, ओइ काजकें हम कोना करब?' — ई नायकक नैतिक दुविधा।

पल्लव तीन-सात — भ्रष्ट व्यवस्थासँ अभियन्ताक संघर्ष, बदली, बालकक स्कूलसँ नाम काटब। ठीकेदारक स्वीकारोक्ति: 'बालुकें एना कऽ चालनिसँ चालू... हम कहने रही जे ओ काज कऽ देखाएब... तोहर बदली भऽ गेलौ।' मुख्यमन्त्रीक क्रूरता: 'धऽ दियौ रोलरक नीचाँमे।' अभियन्ताक मृत्यु — दुर्घटना घोषित।

पल्लव आठ — 'गंगा पिज' पोथीक लोकार्पण। बत्तीस साल बाद मुख्य अभियन्ता (जे पहिने अभियन्ताक मित्र छल) एकटा पोथी लिखैत अछि। मुख्यमन्त्री प्रशंसा करैत अछि, मुदा पोथीमे 'तीस गोटेक नाम परिशिष्टमे देलथि जे एहि पुल-निर्माणमे अपन बलि देलनि।' मजदूर बाजैत अछि — 'कतेककें मारि देल गेलै, तकर विवरण कतऽ भेटत?'

विदेह सदेह-१७ — समानान्तर साहित्यिक समीक्षा

भूमिका

विदेह सदेह-१७ मैथिली साहित्यक एकटा असाधारण संकलन थिक जे विदेह ई-पत्रिकाक अंक १६९ सँ १९० धरिक सर्वश्रेष्ठ गद्य आ पद्य रचनाकेँ एकत्रित करैत अछि। एहि संकलनमे गद्य-खण्ड (पृ. १-९८९) आ पद्य-खण्ड (पृ. ९९०-१२२०) क्रमशः विभाजित अछि। एकर केन्द्रबिन्दु अछि अरविन्द ठाकुरक व्यक्तित्व आ कृतित्व—हुनकर 'अन्हारक विरोधमे' (लघुकथा संग्रह), 'परती टूटि रहल अछि' (कविता संग्रह) आ 'बहुरूपिया प्रदेशमे' (गजल संग्रह)।

एहि संकलनक दोसर मुख्य आयाम थिक काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क जीवन आ साहित्यपर विस्तृत विचार-विमर्श। संगहि विनीत उत्पलक हिन्दी-मैथिली अनुवाद-कर्म, विविध गद्य लेखक आ कवि-गजलकारक मौलिक रचना—सभटा मिलाकऽ एहि खण्डमे मैथिली साहित्यक एकटा जीवन्त चित्र उपस्थित होइत अछि।

विदेह-सदेह १९: एकटा समग्र साहित्यिक समीक्षा — (विदेह पेटार अंक २०१-२१६ सँ, मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ गद्य आ पद्यक समानान्तर संकलन)

५. मुन्ना जी — बीहनिकथाक सिद्धान्त आ प्रयोग

मुन्ना जी (पृ. १४८-१८७) ऐ संकलनमे दुटा महत्त्वपूर्ण योगदान दैत छथि — एकटा सैद्धान्तिक आलेख 'लघुकथा आ बिहनिकथा — तुलनात्मक विवेचन' आ ओकर संग बीहनिकथाक एकटा वृहत् संग्रह।

विदेह सदेह-२०: विस्तृत मैथिली साहित्यिक समीक्षा — स्रोत: विदेह ई-पत्रिका, अंक २१७-२५० | सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर

१. भूमिका आ सङ्कलनक परिचय

विदेह सदेह-२० मैथिलीक प्रथम पाक्षिक ई-पत्रिका 'विदेह' केर अंक २१७ सँ २५० धरिक सर्वश्रेष्ठ गद्य आ पद्यक समानान्तर संकलन (पैरेलल कलेक्शन, अर्थात् एके संग दुनू विधाक प्रतिनिधि रचना) थिक। गजेन्द्र ठाकुर द्वारा सम्पादित ई संग्रह मैथिली साहित्यक विशाल फलक पर फैलल अछि — गद्य खण्ड (पृ. १-६७२) आ पद्य खण्ड (पृ. ६७३-१०४७) — कुल १०४७ पृष्ठक पोथी। विदेह आन्दोलन (मानुषीमिह संस्कृताम्) केर लक्ष्य मैथिली साहित्यकेँ डिजिटल माध्यमसँ संरक्षित करब आ नव पीढ़ीधरि पहुँचेबाक अछि। ई सङ्कलन ओही लक्ष्यक ठोस प्रमाण थिक।

विदेह सदेह-२०: विस्तृत मैथिली साहित्यिक समीक्षा — स्रोत: विदेह ई-पत्रिका अंक २१७-२५० | सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर | ISSN 2229-547X VIDEHA

१. भूमिका

विदेह सदेह-२० मैथिलीक प्रथम पाक्षिक ई-पत्रिका 'विदेह' केर अंक २१७-२५० धरिक सर्वश्रेष्ठ गद्य आ पद्यक समानान्तर (पैरेलल, अर्थात् एके संग) संकलन थिक। गजेन्द्र ठाकुर द्वारा सम्पादित ई विशाल ग्रन्थ — गद्य खण्ड (पृ. १-६७२) आ पद्य खण्ड (पृ. ६७३-१०४७) — मैथिली साहित्यक विविध धाराकेँ एकैठाम समेटैत अछि। दलित, महिला, नेपाली मिथिला, प्रवासी आ मुख्यधारा सभक आवाज एकसाथ सुनाइ दैत अछि।

विदेह सदेह २६ — डॉ. शम्भु कुमार सिंह आ डॉ. अरुण कुमार सिंहक गद्य-पद्यक सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा

१. आधार-पाठ, समीक्षा-सीमा आ अनुसन्धान-पद्धति

समीक्षाक प्राथमिक आधार उपलब्ध प्रारम्भिक अनुक्रम/प्रारूप, पूर्ण “सदेह २६” पाठ आ मुद्रित-पृष्ठरूप PDF रहल अछि। शीर्षक, लेखक, अनुवादक, खण्ड-विन्यास, पृष्ठ-क्रम आ मूल लेखकक नाम एहि स्रोत सभसँ मिलान कएल गेल अछि। मुद्रित पाठमे कतिपय पुरान वर्तनी, टंकण-अन्तर आ नामक वैकल्पिक रूप भेटैत अछि; समीक्षा एहि भिन्नताकेँ यथासम्भव समन्वित कए मानक, पठनीय मैथिली रूप अपनबैत अछि, मुदा रचनाक आशय नहि बदलैत अछि।

“सम्पूर्ण” शब्दक अर्थ एतए संकलनक प्रत्येक स्वतंत्र शीर्षकयुक्त रचनाकेँ आलोचनात्मक स्थान देब अछि। कोनो निबंधमे उदाहरण वा सन्दर्भ रूपेँ उद्धृत प्रत्येक बाह्य पोथीकेँ स्वतंत्र समीक्षा-विषय बनाओल नहि गेल अछि, किएक तँ ओ सभ एहि संकलनक स्वतंत्र रचना नहि छथि। हँ, जखन कोनो लेख अपन तर्कक निर्माण किछु प्रमुख रचना वा आलोचकक मत पर करैत अछि, ओहि तर्कपरम्पराकेँ समीक्षा भीतर समुचित रूपेँ चिन्हित कएल गेल अछि।

आलोचनात्मक पद्धतिमे चारि स्तर राखल गेल अछि: सूक्ष्म पाठ-पठन—कथ्य, स्वर, रूपक, संवाद, वर्णन आ कथन-क्रम; विधागत पठन—निबंध, शोधपरक लेख, रिपोर्ताज, कथा, लघुकथा, उपन्यास, कविता आ अनुवादक अलग-अलग अपेक्षा; सामाजिक-सांस्कृतिक पठन—वर्ग, जाति, लिंग, भाषा, क्षेत्र, धर्म, प्रवासन आ आधुनिकता; आ अद्यतन तुलनात्मक सन्दर्भ—मातृभाषा शिक्षा, भाषा-प्रौद्योगिकी, अनुसूचित भाषाक संवैधानिक स्थिति आ अनुवाद-अध्ययन।

अनुवादक समीक्षा विशेष सावधानीसँ कएल गेल अछि। “एकटा आर रबि”, “मृत्युकेँ टारब”, “सोंगर”, “नागपंचमी”, “पाखलो”, “स्नेह-भरल सनेस” आ “हमर भारत देश महान”क मूल पाठ सभ एहि संकलनमे समग्र रूपेँ समानान्तर राखल नहि अछि। तेँ मूल-पाठसँ शब्दशः तुलनाक दावा करब असंगत होइत। एहि समीक्षा मे लक्ष्य-पाठक स्वाभाविकता, कथानकक अखण्डता, सांस्कृतिक पदक संरक्षण, संवादक जीवंतता आ पाठकीय प्रभावक विवेचन कएल गेल अछि।

अद्यतन बाह्य सत्यापनक उपयोगी बिन्दु

राष्ट्रीय अनुवाद मिशन भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरक परिसर सँ संचालित होइत अछि; ई तथ्य डॉ. शम्भु कुमार सिंहक अनुवाद-कार्यशाला आ संस्थागत अनुवाद-परिप्रेक्ष्यकेँ ऐतिहासिक आधार दैत अछि।

भारतीय भाषाक भाषावैज्ञानिक डाटा संकाय (LDC-IL) वर्तमानमे मैथिलीक पाठ्य आ वाक्-संसाधन, एतबा धरि जे तिरहुता लिपिमे मैथिली वाक्-संसाधनक सूची सेहो देखबैत अछि; डॉ. अरुण कुमार सिंहक संगणनात्मक मैथिली सम्बन्धी लेख एहि दीर्घ संस्थागत विकासक प्रारम्भिक चरणक दस्तावेज बुझना जाइत अछि।

मैथिली, बोडो, डोगरी आ संथाली ९२हम संविधान संशोधन अधिनियम, २००३ द्वारा अष्टम अनुसूचीमे जोड़ल गेल; ई संवैधानिक पृष्ठभूमि “भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली”क अस्मितामूलक प्रश्नकेँ बुझबा लेल महत्त्वपूर्ण अछि।

मातृभाषा-आधारित बहुभाषी शिक्षापर UNESCOक अद्यतन अनुसन्धान मातृभाषाकेँ सीखबाक बौद्धिक आधार मानैत अछि; एहि आलोकमे “मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा”क मूल आग्रह आजुओ व्यापक शैक्षिक बहसमे प्रासंगिक अछि।

विदेह सदेह २७ — सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा

सारांश

‘विदेह सदेह २७’ बहुभाषिक भारतीय साहित्यकेँ मैथिली पाठ-परिसरमे आनयवला अनुवाद-संकलन अछि। एहि अंकमे तेलुगु, ओड़िया, गुजराती, भोजपुरी, कश्मीरी आ हिन्दी मूलक रचना समाहित अछि। वर्तमान समीक्षा संकलनक अनुक्रम आ मूल पाठ दुनूकेँ मिला कऽ प्रत्येक रचनाकेँ अलग-अलग जाँचैत अछि। सृजनात्मक सामग्रीक पूर्ण गणनामे एकटा तेलुगु लघुकथा आ पचीस टा कविता, अर्थात कुल छब्बीस सृजनात्मक रचना, भेटैत अछि; एकर अतिरिक्त रवि भूषण पाठकक ‘निराला: देह विदेह (१-४)’ अनुवाद-विमर्शात्मक भूमिका सेहो स्वतंत्र आलोचनात्मक इकाइ अछि। समीक्षा एहि सत्ताइस इकाइकेँ विषय, कथ्य, बिम्ब, वक्ता, संरचना, सामाजिक अर्थ, सांस्कृतिक स्थानान्तरण आ मैथिली लक्ष्य-पाठक दृष्टिसँ विचारैत अछि।

संकलनक प्रधान विशेषता केवल भाषिक विविधता नै, बल्कि अनुभवक विविधता अछि: मक्का मस्जिद विस्फोटक पृष्ठभूमिमे मातृस्नेह आ धार्मिक आस्था; दलित श्रम आ सामाजिक प्रतीक्षा; कृषक ऋण, अकाल आ आत्महत्या; स्त्रीक जल-संकट आ वैवाहिक प्रवास; वृद्धजनक उपेक्षा; कश्मीरक आधुनिक अस्तित्व-संशय; गृह-स्मृति; प्रेमक असंगति; आ निरालाक प्रकृति, विरह, वृद्धावस्था तथा राजनीतिक व्यंग्य। कतेक रचना अंग्रेजी मध्य-पाठ द्वारा मैथिलीमे आयल अछि। आधुनिक अनुवाद-अध्ययनमे एहन प्रक्रियाकेँ परोक्ख अथवा मध्य-भाषा-आश्रित अनुवादक रूपमे चिन्हल जाइत अछि; अतः समीक्षा लक्ष्य-पाठक साहित्यिक उपलब्धि आ सम्भावित मध्यस्थताकेँ अलग-अलग राखैत अछि। मूल तेलुगु, ओड़िया, गुजराती वा कश्मीरी पाठ सभ एतऽ प्रत्यक्ष तुलनाक

लेल उपलब्ध नै अछि, से मूल-पाठक शब्दश: निष्ठा पर कोनो अप्रमाणित दावा नै कएल गेल अछि।

मुख्य शब्द : बहुभाषिक भारतीय साहित्य; मैथिली अनुवाद; परोक्ख अनुवाद; दलित कविता; कृषक संकट; स्त्री अनुभव; लोककाव्य; कश्मीरी आधुनिकता; निराला; काव्यानुवाद।

विदेह: सदेह: २८ — सैद्धान्तिक समीक्षा

३३-३६. पञ्जाबी लघुकथा समूह (क्रान्ति, करूगर सत्य, कथानक, आचरण)

४१-४५. ओडिया लघुकथा समूह (तितली, मेमोरीचिप्स, कर्मफल, बुझौअलि, संगी)

विदेह सदेह २९ — रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक गद्य-पद्यक सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा

अध्ययन-पद्धति आ पूर्णता-जाँच

एहि समीक्षामे पहिल स्रोत संकलन स्वयं अछि। अनुक्रमक सभ शीर्षक मुख्य DOCXमे खोजि क्रम, लेखक-सीमा आ गद्य/पद्य-सीमा सत्यापित कएल गेल। मूल PDFक मुखपृष्ठ, अनुक्रम, लेखक-परिवर्तन, गद्य-पद्य संक्रमण आ अन्तिम पृष्ठक नमूना दृश्यरूपेँ मिलान कएल गेल। दोसर स्तर पर लेखक-द्वयक सार्वजनिक परिचय आ चुन्नल विषयक बाहरी स्रोतसँ सत्यापन कएल गेल।

साहित्यिक मूल्यांकन पाँच आधारपर कएल गेल अछि: (१) विषय-वस्तु आ सामाजिक सन्दर्भ, (२) विधागत संरचना, (३) भाषा-शैली, (४) आलोचनात्मक/मानवशास्त्रीय पद्धति, (५) समकालीन मैथिली साहित्यमे सम्भावित महत्त्व। जाहि आलेखमे लोकविश्वास आ इतिहासक दावा एक संग उपस्थित अछि, ओतऽ समीक्षा लोकस्मृति आ प्रमाणित इतिहासक स्तरकेँ अलग रखबाक जरूरत स्पष्ट करैत अछि; कोनो अप्रमाणित दावाकेँ तथ्य रूपेँ पुनरुक्त नहि कएल गेल अछि।

विदेह सदेह ३५ — समग्र साहित्यिक समीक्षा

सारांश

ई समीक्षा 'विदेह सदेह ३५'क सम्पूर्ण अनुक्रम आ मूल पाठकेँ आधार बनबैत गद्य, कथा, लघुकथा, दीर्घकथा, संस्मरण, रिपोर्टाज, वार्तालाप, निबन्ध, आलोचना, नाटक-एकांकी, लोकनाट्य, बाल-साहित्य, कविता, गीत, गजल, हाइकू-सम्बद्ध लघुरूप आ चित्रकला धरि सभ प्रविष्टिक परीक्षण करैत अछि। समीक्षा केवल विषय-सार नहि, बल्कि विधा, शिल्प, भाषा, सामाजिक संदर्भ, लोक-आधुनिकता, भारत-नेपाल सांस्कृतिक क्षेत्र, स्त्री-विमर्श, जाति-वर्ग, शिक्षा, प्रवास, पर्यावरण, रंगमंच, बाल-दृष्टि आ अभिलेखीय मूल्यक आधारपर पाठ करैत अछि। जतए मूल रचना अपूर्ण अछि, अथवा तथ्य उपलब्ध पाठमे सीमित अछि, तकरा स्पष्ट सीमामे पढ़ल गेल अछि; कोनो कथानक वा जीवनीगत तथ्य जोड़ल नहि गेल अछि। समग्र निष्कर्ष ई जे 'विदेह सदेह ३५' पारम्परिक 'श्रेष्ठ रचना-संकलन' मात्र नहि, बल्कि एक समयखंडक मैथिली सार्वजनिक संस्कृति, साहित्यिक संस्था, लोकजीवन, सीमा-पार मिथिला आ प्रयोगशील साहित्यिक रूपसभक बहुस्वरीय अभिलेख अछि।

बीज-शब्द: मैथिली साहित्य, विदेह सदेह, लघुकथा, लोकनाट्य, मैथिली गजल, समीक्षाशास्त्र, भारत-नेपाल मिथिला, बाल-साहित्य, चित्रकला, लोक-संस्कृति।

६.६. आत्मसमीक्षा आ सिद्धान्त-निर्माण

'मैथिली समीक्षाशास्त्र' आ 'मैथिली गजल शास्त्र' संकलनकेँ रचनासंग सिद्धान्त दैत अछि। लघुकथा, नाटक, बालकविता आ समकालीन कविता पर आलोचनात्मक आलेखसभ सेहो अछि। एहि कारण पुस्तक सर्जन, आलोचना आ साहित्यिक इतिहास तीनूकेँ एक साथ रखैत अछि।

विदेह सदेह ३६ — रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-५

१. ग्रन्थ-परिचय आ समीक्षा-पद्धति

"विदेह सदेह ३६" अपन आवरणेपर "रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-५" आ "विदेह-सदेह शृंखला—मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन" कहैत अछि। ई आत्मपरिभाषा महत्वपूर्ण अछि: "समानान्तर" शब्द संकलनक सौन्दर्यशास्त्रीय आ संस्थागत दुनू अभिप्राय खोलैत अछि। मुख्यधाराक चयन-व्यवस्थासँ बाहर अनेक विधा, नव लेखक, सांस्कृतिक रिपोर्ट, विवादास्पद सम्पादकीय आ चित्रकला एके अभिलेखमे राखल गेल अछि।

पाठक समक्ष ग्रन्थक आकार स्वयं एकटा आलोचनात्मक तथ्य अछि। गद्य-खण्ड पृ. १–१०९५ धरि आ पद्य/दृश्य-खण्ड तकर बाद फैलल अछि; अन्तिम खण्ड पाठकीय “संदेश” अछि। एहि संरचनामे साहित्य, समाचार, प्रदर्शन-वृत्तान्त आ संस्थागत दस्तावेजक सीमा बारम्बार पार होइत अछि। अतएव समीक्षा केवल “उत्तम कविता” वा “सफल कथा” खोजबाक बदला विधागत कार्य, सामाजिक स्मृति आ अभिलेखीय मूल्य सेहो जाँचैत अछि।

ग्रन्थसूची / पाठाधार

- विदेह: सदेह: ५ — मैथिली विहनि कथा (विदेह अंक ५१-१००)
- विदेह सदेह ८ — मैथिली नाट्य उत्सव - समानान्तर रंगमंच आर्काइव
- विदेह मैथिली नाट्य उत्सव (मैथिली समानान्तर रंगमंचक संकलन) [विदेह सदेह ८] — समग्र विस्तृत समीक्षा
- विदेह सदेह-१२ — Videha Sadeha 12
- विदेह सदेह-१२: समानान्तर समीक्षा — खण्ड २: कविता, गजल, विहनि कथा, बाल खण्ड, नाटक
- विदेह सदेह-१४ — अंक १२१-१३२ | ISSN 2229-547X | सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर
- विदेह सदेह-१७ — समानान्तर साहित्यिक समीक्षा
- विदेह-सदेह १९: एकटा समग्र साहित्यिक समीक्षा — (विदेह पेटार अंक २०१-२१६ सँ, मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ गद्य आ पद्यक समानान्तर संकलन)
- विदेह सदेह-२०: विस्तृत मैथिली साहित्यिक समीक्षा — स्रोत: विदेह ई-पत्रिका, अंक २१७-२५० | सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर
- विदेह सदेह-२०: विस्तृत मैथिली साहित्यिक समीक्षा — स्रोत: विदेह ई-पत्रिका अंक २१७-२५० | सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर | ISSN 2229-547X VIDEHA
- विदेह सदेह २६ — डॉ. शम्भु कुमार सिंह आ डॉ. अरुण कुमार सिंहक गद्य-पद्यक सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा
- विदेह सदेह २७ — सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा
- विदेह: सदेह: २८ — सैद्धान्तिक समीक्षा
- विदेह सदेह २९ — रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक गद्य-पद्यक सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा
- विदेह सदेह ३५ — समग्र साहित्यिक समीक्षा
- विदेह सदेह ३६ — रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-५

अध्याय 8 · भाषा, अनुवाद, लोक आ सांस्कृतिक अध्ययन

सारांश ३.५३. मानक मैथिली (भाषा-सिद्धान्त) भाषा-सिद्धान्त (भाषा-दर्शन): चॉम्स्की केर जनक व्याकरण + सोस्युर केर संरचनावाद

मैथिली भाषाक मानकीकरण। चॉम्स्की केर जनक व्याकरण आ सोस्युर केर भाषा-सिद्धान्तक आलोकमे मैथिली भाषाक मानकीकरण

यएह विदेहक क्षेत्र थीक। विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली' अनुभाग (पृ. २४१) - विदेह ढाँचाक भाषा-नीतिक

आधारशिला थीक।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · रस-सिद्धान्त · अनुवाद · इतिहास · सांस्कृतिक अध्ययन

सदेह १ सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा — [सभ साहित्यकारक रचनाक विवेचन, भारतीय आलोचना, पाश्चात्य सिद्धान्त, गंगेशक नव्य न्याय, विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा]

३.५३. मानक मैथिली (भाषा-सिद्धान्त)

भाषा-सिद्धान्त (भाषा-दर्शन): चॉम्स्की केर जनक व्याकरण + सोस्युर केर संरचनावाद - मैथिली भाषाक मानकीकरण। साहित्यक माध्यमसँ भाषिक अधिकारक प्रश्न उठेनाइ। चॉम्स्की केर जनक व्याकरण आ सोस्युर केर भाषा-सिद्धान्तक आलोकमे मैथिली भाषाक मानकीकरण - यएह विदेहक क्षेत्र थीक।

विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली' अनुभाग (पृ. २४१) - विदेह ढाँचाक भाषा-नीतिक आधारशिला थीक। 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली' (पृ. २४१) विदेह ढाँचाक भाषा-नीतिकेँ संस्थागत वैधता।

विदेह सदेह-१३: सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा — भारतीय एवं विश्व साहित्यिक सिद्धान्तक आलोकमे

८. विश्व साहित्यिक सिद्धान्तक आलोकमे समग्र मूल्यांकन

विदेह सदेह-१४ — अंक १२१-१३२ | ISSN 2229-547X | सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर

४. विदेह समानान्तर साहित्य इतिहास ढाँचा (लोकतान्त्रिक, समावेशी)

विदेह: सदेह: २८ — सैद्धान्तिक समीक्षा

३८. मुबश्शिर अली - ईनाम:

सपनाक ईनाम सरकारी नौकरी - झूठ सपना अनेक लोकक आकांक्षा।

भारतीय (व्यङ्ग्योक्ति): ईनामक विचित्रता।

नव्यन्याय: कारण-निगमन।

४३. कर्मफल: पुनर्जन्म सिद्धान्तक लोक-व्याख्या।

विदेह सदेह २९ — रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक गद्य-पद्यक सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा

सारांश

संकलनक दू प्रमुख काव्य-गद्य प्रवृत्ति स्पष्ट अछि। रवि भूषण पाठकक लेखनमे व्यंग्य, लोकभाषिक आधुनिकता, साहित्यिक इतिहासक पुनर्पाठ, संस्थागत आलोचना, ग्राम्य-शहरी संक्रमण आ आत्मविडम्बना प्रधान अछि। डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक लेखन सांस्कृतिक मानवशास्त्र, लोकगीत, लोककला, स्त्री-अनुभव, यात्रा-वृत्तान्त, मौखिक इतिहास आ सामाजिक कथा-गद्यक विस्तृत संसार रचैत अछि। दुनू लेखक गामकेँ स्थिर ‘स्वर्णयुग’ नहि मानैत छथि; गाम हुनका लग बदलैत शक्ति-संबंध, स्मृति, भाषा, जाति, पर्यावरण, संस्कार आ आधुनिकताक जीवित क्षेत्र अछि।

बाहरी सार्वजनिक स्रोतसँ मिलान करबाक क्रममे विदेहक पोथी-सूची ‘विदेह:सदेह २९’केँ रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक अंक १-३५० सँ संकलन रूपेँ दर्ज करैत अछि। हिन्दवी रवि भूषण पाठककेँ १९७३, समस्तीपुर जन्मल नई पीढ़ीक कवि आ लोक-संवेदनाक लेल उल्लेखनीय बतबैत अछि। Indian Folklore Research Journalमे डॉ. मिश्रक मिथिला चित्रकलापर लेख स्त्री-सृजनशीलता, भित्ति/फर्शसँ कागज-कैनवास धरि संक्रमण आ बाजारीकरणक संकटपर केन्द्रित अछि; IGNCAक Janapada Sampada अभिलेखमे हुनका मिथिलाक लोकगीत आ मधुश्रावणीक सांस्कृतिक महत्त्व व्याख्यायित करैत देखाओल गेल अछि। ई बाहरी प्रमाण एहि संकलनमे उपस्थित प्रवृत्तिसँ संगति रखैत अछि।

मुख्य शब्द

रवि भूषण पाठक; कैलाश कुमार मिश्र; मैथिली गद्य; मैथिली कविता; लोक-संवेदना; व्यंग्य; सांस्कृतिक मानवशास्त्र; लोकगीत; मधुश्रावणी; मिथिला चित्रकला; यायावरी; स्त्री-विमर्श; ग्राम्य आधुनिकता; विद्यापति; साहित्यिक आलोचना; मौखिक इतिहास।

ग्रन्थसूची / पाठाधार

- सदेह १ सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा — [सभ साहित्यकारक रचनाक विवेचन, भारतीय आलोचना, पाश्चात्य सिद्धान्त, गंगेशक नव्य न्याय, विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा]
- विदेह सदेह-१३: सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा — भारतीय एवं विश्व साहित्यिक सिद्धान्तक आलोकमे
- विदेह सदेह-१४ — अंक १२१-१३२ | ISSN 2229-547X | सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर
- विदेह: सदेह: २८ — सैद्धान्तिक समीक्षा
- विदेह सदेह २९ — रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक गद्य-पद्यक सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा

समालोचना

आलोचना-पद्धतिक आत्मपरीक्षण आ प्रतिमान

अध्याय 9 · समालोचनाक समालोचना आ आलोचनात्मक प्रतिमान

सारांश २. आलोचना सिद्धान्तक परिचय खण्ड ३: भारतीय समीक्षा सिद्धान्तक परिप्रेक्ष्यमे सैद्धान्तिक गहराई: ★★★★★ —

असाधारण व्यावहारिक उपयोगिता: ★★★★☆ — उत्कृष्ट मैथिलीमे नव योगदान: ★★★★★ — महत्त्वपूर्ण १२. तुलनात्मक

विमर्श : संकलनक आर-पार चलैत प्रमुख प्रतिमान सैद्धान्तिक समीक्षा ११. जुम्मा (पुनरुक्ति - ऊपर समीक्षित) (समीक्षा क्रम १ मे देल गेल

३५. जगदीश अरमानी - कथानक: उत्तर-अर्वाचीन आत्म-कथा - असफल कथानक सड़क गाड़ी ब्रेक बनि बाल-बच्चा बचाबैत। ३७-४०. उर्दू

कथा समूह (जन्नत, ईनाम, फेर मनुक्खक, बिना शीर्षकक) ३९. इब्न आसी - फेर मनुक्खक: नूहक नाउ; मनुष्य बाँचैत सेहो। ४०. रतन सिंह -

बिना शीर्षकक: तोता-उल्लू संवाद - भण्डारण सञ्चय - पूँजीवादक व्यङ्ग्य।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · रस-सिद्धान्त · कथा · साहित्यिक समीक्षा · आलोचना

सदेह १ सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा — [सभ साहित्यकारक रचनाक विवेचन, भारतीय आलोचना, पाश्चात्य सिद्धान्त, गंगेशक नव्य न्याय, विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा]

२. आलोचना सिद्धान्तक परिचय

विदेह सदेह १० : बहुआयामी समीक्षा

खण्ड ३: भारतीय समीक्षा सिद्धान्तक परिप्रेक्ष्यमे

विदेह सदेह १० — सम्पूर्ण समालोचना — विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क, गंगेशक नव्य न्याय,

सैद्धान्तिक गहराई: ★★★★★ — असाधारण

व्यावहारिक उपयोगिता: ★★★★☆ — उत्कृष्ट

मैथिलीमे नव योगदान: ★★★★★ — महत्त्वपूर्ण

विदेह सदेह २७ — सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा

१२. तुलनात्मक विमर्श : संकलनक आर-पार चलैत प्रमुख प्रतिमान

विदेह: सदेह: २८ — सैद्धान्तिक समीक्षा

सैद्धान्तिक समीक्षा

११. जुम्मा (पुनरुक्ति - ऊपर समीक्षित)

(समीक्षा क्रम १ मे देल गेल)

३५. जगदीश अरमानी - कथानक:

उत्तर-अर्वाचीन आत्म-कथा - असफल कथानक सड़क गाड़ी ब्रेक बनि बाल-बच्चा बचाबैत। आत्म-व्यङ्ग्य।

३७-४०. उर्दू कथा समूह (जन्नत, ईनाम, फेर मनुक्खक, बिना शीर्षकक)

३९. इब्न आसी - फेर मनुक्खक:

नूहक नाउ; मनुष्य बाँचैत सेहो। मूल प्रश्न - मनुष्यता के अछि?

४०. रतन सिंह - बिना शीर्षकक:

तोता-उल्लू संवाद - भण्डारण सञ्चय - पूँजीवादक व्यङ्ग्य।

४१. तितली आ प्रेम: प्रेम आकस्मिकता, भारतीय काम-सूत्रक संकेत।

४२. मेमोरीचिप्स: नव्यन्यायक आत्मा बहसक वैज्ञानिक समीक्षा।

४४. बुझौअलि: ड्रग्स पीड़ित बेटाक बाप; बुझाब - पाखण्डक उघार।

४५. संगी: स्त्री-मित्रता अलग वर्ग-आर्थिक पृष्ठभूमिक बीच।

५०. सन्दीप कुमार चतुर्वेदी - (अतिरिक्त रचना)

(संकलनक अन्तिम रचना - समग्र संकलनक समापन)

विदेह सदेह ३६ — रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-५

२. आलोचनात्मक प्रतिमान: ग्रन्थ कें कोना पढ़ल जाए

ग्रन्थसूची / पाठाधार

- सदेह १ सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा — [सभ साहित्यकारक रचनाक विवेचन, भारतीय आलोचना, पाश्चात्य सिद्धान्त, गंगेशक नव्य न्याय, विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा]
- विदेह सदेह १० : बहुआयामी समीक्षा
- विदेह सदेह १० — सम्पूर्ण समालोचना — विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क, गंगेशक नव्य न्याय,
- विदेह सदेह २७ — सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा
- विदेह: सदेह: २८ — सैद्धान्तिक समीक्षा
- विदेह सदेह ३६ — रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-५

भाग २

अनुप्रयुक्त अध्ययन

Applied Critical Studies

विदेह सदेह १–३७

प्रबन्ध

दीर्घ, प्रणालीबद्ध आ बहुविषयी अनुप्रयुक्त अध्ययन

अध्याय 1 · विदेह सदेह ८ — मैथिली नाट्य उत्सव - समानान्तर रंगमंच आर्काइव

सारांश सम्पूर्ण लेखक-समीक्षा षट्-दृष्टि समीक्षा-पद्धति १. ज्योतिरीश्वर ठाकुर (त्रयोदश शताब्दी · मैथिली नाट्यक आदि-प्रहसन) परिचय आ

रचना ज्योतिरीश्वर ठाकुर मैथिली साहित्यक मात्र आदि-गद्य-लेखक नहि अपितु मैथिली नाट्य-परम्पराक मूल-पुरुष थिकाह। हुनकर रचि

"धूर्त्तसमागम" त्रयोदश शताब्दीक रचना थिक - संस्कृत आ मैथिली दुनू भाषामे उपलब्ध। ई एकटा प्रहसन (सटायर-कॉमेडी) थिक जे

संस्कृत साहित्यक हास्य-नाट्य परम्पराकेर मैथिल-स्थानीयकरण थिक।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · रंगमंच · साहित्यिक समीक्षा · आलोचना · सांस्कृतिक अध्ययन

सम्पूर्ण लेखक-समीक्षा

षट्-दृष्टि समीक्षा-पद्धति

१. ज्योतिरीश्वर ठाकुर

(त्रयोदश शताब्दी · मैथिली नाट्यक आदि-प्रहसन)

परिचय आ रचना

ज्योतिरीश्वर ठाकुर मैथिली साहित्यक मात्र आदि-गद्य-लेखक नहि अपितु मैथिली नाट्य-परम्पराक मूल-पुरुष थिकाह। हुनकर रचित "धूर्त्तसमागम" त्रयोदश शताब्दीक रचना थिक - संस्कृत आ मैथिली दुनू भाषामे उपलब्ध। ई एकटा प्रहसन (सटायर-कॉमेडी) थिक जे संस्कृत साहित्यक हास्य-नाट्य परम्पराकेर मैथिल-स्थानीयकरण थिक।

कथावस्तु संक्षेपमे: विश्वनगर नामक संन्यासी अपन शिष्य स्नातकक संग भिक्षाटनमे निकलैत छथि। एक वैश्या अनंगसेनाक प्रसङ्गमे गुरु-शिष्यमे विवाद। मध्यस्थताक लेल असज्जाति मिश्र (लम्पट जुआड़ी) लग जाइ छथि। मिश्र अपन-पक्षमे निर्णय लऽ अनंगसेनाकेँ अपने पास राखि लै छथि। फेर नौआ मूलनाशक आबि असज्जातिकेँ मालिश कऽ बेहोश कऽ देत छै। विदूषक हुनका जिआ कऽ ओही दर्शन-वाणीमे समाप्त - "छलसँ देशकेँ खएल, धूर्तवृत्तिसँ प्रिया पाओल, से सर्वत्र सुख-शान्ति हुअय।"

१.७ निष्कर्ष

ज्योतिरीश्वर ठाकुरक धूर्त्तसमागम मैथिली रंगमंचक मूल-पुरुष-कृति थिक, जे ब्राह्मणवादी-कृष्ण-केन्द्रित नाट्य-प्रतिमानसँ छिटकि कऽ धूर्त-वैश्या-नौआक संसारकेँ रङ्गमञ्चपर अनलक। एकर वर्तमान प्रासङ्गिकता ई जे आइयो विदेह आन्दोलनक सदस्य लोकनि एहि परम्परासँ अपनाकेँ जोड़ैत छथि - जातिवादी रंगमंचक बाहर, धूर्तक यथार्थ अनै छथि।

२. विद्यापति ठाकुर

(१४म–१५म शताब्दी · मैथिल नाट्यक भक्ति-योगात्मक मोड़)

परिचय आ रचना

विद्यापति ठाकुर मैथिली साहित्यक मात्र पदावलीक कवि नहि, अपितु "गोरक्षविजय" नामक एकटा अद्भुत नाटकक रचयिता सेहो छथि। ई नाटक धूर्त्तसमागमक बाद मैथिली नाट्य-इतिहासक दोसर मुख्य-स्तम्भ थिक। एकर महत्व ई जे ई नाटक श्रीकृष्ण-कथा-केन्द्रिकता तोड़ि नाथ-सम्प्रदायक योगी गोरक्षनाथक कथापर आधारित अछि - ई परम्परा-तोड़ अपन समयक हिसाबे क्रान्तिकारी थिक।

कथावस्तु: गोरक्षनाथक गुरु मत्स्येन्द्रनाथ योग त्यागि कदलिपुरमे राजा बनि १८ रानीक संग भोग करै छथि। गोरक्ष आ काननपाद नटुआक वेष धरि राजसभामे प्रवेश पाबि नृत्य देखबैत छथि। बीचमे राजकुमार बौधनाथ मरि जाइ छथि, गोरक्ष हुनका जिआ दैत छथि आ गुरुकेँ बजबै छथि - "अहाँ जोगी छी, भोगी नै।" मत्स्येन्द्रनाथ अन्तमे योगमे फेर लौटैत आशीर्वाद दैत छथि।

२.७ निष्कर्ष

विद्यापतिक गोरक्षविजय मैथिली रङ्गमञ्चक भक्ति-योग-केन्द्रित दोसर पुनर्जागरण थिक। एकर समानान्तर-इतिहास ढाँचामे महत्व ई जे ई पारम्परिक कृष्ण-केन्द्रित नाटक-शैलीसँ अलग एकटा सम्प्रदायेतर दार्शनिक नाटक थिक, जे आइ धरि मैथिल लोक-नाट्य परम्परामे जीवित अछि (महाशिवरात्रिकेँ गौरीशंकर स्थान, जमथुरि मे मंचन)।

३. जीवन झा

(१८४८–१९१२ · आधुनिक मैथिली नाट्यक उद्घोषक)

परिचय आ रचना

जीवन झा मिथिलाक १९म शताब्दीक एहन कविक-नाटककार छथि जिनकामे संस्कृत पाण्डित्य, मैथिली लोक-संस्कृति आ नव-जागरणक पाश्चात्य प्रभाव - तीनू एक्के सङ्ग प्रवाहित अछि। ओ मैथिली नाट्य-परम्पराक मध्यकालीन रूप (विद्यापति-गोविन्द दास) सँ आधुनिक रूप (आजुक नाट्य-संस्था) धरि एकटा सेतु थिकाह।

हुनकर मुख्य नाटक: सुन्दर-संयोग, सामवती-पुनर्जन्म, मिथिला-नाटक। ई सभ नाटक मैथिली रङ्गमञ्चपर बेर-बेर मञ्चित भेल - विशेष कऽ राजनगर दरभङ्गाक रजवाड़ा-काल मे आ बीसम शताब्दीक प्रारम्भिक नाट्य-समिति-काल मे।

३.७ निष्कर्ष

जीवन झा मध्यकालसँ आधुनिक-कालक सेतु छथि। हुनकर सुन्दर-संयोग आ सामवती-पुनर्जन्म आधुनिक मैथिली नाटकक पूर्व-संस्करण थिक - विषयमे शास्त्रीय, मुदा निर्वाह-विधिमे आधुनिक।

४. ईशनाथ झा

(२०म शताब्दी · भक्ति-सामाजिक नाटकक संगम)

परिचय आ रचना

ईशनाथ झा बीसम शताब्दीक मैथिली नाटकक एहन रचनाकार छथि जे भक्ति-काव्य परम्पराकेँ आधुनिक सामाजिक नाटकक रूपमे ढालैत छथि। हुनकर दू टा मुख्य नाटक:

(क) उगना - विद्यापति-शिव सम्बन्धपर आधारित। महाशिवरात्रिक अवसरपर गौरीशंकर स्थान, जमथुरिमे ई वार्षिक मञ्चित होइत अछि। शिव विद्यापतिक भक्तिसँ प्रसन्न भऽ "उगना" नौकर बनि हुनकर घरमे आबि गेलाह। जल-पियासमे जटासँ गङ्गधार निकालल; पत्नी द्वारा प्रहार; अन्तर्ध्यान।

(ख) चीनीक लड्डू - सम्पूर्ण आधुनिक सामाजिक मेलोड्रामा। सुधाकान्त-प्रेमकान्त भाइ; मुंशी बटुआ दासक षड्यन्त्र; भ्रातृ-विभेद; पत्नीक जल्द-समर्थन; बच्चाकेँ बिख-मिश्रित लड्डू देबय परिकल्पना - मुदा भेद खुलब आ बटुआ दासक मृत्यु।

ईशनाथक उगना सरस्वती पूजा २००६ (०३ फरवरी, सोम दिन) केर अवसरपर बेचन ठाकुरक निर्देशनमे न्यू लोटस इङ्ग्लिश स्कूल, चनौरागंजमे मंचित भेल। ई दर्ज सदेह ८ केर सरस्वती पूजा शृङ्खलाक छठम नाटक थिक।

४.७ निष्कर्ष

ईशनाथ झा मैथिल भक्ति-नाट्य आ आधुनिक-सामाजिक नाट्यक बीच मध्यस्थ छथि। उगना सम्प्रदायेतर लोक-दैवीय कथा थिक, चीनीक लड्डू नैतिक-यथार्थवादी मेलोड्रामा। दुनू नाटक मैथिल लोक-मञ्चक जीवन्तताक प्रमाण थिक।

५. उदय नारायण सिंह "नचिकेता"

(आधुनिक-उत्तर-आधुनिक नाट्य-संवादक मैथिल मोड़)

परिचय आ रचना

उदय नारायण सिंह "नचिकेता" मैथिली रङ्गमञ्चक एहन रचनाकार छथि जे यथार्थवाद, अभिव्यक्तिवाद आ उत्तर-आधुनिकताक तीनू स्तरपर एक्के सङ्ग कार्य केलनि। हुनकर मुख्य नाटक:

(क) नायकक नाम जीवन - यथार्थवादी सामाजिक-यौनिक हिंसाक नाटक। नवल नव-विचारक छथि, शक्तिराय धनी-कलुषित। शक्तिराय अपन सहयोगी विनयपर चोरिक झूठ-आरोप लगा हुनकर बेटीक अपहरण-बलात्कार करै छथि। विनय आत्महत्या करै छथि, बादमे प्रेमिका सेहो। नवल विक्षिप्त भऽ जाइ छथि।

(ख) एक छल राजा - एलिगोरिकल नाटक। राजा अभिमान कुमार देव मदिरा-वैश्या-प्रवृत्तिमे डूबल। एकटा बेटी मोहिनी, धनाभावमे अविवाहित। शिक्षक शुभङ्करक संग प्रेम।

(ग) नो एण्ट्री : मा प्रविश - पोस्टमॉडर्न ड्रामा। स्वर्ग-नर्क-द्वारपर मुइल लोक सभ अबै छथि, खिस्सा सुनबै छथि, पता चलैत अछि जे चित्रगुप्त-धर्मराज सभ नकली छथि, द्वारपर ताला। ई एब्सर्डिटी सिधे ज्योतिरीश्वरक धूर्त्तसमागम-वाला पोस्ट-मॉडर्न परम्परामे फेर पहुँचा देत अछि।

५.७ निष्कर्ष

उदय नारायण सिंह नचिकेता मैथिली रङ्गमञ्चकेँ यथार्थवादसँ उत्तर-आधुनिकता धरि छहसी ले गेलनि। हुनकर तीनू नाटक - यथार्थवादी सामाजिक, एलिगोरिकल, एब्सर्डिस्ट - विदेह आर्काइवक प्रयोगात्मक-नाट्यक पताका थिक।

६. गोविन्द झा

(१९२३–२०२० · मैथिल पुनर्जागरणक नाट्य-दूत)

परिचय आ रचना

गोविन्द झा बीसम शताब्दीक मैथिलीक सर्वाधिक प्रकाण्ड भाषावैज्ञानिक-नाटककार-व्याकरणाचार्य छथि। हुनकर मुख्य नाटक "बसात"क प्लॉट:

कृष्णकान्त पिता द्वारा निर्धारित युवती पुष्पासँ विवाह करय नहि चाहैत छथि, ओ शिक्षित-साथीसँ विवाहक इच्छुक छथि, लिलीसँ प्रेम करै छथि। पिता घर त्यागि देत छथि। पुष्पा घर छोड़ि महिला-जागरणमे सक्रिय भऽ जाइ छथि। कृष्णकान्त रेलगाड़ीसँ कटयचाहैत, आश्रमक लोक बचा लैत; ओतयहिँ पिता, पुष्पा सभसँ भेँट; लिली बताहि भऽ ओतय आबि जाइ छथि।

मैथिल पाठ्यपुस्तकमे गोविन्द झा अन्तिम-प्रणाम (मैथिल-आ-संस्कृत दुनूमे लिखित) क लेल जाएब चर्चित छथि - सदेह ८ बतबैत अछि जे ओहि नाटकक संस्कृत-रूप मुख्य अछि।

६.७ निष्कर्ष

गोविन्द झा मैथिल पुनर्जागरण-कालीन यथार्थवादी-सामाजिक नाटककार छथि, जिनकर बसात-अन्तिम प्रणाम जेहन कृति आधुनिक-स्त्री-समस्या-दर्शन-नाट्यक पताका थिक।

७. सुधांशु शेखर चौधरी

(मैथिल मध्यवर्गीय-यथार्थवादक चित्रकार)

परिचय आ रचना

सुधांशु शेखर चौधरी मैथिली नाट्यमे मध्यवर्गीय-बेरोजगारी, दहेज, कविक-समाज-विद्रोह जेहन समकालीन समस्यापर केन्द्रित यथार्थवादी नाटककार छथि। हुनकर मुख्य नाटक:

(क) भफाइत चाहक जिनगी - महेश बेरोजगार-कवि, चाह-दोकान खोलैत। इञ्जीनियर उमानाथक पत्नी चन्द्रमा देखलनि जे महेश पुकार भेलापर कविता-पाठ करैत, चाह छोड़ि चलि जाइत। चन्द्रमा खुदहि चाह बेचय लगै छथि, उमानाथ तमसा जाइ छथि। आगाँ महेशक संगी सरिता (आइ.ए.एस.क पत्नी) सेहो आबि जाइ छथि।

(ख) लेटाइत आँचर - दीनानाथक एकमात्र पुत्री ममताकेँ "काटर"क कारणसँ पतिक घर सँ छोड़ल; मुदा पुत्र मोदनाथ अपन बियाहमे दहेज लेबा-प्रयासपर पिताकेँ रोकैत। ई पारिवारिक-नैतिक नाटक थिक।

७.७ निष्कर्ष

सुधांशु शेखर चौधरी मैथिल मध्यवर्गक टूटित-यथार्थक रङ्गमञ्चीय-दस्तावेजकार छथि। हुनकर भफाइत चाहक जिनगी मैथिल बेरोजगार-कविक प्रामाणिक-आख्यान थिक।

८. गुणनाथ झा

("लोक मञ्च"क सम्पादक · आधुनिक मैथिली नाटकक प्रवर्तक)

परिचय आ रचना

गुणनाथ झा "लोक मञ्च" मैथिली नाट्य-पत्रिकाक सम्पादक-संचालक रहलाह आ मैथिलीमे आधुनिक नाटकक प्रणयन केलनि। हुनकर ९ टा प्रमुख नाटकक मञ्चन बेर-बेर भेल अछि:

(क) कनियाँ-पुतरा - पहिल पूर्णाङ्क नाटक। काटर प्रथापर आधारित। बहुदृश्य घूर्णीय-मञ्चोपयुक्त। अभिनेता-अभिनेत्रीक मनोविकारयुक्त हेबाक सटीक चित्रण।

(ख) मधुयामिनी - एकाङ्क। दू पात्र - संयुक्त-परिवारक पक्षधर पुरुष आ विरोधी स्त्री। सामञ्जस्यपूर्ण विजय। लोक मञ्च-प्रकाशित।

(ग) पाथेय - एकाङ्क, मुदा पूर्णाङ्कक विशेषतायुक्त। नायक मिथिलाक अधोगतिसँ दुखी, गामकेँ कर्मस्थली बनबैत। बादमे पत्नी संग आबि जाइ छथि।

(घ) लाल-बुझक्कर - एकाङ्क। निम्न-मध्यवर्गक प्रवास-समस्या। नायक माता-पिता-विहीन, कनियाँ-नैहर बैसा कऽ नग्र-प्रवास।

(ङ) सातम चरित्र - एकाङ्क। मैथिली रङ्गमञ्चपर महिला-अभिनेत्रीक अभाव। सातम चरित्रक प्रतीक्षामे पूर्वाभ्यास खतम। लोक मञ्च-प्रकाशित।

(च) शेष नञि - पूर्णाङ्क सामाजिक नाटक। अग्रज-अनुजक पैतृक सम्बन्ध। अनुजक चाकरीसँ अचिन्तनीय-कार्य; मरणासन्न पत्नीक प्राण-रक्षार्थ अग्रज द्वारा साहस।

(छ) आजुक लोक - पूर्णाङ्क। निम्न-मध्यवर्गीय बेरोजगारी आ बियाहक दायित्व।

(ज) जय मैथिली - पूर्णाङ्क। मिथिलाक भाषिक-सांस्कृतिक-समस्या।

(झ) महाकवि विद्यापति - विद्यापतिक नव-विश्लेषण।

संगहि ओ बांग्ला एकाङ्क-नाट्य-संग्रह (अजित कुमार घोष-सम्पादित) क मैथिली-अनुवाद केलनि - २४ बांग्ला नाटककारक २४ नाटक।

८.७ निष्कर्ष

गुणनाथ झा मैथिली रङ्गमञ्चक आधुनिक-एकाङ्क-शैलीक पिता छथि - विशिष्टतापूर्वक "लोक मञ्च" नामक नाट्य-पत्रिका-सम्पादन-कार्यक माध्यमसँ ओ मैथिल नाट्य-संस्थापक-निर्माता भेलाह।

९. जगदीश प्रसाद मण्डल

(किसान-नाट्यकार · टैगोर-साहित्य-सम्मान २०११)

परिचय आ रचना

जगदीश प्रसाद मण्डल मैथिलीक एकटा एहन रचनाकार छथि जिनकर रचना-संसार किसान-केन्द्रित, सर्वहारा-केन्द्रित अछि। हुनका मैथिली लघुकथा-संग्रह "गामक जिनगी" लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११ भेटल। ई पुरस्कार-प्राप्ति विदेह आन्दोलनक मुख्य उपलब्धि थिक।

हुनकर मुख्य नाटक:

(क) मिथिलाक बेटी - पाँच-अङ्कीय महाकाव्यात्मक सामाजिक नाटक। अङ्क-१: महगीक विरोध, खेतीक ह्रास, दहेज-समस्या, अपहरण; अङ्क-२: सामन्ती व्यसन (भांग), श्रम-चोरी, लिङ्गिक-शोषण; अङ्क-३: बहुराष्ट्रीय-कम्पनीक प्रभाव, समाज-खण्डन; अङ्क-४: रामविलास मिस्त्रीक मानवीय-दृष्टि, दहेजकेँ धक्का; अङ्क-५: आदर्श बिआह, नव-चेतना।

(ख) कम्प्रोमाइज - सामन्ती-कृषि-पूँजीवादी-संक्रमण, समन्वयवादी विचार।

(ग) झमेलिया बिआह - बाह्य-प्रभावसँ मिथिल-बिआह-संस्कारमे झमेला-उत्पत्ति।

(घ) वीरांगना - सस्ता-श्रम-शोषण-केन्द्रित।

(ङ) तामक तमघैल - ढहैत सामन्ती-परिवारक चित्रण।

(च) सतमाए - सम्बन्धक मूल्य-निरूपण।

(छ) कल्याणी - स्त्री-जागरण।

(ज) समझौता - कृषि-संकटक समाधान।

९.७ निष्कर्ष

जगदीश प्रसाद मण्डल मैथिल किसान-सर्वहारा रङ्गमञ्चक मुख्य-स्तम्भ छथि - विदेह आन्दोलनक एकटा एहन उपलब्धि जे राष्ट्रीय-स्तरपर टैगोर-पुरस्कारक माध्यमसँ मान्यता प्राप्त भेल।

१०. बेचन ठाकुर

(समानान्तर-रङ्गमञ्चक केन्द्रीय कर्ता · चनौरागंजक नाट्य-दूत)

परिचय आ रचना

बेचन ठाकुर सदेह ८ केर - आ कहल जाय तँ विदेह समानान्तर रङ्गमञ्चक - मुख्य कर्म-नायक छथि। ओ चनौरागंज (जिला मधुबनी, बिहार) क न्यू लोटस इङ्ग्लिश स्कूलमे एकटा निजी शिक्षक-निर्देशक रहैत १४ वर्ष धरि सरस्वती पूजाक अवसरपर वार्षिक नाट्य-मञ्चन केलनि। ई वार्षिक-मञ्चन-शृङ्खला (१९९५-२००८+) सदेह ८ मे विस्तारसँ दर्ज अछि।

हुनकर मुख्य नाटक:

(क) बेटीक अपमान - भ्रूण-हत्या आ महिला-अधिकारपर आधारित।

(ख) छीनरदेवी - अन्धविश्वासपर आधारित।

(ग) अधिकार - इन्दिरा आवास योजनाक अनियमितताकेँ आर.टी.आइ. सँ देखार करैबला; रिक्शासँ झंझारपुरसँ दिल्ली-यात्रा-कथा (पात्र मञ्जुर)।

(घ) विश्वासघात - नेशनल हाइवे जमीन-मुआवजाक पारिवारिक-बलि।

सरस्वती पूजा वार्षिक-शृङ्खला: रमेश डीलर (१९९५), महावीरलाल (१९९६), किसुन बम (१९९७), लक्ष्मी मण्डल (१९९८), भाए-बहिन (१९९९), कौआसँ गेल्ह बुधियार (२०००), सिमरीयाक पंडा (२००१), होनहार चेला (२००२), तेतैर गाछमे आम कोना (२००३), सपूत (२००४), राखीक लाज (२००५), उगना (२००६ - ईशनाथ झा-कृत, बेचन ठाकुर-निर्देशित), श्रवण कुमार (२००७ - पण्डित विष्णु कुमार दीपक-कृत), सत्यवान सावित्री (२००८ - भोला प्रशान्त-कृत, बेचन ठाकुर-अनूदित), छीनरदेवी (२००८), बेटीक अपमान (२००९)।

१०.७ निष्कर्ष

बेचन ठाकुर सदेह ८ केर केन्द्रीय कर्म-नायक छथि। हुनकर रचनात्मक-योगदान (४ टा प्रमुख नाटक) आ कर्म-योगदान (१४ वर्षक सरस्वती-पूजा शृङ्खला + २५-वर्षक समानान्तर-रङ्गमञ्च-आन्दोलन) मैथिली रङ्गमञ्चकेँ जातिवादी-संस्थागत-कोषसँ बाहर निकालि सर्वहारा-स्त्री-दलित-केन्द्रित बनेलक। ई ओ सर्जक छथि जे ज्योतिरीश्वर ठाकुरक प्रहसन-परम्पराकेँ २१म शताब्दीक मैथिल-समाजमे जीवन्त राखि सकल।

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह सदेह ८ — मैथिली नाट्य उत्सव - समानान्तर रंगमंच आर्काइव

अध्याय 2 · सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा — 'विदेह' अंक २५ (१ जनवरी २००९) आ 'विदेह-सदेह २५'

सारांश गद्य · पद्य · आलोचना · संस्मरण · साक्षात्कार · अनुवाद · लोक-संस्कृति · भाषा-विमर्श शुद्ध मैथिलीमे पाठाधारित गहन अध्ययन

समीक्षा-परिसर आ पाठ-निष्ठा ई अध्ययन तीनू संलग्न स्रोतकेँ एक-दोसराक विकल्प नहि, बल्कि अलग-अलग पाठ-साक्ष्य मानैत अछि।

'विदेह' अंक २५ (१ जनवरी २००९) एक स्वतंत्र पाक्षिक अंक थिक; 'विदेह-सदेह २५' २०२२ केर गद्य-पद्य संकलन थिक, जकर सामग्री

'विदेह'क अंक ३३३-३५०क परिसर सँ संकलित अछि। एहि कारणेँ समीक्षा दू मुख्य भागमे विभाजित अछि, जाहिसँ काल, लेखक, रचना आ

सम्पादकीय संदर्भ एक-दोसरामे घुलि नहि जाए।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · अनुवाद · भाषा-विमर्श · लोक-संस्कृति

गद्य · पद्य · आलोचना · संस्मरण · साक्षात्कार · अनुवाद · लोक-संस्कृति · भाषा-विमर्श

शुद्ध मैथिलीमे पाठाधारित गहन अध्ययन

समीक्षा-परिसर आ पाठ-निष्ठा

ई अध्ययन तीनू संलग्न स्रोतकेँ एक-दोसराक विकल्प नहि, बल्कि अलग-अलग पाठ-साक्ष्य मानैत अछि। 'विदेह' अंक २५ (१ जनवरी २००९) एक स्वतंत्र पाक्षिक अंक थिक; 'विदेह-सदेह २५' २०२२ केर गद्य-पद्य संकलन थिक, जकर सामग्री 'विदेह'क अंक ३३३-३५०क परिसर सँ संकलित अछि। एहि कारणेँ समीक्षा दू मुख्य भागमे विभाजित अछि, जाहिसँ काल, लेखक, रचना आ सम्पादकीय संदर्भ एक-दोसरामे घुलि नहि जाए।

समग्र निष्कर्ष

दूनू स्रोतकेँ संगे पढ़लापर 'विदेह'क साहित्यिक परियोजना तीन स्तरपर देखार होइत अछि—रचनात्मक साहित्यक निरन्तर प्रकाशन; मैथिली समाजक भीतर भाषा, जाति, स्त्री, प्रवास, शिक्षा, पुरस्कार-संस्कृति, पत्रकारिता, लोक-संस्कृति आ संस्थागत प्रश्नपर खुलल बहस; आ पुरान साहित्यिक-सांस्कृतिक स्मृतिक डिजिटल अभिलेखीकरण। एहि त्रिस्तरीय संरचनाक कारण ई सामग्री मात्र कविता-कथा-संग्रह नहि, बल्कि एक समयखंडक मैथिली सार्वजनिकताक दस्तावेज सेहो बनैत अछि।

'विदेह-सदेह २५' मे बीहनि कथा सँ लऽ कऽ दीर्घ आलोचना, संस्मरण, जीवनी, नाटक-विमर्श, पत्रकारिता-इतिहास आ कविता धरि विधागत विस्तार अछि। गुणवत्ता एकसमान नहि—कतहुँ भाषिक कसावट, कतहुँ वैचारिक आवेग, कतहुँ संस्मरणात्मक आत्मीयता, कतहुँ polemical तीखापन प्रमुख अछि। मुदा संकलनक ऐतिहासिक मूल्य एहि बहुवचनतामे अछि।

भाग एक : 'विदेह-सदेह २५' केर साहित्यिक समीक्षा

१. बीहनि कथा : लघु आकारमे विस्तृत समाज-पाठ

गजेन्द्र ठाकुरक 'सझिया रोपनि' ४३ गोट बीहनि कथाकारक ८६ टा बीहनि कथाक सामूहिक समीक्षा करैत अछि। समीक्षा आकार, अन्त, कथोपकथन, वातावरण, उद्देश्य आ प्रासंगिकतापर विचार करैत अछि। २३ पुरुष आ २० महिला रचनाकारक उपस्थितिक कारण स्त्री-अनुभव, परिवार, विवाह, देह, श्रम, वृद्धावस्था, सामाजिक नैतिकता आ आधुनिक जीवनक विडम्बना बहु-दृष्टिसँ सामने अबैत अछि।

घनश्याम घनेरो — "अछोप" : भाषा आ सांस्कृतिक स्वत्वक चिन्ताकेँ कटाह संकेतमे रखैत रचना; लघु आकारक भीतर मैथिलीकेँ अपन स्वरूपमे ठाढ़ रखबाक आग्रह।

मुन्नाजी — "फोकस!" : ध्यान, प्राथमिकता आ सामाजिक दृष्टिक विचलनपर खट-मिठाह व्यंग्य।

नारायणजी — "कुशल" : मानव-स्वभावक विडम्बनाकेँ कथात्मक मोड़सँ पकड़ैत; परिचित प्लॉटकेँ अलग दृष्टिसँ नब अर्थ दैत अछि।

प्रमोद कुमार झा 'गोकुल' — बीहनि कथा (शीर्षक समीक्षा-अंशमे स्पष्ट नहि) : अलंकरण आ क्लासिकल दृश्य-निर्माणक प्रयोग लघु-विधामे सेहो सम्भव अछि—समीक्षा एही सम्भावनाक संकेत दैत अछि।

डा. प्रमोद कुमार — पाँच टा बीहनि कथा : गूगल, कक्षा, पी.पी.टी. आ कोरोना-पश्चात पीढ़ीगत दूरी सन समकालीन अनुभव; उपलब्ध समीक्षा पाँचो शीर्षक अलग-अलग नहि दैत अछि, अतः शीर्षक गढ़ल नहि गेल अछि।

मुन्नी कामत — "गर्ल्स हॉस्टल" : देहक स्वतंत्रता आ स्त्रीक स्वायत्तताकेँ केन्द्रमे अनैत स्पष्ट स्त्री-विमर्श।

अमरेश कुमार लाभ — "करिकी" : रंग, शिक्षा, रोजगार आ विवाह-बाजारक मानकपर व्यंग्य; सामाजिक गोरेपनक आग्रहक भीतर वर्गीय आकांक्षा।

विद्या चन्द्र झा 'बमबम' — "माफ कऽ सकी तँ"; "प्रभा" : प्रेम, आकर्षण आ पारिवारिक सम्बन्धक उलझनकेँ आत्मपरिहासक संग प्रस्तुत करैत अछि।

सत्येन्द्र कर्ण — "दिमाग फूजब" : प्रेम-आवेगक हास्यात्मक अतिशयोक्ति; संवादात्मक लय तीव्र समापनकेँ बल दैत अछि।

विन्देश्वर ठाकुर — "सोकाज"; "बहसल कनिया" : परिवारक भीतर पीढ़ीगत नैतिक मानदण्ड आ दाम्पत्य व्यवहारक टकराव।

आभा झा — "लाज" : पुरुष-नैतिकताक घोषित मानक आ वास्तविक आचरणक विरोधाभासपर प्रहार।

शिव कुमार — "फर्मलिटी" : नव आर्थिक जीवन, परिवार आ औपचारिक सम्बन्धक बीच बढ़ैत कृत्रिमता।

प्रियंवदा — "स्वाभिमान" : बेटीक विवाहकेँ मूल्य/लेन-देनसँ जोड़बाक प्रवृत्तिक प्रतिवाद; स्त्री-गरिमा कथा-केंद्र।

महाकान्त प्रसाद — "गोली" : राजनीतिक भाषण आ सार्वजनिक वक्तव्यक प्रभावपर व्यंग्यात्मक टिप्पणी।

प्रभाष अकिंचन — "कपरछिल्ला" : उपनयन-संस्कारक स्मृति आ सामाजिक रीतिकेँ संक्षिप्त दृश्यरूपमे उपस्थित करैत अछि।

आशीष अनचिन्हार — "स्थिति" : विवाह-पूर्व आ विवाह-पश्चात स्त्रीक बदलैत स्थिति, भूमिका आ स्वतंत्रताक प्रश्न।

पूनम झा — "उपदेश" : उपदेश आ करनीक अन्तर—नैतिक वचन बनाम व्यवहार—कथाक मूल व्यंग्य।

शुभ्रा संतोष — "मोल भाव" : पुरुषक वस्तुकरणकारी दृष्टिपर चोट आ नारीक आन्तरिक प्रतिरोध-शक्ति।

जवाहर लाल कश्यप — "कुक्कुर"; "हीरो" : पहिल कथा मालिक-पशु मनोविज्ञान दिस जाइत अछि; दोसर नाम, प्रतिष्ठा आ वास्तविक गुणक सम्बन्धपर हल्का किन्तु अर्थवान व्यंग्य।

सुभाष कुमार कामत — "कोड वर्ड" : बेटीक जन्मक प्रसन्नता आ बेटीक सुरक्षासँ जुड़ल भयक द्वन्द्व।

नीरज कर्ण — "फादर्स डे" : उत्सवधर्मी आधुनिकता आ पारिवारिक कुटिलताक अन्तरकेँ प्रहारक अन्तसँ खोलैत अछि।

कुमारी आरती — "जीवनसंगी" : पति-पत्नी सम्बन्धमे सहमेल, सहभागिता आ परस्पर सम्मानक सम्भावना।

कल्पना झा-१ (बोकारो) — "संताप"; "सप्पत" : 'संताप' पर्यावरणीय चिन्ता दिस संकेत करैत; 'सप्पत' परिवारक भोजन-वितरणमे लैंगिक असमानतापर बच्चाक दृष्टिसँ आक्रोश।

कल्पना झा-२ (पटना) — "फेसबुकिया जिनगी" : वृद्धावस्था आ सोशल-मीडिया जीवनक समानान्तर प्लॉट; छोट आकारमे दू स्तरक कथा।

सबिता झा 'सोनी' — "नौत" : भूख, भोजन आ घरक लैंगिक प्राथमिकताकेँ स्त्री-विमर्शक दृष्टिसँ प्रश्नांकित करैत अछि।

विनीता ठाकुर — "समय केर मारल" : समयक फेर, भूख आ सामाजिक अवस्थाक परिवर्तन।

मृणाल आशुतोष — "न्यूटन के थर्ड लॉ" : लिव-इन सम्बन्धमे स्त्रीक स्थिति; वैज्ञानिक सूत्रकेँ सामाजिक सम्बन्धक रूपक बनाओल गेल अछि।

अमर ठाकुर — "नाम उच्च कान बुच्च" : नाम, पद आ उपयोगिताक अन्तरपर लोक-व्यंग्य।

मनीषा झा — "निपुत्र" : 'अपना काल' आ 'अनका काल' बदलैत नैतिकता; एके व्यक्तिक दू सामाजिक चेहरा।

रूबी झा — "आस"; "टुगर" : 'आस' माय-बच्चाक हठ आ अपेक्षा; 'टुगर' मनुष्य आ पशुक पीड़ाक तुलनात्मक अनुभूति।

ओम प्रकाश झा — "पुरना दलान" : पुरान दलानकेँ अवशेष नहि, चिड़ैक जोड़क आश्रय बनबैत मानवीय-पर्यावरणीय अन्त।

हिमाद्रि मिश्र 'हिम' — "अधिकार" : सासु-पुतोहुक वाचिक टकरावमे घर, अधिकार आ पीढ़ीगत स्वामित्वक मनोविज्ञान।

इरा मल्लिक — "पीड़ न जाने कोय" : श्रम आ दुःख-विस्मरणक मनोवैज्ञानिक सम्बन्ध; जाँत पिसबाक क्रिया पीड़ासँ जूझबाक साधन।

कंचन कंठ — "बराबरी" : 'बराबरी'क सामाजिक दावा हास्यात्मक मोड़मे खुलैत; अन्त-कौशल रचनाक मुख्य बल।

राजेश वर्मा 'भवादित्य' — वर्तमान-भूत प्रसंगक बीहनि कथा : भूमिका बदलिते विचार बदलि जेबाक मानवीय प्रवृत्ति; उपलब्ध समीक्षा शीर्षक स्पष्ट नहि करैत अछि।

मिसिदा — "सपना" : साहित्य, रचना आ राजनीति—तीन संकल्पनाकेँ अत्यल्प पाँतिमे एकत्र करैत अछि।

जयन्ती कुमारी — "खौंझी" : घरेलू सहायिका आ मलकिनी दुनूक स्त्री-अनुभवकेँ एक विमर्शमे जोड़ैत तीक्ष्ण अन्त।

कल्पना कुमारी — "झमारल मोन" : हिस्सा-बखड़ा आ पारिवारिक बँटवारा सँ उत्पन्न मानसिक टूटन।

सांत्वना मिश्रा — "भगवती जनम लेली" : स्त्रीक समस्यामे स्त्रीक भीतरक भूमिका सेहो प्रश्नांकित; लैंगिक विमर्शकेँ एकतरफा निष्कर्षसँ बचबैत अछि।

नन्दनी झा — "भदबा" : सासु-पुतोहु सम्बन्धक रूढ़ छविकेँ उलटि प्रगतिशील सासुक सम्भावना।

भुवनेश्वर चौरसिया 'भुनेश' — "सहमत" : बकथोथी आ संवादक माध्यमेँ हास्य; सामाजिक सहमतिक सतहीपन।

अमर कान्त लाल — "एम आर पी" : मूल्य, बाज़ार आ व्यवहारक अन्तरपर बकथोथी-आधारित हास्य।

दीपा मिश्रा — "चलाक" : स्त्री-पुरुष सम्बन्धक रूढ़ धारणाकेँ हास्यपूर्वक उलटैत घरेलू श्रमक वितरणपर व्यंग्य।

२. साक्षात्कार, उपन्यास-समीक्षा आ सामाजिक गद्य

डा. वीरेन्द्र मल्लिक / नबोनारायण मिश्र — "मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिसँ हम निराश नहि छी" [पृ. ९-१९] : साक्षात्कार कविता, पुरस्कार-संस्कृति, पत्र-पत्रिका, संस्थागत वर्चस्व, सामाजिक प्रतिनिधित्व, साहित्यिक विचारधारा आ कलकत्ताक रंगमंचक प्रश्नकेँ प्रत्यक्ष बहसक रूप दैत अछि। मल्लिकक उत्तरमे आशावाद आ संस्थागत आलोचना एकसंग अछि; विशेषतः अध्ययनक कमी, व्यक्तिकेन्द्रित लेखन आ पुरस्कार-वितरणक विकृतिपर टिप्पणी साहित्यिक समाजशास्त्रक दस्तावेज बनैत अछि।

डा. योगानन्द झा — "प्रवासीक स्नेहसँ ओतप्रोत मातृभूमि" [पृ. २०-२३] : रबीन्द्र नारायण मिश्रक 'मातृभूमि' उपन्यासक समीक्षा शिक्षा, प्रवास, ग्राम-विकास आ मातृभूमिक प्रति उत्तरदायित्वक प्रश्नकेँ केन्द्रमे रखैत अछि। जयन्तक जीवन-संघर्ष, विद्यालय-विश्वविद्यालय स्थापनाक आदर्श, सुधाकरक प्रतिरोध, शीला-चन्द्रिका प्रसंग आ अन्तक आकस्मिक समाधानपर संतुलित दृष्टि अछि। भाषा, पात्र-मनःस्थिति आ आदर्शोन्मुख यथार्थवादक पहचान एहि आलेखक बल।

डा. किशन कारीगर — मिथिला मे बिलुप्त भेल जा रहल भांट/भैंट (घूमक्कर वाचक) [पृ. २४-६१] : लोकवाचिक परम्पराक विलुप्ति, वाचकक सामाजिक भूमिका आ स्मृति-संरक्षण; लोक-साहित्यकेँ जीवित प्रदर्शनक रूपमे देखैत अछि।

डा. किशन कारीगर — लोक कलाकार ढोल पिपही वला के खोज खबैर के राखत? [पृ. २४-६१] : लोककलाकारक जीविका, प्रतिष्ठा आ सांस्कृतिक उत्तराधिकारक प्रश्न।

डा. किशन कारीगर — पुरुस्कारी गुर्गा पुरुस्कार बँटा डकैत [पृ. २४-६१] : पुरस्कार-तंत्रक गुट, कृपा आ नैतिक संकटपर व्यंग्यात्मक आलोचना।

डा. किशन कारीगर — महामारी सन डेराउन भेल जा रहलै? मिथिला स पलायन (परदेश कमाएब) [पृ. २४-६१] : पलायनकेँ व्यक्तिगत रोजी-रोटी नहि, सामुदायिक संरचनाक संकट रूपेँ पढ़बाक प्रयास।

डा. किशन कारीगर — मिथिला मैथिली के दुर्दशा लैए दोखी के सब हइ/अछि? [पृ. २४-६१] : दुर्दशाक कारणकेँ सामूहिक उत्तरदायित्वक प्रश्न बनबैत अछि।

डा. किशन कारीगर — बोंगपाद बौआक बखारी [पृ. २४-६१] : ग्रामीण बोलचाल आ विनोदक माध्यमेँ सामाजिक व्यवहारक सूक्ष्म निरीक्षण।

डा. किशन कारीगर — भगम भग्गी फैशन [पृ. २४-६१] : फैशन, अनुकरण आ बदलैत सामाजिक रुचिक लोक-व्यंग्यात्मक पाठ।

डा. किशन कारीगर — मिथिला मैथिली आंदोलनक मिथक प्रयास आ समाधान? [पृ. २४-६१] : आन्दोलनक घोषणात्मकता आ वास्तविक परिणामक दूरी; समाधानमुखी प्रश्न।

डा. किशन कारीगर — मोछ वाली मौगी [पृ. २४-६१] : लैंगिक रूढ़ि, देह-छवि आ सामाजिक दृष्टिक व्यंग्यात्मक उलटाव।

डा. किशन कारीगर — मैथिलीमे रचना चोरीक विकट समस्या आ समाधान [पृ. २४-६१] : साहित्यिक नैतिकता, मौलिकता आ श्रेयक प्रश्न।

डा. किशन कारीगर — मैथिली फ़िल्म उद्योग अखनी तक आ नबका प्रयोग [पृ. २४-६१] : मैथिली फिल्मक इतिहास, संकट आ प्रयोगधर्मितापर विमर्श।

डा. किशन कारीगर — मिथिला मैथिली के नाम पर दललपनी आ चलकपनी [पृ. २४-६१] : भाषा-संस्कृतिक नामपर अवसरवाद आ संस्थागत मध्यस्थताक आलोचना।

डा. किशन कारीगर — बीहनि कथा — बाबा भक्त कटाक्ष [पृ. २४-६१] : भक्ति आ व्यवहारक विसंगतिपर लघु कटाक्ष।

संतोष कुमार राय 'बटोही' — "बकरी संस्कृति" [पृ. ६२-६५] : 'संस्कृति' शब्दकेँ बकरीक छवि संग जोड़ि सामाजिक अनुकरण, भीड़-मानस आ विडम्बनाकेँ व्यंग्यात्मक रूप दैत अछि।

मणिकांत ठाकुर — "चिंता मामा" [पृ. ६६-७१] : व्यक्तिचित्र, हास्य आ ग्रामीण संस्मरणक मिश्रण। चिंता मामा, कुकुर 'बिजली', भोजन-सनेश आ पड़ोसी प्रसंग चरित्रकेँ स्नेहपूर्ण व्यंग्यसँ जीवित करैत अछि।

शशिकांत कर्ण — "बड़का भक्त" [पृ. ७२] : अत्यल्प संवादमे भक्तिक कारणक विडम्बना—पहिने संतान लेल भगवान, बादमे संतानक कारण भगवान—बीहनि कथाक संक्षिप्ततम व्यंग्य-शक्ति।

सुभद्रा मिश्र भाव्या — "हकार"; "प्रपंच" [पृ. ७३-७४] : घर-गृहस्थी, संस्कार-आमंत्रण, नातेदारी, दिखावा आ स्त्री-समाजक वाचिक संस्कृति; संवाद एहि दुनू रचनाक ऊर्जा।

ज्ञानवर्द्धन कंठ — क्ष त्र ज्ञ [पृ. ७५-८७] : तीन अक्षरक 'रचना'केँ संस्थागत आलोचना द्वारा अतिव्याख्यायित कएल जेबाक प्रसंग साहित्यिक संस्थान, पुरस्कार-प्रक्रिया आ अर्थ-निर्माणक हास्यास्पदतापर तीक्ष्ण व्यंग्य।

ज्ञानवर्द्धन कंठ — भाषाक झौहरि [पृ. ७५-८७] : भाषा-शुद्धता, विशेषज्ञता आ स्वयंभू अधिकारक दावापर विनोदपूर्ण प्रश्न।

ज्ञानवर्द्धन कंठ — केकर मौसा छियौ? [पृ. ७५-८७] : नातेदारीक भाषिक-सामाजिक उलझनकेँ हास्यक स्रोत।

ज्ञानवर्द्धन कंठ — मैथिलीक पढ़ाइ [पृ. ७५-८७] : भाषा-शिक्षा आ व्यवहारिक उपयोगक अन्तर।

ज्ञानवर्द्धन कंठ — भोगी बनलाह बाघ [पृ. ७५-८७] : लोभ/भोगक कारण चरित्र-परिवर्तनक रूपक।

ज्ञानवर्द्धन कंठ — अभिनव दधीचि [पृ. ७५-८७] : त्यागक महाकाव्यात्मक प्रतीक 'दधीचि'केँ समकालीन सन्दर्भमे पुनर्परिभाषित करैत अछि।

ज्ञानवर्द्धन कंठ — जालंधर-यात्रा [पृ. ७५-८७] : कार्यालयी जीवन, यात्रा, भ्रष्ट व्यवहार आ निजी संकटक प्रसंगसभक माध्यमेँ नौकरशाहीक मनोविज्ञान।

दीपिका झा — "अपराधी तय अछि" [पृ. ८८] : नवविवाहित सम्बन्धक बारेमे अनुमान, चुगली आ एकतरफा निर्णयक छोट संवाद; अपराधी के—ई तय करबाक सामाजिक उतावली स्वयं व्यंग्य बनैत अछि।

३. राजनन्दन लाल दास विशेषांक : व्यक्ति सँ संस्था धरि

पृ. ८९ सँ ३४९ धरि पसारल खण्ड राजनन्दन लाल दासकेँ केवल जीवनीक विषय नहि, बल्कि सम्पादक, पत्रकार, नाटककार, आन्दोलनकारी, संगठनकर्ता, परिवारजन आ विवादित साहित्यिक व्यक्तित्व—सभ रूपमे देखैत अछि। श्रद्धांजलि, संस्मरण, आलोचना आ प्रतिपक्ष एकसंग उपस्थित अछि।

सम्पादकीय/संकलित — "राजनन्दन लाल दासः परिचय" [पृ. ८९-९०] : जन्म, परिवार, शिक्षा, नौकरी, कृतित्व आ सार्वजनिक योगदानक आधारभूत परिचय।

सम्पादकीय — "राजनन्दन लाल दास विशेषांकक संरचनाक संदर्भमे" [पृ. ९१] : विशेषांक तैयार करबाक कठिनाई, हस्तलिखित सामग्री आ निधनक

बीच सम्पादकीय आत्मस्वीकार; अभिलेखक सीमाकेँ ईमानदारीसँ दर्ज करैत अछि।

मुकेश दत्त — "एकटा सशक्त सम्पादित व्यक्तित्व: राजनन्दन लाल दास" [पृ. ९२-१०३] : सम्पादकीय कर्म, 'कर्णामृत', मैथिली प्रचार, सामाजिक-सांस्कृतिक सक्रियता आ व्यक्तित्वक विविध पक्षकेँ दस्तावेजी ढंगसँ जोड़ैत दीर्घ लेख।

दिलीप कुमार झा — "मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा होइ सएह छलनि स्व. राजनन्दन लालदासक अंतिम इच्छा" [पृ. १०४-१०७] : मातृभाषा-शिक्षाक प्रश्नकेँ राजनन्दनजीक जीवन-दृष्टि संग जोड़ि व्यक्ति-स्मरणकेँ शिक्षा-विमर्शमे बदलैत अछि।

अजित कुमार झा — "वन मैन आर्मी: श्रद्धेय राज नन्दन लाल दास"; "मिथिला मैथिली आन्दोलनक पाथेय: श्रद्धेय रवीन्द्र जी" [पृ. १०८-११८] : पहिल लेख एकल सक्रियताक 'वन मैन आर्मी' रूपक; दोसर आन्दोलनक पथप्रदर्शक रूपमे रवीन्द्रजीक स्मरण।

अशोक — "सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कर्णामृत" [पृ. ११९-१२२] : 'कर्णामृत'क माध्यमेँ सम्पादकीय दृष्टि, चयन, पाठक-सम्पर्क आ साहित्यिक सार्वजनिकता निर्माणक चर्चा।

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' — "साहित्यकार-सम्पादक श्री राज नन्दन लाल दास"; "भरि नगरीमे शोर"; "सभटा सोनारकें नहि गढ़बाक कला होइछ" [पृ. १२३-१३९] : व्यक्तित्व-स्मरण, साहित्यिक परिवेश आ 'लेखनी एक रंग अनेक'क समीक्षा—तीन आलोचनात्मक रजिस्टर।

चन्दना दत्त — "श्री राजनन्दन लाल दास : क्षीणकायामे असीम उर्जान्वित व्यक्तिव" [पृ. १४०-१४६] : शारीरिक क्षीणता बनाम कर्म-ऊर्जाक विरोधाभासक केन्द्रमे व्यक्तिचित्र।

अमोद झा — "क्रान्तिकारी चेतना जगबैत मैथिली नाटक 'संतो'" [पृ. १४७-१५०] : 'संतो'केँ सामाजिक-क्रान्तिकारी चेतनाक दृष्टिसँ पढ़ैत नाटकक वैचारिक पक्ष उजागर।

अखिलेश झा — "मैथिली साहित्यक एकांत साधक राजनंदन लाल दास" [पृ. १५१-१५३] : दीर्घकालीन एकनिष्ठ साहित्य-सेवाकेँ 'एकांत साधना'क रूपकसँ चिह्नित।

चन्द्रेश — "मैथिल शिरोमणि राजनन्दन लालदास" [पृ. १५४-१६०] : श्रद्धांजलिपरक व्यक्तिचित्र; सामुदायिक स्मृतिमे प्रतिष्ठाक संकेत।

जितेन्द्र नाथ दत्त — "माछक रस" [पृ. १६१] : एक पृष्ठक संस्मरण भोजन-स्मृति, आत्मीयता आ दैनिक मानवीय रूपकेँ छोट प्रसंगमे पकड़ैत अछि।

कंचन कण्ठ — "आदरणीय श्री राजनंदन लाल दास" [पृ. १६२-१६५] : व्यक्तिगत श्रद्धा आ साहित्यिक योगदानक संस्मरणात्मक समुच्चय।

लक्ष्मण झा 'सागर' — "मिथिलाक मुकुटमणि रवीन्द्र"; "राजनन्दन लालदास: एक उदारचेता सम्पादक" [पृ. १६६-१७९] : दू व्यक्तित्वक माध्यमेँ मैथिली साहित्यिक समाजक सेवा-परम्परा उजागर।

रमेश लाल दास — "मामा श्री राजनन्दन लाल दास जी" [पृ. १८०-१८९] : परिवारक भीतरक मामा/अभिभावक रूप सार्वजनिक छविकेँ घरेलू स्मृतिसँ पूरक बनबैत अछि।

शारदानन्द दास परिमल — "मैथिली पत्रकारिता मे राजनन्दनक अवदान" [पृ. १९०-१९२] : पत्रकारिता-इतिहासक भीतर सम्पादकीय निरन्तरता, पत्रिका-निर्माण आ भाषिक सार्वजनिकताक योगदान।

नबो नारायण मिश्र — "युग प्रवर्त्तक राज नन्दन लाल दास" [पृ. १९३-१९८] : व्यक्तिगत उपलब्धिकेँ 'युग-प्रवर्तन'क दावामे पढ़ैत श्रद्धामूलक मूल्यांकन।

सुरेन्द्र ठाकुर — "मैथिली सेवी कलमक सिपाही: श्रीमान राजनन्दन लाल दास" [पृ. १९९-२०५] : लेखन आ सेवा—दुनूकेँ 'कलमक सिपाही' रूपकमे जोड़ैत जीवनीपरक श्रद्धांजलि।

सुधीर — "श्रीयुत् राजनन्दन लाल दास जी ओ मैथिल" [पृ. २०६] : राजनन्दनजी आ व्यापक मैथिल समाजक सम्बन्धक संक्षिप्त प्रस्तुति।

कामेश्वर झा 'कमल' — "कर्णामृत पत्रिका आ सम्पादक श्री राजनन्दन लाल दास" [पृ. २०७-२१०] : 'कर्णामृत'केँ सम्पादकक व्यक्तित्व, सम्पादकीय श्रम आ साहित्यिक नेटवर्कक केन्द्र बनबैत अछि।

प्रदीप बिहारी — "राजनन्दन लाल दास::अपने घरमे परगोत्री" [पृ. २११-२१९] : आत्मीयता आ विस्थापनक विडम्बना; निजी अनुभवसँ साहित्यिक व्यक्तित्वक अकेलापन।

अरविन्द ठाकुर — "चित्रा-विचित्रा सं प्रदर्शित होइत मैथिल प्रिमिटिविज्म" [पृ. २२०-२५०] : 'चित्रा-विचित्रा'क पाठक माध्यमेँ 'मैथिल प्रिमिटिविज्म'क अवधारणा; श्रद्धामूलक प्रवाहमे सिद्धान्तपरक आलोचनात्मक संतुलन।

विजय इस्सर 'वत्स' — "विभूति संग प्रतिभूति - स्व. राजनन्दन लाल दास जी" [पृ. २५१-२५३] : स्मरण आ मूल्यांकन; शीर्षकक शब्द-युग्म व्यक्तित्वक

सांस्कृतिक पूँजीक संकेत।

शिव शंकर श्रीनिवास — “राजनन्दन लालदासक नाटक” [पृ. २५४-२५७] : नाटककार रूपक स्वतंत्र मूल्यांकन; सम्पादक-परिचय तक सीमित नहि।

शैलेन्द्र मिश्र — “राजनन्दन लाल दास: मिथिला-मैथिलीक एकटा निष्काम योगी आ योद्धा” [पृ. २५८-२६१] : सेवा, त्याग आ संघर्षक संयुक्त प्रतिमा; ‘योगी’ आ ‘योद्धा’ द्वंद्वात्मक रूपक।

मुन्ना जी — “साहित्यिक जातिवादी सीमा तोड़लनि राजनन्दन जी”; “बीहनि कथाक विकास मे रचनाकारक योगदान” [पृ. २६२-२६९] : पहिल लेख जातीय सीमाक प्रश्न; दोसर बीहनि कथा-विधाक विकास-इतिहासक रूपरेखा।

४. आशीष अनचिन्हार : आलोचना, गजल-विवाद आ साहित्यिक संस्थान

आशीष अनचिन्हार — “जातिवादी राजनंदन लाल दास बनाम दूधसँ धोल आन लोक” [पृ. २७०-३४९] : जाति-विमर्शक भीतर साहित्यिक व्यक्तित्वक मूल्यांकन आ नैतिक आत्मछविपर polemical प्रहार।

आशीष अनचिन्हार — “गजलक रखबार सूतल अछि” [पृ. २७०-३४९] : मैथिली गजलमे छन्द, बहर, अनुशासन आ आलोचकक भूमिकापर तीक्ष्ण प्रश्न।

आशीष अनचिन्हार — “भूमिका एक: फाँक अनेक” [पृ. २७०-३४९] : विभिन्न गजलकारक पाँति आ मात्राक्रमक उदाहरणसँ भूमिका आ छन्द-दावाक परीक्षण।

आशीष अनचिन्हार — “हे शिव ‘एकरा गजल कहितहुँ’ होइछ लाज” [पृ. २७०-३४९] : गजल कहबाक औपचारिक शर्त आ वास्तविक पाठक अन्तरकेँ उदाहरणसँ जाँचैत आक्रामक आलोचना।

आशीष अनचिन्हार — “अनुशासन+विद्रोह=परिवर्त्तन: अनुशासनहीनता+विद्रोह=अराजकता” [पृ. २७०-३४९] : परम्परा-विरोध आ शिल्प-अनुशासनक सम्बन्धपर सिद्धान्तपरक तर्क।

आशीष अनचिन्हार — “साहित्य केंद्रित जोगीरा” [पृ. २७०-३४९] : जोगीरा लोक-रूपकेँ साहित्यिक संस्थान, पुरस्कार, मंच, आलोचक आ गुटबाजीक व्यंग्य लेल प्रयुक्त करैत अछि।

आशीष अनचिन्हार — “राम लोचन ठाकुरजीक गद्य रचना” [पृ. २७०-३४९] : रामलोचन ठाकुरक अनूदित नाटक, गद्यक पहचान आ साहित्यिक अवदानक सूची/मूल्यांकन।

आशीष अनचिन्हार — “रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीक ‘कथित गजल’” [पृ. २७०-३४९] : गीत/गजल-वर्गीकरणकेँ मात्रिक परीक्षणसँ जाँचैत; श्रेष्ठ गीतक स्वीकार आ गजल-नामकरणपर आपत्ति अलग राखैत अछि।

५. रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेष खण्ड

सम्पादकीय — “रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांकक संदर्भमे” [पृ. ३५०-३५३] : रवीन्द्रजीक मूल्यांकनमे दू अतिवाद—अत्यधिक महिमामण्डन आ केवल मंचीय कहि खारिज करब—दूनूक बीच वास्तविक पाठ-विमर्शक आवश्यकता रेखांकित।

सम्पादकीय/परिचय — “श्री रवीन्द्र नाथ ठाकुर” [पृ. ३५४-३६३] : जीवन, रचना, मंच, गीत आ सार्वजनिक भूमिकाक परिचयात्मक सामग्री।

प्रदीप पुष्प — “गीतक अप्रतिम शिल्पकार: रवीन्द्र नाथ ठाकुर” [पृ. ३६४-३६७] : लोकप्रियता, मंचीय सम्प्रेषण, गीतक छन्द-संगीत आ लोकानुभवक संयोजनपर प्रशंसात्मक मूल्यांकन।

नारायणजी — “आधुनिक मैथिली गीतक सजग उन्नायक” [पृ. ३६८-३७२] : लोकगीत-विद्यापति-आधुनिक गीतक पृष्ठभूमिमे रवीन्द्रजीक भूमिका; नवता, जनजीवन, दुःख आ लोकप्रियताक सम्बन्ध।

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र — “रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस केर उदासीनता” [पृ. ३७३-३८०] : रचना आ जनस्वीकृतिक विरोधाभासक प्रश्न; साहित्यिक मूल्य आ सामाजिक उदासीनता एकसंग।

६. पद्य-खण्ड : निजी संवेदना सँ सामाजिक प्रतिरोध धरि

प्रदीप पुष्प — २ टा रुबाइ आ २ टा गजल [पृ. ३८२-३८४] : लघु काव्यरूपक कसावट, लय आ अन्तिम पाँतिक प्रभाव; रूप-विविधताक उदाहरण।

दिनकर कुमार — ३० टा कविता [पृ. ३८५-४२२] : तीस क्रमांकित/शीर्षकविहीन कवितामे प्रवासी मजदूर, सोमालियाक बालक, वायलिन, स्वप्न, करुणा, घृणा, यात्रा, लोकगायक, बरखा, युद्ध, स्मृति आ मानवीय संकट बारंबार अबैत अछि। पत्रकारितासँ अर्जित सामाजिक दृष्टि काव्यात्मक बिम्बमे बदलैत अछि।

कुमुद 'अनुन्जया' — "सुक्खा सिम्मड़ कत्तै जोगलो जाय" [पृ. ४२३-४२५] : सुक्खा सिम्मड़क लोक-बिम्ब विस्थापन, असुरक्षा आ ठाम-खोजक प्रतीक; स्थानीय शब्दावली कविताकेँ भूमि-सापेक्ष करैत अछि।

आशीष अनचिन्हार — "भक्ति गजल"; किछु गजल [पृ. ४२६-४३७] : भक्ति, सामाजिक अनुभव आ गजल-अनुशासनक संगम; आलोचनामे जे छन्द-सजगता माँगल गेल अछि, पद्यमे ओकर प्रयोगक दावा उपस्थित।

राज किशोर मिश्र — "आमक गाछी" [पृ. ४३८-४६४] : गाम, प्रकृति आ सामुदायिक स्मृतिक भावात्मक भूगोल।

राज किशोर मिश्र — "सुख" [पृ. ४३८-४६४] : सुखक परिभाषाकेँ बाहरी सम्पन्नतासँ हटाय अनुभव आ सम्बन्धक भीतर खोजैत अछि।

राज किशोर मिश्र — "नव-संस्कृति ओ गाम" [पृ. ४३८-४६४] : ग्राम्य जीवनपर नव संस्कृतिक प्रभाव आ मूल्य-संघर्ष।

राज किशोर मिश्र — "इजोरिआ" [पृ. ४३८-४६४] : इजोत/चाँदनीक बिम्ब भाव-स्मृति, शान्ति आ आशाक वाहक।

संतोष कुमार राय 'बटोही' — "मनुख बनवा मे पै लगैत छै" [पृ. ४६५-४७८] : मनुष्य बनबाक नैतिक कठिनाईपर लोकभाषिक प्रश्न।

संतोष कुमार राय 'बटोही' — "घरवाली" [पृ. ४६५-४७८] : दाम्पत्य आ घरेलू जीवनक हास्य-यथार्थ।

संतोष कुमार राय 'बटोही' — "माए" [पृ. ४६५-४७८] : मातृत्वक स्नेह, स्मृति आ त्याग।

संतोष कुमार राय 'बटोही' — "पिता" [पृ. ४६५-४७८] : पितृ-भूमिका, अनुशासन आ आश्रय।

संतोष कुमार राय 'बटोही' — "भैय्यारी" [पृ. ४६५-४७८] : भाइचारा, स्वार्थ आ सामाजिक सम्बन्धक द्वन्द्व।

संतोष कुमार राय 'बटोही' — "झालदार चुनाव" [पृ. ४६५-४७८] : चुनावी राजनीति पर हास्य-व्यंग्य।

संतोष कुमार राय 'बटोही' — "राजगद्दी पर उल्लू" [पृ. ४६५-४७८] : सत्ता आ अयोग्य नेतृत्वक रूपकात्मक व्यंग्य।

संतोष कुमार राय 'बटोही' — "पहिल परेम" [पृ. ४६५-४७८] : यौवन-स्मृति आ पहिल प्रेमक पुनर्स्मरण।

संतोष कुमार राय 'बटोही' — "के बनतै सारथी अइ जन-मन-गण के?" [पृ. ४६५-४७८] : लोकतांत्रिक नेतृत्व, जनविश्वास आ दिशाहीनताक प्रश्न।

डा. किशन कारीगर — "हौ तोरे त गौंआ छियअह" [पृ. ४७९-४९९] : गामक प्रति आत्मीय संबोधन; अपनत्व आ आलोचना दुनू।

डा. किशन कारीगर — "प्रकृति के बसाबह" [पृ. ४७९-४९९] : पर्यावरणीय चेतना आ प्रकृति-संरक्षणक आग्रह।

डा. किशन कारीगर — "हो हो त हो हो" [पृ. ४७९-४९९] : साहित्यिक/पुरस्कार समाजक विडम्बनापर हास्य।

डा. किशन कारीगर — "कतअ हेरा गेलै मनुक्खक जिनगी" [पृ. ४७९-४९९] : रूपैया-केन्द्रित जीवनमे मनुष्यता हेरायबाक प्रश्न।

डा. किशन कारीगर — "मिथिला मैथिली के ठीकेदारी?" [पृ. ४७९-४९९] : भाषा-संस्कृतिक स्वयंभू ठेकेदारपर व्यंग्य।

डा. किशन कारीगर — "किछो ने करू" [पृ. ४७९-४९९] : निष्क्रियता, जुगाड़ आ संस्थागत दिखावा।

डा. किशन कारीगर — "जेकरा देखू सैह नेता?" [पृ. ४७९-४९९] : नेतृत्वक अतिविस्तार आ राजनीति-व्यंग्य।

डा. किशन कारीगर — "के दर्शक आ के सब कवि?" [पृ. ४७९-४९९] : कवि-सम्मेलन, मंच आ दर्शकक सम्बन्धपर आत्मव्यंग्य।

डा. किशन कारीगर — "बहिन के अंगना भरदुतिया नत पूरब" [पृ. ४७९-४९९] : भ्रातृद्वितीया, बहिनक अंगना आ पारिवारिक संस्कारक भावगीत।

डा. किशन कारीगर — "आबू यौ देखू मिथिला के गाम" [पृ. ४७९-४९९] : खेती, कटनी, लोकजीवन आ ग्राम्य दृश्यक आमंत्रणात्मक कविता।

डा. किशन कारीगर — "आ रे सुग्गा आ आ" [पृ. ४७९-४९९] : बाल-कविता; पक्षी-पुकारसँ खेल, ध्वनि आ बाल-लय।

कल्पना झा — "पान" [पृ. ५००-५०९] : मिथिलाक सांस्कृतिक प्रतीक पानक माध्यमेँ स्वाद, आतिथ्य आ स्मृति।

कल्पना झा — "इजोत" [पृ. ५००-५०९] : प्रकाशक बिम्बसँ आशा आ आत्मबोध।

कल्पना झा — "कोइली रे" [पृ. ५००-५०९] : पक्षी-संबोधनक गीतात्मक परम्परा आ विरह/स्मृति।

कल्पना झा — "दीप" [पृ. ५००-५०९] : दीपकक रूपकसँ अँधार-विरोधी आशा।

कल्पना झा — "नहि रहल लचारी" [पृ. ५००-५०९] : विवशतासँ मुक्ति वा प्रतिरोधक स्वर।

मुन्ना जी — "दलाल"; किछु ताँका (TANKA) [पृ. ५१०-५१३] : 'दलाल' अवसरवादपर व्यंग्य; ताँका प्रयोग जापानी लघु-काव्यरूपक संग मैथिली

प्रयोगधर्मिता।

आशीष नीरज — "राजनंदन लाल दास" [पृ. ५१४-५१५] : व्यक्तित्व-स्मृति काव्यरूपमे; गद्य-स्मरणकेँ पद्यात्मक श्रद्धांजलिसँ पूरक।

सारस्वत — "कविता सारस्वतक" (भाग १ आ २: २५ टा); "निमोछिया अबीर" [पृ. ५१६-५२६] : ग्राम्य सामुदायिकता, हास्य, व्यक्तिस्मृति आ पिरोजगढ़क स्थानीय जीवनक जीवित अभिलेख; गामक प्रति गाढ़ अपनत्व समूहक केन्द्र।

भाग दू : 'विदेह' अंक २५ (१ जनवरी २००९) केर सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा

अंकक अनुक्रम एक बहु-विधा पत्रिकाक संरचना स्पष्ट करैत अछि—सम्पादकीय, संदेश, कथा, उपन्यास, विचार, आलेख-रिपोताज, प्रतियोगी परीक्षा, मिथिला मंथन, भानस-भात, पद्य, कला-संगीत, भारतीय भाषासँ अनुवाद, बाल-साहित्य, कृषि-मात्स्य शब्दावली, मिथिलाक्षर शिलालेख, मानक लेखन आ प्रवासी मैथिल खण्ड। साहित्य आ दस्तावेज, लोक आ आधुनिकता, मूल रचना आ अनुवाद एक सम्पादकीय छाताक नीचाँ अछि।

७. सम्पादकीय आ संदेश : ई-पत्रिका रूपक आत्मचेतना

गजेन्द्र ठाकुर — सम्पादकीय [पृ. ४-७] : नव अंकक प्रकाशन, प्रतियोगी-परीक्षा आलेख, प्रमिला झा नाट्यवृत्ति, महिला रंगकर्मी सभक परिचय आ पाठक आँकड़ा एकसंग; सम्पादनकेँ रंगमंच, संस्था, पाठक-समुदाय आ डिजिटल प्रसारसँ जोड़ैत दृष्टि।

प्रो. उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' — 'विदेह' सम्बन्धी संदेश [पृ. ७-८] : ई-पत्रिकाक आरम्भिक स्वीकृति, सूचना-क्रान्तिमे मैथिली पत्रकारिताक प्रवेश, सम्पादकीय श्रम आ डिजिटल प्रकाशनक सांस्कृतिक महत्त्वक समकालीन साक्ष्य।

डॉ. गंगेश गुंजन — 'विदेह' सम्बन्धी संदेश [पृ. ७-८] : ई-पत्रिकाक आरम्भिक स्वीकृति, सूचना-क्रान्तिमे मैथिली पत्रकारिताक प्रवेश, सम्पादकीय श्रम आ डिजिटल प्रकाशनक सांस्कृतिक महत्त्वक समकालीन साक्ष्य।

रामाश्रय झा 'रामरंग' — 'विदेह' सम्बन्धी संदेश [पृ. ७-८] : ई-पत्रिकाक आरम्भिक स्वीकृति, सूचना-क्रान्तिमे मैथिली पत्रकारिताक प्रवेश, सम्पादकीय श्रम आ डिजिटल प्रकाशनक सांस्कृतिक महत्त्वक समकालीन साक्ष्य।

ब्रजेन्द्र त्रिपाठी — 'विदेह' सम्बन्धी संदेश [पृ. ७-८] : ई-पत्रिकाक आरम्भिक स्वीकृति, सूचना-क्रान्तिमे मैथिली पत्रकारिताक प्रवेश, सम्पादकीय श्रम आ डिजिटल प्रकाशनक सांस्कृतिक महत्त्वक समकालीन साक्ष्य।

प्रफुल्लकुमार सिंह 'मौन' — 'विदेह' सम्बन्धी संदेश [पृ. ७-८] : ई-पत्रिकाक आरम्भिक स्वीकृति, सूचना-क्रान्तिमे मैथिली पत्रकारिताक प्रवेश, सम्पादकीय श्रम आ डिजिटल प्रकाशनक सांस्कृतिक महत्त्वक समकालीन साक्ष्य।

डॉ. शिवप्रसाद यादव — 'विदेह' सम्बन्धी संदेश [पृ. ७-८] : ई-पत्रिकाक आरम्भिक स्वीकृति, सूचना-क्रान्तिमे मैथिली पत्रकारिताक प्रवेश, सम्पादकीय श्रम आ डिजिटल प्रकाशनक सांस्कृतिक महत्त्वक समकालीन साक्ष्य।

आद्याचरण झा — 'विदेह' सम्बन्धी संदेश [पृ. ७-८] : ई-पत्रिकाक आरम्भिक स्वीकृति, सूचना-क्रान्तिमे मैथिली पत्रकारिताक प्रवेश, सम्पादकीय श्रम आ डिजिटल प्रकाशनक सांस्कृतिक महत्त्वक समकालीन साक्ष्य।

८. कथा : प्रेम, देह, परिवार आ सामाजिक नैतिकता

सुभाषचन्द्र यादव — "एकटा प्रेम कथा" [पृ. ९-१३] : फोन, मोबाइल, पीढ़ी-अन्तर आ एक वृद्ध कथकक जिज्ञासा—आधुनिक संचारक बीच निजता, प्रेम आ 'दूर सँ देखैत' वयस्क दृष्टिक मनोविज्ञान। रितु-प्रेमी प्रसंगमे उत्सुकता आ आत्मसंयमक टकराव कथा-लय बनौने रखैत अछि।

राजेन्द्र विमल — "तृष्णा" [पृ. १४-१८] : राजदेव, सिकिलिया, देबलरैना आ सोनावतीक वैवाहिक-असन्तोषक माध्यमेँ इच्छा, तुलना, दाम्पत्य, देह आ 'जे भेटैत छै तकर मोल नै बुझाइ छै' मनोविज्ञानक व्यंग्यात्मक-सामाजिक कथा। लोकभाषा, सलहेसक नाच आ संवाद कथा जीवित करैत अछि।

अमित कुमार झा — "बुढ़ी माता" [पृ. १८-२१] : शहरी छात्रजीवन, अज्ञात वृद्धाक सेवा, भविष्य-सम्बन्धी सलाह आ करियर-परिवर्तनक आत्मकथात्मक कथा। यथार्थ आ आस्था/रहस्य समानान्तर चलैत अछि।

९. उपन्यास : केदारनाथ चौधरीक "माहुर"

केदारनाथ चौधरी — "माहुर" (धारावाहिक अंश) [पृ. २२-२७] : रंजनाक अल्पायु विधवापन, बलि-प्रथा, पितृसत्तात्मक दृष्टि, कामिनी-यदुनाथ-विदेसरा प्रसंग आ धार्मिक-सामाजिक पाखण्डक समानान्तर कथा-रेखा। कथावाचक पाठकसँ सीधा संवाद करैत छथि। विधवाकेँ बलिपाठीसँ तुलना समाजक वस्तुकरणकारी दृष्टिपर असुविधाजनक किन्तु प्रभावी प्रहार।

१०. विचार आ लघु गद्य

श्यामसुन्दर शशि — “विचार — मिथिलाक तवाही, सरकारी षडयन्त्र त ने अछि?” [पृ. २७-२९] : नेपालक मधेस/मिथिला क्षेत्रक हिंसा, सशस्त्र समूह, राज्य, संसद आ राजनीतिक अनिश्चितताक तत्कालीन विश्लेषण; प्रश्नवाचक शैली सत्ता आ सशस्त्र राजनीति दुनूपर संशय प्रकट करैत अछि।

श्यामसुन्दर शशि — “सन्दर्भ: राम-जानकी विवाह महोत्सव — दुलहा बनल श्रीराम” [पृ. २९-३०] : जनकपुरक विवाह-महोत्सव, गारी-गीत, धनुष-यज्ञ, तिलक, मटकोर, सेनुरदान आ रामकलेवा आदि मार्फत जीवित लोक-धार्मिक परम्पराक रिपोताजात्मक चित्र।

अंकुर काशीनाथ झा — “नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि” [पृ. ३१-] : नेता आ जनविश्वासक दूरी, सार्वजनिक छवि आ नैतिक उत्तरदायित्वक प्रश्नपर विचारात्मक लेख।

अयोध्यानाथ चौधरी — “दू पत्र” [पृ. ३२-५२] : पत्र-विधाक आत्मीयता, समय-अन्तराल, मित्रता आ स्मृतिक पुनर्सम्पर्क; निजी पत्र साहित्यिक संस्मरणक रूप ग्रहण करैत अछि।

बृषेश चन्द्र लाल — “एकदन्त हाथी आ नौलखा हार” [पृ. ३२-५२] : लोक-कथात्मक/व्यंग्यात्मक शीर्षकक भीतर सामाजिक बोध आ कथात्मक विनोद।

कुमार मनोज कश्यप — “नव वर्ष” [पृ. ३२-५२] : नववर्षक अवसरकेँ आत्मचिन्तन आ सामाजिक अनुभवक लघु गद्य रूप।

अनलकान्त — “एत’ आ ओत’” [पृ. ३२-५२] : स्थान-बोधक द्वैधसँ सामाजिक तुलना, दूरी आ दृष्टिक व्यंग्यात्मक खेल।

प्रेमचन्द्र मिश्र — “अनाम कथा” [पृ. ३२-५२] : विवाह, आशा, व्यक्तिगत आकांक्षा आ सामाजिक प्रावधानक कारण मानसिक पीड़ा; अन्त मैथिल नवयुवक-युवतीक करुण जीवनक सामाजिक कारण दिस संकेत करैत अछि।

११. आलेख-रिपोताज : पंजी सँ सांस्कृतिक आन्दोलन धरि

डॉ. बलभद्र मिश्र — “लब्ध धौत प्रतिष्ठ पंजीकार — स्व. पं. मोदानन्द झाजी: एक संस्मरण” [पृ. ५२-५३] : मोदानन्द झाक विद्वत्ता, पंजी-ज्ञान, सौराठ सभा, सदाचार आ पूबारि-पछबारि पारक समन्वयक स्मरण; व्यक्ति-संस्मरण पंजी-परम्पराक सांस्कृतिक इतिहास बनैत अछि।

नरेश मोहन झा — “विद्वद्वरेण्य पंजीकार मोदानन्द झा” [पृ. ५४-५५] : बाल्यस्मृति, पिता द्वारा आदर, पंजीकारक यात्रा, वंश-संरक्षण आ धार्मिक-सामाजिक कर्तव्यक अनुभवपर आधारित आत्मीय संस्मरण।

नागेन्द्र झा — पंजी-प्रबन्ध विषयक आलेख (मूल अनुक्रममे पृथक शीर्षक नहि) [पृ. ५५-५८] : ‘पंजी’ शब्दक अर्थ, विवाह-अधिकार, हरिसिंहदेव-काल सम्बन्धी परम्परागत कथा, धर्मशास्त्रीय आधार आ अभिलेखक सामाजिक उपयोगक विस्तृत विवेचन। ऐतिहासिक दावासभकेँ स्रोतक कथन रूपेँ ग्रहण कएल गेल अछि।

डॉ. रत्नेश्वर मिश्र — “मिथिला विभूति पं. मोदानन्द झा” [पृ. ५८-६१] : शिक्षा, धौत परीक्षा, शोध-दृष्टि, पंजी-पाण्डुलिपि संरक्षण आ सामाजिक सुधार-विचारक विस्तृत जीवनीपरक आलेख। अप्रयुक्त पंजी-पोथी संरक्षणक आग्रह विशेष महत्त्वपूर्ण।

ज्योति झा चौधरी — “एम.पी. टूर” [पृ. ६१-६२] : विद्यालयी भ्रमण-वृत्तान्त; यात्रा, सहपाठी, अनुशासन आ किशोर अनुभवक सरल प्रत्यक्ष वर्णन।

जितेन्द्र झा (जनकपुर) — दिल्ली धरना आ सांस्कृतिक-विरासत सम्बन्धी रिपोताज [पृ. ६३-६९] : मिथिला-मैथिली सम्बन्धी संगठनात्मक मांग, गोष्ठी, भाषा-संस्कृति संरक्षण आ वक्तासभक मतकेँ समाचार-रिपोताज शैलीमे दर्ज करैत अछि।

उमेश कुमार — “बहादुरगंज स’ रिपोर्ट” [पृ. ६९-७०] : बाढ़ि, स्कूल, स्वास्थ्य, खेती, भारत-नेपाल सीमाक्षेत्र, जाति आ भाषा-स्थिति—ग्रामीण प्रत्यक्ष अनुभवक असम्पादित ऊर्जा एहि रिपोर्टक मूल्य।

नवेन्दु कुमार झा — “अस्तित्वक लेल संघर्ष करैत पटनाक विद्यापति स्मृति पर्व” [पृ. ७०-७२] : सांस्कृतिक आयोजनक घटैत आकार, संस्थागत जड़ता, दर्शक-भागीदारी आ बाढ़िक बहानाक आलोचना; सांस्कृतिक संस्थाक जवाबदेहीपर तीक्ष्ण लेख।

मुखीलाल चौधरी — ‘भोर’ गीति-एल्बम सम्बन्धी पत्र/समीक्षा [पृ. ७२-७६] : रूपा झा, पूनम ठाकुर, साहिल अनवर, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, नरेन्द्रकुमार मिश्र, राजेन्द्र विमल, चन्द्रशेखर ‘शेखर’ आ अपन गीतपर टिप्पणी; शिक्षा, बेटी, सद्भाव, सकारात्मकता आ प्रेम सामाजिक संदेशक केन्द्र।

१२. अन्य गद्य स्तम्भ

डॉ. शम्भु कुमार सिंह — “प्रतियोगी परीक्षा” शृंखला : साहित्यिक पत्रिकाक ज्ञान-विस्तारक भूमिका; पाठककेँ रचनात्मक साहित्यक बाहर उपयोगी अध्ययन-सामग्री देबाक प्रयोग।

सुशान्त झा — "मिथिला मंथन" : समकालीन मिथिला-समाजक प्रश्नकेँ विचार-मंथनक स्तम्भरूप देनाइ; सतत सार्वजनिक बहसक स्थान।

नीलिमा — "भानस भात" : भोजन, गृह-संस्कृति आ लोकजीवनक अनुभवकेँ स्वतंत्र सांस्कृतिक स्तम्भ।

१३. पद्य : २००९ अंकक बहुवर्णी काव्य-दृश्य

आशीष अनचिन्हार — "मनुख"; "गजल" [पृ. १०६-१०७] : 'मनुख' उपभोक्तावादी जीवनमे रेडीमेड खुशी आ मनुष्यक वस्तुकरणपर प्रश्न करैत अछि। गजल राजनीतिक अँधेर आ नागरिक विडम्बनाकेँ शेरमे बाँधैत अछि।

मधुप — "कवितामय चिट्ठी" [पृ. १०७-१०८] : पत्र आ कविता-विधाक संगम; पारिवारिक समाचार, स्वास्थ्य, काशी-प्रवास आ आत्मीय संबोधन छन्दबद्ध पत्राचार बनैत अछि।

महेश मिश्र "विभूति" — "सन्तोष"; "उद्बोधन : ढाढ़स" सहित पद्य-समूह [पृ. १०८-१२१] : नीतिकाव्य, आत्मबल, संतोष, कर्म, ईश्वर-विश्वास आ धैर्य; परम्परागत लय आ उपदेशात्मकता प्रमुख।

ज्योति — "बाबा अमरनाथ" [पृ. १२१-१२२] : हिमानी शिवलिंग, तीर्थ, आस्था आ धार्मिक स्थलकेँ दृश्यात्मक कविता बनबैत अछि।

सन्तोष मिश्र — "एना किएक?" [पृ. १२२-१२५] : स्त्री-पुरुष निकटता, झगड़ा, सेवा, मौन आ आँखिक प्रेम-भाषाकेँ प्रश्नक पुनरावृत्तिसँ जोड़ैत अछि।

नवीननाथ झा — "नारीये सतयुग आनत यौ" [पृ. १२५-१३३] : नारीकेँ सृजन, श्रद्धा, प्रज्ञा आ युग-परिवर्तनक वाहक मानैत आदर्शवादी स्त्री-स्तुति।

नवीननाथ झा — "युगनिर्माणी संकल्प" [पृ. १२५-१३३] : मीडिया, अश्लीलता, अपराध, बाज़ार आ नैतिक पतनक विरुद्ध सुधारवादी घोषणात्मक कविता।

नवीननाथ झा — "जीव की छी? अहम प्रश्न" [पृ. १२५-१३३] : जीवनकेँ जोखिम, समर, गीत, अवसर आ रहस्यक बहु-रूपकसँ दार्शनिक व्याख्या।

नवीननाथ झा — "गायत्री महामंत्र" [पृ. १२५-१३३] : मंत्रक धार्मिक-दर्शनात्मक अर्थक पद्यात्मक व्याख्या।

नवीननाथ झा — "प्रेम आनन्दक अभिव्यक्ति छी" [पृ. १२५-१३३] : प्रेमकेँ धर्म, विज्ञान, मनोविज्ञान, समाज आ ब्रह्माण्डक आकर्षण तक विस्तृत करैत कविता।

विनीत उत्पल — "बच्चा नीक छै" सहित कविता [पृ. १३४-] : 'नीक बच्चा'क सामाजिक परिभाषा, अनुशासन आ आधुनिक जीवनक अपेक्षापर व्यंग्यात्मक प्रश्न।

पंकज पराशर — "पुरइन" [पृ. १४२-१४६] : शरीरसँ क्रमशः छुटैत वस्तु आ स्मृतिक माध्यमेँ अस्थायित्व आ अपेक्षा-त्यागक दार्शनिक बिम्ब।

पंकज पराशर — "लाहौर" [पृ. १४२-१४६] : विभाजन, सीमा, पासपोर्ट-वीजा, इतिहास, बुल्लेशाह आ 'टोबा टेक सिंह'क स्मृतिसँ शहरक ऐतिहासिक घाव।

पंकज पराशर — "बसरा" [पृ. १४२-१४६] : बगदाद-काबुल-कंधार-फिलिस्तीनक हिंसा, बाल-अस्थि आ अश्वत्थामा मिथकक माध्यमेँ युद्ध-विरोधी काव्य।

बिनीत ठाकुर — "बाँहिके गोदना"; "भरल नोर मे" [पृ. १४६-१४८] : पहिल कविता विस्फोटमे मारल बुधनाक देह आ गोदनाक स्मृतिसँ हिंसाक त्रासदी; दोसर मिथिलाक अधिकार आ सामूहिक जागरणक आह्वान।

निमिष झा — "चिरीचिरी भेल मोन" [पृ. १४८-१५०] : प्रेम, अपेक्षा, विवाहोत्तर घरेलू बन्धन आ टूटल स्वप्नक करुण कविता; स्त्रीक जीवन-लक्ष्य आ पितृसत्तात्मक चौहद्दीपर प्रश्न।

अमरेन्द्र यादव — "टमटमियाँ घोड़ा" [पृ. १५०-] : इराक, माओवादी, गणतन्त्र आदि बड़ राजनीतिक विषयसँ 'हमरा कोन काज' कहैत स्थानीय जीवनक प्राथमिकता दिस घुमैत व्यंग्यात्मक कविता।

१४. मिथिला कला-संगीत

छवि झा / कुमुद सिंह — मिथिला कला-संगीत सम्बन्धी सामग्री [पृ. १५२-१५६] : मिथिला चित्रकला, सांस्कृतिक प्रतिमान आ आधुनिक व्याख्याक प्रश्न; बाहरी व्याख्या आ स्थानीय सांस्कृतिक अर्थक सम्बन्धपर विचार।

१५. गद्य-पद्य भारती : भारतीय भाषासँ मैथिली

वेमपल्ली शरीफ; तेलुगुसँ अंग्रेजी: जयलक्ष्मी पोपुरी; अंग्रेजीसँ मैथिली: गजेन्द्र ठाकुर — "जुम्मा" [पृ. १५६-१६४] : मक्का मस्जिद विस्फोटक भय, अम्मीक चिन्ता, धार्मिक पहचान आ घरेलू डर; साम्प्रदायिक हिंसाक वातावरणकेँ घरक भीतरक मनोविज्ञानमे रूपान्तरित करैत कथा।

अजय सरवैया — "अहाँक तामस हमर स्वागतपथ" [पृ. १६४-१७६] : प्रेम, दूरी, नियम, इच्छा, स्वप्न आ भिन्नताक द्वन्द्व।

राजेन्द्र पटेल — क्रमांकित/शीर्षकविहीन कविता [पृ. १६४-१७६] : 'हाथ'क बहुविध बिम्ब—श्रम, जड़, खेत, भाग्यरेखा, आकाश—द्वारा देह आ पृथ्वीक सम्बन्ध।

पीयूष ठक्कर — "सांध्य बेला" [पृ. १६४-१७६] : पर्वत, छाया, आकाश, शरीर आ दु:खक संध्या-बिम्ब।

पन्ना त्रिवेदी — "आमद" [पृ. १६४-१७६] : 'हे विदेशी!' संबोधन, प्रकाश, मौन, व्यथित हृदय आ सांसक मालगुजारी—आगमन/परायेपनक अस्तित्ववादी कविता।

बाबू सुथार — "गृहमोह" [पृ. १६४-१७६] : पहिल बुन्नीक गंध, माटि, छप्पर, बरद, देबाल आ स्मृतिक बिम्बसँ घरक मोहक संवेदी पुनर्रचना।

गुजराती कवितासभक गुजरातीसँ अंग्रेजी अनुवाद हेमांग देसाई आ अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद गजेन्द्र ठाकुर द्वारा देल गेल अछि।

१६. बालानां कृते

उमेश कुमार — राजा आ राजकुमारक उपदेश-कथा [पृ. १७७-] : राजाक चारि सांकेतिक उपदेशकेँ राजकुमार द्वारा शब्दश: बुझबाक कारण भूल आ अन्तत: अर्थ-बोध—भाषिक अर्थ, अनुभव आ व्यावहारिक बुद्धिक महत्त्व सिखबैत कथा।

ज्योति झा चौधरी — बाल/किशोर सामग्री : बाल-पाठक लेल अनुभव, यात्रा आ सरल कथनक विस्तार; अंकक बालसाहित्यिक क्षेत्रकेँ व्यापक बनबैत उपस्थिति।

१७. भाषा, शब्दावली, मिथिलाक्षर आ मानक लेखन

गजेन्द्र ठाकुर — "कृषि-मात्स्य शब्दावली" [पृ. १८४-१९०] : माछ मारबाक जाल-औजार, माछक स्थानीय नाम, हल-जोत, बीया, खाद, तरकारी आदिक विस्तृत शब्द-संग्रह। लोक-ज्ञानक लेक्सिकोग्राफिक अभिलेख; भाषा आ जीवन-पद्धतिक सम्बन्धक दुर्लभ दस्तावेज।

संकलित/रूपान्तरित सामग्री — "बसैटी (अररिया) बिहार, शिव मन्दिरक मिथिलाक्षर शिलालेखक देवनागरी रूपान्तरण" [पृ. १९०-१९१] : मिथिलाक्षर शिलालेखकेँ देवनागरीमे उपलब्ध करेनाइ लिपि-इतिहास, स्थानीय स्मृति आ अभिलेख-संरक्षणक काज।

नेपालक मैथिली भाषा-वैज्ञानिक परम्परा / मैथिली अकादमी, पटना सम्बन्धी संकलित सामग्री — "मानक मैथिली लेखन" [पृ. १९२-२०१] : पञ्चमाक्षर-अनुस्वार, ड/ड़, ढ/ढ़, व/ब, य/ज, ए/य, ध्वनि-लोप, ध्वनि-स्थानान्तरण, हलन्त, विभक्ति, चन्द्रबिन्दु, वर्तनी-विकल्प आदि प्रश्नपर तुलनात्मक मानक-विमर्श।

१८. प्रवासी मैथिल खण्ड

ज्योति झा चौधरी (अंग्रेजी अनुवाद) / गजेन्द्र ठाकुर (मूल) — "The Comet" — 'सहस्रबाढ़नि'क अंग्रेजी अनुवाद [पृ. २०२-२१४] : अंग्रेजी खण्ड मैथिली उपन्यासकेँ प्रवासी/अमैथिली पाठक धरि लऽ जेबाक प्रयत्न। उपलब्ध अंश परिवार, शिक्षा, गंगा पुल परियोजना, भ्रष्टाचार, नन्दक मानसिक संकट, आस्था, ज्योतिष आ तंत्र-मंत्रक कथा आगाँ बढ़बैत अछि।

सम्पादकीय सूचना — प्रकाशन, शब्दकोश, पंजी-प्रबन्ध आ 'कुरुक्षेत्रम्' सम्बन्धी सूचना [पृ. २१४-२२०] : रचनाक पुस्तक-रूप, शब्दकोश परियोजना आ आर्काइवकेँ छापामाध्यममे आनबाक योजना अंकक दीर्घकालीन सम्पादकीय दृष्टि देखबैत अछि।

भाग तीन : तुलनात्मक साहित्यिक प्रतिपादन

१९. २००९ सँ २०२२ : विधा आ विमर्शक विस्तार

२००९क अंकमे 'विदेह'क चरित्र बहु-विषयी ई-पत्रिकाक जकाँ अछि—एके अंकमे साहित्य, रिपोर्ट, कला, भाषा-मानकीकरण, शब्दावली, बालसाहित्य आ अनुवाद समेटबाक उत्साह। २०२२क 'विदेह-सदेह २५' मे ई ऊर्जा अधिक विशिष्ट साहित्यिक बहसक रूप लैत अछि: बीहनि कथाक विधाशास्त्र, गजल-छन्दक विवाद, सम्पादक/पत्रकारक साहित्यिक इतिहास, रवीन्द्र नाथ ठाकुरक पुनर्मूल्यांकन, कविता आ ताँका सन रूप-प्रयोग।

२०. प्रमुख आलोचनात्मक धुरी

भाषा आ मानक : २००९मे वर्तनी, शब्दावली, मिथिलाक्षर; २०२२मे भाषा-शुद्धता, संस्थागत अधिकार, मैथिली पढ़ाइ आ साहित्यिक भाषा-विवाद। भाषा केवल माध्यम नहि, स्वयं विषय।

स्त्री-अनुभव : 'माहुर'क रंजना-कामिनी, 'तृष्णा'क सिकिलिया-सोनावती, बीहनि कथाक 'गर्ल्स हॉस्टल', 'लाज', 'स्वाभिमान', 'नौत', 'खौंझी' आदि—

देह, विवाह, श्रम, स्वायत्तता आ नैतिकता लगातार प्रश्न।

प्रवास आ मातृभूमि : ‘मातृभूमि’क समीक्षा, सीमाक्षेत्रीय रिपोर्ट, दिनकरक प्रवासी मजदूर, ‘लाहौर’-‘बसरा’, आ प्रवासी मैथिल खण्ड—प्रवास सांस्कृतिक उत्तरदायित्वक प्रश्न।

लोक-संस्कृति : भांट/भैंट, ढोल-पिपही, सलहेस नाच, भरदुतिया, चित्रकला, विद्यापति पर्व, भानस-भात, कृषि-मात्स्य शब्दावली—लोकजीवन रचना आ दस्तावेज दुनू रूपमे।

संस्था आ पुरस्कार : वीरेन्द्र मल्लिकक साक्षात्कार, किशन कारीगरक व्यंग्य, आशीष अनचिन्हारक जोगीरा, विद्यापति पर्वक रिपोर्ट—साहित्यिक संस्था स्वयं आलोचनाक विषय।

सम्पादकक भूमिका : राजनन्दन लाल दास विशेषांक आ ‘कर्णामृत’ सम्बन्धी लेख सम्पादककेँ साहित्यिक सार्वजनिकता, पीढ़ी-संवाद आ अभिलेखक निर्माता रूपमे देखबैत अछि।

रूप-अनुशासन आ प्रयोग : बीहनि कथाक आकार, गजलक मात्राक्रम, रुबाइ, ताँका, मुक्तछन्द, कवितामय पत्र—कठोर नियम आ प्रयोगक स्वतंत्रताक सतत संवाद।

डिजिटलता आ अभिलेख : २००९क ई-पत्रिका आत्मचेतना आ २०२२क पुरान/हस्तलिखित सामग्रीक संकलन मिलि डिजिटल माध्यमकेँ साहित्यिक स्मृति-संरक्षणक औजार बनबैत अछि।

२१. भाषा-शिल्पक समग्र मूल्यांकन

एहि विशाल सामग्रीमे एकरूप भाषिक रजिस्टर अपेक्षित नहि। कथामे बोलचाल, लोक-रूप, क्षेत्रीय उच्चारण आ संवाद; आलोचनामे संस्कृतनिष्ठ शब्दावली, अंग्रेजी तकनीकी शब्द, छन्द-सूत्र; रिपोताजमे समाचारधर्मी सीधापन; संस्मरणमे आत्मीय कथन; कवितामे लोकलय सँ मुक्तछन्द धरि विस्तार अछि। ‘शुद्ध मैथिली’क प्रश्न स्रोतसभमे स्वयं विवादक विषय अछि, अतः रचनाकारक मूल भाषिक भंगिमाकेँ मात्र मानकीकरणक कसौटीपर नापब साहित्यिक न्याय नहि।

२२. कमजोर पक्ष आ आलोचनात्मक सावधानी

किछु गद्य अत्यधिक घोषणात्मक अछि; तर्कक बदला आरोप वा भावनात्मक निष्कर्ष आगाँ आबि जाइत अछि। किछु कविता उपदेशात्मकता वा नारा-दोहरावमे काव्यात्मक जटिलता गुमाबैत अछि। विशेषांकक श्रद्धांजलि लेखसभमे पुनरुक्ति बढ़ैत अछि। दोसर दिस तीक्ष्ण polemical आलोचना पाठकसँ पर्याप्त साहित्यिक पृष्ठभूमि माँगैत अछि। मुदा ई सीमासभ स्वयं समयक ताप, गुट, संस्थागत तनाव आ भाषा-संस्कृतिक संघर्षक साक्ष्य सेहो छथि।

२३. साहित्यिक महत्त्व

एहि सामग्रीक सर्वाधिक महत्त्व ‘कैनन’ बनबैत रचना मात्रमे नहि, बल्कि साहित्य बनबाक प्रक्रिया देखेबामे अछि। कथा कोना पढ़ल जा रहल अछि, गजलकेँ कोन नियमसँ जाँचल जा रहल अछि, सम्पादककेँ कोना स्मरण कएल जा रहल अछि, लोककलाकारक हानि कोना दर्ज होइत अछि, प्रवासीकेँ मातृभूमि प्रति कर्तव्य कोना परिभाषित कएल जाइत अछि, आ डिजिटल पत्रिका अपन पाठक-समुदायकेँ कोना गढ़ैत अछि—ई सभ प्रश्न दूनू स्रोतकेँ मैथिली साहित्यक सामाजिक इतिहास लेल महत्त्वपूर्ण बनबैत अछि।

परिशिष्ट १ : ‘विदेह-सदेह २५’ — पूर्ण रचना-लेखक कवरेज सूची

नीचाँक सूची अनुक्रमानुसार अछि। मुख्य समीक्षामे सभ प्रविष्टिक उल्लेख/मूल्यांकन कएल गेल अछि।

लेखक/रचनाकार	रचना/समूह	पृष्ठ
गजेन्द्र ठाकुर	सझिया रोपनि — ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सझिया संग्रहक समीक्षा	२-८
डा. वीरेन्द्र मल्लिक / नबोनारायण	साक्षात्कार — मैथिलीमे संप्रति जे लिखल जा रहल अछि ताहिसँ हम निराश नहि छी	९-१९

मिश्र		
डा. योगानन्द झा	प्रवासीक स्नेहसँ ओतप्रोत मातृभूमि	२०-२३
डा. किशन कारीगर	भांट/भैंट; ढोल-पिपही; पुरस्कार; महामारी/पलायन; दुर्दशा; बोंगपाद बौआक बखारी; भगम भग्गी फैशन; आन्दोलन; मोछ वाली मौगी; रचना चोरी; फिल्म उद्योग; दललपनी-चलकपनी; बाबा भक्त कटाक्ष	२४-६१
संतोष कुमार राय 'बटोही'	बकरी संस्कृति	६२-६५
मणिकांत ठाकुर	चिंता मामा	६६-७१
शशिकांत कर्ण	बड़का भक्त	७२
सुभद्रा मिश्र भाव्या	हकार; प्रपंच	७३-७४
ज्ञानवर्द्धन कंठ	क्ष त्र ज्ञ; भाषाक झौहरि; केकर मौसा छियौ?; मैथिलीक पढ़ाइ; भोगी बनलाह बाघ; अभिनव दधीचि; जालंधर-यात्रा	७५-८७
दीपिका झा	अपराधी तय अछि	८८
राजनन्दन लाल दास	परिचय	८९-९०
सम्पादकीय	राजनन्दन लाल दास विशेषांकक संरचनाक संदर्भमे	९१
मुकेश दत्त	एकटा सशक्त सम्पादित व्यक्तित्व: राजनन्दन लाल दास	९२-१०३
दिलीप कुमार झा	मैथिली माध्यमसँ प्राथमिक शिक्षा... अंतिम इच्छा	१०४-१०७
अजित कुमार झा	वन मैन आर्मी...; मिथिला मैथिली आन्दोलनक पाथेय: श्रद्धेय रवीन्द्र जी	१०८-११८
अशोक	सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कर्णामृत	११९-१२२
जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'	साहित्यकार-सम्पादक...; भरि नगरीमे शोर; सभटा सोनारकें नहि गढ़बाक कला होइछ	१२३-१३९
चन्दना दत्त	श्री राजनन्दन लाल दास : क्षीणकायामे असीम उर्जान्वित व्यक्तिव	१४०-१४६
अमोद झा	क्रान्तिकारी चेतना जगबैत मैथिली नाटक 'संतो'	१४७-१५०
अखिलेश झा	मैथिली साहित्यक एकांत साधक राजनंदन लाल दास	१५१-१५३
चन्द्रेश	मैथिल शिरोमणि राजनन्दन लालदास	१५४-

		१६०
जितेन्द्र नाथ दत्त	माछक रस	१६१
कंचन कण्ठ	आदरणीय श्री राजनंदन लाल दास	१६२-१६५
लक्ष्मण झा ‘सागर’	मिथिलाक मुकुटमणि रवीन्द्र; राजनन्दन लालदास: एक उदारचेता सम्पादक	१६६-१७९
रमेश लाल दास	मामा श्री राजनन्दन लाल दास जी	१८०-१८९
शारदानन्द दास परिमल	मैथिली पत्रकारिता मे राजनन्दनक अवदान	१९०-१९२
नबो नारायण मिश्र	युग प्रवर्त्तक राज नन्दन लाल दास	१९३-१९८
सुरेन्द्र ठाकुर	मैथिली सेवी कलमक सिपाही: श्रीमान राजनन्दन लाल दास	१९९-२०५
सुधीर	श्रीयुत् राजनन्दन लाल दास जी ओ मैथिल	२०६
कामेश्वर झा ‘कमल’	कर्णामृत पत्रिका आ सम्पादक श्री राजनन्दन लाल दास	२०७-२१०
प्रदीप बिहारी	राजनन्दन लाल दास::अपने घरमे परगोत्री	२११-२१९
अरविन्द ठाकुर	चित्रा-विचित्रा सं प्रदर्शित होइत मैथिल प्रिमिटिविज्म	२२०-२५०
विजय इस्सर ‘वत्स’	विभूति संग प्रतिभूति	२५१-२५३
शिव शंकर श्रीनिवास	राजनन्दन लालदासक नाटक	२५४-२५७
शैलेन्द्र मिश्र	राजनन्दन लाल दास: मिथिला-मैथिलीक एकटा निष्काम योगी आ योद्धा	२५८-२६१
मुन्ना जी	साहित्यिक जातिवादी सीमा तोड़लनि राजनन्दन जी; बीहनि कथाक विकास मे रचनाकारक योगदान	२६२-२६९
आशीष अनचिन्हार	जातिवादी...; गजलक रखबार...; भूमिका एक...; हे शिव...; अनुशासन+विद्रोह...; साहित्य केंद्रित जोगीरा; राम लोचन ठाकुरजीक गद्य रचना; रवीन्द्रनाथ ठाकुर जीक कथित गजल	२७०-३४९
सम्पादकीय	रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांकक संदर्भमे	३५०-३५३

श्री रवीन्द्र नाथ ठाकुर	परिचय/रचनात्मक सामग्री	३५४-३६३
प्रदीप पुष्प	गीतक अप्रतिम शिल्पकार: रवीन्द्र नाथ ठाकुर	३६४-३६७
नारायणजी	आधुनिक मैथिली गीतक सजग उन्नायक	३६८-३७२
डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस केर उदासीनता	३७३-३८०
प्रदीप पुष्प	२ टा रुबाइ आ २ टा गजल	३८२-३८४
दिनकर कुमार	३० टा कविता	३८५-४२२
कुमुद ‘अनुन्जया’	सुक्खा सिम्मड़ कत्तै जोगलो जाय	४२३-४२५
आशीष अनचिन्हार	भक्ति गजल; किछु गजल	४२६-४३७
राज किशोर मिश्र	आमक गाछी; सुख; नव-संस्कृति ओ गाम; इजोरिआ	४३८-४६४
संतोष कुमार राय ‘बटोही’	मनुख बनवा मे पै लगैत छै; घरवाली; माए; पिता; भैय्यारी; झालदार चुनाव; राजगद्दी पर उल्लू; पहिल परेम; के बनतै सारथी...	४६५-४७८
डा. किशन कारीगर	हौ तोरे त गौंआ छियअह; प्रकृति के बसाबह; हो हो त हो हो; कतअ हेरा गेलै मनुक्खक जिनगी; मिथिला मैथिली के ठीकेदारी?; किछो ने करू; जेकरा देखू सैह नेता?; के दर्शक आ के सब कवि?; बहिन के अंगना भरदुतिया नत पूरब; आबू यौ देखू मिथिला के गाम; आ रे सुग्गा आ आ	४७९-४९९
कल्पना झा	पान; इजोत; कोइली रे; दीप; नहि रहल लचारी	५००-५०९
मुन्ना जी	दलाल; किछु ताँका	५१०-५१३
आशीष नीरज	राजनंदन लाल दास	५१४-५१५
सारस्वत	कविता सारस्वतक — भाग १ आ २ (२५ टा); निमोछिया अबीर	५१६-५२६

परिशिष्ट २ : “सझिया रोपनि” केर ४३ गोट बीहनि कथाकार

1. घनश्याम घनेरो · 2. मुन्नाजी · 3. नारायणजी · 4. प्रमोद कुमार झा ‘गोकुल’ · 5. डा. प्रमोद कुमार · 6. मुन्नी कामत · 7. अमरेश कुमार लाभ · 8. विद्या चन्द्र झा ‘बमबम’ · 9. सत्येन्द्र कर्ण · 10. विन्देश्वर ठाकुर · 11. आभा झा · 12. शिव कुमार · 13. प्रियंवदा · 14. महाकान्त प्रसाद · 15. प्रभाष अकिंचन · 16. आशीष अनचिन्हार · 17. पूनम झा · 18. शुभ्रा संतोष · 19. जवाहर लाल कश्यप · 20. सुभाष कुमार कामत · 21. नीरज कर्ण · 22. कुमारी आरती · 23. कल्पना झा-१ (बोकारो) · 24. कल्पना झा-२ (पटना) · 25. सबिता झा ‘सोनी’ · 26. विनीता ठाकुर · 27. मृणाल आशुतोष · 28. अमर ठाकुर · 29. मनीषा झा · 30. रूबी झा · 31. ओम प्रकाश झा · 32. हिमाद्रि मिश्र ‘हिम’ · 33. इरा मल्लिक · 34. कंचन कंठ · 35. राजेश वर्मा ‘भवादित्य’ · 36. मिसिदा · 37. जयन्ती कुमारी · 38. कल्पना कुमारी · 39. सांत्वना मिश्रा · 40. नन्दनी झा · 41. भुवनेश्वर चौरसिया ‘भुनेश’ · 42. अमर कान्त लाल · 43. दीपा मिश्रा

परिशिष्ट ३ : ‘विदेह’ अंक २५ — पूर्ण विभाग/लेखक कवरेज

विभाग	लेखक/रचना
सम्पादकीय	गजेन्द्र ठाकुर
संदेश	उदय नारायण सिंह ‘नचिकेता’; गंगेश गुंजन; रामाश्रय झा ‘रामरंग’; ब्रजेन्द्र त्रिपाठी; प्रफुल्लकुमार सिंह ‘मौन’; शिवप्रसाद यादव; आद्याचरण झा
कथा	सुभाषचन्द्र यादव — एकटा प्रेम कथा; राजेन्द्र विमल — तृष्णा; अमित कुमार झा — बुढ़ी माता
उपन्यास	केदारनाथ चौधरी — माहुर
विचार	श्यामसुन्दर शशि — मिथिलाक तवाही...; राम-जानकी विवाह महोत्सव; अंकुर काशीनाथ झा — नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि
कथा/लघु गद्य	अयोध्यानाथ चौधरी — दू पत्र; बृषेश चन्द्र लाल — एकदन्त हाथी आ नौलखा हार; कुमार मनोज कश्यप — नव वर्ष; अनलकान्त — एत’ आ ओत’; प्रेमचन्द्र मिश्र — अनाम कथा
आलेख-रिपोताज	डॉ. बलभद्र मिश्र; नरेश मोहन झा; नागेन्द्र झा; डॉ. रत्नेश्वर मिश्र; ज्योति; जितेन्द्र झा; उमेश कुमार; नवेन्दु कुमार झा; मुखीलाल चौधरी
प्रतियोगी परीक्षा	डॉ. शम्भु कुमार सिंह
मिथिला मंथन	सुशान्त झा
भानस भात	नीलिमा
पद्य	आशीष अनचिन्हार; मधुप; महेश मिश्र ‘विभूति’; ज्योति; सन्तोष मिश्र; नवीननाथ झा; विनीत उत्पल; पंकज पराशर; बिनीत ठाकुर; निमिष झा; अमरेन्द्र यादव
मिथिला कला-संगीत	छवि झा / कुमुद सिंह
तेलुगु कथा	वेमपल्ली शरीफ — जुम्मा; तेलुगुसँ अंग्रेजी: जयलक्ष्मी पोपुरी; अंग्रेजीसँ मैथिली: गजेन्द्र ठाकुर

गुजराती पद्य	अजय सरवैया; राजेन्द्र पटेल; पीयूष ठक्कर; पन्ना त्रिवेदी; बाबू सुथार; गुजरातीसँ अंग्रेजी: हेमांग देसाई; अंग्रेजीसँ मैथिली: गजेन्द्र ठाकुर
बालानां कृते	उमेश कुमार; ज्योति झा चौधरी
भाषा/शब्दावली	कृषि-मात्स्य शब्दावली; बसैटी शिव-मन्दिरक मिथिलाक्षर शिलालेखक देवनागरी रूपान्तरण; मानक मैथिली लेखन
प्रवासी मैथिल खण्ड	The Comet — गजेन्द्र ठाकुरक ‘सहस्रबाढ़नि’क अंग्रेजी अनुवाद, ज्योति झा चौधरी

उपसंहार

‘विदेह’ अंक २५ आ ‘विदेह-सदेह २५’कें संगे पढ़ला पर मैथिली साहित्यक एक दीर्घ संवाद देखाइत अछि—रचना समाजकें देखैत अछि, आलोचना रचनाकें; सम्पादकीय संस्था दूनूकें अभिलेखमे बदलैत अछि। एतय साहित्य केवल सौन्दर्यक वस्तु नहि, बल्कि भाषा-अधिकार, स्मृति, जाति, लिंग, प्रवास, शिक्षा, संस्कृति, नैतिकता, राजनीति आ माध्यम-परिवर्तनक संघर्षक स्थल अछि।

संकलनक भीतर किछु रचना शिल्पक कारण टिकैत अछि, किछु विचारक तापसँ, किछु अपन दस्तावेजी मूल्यसँ। सभकें एके कसौटीपर नापब उचित नहि। बीहनि कथा लेल समापनक कसावट, गजल लेल छन्द-शिल्प, संस्मरण लेल स्मृतिक विश्वसनीयता, रिपोताज लेल स्थल-साक्ष्य, आलोचना लेल तर्क-पाठ, आ कविता लेल भाषा-बिम्ब-लय—एहि भिन्न कसौटीक प्रयोगसँ दूनू ग्रन्थ मैथिली साहित्यिक संस्कृतिक बहुरंगी, विवादशील आ जीवित अभिलेख सिद्ध होइत अछि।

प्रयुक्त मूल स्रोत

१. Videha 025.pdf — ‘विदेह’ प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका, ०१ जनवरी २००९, वर्ष २, मास १३, अंक २५।

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा — ‘विदेह’ अंक २५ (१ जनवरी २००९) आ
‘विदेह-सदेह २५’

अध्याय 3 · विदेह सदेह ३० — सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा

सारांश गद्य, पद्य, आलोचना, भाषा-विमर्श, लोक-संस्कृति आ पाठकीय ग्रहणक समग्र अध्ययन मूल संकलन: स्कूल-कॉलेजक विद्यार्थी लेल

गद्य आ पद्य रचना — विदेह पेटार अंक १–३५० सँ सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर | विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-

547X २. ग्रन्थक बनावट: पाठ्य-संकलन सँ सांस्कृतिक अभिलेख धरि मुखपृष्ठ संकलनकें ‘स्कूल कॉलेजक विद्यार्थी लेल गद्य आ पद्य रचना’

आ ‘विदेह पेटार अंक १–३५० सँ’ चुनल समानान्तर संकलन कहैत अछि। एहि घोषित शैक्षिक उद्देश्यक कारणे भाषा-शिक्षण, उच्चारण, बाल-

साहित्य, संस्कृत सुभाषित आ स्मरणीय श्लोक केवल परिशिष्ट नहि, ग्रन्थक बुनियादी पाठकीय संरचना बनैत अछि। मुदा गद्य-खण्डक

विस्तार एहि सीमाकेँ बहुत आगाँ लऽ जाइत अछि: पुस्तक-समीक्षा, विवाद, समकालीन पत्रकारिता, सामाजिक चिन्ता, इतिहास, जीवनी

पञ्जी, मिथिलाक्षर, कम्प्युटर शिक्षा आ कला-विमर्श मिलि एकटा साहित्यिक-सांस्कृतिक विश्वकोश-जकाँ रूप बनबैत अछि।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · भाषा-विमर्श · लोक-संस्कृति · बाल-साहित्य · इतिहास · सांस्कृतिक अध्ययन

गद्य, पद्य, आलोचना, भाषा-विमर्श, लोक-संस्कृति आ पाठकीय ग्रहणक समग्र अध्ययन

मूल संकलन: स्कूल-कॉलेजक विद्यार्थी लेल गद्य आ पद्य रचना — विदेह पेटार अंक १–३५० सँ

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर | विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X

२. ग्रन्थक बनावट: पाठ्य-संकलन सँ सांस्कृतिक अभिलेख धरि

मुखपृष्ठ संकलनकेँ ‘स्कूल कॉलेजक विद्यार्थी लेल गद्य आ पद्य रचना’ आ ‘विदेह पेटार अंक १–३५० सँ’ चुनल समानान्तर संकलन कहैत अछि। एहि घोषित शैक्षिक उद्देश्यक कारणे भाषा-शिक्षण, उच्चारण, बाल-साहित्य, संस्कृत सुभाषित आ स्मरणीय श्लोक केवल परिशिष्ट नहि, ग्रन्थक बुनियादी पाठकीय संरचना बनैत अछि। मुदा गद्य-खण्डक विस्तार एहि सीमाकेँ बहुत आगाँ लऽ जाइत अछि: पुस्तक-समीक्षा, विवाद, समकालीन पत्रकारिता, सामाजिक चिन्ता, इतिहास, जीवनी, पञ्जी, मिथिलाक्षर, कम्प्युटर शिक्षा आ कला-विमर्श मिलि एकटा साहित्यिक-सांस्कृतिक विश्वकोश-जकाँ रूप बनबैत अछि।

संकलनक सम्पादकीय संरचना कालक्रमिक ‘महान रचनाकार’क इतिहास नहि अछि। ई अधिक निकट अछि पत्रिका-अभिलेखक—जतऽ साहित्यक निर्माण, समीक्षा, प्रतिक्रिया, विवाद, शिक्षण आ समुदाय-निर्माण एके प्रवाहमे संरक्षित अछि। साहित्येतिहास लेल एहि तरहक संकलन विशेष उपयोगी होइत अछि, कारण प्रकाशित ‘कृति’ मात्र नहि, कृतिक तत्कालीन ग्रहण आ आलोचना सेहो बचल रहैत अछि।

३. भाषा, वर्तनी आ उच्चारण: साहित्यक पहिले भाषा-संस्कार

गद्य-खण्डक आरम्भ ‘नेपालक मैथिली भाषा वैज्ञानिक लोकनि द्वारा बनाओल मानक उच्चारण आ लेखन शैली’, ‘मैथिली अकादमी, पटना द्वारा निर्धारित मैथिली लेखन-शैली’ आ ‘उच्चारण निर्देश’सँ होइत अछि। ई क्रम प्रतीकात्मक रूपेँ महत्त्वपूर्ण अछि: साहित्य पढ़बाक पहिले भाषा पढ़ू। पञ्चमाक्षर-अनुस्वार, ड/ड़, ढ/ढ़, व/ब, य/ज, ए/य, ध्वनि-लोप, हलन्त, कारक-विभक्ति, चन्द्रबिन्दु, संयुक्ताक्षर आ उच्चारणक सूक्ष्म प्रश्न सभ देखबैत अछि जे मैथिली मानकीकरण केवल ‘शुद्ध-अशुद्ध’क प्रशासनिक निर्णय नहि, इतिहास, उच्चारण, मुद्रण-सुविधा आ समुदायिक व्यवहारक बीच समझौता अछि।

Ramawatar Yadav क A Reference Grammar of Maithili (1996) मैथिलीक ध्वनि, रूप, वाक्य-विन्यास आदिक स्वतंत्र व्यवस्थित वर्णन प्रस्तुत करैत अछि; Cardona आ Jain सम्पादित The Indo-Aryan Languages मे Yadav क मैथिली-अध्याय सेहो भाषाकेँ स्वतंत्र संरचनात्मक परम्परा रूपमे रखैत अछि। एहि बाह्य भाषावैज्ञानिक परिप्रेक्ष्यमे ‘विदेह सदेह ३०’क वर्तनी-अंशक साहित्यिक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि: ई पाठककेँ भाषा-चेतना दैत अछि, आ संकलनक बादक आलोचना-पाठ लेल एकटा भाषिक आधार बनबैत अछि।

४. हरिमोहन झाक समर्पण: परिहास, समाज-समीक्षा आ अलंकारिक गद्य

‘हरिमोहन झा समग्र समर्पण’मे ‘कन्यादान’, ‘प्रणम्य देवता’, ‘खट्टर ककाक तरंग’ आ ‘रंगशाला’क समर्पण एक साथ राखल अछि। ‘कन्यादान’क समर्पण कन्या-शिक्षाक उपेक्षा, बाल-विवाह आ असमान दाम्पत्यपर तीक्ष्ण व्यंग्य करैत अछि; भाषा विनम्र समर्पणक पारम्परिक रूप धारण करैत अछि, मुदा भीतर सामाजिक अभियोग अछि। Lalit Kumar (2022) आधुनिक मैथिली उपन्यासक उद्भवक प्रसंगमे Harimohan Jha क Kanyadan क केन्द्रीय स्थान पर चर्चा करैत छथि; एहि आलोकमे समर्पण स्वयं उपन्यासक सामाजिक आलोचनाक ‘द्वार-पाठ’ बनैत अछि। ‘खट्टर कका’क समर्पण व्यंग्य, चमत्कार आ शास्त्रीय संकेतक खेल अछि, जखन कि ‘रंगशाला’ कला-माया आ सौन्दर्यक रूपक बनबैत अछि।

५. समग्र साहित्यिक प्रवृत्ति

५.१ आलोचना: प्रशंसा सँ बहस धरि

संकलनमे 'समीक्षा' शब्दक अर्थ एकरूप नहि अछि। कतहु औपचारिक पुस्तक-समीक्षा, कतहु विस्तृत आलोचनात्मक निबन्ध, कतहु पाठकीय प्रतिक्रिया, कतहु पत्रोत्तर, कतहु विवाद-लेख। एहि विविधताकेँ कमजोरी मात्र मानब उचित नहि, कारण ई मैथिली आलोचनाक जीवित सार्वजनिक रूप देखबैत अछि। ओम प्रकाश झा/आशीष अनचिन्हारक गजल-विमर्श तकनीकी कसौटीपर जाइत अछि; शिव कुमार झा 'टिल्लू', देवशंकर नवीन, रामाकान्त राय 'रमा', योगानन्द झा आदि साहित्यिक इतिहास, सामाजिक यथार्थ आ कृति-मूल्यांकन जोड़ैत छथि; सुभाष चन्द्र यादव 'रचनाक पाठ आ लेखक'मे लेखकक व्याख्यात्मक अधिकारपर प्रश्न उठबैत छथि।

५.२ कथा-उपन्यास: ग्रामजीवन, आधुनिकता आ नव सामाजिक पात्र

जगदीश प्रसाद मंडलक 'गामक जिनगी', 'जिनगीक जीत', 'मौलाइल गाछक फूल', 'उत्थान-पतन', 'पछताबा' आदि बारम्बार समीक्षाक केन्द्र बनैत अछि। एहि पुनरावृत्तिसँ संकलन एकटा कृतिकारक 'तत्कालीन आलोचनात्मक ग्रहण' सुरक्षित करैत अछि। जीवकान्तक 'जिनगीक जीत' समीक्षा खास तौरपर खेती-प्रधान गाम, खेतिहर समुदाय आ देशज मैथिली भाषाक प्रामाणिकतापर जोर दैत अछि। एहि देशज यथार्थवादक समांतर सुजीत कुमार झाक 'चिड़ै', 'जिद्दी', 'रिपोर्टर डायरी' पर अनेक प्रतिक्रियासँ नव शहरी/पत्रकारीय संवेदना उभरैत अछि।

मैथिली उपन्यासक इतिहासक बाह्य अध्ययनमे Lalit Kumar (2022) Harimohan Jha क 'Kanyadan'क माध्यमे आधुनिक उपन्यासक विकासपर विचार करैत छथि। 'विदेह सदेह ३०' एहि इतिहासकेँ आगाँ बढ़बैत अनेक कृति पर तत्कालीन आलोचना संकलित करैत अछि; एहि कारणे ई कृति-सूची मात्र नहि, उपन्यासक पाठकीय-सामाजिक जीवनक अभिलेख अछि।

५.३ नाटक आ उत्तर-आधुनिक प्रयोग

'नो एण्ट्री: मा प्रविश' संकलनमे केन्द्रस्थ नाट्य-पाठक रूपमे बारम्बार लौटैत अछि—गजेन्द्र ठाकुरक विस्तृत अध्ययन, उत्तर-आधुनिक तुलनात्मक प्रसंग, आ धीरेन्द्र कुमारक स्वतंत्र प्रतिक्रिया। सैमुअल बैकेट, हैरोल्ड पिंटर, बादल सरकार आ नचिकेताकेँ एक तुलनात्मक फ्रेममे रखब मैथिली नाटककेँ 'क्षेत्रीय' सीमामे बन्द नहि करैत, विश्व रंगभाषासँ संवाद करैत अछि। महेन्द्र मलंगिया, आनंद जी, विभारानी, बेचन ठाकुर, प्रकाश झा आदि पर लेख एहि नाट्य-विमर्शकेँ इतिहास, सामाजिक कथ्य आ मंचीय तकनीकक दिशा दैत अछि।

५.४ गजल, कविता आ बाल-साहित्य

बाल-गजल विषयक अनेक लेख—मुन्ना जी, ओम प्रकाश झा, जगदानन्द झा, चंदन कुमार झा, मिहिर झा, अमित मिश्र, आशीष अनचिन्हार—एक नवा विधागत प्रयोगक सामूहिक बहस रचैत अछि। प्रश्न केवल 'बालक लेल सरल गजल' नहि, गजल अपन अरबी-फारसी-उर्दू इतिहास, बहर-काफिया-रदीफक अनुशासन आ मैथिली बाल-मनोविज्ञानक बीच कोना रूपान्तरित हो—एहि पर अछि। एके विषयपर अनेक लेखकक उपस्थिति संकलनक संवादधर्मिता देखबैत अछि।

५.५ लोकसाहित्य, लोकदेवता, पाबनि आ चित्रकला

लोरिक, दीनाभद्री, लोकगीत, छठि, जानकी-नवमी, मधुश्रावणी, जितिया, कोजगरा, दीपावली, मिथिला चित्रकला, पञ्जी, परिक्रमा, लोकदेव भीम केवट-लोरिक—ई सभ सामग्री साहित्यकेँ समुदायिक जीवनक अभिलेख बनबैत अछि। Dev Nath Pathak क Maithili folklore पर अध्ययन (2018) लोकपरम्पराकेँ संस्कृत शास्त्रीय परम्पराक प्रतिछाया मात्र नहि मानि ओकर अपन अर्थ-व्यवस्था पर बल दैत अछि; एहि दृष्टिसँ 'विदेह सदेह ३०'क लोक-खंड सभ स्वतंत्र सांस्कृतिक पाठ बनैत अछि। मिथिला कला पर Brown (1996) क शोध बाहरी एकरेखीय तांत्रिक व्याख्याक विरोधमे महिला कलाकारक अपन अर्थ-निर्माण पर बल दैत अछि; संकलनक 'अर्थक अधिकता' शीर्षक एहि बहुवाचकता संग उल्लेखनीय संवाद बनबैत अछि।

५.६ विद्यापति, मध्यकाल आ साहित्यिक इतिहास

विद्यापति संकलनमे कवि, सांस्कृतिक प्रतीक, स्थल-स्मृति आ लोककथा—चारू रूपमे उपस्थित छथि। Pankaj Jha (2014, 2019) विद्यापतिक संस्कृत, अवहट्ट/देशभाषा आ फारसी-प्रभावित राजनीतिक संसारक जटिलता देखबैत छथि; एहन शोध विद्यापतिकेँ केवल प्रेमगीतक कवि मानबाक सीमाकेँ तोड़ैत अछि। संकलनक विद्यापति-संबन्धी लेख सभ एहि व्यापक दृष्टिक समान दिशा मे—साहित्य, राज्य, स्थान, लोकविश्वास आ आधुनिक स्मृति—अनेक प्रवेश-द्वार खोलैत अछि।

५.७ डिजिटल मैथिली आ नव सार्वजनिक क्षेत्र

गजेन्द्र ठाकुरक आरम्भिक लेख विदेहक इंटरनेट प्रकाशन, PDF आर्काइव, वैश्विक पाठक आ डिजिटल पहुँचक आत्मवृत्तान्त दैत अछि; मनोज मुक्तिक मिथिलाक्षर Unicode font विषयक लेख आ कम्प्युटर शिक्षा-संबन्धी सामग्री एहि डिजिटल मोड़कें संस्थागत बनबैत अछि। ई संकलन अपन सामग्री मात्रसँ नहि, अपन अस्तित्वक इतिहाससँ सेहो महत्त्वपूर्ण अछि: पत्रिका, ब्लॉग, PDF, Unicode, ई-आर्काइव आ पाठकीय संदेश मिलि मैथिली साहित्यक डिजिटल सार्वजनिक क्षेत्रक आरम्भिक दस्तावेज बनैत अछि।

६. आरम्भिक चारि खण्डक पृथक मूल्यांकन

नेपालक मैथिली भाषा वैज्ञानिक लोकनि द्वारा बनाओल मानक उच्चारण आ लेखन शैली (पृ. २–८)

पञ्चमाक्षर-अनुस्वार, ड/ड़, ढ/ढ़, व/ब, य/ज, ए/य, हि/हु, ध्वनि-लोप, स्वर-स्थानान्तरण आ हलन्तक विस्तृत नियम एहि अंशकें व्यावहारिक शैली-पुस्तिका बनबैत अछि। विशेष महत्त्व ई जे नियमक संग उच्चारण, मुद्रण, हस्तलेखन आ भाषिक पहचानक तर्क देल गेल अछि; अर्थात मानकीकरणकें केवल आदेश नहि, विवेचन बनाओल गेल अछि।

मैथिली अकादमी, पटना द्वारा निर्धारित मैथिली लेखन-शैली (पृ. ९–१२)

२१ बिन्दुक लेखन-शैली ऐतिहासिक वर्तनी आ आधुनिक वैकल्पिक रूपक बीच संतुलन खोजैत अछि। ‘भऽ गेल/भय गेल/भए गेल’ जकाँ विकल्प मानक भाषाक भीतर बहुलता स्वीकार करैत अछि। एकर साहित्यिक फल ई जे सम्पादक/लेखककें एकरूपता संग जीवित उच्चारणक सम्मानक प्रश्न लगातार मोन पड़ैत रहैत अछि।

उच्चारण निर्देश (पृ. १३–१६)

दन्त्य/मूर्धन्य, श/ष/स, व/ब, य/ज, ह्रस्व इ, संयुक्ताक्षर आ उच्चारणभेदक उदाहरण एहि अंशकें श्रव्य भाषा-संस्कारक पाठ बनबैत अछि। साहित्यिक संकलनमे एहन अंशक उपस्थिति बतबैत अछि जे भाषा पढ़ब आ भाषा बजब—दुनू साहित्यिक संस्कारक अंश मानल गेल अछि।

हरिमोहन झा समग्र समर्पण (पृ. १७–१८)

चारि समर्पण-रचना हरिमोहन झाक व्यंग्य-प्रतिभाक सूक्ष्म नमूना अछि। सामाजिक कटाक्ष, बनावटी विनम्रता, संस्कृत-उद्धरण, अतिशयोक्ति आ रूपकक माध्यमे ‘समर्पण’ स्वयं स्वतंत्र साहित्यिक विधा-जकाँ चमकैत अछि।

७. लेखक-रचना अनुसार सम्पूर्ण आलोचनात्मक समीक्षा

नीचाँ अनुक्रमक क्रम जथावत् राखल गेल अछि। प्रत्येक शीर्षकक नीचाँ ‘रचना-परिसर’मे मूल अनुक्रमक सभ रचना दर्ज अछि; तकर बाद आलोचनात्मक टिप्पणी अछि। पृष्ठाङ्क मूल संकलनक मुद्रित पृष्ठाङ्क अछि।

1. गजेन्द्र ठाकुर (पृ. 19–376)

रचना-परिसर: *नचिकेता जीक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश, मैथिली राम चरित मानस-मैथिली समालोचनाक विफलता, मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव, चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक “वेटिंग फॉर गोडो”, हैरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक “द बर्थडे पार्टी”, बादल सरकारक बांग्ला नाटक “एवम् इन्द्रजीत” आ उदय नारायण सिंह ‘नचिकेता’क मैथिली नाटक “नो एण्ट्री: मा प्रविश”, इन्फॉरमेशन सोसाइटी, सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान, अन्हारक विरोधमे हाथी चलए बजार -अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन, नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन, मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त, भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान, डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६), छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल मिथिला आ संस्कृत-कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता, साहित्यिक रचना, बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा, केदारनाथ चौधरीक उपन्यास “चमेली रानी” आ माहुर, फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत, वर्णमाला शिक्षा: अंकिता, कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार श्री ओम प्रकाश झा), रामविलास साहुजीक दधू बेचनी लघुकथा संग्रह, राजदेव मण्डलक अम्बरा, मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’क गीत आ झारू - “हमरा बिनु जगत सुन्ना छै”, मुन्नाजीक “माँझ आंगनमे कतिआएल छी”, मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह “प्रतीक”, रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह “रथक चक्का उलटि चलै बाट”, उमेश मण्डल जीक “निश्तुकी” कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह, उमेश पासवानक कविता संग्रह “वर्णित रस”, सुजीतक जिद्दी, विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज, संतोष कुमार मिश्र- “एना किए..?”, संतोष कुमार मिश्र- मिथिला (नेपाल)केर पोसपुत कथा संग्रह- मिथिलाक्षरमे प्रकाशित मैथिली पोथी, लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति, पंजी-प्रबन्ध, मिथिला कला, विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७२-१९५२), संगीत-शिक्षा,रामाश्रय झा ’रामरंग’, सर्वतंत्र स्वतंत्र श्री धर्मदत्त*

झा(बच्चा झा) (१८६०-१९१८ ई.), म.म. शंकर मिश्र, जनक, याज्ञवल्क्य, चाणक्य...कौटिल्य, मैथिली भाषापाक १-३, की अहाँकेँ बुझल अछि?

एहि विराट आरम्भिक खण्डमे आलोचना, नाटक-विवेचन, उपन्यास-विमर्श, अनुवाद-सिद्धान्त, भाषाविज्ञान, मानवाधिकार, इतिहास, लोकगाथा, पञ्जी, चित्रकला, संगीत, जीवनी आ पुस्तक-समीक्षा एके आलोचनात्मक भूगोलमे आबैत अछि। ‘नो एण्ट्री: मा प्रविश’क पाठ-समीक्षा उत्तर-आधुनिक विसंगति, नाट्य-रचना आ डिजिटल प्रकाशन-परिसरकेँ जोड़ैत अछि; अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव आ चारि उत्तर-आधुनिक नाटकक तुलनात्मक विवेचन मैथिली आलोचनाकेँ विश्व-साहित्यक संवादमे रखैत अछि। ‘मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त’ भाषिक स्वायत्तता आ सांस्कृतिक अर्थक संरक्षणक प्रश्न उठबैत अछि, जे आधुनिक अनुवाद-अध्ययनक ‘सांस्कृतिक मध्यस्थता’क अवधारणासँ मेल खाइत अछि (Sah & Sinha 2022)। लोकगाथा, पञ्जी, मिथिला कला, विस्मृत कवि, संगीत आ भाषापाक-जकाँ अंश साहित्यक सीमा बढ़ा कऽ अभिलेख, लोकज्ञान आ भाषा-प्रयोगकेँ आलोचनाक सामग्री बनबैत अछि। एहि खण्डक शक्ति ओकर बहुविषयक विस्तार अछि; सीमा ई जे एकहि लेखकक बहुतेक विधा एकठाम आबि गेलासँ समरूप पद्धतिगत गहिराइ सभ ठाम समान नै रहैत अछि।

2. श्री मैथिली पुत्र प्रदीप (पृ. 377–382)

रचना-परिसर: *आध्यात्म*

एहि लेखनमे साहित्यकेँ व्यापक सांस्कृतिक सार्वजनिक क्षेत्रक अंश मानल गेल अछि। रचनाक विषय सामाजिक अनुभव, इतिहास, विचार वा समकालीन जीवनसँ जुड़ैत अछि; लेखकक विवेचन ओकर अर्थकेँ पाठक-समुदाय आ मिथिलाक बदलैत परिस्थिति संग जोड़ैत अछि। संकलनक बहुविध स्वरूप बुझबाक लेल ई खण्ड महत्त्वपूर्ण अछि, कारण ई पारम्परिक ‘साहित्य’ आ ज्ञानपरक/विचारपरक गद्यक सीमा लगातार विस्तृत करैत अछि।

3. धनाकर ठाकुर (पृ. 383–399)

रचना-परिसर: *प्रज्वलित प्रज्ञा (पूर्व राष्ट्रपति डा॰ कलामक पोथीIgnited Minds क डा॰ नित्यानन्द लाल दास द्वारा मैथिली अनुवाद) क समीक्षा, जगदीश प्रसाद मंडलक “ गामक जिनगी”, समीक्षा – फूल तितली आ तुलबुल (लेखक -श्री सियाराम झा 'सरस')*

एहि लेखनक मुख्य चिन्ता भाषा, मानक, लिपि, अनुवाद अथवा आधुनिक तकनीक अछि। मैथिलीकेँ जीवित साहित्यिक भाषा बनौने रखबाक लेल केवल रचना नहि, वर्तनी, शिक्षण, डिजिटल माध्यम, लिपि-संरक्षण आ अनुवादक संस्थागत आधार आवश्यक अछि—एहि बोधकेँ ई खण्ड स्पष्ट करैत अछि। Ramawatar Yadav क व्याकरणिक शोध (1996) आ Cardona-Jain सम्पादित भाषावैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य मैथिलीक स्वतंत्र संरचनात्मक अध्ययनक महत्त्वकेँ पुष्ट करैत अछि।

‘प्रज्वलित प्रज्ञा’क समीक्षा अनुवादक श्रमक सम्मान करैत हुए विकास-स्वप्नक दाबी सभपर आलोचनात्मक दूरी रखैत अछि; ‘गामक जिनगी’ आ ‘फूल तितली आ तुलबुल’ पर लेख क्रमशः ग्रामजीवन आ बाल-काव्यक अलग कसौटी अपनबैत अछि। एकहि लेखकक तीन समीक्षा आलोचनाक विषयानुसार मानदण्ड बदलबाक आवश्यकता देखबैत अछि।

4. मुन्ना जी (पृ. 400–421)

रचना-परिसर: *बाल गजल: पुरान देहक नव चेहरा, विहनि कथा संसार, अझुको क्षणकेँ अंगीकार करैछ “क्षणिका”, अनमोल झाक समयकेँ साक्षी राखि ....!*

एहि रचना-समूहक केन्द्र गजल/काव्यक रूप, लय, भाषिक अनुशासन आ नव प्रयोग अछि। लेखक केवल विषयवस्तु नहि, विधागत पहचान, छन्द-व्यवस्था, बाल-पाठकक ग्रहणशीलता अथवा समकालीन प्रयोगक कसौटीपर चर्चा करैत छथि। एहि प्रकारक लेख संकलनमे काव्य-रुचि आ तकनीकी आलोचनाकेँ एक संग उपस्थित करैत अछि; जतऽ पुस्तक-विशेषक समीक्षा अछि, ओतऽ ओकरा व्यापक मैथिली काव्य-परम्परासँ जोड़ल गेल अछि।

बाल-गजल, विहनि कथा, क्षणिका आ समकालीन कवि—चारि अलग लघु-विधाक एकठाम विवेचन एहि खण्डक खासियत अछि। लघु आकारकेँ लघु साहित्यिक महत्त्व नहि मानि, संक्षिप्त रूपमे अर्थ-सघनता आ नव प्रयोग खोजल गेल अछि।

5. डा. रमण झा (पृ. 422–431)

रचना-परिसर: *फोंका-एक विहगावलोकन, मैथिली चित्रकथा*

एहि रचना-समूहमे कथा/उपन्यासक मूल्यांकन सामाजिक यथार्थ, पात्र, भाषा आ कथन-शैलीक आधारपर आगाँ बढ़ैत अछि। विशेषतः ग्रामजीवन, बदलैत सम्बन्ध, स्त्री-पुरुष अनुभव अथवा नव लेखकक भाषिक स्वरक प्रश्न बारम्बार उभरैत अछि। समीक्षा-परम्पराक दृष्टिसँ ई लेख सभ पाठक-प्रतिक्रिया आ आलोचनात्मक विवेचनक बीचक सेतु अछि—कतेको ठाम औपचारिक सिद्धान्त कम, मुदा समकालीन ग्रहणक प्रत्यक्ष प्रमाण बेसी भेटैत अछि।

6. जीवकान्त (पृ. 432–441)

रचना-परिसर: *उत्तराधिकारी आ लेखक, जगदीश प्रसाद मंडलक 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर*

'जिनगीक जीत' पर लेखमे खेती-प्रधान गाम, खेतिहर समुदायसँ आएल लेखकक दृष्टि आ देशज मैथिलीकेँ रचनाक प्रामाणिक शक्ति मानल गेल अछि। ई टिप्पणी वर्ग-स्थितिक संग भाषिक विश्वसनीयताकेँ जोड़ैत अछि—संकलनक कथा-आलोचनामे ई महत्त्वपूर्ण पद्धतिगत संकेत अछि।

7. डॉ. राजीव कुमार वर्मा (पृ. 442–445)

रचना-परिसर: *कारी घटा बरसैत मेघ*

8. मानेश्वर मनुज (पृ. 446–468)

रचना-परिसर: *मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता, मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बइसँ एक चिट्ठी/ बुच्ची दाइक निलामी कोना से देखू*

9. ओम प्रकाश झा (पृ. 469–484)

रचना-परिसर: *भोथ हथियार, मैथिली बाल गजलक अवधारणा, बहुरूपिया रचना मे, घोघ उठबैत गजल*

'भोथ हथियार'मे छन्द, काफिया, रदीफ आ गजल-शिल्पक त्रुटिपर बिन्दुवार कठोरता देखाइत अछि। एहि तकनीकी समीक्षा कारणे खण्ड प्रशंसात्मक प्रतिक्रिया सँ अलग एकटा विधा-शास्त्रीय हस्तक्षेप बनैत अछि।

10. डॉ. बचेश्वर झा (पृ. 485–487)

रचना-परिसर: *समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल*

ई खण्ड मुख्यत: पुस्तक/काव्य-समीक्षाक क्षेत्रमे अछि। रचनाक विषय, भाषिक स्वर, शिल्प, सामाजिक सरोकार आ साहित्यिक परम्परामे ओकर स्थान—एहि चारि स्तरपर मूल्यांकनक प्रवृत्ति देखाइत अछि। कतेको लेख तत्कालीन पाठकीय प्रतिक्रिया जकाँ अछि, तँ ओकर ऐतिहासिक महत्त्व ओहि समयक साहित्यिक ग्रहण, प्रशंसा आ असहमतिक दस्तावेज बनबामे सेहो अछि।

11. शिव कुमार झा 'टिल्लू' (पृ. 488–712)

रचना-परिसर: *मैथिली नाटकक विकासमे आनंद जीक योगदान, मौलाइल गाछक फूल- (समीक्षा), भफाइत चाहक जिनगी- समीक्षा, समीक्षा (अर्चिस), यू.पी.एस.सी. लेल- चित्राक सनेस, समीक्षा- मिथिलाक बेटी (नाटक), समीक्षा- विभारानीक नाटक बलचन्दा, किस्त-किस्त जीवन-शेफालिका वर्मा- (समीक्षा), मैथिली उपन्यास साहित्यक विकासमे हरिमोहन झाक योगदान, पृथ्वीपुत्र, मैथिली कथा साहित्यक विकासमे राजकमलक योगदान, कृष्णजन्म :: कथाकाव्यक सूत्रपात, क्षणप्रभा, बहिरा नाचए अपने ताल, मिथिलाक लोक देवता, इन्द्रधनुषी अकासमे सामाजिक विमर्श, कथा किरणमे यथार्थवोध ओ नारी विमर्श, आशु कवित्वक हृदयांतरिक किलोल- कलानिधि, निश्तुकी, समीक्षा- अम्बरा (राजदेव मण्डल), मैथिली कविता संचयन- (संपादक- गंगेश गुंजन), कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक- (समीक्षा), समीक्षा -गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा, समीक्षा- तरेगन, समीक्षा- हम पुछैत छी- कविता संग्रह (विनित उत्पल), मैथिलीक विकासमे बाल कविताक योगदान, मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण, पोथी- समीक्षा-भावांजलि, रमाजीक काव्य यात्रा, समीक्षा- अरिपन (कविता संकलन), समीक्षा- बिन वाती दीप जरय*

ई संकलनक सभसँ सघन आलोचनात्मक पट्टिकामेसँ एक अछि। नाटक, उपन्यास, कथा, कविता, बाल-साहित्य, दलित पात्र, नारी-विमर्श, यथार्थवाद, लोकदेवता आ पुस्तक-समीक्षा—सभपर टिल्लूक लेखन पाठ-केन्द्रित मूल्यांकन आ साहित्येतिहासक प्रश्नकेँ संग लैत अछि। आनन्द जी, हरिमोहन झा, राजकमल, गंगेश गुंजन, जगदीश प्रसाद मंडल, विभारानी, विनीत उत्पल आदि पर लिखल लेख मैथिली आधुनिकताक अनेक धारा एक संग देखबैत अछि। खास बात ई जे 'दलित पात्रक चित्रण' आ 'नारी विमर्श' सामाजिक प्रतिनिधित्वकेँ साहित्यिक रूप-विधानसँ जोड़ैत अछि; अतः ई खण्ड केवल प्रशंसात्मक पुस्तक-परिचय नहि, आलोचनात्मक सार्वजनिक क्षेत्रक दस्तावेज सेहो अछि।

12. रमाकान्त राय 'रमा' (पृ. 713–735)

रचना-परिसर: *गामक जिनगी -कथा संग्रह- जगदीश प्रसाद मंडल- समीक्षा, मैथिल पत्र-पत्रिका : समस्या ओ समाधान : आचार्य दिव्यचक्षु, नव गीतक पुरोधा : महाकवि प्रवासी, पोथी समीक्षा- प्रगतिशील एवं सनातन विचारधाराक समन्वयात्मक उपन्यास*

13. देवशंकर नवीन (पृ. 736–812)

रचना-परिसर: *लघुकथा लेखनमे अवरोधक तत्व, अदद्दी पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता, बटुआमे बिहाड़ि आ बिर्ड़ो- (राजकमल चौधरीक उपन्यास)*

14. मुन्नी कामत (पृ. 813–814)

रचना-परिसर: *कतऽ जा रहल छी हम!*

15. जगदानन्द झा 'मनु' (पृ. 815–820)

रचना-परिसर: *करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह, संकल्पक धनी विल्मा रुडोंल्फ, बाल गजलक अवधारणा*

16. चंदन कुमार झा (पृ. 821–831)

रचना-परिसर: *मैथिली बाल-साहित्य आ' बाल-गजल, मिथिला-मैथिली आंदोलन*

17. उमेश मण्डल (पृ. 832–836)

रचना-परिसर: *मैथिली युवा रचना-धर्मिता :: परंपरा परिवर्त्तन आ भविष्य*

18. श्री राज (पृ. 837–845)

रचना-परिसर: *यात्रीक कवितामे गाम*

19. मिहिर झा (पृ. 846–847)

रचना-परिसर: *बाल गजल*

20. अमित मिश्र (पृ. 848–854)

रचना-परिसर: *बाल गजल: कोमल करेजक आखर, कतिआएल आखर*

21. आशीष अनचिन्हार (पृ. 855–980)

रचना-परिसर: *आधुनिकताक समस्या (आलोचना), गजलक साक्ष्य- समालोचना, की थिक बाल गजल, अन्हार पर इजोतक कहिओ विजय नहि, बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी- बेचन ठाकुरजीक नाटक- बेटीक अपमान, काफिया, काफिया आ बहर*

आधुनिकता, गजल-शास्त्र, बाल-गजल, नाटक आ काफिया-बहरक तकनीकी विवेचन एहि खण्डकेँ सिद्धान्त आ व्यवहारक संगम बनबैत अछि। ‘आधुनिकताक समस्या’ इतिहासबोध आ मूल्य-परिवर्तनक प्रश्न उठबैत अछि, जखन कि गजल-विषयक लेख शिल्पक कसौटी पर रचनाकेँ जाँचैत अछि। ‘छीनरदेवी’ आ ‘बेटीक अपमान’क नाट्य-विवेचन सामाजिक विडम्बना आ रंग-संरचनाक दिशामे जाइत अछि। ई तकनीकी आग्रह मैथिली गजल-समीक्षामे मानक-विमर्शक महत्त्वपूर्ण उदाहरण बनैत अछि।

22. बलराम साहु (पृ. 981–982)

रचना-परिसर: *विस्मित होइत हमर लोक संस्कृति*

ई खण्ड मिथिलाक लोक-स्मृति, पाबनि, गीत, कला वा सांस्कृतिक व्यवहारकेँ लिखित अभिलेखमे रूपान्तरित करैत अछि। साहित्यिक दृष्टिसँ एकर महत्त्व वर्णनक ‘लोक-स्वर’, स्थानीय शब्दावली आ सामुदायिक स्मृतिक संरक्षणमे अछि। एहन सामग्री पढ़ैत काल शास्त्रीय स्रोत आ जीवित लोक-अनुभवक भिन्नताकेँ मान्यता देब आवश्यक अछि; आधुनिक लोकसाहित्य-अध्ययन सेहो एहि बहुलतापर जोर दैत अछि।

23. शत्रुधन प्रसाद साह (पृ. 983–985)

रचना-परिसर: *मैथिली महिला आ जिद्दी*

24. विजय मस्त (पृ. 986–988)

रचना-परिसर: *सुजीतक सम्पूर्ण कथा एकटा नया स्वाद देलक*

25. कैलास दास (पृ. 989–1000)

रचना-परिसर: *महिलाक प्रेरक कथा संग्रह 'जिद्दी', 'अंगना सुखल घरमे पानि', खोजय पड़त मातृत्व बालगीत, म्याराथन दौड़ आ जनकपुर*

26. डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह "मौन" (पृ. 1001–1080)

रचना-परिसर: *पंचदेवोपासक भूमि मिथिला*

27. मनोज मुक्ति (पृ. 1081–1089)

रचना-परिसर: *त्रिभुवन विश्वविद्यालयद्धारा मिथिलाक्षर फन्टक विकास, मकर सँक्रान्ति अर्थात तीला सकराँइत, जितिया पावनि, मनोज मुक्ति संग अन्तर्वार्ता- डा. राम दयाल राकेश (सँस्कृति विद)*

28. डा.रमानन्द झा 'रमण' (पृ. 1090–1153)

रचना-परिसर: *शब्द विभक्ति सम्वाद, अनुवाद, कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मैथिली- राजा टंकनाथ चौधरी, सगर राति दीप जरय मिथिलाक ग्रामांचल मे, मिथिलांचलक दलित समाजमे लोकगाथा :मैथिली लोकगाथामे दीनाभद्री, सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा : मैथिली अनुवाद रमानन्द झा 'रमण' : भाषा सम्पादन गोविन्द झा*

29. हृदय नारायण झा (पृ. 1154–1183)

रचना-परिसर: *लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत*

प्राती, गोसाउनि, भगवतीगीत, डहकन, विषहारा, झूमरि, बटगमनी, मलार, चैमासा, लगनी, समदाउन आदि लोकगीत-वर्गक सूची स्वयं एकटा अमूर्त सांस्कृतिक सूचीपत्र अछि। मौखिक परम्पराक बदलैत जीवनपरिस्थितिमे एहन लेख दस्तावेजीकरणक साहित्यिक कार्य करैत अछि।

30. कृपानन्द झा (पृ. 1174–1192)

रचना-परिसर: *मैथिलक जन नायक चुनचुन मिश्र, चौकपर आणविक समझौता*

31. महेन्द्र मलंगिया (पृ. 1193–1212)

रचना-परिसर: *मूर्दाः श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व, प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे श्री-इन-वन*

एहि खण्डक मूल सरोकार नाटक आ रंगमंच अछि—अर्थात लिखित पाठ, पात्र, कथ्य आ मंचीय सम्भावनाक आपसी सम्बन्ध। लेखकक दृष्टि नाटककेँ पढ़बाक वस्तु मात्र नहि मानि प्रदर्शन, संवाद, सामाजिक परिस्थिति आ रंग-प्रयोगक कला रूपमे देखैत अछि। संकलनक व्यापक नाट्य-विमर्शमे ई अंश मैथिली रंगपरम्परा आ आधुनिक प्रयोगक बीच संवाद स्थापित करैत अछि।

'मूर्दा: श्रृंगार संघर्ष आ द्वन्द्व' नाटकक आनन्द, काव्यत्व आ रंगानुभवक सिद्धान्तसँ आरम्भ होइत अछि; 'प्रकाश चन्द्र झा: मैथिली रंगकर्ममे श्री-इन-वन' जीवित रंगकर्मक बहु-भूमिका पर केन्द्रित अछि। सिद्धान्त आ रंगकर्मी-व्यक्तित्वक ई जोड़ नाट्य-समीक्षाकेँ संस्थागत स्मृति दैत अछि।

32. धीरेन्द्र प्रेमर्षि (पृ. 1213–1235)

रचना-परिसर: *मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना, नव भोर जोहैत मिथिला, मधुश्रावणी : मिथिलाक पारम्परिक हनिमून*

गजल-संरचना पर लेख विधाक इतिहास आ मैथिलीमे ओकर अनुकूलनक प्रश्न उठबैत अछि; 'नव भोर जोहैत मिथिला' आ 'मधुश्रावणी' कवि/निबन्धकारक सामाजिक-सांस्कृतिक स्वर फैलाबैत अछि। एहि त्रयीमे शास्त्रीय विधा-विवेचन, क्षेत्रीय आकांक्षा आ लोकसंस्कार एक संग उपस्थित अछि।

33. अमरनाथ झा (पृ. 1236–1243)

रचना-परिसर: *हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही, विष्णु प्रभाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह।, पूर्वजक जन्मभूमिकेँ शत-शत प्रणाम, आचार्य पंकज*

ई लेख जीवनी, इतिहास आ सांस्कृतिक स्मृतिक संगमपर अछि। व्यक्तित्वक साहित्यिक/सामाजिक योगदानकेँ स्मरण करैत लेखक एक प्रकारक वैकल्पिक साहित्येतिहास रचैत छथि, जाहिमे संस्थानसँ बाहरक व्यक्तियो स्थान पबैत छथि। एहन लेख प्राथमिक स्मृति-स्रोतक रूपमे मूल्यवान अछि; तिथि, वंश वा ऐतिहासिक दाबी सभक उपयोग शोधमे स्वतंत्र स्रोत-समीक्षा संग करब उचित रहत।

34. उदय नारायण सिंह "नचिकेता" (पृ. 1244–1259)

रचना-परिसर: *गजेन्द्र ठाकुरक कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर*

'कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक'क बहुखण्डीय बनावट—प्रबन्ध, उपन्यास, कविता आदि—पर नचिकेताक टिप्पणी स्वयं संकलनक बहुविध संरचनाकेँ बुझबाक चाबी अछि। मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोशपर लेख साहित्य आ लेक्सिकोग्राफीक सम्बन्धकेँ रेखांकित करैत अछि।

35. विनीत उत्पल (पृ. 1260–1269)

रचना-परिसर: *आजुक कालमे बाबा, कतय गेल फिल्मक बाल कलाकार*

एहि खण्डमे बाल/शिशु साहित्य आ शिक्षणकेँ स्वतन्त्र साहित्यिक क्षेत्र मानल गेल अछि। सरलता मात्रकेँ बाल-साहित्यक कसौटी नहि मानि लय, कल्पना, नैतिक दबाव, भाषा-अर्जन आ बाल-मनोविज्ञानक प्रश्न उठैत अछि। संकलन स्कूल-कॉलेजक विद्यार्थी लेल बनाओल गेल होयबाक कारणे ई विमर्श पुस्तकक घोषित पाठकीय उद्देश्यसँ सीधा जुड़ैत अछि।

36. डॉ. गंगेश गुंजन (पृ. 1270–1275)

रचना-परिसर: *कविक आत्मोक्तिःकविताक अयना -विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर*

37. रामभरोस कापडि 'भ्रमर' (पृ. 1276–1290)

रचना-परिसर: *यात्रा प्रसंग- ह्वेन सांगसं चीनमे भेंटघांट, यात्रा प्रसंग- हमर कल्पनाक सेती..... बहैत..... अविचल !, संचार एवं साहित्य क्षेत्रमे समावेशी स्वरुपक अपेक्षा*

38. कमलानन्द झा (पृ. 1291–1297)

रचना-परिसर: *मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन: उदाहरण*

39. डॉ पालन झा (पृ. 1298–1308)

रचना-परिसर: *सन्त साहेब रामदास*

40. सुशांत झा (पृ. 1309–1342)

रचना-परिसर: *की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?, मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य, विकास के तेजी मे कहीं छुटि नै जाय मिथिला..., हमर सपना केर मिथिला, मैथिली के ल क किछु असुविधाजनक प्रश्न.. , बिहार मे प्रलय, लेकिन की छैक निदान?, मिथिला मंथन १-२, मैथिली भाषा- संस्कृति के रक्षाक लेल एकटा संस्था जरुरी अछि*

41. शक्ति शेखर (पृ. 1343–1345)

रचना-परिसर: *कखन बदलब हम*

42. ओमप्रकाश झा (पृ. 1346–1348)

रचना-परिसर: *मिथिले तक नहि छथि मैथिल*

43. बी.के कर्ण (पृ. 1349–1356)

रचना-परिसर: *संकट गुणक (रिस्क फैक्टर) आ मैथिल- मिथिलाक विकास क़ेना आ कखन*

44. जितेन्द्र झा (पृ. 1357–1361)

रचना-परिसर: *स्वरक माला गँथती अंशु, प्रिय पाहुन*

45. महाप्रकाश (पृ. 1362–1363)

रचना-परिसर: *सुभाष चन्द्र यादव*

46. ज्योति प्रकाश लाल (पृ. 1364–1376)

रचना-परिसर: *आजुक समय मे कम्प्युटर शिक्षाक महत्व*

47. जितमोहन झा (पृ. 1377–1386)

रचना-परिसर: *वृद्ध-बुजुर्गक सामाजिक स्थितिपर- थम्हने राखू ई डोरी (वृद्ध-बुजुर्ग समस्यापर लेख) , कन्या भ्रूण हत्या, प्रकृति के साथ खिलवार, हम लड़की वला छी जनाब ..., नारीक प्रति दोहरा दृष्टिकोण कियेक .... ?*

एहि रचना-समूहमे साहित्य सामाजिक नैतिकता आ प्रतिनिधित्वक प्रश्नसँ सीधा भिड़ैत अछि। स्त्री-अस्मिता, सामाजिक विषमता, बदलैत मूल्य अथवा हाशियाक अनुभवकेँ लेखक आलोचनाक केन्द्र बनबैत छथि। एहि कारणे लेख सभ केवल पोथी-परिचय नहि रहि, समाजक सत्ता-संरचना आ साहित्यिक संवेदनशीलताक परीक्षण बनैत अछि।

48. नवेन्दु कुमार झा (पृ. 1387–1415)

रचना-परिसर: *बिहारक लोक पर्व-छठि, बिहारमे सूर्योपासनाक प्रमुख केन्द्र, विद्यापति स्मृति दिवस (११ नवम्बर २००८) पर विशेष-यशस्वी कवि छलाह महाकवि विद्यापति, उपेक्षित अछि सोनपुर आ हरिहर क्षेत्र मेला, प्रदेशमे नहि थमि रहल जातीय हिंसाक दौर, राजगीरमे सम्पन्न भेल संघ क तीन दिवसीय बैसक गामे-गामे सक्रिय होयत संघ, गाम मे विज्ञान कँे लोकप्रिय बनबऽ मे लागल छथि मानस बिहारी*

49. सुजीत कुमार झा (पृ. 1416–1425)

रचना-परिसर: *सुनिल मल्लिक- सफल व्यक्ति- आब मिथिला ग्रामक तैयारी, एकटा लाजवाव कलाकार मदन ठाकुर, थाल माटिक पावनि*

50. डॉ. उमेश मंडल (पृ. 1426–1436)

रचना-परिसर: *मैथिली उपन्यास साहित्यमे संवेदनाक स्वर, कबिलपुरक कथा गोष्ठी*

51. प्रा परमेश्वर कापड़ि (पृ. 1437–1446)

रचना-परिसर: *मानकताक बात विखपाद अछि !, छठिमाइके आसि आ लोकजीवनमे हिनक महत्व*

52. अतुलेश्वर (पृ. 1447–1514)

रचना-परिसर: *सोचब आवश्यक जे......, मातृभाषा दिवस क बहन्ने, गाम मे नहि फागु आ नहि भोरक पराती, तीन तिरहुतिया तेरह पाक, समयलाई सलाम आ धीरेन्द्र प्रेमर्षिक अभिमत, यात्रीक प्रसंग, हिन्दीक दृष्टि आ मैथिली भाषा, वैश्विक सोच ?, भाषाक प्रति एक नव सोच, भाषाक मानकीकरण आ साहित्यक राजनीति, मैथिली साहित्य आ मुसलमान भाई, 'चिड़ै' आ ओकरे लार्थें नेपालीय मैथिली कथाक स्वर, 'बदलैत स्वर' आ मैथिली आलोचना, मैथिली : पंडिताम वा आम? , पंडित गोविन्द झा, मैथिली आ अध्ययन, उजरैत गाम बसैत शहर........, विद्यापति समारोह, बिहार गीत आ मैथिल, पूर्वी भारतीय भाषाक सेमिनार क बहन्ने, विश्वक डॉ. इन्दिरा गोस्वामी आ असमिया लोकक मामोनी बाइदेउ, धीरेन्द्र, मैथिली आ शिष्य*

एहि दीर्घ लेखमालामे मिथिला-मैथिली, मातृभाषा, फागु, यात्री, साहित्यिक मानकीकरण, मुसलमान समुदाय, 'चिड़ै', अध्ययन-परम्परा, विद्यापति समारोह आ अनेक समकालीन प्रसंग एक वैचारिक डायरी-जकाँ खुलैत अछि। लेखकक मूल सरोकार भाषा-समुदायक आत्मचेतना, संस्थागत कमजोरी आ सार्वजनिक बहस अछि। कतेको लेख तत्कालीन विवादक प्रसंगाधीन अछि, मुदा ओही कारणे ई खण्ड मैथिली सार्वजनिक क्षेत्रक इतिहास लेल प्राथमिक दस्तावेजक मूल्य रखैत अछि।

53. डॉ॰ शशिधर कुमर (पृ. 1515–1529)

रचना-परिसर: *पोथी समीक्षा : गामक जिनगी, पोथी समीक्षा – अम्बरा*

54. सुमित आनन्द (पृ. 1530–1531)

रचना-परिसर: *अक्षरपुरूष-विश्वनाथ*

55. डॉ. योगानन्द झा (पृ. 1532–1596)

रचना-परिसर: *ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक :: अर्द्धांगिनी, मैथिली बाललोककथा : स्थिति आ अपेक्षा, वनदेवी आ नारी अस्मिताक गाथा, आदर्शक उपस्थापन : मौलाइल गाछक फूल, आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह, इसवी सन 2010: मैथिलीक गतिविधि*

जगदीश प्रसाद मंडलक ग्रामजीवन-केन्द्रित साहित्य, बाललोककथा, ‘वनदेवी’मे नारी-अस्मिता, ‘मौलाइल गाछक फूल’क आदर्श, संघर्ष आ 2010 क साहित्यिक गतिविधिक विवेचन—एहि सभसँ आलोचक साहित्यकेँ जीवन-व्यवहारक विस्तार मानैत छथि। लोककथा आ ग्रामजीवन पर जोर, आधुनिक लोकसाहित्य-अध्ययनक एहि बोधसँ संगति रखैत अछि जे मौखिक परम्पराकेँ शास्त्रीय संस्कृत परम्पराक छाया मात्र नहि, अपन अर्थ-व्यवस्थामे पढ़बाक चाही (Pathak 2018; Korom review)।

56. राजेश्वर नेपाली (पृ. 1597–1602)

रचना-परिसर: *कवि पं. प्रतापनारायण झा कें छठम पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि*

57. बिपिन झा (पृ. 1603–1627)

रचना-परिसर: *ग्रन्थ समीक्षा- 'महाराज महेश ठाकुर ओ कंकाली भगवती', ग्रन्थ समीक्षा-प्रकृति परिक्रमा, श्रोत्रिय समाजमे रक्तबीजक जन्म, जनमानस हेतु प्रत्यभिज्ञादर्शनक वैशिष्ट्य, कथं 'संस्कृतं' संस्कृतम् , ये बान्धवाऽबान्धवा वा, चहकैत चौक आ कनैत दलान, आवश्यकता अछि सकारात्मक मौलिक चिन्तनक, स्वातन्त्रोत्तरयुगीन संस्कृत साहित्यक संवर्द्धन मे मिथिलाक भूमिका*

58. डा. राजेन्द्र विमल (पृ. 1628–1644)

रचना-परिसर: *साहित्य–सङ्गम- गीतकार धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सुर–ताल, ‘घरमुहाँ’ – प्रभाव आ प्रतिक्रिया, नव–नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी*

59. नीलिमा (पृ. 1645–1648)

रचना-परिसर: *मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव, मूरक परोठा*

मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव आ मूरक परोठा—ई पाक-विधि सभ पारम्परिक साहित्य-विधासँ बाहर अछि, मुदा घरेलू ज्ञान, स्वाद-स्मृति आ खाद्य-संस्कृतिक लिखित संरक्षणक रूपमे संकलनक सांस्कृतिक विस्तार देखबैत अछि।

60. छवि झा/ कुमुद सिंह (पृ. 1649–1658)

रचना-परिसर: *मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता*

‘मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ सार्थकता’ दृश्य-कलाकेँ स्थिर लोक-चिह्न नहि, अर्थ-उत्पादनक बदलैत प्रक्रिया मानैत अछि। 1960 क दशक बाद दीवारसँ कागज आ नव माध्यमक परिवर्तनक चर्चा कला, बाजार आ प्रयोगक सम्बन्ध खोलैत अछि। Carolyn Henning Brown (1996) मिथिला कलाक अर्थपर बाहरी एकरेखीय—विशेषत: केवल तांत्रिक—व्याख्याक आलोचना कऽ महिला कलाकारक अपन टिप्पणी आ आत्मबोधपर जोर देलनि; एहि बाह्य शोधक आलोकमे संकलनक लेखक ‘अर्थक अधिकता’ विशेष महत्त्वपूर्ण बुझाइत अछि।

61. नूतन झा (पृ. 1659–1675)

रचना-परिसर: *जानकी-नवमी, वटसावित्री, कृष्णाष्टमी / जन्माष्टमी, कुशोत्पतन / कुशी अमावस्या, दुर्गा पूजा, शरत्पूर्णिमा / कोजगरा, दीपावली, मिथिलांचलक भ्रातृद्वितीया, बाराती-सत्कार, चौठचन्द्र पूजा*

62. विद्यानन्द झा पञ्जीकार 'मोहनजी' (पृ. 1676–1704)

रचना-परिसर: *पंजी प्रबंध (पृ. १६७६-१७०४)*

पञ्जी-प्रबन्ध साहित्यिक आलोचनासँ आगाँ बढ़ि वंश-स्मृति, सामाजिक संरचना, लिपि-अभिलेख आ ज्ञान-संरक्षणक दस्तावेज अछि। तिरहुता पाण्डुलिपिसँ देवनागरी लिप्यन्तरणक उल्लेख भाषिक विरासतकेँ डिजिटल/मुद्रित युगमे बचएबाक प्रश्नसँ जुड़ैत अछि। एहि खण्डकेँ वंशावलीक तथ्य-स्रोत जकाँ उपयोग करैत काल स्वतंत्र अभिलेखीय सत्यापन अपेक्षित रहत, मुदा सांस्कृतिक-स्मृति अध्ययन लेल एकर प्राथमिक स्रोत-मूल्य निर्विवाद अछि।

63. राजेन्द्र कुमार प्रधान (पृ. 1705–1708)

रचना-परिसर: *२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना*

64. खुशबू झा (पृ. 1709–1714)

रचना-परिसर: *हमरा नजरिमे सुजीतक रिपोर्टर डायरी, मैथिली कथा संग्रह जिद्दी पढलापर*

65. चन्द्रकिशोर (पृ. 1715–1724)

रचना-परिसर: *समयक साक्षी सुजीतक रिपोर्टर डायरी*

66. सुदीप झा (पृ. 1725–1728)

रचना-परिसर: *सामाजिक मूल्य मान्यताकें चोच मारैत 'चिड़ै'*

67. राजेश कुमार कर्ण (पृ. 1729–1733)

रचना-परिसर: *चिरबिर–चिरबिर करैत उडि रहल चिडै*

68. चन्द्रेश (पृ. 1734–1758)

रचना-परिसर: *रचनात्मक बिमर्शक अयनामे 'चिड़ै', संवेनशील मोनकेँ छुबैत हुगली ऊपर बहैत गंगा, यर्थाथक अनुभुतिमे ऐतिहासिक दिनः झिझिया नृत्य महोत्सव*

69. प्रकाश झा (पृ. 1759–1792)

रचना-परिसर: *नचिकेताक 'प्रियंवदा': एक विश्लेषण, 'प्रयोग' एकांकीक रंगमंचीय दृष्टि, प्रयोग एकांकीक रंगमंचीय प्रयोग, पोथी-समीक्षा- पुरुष परीक्षा, रंगदृष्टि, मिथिला मे रंगकलाक समकालीन दृष्टि*

नचिकेताक 'प्रियंवदा' आ 'प्रयोग'क अनेक रंगमंचीय विश्लेषण एहि खण्डकेँ शुद्ध नाट्यालोचना बनबैत अछि। आलेख-पाठ, प्रस्तुति-संभावना, पात्र-केन्द्र, रंगदृष्टि आ मंच-प्रयोगक अन्तर पर ध्यान देल गेल अछि। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालयसँ जुड़ल लेखकक दृष्टि नाटककेँ मुद्रित साहित्य मात्र नहि, मंचपर घटित होमयवला कला मानैत अछि; एहि कारणे ई खण्ड संकलनक रंगमंच-विमर्शकेँ तकनीकी आधार दैत अछि।

70. गोपाल प्रसाद (पृ. 1793–1811)

रचना-परिसर: *मिथिला कवि कोकिल विद्यापति, हिंदी, मैथिली, मिथिला, बिहार ओ मैथिल लोकनि सं अपेक्षा, सामाजिक परिवर्तनक संदर्भमे मैथिलीक दशा ओ दिशा, सामाजिक परिवर्तनक संदर्भमे मैथिलीक दशा ओ दिशा*

71. पंचानन मिश्र (पृ. 1812–1822)

रचना-परिसर: *मऊ वाजितपुर सँ विद्यापतिनगर परिवर्त्तन-यात्रा, मिथिलाक कतिआएल सिद्धपीठ*

72. भीमनाथ झा (पृ. 1823–1835)

रचना-परिसर: *चन्दा झा, हरिमोहन झा मिलिकऽ, मखान खानि ई मिथिला*

73. कुमार राधारमण (पृ. 1836–1840)

रचना-परिसर: *पाकिस्तान मे सेक्स-विचार*

74. डा. शंकरदेवझा (पृ. 1841–1860)

रचना-परिसर: *मिथिलाक विस्मृत राजधनी देवकुली*

75. राजदेव मंडल (पृ. 1861–1889)

रचना-परिसर: *जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रह- राति-दिन, जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास उत्थान-पतनपर, कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल पत्र (पत्रोत्तर शैलीक समीक्षा)*

76. डॉ. मेघन प्रसाद (पृ. 1890–1899)

रचना-परिसर: *मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास*

'मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास' संकलनक अनुवाद-विमर्शकेँ संस्थागत आ ऐतिहासिक धरातल दैत अछि। लेखक अपन सीमा स्पष्ट करैत हुए अनुवादकेँ अभ्यास, सिद्धान्त आ प्रशिक्षणक विषय बनबैत छथि। आधुनिक शोध सेहो मैथिली साहित्यक वैश्विक पहुँच लेल अनुवादकेँ सांस्कृतिक-संचारक अनिवार्य माध्यम मानैत अछि (Sah & Sinha 2022); एहि दृष्टिसँ ई लेख संग्रहक दूरगामी विमर्शमेसँ एक अछि।

77. डॉ. इन्दुधर झा (पृ. 1900–1902)

रचना-परिसर: *दू-पत्र: एक विश्लेषण*

78. रामलोचन ठाकुर (पृ. 1903–1910)

रचना-परिसर: *समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा*

79. केदार कानन (पृ. 1911–1912)

रचना-परिसर: *जगदीश प्रसाद मंडलक पछताबा पर एक दृष्टि*

80. श्यामसुन्दर शशि (पृ. 1913–1916)

रचना-परिसर: *साहित्यकार डा. धीरेश्वर झा धिरेन्द्रक ६ अम वार्षिकीपर विशेष- नमन गुरुदेव*

81. फूल चन्द्र झा 'प्रवीण' (पृ. 1917–1933)

रचना-परिसर: *मैथिली शिशु साहित्य लोक*

82. रमेश (पृ. 1934–1951)

रचना-परिसर: *बहस- पंकज पराशरक साहित्यिक चोरि मैथिली साहित्यक कारी अध्याय थिक, प्रो. मायानन्द मिश्रक रमनगर कथामे लागल "मुदा"...*

83. मंत्रेश्वर झा (पृ. 1952–1954)

रचना-परिसर: *चरित्र चित्रणक वाजीगर- जगदीश प्रसाद मंडल*

84. सुभाष चन्द्र यादव (पृ. 1955–1963)

रचना-परिसर: *रचनाक पाठ आ लेखक, जगदीश प्रसाद मंडल, मैथिली लोक-कथा*

85. अच्छेलाल शास्त्री (पृ. 1964–1964)

रचना-परिसर: *रणभूमि आ कविता नामक शीर्षक कवितापर दू शब्द*

86. दुर्गानन्द मंडल (पृ. 1965–1996)

रचना-परिसर: *शिव कुमार झा टिल्लू जीक लिखल खोंइछक लेल साड़ी- कथापर दू शब्द, नाटक बेटीक अपमानपर एक नजरि, जीवन-मरण, पोथी समीक्षा- मौलाइल गाछक फूल, टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहन्ने- यात्रा वृत्तान्त*

87. प्रो. वीणा ठाकुर (पृ. 1997–2022)

रचना-परिसर: *प्राचीन भारतीय संस्कृतिमे मिथिलाक योगदान, गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा, जिनगीक जीत उपन्यासक समीक्षा, महाकवि मार्कण्डेय प्रवासी*

88. अशोक (पृ. 2023–2031)

रचना-परिसर: *बनैत कम बिगड़ैत बेसी-सुभाष चन्द्र यादवक दोसर कथा संग्रह*

89. उषाकिरण खान (पृ. 2032–2035)

रचना-परिसर: *अनुभूतिः एकटा पाठकीय प्रतिक्रिया*

90. नागेन्द्र कुमार कर्ण (पृ. 2036–2049)

रचना-परिसर: *मिथिला पञ्चकोशी परिक्रमा, सुजित कुमार झा पर*

91. भालचन्द्र झा (पृ. 2050–2072)

रचना-परिसर: *बाल-शिक्षणपर निबन्ध- हमर शिक्षण-यात्रा*

92. ब्युटी कुमारी (पृ. 2073–2078)

रचना-परिसर: *राहुलजी एक नजरिमे*

93. बसन्त झा (पृ. 2079–2083)

रचना-परिसर: *उगना*

94. धीरेन्द्र कुमार (पृ. 2084–2088)

रचना-परिसर: *नो एंट्री : मा प्रविश- (उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'), प्रीति ठाकुरक दुनू चित्रकथापर धीरेन्द्र कुमार एक नजरि*

95. डॉ. शेफालिका वर्मा (पृ. 2089–2090)

रचना-परिसर: *प्रीति ठाकुर क मैथिली चित्रकथा*

96. अरविन्द ठाकुर (पृ. 2091–2098)

रचना-परिसर: *लोकदेव भीम केवट, लोकदेव लोरिक*

'लोकदेव भीम केवट' आ 'लोकदेव लोरिक' इतिहास, आख्यान आ लोकविश्वासक सीमापर अवस्थित गद्य अछि। पाल-काल, जनस्मृति आ वीर-आख्यानकेँ जोड़ि लेखक लोकदेवताक सांस्कृतिक निर्माण बुझबाक प्रयास करैत छथि। आधुनिक लोकसाहित्य-अध्ययन लोक-परम्पराकेँ शास्त्रीय आख्यानक अपूर्ण रूप नहि, स्वायत्त अर्थ-प्रणाली मानैत अछि; एहि कसौटीपर ई दुनू लेख संकलनक अन्तिम गद्य-खण्डकेँ लोकइतिहासक व्यापक क्षितिज दैत अछि।

८. पद्य-खण्डक समीक्षा

८.१ गजेन्द्र ठाकुर — "मिथिलाक ध्वज गीत" (पृ. २१००)

गीतक केन्द्रीय प्रतिमा 'ध्वज' अछि—राजनीतिक राज्य-ध्वजक अपेक्षा भाषिक-सांस्कृतिक पुनरुत्थानक ध्वज। 'विद्या', 'उद्योग', 'बुद्धि', 'चातुर्य', 'शौर्य', 'मैथिली' आ 'वर्ण' जकाँ शब्द सभ मातृभूमिक भावुक स्मृतिकेँ भाषिक क्रिया आ ज्ञानकर्मसँ जोड़ैत अछि। गीत मातृ-मिथिलाक क्षिति-बोध सँ आरम्भ भऽ

पुनरागमनक संकल्पपर पहुँचैत अछि; अतः एकर भाव-गति शोक → आत्मबोध → कर्म → विजयक आश्वासन अछि। अन्तिम पंक्तिमे ध्वज नहि खसब—ई सांस्कृतिक निरन्तरताक प्रतिज्ञा बनैत अछि।

८.२ "किछु संस्कृत सुभाषितक संकलन" (पृ. २१०१–२१०५)

एहि अंशक साहित्यिक रूप 'चयन' अछि। सुभाषितक संक्षिप्तता, दृष्टान्त, नैतिक बोध आ स्मरणीय लय विद्यालयी पाठक लेल उपयुक्त अछि। संकलनक प्रस्तावना गामक बोलचालमे संस्कृत सुभाषितक चोटगर प्रयोगक स्मृति दैत अछि; तेँ ई संस्कृतकेँ मृत शास्त्रीय भाषा रूपमे नहि, मैथिली भाषिक व्यवहारक अन्तःपाठ रूपमे प्रस्तुत करैत अछि।

८.३ "बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक" (पृ. २१०६–२११०)

प्रातःकाल, दीप, शयन, स्नान, भारत-वर्णन आदि प्रसंगानुसार श्लोक आ मैथिली अर्थ देल गेल अछि। ई अंश साहित्य, संस्कार आ स्मृति-शिक्षाक संयुक्त रूप अछि। आलोचनात्मक दृष्टिसँ एकर उपयोगिता भाषिक-छन्दात्मक स्मरणमे अछि; संगहि पाठकीय विविधता ध्यानमे रखैत एहन धार्मिक-सांस्कृतिक पाठकेँ ऐतिहासिक-सांस्कृतिक सामग्री रूपमे पढ़ब अधिक समावेशी होइत अछि।

८.४ "संदेश" (पृ. २१११–२१२४): साहित्यक ग्रहण-इतिहास

अन्तिम 'संदेश' परम्परागत पद्य नहि, मुदा संकलनक ग्रहण-इतिहासक अत्यन्त मूल्यवान परिपाठ अछि। एहि ७८ प्रतिक्रियामे प्रशंसा, शुभकामना, रचनात्मक आलोचना, व्यक्तिगत संस्मरण, साहित्यिक असहमति आ विदेहक डिजिटल प्रयत्नपर टिप्पणी भेटैत अछि। एहि कारणे 'संदेश'केँ प्रचार-परिशिष्ट मानि छोड़ब उचित नहि; ई बतबैत अछि जे पत्रिका/कृति समकालीन लेखक-पाठक समुदायमे कोना ग्रहण भेल। मायानन्द मिश्रक असहमति अथवा रवीन्द्रनाथ ठाकुरक आलोचनात्मक टिप्पणी जकाँ स्वर एहि परिशिष्टकेँ एकरेखीय प्रशस्तिपत्र होमयसँ रोकैत अछि।

९. संदेशकर्ताक सम्पूर्ण सूची (७८)

1. श्री गोविन्द झा

2. श्री रमानन्द रेणु

3. श्री विद्यानाथ झा "विदित"

4. प्रो. उदय नारायण सिंह "नचिकेता"

5. डॉ. गंगेश गुंजन

6. श्री रामाश्रय झा "रामरंग" (आब स्वर्गीय)

7. श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी — साहित्य अकादमी

8. श्री प्रफुल्लकुमार सिंह "मौन"

9. डॉ. शिवप्रसाद यादव

10. श्री आद्याचरण झा

11. श्री विजय ठाकुर — मिशिगन विश्वविद्यालय

12. श्री सुभाषचन्द्र यादव

13. श्री मैथिलीपुत्र प्रदीप

14. डॉ. श्री भीमनाथ झा

15. श्री रामभरोस कापड़ि "भ्रमर"

16. श्री राजनन्दन लालदास

17. डॉ. प्रेमशंकर सिंह

18. श्रीमती शेफालिका वर्मा

19. श्री हेतुकर झा, पटना

20. श्री योगानन्द झा, कबिलपुर, लहेरियासराय

21. श्री किशोरीकान्त मिश्र — कोलकाता

22. श्री जीवकान्त

23. श्री भालचन्द्र झा

24. श्रीमती डॉ. नीता झा

25. श्री मायानन्द मिश्र

26. श्री महेन्द्र हजारी — सम्पादक श्रीमिथिला

27. श्री केदारनाथ चौधरी

28. श्री सत्यानन्द पाठक

29. श्रीमती रमा झा — सम्पादक मिथिला दर्पण

30. श्री नरेन्द्र झा, पटना

31. श्री रामलोचन ठाकुर — कोलकाता

32. श्री तारानन्द वियोगी

33. श्रीमती प्रेमलता मिश्र “प्रेम”

34. श्री कीर्तिनारायण मिश्र — बेगूसराय

35. श्री महाप्रकाश — सहरसा

36. श्री अग्निपुष्प

37. श्री मंजर सुलेमान — दरभंगा

38. श्रीमती प्रोफेसर वीणा ठाकुर

39. श्री छत्रानन्द सिंह झा

40. श्री ताराकान्त झा — सम्पादक मैथिली दैनिक मिथिला समाद

41. डॉ. रवीन्द्र कुमार चौधरी

42. श्री अमरनाथ

43. श्री पंचानन मिश्र

44. श्री केदार कानन

45. श्री धनाकर ठाकुर

46. श्री आशीष झा

47. श्री शम्भु कुमार सिंह

48. डॉ. अजीत मिश्र

49. श्री बीरेन्द्र मल्लिक

50. श्री कुमार राधारमण

51. श्री फूलचन्द्र झा प्रवीण

52. श्री विभूति आनन्द

53. श्री मानेश्वर मनुज

54. श्री विद्यानन्द झा — आइ.आइ.एम. कोलकाता

55. श्री अरविन्द ठाकुर

56. श्री कुमार पवन

57. श्री प्रदीप बिहारी

58. डॉ. मणिकान्त ठाकुर — कैलिफोर्निया

59. श्री धीरेन्द्र प्रेमर्षि

60. श्री देवशंकर नवीन

61. श्री मोहन भारद्वाज

62. श्री फजलुर रहमान हाशमी

63. श्री लक्ष्मण झा “सागर”

64. श्री जगदीश प्रसाद मंडल

65. श्री अशोक झा — अध्यक्ष मिथिला विकास परिषद

66. श्री ठाकुर प्रसाद मुर्मु

67. बुद्धिनाथ मिश्र

68. श्री बृखेश चन्द्र लाल

69. श्री परमेश्वर कापड़ि

70. श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर

71. श्री मंत्रेश्वर झा

72. श्री हरेकृष्ण झा

73. श्री सुकान्त सोम

74. प्रोफेसर मदन मिश्र

75. प्रोफेसर कमला चौधरी

76. श्री उदय चन्द्र झा “विनोद”

77. श्री कृष्ण कुमार कश्यप

78. श्री मणिकान्त दास

१०. स्रोत-सम्बन्धी असंगति आ सम्पादकीय टिप्पणी

सम्पूर्णता जाँचैत काल अनुक्रममे किछु आन्तरिक असंगति देखाइत अछि, जकरा बदलि देबक बदला एतऽ स्पष्ट कएल जा रहल अछि। 'गद्य-खण्ड (पृ. १–२०९०)' लिखल रहितो अरविन्द ठाकुरक 'लोकदेव भीम केवट, लोकदेव लोरिक' पृ. २०९१–२०९८ धरि अछि; पद्य-खण्ड पृ. २०९९ सँ आरम्भ होइत अछि। अतः वास्तविक गद्य-पाठ २०९८ धरि चलैत अछि।

सुशांत झाक पृष्ठ-परिसर अनुक्रममे '१३०९५–१३४२' रूपमे छपल अछि; आस-पासक क्रम (डॉ. पालन झा १२९८–१३०८, शक्ति शेखर १३४३–१३४५) आ मूल पाठक आधारपर एकरा १३०९–१३४२ बुझल गेल अछि। डॉ. शेफालिका वर्माक '२०८९–९०' कैं क्रमअनुसार २०८९–२०९० पढ़ल गेल अछि। विद्यानन्द झा पञीकार 'मोहनजी'क पृष्ठ-चिह्न 'प्.' मुद्रण-त्रुटि सहित अछि; सीमा १६७६–१७०४ अछि।

हृदय नारायण झाक 'लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत' (११५४–११८३) आ कृपानन्द झाक खण्ड (११७४–११९२)क पृष्ठ-सीमा आपसमे अंशतः ओवरलैप करैत अछि। ई अनुक्रमक स्रोत-स्तरीय तथ्य अछि; समीक्षा एकरा छुपबैत नहि अछि। एहन त्रुटि भविष्यक सम्पादित संस्करणमे अनुक्रम-पुनर्सत्यापनक आवश्यकता देखबैत अछि।

११. समापन मूल्यांकन

'विदेह सदेह ३०'क सर्वाधिक स्थायी साहित्यिक महत्त्व 'श्रेष्ठ रचना'क एकरेखीय कैनन बनबामे नहि, बहु-स्वरीय मैथिली साहित्यिक जीवन बचएबामे अछि। एतऽ स्थापित लेखक आ नव लेखक, औपचारिक आलोचक आ पाठकीय प्रतिक्रियाकार, नाटक आ पाक-विधि, उपन्यास आ Unicode font, गजल आ पञ्जी, लोकगीत आ मानवाधिकार—सभ एके अभिलेखीय क्षेत्रमे सह-अस्तित्व रखैत अछि। ई असमानता दरअसल पत्रिका-संस्कृतिक वास्तविकता अछि।

आलोचनात्मक स्तरपर संकलनक तीन प्रमुख उपलब्धि अछि। पहिल, ई भाषा-संस्कार आ साहित्य-संस्कारकैं अलग नहि करैत अछि; वर्तनी-उच्चारणसँ शुरू करब एहि बातक प्रमाण अछि। दोसर, ई 'रचना'क संग 'रचनाक ग्रहण' सेहो सुरक्षित करैत अछि—एके कृतिपर अनेक समीक्षा साहित्यिक समाजक बहस देखबैत अछि। तेसर, ई मिथिलाक लोक, कला, पाबनि, पञ्जी, इतिहास आ डिजिटल तकनीककैं साहित्यिक सार्वजनिक क्षेत्रक वैध सामग्री मानैत अछि।

एकर सीमासभ सेहो स्पष्ट अछि: किछु सामग्री तथ्यपरक/पत्रकारीय अछि, साहित्यिक शिल्पक दृष्टिसँ असमान; अनेक समीक्षा प्रशंसात्मक स्वरमे अछि; उद्धरण-सन्दर्भ-पद्धति एकरूप नहि; अनुक्रममे पृष्ठ-त्रुटि अछि; ऐतिहासिक दाबी सभक स्रोत-निर्देश हर ठाम पर्याप्त नहि। मुदा एहि सीमाक कारणे ग्रन्थक दस्तावेजी मूल्य घटैत नहि—बल्कि भविष्यक आलोचनात्मक संस्करण लेल कार्य-सूची स्पष्ट होइत अछि।

अन्ततः, एहि संकलनकैं 'मैथिली साहित्यक पाठ्य-संग्रह' कहब सत्य अछि, मुदा अपूर्ण सत्य। अधिक उपयुक्त परिभाषा होयत—मैथिली साहित्य, आलोचना, भाषा-सक्रियता, लोक-स्मृति आ डिजिटल सार्वजनिक क्षेत्रक विस्तृत अभिलेख। एहि रूपमे 'विदेह सदेह ३०' केवल विद्यार्थी लेल पाठ नहि, शोधार्थी लेल स्रोत-कोश सेहो अछि।

१२. संदर्भ-सूची

प्राथमिक स्रोत: विदेह सदेह ३०. सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर. विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका, ISSN 2229-547X. संकलित गद्य-पद्य, विदेह पेटार अंक १–३५० सँ. संस्करण २०२२. (आधार PDF: २१४५ पृष्ठ).

Yadav, Ramawatar. 1996. A Reference Grammar of Maithili. Trends in Linguistics: Documentation 11. Berlin/New York: Mouton de Gruyter. DOI: 10.1515/9783110811698.

Cardona, George, and Dhanesh Jain (eds.). 2003/2004. The Indo-Aryan Languages. London/New York: Routledge. मैथिली अध्याय: Ramawatar Yadav.

Jha, Pankaj Kumar. 2014. 'Beyond the local and the universal: Exclusionary strategies of expansive literary cultures in fifteenth century Mithila.' The Indian Economic & Social History Review 51(1): 1–40. DOI: 10.1177/0019464613515549.

Jha, Pankaj. 2019. A Political History of Literature: Vidyapati and the Fifteenth Century. Oxford University Press. DOI: 10.1093/oso/9780199489558.001.0001.

Kumar, Lalit. 2022. 'Emergence of Novel in Maithili and Harimohan Jha's Kanyadan.' Indian Literature

66(3/329), May–June: 111–116. Sahitya Akademi.

Sah, Yugeshwar, and Aroonima Sinha. 2022. 'Challenges of Literary Translation with Reference to Maithili Literature: A Critique.' Ars Artium 10: 83–94.

Brown, Carolyn Henning. 1996. 'Contested Meanings: Tantra and the Poetics of Mithila Art.' American Ethnologist 23(4): 717–737. DOI: 10.1525/ae.1996.23.4.02a00030.

Pathak, Dev Nath. 2018. Living and Dying: Meanings in Maithili Folklore. Delhi: Primus Books. (Frank Korom द्वारा Journal of Folklore Research Reviews मे समीक्षा).

परिशिष्ट: सम्पूर्णता-जाँच

अनुक्रमसँ पृथक लेखक-खण्ड: 96। आरम्भिक भाषा/समर्पण खण्ड: ४। पद्य/परिशिष्ट मुख्य खण्ड: ४। संदेशकर्ता: 78। ऊपर लेखक-रचना खण्डमे प्रत्येक अनुक्रमित रचना 'रचना-परिसर' रूपमे दर्ज अछि।

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह सदेह ३० — सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा

निबन्ध

विषय, विधा आ साहित्यिक अनुभवक विवेचनात्मक अध्ययन

अध्याय 4 · सदेह १ सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा — [सभ साहित्यकारक रचनाक विवेचन, भारतीय आलोचना, पाश्चात्य सिद्धान्त, गंगेशक नव्य न्याय, विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा]

सारांश सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर] २. सम्पादकीय: गजेन्द्र ठाकुर विदेह अङ्कीय पत्रिकाक सम्पादक गजेन्द्र ठाकुरक सम्पादकीयसँ सदेह १

क प्रारम्भ होइत अछि। सम्पादकीयमे जानकारी देल गेल अछि जे १ जनवरी २००९ धरि विदेहक ७० टा देशसँ १,३६,८७४ बेर दर्शन कएल गेल।

नव्य न्यायक दृष्टिसँ: पक्ष विदेह मैथिलीक श्रेष्ठतम अङ्कीय मञ्च अछि; हेतु- वैश्विक पाठक-संख्या; व्याप्ति जे पत्रिका ७० देशसँ पढ़ल जाइत

अछि से प्रभावशाली होइत अछि; निर्णय विदेह मैथिलीकेँ वैश्विक बनौलक।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · नव्य-न्याय · रस-सिद्धान्त · पाश्चात्य आलोचना · इतिहास

[विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक अङ्कीय पत्रिका । वर्ष २, मास १३, अंक २५, १ जनवरी २००९ । सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर]

२. सम्पादकीय: गजेन्द्र ठाकुर

विदेह अङ्कीय पत्रिकाक सम्पादक गजेन्द्र ठाकुरक सम्पादकीयसँ सदेह १ क प्रारम्भ होइत अछि। सम्पादकीयमे जानकारी देल गेल अछि जे १ जनवरी २००९ धरि विदेहक ७० टा देशसँ १,३६,८७४ बेर दर्शन कएल गेल।

नव्य न्यायक दृष्टिसँ: पक्ष विदेह मैथिलीक श्रेष्ठतम अङ्कीय मञ्च अछि; हेतु- वैश्विक पाठक-संख्या; व्याप्ति जे पत्रिका ७० देशसँ पढ़ल जाइत अछि से प्रभावशाली होइत अछि; निर्णय विदेह मैथिलीकेँ वैश्विक बनौलक।

विदेह ढाँचा: 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली' अनुभाग विदेहक भाषानीतिक आधारशिला थीक। मिथिलाक्षर आ देवनागरी दुनूमे प्रकाशन समानान्तर इतिहास केर लोकतान्त्रिकीकरणक प्रतीक।

२.१ 'मैथिलीक मानक लेखन-शैली' अनुभाग

भाषाशास्त्र: सोस्युर केर भाषा-प्रणाली आ व्यवहार-प्रयोगक सन्तुलन। चॉम्स्की केर भाषा-नियोजन। नव्य न्यायक 'प्रमाण' भाषिक नियमक प्रमाण-आधार।

३. सभ साहित्यकारक समीक्षा

३.१. गंगेश गुंजन

रचना: 'राधा' (ग-पद्य मिश्रित), गजल, वैचारिक मंथन

साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता गंगेश गुंजन (मूल नाम: गंगेश्वर झा) मैथिलीक सर्वाधिक बहुआयामी रचनाकार छथि। 'उचितवक्ता' कथा-संग्रह, 'बुधिबधिया' नाटक, आ 'राधा' हुनकर प्रमुख कृति थीक।

भारतीय आलोचना: 'राधा'मे श्रृंगार-करुण रसक अद्भुत समागम। ध्वनि सिद्धान्तसँ राधा केवल भक्ति-काव्यक पात्र नहि, वैश्वीकरणक युगमे मैथिली-अस्मिताक रूपक थीक। वक्रोक्तिक सूक्ष्म प्रयोग 'कृष्ण निसाँमे छथि' सन पंक्तिमे शब्द-शक्तिक तीन स्तर एकसंग।

पाश्चात्य आलोचना: चेतना-प्रवाह शैलीमे राधाक आत्म-संभाषण भर्जिनिया वुल्फ केर तकनीकसँ मेल खाइत अछि। उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टिसँ 'मैथिलीक नामपर शहीद बनवाक उपक्रम' मैथिली-अस्मिताक हाशियाकरणक विरोध। स्त्रीवादी दृष्टिसँ राधा स्वायत्त विचारशील स्त्री थीक। नव समीक्षाक दृष्टिसँ 'राधा' एकटा आत्मनिर्भर पाठ थीक जेकर अर्थ पाठक-अनुभव पर निर्भर करैत अछि।

नव्य न्याय: 'राधा' काव्य थीक पक्ष; रस+ध्वनि+वक्रोक्ति तीनू विद्यमान- हेतु; विद्यापति पदावलीक समान दृष्टान्त; अतः उत्तम काव्य निर्णय।

विदेह ढाँचा: सरहपादसँ अर्वाचीनता धरि मैथिली साहित्यक अखण्ड धाराक प्रतिनिधि। फणीश्वरनाथ 'रेणु'क उद्धृत शब्द 'किछु छिनार छौरा सभक ई साहित्यिक यत्न' राहुल सांकृत्यायन परम्पराक विद्रोही चेतनाक प्रतीक अछि।

३.२. हृदय नारायण झा

हृदय नारायण झा मैथिली कवितामे सामाजिक-राजनैतिक चेतनाक प्रतिनिधि। रचना: लुप्तप्राय मैथिली लोकगीत। आकाशवाणीक बी-हाई-ग्रेड कलाकार। हिनकर लेख मैथिली लोकगीतक संरक्षण पर केन्द्रित।

भारतीय आलोचना: लोक-रसक महान वर्गीकरण, एहि सभमे करुण, श्रृंगार, भक्ति रसक समागम। साहेबदासक पराती 'अजहुँ भजन चित चेत मुगुध मन' मधुर भक्ति रसक उत्कृष्ट उदाहरण।

पाश्चात्य आलोचना: जातीय-संगीतशास्त्र दृष्टिसँ मैथिली लोकगीतक दस्तावेजीकरणक माँग। 'फिल्मी गीतक धुनमे भगवती गीत सभक चलन' लोकप्रिय संस्कृति बनाम मौलिक संस्कृति केर संघर्ष। वाल्टर बेन्यामिन केर 'यान्त्रिक पुनरुत्पादन' सिद्धान्तक आलोकमे लोकसंगीतक संकट।

भारतीय-पाश्चात्य समन्वय: वीर रस आ प्रतिरोध-कविता क संयोग हिनकर विशेषता। सामाजिक न्यायक माँग मार्क्सवादी साहित्य-चेतनासँ सुसंगत।

विदेह ढाँचा: मैथिली लोकगीतक श्रव्य-दृश्य दस्तावेजीकरणक आह्वान विदेहक अङ्कीय संग्रह प्रयासकेँ पूरक।

३.३. जितेन्द्र झा (जनकपुरधाम)

रचना: अंशुमाला साक्षात्कार, मैथिली सांस्कृतिक कार्यक्रम पर / बाढ़ि पर रिपोर्ताज

जनकपुरधाम, नेपालक जितेन्द्र झा मैथिली संगीतक वर्तमान अवस्थापर सूक्ष्म रिपोर्ताज तैयार कएने छथि।

सम्पूर्ण विवेचन: अंशुमाला (दिल्ली विश्वविद्यालयमे संगीतमे एम.फिल) केर साक्षात्कारक माध्यमसँ 'हम सभ अपने भाषाकेँ हेय दृष्टिसँ देखैत छी तें हमर भाषा-साहित्य, गीत-संगीत आ संस्कृति पछुआ रहल अछि।' उपहास बनाम मौलिक रचना, आर्थिक संकट आ रंगमंचमे महिलाक स्थान तीनू प्रश्न उठाओल गेल। मैथिली लोकरंग मञ्च, नेपाल वन टेलीभिजन, मधेश स्पेशल एहि माध्यमसँ मैथिलीक अङ्कीय पहुँच विदेह ढाँचाक विस्तार।

३.४. जितमोहन झा (जन्म: ०२/०३/१९८५)

रचना: 'कन्या भ्रूण हत्या कृतिक संग खिलवार' (लेख), भक्तिगीत

मुम्बईमे एक सीमित कम्पनीमे प्रतिष्ठित जितमोहन झाक लेख कन्या भ्रूण हत्याक समस्यापर।

भारतीय + पाश्चात्य: स्त्रीवादी + मार्क्सवादी दृष्टिसँ '...पितृसत्ताक विरुद्ध इएह विद्रोहक स्वर थीक।' 'कानून बनेलासँ निर्भयता नहि, स्वयं सामाजिक मानसिकता बदलब आवश्यक' ग्राम्शी केर वर्चस्व सिद्धान्तसँ मेल। भक्तिगीत 'हमरा पर कएलहुँ बड़ उपकार' शान्त रसक उदाहरण।

३.५. ज्योति (ज्योति झा चौधरी, जन्म: ३० दिसम्बर १९७८)

रचना: कविता (हाइकू सहित), मिथिला चित्रकला।

लन्डनवासी ज्योति झा चौधरी www.poetry.com सँ 'सम्पादकक चॉयस अवार्ड' प्राप्त। मिथिला चित्रकलामे पारंगत।

भारतीय आलोचना: अनेक हाइकू 'तारा दूरसँ बुझाइत कतेक शीतल, वास्तवमे जड़ैत' वक्रोक्तिक सूक्ष्म प्रयोग। 'गामक सूर्यास्त', 'विशाल समुद्र', 'अर्वाचीन जीवनदर्शन', 'बाल श्रम', 'विकास' करुण रस प्रधान।

पाश्चात्य आलोचना: बिम्बवाद (एज्रा पाउण्ड) केर आलोकमे ज्योतिक हाइकू- प्रत्येक हाइकू एकटा बिम्ब, एकटा क्षण। 'पतझड़क आगमन', 'कोमल पंखुड़ी', 'नटखट समुद्र' बिम्बवादी कविताक मैथिली प्रतिनिधि।

विदेह ढाँचा: लन्दनसँ मैथिली कविता विदेह समानान्तर इतिहासक वैश्विक विस्तार।

३.६. ज्योति प्रकाश लाल

रचना: 'आजुक समयमे कम्प्यूटर शिक्षाक महत्व' (निबन्ध)

जगतपुर, सुपौल (भारत)। विप्रो टेक्नोलोजी, हैदराबादमे सॉफ्टवेयर अभियन्ता।

समीक्षा: 'यदि अहाँ कम्प्यूटर नहि जानैत छी तँ अहाँ निरक्षर छी' यैह निबन्धक मूल प्रतिपाद्य। प्रौद्योगिकी-नियतिवाद क भारतीय-मैथिली सन्दर्भमे अनुप्रयोग। अङ्कीय डाक, कुरियरसँ डाकक विस्थापन सांस्कृतिक परिवर्तन केर मार्क्सवादी विवेचन। नव्य न्यायक दृष्टिसँ: कम्प्यूटर साक्षरता = अर्वाचीन जीवनमे प्रमेय। विदेह ढाँचासँ सङ्गत मैथिली अङ्कीय साक्षरता।

३.७. दिगम्बर झा 'दिनमणि'

रचना: कविता आ गीत।

समीक्षा: वीर रस आ सामाजिक प्रतिबद्धता हुनकर विशेषता। मैथिली काव्य-परम्परामे 'दिनमणि' नाम सार्थक प्रकाशक स्रोत। औचित्य सिद्धान्तसँ देखल जाय तँ जीवनक समस्या चित्रण हुनकर मुख्य विषय।

३.८. देवशंकर नवीन (जन्म: १९६२)

रचना: 'अदद्दी पेनकँ मजगुत करबाक आवश्यकता' (निबन्ध), उदाहरण (सम्पादन), राजकमल चौधरी पर आलोचना।

'ओ ना मा सी', 'चानन-काजर', 'राजकमल चौधरी (१९२९-१९६७) का रचनाकर्म' आलोचना-ग्रन्थ। 'उदाहरण' मैथिली कथा-संकलनक सम्पादन।

भारतीय आलोचना: मिथिलाक सांस्कृतिक विरासतक विश्लेषण 'अतिथि-सत्कारमे मिथिलाक लोक अपना घरक थाड़ी-लोटा धरि बँहकी राखि देलनि।' मैथिलीमे औचित्य सिद्धान्त परस्पर सम्मान, सेवाभावक परम्पराक सूक्ष्म विश्लेषण।

पाश्चात्य आलोचना: तुलनात्मक साहित्य केँ जोड़ैत नवीनजी एक नव समीक्षात्मक ढाँचा निर्मित करैत छथि। पाठान्तर्सम्बन्ध (जुलिया क्रिस्तेवा) एक रचनाकेँ दोसरसँ जोड़ैत विश्लेषण। उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टिसँ लेखन मिथिलाक उपेक्षित जन-जीवनक अधीनस्थ-स्वर थीक।

नव्य न्याय: 'मैथिलीमे प्रकाशनक अभावमे पत्र-पत्रिका छानि मारब कठिन' व्याप्ति-सिद्ध। नवीनजीक पद्धतिमे नव्य न्यायक 'अनुमान' क अनुप्रयोग स्पष्ट।

३.९. देवांशु वत्स

रचना: चित्र-शृंखला (हास्य-चित्रकथा) नताशा, पहिने मैथिलीमे चित्रकथा छल, नाटकमे दू दृश्यक बीचबला हास्य। हुनकर हास्य-चित्रकथाक आगमन।

नव पीढ़ीक आलोचक। मैथिली साहित्यक नव दृष्टिकोण। विदेह ढाँचा अङ्कीय माध्यमसँ मैथिली साहित्यक प्रसार।

३.१०. नागेन्द्र झा (पूर्णियाँ)

रचना: मोदानन्द झा 'पञ्जीकार' पर शोध-लेख

भारतीय + नव्य न्याय: पञ्जी-व्यवस्था मिथिलाक विवाह-सम्बन्धक तार्किक पद्धति। नव्य न्यायक 'व्याप्ति' केर व्यावहारिक उदाहरण वंश-सम्बन्धक नियमबद्ध ज्ञान। 'पञ्जीकारक राय बिना विवाह नहि' सामाजिक ज्ञान-मीमांसा। डी.एन.ए. अनुसन्धान आ पञ्जी-व्यवस्थाक अद्भुत साम्य पाश्चात्य विज्ञानसँ मेल।

३.११. निमिष झा

रचना: हाइकू। विद्यापतिपर आलेख। युवा कवि। नव संवेदनशीलताक काव्य।

३.१२ नीलिमा

रचना: भानस-भात। मखानक खीर, मेथीक परोठा, मुगलई कोबी, केसर पुलाव, मूरक परोठा। स्त्री-सृजनशीलता, मिथिलाक खानपान आ विश्वक खानपानक मेल।

स्त्रीवादी आलोचना: स्त्री-सृजन-समीक्षा (शावाल्टर) मैथिलीमे स्वतन्त्र महिला-खानपान लेखन परम्पराक प्रतिनिधि।

३.१३. नूतन झा

रचना: बराती-सत्कार। जानकी नवमीपर आलेख।

३.१४. पन्ना त्रिवेदी (गुजराती कविता)

रचना: कविता, महिला कवि, गुजराती कवि। विदेह ढाँचाक व्याप्ति।

३.१४. परमेश्वर कापड़ि

रचना: अपन-अपन माय। नेपाल-मैथिलीक साहित्यकार। खाँटी शब्दावली।

३.१५ पीयूष ठाकुर

रचना: गुजराती कविता।

३.१६. प्रकाश झा

रचना: बाल कविता।

३.१७ डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' (जन्म: २० जनवरी १९३८)

रचना: 'पञ्चदेवोपासक भूमि मिथिला' (शोध-निबन्ध)।

साहित्य अकादमी अनुवाद पुरस्कार (२००४) प्राप्त।

भारतीय आलोचना: पञ्चदेवोपासना (गणेश, विष्णु, सूर्य, शिव, भगवती) पर विद्वत्तापूर्ण निबन्ध। धार्मिक आस्थाक मानववैज्ञानिक विश्लेषण सप्तमातृका परम्परासँ दशमहाविद्या धरि मिथिलाक धार्मिक इतिहास।

पाश्चात्य आलोचना: सांस्कृतिक मानवविज्ञान + धार्मिक अध्ययन मिथिलाक पञ्चदेवोपासना भारतीय सम्मिलित संस्कृति केर उत्कृष्ट उदाहरण। लौरियानन्दनगढ़, जनकपुर, कुशेश्वर स्थान पुरातात्त्विक प्रमाण।

विदेह ढाँचा: नेपाल-भारत दुनूक मैथिली परम्पराकेँ एकत्र रखबाक विद्वत् प्रयास विदेह समानान्तर इतिहास केर आधारस्तम्भ।

३.१८. प्रीति ठाकुर

मैथिलीमे चित्रकथाक जन्मदाता, मिथिला चित्रकला आ अर्वाचीन चित्रकला दुनूक समावेश।

३.१९ डॉ. प्रेमशंकर सिंह (जन्म: १९४२)

रचना: शोध-लेख। मैथिलीक वरिष्ठ विद्वान-आलोचक। सदेह १मे हिनकर शोध-लेख "बीसम शताब्दी मैथिली साहित्यक स्वर्णिम युग"।

भारतीय आलोचना: निबन्ध-विधामे हिनकर ललित शैली मैथिली गद्यक सौन्दर्य-चेतनाकेँ प्रतिष्ठित करैत अछि। साहित्यिक शोधमे औचित्य सिद्धान्तक परिपालन।

३.२१ बिनीत ठाकुर (ललितपुर, नेपाल)

रचना: 'बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज' (गीत-संग्रह) मिथिलाक्षर आ देवनागरी दुनूमे।

मिथिलाक्षरमे प्रकाशन एहि पोथीकेँ विशिष्ट बनबैत अछि। नेपालक मैथिलीकेँ भारतीय धाराक संग जोड़बाक विदेह-प्रयास एहिसँ सिद्ध होइत अछि। लिपि संरक्षण + नेपालक मैथिलीकेँ भारतीय धारासँ जोड़बाक ऐतिण्हासिक प्रयास।

३.२२ बी.के. कर्ण (जन्म: १९६३)

रचना: 'संकट गुणक आ मैथिल' (आलेख)। भारतीय पैकेजिंग संस्थान, हैदराबादमे उपनिदेशक।

समीक्षा: मिथिलाक आर्थिक विकासक जोखिम विश्लेषण एकटा आँकड़ा-आधारित आलेख। 'मैथिल पलायनसँ मैथिलीक आकस्मिक अन्त' प्रवासी-अध्ययन। '५ जिलाक जनसंख्या' जनगणना तथ्यसँ साहित्यिक समाजशास्त्र। मार्क्सवादी दृष्टिसँ व्यापारी वर्गक अभावसँ मैथिल समाजक आर्थिक अवनति। नव्य न्यायक अनुमान सांख्यिकीय प्रमाणसँ सामाजिक निष्कर्ष।

३.२३. भरत माँझी

रचना: ओड़िया कविता, आदिवासी-दलित-चेतनाक कवि।

समीक्षा: दलित सौन्दर्यशास्त्र हाशियाक जनताक जीवन-संघर्षक काव्याभिव्यक्ति। अधीनस्थ-स्वर (स्पिवाक) मैथिली अनुवाद साहित्यमे आदिवासी-दलित अनुभवक सशक्त प्रस्तुति।

३.२४. मनोज मुक्ति

रचना: 'स्मिताक लड़ाई' (कविता)

नेपालक मैथिली राजनैतिक कवि।

समीक्षा: 'पशुपतिनाथक देशमे होइछ व्यभिचार सब भेषमे' रौद्र रस आ सामाजिक विद्रोह। मधेश आन्दोलनक साहित्यिक प्रतिनिधित्व अधीनस्थ राजनैतिक कविता। वीर रस 'सम्पूर्ण मैथिलमे नव चेतना भरैत, सबके लड़िहिटा पड़त।'

३.२५. महेन्द्र मलंगिया

रचना: नाटक, रंगमञ्च-निदेशन

'मैथिली नाटककारक रूपमे हमर ऊँचाइ धरि किओ नहि पहुँचि सकैत अछि।' स्वघोषित मैथिलीक शेक्सपियर। मूलधाराक ब्राह्मणवादी व्यक्ति केन्द्रित नाटककार।

भारतीय आलोचना: 'हम दर्शककेँ लक्षित कऽ नाटक लिखैत छी' जनरंजकता क सिद्धान्त। नाट्यशास्त्रक दर्शक-चेतनाक व्यावहारिक प्रयोग, मुदा ओइमे जातिवादी व्यंग्य जातिवादी सीमित दर्शक वर्गकेँ ध्यानमे राखि।

पाश्चात्य आलोचना: बर्तोल्ट ब्रेख्त केर महाकाव्यात्मक रंगमञ्च सँ तुलना दर्शककेँ सोचवाक लेल मजबूर करैत रंगमञ्च। मुदा जनकपुरमे मिथिला नाट्य कला परिषदसँ सीमित दर्शक आ लक्ष्य समूह दिल्ली धरि। मूलधाराक मैथिली नाटक सामुदायिक रंगमञ्च केर प्रसारमे बाधा।

विदेह ढाँचा: जितेन्द्र झा जनकपुरक आलेखमे 'जावत धरि हमर कलम चलैत रहत ताधरि मैथिली नाटककारक रूपमे हमर सिंहासन अटल।' आदि मूलधाराक आत्ममुग्ध रचनाकारक विशेषता। नेपालमे मैथिली रंगमञ्चक समानान्तर इतिहास जेना उपेन्द्र भगत नागवंशी, सरोज खिलाड़ी, भ्रमर आदि हुनकर मूलधाराक

विरुद्ध ठाढ़।

३.२६. मायानन्द मिश्र

रचना: 'अहाँ की छी' (कविता), सदेह १ मे हिनकर साक्षात्कार (डॉ शिव प्रसाद यादव द्वारा) आ 'मिथि-मालिनी' पत्रिकाक प्रसंगमे हिनकर दृष्टिकोण प्रस्तुत भेल अछि।

विदेह ढाँचा: 'मिथि-मालिनी'सँ जुड़ल हिनकर दृष्टि 'स्थानीय लेखक-मण्डलकेँ अधिकाधिक प्रोत्साहन भेटक चाही' विदेह ढाँचाक लोकतान्त्रिक साहित्य-निर्माणक आदर्शसँ सुसंगत अछि। 'मिथि-मालिनी' पत्रिकाक माध्यमसँ स्थानीय साहित्यिक मञ्च विदेह समानान्तर इतिहास केर पूर्ववर्ती प्रयास।

३.२७. डॉ. मित्रनाथ झा (जन्म: १९५६)

रचना: 'विदेह-वैभव' (कविता)। मिथिला शोध संस्थान, दरभंगामे पाण्डुलिपि विभागाध्यक्ष।

भारतीय आलोचना: 'विदेह-वैभव' 'विद्या-वैभव केर गरिमासँ सर्वथा पुक्त जे सिद्ध भूमि' वीर + शान्त रसक समागम। मिथिलाक दार्शनिक-साहित्यिक विरासतपर गर्व-गान।

विदेह ढाँचा: 'भग्न चिन्तन' कविता 'लेखनीक आइ दुर्दशा देखि एकान्त मौन भए कनैत छी' लेखकक सामाजिक उत्तरदायित्वक स्वीकृति।

३.२८. मुखीलाल चौधरी (बुटवल, नेपाल)

रचना: 'समझौता नेपाल भोर' गीति-एल्बमक समीक्षा, नेपाली मैथिली संगीत-आन्दोलनक समीक्षक।

समीक्षा: नेपालक संघीय गणतन्त्रक प्रारम्भिक दौरमे मैथिली गीतक भूमिकाकेँ रेखांकित करैत 'भोर' एल्बमक समीक्षा। 'जतय हिन्दुओ राखि ताजिया, मान दिअए इस्लामके' साम्प्रदायिक सद्भावक गीत सहिष्णुता। रूपा झा, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, राजेन्द्र विमल आदिक गीतक तुलनात्मक विश्लेषण।

३.२९. डॉ. पालन झा

रचना: आध्यात्मिक निबन्ध, साहेब रामदास।

भारतीय आलोचना (भारतीय समीक्षा): वैदिक दर्शन 'निष्काम कर्म' (गीता अध्याय १८) केर सरल मैथिली व्याख्या संग साहेब रामदासक ४७८ पदक विश्लेषण - भक्ति रसक सभ स्तर। 'मधुरं रस' - कृष्ण-भक्तिक चरम अभिव्यक्ति।

नव्य न्याय (नव्य-न्याय): वेद-उपनिषदक 'प्रमाण' (ज्ञानक साधन) विवेचन - तत्त्वचिन्तामणिक दार्शनिक परम्पराक आलोकमे। मोक्ष-मार्गक तार्किक विश्लेषण।

विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: मिथिलाक आध्यात्मिक परम्पराक संरक्षण - समानान्तर इतिहास मे धार्मिक-सांस्कृतिक आयाम।

३.३०. डा. रमानन्द झा 'रमण'

रचना: 'बहुत दिनक बाद मिथिलाक ग्रामांचलमे सगर रातिक दीप जरयक आयोजन'

मैथिलीक 'सगर रातिक दीप जरय' आन्दोलनक इतिहासकार। 'सगर रातिक दीप जरय' अद्यतन आन्दोलनक इतिहासकार आब छथि उमेश मण्डल। दुनू गोटेक 'सगर रातिक दीप जरय’ क इतिहास विदेह पेटारमे उपलब्ध अछि।

समीक्षा:

'सगर रातिक दीप जरय' मैथिली कथाक सामूहिक उद्यम। सामूहिक स्मृति (Maurice Halbwachs) सामुदायिक स्मृतिक साहित्यिक दस्तावेज, २००८ मे रहुआ संग्राम मे अशोक कुमार झा ’अविचल’ द्वारा एकर आयोजन भेल छल। विदेह parallel history एहि आन्दोलनकेँ कमजोर करयबला पक्षकेँ उजागर कएलक।

[ई पुछलापर जे तखन विभूति आनन्द, हीरेन्द्र कुमार झा, दमन कुमार झा आ अशोक कुमार मेहता केना १११म सगर राति दीप जरयमे पहुँचला, तँ ओ सभ सूचित केलनि जे तइ लेल ऐ चारू गोटेक करार अशोक अविचलसँ भेलन्हि जे ओ एकरा ११२ म सगर राति दीप जरय लिखता, मुदा ओ कोनो आमंत्रणमे से नै केलन्हि आ बैनरपर ऊपरमे छोट सन 'क्रम ११२' लिखलन्हि। तइपर संचालक हीरेन्द्र कुमार झा क उसकेलापर अध्यक्ष विभूति आनन्द समेत दमन कुमार झा आ अशोक कुमार मेहता २-३ घण्टा बाद खा पी कऽ ओतऽ सँ प्रस्थान कऽ गेला, मुदा समानान्तर धाराक सभ कथाकार भोर धरि गोष्ठीमे रहि एकरा सफल बनबेलन्हि। एतऽ ई स्पष्ट कऽ दी जे ई कृत्य हीरेन्द्र कुमार झा पहिनहियो केने छथि जे विदेहमे अभिलेखित अछि [८९म सगर राति दीप जरय, औरहा (लौकही), १५.५.२०१३,

संयोजक- उमेश पासवान; हीरेन्द्र झा द्वारा क्रमांक ९० नै केलापर गोष्ठीक बहिष्कार आ हुनका उसकेलापर अशोक कुमार मेहता सेहो बहिष्कार केलनि]। एतऽ ईहो स्पष्ट कऽ दी जे हीरेन्द्र कुमार झा लूज टॉक करैमे माहिर छथि आ अपना सङे आयल लोकक विषयमे, कनियो जँ ओ सभ एम्हर-ओम्हर गेला, तँ ढाकीक ढाकी विषवमन करै छथि। संगहि ईहो स्पष्ट कऽ दी जे समानान्तर धाराक लेखक लोकनिक सगर राति दीप जरयमे आगमनसँ पूर्व, जखन हीरेन्द्र कुमार झा सभक बोलबाला छलन्हि, गोष्ठीमे सभ खा पी कऽ सूति जाइ छला आ मात्र कथा पढ़निहार असगरे जागल रहै छला, जकर विरोधमे आशीष अनचिन्हार कथा पढ़बासँ मना कऽ देने रहथिन्ह, मुदा मूलधारा भोरमे जे न्यूज देलक तइमे ई गप नै आयल। ई सभटा खेरहा हमर पोथी प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना भाग-२ मे अभिलेखित कएल गेल अछि जे उपलब्ध अछि http://videha.co.in/pothi.htm पर। साहित्य अकादेमी द्वारा गत दस बर्खसँ समानान्तर धाराक एकमात्र स्थल सगर राति दीप जरय कैँ गीड़ि लेबाक प्रयास कएल जा रहल अछि। आगामी ११२म 'सगर राति दीप जरय'क आयोजन श्री रामचन्द्र रायक संयोजकत्वमे हुनक पैतृक गाम- सहुरिया (अन्धराठाढ़ी) मे 'मार्च' २०२३ मासक अन्तिम शनि दिन हएत, से सर्वसम्मतिसँ निर्धारित भेल। हीरेन्द्र कुमार झा अपन ब्लैकमेलिंग आगाँ सेहो पूर्ण निष्ठासँ जारी राखलनि जखन ०२.०१.२०२३ कैँ रामचन्द्र रायकैँ फोन कऽ आगामी गोष्ठीक क्रमांक ११२ नै ११३ करबाक दुष्टतापूर्ण ब्राह्मणवादी आग्रह केलन्हि आ डरेलन्हि, जइ सँ कोनो तरहेँ साहित्य अकादेमीक गोष्ठीकैँ सगर राति दीप जरयक मान्यता भेटि जाय, फेर ०५.०१.२०२३कैँ घट्टी मानलन्हि। साहित्य अकादेमी हुनकर दस बर्खसँ जारी ऐ कुत्सित प्रयासक मेहनताना दैत हेतन्हि आ जँ नै देने छन्हि तँ आगाँ देतन्हि। विदेहक आगामी साहित्यिक भ्रष्टाचार विशेषांक मे सभ गपक खुलासा हएत।

ऐ सम्बन्धमे ई स्पष्ट कऽ दी जे अशोक अविचल ऐ गोष्ठीक आयोजन पूर्ण रूपसँ व्यक्तिगत रूपेँ केने रहथि। दिल्लीक साहित्य अकादेमीक गोष्ठी जे टैगोरक १५० जयन्ती बर्खमे आयोजित भेल आ जकरा साहित्य अकादेमी अपन वार्षिक रिपोर्ट आ आय-व्यय खातामे अपन गोष्ठीक रूपमे वर्णित केलक आ तकर पाइक वितरण देखेलक आ ऑडिटरसँ अप्रूव करेलक, जे सही मदमे टैगोरक कार्यक्रम लेल खर्च भलै (सगर राति दीप जरय लेल नै) कैँ सगर राति दीप जरयक रूपमे मान्यता देबा लेल मूल धाराक पुरस्कार/ असाइनमेण्ट लोलुप आ ब्राह्मणवादी लोक गत दस बर्खसँ अपस्याँत छथि, से एक बेर फेर असफल भेल। -(विदेह अंक ३६२ सम्पादकीय)]

साहित्य अकादेमीक मैथिली विभाग आ आन सरकारी आ गएर सरकारी ब्राह्मणवादी संस्था सभसँ लाभान्वित आ ओकरा सभक शहपर हीरेन्द्र झा आदि द्वारा दरभंगामे २९.०६.२०२४ शनि ३०.०६.२०२४ (रवि) कैँ एकर अपहरण कऽ लेल जेबाक एक बेर फेर साजिश भेल। जखन माला उठबै लेल प्रस्ताव अबै छै तखन ओइपर सभ कथाकारसँ मत मांगल जाइ छै, मुदा से नै भेलै एतऽ। ब्राह्मणवादी कथाकार सभ हीरेन्द्र झा केर संग साजिशमे शामिल भऽ गेला, वा रमेश आदि कथाकार सन बौक बनल रहला, जेना द्रौपदी चीरहरण मे भीष्म आ द्रोण बौक भऽ गेल रहथि। उमेश मण्डल रमेशक कथा “कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो” पढ़ने छथि [देखू विदेह अंक ४४१- गजेन्द्र ठाकुर- मैथिली लेल दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र-२ (संदर्भ: प्रभास कुमार चौधरीक 'इन्द्रधनुष', अशोकक 'प्रतिलोम' आ रमेशक 'कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो'/ दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र, भारतीय समीक्षाशास्त्र, पाश्चात्य समीक्षाशास्त्र, गंगेशक नव्य न्याय आ विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्कक परिप्रेक्ष्यमे)] आ हुनका भ्रम रहन्हि जे कमसँ कम रमेश एकर विरोध करता; ओ हुनकासँ हस्तक्षेप करबाक आग्रहो केलन्हि, मुदा रमेश मूड़ी गोति लेलन्हि।

[*आचार्य रामानंद मंडल – (सगर राति दीप जरय दरभंगा विवाद)*

सगर राति दीप जरय दरभंगा आयोजन शुरूये से विवादित भे गेल रहल हय। कि ई कार्यक्रम दिन मे होय।अइला कि रात मे कुछ लोग बारह बजे के बाद सुत रहय हय।महिला आ वृद्ध पुरुष के भाग लेवै मे दीक्कत होइ हय। आउर कुछ लोग त पोथी लोकार्पण के बाद अपन घर चल जाइत हय। अंतोगत्वा सगर राति दीप जरय छौ बजे सांझ से छौव बजे सुबह तक आयोजित भेल। आगंतुक कथाकार के संयोजक द्वय साहित्यकार अशोक कुमार मेहता आ साहित्यकार हीरेन्द्र झा स्वागत करैत रहलन। कार्यक्रम के शुरूआत दीप प्रज्ज्वलन से भेल। दिवंगत मिथिला -मैथिली विभूति के श्रद्धांजलि अर्पित कैल गेल। पोथी लोकार्पण कैल गेल। साहित्यकार डॉ महेंद्र नारायण राम के अध्यक्षता में संचालन साहित्यकार कमल मोहन चुन्नू जी कैलन। साहित्यकार भीम नाथ झा उद्बोधन कैलन। महराजा कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति जी वैदिक कथा से लेके आधुनिक कथा पर प्रकाश डाल लैन।तीन गो पंजी बनल रहय।दू गो पर हस्ताक्षर आ एगो पर कथा पाठ के विवरण। परंपरागत रूप से पहिले एकैटा पंजी में उपस्थिति आ कथा पाठ दर्ज़ होइत रहल हय। कार्यक्रम के शुरूआत वरीय कथाकार के कथा बाचन से प्रारम्भ भेल। यथा -साहित्य अकादमी से पुरस्कृत जगदीश प्रसाद मंडल के कथा आदि। त्वरित समीक्षो भेल। कथा पाठ आ समीक्षा चलैत रहल। मध्यांतर मे भोजन भेल। भोजनोपरान्त कथा पाठ आ समीक्षा होइत रहल।कुल ४४ कथाकार ४५ कथा के पाठ कैलन। त्वरित कथा समीक्षा भेल। समीक्षा आ समीक्षा शैली आ हाव भाव से कुछ कथाकार असहमत आ रंज देखल गेल। अंत मे सगर राति दीप जरय के अगिला कार्यक्रम के लेल बिना प्रस्ताव पारित के अध्यक्ष द्वारा घोषणा कैल गेल कि अगिला कार्यक्रम साहित्यकार कमल मोहन चुन्नू जी के संयोजकत्व में पटना मे आयोजित होयत।वरीयतम साहित्यकार जगदीश प्रसाद मंडल जी अइसे असहमति जतैलन।परंच कार्यक्रम के संयोजक साहित्यकार हीरेन्द्र झा दीप साहित्यकार कमल मोहन चुन्नू के सौंप देलैन। दीप हस्तांतरण मे संयोजक साहित्यकार अशोक कुमार मेहता अनुपस्थित रहलन।साहित्यकार जगदीश प्रसाद मंडल अनेक साहित्यकार संग कार्यक्रम के बहिष्कार क देलन। कार्यक्रम आ साहित्यकार के अंतिम फोटो शेसन न भेल। सगर राति दीप जरय साहित्यकार के अखाड़ा बन गेल आ दीप बन गेल ट्राफी।- -आचार्य रामानंद मंडल, सीतामढ़ी।]

सगर राति दीप जरय पहिल सँ अखन धरिक कथा यात्रा

१. मुजफ्फरपुर, २१.०१.१९९०, प्रभास कुमार चौधरी; २. डेओढ़, २९.०४.१९९०, जीवकान्त; ३. दरभंगा, ०७.०७.१९९०, डॉ. भीमनाथ झा, प्रदीप मैथिली पुत्र, विजयकान्त ठाकुर; ४. पटना, ३.११.१९९०, गोविन्द झा, दमनकान्त झा; ५. बेगुसराय, १३.०१.१९९१, प्रदीप बिहारी; ६. कटिहार, २२.०४.१९९१, अशोक; ७. नवानी, २१.०७.१९९१, मोहन भारद्वाज; ८. सकरी, २२.१०.१९९१, प्रो. सुरेश्वर झा, डॉ. राम बाबू; ९. नेहरा, ११.१०.१९९२, ए.सी. दीपक; १०. विराटनगर, १४.०४.१९९२, जीतेन्द्र जीत; ११. वाराणसी, १८.०७.१९९२, प्रभास कुमार चौधरी; १२. पटना, १९.१०.१९९२, राजमोहन झा; १३. सुपौल- १, १८.१०.१९९३, केदार कानन; १४. बोकारो, २४.०४.१९९३, बुद्धिनाथ झा; १५. पैटघाट, १०.०७.१९९३, डॉ. रमानन्द झा 'रमण' ; १६. जनकपुर, ०९.१०.१९९४, रमेश रंजन; १७. इसहपुर, ०६.०२.१९९४, डॉ. अरविन्द कुमार 'अक्कू'; १८. सरहद, २३.०४.१९९४, अमिय कुमार झा; १९. झंझारपुर, ०९.०७.१९९४, श्यामानन्द चौधरी; २०. घोघरडीहा, २२.१०.१९९४, डॉ. नारायणजी; २१. बहेरा, २१.०१.१९९५, कमलेश झा; २२. सुपौल (दरभंगा) , ०८.०४.१९९५, कमलेश झा; २३. काठमांडू, २३.०९.१९९५, धीरेन्द्र प्रेमर्षि; २४. राजविराज, २४.०१.१९९६, रामनारायण देव; २५. कोलकाता (रजत जयंती, २८.१२.१९९६), प्रभास कुमार चौधरी; २६. महिषी, १३.०४.१९९७, डॉ. तारानन्द वियोगी/ रमेश प्रायोजित; २७. तरौनी, २०.०६.१९९७, शोभाकान्त; २८. पटना, १८.०७.१९९७, प्रभास कुमार चौधरी; २९. बेगूसराय, १३.०९.१९९७, प्रदीप बिहारी; ३०. खजौली, ०४.०४.१९९८, प्रदीप बिहारी; ३१. सहरसा, १८.०७.१९९८, रमेश; ३२ पटना, १०.१०.१९९८, श्याम दरिहरे; ३३. बलाइन; नागदह, ०८.०१.१९९९, पदम सम्भव; ३४. भवानीपुर, १०.०४.१९९९, डॉ. जिष्णु दत्त मिश्र; ३५. मधुबनी, २४.०७.१९९९, सियाराम झा 'सरस', डॉ. कुलधारी सिंह; ३६. अन्दौली, २०.१०.१९९९, कमलेश झा; ३७. जनकपुर, २५.०३.२०००, रमेश रंजन; ३८. काठमांडू, २५.०६.२०००, धीरेन्द्र प्रेमर्षि; ३९. धनबाद, २१.१०.२०००, श्याम दरिहरे एवं रामचन्द्र लालदास; ४०. बिटठो, २१.०१.२००१, डॉ. अक्कू, प्रो.विद्यानन्द झा; ४१. हटनी (घोघरडीहा), १९.०५.२००१, प्रो. योगानन्द झा/अजित कु.आजाद; ४२. बोकारो, २५.०८.२००१, गिरिजानन्द झा 'अर्धनारीश्वर', मिथिला सा. परिषद्; ४३. पटना, किरणजयंती, ०१.१२.२००१, अशोक, चेतना समिति, पटना; ४४. राँची, १३.०४.२००२, कुमार मनीष अरविन्द; ४५. भागलपुर, २४.०८.२००२, धीरेन्द्र मोहन झा; ४६. पटना, (विद्यापति भवन पटना), १६.११.२००२, अजित कुमार आजाद; ४७. कोलकाता, २२.०१.२००३, कर्णगोष्ठी, कोलकाता; ४८. खुटौना, ०७.०६.२००३, डॉ. महेन्द्र नारायण राम; ४९. बेनीपुर, २०.०९.२००३, कमलेश झा; ५०. दरभंगा, २१.०२.२००४, डॉ. अशोक कुमार मेहता; ५१. जमशेदपुर, १०.०७.२००४, डॉ. रवीन्द्र कुमार चौधरी; ५२. राँची, ०२.१०.२००४, विवेकानन्द ठाकुर ; ५३. देवघर, ०८.०१.२००५, श्याम दरिहरे एवं अविनाश; ५४. बेगूसराय, ०९.०४.२००५, प्रदीप बिहारी; ५५. पूर्णियाँ, २०.०६.२००५, रमेश; ५६. पटना, ०३.११.२००५, अजीत कुमार आजाद; ५७. जनकपुर (नेपाल) , १२.०८.२००६, रमेश रंजन; ५८. जयनगर, ०२.१२.२००६, नारायण यादव; ५९. बेगूसराय, १०.०२.२००७, प्रदीप बिहारी; ६०. सहरसा, २१.०७.२००७, किसलय कृष्ण; ६१. सुपौल-२, ०१.१२.२००७, अरविन्द ठाकुर; ६२. जमशेदपुर, ०३.०५.२००८, डॉ. रवीन्द्र कुमार चौधरी; ६३. राँची, १९.०७.२००८, कुमार मनीष अरविन्द; ६४. रहुआ संग्राम (मधुबनी), ०८.११.२००८, डॉ. अशोक अविचल; ६५. पटना, कथा गंगा-३, २१.०२.२००९, अजित कुमार आजाद/ चेतना समिति; ६६. मधुबनी, ३०.०५.२००९, दिलीप कुमार झा; ६७. समस्तीपुर, ०५.०९.२००९, रमाकान्त रय 'रमा'; ६८. सुपौल- ३, ०५.१२.२००९, अरविन्द ठाकुर; ६९. जनकपुर, ०३.०४.२०१०, राजाराम सिंह 'राठौर'; ७०. कबिलपुर (दरभंगा) , १२.०६.२०१०, डॉ. योगानन्द झा; ७१. बेरमा (झंझारपुर), ०२.१०.२०१०, जगदीश प्रसाद मण्डल, स्थानीय साहित्य प्रेमी; ७२. सुपौल, ०४.१२.२०१०, अरविन्द ठाकुर; ७३. महिषी, कथा राजकमल, ०५.०३.२०११, विजय महापात्र; ७४. हजारीबाग, १०.०९.२०११, श्याम दरिहरे; ७५. पटना, हीरक जयन्ती, १०.१२.२०११, अशोक एवं कमलमोहन 'चुन्नु'; ७६.चेन्नै, १४.०७.२०१२, विभा रानी; ७७. दरभंगा, किरण जयन्ती, ०१.१२.२०१२, अरविन्द ठाकुर ; ७८. घनश्यामपुर, ०९.०३.२०१३, कमलेश झा; ७९. औरहा (लौकही), १५.५.२०१३, उमेश पासवान; ८०. निर्मली (सुपौल), ३०.११.२०१३, उमेश मण्डल, स्थानीय साहित्य प्रेमी; ८१. देवघर, (बिजली कोठी, बम्पासटॉन, देवघर), २२.०३.२०१४, ओम प्रकाश झा; ८२. मेंहथ, (झंझारपुर), कथा बौध सिद्ध मेहथपा, ३१.०५.२०१४, गजेन्द्र ठाकुर; ८३. सखुआ-भपटियाही, ३०.०८.२०१४, नन्द विलास राय/फागुलाल साहु/सूरज नारायण राय 'सुमन'; ८४. बेरमा (मधुबनी), २०.१२.२०१४, शिवकुमार मिश्र, स्थानीय साहित्य प्रेमी; ८५. भागलपुर, (श्याम कुंज, द्वारिकापुरी भागलपुर), ०४.०४.२०१५, ओम प्रकाश झा ; ८६. लकसेना (मधुबनी), २०.०६.२०१५, राजदेव मण्डल 'रमण', सत्यदेव 'सुमन' ; ८७. निर्मली (सुपौल), १९.०९.२०१५, उमेश मण्डल, स्थानीय साहित्य प्रेमी ; ८८. मध्य विद्यालय- डखराम (बेनीपुर), ३०.०१.२०१६, कमलेश झा, अमर नाथ झा ; ८९. लौकही, २६.०३.२०१६, उमेश पासवान एवं प्रेम कुमार साहु; ९०. लक्ष्मीनियाँ (मधुबनी), १८.०६.२०१६, राम विलास साहु, स्थानीय साहित्य प्रेमी; ९१. गोधनपुर (मधुबनी) २४.९.२०१६, दुर्गानन्द मण्डल; ९२. नवानी (मधुबनी), ३१.१२.२०१६, अजय कुमार दास 'पिन्टु'; ९३. रतनसारा (घोघरडीहा), २५.०३.२०१७, राजदेव मण्डल, स्थानीय साहित्यानुरागी ; ९४. लौफा (मधेपुर), २४.०६.२०१७, डॉ. योगेन्द्र पाठक वियोगी, स्थानीय प्रेमी ; ९५. जलसैन डुमरा (मधुबनी), ०९.९.२०१७, नारायण यादव; ९६. धबौली (लोकही), १६.१२.२०१७, राधाकान्त मण्डल ; ९७. बेरमा (लखनौर), २४.३.२०१८, कपिलेश्वर राउत, बेरमा ग्रामवासी ; ९८. सिमरा (झंझारपुर), १६.६.२०१८, डॉ. शिव कुमार प्रसाद ; ९९. मुरहद्दी, (बड़की टोल), २२.९.२०१८, प्रो. प्रीतम निषाद , १००. निर्मली (तेरापंथ भवन), २२.१२. २०१८, उमेश मण्डल, नवरत्न वेंगानी, मनीष जालान ; १०१. झिटकी (मधुबनी), ३०.३.२०१९, भारत भूषण झा ; १०२. मझौरा, (मधुबनी), २९.०६.२०१९, जय प्रकाश मण्डल, आलोक कुमार; १०३. रामपुर (मधुबनी), २८.९.२०१९, उमेश नारायण कर्ण 'कल्प कवि' ; १०४. वलम नगर-महदेवा (लौकही), १४.१२.२०१९,प्रेम कुमार साहु,उमेश पासवान; १०५.दरभंगा (सीतायन सभागार), १३.०२.२०२१, कमलेश झा ; १०६. हटनी (घोघरडीहा, मधुबनी), २५.०९.२०२१, लालदेव कामत; १०७. बेलहा (फुलपरास), २५.१२.२०२१, जीवकान्तक स्मृतिमे, उमेश मण्डल, ई. शैलेन्द्र मण्डल; १०८. मधुरा (मधुबनी), २६.०३.२०२२, डॉ. श्रीशंकर झा; १०९. ननौर (मधुबनी), २५.०६.२०२२, प्रदीप

पुष्प; ११०. सोनवर्षा (लौकही), २४.०९.२०२२, अच्छेलाल शास्त्री, स्थानीय साहित्य प्रेमी; १११. रहुआ संग्राम (मधुबनी) ३१.१२.२०२२, अशोक अविचल; ११२. नवटोली (शिवा पंचायत, अन्धरा ठाढ़ी) २५.०३.२०२३ श्री राम चन्द राय; ११३. नहरी (खुटौना), २५.०६,२०२३, श्री नारायण यादव, श्री ललन कु. सल्हैता; ११४. नरहिया (लौकही), ०१.१०.२०२३, श्री राम विलास साहु; ११५. बेरमा (झंझारपुर), ३०.१२.२०२३, श्री कपिलेश्वर राउत, श्री ब्रह्मानन्द प्रसाद; ११६. निर्मली (सुपौल), श्यामा कम्पलेक्स सह विवाह हॉल, २३.०३.२०२४, डॉ. उमेश मण्डल, श्री अखिलेश कु. चौधरी; ११७. दरभंगा, २९.०६.२०२४, हीरेन्द्र कुमार झा, डॉ. अशोक मेहता; ११८. रतनसारा (फुलपरास) २१.०९.२०२४, दुर्गानन्द मण्डल, राजीव कुमार, शिव कुमार राय; ११९. सहरसा (अभिनव विवाह भवन, विद्यापति नगर, सहरसा), २८.१२.२०२४, गोसाँई मण्डल, रामेश्वर प्रसाद मण्डल आ दिग्विजय कुमार सिंह; १२०. मधुबनी, स्थान: सुधीर मेमोरियल हॉल, रीजनल सेकेण्डरि स्कूल, ०५.०४.२०२५, प्रो. (डॉ.) शुभ कुमार वर्णवाल, डॉ. राज कुमार भारती, डॉ. राम शृंगार पाण्डेय; १२१. केवटना, स्थान: उत्क्रमित मध्य सह +2 उच्च माध्यमिक विद्यालय परिसर, केवटना, घोघरडीहा, मधुबनी (बिहार), २८.०६.२०२५, श्री नारायण प्रसाद सिंह, कुमार राजीव रंजन, घनश्याम चौधरी; १२२. निर्मली (सुपौल), २०.०९.२०२५, ई. आशुतोष कुमार, प्रो. (डॉ) जय प्रकाश साहु; १२३. शिवनगर (निर्मली), २७.१२.२०२५, प्रो. राम सेवक सिंह, श्री कपिलेश्वर प्रसाद सिंह; १२४. नरहिया (लौकही), २८.०३.२०२६, श्री उमेश पासवान; १२५. मझौरा, (राजनगर) [जून २०२६ मे प्रस्तावित] ।

३.३१. राजेन्द्र पटेल

रचना: गुजराती कविता

(संकलनमे गुजराती कविताक समावेश - विदेह केर अन्तर-भाषिक विस्तार केर प्रतीक)

३.३२. राजेन्द्र विमल

रचना: गीत ('जगमग ई सृष्टि करए, तखने दीवाली छि')

परिचय: वरिष्ठ साहित्यकार-गीतकार।

समीक्षा (विवेचना): 'राम-शक्ति आगुमे, रावण ने टिकि सकत' - वीर रस। 'प्रेम चेतना जागि पड़ए' - सामाजिक आशावाद। भक्ति-काव्य परम्परासँ लोक-जागरणक गीत - विद्यापति परम्पराक आधुनिक विस्तार।

३.३३. डा. राम दयाल राकेश

रचना: 'छठ पाबनि' (सांस्कृतिक निबन्ध)

परिचय: संस्कृतिविद् आ मैथिली-हिन्दी लेखक।

भारतीय + पाश्चात्य समीक्षा (भारतीय + पाश्चात्य विवेचना): छठ पाबनिक मानववैज्ञानिक विश्लेषण - 'सूर्यकेँ अर्घ्य देबाक प्रथा जाति-धर्म समभावक सुरक्षा' - सामाजिक समावेश। सांस्कृतिक मानवविज्ञान (क्लिफर्ड गीर्ज) - सघन-विवरण। नदीमे ठाढ़ भऽ सूर्यकेँ अर्घ्य - पर्यावरण-आध्यात्मिकता। मधेसी सांस्कृतिक पहिचान पर विद्वत्तापूर्ण विवेचन। मानवविज्ञान आ सांस्कृतिक अध्ययन केर दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण।

३.३४. राम नारायण देव

रचना: कविता

(संकलनमे कविताक समावेश)

३.३५. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' (जन्म: १९५१)

रचना: अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन आ नेपाल, फ्लैश बैक (कथा)

परिचय: नेपालक जनकपुरधामक वरिष्ठ साहित्यकार रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' मैथिलीक महत्त्वपूर्ण स्तम्भकार छथि।

विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: नेपाल-भारत दुनूक मैथिलीकेँ एक सूत्रमे पिरोएबाक प्रयास - विदेहक नेपाली प्रतिनिधि। नेपाल-भारत दुनूक मैथिली साहित्यकेँ एक सूत्रमे पिरोएबाक जे विदेह-प्रयास थीक, 'भ्रमर' जी ओहि प्रयासक एकटा नेपाली प्रतिनिधि छथि।

३.३६. रामलोचन ठाकुर

रचना: 'पास करबाक लेल' कविता, किछु हाइकू

परिचय: वरिष्ठ मैथिली कवि।

समीक्षा (विवेचना): क्षेमेन्द्रक औचित्य सिद्धान्त - भावक उचित प्रस्तुति। काव्यात्मक स्वर।

३.३७. रामजी चौधरी

रचना: विविध भजनावली

(भक्ति रस प्रधान रचना सभक संग्रह)

३.३८. रामान्य झा 'रामरंग' (स्वर्गीय) - प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे

रचना: विद्यापति संगीत-परम्पराक साक्षात्कार

परिचय: 'रामरंग' जी मैथिली संगीत-परम्पराक महान ज्ञाता। गंगेश गुंजन जीद्वारा आ गजेन्द्र ठाकुर द्वारा मृत्युपूर्व लेल गेल अन्तिम साक्षात्कार। 'रामरंग' जी मैथिली संगीत-परम्पराक महान ज्ञाता छलाह। सदेह १ मे प्रकाशित हिनकर अन्तिम साक्षात्कार विद्यापति-संगीत पर अत्यन्त मूल्यवान दस्तावेज़ थीक।

भारतीय आलोचना (भारतीय समीक्षा): श्रृंगार + भक्तिक अद्भुत समागम। रसक दृष्टिसँ 'विद्यापति संगीत लोकरंजनक हेतु उच्चकोटिक एवं गायन के वास्ते बनल छैक' - यैह जन-रंजकता (लोकरस) क परिभाषा थीक। श्रृंगार आ भक्ति रसक अद्भुत समागम विद्यापतिमे मिलैत अछि।

पाश्चात्य आलोचना (पाश्चात्य समीक्षा): जातीय-संगीतशास्त्र - क्षेत्रीय सङ्गीत परम्पराक संरक्षण। भूमण्डलीकरण केर खतरासँ मैथिली संगीतकेँ बचेबाक आग्रह - सांस्कृतिक संरक्षण। जातीय-संगीतशास्त्र केर दृष्टिसँ विद्यापति-संगीत क्षेत्रीय सङ्गीत परम्पराक उत्कृष्ट उदाहरण थीक। भूमण्डलीकरण ('उपभोक्तावाद, बाजारवाद, भू-मण्डलीकरण') केर खतरासँ मैथिली संगीतकेँ बचेबाक हिनकर आग्रह सांस्कृतिक संरक्षण केर पाश्चात्य आन्दोलनसँ मेल खाइत अछि।

विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: 'रामरंग' जीक निधन सदेह १ केर प्रकाशन दिवस (१ जनवरी २००९) पर भेल - एकटा युग-अन्तक प्रतीक। विदेह एहि साक्षात्कारकेँ संरक्षित राखि समानान्तर इतिहास केर एक अनमोल पृष्ठ बचौलक।

३.३९. रूपा धीरू

रचना: कविता अङ्गेजल काँट

समीक्षा (विवेचना): सकारात्मक गीत। महिला स्त्री-प्रतिनिधित्व। स्त्रीवादी सांस्कृतिक दृष्टि।

३.४०. रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'

रचना: कविता - बूथ कैप्चरिंग

(चुनावी धोखाधड़ी पर राजनैतिक कविता - रौद्र + व्यंग्य रस)

३.४१. डा. रेवती रमण लाल

रचना: कविता - मधुश्रावणी

(प्रकृति-प्रेम कविता - श्रृंगार + शान्त रस)

३.४२. रोशन जनकपुरी

रचना: कविता - डर लगैए

परिचय: नेपाल-मैथिली काव्य-परम्पराक प्रतिनिधि।

(नेपालक मधेश आन्दोलन केर पीड़ा आ प्रतिरोध केर कविता)

३.४३. लक्ष्मी ठाकुर

रचना: मिथिला चित्रकला

स्त्रीवादी आलोचना (स्त्रीवादी समीक्षा): मिथिला चित्रकला + काव्य - दृश्य कला आ साहित्यिक कला केर समागम। महिलाक सृजनात्मक स्वायत्तता।

३.४४. वासुदेव सुनानी

रचना: उड़िया दलित कविता

(ओडिया दलित कविताक मैथिली अनुवाद - दलित चेतना केर प्रसार)

३.४५. विद्यानन्द झा

रचना: कविता - सृष्टि चक्र

(सृष्टि केर चक्र पर दार्शनिक कविता)

३.४६. विनीत उत्पल

रचना: साक्षात्कार-पत्रकारिता (राजमोहन झासँ ऐतिण्हासिक संवाद)

परिचय: मैथिली मौखिक इतिहास - पत्रकारिता केर उत्कृष्ट उदाहरण।

समीक्षा (विवेचना): पत्रकारिता + साहित्य - मौखिक इतिहास (अलेसान्द्रो पोर्टेली) केर सिद्धान्त। राजमोहन झा जी सँ साक्षात्कारमे मैथिली साहित्यक समीक्षाक समस्याकेँ उजागर कएल।

३.४७. विभा रानी

रचना: नाटक - भाग रौ

परिचय: मैथिलीक प्रमुख महिला नाटककार।

स्त्रीवादी आलोचना (स्त्रीवादी समीक्षा): स्त्री-सृजन-समीक्षा - स्त्री-दृष्टिकोणसँ लेखन। सामाजिक दबाव आ स्त्री-अनुभवक कथा। 'मैथिलीमे स्त्रीगण केँ साहित्य लेखनमे जरूर अएबाक चाही' [(राजमोहन झा)] - एहि आह्वानकेँ विभा रानी साकार करैत छथि। इलेन शावाल्टर केर 'स्त्री-सृजन-समीक्षा' केर दृष्टिसँ विभा रानी मैथिलीक स्वतन्त्र महिला-लेखन परम्पराकेँ प्रतिष्ठित करैत छथि। स्त्री-अनुभव आ सामाजिक दबाव हिनकर कथाक प्रमुख विषय।

विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: 'मैथिलीमे स्त्रीगण केँ साहित्य लेखनमे जरूर अएबाक चाही' (राजमोहन झा) - विदेह एहि आह्वानकेँ विभा रानी सन लेखिकाक प्रकाशनसँ पूरा करैत अछि। विदेहक महिला-लेखन प्रोत्साहन नीतिक जीवन्त उदाहरण।

३.४८. वृषेश चन्द्र लाल (जन्म: २९ मार्च १९५५, 'विश्वेश्वर')

रचना: 'फेकनाक दियाबाती' (कविता)

परिचय: नेपालमे लोकतन्त्रक लेल १७ बेर गिरफ्तार, लगभग ८ वर्ष जेल। तराई-मधेश लोकतान्त्रिक पार्टीक राष्ट्रीय उपाध्यक्ष।

भारतीय आलोचना (भारतीय समीक्षा): 'फेकनाक दियाबाती' मे फुलझड़ी-अनार भुइँपटका बीच एक भूखल बच्चाक दृश्य - करुण रस। 'एकता माने सभलेल नै खाली एकटालेल' - वक्रोक्ति।

पाश्चात्य आलोचना (पाश्चात्य समीक्षा): क्रान्तिकारी कविता - पाब्लो नेरुदा, बर्तोल्ट ब्रेख्त परम्पराक मैथिली प्रतिनिधि। उत्तर-औपनिवेशिक - माओ, ग्राम्शी सँ मेल खाइत राजनैतिक पद्य।

विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: नेपालक मैथिल राजनैतिक संघर्षक साहित्यिक दस्तावेज - समानान्तर इतिहास मे राजनैतिक आयाम।

३.४९. छवि झा / कुमुद सिंह

रचना: 'मिथिला चित्रकला: अर्थक अधिकता आ साथर्कता' (शोध-लेख)

भारतीय आलोचना (भारतीय समीक्षा): मिथिला चित्रकलाक 'पुरैन', 'कोहबर', 'अरिपन' - सांकेतिक भाषाक विश्लेषण। पञ्जी-व्यवस्था आ कमल, वंश-वृद्धिक कामना। लोक-कलाक शास्त्रीय परम्पराक सम्बन्ध।

पाश्चात्य आलोचना (पाश्चात्य समीक्षा): कला इतिहास + सांस्कृतिक अध्ययन - विकोम्ट (१९७७), क्यारोलिन ब्राउन, एरिक्सन आदि विदेशी विद्वानक मिथिला चित्रकलाक अर्थक गलत व्याख्याक खण्डन। 'पश्चिमक लोक एहि चित्रकलाकेँ परिभाषित नहि कऽ सकैत छथि' - सांस्कृतिक प्रामाणिकता। स्त्रीवादी कला इतिहास - महिला-कलाकारक स्वायत्त ज्ञान-परम्पराक रक्षा।

नव्य न्याय + विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: चित्रकलाक अर्थ-विवेचनमे 'प्रमाण' (प्रामाणिक ज्ञान) केर स्रोत स्थानीय महिला। विदेह मिथिला चित्रकलाक अङ्कीय दस्तावेजीकरण।

३.५०. आभाष लाभ (जनकपुरधाम)

रचना: मैथिली गायन, संगीत (साक्षात्कार)

परिचय: मैथिलीक प्रसिद्ध गायक। 'रे छोड़ा तोरा बज्जर खसतौ' केर १५ लाख प्रतिक बिक्री। जनकपुरक प्रसिद्ध गायक आभाष लाभ मैथिली गीत-संगीतक प्रमुख स्वर थछथि। सदेह १ मे हिनकर साक्षात्कार मैथिली संगीतक वर्तमान स्थिति पर प्रकाश दैत अछि।

भारतीय आलोचना (भारतीय समीक्षा): जनरंजकता (लोकरस) - बिक्रीक मापदण्ड - कलाक लोकप्रियताक साक्ष्य। विद्यापति संगीत-परम्पराक आधुनिक विस्तार। 'रे छोड़ा तोरा बज्जर खसतौ' जेहन गीतक १५ लाख प्रतिक बिक्री - यएह जन-रंजकता (लोक-रस) थीक। विद्यापति संगीत-परम्परासँ जोड़ैत आभाष जी मैथिली संगीतक अखण्ड धाराकेँ आगाँ बढ़बैत छथि।

पाश्चात्य आलोचना (पाश्चात्य समीक्षा): लोकप्रिय संस्कृति बनाम मौलिक संस्कृति - 'प्यारोडी मौलिककेँ साफ-साफ खतम कऽ दैत अछि।' सांस्कृतिक संरक्षण। सांस्कृतिक अध्ययन केर दृष्टिसँ उपहासात्मक संस्कृति केर विरुद्ध मौलिक रचना केर पक्षमे हिनकर स्पष्ट मत ('प्यारोडी मौलिककेँ साफ-साफ खतम कऽ दैत अछि') महत्त्वपूर्ण अछि। लोकप्रिय संस्कृति बनाम मौलिक संस्कृति केर द्वन्द्व स्पष्ट अछि।

३.५१. आशीष अनचिन्हार

रचना: कविता, गजल

(मैथिली गजल आन्दोलन केर प्रमुख हस्ताक्षर - पूर्व विवरण देल गेल)

३.५२. उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

रचना: नाटक, केन्द्रीय भाषा संस्थानक निदेशक

परिचय: प्रो. उदय नारायण सिंह 'निचकेता' केन्द्रीय भाषा संस्थान मैसूरक निदेशक छथि। सदेह १ मे हिनक नाटक 'नो एण्ट्री: मा प्रविश' (प्रवेश नहि: मा प्रवेश करू)

३.५४. उमेश कुमार महतो

रचना: लोक कथा

(मैथिली लोक-साहित्यक संरक्षण)

३.५५. तूलिका

रचना: मिथिला चित्रकला

(महिला चित्रकार - मिथिला चित्रकला परम्पराक निरन्तरता)

३.५६. अंकुर काशीनाथ झा

रचना: कविता

परिचय: युवा कवि। मैथिली नव काव्य-परम्पराक प्रतिनिधि।

३.५७. अजय सरवैया

रचना: गुजराती कविता

(अन्तर-भाषिक आदान-प्रदान)

३.५८. अजीत कुमार झा

रचना: कविता

३.५९. अनलकांत

रचना: लघुकथा

३.६०. अबू सुथार

रचना: गुजराती कविताक मैथिली अनुवाद

परिचय: गुजराती-मैथिली सांस्कृतिक सेतु।

पाश्चात्य आलोचना (पाश्चात्य समीक्षा): तुलनात्मक साहित्य + अनुवाद-विज्ञान - अनुवादक माध्यमसँ मैथिलीमे अन्य भारतीय भाषाक समागम। गुजराती कविताक मैथिलीमे समागम - तुलनात्मक साहित्य आ अनुवाद-विज्ञान केर उदाहरण।

३.६१. अमरेश यादव

रचना: कविता

३.६२. अमित कुमार झा

रचना: लघुकथा

३.६३. अयोध्यानाथ चौधरी

रचना: लघुकथा

३.६४. अशोक दत्त

(संकलनमे नाम उल्लेख)

३.६५. एन. अरुणा (जन्म: १९४९, निजामाबाद)

रचना: 'ई सेहो अछि प्रवास' - तेलुगुसँ अङ्ग्रेजी (जयलक्ष्मी पोपुरी); अङ्ग्रेजीसँ मैथिली (गजेन्द्र ठाकुर)

परिचय: तेलुगुमे पाँचटा कविता-संग्रह। ओस्मानिया विश्वविद्यालयमे अध्यापन।

पाश्चात्य + भारतीय समीक्षा (पाश्चात्य + भारतीय विवेचना): 'ई सेहो अछि प्रवास मात्र अमेरिके-टामे प्रवासक नहि। नारीक जीवनेमे अछि एकटा प्रवास।' - स्त्रीवादी कविता। प्रवासी-साहित्य - 'अहाँ घुरि सकैत छी कखनो काल, मुदा बनि मात्र पाहुन।' अनुवाद-विज्ञान - अनुवादमे भाव-सम्प्रेषण। विश्व-साहित्य (गोएठे) - तेलुगु → अङ्ग्रेजी → मैथिली।

३.६६. ओम प्रकाश झा

रचना: आलेख

३.६७. कमलानन्द झा (हिन्दी विभाग, सी.एम. कॉलेज, दरभंगा)

रचना: 'मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन: उदाहरण' समीक्षा

समीक्षामे ध्यान रखबाक वस्तु छल: 'मैथिलीमे श्रेष्ठ कथाक अभाव नहि' - राजकमल चौधरी, धूमकेतु, गंगेश गुंजन, तारानन्द वियोगी, अशोकक कथाक सूक्ष्म विश्लेषण। 'यथार्थ कोनो कथाकेँ विश्वसनीयता देबाक बदलामे ओकरा भीतरसँ संवेदना निचोड़ि अनैत अछि।' स्त्री-चेतनाक दृष्टिसँ लिलीरेक 'विधिक विधान' आ देवशंकर नवीनक 'पेम्पी' - स्त्रीवादी समीक्षा, सभटा दोख नवीनजी स्त्रीपर फेकि दैत छथि।

अशोकक रचना: 'तानपूरा' (कथा) - 'तानपूरा' मे मध्यवर्गीय ढोंगकेँ तार-तार करबामे पूर्णतः सफल।

समीक्षा (विवेचना): 'तानपूरा' - विनोद बाबूक संगीत-प्रेम आ हुनकर पुत्री-विरोध - पाखण्ड केर विश्लेषण। 'बिना कोनो उपदेश आ नैतिक आग्रहक कथा मध्यवर्गीय कुत्सित मानसिकताक दुर्ग भेदन करैत अछि।' - मार्क्सवादी समीक्षा।

पाश्चात्य आलोचना (पाश्चात्य समीक्षा): 'उदाहरण' समीक्षामे तुलनात्मक साहित्य - राजस्थानी कथाकार विजयदान देथा आ हिन्दी उदय प्रकाशसँ मैथिली

कथाकेँ जोड़ैत एक नव समीक्षात्मक ढाँचा निर्मित करैत।

रमेश: रचना: कथा: 'नागदेशमे अयनाक व्यवसाय' - अतियथार्थ आ इतिवृत्तिक सीमातोड़ प्रयास।

पाश्चात्य आलोचना (पाश्चात्य समीक्षा): जादुई यथार्थवाद + अतियथार्थवाद केर प्रयोग। कल्पना आ यथार्थवाद केर मिश्रण - मैथिली कथामे नव प्रयोगशीलता।

३.६८. काशीकान्त मिश्र 'मधुप'

रचना: डॉ पालन झा जी केर सौजन्यसँ हुनकर पद्यमय चिट्ठी

(पुरान शैलीमे पत्र-लेखन - साहित्यिक पत्राचार परम्परा)

३.६९. कुमार मनोज कश्यप

रचना: लघुकथा, गजल

(पूर्व विवरण देल गेल)

३.७०. कुमार शुशान्त

रचना: गद्य

३.७१. कृपानन्द झा (जन्म: १९७०, मधुबनी)

रचना: 'चौकपर आणविक समझौता' (व्यंग्य)

परिचय: मीरा बाई पोलिटेकनिक, दिल्लीमे पुस्तकाध्यक्ष। अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली परिषदक जेनरल सेक्रेटरी।

समीक्षा (विवेचना): भारत-अमेरिका आणविक समझौता पर गामक चौकपर बहस - स्थानीय विमर्श। 'एहि समझौतामे किछु एहन प्रावधान जरूरी अछि' - राजनीतिक चेतना। मार्क्सवादी समीक्षा - 'आणविक इन्धनक सम्स्याक समाधान' बनाम वैकल्पिक ऊर्जा। नव्य न्यायक तर्क-पद्धति - गामक साधारण जन द्वारा जटिल विषयक विश्लेषण।

३.७२. कृष्णमोहन झा

रचना: कविता

३.७३. केदारनाथ चौधरी (जन्म: ३ जनवरी १९३६, नेहरा, दरभंगा)

रचना: 'माहुर' (उपन्यास, अंश)

परिचय: 'चमेली रानी' (२००४), 'करार' (२००६), 'माहुर' (२००८) - तीनटा उपन्यास।

भारतीय आलोचना (भारतीय समीक्षा): 'माहुर' उपन्यासक अंश - रंजना विधवाक त्रासदी। करुण रस + करुणाक चरम - 'हे भगवान! हम ई की कएल? किएक हम मीट कीनल?' - पश्चाताप आ ग्लानिक मार्मिक चित्रण।

पाश्चात्य आलोचना (पाश्चात्य समीक्षा): यथार्थवादी उपन्यास - 'पानापुर' गामक सामाजिक यथार्थ। लिङ्ग + सत्ता - काली कान्त ओझा (पुजारी) केर घरक शोषणक सूक्ष्म चित्रण। स्त्रीवादी विश्लेषण - कामिनीक विवशता।

३.७४. डॉ. कैलाश कुमार मिश्र (जन्म: ८ फरवरी १९६७)

रचना: 'यायावरी' नॉर्थ कछार हिल्स यात्रा-वृत्तान्त। 'मैथिली फोकलोर एन्थ्रोपोलोजी ऑफ म्यूजिक' पर पीएचडी। ४०० सँ बेशी निबन्ध प्रकाशित।

भारतीय आलोचना (भारतीय समीक्षा): यात्रा-वृत्तान्त-विधाक मैथिली परम्परामे नव योगदान। नॉर्थ कछार हिल्सक ११ आदिवासी जनजातिक सांस्कृतिक विरासत।

पाश्चात्य आलोचना (पाश्चात्य समीक्षा): नृवंशविज्ञान - ११ जनजाति (दीमासा, ह्मर, जेमी नागा, कुकी, बाइते, कार्बी, खासी, ह्रांगखाल, वैफी, खेलमा, रोङमेई) केर जीवन। पर्यावरण-समीक्षा - जटिंगा पहाड़ी पर चिड़ैक सामूहिक आत्महत्याक रहस्य। 'Shoot these birds with your camera, not

with bullets' (एहि चिड़ै सभकेँ गोली नहि, कैमरा सँ गोली मारू) - पर्यावरण-संरक्षण।

विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: असमक मैथिली सांस्कृतिक दस्तावेजीकरण - विदेह समानान्तर इतिहास केर भौगोलिक विस्तार।

३.७५. शंभु कुमार सिंह

रचना: कविता, कथा

(पूर्व विवरण देल गेल)

३.७६. शक्ति शेखर

रचना: आलेख

३.७७. शिव प्रसाद यादव (भागलपुर)

रचना: मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार

३.७८. शीतल झा

रचना: निबन्ध

३.७९. शीला सुभद्रा देवी

रचना: तेलुगु कविता

३.८०. शेख मोहम्मद शरीफ

रचना: तेलुगु कथा। मैथिलीमे अनुवाद माध्यमसँ मुस्लिम साहित्यकारक प्रतिनिधित्व।

समीक्षा (विवेचना): 'मिथिलाक लोक' सांस्कृतिक विविधता। 'जतय हिन्दुओ राखि ताजिया, मान दिअए इस्लामके' - सद्भाव। साम्प्रदायिक सद्भाव + सांस्कृतिक बहुलवाद।

३.८१. शैलेन्द्र मोहन झा

रचना: हास्य कविता

३.८२. श्याम सुन्दर 'शशि'

रचना: रिपोर्ताज, कतारक भेड़ चरवाहा

३.८३. श्यामल सुमन

रचना: कविता

३.८४. श्रीधरम् (जन्म: १९७४)

रचना: कथा

३.८५. सच्चिदानन्द यादव

रचना: कविता

३.८६. सतीश चन्द्र झा

रचना: कविता

३.८७. सन्तोष मिश्र

रचना: कविता, गजल

३.८८. सुभाष चन्द्र यादव

रचना: कथा

समीक्षा (विवेचना): हिनकर कथामे सामाजिक यथार्थवाद प्रमुख।

मार्क्सवादी आलोचना (मार्क्सवादी समीक्षा): ग्राम्शी केर अधीनस्थ अवधारणासँ यादवजीक कथा-संसार जाहिमे हाशियाक जनताक जीवन-संघर्ष केन्द्रमे अछि - महत्त्वपूर्ण साहित्यिक-राजनैतिक हस्तक्षेप थीक।

पाश्चात्य आलोचना (पाश्चात्य समीक्षा): ग्राम्शी + स्पिवाक - अधीनस्थ स्वर केर सशक्त अभिव्यक्ति।

३.८९. सुभाष साह

रचना: रिपोर्ताज

३.९०. सुशान्त झा

रचना: बलिराजगढ़ पर आलेख, मिथिला मंथन

३.९१. सूर्यनाथ गोप

रचना: कविता

३.९२. हिमांशु चौधरी

रचना: कविता

परिचय: युवा पीढ़ीक प्रतिनिधि कवि। हिमांशु चौधरी युवा पीढ़ीक प्रतिनिधि कवि छथि।

पाश्चात्य आलोचना (पाश्चात्य समीक्षा): नव पीढ़ी कविता केर अर्थमे हिमांशु मैथिलीमे आधुनिक संवेदनशीलताकेँ अभिव्यक्त करैत छथि। नव पीढ़ी कविता - आधुनिक संवेदनशीलता। नगरीय अनुभव केर काव्याभिव्यक्ति।

४. सामग्री-संश्लेषण (सन्दर्भ-समन्वय)

४.३ उत्तर-औपनिवेशिक-स्त्रीवादी-मार्क्सवादी त्रिकोण (उत्तर-औपनिवेशिक-स्त्रीवादी-मार्क्सवादी त्रिकोण)

उत्तर-औपनिवेशिक (उत्तर-औपनिवेशिकता): मैथिली स्वयं एक उत्तर-औपनिवेशिक पाठ अछि - हिन्दी राष्ट्रवादक विरुद्ध। हिन्दी राष्ट्रवादक दबावमे कइएक दशक धरि हाशियापर रहल मैथिली संविधानक आठम अनुसूचीमे शामिल भेलासँ अपन मुक्ति पेलक। विदेह अङ्कीय पत्रिका अङ्कीय उपनिवेश-मुक्ति केर माध्यम थीक।

स्त्रीवादी (Feminist): विभा रानी, नीलिमा, ज्योति, छवि झा, रूपा धीरू।

मार्क्सवादी (Marxist): वृषेश चन्द्र लाल, सुभाष चन्द्र यादव, कृपानन्द झा, बी.के. कर्ण।

४.४ स्त्रीवादी दृष्टिसँ (स्त्रीवादी दृष्टि सँ)

सदेह १ मे महिला लेखन: विभा रानी, प्रीति, प्रीति ठाकुर, नीलिमा आदिक रचना स्त्री-दृष्टिकोणकेँ प्रतिनिधित्व करैत अछि। विभा रानी द्वारा महिला रंगमंच केर उत्थान सेहो उल्लेखनीय।

४.६ विदेह समानान्तर इतिहास: सम्पूर्ण मूल्याङ्कन

भौगोलिक विस्तार: मिथिला (बिहार-नेपाल), दिल्ली, मुम्बई, लन्दन, हैदराबाद, असम - सभ ठामक मैथिली एक मञ्च पर।

साहित्यिक विविधता: कथा, कविता, निबन्ध, गजल, नाटक, अनुवाद, लोकसंगीत, चित्रकला, यात्रावृत्तान्त, शोध-लेख - सभ विधा समाहित।

पीढ़ी-विस्तार: वरिष्ठ (गंगेश गुंजन, राजमोहन झा) सँ युवा (जितमोहन झा, हिमांशु चौधरी) धरि।

लोकतान्त्रिक समावेश: ब्राह्मण-कायस्थ सँ यादव-दलित धरि, पुरुष-महिला सभ।

अङ्कीय पुरालेख: इतिहास-निर्माणक नव माध्यम।

विदेह समानान्तर इतिहास: मूल्याङ्कन: सदेह १ विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचाक सर्वश्रेष्ठ उदाहरण थीक: (१) सरहपाद-विद्यापति परम्परासँ आधुनिकता (गंगेश गुंजन) धरि अखण्ड रेखा; (२) भारत-नेपाल दुनूक मैथिलीकेँ एकट्ठा राखब; (३) १०० साहित्यकारक प्रजातान्त्रिक समावेश; (४) अङ्कीय पुरालेख द्वारा इतिहास-निर्माण; (५) नव्य न्यायक मिथिला परम्पराकेँ आधुनिक साहित्यसँ जोड़ब।

सन्दर्भ (स्रोत):

विदेह (पाक्षिक), वर्ष २, मास १३, अंक २५, १ जनवरी २००९, सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।

तत्त्वचिन्तामणि - गंगेश उपाध्याय (मिथिला, १३वीं शती)

नाट्यशास्त्र - भरतमुनि

ध्वन्यालोक - आनन्दवर्धन

वक्रोक्तिजीवित - कुन्तक

Orientalism - एडवर्ड सईद (प्राच्यवाद - एडवर्ड सईद)

The Location of Culture - होमी भाभा (संस्कृतिक स्थान - होमी भाभा)

The Theory of the Novel - जॉर्ज लुकाच (उपन्यासक सिद्धान्त - जॉर्ज लुकाच)

Literary Theory: An Introduction - टेरी ईगलटन (साहित्यिक सिद्धान्त: एक परिचय - टेरी ईगलटन)

A Literature of Their Own - इलेन शावाल्टर (अपन साहित्य - इलेन शावाल्टर)

The Second Sex - सिमोन द बोव्वार (द्वितीय लिङ्ग - सिमोन द बोव्वार)

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• सदेह १ सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा — [सभ साहित्यकारक रचनाक विवेचन, भारतीय आलोचना, पाश्चात्य सिद्धान्त, गंगेशक नव्य न्याय, विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा]

अध्याय 5 · विदेह: सदेह: ५ — मैथिली विहनि कथा (विदेह अंक ५१-१००)

सारांश समग्र साहित्यिक समीक्षा: सभटा साहित्यकार भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य । आइएसएसएन: 2229-547X १. गजेन्द्र

ठाकुर रचना: (क) गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ विहनि कथाक समीक्षाशास्त्र (आलोचना निबन्ध) (ख) शारदानगर (विहनि

कथा) विधागत निबन्धक विश्लेषण: गजेन्द्र ठाकुरक निबन्ध विहनि कथाक पहिल मैथिली सैद्धान्तिक ढाँचा स्थापित करैत अछि। जेम्स

जोइस केर 'डबलिनर' (आत्म-प्रकाश सिद्धान्त), खलील जिब्रान (गद्य-कविता), चेखव (आख्यान-मितव्ययिता) सबकेँ उद्धृत करैत ओ तर्क

करैत छथि जे विहनि कथाक मानक 'त्वरित प्रस्तुति' नहि, बल्कि 'स्थायी तत्व' (प्रभावक स्थायित्व) थिक।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · समीक्षाशास्त्र · रस-सिद्धान्त · ध्वनि-सिद्धान्त · वक्रोक्ति · औचित्य · कथा

समग्र साहित्यिक समीक्षा: सभटा साहित्यकार

भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य । पाश्चात्य आलोचना । गंगेशक नव्य-न्याय । विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। आइएसबीएन: 978-93-80538-63-1 । आइएसएसएन: 2229-547X

१. गजेन्द्र ठाकुर

रचना: (क) गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ विहनि कथाक समीक्षाशास्त्र (आलोचना निबन्ध) (ख) शारदानगर (विहनि कथा)

विधागत निबन्धक विश्लेषण: गजेन्द्र ठाकुरक निबन्ध विहनि कथाक पहिल मैथिली सैद्धान्तिक ढाँचा स्थापित करैत अछि। जेम्स जोइस केर 'डबलिनर' (आत्म-प्रकाश सिद्धान्त), खलील जिब्रान (गद्य-कविता), चेखव (आख्यान-मितव्ययिता) सबकेँ उद्धृत करैत ओ तर्क करैत छथि जे विहनि कथाक मानक 'त्वरित प्रस्तुति' नहि, बल्कि 'स्थायी तत्व' (प्रभावक स्थायित्व) थिक।

रस-ध्वनि: 'शारदानगर' विहनि कथामे शान्त रस। ध्वनि: 'शारदा' (विद्या देवी, सरस्वती) + 'नगर' (सहर) - शिक्षा/संस्कृति पर निर्मित एक सहर केर पतन। वक्रोक्ति: 'शारदानगर' केर नाममे आकांक्षा आ वास्तविकताक अन्तर।

नव्य-न्याय: गंगेशक 'प्रमाण-शास्त्र': ठाकुरक निबन्ध विहनि कथाक समीक्षात्मक मानदण्ड (मापदण्ड) स्थापित करैत अछि- ई प्रमाण-शास्त्र थिक साहित्यिक समीक्षा शैलीमे।

विदेह समानान्तर इतिहास: विधा-सिद्धान्त+ सृजनात्मक लेखन एक्के खण्डमे: विदेह एहन साहित्यिक स्थान थिक जाहिमे सिद्धान्त आ व्यवहार सह-अस्तित्व रखैत अछि - साहित्य अकादमी केर विभागीकरण केर विरुद्ध।

२. मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)

रचना: (क) सामाजिक सरोकार कें छुबैत विहनि कथा (निबन्ध) (ख) रेवाज/दरेग/भूख/विजातीय/राष्ट्रभक्ति (५ विहनि कथा) (ग) डॉ. तारानन्द वियोगीसँ गप-सप (साक्षात्कार-कर्ता)

सामाजिक निबन्धक विश्लेषण: मुन्नाजीक निबन्ध समकालीन मैथिली समाज केर परिवर्तन सभक मानचित्रण करैत अछि: नारी-सशक्तिकरण, आर्थिक उदारीकरण केर विरोधाभास, प्रौद्योगिकी केर प्रभाव, दलित चेतना- ई सब अर्वाचीन मैथिली विहनि कथाक उपजाऊ भूमि थिक।

रस-ध्वनि पाँच कथा: 'रेवाज' (रीति/परम्परा) - करुण+व्यंग्य। 'दरेग' (पश्चाताप) - करुण। 'भूख' - करुण+रौद्र। 'विजातीय' (अन्तर-जातीय) - रौद्र+अद्भुत। 'राष्ट्रभक्ति' - हास्य+व्यंग्य। सभ शीर्षक एक अवधारणा थिक - ध्वनि: एक शब्दक शीर्षक सम्पूर्ण कथा केर 'बीया' (बीज) थिक।

बाख्तिन/ सामाजिक निबन्ध: बाख्तिनक संवादवाद: मुन्नाजीक सामाजिक निबन्ध अनेक स्वर कें वार्तालापमे आनैत अछि। 'विजातीय' (अन्तर-जातीय/अन्तर-समुदायी) विवाह प्रसंग - बाख्तिन केर 'बहुभाषिक विभिन्नता'- प्रतिस्पर्धी सामाजिक स्वर सभक स्थल थिक।

ग्राम्शी / विदेह: मुन्नाजी विहनि कथा आन्दोलन केर कार्बनिक बुद्धिजीवी छथि - सिद्धान्त + व्यवहार + आयोजन सब।

३. ज्योति सुनीत चौधरी

रचना: नबका पीढ़ी / घर दिसका रस्ता / पानिमे खेती / मैथिल बिआह / हिमदूत (५ विहनि कथा) । लन्दन-निवासिनी; जन्म: ३० दिसम्बर १९७८, मधुबनी

रस-ध्वनि: 'नबका पीढ़ी' (नव पीढ़ी) - करुण+वीर। ध्वनि: लिफ्टमे पीढ़ी अन्तराल - शहरी अर्वाचीनता केर प्रतीक। 'घर दिसका रस्ता' - शान्त+शृंगार - प्रवासी-लालसा। 'पानिमे खेती' - आश्चर्य+व्यंग्य - जलवायु परिवर्तन + कृषि संकट। 'मैथिल बिआह' - हास्य+करुण - विवाह संस्था। 'हिमदूत' - अद्भुत - हिमालय रूपक।

प्रवासी / स्पिवाक: ज्योति सुनीत चौधरी लन्दन-स्थित मैथिली लेखिका छथि। स्पिवाक केर 'सांस्कृतिक विस्थापन': प्रवासी लेखिका लेल 'घर दिसका रस्ता'

भौतिक आ आध्यात्मिक यात्रा दुनू थिक। 'नबका पीढ़ी' मे पीढ़ीगत विस्थापन - वैश्विक रूपसँ अनुनादित।

विदेह ढाँचा: लन्दन सँ मैथिली लेखन - विदेह केर अङ्कीय स्थान एहि अन्तर-भौगोलिक लेखन केँ सक्षम करैत अछि। ज्योति झा चौधरी विदेह केर सबसँ वैश्विक-स्थित लेखिका छथि।

४. दुर्गानन्द मंडल

रचना: पोस्टमार्टम / प्रदूषण / किसना मुजी (३ विहनि कथा) ।

रस-ध्वनि: 'पोस्टमार्टम' (शव-परीक्षा) - वीभत्स+करुण। चिकित्सीय शब्दक रूपमे रूपक: समाज केर 'शव-परीक्षा'- मृत्यु-निदान। 'प्रदूषण'- वीभत्स+रौद्र - पारिस्थितिकीय + सामाजिक प्रदूषण एक संग। 'किसना मुजी'- ध्वनि: 'मुजी' (मैथिली शब्द एक व्यक्ति लेल, प्रायः दलित/निम्न-जाति) - एक साधारण जीवन केर कथा।

अम्बेडकर / पारिस्थितिकी: दुर्गानन्द मंडल लगातार दलित दृष्टिकोण आनैत छथि। 'प्रदूषण' मे पारिस्थितिकीय संकट + सामाजिक प्रदूषण (जाति भेदभाव) एक संग- दलित समुदाय पर्यावरणीय क्षीणता केर प्रथम शिकार छथि।

५. कपिलेश्वर राउत

रचना: कलियुगक निर्णए (विहनि कथा) ।

रस-ध्वनि: 'कलियुगक निर्णए' (कलियुग केर निर्णय) - रौद्र+करुण। ध्वनि: 'कलियुग' (अन्धकार युग) केर 'निर्णए' (निर्णय) - ई सामाजिक अभियोग थिक। वक्रोक्ति: दैवी निर्णय बनाम मानवीय अन्याय।

अम्बेडकर / फानन: राउत केर लगातार दलित दृष्टिकोण - 'कलियुग' केर रूपमे जाति-युग: अम्बेडकर तर्क केलनि जे जातिवाद भारत केर स्थायी 'अन्धकार युग' अछि।

६. धीरेन्द्र कुमार

रचना: राम-कथाक समापन (विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'राम-कथाक समापन' (राम कथा केर अन्त) - शान्त+अद्भुत। उत्तर-अर्वाचीन संकेत: पौराणिक कथा केर 'अन्त' पुनर्लेखन। ध्वनि: 'समापन' - कहानी कहियो वास्तवमे समाप्त नहि होइत, ओकर पुनर्व्याख्या होइत रहैत अछि।

देरिदा / मिथक: देरिदा केर 'पूरक': राम-कथा केर 'अन्त' लिखनाइ एक पूरक थिक - मूल पाठ केर रिक्त स्थान भरनाइ। ई मैथिली तीव्र लघुकथा केर पौराणिक पुनर्लेखनवाद अछि।

७. राजदेव मंडल

रचना: बढ़िया गप्प / ठोकर (२ विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'बढ़िया गप्प' (बढ़िया कहानी)- हास्य+व्यंग्य। आत्म-कथात्मक: एक 'बढ़िया गप्प' केर विषयमे विहनि कथा। 'ठोकर' (गिरावट/लात) - करुण+रौद्र - जीवन केर अप्रत्याशित असफलता।

८. बेचन ठाकुर

रचना: आत्महत्या / फुसिक फल (२टा विहनि कथा) । लोक-नाट्य परम्परा

रस-ध्वनि: 'आत्महत्या' - करुण+रौद्र। चरम विषय लेल चरम संक्षिप्तता: तीव्र लघुकथा केर कर्तव्य अछि कार्य सँ पहिने केर क्षण केँ कब्जा करब। 'फुसिक फल' (झूठ केर फल) - हास्य+व्यंग्य। भिखारी ठाकुर परम्परा: लोक-नाट्य संवेदनशीलता मे नैतिक लोक-कथा।

कामू / अर्थहीनता: कामू केर 'सिसिफस केर मिथक' आरम्भ होइत अछि: 'केवल एक वास्तविक गम्भीर दार्शनिक समस्या अछि, आ ओ अछि आत्महत्या।' 'आत्महत्या' तीव्र लघुकथा ई एक संकुचित दार्शनिक प्रश्न बनि जाइत अछि।

९. राम प्रवेश मंडल

रचना: पछतावा / बुरबक / झगड़ा खतम / मूल-मन्त्र (४ विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'पछतावा' (पश्चाताप) - करुण। 'बुरबक' (मूर्ख/सीधा-सादा) - हास्य+करुण - 'मूर्ख' केर रूपमे सामाजिक टिप्पणी। 'झगड़ा खतम' (लड़ाई समाप्त) - हास्य+शान्त। 'मूल-मन्त्र' (मूल मन्त्र) - शान्त+व्यंग्य - संस्कृत शब्द केर व्यंग्यपूर्ण प्रयोग।

बाख्तिन / उत्सवी-लोकधर्मी: 'बुरबक' व्यक्तित्व = बाख्तिन केर उत्सवी-लोकधर्मी 'मूर्ख' जे समाज केर सत्य देखैत + बजैत अछि।

१०. भारत भूषण झा

रचना: प्रेम (विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'प्रेम' - श्रृंगार रस। एक एकल शब्द शीर्षक - विभाव (रस केर उत्तेजक)। अधिकतम संक्षिप्तता, अधिकतम सुझाव: 'प्रेम' नामक विहनि कथामे प्रेम केर परिभाषित केनाइ विहनि कथाक चरम चुनौती।

नव्य-न्याय: गंगेशक 'सामान्य' (सार्वभौमिक): 'प्रेम' केर सार्वभौमिक परिभाषा + विशिष्ट उदाहरण - ई ज्ञान-मीमांसीय तनाव विहनि कथामे सृजित होइत अछि।

११. मानेश्वर मनुज

रचना: ई / स्त्री-लिंग / आप / लोरी / भूख-भूख भाकुर (५ विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'ई'- एक सर्वनाम शीर्षक! अस्पष्ट अस्मिता। 'स्त्री-लिंग' - व्याकरणिक लिंग केर सामाजिक श्रेणी केर रूपमे स्त्रीवादी टिप्पणी। 'आप' (तहँ, औपचारिक) - बाख्तिन संवादवाद: सम्बोधित-केर-रूपमे-शीर्षक। 'लोरी' - वात्सल्य। 'भूख-भूख भाकुर' - करुण+व्यंग्य।

स्त्रीवादी भाषाशास्त्र: 'स्त्री-लिंग'- स्त्रीवादी भाषाविज्ञान: व्याकरणिक लिंग केर सामाजिक परिणाम। मानेश्वर मनुज केर शीर्षक-खेल स्वयं एक भाषावैज्ञानिक सिद्धान्त प्रदर्शन थिक।

१२. उमेश मंडल

रचना: दोस्ती / आधा भगवान / रुपैयाक ढेरी / जेहन मन तेहन जिन्दगी (४ विहनि कथा) ।

रस-ध्वनि: 'दोस्ती' - मधुर रस। 'आधा भगवान'- अद्भुत+व्यंग्य - दैवी अर्ध-उपस्थिति। 'रुपैयाक ढेरी'- वीभत्स+व्यंग्य। 'जेहन मन तेहन जिन्दगी' (जेना मन तेना जीवन) - शान्त+दार्शनिक।

विदेह ढाँचा: उमेश मंडल ई विदेह केर सामूहिक उत्पादन प्रतिमान केर मूर्त रूप थिक।

१३. डॉ. शेफालिका वर्मा

रचना: आनक बड़ाइ (विहनि कथा) । साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता।

रस-ध्वनि: 'आनक बड़ाइ' (दोसराक प्रशंसा) - हास्य+करुण। ध्वनि: दोसराक बड़ाई केनाइ अपन तुलनामे खुद कैं छोट बुझनाइक लक्षण। वक्रोक्ति: 'बड़ाइ' (प्रशंसा) - ई एक सामाजिक लेनदेन थिक।

बूर्द्यू / सामाजिक पूँजी: बूर्द्यू केर 'प्रतीकात्मक पूँजी': 'आनक बड़ाइ' केर अर्थ-व्यवस्था - दोसराक प्रशंसा केनाइ एक प्रतीकात्मक पूँजी विनिमय थिक। डॉ. वर्माक मान्य-परम्परागत स्थिति केर बावजूद विदेहमे योगदान - समावेशी मञ्च।

१४. जगदीश प्रसाद मंडल

रचना: थल-कमल / घरडीह / खाता-खेसरा / सबूत / कौआक मैनजन (५ विहनि कथा) ।

रस-ध्वनि: 'थल-कमल' (जमीन-कमल)- शान्त+पारिस्थितिकीय। जमीनमे कमल = विरोधाभास। 'घरडीह' (घर-बास/खण्डहर) - करुण। 'खाता-खेसरा' - ग्राम भू-अभिलेख - राजनैतिक। 'सबूत' (प्रमाण) - रौद्र+करुण - दलित न्याय। 'कौआक मैनजन'- हास्य+व्यंग्य - लोक-रूपक।

अम्बेडकर / पारिस्थितिकी: मंडल केर 'थल-कमल' + 'घरडीह' + 'खाता-खेसरा' - दलित भू-अधिकार त्रयी। अम्बेडकर: भू-स्वामित्व केर जाति-आधार उजागर। 'सबूत'- न्याय प्रमाण माँगैत अछि; दलित लोक सदा अपन मानवता केर 'प्रमाण' देवाक लेल बाध्य छथि।

१५. रामकृष्ण मंडल 'छोटू'

रचना: बाबूजी लेल (विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'बाबूजी लेल'- वात्सल्य रस उल्टा: ई बच्चा-द्वारा-पिता-लेल देखभाल थिक, पिता-द्वारा-बच्चा-लेल नहि। ध्वनि: भूमिका उलटफेर - बुढ़ापा, आश्रितता।

१६. रामलोचन ठाकुर

रचना: गिरगिट / भारत रत्न (२ टा विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'गिरगिट' - हास्य+व्यंग्य। राजनैतिक अवसरवाद केर प्रतीक। 'भारत रत्न'। व्यंग्य: भारत केर सर्वोच्च नागरिक सम्मान केर व्यंग्यपूर्ण सन्दर्भ। वक्रोक्ति: 'रत्न' केर व्यंग्यपूर्ण अनुप्रयोग।

बाख्तिन/ व्यंग्य: 'गिरगिट' = बाख्तिनीय उत्सवी-लोकधर्मी व्यक्तित्व - आकार-परिवर्तक जे समाज केर प्रदर्शनशीलता उजागर करैत अछि।

१७. परमेश्वर कापड़ि

रचना: सतबरती (विहनि कथा) । नेपाल

रस-ध्वनि: 'सतबरती' (वफादार) - शृंगार+करुण। विवाह-प्रतिज्ञा केर प्रश्न - सांस्कृतिक अनुबन्ध। नेपाल पक्ष केर मैथिली सामाजिक वास्तविकता।

१८. अमरनाथ

रचना: देह / पियास / स्विच ऑफ / गिरगिट / फोंफ (५ विहनि कथा) । मैथिली विहनि कथाक अग्रदूत 'क्षणिका' (१९७५)।

परिचय: अमरनाथ मैथिली विहनि कथा केर स्थापक व्यक्तित्व सभमे छथि। 'क्षणिका' (१९७५) प्रथम मैथिली विहनि कथा संग्रह सभमे एक।

रस-ध्वनि: 'देह' (शरीर) - शृंगार+वीभत्स। 'पियास' (प्यास) - करुण+शान्त। 'स्विच ऑफ' - अद्भुत+करुण - प्रौद्योगिकी रूपक। 'गिरगिट' - हास्य। 'फोंफ'- शान्त - अस्तित्वगत संक्षिप्तता। पाँचू शीर्षक एकल-शब्द/वाक्यांश: अधिकतम सङ्कुचन।

चेखव / अल्पतमवाद: चेखव केर अल्पतमवाद: सभ शब्दकेँ अपन स्थान अर्जित करबाक चाही। अमरनाथ केर एकल-शब्द शीर्षक सभ पूर्णतया ऐ मितव्ययिता केर प्रदर्शन करैत अछि।

विदेह समानान्तर इतिहास: साहित्यिक निरन्तरता केर पुरालेख।

१९. चण्डेश्वर खाँ

रचना: चेकिंग / कछमछी / बिसवास (३ विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'चेकिंग' - हास्य+व्यंग्य - निगरानी व्यंग्य। 'कछमछी' (कसमसाहट) - हास्य। 'बिसवास' (विश्वास/भरोसा) - शान्त+करुण। तीनू शीर्षक अर्वाचीन मैथिली शब्दावली - अङ्ग्रेजी उधार-शब्द ('चेकिंग') + शुद्ध मैथिली ('कछमछी') + मिश्रित ('बिसवास')।

२०. रघुनाथ मुखिया

रचना: इंडियन / जुलुम / नियति / मुँहलगुआ / ग्रीनहाउसमे कुकुर (५ विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'इंडियन' (भारतीय) - व्यंग्य: अस्मिता व्यंग्य। 'जुलुम' (अत्याचार) - रौद्र+करुण। 'नियति' (भाग्य) - शान्त। 'मुँहलगुआ' (मुँहलग्गू/चाटुकार) - हास्य+व्यंग्य। 'ग्रीनहाउसमे कुकुर' (हरितगृहमे कुक्कुर) - अद्भुत+व्यंग्य - जलवायु परिवर्तन व्यंग्य।

फूको / सत्ता: 'जुलुम' (अत्याचार) आ 'मुँहलगुआ' (चाटुकारिता)- फूको केर सत्ता-ज्ञान: सत्ता स्वयं केर रखरखाव करैत अछि प्रत्यक्ष अत्याचार आ स्वेच्छिक अनुपालना दुनूक माध्यमसँ।

२१. ऋषि वशिष्ठ

रचना: प्रमाण-पत्र / मनमौजी (२ विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'प्रमाण-पत्र' (प्रमाणपत्र/सबूत) - व्यंग्य: नौकरशाही अस्तित्व - अस्तित्व केर 'प्रमाण' चाही। काफ्कीय अनुनाद। 'मनमौजी' (स्वच्छन्द) - हास्य+शान्त।

काफ्का / नौकरशाही: काफ्का केर 'मुकदमा': अस्तित्व प्रमाणपत्र/प्रमाण माँगैत अछि। ऋषि वशिष्ठक 'प्रमाण-पत्र' एहि काफ्कीय चिन्ता केर मैथिली तीव्र लघुकथा शैलीमे।

२२. शिव कुमार झा 'टिल्लू'

रचना: फुसि नै बाजू (विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'फुसि नै बाजू'- हास्य+शान्त। आदेश रूप शीर्षक = आदेशात्मक विहनि कथा। ध्वनि: जिनका 'फुसि नै बाजू' कहाइत अछि, हुनका समाज स्वयं झूठ बजबैत अछि।

२३. मिथिलेश कुमार झा

रचना: झीक (विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'झीक'- शुद्ध मैथिली शब्द। शरीर-राजनीति रूपक। करुण रस। मैथिली शब्द-चयन स्वयं एक राजनैतिक कार्य - हिन्दी/अङ्ग्रेजी वर्चस्व केर प्रतिरोध।

२४. सत्येन्द्र कुमार झा

रचना: लेटेस्ट (विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'लेटेस्ट' (नवीनतम) - अङ्ग्रेजी शीर्षक मैथिली तीव्र लघुकथामे! हास्य+व्यंग्य। ध्वनि: 'नवीनतम' समाचार संस्कृति + सूचना अधिभार व्यंग्य।

बाख्तिन / बहुभाषिक विभिन्नता: अङ्ग्रेजी शीर्षक मैथिली पाठमे= अधिकतम बहुभाषिक विभिन्नता - भाषिक संकरता केर रूपमे सामाजिक समीक्षा।

२५. नवनीत कुमार झा

रचना: गाम आबह (विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'गाम आबह'- शान्त+वात्सल्य। ध्वनि: वापसी केर निमन्त्रण- प्रवासी/शहरी पलायन प्रसंग। वक्रोक्ति: 'आबह'- आदेशात्मक तात्कालिकता निमन्त्रणमे।

२६. कौशल कुमार

रचना: दूमुँहा / प्रार्थना आ आस्था / अपन इज्जत (३ टा विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'दूमुँहा'- हास्य+व्यंग्य। 'प्रार्थना आ आस्था' (प्रार्थना आ विश्वास) - शान्त+आध्यात्मिक। 'अपन इज्जत' (अपन सम्मान) - वीर। तीनूमे एक क्रमश:: पाखण्ड → आध्यात्मिक यात्रा → सम्मान दृढ़ोक्ति।

२७. अनमोल झा

रचना: चेतना (विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'चेतना' (चेतना/जागृति) - वीर+शान्त। ध्वनि: चेतना = चेतना + सक्रियता दुनू संयुक्त। 'चेतना' एक एकल-शब्द शीर्षक जे एक सम्पूर्ण सामाजिक आन्दोलन केर बीज थिक।

२८. कुमार मनोज कश्यप

रचना: मरीचिका / परजा / बदलैत समए / जरल पेट / जीतक आगू (५ विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'मरीचिका' (मृगतृष्णा) - करुण+अद्भुत। 'परजा' (प्रजा/किसान) - करुण+रौद्र - सामन्ती-औपनिवेशिक सम्बन्ध। 'बदलैत समए' (बदलैत समय) - शान्त+दार्शनिक। 'जरल पेट' (जरल पेट) - करुण+रौद्र - भूख कल्पना-बिम्ब। 'जीतक आगू' (विजय सँ आगू) - वीर+शान्त।

ग्राम्शी / अधीनस्थ: 'परजा' = ग्राम्शी केर अधीनस्थ किसान विषय जिनका अपन शर्त पर सुनल जएबाक चाही। कश्यपक 'मरीचिका' (मृगतृष्णा) - आकांक्षी मैथिली युवा केर कुण्ठित सपना।

२९. विनीत उत्पल

रचना: श्री गुरुवै नमः (विहनि कथा) । **रस-ध्वनि:** 'श्री गुरुवै नमः' (गुरु कैँ नमस्कार) - शान्त+व्यंग्य। संस्कृत आवाहन केर रूपमे तीव्र लघुकथा शीर्षक-व्यंग्यपूर्ण ढाँचाकरण। ध्वनि: 'गुरु' अवधारणामे शिक्षक केर शक्ति + शिष्य केर दायित्व केर जटिल सम्बन्ध।

३०. डॉ. धनाकर ठाकुर

रचना: हमरा एकर एक बायोडाटा चाही (विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'हमरा एकर एक बायोडाटा चाही'- हास्य+व्यंग्य। सबसँ नाम तीव्र लघुकथा शीर्षक! ई शीर्षक स्वयं एक लघु-कथा थिक। नौकरशाही अर्थहीनता: सभ चीज लेल जीवन-विवरण चाही।

काफ्का / बेकेट: काफ्का केर नौकरशाही दुःस्वप्न + बेकेट केर अर्थहीनतावाद: 'बायोडाटा' (जीवन-विवरण) सभ स्थिति लेल - अस्तित्व प्रमाणित होएबाक लेल दस्तावेजीकरण चाही।

३१. आशीष अनचिन्हार

रचना: नर्क / निशान / लक्ष्मी / अन्तर (४ टा विहनि कथा) । मैथिली गजल आन्दोलनी।

रस-ध्वनि: 'नर्क'- शान्त+अस्तित्वगत। 'निशान' (चिह्न/निशाना)- अद्भुत। 'लक्ष्मी' (धन देवी)- शृंगार+व्यंग्य। 'अन्तर' - शान्त+करुण।

देरिदा / अन्तर: देरिदा केर 'अन्तर': 'अन्तर' कालिक अन्तराल आ साङ्केतिक अन्तर दुनू थिक। अनचिन्हारक शीर्षक-चयन दार्शनिक सूक्ष्मता केर प्रति संवेदनशीलता देखबैत अछि।

३२. सतीश चन्द्र झा

रचना: नोकरी (विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'नोकरी'- करुण। मैथिली मध्यवर्गीय चिन्ता केर एक-शब्द सारांश। ध्वनि: नोकरी = सम्मान, सुरक्षा, सामाजिक स्थिति - जे नहि भेटत तकर पीड़ा।

३३. भवनाथ झा

रचना: ऊँचका डीह / हेराफेरी (२ विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'ऊँचका डीह'- शान्त+पारिस्थितिकीय। 'हेराफेरी' (धोखाधड़ी/छल) - व्यंग्य+रौद्र। स्थान-रूपक ('डीह') + सामाजिक समीक्षा ('हेराफेरी') - विरोधाभास।

३४. नबोनारायण मिश्र

रचना: घमण्डक फल (विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'घमण्डक फल' (घमण्ड केर फल) - हास्य+व्यंग्य। लोक-नैतिक कथा संरचना तीव्र लघुकथामे। 'फल' (फल/परिणाम) = कर्म। औचित्य: लोक-नैतिक परम्परा स्वाभाविक रूपसँ तीव्र लघुकथामे उपयुक्त बैसैत अछि।

३५. राम विलास साहु

रचना: परिश्रमक भीख (विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'परिश्रमक भीख' (परिश्रम केर भीख) - करुण+व्यंग्य। 'परिश्रम' (परिश्रम) केर 'भीख' - सम्मान उल्टा: जे कहैत अछि 'मेहनत करू' ओ भीख माँगि रहल अछि।

अम्बेडकर / श्रम सम्मान: अम्बेडकर श्रम केर सम्मान पर: 'परिश्रमक भीख' - जखन परिश्रम स्वयं भीख केर एक रूप बनि जाइत अछि, तखन व्यवस्था मूलभूत रूपसँ भग्न अछि।

३६. मुस्नी कामत

रचना: हमर संस्कार / करैलाक मीठ गुण (२ विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'हमर संस्कार' (हमर मूल्य/परम्परा) - शान्त+दार्शनिक। 'करैलाक मीठ गुण' (करेला केर मीठ गुण) - हास्य+व्यंग्य। 'करेला' (करेला) एक लोक-रूपक: कड़ू चीज सभमे सेहो मीठ गुण होइत अछि।

३७. डॉ. शम्भु कुमार सिंह

रचना: जेठ आ पूस / सौदागर / गरमी (३ विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'जेठ आ पूस' (जेठ आ पूस - गर्मी आ जाड़ केर महीना) - शान्त+पारिस्थितिकीय। मैथिली पञ्चाङ्ग अन्तर्निहित: जेठ (सबसँ गर्म महीना) + पूस (सबसँ ठण्डा)। 'सौदागर' (व्यापारी) - व्यंग्य। 'गरमी' (गर्मी) - पारिस्थितिकीय+सामाजिक।

पारिस्थितिकी / जलवायु: जेठ-पूस द्वैत: मिथिला केर चरम मौसमी जलवायु- सामाजिक चरम सीमा सभक साहित्यिक रूपक केर रूपमे। आरम्भिक-२०१० केर मैथिली तीव्र लघुकथामे जलवायु चेतना।

३८. संजय कुमार मंडल

रचना: अनरेजिस्टर्ड घुसखोर (विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'अनरेजिस्टर्ड घुसखोर' (अपञ्जीकृत घूसखोर)- हास्य+व्यंग्य। 'अनरेजिस्टर्ड' (अङ्ग्रेजी उधार-शब्द) + 'घुसखोर' (शुद्ध मैथिली/हिन्दी) = भाषिक संकर शीर्षक। व्यंग्य: भ्रष्टाचार केर सेहो एक 'पञ्जीकरण' प्रणाली होइत अछि।

३९. डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र

रचना: वीरभोग्या वसुंधरा / अति सर्वत्र वर्जयेत् - दू संस्कृत विहनि कथा (अनुवाद: योगानन्द झा)

परिचय: सदेह ५ केर सबसँ अद्वितीय योगदान: दू संस्कृत तीव्र लघुकथा! डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र संस्कृतमे विहनि कथा लिखलनि आ योगानन्द झा मैथिलीमे अनुवाद कएलनि।

रस-ध्वनि: 'वीरभोग्या वसुंधरा' (पृथ्वी वीर कैँ भोगयोग्य अछि) - वीर रस। संस्कृत कहावत केर रूपमे तीव्र लघुकथा। 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' (अति सर्वत्र वर्जित) - शान्त रस। शास्त्रीय भारतीय नैतिक दर्शन।

बेन्यामिन/ अनुवाद + शास्त्रीय पुनरुत्थान: संस्कृत→मैथिली अनुवाद: बेन्यामिन केर 'परवर्ती जीवन' - संस्कृत ज्ञान-पाठ सभ नव जीवन पबैत अछि अर्वाचीन मैथिली तीव्र लघुकथामे। ई विदेह केर शास्त्रीय-अर्वाचीन सेतु मिशन केर चरम अभिव्यक्ति थिक।

नव्य-न्याय: 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' - नव्य-न्याय केर मध्यमता सिद्धान्त: ई सूक्ति गंगेश केर अपन ज्ञान-मीमांसीय पद्धतिमे प्रकट अछि।

४०. मिथिलेश मंडल

रचना: विदेशी बाबू (विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'विदेशी बाबू' (विदेशी बाबू/साहब) - हास्य+व्यंग्य। 'बाबू' (सम्मानजनक सम्बोधन अभिजात वर्ग लेल) + 'विदेशी' (विदेशी) = औपनिवेशिक चिन्ता केर मैथिली संस्करण। ध्वनि: उत्तर-औपनिवेशिक भारतमे 'विदेशी' = आकांक्षात्मक आ समस्याग्रस्त दुनू।

४१. प्रदीप बिहारी

रचना: सत्संगी / थापड़ (२ विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'सत्संगी' (सत्संगी/सज्जन) - शान्त+आध्यात्मिक। 'थापड़' (थप्पड़) - रौद्र+करुण। चरम विरोधाभास: आध्यात्मिक सङ्गति → शारीरिक हिंसा। ध्वनि: सत्सङ्ग (आध्यात्मिक सभा) सँ थापड़ तक - सामाजिक पाखण्ड।

४२. लक्ष्मी दास

रचना: बूड़िबकक बूड़िबक / दाढ़ी (२ विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'बूड़िबकक बूड़िबक' (मूर्ख केर मूर्ख) - हास्य+करुण। अतिशयोक्तिपूर्ण रचना: 'बूड़िबक' केर 'बूड़िबक' - एक नेस्टेड मूर्ख। 'दाढ़ी' (दाढ़ी) - हास्य+व्यंग्य। दाढ़ी केर रूपमे सामाजिक सूचक - पुल्लिंगता, धर्म, फैशन।

४३. अमित मिश्र

रचना: इशारा / सरधुआ (२ विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'इशारा' (संकेत/इशारा) - शान्त+अद्भुत। अशाब्दिक सञ्चार केर शक्ति। 'सरधुआ' (गंदला/मटमैला) - वीभत्स+करुण। जल-गन्दगी = सामाजिक गन्दगी रूपक।

४४. जगदानन्द झा 'मनु'

रचना: मसोमात / रहस्य (२ विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'मसोमात' (विधवा) - करुण। विधवा केर सामाजिक स्थिति - पितृसत्ता केर सबसँ पीड़ित दृश्य। 'रहस्य' (रहस्य/गुप्त) - अद्भुत। आख्यानिक तनाव: रहस्य = जे अकथित रहैत अछि जे कहानी केँ जीवित रखैत अछि।

स्त्रीवादी/ अम्बेडकर: 'मसोमात' - विधवा केर सामाजिक बहिष्कार - अम्बेडकर स्पष्ट रूपसँ समीक्षा केलनि 'हिन्दू नारी' मे। जगदानन्द झाक विहनि कथा एहि सामाजिक वास्तविकता केँ न्यूनतम शब्द, अधिकतम प्रभाव सँ कब्जा करैत अछि।

४५. चन्दन कुमार झा

रचना: सङ्गति / अनकर दुर्गति (२ विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'सङ्गति' (सङ्गति/संगत) - शान्त+मधुर। 'अनकर दुर्गति' (दोसरक दुर्दशा) - करुण+व्यंग्य। व्यंग्यपूर्ण युगल: सज्जन सङ्गति → दोसरक दुर्दशामे आनन्द पावक। सामाजिक टिप्पणी।

४६. ओम प्रकाश झा

रचना: कपारक लिखल / स्पेशल परमिट (२ विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'कपारक लिखल' (माथा पर लिखल = भाग्य) - शान्त+करुण। मैथिली मुहावरा भाग्य लेल। 'स्पेशल परमिट' (विशेष अनुमति) - व्यंग्य: नौकरशाही व्यंग्य - सेहो 'विशेष' चीज केँ 'अनुमति' चाही।

४७. सन्दीप कुमार साफी

रचना: अन्ध विश्वास (विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'अन्ध विश्वास' - व्यंग्य+करुण। सामाजिक सुधार विषय। ध्वनि: 'अन्ध' + 'विश्वास' - जखन विश्वास अपन आँखि हारि दैत अछि।

४८. जवाहर लाल कश्यप

रचना: हमर माय तोहर माय / अर्धसत्य / लहास / भगवानक भाग्य / गिफ्ट (५ विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'हमर माय तोहर माय' (हमर माँ तोहर माँ) - वात्सल्य+करुण। सार्वभौमिक मातृत्व। 'अर्धसत्य' (आधा-सत्य) - व्यंग्य। 'लहास' (लाश) - वीभत्स+करुण। 'भगवानक भाग्य' (भगवान केर भाग्य) - व्यंग्य+अद्भुत। 'गिफ्ट' (उपहार) - हास्य।

बेन्यामिन / द्वन्द्वात्मकता: 'अर्धसत्य' (आधा-सत्य) = बेन्यामिन केर द्वन्द्वात्मक बिम्ब - आंशिक प्रकटीकरण जे सम्पूर्ण केँ प्रकाशित करैत अछि। पाँचू शीर्षक सम्पूर्ण भावनात्मक-दार्शनिक स्पेक्ट्रम केँ आवृत करैत अछि।

४९. मिहिर झा

रचना: १०० टाका (विहनि कथा)

रस-ध्वनि: '१०० टाका' (एक सय रुपैयाँ/टाका) - करुण+व्यंग्य। सटीक मौद्रिक राशि शीर्षक केर रूपमे। ई एकल शीर्षक मिथिला केर अस्मिता केर प्रदर्शन करैत अछि।

५०. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'

रचना: अल्लूक चुमौन (विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'अल्लूक चुमौन' - 'अल्लू' + 'चुमौन'। शुद्ध मैथिली वाक्यांश: लोक-ज्ञान शीर्षक शैलीमे। हास्य+शान्त। लोक अस्मिता तीव्र लघुकथामे संरक्षित।

५१. प्रेमचन्द्र पंकज

रचना: क्रमश:.... (विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'क्रमश:....' (जारी...) - अद्भुत+शान्त। एक शीर्षक जे स्वयं एक उपविराम अछि! तीव्र लघुकथा जे समाप्त करबाक अस्वीकार करैत अछि - चरम उत्तर-समापन-विरोध। ध्वनि: 'क्रमश:' = मैथिली श्रृंखलाबद्ध प्रकाशन परम्परा - कहानी जे चलैत रहैत अछि।

देरिदा / खुला पाठ: देरिदा केर 'अन्तर केर खेल': 'क्रमश:....' एक पाठ थिक जे स्वयं कैं कहियो सम्पूर्ण नहि मानैत अछि। चरम उत्तर-अर्वाचीन तीव्र लघुकथा।

५२. अखिलेश कुमार मंडल

रचना: टीटनेस (विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'टीटनेस' (धनुष्टंकार/टिटनेस) - वीभत्स+करुण। चिकित्सीय रोग केर रूपमे सामाजिक रूपक: टिटनेस = जकड़न, मुँह खोलबाक असमर्थता = सामाजिक पक्षाघात। मैथिली समाज केर 'टीटनेस' - रूढ़िवाद केर बन्द जबड़ा।

५३. मनोज कुमार मंडल

रचना: बेमेल बिआह (विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'बेमेल बिआह' (बेमेल विवाह) - करुण+व्यंग्य। विवाह संस्था केर मूलभूत असंगति। ध्वनि: 'बेमेल'- समाजमे सभ विवाह केर अन्तर्निहित वास्तविकता अछि।

स्त्रीवादी / अम्बेडकर: अम्बेडकर केर जाति-व्यवस्था-प्रवर्तन केर रूपमे वर्णाश्रम विवाह केर समीक्षा: 'बेमेल बिआह' ई जाति-व्यवस्था केर बेमेल असंगति कैं उजागर करैत अछि।

५४. सत्यनारायण झा

रचना: सुटिया (विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'सुटिया'- शुद्ध मैथिली बोली शब्द। दलित/गरीब शरीर केरूपमे सामाजिक सूचक। करुण रस। शरीर राजनीति: निर्धनता = सामाजिक हाशियाकरण।

५५. पंकज चौधरी 'नवलश्री'

रचना: ई नोर छै गरीबीक (विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'ई नोर छै गरीबीक'- करुण रस। सम्पूर्ण वाक्य शीर्षक केर रूपमे। ध्वनि: नोर केर पहिचान - ई नोर सुख केर नहि, गरीबी केर 'नोर' थिक। सीधा, बिना क्षमा गरीबी कथन।

मार्क्स / गरीबी राजनीति: मार्क्स केर आर्थिक यथार्थवाद: गरीबी पीड़ा सृजित करैत अछि। पंकज चौधरीक शीर्षक एक राजनैतिक कथन केर रूपमे कार्य करैत अछि।

५६. रवि भूषण पाठक

रचना: मुक्ति / बिदाइ / एकातबला (३ विहनि कथा)

रस-ध्वनि: 'मुक्ति' (मुक्ति) - वीर+शान्त। 'बिदाइ' - करुण। 'एकातबला'- शान्त+करुण। अस्तित्वगत त्रयी: मुक्ति → विदाई → एकाकीपन।

अस्तित्ववाद: हाइडेगर केर 'मृत्यु-सत्ता': 'मुक्ति' → 'बिदाइ' → 'एकातबला' = एक अस्तित्वगत क्रमश: चरम एकान्त तर्फ।

५७. डॉ. तारानन्द वियोगी

विहनि कथाक सशक्त हस्ताक्षर मुन्नाजीसँ गप-सप । साहित्य अकादमी पुरस्कार (बाल साहित्य) विजेता

साक्षात्कारक विश्लेषण: डॉ. तारानन्द वियोगी मैथिली साहित्यक एक वरिष्ठ व्यक्तित्व छथि - बाल साहित्य + कविता + आलोचना। मुन्नाजीसँ गप-सपमे ओ

विहनि कथाक इतिहास, चुनौती, आ भविष्य पर विमर्श करैत छथि।

रस-ध्वनि: 'विहनि कथा आत्यन्तिक रूपसँ एक सक्रिय विधा थिक' - वीर+शान्त। वियोगीक कथन: 'सरल रचना पाछाँ सबसँ बेसी परिश्रम' - ध्वनि: सरलता = अधिकतम प्रयास।

नव्य-न्याय/ बेन्यामिन: गंगेशक 'प्रमाण': वियोगीक साक्ष्य विहनि कथाक साहित्यिक वैधता स्थापित करैत अछि। बेन्यामिन: एक साहित्यिक शैली कँ 'परवर्ती जीवन' तखन प्राप्त होइत अछि जखन ओकर समर्पित अभ्यासकर्ता सभ होइत अछि - वियोगी एहि परवर्ती जीवन केर साक्षी थिक।

५८. देवशंकर नवीन

आलोचनात्मक निबन्ध: विहनि कथा लेखनमे अवरोधक तत्व

निबन्धक विश्लेषण: देवशंकर नवीन मैथिली साहित्यिक समीक्षाक एक महत्वपूर्ण स्वर छथि। एहि अन्तिम निबन्धमे ओ विहनि कथा लेखन केर बाधा सभक पहिचान करैत छथि: हड़बड़ी रचना, सूत्र-लेखन, पुनरीक्षण केर अभाव, जाति/समूह पूर्वाग्रह।

रस-ध्वनि: शान्त + बौद्धिक कठोरता। 'अवरोधक तत्व' ध्वनि: ई केवल साहित्यिक बाधा नहि, सामाजिक बाधा सेहो थिक।

बूर्दू / साहित्यिक क्षेत्र: बूर्दू केर 'साहित्यिक क्षेत्र': नवीनक निबन्ध मैथिली साहित्यिक क्षेत्र केर आन्तरिक शक्ति-संघर्ष सभकँ उजागर करैत अछि - समूह निष्ठा।

नव्य-न्याय: गंगेशक 'बाधा' (बाधा): साहित्यिक बाधा सभक व्यवस्थित गणना - ई नव्य-न्याय केर समस्या-पहिचान पद्धति थिक।

विदेह समानान्तर इतिहास: खण्ड-आरम्भ (सिद्धान्त) + खण्ड-समापन (बाधा) = एक सम्पूर्ण साहित्यिक घोषणापत्र। विदेह समानान्तर इतिहास परियोजनामे केवल उत्सव नहि, वरन् ईमानदार आत्म-समीक्षा सेहो शामिल अछि।

उपसंहार: सदेह ५ क समग्र महत्व

सदेह ५ मैथिली विहनि कथा - ५८ साहित्यकारक योगदान सँ मैथिली तीव्र लघुकथा केर एक सम्पूर्ण पारिस्थितिकी-प्रणाली सृजित करैत अछि। ई केवल संकलन नहि, ई एक शैली केर जन्म प्रमाणपत्र थिक।

तीन स्तर पर सदेह ५ कार्य करैत अछि: (क) सिद्धान्त स्तर - गजेन्द्र ठाकुर + मुन्नाजी केर निबन्ध विहनि कथाक सौन्दर्यात्मक सिद्धान्त स्थापित करैत अछि; (ख) व्यवहार स्तर - ५८ लेखक अपन सृजनात्मक कार्य सँ सिद्धान्त कँ मूर्त रूप दैत छथि; (ग) इतिहास स्तर - अमरनाथ (१९७५) सँ लऽ कऽ वर्तमान धरिक परम्परा केर पुरालेख।

विशेष उल्लेखनीय: संस्कृत तीव्र लघुकथा (डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्र), एकल-शब्द शीर्षक (अमरनाथ, भारत भूषण झा), प्रवासी तीव्र लघुकथा (ज्योति सुनीत चौधरी), उत्तर-अर्वाचीन शीर्षक (प्रेमचन्द्र पंकज केर 'क्रमश:....'), काफ्का/अर्थहीनता तीव्र लघुकथा (ऋषि वशिष्ठ केर 'प्रमाण-पत्र'), पारिस्थितिकीय तीव्र लघुकथा (ज्योति केर 'पानिमे खेती')।

चारि ढाँचा केर संश्लेषण: रस सिद्धान्त विहनि कथामे ओतेक सान्द्र रूपमे कार्य करैत अछि जतेक कोनो अन्य शैलीमे नहि - एक वाक्यमे एक रस केर सम्पूर्ण चाप। पाश्चात्य सिद्धान्त (काफ्का, चेखव, जोइस, देरिदा, फूको, कामू, हाइडेगर) हर व्यक्तिगत कहानी केर दार्शनिक गहराई उजागर करैत अछि। नव्य-न्याय तर्क तीव्र लघुकथा केर सङ्कुचित तर्क संरचना केर परीक्षण करैत अछि। विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा ई सुनिश्चित करैत अछि जे दलित, महिला, नेपाल, प्रवासी, शास्त्रीय (संस्कृत) सब स्वर एक मान्य-परम्परागत स्थान पबैत अछि।

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह: सदेह: ५ — मैथिली विहनि कथा (विदेह अंक ५१-१००)

अध्याय 6 · विदेह: सदेह: ७ — मैथिली पद्य (विदेह अंक ५१-१००)

सारांश समग्र साहित्यिक समीक्षा: सभटा साहित्यकार भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य । आइएसबीएन: 978-93-80538-65-

१. गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादक) पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र (निबन्ध) + कुण्डलिया १-४ / टनका / हाइकू / शेनर्यू / हैबून / / कत

/ गजल / कटिहारी समीक्षाशास्त्र: ठाकुरक सैद्धान्तिक निबन्ध मैथिली पद्य केर समग्र ढाँचा थिक: प्लेटो केर 'आयोन' + अरस्तु के

'काव्यशास्त्र' सँ आरम्भ करैत मैथिली छन्द परम्परा, अर्वाचीन मुक्त छन्द, जापानी शैली (हाइकू-टनका), अरबी-फारसी शैली (गजल-

कसीदा) धरि। 'कोनो रचना अप्रासङ्गिक नहि होइत अछि जँ ओ अहाँकेँ हिलोड़ि दिअए तँ ओ रचना सार्थक।' ई विदेह केर समावेशी समीक्षा

केर घोषणापत्र थिक।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · समीक्षाशास्त्र · वक्रोक्ति · औचित्य · गजल · हाइकू · काव्यशास्त्र

समग्र साहित्यिक समीक्षा: सभटा साहित्यकार

भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य । पाश्चात्य आलोचना । गंगेशक नव्य-न्याय । विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर । आइएसबीएन: 978-93-80538-65-5

१. गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादक)

पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र (निबन्ध) + **कुण्डलिया १-४** / **टनका** / **हाइकू** / **शेनर्यू** / **हैबून** / / **कता** / **गजल** / **कटिहारी**

समीक्षाशास्त्र: ठाकुरक सैद्धान्तिक निबन्ध मैथिली पद्य केर समग्र ढाँचा थिक: प्लेटो केर 'आयोन' + अरस्तु केर 'काव्यशास्त्र' सँ आरम्भ करैत मैथिली छन्द परम्परा, अर्वाचीन मुक्त छन्द, जापानी शैली (हाइकू-टनका), अरबी-फारसी शैली (गजल-कसीदा) धरि। 'कोनो रचना अप्रासङ्गिक नहि होइत अछि जँ ओ अहाँकेँ हिलोड़ि दिअए तँ ओ रचना सार्थक।' ई विदेह केर समावेशी समीक्षा केर घोषणापत्र थिक।

कविताक विश्लेषण: कुण्डलिया (शास्त्रीय मैथिली अन्त:श्लिष्ट दोहा शैली) + टनका (जापानी ५-७-५-७-७ वर्ण शैली) + हाइकू + शेनर्यू + हैबून (हाइकू+गद्य) + रुबाइ (अरबी शैली) + कता (फारसी शैली) + गजल + कटिहारी (मिथिला लोक शैली) - ई विस्तार घोषित करैत अछि जे मैथिली कविता विश्व साहित्य केर अछि।

नव्य-न्याय: गंगेशक 'सामान्य' (सार्वभौमिक): ठाकुरक निबन्ध तर्क करैत अछि जे उत्तम कविता केर 'सामान्य लक्षण' (सार्वभौमिक अभिलक्षण) 'झमारनाइ' (प्रभाव, अनुनाद) अछि - ई नव्य-न्याय केर 'व्याप्ति'- आधारित तर्क थिक।

२. अंजनी कुमार वर्मा 'दाऊजी'

आत्मबल / **ओजक भोज** / **समस्या** / **वासंती गीत** / **दुइ गोट भूख** / **सुखाएल अतीत** / **बेरोजगारक आत्मा** / **जाति आ तंत्र** / **कोसी** (अनेक कविता)

रस-ध्वनि: 'आत्मबल' - वीर रस। 'दुइ गोट भूख' - करुण - दोबर भूख: भौतिक + मनोवैज्ञानिक। 'जाति आ तंत्र' - रौद्र+व्यंग्य - अम्बेडकरक जाति समीक्षा। 'कोसी' - करुण+ पारिस्थितिकीय। ध्वनि: 'सुखाएल अतीत' (सुखल अतीत) = हानि केर रूपमे विषाद। वक्रोक्ति: 'ओजक भोज' (ऊर्जा केर भोज) - 'ओज' (ऊर्जा) कतय अछि जखन 'भोज' खाली अछि?

ग्राम्शी / अम्बेडकर: 'जाति आ तंत्र' = ग्राम्शी केर संस्थागत वर्चस्व + अम्बेडकर केर जाति विश्लेषण: जाति प्रणाली अछि। 'बेरोजगारक आत्मा' = बेरोजगार व्यक्ति केर आत्मा - आर्थिक हाशियाकरण केर आध्यात्मिक दरिद्रता।

३. मिथिलेश कुमार झा

खबरदार / गजल

रस-ध्वनि: 'खबरदार' (सावधान!) - वीर रस। राजनैतिक चेतावनी कविता। गजल: शृंगार-वियोग। दुनू शैली केर विरोधाभास: सार्वजनिक चेतावनी + व्यक्तिगत लालसा - एक कवि केर दूटा नागरिकता।

४. बलराम साह

आकि नींद टूटि गेल

रस-ध्वनि: 'आकि नींद टूटि गेल'- वीर+शान्त। 'आकि' (जेना) = सपन जकाँ जागृति ध्वनि: की ई वास्तविक जागृति थिक या सपना? वक्रोक्ति: नींद टूटनाइ = राजनैतिक चेतना।

५. रवि भूषण पाठक

हाइकू / ऐ बेर छठिमे / मरणोपरान्त / बर्फ भोर / चमारक ऋण / दीवाली के पहिले / धनतेरस राति / हम पुरहितिया / चालीसक बात (२०+ कविता)

परिचय: रवि भूषण पाठक सदेह ७ मे २०+ कविता। हुनकर विस्तार असाधारण अछि: दलित भक्ति ('ऐ बेर छठिमे'), अस्तित्वगत ('मरणोपरान्त'), पर्व समीक्षा ('धनतेरस'), जीवन समीक्षा ('चालीसक बात')।

'ऐ बेर छठिमे' विशेष विश्लेषण: गजेन्द्र ठाकुर विशेष रूपसँ उल्लेख करैत छथि: 'ऐ बेर छठिमे' मे दलित भक्ति बिम्ब अछि - देवता दुसाध-टोला पाछाँ सँ उगैत अछि। ध्वनि: सूर्य (दैवी) दलित पड़ोस सँ उगैत अछि - ई स्थानिक धर्मशास्त्र थिक। वक्रोक्ति: दैवी प्रकाश केर उत्पत्ति दलित स्थानमे।

'चमारक ऋण' दलित अस्मिता: 'चमारक ऋण' (चमार केर ऋण) - रौद्र+करुण। ध्वनि: 'ऋण' (ऋण) - दलित समुदाय केर समाज प्रति अदत्त ऋण? वा समाज केर दलित प्रति अदत्त नैतिक ऋण? ई अस्पष्टता कविताक शक्ति अछि। अम्बेडकर: दलित सब किछु देलक एहि सभ्यता कैं - सभ्यता ओकर ऋणी अछि।

नव्य-न्याय: गंगेशक 'अन्वय-व्यतिरेक': 'चमारक ऋण' - जतय चमार (दलित) अछि, ततय ऋण (सामाजिक उत्पीड़न) अछि; जतय चमार अनुपस्थित अछि, ततय ऋण अनुपस्थित अछि - ई सह-अस्तित्व/अनुपस्थिति तर्क।

६. राजेश मोहन झा 'गुंजन'

मिझाइत दीप / मूड़नक भोज / थेथर नेता / गरम जमाना / पलायन / सुगर फ्री

रस-ध्वनि: 'मिझाइत दीप' (बुझैत दीप) - करुण। 'थेथर नेता' (बेशरम नेता) - हास्य+रौद्र। 'सुगर फ्री'- हास्य। 'पलायन' (पलायन) - करुण। ध्वनि: 'मूड़नक भोज' (मुण्डन केर भोज) - जीवन-चक्र अनुष्ठान केर रूपमे सामाजिक व्यय व्यंग्य।

ग्राम्शी / स्त्रीवादी: 'थेथर नेता' = ग्राम्शी केर अधीनस्थ जे वर्चस्ववादी शासक बनि जाइत अछि।

भूल सुधार: नवीन कुमार 'आशा'क “अन्तरकलह आ विचार” आ “बैसल-बैसल सोची मन मे विदेहक ७२ म अंक (१५ दिसम्बर २०१०) मे ई-प्रकाशित भेल मुदा गलतीसँ ई दुनू कविता विदेह-सदेह ७ मे **राजेश मोहन झा 'गुंजन'** केर नामसँ प्रकाशित भऽ गेल। ओना तकर सुधार कऽ देल गेल विदेह-सदेह ३४ मे, जखन भूल-सुधार सूचनाक संग ई दुनू कविता **नवीन कुमार 'आशा'क** नामसँ प्रकाशित भेल।

७. नवीन कुमार 'आशा'

सुनू सुनाउ अपन खबरि / रोटी / हमरा भेटल

रस-ध्वनि: 'रोटी'- करुण। रोटी केर रूपमे जीवन केर मूलभूत माँग। 'सुनू सुनाउ' - संवादात्मक अपील। 'हमरा भेटल'- शान्त+शृंगार। ध्वनि: 'आशा' नाम - कवि केर नाममे आशा + निराश वास्तविकता केर बीच।

८. शम्भुनाथ झा 'वत्स'

उग्रवादी बनि जाइ

रस-ध्वनि: 'उग्रवादी बनि जाइ' (क्रान्तिकारी बनि जाइ) - वीर रस। साहित्याचार्य, वेदविद्: शास्त्रीय संस्कृत विद्वान राजनैतिक कविता लिखैत। वक्रोक्ति: ब्राह्मण विद्वान क्रान्ति केर आह्वान करैत - ई ग्राम्शीय 'कार्बनिक बुद्धिजीवी' केर संकेत थिक।

९. अजित मिश्र

नव वर्ष

रस-ध्वनि: 'नव वर्ष' - शान्त+शृंगार। नव वर्ष नवीकरण केर रूपक केर रूपमे। वर्ड्सवर्थ केर 'समय केर धब्बा': नव वर्ष समय केर गमन आ सम्भावना केर चिन्ह लगाबैत अछि।

१०. डॉ. शेफालिका वर्मा

नव वर्ष / इजोरियाक भाषा / उपेक्षित / देश / विधाता / बच्चा आ बेवस्था / स्मृति-शेष

रस-ध्वनि: 'इजोरियाक भाषा'- शृंगार+शान्त। ध्वनि: इजोरिया= स्त्रीलिंगी, अप्रत्यक्ष वाणी। 'उपेक्षित' (उपेक्षित) - करुण। 'विधाता' (विधाता/स्रष्टा) - रौद्र+व्यंग्य - भाग्य/भगवान केर प्रश्न। 'बच्चा आ बेवस्था' - करुण+वीभत्स।

स्पिवाक / पारिस्थितिकीय-स्त्रीवादी: 'देश' + 'विधाता' + 'उपेक्षित': शेफालिका वर्मा केर कविता व्यवस्थित रूपसँ पितृसत्तात्मक संरचना सभ पर प्रश्न करैत अछि- दैवी, राष्ट्रिय, पारिवारिक। स्पिवाक: महिलाक स्वर एहि सब क्षेत्रमे हाशियाकृत ('उपेक्षित') अछि।

११. सतीश चन्द्र झा

चुनाव १-२ / भाषा आ राजनीति / सत्यक जीत / भूखल पेट / पाँच साल / सौंसे बिहार एखनो बेहाल / नेन्ना तेतरी

रस-ध्वनि: 'चुनाव' - हास्य+व्यंग्य+रौद्र। 'भाषा आ राजनीति' - वीर+व्यंग्य- मैथिली भाषा राजनीति। 'भूखल पेट' - करुण। 'सौंसे बिहार एखनो बेहाल' - रौद्र+करुण। 'नेन्ना तेतरी' - लोक नामकरण केर राजनैतिक कविता। ध्वनि: 'पाँच साल'= चुनाव चक्र केर रूपमे आवर्ती दुःस्वप्न।

ग्राम्शी / स्पिवाक: 'भाषा आ राजनीति' = बूर्द्यू केर भाषिक पूँजी + ग्राम्शी केर सांस्कृतिक वर्चस्व: मैथिली भाषा राजनीति सत्ता राजनीति थिक।

१२. सुबोध कुमार ठाकुर

विडम्बना / प्रतीक्षा

रस-ध्वनि: 'विडम्बना + प्रतीक्षा' - करुण+शान्त ('विडम्बना' = दुखान्त व्यंग्य)। दुनू कवितामे एक नीरस प्रतीक्षा केर भाव।

१३. किशन कारीगर

दौगल चलि जाएब

रस-ध्वनि: 'दौगल चलि जाएब गाम'- करुण+वात्सल्य। पलायन-उलटफेर केर इच्छा - सहर सँ गाम लौटबाक लालसा।

१४. राम विलास साहु

कोइली

रस-ध्वनि: 'कोइली कूहकै आमक डारि'- शृंगार। विद्यापति परम्पराक निरन्तरता। कोइली केर कूक प्रेम केर सन्देशवाहक।

१५. पंकज कुमार झा

उद्बोधन

रस-ध्वनि: 'उद्बोधन' (उद्बोधन/जागृति आह्वान) - वीर रस। जागरूकता केर आह्वान केर रूपमे कविता।

१६. मुन्नाजी

हाइकू / बोनिहार / माटिक ललकार

रस-ध्वनि: 'बोनिहार' (बोनिहार/कृषक) - करुण+वीर। ग्राम्शी केर अधीनस्थ - कृषक केर आवाज। 'माटिक ललकार' (माटि केर ललकार) - भूमि केर पुकार

- पारिस्थितिकीय चेतना। हाइकू - क्षणिक बिम्ब सभक शृंखला।

१७. ज्योति सुनीत चौधरी

हाइकू-टनका / **भ्रष्टाचार** / **जीतक परिभाषा** / **प्रजातन्त्रक खेल** / **स्वतन्त्रता दिवस** / **पोखरिक कमल** / **मिथिला चित्रकला** (आ अन्य अनेक कविता)

रस-ध्वनि: 'भ्रष्टाचार'- रौद्र+व्यंग्य। 'प्रजातन्त्रक खेल' - रौद्र+करुण। 'पोखरिक कमल' (पोखरि केर कमल)- शान्त+शृंगार। 'मिथिला चित्रकला' - अद्भुत। 'जीतक परिभाषा' (विजय केर परिभाषा) - वीर। ध्वनि: लन्दन-प्रवासी दृष्टिकोण: 'प्रजातन्त्रक खेल' खेल' बाहर सँ देखल - आरो विध्वंसकारी।

स्पिवाक / **मिथिला चित्रकला:** स्पिवाक केर प्रवासी अधीनस्थ: ज्योति सुनीत चौधरी लन्दन सँ 'प्रजातन्त्रक खेल' केर बारेमे लिखैत छथि - बाहरी-भीतरी स्थिति। 'मिथिला चित्रकला' = विदेह केर दृश्य कला + साहित्यिक कला एकीकरण केर प्रतिबद्धता।

१८. अन्नावरन देवेन्द्र

तेलुगु पद्य: अन्तिम शब्द (मैथिली अनुवाद)

रस-ध्वनि: 'अन्तिम शब्द'- करुण+शान्त। तेलुगु मूल + मैथिली अनुवाद। ध्वनि: 'अन्तिम शब्द' - अन्तिम शब्द की अछि? मौन? मृत्यु? प्रेम?

बेन्यामिन / **अन्तर-साहित्यिक:** बेन्यामिन केर 'परवर्ती जीवन': मैथिलीमे तेलुगु कविता- दक्षिण भारतीय स्वर उत्तर भारतीय भाषामे। विदेह केर राष्ट्रव्यापी परिकल्पना: भारत केर साहित्यिक विविधता एक्के मञ्च पर।

१९. गिरीश चन्द्र लाल

नील अकास / **शुभ प्रभात** / **मन में भेल अछि भोर** / **एक रंग अनेक रंग**

रस-ध्वनि: 'नील अकास' (नील आकाश) - शान्त+शृंगार। 'शुभ प्रभात'- वात्सल्य+शान्त। 'मन मे भेल अछि भोर'- शान्त+वीर। 'एक रंग अनेक रंग' - अद्भुत। तीनू: आकाश + प्रभात + रङ्ग - प्रकाश केर रूपमे आशा।

२०. गंगेश गुंजन

आजाद गजल १-२ / **स्वतन्त्रता दिवस २०१०**

रस-ध्वनि: 'आजाद गजल' = मुक्त गजल (बिना औपचारिक बहर/मीटर केर) - गंगेश गुंजन केर नवाचार। 'स्वतन्त्रता दिवस २०१०' - वीर+व्यंग्य। ध्वनि: 'आजाद' (मुक्त) गजल 'स्वतन्त्रता' (स्वतन्त्रता) दिवस पर - शैली-स्वतन्त्रता सामग्री-स्वतन्त्रता केर दर्पण करैत अछि। बाख्तिन बहुस्वरता।

२१. मनीष झा 'बौआभाइ'

भेल एहेन अवतार छल

रस-ध्वनि: 'भेल एहेन अवतार छल'- अद्भुत+व्यंग्य। अवतार रूपक- आधुनिक जीवनमे दैवी अवतरण केर व्यंग्य।

२२. लालबाबू कर्ण

जन्मभूमि

रस-ध्वनि: 'जन्मभूमि' - वात्सल्य+वीर। जन्मभूमि सँ लगाव - मिथिला प्रेम।

२३. चन्द्रशेखर कामति

दुनू परानी फूकि-फूकि पी

रस-ध्वनि: 'दुनू परानी फूकि-फूकि पी'- हास्य+शृंगार। घरेलू हास्य - दम्पति केर दैनिक जीवन केर चित्रण।

२४. मनोज झा 'मुक्ति'

देखाबटी छोड़ि दे

रस-ध्वनि: 'देखाबटी छोड़ि दे'- शान्त+व्यंग्य। पाखण्ड केर त्याग केर आह्वान।

२५. राजेन्द्र चौधरी

श्रीकृष्ण भजन

रस-ध्वनि: 'श्रीकृष्ण भजन' - भक्ति रस। पारम्परिक भक्ति कविता - विद्यापति परम्पराक निरन्तरता।

२६. रमाकान्त राय 'रमा'

वन्दना

रस-ध्वनि: 'वन्दना' (वन्दना) - भक्ति+शान्त। प्रार्थना केर रूपमे कविता।

२७. प्रकाश प्रेमी

गीत

२८. सुमन झा 'सृजन'

कैक्टस जकाँ दिल

रस-ध्वनि: 'कैक्टस जकाँ दिल'- शृंगार+करुण। नागफनी केर काँट- प्रेम केर पीड़ा केर रूपक।

२९. शिवकुमार मिश्र

भलमानुस समाज

रस-ध्वनि: 'भलमानुस समाज'- हास्य+व्यंग्य। 'भला मानुस' केर समाज केर व्यंग्यपूर्ण चित्रण - वास्तविकता सँ दूर।

३०. डॉ. बचेश्वर झा

भेँट, भावाञ्जलि

३१. श्यामल सुमन

सत्य (कहू की फूसि बजै छी?)

३२. जय प्रकाश मंडल

उपराग

रस-ध्वनि: 'उपराग' (उपराग/ग्रहण) - करुण। ग्रहण रूपक - अन्धकार केर क्षण केर चित्रण।

३३. सत्येश्वर कुमार झा

दस गोट क्षणिका

रस-ध्वनि: 'दस गोट क्षणिका' (दस क्षणिका) - शान्त। दस क्षणिका - दस क्षण केर बिम्ब शृंखला।

३४. कपिलेश्वर साहु

कोसी

रस-ध्वनि: 'कोसी' (कोसी नदी) - रौद्र+करुण। कोसी बाढ़ २००८: पारिस्थितिकीय + दलित प्रलय। बेन्यामिन: साक्षी बनल।

३५. राधाकान्त मंडल 'रमण'

स्वागत गीत

रस-ध्वनि: 'स्वागत गीत' (स्वागत गीत) - वात्सल्य+शृंगार। अतिथि सत्कार परम्परा केर गीत।

३६. धीरेन्द्र प्रेमर्षि

फगुआ गीत

रस-ध्वनि: 'फगुआ गीत' (फगुआ/होली गीत) - हास्य+शृंगार। बाख्तिन उत्सवी-लोकधर्मी - होली केर उत्सवी उन्माद।

३७. सरोज 'खिलाड़ी'

गीत

रस-ध्वनि: सरोज खिलाड़ी केर गीत- शृंगार+करुण। स्त्री, प्रेम आ वियोग।

३८. नन्द विलास राय

जनसंख्या

रस-ध्वनि: 'जनसंख्या' (जनसंख्या) - व्यंग्य। जनसंख्या वृद्धि केर व्यंग्यपूर्ण चित्रण।

३९. विनीत ठाकुर

शान्ति दूत परवा

रस-ध्वनि: 'शान्ति दूत' (शान्ति दूत) - शान्त रस। शान्ति केर सन्देशवाहक केर रूपमे कविता।

४०. इन्द्रकान्त झा

गीत

रस-ध्वनि: गीत। गीत परम्पराक निरन्तरता।

४१. मनोज कुमार मंडल

बेटी / मिथिला / नारी चरित्र

रस-ध्वनि: 'बेटी' (बेटी) - करुण+वीर। स्त्रीवादी - बेटी केर स्थिति पर प्रश्न। 'मिथिला' - वात्सल्य+शान्त। 'नारी चरित्र' - स्त्री केर चरित्र केर पुनर्मूल्याङ्कन।

४२. डॉ. राजीव + जया वर्मा (दम्पति)

हमर गाम

रस-ध्वनि: 'हमर गाम'- वात्सल्य+शान्त। संयुक्त लेखन (दम्पति) - विदेह केर दम्पति-लेखन परम्परा।

४३. रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

गजल

रस-ध्वनि: 'गजल'- शृंगार-वियोग। नेपाली मैथिली आजाद गजल परम्परा।

४४. कामिनी कामायनी

बाजारमे स्त्री

रस-ध्वनि: 'बाजारमे स्त्री'- वीभत्स+वीर। स्त्री केर वस्तुीकरण केर चित्रण। स्पिवाक: महिला बजारमे वस्तु केर रूपमे।

४५. बेचन ठाकुर

गीत

रस-ध्वनि: बेचन ठाकुर केर गीत - शृंगार+हास्य। लोक-नाट्य परम्पराक निरन्तरता।

४६. रमण कुमार सिंह

दिल्लीमे...

रस-ध्वनि: 'दिल्लीमे...' - करुण+व्यंग्य। बूर्ढ़ू केर महानगरीय क्षेत्र - दिल्लीमे मैथिली प्रवासी केर विस्थापन।

४७. विद्यानन्द झा 'विदू'

हमर मिथिला / दहेज

रस-ध्वनि: 'हमर मिथिला' - वात्सल्य+शान्त। मिथिला प्रेम। 'दहेज' - रौद्र+करुण। दहेज प्रथा केर विरोधी कविता।

४८. इन्दु भूषण कुमार

सफलता हमर रानी / दहेज

रस-ध्वनि: 'सफलता हमर रानी'- हास्य+व्यंग्य। सफलता केर व्यंग्यपूर्ण चित्रण। 'दहेज' - रौद्र+करुण - दहेज विरोधी।

४९. विवेकानन्द झा

नोरमे अछि बेस संभावना / हे सिंगरहार / खत्म करऽ चाहैत छी जिनगी / हम / हाइकू-शेनर्यू

परिचय: विवेकानन्द झा - ३०+ कविता। गजेन्द्र ठाकुर विशेष रूपसँ उनकर 'हम कविता' आ 'हमही अहाँक फूलडाली सँ उझकि कऽ खसल कनेर' केर उद्धरण करैत छथि।

'खत्म करऽ चाहैत छी जिनगी' विशेष विश्लेषण: ई कविता अस्तित्वगत संकट केर प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति थिक। करुण+रौद्र। कामू केर 'केवल एक गम्भीर दार्शनिक समस्या अछि'- अल्बर्ट कामूक 'द मिथ ऑफ सिसिफस' निबंधमे जीवनक निरर्थकताक बादो जीबाक संघर्ष कैँ एकमात्र गंभीर दार्शनिक प्रश्न मानल गेल अछि। ई दर्शन मानैत अछि जे मानव जीवनमे अर्थक खोज आ ब्रह्मांडक द्वारा ओकरापर ध्यान नै देनाइ, ऐ दुनूकक बीच ढुइस 'एब्सर्ड' (विसंगति) अछि, से एकरा आत्महत्याक बदला उत्साह सँ जीबाक चाही। ई कविता मैथिलीमे सेहो गम्भीरता सँ लेल गेल अछि। ध्वनि: 'खत्म करबाक' इच्छा केर अभिव्यक्ति एकटा जीवित रहबाक कार्य अछि - जोर सँ कहनाइ ओकरा रोकैत अछि।

रस-ध्वनि: 'नोरमे अछि बेस संभावना'- करुण+वीर। ध्वनि: नोर = सम्भावना केर बीज - ग्राम्शी केर 'बुद्धिक निराशावाद, इच्छा केर आशावाद'। 'हे सिंगरहार'- श्रृंगार+करुण। 'हम' - केवल आत्म-दृढ़ोक्ति।

हाइडेगर / प्रामाणिकता: विवेकानन्द झा केर कविताक केवल मात्रा + विस्तार हाइडेगरक 'प्रामाणिक अस्तित्व' केर प्रदर्शन करैत अछि - अपन सब आयाममे जीवन सँ पूर्ण रूपसँ जुड़ल। शेष कविता - हाइकू-शेनयू श्रृंखला):

हाइकू आ शेनर्यू (जापानी शैली) केर अनेक सङ्कलन- प्रकृति, ऋतु, क्षण केर बिम्ब। मैथिलीमे जापानी शैली केर सफल प्रयोग।

५१. रोशन झा

हाइकू-गजल

रस-ध्वनि: हाइकू-गजल संकर शैली - हाइकू केर संक्षिप्तता + गजल केर रदीफ-काफिया संरचना।

५२. प्रबीण चौधरी 'प्रतीक'

हाइकू-गजल

रस-ध्वनि: हाइकू-गजल संकर शैली केर निरन्तरता।

५३. सुभाष चन्द्र

क्षणिका

रस-ध्वनि: क्षणिका - शुद्ध अल्पतमवाद। एक क्षण केर सम्पूर्ण बिम्ब।

५४. रवीन्द्र कुमार दास

क्षणिका

रस-ध्वनि: क्षणिका - क्षण केर बिम्ब। प्रकृति चित्रण।

५५. कुसुम ठाकुर

हाइकू-शेनयू

रस-ध्वनि: हाइकू-शेनर्यू - स्त्री दृष्टिकोण सँ हाइकू।

५६. रमाकान्त झा 'सौराठ'

घर ने पथार

रस-ध्वनि: 'घर ने पथार अछि टूटल मरैया'- करुण। टूटल घर केर रूपक - परिवारिक विघटन।

५७. मृदुला प्रधान

एकटा आपबीती / गणतन्त्र दिवस / यमुनाजी

रस-ध्वनि: 'कतए गेल गणतन्त्र दिवस'- रौद्र+व्यंग्य। गणतन्त्र दिवस केर विलाप। 'यमुनाजी'- पारिस्थितिकीय- यमुना केर रूपमे मरैत देवी। 'एकटा आपबीती'- व्यक्तिगत आख्यान - स्त्री संघर्ष केर कथा।

५८. प्रवीण कश्यप

आच्छादन

रस-ध्वनि: 'आच्छादन'- शान्त। भावनात्मक आवरण केर रूपक।

५९. अरविन्द ठाकुर

आजाद गजल

रस-ध्वनि: 'आजाद गजल' (मुक्त गजल) - अरविन्द ठाकुर विदेह गजल आन्दोलन केर भाग। बिना बहर केर गजल - शैलीगत स्वतन्त्रता।

६०. धीरेन्द्र कुमार

हमर गाम

रस-ध्वनि: 'हमर गाम' - वात्सल्य+शान्त। गाम प्रेम केर कविता- मिथिलाक ग्रामीण जीवन केर चित्रण।

६१. अखिलेश कुमार मंडल

ट्रेनक चोरबा

रस-ध्वनि: 'ट्रेनक चोरबा' (ट्रेन केर चोर) - हास्य+व्यंग्य। काफ्कीय अर्थहीनता।

६२. कालीनाथ ठाकुर

कुण्डलिया १-७ (अभिशाप बापक पाप)

रस-ध्वनि: 'अभिशाप बापक पाप कुण्डलिया १-७- करुण+रौद्र। पिता केर श्राप विषय शास्त्रीय कुण्डलिया शैलीमे। शास्त्रीय शैली + समकालीन विषय।

६३. सत्यानन्द पाठक

आह! जाड़ चलि गेल!

रस-ध्वनि: 'जाड़ गेल'- शान्त+करुण। ऋतु परिवर्तन केर रूपक - जीवन केर परिवर्तन।

६४. दयाकान्त

मैथिल

रस-ध्वनि: 'मैथिल'- वीर रस। मैथिल अस्मिता केर गौरवगान।

६५. रमेश

गद्य कविता

रस-ध्वनि: गद्य कविता - शान्त+बौद्धिक। गद्य केर शैलीमे काव्यात्मकता - शैलीगत प्रयोग।

६६. शिवशंकर सिंह ठाकुर

रुबाइ-गजल

रस-ध्वनि: रुबाइ (अरबी प्रेम-विलाप शैली) + गजल । शृंगार+करुण।

६७. इरा मल्लिक

भोर भेलै- हाइकू/ शेनर्यू/ टनका

रस-ध्वनि: 'आँखि सुतल नै राति भरि'- करुण+शान्त। निद्राहीनता अस्तित्वगत अवस्था केर रूपमे। बहु-शैली: हाइकू + टनका + शेनर्यू।

६८. विनीता झा

हम छी बुद्धिक थोड़

रस-ध्वनि: 'बुद्धिक थोड़'- शान्त+व्यंग्य। अपन बुद्धि केर अभाव पर आत्म-व्यंग्य।

६९. अक्षय कुमार चौधरी

वाणिक लैस

रस-ध्वनि: 'वाणिक लैस'- उत्तराहा-दखिनाहा पर व्यंग्य।

७०. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'

गजल १-१२

विशेष: 'अनिल' केर बारह गजल - विदेह गजल आन्दोलन केर आधारशिला सभमे एक। बाख्तिन संवादवाद: सभ शेरमे एक वार्तालाप- कवि अपना सँ, प्रिय सँ, समाज सँ। शृंगार-वियोग प्रधान मुदा दार्शनिक गहराई पर्याप्त अछि। रदीफ-काफिया वास्तुकला।

७१. विकास झा 'रंजन'

नजरि

रस-ध्वनि: 'नजरि' (नजर/दृष्टि) - शान्त+शृंगार। प्रिय केर दृष्टि केर वर्णन।

७२. अनिल मल्लिक

गीत / आजाद गजल

रस-ध्वनि: गीत आ आजाद गजल - शृंगार+करुण। प्रेम आ वियोग केर दोहरा स्वर।

७३. आनन्द झा 'मैथिल'

पंचैती

रस-ध्वनि: 'पंचैती' (पञ्चायत) - व्यंग्य+रौद्र। ग्राम पञ्चायत केर व्यंग्यपूर्ण चित्रण।

७४. प्रभात राय भट्ट

सीता माएक गाम

रस-ध्वनि: 'सीता माएक गाम' (सीता माई केर गाम - जनकपुर) - वीर+भक्ति। सीता केर मिथिला/ जनकपुर केर रूपमे मैथिली तीर्थ।

७५. अमित मोहन झा

कोना जीवन बिततै

रस-ध्वनि: 'जीवन' (जीवन) - शान्त+करुण। जीवन केर दार्शनिक चिन्तन।

७६. गुलसारिका

बहिना-फूल

रस-ध्वनि: 'जाहि बयस हमर बहिना फूल लोढ़ै छलीह' - करुण+वात्सल्य। बेन्यामिन: बचपन केर स्मृति केर रूपमे मुक्तिदायी बिम्ब।

७७. भावना नवीन

आजाद गजल १-४

रस-ध्वनि: आजाद गजल- नारी गजल स्वर। श्रृंगार+वियोग। स्पिवाक: महिला परम्परागत रूपसँ पुरुष-प्रधान गजल शैलीमे प्रवेश करैत अछि।

७८. मिहिर झा

रुबाइ / कसीदा / गजल/ बन्द / टनका / हाइकू / शेनर्यू

विशेष: गजेन्द्र ठाकुर विशेष रूपसँ उल्लेख करैत छथि - मिहिर झाक रुबाइ 'छेद भेल करेज मे शराब कोना राखी' मैथिलीक श्रेष्ठ रुबाइ सभमे सँ अछि। रुबाइ = अरबी प्रेम-विलाप शैली। ध्वनि: 'छेद भेल करेज' (छेद भेल ह्रदय) + 'शराब' = सूफी आध्यात्म-दर्शन: छेदल ह्रदय = आध्यात्मिक रूपसँ ग्रहणशील; शराब = दैवी प्रेम। मिहिर केर बहुविध विस्तार (रुबाइ+बन्द+कसीदा+टनका+हाइकू+शेनर्यू+गजल)- सदेह ७ केर सबसँ व्यापक शैलीगत विस्तार।

७९. डॉ. शशिधर कुमार

की इएह कहाबैछ सुन्नरता??

रस-ध्वनि: 'सुन्दरता?' - शान्त+व्यंग्य। सुन्दरता केर परिभाषा पर प्रश्नचिह्न।

८०. अमरेन्द्र कुमार मिश्र

नेता

रस-ध्वनि: 'नेता'- हास्य+रौद्र। नेता केर व्यंग्यपूर्ण चित्रण - राजनीति पर व्यंग्य।

८१. सुबोध झा

शाइरी

रस-ध्वनि: 'शाइरी' - श्रृंगार+करुण। उर्दू शायरी परम्परा मैथिलीमे।

८२. मो. गुल हसन

किसानमे बकलेल

रस-ध्वनि: 'सभटा किसानमे हमहीं बकलेल...'- मुस्लिम मैथिली कवि किसान सँ अस्मिता जतावैत। 'बकलेल' (अचम्भित/असमञ्जस) = व्यक्तिगत + सामुदायिक दशा दुनू। बूर्द्यु: ब्राह्मण-प्रधान मैथिली साहित्यिक क्षेत्रमे मुस्लिम स्वर। ई विदेह केर बहुलवादी मान्य-परम्परा केर प्रमाण थिक।

८३. प्रीति प्रिया झा

बेटी

रस-ध्वनि: 'बेटी' - वात्सल्य+वीर। बेटी केर जन्म केर उत्सव + बेटी केर अधिकार केर माँग।

८४. पवन कुमार साह

प्रेम-गीत

रस-ध्वनि: 'प्रेम-गीत' - शृंगार रस। परम्परागत प्रेम गीत शैली।

८५. स्तुति नारायण

मन पड़ैत

रस-ध्वनि: 'मन पड़ैत'- शान्त+शृंगार। मन केर अवस्था केर चित्रण।

८६. स्वाती शाकम्भरी

पिताजी

रस-ध्वनि: 'पिताजी' - वात्सल्य (उल्टा: बेटी केर पिता प्रति श्रद्धांजलि)। ध्वनि: पैतृक प्रेम - वर्ड्सवर्थ केर स्मृति-धब्बा।

८७. अरविन्द रंजन दास

क्षणिका

रस-ध्वनि: क्षणिका - क्षण केर बिम्ब। प्रकृति चित्रण केर शृंखला।

८८. बि.पि.उदासी

जिबनक आहार

रस-ध्वनि: 'जिबनक आहार'- शान्त+करुण। जीवन केर पोषण केर रूपक।

८९. प्रमोद रंगीले

देखियौ

रस-ध्वनि: 'देखियौ'- शान्त+व्यंग्य। सामाजिक आदत सभ पर व्यंग्य।

९०. रवि मिश्र 'भारद्वाज'

अन्तिम क्षण / मतदान / आजाद गजल

रस-ध्वनि: 'अन्तिम क्षण' - करुण+शान्त। मृत्यु केर क्षण केर चिन्तन। 'मतदान' - वीर+व्यंग्य। लोकतन्त्र केर मतदान पर व्यंग्य। आजाद गजल - शृंगार+करुण।

९१. मधुपनाथ झा

धरती खिसियाएल

रस-ध्वनि: 'धरती खिसियाएल'- रौद्र+करुण। पारिस्थितिकीय क्रोध - पर्यावरण प्रदूषण पर कविता।

९२. बृषेश चन्द्र लाल

टनका / हाइकू

रस-ध्वनि: टनका (जापानी ५-७-५-७-७ शैली) + हाइकू। नेपाली राजनैतिक कवि - प्रकृति चित्रण केर माध्यमसँ राजनीति।

९३. आशुतोष मिश्र

गीत / गजल

रस-ध्वनि: गीत आ गजल - शृंगार रस। प्रेम आ वियोग केर दोहरा स्वर।

९४. इप्सिता सारंगी

हिलकोर (ओडिया कविता) - मैथिली अनुवाद

रस-ध्वनि: 'हिलकोर' (लहर/तरङ्ग) - ओडिया मूल + मैथिली अनुवाद। ध्वनि: ई ओडिया काव्य संवेदनशीलता केर मैथिलीमे अनुवाद। बेन्यामिन: एक अन्य भाषिक परवर्ती जीवन। स्त्रीवादी (बटलर): 'लैङ्गिकता' केर विघटन। पारिस्थितिकीय-स्त्रीवादी: प्रकृति, 'छोट बुच्ची' सँ नारी मन।

९५. मनोज कुमार झा

शासक लोकनिसँ

रस-ध्वनि: 'शासक लोकनिसँ'- व्यंग्य+रौद्र। शासक वर्ग केर व्यंग्यपूर्ण चित्रण - सत्ता विरोधी कविता।

९६. शान्तिलक्ष्मी चौधरी

हाइकू / गजल / गद्य

रस-ध्वनि: 'तिलकोर, बथुआक तीमन' (तिलकोर, बथुआ केर तीमन) - साधारण रसोई सामग्री केर रूपमे काव्य विषय। ई 'साधारण-के-रूपमे-पवित्र': घरेलू साग सब्जी कवितामे उन्नत। स्त्रीवादी: महिलाक रसोई स्थान केर रूपमे साहित्यिक स्थान।

९७. शिव कुमार झा 'टिल्लू'

हाइकू

रस-ध्वनि: टिल्लू केर हाइकू - शान्त+शृंगार। क्षणिक बिम्ब सभक शृंखला।

९८. नवीन ठाकुर

अन्त / अनुभव

रस-ध्वनि: 'अन्त' - शान्त+करुण। अन्त केर चिन्तन। 'अनुभव' - शान्त+बौद्धिक। जीवन केर अनुभव केर काव्यात्मक चित्रण।

९९. डॉ. अरुण कुमार सिंह

सोधनपाल

रस-ध्वनि: 'सोधनपाल' (शोधन-पाल/शोधक) - शान्त+बौद्धिक। शोध केर कविता - ज्ञान केर खोज।

१००. कुन्दन कुमार

आँखि झूठ नै

रस-ध्वनि: 'आँखि झूठ नै'- शान्त+दार्शनिक। प्रत्यक्ष प्रमाण केर बारेमे - नव्य-न्याय केर 'प्रत्यक्ष' सँ सम्बन्धित।

१०१. झा हेमन्त बापी

माधुरी / नारी / दानव

रस-ध्वनि: 'माधुरी' - शृंगार। 'नारी' - स्त्री केर चित्रण। 'दानव' - रौद्र। तीनू विविध स्वर - नारी केर माधुर्य सँ दानवीयता धरि।

१०२. राहुल राही

हमर प्रियतम

रस-ध्वनि: 'हमर प्रियतम'- श्रृंगार रस। प्रियतम केर वर्णन।

१०३. जवाहर लाल कश्यप

छी धन्य हमर मिथिला

रस-ध्वनि: 'छी धन्य हमर मिथिला'- वीर+भक्ति। मिथिला केर गौरवगान।

१०४. अच्छेलाल शास्त्री

की देख रहल

रस-ध्वनि: 'की देख रहल'- अद्भुत+शान्त। दर्शन केर रहस्य पर प्रश्न।

१०५. सत्यनारायण झा

गंगाकात

रस-ध्वनि: 'गंगाकात'- भक्ति+शान्त। गंगा स्नान केर भक्ति कविता।

१०६. शिवशंकर श्रीनिवास

गीत

रस-ध्वनि: गीत - श्रृंगार रस। परम्परागत गीत शैली।

१०७. विनीत उत्पल

राजनीति / **बेटी** / **गजल**

रस-ध्वनि: 'राजनीति'- व्यंग्य+रौद्र। राजनीति पर व्यंग्य। 'बेटी' - वात्सल्य+वीर। बेटी केर अधिकार। गजल - श्रृंगार+करुण।

१०८. निक्की प्रियदर्शिनी

मत्स्य / **समाज**

रस-ध्वनि: 'मत्स्य' (माछ) - पारिस्थितिकीय। माछ केर रूपक - मिथिला प्रतीक। 'समाज' - व्यंग्य+रौद्र। समाज केर व्यंग्यपूर्ण चित्रण।

१०९. नारायण झा

सरकार / **जाड़**

रस-ध्वनि: 'सरकार' - व्यंग्य+रौद्र। सरकार पर व्यंग्य। 'जाड़' (जाड़) - शान्त+करुण। ऋतु चित्रण।

११०. गणेश कुमार झा 'बावरा'

काका / **संघर्ष**

रस-ध्वनि: 'काका' - हास्य+करुण। काका व्यक्तित्व केर चित्रण। 'संघर्ष' - वीर रस। जीवन केर संघर्ष केर कविता।

१११. परिचय दास

बेसीकाल शब्द जखन (भोजपुरी कविता) - मैथिली अनुवाद

रस-ध्वनि: 'बेसीकाल शब्द जखन' - शान्त+व्यंग्य। भोजपुरी मूल + मैथिली अनुवाद। ध्वनि: 'बेसीकाल शब्द' (बहुत शब्द) - कहियो मौन शब्द सँ बेसी कहैत अछि? बिहार केर भाषा सभक बीच अन्तर-भाषिक एकता।

११२. स्वाती लाल

गजल

रस-ध्वनि: गजल - शृंगार+करुण। स्त्री गजलकार - प्रेम आ वियोग केर स्त्री दृष्टिकोण।

११३. मुकुन्द मयंक

गजल

रस-ध्वनि: गजल - शृंगार रस। प्रेम केर कविता।

११४. आशीष अनचिन्हार

बन्द / **कता** / **नात** / **सेनूरदान** (सूफी शैली)

विशेष: 'बन्द' (फारसी: बन्द/मुद्रित सम्पूर्ण पद्य) + 'कता' (फारसी: अंश/खण्ड) + 'नात' (अरबी: पैगम्बर केर प्रशंसा) + 'सोझ बाट पर चलैत-चलैत' + 'सेनूरदानक गीत' - ई विस्तार विदेह गजल आन्दोलन केर व्यापकता प्रदर्शित करैत अछि। मैथिलीमे सूफी साहित्यिक शैली = अन्तर-सभ्यता साहित्यिक वार्तालाप।

रस-ध्वनि: 'नात' - भक्ति रस (इस्लामी भक्ति)। 'बन्द' - शान्त+शृंगार। 'सेनूरदानक गीत' - विवाह संस्कार गीत - लोक परम्पराक निरन्तरता।

११५. पवन झा 'अग्निवाण'

चलियौ अपन गाम, सीताक धाम

रस-ध्वनि: 'चलियौ अपन गाम, सीताक धाम' (चलियौ अपन गाम, सीताक धाम - जनकपुर) - वीर+भक्ति। सीता केर जनकपुर केर रूपमे मैथिली तीर्थयात्रा।

११६. प्रवीण नारायण चौधरी

सस्ता कविता

रस-ध्वनि: 'सभसँ सस्ता कविता!'- हास्य+व्यंग्य। आत्म-कविता - कविता केर अवमूल्यन पर कविता।

११७. संजीव कुमार 'शमा'

प्रतिदीप

रस-ध्वनि: 'प्रतिदीप' - वीर। प्रतिरोध प्रतीक - अन्धकार में एक दीप जेरिया जगबैत अछि।

११८. सुधीर कुमार 'सुमन'

समए

रस-ध्वनि: 'समए' (समय) - शान्त। अस्तित्वगत - समय केर चिन्तन।

११९. उपेन्द्र नारायण 'अनुपम'

परदेसिया प्रियतम

रस-ध्वनि: 'परदेसिया प्रियतम' (परदेशी प्रियतम) - करुण+शृंगार। प्रवासी प्रियतम - विस्थापन आ लालसा केर कविता।

१२०. डॉ. शिव कुमार प्रसाद

निर्मली

रस-ध्वनि: 'निर्मलीक निर्मलतामे'- शान्त। शुद्धता केर कविता।

१२१. प्रो. राजकुमार नीलकंठ

श्रद्धा

रस-ध्वनि: 'श्रद्धा' - भक्ति रस। श्रद्धा केर कविता - धार्मिक भावना।

१२२. राजदेव मंडल

देश-गीत / जुलूसक पछुआ / असल मरद / पोसा परबा / कलीक पात / कुहेस / जय हे किसान (९ कविता)

रस-ध्वनि: 'जय हे किसान' - वीर+करुण। किसान केर गान। 'कुहेस'- शान्त। पारिस्थितिकीय। 'पोसा परबा'- वात्सल्य। पशु-मानव बन्धन। 'असल मरद'- व्यंग्य। पुल्लिंगता समीक्षा। ध्वनि: 'जुलूसक पछुआ' = बिना सोचल चलयबला सभ।

१२३. जगदीश प्रसाद मंडल

जारनिबिछनी / दिन-राइतक खेल / घोड़ मन / मन-मणि / संझ / रहसा चौर / गीत १-६ (१६ रचना)

विशेष: जगदीश प्रसाद मंडल केर १६ कविता/गीत = दलित चरवाही कविता अपन सबसँ समग्र रूपमे।

रस-ध्वनि: 'जारनिबिछनी' - रौद्र+पारिस्थितिकीय। 'घोड़ मन' (घोड़ा मन) - अद्भुत। अदम्य कल्पना। 'रहसा चौर' - शान्त। विशिष्ट मिथिला स्थान-नाम केर कविता। गीत १-६: लोक निरन्तरता। 'मन-मणि' (मन-रत्न) - शान्त+दार्शनिक। 'संझ' (साँझ) - शान्त+करुण।

१२४. मुन्नी कामत

बेटी / दहेज / संकल्प

रस-ध्वनि: 'बेटी' - वात्सल्य+वीर। बेटी केर अधिकार। 'दहेज' - रौद्र+करुण। दहेज विरोधी। 'संकल्प' - वीर। संकल्प केर कविता।

१२५. सुनील कुमार झा

टनका / गजल

रस-ध्वनि: टनका (जापानी शैली) + गजल - संकर शैली। शृंगार+शान्त।

१२६. जगदानन्द झा 'मनु'

हजल / रुबाइ / गजल

रस-ध्वनि: हजल + रुबाइ + गजल। हजल = हास्य/व्यंग्य गजल - विदेह केर मैथिलीमे विस्तार।

१२७. कुन्दन कुमार कर्ण

गजल

रस-ध्वनि: गजल - शृंगार रस। प्रेम केर कविता।

१२८. अमित मिश्र

हजल / गजल

रस-ध्वनि: हजल+ गजल। हास्य आ शृंगार केर मिश्रण।

१२९. चन्दन कुमार झा

रुबाइ / हजल / गजल

रस-ध्वनि: रुबाइ (अरबी प्रेम-विलाप) + हज + गजल - तीनू शैली केर मिश्रण।

१३०. रूबी झा

गजल

रस-ध्वनि: गजल - शृंगार रस। प्रेम केर कविता।

१३१. अनुप्रिया योग

क्षणिका

रस-ध्वनि: क्षणिका - शान्त रस। योग केर अनुभव केर काव्यात्मक चित्रण।

१३२. सद्रे आलम गौहर

गजल / ईद

रस-ध्वनि: 'मैथिल सभकेँ ईद मुबारक' - मैथिलीमे मुस्लिम सन्देश = अन्तर-समुदाय एकता। 'अन्ना हजारेसँ अनसन तोड़बाक अनुरोध'- अन्ना हजारे आन्दोलन पर राजनैतिक कविता। बूढ़ू: मैथिलीमे मुस्लिम स्वर अपन नागरिकता केर दृढ़ोक्ति करैत।

१३३. बिनोद मिश्र

प्रेम पुष्प

रस-ध्वनि: 'प्रेम पुष्प'- श्रृंगार रस। प्रेम केर फूल केर रूपक।

१३४. रामदेव प्रसाद मंडल 'झारूदार'

झारू विधा

विशेष: 'झारू' = एक विशिष्ट मैथिली लोक प्रदर्शनात्मक शैली। गजेन्द्र ठाकुर झारुदार केँ 'मैथिलीक भिखारी ठाकुर' कहैत छथि। 'झारू' शैली = लोक आख्यान प्रदर्शन जाहिमे सामाजिक समीक्षा अन्तर्निहित अछि। मौखिक परम्परा। बेन्यामिन: मौखिक प्रदर्शन केर पाठ्य संरक्षण।

रस-ध्वनि: 'झारू' - हास्य+व्यंग्य। लोक-शैली - सामाजिक समीक्षा केर सशक्त माध्यम।

१३५. ओमप्रकाश झा

रुबाइ / गजल

रस-ध्वनि: रुबाइ + गजल - प्रेम विलाप आ प्रेम गीत केर संगम।

१३६. त्रिपुरारी शर्मा

आजाद गजल

रस-ध्वनि: आजाद गजल (मुक्त गजल) - श्रृंगार+करुण। शैलीगत स्वतन्त्रता।

१३७. राजीव रंजन मिश्र

भक्ति गजल १-३

विशेष: 'भक्ति गजल' - अद्वितीय शैली: भक्ति कविता + गजल संरचना। भक्ति रस + श्रृंगार-वियोग। ई सूफी-भक्ति संश्लेषण मैथिली गजलमे - मीराबाईक शैली सँ मिलैत।

रस-ध्वनि: भक्ति रस + श्रृंगार। दैवी प्रेम केरूपमे भक्ति।

१३८. दीप नारायण विद्यार्थी

आजाद गजल

रस-ध्वनि: आजाद गजल - श्रृंगार+करुण। प्रेम आ वियोग केर मुक्त गजल।

१३९. उमेश मंडल

भोगी / श्रोता

रस-ध्वनि: 'भोगी' (भोगी) - श्रृंगार+शान्त। भोग केर कविता। 'श्रोता' (श्रोता) - शान्त। सुनबाक कला केर कविता।

१४०. उमेश पासवान

गवहा संक्रान्ति

रस-ध्वनि: 'गवहा संक्रान्ति' (दलित दृष्टिकोण सँ मकर संक्रान्ति) - करुण+वीर। अम्बेडकर: हिन्दू पर्व दलित द्वारा भिन्न अनुभव कएल जाइत अछि। ई संक्रान्ति कविता अधीनस्थ स्थिति सँ।

१४१. संजय कुमार मंडल

मीता / परदेसिया

रस-ध्वनि: 'मीता' (मीत) - मधुर रस। मित्रता केर कविता। 'परदेसिया' (परदेशी) - करुण+श्रृंगार। प्रवासी प्रियतम।

१४२. रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'

नेता / खाएब

रस-ध्वनि: 'हम छी आजुक नेता' (हम छी आजुक नेता) - हास्य+रौद्र। राजनेता सीधे बजैत - ई बाख्तिनिय उत्सवी-लोकधर्मी: राजनेता अपन शब्द सँ उजागर।

१४३. कामोद झा

किओ नै

रस-ध्वनि: 'किओ नै' (केओ नहि) - करुण+शान्त। एकान्तता केर कविता - केओ नहि अछि।

१४४. कपिलेश्वर राउत

मातृभाषा

रस-ध्वनि: 'मातृभाषा'- वीर+शान्त। कवि मातृभाषा केर दावा करैत। ध्वनि: मातृभाषा केर रूपमे मैथिली एक राजनैतिक दावा अछि। अम्बेडकर: भाषा = अस्मिता = सम्मान।

१४५. जीबू कुमार झा

प्रार्थना

रस-ध्वनि: 'प्रार्थना' - भक्ति रस। प्रार्थना केर कविता - ईश्वर सँ विनती।

१४६. अनामिका राज

नवका बाट

रस-ध्वनि: 'नवका बाट' (नवका बाट/नव पथ) - वीर+शान्त। नव पथ केर खोज - बदलाव केर कविता।

१४७. प्रो. चम्पा शर्मा

स्नेह-भरल सनेस (डोगरी कविता) - मैथिली अनुवाद

रस-ध्वनि: 'स्नेह-भरल सनेस' (स्नेह-भरल सन्देश) - वात्सल्य+शान्त। डोगरी मूल + मैथिली अनुवाद। ध्वनि: प्रेम सन्देश भाषिक सीमा पार। बेन्यामिन: क्षेत्रीय भाषा एकता। ई विदेह केर अखिल-भारतीय विस्तार केर प्रदर्शन करैत अछि।

१४८. मोहन प्रसाद

नव मिथिला

रस-ध्वनि: 'नव मिथिला' - वीर+शान्त। नव मिथिला केर सपना - पुनर्निर्माण केर कविता।

१४९. नगीना कुमारी झा

साहस / दहेज

रस-ध्वनि: 'साहस' - वीर रस। साहस केर कविता। 'दहेज' - रौद्र+करुण। दहेज विरोधी - स्त्री दृष्टिकोण।

१५०. लालबाबू मंडल

जुलूस

रस-ध्वनि: 'जुलूस' (जुलूस)- वीर+रौद्र। प्रदर्शन/जुलूस केर कविता - सामूहिक आवाज।

१५१. संदीप कुमार साफी

भकजोगनी

रस-ध्वनि: 'भकजोगनी'- अद्भुत+रौद्र। लोक विश्वास केर कविता।

सदेह ७ केर समग्र उपसंहार

सदेह ७ मैथिली पद्य - ई शृंखलाक सबसँ वृहद् खण्ड: ६२४ पृष्ठ, १५१ साहित्यकार। ई केवल संकलन नहि, ई एक सम्पूर्ण मैथिली काव्य ब्रह्माण्ड थिक।

विधागत समृद्धि: कविता + गीत + गजल + आजाद गजल + भक्ति-गजल + हजल + रुबाइ + कता + नात + बन्द + कसीदा + हाइकू + टनका + शेनर्यू + हैबून + कुण्डलिया + झारू + क्षणिका + गद्य-कविता - १९ काव्य-विधा। अनूदित: तेलुगु, ओडिया, भोजपुरी, डोगरी - ४ भाषा।

आवाज-विविधता: दलित कवि (रवि भूषण पाठक, जगदीश प्रसाद मंडल, उमेश पासवान, कपिलेश्वर राउत, रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार'), मुस्लिम कवि (मो. गुल हसन, सद्रेआलम गौहर), नारी कवि (शेफालिका वर्मा, कामिनी कामायनी, ज्योति सुनीत चौधरी, मृदुला प्रधान, इरा मल्लिक, मुन्नी कामत, नगीना कुमारी झा, भावना नवीन), प्रवासी (ज्योति चौधरी, प्रभात राय भट्ट, झा हेमन्त ’बापी’), नेपाली+ शास्त्रीय विद्वान।

चारि ढाँचा केर संश्लेषण: रस सिद्धान्त पद्यमे सबसँ स्वाभाविक रूपसँ सक्रिय - प्रत्येक कवि केर प्राथमिक रस पहिचान होइत अछि। पाश्चात्य सिद्धान्त (ग्राम्शी, स्पिवाक, बाख्तिन, फानन, अम्बेडकर, बेन्यामिन, कामू, हाइडेगर) सभ कविता केर राजनैतिक-दार्शनिक गहराई उजागर करैत अछि। नव्य-न्याय कविताक ज्ञान-मीमांसीय संरचना केर परीक्षण करैत अछि। विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा सुनिश्चित करैत अछि जे ई सब स्वर - मान्य-परम्परागत आ प्रति-मान्य-परम्परागत - एक लोकतान्त्रिक साहित्यिक पुरालेखमे स्थान पबैत अछि।

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह: सदेह: ७ — मैथिली पद्य (विदेह अंक ५१-१००)

अध्याय 7 · विदेह सदेह ८ — विदेह मैथिली नाट्य उत्सव

सारांश श्री कृष्ण नाट्य समिति (स्थापना १९५०), श्री कृष्ण चन्द्र झा 'रसिक', शिवदेव झा, गंगा झाक-निर्देशनमे ३० टासँ बेसी नाटक —

१९५०-२०१०। विशेष नाटक: बसात (१९६६), चीनीक लड्डू (१९६६), विद्यापति (१९६७), उगना (१९७०), बड़का साहेब (१९९०, लल्लन

प्रसाद ठाकुर), लेटाइत आँचर (१९९२, सुधांशु शेखर चौधरी), उगना (१९९६, ईशनाथ झा), लौंगिया मिरचाई (२००७, लल्लन प्रसाद ठाकुर),

पहिल साँझ (२००८, सुधांशु शेखर चौधरी)। (क) विदेह समानान्तर साहित्येतिहास दृष्टिए मिथिलेश कुमार झाक ऐतिहासिक-संकलन विदेह-

समानान्तर-साहित्येतिहास-ढाँचाक सर्वश्रेष्ठ-उदाहरण थिक।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · समानान्तर साहित्येतिहास · नाटक · साहित्यिक समीक्षा · आलोचना

(मैथिली समानान्तर रंगमंचक संकलन)

समग्र विस्तृत समीक्षा

षट्-स्तरीय समीक्षा-ढाँचा

• विदेह समानान्तर साहित्येतिहास •

• गंगेश उपाध्यायक नव्य-न्याय प्रमाण-शास्त्र •

• भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य •

• पाश्चात्य समीक्षा (अरस्तू-ब्रेख्त-बोआल-बाख्तिन-ग्राम्शी-फनन) •

• चीनी समीक्षा (वेन्शिन डिआओलोङ्ग/शिपिन/चान्लाङ्ग शिहुआ) •

• यहूदी-इसरायली समीक्षा (मिद्राश/पिलपुल/आल्टर/बोयारिन) •

लेखक ११ : सुजीत कुमार झा — 'मिथिला नाट्यकला परिषद (मिनाप)' — संस्थागत इतिहास

लेखक १२ : मिथिलेश कुमार झा — 'मैथिली नाटक प्रस्तुति (पजुआरिडीह टोल) — ऐतिहासिक संकलन'

लेखक १३ : रमेश रंजन (साक्षात्कार : मुन्नाजीसँ) — 'नाटककार, रंगकर्मी, मिनाप-कर्मी'

लेखक १४ : सरोज खिलाड़ी — 'बोतल राम / सोच / ललका कपड़ा'

लेखक १५ : किशन कारीगर — 'आब मानि जाउ ने' (हास्य रेडियो नाटक)

लेखक १६ : उमेश मण्डल — 'मैथिलीमे ई-पत्रकारिता / विदेह गोष्ठी'

लेखक १७ : रोशन झा — 'बुधियार छौड़ा आ राछस' (बाल नाटक-रिपोर्ट)

लेखक १८ : पूनम मण्डल — विविध रिपोर्ट (जनकपुर, मैथिलोत्सव)

लेखक १९ : मनोज कुमार कर्ण 'मुन्नाजी' — साक्षात्कारकर्ता, मैथिलोत्सव रिपोर्ट

लेखक २० : दिनेश मिश्र, श्यामसुन्दर शशि, जितेन्द्र कुमार झा 'जीतू', सत्यनारायण झा, मनोज कुमार मण्डल, बृषेश चन्द्र लाल — रंगमञ्च-गतिविधि-रिपोर्टर-समूह

लेखक १२ : मिथिलेश कुमार झा

रचना-सूची (सदेह ८)

'मैथिली नाटक प्रस्तुति (मधुबनी जिलाक पजुआरिडीह टोल) — ऐतिहासिक संकलन' — १९५० ई. सँ २०१० ई. धरिक ६० वर्षीय नाट्य-प्रस्तुति-दस्तावेजीकरण। श्री कृष्ण नाट्य समिति (स्थापना १९५०), श्री कृष्ण चन्द्र झा 'रसिक', शिवदेव झा, गंगा झाक-निर्देशनमे ३० टासँ बेसी नाटक — १९५०-२०१०। विशेष नाटक: बसात (१९६६), चीनीक लड्डू (१९६६), विद्यापति (१९६७), उगना (१९७०), बड़का साहेब (१९९०, लल्लन प्रसाद ठाकुर), लेटाइत आँचर (१९९२, सुधांशु शेखर चौधरी), उगना (१९९६, ईशनाथ झा), लौंगिया मिरचाई (२००७, लल्लन प्रसाद ठाकुर), पहिल साँझ (२००८, सुधांशु शेखर चौधरी)।

(क) विदेह समानान्तर साहित्येतिहास दृष्टिए

मिथिलेश कुमार झाक ऐतिहासिक-संकलन विदेह-समानान्तर-साहित्येतिहास-ढाँचाक सर्वश्रेष्ठ-उदाहरण थिक। ई संकलन साबित करैत अछि जे मैथिली-नाट्य-परम्परा केवल जनकपुर-कोलकाता-पटना-दिल्लीक शहरी-थिएटरमे नहि — गाम-गाम-टोल-टोलमे जीवित अछि। ई साहित्य-अकादेमी-केन्द्रित-इतिहासकेँ

सीधा-चुनौती थिक — पजुआरिडीह-टोलमे 'बसात' (१९६६), 'चीनीक लड्डू' (१९६६) क मञ्चन इतिहास-वर्ग द्वारा अब तक दस्तावेजीकृत नहि भेल छल। विदेह-ढाँचाक चौथा-प्रश्न ('कोन सौन्दर्य-शास्त्रीय मूल्य अदृश्य रहल?') क प्रत्यक्ष-उत्तर: ग्रामीण-नाट्य-परम्परा।

(ख) गंगेशीय नव्य-न्याय दृष्टिए

प्रत्यक्ष-प्रमाण: वार्षिक-नाटक-सूची (नाटक-नाम, नाटककार-नाम, वर्ष) — एकटा सम्पूर्ण प्रत्यक्ष-गवाही-संकलन। उपमान-प्रमाण: पजुआरिडीह-टोलक 'बसात' (१९६६) – गोविन्द झाक नाटक — ई उपमान तत्कालीन मैथिली-रंगमञ्चक-शहरी-प्रस्तुतिसँ सादृश्य स्थापित करैत अछि। अनुमान: 'यत्र-यत्र ग्रामीण-काली-पूजा-समारोह, तत्र-तत्र मैथिली-नाट्य-मञ्चन-सम्भावना' — ई व्याप्ति-प्रदर्शन।

(ग) भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य दृष्टिए

रस-दृष्टिए संकलनक-अद्भुत-रस — ६० वर्षक नाट्य-क्रम एक-टोलक-भीतर। भरत-शास्त्रीय-दृष्टिए नाट्य-प्रस्तुति-क्रमक अनुशीलन: सुधांशु शेखर चौधरीक 'लेटाइत आँचर' (१९९२) — शृङ्गार-करुण; ईशनाथ झाक 'उगना' (१९९६) — भक्ति-अद्भुत; अरविन्द अक्कूक 'आतंक' (१९९८) — रौद्र-वीर — ई रस-वैविध्य एक-टोलमे ६० वर्ष-धरि।

क्षेमेन्द्रीय औचित्य: मिथिलेश कुमार झाक संकलन-शैली स्वयं औचित्य-सम्पन्न — हर-नाटक-सम्बन्धी-आवश्यक-सूचना (नाम, नाटककार, वर्ष) कोनो-अनावश्यक-टिप्पणी बिनु।

(घ) पाश्चात्य दृष्टिए

बेन्यामिन-दृष्टिए मिथिलेश कुमार झा 'कथावाचक'क आधुनिक-रूप — एहन-कथावाचक जे पुरान-ग्रामीण-नाट्य-स्मृतिकेँ मौखिक-से-लिखित-रूपमे परिवर्तित करैत अछि। बोर्दिऊयायी-हाबिटस: पजुआरिडीह-टोल-हाबिटस — जतय काली-पूजाक-एक-रात मैथिली-नाटक-अनिवार्य-अंग, ई हाबिटस ६० वर्ष धरि अखण्ड रहल। बोआल-दृष्टिए ग्रामीण-नाट्य-मञ्चन 'फोरम-थिएटर'क प्राक्-आधुनिक-संस्करण — दर्शक-पात्र-सम्पूर्ण-भागीदारी।

(ङ) चीनी दृष्टिए

लिऊ शिए-दृष्टिए मिथिलेश कुमार झाक संकलन-शैलीक 'फेङ्ग' — ग्रामीण-नाट्य-प्रेमक आवेग; 'गु' — तथ्य-संरचना। तोङ्गबियान्: परम्परागत-गाम-नाटक + आधुनिक-नाटककारक-कृति-मञ्चन। चोङ्ग रोङ्ग-दृष्टिए 'शाङ्ग-पिन्' — कारण ई दस्तावेजीकरण अप्रतिस्थापनीय — ऐ बिनु पजुआरिडीह-नाट्य-इतिहास अज्ञात रहत।

(च) यहूदी-इसरायली दृष्टिए

राबर्ट आल्टर-दृष्टिए 'टाइप-सीन्' — हर-वर्ष एकेगोट-संरचना: काली-पूजा → एक-रात-नाटक-मञ्चन → नूतन-नाटककार-चयन। 'वर्ब्ल इकोज्': 'उगना' दूबेर-दोहरायल (१९७० + १९९६ + २००४), 'कुहेस' तीन-बेर, 'अन्तिम गहना' दोबेर — ई पुनरावृत्ति मिद्राशी-'आगादा'क (कथाक-पुनर्कथन) समान। पिलपुल-दृष्टिए: '१९९२-२०१०मे किए सुधांशु शेखर चौधरीक दू-नाटक?' — कुष्या: परम्परा-नवीनता-द्वन्द्व; तेरुत्स्: रसिक-शिवदेव-गंगा-झाक-परम्परामे सुधांशु समसामयिक; दिख्या: किन्तु अन्य-नाटककारक-प्रतिनिधित्व-न्यून।

लेखक १३ : रमेश रंजन

रचना-सूची (सदेह ८)

'हम पुछैत छी' — मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण) द्वारा रमेश रंजनक अन्तर्वार्ता। रमेश रंजन — मिनाप-कर्मी, नाटककार, कथाकार, आलोचक, वृत्तचित्र-लेखक, फिल्म-टेलीसीरियल-लेखक, कविता-उपन्यास-लेखक, नेपाल सङ्गीत-तथा-नाट्य-प्रज्ञाप्रतिष्ठानक-प्राज्ञ-परिषद-सदस्य आ नाट्य-विभाग-प्रमुख। 'बुधियार छौड़ा आ राछस' बाल-नाटकक आलेख-लेखक।

(क) विदेह समानान्तर साहित्येतिहास दृष्टिए

रमेश रंजन — नेपाल-मैथिली-समानान्तर-रंगमंचक-सैद्धान्तिक-प्रवक्ता। हुनकर साक्षात्कारक मुख्य-प्रमेय — 'मिथिलाक लोक देशक-भीतरक-औपनिवेशिकताकेँ भोगि रहल अछि' — ई विदेह-समानान्तर-इतिहास-ढाँचाक नेपाली-संस्करण थिक। हुनकर कथा-लेखन-प्रेरणा 'सगर-राति-दीप-जरए' माध्यमसँ — जनकपुरमे ओहि-कार्यक्रमक-आयोजन-हेतु — ई स्वयं विदेह-समानान्तर-सांस्कृतिक-ढाँचाक-सक्रिय-सहभागिता। हुनकर मार्क्सवादी-सौन्दर्य-चेतना — 'हमर साहित्यक-ध्येयकेँ आरो-स्पष्टीकरणक-आवश्यकता नहि' — विदेह-ढाँचाक वर्ग-दृष्टिसँ सम्पूर्ण-संगति।

(ख) गंगेशीय नव्य-न्याय दृष्टिए

अनुमान-प्रमाण: 'यत्र-यत्र सामन्ती-सामाजिक-संरचना, तत्र-तत्र कर्मकाण्डीय-वर्चस्व-आ-भाषा-उत्पीड़न' — एहि व्याप्तिसँ हुनकर मैथिलीक-समस्याक-

निदान। शब्द-प्रमाण: डा. धीरेन्द्र, डा. विमल, योगेन्द्र साह नेपाली — गुरु-परम्परा-शब्द-प्रमाण। उपमान: 'नेपालीमे हिन्दीक आगाँ मैथिलीक अवस्था — जेना नेपालीक आगाँ मैथिली' — उपमान-प्रमाण।

(ग) भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य दृष्टिए

रस-दृष्टिए रमेश रंजनक साक्षात्कार-शैली वीर-रस-केन्द्रित — 'कि मिनाप जाति-पाँतिक फाँटमे टिकल अछि?' — ई प्रश्नक-उत्तर वीर-निश्चय। ध्वनि: 'सगर-राति-दीप-जरए' — ई नाम स्वयं 'ध्वनि-काव्य' — रातिभरि-जागरण, दीपक-प्रकाश, साहित्यिक-संगम — तीनू-अर्थ एकसाथ। क्षेमेन्द्रीय औचित्य: साक्षात्कारक-शैली-औचित्य — प्रश्न-उत्तर-अनुक्रम सुसंगठित।

(घ) पाश्चात्य दृष्टिए

ग्राम्शीयन-दृष्टिए रमेश रंजन मैथिली-सर्वहारा-वर्गक-आर्गेनिक-इन्टेलेक्चुअल — परवाहा-गामसँ जनकपुर-मिनाप धरि — 'अपन जीवनक सर्वाधिक उर्जाशील समय मिनापकेँ देलिऐ'। मार्क्सवादी-सौन्दर्य-दृष्टि हुनकर साहित्य-लेखनक-मूल — 'मार्क्सवादी सौन्दर्य चेतना हमरा निर्देशित करैत अछि' — ई फनन-दृष्टि-समन्वित-ग्राम्शीयन-कर्म।

बेन्यामिन-दृष्टिए साक्षात्कार-शैली 'कथावाचन' — रमेश रंजन अपन रचना-यात्रा, मिनाप-यात्रा, नेपाल-मैथिली-यात्रा कथावाचन-पद्धतिमे प्रस्तुत करैत छथि। बाख्तिनीय-हेटेरोग्लोसिया: साक्षात्कारमे 'मार्क्सवादी-स्वर + मिनाप-संस्थागत-स्वर + नेपाल-राजनीतिक-स्वर + मैथिली-भाषिक-स्वर' — बहु-स्वर।

(ङ) चीनी दृष्टिए

लिऊ शिए-दृष्टिए रमेश रंजनक साक्षात्कार 'फेङ्ग' (मार्क्सवादी-सौन्दर्य-आवेग) + 'गु' (मिनाप-संस्थागत-संरचना)। तोङ्गबियान्: परम्परागत-मैथिली-साहित्य + मार्क्सवादी-नूतन-दृष्टि। चोङ्ग रोङ्ग-दृष्टिए 'शाङ्ग-पिन्' — कारण साक्षात्कारक-'झी' (सौन्दर्य-रस) उत्कृष्ट। यान् यू-दृष्टिए मियाओ्वू — 'मिनाप मरब तँ स्वयंक मृत्यु छै' — एक-वाक्यमे भाषा-अस्तित्व-दर्शन।

(च) यहूदी-इसरायली दृष्टिए

मिद्राशी पेशर: 'सगर राति दीप जरए' — रात्रि-जागरणक परम्परागत-धार्मिक-कर्मकेँ साहित्यिक-उत्सवमे पेशर-व्याख्या। पिलपुल: साक्षात्कारक-प्रत्येक-प्रश्न कुष्या — रमेश रंजनक-उत्तर तेरुत्स् — मुन्नाजीक-अगिला-प्रश्न दिख्या। राबर्ट आल्टर-दृष्टिए 'वर्ब्ल इकोज्': 'मिनाप' शब्दक बारम्बार-पुनरावृत्ति — व्यक्तिगत-प्रगतिक-आधार, साहित्यिक-प्रेरणाक-आधार, सामाजिक-सम्मानक-आधार।

लेखक १७ : रोशन झा

रचना-सूची (सदेह ८)

'बुधियार छौड़ा आ राछस — बाल नाटकक मंचन' (रिपोर्ट)। मिनाप-जनकपुर द्वारा, आलेख-रमेश रंजन, निर्देशन-अनिल चन्द्र झा। 'सम्वादसँ बेशी क्रियाप्रधान' — विश्वक-कोनो-मञ्चपर-प्रस्तुत-योग्य, मैथिली-नहि-जाननिहारो-बुझि-सकैत। अभिनय: परमेश, रवीन्द्र, प्रियंका, रीना।

(क) विदेह समानान्तर साहित्येतिहास दृष्टिए

रोशन झाक रिपोर्ट मिनापक-बाल-नाटक-आयाम उद्घाटित करैत अछि — जे विदेह-समानान्तर-ढाँचाक-बाल-साहित्य-शाखाक-नाट्य-रूप। 'क्रियाप्रधान-नाटक-सार्वभाषिक' — ई अद्भुत-विदेह-सिद्धान्त थिक — मैथिली-नाट्य-कला ध्वनि-संवादसँ बेसी-क्रिया-अभिव्यक्तिमे — सार्वभाषिक-क्षमता-प्राप्त।

(ख-च) षट्-स्तरीय संक्षिप्त-विश्लेषण

गंगेशीय-दृष्टिए: प्रत्यक्ष — मिनाप-कार्यशाला-सप्ताह, चार-अभिनेता-नाम। अनुमान: 'यत्र-यत्र क्रियाप्रधान-नाटक, तत्र-तत्र भाषा-बाधा-अतिक्रमण-सम्भव।' भारतीय-रस-दृष्टिए: बाल-नाटकमे 'अद्भुत' + 'हास्य' — भरत-शास्त्रीय-बाल-रूपक-विधा। पाश्चात्य-दृष्टिए: बोआलक 'इनविजिबल थिएटर' (invisible theatre) क समान — मैथिली-नहि-जाननिहारो-दर्शक-योग्य — भाषा-बाधा-अतिक्रमण। चीनी-दृष्टिए: 'तोङ्गबियान्' — क्रियाप्रधान-नाटक-परम्परा + आधुनिक-बाल-नाट्य। यहूदी-दृष्टिए: 'बुधियार-छौड़ा' — 'चाखम' (बुद्धिमान) क पेशर — तल्मूद-कथाक-बुद्धिमान-बच्चाक-समान।

लेखक १९ : मनोज कुमार कर्ण 'मुन्नाजी'

रचना-सूची (सदेह ८)

(क) 'हम पुछैत छी' साक्षात्कार-शृंखलाक-साक्षात्कारकर्ता — बेचन ठाकुरसँ साक्षात्कार। (ख) रमेश रंजनसँ साक्षात्कार-आयोजन। (ग) मैथिलोत्सव २०११ रिपोर्ट। (घ) 'विदेह सदेह ८' केर 'सहायक-सम्पादक' रूपमे सम्पादकीय-दायित्व।

(क) विदेह समानान्तर साहित्येतिहास दृष्टिए

मुन्नाजी विदेह-समानान्तर-ढाँचाक-मुख्य-साक्षात्कारकर्ता छथि। हुनकर-साक्षात्कार-शैली विदेह-समानान्तर-इतिहास-ढाँचाकेँ आगू बढ़बैत अछि — बेचन ठाकुरसँ साक्षात्कार ओहि-रंगकर्मीकेँ केन्द्रमे आनैत अछि जे साहित्य-अकादेमी-केन्द्रित-पत्रिकामे कखनो-नहि-आएल। मैथिलोत्सव-२०११-रिपोर्ट विदेह-नाट्य-उत्सवक-सार्वजनिक-दस्तावेजीकरण थिक।

(ख-च) षट्-स्तरीय संक्षिप्त-विश्लेषण

गंगेशीय-दृष्टिए: मुन्नाजीक-साक्षात्कार-पद्धति-शुद्ध-शब्द-प्रमाण-संकलन — बेचन-ठाकुरक-प्रत्यक्ष-शब्द, रमेश-रंजनक-प्रत्यक्ष-शब्द। हेत्वाभास-प्रश्न: 'की जातिवादी-रंगमंच मैथिली-नाट्य-मुख्यधारा छी?' — ई प्रश्न-स्वयं हेत्वाभास-निरूपण-का-आमन्त्रण। भारतीय-रस-दृष्टिए: साक्षात्कार-विधाक-रस — 'वीर' (साहसिक-प्रश्न) + 'शान्त' (सुनब, प्रतीक्षा)। पाश्चात्य-दृष्टिए: ग्राम्शीयन — मुन्नाजी आर्गेनिक-इन्टेलेक्चुअल — सर्वहारा-वर्गक-आवाज-रेकॉर्डर। बेन्यामिनीय — साक्षात्कारकर्ता 'कथावाचक-सेतु' — दूटा-कथावाचकक-बीच। चीनी-दृष्टिए: 'मियाओ्वू' — प्रश्न-चयन-कौशल — कोन-प्रश्न-सर्वाधिक-महत्वपूर्ण-अछि — ई सहज-बोधसँ आबैत अछि। यहूदी-दृष्टिए: पिलपुल — साक्षात्कार-शैली शुद्ध-कुष्या-तेरुत्स्-दिख्या।

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह सदेह ८ — विदेह मैथिली नाट्य उत्सव

अध्याय 8 · विदेह सदेह ९ — विदेह मैथिली शिशु उत्सव

सारांश सम्पूर्ण रचनाकार-समीक्षा विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क · गंगेशक नव्य न्याय · भारतीय · पाश्चात्य · चीनी · यहूदी (इसरायली

साहित्यिक समीक्षा सिद्धान्त २. गजेन्द्र ठाकुर — 'शिशु, बाल आ किशोर साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र' सम्पादक गजेन्द्र ठाकुरक ई

परिचयात्मक निबन्ध समूचा संकलनक बौद्धिक नींव थिक। लेखक ऋग्वेदक आख्यानसँ लेसकर जातक-कथा, ऐसप, पंचतन्त्र, हितोपदेश

एवं आधुनिक बाल साहित्यक एक वैश्विक इतिहास प्रस्तुत कएलनि अछि। विदेह समानान्तर इतिहास दृष्टि लेखक सलहेस-कथाक क्षेत्रीय

परिवर्तनक उल्लेख करैत देखबैत छथि जे लोक-नायक सलहेस 'राजा' सँ 'चोर' बनैत अछि, एवं एकर विपरीत।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · समीक्षाशास्त्र · नव्य-न्याय · रस-सिद्धान्त · कथा · बाल-साहित्य · इतिहास

सम्पूर्ण रचनाकार-समीक्षा

विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क · गंगेशक नव्य न्याय · भारतीय · पाश्चात्य · चीनी · यहूदी (इसरायली) साहित्यिक समीक्षा सिद्धान्त

२. गजेन्द्र ठाकुर — 'शिशु, बाल आ किशोर साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र'

सम्पादक गजेन्द्र ठाकुरक ई परिचयात्मक निबन्ध समूचा संकलनक बौद्धिक नींव थिक। लेखक ऋग्वेदक आख्यानसँ लेसकर जातक-कथा, ऐसप, पंचतन्त्र, हितोपदेश, एवं आधुनिक बाल साहित्यक एक वैश्विक इतिहास प्रस्तुत कएलनि अछि।

विदेह समानान्तर इतिहास दृष्टि

लेखक सलहेस-कथाक क्षेत्रीय परिवर्तनक उल्लेख करैत देखबैत छथि जे लोक-नायक सलहेस 'राजा' सँ 'चोर' बनैत अछि, एवं एकर विपरीत। ई समानान्तर इतिहासक सर्वश्रेष्ठ उदाहरण अछि — एके व्यक्ति विभिन्न सामाजिक दृष्टिसँ भिन्न-भिन्न रूपमे देखाइत अछि। ई बाल साहित्यमे सेहो प्रासंगिक अछि।

नव्य न्यायक दृष्टि

ठाकुर जी बाल साहित्यक मूल्यांकन लेल जे प्रश्न उठबैत छथि — 'की बाल साहित्य अन्धविश्वासक बढ़ावा देइत अछि?', 'की ई जातिवादक विरुद्ध शिक्षित करैत अछि?' — ई प्रश्न नव्य न्यायक 'हेतु' (प्रमाण) परम्पराक अनुरूप अछि। प्रत्येक रचनाक मूल्यांकन एहि प्रश्नक कसौटी पर होएबाक चाही।

भारतीय काव्यशास्त्र दृष्टि

ठाकुरजी ब्रह्माण्डीय परिप्रेक्ष्य देइत लिखैत छथि जे 'यी सूर्य अरब-खरब आन सूर्यमेसँ एकटा मध्यम कोटिक तरेगण-मेडिओकर स्टार अछि।' ई अद्भुत रसक उद्रेक अछि — भरतमुनिक नाट्यशास्त्रमे जाहि 'विस्मय' सँ अद्भुत रस उत्पन्न होइत अछि, ओकर यथार्थ प्रयोग एतय देखाइत अछि।

पाश्चात्य दृष्टि

टी.एस. इलियटक 'Tradition and the Individual Talent' क सन्दर्भ स्वयं ठाकुरजी उद्धृत कएलनि अछि। ओ इलियटक मतक सँदर्भमे श्रीमती श्रीति ठाकुरक रचनाक मूल्यांकन करैत छथि। ई पाश्चात्य एवं मैथिली परम्पराक सम्मिलन थिक।

चीनी दृष्टि

लेखकक 'सरल शब्द, सरल भाषा, सरल विचार' — एहि त्रिसूत्रक सिद्धान्त कन्फ्यूशियसक 'जेंग मिंग' — नाम-शुद्धि एवं 'यि' — यथार्थ अर्थक आग्रहसँ मेल खाइत अछि। दाओवादी 'वू वेई' अनुसार उत्कृष्ट बाल-साहित्य ओ होइत अछि जे कृत्रिमता सँ मुक्त हो।

यहूदी-इसरायली दृष्टि

शंकराचार्यक कमंडलु-कथाक माध्यमसँ ठाकुरजी मिद्राश-परम्पराक उदाहरण प्रस्तुत करैत छथि — एक प्राचीन घटनाक पुनर्व्याख्या नवीन अर्थक सृजन करैत अछि। वाल्टर बेंजामिनक 'मेसियैनिक टाइम' अनुसार बाल-साहित्य भविष्यक पीढ़ीक लेल वर्तमानमे 'मोक्ष-बीज' बुआइत अछि।

४. यूटी कुमारी — 'राहुलजी एक नजरिमे' आ 'कैदी'

यूटी कुमारी सहायक शिक्षिका, संस्कृत मधुराम इंटर विद्यालय, वालपाड़ा, मधेपुरा — हिनकर दू रचना संकलनमे संगृहीत अछि।

'राहुलजी एक नजरिमे' — समीक्षा

ई राहुल सांकृत्यायनक जीवनी-लेख अछि। लेखिका राहुलजीक बहुआयामी प्रतिभाक वर्णन करैत छथि — इतिहास, दर्शन, राजनीति, साहित्य सभमे हिनकर योगदान अतुलनीय रहल। पाश्चात्य फेमिनिस्ट दृष्टिसँ — राहुलजीक पत्नी ए.एम. लोलाक साथ साइबेरियामे विवाह — पितृसत्तात्मक बन्धन तोड़बाक एकटा स्त्रीवादी आख्यान सेहो अछि।

'कैदी' — समीक्षा

'कैदी' मे एकटा चित्रकार ईसा मसीहक चित्र लेल बच्चाक खोजमे निकलैत अछि, शैतानक चित्र लेल वर्षों बाद उपयुक्त चेहरा भेटैत अछि — एवं ओ व्यक्ति ओहि अनाथ बच्चे निकलैत अछि। एहि कथाक मूल अर्थ — मानवीय सौन्दर्य एवं अधमता एके आत्मामे सह-अस्तित्व रखैत अछि। यहूदी 'टिक्कुन ओलम' (Tikkun Olam — जगतक मरम्मत) की परम्पराक अनुसार पापी एवं पुण्यात्मा एकटा बच्चाक दुई रूप छथि।

५. भावना नवीन — 'हमर प्रिये नेना भुटका'

एहि भाषण-रूपी लेखमे भावना नवीन बाल-दिवसक अवसर पर बच्चा सभक अपन मातृभाषा मैथिलीसँ दूर होएबाक पीड़ाक सशक्त चित्रण कएलनि अछि।

विदेह समानान्तर इतिहास

लेखिका उर्दूक उदाहरण दैत देखबैत छथि जे उर्दू पढ़ल बच्चा तेजमे पानि माँगैत मरि गेल — मातृभाषाक परित्यागक परिणाम भयावह होइत अछि। ई भाषाई उपनिवेशवादक विरुद्ध प्रतिरोधक आख्यान थिक।

पाश्चात्य एवं पोस्टकोलोनियल दृष्टि

फ्रेन्ट्ज़ फेनोन (Fanon) एवं होमी भाभाक पोस्टकोलोनियल सिद्धान्त अनुसार औपनिवेशिक मानसिकता बच्चामे मातृभाषाक प्रति हीन भावना उत्पन्न करैत अछि। भावना नवीन एहि मनोवैज्ञानिक उपनिवेशवादक विरुद्ध चेतावनी दैत छथि।

६. डॉ. रमण झा — गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा / तरेगन आ मिथिलाक लोकदेवता (समीक्षा)

डॉ. रमण झाक तीन समीक्षा एहि संकलनमे संगृहीत अछि — श्रीति ठाकुरक 'मैथिली चित्रकथा', 'गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा', एवं 'मिथिलाक लोकदेवता' पोथीक विस्तृत समीक्षा; संगहि जगदीश प्रसाद मण्डलक 'तरेगन' संकलनक समीक्षा।

'गोनू झा' चित्रकथाक समीक्षा

गोनू झाक कथाक चित्रात्मक प्रस्तुति बच्चा सभक लेल अत्यन्त उपयुक्त अछि। झाजीक समीक्षा मे टी.एस. इलियटक परम्परा-दृष्टिक उल्लेख उल्लेखनीय अछि। श्रीति ठाकुरक रचनात्मकता एहि अर्थमे अतुलनीय अछि जे एहि शैलीमे पूर्ववर्ती कोनो रचना उपलब्ध नहि छल।

'तरेगन' संग्रहक समीक्षा

जगदीश प्रसाद मण्डलक 'तरेगन' — मैथिलीमे प्रथम सम्पूर्ण विहनि-कथा संग्रह — एहि संकलनमे विस्तृत समीक्षा पाबैत अछि। झाजी ओकरा 'नैतिक शिक्षा-दायक मैथिली पथ-दर्शक पोथी' मानैत छथि।

७. गंगेश गुंजन — 'लाट साहेबक किरानी'

गंगेश गुंजन मैथिली साहित्यक वरिष्ठतम रचनाकारमे सँ एक छथि। 'लाट साहेबक किरानी' एकटा सामाजिक यथार्थवादी कथा थिक जाहिमे एकटा नगरक पुलपर भिखमंगा लोकनिक स्थिति एवं हुनकर मानवीय गरिमाक प्रश्न उठाओल गेल अछि।

विदेह समानान्तर इतिहास

पुलपर बैसल भिखमंगा सभ — टंगटुट्टी बुढ़िया, कोढ़ियाभिखारी, अन्धी स्त्री — एहि सभक आवाज इतिहासक 'समानान्तर धारा' थिक जे मुख्य इतिहासमे लुप्त रहैत अछि। गुंजनजी एहि समानान्तर आवाजक साहित्यिक रूप दैत छथि।

नव्य न्यायक दृष्टि

'लाट साहेबक किरानी' कथाक अन्तिम दृश्यमे — कोढ़ी भिखारी सभ लाट साहेबक किरानीक सुझाव पर 'पिजुआह हाथ' (रोगग्रस्त हाथ) सँ धनी लोकक हाथ छूबैत दौड़ैत छथि। नव्य न्यायक 'व्याप्ति' अनुसार — 'पापक भय' एवं 'दूसराक कष्ट' — एहि दुनूक बीचक सम्बन्ध एहि कथामे प्रमुख तर्क-बिन्दु अछि।

बाख्तिन-दृष्टि

कथाक अन्त — किरानीक ओहि राजधानीसँ विदा होएब — बाख्तिनक 'नॉन-फिनलाइज्ड' (अपूर्ण) चरित्र-शास्त्रक उदाहरण अछि। किरानी एहि अनुभवसँ परिवर्तित होएत अछि, मुदा परिवर्तनक दिशा अनिश्चित रहैत अछि।

लेवीनास-दृष्टि

लेवीनासक अनुसार 'अदर' (परकीय) — जे कोढ़ी, अन्धा, विकलांग अछि — ओकर मुखमण्डल (Face) हमरा नैतिक दायित्वमे आबद्ध करैत अछि। गुंजनजीक कथा एहि नैतिक आह्वानक साहित्यिक प्रतिरूप थिक।

८. शिव कुमार झा 'टिल्लू' — तरेगन देखाइए · दहीक ठोप · खोइंछक लेल साड़ी · नारियर गाछ · मिथिलाक लोकदेवता · तरेगन

'टिल्लू' जीक रचना-संग्रह एहि संकलनमे सर्वाधिक विविध थिक। हिनकर छह रचना बाल मनोविज्ञानक विभिन्न पक्षक मर्मस्पर्शी चित्रण प्रस्तुत करैत अछि।

'तरेगन देखाइए' — मिथिला-परम्परा एवं बाल-नटखटी

१९८७क बाढ़ि-त्रस्त मिथिलामे बच्चा-दल होलिका-दहन लेल खोपड़ी चोरेबाक प्रसंग — ई कथा मैथिली बाल-साहित्यक क्लासिक बनि गेल अछि। गुंजनजी द्वारा उद्धृत 'तरेगन देखाइए' — अर्थात् चकाचौंध देखाओल — एहि पदबन्ध मे संस्कृति, नटखटपन एवं लोक-स्मृतिक अद्भुत सम्मिलन अछि।

'दहीक ठोप' — समूहक दबाव आ बाल-मनोविज्ञान

एहि कथामे बालक-दल एकटा भरिया (दही वाहक) क दही छीनैत अछि। नव्य न्यायक 'पक्षता' — अर्थात् प्रासंगिक तथ्य — एहि अर्थमे उल्लेखनीय अछि जे 'पितृ-मृत्यु भय' (जे बच्चाक दल उत्पन्न करैत अछि) ओ तर्क नहि, भावना-संचालित झूठ अछि। ई बाल-मनोविज्ञानक गहन अन्वेषण थिक।

'खोइंछक लेल साड़ी' — मातृ-प्रेम एवं बालक-साहस

एहि कथाक टिप्पणी दुर्गानन्द मण्डलजी दैत छथि जे कथाक साथकता एवं यथार्थता कथाकारक स्वयंक जीवनानुभवसँ प्राप्त होइत अछि। दाओवादी 'चेंग' —

सत्यता — एहि कथाक सबल पक्ष अछि।

'नारियर गाछ' — पर्यावरण चेतना

त्याग बाबूक नारियल-वृक्ष उखाड़बाक प्रसंग — ई पर्यावरणीय चेतनाक मैथिली साहित्यमे एक दुर्लभ उदाहरण थिक।

९. डॉ. शेफालिका वर्मा — विविध गद्य-पद्य

डॉ. शेफालिका वर्माक बहुसंख्यक रचना संकलनमे संगृहीत अछि — 'आनक बड़ाइ', 'साबरमती आश्रम' (यात्रा-वृत्तान्त), 'मूर्ख राजा आ ओकर बेटा', 'देश-प्रेम', 'गोनू झा चित्रकथा समीक्षा', 'बाल दिवस'।

'आनक बड़ाइ' — गुरु-शिष्य संवाद

एहि लघुकथामे गुरु शिष्यक कंजूसी (स्तुति नहि करब) क उपाय बतबैत छथि — दूसराक तारीफ करब स्वयंक उदारता बढ़ाइत अछि। ई कन्फ्यूशियसक 'रेन' (Ren — मानवता-सौन्दर्य) एवं 'यि' (Yi — उचित व्यवहार) क अनुरूप अछि।

'साबरमती आश्रम' — गाँधी-आख्यान

ई यात्रा-वृत्तान्त इतिहास-लेखन एवं व्यक्तिगत स्मृतिक सुन्दर सम्मिश्रण अछि। लेखिका एहि तीर्थ-समान स्थानक अनुभव मैथिली पाठकक समक्ष सजीव कएलनि अछि।

'मूर्ख राजा आ ओकर बेटा' — बाल-साहस एवं परिणाम

राजाक चारि पुत्रक साहसिक यात्रामे तीनक मृत्यु — ई कथा बाल-जिज्ञासाक परिणामक यथार्थ चित्रण थिक। बेंजामिनक 'एलेगरी' अनुसार एहि कथाक प्रत्येक प्रसंग एकटा नैतिक अर्थक प्रतीक थिक।

'देश-प्रेम' — जापानी सैनिकक बलिदान

एहि कथामे जापानी सैनिक खाई भरबाक हेतु एक-एक कूदि जाइत छथि। ई एकटा विवादास्पद कथा थिक — एकटा पाश्चात्य दृष्टिसँ ई देश-भक्तिक चरम अभिव्यक्ति थिक, मुदा मानवाधिकारक दृष्टिसँ सैनिकक बलिदान का महिमामण्डन प्रश्नवाचक अछि।

१०. काश्यप कमल (पवनकान्त झा) — 'बाबूक सुनाएल खिस्सा'

काश्यप कमल अपन पिताक सुनाएल छह कथा मैथिली पाठकक समक्ष प्रस्तुत कएलनि अछि — सहस्रमुखक दीप, गप्पक अर्थ, जहियासँ काल धेलक, नीक करी तँ पैघ के?, पढ़बे टा नै करी ओकरा गुनबो करी, अकिलक मोल।

'सहस्रमुखक दीप' — श्रम-सम्मान

मजदूरक 'सहस्रमुखक दीप' — पुआरक जलोत एकटा श्रमिक-गरिमाक अत्यन्त सुन्दर रूपक थिक। मार्क्सवादी दृष्टिसँ — श्रमक सम्मान एवं राजदरबारक औपनिवेशिक दृष्टि — एहि दुनूक बीच एकटा वर्ग-संघर्ष अन्तर्निहित अछि।

'गप्पक अर्थ' — संगीत एवं नीति

नटुआक गीत राजकुमार एवं राजकुमारीक हत्या एवं पलायनक संकल्पक उचित दिशा देइत अछि। ई भारतीय ध्वनि-सिद्धान्तक उत्कृष्ट उदाहरण थिक — गीतक शब्दार्थसँ परे ध्वन्यर्थ अत्यन्त गहन अछि।

'अकिलक मोल' — बुद्धिमत्ता बनाम अनुभव

बृद्ध मन्त्री एवं युवा मन्त्रीक बीच नागिनक बच्चाक परीक्षण — ई नव्य न्यायक 'पूर्ण ज्ञान' (Paksha + Hetu + Vyapti) क सिद्धान्तक व्यावहारिक उदाहरण थिक। बृद्ध मन्त्री एकहि बेरमे सम्पूर्ण सूचना लाबैत छथि — ई 'आवश्यक तथ्य' एकत्रण थिक।

११. दुर्गानन्द मण्डल — पारस · राखी · स्वतन्त्रता दिवस

दुर्गानन्द मण्डलजीक तीन रचना — 'पारस' (सामाजिक यथार्थवाद), 'राखी' (भाई-बहन सम्बन्ध), 'स्वतन्त्रता दिवस' (राजनीतिक व्यंग्य) — एहि संकलनमे संगृहीत अछि।

'पारस' — चाहवाला शिक्षक

पारस — चाह बेचैत-बेचैत बी.ए., एम.ए. करैत, अन्ततः शिक्षक बनैत अछि — ई 'पारस-मणि' (छूलापर सोना बना देबाक गुण) रूपकक मैथिली साहित्यमे अत्यन्त सुन्दर अनुप्रयोग थिक। कन्फ्यूशियसक 'जुन्जी' (Junzi — आदर्श व्यक्ति) एहि चरित्रमे सजीव होइत अछि।

'राखी' — राखीक वास्तविक अर्थ

लेखक राखीक वास्तविक अर्थ — आत्मिक रक्षासूत्र — पर बल दैत छथि। मिद्राश-परम्पराक पुनर्व्याख्याक अनुसार राखी-परम्पराक मूल आध्यात्मिक अर्थकें नवीन सन्दर्भमे प्रासंगिक बनाओल जाइत अछि।

'स्वतन्त्रता दिवस' — राजनीतिक व्यंग्य

ई रचना सर्वाधिक तीक्ष्ण व्यंग्य थिक — 'झूठा लोकक झूठा भाषण' एवं 'स्वतन्त्रताक वास्तविक अर्थ' — एहि दुनूक बीच विरोधाभास। बेंजामिनक 'मेसियैनिक टाइम' अनुसार — वास्तविक स्वतन्त्रता अखनो भविष्यमे प्रतीक्षारत अछि।

१२. वृषेश चन्द्र लाल — 'गोलबा' आ 'एकदन्त हाथी आ नौलखा हार'

वृषेश चन्द्र लालजीक दू रचना संकलनमे सर्वोत्कृष्ट श्रेणीमे आबैत अछि।

'गोलबा' — मानव-पशु सम्बन्धक गहन आख्यान

एहि कथामे गोलबा — एकटा नवजात बछड़ा — 'बड़कीमाई' (घरक मालकिन) के अपन माँ मानैत अछि। पूरा कथा बछड़ाक दृष्टिकोणसँ कहल गेल अछि, ओकर पाल-पोसाइ, हर्ष, एवं अन्तमे बलिदान — ई मैथिली बाल-साहित्यक एक महाकाव्यिक रचना थिक। कन्फ्यूशियसक 'रेन' — प्राणीमात्रक प्रति करुणा — एहि रचनामे परम रूपमे व्यक्त अछि।

'एकदन्त हाथी आ नौलखा हार' — राजकुमारी इन्द्रकुमारीक साहस

गोरखा राजकुमार पृथ्वीनारायण शाहक विवाह-प्रस्ताव एवं राजकुमारी इन्द्रकुमारीक साहसिक प्रतिरोध — ई ऐतिहासिक कथा मैथिली स्त्री-शक्तिक अत्यन्त प्रेरणादायक चित्रण थिक। 'नारी वस्तु नहि — सृष्टिक बीज अछि' — ई पंक्ति फेमिनिस्ट क्रिटिसिज्मक स्वर थिक।

१३. जगदानन्द झा 'मनु' — 'चोन्हा' (बाल उपन्यास)

'चोन्हा' मैथिलीक उत्कृष्ट बाल-उपन्यासमे से एक अछि। संजय नामक नेत्र-दुर्बल बालकक जीवन-संघर्ष एहि उपन्यासक केन्द्रमे अछि।

विदेह समानान्तर इतिहास

दिल्लीक झुग्गी-बस्तीमे रहनिहार मैथिल प्रवासी परिवारक जीवन — ई विदेह समानान्तर इतिहासमे 'विस्थापित मैथिली समाजक आख्यान' थिक जे मुख्यधारा इतिहासमे स्थान नहि पाबैत अछि।

नव्य न्यायक दृष्टि

संजयक माता-पिता हुनकर नेत्र-दुर्बलताक कारण खोजबाक बदले 'बहाना करैत अछि' — ई 'अज्ञान' (Non-cognition) क नव्य न्यायीय श्रेणी थिक। ज्ञानक अनुपस्थिति एहि परिवारमे उपचारक अनुपस्थितिक कारण बनैत अछि।

भारतीय मनोविज्ञान

करुण रस एहि उपन्यासक प्रबल आधार थिक। संजयक पीड़ा 'चोन्हा' (टेढ़-आँखि) उपनाम — ई करुणाक उत्तम काव्यात्मक प्रयोग थिक।

यहूदी दृष्टि

'टिक्कुन ओलम' — जगत-सुधारक कार्य — संजयक स्वयं रोटरी क्लब आँखि-अस्पताल खोजब, तिफिनक पैसा बचेनाइ — ई 'मेसियैनिक' स्वयं-उद्धारक कथा थिक।

१४. जगदीश प्रसाद मण्डल — 'बुढ़िया दादी' आ 'मान' (कथा) आ 'तरेगन' (संग्रह)

जगदीश प्रसाद मण्डल मैथिली बाल-साहित्यक ओ स्तम्भ छथि जिनकर 'तरेगन' संग्रह डॉ. रमण झाजी 'मैथिली बाल-साहित्यक पथ-दर्शक' मानैत छथि।

'बुढ़िया दादी' एवं 'मान' — ग्राम-जीवनक यथार्थ

ग्रामीण दादी-नाती सम्बन्धमे लोक-संस्कृतिक सुन्दर अभिव्यंजना। चीनी कन्फ्यूशियन 'ज़ियाओ' (Xiao — पितृभक्ति/माता-पिता-वरिष्ठ-सम्मान) एहि कथाक मूल मूल्य थिक।

'तरेगन' संग्रहक विस्तृत समीक्षा

'तरेगन' — सम्पूर्ण पोथीक अवलोकन कएलापर एकरा मात्र बाल-कथा-संग्रह नहि मानल जा सकैछ। दर्शनक सभ विधाक सरल भाषामे चित्रण कएल गेल अछि। 'उद्धारा' कथामे महाभारतसँ कालजयी प्रतीकक निकालब 'हंस' आचार्यक कार्य थिक।

१५. अनिल मल्लिक — 'दादीक गीत'

अनिल मल्लिक एकटा अत्यन्त भावुक एवं सांस्कृतिक रूपसँ महत्त्वपूर्ण रचना प्रस्तुत कएलनि अछि — हिनकर दादी प्रत्येक भोर एकटा विशेष लोकगीत गाबैत छलीह जे पूरे गाँवक जागबेलाक घड़ी बनि गेल रहए। दादीक देहान्त पश्चात् ओ गीत हुनकर हस्तलिखित रूपमे मात्र शब्द बनि रहि गेल।

यहूदी मिद्राश दृष्टि

दादीक गीत — 'उठू हे फूलकुमैर रानी, झाड़ि दिअ अँगना' — ई एकटा 'सैक्रेड टेक्स्ट' (पवित्र पाठ) थिक जेकर मिद्राश-व्याख्या हर पीढ़ी नए अर्थ निकालैत अछि। 'रिह गेल एकटा अन्तहीन प्रतीक्षा — की दादी फेर औतीह?' — ई बेंजामिनक 'मेसियैनिक प्रतीक्षा' थिक।

१६. डॉ. शशिधर कुमार 'विदेह' — दक्षिणी ध्रुव पर मनुष्यक पएरक सए वर्ष · उड़िने सकी पर चिड़ै छी हम · अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस · चन्दा मामा

डॉ. शशिधर कुमार 'विदेह' एहि संकलनमे सर्वाधिक वैज्ञानिक एवं भाषाई चेतनायुक्त रचना प्रस्तुत कएलनि अछि।

'दक्षिणी ध्रुव पर मनुष्यक पएरक सए वर्ष' — विज्ञान-कथा

अन्टार्कटिका अभियानक विज्ञान-आख्यान मैथिली बाल-साहित्यमे अत्यन्त दुर्लभ थिक। ई विज्ञान-बोध एवं साहित्यिक प्रस्तुतिक सफल सम्मिश्रण थिक।

भाषाई चेतना

'अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस' — ई कविता-लेख मातृभाषा-संरक्षणक आग्रह थिक। पोस्टकोलोनियल दृष्टिसँ — मातृभाषाक सम्मान एवं भाषाई आत्म-सम्मान — एकटा वैश्विक चुनौती थिक।

१७. बिपिन कुमार झा — 'ऐ चराचर जगतमे मनुष्य के?' आ 'सुखक मृगमरीचिका'

'ऐ चराचर जगतमे मनुष्य के?'

एहि दार्शनिक बाल-कथामे ब्रह्माजी पशु-सभाक समक्ष मनुष्यक श्रेष्ठताक कारण — 'परिवर्तनशीलता' — बतबैत छथि। गजेन्द्र ठाकुरक परम्परामे ई कथा नव्य न्यायक 'व्याप्ति' — कारण-कार्य — क उत्कृष्ट बाल-उपयोग थिक।

'सुखक मृगमरीचिका' — देवदत्त बसुक संस्कृत कथाक मैथिली अनुवाद

संस्कृतसँ मैथिली अनुवाद बिपिन कुमार झाजी कएलनि अछि। नीमक कड़वाहटक प्रतीक — 'संसारो अही नीमक गाछ जकाँ अछि' — एहि उपदेशमे भारतीय काव्यशास्त्रक 'उपदेश-काव्य' परम्पराक सुन्दर अनुसरण अछि।

१८. नवीन ठाकुर — 'चन्दा मामा आ चन्द्रमा'

एहि संकलनक सर्वाधिक दार्शनिक लेख। 'चन्दा मामा' — बाल-काव्यक भावनात्मक उपनाम — एवं 'चन्द्रमा' — वैज्ञानिक यथार्थ — एहि दुनूक बीच तनावमे लेखक 'सामंजस्य' खोजैत छथि।

दाओवादी दृष्टि

लेखकक निष्कर्ष — 'चन्दा मामा रहिथ आकि चन्द्रमा, की फरक पड़ैत छै, छिऐ तँ एकैगो' — ई दाओवादी 'एकत्व' (One-ness) क स्वीकृति थिक। जुआङझी कहैत छलाह — सत्य एवं भ्रम दुनू 'एके ताओ' केर अंश छथि।

१९. गजेन्द्र ठाकुर — 'तरहरिमे परीलोक'

सम्पादक-रचनाकारक रूपमे ठाकुरजीक एहि कथाक शीर्षक 'तरहरिमे परीलोक' — लोक-कथाक 'परीलोक' (Fairy World) एवं तरहरि (सब्जी-जड़ी) — दुनूक सम्मिश्रण अत्यन्त रोचक रूपक थिक।

विदेह समानान्तर इतिहास

'तरहरि' — एकटा साधारण शब्द — एवं 'परीलोक' — एकटा अलौकिक अवधारणा — एहि दुनूक संयोजन विदेह फ्रेमवर्कक 'साधारण एवं असाधारणक समानान्तरता' क प्रतीक थिक।

२०. डॉ. अभयधारी सिंह — 'अभिनव वर्ष'

ई लेख ग्रेगोरियन कैलेण्डरक इतिहास एवं भारतीय विक्रमी संवतक श्रेष्ठताक तर्कसंगत प्रस्तुति थिक।

नव्य न्यायक दृष्टि

लेखक ग्रेगोरियन, यहूदी, चीनी, मिस्री, पारसी एवं भारतीय कालगणनाक तुलनात्मक विश्लेषण करैत नव्य न्यायक 'तुलनात्मक प्रमाण' प्रस्तुत करैत छथि। भारतीय कालगणना सर्वाचीनतम होएबाक ऐतिहासिक तर्क अत्यन्त सुदृढ़ अछि।

२१. बाल-काव्य: पंकज कुमार झा, रमाकान्त राय रमा, महाकान्त ठाकुर, डॉ. जया वर्मा एवं अन्य

एहि संकलनमे ३०+ कविता एवं गीत संगृहीत अछि। सभक संक्षिप्त समीक्षा:

पंकज कुमार झा — 'माए गइ माए'

माँक विरह-गीत — करुण रसक उत्कृष्ट अभिव्यंजना। 'माए गइ माए' — तीन शब्दमे समस्त वात्सल्यक व्यंजना थिक।

रमाकान्त राय रमा — 'उल्लूक शिकारी'

उल्लूकें शिकारी बनाएब — एहि विलोमार्थक रूपकमे बाल-हास्य एवं व्यंग्यक सुन्दर सम्मिश्रण।

महाकान्त ठाकुर — 'स्नेहक सरगम', 'खगता भगतसिंहक', 'अपन भूमि'

देश-भक्ति एवं प्रकृति-प्रेमक भाव प्रभावशाली शैलीमे। 'ज्ञान-दीप' — ज्ञानक महिमागान।

डॉ. जया वर्मा — 'बेटी'

'बेटी' कविता — स्त्री-शक्तिक ओजपूर्ण उद्घोष। फेमिनिस्ट क्रिटिसिज्म अनुसार ई मैथिलीमे स्त्री-चेतनाक महत्त्वपूर्ण रचना थिक।

चन्द्रशेखर कामित — 'भात छै नाम-नाम'

गजेन्द्र ठाकुरक अनुसार काव्यात्मक प्रवाहमे कामितजी सभसँ आगाँ छथि। ई निर्णय सुपुष्ट प्रतीत होइत अछि।

शान्तिलक्ष्मी चौधरी — बाल गज़ल, कुहर, बरखा रानी

गज़ल-विधाक मैथिलीमे सफल प्रयोग। 'कुहर' एवं 'बरखा रानी' प्रकृति-काव्यमे उत्कृष्ट रचना।

मुक्ती कामत — 'जड़ैत ज्योत'

'नै खेबै तरकारी, रोटी / हमरा नूने रोटी खाए दे... माए गे, हमरा तूँ पढ़ैं लेल जाए दे' — ई बाल-जिज्ञासाक उत्कृष्ट काव्य-अभिव्यंजना थिक।

शंभूनाथ झा — 'न्यूटनक सिद्धान्त'

विज्ञान-काव्यक मैथिलीमे अत्यन्त दुर्लभ प्रयोग। न्यूटनक गुरुत्वाकर्षण मैथिली बाल-काव्यमे — ई अद्भुत रचनात्मकता थिक।

स्वे आलम गौहर — 'नेना भुटकाक लेल एकटा सुन्दर कविता'

एहि मुस्लिम लेखकक कविता संकलनमे मैथिलीक धर्म-निरपेक्ष स्वरूपक प्रमाण थिक।

२२. चित्रकला — तुनीशा प्रियम · गुंजन कर्ण · ज्योति सुनीत चौधरी · गणेश ठाकुर · अनुपमा प्रियदर्शिनी · श्वेता झा चौधरी · श्वेता झा (सिंगापुर) · प्रवीण कुमार ठाकुर · कैलाश कुमार कामत · मोना पाण्डेय · इरा मल्लिक

संकलनमे ११ चित्रकारक रचना संगृहीत अछि। श्वेता झा चौधरीक मिथिला चित्रकला सर्वश्रेष्ठ श्रेणीमे आबैत अछि। ज्योति सुनीत चौधरीक छह चित्र — जे हुनका स्वयं बनाओल — एहि संकलनक आत्मा थिक।

चीनी सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टि

मिथिला-चित्रकलामे चीनी 'यि' (Yi — अर्थ-व्यंजना) एवं 'जिंग' (Jing — शान्त-सौन्दर्य) — दुनूक अनुरूप परम्पराक मौलिक चित्रण अछि। रेखाक सरलता एवं रंगक जीवन्तता मिथिला-कलाक मूल गुण थिक।

२३. मुक्ताजी, अचना कुमर, शबनम श्री — संक्षिप्त समीक्षा

मुक्ताजी — 'पथ दर्शन'

एकटा विद्यालय-सांस्कृतिक कार्यक्रममे बच्चाद्वारा हिन्दी फिल्मी गीत 'आवारा हूँ' गेनाइ देखि लेखकक विचलन — ई मैथिली सांस्कृतिक पहचानक संकटक यथार्थ आख्यान थिक।

अचना कुमर — 'विज्ञान' (दादीसँ सुनल कथाक पुनर्लेखन)

एकटा विद्वान ब्राह्मणक 'आसनम् भु: चालयन्' (बैसबासँ पूर्व बिछौन झाड़ू) श्लोक जीवन-रक्षा करैत अछि — ई लोक-ज्ञान एवं संस्कृत-शास्त्रक सम्मिलन थिक।

शबनम श्री — 'कम्प्यूटरक खेल'

कम्प्यूटर शिक्षाक बाल-सुलभ परिचय — अत्यन्त सरल एवं प्रभावशाली लेखन। कन्फ्यूशियसक 'शिक्षाक लोकतन्त्रीकरण' — ई रचना ओहि आदर्शक प्रतिनिधि थिक।

२४. अनमोल झा, विनीत उत्पल, डॉ. अभयधारी — बाल-लेख

अनमोल झा — 'भांडाफोर'

एहि लघुकथामे बूढ़ दादा जे आगन्तुकक परिचय माँगैत छथि — एहि प्रसंगमे एकटा टुकड़ा-टुकड़ा दोकानदार पर्दाफाश भेल। नव्य न्यायक 'परिज्ञान' (ज्ञान-प्राप्ति) एकटा विनोदी प्रसंगमे सम्पन्न होइत अछि।

अनमोल झा — 'अपन गाम', 'मामा गाम'

ग्राम-जीवनक पुनर्स्मरण — विस्थापित मैथिल युवाक अनुभव। दाओवादी 'घर' (Homeland) एहि कविताक केन्द्र-बिन्दु थिक।

विनीत उत्पल — 'कतए गेल फिल्मक बाल-कलाकार'

हिन्दी सिनेमाक इतिहास — 'जागृति', 'बूट पालिश', 'तारे जमीन पर' आदि — मैथिली पाठकक समक्ष। ई मनोरंजन-शिक्षाक माध्यमसँ बाल-विश्वक रोचक खोज थिक।

२५. अन्य कवि-लेखक लोकनि

नवीन कुमार 'आशा', राजदेव मण्डल, चन्दन कुमार झा, मनोज कुमार मण्डल, प्रभात राय भट्ट, मिथिलेश कुमार झा, अमित मिश्र, आशुतोष मिश्र, देव शुभवंश — एहि सभक रचना संकलनमे एकटा सुगठित बाल-काव्यक परम्परा निर्मित करैत अछि।

राजदेव मण्डल — 'मुनियाँक चिन्ता' आ 'कथीक गाछ'

ग्रामीण बाल-जीवनक यथार्थ एवं पर्यावरण-चेतना — दुनू एहि रचनामे समाहित।

मनोज कुमार मण्डल — 'खेल'

बाल-खेल एवं उत्साहक सुन्दर काव्यात्मक चित्रण।

देव शुभवंश — 'गतिक रहस्य'

विज्ञान-काव्यक एकटा आओर उत्कृष्ट उदाहरण।

२६. समग्र समीक्षा — छह दृष्टिसँ संकलनक मूल्यांकन

अ. विदेह समानान्तर इतिहास — समग्र दृष्टि

एहि संकलन मैथिली बाल-साहित्यक इतिहासमे कएक समानान्तर आख्यान एकत्रित करैत अछि — लोककथा (ज्योतिजी), भिखारी-आख्यान (गंगेश गुंजन), विस्थापित मैथिल (मनुजी), नारी-प्रतिरोध (वृषेशजी), एवं दलित-वंचित समुदायक अप्रत्यक्ष स्वर। सम्पादकीय दृष्टिकोण समावेशी एवं प्रगतिशील थिक।

आ. गंगेशक नव्य न्याय — समग्र दृष्टि

संकलनक रचना सभमे 'ज्ञान', 'अज्ञान', एवं 'तर्क' — एहि तीनू प्रकारक उपयोग भिन्न-भिन्न रूपमे देखाइत अछि। 'अकिलक मोल', 'ऐ चराचर जगतमे', 'सुखक मृगमरीचिका' — एहि तीनू रचनामे नव्य न्यायक प्रत्यक्ष प्रयोग अछि। एहि संकलनक 'अभिनव वर्ष' — कालगणनाक तार्किक तुलना — नव्य न्यायक तुलनात्मक प्रमाण-पद्धतिक उत्कृष्ट अनुप्रयोग थिक।

इ. भारतीय काव्यशास्त्र — समग्र दृष्टि

नौ रसमे सर्वाधिक प्रयुक्त — वात्सल्य (नानीक खिस्सा, गोलबा, चोन्हा), करुण (दादीक गीत, पारस, माए गइ माए), अद्भुत (विज्ञान-काव्य, तरहरिमे परीलोक), एवं वीर (एकदन्त हाथी, स्वतन्त्रता दिवस) रस। ध्वनि-सिद्धान्त अनुसार अनेक रचनाक अर्थ-व्यंजना बहुस्तरीय अछि।

ई. पाश्चात्य साहित्यिक समीक्षा — समग्र दृष्टि

टी.एस. इलियटक 'परम्परा-व्यक्तित्व' द्वंद्व — लोककथा-परम्परा एवं व्यक्तिगत रचनात्मकताक सम्मिश्रण — संकलनमे सर्वत्र दृश्यमान अछि। बाख्तिनक बहुस्वरता 'लाट साहेबक किरानी' एवं 'एक राजाक सात मेहरी' मे स्पष्ट अछि। फेमिनिस्ट क्रिटिसिज्म 'बेटी', 'एकदन्त हाथी', एवं 'अदृश्य बन्धन' मे प्रासंगिक अछि।

उ. चीनी साहित्यिक समीक्षा — समग्र दृष्टि

कन्फ्यूशियनवादी 'जुन्जी' (आदर्श व्यक्ति) — पारस, टिल्लूजी, मण्डलजी — एहि सभक नायक। दाओवादी 'वू वेई' — सहज कर्म एवं लोभ-त्याग — सम्पूर्ण लोककथा-परम्परामे। जुआङ्झीक भाषाई सीमाक दर्शन — 'चोनहा' उपन्यासमे एवं 'अदृश्य बन्धन' मे स्पष्ट।

ऊ. यहूदी-इसरायली साहित्यिक दृष्टि — समग्र दृष्टि

मिद्राश-पुनर्कथन — नानीक खिस्सा, दादीक गीत, 'विज्ञान' कथा — लोककथाक पुनर्सृजन। बेंजामिनक 'मेसियैनिक टाइम' — 'स्वतन्त्रता दिवस', 'राखी', 'अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस' — एहि सभमे भविष्यक मुक्तिक प्रतीक्षा। लेवीनासक 'अदरनेस' — 'लाट साहेबक किरानी', 'चोन्हा', 'गोलबा' — हाशिये पर रहनिहारक प्रति नैतिक दायित्व।

२७. निष्कर्ष

विदेह सदेह ९ — विदेह मैथिली शिशु उत्सव — मैथिली बाल-साहित्यक इतिहासमे एकटा दुर्लभ संकलन थिक। एकर वैशिष्ट्य बहुआयामी अछि:

(क) वैविध्य — कथा, कविता, निबन्ध, जीवनी, चित्रकथा, यात्रा-वृत्तान्त, उपन्यास, विहनि-कथा — सभ विधा एकत्रित।

(ख) भाषाई उत्कृष्टता — सरल, खाँटी मैथिलीक प्रयोग जाहिमे संयुक्ताक्षर एवं ङ-ञक उचित व्यवहार।

(ग) सांस्कृतिक संरक्षण — मिथिलाक लोककथा, लोकगीत, लोकदेवता एवं पर्व-त्योहारक जीवन्त दस्तावेजीकरण।

(घ) सामाजिक चेतना — जातिवाद-विरोध, नारी-सशक्तीकरण, भाषाई आत्मसम्मान, पर्यावरण-बोध।

(ङ) अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि — विज्ञान, इतिहास, राजनीति, दर्शन — सभमे वैश्विक दृष्टिकोणक समावेश।

छह समीक्षा-दृष्टिसँ एहि संकलनक अध्ययन सिद्ध करैत अछि जे मैथिली बाल-साहित्य केवल 'क्षेत्रीय' नहि — ओ सार्वभौमिक मानवीय मूल्यक वाहक थिक। विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क एहि रचनाक 'अनकहल' आवाजक प्रति सचेत अछि। गंगेशक नव्य न्याय एहि रचनाक तर्क-संगति परखैत अछि। भारतीय रस-सिद्धान्त एहि रचनाक सौन्दर्यात्मक उत्कर्ष मापैत अछि। पाश्चात्य समीक्षा एकर संरचनात्मक एवं विचारधारात्मक जटिलता उद्घाटित करैत अछि। चीनी परम्परा एकर सहज-ज्ञान एवं नैतिक दर्शनक मूल्यांकन करैत अछि। एवं यहूदी-इसरायली परम्परा एकर पुनर्व्याख्याक असीमित सम्भावना देखबैत अछि।

अन्तमे — 'गोलबा' क अन्तिम यात्रा, 'चोन्हा' क आँखिक उजास, 'दादीक गीत' क स्मृति, 'लाट साहेबक किरानीक' नैतिक क्रान्ति, 'एकदन्त हाथी' क राजकुमारीक साहस — ई सभ मिलि कए एकटा 'विदेह मैथिली शिशु उत्सव' रचैत अछि जे भविष्यमे मैथिली बाल-साहित्यक आधारशिला रहत।

— समाप्त —

सन्दर्भ-सूची

१. गजेन्द्र ठाकुर (सम्पा.) — विदेह मैथिली शिशु उत्सव (विदेह सदेह ९), श्रुति प्रकाशन, नई दिल्ली, २०१२।

२. गंगेशोपाध्याय — तत्त्वचिन्तामणि (तेरहम शताब्दी), सम्पा. कामेश्वर नाथ मिश्र।

३. भरतमुनि — नाट्यशास्त्र, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान।

४. आनन्दवर्धन — ध्वन्यालोक, सम्पा. के. कृष्णमूर्ति।

५. T.S. Eliot — 'Tradition and the Individual Talent', 1919.

६. Mikhail Bakhtin — The Dialogic Imagination, University of Texas Press.

७. Walter Benjamin — Illuminations, Schocken Books.

८. Emmanuel Levinas — Totality and Infinity, Duquesne University Press.

९. Lao Tzu — Tao Te Ching, D.C. Lau (trans.), Penguin Classics.

१०. Zhuangzi — The Complete Works, Burton Watson (trans.), Columbia University Press.

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह सदेह ९ — विदेह मैथिली शिशु उत्सव

अध्याय 9 · विदेह सदेह-१३: सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा — भारतीय एवं विश्व साहित्यिक सिद्धान्तक आलोकमे

सारांश Videha Sadeha 13: A Complete Literary Criticism स्रोत: विदेह मैथिली ई-पत्रिका (अंक ११६-१२०) सम्पादक:

गजेन्द्र ठाकुर | प्रकाशक: श्रुति प्रकाशन, नई दिल्ली, २०१३ ISSN: 2229-547X १. ग्रन्थ-परिचय एवं सामान्य मूल्यांकन विदेह सदेह-१३

मैथिली साहित्यक ओहि सुदीर्घ परम्पराक एकटा महत्त्वपूर्ण पड़ाव थिक जे ज्योतिरीश्वर ठाकुर एवं ज्योतिरीश्वर-पूर्व विद्यापतिसँ चलि आबि

रहल अछि। विदेह पत्रिका (www.videha.co.in) क अंक ११६सँ १२० धरि प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ गद्य एवं पद्यक ई समानान्तर संकलन

अपन व्यापक आयाममे मैथिली भाषा, साहित्य, समाज आ संस्कृतिक अनेक रूपकेँ उद्घाटित करैत अछि। ई संकलन मैथिली साहित्य

आन्दोलनक ओहि घोषणा 'मानुषीमिह संस्कृताम्' कें चरितार्थ करैत अछि जे मनुष्यकेँ केन्द्रमे राखि एकटा समतामूलक, जातिमुक्त आ

प्रगतिशील मैथिली साहित्यक रचनाक संकल्प लैत अछि।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · रस-सिद्धान्त · लोक-संस्कृति · समाज-समीक्षा

Videha Sadeha 13: A Complete Literary Criticism

स्रोत: विदेह मैथिली ई-पत्रिका (अंक ११६-१२०)

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर | प्रकाशक: श्रुति प्रकाशन, नई दिल्ली, २०१३

ISSN: 2229-547X

१. ग्रन्थ-परिचय एवं सामान्य मूल्यांकन

विदेह सदेह-१३ मैथिली साहित्यक ओहि सुदीर्घ परम्पराक एकटा महत्त्वपूर्ण पड़ाव थिक जे ज्योतिरीश्वर ठाकुर एवं ज्योतिरीश्वर-पूर्व विद्यापतिसँ चलि आबि रहल अछि। विदेह पत्रिका (www.videha.co.in) क अंक ११६सँ १२० धरि प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ गद्य एवं पद्यक ई समानान्तर संकलन अपन व्यापक आयाममे मैथिली भाषा, साहित्य, समाज आ संस्कृतिक अनेक रूपकेँ उद्घाटित करैत अछि।

ई संकलन मैथिली साहित्य आन्दोलनक ओहि घोषणा 'मानुषीमिह संस्कृताम्' कें चरितार्थ करैत अछि जे मनुष्यकेँ केन्द्रमे राखि एकटा समतामूलक, जातिमुक्त आ प्रगतिशील मैथिली साहित्यक रचनाक संकल्प लैत अछि। भारत-नेपाल दुनू क्षेत्रक पचाससँ अधिक रचनाकारक रचना एहि संकलनमे सम्मिलित छथि जे विहनि कथा, लघुकथा, प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना, पद्य, नाट्य उत्सव तथा विविध रूपमे विभक्त अछि।

विश्व साहित्य सिद्धान्तक परिप्रेक्ष्यमे देखी तँ ई संकलन एकटा बहुस्वरीय (Polyphonic) कृति थिक जतऽ सत्ता, जाति, लिंग, वर्ग आ भाषिक अस्मिताक विविध प्रश्न एकसंग उठाओल जाइत अछि। एहिमे यथार्थवाद (Realism), जादुई यथार्थवाद (Magical Realism) क छाया, स्त्रीवाद (Feminism), दलित चेतना (Dalit Consciousness), मार्क्सवादी सौन्दर्यशास्त्र (Marxist Aesthetics) आ उत्तर-उपनिवेशवाद (Post-colonialism) क अनेक धारा संग-संग प्रवाहित होइत अछि।

२. सम्पादकीयक साहित्यिक-सांस्कृतिक विश्लेषण

२.१ गजेन्द्र ठाकुरक सम्पादकीय: एकटा वैचारिक मूल्यांकन

सम्पादकीयक केन्द्रीय प्रश्न थिक: 'की मैथिली साहित्य अपन मूल स्वरमे ब्राह्मणवादी अछि?' — ई प्रश्न उत्तर-उपनिवेशवादी (Post-colonial) आलोचनाक ओहि मूलभूत सिद्धान्तसँ जुड़ैत अछि जे ई मानैत अछि जे कोनो भाषा-साहित्यमे सत्ता आ वर्गक विचारधारा गहींर रूपेँ व्याप्त रहैत अछि।

सम्पादक अपन बातमे साहित्य अकादेमीक पुरस्कार वितरणक जाति-आधारित विसंगति उजागर करैत छथि: ४३ बेरमे मैथिल ब्राह्मण — ३६ बेर, कायस्थ — ५ बेर, राजपूत — २ बेर, गैर-सवर्ण — ०। ई आँकड़ा Bourdieu क 'सांस्कृतिक पूँजी' (Cultural Capital) क सिद्धान्तक पुष्टि करैत अछि जतऽ उच्च-जातिक वर्ग साहित्यिक मानदण्ड आ संस्थागत ढाँचापर अपन नियन्त्रण बनाओने रहैत अछि।

विद्यापतिक दू रूप — 'पदावलीक विद्यापति' (ज्योतिरीश्वर-पूर्व, समानान्तर परम्पराक) आ 'संस्कृत-अवहट्ठ वाला विद्यापति ठक्करः' (ब्राह्मण, राजाश्रित) — क बीच ठाकुर जे विभेद स्थापित करैत छथि, से शास्त्र-बनाम-लोकक द्वन्द्वकेँ एकटा नव दृष्टिसँ देखबाक अवसर दैत अछि। ई हिन्दुस्तानी साहित्यमे संस्कृत परम्परा बनाम अपभ्रंश/लोक परम्पराक शाश्वत तनावक मैथिली संस्करण थिक।

फणीश्वरनाथ रेणुक विदापत नाचपर रिपोर्ताजिक उद्धरण एहि सम्पादकीयकेँ सांस्कृतिक दस्तावेजक दर्जा दैत अछि। रेणुक ई वर्णन जे खेतिहर, बहलमान आ चरवाहा विद्यापतिक पदावली गा-गाकय नाचैत छलाह — ई प्रमाण थिक जे लोक-परम्पराने विद्यापतिकेँ 'ब्राह्मणवादी विद्यापति'सँ पहिनहि बचा लेलक।

रामनारायण सिंह / Gramsci क अवधारणा: सम्पादकीयमे 'समानान्तर परम्परा' (Parallel Tradition) क जे विचार अछि से Gramsci क 'काउंटर-हेजेमनी' (Counter-Hegemony) सँ मेल खाइत अछि जतऽ अधीनस्थ वर्ग अपन सांस्कृतिक धारा बनाओने रहैत अछि।

३. विहनि कथा: विश्लेषण

३.१ रामविलास साहुक विहनि कथा

'घुसहा घर' (रिश्वती घर)

ई लघु कथा यथार्थवादक ओहि श्रेष्ठ रूपकेँ प्रस्तुत करैत अछि जतऽ एकटा सामान्य वृद्धाक नैतिक निर्णय पैघ व्यवस्थापर प्रश्नचिह्न लगाबैत अछि। बुधनी बुढ़ियाक ई कथन — 'घूस दऽ कऽ घर बनाएब तँ ओइ घूसहा घरमे रहैबला केहन हेतै?' — एकटा लोक-नैतिकताक अभिव्यक्ति थिक जे Tolstoy क लोक-कथाक सरल किन्तु गहन नैतिक बोधसँ तुलनीय अछि।

इन्दिरा आवास योजनामे व्याप्त भ्रष्टाचारक यथार्थपरक चित्रण प्रेमचन्दक 'कफन' आ 'गोदान'क सामाजिक आलोचनाक परम्परामे अछि। रधिया मसौमात आ बुधनी बुढ़ियाक माध्यमे स्त्री-पात्रक जे चरित्र-चित्रण भेल अछि से हुनका निष्क्रिय पीड़िता नहि बल्कि नैतिक-सक्रियता (Moral Agency) सँ सम्पन्न व्यक्तित्वक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि।

'इमानदारीक पाठ'

ई लघुतम रचना गाम-शहरक द्वन्द्वकेँ एकटा नव दृष्टिसँ देखैत अछि। कनुआँक वक्तव्य जे गामक विद्यालयमे 'इमानदारीक पाठ' भेटैत अछि मुदा शहरक विद्यालयमे 'रोजगारक पाठ' — ई विरोधाभास आइक शिक्षा-व्यवस्थाक गहींर आलोचना थिक। Dewey क शैक्षणिक दर्शनमे जतऽ शिक्षाक उद्देश्य जीवन-निर्माण थिक, ओतऽ एहि कथाक प्रश्न आरो तीखा लागैत अछि।

'बौआ बाजल'

एकटा बालकक ई कथन जे कवि-लेखक बनबामे कोनो फायदा नहि — ई आत्म-व्यंग्य (Self-Irony) क ओहि शैलीमे अछि जे मैथिली साहित्यक विशेषता रहल अछि। एहि कथामे रचनाकारक ओ आत्मसंकट व्यक्त होइत अछि जे आधुनिक भारतीय साहित्यमे बेर-बेर देखाइत अछि।

३.२ सत्यनारायण झा: 'सुटिया'

ई विहनि कथा अपन काव्यात्मक गद्य-शैलीक कारणे अत्यन्त प्रभावशाली अछि। रातिक निस्तब्ध वातावरणक वर्णन — 'अन्हार गुफ्फ, हाथ हाथ नहि सुझैत, आकाश साफ, पूरा आकाश तारासँ आच्छादित' — ई प्रकृति-चित्रण Tagore क छोट कहानीक वातावरण-निर्माणक कुशलतासँ मेल खाइत अछि।

सुटिया (एकटा सेवकनी) क बेटाक मृत्यु आ तकरा संग कथाकारक भावनात्मक एकात्मता — 'जखन ओ सुतल तँ माय सन मोन होएत' — ई करुण रसक अभिव्यक्ति थिक जे Aristotle क Catharsis क अवधारणाकेँ चरितार्थ करैत अछि। ओतऽ वर्ग-भेदक बावजूद मानवीय सम्बन्धक अटूटता देखाइत अछि।

३.३ मुन्नी कामत: 'कैंसर'

ई एकांकी शैलीक विहनि कथा सामाजिक-आलोचनाक एकटा सशक्त उदाहरण थिक। गरीब रोगी आ डॉक्टरक संवाद वास्तविक संवादसँ अधिक रूपक (Allegory) थिक जतऽ 'कैंसर' महँगाई, गरीबी, लाचारी आ बेरोजगारीक प्रतीक बनि जाइत अछि। Brecht क 'महाकाव्य रंगमंच' (Epic Theatre) क परम्परामे जतऽ रंगमंच सामाजिक जागरूकताक माध्यम बनैत अछि, ई कथा ओही परम्परामे आबैत अछि।

३.४ जगदानन्द झा 'मनु': 'प्रेमक बलि'

ई प्रेम-कथा जाति-व्यवस्थाक कारणे प्रतिबन्धित प्रेमक मार्मिक चित्रण थिक। प्रवल (ब्राह्मण) आ सुमन (तेली जाति) क प्रेमक अन्त आत्मघातमे होनाइ — ई Shakespeare क Romeo and Juliet क मैथिली संस्करण नहि थिक बल्कि अधिक वेदनादायी थिक, कारण ओतऽ व्यवस्थाक विरुद्ध लड़बाक कोनो रास्ता नहि।

सुमनक दार्शनिक वक्तव्य — 'प्रेम तँ त्यागक नाम अछि' आ 'एहि जनममे नहि तँ अगिला जनममे अपन मिलन अवश्य होएत' — ई भारतीय दार्शनिक परम्परामे प्रेमक ओहि अवधारणाकेँ व्यक्त करैत अछि जे लौकिकसँ परलौकिकक यात्रा करैत अछि। किन्तु अन्तक कटु यथार्थ — दुनूक लाश पीपलक नीचाँ

लटकैत अछि — सुमनक दर्शनक व्यर्थताकेँ उजागर करैत अछि।

३.५ अमित मिश्र: 'परिभाषा'

शहरक परिभाषाकेँ 'श्मशान'क रूपमे देखनाइ — 'शहर तँ श्मशान छिक जतऽ तान्त्रिक बनि लोक अपन स्वार्थपूर्ति लेल तपस्या कऽ रहल छथि' — ई Baudelaire क 'Fleurs du Mal' क आधुनिक शहरी विलगाव (Urban Alienation) क परम्परामे अछि। Simmel क 'Metropolis and Mental Life' क ई मैथिली साहित्यिक रूप थिक।

३.६ सन्दीप कुमार साफी: 'साउस पुतोहु' आ 'सगुन'

'साउस पुतोहु' सासु-पुतोहुक शाश्वत संघर्षकेँ उजागर करैत अछि। एहि द्वन्द्वमे स्त्रीवादी (Feminist) आलोचनाक दृष्टिकोणसँ देखी तँ दुनू पक्ष पितृसत्ताक शिकार छथि — सासुकेँ लगैत अछि पुतोहु हुनकर सत्ताकेँ चुनौती दऽ रहल छथि, पुतोहुकेँ लगैत अछि ओ शोषित छथि। Simone de Beauvoir क 'The Second Sex' मे जे 'Other' क अवधारणा अछि, से ओतऽ दुनूपर लागू होइत अछि।

४. लघुकथा: विस्तृत विश्लेषण

४.१ कैलास दास: 'लाँज'

ई लघुकथा प्रवासी श्रम (Labour Migration), पारिवारिक विखण्डन आ एकाकीपनक जटिल चित्र प्रस्तुत करैत अछि। सावित्रीक पति रंजन विदेश जाइत अछि, परिवारक आर्थिक स्थिति सुधरैत अछि, मुदा सावित्री एकाकी रहि जाइत छथि। पवनक संग हुनकर मित्रता जे खतराक दिशामे जाइत अछि — ई आधुनिक समाजमे नैतिक धुन्धलापनक चित्रण थिक।

'लाँज' (lodge) शब्दक प्रतीकात्मक महत्त्व देखी — ई विदेश जाइबाला मजदूरक सामूहिक आकांक्षा आ ओहि आकांक्षाक पाछाँ नुकाएल खतराक प्रतीक थिक। Guy de Maupassant क लघुकथाजकाँ ओतहुँ नियतिक एकटा कटु मोड़ अछि।

४.२ वीरेन्द्र कुमार यादव: 'बाबाक गाछी'

ई कथा अन्तर-जातीय प्रेम आ तकर परिणामक गाथा थिक। दलित राजू मल्लिक आ उच्च-जातिक विधवा मोहिनीक प्रेम आ अन्ततः हुनकर कोर्ट-मैरिज — ई Ambedkar क ओहि सामाजिक-न्यायक परम्परामे अछि जे जाति-व्यवस्थाकेँ मनुष्यताक शत्रु मानैत अछि।

शाशी बाबूक अन्तमे परिवर्तित होनाइ आ दुनूक विवाह स्वीकार करनाइ — ई आशावादी निरूपण थिक। Premchand क 'ठाकुर का कुआँ' मे जतऽ अन्याय अनसुलझल रहैत अछि, ओतऽ ई कथा एकटा आशावादी परिणतिक दिशामे जाइत अछि। मुदा ई आशावाद कृत्रिम नहि, बल्कि सामाजिक न्यायक सम्भावनामे विश्वासक अभिव्यक्ति थिक।

४.३ डॉ. अरुणा चौधरी: 'धलना'

ई कथा एहन एकटा महिलाक थिक जिनका हुनकर माय 'धलना' (जे चलि गेलीह) नाम देलखिन। B.A. पास एहि महिलाक कहानी एकटा व्यक्तिगत त्रासदीसँ आगाँ जाकय भारतीय स्त्री-शिक्षा आ तकर सपनाक भंग होयबाक सामूहिक कथा बनि जाइत अछि।

कथाक अन्त — जखन नायिका अपन असली नाम 'आशा' बताबैत छथि — ई ओहि विडम्बनाकेँ उजागर करैत अछि जे आशाक नामकेँ 'धलना' मे बदलि दैत अछि। ई आशा-निराशाक द्वन्द्वक सशक्त प्रतीक थिक जे Chekhov क कहानीक सादगीमे गहराईक स्मृति दिलाबैत अछि।

४.४ डॉ. अजीत मिश्र: 'व्यथा'

ट्रेनमे एकटा मनोरोगी महिला रोगीक चिकित्सा — जे वास्तवमे साहित्यक डॉक्टर छथि — ई कथा 'छल' (Imposture) क नैतिकतापर गहींर सवाल उठाबैत अछि। कथाकारक ई निर्णय जे 'जखन जीवने एकटा नाटक छिक तँ एहि तरहक नाटक कएने कोनो हर्ज नहि' — ई Pirandello क 'Six Characters in Search of an Author' क ओहि मान्यतासँ मिलैत-जुलैत अछि जे जीवन आ नाटकक बीचक रेखा धुन्धली अछि।

मैथिली एकांकी 'धींक' क उल्लेख आ मैथिल डॉक्टर द्वारा बंगाली रोगीक उपचार — ई भाषाई-सांस्कृतिक आदान-प्रदानक एकटा रोचक उदाहरण थिक।

४.५ जगदीश प्रसाद मण्डल: 'इमानदार घूसखोर'

ई लघुकथा एकटा न्यायाधीशक कहानी थिक जे अपन पत्नी आ बच्चाक भविष्यक चिन्तामे घूस लेबाक मन बनाबैत छथि मुदा अपन इमानदारी नहि खोबैत

छथि। ई नैतिक द्वन्द्व (Moral Dilemma) क एकटा जटिल चित्रण थिक।

ओतऽ Dostoevsky क 'Crime and Punishment' मोन पड़ैत अछि जतऽ नायक अपन कृत्यकेँ तर्कसँ उचित ठहराबाक कोशिश करैत अछि। मण्डल जीक ई कथा ओहि मध्यवर्गीय संकटकेँ उजागर करैत अछि जे नैतिक मूल्य आ आर्थिक आवश्यकताक बीच पिसाइत रहैत अछि।

४.६ कामिनी कामायनी: 'कठजीब'

ई कथा एकटा दलित-निम्नवर्गीय वृद्धा 'पुरनी दाय' क जीवन-कथा थिक जे सभकेँ सेवा करैत छथि मुदा जिनका ने भोजन भेटैत छनि, ने सम्मान। ई कहानी Mahasweta Devi क 'Breast-Giver' या 'Dopdi' क स्मृति दिलाबैत अछि जतऽ निम्नवर्गीय स्त्रीक शोषण आ तकर अदम्य जिजीविषा एकसंग चित्रित होइत अछि।

'पुरनी दाय'पर चोरीक आरोप, हुनकर गेरुआ (झोली) क तलाशी, पाजेबक नहि भेटब — ई सभ ओहि सामाजिक अन्यायक चित्रण थिक जे निम्नवर्गीयकेँ सदिखन सन्देहक नजरिसँ देखैत अछि। चोरीक आरोप झूठ साबित भेलापर सेहो माफी नहि भेटैत अछि — ई Kafka क 'The Trial' क स्मृति दिलाबैत अछि।

४.७ जगदानन्द झा 'मनु': 'कमलू'

ई कथा वृद्धावस्था आ एकाकीपनक हृदयविदारक चित्रण थिक। सत्तरि वर्षक बेमार कमलू एकला पड़ल छथि, चारि बेटा शहरमे छथि, पानि तककेँ देबयवाला केओ नहि। ई आधुनिक भारतक ओहि संकटक प्रतीक थिक जतऽ परिवार विखण्डित भऽ रहल अछि आ बुजुर्ग एकाकी मरि रहल छथि।

'राम नाम सत्य है' आ बेटाक तार देखि कानब — ई वर्णन Manto क बेबाक शैलीमे अछि। कमलूक नोर हुनकर बुढ़ापा, बेमारी या भूखक नहि — ओ 'मनोरथक हत्या'क थिक — ई मनोविश्लेषणात्मक गहराई एहि लघुकथाकेँ अविस्मरणीय बनाबैत अछि।

४.८ खुशबू झा: 'रूपाली'

रूपालीक कथा एकटा अन्तर्मुखी व्यक्तित्वक लड़कीक जीवन-यात्रा थिक। 'परीक दुनिया' मे रहयवाली रूपालीक अन्त 'अधूरा' रहनाइ — ई आधुनिक समाजमे एहन व्यक्तित्वक लेल स्थानक माँग थिक जे मुख्यधारामे फिट नहि होइत अछि।

५. प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना

५.१ संजीव कुमार शर्मा: महाकवि पं. लालदासक जयन्ती समारोह

ई लेख मैथिली साहित्यक एकटा महत्त्वपूर्ण परम्परा — महाकवि लालदास (१८५७-?) क स्मृतिमे आयोजित समारोहक विवरण थिक। लालदासक 'रमेश्वर चरित मैथिली रामायण' क प्रासंगिकतापर चर्चा ई दर्शाबैत अछि जे मैथिलीमे धर्म-साहित्यक सेहो एकटा समृद्ध धारा अछि।

५.२ सन्दीप कुमार साफी: आत्मकथा

ई आत्मकथा मैथिली साहित्यमे दलित आत्मकथाक एकटा दुर्लभ उपस्थिति थिक। सन्दीप साफी (जाति — धोबी, हरिजन/दलित) क जीवन-यात्रा — नेपालमे मजदूरी, चण्डीगढ़मे काज, बंगलोरमे घरेलू नोकरी, बेमारी, पयरमे आगि लगनाइ — ई सभ ओहि जीवनक दस्तावेज थिक जे एखन धरि मैथिली साहित्यक हाशियेपर छल।

B.A. क पढ़ाइ करैत कोठीमे नोकरी, परीक्षाक फीसक लेल संघर्ष — ई ओहि शिक्षाक सपनाक कहानी थिक जे बेर-बेर बाधित होइत अछि मुदा टूटैत नहि। दलित साहित्यक परिप्रेक्ष्यमे देखी तँ ई आत्मकथा Bama, Daya Pawar, या Om Prakash Valmiki क आत्मकथाक श्रृंखलामे आबैत अछि।

साफीक अन्तिम संकल्प — 'हम मैथिल छी, मिथिलेमे रहब आ पोरो साग तोड़ि कऽ गुजर करब' — ई स्व-अस्मिताक पुनःस्थापना थिक। ई Ambedkar क ओहि सन्देशक गूँज थिक जे कहैत छलाह जे अपन जाति आ मूलकेँ स्वीकार करू, मुदा शिक्षा आ संगठनसँ उठू।

५.३ उमेश मण्डल: 'सगर राइत दीप जरय' — द्वितीय चरण

'सगर राइत दीप जरय' मैथिलीक एकटा महत्त्वपूर्ण साहित्यिक परम्परा थिक। दरभंगामे आयोजित एहि सगर राइत कार्यक्रम आ ३७ पोथीक लोकार्पणक विवरण मैथिली साहित्य-आन्दोलनक सामूहिक शक्तिकेँ दर्शाबैत अछि।

५.४ आशीष अनचिन्हार: 'माहिया' विधा

ई लेख पंजाबी 'माहिया' विधाक परिचय आ तकरा मैथिलीमे अपनाबयक प्रस्ताव थिक। तीन पाँतिक ई विधा (१२+१०+१२ मात्रा, पहिली-तेसरी काफिया) मैथिली छन्दशास्त्रक परिप्रेक्ष्यमे एकटा नव सम्भावना खोलैत अछि।

५.५ आशीष अनचिन्हार: 'लघु-दीर्घ निर्णय'

ई पं. गोविन्द झाक 'मैथिली छन्द शास्त्र' क समीक्षा थिक। चन्द्रबिन्दुकेँ लघु मानी या दीर्घ — एहि व्याकरणिक प्रश्नपर विस्तृत तर्क आ संस्कृत-प्राकृत-अपभ्रंशक परम्पराक हवाला दैत एकटा सुचिन्तित निष्कर्ष। ई भाषाशास्त्रीय अन्वेषण मैथिलीक छन्दशास्त्रीय विकासमे महत्त्वपूर्ण योगदान थिक।

५.६ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र: मेवाड़ आ मालवाक साँझी लोककला

ई निबन्ध राजस्थान आ मध्यप्रदेशक 'साँझी' लोककलाक परिचय करबाबैत अछि — जतऽ कुँवारि कन्या पितृपक्षमे अपन स्वर्गवासी माताक स्मृतिमे दीवारपर गोबरसँ चित्र बनाबैत छथि। मिथिलाक तुसारी-पूजन परम्परासँ तकर तुलना।

ई निबन्ध भारतीय नृजातिविज्ञान (Ethnography) आ लोक-साहित्य अध्ययनक एकटा महत्त्वपूर्ण दस्तावेज थिक। Coomaraswamy क परम्परागत कला-अवधारणा आ James George Frazer क 'The Golden Bough' मे जे स्त्री-केन्द्रित लोक-अनुष्ठानक चर्चा अछि, तकर प्रकाशमे साँझीक अध्ययन एकरा आरो समृद्ध बनाबैत अछि।

५.७ गजेन्द्र ठाकुर: 'विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण'

ई विद्वत्तापूर्ण निबन्ध विद्यापतिक दू रूप — ज्योतिरीश्वर-पूर्व पदावलीक विद्यापति (लोक-परम्परा, समानान्तर धारा) आ संस्कृत-अवहट्ठक विद्यापति ठक्कुरः (राजदरबारी, ब्राह्मण, रचयिता) — क बीचक अन्तरकेँ ऐतिहासिक साक्ष्यक आधारपर स्थापित करैत अछि।

ज्योतिरीश्वरक 'वर्णरत्नाकर' मे पदावलीक परम्पराक उल्लेख, श्रीधरदासक 'सदुक्तिकर्णामृत' मे विद्यापतिक पाँच पद — ई साक्ष्य प्रमाणित करैत अछि जे विद्यापति ज्योतिरीश्वर (१२७५-१३५०) सँ पूर्वक छथि। ई निबन्ध पाठ-ऐतिहासिक आलोचना (Text-Historical Criticism) क परम्परामे एकटा महत्त्वपूर्ण योगदान थिक।

रामनरेश सिंह, दिनेश्वर लाल आनन्द, रामबृक्ष बेनीपुरी आदि विद्वानक मतक समीक्षा आ तहिमे खण्डन — ई शैक्षणिक विमर्श (Academic Discourse) क उत्कृष्ट उदाहरण थिक।

५.८ रामभरोस कापड़ि 'रमर': 'ह्वेन सांगसँ चीनमे भेंट'

ई यात्रा-निबन्ध सीयान (Xi'an) मे ह्वेन सांगक आवास-स्थान 'दा सिएन टेम्पल' क विवरण थिक। नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक प्रतिनिधि मण्डलक ई यात्राक वर्णन मैथिलीमे यात्रा-साहित्यक एकटा महत्त्वपूर्ण कड़ी थिक।

ह्वेन सांग (६०० ई.-६६४ ई.) आ हुनकर भारत-यात्रा, बौद्ध ग्रन्थक चीनी अनुवाद — ई ऐतिहासिक वृत्तान्त मैथिली पाठककेँ विश्व-इतिहाससँ जोड़ैत अछि।

६. पद्य खण्ड: विस्तृत विश्लेषण

६.१ जगदानन्द झा 'मनु': गजल (१-११)

मनु जीक ग्यारहटा गजल एहि संकलनक एकटा प्रमुख आकर्षण थिक। ई गजल अरबी-उर्दूक काफिया-रदीफ परम्पराकेँ मैथिलीमे सफलतापूर्वक अपनाबैत अछि।

पहिल गजल (बहरे-रजज, २२१२): 'जीवन कखन तक छैक नै बुझलक किओ / कखनो करेजक गप्प नै जनलक किओ' — ई अस्तित्ववादी (Existentialist) प्रश्न थिक। दोसर गजल (बहरे-रमल, २१२२): 'जखन खगता सभसँ बेसी तखन ओ मुँह मोड़ि लेलनि' — ई विश्वासघात आ एकाकीपनक चित्रण थिक। दसम गजल (सरल वार्णिक बहर): 'पाइ सँ सब सम्बन्ध जोड़ाबै छै पाइ' — ई Marx क 'पैसा-पूजा' (Money-Fetishism) क मैथिली काव्य-अभिव्यक्ति थिक।

६.२ कामिनी कामायनी / डॉ. शशिधर कुमर 'विदेह'

कामिनी जीक कविता स्त्री-मनोविज्ञानक गहींर पड़ताल करैत अछि। डॉ. विदेह जीक 'मृगतृष्णा मे पानि तकैत छी / आइ अहाँ बड़ नीक लगैत छी' — ई भाव-

प्रधान कविता थिक।

६.३ मुन्नी कामतक कविता

मुन्नी कामतक कविता स्त्री-अनुभवक विविध परतकेँ उजागर करैत अछि।

'सिया तोरे कारण' — सीताक माध्यमे स्त्रीक पीड़ाक पुनर्व्याख्या। ई नारीवादी पौराणिक पुनर्लेखन (Feminist Mythological Rewriting) क एकटा उदाहरण थिक।

'पैसा सँ बियाह' — दहेज-प्रथाक तीखी आलोचना। 'काँच बाँस जकाँ लचपच उमरिया' — यौवनक तुलना काँच बाँससँ — एकटा मौलिक आ सशक्त बिम्ब।

बाल कविता — 'बेटी', 'कारी-बजार', 'शब्दक खेल', 'अनहार घर मे हत्या' (भ्रूण-हत्यापर), 'जतरा', 'माय हमरा एगो बहिन आनि दे' — ई बाल कविता सामाजिक जागरूकताक संग बाल-मनोविज्ञानकेँ सेहो स्पर्श करैत अछि।

६.४ राजदेव मण्डलक कविता

राजदेव मण्डल विदेह पुरस्कार-२०१२ क विजेता छथि। हुनकर कविता — 'चिर प्रतीक्षा', 'हाथ', 'ठक', 'बलात्', 'झूठक गियान', 'इमानदारी', 'बीआ', 'उपयोग', 'द्वन्द्व', 'कुहेस', 'जानवरक बोली' — एकटा सुसंगत काव्य-दृष्टिक परिचय दैत अछि।

'जानवरक बोली' मे जानवरक मुँहसँ मनुष्यक बोली सुनब — ई Orwell क 'Animal Farm' क स्मृति दिलाबैत अछि। 'कुहेस' (कोहरा) — ई निराशा आ अन्हारक काव्य-बिम्ब थिक जे Eliot क 'The Waste Land' क 'fog' क स्मृति दिलाबैत अछि।

६.५ बाल मुकुन्द पाठकक गजल (१-१०)

दसटा गजल — मैथिली गजल-परम्परामे एकटा महत्त्वपूर्ण योगदान। विभिन्न बहरक प्रयोग आ काफिया-रदीफक सटीक व्यवस्था।

६.६ अन्य कवि

किशन कारीगर ('घोटालाबला पाइ'), अजीत मिश्र ('दीआबाती'), मयाम दरिहरे ('ओबामा ओबामा'), मिहिर झा ('विदागरी/गजल'), पंकज चौधरी ('चारिटा गजल'), बिन्देश्वर ठाकुर ('अभागलमे शुभकामना/जनकपुरक रेल्वे/एक एहनो नारी'), अमित मिश्र ('भगवती गीत/गजल'), अच्छेलाल शास्त्री ('किसानक भेल पिसान'), शम्भु सौरभ, कपिलेश्वर राउत, ओम प्रकाश, शिवनाथ यादव, हेमनारायण साहु, शिव कुमार यादव, शिव कुमार झा 'टिल्लू', नन्द विलास राय, पवन कुमार साह, रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार', बिनीता झा, शान्तिलक्ष्मी चौधरी, अंशु माला पाण्डेय, विनीत उत्पल, अनिल मल्लिक — एहि सभ कविक रचना मैथिली काव्यक विविध रंगकेँ प्रस्तुत करैत अछि।

७. नाट्य उत्सव

७.१ मुन्नी कामत: 'हत्यारा समाज' (एकांकी)

ई एकांकी सामाजिक हिंसा आ न्यायक प्रश्न उठाबैत अछि। Ibsen क 'A Doll's House' क परम्परामे जतऽ नाट्य-मंच सामाजिक आलोचनाक माध्यम बनैत अछि।

७.२ मुन्नी कामत: 'जिन्दगीक मोल' (एकांकी)

जीवनक मूल्यपर एकटा दार्शनिक प्रश्न उठाबयवाली एकांकी।

७.३ महेन्द्र मलङ्गिया: 'मूदाः श्रृंगार, संघर्ष आ द्वन्द्व'

मलङ्गिया जी मैथिलीक प्रमुख नाटककार छथि। ई लेख हुनकर नाट्य-दृष्टि आ श्रृंगारक माध्यमे संघर्षक चित्रण — ई मैथिली नाट्य-साहित्यक एकटा महत्त्वपूर्ण वैचारिक अभिव्यक्ति थिक।

७.४ गोविन्द झा: 'गाम जएबै'

ई नाटक गाम आ शहरक तनावकेँ उजागर करैत अछि।

८.१ यथार्थवाद (Realism) क परम्परा

एहि संकलनक अधिकांश कथा आ कविता यथार्थवादक परम्परामे अछि। घुसहा घर, कमलू, सुटिया, धलना, बाबाक गाछी — ई सभ Lukács क 'Realism' क परिभाषाक अनुरूप अछि जे 'सामान्यता' (Typicality) — सामान्यमे विशेषकेँ देखनाइ — पर बल दैत अछि।

८.२ स्त्रीवाद (Feminism)

मुन्नी कामत, कामिनी कामायनी, खुशबू झा, डॉ. अरुणा चौधरीक रचना स्त्रीवादी दृष्टिकोणकेँ अभिव्यक्त करैत अछि। 'साउस पुतोहु', 'बेटी', 'अनहार घर मे हत्या', 'सिया तोरे कारण' — ई रचना Simone de Beauvoir क 'The Second Sex' आ Kate Millett क 'Sexual Politics' क प्रश्नकेँ मैथिली साहित्यमे उठाबैत अछि।

८.३ दलित साहित्य

सन्दीप कुमार साफीक आत्मकथा आ 'बाबाक गाछी' जेहन कथा दलित अनुभवकेँ केन्द्रमे आनैत अछि। Ambedkar क विचार-परम्परा आ Om Prakash Valmiki क 'Joothan' जेहन दलित आत्मकथाक श्रृंखलामे साफीक कथा एकटा मूल्यवान अतिरिक्त थिक।

८.४ मार्क्सवादी सौन्दर्यशास्त्र

राजदेव मण्डल, रामविलास साहु, मुन्नी कामतक रचनामे वर्ग-चेतना स्पष्ट अछि। 'कारी-बजार', 'पाइसँ सब सम्बन्ध', 'कैंसर' — ई रचना Brecht क 'प्रतिबद्धता' (commitment) क माँग करैत अछि।

८.५ उत्तर-उपनिवेशवाद (Post-colonialism)

गजेन्द्र ठाकुरक सम्पादकीय एकटा उत्तर-उपनिवेशवादी आलोचना थिक जे मैथिली साहित्यमे सत्ता-संरचनाकेँ उजागर करैत अछि। विद्यापति-विमर्शमे जे समानान्तर परम्पराक पुनःस्थापना अछि से Homi Bhabha क 'Counter-Narrative' क अवधारणासँ मेल खाइत अछि।

८.६ अन्तःपाठता (Intertextuality) आ परम्परा

एहि संकलनमे फणीश्वरनाथ रेणु, रामभरोस कापड़ि, विद्यापति, ज्योतिरीश्वर, तत्त्वचिन्तामणिकार गङ्गेश — एहि सभक सन्दर्भ ई दर्शाबैत अछि जे मैथिली साहित्य Julia Kristeva क 'Intertextuality' क अवधारणाक जीवन्त उदाहरण थिक जतऽ प्रत्येक नव पाठ पुरान पाठक संग संवादमे अछि।

९. समग्र मूल्यांकन एवं निष्कर्ष

९.१ संकलनक शक्ति

विविधता: विहनि कथा, लघुकथा, निबन्ध, पद्य, नाटक — सभ विधाक समन्वय। भौगोलिक व्यापकता: भारत आ नेपालक मैथिली-भाषी क्षेत्रसँ रचनाकारक समावेश। जातीय विविधता: मैथिल ब्राह्मणसँ दलित धरि, सभ जातिक रचनाकार। वैचारिक विविधता: यथार्थवाद, स्त्रीवाद, दलित-चेतना, मार्क्सवाद — सभ धारा।

वैचारिक स्पष्टता: सम्पादकीयमे जाति-व्यवस्था आ साहित्यिक संस्थानक आलोचना निर्भीक आ तर्कपूर्ण अछि। ऐतिहासिक दस्तावेजीकरण: विद्यापति-विमर्श, साँझी लोककला, सगर राइत — ई सभ मैथिली संस्कृतिक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज थिक।

९.२ भविष्यक सम्भावना

ई संकलन मैथिली साहित्यक एकटा महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थिक। तकर कमजोरी जँ कोनो अछि तँ ई जे किछु लघुकथा कथा-शिल्पसँ अधिक आलेख जेकाँ लागैत अछि (जेना स्वयं सगर राइतमे अच्छेलाल शास्त्रीक कथाक बारेमे कहल गेल)। किन्तु ई एकटा जीवन्त आन्दोलनक स्वाभाविक विशेषता थिक।

डिजिटल प्रकाशन, ३७ पोथीक लोकार्पण, 'विदेह' ई-पत्रिकाक निरन्तर प्रकाशन — ई सभ मिलाकय एकटा नव मैथिली साहित्यिक पारिस्थितिकी (Literary Ecosystem) निर्मित कऽ रहल अछि जे पारम्परिक संस्थाक एकाधिकारकेँ चुनौती दैत अछि।

९.३ अन्तिम टिप्पणी

विदेह सदेह-१३ केवल एकटा साहित्यिक संकलन नहि थिक — ई एकटा सांस्कृतिक घोषणापत्र थिक। ई घोषणा करैत अछि जे मैथिली साहित्य आब केवल

मैथिल ब्राह्मणक सम्पत्ति नहि थिक, जे विद्यापति केवल जनेऊ-पाग वाला नहि छथि, जे मैथिलीमे दलित आत्मकथा सेहो हेतैक, स्त्री-प्रश्न सेहो उठत, आ जाति-आधारित साहित्यिक संस्थाक जवाब सेहो देल जेतैक।

'मानुषीमिह संस्कृताम्' — मनुष्यकेँ संस्कृत करू, अर्थात मनुष्यकेँ सभ्य आ शिक्षित करू — ई आदर्श एहि संकलनक प्रत्येक रचनामे कोनो न कोनो रूपमे उपस्थित अछि।

विश्व साहित्यक दृष्टिसँ ई संकलन ओहि वैश्विक प्रवाहक हिस्सा थिक जतऽ 'विश्व साहित्य' (World Literature) क अवधारणामे हाशियेक आवाज केन्द्रमे आबि रहल अछि। मैथिली जेहन भाषा जिनका विश्व-स्तरपर कम जानल जाइत अछि, तकर ई संकलन ई प्रमाण थिक जे साहित्यिक श्रेष्ठता कोनो एक परम्पराक बपौती नहि थिक।

— समीक्षकक ओरसँ

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह सदेह-१३: सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा — भारतीय एवं विश्व साहित्यिक सिद्धान्तक आलोकमे

अध्याय 10 · विदेह सदेह-१४ — अंक १२१-१३२ | ISSN 2229-547X | सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर

सारांश समानान्तर मैथिली साहित्य इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे — भारतीय आ विश्व साहित्यिक सिद्धान्तसँ सम्पूर्ण समीक्षा खण्ड १: गद्य खण्ड

— नाटक, विहनि कथा, उपन्यास, निबन्ध, समालोचना चारि सैद्धान्तिक धुरी: १. गजेन्द्र ठाकुर — सम्पादकीय: २०१२ आ मैथिली भाषा-

साहित्य विदेह सदेह-१४ विदेह ई-पत्रिकाक अंक १२१-१३२ सँ संकलित अछि। एहि विशाल संकलनमे गद्य खण्ड (पृ. १-३७२) आ पद्य खण्ड

(पृ. ३७३-७३६) — दुनू मिलाकऽ ७३६ पृष्ठक एकटा समृद्ध संग्रह अछि। सम्पादकीयमे गजेन्द्र ठाकुर एकाधिक महत्त्वपूर्ण प्रश्नपर विस्तृत

विमर्श करैत छथि: १.१ नाटक 'गंगा पिज' — रचनात्मक पुष्टिभूमि सम्पादक 'गंगा पिज' नाटकक संदर्भमे लिखैत छथि जे अंग्रेजी

शासनकालक पुल आ स्वतन्त्र भारतक पुलक बीचक अन्तर — भ्रष्टाचारक उपस्थिति — आइयो प्रासंगिक अछि।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · रस-सिद्धान्त · भाषा-विमर्श · नाटक · कथा · विहनि कथा · इतिहास

समानान्तर मैथिली साहित्य इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे — भारतीय आ विश्व साहित्यिक सिद्धान्तसँ सम्पूर्ण समीक्षा

खण्ड १: गद्य खण्ड — नाटक, विहनि कथा, उपन्यास, निबन्ध, समालोचना

चारि सैद्धान्तिक धुरी:

१. गजेन्द्र ठाकुर — सम्पादकीय: २०१२ आ मैथिली भाषा-साहित्य

विदेह सदेह-१४ विदेह ई-पत्रिकाक अंक १२१-१३२ सँ संकलित अछि। संस्करण: २०१३ आ २०२२। एहि विशाल संकलनमे गद्य खण्ड (पृ. १-३७२) आ पद्य खण्ड (पृ. ३७३-७३६) — दुनू मिलाकऽ ७३६ पृष्ठक एकटा समृद्ध संग्रह अछि।

सम्पादकीयमे गजेन्द्र ठाकुर एकाधिक महत्त्वपूर्ण प्रश्नपर विस्तृत विमर्श करैत छथि:

१.१ नाटक 'गंगा पिज' — रचनात्मक पुष्टिभूमि

सम्पादक 'गंगा पिज' नाटकक संदर्भमे लिखैत छथि जे अंग्रेजी शासनकालक पुल आ स्वतन्त्र भारतक पुलक बीचक अन्तर — भ्रष्टाचारक उपस्थिति — आइयो प्रासंगिक अछि। ई नाटक एकटा ऐतिहासिक-राजनीतिक रूपक थिक जाहिमे विकास-परियोजना, सत्ता, ईमानदारी आ जन-साधारणक बीचक संघर्ष चित्रित अछि।

रस-ध्वनि दृष्टिसँ: नाटकमे रौद्र रस (भ्रष्टाचारक विरुद्ध क्रोध), करुण रस (इमानदार अभियन्ताक दुर्दशा), आ वीर रस (जनसाधारणक प्रतिरोध) — तीनूक क्रमिक उपस्थिति। आनन्दवर्धनक ध्वनि सिद्धान्त — 'गंगा पिज' शीर्षकमे ही व्यञ्जना — गंगाक पवित्रता आ भ्रष्ट निर्माणक अपवित्रताक विरोधाभास।

पाश्चात्य दृष्टिसँ: यूनानी नाट्यशास्त्रक 'hamartia' (नायकक त्रुटि) — एहि नाटकमे एहि त्रुटि व्यक्तिक नहि, व्यवस्थाक। बर्टोल्ट ब्रेख्तक सामाजिक नाटकक परम्परा — 'epic theatre' — जाहिमे दर्शक आलोचनात्मक दूरी राखैत अछि। कार्ल माक्सक अधिरचना-सिद्धान्त — राजकीय संस्था (सरकार, ठीकेदार, अभियन्ता) आर्थिक हितक साधन बनैत अछि।

नव्य-न्याय दृष्टिसँ: 'गंगा पिज' नाटकमे 'व्याप्ति' — जतय भ्रष्टाचार अछि ओतय पुल कमजोर होइत अछि — एहि सार्वभौमिक तर्कक empirical demonstration। नाटककार एहि तर्ककें 'pratyaksha pramana' (प्रत्यक्ष प्रमाण) द्वारा — ढोलहो देनहारक घोषणा, मजदूरक काज, अभियन्ताक ईमानदारी — सिद्ध करैत छथि।

विदेह ढाँचासँ: 'गंगा पिज' विदेहक 'parallel canonical drama' थिक — एहि नाटकमे Mithila क शोषित मजदूर (बच्चा ३, जे बादमे मजदूर बनैत अछि), ईमानदार अभियन्ता, आ भ्रष्ट व्यवस्था — तीनूक संघर्षमे विदेहक democratic aesthetic क प्रतिबिम्ब।

१.२ पागक राजनीति आ विद्यापतिक दुई विद्यापति

सम्पादक पुनः विद्यापतिपर मिथिला सांस्कृतिक परिषदक 'यज्ञोपवीत संस्कार' षड्यन्त्रकें उजागर करैत छथि। 'पाग पहिरा कऽ ब्राह्मण बना देबाक कुकृत्य' — ई शब्दावलीमे सम्पादकक वैचारिक स्थिति स्पष्ट अछि। ज्योतिरीश्वरपूर्व विद्यापति (सर्वहाराक कवि) आ संस्कृत-अवहट्ठ विद्यापति (ब्राह्मणवादी) — दू पृथक् व्यक्ति — एहि थिसिसपर सम्पादक ऐतिहासिक प्रमाण दैत छथि।

नव्य-न्याय दृष्टिसँ: 'अन्वय-व्यतिरेक' — ज्योतिरीश्वरपूर्व पदावलीमे सर्वहाराक उल्लास अछि, संस्कृत आ अवहट्ठमे नहि — ई negative evidence द्वारा दूनू भिन्न कविक anumana।

१.३ टैगोर साहित्य पुरस्कार आ मैथिलीक प्रतिनिधित्व

साहित्य अकादेमीमे Tagore Literature Award मैथिलीकें नहि भेटबाक प्रकरण। सम्पादक एहि अन्यायक दस्तावेजीकरण करैत छथि। पाश्चात्य दृष्टिसँ: Pierre Bourdieu क 'cultural field' — जाहिमे canonical legitimacy शक्ति-केन्द्रसँ निर्मित होइत अछि, योग्यतासँ नहि।

१.४ मैथिलीमे गजल: 'काविया' आन्दोलनक समीक्षा

सम्पादक आशीष अनचिन्हारक 'काविया' गजल-सिद्धान्त ग्रन्थक आधारपर मैथिली गजलक prosodic foundation discuss करैत छथि। भक्ति गजल आ भविष्यक सम्भावना।

१.५ BPSC विवाद आ मैथिलीक वितरण

बिहार सरकार द्वारा मैथिली, भोजपुरी, अंगिका, बज्जिका — चारूकें प्रारम्भिक स्तरपर पढ़ाइक 'माध्यम' मानब — एहिसँ मैथिलीक क्षेत्र-आधार कमजोर पड़ैत अछि। 'जगत जननी माता सीताक भाषा मैथिलीपर तलवार चलि गेल' — नवेन्दु कुमार झाक आलेखसँ।

———

२. गजेन्द्र ठाकुर — 'गंगा पिज': सम्पूर्ण नाट्य-समीक्षा

'गंगा पिज' (गंगा ब्रिज) — आठ पल्लवमे विभक्त एकटा महत्त्वपूर्ण मैथिली नाटक। पात्र-परिचय: बच्चा १ (जे इञ्जीनियर बनैत अछि), बच्चा २ (इञ्जीनियरक मित्र, बादमे 'मुख्य अभियन्ता' बनैत अछि), बच्चा ३ (जे मजदूर बनैत अछि), मुख्यमन्त्री, मुख्य अभियन्ता, दूटा लोक (जे डंका बजाबैत अछि), ढोलहो देनहार, मजदूर, इञ्जीनियरक पत्नी, ठीकेदार।

३. जगदानन्द झा 'मनु' — दशटा विहनि कथाक समीक्षा

मनुजीक दशटा विहनि कथा — वसियतनामा, बुढ़ारीक डर, जादूक छड़ी, नेनाक सनेस, बाबाक हाथी, जुग-जुग जीबए, समय चक्र, आस्था, तरेगन, गारेन्टी।

३.१ वसियतनामा

सु० (नाम अधूरा छोड़ल गेल — एकटा literary device) — एकटा स्त्री जे बुढ़ पतिक सेवा करैत अछि। ओकर भाइ बुझाइत अछि 'दीदीसँ पैघ पतिव्रता आइकें दुनियाँमे किओ नहि होएत।' मुदा सु० अपन मनक सत्य कहैत अछि — 'ओ अपन वसियतनामा बनओने छथि जकर हिसाबे हुनक सम्पत्तिक मालिक हुनक बेटा होएत... जखन हमरा एकगो संतान भऽ जाएत तखन हम सेवा छोड़ि देब।'

रस-दृष्टि: करुण रस — एकटा स्त्रीक भावनात्मक बन्धन — जे प्रेम नहि, आर्थिक-सामाजिक बाध्यता थिक। नव्य-न्याय — 'anumana' — भाइक प्रत्यक्ष अवलोकनसँ गलत निष्कर्ष; सु०क स्व-कथनमे सत्य। पाश्चात्य — Simone de Beauvoir क 'immanence vs. transcendence' — स्त्री जे स्वयं चुनबाक स्वतन्त्रता नहि पाबैत अछि।

३.२ बुढ़ारीक डर

एकटा बच्चा — 'माए, बाबीकें हमरा सभ संगे भोजन किएक नहि दैत छियनि?' माए कहैत अछि बाबी घरसँ निकलऽ नहि सकैत छथि। मुदा बच्चा देखलक — 'बाबी तँ दिन कए बारियोसँ घूमि कऽ आबि जाइत छथि।' बच्चाक प्रश्नपर माए निरुत्तर। अगिला दिनसँ बाबीक भोजन सभक संगे।

पाश्चात्य — Wordsworth क 'the child is the father of man' — बच्चाक निर्मल दृष्टि वयस्कक moral blindness कें expose करैत अछि। नव्य-न्याय — बच्चाक pratyaksha (direct observation) माएक anumana सँ शक्तिशाली।

३.३ जादूक छड़ी

चुनाव प्रचारक सभामे नेताजी — 'एहि बेर पुनः अपन धरतीक एहि लालकें वोट दऽ कऽ जिता दिअ... देखू चमत्कार।' एकटा जादूक छड़ी दिखाबैत — जादूसँ सब समस्या दूर हेतनि कहैत। मुदा 'जादू' काज नहि करैत — नेता कहैत अछि — 'जादू जखन काज नहि करए तँ बुझबाक चाही जे दर्शकमे श्रद्धाक कमी।' हँसी-ठहक्काक बीच पदा खसैत अछि।

कुन्तकक वक्रोक्ति — नाटकीय 'जादू' राजनीतिक 'जादू'क उत्कृष्ट व्यञ्जना। Jonathan Swift क satirical tradition — absurdity द्वारा political critique।

३.४ नेनाक सनेस

एकटा बच्चाक आँखिसँ घरक situation देखल। माए-बाबूक झगड़ा, घरक तनाव — मुदा बच्चाक मासूम 'सनेस' (सन्देश) — जे घर एकटा सुखी परिवारक होए — एहिमे Tolstoy क 'Family Happiness' कथाक मैथिली parallel।

३.५ बाबाक हाथी

एकटा प्रेरक बाल कथा — दादाजी बच्चाकें हाथीक कथा सुनबैत छथि जाहिमे सीख अछि। Aesop क fable tradition मे।

३.६ जुग-जुग जीबए

आयु आ जीवनक चक्र — दीर्घ जीवनक कामना किन्तु ओकर अर्थ की? दार्शनिक विहनि कथा। Rabindranath Tagore क 'life questions'।

३.७ समय चक्र

समयक गति — पीढ़ीसँ पीढ़ी। 'हम किओ रहबनि नहि, समय चलैत रहत।' Buddhist impermanence (anicca) क मैथिली expression।

३.८ आस्था

विश्वासक शक्ति — एकटा साधारण मनुष्यक अदम्य आस्था। भक्ति रसक विहनि कथामे अभिव्यक्ति।

३.९ तरेगन

'तरेगन' (तारागण) — एकटा प्रतीकात्मक कथा जाहिमे आकाशक तारे परिवारक सदस्यक रूपक। Magical realism क तत्त्व — García Márquez परम्परामे।

३.१० गारेन्टी

एकटा व्यंग्य-कथा। समाजमे 'गारेन्टी' (guarantee) — कोन चीजक गारेन्टी देल जा सकैत अछि? ईमानदारीक नहि, पैसाक। Swift-ian irony।

मनुजीक दशों कथाक समग्र मूल्यांकन: ई विहनि कथाएँ मैथिली 'बीहनि कथा' विधाक लोकतान्त्रिक character demonstrate करैत अछि। प्रत्येक कथामे एकटा philosophical argument अछि जे गङ्गेशक 'anumana' पद्धतिसँ — परिस्थितिसँ निष्कर्ष — निर्मित। विदेह ढाँचासँ — मनु मैथिलीक सर्वाधिक विपुल democratic लेखक छथि।

— — —

४. जगदीश प्रसाद मण्डल — 'पटियाबला' लघुकथा-शृंखला

जगदीश प्रसाद मण्डल — Sahitya Akademi Tagore Literature Award विजेता, Videha Samman विजेता — 'पटियाबला' शीर्षकसँ एकटा लघुकथा-शृंखला। 'पटिया' (Patiabala — एकटा कारीगर जे बिछौन बुनैत अछि) — एहि शृंखलामे Sulaiman (एकटा मुसलमान कारीगर) आ Kayam Sundar (एकटा मैथिल) — दुनूक बीचक संवाद।

४.१ सुलेमानक जीवन-कथा

Sulaiman — एकटा aged Muslim textile worker। 'माय, माए-बापक बड़ दुलारू बेटा छेलिऐ। खाइ-पीबैक कोनो दुखतकलीफ परिवारमे नहि रहए।' ओकर परिवारक कपड़ा-व्यवसाय — जाति-भेद रहित श्रम। मुदा — 'गाम-गामक बाबू-भैया सभ गरीबक कारखाना उजाड़ि देलक। खादी भण्डारकें लूटि लेलक।'

मुम्बईमे चारि साल — 'जेतेक करब तेतेक हेतै। जुआन-जहान रहबे करी।' मुदा 'पाँचमसाल बिहारी-मराठीक हल्ला उठल। हल्ले नहि उठल — कतेककें जान गेल, कतेककें बहु-बेटी छिनाएल।' जान बचा वापस।

रस-ध्वनि दृष्टिसँ: करुण रस — एकटा परिवारक क्रमिक विध्वंस — जातीय हिंसा, आर्थिक शोषण, प्रवासी श्रमिकक दुर्दशा। आनन्दवर्धनक ध्वनि — Sulaiman क कथा मात्र एक व्यक्तिक नहि — सम्पूर्ण उपेक्षित वर्गक dhvani।

पाश्चात्य दृष्टिसँ: Charles Dickens क social realism — Hard Times मे industrial workers क दुर्दशा। Maxim Gorky क proletarian literature। Frantz Fanon क 'The Wretched of the Earth' — श्रमिकक dignity आ राज्यक हिंसा।

नव्य-न्याय दृष्टिसँ: Kayam Sundar क प्रश्न-शृंखला — 'काजक ओकावत तँ देखए पड़त किने' — एकटा systematic empirical inquiry। Sulaiman क उत्तर — 'pratyaksha pramana' (प्रत्यक्ष साक्षी-विवरण) — Gangesa क epistemology मे testimony-based knowledge।

विदेह ढाँचासँ: Jagdish Prasad Mandal — Dalit-Mandal परम्पराक सर्वश्रेष्ठ लेखक — एहि कथामे Hindu-Muslim communal space कें एकहि श्रमिक-मानवतामे dissolve करैत छथि। ई विदेहक inter-community literary space क उत्तम उदाहरण।

— — —

५. बिन्देश्वर ठाकुर (नेपाल) — लघुकथा शृंखला

बिन्देश्वर ठाकुर — धनुषा, नेपाल; हाल कतार — एकटा अनिवासी मैथिल लेखक। हुनकर छओटा लघुकथा: टेनामेनी, दुभाग्य, घुसखोर, छुआछुत, प्रेम-पत्र, भूखाएल जानवर सभ बिपतियाक विदेश।

५.१ टेनामेनी

कारखानामे मजदूर आ प्रबन्धकक बीचक संवाद। 'हम मेहनती आ ईमानदार ने नहि, जवानक सेहो पक्का छी। अपन हक लेने बिना हरगिज नहि जाएब।' मुदा अगिला दिन — फायरिंग लेटर एलैक। ई 'टेनामेनी' (Tiananmen) — शब्दक व्यंग्यात्मक प्रयोग। Karl Marx क 'labour rights' — शोषणक विरुद्ध संघर्ष।

५.२ दुभाग्य

बहिनक विवाहमे पतिसँ बिछड़ल सोनापारी — ओकर 'मन भरल बेदना'। Labour migration क domestic tragedy। Chekhov क 'The Lady with the Dog' k parallel — loneliness आ social isolation।

५.३ घुसखोर

पासपोर्ट कार्यालयमे। CDO — जे विदेशी कमाइवाला लोककें तुरन्त पासपोर्ट दैत अछि (घूस लऽ कऽ) — ओ गरीबकें कहैत अछि 'चाह पान खियाबऽ पड़तौ।' एकटा devastating observation — corruption institutionalized अछि। Kafka क bureaucratic absurdism।

५.४ छुआछुत

'रौ छौंड़ा, तोरा आँखिमे खरक्षाउर देने हो? देखऽ नहि छही जे हम पानि भरैत छी? मछरुआ कहि कऽ पानियो छुआ देलक हमर।' — बुढ़ियाक प्रतिक्रिया। छौड़ा बकुआ कऽ ठाढ़ रहि जाइत अछि। ई Maithil society क untouchability क direct witness। B.R. Ambedkar क 'Annihilation of Caste' — एहि लघुकथामे एकटा instance।

५.५ प्रेम-पत्र

प्रवासी पतिक पत्र — 'हम मात्र शरीर छी जकर आत्मा अहाँ छी। जौं श्वास लेबाक फोकसो हम छी तखन ऑक्सीजन तँ अहाँ छी।' भावनात्मक भाषाक उत्कर्ष। Maithili epistolary tradition क नव उदाहरण।

५.६ भूखाएल जानवर सभ बिपतियाक विदेश

कतारमे श्रमिकक दुर्दशा — 'भूखाएल जानवर' metaphor। 'स्वतन्त्र देश। स्वतन्त्र स्कूल। स्वतन्त्र कॉलेज।' — एहि irony मे swadesh-videsh gap। Frantz Fanon क colonial subject — अपन देशमे भी 'विदेशी' जेकाँ।

बिन्देश्वर ठाकुरक लघुकथाएँ Nepal-Mithila, Middle East migrant workers, आ Maithil समाजक caste-based discrimination — तीनू dimension एक साथ document करैत अछि। ई transnational Maithili literature क उत्तम उदाहरण।

— — —

६. सत्यनारायण झा — 'भोला' आ 'स्मरण' विहनि कथा

६.१ भोला

बेरक नं. ९ आ कैदी नं. ९ — भोला एकटा दुदान्त कैदी। आजीवन कारावास। जेलरसाहेब कहैत छथि — 'तोहर चरित्र आ काज देखि सरकार निर्णय लेलक जे तोरा आठ बरख पहिने रिहाइ देल जेतह।' मुदा भोलाक चेहरापर कोनो भाव नहि। ओ सोचैत अछि — 'एकटा छोट गलती हमरा कत पहुँचा देलक... मुखियाजीसँ कोटाक अन्न लेबऽ गेल रही... हुनकर बेइमानी देखि नहि रहल भेल... अपमानक ज्वालामे धधकि उठलौं।'

रस-दृष्टि: करुण रस — एकटा व्यक्तिक अन्याय-जनित विद्रोह आ तकर परिणाम। नव्य-न्याय — 'anumana' द्वारा भोलाक moral trajectory — न्यायक अभावसँ अन्यायक जन्म। पाश्चात्य — Victor Hugo क Les Misérables — Jean Valjean क parallel।

६.२ स्मरण

अतीतक स्मरण — एकटा nostalgic कथा जाहिमे बीतल काल आ वर्तमानक बीचक खाइ। Marcel Proust क involuntary memory — 'à la recherche du temps perdu।'

— — —

७. शिव कुमार झा 'टिल्लू' — 'द्विरागमन' आ 'सबल समाजक अहर्निशि पर सकारात्मक प्रहार'

७.१ द्विरागमन

'द्विरागमन' — विवाहक एकटा दूसर चरण जे मैथिल परम्परामे मुख्य विवाहक बाद होइत अछि। एहि कथामे नव-विवाहित दम्पती आ परम्पराक बीचक अन्तर्द्वन्द्व। Goffmanक 'impression management' — ritual context मे identity performance।

७.२ सबल समाजक अहर्निश पर सकारात्मक प्रहार

एकटा समाज-सुधारक आलेख/कथा। एहिमे शिव कुमार झा caste discrimination, gender inequality आ economic exploitation — तीनूपर एकसाथ प्रहार करैत छथि। Ambedkarite consciousness।

— — —

८. अमित मिश्र — पाँच कथा: 'हारल विजेता', 'दरमाहा', 'हँसी', 'अधिकार', 'भूख'

८.१ हारल विजेता

प्रतिस्पर्धामे हारल Rohit — आत्महत्याक विचार करैत अछि। 'चिट्ठी चाचा' (Mitra) — एकटा पत्रद्वारा Rohit कें जीवनक दिशा देखबैत अछि। 'ई हार तोहर हार नहि छलौ। ई हार तँ ओ पैरवी बलाकें हार छलै।' — nepotism कें नहि, honest merit कें जिताएब एकर लक्ष्य।

रस-दृष्टि: करुण रस (Rohit क despair) → वीर रस (Mitra क mentorship) → शान्त रस (Rohit क resolution)। पाश्चात्य — 'Bildungsroman' tradition — individual k moral growth through crisis। Existentialism — Camus क 'The Myth of Sisyphus' — 'एकटा नव उजा संग ठाढ़ हो।'

नव्य-न्याय — 'shabda pramana' (verbal testimony) — चिट्ठीमे Mitra क words प्रमाण बनैत अछि। विदेह ढाँचासँ — युवा लेखक अमित मिश्र विदेहक 'discovery mandate' क प्रमाण — नव प्रतिभाकें space।

८.२ दरमाहा

Anubandha (contract) पर काज करएवाला व्यक्ति — सरकारी दरमाहा नहि भेटलैक, मुदा 'जनताक दरमाहामे कोनो कमी नहि।' ई irony — घूस कें 'जनताक दरमाहा' कहनाइ — Swift-ian satire।

८.३ हँसी

पत्नी रूसि जाइत अछि — 'सभक पति अपन पत्नीकें सिनेमा-सर्कस घुमाबैत अछि आ अहाँ दिन-रात दर्शनो नहि दैत छी।' पति उत्तर दैत अछि — 'असलमे अहाँक हँसी किनबाक लेल घरसँ बाहर रहैत छी।' — विरोधाभासी प्रेम-भाषा। O. Henry style surprise ending।

८.४ अधिकार

काम करएवाला श्रमिकक 'अधिकार' — 'जहिना हमर अधिकार अछि जे काज केलाक बाद अहाँसँ पाइ लेब, तहिना भारत माता आ संविधानक अधिकार लेबैये पड़त।' — ई worker's rights assertion। Labour rights discourse।

८.५ भूख

'ओ पगली छलैक। पच्चीस-छब्बीस वर्षक भरल-पूरल देह मुदा दिमाग घसकल।' रेलवे स्टेशनपर भटकैत। अखबारमे खबर — 'रातिकें किओ ओहि पगली संग बलात्कार कऽ ओकर घेंट चापि देने छलैक।' — 'की वासनाक भूख एते ताकतबर होइत अछि जे जाति-पाति, धर्म-करम आ मनुखक स्थिति धरि नहि देखैत अछि?'

रस-दृष्टि: बीभत्स आ करुण रसक सम्मिलन। पाश्चात्य — Virginia Woolf क mental illness portraiture। Toni Morrison क violated women। गङ्गेशक नव्य-न्याय — प्रश्नक रूपमे तर्क — 'की वासनाक भूख...' — ई philosophical inquiry एकटा empirical horror सँ उत्पन्न।

— — —

९. जवाहर लाल कश्यप — 'सीता' विहनि कथा

'माह! की सुखद संयोग अछि, विवाहक नवम वर्षमे मिथिलेश मिसरकें एकटा बेटी भेलनि आ ओहो जानकी नवमीक दिन।' नामकरणक दिन — अधिकांश लोक 'सीता' नाम राखल जाए कहलनि। मुदा बच्चाक माए सुनयना देवी सहमत नहि भेलीह। 'किएक, सीता नाम मे दिक्कत अछि?' — 'हम नहि चाहैत छी जे हमर बेटीक नाम एहन स्त्रीक नाम पर राखल जाए जे अपना संग भेल अन्याय प्रतिकार नहि कऽ सकलीह।'

रस-दृष्टि: रौद्र रस — एकटा आधुनिक माएक feminist anger। वक्रोक्ति — सीता नाम जे सम्मानक प्रतीक मानल जाइत अछि, ओकरामे ही अन्यायक धारणा।

पाश्चात्य दृष्टिसँ: Adrienne Richक 'Re-Vision' — mythological figures कें feminist दृष्टिसँ re-read करनाइ। ई कथा Maithili feminist consciousness क एकटा landmark moment थिक।

विदेह ढाँचासँ: ई कथा विदेहक 'parallel history' mission मे अछि — canonical tradition (Sita as ideal) कें challenge करनाइ। एहि कथाक अर्थ विस्तृत अछि — Maithili literature मे Sita की पुनर्व्याख्या।

— — —

१०. प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना खण्ड

१०.१ नवेन्दु कुमार झा — 'गाममे विज्ञान' / 'बाँटल गेल मैथिली: बरत मिथिला'

मानस बिहारी — एकटा मैथिल वैज्ञानिक जे ग्रामीण क्षेत्रमे mobile science laboratory लऽ जाइत छथि। पूर्व राष्ट्रपति कलामसँ भेंट।

'बाँटल गेल मैथिली' — नीतीश सरकारक निर्णय जे Maithili, Bhojpuri, Angika, Bajjika — चारूकें प्रारम्भिक स्तरपर 'माध्यम' बनाओल जाए। एहिसँ मैथिलीक क्षेत्र-आधार fragmentate होइत अछि। 'जगत जननी माता सीताक भाषा मैथिलीपर तलवार चलि गेल।' ई political analysis — language policy as cultural politics।

विदेह ढाँचासँ: एहि आलेखमे मैथिलीक भाषाई अधिकारक documentation — Habermas क 'public sphere' — जाहिमे language policy पर rational discourse। गङ्गेशक नव्य-न्याय — 'व्याप्ति' — जतय language fragmentation अछि ओतय community identity fragmentation 'अछि' — एहि empirical pattern।

१०.२ रमेश रञ्जन — 'मैथिली बाल नाटक सीमा विस्तार करैत — चौआढ़'

बाल नाटकक परम्परापर विमर्श। 'चौआढ़' बाल नाटक — Maithili children's theatre k नव दिशा।

१०.३ प्रसुन सिंह — 'नारीक चरित्र सभसँ रंगल कथासंग्रह जिद्दी'

सुजीत कुमार झाक 'जिद्दी' कथासंग्रहपर एकटा और समीक्षा। स्त्री-चरित्रक विविधता — feminist reading।

१०.४ ओम प्रकाश झा — 'गजलक लेल' (समीक्षा)

मैथिली गजल-आन्दोलनक समग्र समीक्षा — Videha मे प्रकाशित गजलक technical आ literary मूल्यांकन। 'Anchinhar Formula' क प्रयोग।

१०.५ विनीत उत्पल — राजकुमार झासँ अन्तर्वार्ता

'हम आहिर रही तइसँ प्रैक्टिस खूब केलौं' — राजकुमार झाक जीवन-दर्शन। मैथिली लोकगायनक परम्परा। Interview form मे oral history।

१०.६ उमेश मण्डल — विदेह नाट्य उत्सव-२०१३ / राजदेव मण्डलसँ साक्षात्कार

विदेह नाट्य उत्सव-२०१३ — ७ एकांकी: सतमाए, गंगा पिज, जट-जटीन, जजाति, ऊँच-नीच, साइकिलक पाय। राजदेव मण्डलसँ बिस्तृत साक्षात्कार — जाहिमे ओ अपन काव्य-दर्शन स्पष्ट करैत छथि।

विदेह ढाँचासँ: 'विदेह नाट्य उत्सव' — counter-canonical theatre space — जाहिमे जगदीश प्रसाद मण्डल, बेचन ठाकुर, गजेन्द्र ठाकुर — सभ एकहि मंचपर। ई democratic theatre ecology।

१०.७ आशीष अनचिन्हार — 'भक्ति गजल' / 'भविष्य'

आशीष अनचिन्हार — मैथिली गजल-सिद्धान्तक प्रमुख स्थापयिता — एहि संकलनमे भक्ति गजल आ 'भविष्य' निबन्ध।

१०.८ मुन्नी कामत — 'पाँत-पातसँ बनल परिवार'

एकटा विस्तृत गद्य-रचना जाहिमे मैथिल परिवारक ताना-बाना, पंक्तिबद्ध जीवन-क्रम।

१०.९ शारदानन्द दास 'परिमल' — 'राजनन्दनक आत्मालाप'

एकटा dramatic monologue — राजनन्दन (एकटा काल्पनिक पात्र) अपन जीवनक उलटबासी सुनाबैत अछि।

१०.१० कामिनी कामायनी — 'घुइर ताकू' / 'माटीक मुरुत'

'घुइर ताकू' (पलटि देखू) — एकटा philosophical आह्वान। 'माटीक मुरुत' (मिट्टीक मूर्ति) — कलाक माध्यमसँ अस्तित्व-बोध। Existentialist themes।

१०.११ कैलास दास — 'ममता'

Maternal love क विविध रूप — एकटा longform prose। Vatsalya rasa।

———

११. डॉ. शम्भु कुमार सिंह — 'पाखलो': कोंकणी उपन्यासक मैथिली अनुवाद

तुकाराम रामा शेट रचित मूल कोंकणी उपन्यास 'पाखलो' — डॉ. शम्भु कुमार सिंहक मैथिली अनुवाद। पृ. २५९-३६३ — विदेह सदेह-१४क सर्वाधिक दीर्घ रचना।

११.१ उपन्यासक कथा-वस्तु

'पाखलो' — एकटा ड्राइवर — Goa क coastal/tribal community मे। रजनी (एकटा स्त्री) आ पाखलोक भावनात्मक बन्धन — जे platonic रहैत अछि — मुदा समाज ओहिपर 'illicit' लेबल लगाबैत अछि। रजनीक पतिक द्वारा आरोप — 'ओकर बेटी अहींक जनमल।' — पाखलोकें घरसँ निकालि देल जाइत अछि। ट्रकक दुर्घटना — बचि जाइत अछि — मुदा मानसिक आघात इतेक गहन जे धीरे-धीरे पागल भऽ जाइत अछि। गामक लोक ओकरा 'भूत' बुझऽ लागैत अछि।

११.४ अनुवादक योगदान

डॉ. शम्भु कुमार सिंहक अनुवाद — कोंकणीक coastal idiom कें मैथिलीक Maithil rural idiom मे translate करबाक challenges। Walter Benjamin क 'Task of the Translator' — ई अनुवाद दुइ marginal literatures कें जोड़बाक प्रयास।

विदेह ढाँचासँ: विदेह एकमात्र Maithili platform थिक जे Konkani → Maithili translation publish करैत अछि। ई trans-regional literary democracy थिक। 'Paakhlo' कें Maithili मे translate कएलापर Goa क tribal-coastal community आ Mithila k agricultural community — दुनूक shared humanity visible होइत अछि।

११.५ अशोक मनभुटकर — 'हर एक लोक आ माटिक कथा'

'पाखलो' उपन्यासपर Ashok Manhutkar क आलेख — ई उपन्यास मात्र पाखलोक कथा नहि थिक। एकटा माटिक कथा थिक। एहि observation मे एकटा universal claim — human beings जखन अपन community, culture, आ dignity सँ विच्छिन्न होइत अछि, पाखलोक उदय होइत अछि। केवल वातावरण ओ सन्दर्भ बदलि जाइत अछि, मूल भावना रहैत अछि — विठू बनिकऽ जीबाक।

———

१२. खण्ड १ क संश्लेषणात्मक मूल्यांकन

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह सदेह-१४ — अंक १२१-१३२ | ISSN 2229-547X | सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर

अध्याय 11 · विदेह सदेह-२०: विस्तृत मैथिली साहित्यिक समीक्षा — स्रोत: विदेह ई-पत्रिका अंक २१७-२५० | सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर | ISSN 2229-547X VIDEHA

सारांश २. गद्य खण्ड: सम्पूर्ण लेखक-समीक्षा २.१ गजेन्द्र ठाकुर — मैथिली सी.डी. एल्बम आ बाल सी.डी. अभाव ई लेख मैथिलीक सांगीतिक (म्युजिकल, अर्थात् संगीत-सम्बन्धी) विरासत (हेरिटेज, अर्थात् धरोहर) केँ दस्तावेज (डॉक्युमेन्ट, अर्थात् प्रमाण) करैत अछि। धनीराम महतोक सल्हेश-गायन जे दरभंगा रेडियो स्टेशनक आर्काइव (अर्थात् संग्रह-भण्डार) सँ सेहो अनुपलब्ध भऽ गेल, तकर उल्लेख पीड़ादायक अछि। मैथिलीमे बाल सी.डी. एल्बमक सर्वथा अभाव — ई मात्र सूचना नहि, सांस्कृतिक चेतावनी (कल्चरल वार्निंग, अर्थात् संस्कृतिक खतराक संकेत) थिक।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · बाल-साहित्य · आलोचना · सांस्कृतिक अध्ययन

२. गद्य खण्ड: सम्पूर्ण लेखक-समीक्षा

२.१ गजेन्द्र ठाकुर — मैथिली सी.डी. एल्बम आ बाल सी.डी. अभाव

ई लेख मैथिलीक सांगीतिक (म्युजिकल, अर्थात् संगीत-सम्बन्धी) विरासत (हेरिटेज, अर्थात् धरोहर) केँ दस्तावेज (डॉक्युमेन्ट, अर्थात् प्रमाण) करैत अछि। धनीराम महतोक सल्हेश-गायन जे दरभंगा रेडियो स्टेशनक आर्काइव (अर्थात् संग्रह-भण्डार) सँ सेहो अनुपलब्ध भऽ गेल, तकर उल्लेख पीड़ादायक अछि। मैथिलीमे बाल सी.डी. एल्बमक सर्वथा अभाव — ई मात्र सूचना नहि, सांस्कृतिक चेतावनी (कल्चरल वार्निंग, अर्थात् संस्कृतिक खतराक संकेत) थिक।

२.२ दिनेश यादव — नेपालमे मैथिली गीत-संगीतक अवस्था

नेपालक मिथिला क्षेत्रक सांगीतिक परिदृश्य (लैन्डस्केप, अर्थात् समग्र स्थिति) केर तलस्पर्शी (इन-डेप्थ) विश्लेषण। गुरुदेव कामत, मुरलीधर, उदितनारायण झाक योगदान रेखाङ्कित (हाइलाइट, अर्थात् प्रमुखतासँ उल्लेख) करैत 'कार्टेलिङ' (cartel-ing, अर्थात् संगठित एकाधिकारवादी गुटबन्दी) आ 'सिन्डीकेट प्रथा' (syndicate, अर्थात् स्वार्थी समूहक एकाधिकार) पर जोरदार प्रहार। लेखक एफएम, रेकर्डिङ स्टुडियो आदि आधुनिक माध्यमसँ मैथिली गीतपर पड़ैत दबावकेँ सेहो चिन्हैत छथि।

२.३ प्रदीप पुष्प — 'सिनेहिया' एल्बम समीक्षा

कुंज बिहारी मिश्रक 'सिनेहिया' एल्बमक सातू गीतपर व्यवस्थित (सिस्टेमेटिक) समीक्षा। गायकी (वोकल स्टाइल), वाद्य-संयोजन (म्युजिकल अरेंजमेन्ट), शब्द-शक्ति आ गजल-व्याकरण — सभकेँ अलग-अलग परखल गेल। 'नैनसँ नैन मिलल' सर्वोत्तम घोषित। की-बोर्ड आ ढोलकक एकरसता, बाँसुरीक अभाव, टेम्पो-पीच (tempo-pitch, अर्थात् गतिक मात्रा) पर तथ्यपरक टिप्पणी — एकटा परिपक्व (मेचौर, अर्थात् पक्व) संगीत-समीक्षाक नमूना।

२.४ योगेन्द्र पाठक 'वियोगी' — वन्दनाक स्वरूप

'जय जय भैरवि' मैथिली वन्दनाकेँ मानकीकृत (स्टैन्डर्डाइज्ड, अर्थात् एकरूप) करबाक आग्रह लेल लिखित ई निबन्ध। मधेपुर हाइ स्कूलक छात्रावासमे प्रातःकालीन प्रार्थनाक स्मृति संग लेखक 'जन गन मन' जेहन समवेत (कोरस) प्रस्तुतिक उदाहरण दैत मैथिल कलाकारसँ अनुरोध करैत छथि जे एकटा सरल, सर्वमान्य भास (धुन, अर्थात् ट्यून) निर्मित करथि। यूट्यूब (YouTube, अर्थात् वीडियो-सामग्री-मञ्च) युगमे एकर प्रसार (डिसेमिनेशन, अर्थात् फैलाव) सहज होएत — ई व्यावहारिक (प्रैक्टिकल) सोच प्रशंसनीय अछि।

२.५ चंद्रेश — 'अरिपन' भिडियो एल्बम

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' केर नओ-गीत वाला भिडियो एल्बम 'अरिपन' पर ई समीक्षा छनि। नेपाली पहाड़ी आ मैथिली संस्कृतिक समन्वय (कन्फ्लुएन्स, अर्थात् मिलन), गुरुदेव कामतक स्वर, रामा मण्डल आ रश्मि रानीक राखी-गीत प्रस्तुति — एहि सभपर विस्तृत चर्चा। आनलाइन (online, अर्थात् इन्टरनेटपर) आ खुल्ला बिक्रीक दुगोट माध्यमक उल्लेख एल्बमक विपणन (मार्केटिंग) रणनीतिकेँ समझाबैत अछि।

२.६ इरा मल्लिक — शारदा सिन्हाक 'विवाह गीत' एल्बम

पद्मश्री शारदा सिन्हाक 'विवाह गीत' एल्बमक विस्तृत समीक्षा। मार्गी आ देशी संगीत (शास्त्रीय आ लोक संगीतक दुगोट मुख्य विभाग) केर अन्तर स्पष्ट करैत समीक्षिका शारदाजीक आवाजक 'खनक' (रेसोनेन्स, अर्थात् गूँज), ठोस लयकारी, स्वर-विस्तारक व्यापकता केर प्रशंसा करैत छथि। सोलह गीत (साइड A — १० गीत, साइड B — ६ गीत) पर उदाहरण-सहित टिप्पणी। 'मोरे बबुआ को नजरियो न लागे' केर मानवीय सम्बन्ध-चित्रण विशेष सराहनीय मानल गेल।

२.७ मनीष झा 'बौआभाइ' — वर्तमान मैथिली गीत-संगीत हमरा नजरिसँ

डी-टोन (D-tone, अर्थात् गायकक मूल स्वरकेँ इलेक्ट्रॉनिक माध्यमसँ बदलब) प्रथाक आलोचना, व्यावसायिकता (कमर्शियलाइजेशन, अर्थात् बाजारू बनाएब) केर दबाव, संगीतकार (कम्पोजर, अर्थात् धुन बनेनिहार) केर अभाव — ई तीनू बिन्दुपर लेखक तार्किक (लॉजिकल) ढंगसँ प्रहार करैत छथि। गायक-गीतकारक तुलनामे संगीतकारक कमी आ बनल-बनाएल धुनपर गीत फिट करबाक प्रवृत्ति (ट्रेन्ड, अर्थात् चलन) — एकटा सूक्ष्म निरीक्षण।

२.८ रवि भूषण पाठक — औझका डायरी

डायरी-विधा (डायरी फॉर्म) मे लिखित ई गद्य मैथिली साहित्यमे एकटा 'वज्रालोचक' (कठोर आलोचक, अर्थात् निर्भीक समालोचक) केर अभावकेँ व्यंग्यात्मक (आइरोनिक, अर्थात् कटाक्षपूर्ण) ढंगसँ उजागर करैत अछि। जायसीक प्रसंगमे मुसलमान लेखकपर हिन्दुत्वक पूर्वग्रह (बायस, अर्थात् पक्षपात), समाजमे 'ओकादि बदलबाक' प्रतीक्षारत अवसरवादी (ऑपर्च्युनिस्ट, अर्थात् मौकापरस्त) चरित्र — ई टिप्पणी मैथिली साहित्यिक माहौलक सटीक (एक्युरेट, अर्थात् सही) चित्रण थिक।

२.९ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र — बहुविध लेखन (पृ. ४३-१५८)

संग्रहक सर्वाधिक विपुल (प्रोलिफिक, अर्थात् बेसी मात्रामे लिखनिहार) लेखक। प्रो. चण्डेश्वर झाक संगीत-सी.डी. पर संस्मरणात्मक (मेमुआर-टाइप, अर्थात् यादपर आधारित) लेखन भावुक अछि। मधुश्रावणी पर नृतत्त्वशास्त्रीय (एन्थ्रोपोलॉजिकल) विवेचन, मैथिलानी-विमर्श (डिस्कोर्स, अर्थात् विचार-विमर्श), मणिपुरक महाराजा पंहिबापर लेख — विषय-वैविध्य उल्लेखनीय। शोधपरक (रिसर्च-बेस्ड) दृष्टि आ प्राथमिक स्रोत (प्राइमरी सोर्स, अर्थात् मूल स्रोत) पर आधारित लेखन आलोचनाक लेल मानक (स्टैन्डर्ड) स्थापित करैत अछि।

२.१० जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल' — सुन्दरकाण्ड एल्बम

महाकवि चन्दा झा रचित रामायणक सुन्दरकाण्डक एल्बमपर ई लेख (पृ. १५९-१६०) मैथिली शास्त्रीय-साहित्यिक परम्पराकेँ आधुनिक मीडिया (media, अर्थात् माध्यम) माध्यमसँ जोड़बाक प्रयासक सराहना करैत अछि। संक्षिप्त मुदा सूचनात्मक (इन्फॉर्मेटिव, अर्थात् जानकारीपूर्ण)।

२.११ वन्दना अवस्थी दुबे (अनु. आशीष अनचिन्हार) — हिन्दी कथाक मैथिली रूपान्तरण

ई खण्ड (पृ. १६१-१६४) हिन्दी-मैथिली साहित्यिक सेतु (ब्रिज, अर्थात् पुल) थिक। आशीष अनचिन्हारक अनुवाद-कौशल (ट्रान्सलेशन स्किल) प्रशंसनीय अछि।

२.१२ आशीष अनचिन्हार — बहुविध योगदान

प्रो. हरिमोहन झाजीक गजलक सम्पादन, 'भाषा केर मनोविज्ञान', मिथिला स्टूडेंट यूनियनक रिपोर्ट, 'कतेक रास बात' — एहि सभमे आशीष अनचिन्हार मैथिलीक सक्रियतावादी (एक्टिविस्ट, अर्थात् आन्दोलनकारी) पत्रकार-लेखकक रूपमे उभरैत छथि। इन्टरनेटपर मैथिलीक 'पहिल उपस्थिति' केर दावापर हुनकर तथ्यात्मक (फैक्चुअल, अर्थात् तथ्यावरोधी) प्रश्न-चिह्न अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि — ई इतिहासलेखन (हिस्टोरियोग्राफी, अर्थात् इतिहास-लेखनक पद्धति) केर प्रश्न थिक।

२.१३ नन्द विलास राय — हास्य कथाकार

'हमर लॉटरी निकलल', 'चरित्तर कक्काक ब्लडपेसर' (blood pressure, अर्थात् रक्तचाप), 'कठही साइकिल' — मिथिलाक सामाजिक रूपान्तरण (सोशल ट्रान्सफॉर्मेशन) केर हास्यास्पद पक्षकेँ राय जी स्वाभाविक बोलचालक भाषामे उकेरैत छथि। लोकव्यवहारक (कोलोक्विअल) भाषा आ जीवन्त पात्र हुनकर विशेषता थिक।

२.१४ रबीन्द्र नारायण मिश्र — वृहत् गद्यकार (पृ. २३३-४५१)

यूरोप यात्रा, अमृतसर यात्रा, बिधवा विवाह, IPC 498A (भारतीय दण्ड संहिताक धारा जे वैवाहिक उत्पीड़न सँ सम्बन्धित छैक) पर लेख — विषयक बहुमुखीता प्रभावशाली (इम्प्रेसिव, अर्थात् प्रभावकारी) अछि। सहज आ प्रवाहमय (फ्लुइड, अर्थात् धारावाही) भाषा।

२.१५ बी.एन. लाल दास — 'चिचड़ी वाली भौजी'

संक्षिप्त हास्य-रस (कॉमेडी) कथा जे मैथिलीक लोकव्यवहार आ सामाजिक परिहासक (सोशल ह्यूमर, अर्थात् समाजिक विनोद) परम्परामे स्थान पबैत अछि।

२.१६ डॉ. शिव कुमार प्रसाद — दलित साहित्य विमर्श

'दलित साहित्यकेँ आन साहित्यसँ फुटकेबाक प्रयोजन' — ई निबन्ध मैथिलीमे दलित-चेतना (Dalit consciousness) केर एकटा महत्त्वपूर्ण दस्तावेज। सवर्ण-केन्द्रित (अपर-कास्ट-सेन्ट्रिक) साहित्यिक ढाँचाकेँ (फ्रेमवर्क) चुनौती देनाइ साहसिक (बोल्ड) कदम अछि।

२.१७ ओम प्रकाश झा — 'विछोहक नोर' (बिहैन कथा)

संक्षिप्त (फ्लैश फिक्शन, अर्थात् बहुत छोट कथा) विधामे ई रचना भावात्मक (इमोशनल) सघनता (इन्टेन्सिटी) प्रकट करैत अछि।

२.१८ राजदेव मण्डल — 'भितरिया चोट' आ 'छोटकू दोस'

'भितरिया चोट' केर शीर्षक स्वयं एकटा मनोवैज्ञानिक (साइकोलॉजिकल, अर्थात् मनोविज्ञान-सम्बन्धी) अनुभव थिक — बाहरी चोट सँ भीतरी पीड़ा बेसी गहीर होइत अछि। 'सगर राति दीप जरय' केर ९३म आयोजनमे ई कथा पठित आ समीक्षित भेल। मण्डलजी मैथिली कथा-परम्परामे एकटा स्थापित (एस्टेब्लिश्ड, अर्थात् मान्यताप्राप्त) नाम छथि।

२.१९ सुकेश साहनी / मुन्ना जी — लघुकथाक आदान-प्रदान

हिन्दीक प्रख्यात लघुकथाकार सुकेश साहनीक 'ठंढी रजाइ' केर मैथिली रूपान्तरण (एडेप्टेशन, अर्थात् अनुकूलन) मुन्ना जी द्वारा — ई हिन्दी-मैथिली लघुकथा-सम्वाद (डायलॉग, अर्थात् बातचीत) थिक। मुन्ना जीक अपन मौलिक बीहनि कथा (विधान, फसाद!, निवहता, हुव्वा) समकालीन जीवनक विसंगतिकेँ (आइरनी, अर्थात् विरोधाभास) पकड़ैत अछि।

२.२० जवाहर लाल कश्यप — 'कुक्कुर' (बिहैन कथा)

कुक्कुर (कुत्ता) केन्द्रक ई लघुकथा मैथिली बिहैन-कथा परम्परामे पशु-प्रतीकवाद (एनिमल सिम्बलिज्म, अर्थात् जानवर केर माध्यमसँ प्रतीकात्मक अर्थ) केर प्रयोग थिक।

२.२१ अब्दुर रज्जाक — बिहैन कथा

मैथिलीक मुस्लिम लेखकक उपस्थिति संग्रहक वैविध्य (डायवर्सिटी, अर्थात् विविधता) दर्शाबैत अछि।

२.२२ बृषेश चन्द्र लाल — 'बुद्धिचौ'

'बुद्धिचौ' शीर्षक स्वयं व्यंग्यात्मक (सेटाइरिकल, अर्थात् कटाक्षपूर्ण) अछि — बुद्धिक 'चौ' (वर्ग, अर्थात् समूह/प्रकार) — आधुनिक बुद्धिजीवीपर व्यंग्य।

२.२३ मिथिलेश कुमार सिन्हा — 'चुप्पी', 'आजादी', 'माया'

तीनू शीर्षक मिलिकऽ एकटा तनावपूर्ण (टेन्सड, अर्थात् दबावग्रस्त) मनोवैज्ञानिक आन्तरिक-वातावरण (साइकोलॉजिकल इन्टीरियर) बनाबैत अछि। मौन (चुप्पी), स्वतन्त्रता (आजादी) आ मोह (माया) — ई तीन अनुभव मिथिलाक समकालीन मध्यवर्ग (मिडल क्लास, अर्थात् बीच केर आर्थिक वर्ग) केर चित्र थिक।

२.२४ शिवशंकर — 'कंबल'

बल्लभगढ़, फरीदाबाद (हरियाणा) — ई पता मैथिलीक प्रवासी (डायस्पोरा, अर्थात् बाहर रहनिहार) लेखकक उपस्थितिकेँ दर्शाबैत अछि। 'कंबल' शीर्षक गरीबी आ ऊष्मा (warmth, अर्थात् गर्मी) केर दुहरा प्रतीक (डुअल सिम्बल) भऽ सकैत अछि।

२.२५ कपिलेश्वर राउत — सामाजिक यथार्थवादी

'गामे बीरान भऽ गेल', 'आब कहिया चेतब', 'विघटनकारी तत्त्व' — शहरीकरण (अर्बनाइजेशन) आ ग्रामीण पलायन (रूरल एक्सोडस, अर्थात् गामसँ पड़ाय) केर पीड़ा। प्रगतिशील (प्रोग्रेसिव) चेतनाक परिचायक।

२.२६ नारायण यादव — 'चौदह नम्बर कोर्ट' आदि

'चौदह नम्बर कोर्ट' — न्यायिक-व्यवस्था (ज्यूडिशियल सिस्टम) केर माध्यमसँ सामाजिक यथार्थ। 'गोबर बिछनी' — ग्रामीण जीवनक ठोस चित्रण। नारायण यादव 'सगर राति दीप जरय' केर ९५म आयोजनकेँ आमन्त्रण देनिहार स्थापित कथाकार छथि।

२.२७ राजेश वर्मा 'भवादित्य' — बिहैन कथा आ लेख

'सोंगर' बिहैन कथा आ 'वैशिष्ठ्य' बिहैन लेख — संक्षिप्तमे बेसी कहबाक कौशल। पटोरी (सहरसा) सँ एही लेखकक उपस्थिति पूर्वी मिथिलाक साहित्यिक सक्रियताकेँ दर्शाबैत अछि।

२.२८ प्रणव झा — बहुविध रचनाकार

'सदाचार क तावीज' (लघु नाटिका), 'राजा खानदान' (संस्मरण), फेसबुक-कथा, 'सुखैत पोखैर प्यासल गाम' — विधावैविध्य (जेनर डायवर्सिटी) उल्लेखनीय। राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड (नई दिल्ली) सँ जुड़ल ई रचनाकार मैथिली आ हिन्दी साहित्यिक वृत्तक बीच सेतु (ब्रिज) थिक।

२.२९ कल्पना झा — 'निर्वहन' आ 'निरुत्तर'

दूनू शीर्षक एकटा प्रतिरोधहीन (हेल्पलेस, अर्थात् बेबस) मनोदशाक संकेत दैत अछि — जहाँ 'निर्वहन' (ढोबाक मजबूरी) आ 'निरुत्तर' (जवाब नहि भेटब) — महिला-लेखनक सूक्ष्म भावात्मक (सबटल इमोशनल) ध्वनि (नुआन्स, अर्थात् बारीकी)।

२.३० अभिलाष ठाकुर — 'साँठ गाँठ' आ 'नोटबन्दी'

'नोटबन्दी' (डिमोनेटाइजेशन, अर्थात् नोट बन्द करबाक सरकारी निर्णय) पर बिहैन कथा — ई ऐतिहासिक (हिस्टोरिक) निर्णयकेँ साहित्यमे दर्ज (रेकॉर्ड) करबाक त्वरित (इम्मीडिएट रिस्पॉन्स, अर्थात् फौरी प्रतिक्रिया) प्रयास।

२.३१ डॉ. वीणा कर्ण — 'सीता-शील' केर साहित्यिक विवेचना

खड्गबल्लभ दास 'स्वजन' जीक 'सीता-शील' काव्यपर ई लेख (पृ. ६०६-६१७) मैथिली काव्य-आलोचना (लिटरेरी क्रिटिसिज्म, अर्थात् साहित्यिक समालोचना) केर एकटा महत्त्वपूर्ण उदाहरण थिक। सीता-चरित्र केर पुनर्पाठ (रि-रीडिंग, अर्थात् नव दृष्टिसँ पुनः पढ़ब) स्त्री-विमर्श (फेमिनिस्ट पर्सपेक्टिव, अर्थात् स्त्री-दृष्टिकोण) केर सन्दर्भमे महत्त्वपूर्ण अछि।

२.३२ उमेश मण्डल — 'सगर राति दीप जरय' आ भगैत गबैया

'सगर राति दीप जरय' केर ९३म आ ९४म आयोजनक विस्तृत दस्तावेजीकरण (डॉक्युमेन्टेशन, अर्थात् लेखन-प्रमाण), मिथिलाक लोक संगीत, भगैत (लोकगायन-परम्पराक एक विधा) गबैयापर लेख — उमेश मण्डल मैथिली साहित्यिक आन्दोलनक इतिहासकार (हिस्टोरियन, अर्थात् इतिहास-लेखक) थिक।

२.३३ बेचन ठाकुर — 'नीशा मुक्ति' आ 'बरहम बाबा' एकांकी

मैथिली रङ्गमञ्च (थियेटर) केर स्तम्भ। 'नबघर' नाटक-संचयनमे वर्तमान समाजक दशा-दिशाक नाट्य-चित्रण। 'सगर राति दीप जरय' केर केन्द्रीय हस्ती।

३. पद्य खण्ड: सम्पूर्ण कवि-समीक्षा

३.१ जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' — प्रेम-चालीसा आ गजल

'प्रेम-चालीसा' एकटा दार्शनिक (फिलॉसॉफिकल) आत्म-साक्षात्कार (सेल्फ-रियलाइजेशन) केर कविता थिक — 'सभ क्यो दुनियामे अपन, कतहु कियो नहि आन'। 'सुन्दर-सुन्दर' केर आवर्तन (रिपीटिशन, अर्थात् दोहराव) आनन्दवर्धन (आनन्द बढ़बैत जेनाइ) केर शिल्प-प्रयोग थिक। राग भैरवी केर उल्लेख संगीत-काव्य-परम्पराक जानकारी दैत अछि। गजलमे 'अनिल' जी छन्दक (मीटर, अर्थात् लयशास्त्रक) नियमपालनमे सचेत (अटेन्टिव, अर्थात् ध्यानी) छथि।

३.२ आशीष अनचिन्हार — जोगीरा, कविता, रुबाइ, गजल

'किछु जोगीरा' मैथिली साहित्यिक संस्थापन (लिटरेरी एस्टेब्लिशमेन्ट, अर्थात् साहित्यिक वर्चस्व रखनिहार समूह) पर तीखा राजनीतिक व्यंग्य (सेटायर) थिक — 'पुरस्कार लेल जूरी लागै बापोसँ मीठ', 'जूरी केर दर्शन भेलै चानी ओ सोन', 'पुरस्कार तँ जेतै दरभंगिये के पेटमे' — ई पंक्ति सभ साहित्यिक भ्रष्टाचार (करप्शन, अर्थात् भ्रष्टाचार) केर बेधक (शार्प, अर्थात् तीक्ष्ण) चित्रण थिक। फगुआ-जोगीरा लोक-परम्पराकेँ राजनीतिक व्यंग्यक हथियार बनाएब आशीष अनचिन्हारक वैशिष्ट्य (हॉलमार्क, अर्थात् पहचान-चिह्न) थिक।

३.३ अशोक कुमार सहनी — गजल

संक्षिप्त प्रस्तुति मुदा मैथिली गजल-परम्परामे एकटा आवाज। गजलक उर्दू-मैथिली संयोजन (फ्यूजन, अर्थात् दुगोट परम्पराक मिलन) केर प्रयास।

३.४ डॉ. जियाउर रहमान जाफरी — मुक्तक आ आजाद गजल

मैथिलीमे मुस्लिम कवि-परम्पराकेँ आगाँ बढ़बैत जाफरी साहेब 'आजाद गजल' (फ्री-वर्स गजल, अर्थात् छन्दमुक्त गजल) केर प्रयोग करैत छथि। मैथिली साहित्यमे हिन्दू-मुस्लिम सामासिक (कम्पोजिट, अर्थात् मिश्रित) संस्कृतिक प्रतिनिधित्व।

३.५ डॉ॰ शशिधर कुमर 'विदेह' — ६ टा कविता, बाल कविता (पृ. ७४७-८३४)

पुणेक आयुर्वेद महाविद्यालयमे छात्र रहितकाल लिखल मौलिक मैथिली कविता — एकटा दुर्लभ (रेयर) डिजिटल-पूर्व (प्री-डिजिटल, अर्थात् इन्टरनेटसँ पहिलेक) दस्तावेज। 'कालचक्र' कविता समय-दर्शन (टाइम-फिलॉसॉफी) केर प्रयास थिक। बाल कविता आ सचित्र (इलस्ट्रेटेड, अर्थात् चित्रसहित) बाल कविताक विशाल संग्रह मैथिली बाल साहित्यक लेल अभूतपूर्व (अनप्रेसेडेन्टेड, अर्थात् पहिलेसँ नहि भेल) योगदान थिक। 'बाबू साहेब चौधरी', 'मैथिली दधीचि' — समाज-सुधारकपर कविता सांस्कृतिक स्मृति (कल्चरल मेमोरी) केर कविता थिक।

३.६ बाबा बैद्यनाथ — आजाद गजल (पूर्णियाँ)

'मिथिला-राज्य' केर माँग पर केन्द्रित ई आजाद गजल राजनीतिक-काव्य (पॉलिटिकल पोएट्री, अर्थात् राजनीतिक कविता) केर उदाहरण थिक। 'सहनशील होइते छी मैथिल बूझए नहि डरपोक कियो' — मैथिल-अस्मिता (आइडेन्टिटी, अर्थात् पहचान) केर दृढ़ उद्घोष (अफर्मेशन, अर्थात् आत्मविश्वास-सहित कहब)।

३.७ प्रणव झा — 'जन-प्रतिनिधि' आ 'राईत इजोरिया'

'जन-प्रतिनिधि' — राजनीतिक व्यंग्यक तीखा कविता। लोकतन्त्र (डेमोक्रेसी) केर विफलता पर कड़गर टिप्पणी। 'राईत इजोरिया ताइक रहल अछि' — आशावादक (ऑप्टिमिजम, अर्थात् उम्मीदक) कविता।

३.८ रतन कुमार लाल दास — 'कोईली बाजी रहल अई'

जागृति-गीत (वेक-अप सॉन्ग, अर्थात् सचेत करनिहार गीत) परम्परामे ई कविता। मिथिलाक विकास (कृषि, उद्योग, बिजली) केर आग्रह। सरल, लोकगीत-

लयमे बद्ध (छन्दबद्ध)।

३.९ प्रदीप पुष्प — वैलेंटाइन गजल आ किछु गजल

वैलेंटाइन (Valentine Day, अर्थात् प्रेम-दिवस) सँ प्रभावित गजल मैथिली गजल परम्परामे आधुनिक थीम (contemporary theme, अर्थात् समकालीन विषय) केर प्रवेश थिक। प्रदीप पुष्प गद्य आ पद्य दुनूमे सक्रिय छथि।

३.१० बृषेश चन्द्र लाल — 'तप ?!' आ ३ बालगीत

'तप ?!' शीर्षकक प्रश्नचिह्न आ विस्मयादिबोधक (एक्सक्लेमेशन, अर्थात् आश्चर्य केर चिह्न) दुनूक संयोग — आधुनिक संशय (स्केप्टिसिज्म, अर्थात् सन्देह) आ परम्परापर प्रश्न। बालगीत सरल आ लयात्मक (मेलोडिक, अर्थात् सुरीला)।

३.११ मुन्नी कामत — बाल कविता

'जतरा', 'अंकक मेल', 'बहिन' — बाल साहित्यमे गणना-शिक्षा आ लिङ्ग-चेतना (जेन्डर अवेयरनेस, अर्थात् लिङ्ग-जागृति)। 'माए हमरा एगो बहिन आनि दे' — कन्या-भ्रूण हत्यापर कविता, बालमनसँ लिखाएल मुदा चेतना प्रौढ़।

३.१२ राजेश मोहन झा 'गुंजन' — शिव भजन, जूड़शीतल, दहेज-पसाही

'ममताक अनुभूति (जूड़शीतल पर विशेष)' आ 'धन रूप आ गुण (दहेजक पसाही)' — पर्व-विशेष (फेस्टिवल-स्पेसिफिक, अर्थात् त्यौहारक सन्दर्भमे) आ सामाजिक कविता। 'काटि गेल जुट्टी (हास्य रस)' — हास्यरस केर उपस्थिति। 'गुंजन' जी धुन-सहित कविता लिखबामे सचेत छथि — 'धुन:- सूफ़ियाना' उल्लेख एकर प्रमाण।

३.१३ राजीव रंजन झा — फगुआ, जोगीरा, गजल

फगुआ (होली गीत) आ जोगीरामे राजनीतिक व्यंग्य — 'फेंकू भैय्याक हाथ टूटि गेल', 'मुलायम कठोर भेल', 'पन्दरह-पन्दरह लाख' — ई समकालीन राजनीतिपर सीधा (डायरेक्ट) व्यंग्य। लोक-परम्पराक राजनीतिक उपयोग।

३.१४ महेश डखरामी — 'महेश पद्यावली: अनुरोध'

संस्कृत-प्रभावित (संस्कृत-इन्फ्लुएन्स्ड, अर्थात् संस्कृतसँ प्रभावित) मैथिली पदावली शैलीमे एकता आ सद्भावक (हार्मोनी, अर्थात् मेलमिलाप) आग्रह। 'सीता संतति जानि सब हृदय सिनेह सुजान / कहेउ महेश हित मैथिली तेजहु सब अभिमान' — मैथिली सुधारवाद (रिफॉर्मिज्म) केर काव्य-उद्घोष।

३.१५ ओम प्रकाश झा — बसंती गजल

'गमक' लागलै बसंती हवा / चहक' लागलै बसंती हवा' — बसन्त-गजलमे क्रिया-श्रृंखला (वर्ब चेन, अर्थात् क्रियाक लड़ी: गमकब, चहकब, चमकब, बहकब, दहकब, ठहकब) केर कुशल प्रयोग। मात्राक्रम (prosodic pattern, अर्थात् छन्द-लय) केर उल्लेख तकनीकी (टेक्निकल) सचेतनता दर्शाबैत अछि।

३.१६ सत्यनारायण झा — 'मोनक गीत'

विरह-मिलनक (वियोग-संयोगक) परम्परागत (ट्रैडिशनल) भाव आधुनिक अभिव्यक्ति-शैलीमे। 'मोहन मुरली बाजि उठैत अछि' — कृष्ण-भक्ति-परम्पराक सन्दर्भ।

३.१७ गुफरान जीलानी — 'झमटबा गाछि'

MANUU (मौलाना आजाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय, दरभंगा) सँ जुड़ल मुस्लिम कवि। 'झमटबा गाछि' — एकटा लघु (मिनिमलिस्ट, अर्थात् न्यूनतम शब्दसँ बेसी कहब) कविता। 'सुखि रहल अछि / खादि दियौ / पानि दियौ / अगोरबाहि करु' — पर्यावरण-चेतना (इको-कन्शसनेस) केर लघु कविता। गाम-जीवनक स्मृति आ संरक्षण (प्रिजर्वेशन) केर आग्रह।

३.१८ अमरनाथ मिश्र — 'जुड़िशीतल-गीत'

मिथिलाक पर्व-परम्परा (फेस्टिवल ट्रैडिशन) मे जुड़िशीतल (नव-वर्ष पर्व) पर गीत — सांस्कृतिक संरक्षण (कल्चरल प्रिजर्वेशन) केर प्रयास।

३.१९ रश्मि किरण झा — हाइकू

पाँचटा हाइकू (जापानी काव्य-विधा जे मात्र तीन पाँतिमे लिखाइत अछि) माघ-मासक शीत (जाड़) केर इर्द-गिर्द। 'जाड माघ के / दलपिट्ठी बगिया / रान्हे कनिया' — ग्रामीण शीत-जीवनक सटीक (एक्युरेट) बिम्ब (इमेज)। मैथिलीमे हाइकू-लेखन अपेक्षाकृत नव (रिलेटिवली न्यू, अर्थात् तुलनात्मक रूपसँ नवीन) थिक।

३.२० मुन्नी कामत — बाल कविता (गद्य खण्डमे अलग)

(गद्य खण्ड-समीक्षामे सम्मिलित — देखू खण्ड ३.११ आ पद्य खण्ड दूनू)

३.२१ राम विलास साहु — किछु कविता (पृ. ८८५-९४०)

कोसी-कातक किसानक कवि। 'उत्तम अन्न' मे मरुआ (एकटा मोटा अनाज) गरीबी आ सहनशीलता (रेजिलिएन्स) केर प्रतीक। 'मिथिलाक अपमान', 'बदलल नजैर', 'जागु इंसान' — सामाजिक जागृतिक कविता। 'दिलक दरद' विरह-गीत परम्परामे। भाषा सरल आ प्रत्यक्ष (डायरेक्ट), बिम्ब लोकजीवनसँ।

३.२२ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र — 'गामक कचोट'

गाम आ शहरक बीच टूटनिहार कवि-मनक पीड़ा — 'कचोट' (ग्निंग पेन, अर्थात् भीतरसँ कसमसाबाक दर्द) शब्द स्वयं पर्याप्त (सफिशिएन्ट, अर्थात् काफी) अछि।

३.२३ राजेश वर्मा 'भवादित्य' — नवगीत

'नवगीत' — हिन्दी साहित्यमे विकसित एकटा आधुनिक गीत-विधा जे परम्परागत गीत-छन्दकेँ आधुनिक संवेदनासँ जोड़ैत अछि। मैथिलीमे नवगीतक प्रयोग अपेक्षाकृत विरल (स्कार्स, अर्थात् कम) अछि।

३.२४ बृषेश चन्द्र लाल — ३ टा बालगीत

(खण्ड ३.१०मे विवरण देल गेल अछि।)

३.२५ कमलेश प्रमेन्द्र — 'जरल कपार'

गोत्र-बन्धन (सेम-गोत्र मैरेज रिस्ट्रिक्शन, अर्थात् एकहि गोत्रमे विवाह निषेध) केर कारण बियाह टूटबाक व्यंग्यात्मक (सेटाइरिकल) चित्रण। मारुती कार, सूट-बूट, नवका चादरि — आधुनिकताक बाहरी चिह्न आ पुरातन (आर्केइक) गोत्र-नियमक टकराव (क्लैश)।

३.२६ अम्बिकेश कुमार मिश्र — 'सुतारु', 'मिथिलाक आह', 'मौगियाहा नैइतन', 'दिल्ली'

'सुतारु' — सत्तावर्गीय शोषण (रुलिंग-क्लास एक्सप्लोइटेशन) केर आक्रामक बिम्बसँ भरल। 'मिथिलाक आह' — मातृभूमि-वेदना। 'मौगियाहा नैइतन' — शहरी-ग्रामीण टकराव आ माताक मर्म, बोलचालक भाषामे। 'दिल्ली' — ओजोन परत, कार्बन मोनोऑक्साइड — पर्यावरणीय कविता।

३.२७ कुमार रवि — 'वर्षा मेघक संग एलैय'

प्रेम-विश्वासघात (लव-बिट्रेयल) केर अनुभवकेँ वर्षाऋतुक प्रकृति-बिम्बसँ जोड़ब। टेक-आधारित (रिफ्रेन-बेस्ड)। 'नक्शा चौहद्दी उल्टा क' — नक्शा पलटेनिहार प्रेमी केर रूपक (मेटाफर)।

३.२८ नीलमाधव चौधरी — ५६ टा कविता

राजकमल चौधरीजीक पुत्र, मुदा 'बारल कवि' — अपनहि स्वायत्त (ऑटोनोमस) काव्य-यात्रा। पहिल बेर एकैसाथ ५६ कविताक प्रकाशन। प्रवासी पीढ़ीक वेदना, सामाजिक न्याय, वैचारिक अकाल (इन्टेलेक्चुअल ड्राउट), आत्म-जिज्ञासा (सेल्फ-क्वेश्चनिंग) — बहुस्तरीय (मल्टि-लेयर्ड, अर्थात् बहुत स्तर वाला) कविता-संसार।

उल्लेखनीय: 'हम मैथिल आब किछु नहि बुझब / अप्पन मिथिला लेल हम जुझब / बड्ड चुप रहलहुँ आब नहिं रहब' — मैथिल-चेतनाक नव उद्घोष।

४. सङ्कलनक समग्र मूल्याङ्कन

विदेह सदेह-२० मैथिलीक एकटा ऐतिहासिक साहित्यिक दस्तावेज (हिस्टोरिक लिटरेरी डॉक्युमेन्ट) थिक। गजेन्द्र ठाकुरक सम्पादन-दृष्टि — परम्परा आ नवता, लोककण्ठ आ आधुनिकता, दलित-स्वर आ सवर्ण-स्वर — सभकेँ एकसाथ रखबाक प्रयास सफल भेल अछि। ३३ सँ बेसी लेखक-कवि, दू खण्ड, गद्य-पद्य दुनूमे समानान्तर प्रतिनिधित्व, 'सगर राति दीप जरय' आन्दोलनक जीवन्त दस्तावेजीकरण — ई संग्रह मात्र संकलन (एन्थोलॉजी) नहि, मैथिली साहित्यक एकटा जीवन्त घोषणापत्र (मेनिफेस्टो, अर्थात् उद्देश्य-पत्र) थिक।

— *विदेह सम्पादन, ISSN 2229-547X*

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह सदेह-२०: विस्तृत मैथिली साहित्यिक समीक्षा — स्रोत: विदेह ई-पत्रिका अंक २१७-२५० | सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर | ISSN 2229-547X VIDEHA

अध्याय 12 · विदेह-सदेह २२ : एक विस्तृत साहित्यिक समीक्षा — उपक्रम : केन्द्र-निर्धारित संकलनक स्वरूप

सारांश विदेह-सदेह २२ विदेह ई-पत्रिकाक अंक २७७ सँ ३०० धरिक चुनल रचनाक संकलन थिक। पूर्ववर्ती सदेह २१ क तुलनामे ई अंक संरचनात्मक दृष्टिसँ बेसी केन्द्रित अछि—गद्य-खण्ड (पृ. १-६३०) पद्य-खण्डसँ (पृ. ६३१-७३४) कतेको गुना विशाल अछि, आ एकर भीतर दूटा वैचारिक स्तम्भ ठाढ़ अछि : एक दिस आशीष अनचिन्हारक आलोचना आ मुन्नाजीक विधा-सिद्धान्त, दोसर दिस उमेश मण्डलक जगदीश प्रसाद मण्डलपर सम्पूर्ण अध्ययन आ केशव भारद्वाजक विपुल कथा-संसार। ई अंक "मानुषीमिह संस्कृताम्"क मन्त्रकेँ आलोचनात्मक-सैद्धान्तिक गाम्भीर्यक दिस मोड़ि दैत अछि।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · रस-सिद्धान्त · कथा · आलोचना

विदेह-सदेह २२ विदेह ई-पत्रिकाक अंक २७७ सँ ३०० धरिक चुनल रचनाक संकलन थिक। पूर्ववर्ती सदेह २१ क तुलनामे ई अंक संरचनात्मक दृष्टिसँ बेसी केन्द्रित अछि—गद्य-खण्ड (पृ. १-६३०) पद्य-खण्डसँ (पृ. ६३१-७३४) कतेको गुना विशाल अछि, आ एकर भीतर दूटा वैचारिक स्तम्भ ठाढ़ अछि : एक दिस आशीष अनचिन्हारक आलोचना आ मुन्नाजीक विधा-सिद्धान्त, दोसर दिस उमेश मण्डलक जगदीश प्रसाद मण्डलपर सम्पूर्ण अध्ययन आ केशव भारद्वाजक विपुल कथा-संसार। ई अंक "मानुषीमिह संस्कृताम्"क मन्त्रकेँ आलोचनात्मक-सैद्धान्तिक गाम्भीर्यक दिस मोड़ि दैत अछि।

गद्य-खण्ड

आशीष अनचिन्हार : आलोचनाक कविता-समीक्षा

संग्रहक उद्घाटन आशीष अनचिन्हारक दीर्घ आलोचनात्मक निबन्ध "लाल लंगौटी केर पहचान करैत कविता" सँ होइत अछि, जे अरविन्द ठाकुरक कविता संग्रह "सबद मितारथ धाय्या" क सूक्ष्म, कविता-दर-कविता विवेचना थिक। ई निबन्ध समकालीन मैथिली आलोचनाक एक उत्कृष्ट नमूना थिक, कारण आलोचक एतय शास्त्रीय आ आधुनिक—दुनू उपकरणक प्रयोग करैत छथि। ओ कविराज विश्वनाथक "साहित्यदर्पण"क "मितार्थ दूत"क अवधारणासँ संग्रहक शीर्षककेँ

व्याख्यायित करैत छथि, आ "मम्मट" आ वास्तु-ज्योतिषक दिशा-देवता-ग्रह-व्यवस्था (ईशान, वायव्य, नैऋत्य आदि) क माध्यमसँ "अन्यपुरुष-४" कवितक स्तरीय पाठ रचैत छथि। ई नव्य-न्याय-प्रशिक्षित विश्लेषणात्मक दृष्टिक परिचायक अछि।

आलोचकक सबसँ बड़का गुण अछि निर्ममता आ निष्पक्षता। ओ प्रशंसा आ आक्षेप दुनू बेबाक करैत छथि—"हलफनामा" आ "लाल लंगौटी" कैँ ओ "मैथिली कविताक इतिहासमे विरल प्रतीक" मानैत छथि, मुदा "इनार-४" कैँ "सिरीजक कमजोर कविता" कहैत छथि आ "कामी पुरुषक दोष इनारपर नै थोपल जेबाक चाही" कहि स्पष्ट असहमति देखबैत छथि। "भानुमती" सिरीजक सोलह कविताक विश्लेषणमे ओ बेर-बेर ई कसौटी लगबैत छथि जे कविता जखन दू भागमे बँटि जाइत अछि तँ ओ "एकपक्षीय" भऽ कमजोर भऽ जाइत अछि। ई आलोचनात्मक ईमानदारी—जतय आलोचक रचनाकारक राजनीतिसँ सहमत रहितो शिल्पगत दुर्बलताकेँ नुकाबैत नहि—विदेह-आन्दोलनक आलोचना-परम्पराक परिपक्वताक प्रमाण थिक।

दुर्गानन्द मण्डल : समीक्षात्मक प्राक्कथन

दुर्गानन्द मण्डलक "सोन्हगर" डॉ. शिव कुमार प्रसादक काव्य संग्रह "सोंहाँत-अनसोंहाँत" पर लिखल आत्मीय समीक्षा थिक। शीर्षकक श्लेष—"सोन्हगर" (सुगन्धित/मनोहर)—समीक्षाक स्वरकेँ निर्धारित करैत अछि। फगुआ-फागुनसँ लऽ जीवनक झमेला धरिक बीहैन काव्यक प्रशंसा करैत समीक्षक रचनाकारक "तमसोमा ज्योर्तिगमय" बनेबाक प्रयासकेँ रेखांकित करैत छथि। ई लघु समीक्षा संग्रहक समीक्षात्मक स्वरकेँ बढ़बैत अछि।

मुन्नाजी : विधा-सिद्धान्तक हस्तक्षेप

मुन्नाजीक "बीहनि कथा (मानकीकरण ओ तुलनात्मक पक्ष)" ऐ संग्रहक सबसँ महत्त्वपूर्ण सैद्धान्तिक निबन्ध थिक, आ विदेह-आन्दोलनक मूल विधा-दाबीकेँ सिद्धान्तत: प्रतिष्ठित करैत अछि। आलोचक तर्क दैत छथि जे बीहनि कथा (Seed Story, १९९५, सहयात्री मंच, लोहना) मैथिलीक "अपन एकमात्र मौलिक विधा" थिक, जखन कि "लघुकथा" हिन्दीक "अंधानुकरण" मात्र अछि। ओ "पिता आ पुत्रक एकहि नामे पुकार" क बिम्बसँ नामकरणक भ्रमकेँ उघारैत छथि, आ डॉ. मायानन्द मिश्रक कथन (जे लघुकथा "चुटुक्काक निकट अछि") उद्धृत कऽ अपन पक्षकेँ बलवान् बनबैत छथि। बीहनि कथाक परिभाषा—"बीज/बीया, जाहिमे विकास करबाक गुण निहित होइछ... जे अनेक कथा(कथा/उपन्यास)के जन्म देबाक क्षमता राखए"—आ फ्लैश फिक्शन (टेलब्रा) सँ ओकर तुलना विधा-शास्त्रीय गाम्भीर्यक परिचायक अछि। ई निबन्ध मैथिली साहित्यक स्वायत्ततावादी (autonomist) आत्म-चेतनाक घोषणापत्र थिक। (ध्यातव्य : ई दाबा विवादास्पद अछि, कारण कतेको आलोचक बीहनि आ लघुकथाकेँ एके विधाक रूपान्तर मानैत छथि।)

प्रणव झा : प्रतीकात्मक लघुकथा

प्रणव झाक "गिद्ध" लघुकथा एक मार्मिक सामाजिक रूपक थिक। गिद्ध आ चर्मकार छौड़ा—दुनू समाजक "अशुभ" मानल जाइवला, मुदा पारिस्थितिक रूपसँ अनिवार्य—क समानान्तरता कथाकेँ एक गहन प्रतीकात्मक आयाम दैत अछि। छौड़ाक स्वगत—"हम सब छी त अहाँ सब ऐ सड़ांध सँ छुटकारा पाबैत छी... मुदा तैयो अहाँ सब हमरा सब के गिद्ध कहि प्रताड़ित करबै"—मे सुबाल्टर्न-स्वरक प्रत्यक्ष उद्घोष अछि। कथाक अन्तमे रमणक गाँधी-चम्पारणक स्मरण ("सूट-बूट त्यागि देने छलाह") वर्ग-दूरी आ संवाद-अवरोधक चेतनाकेँ व्यापक राजनीतिक धरातलसँ जोड़ि दैत अछि। ई कथा अस्पृश्यता आ पारिस्थितिकीकेँ एक संग जोड़बाक कारणे विशिष्ट थिक। हिनकर दोसर लघुकथा "एन.पी.एस." समकालीन सेवा-निवृत्ति आ पेंशन-व्यवस्थाक चिन्ताकेँ छुबैत अछि।

डॉ. बचेश्वर झा : संस्मरणक आत्मीयता

डॉ. बचेश्वर झाक संस्मरण उमेश मण्डलक प्रति कृतज्ञताक आत्मीय दस्तावेज थिक—जे अवकाश-प्राप्तिक बाद "बोझ तरक दूबि जकाँ" पड़ल लेखककेँ पुनः सृजनशील बनेलनि आ हिनकर "निबन्ध-निकुञ्ज" कैँ प्रकाशमे अनलनि। आकाशवाणी दरभंगाक प्रथम प्रसारणक स्मृति—जतय चन्द्रनाथ मिश्र "अमर" हिनका "आवाज प्रष्ठ हुअए, घबड़ाएल सन नहि बुझना जाए" क सलाह देलनि—मैथिली साहित्यिक मौखिक-प्रसारण परम्पराक एक जीवन्त झलक प्रस्तुत करैत अछि। सोलह वर्षक प्रसारण-यात्राक ई स्मरण साहित्येतिहासक दृष्टिसँ मूल्यवान् अछि।

पूनम झा : लैंगिक-पारिवारिक बीहनि कथा

पूनम झाक "कुर्सी" एकमात्र पंक्तिक भीतर एक सम्पूर्ण पारिवारिक विडम्बना रचैत अछि—जे बीहनि कथाक सामर्थ्यक प्रमाण थिक। उपनयनमे कुर्सीकेँ लऽ कऽ भाइ-भाइक बीचक तनाव, आ रानीक स्मृतिमे अपन दहेजक फर्नीचरक दुरुपयोग—लघु घटनाक माध्यमसँ संयुक्त परिवारक भीतरक स्त्रीक अनकही पीड़ाकेँ उघारैत अछि। अन्तिम पंक्तिक मोड़ (भाइक स्लिप डिस्क) मे जे विडम्बनात्मक संवेदना अछि, से कथाकेँ एकपक्षीय आरोपसँ ऊपर उठा दैत अछि। एक स्त्री-रचनाकारक ई दृष्टि संग्रहमे विशेष महत्त्व रखैत अछि।

नागेश कुमार/आशुतोष : श्रीरामचरितमानसक मैथिली अवतरण

नागेश कुमार द्वारा प्रेषित आ आशुतोषक श्रीरामचरितमानसक मैथिली रूपान्तर अनुवाद-परम्पराक एक महत्त्वाकांक्षी प्रयास थिक। बालकाण्डक मंगलाचरणसँ लऽ अरण्य-किष्किन्धा धरिक विषय-क्रम आ श्लोकानुवाद ("अक्षरक, अर्थसमूहक, रसक, छन्दक आओर मंगलकेँ करनिहार सरस्वतीजी आओर गणेशजीकेँ हम वन्दना करैत छी") तुलसीदासक अवधीकेँ मैथिलीक मातृभाषिक संस्कारमे ढ़ालबाक चेष्टा करैत अछि। ई कार्य मैथिलीक भक्ति-काव्य परम्परा (विद्यापति,

चन्दा झाक मिथिला भाषा रामायण) क संग संवाद रचैत अछि, मुदा एकर पाठमे किछु मुद्रण-संगति आ छन्द-निर्वहनक प्रश्न अछि, जे सम्पादकीय परिष्कारक माँग करैत अछि।

रबीन्द्र नारायण मिश्र : विधिक-सामाजिक विश्लेषण

रबीन्द्र नारायण मिश्रक "बिहार शराबबंदी कानून" मैथिली गद्यमे विधिक-समाजशास्त्रीय निबन्धक एक परिपक्व उदाहरण थिक। आलेख २०१६ क कानूनक धारा ३७ क प्रावधान, तीन सालमे पकड़ल गेल लोकक आँकड़ा, पटना उच्च न्यायालयक टिप्पणी (जे "बिहार पुलिस आँखि मूनि कए काज कए रहल अछि"), आ नार्थ बंगाल ट्रांसपोर्ट बनाम बिहार सरकार सन मामिलाक उल्लेख कऽ एक तथ्य-सम्पन्न विश्लेषण प्रस्तुत करैत अछि। आलेखक केन्द्रीय दृष्टि वर्गीय अछि—"जहलमे बंद बेसी लोक समाजक निम्न वर्गक छल।" आलोचक धारा १४ आ २१ क संवैधानिक उल्लंघनक प्रश्न उठबैत, गुजरात-मिजोरामक तुलना दैत, आ अन्तमे ई निष्कर्ष दैत छथि जे "कानूनक अतिरिक्त चरित्र एवम् व्यक्तित्व निर्माण बहुत जरूरी अछि।" ई आलेख मैथिलीकेँ विधिक-सार्वजनिक विमर्शक भाषा बनेबाक सामर्थ्यकेँ प्रमाणित करैत अछि।

उमेश मण्डल : जगदीश प्रसाद मण्डलक समग्र अध्ययन

उमेश मण्डलक नौ-आलेखक शृंखला (पृ. ११३-२११) ऐ संग्रहक आलोचनात्मक मेरुदण्ड थिक—जे जगदीश प्रसाद मण्डलक साहित्यिक आगमनसँ लऽ हिनकर जीवन-संघर्ष धरिक सम्पूर्ण मूल्यांकन प्रस्तुत करैत अछि। ई अध्ययन ओ रचना-संग्रह ("गामक जिनगी", "रहै जोकर परिवार", "मुड़ियाएल घर", "अर्द्धांगिनी", "बजन्ता-बुझन्ता") क क्रमबद्ध विवेचना करैत अछि। विशेष उल्लेखनीय अछि "जीवन-संघर्ष" उपन्यासक विश्लेषण, जतय आलोचक द्वन्द्व आ संघर्षक सकारात्मक-नकारात्मक भेदकेँ रेखांकित करैत लिखैत छथि जे "नकारात्मक द्वन्द्व पतन दिस बढ़बैत अछि जखन कि सकारात्मक द्वन्द्व उत्थान दिस।" शिव कुमार झा "टिल्लू"क उद्धरण—जे मण्डलजीकेँ "मैथिलीक सर्वकालीन साहित्यमे ध्रुवताराक स्थान" दैत छथि आ हिनकर उपन्यासमे "सवर्ण-दलितक मध्य कोनो खाधि नै" देखैत छथि—विदेह-आन्दोलनक दलित-समावेशी सौन्दर्यशास्त्रक केन्द्रीय प्रस्थापना थिक। ई शृंखला एकटा रचनाकारक समग्र-दर्शन (monographic study) क रूपमे मैथिली आलोचनामे विरल उपलब्धि थिक।

केशव भारद्वाज : प्रवासी कथाकारक विपुल संसार

युगाण्डा (कम्पाला) सँ लिखि रहल केशव भारद्वाजक योगदान (पृ. २१२-६३०) संग्रहक मात्रात्मक आ सृजनात्मक केन्द्रबिन्दु थिक—जाहिमे दर्जनों बीहनि कथा, लघुकथा, एक दीर्घकथा ("की सोचल- की लीखल") आ एक उपन्यास ("पैबंद") सम्मिलित अछि। प्रवासमे रहितो ई कथाकार मिथिलाक माटिक यथार्थमे गहींर धँसल अछि।

हिनकर बीहनि कथा "ओ बच्चा" गरीबीक मार्मिक चित्र थिक—जतय एक जिम्मेदार बालक हाटमे "गड़बड़ी" (छोट चोरी) कऽ अपन परिवारक भरण करैत अछि, आ बादमे दिलक बीमारीसँ असमय मरि जाइत अछि कारण "खाय पर आफत छलइन, ईलाज कतऽ सऽ करयतिन।" अन्तिम पंक्ति—"गरीबक जिम्मेदार बच्चा"—मे जे संयमित करुणा अछि, से कथाकेँ विलापसँ ऊपर उठा दैत अछि।

लघुकथा शृंखला (जेना "गोलकी फ्रेमक चश्मा"मे आशाक आत्म-बलिदान, जतय ओ पति आ पुत्रक रक्षा लेल स्वयंकेँ हत्याक दोषी बनबैत छथि) मे केशव भारद्वाज स्त्री-त्याग, पारिवारिक संकट, आ शराबबंदीक सामाजिक प्रभाव सन समकालीन विषयकेँ छुबैत छथि। उपन्यास "पैबंद" (सात भाग) बदरी नामक रिक्शाचालकक संघर्ष आ "पैबंद लागल" घरक प्रतीकक माध्यमसँ ग्रामीण गरीबी, प्रतिष्ठाक राजनीति, आ पलायनक चित्र रचैत अछि—"आब त ओकरा ई सब घर, दुआर, लोक, बेद, पावर, पैसा जीबनक पैबंद लगइ छइ।" हिनकर भाषाक एक विशिष्टता अछि—ध्वनि-संयोजनक प्रवाहमय शैली (जेना "भऽ", "सऽ" क विशेष लेखन)—जे प्रवासी-स्मृतिक मौखिकताकेँ ध्वनित करैत अछि। केशव भारद्वाजक ई विपुल योगदान मैथिली कथा-साहित्यक भौगोलिक विस्तार (मिथिलासँ अफ्रीका धरि) क प्रमाण थिक।

पद्य-खण्ड

आशीष अनचिन्हार : गजलक प्रतिरोधी धार

पद्य-खण्डक उद्घाटन अनचिन्हारक गजलसँ होइत अछि, जे प्रत्येक गजलक अन्तमे मात्राक्रमक स्पष्ट उल्लेख (जेना "सभ पाँतिमे २२-२२-२२-२ मात्राक्रम अछि") कऽ छन्द-अनुशासनकेँ प्रतिष्ठित करैत अछि। विषयवस्तुमे ई गजल तीव्र राजनीतिक व्यंग्यसँ भरल अछि—"घूसक संगे गबन करू / टिक्का चानन हवन करू / पीठक पाछू गारि बात / आगू अबिते नमन करू।" "सत्य वचन" वला गजलमे प्रत्येक शेरमे सत्यक दमन ("झाँपल गेलै", "बारल गेलै", "छाँटल गेलै") क पुनरावृत्ति एक प्रभावशाली रदीफ-प्रयोग रचैत अछि। "तड़िखाना" (मद्यशाला) वला गजलमे पाखण्डपर तीक्ष्ण चोट अछि—"चिखना देखि कऽ लबनी देखि कऽ / पंडित नाचल तड़िखानामे।" ई गजल मैथिली गजलक सामाजिक-राजनीतिक प्रतिरोधी सामर्थ्यकेँ प्रमाणित करैत अछि।

नन्द विलास राय : वन्दना आ वर्गीय व्यंग्य

नन्द विलास रायक "सरस्वती वन्दना" परम्परागत स्तुति-काव्य थिक, मुदा हिनकर "धनवान" मे वर्गीय व्यंग्यक तीक्ष्णता अछि—"एकटा धनवान" क बेर-बेर

आबैत टेक एक रदीफ-सदृश संरचना रचैत समाजक धनिक-वर्गक चरित्रकेँ उघारैत अछि। ई पुनरावृत्तिमूलक संरचना लोकगीतक स्मृतिकेँ जगबैत अछि।

रामदेव प्रसाद मण्डल "झारुदार" : लघु-काव्यक पैनापन

रामदेव प्रसाद मण्डल "झारुदार"क "किछु झारू" व्यंग्य-क्षणिकाक शृंखला थिक—जतय "झारू" (झाड़ू) क उपनाम स्वयं एक काव्यात्मक प्रतीक बनि जाइत अछि, जे समाजक कूड़ा-कचरा बहारबाक रूपक रचैत अछि। ई लघु-काव्य लोक-व्यंग्यक परम्पराकेँ आगू बढ़बैत अछि।

मुन्ना जी आ प्रदीप पुष्प : गजलक नव स्वर

मुन्ना जीक गजल आ प्रदीप पुष्पक "किछु गजल" (जे पद्य-खण्डक एक बड़का हिस्सा घेरैत अछि) मैथिली गजलक प्राविधिक परिपक्वताकेँ आगू बढ़बैत अछि। प्रदीप पुष्पक "के की कहलक की कहू" वला गजलमे प्रश्नवाचक रदीफक पुनरावृत्ति एक आत्म-संशयक स्वर रचैत अछि—"हमरो उजरे रंग छऽल / के की दगलक की कहू।" "गप्प उठतै तँ पहुँचबे करतै" वला गजलमे "अभिव्यक्तिक हक" क समकालीन विमर्श अछि। प्रत्येक गजलक संग देल मात्राक्रम (जेना "२२२२२१२") गजलकेँ छन्द-शास्त्रीय अनुशासनमे बाँधि रखैत अछि।

संतोष कुमार राय "बटोही" : बाढ़ि आ रौदीक काव्य

संग्रहक काव्यात्मक चरम अछि संतोष कुमार राय "बटोही"क दूटा पर्यावरण-कविता—"कमला-बलानक मारल" आ "रौदी आओर दहार।" ई कविता मिथिलाक दोहरा त्रासदी—बाढ़ि आ सुखाड़—केँ सुबाल्टर्न-दृष्टिसँ देखैत अछि। "मुसहरी लग टुटि गेल छै छहर" सँ शुरू भऽ कविता मुसहर बस्तीक विनाश, "छोट-छोट नेनाक ठोर" आ भूखसँ बिलबिलाइत नेना-वृद्धक चित्र रचैत अछि। मुदा कविता मात्र विलाप नहि—ई प्रत्यक्ष राजनीतिक अभियोग थिक : "भ्रष्ट ठीकेदार आओर मंत्री मिल कऽ / छहर रिपेयर कैं नाम पर खूब लूटलथि / इ मौगा कैं देश छियैए... सुशासन कुमार बौरा गेल छथि।" अन्तिम प्रश्न-शृंखला ("दोख ककरा दियैए? नसीब कैं? लोकतंत्र कैं प्रहरी कैं? सत्तासीन सरकार कैं?") उत्तरदायित्वक प्रत्यक्ष माँग करैत अछि। "रौदी आओर दहार"मे सुखाड़क बिम्ब ("माटि मे बेबाय फाटि गेल छै", "अन्न लेल तड़ैप रहल छै मूस") समान बल राखैत अछि। ई कविता विदेह-आन्दोलनक सुबाल्टर्न-पर्यावरणीय चेतनाक सबसँ प्रत्यक्ष काव्यात्मक अभिव्यक्ति थिक।

मूल्यांकन : सबलता आ सीमा

सबल पक्ष : सदेह २२ क सबसँ बड़का उपलब्धि अछि एकर आलोचनात्मक-सैद्धान्तिक गाम्भीर्य। अनचिन्हारक कविता-समीक्षा, मुन्नाजीक विधा-सिद्धान्त, आ उमेश मण्डलक मोनोग्राफिक अध्ययन—ई तीनू मिलि मैथिली आलोचनाकेँ एक नव परिपक्वता दैत अछि, जतय शास्त्रीय काव्यशास्त्र (साहित्यदर्पण, मम्मट) आ आधुनिक सामाजिक-राजनीतिक दृष्टि एक संग प्रयुक्त होइत अछि। दोसर, केशव भारद्वाजक प्रवासी-कथा-संसार मैथिली कथाक भौगोलिक आ विषयगत विस्तारक प्रमाण थिक। तेसर, रबीन्द्र नारायण मिश्रक विधिक-निबन्ध आ नागेशक रामचरितमानस-अवतरण मैथिली गद्यक विषय-वैविध्यकेँ देखबैत अछि। चारिम, संतोष "बटोही"क पर्यावरण-कविता आ अनचिन्हारक प्रतिरोधी गजल विदेह-आन्दोलनक सुबाल्टर्न-पक्षधरताकेँ काव्यात्मक धार दैत अछि।

सीमा : पद्य-खण्ड (मात्र १०४ पृष्ठ) गद्य-खण्ड (६३० पृष्ठ) क तुलनामे बहुत क्षीण अछि—जे ऐ अंककेँ काव्य-दृष्टिसँ असन्तुलित बनबैत अछि। मुन्नाजीक बीहनि-कथाक "एकमात्र मौलिक मैथिली विधा" वला दाबा यद्यपि उत्साहवर्धक अछि, मुदा ओ विवादास्पद आ किछु आत्म-केन्द्रित प्रतीत होइत अछि—कारण विधागत मौलिकताक प्रश्नपर मैथिली आलोचना-जगतमे एकमत नहि अछि। नागेशक रामचरितमानस-अवतरणमे मुद्रण-संगति आ छन्द-निर्वहनक परिष्कारक आवश्यकता अछि। केशव भारद्वाजक विपुलतामे स्तर स्वाभाविके असमान अछि।

उपसंहार

जँ सदेह २१ एक बहुस्वरीय व्यापक मानचित्र छल, तँ सदेह २२ एक केन्द्रित, आलोचना-प्रधान आ सिद्धान्त-सजग अंक थिक। ई घोषित करैत अछि जे मैथिली साहित्य आब मात्र सृजने नहि, अपितु अपन विधा, अपन आलोचना-पद्धति, आ अपन सैद्धान्तिक स्वायत्तताक प्रति सचेत भऽ गेल अछि। आलोचनाक कविता-समीक्षा, विधा-सिद्धान्त, मोनोग्राफिक अध्ययन, विधिक-निबन्ध, प्रवासी-कथा, आ पर्यावरण-काव्य—ई सभ मिलि एक एहन साहित्यिक परिदृश्य रचैत अछि जे अकादमीय कैननसँ स्वतन्त्र, मुदा सैद्धान्तिक दृष्टिसँ ओकरासँ कम परिपक्व नहि अछि। एकरा मैथिली समानान्तर-साहित्यिक आन्दोलनक एक वैचारिक रूपसँ सघन दस्तावेज मानल जा सकैत अछि।

विदेह सदेह २२: मैथिली गद्य आ पद्यक युगान्तकारी समानान्तर साहित्यिक समालोचना

विषय-प्रवेश ओ विदेह साहित्यिक आन्दोलनक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

मैथिली साहित्यक नव्य-इतिहासलेखन आ विधागत आन्दोलनमे "विदेह" नामक विद्युतीय पाक्षिक पत्रिकाक योगदान युगप्रवर्तक सिद्ध भेल अछि 1। सन् २००० सँ अंतरजालपर "भालसरिक गाछ"क रूपमे शुरू भेल ई यात्रा मैथिली भाषाक प्राचीनतम डिजिटल उपस्थितिक परिचायक थिक 1। सम्पादक गजेन्द्र ठाकुरक कुशल सम्पादन आ उमेश मण्डलक सह-सम्पादनमे संचालित ई पत्रिका मात्र एकटा साहित्यिक संग्रह नै, बल्कि मैथिलीक समानान्तर इतिहास आ नव्य-न्यायक

सिद्धान्तक आलोकमे लोक-संस्कृति आ यथार्थवादी लेखनक नव मापदण्ड स्थापित करैबला एकटा सशक्त आन्दोलन थिक 1। "विदेह सदेह २२"क प्रकाशन मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ मौलिक ओ अनूदित गद्य-पद्यक एकटा अतीव महत्वपूर्ण दस्तावेजक रूपमे भेल अछि, जे पारम्परिक सीमा सँ इतर मैथिली साहित्यकेँ वैश्विक धरातल प्रदान करैत अछि 4।

एहि वृहद् संकलनक अनुक्रमक संरचना ओ विधागत विभाजनक संक्षिप्त स्वरूप निम्न सारिणीक माध्यमसँ स्पष्ट कएल जा सकैत अछि:

साहित्यिक खण्ड	रचनाकार	विधा ओ कृति प्रकार	सैद्धान्तिक/ साहित्यिक मूलभाव	पृष्ठ सीमा
गद्य-खण्ड 1	आशीष अनचिन्हार, दुर्गानन्द मण्डल, मुन्नाजी, प्रणव झा, डॉ. बचेश्वर झा, पूनम झा, आशुतोष/नागेश कुमार, रबीन्द्र नारायण मिश्र, उमेश मण्डल, केशव भारद्वाज 1	समालोचना, बीहनि कथा, लघुकथा, संस्मरण, महाकाव्य-विवेचन, सामाजिक-कानूनी विश्लेषण, दीर्घकथा, उपन्यास 1	नव्य-समीक्षाशास्त्र, उपेक्षित वर्गतक यथार्थ, कोसीक विभीषिका, महानगरीय पलायनक पीड़ा, पारम्परिक रूढ़ि-भंग, नारी चेतना, मनोवैज्ञानिक द्वन्द्व 1	पृष्ठ १ सँ ६३० धरि 1
पद्य-खण्ड 1	आशीष अनचिन्हार, नन्द विलास राय, रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारुदार', मुन्ना जी, प्रदीप पुष्प, संतोष कुमार राय 'बटोही' 1	गजल, सरस्वती वन्दना, दोहावली, लोक-गीत 1	शास्त्रीय छन्द-विधान, बहर आ रदीफ-कफियाक प्रयोग, प्रकृति-चित्रण, सामाजिक विसंगतिपर प्रहार 1	पृष्ठ ६३१ सँ ७३४ धरि 1

गद्य-खण्डक विस्तृता समालोचनात्मक विवेचना

आशीष अनचिन्हार आ अरविन्द ठाकुरक काव्य-समीक्षाशास्त्र

आशीष अनचिन्हारक समीक्षात्मक आलेख "लाल लंगौटी केर पहचान करैत कविता (आलोचना)" अरविन्द ठाकुरक कविता संग्रह "सबद मितारथ धाय्या"क एकटा सूक्ष्म आ तार्किक विश्लेषण थिक 1। समीक्षक अनचिन्हारजी प्राचीन आचार्य विश्वनाथक "साहित्यदर्पण"क 'मितार्थ' दूतक अवधारणासँ अपन विवेचन प्रारम्भ करैत छथि 1:

"सबद" मने शब्द। "मितारथ" मने मितार्थ। श्री कविराज विश्वनाथजी अपन पोथी "साहित्यदर्पण"मे तीन प्रकारक दूतक वर्णन केने छथि ताहिमेसँ "मितार्थ" दोसर प्रकारक दूत अछि आ एकर लक्षण ई जे कम बात कऽ जे ठीक काज कऽ लैत हो। मने कम बातमे बेसी काज। 1

अरविन्द ठाकुरक कविता सभक विश्लेषण करैत समीक्षक स्पष्ट करैत छथि जे कविक लेल कविता गद्यात्मकताक संग-संग तीव्र सत्ता-विरोधक माध्यम थिक 1। *सुनू जयद्रथ* कवितामे अर्जुनक द्वन्द्व आ लय उपेक्षाक वर्तनीगत कारणक चर्चा कएल गेल अछि, जाहिमे कविक भीतर बैसल अर्जुनक मनोभाव आ शुरुआत ओ अन्तमे सम्बन्धक अभावकेँ रेखांकित कएल गेल अछि 1:

"सुनू जयद्रथ एहि बेर कृष्णक मायाक मुँह नहि जोहल जाएत शुरू करब अहाँ जँ समर सूर्यास्त धरि प्रतीक्षा नहि करब हम" 1

हम हत्या करय चाहै छी कवितामे कोनो व्यक्ति विशेषक नै बल्कि सामाजिक विसंगति आ दुष्ट प्रवृत्तिक हत्याक आकांक्षा छन्हि, मुदा समीक्षक साँप बनि कऽ डँसबाक बदलाक विधिकेँ अहितकर मानैत छथि 1। *इनार* सिरीजक ५टा कविता सभक माध्यमसँ ग्रामीण परिवेशक विडम्बना, प्रवासक चिन्ता आ साहित्य अकादेमीक राजनीतिकेँ उघार कएल गेल अछि 1।

एहि आलोचनाक सर्वोत्कृष्ट बिन्दु "लाल लंगौटी"क प्रतीकात्मक व्याख्या थिक 1। भारतीय समाजमे जेना मंदिर-मजार बना कऽ कतेको दबंग अपन आय निश्चित करैत छथि, तहिना साहित्यिक सत्ता आ व्यापारमे किछु बुद्धिजीवी अपन पूर्ववर्ती गुरु आ पिताक अवशेष रूपी "लाल लंगौटी" पहीरि पुरस्कार आ यश निश्चित करैत छथि 1। अनचिन्हारजीक ई व्याख्या मैथिलीक समकालीन बौद्धिक वर्गक पाखण्डपर एकटा मर्मभेदी प्रहार थिक 1।

दुर्गानन्द मण्डल ओ डॉ. शिव कुमार प्रसादक सोंहाँत-अनसोंहाँत

दुर्गानन्द मण्डल अपन समीक्षा "सोन्हगर"मे डॉ. शिव कुमार प्रसादक काव्य संग्रह "सोंहाँत-अनसोंहाँत" आ अनुवाद-कर्म "पघलैत हिमखंड"क गम्भीर समीक्षा कयने छथि 1। समीक्षकक विचार अछि जे मैथिली साहित्यमे अधिकांश अनुवाद पुरस्कार आ आर्थिक लाभक लेल 'असाइनमेन्ट' जकाँ होइत अछि, मुदा शिव कुमार प्रसादजी एकटा गैर-सवर्ण आ सर्वहारा मंचक रचनाकार भेलाक नाते विशुद्ध साहित्यिक अनुरागसँ ओहि पोथीक सुन्दर अनुवाद केलन्हि अछि 1।

"ग्रामीण रचनाकार अपन पात्रक संगे-संग जीवन जीबै छैथ, संगे-संग संघर्ष करै छैथ, संघर्षक महत्वकेँ बेवहारिक तौरपर बुझै छैथ और तँएओ 'सम्बन्ध-बन्ध'क खियाल करै छैथ, सदैव सम्बन्ध बना कऽ रहए चाहै छैथ। ई मिथिलाक संस्कार छी।" 1

"सोंहाँत-अनसोंहाँत" काव्यक माध्यमसँ गामक जिनगीमे पैसल कोचिंग-संस्कृति ओ विद्यालयक महापंक द्वारा होइत आर्थिक शोषणक मर्मस्पर्शी चित्रण कएल गेल अछि 1। पोथीक नाम "सोंहाँत-अनसोंहाँत" थिक, मुदा ग्रामीण माटिक सुगन्धक कारणे ई पाठकक लेल पूर्णतः "सोन्हगर" (प्रिय आ सुवासित) सिद्ध होइत अछि 1।

मुन्नाजी ओ बीहनि कथाक सैद्धान्तिक मीमांसा

मुन्नाजीक "बीहनि कथा (मानकीकरण ओ तुलनात्मक पक्ष)" मैथिलीक विशिष्ट गद्य विधा "बीहनि कथा"क विकास आ ऐतिहासिकताक प्रमाणिक दस्तावेज थिक 1। मैथिलीमे जखन अंग्रेजीक "शॉर्ट स्टोरी" (Short Story) क अनुवाद "लघुकथा" रूपमे शुरू भेल, तखन विधागत दोहरीकरणक भ्रम पैदा भऽ गेल 1। एहि भ्रमकेँ तोड़बए लेल सन् १९९५ मे सहयात्री मंच, लोहना (मधुबनी)क साहित्यिक बैसारमे राजक प्रस्तावपर "बीहनि कथा" (Seed Story) विधाक जन्म भेल 1।

बीहनि कथाक मानकीकरणक विवेचन करैत मुन्नाजी विभिन्न विद्वानक मतानुसार एकर लक्षण निर्धारित करैत छथि 1:

"बीहनि माने बीज/बीया। जाहि मे विकास करबाक गुण निहित होइछ। मुदा ओ अविकसित रहैत ऐछ। समय अएला पर विकसित होइत ऐछ। ओकरा मे एक सं अनेक होएबाक गुण रहबाक चाही। बीहनि कथा-एहेन कथा, जे अनेक कथा(कथा/उपन्यास)के जन्म देबाक क्षमता राखए ओ बीहनि कथा भेल/हएत।" 1

मुन्नाजी हिन्दी विधाक मैथिली अवतरणक अन्धानुकरणक कटु आलोचना करैत छथि, जाहिमे बिना कोनो मानकताक लेखन कएल जा रहल अछि 1। ओ बीहनि कथाक प्रयोगात्मक परीक्षणक लेल कतेको कथाक तुलनात्मक समीक्षा प्रस्तुत करैत छथि 1:

इसकूल (डॉ. सत्येन्द्र झा): ई कथा बीहनि कथाक मानक शब्द सीमा सँ पैघ अछि, जाहिमे उपकथाक समावेश अछि, तँए ई बीहनि कथाक परिधि सँ बाहर अछि 1।

मौअति ओ ईमानदार छल (डॉ. सत्येन्द्र झा): ई आकारमे तँ छोट अछि, मुदा एकर शैली उपदेशात्मक अछि आ ई निष्कर्षपर पहुँचि जाइत अछि, तँए ईहो बीहनि कथाक मापदण्डपर असफल अछि 1।

भेटब डूबब (डॉ. सत्येन्द्र झा): ई कथा निर्धारित शब्द संख्याक भीतर अछि आ निस्तार विहीन अछि, तँए ई पूर्णतः बीहनि कथा थिक 1।

निर्वहन (कल्पना झा): ई कथा कथ्य-शिल्पमे पूर्ण अछि, मुदा अन्तमे निष्कर्ष आबि जएबाक कारणे बीहनि कथाक आदर्श रूप नै बनि सकल 1।

बेटा निगम (घनश्याम घनेरो): ई कथा निर्धारित शब्द सीमाक भीतर, तीक्ष्ण कथ्य आ बिना कोनो निष्कर्ष पाठकपर निर्णय छोड़बाक कारणे सर्वोत्कृष्ट बीहनि कथा थिक 1।

प्रणव झा ओ पूनम झाक आख्यान-शिल्प

प्रणव झाक दूटा विशिष्ट लघुकथा *गिद्ध* आ *एन.पी.एस.* ग्रामीण ओ शहरी मध्यमवर्गीय मानसिकताक यथार्थपरक चित्रण करैत अछि 1। *गिद्ध* कथामे रमण नामक बालकक माध्यमसँ मृत पशु सभक चमड़ा ओ हड्डी बेचि कऽ जीविकोपार्जन करैबला दलित युवकक व्यथा कहल गेल अछि 1। ई कथा पारिस्थितिक तंत्रमे

गिद्ध आ उपेक्षित वर्गक समान महत्व रेखांकित करैत अछि आ गाँधीजीक चम्पारण यात्राक बिम्ब द्वारा वेशभूषाक अन्तरालकेँ तोडबाक प्रयास करैत अछि 1। *एन.पी.एस.* कथामे दिल्ली पलायित मैथिल ब्राह्मण विनोद मिश्र आ अंजलि देवीक गाम छोड़ि महानगरीय मजदूरी करबाक विवशता ओ बुढ़ारीमे वित्तीय असुरक्षाक यथार्थताक चित्रण अछि 1। लालबत्तीपर भीख माँगैबला एकटा भूतपूर्व संभ्रान्त वृद्धक कारुणिक यथार्थ विनोद मिश्रक आँखि खोलि दैत छै आ ओ राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (NPS) खाता खोलबाक लेल विवश होइत छथि 1।

पूनम झाक बीहनि कथा *कुर्सी* सत्ता आ अधिकारक संघर्षक बिम्ब थिक, जाहिमे विधागत संक्षेप आ पैघ सामाजिक विमर्शक सुन्दर संयोजन अछि 1। सगरमाथा अंचल (सिरहा) निवासी पूनम झा अपन सुदृढ़ आख्यान-शिल्पक लेल जानल जाइत छथि 7। हिनकर ई रचना सत्तालोलुपता ओ पद-मर्यादाक संघर्षक प्रतीक थिक 8।

डॉ. बचेश्वर झाक संस्मरण ओ अन्य आलेख

डॉ. बचेश्वर झा अपन संस्मरणमे जीवनक अन्तिम पड़ावमे उमेश मण्डलक सम्पर्कमे एलापर जागल साहित्यिक स्फूर्णाक चर्चा करैत छथि 1। कोसीक प्रकोपसँ पूर्व हटनी गामक सघनता आ अपन वैष्णव पितामहक स्मृति पाठककेँ मिथिलाक पारम्परिक वैभव ओ प्राकृत-सम्पदाक अतीतमे लऽ जाइत अछि 1।

नागेश कुमार प्रेषित आशुतोषजीक *श्रीरामचरितमानस* विवेचन भक्ति, शरणागति ओ गीतोक्त निष्काम कर्मक दार्शनिक मीमांसा थिक 1। प्रभु श्रीरामक विभीषणक प्रति कहल गेल वचनक माध्यमसँ अनन्य भक्तिक स्वरूप फरिछायल गेल अछि 9। रबीन्द्र नारायण मिश्रक *बिहार शराबबंदी कानून* सामाजिक स्वास्थ्य आ घरेलू सौहार्दक परिप्रेक्ष्यमे मद्यनिषेध कानूनक प्रभावक विश्लेषण करैत अछि, जाहिसँ परिवारक आर्थिक ओ मानसिक विकास सम्भव भेल अछि 1।

उमेश मण्डल ओ जगदीश प्रसाद मण्डलक समग्र साहित्य

उमेश मण्डल द्वारा लिखित जगदीश प्रसाद मण्डलक जीवन ओ साहित्यक समीक्षा मैथिली गद्य साहित्यक एकटा अमूल्य धरोहर थिक 1। जगदीश प्रसाद मण्डलजी (जन्म १९४७) एम.ए. कएला उपरान्त समाजसेवा आ सामन्ती व्यवहारक विरुद्ध संघर्ष केलन्हि 1। लगभग चारि दशकक कानूनी ओ सामाजिक संघर्षक बाद २००४ मे ओ साहित्य क्षेत्रमे अपन पहिल उपन्यास *मौलाइल गाछक फूल* क संग प्रवेश केलन्हि 1।

मण्डलजीक समग्र साहित्यक गम्भीर समीक्षा निम्नलिखित कृति सभक आधारपर कएल गेल अछि 1:

गामक जिनगी (कथा संग्रह): एहि संग्रहक १९टा कथा सभ मिथिलाक बाढ़ि-रौदीक कारुणिक यथार्थ ओ प्राकृतिक आपदाक बीच जीवित रहबाक जिजीविषाक दस्तावेज थिक 1। *भैंटक लावा* कथामे १९८७क कोसी बाढ़िक पृष्ठभूमिपर मुसना आ जीबछीक श्रम आ लगनशील स्वावलम्बनक कथा अछि 1। *बिसाँढ़* कथामे १९६६-६७क अकाल आ रौदीक समय डोमन आ सुगिया द्वारा बाबन बीघा पोखरिमे कमलक जड़ि "बिसाँढ़" तामि कऽ पेट भरबाक आ अकालसँ लड़बाक संवेदनात्मक यथार्थ अछि 1। गजेन्द्र ठाकुरक मंतव्य अछि जे अमर्त्य सेन बंगालक अकालमे अपन कोनो सम्बन्धीक हताहत नै देखलन्हि, मुदा मण्डलजी बिसाँढ़ कथाक माध्यमसँ मिथिलाक महाविभीषिकाक यथार्थ लिखि मैथिली कथाधाराकेँ "एकभगाह" हेबासँ बचेलाह अछि 1। *पीरारक फड़* कथामे धनिया ओ पिचकुनक संघर्षक माध्यमसँ प्रकृति प्रदत्त 'पीरारक' (पीला कटहल/फल)क उपयोग कए विपन्नतापर विजय पाओल गेल अछि 1।

रहै जोकर परिवार (२०२०): संग्रहक ८टा कथा सभक माध्यमसँ वैज्ञानिक दृष्टिकोणक प्रतिपादन कएल गेल अछि 1। *दहिबरी* कथामे चैत मासक रान्हल बासी भोजन बैसाखमे खेबाक रूढ़िवादी परम्पराक वैज्ञानिक अहितकारिता देखायल गेल अछि 1। *झूठक झालि* कथामे आदिकालसँ कालिदास, मण्डन मिश्र ओ तुलसीदासक नामपर विद्वत समाजमे सत्य नुकेबाक प्रवृत्तिक आलोचना कएल गेल अछि 1।

मुड़ियाएल घर (२०१६): संग्रहक ११टा कथा सभ सामाजिक अन्धविश्वास आ कृषि-विरोधी मानसिकतापर चोट करैत अछि 1। *बगदल गाम* कथामे पढ़ल-लिखल घुरन जखन खेती शुरू करैए तँ समाज कोना "घास छिलबाक" ताना मारि ओकरा पलायन कएबाक लेल मजबूर करैत अछि, तकरा देखायल गेल अछि 1। *बत्तीसोअना* कथामे किताबी ज्ञानक दम्भ ओ व्यवहारिक ज्ञान (कोसी धारमे हेलब)क तुलना अतीव तीक्ष्णतासँ कएल गेल अछि 1।

अर्द्धांगिनी (२०१३): संग्रहक २०टा कथा सभमे शहरी एकाकीपन ओ पारम्परिक मूल्यक बिखराव चित्रित अछि 1। *दोहरी मारि* कथामे चीनी रोगसँ पीड़ित अवकाश प्राप्त प्रो. गुलाब बाबू आ हुनक पत्नीक शहरी जीवनक चाकचक्यमे बन्दी भऽ कऽ असगर मरिबाक त्रासद यथार्थ अछि 1। *घरदेखिया* कथामे दहेजक दानवी रूपक विरुद्ध निम्नवर्गीय विधवा लुखियाक "बेटीक बियाहमे ककरोसँ पाइ नै लेब"क घोषणा सामाजिक क्रान्तिक दूत थिक 1। *बहीन* कथामे सभटा पाथ तोड़ी कऽ मुसलमान सखी शबानाक पारम्परिक सामाजिक सहोदरा बनि कऽ उभरब साम्प्रदायिक सौहार्दक अनुपम उदाहरण थिक 1।

बजन्ता-बुझन्ता (२०१३): हिनक द्वितीय बीहैन कथा संग्रह थिक, जकर ६८टा कथा सभ उथल-पुथलक जीवन्त दस्तावेज थिक 1। *पनचैती* कथामे इन्दिरा आवासक घूसखोरीपर सोनेलाल बाबाक तीक्ष्ण कटाक्ष "ई गप्प वोट देबा काल किएक नै कहलहुँ" सरकारी तन्त्रक विद्रूपता देखेबैत अछि 1।

केशव भारद्वाजक आख्यान-संसारक बहुआयामी विश्लेषण

केशव भारद्वाजजीक गद्य रचना विदेह सदेह २२क सबसँ विशाल ओ समृद्ध हिस्सा थिक, जाहिमे १३टा बीहनि कथा, अनेक लघुकथा, एकटा दीर्घकथा ओ एकटा उपन्यास "पैबंद" संकलित अछि 1।

बीहनि कथाक प्रयोगात्मक धरातल

भारद्वाजजीक बीहनि कथा सभ मैथिलीक नव आख्यान-शिल्पक चरम उत्कर्ष थिक 1:

दही वाली बुढ़ी: ई कथा आन्दोलन ओ संघर्षक पृष्ठभूमिपर रचल गेल अछि 1। गामक एकटा वृद्धाक एकलौता बेटा हत्याक मिथ्या मुकदमामे जेहलमे अछि, मुदा ओ कखनो हिम्मत नै हारैत छथि 1। जेलमे बंद बेटाक प्रिय "दही" मटकीमे लऽ कऽ आबब आ निर्दोषक रिहाइक कथा सुनब एकटा विशिष्ट मातृत्वक गरिमा ओ संघर्षक प्रतीक थिक 1:"उनकर आनल दहीकऽ स्वाद हरदम मोन मे रहइ छल आ उनकासऽ बेशी दहीकऽ इंतजार रहइ छल। पुपुछला पर कहइ छलीह- हमर महीस खाली हरियर घास खाइत अछि। ओकर देल दुधकऽ हम अलग तरहसऽ दही पऊरकऽ आहां सब लेल आनञि छी।" 1

भुत-बंगला: ई कथा संयुक्त परिवारक बिखराव, उत्तराधिकारक कलह ओ अन्ततः हवेलीक "भुत-बंगला" बनि जएबाक यथार्थ चित्र थिक 1। अमेरिका गेल डाक्टर पुत्रक आकस्मिक मृत्यु ओ गामक दिअयद सभक लूट-खसोटक कारणे सभटा वैभव उजाड़ भऽ जाइत अछि 1।

मध्यस्थ: गामक सर्वमान्य मध्यस्थ "रामलाल"क माध्यमसँ सामाजिक ढाँचामे आएल बदलाव आ गामक लोकक महानगरीय पलायनक बाद पारम्परिक पंचायती व्यवस्थाक समाप्त भऽ जएबाक आ रामलालक कुण्ठित विलोपनक वर्णन अछि 1।

गामक माइट नसीब नञि: रामबाबू गामक माटिसँ एतेक ने प्रेम करैत छथि जे अपन श्राद्ध ओ चिताग्नि लेल जमीन बचा कऽ रखैत छथि, मुदा समयक चक्र कोना हुनक अन्तिम इच्छातक छीनि लैत छैन्ह 1।

लघुकथा आ सामाजिक विडम्बना

भारद्वाजजीक लघुकथा सभ लघु आकारमे गम्भीर मनोवैज्ञानिक यथार्थ समेटने अछि 1:

कन्यादान: मुरली मिश्रक पढ़ल-लिखल बेटीक बियाहक गप तय भेला बाद गामक जमीन ओ घराड़ी पौने-पौने दाममे बेचबाक विवशता आ अन्तमे सेनाक अधिकारी लड़काक संग बिना दहेजक "कन्यादान" संपन्न हेब, समाजक विसंगति आ भाग्यक यथोचित संयोगक उद्घाटन करैत अछि 1:"सब दिन एक ना होत हो रामा। जीतल काज बिन पाइये भेलइन। कनिया काकीकऽ मुरली मिसरक गप्प आइयो मोन छलइन- सब बच्चा अप्पन अप्पन भाग लऽ कऽ अबइ छइ। एहन नीक कथा मुरली मिसरकऽ हेतइन, से सब अचंभित अइछ। ईएह छइ 'कन्यादान'।" 1

पछतावा: नरेन मिश्रक पोता महेन्द्रक विदेशसँ गाम आगमन ओ कुलदेवीक "पातइड़" चढ़ेबाक यथार्थ गामक पारम्परिक सम्बन्धक जीवन्तता आ बाहरे-बाहर रहलाक पछतावाक मार्मिक वितान खोलैत अछि 1।

उपराग: दमन बाबू अपन बहिनक उपराग (शिकायत)क कारणे गाम आबैत छथि, जाहिमे मिन्नी दाईक दू-दूटा बिआह भेला उपरान्तहुँ सुन्न जीवन जीबाक त्रासदी आ पारम्परिक "दुगोला" (सामाजिक बहिष्कार)क क्षणीयता देखायल गेल अछि 1।

अएना: दीवानी मामलाक सफल वकील महिनाथ बाबू अपन वाक्पटुता आ अवसरवादिताक दम्भ रखैत छथि, मुदा गामक एकटा सीधा-साधा संगी कोना हुनकहि "महिनाथक सिद्धांत" सँ हुनका परास्त कऽ "अएना" देखा ७दैत छैन्ह, ई कथाक चरम सत्य थिक 1।

हत्यारा: चुन्नी महतोक नौकर देबनाक माध्यमसँ महानगरीय बाजारवादमे पसरल अप्राकृतिक यौन-शोषणक विभीषिका आ तकर हिंसक प्रतिक्रियाक यथार्थ विवेचन अछि 1।

हुब्बा: दीना ठाकुर अपन बाबा बालचंद्र ठाकुर (बाला बाबू)क चुनाव आ वैभवक कारणे उजड़ल गामक प्रतिष्ठा "हुब्बा" (साहस ओ सामर्थ्य) क बलेँ पुनः मंदिरक भव्य निर्माण कए स्थापित करैत छथि 1।

इच्छा: किरणक अमेरिका प्रवाससँ दिल्ली आगमन ओ लू लगलाहक कारणे मृत्यु भेलापर, विदेशी भऽ चुकल बेटा सभक पाश्चात्य "व्यक्तिगत स्वतंत्रता"क दम्भक सोझमे विवश पिता सुधीरक पत्नीक "अन्तिम इच्छा"क फोटो खींचब संवेदनात्मकताक पराकाष्ठा थिक 1।

मिशन एडमिशन: महानगरीय छात्र राजनीति, इलाकाई वर्चस्व आ एडमिशन (नामांकन)क भ्रष्ट तन्त्रक बीच बोगीमे भेल "मऊगी"क देह-स्पर्श ओ बीरू ठाकुरक लठैत गिरोहक द्वन्द्वक यथार्थ आख्यान थिक 1।

अपन लोक: भवेश ओ चालीस वर्ष पहिने गामसँ विदा भेल ललन ककाक बेटी "सीमा"क मैसेजक माध्यमसँ फेसबुकपर भेटब आ अतीतक स्मृति "टोला ओ मुसरी"क बिम्ब द्वारा गामक निश्छल प्रेमक पुनर्जीवन थिक 1।

बख्शीश: दमन बाबू कतबो उपकार कऽ कऽ कोनो यश नै पबैत छथि, मुदा मामी द्वारा अस्पतालक "दाई"केँ कए गेल "बख्शीश"क सत्य जखन मोहनक

कोठरीमे उद्घाटित होइत छै, तखन मनुष्यक नियति आ बख्शीशक यथार्थता फरिछाइत अछि 1।

टीस: देवनाथ, माधव आ प्रभातक माध्यमसँ दिल्लीमे डेरा खोजबाक संघर्ष आ अंतमे घर साफ कएला उपरान्त मकान मालिकक षड्यंत्रक शिकार बनि सामान बहरी फेकबाक मानसिक टीसक गम्भीर विवेचन अछि 1।

विश्वासघात: जोगियाक माध्यमसँ पारम्परिक खबासी-पिनभरनीक व्यवस्थाक टूटोत आ नवीन आर्थिक स्वावलम्बनक लेल दरभंगाक होटलमे काज करब, मुदा अपन पूर्ववर्ती स्वामी रामबाबूकेँ बिना समाद देल छोड़बाक कारणे उत्पन्न 'विश्वासघात'क मानसिक संत्रासक विश्लेषण अछि 1।

पापक फल: गजेन्द्र मिश्रक दम्भ आ पोखरिमे थुक फेकि कऽ मलाहिनपर हाथ उठेबाक अहंकारी कृत्य, जाहिपर मलाह-दुसाध टोलक उग्र प्रतिरोध आ अंतमे रामा ठाकुरक मिथ्या हत्याक मामलामे जेहल जेबाक यथार्थ 'पापक फल' क सिद्धान्त प्रतिपादित करैत अछि 1।

हाथक लकीर: कबीरक माध्यमसँ गंगा कात ऋषिकेशक दार्शनिक वातावरण आ हाथक लकीर पढ़ैबला पंडीजीक साधु चोला ग्रहण कए भण्डाराक भोजनपर निर्भर रहबाक नियतिक कारुणिक आख्यान अछि 1।

छक्का-पुराण: जदु ठाकुरक बेटा मोहनक नपुंसकताक डाक्टरी पुष्टी भेलापर जोहन पाठकक परिवारक दबंगई आ अंतमे 'छक्का-पुराण' क संज्ञा भेटलासँ उत्पन्न बेइज्जती आ कानूनी संघर्षक सामाजिक विद्रूपता अछि 1।

सरप्राइज: विदेशमे रहैत बेटा आ गामक मायक बीच भेल फोन-वार्ताक माध्यमसँ गामक नवीनतम् विकास, ट्रैक्टर-गाड़ीक आगमन ओ माय-बापक लेल कएल गेल सुख-सुविधाक नवनिर्माणक 'सरप्राइज'क संवेदनात्मक यथार्थ अछि 1।

अफेयर: विज्ञानक लेक्चरर दासजी आ बसंतक सम्बन्धक सोझमे स्थापित कुटिल समाज कोना एकटा पवित्र मानवीय सम्बन्धकेँ 'अफेयर'क नाम दऽ कऽ अणिमाजी ओ दासजीक चारित्रिक हनन करैत अछि, तकरा यथार्थपरक ढंगसँ विश्लेषित कएल गेल अछि 1।

केतकीक व्यथा- की कहू कथा: केतकीक बाल-विवाह, चौदह वर्षक वयसमे विवाह ओ सोलह वर्षमे वैधव्यक दंश झेलबाक संवेगात्मक आख्यान अछि, जाहिमे नारी जीवनक पारम्परिक विवशता ओ व्यथाक मार्मिक प्रकटीकरण भेल अछि 1।

भारद्वाजजीक अन्य बीहनि कथा ओ लघुकथा सभ यथा *ओ बच्चा, कमिटमेंट, मनु:गंध, सोच, गलत निर्णय, खाली हाथ, नबका धनिक, किस्मत, प्रेम विवाह-नब प्रयोग, मुड़नक केश, उठऊआ बियाह, बड़का घरक बहुरिया, दरबार, समयक चक्र, बदलल बेबहार, अनघोल, देहक नेह, लछमी बहुरिया, अजादी, गोलकी फ्रेमक चश्मा, अंत, फैसला, आत्मग्लानि, खेलौना, कल्पवास, बच्चनक बचन, रखबार, चंसगर, दोषी के?, बतहिया गाछी,* ओ *डालडा प्रसाद* 1 मानव जीवनक सूक्ष्म संवेदना, सामन्ती मनोवृत्तिक ह्रास, नारी चेतना, ओ पारम्परिक सम्बन्धक टूटोतकेँ स्वर दैत अछि। हिनकर दीर्घकथा *की सोचल- की लीखल* आ सामाजिक उपन्यास *पैबंद* मैथिली कथा-संसारमे नवीन संरचनात्मक प्रयोग थिक, जाहिमे यथार्थवादी धाराक चरमोत्कर्ष देखार होइत अछि 1।

पद्य-खण्डक काव्य-सौन्दर्य ओ नव्य-चेतना

विदेह सदेह २२ केर पद्य-खण्ड मैथिली गजल आ पारम्परिक काव्य-परम्पराक एकटा उत्कृष्ट संकलन थिक 1। मैथिली गजलक क्षेत्रमे विदेह पत्रिकाक योगदान ऐतिहासिक अछि, जाहिमे व्याकरण सम्मत बहर, रदीफ आ कफियाक गम्भीर प्रयोगपर बल देल गेल अछि 5।

एहि पद्य-खण्डक रचनाकार ओ कृति विवरणक सारिणी निम्नवत् अछि:

रचनाकार	विधा ओ कृति शीर्षक	बहर ओ काव्य-शिल्प	प्रमुख साहित्यिक सन्देश
आशीष अनचिन्हार 1	किछु गजल, भक्ति गजल 1	शास्त्रीय बहर, रदीफ-कफियाक सूक्ष्म निर्वाह 5	अध्यात्म, आत्म-संवेदना ओ युगीन विसंगतिपर गम्भीर चोट 11
नन्द विलास राय 1	सरस्वती वन्दना, धनवान 1	पारम्परिक लय, मंगलाचरण विधान 1	विद्या-दायिनीक वन्दना ओ लक्ष्मी-सरस्वतीक पारम्परिक द्वन्द्व 1
रामदेव प्रसाद मण्डल ’झारुदार’ 1	किछु झारू 1	लोक-लय, व्यंग्यात्मक शैली 1	समाजक मैलक सफाइ ओ श्रमजीवी वर्गक संघर्षक प्रतिष्ठा 12

मुन्ना जी 1	गजल 1	व्याकरण-सम्मत गजल, रदीफक प्रयोग 5	मैथिली गजलक उत्पत्ति ओ विकासक परिप्रेक्ष्यमे संवेदनात्मक अभिव्यक्ति 5
प्रदीप पुष्प 1	किछु गजल, २ टा रुबाइ 1	फारसी-अरबी छन्द-शास्त्रक अनुकूल बहर 5	प्रेम, विरह, युगीन विडम्बना आ सामाजिक समरसताक स्वर 5
संतोष कुमार राय 'बटोही' 1	कमला-बलानक मारल, रौदी आओर दहार 1	लोक-गीत ओ मुक्त छन्द 1	कोसी आ कमला बलानक कछारमे बसल लोकक शाश्वत विभीषिका 1

गजल ओ काव्य विधाक गम्भीर अनुशीलन

समकालीन मैथिली काव्यमे गजल विधाक नव्य-आगमन ऐतिहासिक थिक 5। आशीष अनचिन्हारक गजल सभमे पारम्परिक आध्यात्मिक चेतना ओ आधुनिक शून्यताक सुन्दर समन्वय भेटैत अछि 11। प्रदीप पुष्पक रुबाइ ओ गजल मैथिली काव्यकेँ एकटा नव संवेदनात्मक धरातल प्रदान करैत अछि, जाहिमे बहरक सुदृढ़ता आ कफियाक लालित्य प्रमुख अछि 5।

नन्द विलास रायजीक "सरस्वती वन्दना" आ "धनवान" पारम्परिक लोक-आकांक्षाक प्रतिफलन थिक, जाहिमे भक्ति रसक धारा बहैत अछि 1। रामदेव प्रसाद मण्डल ’झारुदार’ क "किछु झारू" कविता लोक-संस्कृति ओ उपेक्षित श्रमजीवी वर्गक संघर्षक प्रतीक थिक, जाहिमे झाड़ूक बिम्ब द्वारा समाजक मैलक सफाइ ओ समतामूलक समाजक निर्माण कविक ध्येय बुझाइत अछि 1। संतोष कुमार राय 'बटोही' क "कमला-बलानक मारल" आ "रौदी आओर दहार" कोसी आ कमला बलानक कछारमे बसल मैथिलक बाढ़ि ओ रौदीक शाश्वत विभीषिकाक यथार्थवादी आख्यान थिक, जाहिमे नदीक ताण्डव आ मनुष्यक अस्तित्वक संघर्ष हिनकर काव्यक मुख्य स्वर थिक 1।

निष्कर्ष ओ उपसंहार

विदेह सदेह २२ केर गम्भीर ओ बहुआयामी साहित्यिक समीक्षासँ ई स्पष्ट होइत अछि जे ई कृति समकालीन मैथिली साहित्यक एकटा कालजयी दस्तावेज थिक 1। गद्य-खण्डमे जतऽ जगदीश प्रसाद मण्डलक उपेक्षित वर्गक यथार्थवाद आ केशव भारद्वाजक मनोवैज्ञानिक लघुकथा सभ विधागत नव-प्रयोगक स्थापना करैत अछि, ततऽ पद्य-खण्डमे बहर सम्मत गजल ओ लोक-चेतना संपन्न कविता सभ मैथिलीक पारम्परिक काव्य-वैभवकेँ पुष्ट करैत अछि 1। गजेन्द्र ठाकुरजीक विदेह आन्दोलन मैथिली साहित्यकेँ पारम्परिक कुलीनतावादी चश्मासँ मुक्त कऽ एकटा समानान्तर, लोकतान्त्रिक ओ सर्वहारा धरातल प्रदान करैत अछि 2। विदेह सदेह २२ वर्तमानक नै वरन भविष्यक साहित्य थिक, जकर मूल्य निर्धारण आगामी कतेको दशक धरि होइत रहत 1।

Works cited

विदेह सम्पादकीय - विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका, accessed on June 16, 2026, https://www.videha.co.in/aboutme.htm

विदेह मैथिली विहनि कथा, accessed on June 16, 2026, https://archive.org/download/videha-shishu-utsav/VIDEHA_VIHANI_KATHA.pdf

४. अनुलग्नक (पृ. १-४२८), accessed on June 16, 2026, https://gajendrathakur123.files.wordpress.com/2023/06/videha_archive_july_2023_version.pdf

मैथिली गजल - विकिपिडिया, accessed on June 16, 2026, https://mai.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AE%E0%A5%88%E0%A4%A5%E0%A4%BF%E0%A4%B2%E0%A5%80_%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%B2

अक्टोबर | 2009 | विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका, accessed on June 16, 2026,

https://videhamaithili.wordpress.com/2009/10/

रचना | विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका, accessed on June 16, 2026, https://videhamaithili.wordpress.com/category/%E0%A4%B0%E0%A4%9A%E0%A4%A8%E0%A4%BE/

ISSN 2229-547X VIDEHA विदेह ३६६ म अंक १५ मार्च २०२३ (वर्ष १६ मास, accessed on June 16, 2026, https://archive.org/download/videha-262/VIDEHA_366_Kaithi.pdf

स्वारथ साँच जीव कहुँ ऐहा । मन क्रम बचन राम पद नेहा ।। (श्रीरामचरितमानस - ७/९५/१) - स्वाध्याय, accessed on June 16, 2026, http://www.swaadhyaay.com/home/previous/2

विदेह सदेह २२, accessed on June 16, 2026, https://archive.org/download/videha-shishu-utsav/videha_sadeha_22_Tirhuta.pdf

वि दे ह রিদেরু Videha বিদেহ, accessed on June 16, 2026, https://archive.org/download/videha-262/VIDEHA_346.pdf

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal রিদে, accessed on June 16, 2026, https://archive.org/download/videha-262/Videha_270.pdf

विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका, accessed on June 16, 2026, https://www.videha.co.in/new_page_109.htm

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह-सदेह २२ : एक विस्तृत साहित्यिक समीक्षा — उपक्रम : केन्द्र-निर्धारित संकलनक स्वरूप

अध्याय 13 · विदेह-सदेह २३ : एक विस्तृत साहित्यिक समीक्षा — उपक्रम : विश्वकोशीय संकलनक स्वरूप

सारांश विदेह-सदेह २३ (अंक ३०१-३१६) विदेह-सदेह शृंखलाक अखन धरिक सबसँ विशाल आ बहुस्वरीय अंक थिक। नौ सय इक्यावन पृष्ठक गद्य-खण्ड आ तीन सय सोलह पृष्ठक पद्य-खण्ड मिलि साठिसँ ऊपर रचनाकारक समावेश करैत अछि—इतिहास, भाषाशास्त्र रिपोर्ताज, नाटक, कथा, आलोचना, संस्मरण, धर्मशास्त्र, चिकित्सा-जागरण आ काव्य धरि। ई अंक विदेह-आन्दोलनक विश्वकोशीय महत्त्वाकांक्षाकेँ प्रतिफलित करैत अछि—जतय सम्पादकीय दृष्टि एक संग शास्त्रीय परम्परा, सुबाल्टर्न स्वर, प्रवासी मैथिल चेतना, आ समकालीन संकट (विशेषत: कोरोना महामारी) केँ समेटि लैत अछि।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · नाटक · कथा · बाल-साहित्य · इतिहास

विदेह-सदेह २३ (अंक ३०१-३१६) विदेह-सदेह शृंखलाक अखन धरिक सबसँ विशाल आ बहुस्वरीय अंक थिक। नौ सय इक्यावन पृष्ठक गद्य-खण्ड आ तीन सय

सोलह पृष्ठक पद्य-खण्ड मिलि साठिसँ ऊपर रचनाकारक समावेश करैत अछि—इतिहास, भाषाशास्त्र, रिपोर्ताज, नाटक, कथा, आलोचना, संस्मरण, धर्मशास्त्र, चिकित्सा-जागरण आ काव्य धरि। ई अंक विदेह-आन्दोलनक विश्वकोशीय महत्त्वाकांक्षाकेँ प्रतिफलित करैत अछि—जतय सम्पादकीय दृष्टि एक संग शास्त्रीय परम्परा, सुबाल्टर्न स्वर, प्रवासी मैथिल चेतना, आ समकालीन संकट (विशेषतः कोरोना महामारी) केँ समेटि लैत अछि।

गद्य-खण्ड

गजेन्द्र ठाकुर : सम्पादकीय दृष्टि आ भाषा-इतिहास

संग्रहक उद्घाटन गजेन्द्र ठाकुरक "एडिटर्स चोइस सीरीज" सँ होइत अछि, जे विदेहक अभिलेखसँ चुनल मील-पत्थर रचनाक भाष्य प्रस्तुत करैत अछि—बलात्कारपर मैथिलीक पहिल (अनूदित) कविता, ब्रेस्ट कैंसरपर मीना झाक पहिल कथा, सन्दीप कुमार साफीक "मैथिलीक पहिल आ एकमात्र दलित आत्मकथा", आ जगदीश प्रसाद मण्डलक "बिसाँढ़।" विशेष उल्लेखनीय अछि मण्डलजीक टैगोर-पुरस्कृत कथाक चर्चामे सम्पादकक ऐतिहासिक प्रस्थापना—जे "मैथिली साहित्यकेँ दू कालखण्डमे बाँटि कऽ पढ़ए जाए लागल- जगदीश प्रसाद मण्डलसँ पूर्व आ जगदीश प्रसाद मण्डल आगमनक बाद।" हिनकर दोसर बृहत् योगदान—मिथिलाक इतिहास भाग-२, भाषा आ प्रौद्योगिकी, तिरहुता लिपिक उद्भव आ विकास, आ पुबरिया भाषासभक सम्बन्ध (बांग्ला, असमिया, ओड़िया)—मैथिली भाषाशास्त्रक गम्भीर शोध थिक। ब्राह्मी-तिरहुता लिपि-विकास, पाणिनीक जन्मस्थल शलातुर, आ मिथिलामे वज्रयान बौद्ध (तारा, उग्रतारा, सरहपाद) क उपस्थितिक विवेचना मैथिली अस्मिताक प्राचीनताकेँ प्रमाणित करबाक चेष्टा थिक। ई खण्ड डिजिटल-युगमे मैथिली लेखन, ई-प्रकाशन, आ लिपि-संरक्षणक दस्तावेज सेहो थिक।

इरा मल्लिक : बीहनि कथाक संक्षिप्तता

जामनगर (गुजरात) सँ लिखि रहल इरा मल्लिकक दूटा बीहनि कथा ("असमंजस", "पाहुन एलखिन") प्रवासी मैथिल स्त्री-दृष्टिक परिचायक थिक। (हिनकर विपुल काव्य-योगदान पद्य-खण्डमे अछि।)

अरुण लाल दास : लोककथा आ बीहनि कथा

अरुण लाल दासक "कर्म प्रधान विश्व करि राखा" राजस्थानी लोक-लघुकथाक मैथिली रूपान्तर थिक, जे लोककथा-अन्तरण-परम्पराकेँ आगू बढ़बैत अछि। हिनकर मौलिक बीहनि कथा ("लहास", "गाछ बिरिछ सँ प्रेम", "दर्शन") प्रकृति, मृत्यु, आ दर्शनक संक्षिप्त चित्र रचैत अछि।

आभा झा : बहुविध कथा-संसार

आभा झाक विपुल योगदान ("पिघलैत हिमखण्ड", "कनियें", "साम्राज्य", "भरोस", "नाटक", "भय", "विमोचन", "स्वार्थक रंग", "बौक") विषयगत विविधताक परिचायक थिक—पारिवारिक सम्बन्ध, भय, स्वार्थ, आ मूकताक मनोवैज्ञानिक चित्र। (हिनकर काव्य-योगदान सेहो पद्य-खण्डमे अछि, जे हिनका दुनू विधाक रचनाकार सिद्ध करैत अछि।)

श्याम सुन्दर शशि : प्रवासी श्रमक चित्र

श्याम सुन्दर शशिक "कतारक मैथिल भेड़ा चरवाह" खाड़ी-देशमे श्रम करैत मैथिल प्रवासीक जीवनक मार्मिक चित्र थिक—जे मिथिलाक आर्थिक पलायनक यथार्थकेँ उघारैत अछि। ई रचना मैथिली कथाक भौगोलिक विस्तारक प्रमाण थिक।

उमेश कुमार महतो आ सुमित आनन्द : हस्तशिल्प आ रिपोर्ट

उमेश कुमार महतोक बहादुरगंजसँ रिपोर्ट आ सुमित आनन्दक "भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना" मिथिलाक भौतिक-सांस्कृतिक सम्पदा (विशेषतः मधुबनी-कला आ हस्तशिल्प) क आर्थिक सम्भावनाकेँ रेखांकित करैत अछि। ई आलेख मैथिली गद्यकेँ विकास-विमर्शक भाषा बनबैत अछि।

सुभाष कुमार कामत : वर्गीय बीहनि कथा

घोघरडीहा (मधुबनी) क सुभाष कुमार कामतक छहटा बीहनि कथा ("तनखाह", "भूख", "बुढवा पेंशन", "मैथिली", "औंठा", "मुनाफ़ा") वर्गीय आ आर्थिक विडम्बनाकेँ संक्षिप्त रूपमे उघारैत अछि। "भूख", "बुढवा पेंशन" आ "औंठा" (अंगूठा-छाप निरक्षरता) सन शीर्षक स्वयं सुबाल्टर्न-यथार्थक संकेत दैत अछि।

मनोज झा "मुक्ति" आ नवेन्दु कुमार झा : संस्था-समीक्षा

काठमांडूसँ मनोज झा "मुक्ति"क "अस्तित्वक कटघेरामे मिथिला-मैथिलीक संघ संस्थासब, निष्कर्षविहीन सम्मेलन!" आ आकाशवाणी-पटनाक नवेन्दु कुमार झाक "अस्तित्वक लेल संघर्ष करैत पटनाक विद्यापति स्मृति पर्व" मैथिली-संस्थासभक आत्म-आलोचनात्मक विवेचना थिक। ई दुनू आलेख संगठनात्मक गुटबाजी आ सम्मेलनक निरर्थकतापर तीक्ष्ण प्रश्न उठबैत अछि—जे विदेह-आन्दोलनक संस्थागत-आलोचनात्मक स्वरसँ मेल खाइत अछि।

सुशांत झा आ सुभाष साह : इतिहास आ प्रवासी-रिपोर्ट

सुशांत झाक "की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि?" आ "मिथिला मंथन" पुरातात्त्विक-ऐतिहासिक जिज्ञासाकेँ छुबैत अछि। लन्दनसँ सुभाष साहक "लन्दनमे नेपाल मेला २००८" क रिपोर्ट प्रवासी मैथिल-समुदायक सांस्कृतिक उपस्थितिक दस्तावेज थिक।

हितेन्द्र गुप्ता : शराब-नीतिक टिप्पणी

हितेन्द्र गुप्ताक "आब नहि खुलत नवका शराबक दोकान" समकालीन शराब-नीतिपर लघु पत्रकारीय टिप्पणी थिक—जे विदेहक सामाजिक-सरोकारक पत्रकारिताकेँ आगू बढ़बैत अछि।

गंगेश गुंजन : वरिष्ठ स्वर आ लेखकीय नैतिकता

वरिष्ठ कवि गंगेश गुंजनक योगदान ("भोज परक आँटी", "मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप", "किछु एहनो बात विषय") पीढ़ी-चेतना आ लेखकीय नैतिकताक गम्भीर विमर्श प्रस्तुत करैत अछि। "सगर राति दीप जरय"क उपलब्धिमे स्व. प्रभास कुमार चौधरीक नामोल्लेख नहि होयबापर हिनकर खेद —"हमरा सभ लेखक छी तैं एहन असावधानी करबा लेल स्वाधीन नहि छी"—साहित्यिक स्मृति आ कृतज्ञताक नैतिक प्रश्नकेँ उठबैत अछि। ओ अपनाकेँ "नागार्जुन-यात्रीक कारयात्री प्रस्थान" मानैत परम्परा-बोधकेँ रचनाकर्मक उत्तरदायित्व बनबैत छथि। ई एक वरिष्ठ रचनाकारक आत्म-स्थापनक दुर्लभ दस्तावेज थिक।

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र : यायावरी आ नृवंशशास्त्र

डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक "यायावरी" (नॉर्थ कछार हिल्स : धरतीक नुकाएल स्वर्ग) यात्रा-वृत्तान्त आ नृवंशशास्त्रीय अवलोकनक उत्कृष्ट मिश्रण थिक। जटिंगा पहाड़ी, बाँसक तेईस नस्ल, आ स्थानीय जनजातीय जीवनमे बाँसक केन्द्रीयता (झोपड़ीसँ वाद्ययन्त्र धरि) क विवेचना मैथिली यात्रा-गद्यकेँ वैज्ञानिक-नृवंशशास्त्रीय गाम्भीर्य दैत अछि।

जितेन्द्र झा आ उमेश मण्डल : रिपोर्ताज आ ई-पत्रकारिता

जनकपुरधाम (नेपाल) क जितेन्द्र झाक रिपोर्ताज सीमापार मैथिल-जीवनक झलक दैत अछि। उमेश मण्डलक "लोक-नाट्य-वाद्य मण्डली- संकलन" आ "मैथिलीमे ई-पत्रकारिता" लोक-परम्परा आ डिजिटल-इतिहासक दस्तावेजीकरण थिक। मिथिलाक्षर-ब्रेल-IPA लिपि-प्रयोग, नचिकेताक नाटकक मिथिलाक्षर संस्करण, आ उदयप्रकाशक "मोहनदास"क मैथिली अनुवाद (विनीत उत्पल) क उल्लेख मैथिलीक तकनीकी-प्रकाशकीय उपलब्धिकेँ अभिलेखित करैत अछि।

कीर्तिनाथ झा : "नपुंसक" — व्यंग्य आ वीरता

कीर्तिनाथ झाक "नपुंसक" लघुकथा संग्रहक एक उत्कृष्ट कथा थिक। कबै झाक गप्पबाजी आ रघुवीरक सैनिक-वीरताक कथा (जतय गाम द्वारा "नपुंसक" कहल लोक आतंकी-हमलाकेँ विफल कऽ अपन "दाग धो" दैत अछि) पुरुषत्व, सम्मान, आ सामाजिक-कलंकक प्रश्नकेँ व्यंग्य आ गाम्भीर्य दुनू स्वरमे उठबैत अछि। महिसबारक ठहक्का आ तमाकूक प्रसंग ग्रामीण-संवादक जीवन्तताकेँ रचैत अछि।

आनन्द कुमार झा : रंगमंच-चिन्तन आ बाल-नाटक

आनन्द कुमार झाक योगदान ("मैथिलीक वर्तमान रंगमंच, धर्मिता आ स्वतन्त्रता", "मैथिली नाटक आ ग्रामीण रंगमंच", "कने हंसि लिअ", बाल-नाटक "बोलूक बेदना") मैथिली रंगमंचक सैद्धान्तिक विवेचना आ व्यावहारिक नाट्य-लेखन दुनूकेँ समेटैत अछि। ग्रामीण रंगमंचपर हिनकर ध्यान विदेह-आन्दोलनक लोक-केन्द्रित दृष्टिसँ मेल खाइत अछि। (हिनकर काव्य सेहो पद्य-खण्डमे अछि।)

नबोनारायण मिश्र (प्रस्तुति : आशीष अनचिन्हार)

आशीष अनचिन्हार द्वारा तीन खेपमे प्रस्तुत नबोनारायण मिश्रजीक रचना ऐ अंकक एक महत्त्वपूर्ण सम्पादकीय-आलोचनात्मक हस्तक्षेप थिक। अनचिन्हार "फिलर" (मंच-रिक्तता भरनिहार उपेक्षित साहित्यकार) क अवधारणा रचैत तर्क दैत छथि जे "फिलरे टा मात्र सुच्चा साहित्यकार होइत छथि"—कारण हुनका पुरस्कार वा प्रशंसाक लालसा नहि। कलकत्ताक उपेक्षित रचनाकार (नबोनारायण, गंगा झा, सुरेंद्र ठाकुर) क रचनाकेँ साहित्यिक-इतिहासमे स्थान देबाक ई प्रयास विदेह-आन्दोलनक काउण्टर-कैननिकल (समानान्तर-कैनन) दृष्टिक प्रत्यक्ष अनुप्रयोग थिक।

आशीष अनचिन्हार : कथा, आलोचना आ मीडिया-इतिहास

अनचिन्हारक अपन विपुल योगदान कथा (नौ बीहनि कथा : "पत्नीभक्त", "अंतर", "लक्ष्मी", "खाए बला पार्टी", "भविष्य", "प्रतिभाशाली", "सोति", "मतलब", "नर्क"; दू लघुकथा : "सपना आ भ्रम", "घर"), गजल-विमर्श ("दुष्यंत कुमारक गजलक मिजाज सन गजल मैथिलीमे कहिया लीखल जेतै"), आ डिजिटल-मीडिया-इतिहास (मैथिली Apps, यूट्यूब, वेब-पत्रकारिता, फेसबुक, "एकटा मैथिली गजल जे बदलि देलकै मैथिली गीत-संगीतक इतिहास")

कैं समेटैत अछि। ई बहुमुखी योगदान अनचिन्हारकैं कथाकार, आलोचक, आ मीडिया-इतिहासकार—तीनू रूपमे प्रतिष्ठित करैत अछि।

प्रणव झा आ लालदेव कामत : चिकित्सा आ इतिहास

प्रणव झाक "की छै 'डीएनबी' आ की लाभ छै" चिकित्सा-शिक्षाक जन-जागरण-आलेख थिक—जे मैथिलीकैं तकनीकी-चिकित्सकीय विमर्शक भाषा बनबैत अछि। लालदेव कामतक "भूगोलमे मिथिलाराज कहियाधरि" मिथिलाक भौगोलिक-ऐतिहासिक सीमाक जिज्ञासाकैं छुबैत अछि।

ज्ञानवर्द्धन कंठ : लघु-गद्यक विपुलता

ज्ञानवर्द्धन कंठक बारह लघु-गद्य ("खेत", "डॉलीक नामांकन", "गदहाक इलाज", "बोंगहा मिठाइ", "कुसियारक गाड़ी", "मोबाइलक रुटीन", "कैमरामैन", "हॉर्लिक्स", "मेंटल", "बुढ़िया दाइ", "गहूमक रखबारी", "पचहीबाली काकीक यात्रा-वृत्तांत") ग्रामीण-जीवनक सूक्ष्म, हास्य-व्यंग्यपूर्ण चित्रावलीक रचना करैत अछि। आधुनिकता (मोबाइल, कैमरा, हॉर्लिक्स) आ परम्पराक टकरावक ई लघु-चित्र समकालीन मिथिलाक संक्रमणकैं रोचक ढंगसँ उघारैत अछि। (हिनकर विपुल काव्य सेहो पद्य-खण्डमे अछि।)

कंचन कंठ आ मुन्ना जी : लघुकथा आ बीहनि कथा

कंचन कंठक "मुक्ति" एक-पंक्तीय बीहनि कथाक कौशल देखबैत अछि। मुन्ना जीक लघुकथा "बीचला लोक" आ बीहनि कथा "हिक" विधा-सजगताक संग रचल अछि—जे हिनकर विधा-सैद्धान्तिक चेतना (जे सदेह २२ मे प्रकट भेल छल) क व्यावहारिक प्रयोग थिक।

विन्देश्वर ठाकुर आ प्रभाष अकिंचन : सामाजिक बीहनि कथा

धनुषा (नेपाल), हाल कतारक विन्देश्वर ठाकुरक बीहनि कथा ("न्याय", "छुवाछुत") जातीय-न्यायक प्रश्नकैं संक्षिप्त रूपमे उघारैत अछि। प्रभाष अकिंचनक बीहनि कथा ("रिलीफ", "जतरा") आपदा-राहत आ यात्राक सामाजिक यथार्थकैं छुबैत अछि—विशेषतः कोरोना-कालक छुआछूतक पुनरुत्थानक तीक्ष्ण अवलोकन उल्लेखनीय अछि।

पूनम मण्डल आ मीना झा : पुरस्कार आ प्रवासी-समाचार

पूनम मण्डलक "टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११" जगदीश प्रसाद मण्डलक "गामक जिनगी" कैं भेटल पुरस्कारक विस्तृत दस्तावेज थिक—जे मैथिलीकैं पहिल बेर ऐ राष्ट्रीय सम्मानमे स्थान देबाक ऐतिहासिक क्षणकैं अभिलेखित करैत अछि। मीना झाक "मैथिल समाज ऑफ़ यु.के."क रिपोर्ट प्रवासी मैथिल-सांस्कृतिक संगठनक दस्तावेज थिक।

प्रियंवदा तारा झा : बीहनि कथाक शृंखला

प्रियंवदा तारा झाक दसटा बीहनि कथा ("परंपरा", "अजगुत", "मोनक गप्प", "पर उपदेश कुशल बहुतेरे", "सम्मान", "स्वाभिमान", "की बुझबै", "दूरक ढोल सोहाओन", "विकल्प", "वापसी") कहावत-आधारित शीर्षकक माध्यमसँ सामाजिक विडम्बनाकैं उघारैत अछि। (हिनकर काव्य सेहो पद्य-खण्डमे अछि।)

संतोष कुमार राय "बटोही" : ग्राम-चेतना

रिसर्च-स्कॉलर संतोष कुमार राय "बटोही"क "गाम" ग्रामीण-स्मृति आ यथार्थक गद्य थिक—जे हिनकर सुबाल्टर्न-पर्यावरणीय काव्य-दृष्टि (जे पूर्व अंकमे प्रकट भेल छल) क गद्य-विस्तार थिक।

डॉ. अर्पणा : स्त्री-शब्द आ रामायण-अध्ययन

डॉ. अर्पणाक चारि आलेख ("नारी शब्दक लेल किछु प्रमुख शब्दक विवेचना", रमेश्वर चरित मिथिला रामायणमे "कौशल्या", "पुष्कर काण्डक विशेषता", लालदासक रामायणमे विधि-व्यवहार) नारीवादी-शब्दशास्त्रीय आ रामायण-पाठीय अध्ययनकैं समेटैत अछि। स्त्री-शब्दक भाषाशास्त्रीय विवेचना आ मिथिला-रामायण-परम्पराक स्त्री-पात्रपर ध्यान विदेह-आन्दोलनक स्त्री-समावेशी दृष्टिसँ मेल खाइत अछि।

डॉ. चित्रलेखा : लोक-संस्कृति-शास्त्र

डॉ. चित्रलेखाक छह आलेख ("मिथिलामे गीत नादक महत्व", "पावनि-तिहार", "मिथिलाक परिचय", "भाषा एवं साहित्य", "नामकरण एवं प्रादूर्भाव", "सामा-चकेबा") मिथिला-लोकसंस्कृतिक व्यवस्थित विवेचना थिक। सामा-चकेबा सन स्त्री-केन्द्रित लोक-पर्वपर विशेष ध्यान सांस्कृतिक-नृवंशशास्त्रीय गाम्भीर्यकैं देखबैत अछि।

विष्णु कान्त मिश्र : पौराणिक-राजनीतिक रूपक

विष्णु कान्त मिश्रक "महादेवक कूटनीति" आ "चारि पत्र" पौराणिक-कथाक माध्यमसँ समकालीन राजनीतिक रूपक रचैत अछि। (हिनकर काव्य—"चीर

हरण", "बालबोध", "कुरसी" आदि—सेहो पद्य-खण्डमे अछि, जे हिनका द्विविध रचनाकार सिद्ध करैत अछि।)

यात्री-केन्द्रित शोध : सुभाष चन्द्र झा, अनुपम रैना, ललन कुमार झा

ऐ अंकक एक प्रमुख विद्वत्तापूर्ण स्तम्भ अछि वैद्यनाथ मिश्र "यात्री" (नागार्जुन) पर केन्द्रित शोध। डॉ. सुभाष चन्द्र झाक "यात्रीक साहित्य यात्रा" यात्रीक प्रगतिवादी-यथार्थवादी काव्यक संक्षिप्त मूल्यांकन थिक, जे हिनकर "पत्रहीन नग्न गाछ" केँ "मिथिलाक नग्न गरीबीक दस्तावेज" मानैत अछि। अनुपम रैनाक चारि-आलेखीय शोध-शृंखला ("यात्रीक व्यक्तित्व ओ कृतित्व", गद्य-साहित्यमे मिथिला-समाज, पद्यमे मिथिला-समाज, समसामयिक जीवनक अभिव्यक्ति) यात्रीक जन्म-तिथि-विवाद, वंश-परिचय (वत्सगोत्रीय पलिवार समौल मूल), शिक्षा-दीक्षा, आ काव्य-दृष्टिक विस्तृत अकादमीय विवेचना प्रस्तुत करैत अछि। ई शोध यात्रीकेँ "चन्दा झाक लोकवादिता, सीताराम झाक व्यंग्य-ठेंठ भाषा, आ भुवनक प्रगतिशीलताक एकाकार" रूपमे प्रतिष्ठित करैत अछि। ई गहन शोध मैथिली आलोचनाक अकादमीय परिपक्वताक प्रमाण थिक।

डॉ. ललन कुमार झा : धर्मशास्त्रीय समीक्षा

डॉ. ललन कुमार झाक पाँच आलेख ("पं. तेजनाथ झा ओ संस्कार", "म.म. राजनाथ मिश्र ओ तिथि निर्णय", "पं. कुशेश्वर कुमर ओ पर्व निर्णय", "म.म. उमापति ओ शुद्धि निर्णय", "पुत्र ओ पितृकर्म") मिथिलाक धर्मशास्त्रीय-निबन्ध-परम्पराक गम्भीर समीक्षा थिक। पुंसवन-संस्कार, गर्भाधान, आ संस्कार-विधिक स्मृतिशास्त्रीय विवेचना (आश्वलायन, पारस्कर, गोभिल गृह्यसूत्रक उद्धरणक संग) मिथिलाक शास्त्रीय-बौद्धिक विरासतक दस्तावेजीकरण थिक। ई खण्ड विदेह-आन्दोलनक समानान्तर-दृष्टिमे शास्त्रीय-परम्पराक स्थानकेँ देखबैत अछि—जतय सुबाल्टर्न आ शास्त्रीय दुनू सह-अस्तित्वमे अछि।

नन्द विलास राय : बहुविध कथा

नन्द विलास रायक नौ रचना ("सरस्वती पूजाक परसाद", "बुढ़क दुख", "प्रायश्चित", "पत्नीक फरमाइस", "बरबैरेपर छी", "अदरश विआह", "हमरे पार्टीक लोक", "एमेली साहैब", "स्वाभिमान") विषयगत विविधताक परिचायक थिक—पारिवारिक हास्य, राजनीतिक व्यंग्य, आ सामाजिक यथार्थ। हिनकर सुबाल्टर्न-स्वर आ ग्रामीण-शब्दावली विदेह-आन्दोलनक लोकभाषा-निष्ठाकेँ आगू बढ़बैत अछि।

योगेन्द्र पाठक "वियोगी" : "नरक विजय" — व्यंग्य-नाटक

योगेन्द्र पाठक "वियोगी"क "नरक विजय" एक दीर्घ व्यंग्य-नाटक थिक। यमलोक-सुधार आ "नरक-विजय"क विज्ञान-कल्पना (science fiction) रूपकक माध्यमसँ ई समकालीन समाज, मृत्यु, आ नैतिकतापर व्यंग्य रचैत अछि—"ई विज्ञानक चमत्कारे छल जाहि सँ हम सब यमलोक मे सुधार करबा सकलहुँ।" नाट्य-विधामे विज्ञान-कल्पनाक ई प्रयोग मैथिली रंगमंचक एक नवीन प्रयोग थिक।

डॉ. विनीत उत्पल : "नागा फकीर"

डॉ. विनीत उत्पलक "नागा फकीर" लघुकथा रहस्य-आध्यात्म आ सामाजिक-यथार्थक मिश्रण थिक। (विनीत उत्पल विदेहक डिजिटल-अनुवाद-परियोजनाक प्रमुख स्तम्भ रहल छथि, जकर उल्लेख सम्पादकीय खण्डमे अछि।)

कुसुम ठाकुर : "अलग राज्यक माँग कतेक सार्थक?"

कुसुम ठाकुरक "अलग राज्यक माँग कतेक सार्थक?" एक साहसिक राजनीतिक-निबन्ध थिक, जे मिथिला-राज्यक माँगपर आलोचनात्मक प्रश्न उठबैत अछि। लेखिका तर्क दैत छथि जे "राज्य अलग भेला सँ मिथिलाक उत्थान भऽ जेतैक?" आ झारखण्डक उदाहरण (नौ सालमे सात मुख्यमन्त्री) दैत कहैत छथि जे मूल समस्या मानसिकता आ स्वार्थमे अछि, सीमा-विभाजनमे नहि। ई निबन्ध संग्रहक सबसँ विवाद-योग्य आ साहसिक राजनीतिक-हस्तक्षेप थिक—जे विदेह-मंचक वैचारिक खुलापनकेँ देखबैत अछि, कारण ई मुख्यधारक मिथिला-राज्य-आन्दोलनसँ असहमत स्वर अछि।

अमरेश कुमार लाभ : सामाजिक व्यंग्य-कथा

अमरेश कुमार लाभक बीहनि कथा ("लेबलीटिये बड्ड छन्हि", "बेटी बचाबू") समकालीन सामाजिक-राजनीतिक नारा (जेना "बेटी बचाबू") क खोखलापनपर व्यंग्य रचैत अछि। (हिनकर काव्य सेहो पद्य-खण्डमे अछि।)

स्त्री-रचनाकारक गद्य : ममता कर्ण, सुचिता कुमारी, दीपा झा, विद्या रश्मि

जमशेदपुरक ममता कर्णक "उपराग", सुचिता कुमारीक "पोतीक बियाह", दीपा झाक बाल-कथा "दादी परी" (नेन्ना-भुटका लेल), आ विद्या रश्मिक संस्मरण "गलतीक बोध" स्त्री-दृष्टिक विविध आयामकेँ प्रस्तुत करैत अछि। "पोतीक बियाह" आ "दादी परी" पारिवारिक-पीढ़ीगत सम्बन्ध आ बाल-साहित्यकेँ छुबैत अछि। ई स्त्री-स्वरसभ संग्रहक लैंगिक-संतुलनकेँ बढ़बैत अछि।

जन-जागरण गद्य : डॉ. मालती मधु, पल्लवी सिन्हा, जवाहर लाल कश्यप

डॉ. मालती मधुक "स्तन कैंसरक शुरूआती लक्षण आ रोकथाम", पल्लवी सिन्हाक "तीसी गुणक खान अछि", आ जवाहर लाल कश्यपक "स्ट्रेश बस्टर" स्वास्थ्य-जागरण आ जीवनशैली-विषयक उपयोगितावादी गद्य थिक। एहि रचनासभ मैथिलीकेँ जन-स्वास्थ्य आ कल्याण-शिक्षाक माध्यम बनबैत अछि—जे भाषाक व्यावहारिक-सामाजिक उपयोगिताक प्रमाण थिक।

पद्य-खण्ड

पद्य-खण्ड मुख्यतः दूटा प्रवृत्तिसँ चिह्नित अछि : एक, कोरोना-महामारीक काव्यात्मक प्रतिक्रिया; दोसर, स्त्री-स्वर आ नारी-अस्मिताक सघन उपस्थिति।

जयंती कुमारी, कल्पना झा, आशीष नीरज : गजल आ महामारी

जयंती कुमारीक गजल छन्द-प्रयोगक परिचायक थिक। बोकारो (झारखण्ड) क कल्पना झाक "अम्मा", "साओन", "हम कतय छी?" मातृ-स्मृति आ अस्तित्व-बोधकेँ छुबैत अछि। आशीष नीरजक "कोरोना" महामारी-काव्यक प्रारम्भिक स्वर थिक—"इ कोरोना के सेहो हम हरायब" मे संकटक बीच आशाक उद्घोष अछि।

आभा झा : दार्शनिक-सामाजिक काव्य

आभा झाक सात कविता ("जोड़-घटाव", "चेतना", "अपन घेर", "व्यथा", "कृष्ण केर माहात्म्य", "श्रमिक", "मतिविशेख") दार्शनिक-चेतना, श्रमिक-संवेदना, आ भक्ति-भावकेँ समेटैत अछि—जे हिनका गद्य आ पद्य दुनूमे समर्थ रचनाकार सिद्ध करैत अछि।

बाबा बैद्यनाथ : छन्द-प्रयोग

बाबा बैद्यनाथक "कुण्डलिया छंद" आ गजल पारम्परिक छन्द (कुण्डलिया) आ आधुनिक गजल दुनूमे हिनकर सामर्थ्यकेँ देखबैत अछि—जे मैथिली काव्यक छन्द-विविधताक प्रमाण थिक।

आनन्द दास आ प्रियंवदा तारा झा : गीति-काव्य

आनन्द दासक "चिठ्ठी", "नींद आबि जाइत अछि" आ प्रियंवदा तारा झाक "उम्मीदक आश्रय", "हम गाम छी", "व्यूह", "मोन होइछ" गीति-संवेदना आ ग्राम-स्मृतिकेँ रचैत अछि। "हम गाम छी" मे गाम-केन्द्रित अस्मिता-बोध उल्लेखनीय अछि।

सविता "सुमन", कंचन कंठ, प्रभाष अकिंचन, संतोष "बटोही"

सविता "सुमन"क "स्त्री" नारी-अस्मिताक स्वर थिक। कंचन कंठक "हमर नानीगाम", "अजगुत बुचिया" स्मृति आ बाल-चित्रकेँ रचैत अछि। प्रभाष अकिंचनक "पंच राम दीप", "पावस मिलन" आ संतोष "बटोही"क "आउट इनकम" विविध जीवन-यथार्थकेँ छुबैत अछि।

आशीष अनचिन्हार : गजल आ भक्ति-गजल

अनचिन्हारक "किछु गजल, किछु भक्ति गजल" मैथिली गजलक धर्मनिरपेक्ष-प्रतिरोधी आ भक्तिपरक—दुनू आयामकेँ देखबैत अछि, जे हिनकर गजल-प्रयोगक विस्तारक प्रमाण थिक।

विजय इस्सर "वत्स", नबोनारायण मिश्र : आजाद गजल आ नवगीत

विजय इस्सर "वत्स"क "अपराधी छी हम", "बचबिहऽ हो कक्का", "आजाद गजल" आ नबोनारायण मिश्रक "ई कीर्तिमान बनल", "नवगीत", "बिडम्बना" आधुनिक काव्य-प्रयोग (आजाद गजल, नवगीत) क परिचायक थिक। नबोनारायणक काव्य-उपस्थिति (गद्य प्रस्तुतिक संग) हिनका उपेक्षित-रचनाकारसँ पुनः-स्थापित-रचनाकार बनबैत अछि।

ज्ञानवर्द्धन कण्ठ, आशुतोष, जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल" : गीत आ बाल-गजल

ज्ञानवर्द्धन कण्ठक आठ गीत ("मधुर-मधुर अहाँ बाजू यै", "के छथि?", "नरक", "हमर मुनियाँ सुतैये टुनमुनियाँ" आदि) लोरी आ भक्ति-गीतक मधुरताकेँ रचैत अछि। आशुतोषक "कोना कहू? भारत एक कृषि प्रधान देश अछि" कृषि-संकटपर व्यंग्य थिक। जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल"क बाल-गजल आ गजल (जाहिमे "कोरोनासं सभकें लड़बाक अछि" आ "पूतना अछि बनल कोरोना" सन पंक्ति अछि) महामारीकेँ पौराणिक-रूपक (पूतना) सँ जोड़ैत अछि। अनिलजी मैथिली बाल-गजलक प्रवर्तक-स्वर थिक।

मुन्ना जी आ अमरेश कुमार लाभ : काव्य

मुन्ना जीक "पथराइत डीह" ग्राम-क्षरणक बिम्ब रचैत अछि। अमरेश कुमार लाभक छह रचना ("संतान", "राग अलापने किछु नहि भेटत", "लागल छथि", "सब के बापु", "मिझल आगिकेँ खोड़ने की", किछु गजल) सामाजिक-राजनीतिक व्यंग्यकेँ काव्यात्मक धार दैत अछि।

इरा मल्लिक : विपुल काव्य-संसार

इरा मल्लिकक काव्य-योगदान संग्रहक सबसँ विशाल अछि—तेत्तीस कविता-गीत, सात श्रृंगार-गीत, छह बाल-गीत/कविता, पाँच गजल, तीन शेर, दू बाल-गजल, पाँच श्रृंगार-गजल। ई विपुलता आ विधा-विविधता (गीत, गजल, शेर, बाल-काव्य, श्रृंगार) इरा मल्लिककेँ ऐ अंकक सबसँ उत्पादक काव्य-स्वर बनबैत अछि—जे प्रवासी मैथिल स्त्री-रचनाकारक सामर्थ्यक प्रमाण थिक।

अशोक जे. दुलार आ विष्णु कान्त मिश्र : बाल-कविता आ पौराणिक-काव्य

अशोक जे. दुलारक बाल-कविता ("प्रिया रानी" आ आठ कविता) बाल-साहित्यकेँ समृद्ध करैत अछि। विष्णु कान्त मिश्रक "चीर हरण", "बालबोध", "सामा-चकेबा", "अनुत्तरित प्रश्न", "पथिक", "कुरसी" पौराणिक-कथा, लोक-पर्व, आ राजनीतिक-व्यंग्य ("कुरसी") केँ समेटैत अछि।

डॉ. जियाउर रहमान जाफरी आ प्रदीप पुष्प : आजाद गजल आ रुबाइ

नालंदाक डॉ. जियाउर रहमान जाफरीक "किछु आजाद गजल" मैथिली गजलक अन्तर-सामुदायिक (हिन्दू-मुस्लिम साझा) चरित्रकेँ देखबैत अछि—जे विदेह-आन्दोलनक समावेशी दृष्टिक प्रमाण थिक। प्रदीप पुष्पक "किछु रुबाइ, किछु गजल" रुबाइ-छन्दक प्रयोगकेँ आगू बढ़बैत अछि।

बिनय भूषण : कोरोना-त्रासदीक महाकाव्यात्मक स्वर

संग्रहक काव्यात्मक चरम अछि बिनय भूषणक तीन दीर्घ कोरोना-कविता ("कोरोना-अवकाश", "ठौरक जोगारमे घरमूँहा मजूर", "महाप्रलयमे मृत्युसँ साक्षात्कार")। "कोरोना-अवकाश" मे लॉकडाउनक वर्गीय-विडम्बना अछि—जे मध्यवर्गक लेल "घरबन्दी" थिक, से प्रवासी मजूरक लेल "अवकाश" बुझाइत छल, मुदा यथार्थमे रोजी-रोटीक संकट। "घरमूँहा मजूर" (घर दिस पैदल लौटैत प्रवासी श्रमिक) क चित्र महामारीक सबसँ मार्मिक मानवीय त्रासदीकेँ उघारैत अछि। "महाप्रलयमे मृत्युसँ साक्षात्कार" मे मृत्यु-दूत कोरोना, भूख-मृत्यु आ कोरोना-मृत्युक समानान्तरता, आ अन्हारक बिम्ब एक प्रलयकालीन काव्य-दृष्टि रचैत अछि। ई कविता मैथिली महामारी-काव्यक सबसँ शक्तिशाली अभिव्यक्ति थिक—जे सुबाल्टर्न-श्रमिक-संवेदनाकेँ केन्द्रमे रखैत अछि।

आनन्द कुमार झा आ रमन कुमार झा : आधुनिक आ पारती-काव्य

आनन्द कुमार झाक पाँच कविता ("प्रतिमुख", "एकटा नव कहानी गढबाक अछि", "दुर्दशावस्था", "मात्सर्य", "मुक्तिक तरास") आधुनिक-काव्य-संवेदनाकेँ रचैत अछि। रमन कुमार झाक सात रचना ("नेनपन", "करम कुटय छी ढेंकी मे नऽ", "केबार" (पराती), "कहिया एबय हमरा आंगन", "टपटप नोर चुबैये", "मनभावन मइया मोरी", "रूसा-फुली" (भगवती वंदना)) ढेंकी-गीत, पराती, आ भगवती-वन्दना सन लोक-गीति-परम्पराकेँ जीवन्त रखैत अछि।

स्त्री-स्वरक सघनता : शशि महेंद्र, तनुजा दत्ता, चंदना दत्त, दीपा झा, अम्बिका मल्लिक, निर्मला कर्ण, प्रीति प्रभा, बबली मीरा, रागिनी प्रीत

पद्य-खण्डक एक उल्लेखनीय विशेषता अछि अन्तिम-खण्डमे स्त्री-कवियित्रीक सघन उपस्थिति, जे नारी-अस्मिताकेँ केन्द्रीय स्वर बनबैत अछि। शशि महेंद्र (शशि प्रभा) क "स्त्री", तनुजा दत्ताक "नारीक अंनत रूप", चंदना दत्त (रांटी) क "फागु", "माँ", दीपा झाक "मुढ़ी-कच्छ", अम्बिका मल्लिकक "हंसी", "हम छी काली हम छी दुर्गा", "विरांगना", निर्मला कर्णक "ममताक सम्मान करु", "नारीक सम्मान", "सशक्त नारी सशक्त समाज", प्रीति प्रभाक "पंखुड़ी", "अप्पन मिथिलाधाम", बबली मीराक "हम मिथिला के नारी छी", आ रागिनी प्रीत (जयपुर) क "गीत"—ई सभ मिलि एक सशक्त नारी-काव्य-स्वर रचैत अछि। अम्बिका मल्लिकक "हंसी" मे आत्म-गौरवक उद्घोष—"अपन हंसी के हमहीं सृजन कर्ता छी"—आ "हम छी काली हम छी दुर्गा" मे शाक्त-शक्ति-बोध स्त्री-सशक्तीकरणक काव्यात्मक अभिव्यक्ति थिक। "हम मिथिला के नारी छी" आ "अप्पन मिथिलाधाम" मे मिथिला-अस्मिता आ नारी-अस्मिताक संगम अछि। ई स्त्री-काव्य-समूह विदेह-आन्दोलनक स्त्री-पक्षधर दृष्टिक सबसँ प्रत्यक्ष काव्यात्मक प्रमाण थिक।

मूल्यांकन : सबलता आ सीमा

सबल पक्ष : सदेह २३ क सबसँ बड़का उपलब्धि अछि एकर विश्वकोशीय व्यापकता आ विधा-वैविध्य। एक्के अंकमे भाषा-इतिहास (गजेन्द्र ठाकुर), नृवंशशास्त्रीय यात्रा (कैलाश मिश्र), अकादमीय शोध (यात्री-केन्द्रित अनुपम रैना), धर्मशास्त्रीय समीक्षा (ललन झा), व्यंग्य-नाटक (योगेन्द्र पाठक), विज्ञान-कल्पना, जन-स्वास्थ्य-जागरण, आ महामारी-काव्य—ई सभ मैथिलीक भाषिक-सामर्थ्यक पूर्ण मानचित्र प्रस्तुत करैत अछि। दोसर, कोरोना-महामारीक काव्यात्मक प्रतिक्रिया (विशेषतः बिनय भूषण) समकालीन-संकटक तत्काल साहित्यिक दस्तावेजीकरण थिक। तेसर, स्त्री-रचनाकारक सघन उपस्थिति (इरा मल्लिक, आभा झा, प्रियंवदा तारा झा, आ अन्तिम स्त्री-काव्य-समूह) संग्रहकेँ लैंगिक दृष्टिसँ सबसँ संतुलित बनबैत अछि। चारिम, उपेक्षित-रचनाकारक (नबोनारायण मिश्र) पुनर्स्थापन आ कुसुम ठाकुरक असहमत-राजनीतिक-स्वर विदेह-मंचक वैचारिक खुलापनकेँ प्रमाणित करैत अछि। पाँचिम, प्रवासी मैथिल-स्वर (गुजरात, नेपाल, कतार, लन्दन, झारखण्ड) मैथिलीक वैश्विक विस्तारकेँ देखबैत अछि।

सीमा : एतेक विशाल संकलनमे रचनाक स्तर स्वाभाविके असमान अछि—किछु जन-जागरण-गद्य (स्वास्थ्य-आलेख) साहित्यिक नहि, अपितु उपयोगितावादी अछि। कोरोना-कविताक बाहुल्य कतहु विषयगत पुनरावृत्तिक खतरा रचैत अछि। यात्री-केन्द्रित शोधमे किछु आलेख विवरणात्मक-असंगति (जन्म-तिथिक बेर-बेर दोहराव) सँ ग्रस्त अछि। मुदा ई सीमा एक समावेशी, प्रतिनिधि-मूलक संकलनक स्वाभाविक मूल्य थिक—जतय उद्देश्य चयनात्मक श्रेष्ठता नहि, अपितु एक सम्पूर्ण साहित्यिक-सांस्कृतिक आन्दोलनक प्रतिनिधित्व अछि।

उपसंहार

विदेह-सदेह २३ एक एहन साहित्यिक-सांस्कृतिक विश्वकोश थिक जे मैथिलीकेँ मात्र सृजनात्मक नहि, अपितु ज्ञानात्मक-दस्तावेजी भाषाक रूपमे प्रतिष्ठित करैत अछि। भाषा-इतिहाससँ लऽ महामारी-काव्य धरि, धर्मशास्त्रसँ लऽ दलित-आत्मकथाक स्मरण धरि, अकादमीय शोधसँ लऽ नारी-अस्मिताक उद्घोष धरि—ई संकलन एक एहन समानान्तर साहित्यिक स्थान रचैत अछि जे अकादमीय कैननसँ स्वतन्त्र, मुदा ज्ञान-वैविध्य आ सामाजिक-प्रतिबद्धतामे ओकरासँ कतहु बेसी समावेशी अछि। साठिसँ ऊपर स्वरकेँ एक मंचपर अनबाक ई सम्पादकीय संकल्प—जतय वरिष्ठ कवि (गंगेश गुंजन), अकादमीय शोधार्थी (अनुपम रैना), प्रवासी मैथिल (श्याम सुन्दर शशि, इरा मल्लिक), अल्पसंख्यक-स्वर (जियाउर रहमान जाफरी), आ नवोदित स्त्री-कवियित्री सभ एक संग ठाढ़ छथि—एकरा मैथिली समानान्तर-साहित्यिक आन्दोलनक एक स्मारकीय (monumental) दस्तावेज बनबैत अछि।

विदेह-सदेह २३: मैथिली गद्य आ पद्यक गहींर आ विस्तृत साहित्यिक समीक्षा

अन्तर्जालीय मैथिली आन्दोलनक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य आ विदेहक योगदान

मैथिली भाषाक आन्दोलन आ अन्तर्जालीय पत्रकारिताक इतिहासमे "विदेह" पाक्षिक ई-पत्रिकाक प्रादुर्भाव एकटा ऐतिहासिक मोड़ थिक.1 अन्तर्जालपर मैथिलीक उपस्थिति सन् २००० सँ "भालसरिक गाछ" नामक संजाल-स्थल सँ याहूसिटीजपर आरम्भ भेल छल.1 ई संजाल-स्थल कालान्तरमे १ जनवरी २००८ सँ "विदेह" प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिकाक रूपमे परिवर्तित भऽ गेल, जकर सम्पादन गजेन्द्र ठाकुर द्वारा कएल जाइत अछि.1 विदेह आन्दोलन केवल साहित्यिक रचनाक प्रकाशन धरि सीमित नै अछि, अपितु ई मैथिलीक लिपिक मानकीकरण, प्राचीन ताड़पत्र सभक संरक्षण आ पञ्जी प्रबन्धक उद्धारमे सेहो सँलग्न अछि.3 गजेन्द्र ठाकुर आ प्रीति ठाकुर द्वारा ११,००० सँ बेसी ताड़पत्रक पञ्जी अभिलेखक सूचीकरण आ संगणकीकरण कएल गेल अछि, जाहिसँ मैथिलीक वंशानुगत इतिहासक वैज्ञानिक स्वरूप सुरक्षित भऽ सकल अछि.3 विदेहक मुख्य नीति स्वाधिकार-शुल्क (रॉयल्टी)क परित्याग कऽ मैथिलीक निःशुल्क अन्तर्जालीय पुस्तकालय आ "विदेह आर्काइभ"क स्थापना करब थिक, जाहिसँ विश्वक कतेको देशमे पसरल मैथिली पाठक लाभान्वित भऽ रहल छथि.1 एहि पत्रिकाक विशिष्ट संकलन "विदेह-सदेह २३" अन्तर्जालीय अंक ३०१ सँ ३१६ धरिक गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर दस्तावेज थिक.1 एहि आन्दोलन द्वारा दृष्टिबाधित बालक सभक लेल ब्रेल लिपिमे मैथिली पोथीक प्रकाशन आ वितरण सेहो कएल जाइत अछि, जइमे गजेन्द्र ठाकुरक उपन्यास "सहस्राबधानी" मैथिलीक प्रथम ब्रेल पुस्तक थिक.3

गद्य-साहित्यक वैचारिक आ समानान्तर विमर्श: एडिटर्स चोइस सीरीजक आलोकमे

गजेन्द्र ठाकुर द्वारा सम्पादित "एडिटर्स चोइस सीरीज" मैथिली गद्यक ओहि यथार्थवादी आ क्रान्तिकारी चेतनाकेँ रेखांकित करैत अछि जे पारंपरिक रूढ़िवादी ढाँचाकेँ तोड़ने अछि.1

बलात्कारक विरुद्ध मैथिलीक प्रथम स्वर (सीरीज-१): १ फरबरी २०१३ क विदेहक १२३ म अंकमे बलात्कार जकाँ बीभत्स विषयपर मैथिलीक प्रथम कविता प्रकाशित भेल छल.1 तेलुगु कवयित्री पसुपुलेटी गीताक एहि कविताक हिन्दी अनुवाद आर. शांता सुन्दरी केने छलीह आ तकर मैथिली अनुवाद विनीत उत्पल कएने छलाह.1 ई रचना समाजक पुरुषवादी मानसिकता आ संवेदनशून्यतापर कर चोट करैत अछि.1

स्तन कर्कट रोग (ब्रेस्ट कैंसर) क गहींर आख्यान (सीरीज-२): मीना झाक लघुकथा मैथिलीक प्रथम कथा थिक जे स्तन कर्कट रोगक शारीरिक आ मानसिक पीड़ाकेँ उघारैत अछि.1 हिन्दी साहित्यमे एहि विषयपर रचना आबबा सँ पूर्वहि विदेहमे एकर प्रकाशन मैथिली गद्यक आधुनिकता आ अग्रगामी सोचक परिचायक थिक.1

शिशु मनोविज्ञान आ बाल साहित्य (सीरीज-३ आ ४): जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क "बेबी चाइल्ड" पर रचित बाल कविता आ जगदानन्द झा 'मनु'क दीर्घ बाल कथा (उपन्यास) "चोनहा" मैथिली बाल साहित्यक अमूल्य निधि थिक.1 "चोनहा" बाल मनोविज्ञानपर आधारित मैथिलीक प्रथम उपन्यास थिक, जकरा बाल साहित्यक प्रशिक्षण पाठ्यक्रममे अनिवार्य रूप सँ राखबाक आवश्यकता अछि.1

सेक्सपीरिअन ट्रेजेडीक समानांतर आख्यान (सीरीज-५): कुमार पवनक दीर्घकथा "पइठ" मैथिली साहित्यक "उसने कहा था" मानल जाइत अछि.1 ई कथा सेक्सपीरिअन ट्रेजेडीक समीप रहितो अपन सामाजिक आ पारिवारिक दायित्वक गम्भीरताक कारण सँ एकटा विशिष्ट सुखद आ गम्भीर अनुभव प्रदान करैत अछि.1

बिसाँढ़: अकाल आ वर्ग-संघर्षक यथार्थ (सीरीज-६): जगदीश प्रसाद मण्डलक लघुकथा "बिसाँढ़" मिथिलाक १९६७ क विभीषण अकालक ओहि कड़वा सचकेँ देखार करैत अछि जतए मुसहर जातिक लोक बिसाँढ़ (नदीक कत कात भेटयवला कन्द) खा कऽ प्राण बचेने छलाह.1 अमर्त्य सेनक बंगाल अकाल (१९४२-४३) क संस्मरण सँ तुलना करैत ई कथा मैथिली साहित्यकेँ "जगदीश प्रसाद मण्डल सँ पूर्व आ पश्चात"क दुई कालखण्डमे विभाजित करैत अछि, जाहिपर लेखककेँ टैगोर लिटरेचर अवार्ड प्राप्त भेल छल.1

प्रथम दलित आत्मकथा (सीरीज-७): सन्दीप कुमार साफीक "बैशाखमे दलानपर" मैथिलीक एकमात्र आ प्रथम दलित आत्मकथा थिक, जे समानान्तर

मैथिली साहित्यमे हाशिएपर रहल समाजक यथार्थवादी पीड़ाकेँ देखार करैत अछि.1

मिथिलाक सामाजिक-आर्थिक संकट: प्रवासन आ बाढ़िक विभीषिका

मिथिलाक समाज आ अर्थनीति प्रवासन आ बाढ़िक दुई विभीषिकासँ सर्वाधिक प्रभावित अछि, जकर विषद विवेचन गजेन्द्र ठाकुरक "मिथिलाक इतिहास भाग-२" मे भेटैत अछि.1

प्रवासनक ऐतिहासिक आ आधुनिक स्वरूप

मिथिलामे प्राचीन काल सँ प्रवासनक स्वरूप मुख्तः पठन-पाठन आ जीविकोपार्जन धरि सीमित छल, मुदा आधुनिक कालक प्रवासन एकटा अभिशाप बनि कऽ उभरल अछि.1 सन् १९८१ मे महात्मा गाँधी सेतुक निर्माण आ दरभंगा-पटना डीलक्स बसक आवागमनक बाद मिथिलाक ग्रामीण श्रमशक्तिक भारी पलायन पंजाब, हरियाणा आ पश्चिमी उत्तर प्रदेश दिस भेल.1 एहि पलायन गामक गाम खाली कऽ देलक आ मिथिलाक पारंपरिक कृषि आधारित अर्थव्यवस्थाकेँ ध्वस्त कऽ देलक.1

बाढ़ि, तटबन्ध आ प्रशासनिक विफलता

मिथिलाक बाढ़ि प्राकृतिक सँ बेसी मानव-निर्मित विपदा अछि.1 १९६० क दशकमे कमला आ कोसी नदीपर बान्हल गेल अनियन्त्रित माटिक तटबन्धक कारणेँ पानीक जमाव भेल आ उपजाऊ भूमि दलदल बनल.1 कोसीक भीमनगर बैराज (१९५८ मे बनल)क जीवनकाल ३० वर्ष छल जे १९८८ मे समाप्त भऽ गेल, मुदा दुई देशक राजनैतिक असमझौताक कारणेँ रेत सफाई आ बान्हक ऊँचाई बढ़ेबाक काज समयपर नै भेल, जकर दुष्परिणाम २००८ क भीषण कुसहा बाढ़िक रूपमे देखार भेल.1 एहि प्रसंगमे डॉ. विश्वेश्वरैय्याक कृष्णराज सागर बान्हक निर्माण तकनीक अनुकरणीय अछि, जतए बिना विदेशी सीमेन्टक केवल सुरखी आ स्थानीय पाथरक प्रयोगसँ आपदा नियंत्रण कएल गेल छल.1

व्यावसायिक पूँजी आ मैथिलीक स्वॉट (SWOT) विश्लेषण

मैथिलीक विकास आ अन्तर्जालीय माध्यममे एकर भविष्यक संभावनाक अध्ययन करबाक लेल प्रबन्धन-विज्ञानक "स्वॉट" (सामर्थ्य, न्यूनता, अवसर आ भीषिका) विश्लेषण अत्यन्त सहायक थिक 1:

१. सामर्थ्य (Strength)

मैथिली भाषामे एकटा आन्तरिक शक्ति अछि जे भारत आ नेपालक वृहत् जनसमुदायकेँ सांस्कृतिक रूप सँ जोड़ैत अछि.1 भाषाक आरोह-अवरोह आ भाषिक वैशिष्ट्यक प्रति स्रष्टा लोकनिक हृदयमे गहींर अनुराग अछि.1

२. न्यूनता (Weakness)

परस्पर निन्दा आ आत्मप्रशंसाक प्रवृत्ति, सरकारपर अत्यधिक आलम्बन, प्राथमिकताक अज्ञान आ अपन सन्तति सँ भाषाकेँ दूर रखबाक प्रवृत्ति एकर पैघ दुर्बलता थिक.1 उत्तम साहित्यिक उत्पादक संग-संग विक्रयकौशलक (मार्केटिंग) भारी अभाव अछि.1

३. अवसर (Opportunity)

अन्तर्जाल आ दूरस्थ शिक्षाक माध्यम सँ मैथिलीक पठन-पाठन, अप्रकाशित ताड़पत्रक प्रकाशन, आ विज्ञान, समाज विज्ञान जकाँ विशिष्ट विषयक पुस्तकक अनुवादक अपार संभावना अछि.1

४. भीषिका (Threat)

हताशा, पारम्परिक संस्कृत पाठशालाक ह्रास, ताड़पत्रक उपेक्षा आ विदेशमे अवैध बिक्री, आ राजनैतिक स्वार्थवश भाषाक संकुचित वर्गीकरण मैथिलीक अस्तित्व लेल भीषिका थिक.1

पुरातात्विक अन्वेषण, ऐतिहासिक ताम्रपत्र आ तिरहुता लिपिक क्रमिक विकास

मैथिलीक अपन प्राचीन लिपि "तिरहुता" (मिथिलाक्षर) थिक, जकर विकास ब्राह्मी लिपिसँ मौर्य, शुंग, कुषाण आ गुप्त कालक सिद्धमातृका लिपिक माध्यम सँ भेल अछि.1 १०म शताब्दीक नालन्दा आ बोधगया आकृति अभिलेख तिरहुता लिपिक आरम्भिक स्वरूपकेँ प्रमाणित करैत अछि.1

जलज कुमार तिवारी आ एस. कृष्णामूर्ति द्वारा २०१९ ई. मे अन्वेषित किछु नव तिरहुता अभिलेख निम्नलिखित अछि 1:

चेचर गाम (वैशाली) क बुद्ध मूर्त्ति अभिलेख (९म शताब्दी).1

जगतपुर बरुआरी (सुपौल) क तारा मूर्त्ति अभिलेख (१०म शताब्दी).1

दभैछा (वैशाली) क तारा मूर्त्ति अभिलेख (१०म शताब्दी).1

पिपरौलिया विष्णु आकृति आ बहेरी लगक भच्छी गामक तिरहुता अभिलेख (१०म-११म शताब्दी).1

सहरसाक कन्दाहा पाथर अभिलेख (१५म शताब्दी), जे ओइनवार कालक राजा नरसिंहदेवक आदेश सँ लिखल गेल छल.1

अररियाक बाइसी-बसैटी ताम्रपत्र अभिलेख, जे मिथिलाक प्रथम महिला शासक रानी इन्द्रावती (१७८४-१८०२ ई.) क कल्याणकारी कार्यक वर्णन करैत अछि.1

एहि पुरातात्विक साक्ष्य सँ सिद्ध होइत अछि जे मिथिलाक संस्कृति बौद्ध, जैन आ शाक्त सम्प्रदायक समन्वय सँ समृद्ध रहल अछि.1

मैथिली आ पुबरिया (पूर्वी) भारतीय भाषाक तुलनात्मक व्याकरण

मैथिलीक भाषिक संरचना पूर्वी भारतक अन्य भाषा सभ (बांग्ला, असमिया, ओड़िया, भोजपुरी, मगही, संथाली) सँ गहींर रूप सँ जुड़ल अछि.1 बांग्लामे कोनो शब्दपर विशेष बल देबाक लेल "-तो" आ मैथिलीमे द्वित्व वर्ण आ एकार (कम्मे, एक्के) प्रयुक्त होइत अछि.1 असमियामे स्त्रीलिंग वाचक प्रत्यय "-जनी" आ पुल्लिंग वाचक "-जन" अछि.1 ओड़ियामे उच्चारण मुख्तः ओकारान्त (समर = सोमोरो) होइत अछि.1

पूर्वी पुबरिया भाषाक व्याकरणिक आ शब्दावलीक तुलनात्मक विवरण नीचाँ सारणीमे देखल जा सकैत अछि 1:

मैथिली व्याकरण	बांग्ला व्याकरण	असमिया व्याकरण	ओड़िया व्याकरण	संथाली व्याकरण
अपने 1	आपनि 1	आपुनि 1	आपण 1	आम (अहाँ) 1
नै (नहि) 1	नय 1	नाइ 1	नाहिं 1	आलोम 1
छी 1	आछि/छि 1	-	छि 1	काना 1
काज 1	काज 1	-	काम 1	कातेक 1
इनार 1	इनार 1	-	-	-
गेल छलौं 1	गियेछिलाम 1	राखिसों (रखलौं) 1	थिला (छलै) 1	-
बाजू नै 1	बोलबेन ना 1	बजात (बजे) 1	-	-
रान्ना (रान्हल) 1	रान्ना 1	-	-	-
संगे 1	शंगे 1	-	-	-
पाँचटा 1	पाँचटा 1	-	गोटे (एकटा) 1	-
अखन 1	ऐखोन 1	आजिकालि 1	-	-

मैथिली पद्यक नव-उन्मेष आ गजलक नव-विमर्श

मैथिली पद्यक विकासमे गजल विधाक नव-उन्मेष एकटा क्रान्तिकारी घटना थिक.1 गजलक शास्त्रीय बहर आ अरूजी व्याकरणक प्रयोग सँ मैथिली कविताक संरचनात्मक शुद्धता बढ़ल अछि.1

कविवर सीताराम झा रचित "जगत मे थाकि जगदम्बे अहिंक पथ आबि बैसल छी" मैथिलीक प्रथम प्रामाणिक भक्ति गजल थिक, जकर रचना १९२८ ई. मे भेल छल.1 एहि गजलक बहर आ काफियाक शुद्धता निम्नलिखित अछि 1:

"जगत मे थाकि जगदम्बे अहिंक पथ आबि बैसल छी" "हमर क्यौ ने सुनैये हम सभक गुन गाबि बैसल छी" 1

वर्तमान कालखंडमे अमित मिश्र, आशीष अनचिन्हार आ जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' गजलक बहर आ मात्राक्रम (जेना बहरे मीर, बहरे मुतकारिब) पर अनेक गजल, बाल गजल आ शृंगार गजलक सृजन कएने छथि.1 जयंती कुमारीक गजल "बिनु पीड़ा नै प्रेम असल छै, सोना छै आगि सँ निकसल छै" आ आनन्द

दासक "स्कूलक चारके तेसर बत्तीमे, खोइन्स जायब" गजलक नव भावभूमि कैँ देखार करैत अछि.1

वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' क जीवन, यायावरी आ प्रगतिवादी चेतना: एक गहन विवेचन

मैथिली काव्यक आधुनिक युगक निर्माता वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' (हिन्दीमे नागार्जुन) क जीवन आ कृतित्व संघर्ष आ यायावरीक अनुपम गाथा थिक.1

पारिवारिक पृष्ठभूमि आ संघर्षमय बाल्यावस्था

यात्रीजीक जन्म ३० जून १९११ ई. क जेष्ठ पूर्णिमाक दिन नानीगाम सतलखा (मधुबनी) मे भेल छलन्हि आ पैतृक गाम तरौनी (दरभंगा) छल.1 हिनक पिता गोकुल मिश्र आ माता उमा देवी छलीह.1 बाल्यावस्थाक प्रारंभिक वर्षमे ही माएक मृत्युक बाद पिताक क्रोधी आ भंगेरी प्रवृत्तिक कारण हिनक बाल्यकाल गम्भीर अभावमे बीतल, जकर कारणे हिनक नाम "ठक्कन" राखल गेल छल.1

सन्यास, बौद्ध दीक्षा आ नागार्जुनक नामकरण

संस्कृतक पारंपरिक पाठशाला सँ प्रथमा आ मध्यमा केलाक बाद ई काशी आ कलकत्ता धरि शिक्षा प्राप्त केलन्हि.1 १९३६ ई. मे श्रीलंकाक केलनिया विद्यालंकार परिवेणमे चीवर धारण कऽ बौद्ध धर्मक दीक्षा लेलन्हि आ ओतहि हिनक नाम "भिक्षु नागार्जुन" राखल गेल.1 ई स्वामी सहजानन्द सरस्वतीक किसान आन्दोलनमे भाग लेलाक कारणेँ छपराक अमवारी जेलमे बन्दी बनाओल गेलाह आ हजारीबाग आ भागलपुर जेलक यात्रा केलन्हि.1

साहित्यिक अवदान आ यथार्थवादी दृष्टि

यात्रीजीक उपन्यास "पारो" (१९४६), "नवतुरिया" (१९५४) आ "बलचनमा" (१९६६) मैथिली गद्यक समाजशास्त्रीय दस्तावेज थिक.1 "बलचनमा" मे शोषित वर्गक विद्रोह आ "पारो" मे मिथिलाक पारिवारिक जीवनक करुण गाथा चित्रित अछि.1 हिनक कविता संग्रह "चित्रा" (१९४९) आ साहित्य अकादेमी पुरस्कृत "पत्रहीन नग्न गाछ" (१९६७) गामक सुच्चा गरीबी आ शोषणक प्रहार करैत अछि 1:

"मकड़ाक जाल सं बेधल ओय चुल्हाक मुँह," "थारी गिलास सब बेच खा गेलय ऊंह।।" 1

विदेह-सदेह २३ क समग्र स्रष्टा-सृजन अनुक्रमणिका

विदेह-सदेह २३ संकलनमे समाविष्ट सभ ५०+ रचनाकार आ हुनक विशिष्ट रचनाक विवरण नीचाँ सारणीमे देल गेल अछि, जाहिसँ मैथिलीक एहि आन्दोलनमे सभ वर्गक स्रष्टाक सहभागिता स्पष्ट होइत अछि 1:

क्र. सं.	रचनाकारक नाओं	विधा आ रचनाक विवरण
१	गजेन्द्र ठाकुर	सम्पादकीय आलेख, मिथिलाक इतिहास, लिपिक विकास, पुबरिया भाषा 1
२	इरा मल्लिक	बीहनि कथा, ३३ टा कविता-गीत, ७ टा श्रृन्गार गीत, ६ टा बाल गीत 1
३	अरुण लाल दास	राजस्थानी लोक लघु कथा, बीहनि कथा (लहास, दर्शन) 1
४	आभा झा	पिघलैत हिमखण्ड, नाटक, स्वार्थक रंग, बौक, जोड़-घटाव, चेतना 1
५	श्याम सुन्दर शशि	कतारक मैथिल भेड़ा चरवाह (मरुभूमिक यथार्थ) 1
६	उमेश कुमार महतो	बहादुरगंज स’ जमीनी प्रतिवेदन 1
७	सुमित आनन्द	भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना 1
८	सुभाष कुमार कामत	बीहनि कथा (तनखाह, भूख, बुढवा पेंशन, मैथिली) 1
९	मनोज झा मुक्ति	अस्तित्वक कटघेरामे मिथिला-मैथिलीक संघ

		संस्थासब 1
१०	नवेन्दु कुमार झा	अस्तित्वक लेल संघर्ष करैत पटनाक विद्यापति स्मृति पर्व 1
११	सुशांत झा	की बलिराज गढ़ मिथिलाक प्राचीन राजधानी अछि? 1
१२	सुभाष साह	लन्दनमे नेपाल मेला २००८ (सांस्कृतिक प्रतिवेदन) 1
१३	हितेन्द्र गुप्ता	आब नहि खुलत नवका शराबक दोकान (मद्यनिषेध विमर्श) 1
१४	गंगेश गुंजन	भोज परक आँटी, कॉरपोरेट-जगत आ मैथिलीक संकट 1
१५	डॉ कैलाश कुमार मिश्र	यायावरी (सांस्कृतिक आ भौगोलिक संस्मरण) 1
१६	जितेन्द्र झा	रिपोर्ताज (स्वरक माला गँथती अंशु - संगीत विमर्श) 1
१७	उमेश मण्डल	लोक-नाट्य-वाद्य मण्डली, मैथिलीमे ई-पत्रकारिता 1
१८	कीर्तिनाथ झा	लघुकथा - नपुंसक 1
१९	आनन्द कुमार झा	मैथिलीक वर्तमान रंगमंच, बोलूक बेदना 1
२०	नबोनारायण मिश्र	प्रविष्टि-प्रस्तुति: पृथ्वीक भार (आशीष अनचिन्हार द्वारा प्रस्तुत) 1
२१	आशीष अनचिन्हार	लघुकथा (सपना आ भ्रम, घर), मैथिली गजल आ अन्तर्जाल इतिहास 1
२२	प्रणव झा	की छै 'डीएनबी' आ की लाभ छै चिकित्सा क्षेत्रमे 1
२३	लालदेव कामत	भूगोलमे मिथिलाराज कहियाधरि 1
२४	ज्ञानवर्द्धन कंठ	गदहाक इलाज, मोबाइलक रुटीन, बुढ़िया दाइ, कूडि-काज 1
२५	कंचन कंठ	मुक्ति, हमर नानीगाम, अजगुत बुचिया 1
२६	मुन्ना जी	लघुकथा (बीचला लोक), बीहनि कथा (हिक), पथराइत डीह 1
२७	विन्देश्वर ठाकुर	बीहनि कथा (न्याय, छुवाछुत) 1
२८	प्रभाष अकिंचन	बीहनि कथा (रिलीफ, जतरा), पंच राम दीप, पावस मिलन 1
२९	पूनम मण्डल	टैगोर साहित्य पुरस्कार २०११ क विवरण 1
३०	मीना झा	स्तन कर्कट रोगपर लघुकथा, यू.के. मैथिल समाज प्रतिवेदन 1

३१	प्रियंवदा तारा झा	परंपरा, अजगुत, मोनक गप्प, पर उपदेश कुशल बहुतेरे 1
३२	संतोष कुमार राय ’बटोही’	गाम (गद्य), आउट इनकम (पद्य) 1
३३	डॉ. अर्पणा	नारी शब्दक विवेचना, रमेश्वर चरित रामायणमे विधि-व्यवहार 1
३४	डॉ. चित्रलेखा	मिथिलामे गीत नादक महत्व, पावनि-तिहारक सांस्कृतिक स्वरूप 1
३५	विष्णु कान्त मिश्र	महादेवक कूटनीति, चारि पत्र 1
३६	डा. सुभाष चन्द्र झा	वैद्यनाथ मिश्र "यात्री" क साहित्य यात्रा 1
३७	अनुपम रैना	यात्रीक व्यक्तित्व ओ कृतित्व, यथार्थवादक समीक्षा 1
३८	डॉ ललन कुमार झा	तेजनाथ झा आ तिथि-पर्व निर्णय समीक्षा 1
३९	नन्द विलास राय	सरस्वती पूजाक परसाद, अदरश विआह, एमेली साहैब 1
४०	योगेन्द्र पाठक ‘वियोगी’	नरक विजय (दीर्घ आख्यान) 1
४१	डॉ विनीत उत्पल	लघुकथा - नागा फकीर 1
४२	कुसुम ठाकुर	अलग राज्यक माँग कतेक सार्थक? 1
४३	अमरेश कुमार लाभ	संतान, राग अलापने किछु नहि भेटत, लागल छथि, सब के बापु 1
४४	ममता कर्ण	उपराग 1
४५	सुचिता कुमारी	पोतीक बियाह 1
४६	दीपा झा	दादी परी 1
४७	विद्या रश्मि	गलतीक बोध (संस्मरण) 1
४८	डॉ मालती मधु	स्तन कैंसरक शुरूआती लक्षण आ रोकथाम 1
४९	पल्लवी सिन्हा	तीसी गुणक खान अछि 1
५०	जवाहर लाल कश्यप	स्ट्रेस बस्टर 1
५१	जयंती कुमारी	गजल (बिनु पीड़ा नै प्रेम असल छै) 1
५२	कल्पना झा	अम्मा, साओन, श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार'क परिवारक योगदान 1
५३	आशीष नीरज	कोरोना (महामारीक पद्य-विवरण) 1
५४	बाबा बैद्यनाथ	कुण्डलिया छंद, गजल 1

५५	आनन्द दास	चिठ्ठी, नींद आबि जाइत अछि 1
५६	सविता 'सुमन'	स्त्री (पद्य) 1
५७	जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'	बाल कविता, गजल 1
५८	अमित मिश्र	बाल गजल, श्रृंगार गजल 1
५९	हितनाथ झा	मैथिली साहित्यमे तारानाथ झाक परिवारक योगदान 5
६०	श्रीकान्त ठाकुर 'विद्यालंकार'	पारिवारिक साहित्यिक अवदान 5
६१	आचार्य रामानंद मंडल	वर्तमान चोर संत कबीर, परोपकार 5
६२	बद्रीनाथ राय 'अमात्य'	श्राद्ध 5
६३	कुमार मनोज कश्यप	लघुकथा- विधाते बाम 5
६४	विप्रकान्त मंडल	मशीन बनबाक उमेड़ 5
६५	अमरेश ठाकुर	नैका बनिजारा उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन 5
६६	प्रीति कुमारी	चुनाव आयोग आ राष्ट्रीय दल 5
६७	रामकृष्ण परार्थी	जमाना बदलि गेलैं 5
६८	प्रमोद झा 'गोकुल'	पिरीतो (लघु एकांकी नाटिका) 5

Works cited

videha_23.docx

विदेह - प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका/ भालसरिक गाछ, accessed on June 16, 2026, https://gajendrathakur.blogspot.com/

Gajendra Thakur - Wikipedia, accessed on June 16, 2026, https://en.wikipedia.org/wiki/Gajendra_Thakur

मैथिली समालोचना, accessed on June 16, 2026, https://maithili-samalochna.blogspot.com/

विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका, accessed on June 16, 2026, https://www.videha.co.in/

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह-सदेह २३ : एक विस्तृत साहित्यिक समीक्षा — उपक्रम : विश्वकोशीय संकलनक स्वरूप

अध्याय 14 · विदेह सदेह २६ — डॉ. शम्भु कुमार सिंह आ डॉ. अरुण कुमार सिंहक
गद्य-पद्यक सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा

सारांश गहन पाठ-अध्ययन · तुलनात्मक आलोचना · अनुवाद-विवेचन · अद्यतन अनुसन्धान-सन्दर्भ आधार-पाठ: विदेह सदेह २६ · विदेह

प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका · ISSN 2229-547X स्रोत: विदेह पेटार अंक १-३५० सँ · सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर २. संकलनक

रचनात्मक संरचना आ समग्र स्वर “विदेह सदेह २६” एकरूप विधाक पोथी नहि, बल्कि बहुविध साहित्यिक-सांस्कृतिक अभिलेख अछि।

पहिल पैघ खण्डमे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक शोधपरक लेखसँ आरम्भ भ’ कथा, लघुकथा, अनुवाद आ उपन्यास धरि क्रमिक विस्तार अछि।

दोसर गद्य-खंडीय चरणमे डॉ. अरुण कुमार सिंह सामाजिक आलोचना, क्षेत्रीय विकास, भाषा-नीति आ भाषा-प्रौद्योगिकीक दिशामे बढ़ैत

छथि।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · अनुवाद · कथा · लघुकथा · सांस्कृतिक अध्ययन

गहन पाठ-अध्ययन · तुलनात्मक आलोचना · अनुवाद-विवेचन · अद्यतन अनुसन्धान-सन्दर्भ

आधार-पाठ: विदेह सदेह २६ · विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका · ISSN 2229-547X

स्रोत: विदेह पेटार अंक १-३५० सँ · सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर

२. संकलनक रचनात्मक संरचना आ समग्र स्वर

“विदेह सदेह २६” एकरूप विधाक पोथी नहि, बल्कि बहुविध साहित्यिक-सांस्कृतिक अभिलेख अछि। पहिल पैघ खण्डमे डॉ. शम्भु कुमार सिंहक शोधपरक लेखसँ आरम्भ भ’ कथा, लघुकथा, अनुवाद आ उपन्यास धरि क्रमिक विस्तार अछि। दोसर गद्य-खंडीय चरणमे डॉ. अरुण कुमार सिंह सामाजिक आलोचना, क्षेत्रीय विकास, भाषा-नीति आ भाषा-प्रौद्योगिकीक दिशामे बढ़ैत छथि। अन्तिम पद्य-खण्ड दुनू लेखकक संवेदना, अस्मिता, व्यंग्य आ जन-सरोकारकेँ संक्षिप्त काव्यात्मक रूपमे समेटैत अछि।

एहि बनावटमे एक उल्लेखनीय आन्तरिक गति अछि—ज्ञानसँ अनुभव दिस, विश्लेषणसँ कथा दिस, क्षेत्रीय प्रश्नसँ मनुष्यक सार्वभौम प्रश्न दिस। साहित्येतिहासक काल-विभाजनक कठोर विवेचन जखन “जेठ आ पूस” जकाँ अत्यल्प आकारक कथामे दहेजक ताप बनि जाइत अछि, अथवा भाषा-विज्ञानक समाजशास्त्रीय विमर्श “भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली”मे बेटी-मायक करुण संवाद बनि जाइत अछि, तखन संकलन अपन बहुविधता केवल सामग्रीक संग्रह नहि रहि एकटा विचार-परम्परा बनबैत अछि।

दुनू मुख्य लेखकक बीच किछु साझा केन्द्र स्पष्ट अछि: मैथिली भाषाक गरिमा, सामाजिक अन्याय, शिक्षाक प्रश्न, मिथिला-कोशीक यथार्थ आ लोकजीवन। मुदा शैलीगत अन्तर सेहो स्पष्ट अछि। डॉ. शम्भु कुमार सिंह बहुधा रूपक, कथा, नाट्यात्मक संवाद आ अनुवादक माध्यमसँ सामाजिक प्रश्न खोलैत छथि; डॉ. अरुण

कुमार सिंह आँकड़ा, क्षेत्रीय प्रत्यक्षता, भाषावैज्ञानिक अवधारणा आ संस्थागत अनुभवसँ तर्कक आधार बनबैत छथि।

३. डॉ. शम्भु कुमार सिंह: बौद्धिक परिचय आ लेखकीय क्षितिज

संकलनक परिचय अनुसार डॉ. शम्भु कुमार सिंहक जन्म १८ अप्रैल १९६५, सहरसा जिलाक महिषी प्रखण्डक लहुआर गाममे भेल। मैथिलीमे उच्च शिक्षा, स्वर्णपदक, बिहार पात्रता परीक्षा आ “मैथिली नाटकक सामाजिक विवर्त्तन” विषय पर पी-एच.डी. हुनक आलोचनात्मक अभिरुचिक पृष्ठभूमि बनबैत अछि। संकलनकालीन परिचय हुनका राष्ट्रीय अनुवाद मिशन, भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरसँ जोड़ैत अछि। एहि जीवन-वृत्तक तीनू सूत्र—मैथिली अध्ययन, नाटक-समीक्षा आ अनुवाद—रचनासंसारमे प्रत्यक्ष देखाइत अछि।

हुनक गद्यक एक सिरा शास्त्रीय/परीक्षोपयोगी व्यवस्थित लेखन अछि, दोसर सिरा कथा-व्यंग्य आ लोक-रूपक, तेसर सिरा भारतीय भाषाक परस्पर अनुवाद। एहि त्रिकोणक कारण हुनक लेखकीय व्यक्तित्वकेँ केवल “आलोचक” वा “कथाकार” कहब अपर्याप्त होएत। ई संकलन हुनका एक एहन बहुविध लेखक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि जे ज्ञान-पाठक संरचना, सामाजिक संवेदना आ साहित्यिक कल्पना तीनू क्षेत्रमे आवाजाही करैत छथि।

४. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक आलोचनात्मक आ ज्ञानपरक गद्य

४.१ मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण

ई लेख संकलनक सभसँ व्यापक साहित्येतिहासपरक बहस सभमे एक अछि। लेखक पहिने काल-विभाजनक आवश्यकता आ ओकर कृत्रिम सीमाकेँ स्पष्ट करैत छथि—साहित्यक प्रवाह एक दिनमे एक युग सँ दोसर युगमे नहि बदलैत, मुदा अध्ययनक सुविधा लेल प्रमुख प्रवृत्ति, कृति, सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन आ भाषिक विकासक आधार पर युग-नामकरण कएल जाइत अछि। एहि बिन्दुसँ लेख सीधे मैथिली साहित्येतिहासक बहुविध काल-योजनाक तुलनामे प्रवेश करैत अछि।

लेखमे म.म. उमेश मिश्र, डॉ. जयकान्त मिश्र, प्रो. श्रीकान्त मिश्र, कुमार गंगानन्द सिंह, भोलालाल दास, डॉ. सुभद्र झा आदि अनेक इतिहासकार-भाषाविदक मतक तुलनात्मक परीक्षा अछि। लेखकक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि ई जे ओ कोनो एक प्रामाणिक नामक मतकेँ अन्तिम सत्य मानि नहि लैत छथि; तिथि-सीमा, राजनीतिक घटना, भाषा-विकास, रचना-प्रवृत्ति आ उपलब्ध कृतिक बीच असंगतिसभ देखबैत छथि। लेख साहित्येतिहासकेँ मतान्तरक खुलल क्षेत्र बनबैत अछि।

साहित्यिक इतिहासक दृष्टिएँ लेखक बल “काल” सँ अधिक “प्रवृत्ति” पर अछि। गीतिकाव्य, नाटक आ गद्यक प्राधान्यक आधार पर युग-विन्यासक चर्चा एहि बातकेँ चिन्हित करैत अछि जे विधागत केन्द्र बदलैत अछि, मुदा पहिल विधा नष्ट नहि होइत। समीक्षा-दृष्टिएँ ई बहुलतावादी तत्व लेखक ताकत अछि। सीमा ई जे कतिपय कालसीमा वा राजनीतिक परिवर्तनपर निर्णय लेखकक अपन ऐतिहासिक प्राथमिकतासँ संचालित अछि; आजुक साहित्येतिहास अधिक पाण्डुलिपि-साक्ष्य, मुद्रण-संस्कृति, जाति-लिंग-क्षेत्रीय पाठक-समुदाय आ नेपाल-भारतक साझा मैथिली क्षेत्रकेँ सेहो संग लेने चलबाक अपेक्षा करैत। तथापि परीक्षोपयोगी लेखनक चौखटामे ई लेख मतान्तरक परिचय देबामे अत्यन्त समृद्ध अछि।

४.२ मैथिली साहित्यक आदिकाल

“आदिकाल” लेख भाषाक जन्मक निश्चित तिथि बतएबाक कठिनतासँ आरम्भ करैत अछि आ लिखित साक्ष्य, भाषा-रूप आ साहित्यिक परम्पराकेँ अलग-अलग परखबाक आग्रह करैत अछि। चर्यापद, अपभ्रंश, ज्योतिरीश्वर, “वर्णरत्नाकर”, विद्यापति आदिक प्रसंग एहि ऐतिहासिक प्रश्नक केन्द्रमे अछि जे “मैथिली” नामक साहित्यिक पहचान कहिया आ कोन रूपमे स्पष्ट होइत अछि।

लेखकक पद्धति भाषावैज्ञानिक सतर्कता आ साहित्यिक इतिहासक आकांक्षाक बीच चलैत अछि। पुरान रचनाकेँ आधुनिक भाषिक लेबल देबाक खतरा ओ स्वीकार करैत छथि, तकर बावजूद परम्परागत कड़ी ताकैत छथि। एहि द्वन्द्वक कारण लेख महत्त्वपूर्ण अछि: एक दिस सांस्कृतिक प्राचीनताक गौरव, दोसर दिस प्रमाण-आधारित निर्धारणक आवश्यकता। आधुनिक पाठक लेल ई लेख एतए सभसँ उपयोगी अछि जतए ई “प्राचीन” शब्दकेँ केवल गौरव-सूचक नहि, बल्कि पाठ, भाषा आ तिथिक समस्या रूपमे देखबैत अछि।

आलोचनात्मक सीमा ई जे आदिकालक प्रश्न निरन्तर नूतन पाण्डुलिपि-अध्ययन, तुलनात्मक पूर्वी आर्यभाषा-विज्ञान आ पाठ-सम्पादनसँ बदलि सकैत अछि। अतः एहि लेखक मतकेँ ऐतिहासिक बहसक एक व्यवस्थित चरण रूपमे पढ़ब अधिक उपयुक्त अछि, न कि अपरिवर्तनीय अन्तिम काल-मानचित्र रूपमे।

४.३ मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता

ई लेख मैथिलीक आन्तरिक विविधताकेँ साहित्यिक भाषा-चर्चासँ बाहर निकालि भाषाभौगोलिक धरातल पर रखैत अछि। लेखक ग्रियर्सन आ पं. गोविन्द झाक

वर्गीकरणक चर्चा करैत मानक, दक्षिणी, पूर्वी, छिका-छिकी, पश्चिमी, उत्तरी, जोलहा आ केन्द्रीय रूपक परिचय दैत छथि; ध्वनि, सर्वनाम, क्रियारूप आ पड़ोसी भाषाक प्रभावक उदाहरण सेहो देल गेल अछि।

विशेष महत्त्वक बिन्दु ई जे लेख "मानक" कैं कोनो एक जातिक स्वामित्वसँ मुक्त करबाक तर्क करैत अछि। मानक मैथिलीकैं सम्पूर्ण समाजक साझा भाषिक व्यवहारक रूपमे देखबाक ई आग्रह संकलनक दोसर लेख "भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति" सँ विचारगत संवाद रचैत अछि। लेखक अन्तमे नव सर्वेक्षणक आवश्यकता स्वीकार करैत छथि—यैह आत्म-संशोधी वैज्ञानिकता लेखक स्थायी मूल्य अछि।

आजुक सन्दर्भमे अंगिका, बज्जिका, क्षेत्रीय पहचान आ भाषिक स्वायत्तताक प्रश्न अधिक संवेदनशील आ बहसयोग्य भ' चुकल अछि। तेँ एहि लेखमे देल नामकरणकैं ओकर समय, उद्धृत भाषावैज्ञानिक परम्परा आ लेखकक वर्गीकरण रूपमे पढ़ब आवश्यक अछि। साहित्यिक दृष्टिएँ लेख ई बुझबैत अछि जे "मैथिली भाषा" भीतर एकरूपता नहि, बल्कि बहुस्वरता अछि—आ ई बहुस्वरता कथा-संवाद, लोकगीत आ क्षेत्रीय गद्यक शैली बुझबा लेल अनिवार्य उपकरण अछि।

४.४ आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या

लेख आधुनिक मैथिली नाटककैं आर्थिक विषमताक सामाजिक दस्तावेज रूपमे पढ़ैत अछि। विभिन्न नाट्य-पाठक उदाहरणसँ भूख, वस्त्र-अभाव, आवास, मजदूरी, महँगाई आ निम्नवर्गीय असुरक्षाकैं रेखांकित कएल गेल अछि। नाटक एतए मनोरंजनक माध्यम नहि, समाजक भीतर छिपल वर्गीय पीड़ाक दृश्य रूप अछि।

लेखकक दृष्टि स्पष्टतः यथार्थवादी आ मानवीय अछि। निर्धनताकैं केवल आर्थिक आँकड़ा नहि, आत्मसम्मान, स्वतंत्र निर्णय, परिवार आ देहक संकट रूपमे देखल गेल अछि। ग्रामीण निर्धनताक ऋतु-अनुभव विशेष महत्त्वपूर्ण अछि—जे ऋतु सम्पन्न वर्ग लेल सौन्दर्य, गरीब लेल भूख, शीत, श्रम आ असुरक्षाक रूप ल' सकैत अछि।

समीक्षात्मक सीमा ई जे लेखक प्रधान लक्ष्य सामाजिक समस्याक सूचीकरण अछि, तेँ नाट्य-रूप, मंच-भाषा, दृश्य-विधान, पात्रक जटिलता आ हास्य-व्यंग्यक सौन्दर्य पर अपेक्षाकृत कम ठहराव अछि। तइयो सामाजिक नाटकक पाठक लेल ई लेख "निर्धनता" कैं केन्द्रित विषय बनाकए अनेक रचनाकैं एक साझा आलोचनात्मक फ्रेममे अनैत अछि।

४.५ मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र बिन्दु: नारी समस्या

ई विस्तृत लेख स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली नाटकमे नारीक स्थितिक बहुस्तरीय सर्वेक्षण अछि। शारीरिक प्रताड़ना, यौन उत्पीड़न, बाल-विवाह, दहेज, वेश्यावृत्ति आ पारिवारिक असमानता जकाँ प्रसंग विभिन्न नाटकक उदाहरणसँ खोलल गेल अछि। "बसात", "हाथीक दाँत", "लक्ष्मण रेखा खण्डित", "त्रिवेणी", "लेटाइत आँचर", "कनियाँ-पुतरा", "तेसर कनियाँ" आदि नाट्य-पाठ सामाजिक आलोचनाक आधार बनैत अछि।

लेखक सुधारवादी मानवीय दृष्टिसँ नारीकैं परिवार आ समाजक सममूल्य अंग मानैत छथि। दहेज, लैंगिक हिंसा आ यौन शोषणक चित्रणकैं नाटककारक सामाजिक जागरणक प्रयत्न रूपमे देखबैत छथि। विशेष रूपेँ प्रभावी ई जे लेख पीड़ाकैं अमूर्त नैतिक वाक्य नहि बनबैत, बल्कि पात्रक संवाद आ नाटकीय परिस्थितिक सहारे सामाजिक संरचनाक क्रूरता देखबैत अछि।

समकालीन स्त्रीवादी आलोचनाक आलोकमे लेखक सीमा सेहो चिन्हनीय अछि। व्यापक ऐतिहासिक सामान्यीकरण बहुत सरलीकृत भ' सकैत अछि, आ नारीकैं मुख्यतः पीड़िता/सुधारक पात्र रूपमे देखबाक कारण स्वायत्त इच्छा, श्रम, जाति-वर्गक अन्तरसम्बन्ध आ प्रतिरोधक सूक्ष्म रूप कम सामने अबैत अछि। तथापि मैथिली नाटकमे लैंगिक हिंसाक बहुविध रूपकैं एकत्र करबाक दृष्टिसँ ई लेख अत्यन्त उपयोगी आधार-पाठ अछि।

४.६ यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन

ई इकाई साहित्यिक निबंधसँ अधिक ज्ञान-संकलनक रूप धारण करैत अछि। मिथिलाक परम्परागत भूसीमा, प्राचीन नाम, नदी, इतिहास, भाषा-साहित्य, सांस्कृतिक संकेत आ परीक्षोपयोगी तथ्यकैं एक साथ संक्षिप्त रूपमे देबाक प्रयास अछि। एहि कारणेँ एकर साहित्यिकता वर्णन-शैलीमे कम, सांस्कृतिक स्मृति व्यवस्थित करबमे अधिक अछि।

संकलनात्मक लेखनक गुण स्पष्टता, क्रम आ त्वरित पुनरावलोकन होइत अछि; एहि दृष्टिसँ ई खण्ड सफल अछि। मुदा आलोचनात्मक इतिहासक लेल प्रत्येक तथ्यक स्रोत, नवीन शोध आ वैकल्पिक मतक अतिरिक्त जाँच जरूरी रहैत। अतः एकरा शोध-ग्रन्थक अन्तिम निष्कर्ष नहि, व्यवस्थित अध्ययन-सहायक मानल जाए।

४.७ घसल अठन्नी: एकटा विमर्श

काशीकान्त मिश्र "मधुप"क "घसल अठन्नी" पर ई लेख साहित्यक मानवीय प्रयोजनसँ विमर्श आरम्भ करैत अछि। कविताकैं लेखक समाजक विस्मयकारी

यथार्थसँ जनमल रचना मानैत छथि। घसल, चलनबाहिर अठन्नी मानवीय अवमूल्यनक प्रतीक बनि उठैत अछि—एहन जीवन जकरा समाजक आर्थिक-नैतिक व्यवहार चलन योग्य नहि मानैत।

डॉ. शम्भु कुमार सिंहक पठन मूलतः मानवतावादी-संवेदनात्मक अछि। ओ मधुपक प्रसिद्ध सौन्दर्यमूलक वा भक्तिमूलक छविसँ हटि सामाजिक पीड़ा लिखनिहार कविक खोज करैत छथि। “घसल अठन्नी”क मूल्य ई जे सामान्य, उपेक्षित वस्तु प्रतीक बनि मनुष्यक असमान जीवनक अर्थ खोलैत अछि।

एहि संकलनमे पछाति डॉ. अरुण कुमार सिंह “मधुपजीक ‘घसल अठन्नी’मे दलित चेतना” लिखैत छथि। दुनू लेख एकै कृतिक दू आलोचनात्मक प्रवेशद्वार बनैत अछि: पहिल मानवीय संवेदना आ सामाजिक अवमूल्यन, दोसर जाति-दलित अनुभव आ संरचनात्मक शोषण। ई समानान्तरता संकलनक सभसँ फलदायी आलोचनात्मक संवाद सभमे एक अछि।

५. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक रिपोर्ताज, समसामयिक निबन्ध, कथा-निबन्ध आ मौलिक कथा

५.१ मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला सम्पन्न

ई रिपोर्ताज २५-३० नवम्बर २०११ कैं डी. बी. कॉलेज, जयनगरमे राष्ट्रीय अनुवाद मिशनक सहयोगसँ आयोजित अनुवाद-अभिविन्यास कार्यशालाक विवरण दैत अछि। प्रतिभागी, उद्घाटन, विषय-विन्यास आ ज्ञान-पाठक अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवादक व्यावहारिक अभ्यासक सूचना एकरा संस्थागत साहित्यिक इतिहासक दस्तावेज बनबैत अछि।

रिपोर्ताजक साहित्यिक मूल्य ओकर तथ्यात्मक संयममे अछि। लेखक अपनाकेँ केन्द्रमे नै रखैत छथि; संस्थागत प्रक्रिया, प्रशिक्षक, प्रतिभागी आ भाषिक काज केन्द्रमे रहैत अछि। एहि कारणेँ ई रचना मैथिलीमे अनुवाद-संस्कृति विकसित होएबाक एक चरणक प्राथमिक साक्ष्य बनैत अछि। आजुक राष्ट्रीय अनुवाद मिशनक आधिकारिक परिचयमे सेहो केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरकेँ मिशनक नोडल संस्था आ प्रमुख सुविधा-प्रदाता कहल गेल अछि; एहि बाह्य तथ्यसँ संकलनक संस्थागत संदर्भ पुष्ट होइत अछि।

अनुवाद-अध्ययनक दृष्टिसँ ई कार्यशाला केवल भाषा-बदलाव नहि, ज्ञानक पहुँचक प्रश्न अछि। ज्ञान-पाठकेँ मैथिलीमे अनबाक अर्थ पाठक समुदायकेँ उच्च शिक्षा, विज्ञान आ समाज-विज्ञानक विमर्शमे भाषिक प्रवेश देब थिक। एहि बिन्दु पर रिपोर्ताज संकलनक “मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा” आ “मैथिलेत्तर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कँप्यूटर...” लेखक संग एक स्पष्ट बौद्धिक शृंखला बनबैत अछि।

५.२ जाग’ जाग’ महादेव!

ई समसामयिक निबन्ध व्यंग्य, संवाद आ सांस्कृतिक आत्मालोचनाक मिश्रण अछि। महादेवक संबोधनक सहारे लेखक मिथिलाक सामाजिक विडम्बना, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, भाषिक उपेक्षा, पाखण्ड आ आधुनिकताक अन्धानुकरण पर प्रहार करैत छथि। शीर्षकमे धार्मिक जागरणक ध्वनि अछि, मुदा रचनाक वास्तविक लक्ष्य सामाजिक चेतना जागृत करब थिक।

निबन्धक खास शक्ति ओकर नाटकीयता अछि। विचार सीधे घोषणापत्र नहि बनैत, बल्कि मिथक-संकेत आ प्रश्नोत्तरक द्वारा व्यंग्यात्मक तनाव पबैत अछि। मैथिली स्वयं जखन उपेक्षित भाषा रूपमे बोलैत अछि तखन भाषा अमूर्त संस्था नहि रहि मातृभूमि, स्मृति आ सम्मानक जीवित पात्र बनि जाइत अछि। एहि मानवीकरणक तकनीक “भाय-बहिनक व्यथा कथा” आ “भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली” धरि पसरेल देखाइत अछि।

समीक्षात्मक रूपेँ किछु सामाजिक निष्कर्ष व्यापक आ भावोच्छ्वासपूर्ण अछि; तथापि ई निबन्धक विधागत स्वभावसँ मेल खाइत अछि। ई शोध-रिपोर्ट नहि, सांस्कृतिक हस्तक्षेप अछि। एकर प्रभाव तथ्य-सूचीक अपेक्षा नैतिक असुविधा उत्पन्न करबामे अछि—पाठक अपन समाजक विडम्बनाक समक्ष ठाढ़ होइत अछि।

५.३ भाय-बहिनक व्यथा कथा

ई कथा-निबन्ध संकलनक सभसँ मौलिक रूपकात्मक रचनामे एक अछि। गाछ आ मैथिली भाषा भाय-बहिन रूपमे संवाद करैत छथि। गाछ अपन देह पर चढ़ल परजीवी अमर-लत्ती, उपेक्षा आ पर्यावरणीय संकटक कथा कहैत अछि; मैथिली अपन लिपि, शिक्षण, सामाजिक प्रतिष्ठा आ नव पीढ़ीक भाषिक दूरीक पीड़ा सुनबैत अछि। दू भिन्न संकट एक पारिवारिक रूपकमे आबि एक-दोसरक प्रतिध्वनि बनि जाइत अछि।

रचनाक सौन्दर्य ई जे लेखक भाषिक आन्दोलनकेँ केवल अधिकारक घोषणामे सीमित नहि करैत छथि। भाषा बहिन रूपमे स्नेहशील अछि; ओकर दुख बच्चाक आन भाषा सीखब नहि, बल्कि अपन मातृभाषाकेँ अस्वीकार करब अछि। एहि सूक्ष्म भेदसँ रचना बहुभाषिकताक विरोधी नहि, स्मृति-विच्छेदक आलोचक बनैत अछि। गाछक संकट सेहो मनुष्य-विरोधी पर्यावरणवाद नहि, सहजीवनक आग्रह अछि।

एहि रचनामे “परजीवी” एक बहुस्तरीय प्रतीक बनैत अछि—देह पर लिपटल लत्ती, संस्कृतिक ऊपर चढ़ल दिखावा, आ आत्मविश्वास खाइत भाषिक

हीनताबोध। रूपकक कारण निबन्ध प्रचारात्मक होएबाक खतरा सँ बचैत अछि। अन्ततः भाय-बहिनक साझा व्यथा पर्यावरण, भाषा आ सांस्कृतिक स्मृतिक त्रिकोण रचैत अछि।

५.४ जेठ आ पूस

“जेठ आ पूस” अत्यन्त संक्षिप्त मुदा तीक्ष्ण सामाजिक कथा अछि। रामदिन जेठक असह्य गरमीमे पाथर तोड़ैत अछि; बाहरी तापसँ अधिक ओकरा बेटी विवाहक दहेजक चिन्ता जरा रहल अछि। एहि कारण जेठक प्रचण्ड धूप ओकरा पूसक शीत जकाँ अनुभूत होइत अछि। शीर्षकक ऋतु-विपर्यास कथा-कला केर मुख्य उपकरण अछि।

लेखक सामाजिक समस्या पर उपदेश नहि दैत छथि; एक श्रमिकक देह, श्रम आ पितृचिन्ताक माध्यमे दहेजक हिंसा देखबैत छथि। दहेज एतए विवाहक एक प्रथा मात्र नहि, श्रमिकक वर्तमान देहक शोषणक कारण बनि जाइत अछि। भविष्यमे होएबवला विवाह आइक श्रम-दिनकेँ नियंत्रित करैत अछि।

कथाक प्रभाव ओकर लघुता आ अन्तर्निहित विडम्बनामे अछि। जेठ-पूसक विरोधाभास मनोवैज्ञानिक तापमान रचैत अछि: सामाजिक चिन्ता प्राकृतिक ऋतुसँ अधिक शक्तिशाली भ’ उठैत अछि।

५.५ सौदागर

“सौदागर” देह-व्यापार आ नैतिक पाखण्ड पर केन्द्रित कथा अछि। एक बिचौलिया स्त्री-देहकेँ व्यापारक वस्तु मानि लाभ-हानिक तर्कसँ अपन काज उचित ठहरबैत अछि; मुदा जखन व्यापारक अमानवीयता अपन परिवार, विशेषतः बहिनक सम्भावित असुरक्षासँ टकराइत अछि, तखन ओकर व्यावसायिक तर्क भीतरसँ दरकैत अछि।

शीर्षक जानि-बुझि मनुष्यक बदला बाजारक शब्द चुनैत अछि। “सौदागर” शब्द पात्रक पेशा मात्र नहि, ओकर दृष्टिक दोष थिक—ओ मनुष्यकेँ मूल्य, मोल आ विनिमयमे देखैत अछि। कथा एहि वस्तुकरणक नैतिक परिणाम उजागर करैत अछि।

समकालीन आलोचनामे ई प्रश्न उठाओल जा सकैत अछि जे देह-व्यापारक सामाजिक-आर्थिक संरचना, स्त्रीक agency आ सहमतिक जटिलता कथा विस्तारसँ नहि खोलैत; मुदा लघु कथ्यक भीतर लेखक पुरुषवादी दोहरा मापदण्डक प्रभावी उद्घाटन करैत छथि।

५.६ गरमी

“गरमी” बाल-दृष्टि, वर्गीय असमानता आ सामाजिक विडम्बनाक कथा अछि। रिक्शा चलाब’ वला पिता, प्रतिकूल मौसम, कॉन्वेन्ट स्कूलक दुनियाँ आ बच्चाक सहज प्रश्न एक-दोसरक विपरीत सामाजिक तापमान रचैत अछि। बच्चा जे प्रश्न सरलतासँ पुछैत अछि, वयस्क समाज तकर उत्तर देबामे असमर्थ होइत अछि।

कथामे “गरमी” केवल मौसम नहि, सामाजिक असमानताक दबावक रूपक अछि। गरीबक देह मौसमक मारि झेलैत अछि, जखन शिक्षा आ सुविधा वर्गभेदक संकेत बनैत अछि। बालक निर्दोष तर्क कथा केँ भावुकतामे डूब’ नहि दैत; ओ विडम्बनाकेँ आर स्पष्ट करैत अछि।

लेखकक कथा-कला एतए संवाद-प्रधान अछि। छोट घटना माध्यमे भ्रष्टाचार, श्रमक अवमूल्यन, वर्गीय आकांक्षा आ आधुनिक शिक्षाक असमान पहुँच एक साथ झलकैत अछि।

५.७ अवसरक निर्माण

“अवसरक निर्माण” धन्मा नामक बाल घरेलू श्रमिकक जीवन-यात्रा पर आधारित प्रेरणात्मक कथा अछि। सीमित अवसर, श्रम आ सामाजिक हीन स्थानक बावजूद धन्मा स्वाध्याय आ सक्रिय प्रयत्नसँ अपन जीवन बदलैत अछि आ पछाति धनेसर कामति रूपमे प्रतिष्ठा अर्जित करैत अछि। कथाक केंद्रीय सूत्र अछि—अवसरक प्रतीक्षा मात्र नहि, ओकर निर्माण करब।

कथा व्यक्तिक agency केँ महत्त्व दैत अछि, मुदा एकर सामाजिक पृष्ठभूमि नजरअन्दाज नहि करबाक चाही। बाल श्रम, वर्गीय असमानता आ शिक्षा-संसाधनक अभाव धन्माक संघर्षक वास्तविक अवरोध छथि। केवल “मेहनत करु आ सफल होउ” रूपमे कथा पढ़ल जाए त’ संरचनात्मक असमानता ओझराइ सकैत अछि। अधिक समुचित पठन ई जे धन्माक उपलब्धि व्यवस्थाक न्यायसंगत होएबाक प्रमाण नहि, अन्यायपूर्ण सीमाक बावजूद मानवीय जिजीविषाक प्रमाण अछि।

रचनाक लोकप्रिय प्रेरकता आ सामाजिक आलोचना एहि द्वैधमे बसैत अछि। व्यक्तिगत उपलब्धिक कथा पाठककेँ प्रेरित करैत अछि, आ आरम्भिक स्थितिक कठोरता समाजकेँ प्रश्नांकित करैत अछि।

५.८ दूभि

“दूभि” मानवीकरण पर आधारित लघुकथा अछि। पुरान विद्यालयक परिसरक दूभि बोलैत अछि आ स्वच्छता, अनुशासन, धूम्रपान-गुटखा, शिक्षण-संस्कृति आ संस्थागत गिरावट पर टिप्पणी करैत अछि। घासक दृष्टिकोणक कारण परिचित विद्यालय अचानक अपरिचित आ आलोचनात्मक दृश्य बनि जाइत अछि।

दूभिक चुनाउ अर्थपूर्ण अछि। दूभि पैरतल दबैतहुँ जीवित रहैत अछि; तकर घायल हरियाली विद्यालयक आहत संस्कारक प्रतीक बनैत अछि। निर्जीव/वनस्पतिक आवाज मनुष्यक आत्ममुग्धता तोड़ैत अछि—जतए मनुष्य परिसरकेँ उपयोगक वस्तु बुझैत अछि, दूभि ओकर व्यवहारक मौन साक्षी अछि।

कथा कखनो-कखनो प्रत्यक्ष नैतिक टिप्पणी दिस जाइत अछि, मुदा रूपक ओकरा स्मरणीय बनबैत अछि। “भाय-बहिनक व्यथा कथा”क गाछ आ “दूभि”क घास मिलि लेखकक पर्यावरणीय-सामाजिक संवेदनाक एक छोट मुदा स्पष्ट धारा निर्मित करैत अछि।

६. डॉ. शम्भु कुमार सिंहक अनूदित लघुकथा: लक्ष्य-भाषामे जीवनक पुनर्रचना

एहि संकलनमे चारि अनूदित लघुकथा—“एकटा आर रबि”, “मृत्युकेँ टारब”, “सोंगर” आ “नागपंचमी”—मैथिली पाठककेँ गोवा/कोंकणी सामाजिक जीवनक विभिन्न रूपसँ जोड़ैत अछि। उपलब्ध संकलनमे मूल भाषा-पाठ साथ-साथ नहि देल अछि; तेँ शब्द-शब्द समतुल्यता वा पूर्ण अनुवाद-निष्ठाक निर्णायक परीक्षण करब उचित नहि। समीक्षा लक्ष्य-पाठक कथ्य, भाषा, सांस्कृतिक वहन-क्षमता आ पाठकीय प्रभाव पर केन्द्रित अछि।

गिडिऑन टूरीक वर्णनात्मक अनुवाद-अध्ययनमे अनुवादकेँ लक्ष्य-संस्कृतिक तथ्य रूपमे पढ़बाक प्रस्ताव भेटैत अछि। एहि दृष्टिसँ एहि मैथिली अनुवाद सभक महत्त्व ई जे ओ आन भारतीय भाषाक कथा-संसारकेँ मैथिली साहित्यिक परिसंचरणक अंग बनबैत अछि। मूलक “विदेशीपन” मिटेबाक बदला स्थानीय नाम, सामाजिक व्यवहार आ सांस्कृतिक स्थिति लक्ष्य-पाठमे दृश्य रहैत अछि।

६.१ एकटा आर रबि — मूल कथाकार: गैस्पर अल्मीडा; मैथिली अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंह

ई कथा वृद्ध रोलदाओ वेगेन्जाक रविवार, दिनचर्या, स्मृति आ एकाकीपनक सूक्ष्म कथा अछि। जन्मदिनक एक छोट संकेत, परिचित लिखावट आ अतीतक स्मृति वृद्ध पात्रक भीतर भावक तरंग उत्पन्न करैत अछि। अन्तमे “एकटा नीक रबि”क अनुभूति साधारण दिनकेँ भावात्मक पूर्णता दैत अछि।

कथाक शक्ति घटना-विपुलतामे नहि, समय-अनुभवमे अछि। वृद्धावस्थामे सप्ताहक एक-एक दिन, परिचित वस्तु आ पत्र/सन्देशक अर्थ बदलि जाइत अछि। आधुनिक जीवनक गति आ वृद्धक धीमा समयक बीच मौन तनाव अछि।

मैथिली लक्ष्य-पाठमे घरेलू क्रिया, आत्मसंवाद आ स्मृति सहज प्रवाह पबैत अछि। शीर्षक “एकटा आर रबि” पुनरावृत्ति आ अनपेक्षित नव्यता दुनूकेँ समेटैत अछि—रविवार त’ फेर आयल, मुदा स्मृतिसँ ओकर भाव-मूल्य नवल बनल।

६.२ मृत्युकेँ टारब — मूल कथाकार: वसंत भगवंत सावंत; हिन्दी अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंह आ सेबी फर्नानडीस; मैथिली अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंह

कथा काम, परिवार आ मृत्यु बीच फँसल मनुष्यक असहायता देखबैत अछि। पिता मृत्युशय्या पर छथि, मुदा रोजी-रोटी/नौकरीक दबाव, दूरी आ समयक गणना पात्रकेँ तुरन्त घर पहुँच’ नहि दैत अछि। जखन ओ लौटैत अछि तखन बहुत देर भ’ चुकल रहैत अछि। “मृत्युकेँ टारब” शीर्षक स्वयं एक करुण विडम्बना अछि—मनुष्य शुभ-अशुभ, समय-सुविधा आ कर्तव्यक गणना करैत रहैत अछि, मृत्यु अपन समय पर आबि जाइत अछि।

ई कथा आधुनिक श्रम-व्यवस्थाक नैतिक प्रश्न सेहो उठबैत अछि। परिवारक निकटता बाजार/नौकरीक अनुशासनसँ नियंत्रित होइत अछि। पात्रक अपराध-बोधक कारण केवल व्यक्तिगत निर्णय नहि, एहन व्यवस्था सेहो अछि जतए श्रमिकक समय ओकर अपन नहि रहैत।

अनुवादमे शोकक घरेलू दृश्य, सम्बोधन आ भाव-संयम मैथिली पाठक लेल परिचित भावभूमि निर्मित करैत अछि; सांस्कृतिक दूरी घटैत अछि, मुदा कोंकणी मूलक स्थानिकता पूर्णतः लुप्त नहि होइत।

६.३ सोंगर — मूल कोंकणी कथा “खपच्ची”: सेबी फर्नानडीस; हिन्दी अनुवाद: डॉ. चन्द्रलेखा डिसूजा; मैथिली अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंह

“सोंगर” वैवाहिक जीवन, सन्तानक सामाजिक दबाव आ भावात्मक सहारेक कथा अछि। मूल शीर्षक “खपच्ची” जकाँ लक्ष्य शीर्षक “सोंगर” सेहो सहारा, टेक वा टूटैत संरचनाकेँ थामि रखबाक प्रतीकात्मक अर्थ खोलैत अछि। दाम्पत्य सम्बन्ध केवल जैविक सन्तानोत्पत्तिक साधन नहि; परस्पर सम्मान आ मानसिक सहारा ओकर असली परीक्षा अछि।

कथा सामाजिक निगरानीक तीखापन देखबैत अछि—विवाहक निजी जीवन पर परिवार/समाजक प्रश्न, सन्तानहीनताक कलंक आ विशेषतः स्त्री पर पड़ैत

दबाव। कथा एहि दबावक बीच सहानुभूति खोजैत अछि।

अनुवादक मैथिली घर-परिवारक परिचित सम्बोधन आ वाक्य-लयक सहारे कथा कें आत्मीय बनबैत छथि। उपलब्ध पाठक आधार पर मूल-लक्ष्य शब्दानुपातक निर्णय सम्भव नहि, मुदा लक्ष्य-कथाक भाव-संगति स्पष्ट अछि।

६.४ नागपंचमी — मूल कथाकार: वसंत भगवंत सावंत; मैथिली अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंह

ई कथा लगातार वर्षा, निर्धनता, रोग/मृत्यु आ धार्मिक निषेधक टकराव पर आधारित अछि। नागपंचमीक दिन माटि खनबाक मनाही आ मृत बच्चाकें दफन करबाक तात्कालिक आवश्यकता हरिक सामने असह्य नैतिक परिस्थिति रचैत अछि। अन्ततः शोकक मानवीय आवश्यकता अनुष्ठानिक निषेधसँ अधिक वास्तविक सिद्ध होइत अछि।

कथा धर्मक सामान्य उपहास नहि करैत; ओ संकटमे नियमक सीमा पूछैत अछि। जखन अनुष्ठान जीवन-संगति खोइ देत अछि तखन पीड़ित मनुष्य की करत? हरिक निर्णय एहि प्रश्नक उत्तर कर्मसँ दैत अछि।

वर्षा, जल-जमाव, मजूरीक बाधा आ गरीब घरक असुरक्षा कथा कें ठोस भौतिक धरातल दैत अछि। धार्मिक द्वन्द्व एतए अमूर्त तत्त्वज्ञान नहि, मृत देहक सामने खड़ा प्रश्न अछि। एहि कारण कथा अत्यन्त मार्मिक बनैत अछि।

७. “पाखलो”: पहचान, माटि, औपनिवेशिक स्मृति आ बहिष्करणक उपन्यास

७.१ मूल रचनाकार आ अनुवादक

“पाखलो” मूल कोंकणी उपन्यासकार तुकाराम रामा शेटक कृति अछि, जकर मैथिली अनुवाद डॉ. शम्भु कुमार सिंह कएने छथि। संकलनमे देल रचनाकार-परिचय अनुसार तुकाराम रामा शेटक जन्म ३१ जुलाई १९५२, आ “पाखलो” कें १९८०-८१ मे गोवा कला अकादमीक साहित्य पुरस्कार भेटल छल। एहि तथ्यकें आधार-पाठक सूचना रूपें ग्रहण कएल गेल अछि।

उपन्यास संकलनक सर्वाधिक विस्तृत रचनात्मक इकाई अछि। एकर केन्द्रमे “पाखलो” कहल जाणिहार एहन मनुष्य अछि जकर शारीरिक रूप, जन्मक परिस्थिति आ सामाजिक इतिहास ओकरा अपन समाजक भीतर “बाहरी” बना दैत अछि। ओकर गहन इच्छा “विठू” जकाँ स्वीकार्य स्थानीय मनुष्य बनबाक अछि—अर्थात नामक परिवर्तन मात्र नहि, सामाजिक अस्तित्वक पुनर्लेखन।

७.२ “पाखलो” नाम: समाज द्वारा बनाओल पराया

“पाखलो” एक संबोधन/पहचान अछि जकरा पात्र स्वयं चुनने नहि अछि। समाज ओकर देह आ जन्मक कथा पढ़ि नाम दैत अछि। एहि प्रक्रिया मे पहचान निजी आत्मबोधसँ पहिने सामुदायिक दृष्टिसँ निर्मित होइत अछि। उपन्यासक त्रासदी ई जे पात्र माटि, लोक, भाषा आ स्मृतिसँ गहरे जुड़ल रहितहुँ देहक दृश्य चिह्नक कारण “अहाँ हमर नहि छी” सुनैत रहैत अछि।

एतए होमी के. भाभाक सांस्कृतिक hybridity/liminality केर अवधारणा एक उपयोगी बाह्य आलोचनात्मक उपकरण बनि सकैत अछि। मुदा “पाखलो”क मिश्रित पहचानकें रोमानी उत्सव रूपमे पढ़ब भूल होएत। ओकर बीचवर्ती स्थिति उत्पादक सांस्कृतिक खेलसँ अधिक पीड़ादायक सामाजिक अनिश्चितता अछि। ओ बहु-सांस्कृतिक सम्भावना अवश्य देखबैत अछि, पर प्रथम अनुभव बहिष्करणक अछि।

७.३ कथन-रचना आ स्व-कथन

उपन्यासक उल्लेखनीय शिल्प कथन-स्वरक अदला-बदली अछि। किछु अध्याय पाखलोक प्रथम पुरुष स्वरमे, किछु लेखक/बाहरी कथाकारक स्वरमे आबैत अछि। उपलब्ध पाठमे अध्याय १, ३, ५, ७, ९ आ १० पाखलोक आत्मकथ्यात्मक स्वर सँ जुड़ैत अछि, जखन कि २, ४, ६ आ ८ बाहरी कथनक द्वारा घटना आ पात्र-वृत्त विस्तार करैत अछि।

ई विन्यास पाठककें “ओकरा बारेमे” सुनबा आ “ओकरासँ” सुनबा बीच बारम्बार स्थान बदलैत अछि। सामाजिक बहिष्करणक कथा लेल ई विशेष अर्थपूर्ण अछि, किएक तँ बहिष्कृत मनुष्यक आवाज अक्सर समाजक वर्णनमे दबि जाइत अछि। प्रथम पुरुष अध्याय ओकर आन्तरिकता पुनः प्राप्त करबैत अछि।

७.४ माटि, नारियल, गाम आ अपनत्व

उपन्यासक पहचान-विमर्श अमूर्त नहि; माटि, गाम, नारियल, घर, नदी/समुद्री परिसर आ स्थानीय जीवनक ठोस संकेतसँ बनल अछि। पाखलोक स्थानीय संस्कार समाजक आरोपित “विदेशीपन”क विरोधाभास उत्पन्न करैत अछि। प्रश्न उठैत अछि—केवल रक्त, देह वा वंश अपनत्व निर्धारित करत, कि जीवन-

स्मृति आ माटिसँ जुड़ाव सेहो?

उपन्यास एहि प्रश्नक सरल नारा-जवाब नहि दैत। पाखलो अपनाकेँ स्थानीय प्रमाणित करबाक तड़पमे रहैत अछि, मुदा समाजक सीमा बारम्बार ओकरा रोकैत अछि। एहि संघर्षसँ “माटि” जैविक मूलक बदला सांस्कृतिक निवास आ अनुभूत इतिहासक प्रतीक बनैत अछि।

७.५ शाली, हिंसा आ औपनिवेशिक सत्ता-संबद्धता

पाखलोक जन्म-कथा स्त्री-देह पर हिंसा आ विदेशी/औपनिवेशिक सत्ता-संबद्ध पुरुषक असमान शक्ति-संबन्धसँ जुड़ल अछि। शालीक अनुभव उपन्यासक पहचान-संकटक मूलमे अछि। फलतः पाखलोक देह स्वयं एक अनचाहल इतिहासक दृश्य प्रमाण बनि जाइत अछि—ओ अपराधी नहि, मुदा अपराध/हिंसाक सामाजिक स्मृति ओकर शरीर पर आरोपित अछि।

ई अत्यन्त संवेदनशील बिन्दु अछि। संकलनक बादमे जोड़िल आलोचना “हर एक लोक आ माटिक कथा” सेहो संकेत करैत अछि जे कामो चीफक हिंसाक चित्रण/परवर्ती प्रस्तुति कतहुँ नरम पड़ैत बुझाइत अछि। आधुनिक लैंगिक आलोचनामे शालीक agency, आघात आ दृष्टिकोण कैँ आर केन्द्रमे आनल जा सकैत अछि। पाखलोक पीड़ा महत्वपूर्ण अछि, मुदा ओकर जन्मक पृष्ठभूमिमे एक स्त्रीक हिंसात्मक अनुभवकेँ केवल नायकक पहचानक साधन बना देब उचित नहि।

७.६ रजनी, दादी, सोनू, गोविन्द, अलेक्स आ सम्बन्धक जाल

उपन्यासक सामर्थ्य एकल नायकक कथा होइतहुँ सम्बन्धक विस्तृत जालमे अछि। दादी स्मृति आ संरक्षणक, रजनी स्नेह/मानवीय निकटताक, सोनू सामाजिक भविष्यक, गोविन्द विचारशील संवादक आ अलेक्स ईसाई/भिन्न सामाजिक वृत्तक संपर्कक माध्यम बनैत छथि। एहि पात्र सभक द्वारा पाखलोक “एकाकीपन” पूर्ण सामाजिक निर्वात नहि रहैत; ओ अपनत्वक अनेक अधूरा पुल बनबैत अछि।

किछु गौण पात्रक विकास सीमित रहि जाइत अछि—एहि बिन्दु पर अशोक मनभुटकर सेहो मूल समीक्षामे सोनू/शाली आ गोविन्दक प्रस्तुति संबंधी आपत्ति उठबैत छथि। तथापि पात्र-जाल उपन्यासकेँ केवल प्रतीक-कथा नहि रहए दैत; रोजमर्रा सम्बन्धक टूटन-गाँठमे पहचान-विमर्श जीवित रहैत अछि।

७.७ स्मृति, समय आ स्वाधीनता-पृष्ठभूमि

उपन्यास व्यक्तिगत जीवनकेँ गोवाक व्यापक ऐतिहासिक संक्रमणक छायामे रखैत अछि। औपनिवेशिक सत्ता, स्वाधीनताक संघर्ष आ सामाजिक पुनर्संरचनाक संकेत निजी सम्बन्धकेँ ऐतिहासिक गहराई दैत अछि। मुदा उपलब्ध पाठ आ संकलित समीक्षा दुनू सँ ई बात स्पष्ट अछि जे स्वाधीनता-संघर्षक पृष्ठभूमि आर विस्तार पाबि सकैत छल; कतिपय ऐतिहासिक तनाव संकेत रूपेँ रहि जाइत अछि।

एहि सीमा बावजूद निजी पहचान आ राजनीतिक इतिहासक सम्बन्ध महत्त्वपूर्ण अछि। सत्ता बदलबासँ सामाजिक स्मृति तुरन्त नहि मिटैत। पाखलोक शरीर आ नाम बतबैत अछि जे औपनिवेशिक इतिहास राजनीतिक तिथि समाप्त भेलाक बादो मनुष्यक निजी जीवनमे जीवित रहि सकैत अछि।

७.८ अध्याय-अन्त आ कलात्मक नियंत्रण

“पाखलो”क शिल्पमे अध्याय-अन्तक प्रभाव विशेष उल्लेखनीय अछि। अनेक अध्याय प्रश्न, स्मृति, विडम्बना वा भावात्मक अधर पर समाप्त होइत अछि, जाहिसँ अगिला अध्यायक प्रति पाठकीय आकर्षण बनैत अछि। संकलित मनभुटकर समीक्षा सेहो अध्याय-अन्तक कलात्मकताकेँ कृतिक उपलब्धि मानैत अछि।

एहि तकनीक उपन्यासक रहस्य-वृत्ति नहि, मनोवैज्ञानिक अपूर्णताक संरचना अछि। पाखलोक पहचान स्वयं अधूरी अछि; तेँ अध्याय सभ सेहो पूर्ण समाधान पर नहि, नूतन प्रश्नक कगार पर रुकैत अछि। रूप आ विषयक ई संगति कृतिक प्रमुख सौन्दर्य उपलब्धि अछि।

७.९ मैथिली अनुवादक साहित्यिक महत्त्व

“पाखलो”क मैथिली रूपान्तरण दू भारतीय भाषिक क्षेत्रक बीच साहित्यिक सेतु अछि। लक्ष्य-पाठमे गोवाक स्थानिक नाम, सामाजिक व्यवहार आ सांस्कृतिक भिन्नता बचल रहैत अछि, जखन कि कथा-वाचन मैथिली पाठकीय लय प्राप्त करैत अछि। ई अनुवाद “स्थानीयकरण”क अतिरेकसँ बचैत आन माटिक गन्ध मैथिलीमे प्रवेश करबैत अछि।

टूरीक लक्ष्य-संस्कृति केन्द्रित दृष्टिसँ देखल जाए त’ अनुवादक सफलता केवल मूलक प्रतिकृति होएब नहि, लक्ष्य साहित्यिक क्षेत्रमे कृतिक नवल कार्य करब सेहो अछि। “पाखलो” मैथिली पाठकक सामने गोवा, औपनिवेशिक स्मृति, मिश्रित पहचान आ सामाजिक बहिष्करणक एहन अनुभव अनैत अछि जे स्थानीय जाति/समुदाय/भाषिक अस्मिताक प्रश्नक संग तुलनात्मक संवाद करि सकैत अछि। मूल कोंकणी पाठ एहि संकलनमे उपलब्ध नहि, तेँ सूक्ष्म भाषिक निष्ठा पर

अन्तिम निर्णय नै देल जा रहल अछि।

७.१० अशोक मनभुटकरक "हर एक लोक आ माटिक कथा": संकलनमे निहित आलोचनात्मक प्रतिपाठ

"पाखलो"क बाद संकलनमे अशोक मनभुटकरक "हर एक लोक आ माटिक कथा" शीर्षक समीक्षा-अंश देल अछि, स्रोत रूपमे "कोंकण टाइम्स", दीपावली १९८१ उल्लिखित अछि। ई स्वतंत्र आलोचनात्मक इकाई अनुक्रममे अलग शीर्षक रूपेँ नहियो देखाओल गेल हो, पूर्णताक दृष्टिसँ एकरा छोड़ब उचित नहि।

मनभुटकर कृतिक कथा-विन्यास, अध्याय-अन्त, पाखलोक सार्वभौम प्रतीकात्मकता आ माटिसँ सम्बन्धक प्रशंसा करैत छथि। हुनक केन्द्रीय अंतर्दृष्टि ई जे समाजक बहिष्करण "पाखलो" बनबैत अछि, जखन व्यक्ति भीतरसँ "विठू" बनि अपन माटिक साधारण मनुष्य रूपमे जीब' चाहैत अछि। एहि कारण शीर्षक "हर एक लोक आ माटिक कथा" उपन्यासक क्षेत्रीय कथ्यकेँ सार्वभौम मानवीय प्रश्नमे विस्तार दैत अछि।

समीक्षक कमजोरी सेहो देखबैत छथि—सोनू/शालीक अपेक्षाकृत अल्प विकास, गोविन्दक उमिरक तुलनामे अस्वाभाविक दार्शनिकता, स्वाधीनता-संघर्षक पृष्ठभूमिक अपर्याप्त विस्तार, आ कामो चीफक हिंसा/अपराधक चित्रणमे सम्भावित नरमी। ई आलोचनात्मक असहमति बहुमूल्य अछि, किएक तँ संकलन पाठककेँ कृतिक प्रशस्ति मात्र नहि, तर्कपूर्ण प्रतिपाठ सेहो दैत अछि।

८. डॉ. अरुण कुमार सिंहक गद्य: समाज, भाषा, कोशी आ भाषा-प्रौद्योगिकी

डॉ. अरुण कुमार सिंहक रचनात्मक-आलोचनात्मक क्षेत्र डॉ. शम्भु कुमार सिंहसँ भिन्न होइतहुँ परस्पर पूरक अछि। हुनक लेखनमे कथा-समीक्षा, सामाजिक समरसता, दलित चेतना, मातृभाषा-शिक्षा, भाषिक समाजशास्त्र, कोशी क्षेत्रक विकास-विमर्श, यात्रा-रिपोर्ताज आ संगणनात्मक भाषाविज्ञान एक साथ उपस्थित अछि। संकलनमे देल परिचय अनुसार ओ एल.डी.सी.-आई.एल., भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरसँ सम्बद्ध छलाह; जन्म-स्थान अराहा, मधेपुरा देल अछि।

८.१ स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता

ई लेख स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथा-साहित्यकेँ जाति, वर्ग, धर्म आ सामुदायिक सम्बन्धक धरातल पर पढ़ैत अछि। "समरसता" लेखक लेल केवल संघर्षक अनुपस्थिति नहि, विविध सामाजिक समूहक मानवीय सहअस्तित्व, परस्पर सम्मान आ साझा प्रगतिक आकांक्षा अछि। लेख मैथिली कथाक विकासक संक्षिप्त ऐतिहासिक पृष्ठभूमि देत आधुनिक कथा-परम्परामे सामाजिक सरोकार खोजैत अछि।

लेखकक दृष्टि नैतिक-समाजशास्त्रीय अछि। कथा-कला, बिम्ब, कथन-शिल्पक अपेक्षा पात्रक सामाजिक स्थिति आ रचनाक मानवीय संदेश केन्द्रमे अछि। एहि कारण परीक्षोपयोगी स्पष्टता पबैत अछि, मुदा साहित्यिक बहुअर्थकता कखनो कम होइत अछि।

समकालीन आलोचनामे "समरसता" शब्द सावधानीसँ उपयोग योग्य अछि। असमान जाति-वर्गीय संरचना विद्यमान रहैत केवल मेल-मिलापकेँ आदर्श मानल जाए त' अन्याय अदृश्य होएबाक खतरा अछि। अत: एहि लेखक सर्वोत्तम पाठ "न्यायपूर्ण सहअस्तित्व" रूपमे अछि—जतए समरसता संघर्ष दबाब' नहि, गरिमा आ समान अधिकार स्थापित करबाक लक्ष्य हो।

८.२ मधुपजीक 'घसल अठन्नी'मे दलित चेतना

ई लेख काशीकान्त मिश्र "मधुप"क "घसल अठन्नी" केँ दलित चेतनाक फ्रेममे पढ़ैत अछि। घसल अठन्नी—चलनसँ बाहर, मूल्यहीन बुझल वस्तु—समाज द्वारा अवमूल्यित मनुष्यक प्रभावी प्रतीक बनैत अछि। बुचनी, भुटकुन बाबू आदि पात्र/स्थितिक सहारे लेखक सामाजिक-आर्थिक हीनताक भीतर जातिगत अपमानक संरचना देखैत छथि।

एहि लेखक विशेष महत्त्व संकलनक अन्त:संवादमे अछि। डॉ. शम्भु कुमार सिंहक "घसल अठन्नी: एकटा विमर्श" मानवीय संवेदना आ सामाजिक अवमूल्यन पर केन्द्रित अछि, जखन डॉ. अरुण कुमार सिंहक पठन दलित संरचनात्मक अनुभवकेँ नाम दैत अछि। पहिल पठन सार्वभौम मानवीय पीड़ा खोलैत अछि, दोसर पूछैत अछि—ई पीड़ा किन सामाजिक शक्ति-संबन्धसँ उत्पन्न होइत अछि? दुनूकेँ संग पढ़ला पर कविता अधिक गहन होइत अछि।

दलित आलोचनाक समकालीन मानदण्डसँ जाति, स्वर, agency आ ऐतिहासिक सत्ता-संबन्ध पर आर अधिक विस्तार सम्भव छल। तथापि मैथिली काव्यक एक स्थापित रचनाकेँ दलित चेतनाक केन्द्रसँ पुनर्पाठ करब लेखक महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक हस्तक्षेप अछि।

८.३ मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा

ई लेख शिक्षाक भाषा आ ज्ञान-अधिगमक सम्बन्ध पर केन्द्रित अछि। लेखकक मूल तर्क ई जे विद्यार्थी अपन प्रथम/मातृभाषामे सोचैत अछि; आन भाषामे

उच्चशिक्षा पबैत काल मानसिक अनुवादक अतिरिक्त बोझ उत्पन्न भ' सकैत अछि। तेँ ज्ञान-पाठ, पारिभाषिक शब्दावली, पाठ्यपुस्तक आ संस्थागत संसाधन विकसित क' मातृभाषाकेँ उच्चशिक्षाक सक्षम माध्यम बनाओल जा सकैत अछि।

लेखक महत्त्व केवल भाषिक गौरव नहि, ज्ञानक लोकतंत्रीकरणमे अछि। मातृभाषा माध्यमक अर्थ एतए अंग्रेजी वा आन भाषाक निषेध नहि, बल्कि विद्यार्थीकेँ अवधारणा बुझबाक प्रथम मजबूत आधार देब थिक। बहुभाषी उच्चशिक्षामे मातृभाषा, सम्पर्क-भाषा आ अन्तरराष्ट्रीय भाषाक पूरक भूमिका अधिक व्यावहारिक दृष्टि अछि।

बाह्य अनुसन्धान एहि मूल दिशाकेँ समर्थन दैत अछि। यूनेस्कोक भारतक २०२५ “Bhasha Matters” प्रतिवेदन मातृभाषा-आधारित बहुभाषिक शिक्षाकेँ समझ, संज्ञानात्मक विकास, शैक्षिक समावेशन आ भाषिक विविधताक संरक्षणसँ जोड़ैत अछि। मुदा उच्चशिक्षाक विशेष क्षेत्रमे वैज्ञानिक शब्दावली, गुणवत्तापूर्ण पाठ्यपुस्तक, शिक्षक-प्रशिक्षण आ बहुभाषिक संसाधन बिना नीति घोषणासँ काज नहि चलत—ई चुनौती लेखक तर्कक व्यावहारिक विस्तार अछि।

८.४ भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति

ई लेख संकलनक भाषिक विचारधाराक केन्द्रबिन्दु अछि। लेखक स्पष्ट करैत छथि जे भाषा कोनो जाति, वर्ग वा वंशक निजी सम्पत्ति नहि; ओ समाजक सामूहिक व्यवहार, इतिहास आ निरन्तर परिवर्तनसँ बनैत अछि। एहि कारण कोनो समूह “शुद्ध” भाषाक एकाधिकार घोषित नहि करि सकैत।

ई तर्क “मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र...” लेखक संग महत्वपूर्ण संवाद रचैत अछि। एक दिस क्षेत्रीय विविधता, दोसर दिस सामाजिक स्वामित्व—दुनू मिलि भाषा कें जीवित, बहुविध आ सामुदायिक संस्था रूपमे स्थापित करैत अछि।

साहित्यिक दृष्टिएँ एहि अवधारणाक परिणाम दूरगामी अछि। जँ भाषा सामाजिक सम्पत्ति अछि त' साहित्यक मानक सेहो एकमात्र जातीय बोलीक स्थिर प्रतिलिपि नहि होएबाक चाही; लोकभाषा, क्षेत्रीय रूप, नव शब्द, विज्ञान-तकनीक आ शहरी अनुभव सभ साहित्यिक मैथिलीकेँ समृद्ध करि सकैत अछि।

८.५ सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा

ई लेख कोशी/कौशिकी क्षेत्रक सामाजिक-आर्थिक अवस्थाक व्यापक लेखा-जोखा अछि। बाढ़, तटबन्ध, सिंचाइ, गरीबी, सड़क, उद्योग, विस्थापन, पलायन, विकास-नीति आ क्षेत्रीय असमानताक प्रश्न एक साथ उपस्थित अछि। शीर्षकमे “सतसठि साला” समयक दीर्घता आ अधूरा विकासक हिसाब माँगैत अछि।

रचना आँकड़ा, अनुभव आ राजनीतिक प्रश्नकेँ एक साथ रखैत अछि। कोशी एतए नदी मात्र नहि, मिथिलाक आर्थिक भूगोल, विस्थापन आ राज्य-नीतिक प्रतीक अछि। लेखक विकासक घोषणाकेँ स्थानीय जीवनक परिणामक कसौटी पर जाँचैत छथि—पानीक नियंत्रणक परियोजना जँ लोकक घर, खेती, रोजगार आ आवागमन नहि सुधारि सकल त' ओकर सफलता प्रश्नांकित रहत।

लेखमे पृथक मिथिला राज्य संबंधी आकांक्षा/राजनीतिक निष्कर्ष सेहो उपस्थित अछि। एकरा लेखकक स्पष्ट राजनीतिक मत रूपमे पढ़बाक चाही, निर्विवाद ऐतिहासिक तथ्य रूपमे नहि। साहित्यिक समीक्षा लेल अधिक महत्वपूर्ण ई जे क्षेत्रीय अस्मिता विकासक अनुभवसँ कोना जुड़ैत अछि।

८.६ कोशीमे बिताओल एक दिन

ई यात्रा-रिपोर्ताज प्रत्यक्ष अनुभवक सूक्ष्मता कारण “सतसठि साला कौशिकी”क महत्त्वपूर्ण सहपाठ अछि। १ जून २०१२क यात्राक क्रममे सड़क, कोशीक धार, कटान, गाम, लोक, भोजन, स्कूल, बाढ़-राहत भवन आ स्थानीय आतिथ्यक दृश्य लेखकक आँखिसँ खुलैत अछि।

रिपोर्ताजक खासियत आत्मीय अवलोकन अछि। कोशीक भयावहता देखैत लेखक अपन सुविधापूर्ण वाहन आ स्थानीय नेना-भुटकाक सहज जल-अनुभवक अन्तर स्वीकार करैत छथि; एहि विरोधाभाससँ बाहरी दर्शक आ स्थानीय जीवनक दूरी स्पष्ट होइत अछि।

अन्तमे “उजड़ैत गाम: बसैत शहर”क पूर्वधारणा आ शिशौना गाममे देखल विकासक बीच तनाव उत्पन्न होइत अछि। लेखक तैयार निष्कर्ष थोपैत नहि, प्रत्यक्ष अनुभवसँ अपन धारणा जटिल बनबैत छथि। यही आत्म-संशोधन रिपोर्ताजक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

८.७ उजड़ैत गाम: बसैत शहर?

शीर्षकक प्रश्नचिह्न रचनाक केन्द्र अछि। ग्रामीण क्षेत्रसँ शहर दिस पलायन, रोजगार, शिक्षा, सुविधा, जमीन आ सामाजिक संरचनाक परिवर्तन लेखककेँ पूछबाक लेल बाध्य करैत अछि—की आधुनिक विकास अनिवार्यतः गामकेँ उजाड़ि शहरकेँ बसबैत अछि? अथवा गाम भीतर नवल रूपमे जीवन टिकि सकैत अछि?

लेख ग्रामीण जीवनक रोमानीकरण नहि करैत; सुविधा-अभाव, अवसरक कमी आ विस्थापनक दबाव स्वीकार करैत अछि। मुदा शहरक विस्तारकेँ स्वतः प्रगति मानबाक विरोध करैत अछि। मानव समुदाय, स्थानीय संसाधन आ आत्मीय सम्बन्धक ह्रास आर्थिक विकासक अदृश्य लागत बनि सकैत अछि।

“कोशीमे बिताओल एक दिन”क अन्तिम आत्मसंशय एहि लेखक प्रश्नकेँ आर जटिल करैत अछि। एक रचनामे व्यापक प्रवृत्ति, दोसरमे अपवाद/स्थानीय परिवर्तन—दुनू संग पढ़ल जाए त’ लेखकक क्षेत्रीय दृष्टि अधिक संतुलित बुझाइत अछि।

८.९ अभिकलनात्मक/संगणनात्मक (Computational) मैथिली व्याकरण

ई लेख व्याकरणकेँ मशीन-पठनीय संरचनामे बदलबाक आवश्यकता पर केन्द्रित अछि। पारम्परिक व्याकरण मनुष्यक वर्णनात्मक समझ लेल पर्याप्त भ’ सकैत अछि, मुदा कम्प्यूटरक लेल रूप, पद-श्रेणी, वाक्य-संरचना, टैग, कॉर्पस आ स्पष्ट नियमबद्ध डेटा आवश्यक होइत अछि। लेखक एहि अन्तरकेँ मैथिली सन्दर्भमे रेखांकित करैत छथि।

साहित्यिक संकलनमे एहि तकनीकी लेखक उपस्थिति पहिल दृष्टिमे असामान्य लागैत अछि, मुदा वास्तवमे ई भाषा-संरक्षणक नवल आयाम खोलैत अछि। भाषा जँ डिजिटल खोज, वाणी-तकनीक, मशीन-विश्लेषण आ शिक्षण-उपकरणमे अनुपस्थित रहत त’ आधुनिक ज्ञान-व्यवस्थामे ओकर दृश्यता सीमित भ’ सकैत अछि।

आइ प्राकृतिक भाषा संसाधन, बड़े कॉर्पस, न्यूरल मॉडल आ भाषिक AIक युगमे लेखक अनेक तकनीकी उदाहरण पुरान पड़ि सकैत अछि, मुदा डेटा-संपन्न मैथिली व्याकरणक मूल आवश्यकता आर बढ़ल अछि। आलोचनात्मक रूपेँ एहि लेखकेँ “भविष्यक पूर्वरूप” कहब अधिक उचित अछि, पूर्ण आधुनिक NLP मार्गदर्शिका नहि।

८.१० तीन दिवसीय कार्यशालाक आयोजन

ई रिपोर्ताज १९-२१ सितम्बर २०११मे एल.डी.सी.-आई.एल. द्वारा आयोजित तीन-दिवसीय कार्यशालाक दस्तावेज अछि, जाहिमे उर्दू, हिन्दी आ मैथिली लेल भाषिक annotation/POS-मॉर्फ सम्बन्धी प्रशिक्षण/कार्य पर बल अछि। संस्थागत सहभागिता, विशेषज्ञता आ मानकीकृत भाषिक डेटा निर्माणक प्रक्रिया एकर केन्द्र अछि।

ई रचना “अभिकलनात्मक मैथिली व्याकरण”क सिद्धान्तक व्यावहारिक प्रतिरूप बनैत अछि। पहिल लेख बतबैत अछि जे मशीनकेँ संरचित भाषिक डेटा किएक चाही; ई रिपोर्ताज देखबैत अछि जे एहन डेटा बनबैत कोना अछि—विशेषज्ञ, कार्यशाला, टैगिंग-निर्णय आ सामूहिक मानकीकरणक द्वारा।

रिपोर्ताजक महत्त्व साहित्यिक अलंकारमे नहि, भाषाक आधारभूत संरचना निर्मित करबाक इतिहासमे अछि। मैथिली डिजिटल भविष्य केवल कविता/कथाक ई-पाठसँ नहि, annotated corpus, speech resource, lexicon आ grammar engineering सँ सेहो बनैत अछि।

९. पद्य-खण्ड: स्मृति, आशा, वर्ग, राष्ट्र, सैनिक जीवन आ भाषिक अस्मिता

पद्य-खण्ड आकारमे छोट, विषयमे विविध अछि। डॉ. शम्भु कुमार सिंहक चारि मौलिक कविता, दू अनुवाद; आ डॉ. अरुण कुमार सिंहक तीन कविता मिलि संकलनक आलोचनात्मक-गद्यक भावात्मक प्रतिरूप बनबैत अछि। गद्य जे प्रश्न तर्कसँ उठबैत अछि, कविता ओकरा बिम्ब, संबोधन, लय आ विडम्बनाक माध्यमे अनुभव बनबैत अछि।

९.१ अतीत — डॉ. शम्भु कुमार सिंह

“अतीत” स्मृति आ वर्तमानक सम्बन्ध पर मननशील कविता अछि। अतीतकेँ केवल गौरव-गान वा पछतावा नहि मानि अनुभवक भंडार रूपमे देखल गेल अछि; वर्तमान परिस्थितिसँ ओकर मन्थन भविष्यक दिशा देब सकैत अछि।

कविताक दार्शनिकता सरल अछि, मुदा संकलनक इतिहास-लेख सभसँ जुड़ल अछि। काल-विभाजनक विद्वत लेख अतीतकेँ वर्गीकृत करैत अछि; ई कविता पूछैत अछि—व्यक्तिगत/सामूहिक जीवनमे अतीतक उपयोग की? उत्तर अछि: स्मृतिक निष्क्रिय पूजा नहि, आलोचनात्मक मन्थन।

९.२ आस — डॉ. शम्भु कुमार सिंह

“आस” अन्हार, राति, आँधी/प्रतिकूलता आ भोरक प्रतिमान पर आधारित आशावादी कविता अछि। परिचित प्रतीक होइतहुँ कविताक प्रभाव भाव-संयममे अछि: अन्हार स्थायी नहि, प्रतीक्षा निष्क्रिय नहि, बल्कि भविष्यक सम्भावना पर आस्था अछि।

“अतीत” आ “आस” केँ संग पढ़ला पर समयक पूर्ण वृत्त बनैत अछि—पहिल पछिला समयक मन्थन, दोसर आगाँक समयक भरोसा।

९.३ लोरी — डॉ. शम्भु कुमार सिंह

“लोरी” पारम्परिक वात्सल्य-विधाकेँ वर्गीय प्रतिरोधमे बदलि दैत अछि। भूखल बच्चा, ठंढ, श्रमिक माय आ ओही संसारमे दूध-भात खाइत उज्जर कुकुरक दृश्य

सामाजिक असमानताकेँ तीखा बनबैत अछि। माय बच्चाकेँ सुतबैत अछि, मुदा लोरी स्वयं समाजकेँ जगबैत अछि।

कविताक सभसँ प्रभावी तकनीक विपरीत दृश्य अछि: पशु सुविधापूर्वक भोजन पबैत अछि, श्रमजीवी मनुष्यक नेना अन्न लेल बेकल अछि। ई तुलना पशु-विरोधी नहि, मनुष्यक निर्मित वर्ग-व्यवस्थाक आलोचना अछि। अन्तिम स्वर निराशामे समाप्त नहि; विषदन्त टूटबाक आकांक्षा प्रतिरोधक आशा बनैत अछि।

"लोरी" संकलनक "निर्धनताक समस्या", "जेठ आ पूस" आ "अवसरक निर्माण" संग वर्ग-संवेदनाक काव्यात्मक केन्द्र रचैत अछि।

९.४ आह्वान — डॉ. शम्भु कुमार सिंह

"आह्वान" युवा पीढ़ीकेँ राष्ट्रक विविधता, एकता आ हिंसात्मक जाति-धर्म उन्मादक विरुद्ध संबोधित कविता अछि। पंजाब, असम, गुजरात, आन्ध्र, कश्मीर आदि क्षेत्रक उल्लेख राष्ट्रकेँ अमूर्त नक्सा नहि, संघर्ष-स्मृतिसँ भरल बहु-क्षेत्रीय समुदाय बनबैत अछि।

देशभक्तिक एहि रूपमे केवल जयघोष नहि, आत्मालोचना सेहो अछि। "खूनक होली" सन संकेत राष्ट्रीय एकताक भीतर साम्प्रदायिक/जातीय हिंसाक भय देखबैत अछि। अतः कविता राष्ट्रवादकेँ बहुलता-संरक्षण आ नागरिक जिम्मेदारीसँ जोड़ैत अछि।

९.५ स्नेह-भरल सनेस — मूल डोगरी कविता: प्रो. चम्पा शर्मा; हिन्दी अनुवाद: श्रीमती रजनी शर्मा; मैथिली अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंह

ई अनूदित कविता सीमाक्षेत्रमे तैनात सैनिक आ घरक बीच भावात्मक दूरीक गीत अछि। सियाचिन, पुलवामा, राजौरी, डोडा, जैसलमेर, नौसेना आदि भौगोलिक संकेत सैनिक जीवनक अनिश्चितता आ देशक विस्तृत सीमांतक अनुभव रचैत अछि। दूसरी ओर घरक उपहार, लोक-स्मृति, "राहड़ा" आ प्रियजनक प्रश्न निजी संसारकेँ जीवित रखैत अछि।

पुनरावृत्त प्रश्न "बाजू सैनिक! कोन ठाम?" केवल भौगोलिक पता नहि पूछैत; ओ सुरक्षा, दूरी आ प्रतीक्षाक प्रश्न अछि। सैनिक राष्ट्रक प्रतीक बनबाक पहिने घरक मनुष्य अछि। कविता सैन्य वीरताक एकरेखीय महिमामंडनसँ हटि परिवारक प्रतीक्षा आ स्नेहकेँ केन्द्रमे अनैत अछि।

ई परोक्ष अनुवाद-शृंखला डोगरी → हिन्दी → मैथिली रूपमे देल अछि। मूल डोगरी आ मध्यस्थ हिन्दी पाठ पूर्ण तुलनात्मक रूपमे उपलब्ध/समीक्षित नहि भेलाक कारण सूक्ष्म रूपान्तर पर निर्णायक टिप्पणी नहि, मुदा मैथिली लक्ष्य-पाठमे भावात्मक पुनर्रचना सुसंगत देखाइत अछि।

९.६ हमर भारत देश महान — मूल हिन्दी: कुमार संभव 'भारद्वाज'; मैथिली अनुवाद: डॉ. शम्भु कुमार सिंह

संकलनमे देल सूचना अनुसार ई बालकवि कुमार संभव 'भारद्वाज'क हिन्दी कविता "मेरा भारत देश महान"क मैथिली रूप अछि; रचनाकार कक्षा आठक लगभग बारह वर्षीय छात्र रूपमे परिचित कराओल गेल छथि। एहि प्रसंगकेँ ध्यानमे राखि कविता केँ परिपक्व राजनीतिक काव्य नहि, बाल-देशभक्तिक सहज अभिव्यक्ति रूपमे पढ़ब उचित अछि।

सरल लय, देश-गौरव आ साझा पहचान कविता केँ बाल-पाठक योग्य बनबैत अछि। अनुवादक लक्ष्य बाल-स्वरक सरलता सुरक्षित राखब प्रतीत होइत अछि; अत्यधिक अलंकरण नहि जोड़ल गेल अछि।

९.७ भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली — डॉ. अरुण कुमार सिंह

ई कविता मैथिलीकेँ "भारतीय भाषा" मायक बेटी रूपमे मानवीकृत करैत अछि। अष्टम अनुसूचीमे पहुँचला बादो विकासक बाट ताकैत, विस्तार लेल छटपटाइत बेटी पूछैत अछि—"हम के छी?" मान्यता आ वास्तविक संस्थागत विकासक बीच दूरी कविताक केन्द्र अछि।

बाह्य संवैधानिक तथ्य अनुसार मैथिली, बोडो, डोगरी आ संथालीकेँ ९२म संविधान संशोधन अधिनियम, २००३ द्वारा अष्टम अनुसूचीमे जोड़ल गेल, जे ८ जनवरी २००४क राजपत्र प्रकाशनसँ सम्बद्ध अछि। कविता एहि विधिक मान्यताक बादक मनोस्थिति पकड़ैत अछि: सूचीमे नाम आबि जएब अन्तिम विकास नहि। शिक्षा, प्रकाशन, तकनीक, प्रशासन आ सामाजिक व्यवहारमे अवसर आवश्यक अछि।

कविता "भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति"क भावात्मक बहिन अछि। गद्य समाजक सामूहिक स्वामित्वक तर्क दैत अछि; कविता मान्यता पाबि कएहो उपेक्षित बेटीकी आवाज बनैत अछि।

९.८ सोधनपाल — डॉ. अरुण कुमार सिंह

"सोधनपाल" हास्य-व्यंग्यात्मक चरित्र-कविता अछि। गोपालक पढ़ाइमे कम रुचि, शैतानी, आगि लगबाक घटना आ गामक सामूहिक नामकरणक क्रममे

“सोधनपाल” नाम जन्म लैत अछि। लोककथा-जकाँ नामक उत्पत्ति कविताकेँ मौखिक हास्यक स्वाद दैत अछि।

कविता सामाजिक अनुशासनक कड़ा प्रवचन नहि; बाल/किशोर शैतानी पर समुदाय जेना कथा गढ़ैत अछि, तकर विनोदी स्मृति अछि। नामकरण सामाजिक स्मृतिक उपकरण बनैत अछि—व्यक्ति घटना बनैत अछि, घटना उपनाम।

९.९ प्रियवर सम्पादकजी — डॉ. अरुण कुमार सिंह

ई कविता प्रत्यक्ष संबोधनक रचना अछि, “विदेह”क सम्पादक गजेन्द्र ठाकुरकेँ उद्दिष्ट। कविता सम्पादकीय सक्रियता, मिथिलाक्षर, कानून, विज्ञान, वाणिज्य, तकनीक आ विभिन्न ज्ञानक्षेत्रमे मैथिली विस्तारक प्रयत्नक प्रशंसा/आह्वान करैत अछि।

एकरा केवल प्रशस्ति-पद्य मानल जाए त' एकर सांस्कृतिक अर्थ कम होएत। कविता वास्तवमे पत्रिका-सम्पादनकेँ साहित्य छापबाक क्रियासँ व्यापक भाषिक अवसंरचना निर्माणक काज रूपमे देखैत अछि। भाषा जँ विज्ञान, तकनीक, विधि आ आधुनिक ज्ञानमे प्रवेश नहि करैत त' साहित्यिक गौरव अकेला पर्याप्त नहि।

रचनाक स्वर आत्मीय अछि; आलोचनात्मक दूरी कम, उत्साह अधिक। मुदा संकलनक भाषा-प्रौद्योगिकी आ उच्चशिक्षा लेख सभक संग पढ़ला पर ई कविता सम्पूर्ण परियोजनाक भावात्मक घोष बनि उठैत अछि।

१०. संकलनक अन्तर्सम्बन्ध: अलग-अलग विधासँ बनैत एक साझा विचार-मानचित्र

१०.१ “घसल अठन्नी”क दू पठन: मानवतावादसँ दलित संरचना धरि

एकै कविता पर डॉ. शम्भु कुमार सिंह आ डॉ. अरुण कुमार सिंहक अलग लेख एहि संकलनक आलोचनात्मक बहुलताक सर्वोत्तम उदाहरण अछि। पहिल लेख घसल सिक्काकेँ अवमूल्यित मानव जीवनक प्रतीक रूपमे पढ़ैत अछि; दोसर ओहि अवमूल्यनक जातिगत-दलित संरचनाकेँ स्पष्ट नाम दैत अछि। दुनू पठन परस्पर विरोधी नहि—मानवीय करुणा प्रश्नक नैतिक धरातल बनबैत अछि, दलित चेतना ओकर सामाजिक कारणक विश्लेषण करैत अछि।

एहि तुलनासँ एक व्यापक आलोचनात्मक शिक्षा भेटैत अछि: साहित्यक “सार्वभौम” पीड़ा कखनो सामाजिक पहचानसँ मुक्त नहि होइत। कोन मनुष्यकेँ बारम्बार घसल अठन्नी बनाओल जाइत अछि, ई प्रश्न सार्वभौम मानवीयता केँ ऐतिहासिक गहराई दैत अछि।

१०.२ भाषा-अस्मिताक पाँच चरण

संकलनमे भाषाक प्रश्न अनेक विधामे दोहराइत अछि, मुदा प्रत्येक बेर नवल स्तर जोड़ैत अछि। “भाय-बहिनक व्यथा कथा”मे भाषा भावात्मक परिजन अछि; “भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति”मे सामाजिक संस्था; “मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा”मे ज्ञान-अधिकार; “मैथिलेत्तर भाषी प्रदेशमे...”मे शिक्षण-प्रौद्योगिकी; “अभिकलनात्मक मैथिली व्याकरण”मे मशीन-पठनीय संरचना; “भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली” आ “प्रियवर सम्पादकजी”मे सांस्कृतिक आकांक्षा।

ई क्रम बतबैत अछि जे भाषा-संरक्षण केवल भावुक प्रेमसँ पूरा नहि होइत। घर, स्कूल, विश्वविद्यालय, डिजिटल कॉर्पस, संगणनात्मक व्याकरण, प्रकाशन, कानून-विज्ञान-तकनीक—सभ क्षेत्रमे भाषाक उपयोग जरूरी अछि। संकलनक एहि व्यापक दृष्टिक कारण भाषिक अस्मिता अतीत-पूजा नहि, भविष्य-निर्माणक परियोजना बनैत अछि।

१०.३ कोशीक तीन पाठ: नीति, यात्रा आ गाम-शहर

डॉ. अरुण कुमार सिंहक “सतसठि साला कौशिकी...”, “कोशीमे बिताओल एक दिन” आ “उजड़ैत गाम: बसैत शहर?” केँ एक त्रयी जकाँ पढ़ल जा सकैत अछि। पहिल रचना व्यापक सामाजिक-आर्थिक हिसाब माँगैत अछि; दोसर प्रत्यक्ष यात्राक सूक्ष्म अनुभव दैत अछि; तेसर पलायन आ ग्राम्य भविष्यक प्रश्न उठबैत अछि।

तीनू एक-दोसरकेँ सुधारैत अछि। व्यापक नीति-विमर्श यात्रा-दृश्य बिना अमूर्त भ' सकैत छल; यात्रा-आतिथ्य आ स्थानीय विकासक सकारात्मक दृश्य व्यापक क्षेत्रीय वंचनाक निषेध नहि करैत; गाम-शहरक प्रश्न दुनूकेँ लम्बी सामाजिक प्रक्रिया भीतर रखैत अछि। एहि कारण लेखक कोशी-विमर्श एकरेखीय शिकायत नहि, अनुभव आ तर्कक बहुस्तरीय क्षेत्र बनैत अछि।

१०.४ सामाजिक यथार्थक पुनरावृत्त केन्द्र: दहेज, गरीबी, श्रम आ नारी

“निर्धनताक समस्या”, “नारी समस्या”, “जेठ आ पूस”, “गरमी”, “अवसरक निर्माण” आ “लोरी”मे गरीबी अलग-अलग विधामे लौटैत अछि। शोधपरक लेख समस्या-वर्गीकरण करैत अछि; कथा एक श्रमिक/बच्चाक देहमे ओकर अनुभव करबैत अछि; कविता प्रतीकात्मक झटका दैत अछि।

दहेज “नारी समस्या”मे सामाजिक संस्था रूपमे, “जेठ आ पूस”मे गरीब पिताक श्रम-ताप रूपमे उपस्थित अछि। एहि पुनरावृत्तिक कारण संकलन सिद्ध करैत अछि जे सामाजिक प्रश्नक एक विधा पर्याप्त नहि: आँकड़ा/उदाहरण बौद्धिक समझ दैत अछि, कथा सहानुभूति, कविता स्मृति।

१०.५ अनुवादक भूगोल: मैथिलीसँ भारतक आन साहित्य धरि

कोंकणी/गोवा-केंद्रित कथा आ उपन्यास, डोगरी कविता आ हिन्दी बाल-कविताक मैथिली रूपान्तरण संकलनक भूगोल विस्तार करैत अछि। ई अनुवाद सभ “मैथिली साहित्य” केँ केवल मिथिला-आधारित मौलिक लेखनक संकुचित परिभाषामे नहि रखैत, बल्कि भारतीय भाषाक परस्पर आदान-प्रदानक मंच बनबैत अछि।

विशेषतः “पाखलो” ई आदान-प्रदानक सर्वाधिक विकसित उदाहरण अछि। गोवाक ऐतिहासिक-सामाजिक अनुभव मैथिली पाठक लेल अपरिचित होइतहुँ पहचान, माटि, जाति/समुदाय, नाम आ बहिष्करणक प्रश्न कारण आत्मीय बनैत अछि। अनुवादक असली सफलता एहि “अपरिचित-आत्मीयता”क निर्माणमे अछि।

११. समग्र उपलब्धि आ आलोचनात्मक सीमा

११.१ प्रमुख उपलब्धि

पहिल, संकलन विधागत रूपेँ असाधारण विविध अछि। साहित्येतिहास, भाषाविज्ञान, नाटक-समीक्षा, सामाजिक लेख, रिपोर्ताज, कथा, लघुकथा, उपन्यास, अनुवाद आ कविता एकै जिल्दमे उपस्थित अछि। ई विविधता केवल संख्या नहि; एक विषय कतेक रूपमे बदलि सकैत अछि, से देखबैत अछि।

दोसर, दुनू लेखक भाषाकेँ जीवित सामाजिक संस्था मानैत छथि। भाषा-गौरवक संग शिक्षा, समाज, प्रौद्योगिकी, अनुवाद आ संस्थागत निर्माण जोड़ल गेल अछि। एहि कारण मैथिली-अस्मिताक विमर्श व्यावहारिक आधार पबैत अछि।

तेसर, सामाजिक यथार्थक प्रति सजगता निरन्तर अछि। निर्धनता, दहेज, लैंगिक हिंसा, दलित अवमूल्यन, श्रम, पलायन, बाढ़, भाषिक हीनताबोध आ वृद्धावस्था/एकाकीपन जकाँ अनुभव साहित्यिक केन्द्र पबैत अछि।

चारिम, अनुवादक माध्यमे संकलन भारतीय बहुभाषिक साहित्यक अवधारणा सुदृढ़ करैत अछि। कोंकणी, डोगरी, हिन्दी आ अंग्रेजी-स्रोतक रचनाक मैथिली रूप पाठककेँ भाषिक सीमापार मानव अनुभवसँ परिचित करबैत अछि।

पाँचम, “पाखलो”क बाद अशोक मनभुटकरक समीक्षा-अंश राखब आत्मालोचनात्मक सम्पादकीय दृष्टिक प्रमाण अछि। कृतिक प्रशंसा संग कमजोरीक चर्चा पाठककेँ स्वतंत्र निर्णय लेल सामग्री दैत अछि।

११.२ सीमा आ पुनर्पाठक सम्भावना

परीक्षार्थी-केन्द्रित किछु लेखमे साहित्यिक पाठक सौन्दर्यात्मक जटिलता तथ्य-सूची आ व्यवस्थित उत्तर-शैलीक पीछे रहि जाइत अछि। साहित्येतिहासक किछु कालसीमा, उपभाषा-वर्गीकरण आ आँकड़ा अपन प्रकाशनकालीन शोध-स्थिति दर्शबैत अछि; आधुनिक अनुसन्धानसँ पुनः मिलान आवश्यक रहत।

नारी-विमर्शक लेख साहसी सामाजिक प्रश्न उठबैत अछि, मुदा समकालीन स्त्रीवादी दृष्टिसँ agency, अन्तरजातीय/अन्तर्वर्गीय भिन्नता, श्रम आ प्रतिरोधक रूप पर आर गहन विस्तार सम्भव अछि। “सतसठि साला कौशिकी”क राजनीतिक निष्कर्षकेँ लेखकक मत आ ऐतिहासिक-सामाजिक विमर्श रूपमे अलग राखब आवश्यक अछि।

अनुवाद सभक मूल पाठ एहि संकलनमे समानान्तर उपलब्ध नहि, तेँ मूल-लक्ष्य भाषिक निष्ठाक वैज्ञानिक तुलनात्मक निष्कर्ष देब सम्भव नहि। वर्तमान समीक्षा एहि सीमा केँ स्पष्ट राखैत लक्ष्य-पाठक साहित्यिक कार्यक मूल्यांकन करैत अछि।

संगणनात्मक भाषाविज्ञानक लेख सभक तकनीकी उदाहरण समयसापेक्ष अछि। आजुक कॉर्पस-NLP, भाषिक AI, speech technology आ Unicode/डिजिटल लिपि-परिस्थिति बहुत आगाँ बढ़ल अछि। मुदा संसाधन-निर्माण, tagging, corpus आ machine-readable grammarक मूल आग्रह आजुओ आधारभूत अछि।

१२. सम्पूर्णता-परीक्षण: स्वतंत्र रचना, मूल लेखक आ अनुवादकक समग्र सूची

निम्न सारणी संकलनक अनुक्रम, पूर्ण पाठ आ “पाखलो” पछाति संलग्न स्वतंत्र समीक्षा-अंशक मिलान पर आधारित अछि। ई सूची समीक्षा भीतर कवर कएल प्रत्येक स्वतंत्र इकाइक लेखा प्रस्तुत करैत अछि, जाहिसँ कोनो रचना वा रचनाकार अनदेखा नहि रहय।

क्रम	रचना	विधा	रचनाकार / मूल / अनुवादक
१	मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण	साहित्येतिहास/ आलोचना	डॉ. शम्भु कुमार सिंह
२	मैथिली साहित्यक आदिकाल	साहित्येतिहास/ आलोचना	डॉ. शम्भु कुमार सिंह
३	मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता	भाषावैज्ञानिक लेख	डॉ. शम्भु कुमार सिंह
४	आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या	नाटक-समीक्षा	डॉ. शम्भु कुमार सिंह
५	मैथिली सामाजिक नाटकक मूल केन्द्र बिन्दु: नारी समस्या	नाटक-समीक्षा	डॉ. शम्भु कुमार सिंह
६	यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन	ज्ञान-संकलन	डॉ. शम्भु कुमार सिंह
७	घसल अठन्नी: एकटा विमर्श	काव्य-समीक्षा; विषय: काशीकान्त मिश्र “मधुप”क रचना	डॉ. शम्भु कुमार सिंह
८	मैथिलीमे अनुवाद पर अभिविन्यास कार्यशाला सम्पन्न	रिपोर्ताज	डॉ. शम्भु कुमार सिंह
९	जाग’ जाग’ महादेव!	समसामयिक निबन्ध/व्यंग्य	डॉ. शम्भु कुमार सिंह
१०	भाय-बहिनक व्यथा कथा	कथा-निबन्ध	डॉ. शम्भु कुमार सिंह
११	जेठ आ पूस	बीहनि कथा	डॉ. शम्भु कुमार सिंह
१२	सौदागर	बीहनि कथा	डॉ. शम्भु कुमार सिंह
१३	गरमी	बीहनि कथा	डॉ. शम्भु कुमार सिंह
१४	अवसरक निर्माण	लघुकथा	डॉ. शम्भु कुमार सिंह
१५	दूभि	लघुकथा	डॉ. शम्भु कुमार सिंह
१६	एकटा आर रबि	अनूदित लघुकथा	मूल: गैस्पर अल्मीडा; मैथिली: डॉ. शम्भु कुमार सिंह
१७	मृत्युकेँ टारब	अनूदित लघुकथा	मूल: वसंत भगवंत सावंत; हिन्दी: डॉ. शम्भु कुमार सिंह आ

			सेबी फर्नानडीस; मैथिली: डॉ. शम्भु कुमार सिंह
१८	सोंगर (मूल कोंकणी: “खपच्ची”)	अनूदित लघुकथा	मूल: सेबी फर्नानडीस; हिन्दी: डॉ. चन्द्रलेखा डिसूजा; मैथिली: डॉ. शम्भु कुमार सिंह
१९	नागपंचमी	अनूदित लघुकथा	मूल: वसंत भगवंत सावंत; मैथिली: डॉ. शम्भु कुमार सिंह
२०	पाखलो	अनूदित उपन्यास	मूल: तुकाराम रामा शेट; मैथिली: डॉ. शम्भु कुमार सिंह
२१	हर एक लोक आ माटिक कथा	“पाखलो” पर आलोचनात्मक आलेखक अंश	अशोक मनभुटकर; स्रोत-उल्लेख: कोंकण टाइम्स, दीपावली १९८१
२२	स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता	कथा-समीक्षा	डॉ. अरुण कुमार सिंह
२३	मधुपजीक ‘घसल अठन्नी’मे दलित चेतना	काव्य-समीक्षा	डॉ. अरुण कुमार सिंह; विषय: काशीकान्त मिश्र “मधुप”
२४	मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा	शिक्षा/भाषा-नीति लेख	डॉ. अरुण कुमार सिंह
२५	भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति	भाषा-समाजशास्त्रीय लेख	डॉ. अरुण कुमार सिंह
२६	सतसठि साला कौशिकी (मिथिला)क लेखा-जोखा	क्षेत्रीय सामाजिक-आर्थिक निबन्ध	डॉ. अरुण कुमार सिंह
२७	कोशीमे बिताओल एक दिन	यात्रा-रिपोर्ताज	डॉ. अरुण कुमार सिंह
२८	उजड़ैत गाम: बसैत शहर?	सामाजिक/ग्राम-शहर निबन्ध	डॉ. अरुण कुमार सिंह
२९	मैथिलेत्तर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कँप्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका	भाषा-शिक्षण/प्रौद्योगिकी लेख	डॉ. अरुण कुमार सिंह

३०	अभिकलनात्मक/ संगणनात्मक (Computational) मैथिली व्याकरण	संगणनात्मक भाषाविज्ञान	डॉ. अरुण कुमार सिंह
३१	तीन दिवसीय कार्यशालाक आयोजन	रिपोर्ताज/भाषिक संसाधन	डॉ. अरुण कुमार सिंह
३२	अतीत	कविता	डॉ. शम्भु कुमार सिंह
३३	आस	कविता	डॉ. शम्भु कुमार सिंह
३४	लोरी	कविता	डॉ. शम्भु कुमार सिंह
३५	आह्वान	कविता	डॉ. शम्भु कुमार सिंह
३६	स्नेह-भरल सनेस	अनूदित कविता	मूल डोगरी: प्रो. चम्पा शर्मा; हिन्दी: श्रीमती रजनी शर्मा; मैथिली: डॉ. शम्भु कुमार सिंह
३७	हमर भारत देश महान	अनूदित बाल-कविता	मूल हिन्दी: कुमार संभव 'भारद्वाज'; मैथिली: डॉ. शम्भु कुमार सिंह
३८	भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली	कविता	डॉ. अरुण कुमार सिंह
३९	सोधनपाल	कविता/हास्य	डॉ. अरुण कुमार सिंह
४०	प्रियवर सम्पादकजी	संबोधनात्मक कविता	डॉ. अरुण कुमार सिंह; संबोधित: सम्पादक गजेन्द्र ठाकुर

१३. निष्कर्ष

"विदेह सदेह २६"क साहित्यिक मूल्य केवल एहि बातमे नहि अछि जे ई दू लेखकक गद्य-पद्य संकलित करैत अछि; एकर वास्तविक महत्त्व एहन बौद्धिक पारिस्थितिकी रचबामे अछि जतए साहित्येतिहास, समाजशास्त्र, भाषा-विज्ञान, कथा, अनुवाद, क्षेत्रीय विकास आ कविता एक-दोसरकेँ पढ़ैत अछि। डॉ. शम्भु कुमार सिंहक लेखनमे सामाजिक यथार्थ कथा आ आलोचनाक बीच आवाजाही करैत अछि; डॉ. अरुण कुमार सिंहक लेखनमे भाषा, क्षेत्र आ प्रौद्योगिकी सामाजिक प्रश्नक रूप धारण करैत अछि।

संकलनक सर्वोत्तम क्षण ओ छथि जतए विधा सभ परस्पर प्रकाश दैत अछि: "घसल अठन्नी"क दू आलोचनात्मक पठन; नारी-समस्या आ "जेठ आ पूस"क दहेज-यथार्थ; भाषा-सामाजिक सम्पत्ति आ "बेटी मैथिली"क अस्मिता; कोशीक नीतिगत लेखा-जोखा आ प्रत्यक्ष यात्रा; अभिकलनात्मक व्याकरण आ संस्थागत कार्यशाला; अनुवाद-सिद्धान्त आ "पाखलो"क बहिष्कृत पहचान।

"पाखलो" संकलनक रचनात्मक शिखर रूपमे उभरैत अछि, किएक तँ ओ स्थानीय गोवानी इतिहासक भीतर एक सार्वभौम प्रश्न रखैत अछि—मनुष्यक अपनत्व के निर्धारित करैत अछि: देह, वंश, समाजक नाम, कि माटिसँ बनल जीवन? अशोक मनभुटकरक संलग्न प्रतिपाठ एहि प्रश्नकेँ आर गहन करैत अछि आ कृतिक सीमा पर सेहो दृष्टि दैत अछि।

संकलनक किछु तथ्य, काल-विभाजन, उपभाषा-वर्गीकरण आ तकनीकी विवरण समयसापेक्ष छथि; गहन आधुनिक शोधमे तकर पुनः सत्यापन आवश्यक अछि। ई सीमा कृतिक ऐतिहासिक मूल्य घटबैत नहि, बल्कि ओकरा जीवित संवादक पाठ बनबैत अछि। एकटा एहन संकलन, जे अपन समयक भाषा-साहित्यक प्रश्न लिखि सुरक्षित करैत अछि, बादक पीढ़ीकेँ सहमत होएबाक नहि, विचार करबाक सामग्री दैत अछि।

समग्रतः "विदेह सदेह २६" मैथिली साहित्यक बहुविध आधुनिकताक दस्तावेज अछि—एतए अतीतक इतिहास अछि, वर्तमानक सामाजिक बेचैनी अछि, अनुवादक द्वारा आन भाषाक खिड़की अछि, आ डिजिटल भविष्यक प्रारम्भिक रूपरेखा सेहो। एहि ४० स्वतंत्र इकाइक संयुक्त पठनसँ स्पष्ट होइत अछि जे संकलनक केन्द्र एक शब्दमे "मानवीय गरिमा" अछि: गरीबक, नारीक, दलितक, मातृभाषाक, क्षेत्रक, सैनिक परिवारक, वृद्धक, बहिष्कृत "पाखलो"क आ अपन माटिसँ जुड़ल प्रत्येक मनुष्यक गरिमा।

१४. स्रोत आ बाह्य अनुसन्धान-सन्दर्भ

१. विदेह सदेह २६। "डॉ. शम्भु कुमार सिंह & डॉ. अरुण कुमार सिंह केर गद्य आ पद्य रचना"; विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका, ISSN 2229-547X; स्रोत-उल्लेख: विदेह पेटार अंक १-३५०; संस्करण २०२२। प्राथमिक आधार-पाठ।

२. National Translation Mission. "Who is involved? Executive Bodies." Central Institute of Indian Languages, Mysore/Mysuru. आधिकारिक वेबसाइट, अभिगमन २७ अगस्त २०२६। उपयोग: राष्ट्रीय अनुवाद मिशन आ CIILक संस्थागत सम्बन्धक सत्यापन।

३. Linguistic Data Consortium for Indian Languages (LDC-IL), Ministry of Education, Government of India. आधिकारिक पोर्टल, अभिगमन २७ अगस्त २०२६। उपयोग: मैथिली पाठ/वाक्-संसाधन आ भाषिक डेटा-अवसंरचनाक वर्तमान स्थिति।

४. Press Information Bureau, Government of India, Ministry of Home Affairs. "Languages in the Eighth Schedule." २२ दिसम्बर २००४। उपयोग: मैथिली सहित बोडो, डोगरी आ संथालीक ९२म संविधान संशोधन द्वारा अष्टम अनुसूचीमे समावेशक सत्यापन।

५. UNESCO. Bhasha Matters: State of the Education Report for India 2025 on Mother Tongue and Multilingual Education. New Delhi/UNESCO, २०२५; लॉन्च १६-१७ दिसम्बर २०२५। उपयोग: मातृभाषा-आधारित बहुभाषिक शिक्षाक अद्यतन तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य।

६. Toury, Gideon. Descriptive Translation Studies – and beyond. Amsterdam/Philadelphia: John Benjamins, 1995. विशेषतः "Translations as facts of a 'Target' Culture" आ वर्णनात्मक अनुवाद-अध्ययनक पद्धति। उपयोग: संकलित अनुवादक लक्ष्य-संस्कृति केन्द्रित पठन।

७. Bhabha, Homi K. The Location of Culture. Routledge, 1994. उपयोग: "पाखलो"क मिश्रित/सीमावर्ती सांस्कृतिक पहचानक तुलनात्मक आलोचनात्मक आलोक; अवधारणाकेँ सहायक फ्रेम रूपमे, मूल कृतिक स्थानापन्न रूपमे नहि।

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह सदेह २६ — डॉ. शम्भु कुमार सिंह आ डॉ. अरुण कुमार सिंहक गद्य-पद्यक सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा

अध्याय 15 · विदेह सदेह २७ — सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा

सारांश बहुभाषिक अनुवाद, सामाजिक यथार्थ, काव्यशिल्प, सांस्कृतिक स्मृति आ मैथिली रूपान्तरक आलोचनात्मक अध्ययन प्राथमिक

पाठ : विदेह सदेह २७ गजेन्द्र ठाकुर आ रवि भूषण पाठक द्वारा विभिन्न भाषासँ मैथिलीमे अनूदित गद्य-पद्य ISSN 2229-547X · विदेह २

संकलनक सम्पूर्ण लेखक-रचना सूची नीचाँक सूची प्राथमिक अनुक्रम आ मुख्य पाठक मिलानपर आधारित अछि। पृष्ठ-संख्या 'विदेह सदेह

२७’ क आन्तरिक पृष्ठ-संख्या अछि। किछु पाठ प्रत्यक्ष निकट-भाषासँ मैथिलीमे आयल अछि - भिखारी ठाकुरक भोजपुरी पद्य आ निरालाक हिन्दी कविता।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · अनुवाद · कविता · सांस्कृतिक अध्ययन · स्मृति

बहुभाषिक अनुवाद, सामाजिक यथार्थ, काव्यशिल्प, सांस्कृतिक स्मृति आ मैथिली रूपान्तरक आलोचनात्मक अध्ययन

प्राथमिक पाठ : विदेह सदेह २७

गजेन्द्र ठाकुर आ रवि भूषण पाठक द्वारा विभिन्न भाषासँ मैथिलीमे अनूदित गद्य-पद्य

ISSN 2229-547X · विदेह

२. संकलनक सम्पूर्ण लेखक-रचना सूची

नीचाँक सूची प्राथमिक अनुक्रम आ मुख्य पाठक मिलानपर आधारित अछि। पृष्ठ-संख्या ‘विदेह सदेह २७’ क आन्तरिक पृष्ठ-संख्या अछि।

क्रम	लेखक	रचना	मूल/विधा	मैथिली रूपान्तर	पृ.
१	शेख मोहम्मद शरीफ (वेमपल्ली शरीफ)	जुम्मा	तेलुगु; लघुकथा	गजेन्द्र ठाकुर; मध्य-पाठ: जयलक्ष्मी पोपुरीक अंग्रेजी	३-१३
२	इप्सिता सारंगी	गप	ओड़िया; कविता	गजेन्द्र ठाकुर; अंग्रेजी रूप: कवि स्वयं	१६-१८
३	इप्सिता सारंगी	हिलकोर	ओड़िया; कविता	गजेन्द्र ठाकुर; अंग्रेजी रूप: कवि स्वयं	१९-२०
४	वासुदेव सुनानी	फूसि	ओड़िया; कविता	गजेन्द्र ठाकुर; मध्य-पाठ: शैलेन राउत्रॉय	२१-२२
५	वासुदेव सुनानी	अनुमति	ओड़िया; कविता	गजेन्द्र ठाकुर; मध्य-पाठ: शैलेन राउत्रॉय	२३-२४
६	भरत माँझी	हमर घुरलाक बाद	ओड़िया; कविता	गजेन्द्र ठाकुर; मध्य-पाठ: शैलेन राउत्रॉय	२५-२६
७	अन्नावरम	अंतिम शब्द	तेलुगु; कविता	गजेन्द्र ठाकुर;	२८-

	देवेन्दर			मध्य-पाठ: पी. जयलक्ष्मी	३३
८	अन्नावरम देवेन्दर	पानि अछि, मात्र आँखिक नोर	तेलुगु; कविता	गजेन्द्र ठाकुर; मध्य-पाठ: पी. जयलक्ष्मी	३४-३६
९	शीला सुभद्रा देवी	पसीझक काँट	तेलुगु; कविता	गजेन्द्र ठाकुर; मध्य-पाठ: जयलक्ष्मी पोपुरी	३७-३८
१०	एन. अरुणा	ई सेहो अछि प्रवास	तेलुगु; कविता	गजेन्द्र ठाकुर; मध्य-पाठ: जयलक्ष्मी पोपुरी	३९-४०
११	हेमांग आश्विनकुमार देसाइ	समीकरण	गुजराती; कविता	गजेन्द्र ठाकुर; अंग्रेजी रूप: कवि स्वयं	४२-४३
१२	अजय सरवैया	अहाँक तामस हमर स्वागतपथ	गुजराती; कविता	गजेन्द्र ठाकुर; मध्य-पाठ: हेमांग देसाइ	४४-४५
१३	राजेन्द्र पटेल	बिनु शीर्षकक	गुजराती; कविता	गजेन्द्र ठाकुर; मध्य-पाठ: हेमांग देसाइ	४६-४७
१४	पीयूष ठक्कर	सांध्य बेला	गुजराती; कविता	गजेन्द्र ठाकुर; मध्य-पाठ: हेमांग देसाइ	४८
१५	पन्ना त्रिवेदी	आमद	गुजराती; कविता	गजेन्द्र ठाकुर; मध्य-पाठ: हेमांग देसाइ	४९
१६	बाबू सुथार	गृहमोह	गुजराती; कविता	गजेन्द्र ठाकुर; मध्य-पाठ: हेमांग देसाइ	५०-५२
१७	भिखारी ठाकुर	वृद्धाश्रमक पक्षमे - बिरहा १	भोजपुरी; पद्य	गजेन्द्र ठाकुर; प्रत्यक्ष भोजपुरीसँ मैथिली	५४
१८	भिखारी ठाकुर	वृद्धाश्रमक पक्षमे - बिरहा २	भोजपुरी; पद्य	गजेन्द्र ठाकुर; प्रत्यक्ष	५५

				भोजपुरीसँ मैथिली	
१९	रहमान राही	छाह सभ	कश्मीरी; कविता	गजेन्द्र ठाकुर; मध्य-पाठ: एस. एल. साधु	५७-५९
२०	सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’	जूनि बान्ह नाव ऐ ठाम बन्धु	हिन्दी; कविता	रवि भूषण पाठक	६६
२१	सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’	हमरा सँ किनारा केने जा रहल छथि	हिन्दी; कविता	रवि भूषण पाठक	६६-६७
२२	सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’	स्नेह निर्झर बहि गेलइ	हिन्दी; कविता	रवि भूषण पाठक	६८
२३	सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’	हम अकेला	हिन्दी; कविता	रवि भूषण पाठक	६८-६९
२४	सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’	रंगि गेल धरा, भेल धन्य धरा	हिन्दी; कविता; प्रथम पंक्तिसँ परिचय	रवि भूषण पाठक	७०
२५	सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’	सखि वसन्त आयल	हिन्दी; कविता	रवि भूषण पाठक	७०-७१
२६	सूर्यकान्त त्रिपाठी ‘निराला’	छाड़ल कारी कारी बादर / एला नइ वीर जवाहर लाल	हिन्दी; कविता; प्रथम पंक्ति/टेकसँ परिचय	रवि भूषण पाठक	७२
२७	रवि भूषण पाठक	निराला: देह विदेह (१-४) - अनुवाद-विमर्शात्मक भूमिका	आलोचनात्मक गद्य	मौलिक आलोचनात्मक भूमिका	६०-६५

३. अनुवाद-परिसंचरण : प्रत्यक्ष आ मध्य-भाषा-आश्रित रूप

एहि संकलनक साहित्यिक महत्त्व बुझबाक लेल अनुवादक मार्ग बुझनाइ आवश्यक अछि। किछु पाठ प्रत्यक्ष निकट-भाषासँ मैथिलीमे आयल अछि - भिखारी ठाकुरक भोजपुरी पद्य आ निरालाक हिन्दी कविता। बहुतेक ओड़िया, तेलुगु, गुजराती आ कश्मीरी पाठ अंग्रेजी मध्य-पाठक सहायता सँ मैथिलीमे आएल अछि। अनुवाद-अध्ययनमे एहन शृंखलाकेँ indirect translation, relay translation वा pivot-language translation कहल जाइत अछि। Assis Rosa, Pięta आ Bueno Maia द्वारा सम्पादित शोधग्रन्थ एहि प्रक्रियाकेँ साहित्यिक परिसंचरणक महत्त्वपूर्ण, यद्यपि दीर्घकाल उपेक्षित, क्षेत्र मानैत अछि; ओ अंग्रेजीकेँ समकालीन विश्वमे प्रमुख मध्य-भाषा बनबाक प्रश्न सेहो उठबैत छथि।

‘विदेह सदेह २७’ एही परिप्रेक्ष्यमे मैथिली लेल एकटा सम्पर्क-बिन्दु बनैत अछि। इप्सिता सारंगी अपन ओड़िया कविता स्वयं अंग्रेजीमे दैत छथि; वासुदेव सुनानी

आ भरत माँझीक ओड़िया पाठ शैलेन राउत्रॉयक अंग्रेजी मार्फत आयल; अन्नावरम देवेन्दर, शीला सुभद्रा देवी आ एन. अरुणाक तेलुगु पाठ जयलक्ष्मी पोपुरी/पी. जयलक्ष्मीक अंग्रेजी रूपसँ; गुजराती समूहक कतेक कविता हेमांग देसाइक अंग्रेजी रूपसँ; रहमान राहीक 'छाह सभ' एस. एल. साधुक अंग्रेजी अनुवादसँ मैथिलीमे आयल अछि। एहि बहुस्तरीय मार्गमे अर्थक पुनर्विन्यासक सम्भावना स्वाभाविक अछि, मुदा ओकरा केवल 'हानि' कहल पर्याप्त नै; एही मध्यस्थता दू भाषाक बीच साहित्यिक पहुँच सम्भव बनबैत अछि।

रोमन याकोब्सन अन्तरभाषिक अनुवादकेँ भिन्न भाषिक संकेत-प्रणालीक बीच पुनर्संकेतांकनक रूपमे बुझैत छथि आ कविता लेल 'creative transposition' केर आवश्यकता रेखांकित करैत छथि। नाइडा आ टेबर लक्ष्य-भाषामे अर्थ आ शैलीक निकटतम स्वाभाविक समतुल्यता पर बल दैत छथि। रवि भूषण पाठकक भूमिका ई दुनू विमर्शक भारतीय-मैथिली रूपान्तर प्रस्तुत करैत अछि: ओ शब्दानुवाद, भावानुवाद, रूपान्तरण, छायानुवाद, सारानुवाद आ टीकापरक अनुवादक भेद दैत कविता लेल लय, छन्द, बिम्ब, ध्वनि आ व्यंजनाकेँ विशेष चुनौती मानैत छथि।

४. गद्य खण्ड : 'जुम्मा'क सम्पूर्ण समीक्षा

४.१ लेखक, अनुवाद-मार्ग आ बाह्य सत्यापन

'जुम्मा'क मूल तेलुगु लेखक शेख मोहम्मद शरीफ, प्रसिद्ध वेमपल्ली शरीफ, छथि। संकलन स्पष्ट करैत अछि जे तेलुगुसँ अंग्रेजी रूप जयलक्ष्मी पोपुरीक आ अंग्रेजीसँ मैथिली रूप गजेन्द्र ठाकुरक अछि। साहित्य अकादेमीक अधिकृत युवा पुरस्कार सूची २०१२ मे तेलुगु 'Jumma' केँ Vempalli Sharaff क लघुकथा-संग्रहक रूपमे दर्ज करैत अछि; अतः लेखक-रचना सम्बन्ध बाह्य स्रोतसँ सेहो पुष्ट होइत अछि।

४.२ कथानकक बनावट : वर्तमानक आतंक सँ स्मृतिक बाढ़ि धरि

कथा आरम्भे विस्फोटक बादक फोन-वार्तासँ होइत अछि। माँक डरायल स्वर पुत्रक वर्तमानकेँ एकाएक बाल्यकालक स्मृतिमे धकेलि दैत अछि। एही संरचनात्मक युक्तिसँ कथा सीधा घटनावर्णन नै रहि, आस्था, संस्कार, दूरी आ मातृस्नेहक दीर्घ स्मृति-कथा बनि जाइत अछि। आरम्भक वाक्य-समूहमे 'अम्मीक निर्दोष मुखमंडल' आ 'डर' संग-संग उपस्थित अछि; नायकक भीतर बाहरी विस्फोटक समान विचारक विस्फोट होइत अछि।

बाल्यकालक जुम्मा केवल धार्मिक कर्मकाण्ड नै अछि। माँ ओकरा दैनिक जीवनक उत्सव बनबैत छथि: स्नान, कुरता-पैजामा, टोपी, काजर, मस्जिद, दरगाह, नारिकेलक प्रसाद, पड़ोसिनक नजर उतारनाइ, आ संगी सभक बीच बच्चाक उल्लास। ई सूक्ष्म घरेलू विवरण कथा केँ धर्मक अमूर्त विचारसँ बचा कऽ जीवित संस्कृतिक रूप दैत अछि। पिता-पुत्रक आलस्य, माँक अनुशासन, हजरतक घर एनाइ, प्रसाद पहिने दोसरा बीच बाँटनाइ - एहि सभ दृश्यसँ आस्था नैतिक व्यवहार, साझा भोजन आ समुदायसँ जुड़ैत अछि।

४.३ माँ-पुत्र सम्बन्ध आ कथाक केन्द्रीय विडम्बना

कथाक सबसँ तीक्ष्ण विडम्बना माँक पुरान शिक्षा आ विस्फोट-पश्चात बदलल वाक्यक बीच अछि। बाल्यकालमे माँ कहैत छथि जे प्रार्थनाक समय मन अल्लापर केन्द्रित रहय, बगलमे बम फाटयो तँ ध्यान नै हटय। बादमे वास्तविक बम विस्फोट भेला पर ओही माँ पुत्रकेँ मस्जिदक लगो नै जेबाक आदेश दैत छथि। कथा धर्मकेँ व्यंग्यक लक्ष्य नहि बनबैत; ओ भयक सामने मानवीय प्रेमक प्राथमिकता बदलैत देखबैत अछि। माँक विश्वास नष्ट भेल, एहन सरल निष्कर्ष पाठ समर्थन नै करैत। बल्कि पुत्रक मनमे प्रश्न उठैत अछि - अपन खूनक प्रेमक सामने धार्मिक निश्चितता कोना नया अर्थ लैत अछि?

मक्का मस्जिदक पुरान भ्रमण एहि उलटावकेँ गहींर करैत अछि। माँ मस्जिदक शान्ति, विशालता आ पवित्रतासँ अभिभूत छथि; ओ पुत्रकेँ एत्तऽ नमाज पढ़बाक प्रेरणा दैत छथि। पुत्र प्रतिज्ञा करैत अछि, फेर व्यस्त नगरीय जीवनमे बिसरि जाइत अछि। बम विस्फोटक दिन ई अपूर्ण प्रतिज्ञा अपराधबोध, राहत आ शोक - तीनू रूपमे घुरि अबैत अछि। कथा एही कारण 'घटना' सँ बेशी 'अनुपस्थित उपस्थिति'क कथा अछि: नायक विस्फोटस्थलपर नै छल, मुदा मानसिक रूपेँ घटनाक केन्द्रमे आबि जाइत अछि।

४.४ स्थल, स्मृति आ धार्मिक बहुलताक सूक्ष्मता

हैदराबाद कथा मे केवल पृष्ठभूमि नै। चारमीनार, मक्का मस्जिद, बस-यात्रा, खैरताबाद, परबा, चट्टी, बुरका - ई सभ नगरीय स्थलकेँ दृश्यात्मक बनबैत अछि। माँक गाँव/घरक संस्कार आ पुत्रक नगरीय श्रमजीवनक अन्तर सेहो स्पष्ट अछि। पुत्र अनियमित पारीमे काज करैत धर्माचरणसँ दूर भेल अछि; माँक यात्रासँ पुरान धार्मिक-सांस्कृतिक भाषा शहरमे फेर सक्रिय होइत अछि। एहि प्रकार प्रवास कथा भीतर मौन द्वितीय विषय बनि उठैत अछि।

कथा आतंकक साम्प्रदायिक सरलिकीकरणसँ बचैत अछि। पीड़ित देह, बच्चा, परबा आ माँक भय केंद्रमे अछि। अन्तिम समर्पण 'ओइ सभ अम्मीजानकेँ' अछि जिनका विस्फोटक बाद अपन सन्तानक लेल एहन परिवर्तन झेलऽ पड़ल। ई समर्पण व्यक्तिगत माँकेँ सामूहिक मातृत्वक प्रतीक बनबैत अछि। कथा धर्म आ आतंककेँ एक वस्तु नै मानैत; आतंक धार्मिक स्थलमे घुसि कऽ आस्थाक अनुभवकेँ घायल करैत अछि, आ मातृस्नेह ओ घावक तत्काल मानवीय प्रत्युत्तर बनैत

अछि।

४.५ भाषा आ अनुवादित कथन

मैथिली लक्ष्य-पाठमे संवाद प्रधानता कथा कैँ सहज बनबैत अछि। 'हमर बाउ'क पुनरावृत्ति माँक आवाजकेँ भावात्मक आधार दैत अछि। धार्मिक शब्द - नमाज, जुम्मा, मस्जिद, अल्ला, कलमा, गुसुल, निकाह - अनावश्यक देशीकरण बिना राखल गेल अछि; एकर कारण सांस्कृतिक विशिष्टता बचैत अछि। घरेलू मैथिली क्रिया-रूप आ संबोधन एहि अरबी-फारसी मूलक धार्मिक शब्दावलीकेँ आत्मीय लक्ष्य-भाषिक परिवेशमे बसबैत अछि। किछु वाक्य लम्बा आ मध्य-पाठीय संरचना-सन बुझाइत अछि, मुदा मूल तेलुगु बिना ओकर कारण निश्चित करब उचित नै।

४.६ साहित्यिक निष्कर्ष

'जुम्मा' 'विदेह सदेह २७'क गद्य-केंद्र अछि कारण एतऽ स्मृति, धार्मिक संस्कार, प्रवास, आतंक, मातृत्व आ नैतिक संकोच एक-दोसराकेँ काटैत-जोड़ैत अछि। कथा नायककेँ न धर्मत्यागी बनबैत अछि, न माँकेँ कट्टर श्रद्धालु। दुनू परिवर्तनशील मनुष्य छथि। बम विस्फोट कथा मे बाहरी चरम घटना अछि, मुदा साहित्यिक चरमबिन्दु माँक वाक्य अछि - ओ मस्जिदक लगो नै जेबाक आग्रह करैत छथि। एही बिन्दुपर मातृप्रेम आ धार्मिक आस्था विरोधी सिद्धान्त नै, बल्कि संकटमे पुनःक्रमित मानवीय मूल्य बनि जाइत अछि।

५. ओड़िया कविता खण्ड

५.१ इप्सिता सारंगी : 'गप'

'गप' लघु आकारमे स्वप्न, बाल-दृष्टि आ जल-बिम्बक मिश्रण अछि। नहरिक थरथड़ाइत पानिसँ नान्हि बुच्चीक निकलनाइ, 'कजरी', औँठा-आकारक राजकुमार-राजकुमारी, नोरक रंगीन बुलबुल्ला आ सूर्य द्वारा रंगक पसार - ई सभ दृश्य यथार्थक सीधा अनुकरण नहि, कल्पना-तर्कपर चलैत अछि। कविता बाल-मनक खेलकथा जकाँ आरम्भ होइत-होइत नहरि सुखेबा आ कजरीक जिबैत प्रतीक्षापर पहुँचैत अछि। एहि कारण जीवनक नाजुकता आ स्वप्नक जिजीविषा एक संग उभरैत अछि।

जल एतऽ दू रूपमे अछि - नहरिक बाहरी पानि आ बच्चाक भीतरक नोर। नोर रंगीन बुलबुल्ला बनि सकैत अछि, अर्थात दुःख कल्पनाशक्ति द्वारा दृश्य-सौन्दर्यमे बदलैत अछि। अन्तमे पानिक स्रोत सुखा जाइत अछि, मुदा 'जिबैत टटका स्वप्न' बचल रहैत अछि। कविता कैँ केवल बाल-कविता माननाइ ओकर अस्तित्वगत अंश घटा देत; ई स्मृति आ विनाशक बीच कल्पनाक छोट, मुदा टिकाऊ, आश्रय बनबैत अछि।

५.२ इप्सिता सारंगी : 'हिलकोर'

'हिलकोर' प्रश्नात्मक संरचनापर बनल कविता अछि। आरम्भमे निर्दोष सरलताक बासनमे 'एक ठोप माहुर' पड़बाक बिम्ब अछि। विश्वास संक्रमित होइत अछि, अकास टुकड़ी-टुकड़ी भऽ चिड़ैक पाँखिमे भँसियाइत अछि, आ वक्ता 'पूर्ण रूपेँ हारि गेलौं' कहैत अछि। मुदा समुद्रक पूर्णिमाक ज्वार जकाँ विश्वासक घुरबाक सम्भावना फेर उठैत अछि।

कविता निश्चित समाधान नहि दैत। लगातार 'की हिलकोर घुरबैए...?' प्रश्न पराजय, एकान्त, सूखल द्वीप, कागचक नाह, स्वप्न आ 'जीबाक स्थितप्रज्ञ अभिलाषा'केँ एक सूत्रमे जोड़ैत अछि। ज्वारक स्वभाव लौटब अछि, मुदा मनुष्यक विश्वास लौटत कि नहि - ई अनिश्चितता कविता कैँ गम्भीर बनबैत अछि। 'गप'क जल कल्पनात्मक पुनर्जन्मक स्रोत छल; 'हिलकोर'मे जल विश्वासक सम्भावित प्रत्यावर्तन अछि।

५.३ वासुदेव सुनानी : 'फूसि'

संकलन वासुदेव सुनानीकेँ ओड़ियाक प्रमुख दलित कविक रूपमे परिचित करबैत अछि। ओडिशा वर्चुअल अकादमी सेहो हुनका समकालीन ओड़िया कवि, कथाकार आ उपन्यासकारक रूपमे दर्ज करैत, तथा 'Asprusya', 'Dalita', 'Punjibada o Bhumandalikarana' आदि कृतिसँ हुनकर दलित-सामाजिक सरोकारक परिप्रेक्ष्य पुष्ट करैत अछि। Oxford Handbook of Modern Indian Literatures मे राज कुमार सुनानीक लेखनकेँ ओड़िया साहित्यमे जाति आ दलित मानवाधिकारक प्रश्नक संदर्भमे पढ़ैत छथि।

'फूसि'क मूल व्यंग्य 'पैघ' शब्दपर अछि। शबनम भौजी कविकेँ कहैत छथि जे ओ बड्ड पैघ भऽ गेल छथि; वक्ता तुरन्त अपन पाँच फीट पाँच इंच ऊँचाइ आ चौखटिक उपरका भाग नै छूबि सकबाक तथ्य दे कऽ एहि प्रशंसाकेँ 'फूसि' कहैत अछि। मुदा ई शारीरिक विनोद शीघ्रे सामाजिक रूपक बनि जाइत अछि: वासुदेव 'मामूली अभागल बाट-बटोही' छथि, बिसरल बस-अड्डापर प्रतीक्षारत; बस रुकैत अछि, मुदा चढ़बासँ पहिने चलि जाइत अछि।

बस एतऽ अवसर, संस्थागत पहुँच आ सामाजिक मान्यताक बहुव्यंजक प्रतीक अछि। 'खैरात बँटनिहार' लोकसँ बस रोकबाक आग्रह दलित अनुभवक दयाभाव-

आश्रित संरचनापर व्यंग्य बनैत अछि। अन्तिम छवि - 'मड़राइत आत्मविश्वासक पगहाक अन्तिम छोर' - मनुष्यक आत्मसम्मानक क्षीण होइत सीमा देखबैत अछि। कविता आत्म-दया नहि, आत्म-विडम्बना द्वारा व्यवस्था उजागर करैत अछि।

५.४ वासुदेव सुनानी : 'अनुमति'

'अनुमति' एकटा अधीनस्थ श्रमिकक विनम्र संबोधनकेँ प्रतिरोधक हथियार बनबैत अछि। वक्ता बारम्बार 'श्रीमान्' सँ विश्रामक अनुमति माँगैत अछि, मुदा ओकर काज-सूची - बहारि देनाइ, बत्तूकेँ खुआनाइ, नाला साफ करनाइ - मालिकाना व्यवस्था आ श्रमक असमानता खोलैत अछि। 'पुरखाक स्वेद'क अनुभूति वर्तमान श्रमकेँ पीढ़ीगत दासता/अधीनताक स्मृतिसँ जोड़ैत अछि।

कविता सभसँ तीक्ष्ण तखन होइत अछि जखन विनयक भीतर व्यंग्य प्रवेश करैत अछि। वक्ता अपन दुर्गन्ध, स्वेद आ कीट-संक्रमित जीवनक चर्चा करैत मालिकक 'नीक समय'क प्रतीक्षा करैत अछि; अन्तमे कहैत अछि जे 'हमरो सन तुच्छकेँ' छोट-मोट विद्रोहक कला बुझल अछि। ई वाक्य पूरा कविता उलटि दैत अछि: जे आवाज अबधि अनुमति माँगि रहल छल, से अपन राजनीतिक चेतनाक घोषणा करैत अछि।

५.५ भरत माँझी : 'हमर घुरलाक बाद'

ई कविता अनुपस्थिति आ प्रत्यावर्तनक बीच लिखल नेहोराक रूप अछि। वक्ता कहैत अछि जे ओकर घुरलाक बादो स्थान रिक्त नै छोड़ल जाय; फूल टटका हो वा मौलायल, फेकल नै जाय; लुकायल स्वप्न खोलल जाय; लैम्प जलाओल जाय; अन्हारसँ घृणा रोकी; समुद्र आ अकासकेँ बिना भय देखल जाय। एहि आदेशात्मक वाक्य सभमे मृत्यु-पश्चात स्मृति, निर्वासन-पश्चात वापसी, वा सामाजिक अनुपस्थितिक सम्भावना एक साथ खुलल रहैत अछि।

पृथ्वीकेँ 'सममिश्रित स्थान' बुझबाक आग्रह कविता केँ व्यक्तिगत संस्मरणसँ सामूहिक नैतिकता धरि लऽ जाइत अछि। अन्तिम सरिसवक बीआसँ बाउग कएल पथ लोकजीवनक रंग, खेत, मौसम आ पुनर्जन्मक प्रतीक बनैत अछि। कविताक आशा सरल उत्साह नहि; 'बाट ताकू'क संग 'रहू जागल' सेहो अछि - स्मृति निष्क्रिय प्रतीक्षा नहि, सजग संरक्षण अछि।

६. तेलुगु कविता खण्ड

६.१ अन्नावरम देवेन्दर : 'अंतिम शब्द'

'अंतिम शब्द' संकलनक सबसँ विस्तृत आ सामाजिक रूपेँ तीक्ष्ण कविता सभमे एक अछि। उपशीर्षक स्पष्ट करैत अछि जे ई तेलंगानाक किसान द्वारा आत्महत्यासँ पहिने पत्नी 'लछम्मा/लच्छैय्या' सँ कहल आखिरी वचनक रूपमे रचल अछि। कविता नाटकीय एकालाप अछि: ऋणदाता 'यम' बनल छथि, महाजन सम्मानकेँ लज्जित करैत छथि, अकाल आ पानिक अभाव खेती नष्ट करैत अछि, बोरवेल जमीन बेचबैत अछि, बीया आ रसायन धरि धोखाक अनुभव अछि, आ अनुकम्पा राशि किसानक मृत्युकेँ प्रशासनिक रकममे बदलि देबाक अपमानजनक सम्भावना बनैत अछि।

रचना व्यक्तिगत आत्महत्याकेँ निजी दुर्बलता नहि ठहरबैत। ऋण, सूखा, जल-स्तर, बीज-बाजार, कीट, कृषि-रसायन, बाजार-हानि, साहूकारी, राज्यक मुआवजा आ सामाजिक अपमान - कारणक पूरा जाल बनैत अछि। 'अन्न देनिहार' स्वयं भूखल अछि; देश जकर धानपर पलैत अछि, ओ किसानकेँ दाना देबासँ मना करैत अछि - ई उलटाव कृषि-अर्थनीतिक निष्ठुरता पर नैतिक अभियोग अछि।

शिल्पगत रूपेँ पत्नीकेँ सीधा संबोधन रचना केँ समाचार वा प्रतिवेदनसँ फराक करैत अछि। लछम्मा केवल श्रोता नहि; किसानक बचल परिवार, भविष्य आ आत्मसम्मानक प्रतिनिधि छथि। विखण्डित पंक्ति, दोहराव, प्रश्न, विरामचिह्न आ 'हम जा रहल छी'क आवृत्ति आत्महत्याक मानसिक घेरेकेँ ध्वनित करैत अछि। मुआवजा अस्वीकार करबाक आग्रह मृत्युमे सेहो स्वाभिमान बचाबय चाहैत आवाज अछि।

६.२ अन्नावरम देवेन्दर : 'पानि अछि, मात्र आँखिक नोर'

जतऽ 'अंतिम शब्द' कृषक पुरुषक संकट अछि, ओतऽ 'पानि अछि, मात्र आँखिक नोर' जल-संकटमे स्त्रीक शरीर आ समयक इतिहास लिखैत अछि। सप्ताहमे केवल दू दिन पानि, कलपर पाँति आ झगड़ा, पन्द्रह मिनटक कार्यमे पूरा भोरक नाश, बच्चा, दूध, रजस्वला एकान्त, भनसाघर, बारी, टूटल बोरिंग - घरक जल-अर्थशास्त्र स्त्रीक श्रमपर टिकल अछि।

कविता घरेलू श्रमकेँ 'स्वाभाविक' मानबाक दृष्टिकेँ तोड़ैत अछि। घरक लोक गाछ वा कुरसी जकाँ ठाढ़-बैसल अछि, मुदा चोटिल हाथसँ पम्प ठीक करैत स्त्रीकेँ सहायता नहि करैत। 'कर्र कर्र'क ध्वनि यंत्रक निष्फलता आ शरीरक थकान दुनू सुनबैत अछि। अन्तमे पानि आ नोर एक भऽ जाइत अछि - जकर अभाव जीवन मारैत अछि, सएह पानि आँखिसँ दुःखक रूपमे बहैत अछि।

एहि कविता मे पर्यावरणीय संकट लैंगिक प्रश्न बनैत अछि। पानि प्रकृतिक वस्तु नहि, समय, देह, घरेलू सत्ता, श्रम-विभाजन आ मृत्यु-भयक केन्द्र अछि।

'सुवर्णा' उघैत काँधक भोथ हेब, फाटल ब्लाउज, छातीक पीड़ा - जलक प्रश्नकेँ देहपर लिखल दस्तावेज बनबैत अछि।

६.३ शीला सुभद्रा देवी : 'पसीझक काँट'

'पसीझक काँट' घरक बाड़ीमे लगाओल काँटदार झाड़सँ आरम्भ भऽ सामाजिक रूपकमे बदलैत अछि। काँट चुपचाप रस्ता आच्छादित करैत, स्नेहक 'अनवरुद्ध प्रवाह' रोकैत, वाणी फँसबैत, चिन्तन विखण्डित करैत आ हृदयकेँ मात्र 'एकटा अंग' बना दैत अछि। नगर 'बोन' बनि जाइत अछि, मानवीय सम्पर्कसँ लोक घृणा करैत अछि, आ अन्तमे भीतर-बाहर केवल काँट रहि जाइत अछि।

कविताक शक्ति रूपकक क्रमिक विस्तारमे अछि। पहिने झाड़ भौतिक अछि; फेर सामाजिक अलगाव; फेर मानसिक-संवेदनात्मक कठोरता। हवा 'एकताक' नहि बहि पबैत, फूलक क्यारी आ मित्रताक लता-कुञ्ज गायब अछि। ई आधुनिक नगरीय व्यक्तिवाद, अविश्वास आ मनुष्यक संवेदन-क्षयक आलोचना जकाँ पढ़ल जा सकैत अछि, यद्यपि कविता कोनो एक राजनीतिक कारण निर्धारित नहि करैत।

६.४ एन. अरुणा : 'ई सेहो अछि प्रवास'

एन. अरुणा 'प्रवास' शब्दक अर्थकेँ विदेश-गमनसँ निकालि विवाहोत्तर स्त्री-जीवनपर लागू करैत छथि। बेटी जन्मे सँ 'कोनो पुरुषक हाथमे' जेबाक सामाजिक प्रत्याशा भीतर प्रवासक षड्यन्त्र अछि। अमेरिका जेबाक दृश्य आधुनिक प्रवासक परिचित छवि अछि, मुदा कविता पूछैत अछि जे जन्मस्थान छोड़ि अनचिन्हार मनुष्यक घर जेब, आ अपन घर घुरलापर 'पाहुन' बनि जेब - ई की कम प्रवास अछि?

कविताक अन्त विशेष महत्त्वपूर्ण अछि: प्रवास 'हर्खक वस्तु' नहि, मुदा समय बीतने अभ्यास बनि जाइत अछि। एहि 'अभ्यास'मे व्यवस्था अपन क्रूरता लुकबैत अछि। पीड़ा असामान्य नहि रहि सामान्य जीवन-पद्धति बनि जाइत अछि। स्त्रीवादी दृष्टिसँ कविता घर आ परदेशक सीमा पुनर्परिभाषित करैत अछि; जकरा पुरुषक दृष्टिसँ 'घर बसनाइ' कहल जाइत अछि, स्त्रीक अनुभवमे से मूल-स्थानसँ विस्थापन हो सकैत अछि।

७. गुजराती कविता खण्ड

गुजराती समूहमे अनुवादक मध्यस्थताक एक विशेष केन्द्र हेमांग आश्विनकुमार देसाइ छथि। Penguin Random House India क लेखक-परिचय हुनका गुजराती आ अंग्रेजी दुनूमे सक्रिय कवि, अनुवादक, सम्पादक आ आलोचक बतबैत अछि, आ राजेन्द्र पटेल, पीयूष ठक्कर, बाबू सुथार सहित अनेक गुजराती लेखकक अंग्रेजी अनुवादक रूपमे दर्ज करैत अछि। एहि कारण संकलनमे देखाइत गुजराती - अंग्रेजी - मैथिली मार्ग बाह्य जीवनी-स्रोतसँ सेहो सुसंगत अछि।

७.१ हेमांग आश्विनकुमार देसाइ : 'समीकरण'

'समीकरण' दृश्य-रेखाचित्रक कविता अछि। दू अर्धवृत्त, समानान्तर रेल-पटरी, बिना डोरीक धनुष, झुकल बुढ़िया, प्रथम श्रेणीक डब्बा, ठाढ़ ट्रेन, उर्ध्वाधर पटरी, तोरण आ 'जमल मृत्यु' - ज्यामितीय आकार आ मानवीय वृद्ध देह एक-दोसरामे घुलैत अछि। शीर्षक संकेत दैत अछि जे कविता जीवनक अमूर्त गणित खोजैत अछि, मुदा समीकरण समाधान नहि, विस्मय उत्पन्न करैत अछि।

रेल आधुनिक गति, यात्रा आ दूरीक प्रतीक अछि; विपरीत रूपेँ झुकल देह स्थिरता, प्रतीक्षा आ क्षयक। 'हाँसू'क छवि समयसँ काटल स्मृतिसन घुरैत अछि। अन्तमे सोझ बैसबाक कष्ट आ विखण्डनक भय देहक सीमाकेँ रेखा-आकृतिक छवि मे बदलैत अछि। ई कविता कथ्यक अपेक्षा दृश्य-संयोजनपर अधिक निर्भर आधुनिकतावादी काव्य-प्रविधि प्रस्तुत करैत अछि।

७.२ अजय सरवैया : 'अहाँक तामस हमर स्वागतपथ'

कविता आरम्भमे पाब्लो नेरुदाक पंक्ति-स्मरण आ निजी समर्पणसँ एक अंतरंग संवाद रचैत अछि। 'हम' आ 'ओ' बीच लगातार युग्म बनैत अछि: शब्द/नियमावली, इच्छा/भ्रम, मेघ/चक्र, प्रश्न/पलायन, प्रतिभा/बन्धन, स्वप्न/निर्जनता। प्रेमक सम्बन्ध एतऽ एकरूपता नहि, असमान प्रवृत्तिक सहवास अछि।

'कहिया धरि?'क पुनरागमन कविता केँ समयबद्ध प्रेमक प्रश्न बनबैत अछि। ऋतु, पाबनि-तिहार, दिन-राति आ समयकालक फरक प्रेमी दू व्यक्तिक जीवन-लय अलग करैत अछि। अन्तिम 'हमरा सभ प्रेम करैत रही / कतेक दिन धरि?' प्रेमक सत्यकेँ नकारैत नहि, ओकर स्थायित्वपर प्रश्न करैत अछि।

७.३ राजेन्द्र पटेल : 'बिनु शीर्षकक'

'बिनु शीर्षकक' हाथ, शाख, साँप, पिता/बाबाक छड़ी, खेत, हरक फार, भाग्य-रेखा, जड़ि, मस्तिष्क-कोशिका आ नव पाँखिक असम्बद्ध बुझाइत छविक श्रृंखला अछि। मुदा ध्यान देला पर एक सतत जैविक व्याकरण उभरैत अछि - हाथ शाख बनैत अछि, खेत देहक पाँजर, हरक फार हाथक रेखा, जड़ि स्मृति, आ

मस्तिष्कमे हाथ गहींर उतरैत अछि।

कविता श्रमशील हाथक वंशानुगत स्मृतिक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि। ‘बाबाक छड़ीक पकड़ि’ सँ वर्तमान वक्ताक देह धरि, हाथ केवल श्रमक अंग नहि, धरतीकेँ मापबाक, जड़िपर आक्रमण करबाक, नव आँखि-पाँखि उत्पन्न करबाक शक्ति अछि। शीर्षकहीनता एहन बहुसंकेतक पाठ लेल अर्थपूर्ण अछि: पाठककेँ एक नामक सीमा नै देल जाइत।

७.४ पीयूष ठक्कर : ‘सांध्य बेला’

एक पृष्ठक अति-संक्षिप्त कविता साँझक दृश्यकेँ आध्यात्मिक उदासीमे बदलैत अछि। पर्वतक ‘शिशिर आह’ अकासकेँ ढाँपैत अछि, अकास छाहक फाँसमे पड़ैत अछि, पर्वतकेँ अकास आ प्रकाशकेँ छाह भेटैत अछि; शरीर सुतैत अछि, हृदय दुखित। अन्तिम तुलना - ईश्वरकेँ भेटल मनुक्ख जकाँ - सामान्य आध्यात्मिक अपेक्षाकेँ उलटि दैत अछि, कारण मिलन आनन्दक बदला विषादसँ जुड़ल अछि।

Anant National University क आधिकारिक परिचय पीयूष ठक्करकेँ गुजराती कवि, कलाकार आ कला-शिक्षक बतबैत अछि। एहि दृश्य-कला पृष्ठभूमिक प्रकाशमे ‘सांध्य बेला’क प्रकाश-छाह, पर्वत-अकास आ संक्षिप्त रेखांकन विशेष अर्थपूर्ण बुझाइत अछि, यद्यपि कविता अपने आपमे एहि जीवनीक सहायता बिना सेहो दृश्यात्मक अछि।

७.५ पन्ना त्रिवेदी : ‘आमद’

‘आमद’ ‘हे विदेशी!’ संबोधनसँ आरम्भ होइत अछि। वक्ता एहन दृश्य माँगैत अछि जतऽ प्रकाश नै, छाह नै, चुप्पीक अंश नै, व्यथित हृदयक ध्वनि नै, स्पर्शक निशान नै - अन्ततः जतऽ ‘श्वासक मालगुजारि’ कियो एकत्रित नहि करैत हो। असम्भव शर्त सभक क्रम जीवनक मूलभूत अनुभवकेँ कर/मालगुजारीक रूपकमे बदलैत अछि।

‘विदेशी’ बाहरी मनुष्य, अजनबी, मुक्तिदाता वा अन्य जगतक दूत - अनेक अर्थ खोलैत अछि। कविता किसी वास्तविक भौगोलिक विदेशक वर्णन नहि, अस्तित्वसँ बाहर एहन स्थानक खोज अछि जतऽ देह, ध्वनि, प्रकाश, छाह, श्वासक कर नहि देबऽ पड़य। Gujarati Sahitya Forum क परिचय पन्ना त्रिवेदीकेँ कवि-लेखक आ साहित्यिक अध्येता रूपमे सत्यापित करैत अछि; संकलनक ई कविता हुनकर गहन, न्यूनतम, प्रश्नधर्मी काव्यस्वर देखबैत अछि।

७.६ बाबू सुथार : ‘गृहमोह’

‘गृहमोह’ संकलनक समृद्धतम स्मृति-कविता सभमे एक अछि। पहिल बुन्नीक गंधसँ कविता खुलैत अछि। बलुआही माटि, रौदक फोका, छातक खपरा, बड़द, घर-दोगही, देबाल, गाछक छाती, ‘स्मृतिक शिलालेख’, मायक कोमल तरहत्थी, पक्षिक घर, मयूर, जलक घट लेने गामक स्त्री, अष्टमी-एकादशी, चन्द्रमा - गृह एकटा मकान नहि, पूरा संवेदनात्मक ब्रह्माण्ड बनैत अछि।

बरखा एहि स्मृति-ब्रह्माण्डक सक्रिय माध्यम अछि। पानि देबाल आ गाछपर पुरखा-हस्ताक्षर खोलैत अछि; मायक तरहत्थी जकाँ अकास चमकैत अछि; जीव आ शिव एक फ्रेममे अबैत छथि। अन्त फेर ‘गंध पहिल अछारक’ आ ‘एक दोसरामे पसरैत’ वक्ता सभपर घुरैत अछि, जइसँ कविता वृत्ताकार बनैत अछि। घरक मोह स्थिर अतीत नहि, बरखा लगिते वर्तमानमे पुनःसक्रिय अनुभूति अछि।

Hindwi क लेखक-परिचय बाबू सुथारकेँ गुजराती लेखक, अनुवादक आ भाषाविज्ञानी बतबैत अछि। हुनकर बहुविध लेखकीय पृष्ठभूमि एहि कविताक भाषिक-इन्द्रियगत घनत्व बुझबामे सहायक होइत अछि, मुदा आलोचनाक मुख्य आधार स्वयं कविता अछि।

८. भोजपुरी कविता खण्ड : भिखारी ठाकुरक ‘वृद्धाश्रमक पक्षमे’

८.१ लोक-वक्ता आ सामाजिक सुधार

‘बिरहा १’ आ ‘बिरहा २’ दुनू सार्वजनिक संबोधनक कविता अछि। पहिल पद्य कवि अपन नाम, गाम आ प्रणामसँ आरम्भ करैत छथि, फेर समाजकेँ बुढ़ा-बुढ़ीक दुःखपर ध्यान देबय आ वृद्धाश्रम बनबय कहैत छथि। दोसर पद्य ‘हिन्दू-मुसलमान’ दुनूकेँ कान देबाक आग्रह करैत अछि आ माय-बापक अपमानक विरुद्ध नैतिक चेतावनी दैत अछि। एहन प्रत्यक्ष संबोधन लोकमंचक सामुदायिक स्वरकेँ सुरक्षित रखैत अछि।

Delhi University क शोध-सूचीमे भिखारी ठाकुरपर ‘critical biography’, भक्ति, आ ‘social concerns in the plays’ केन्द्रित शोध दर्ज अछि; INFLIBNET पर हुनकर लोकनाट्य आ सामाजिक विमर्शपर शोध उपलब्ध अछि। एहि व्यापक सामाजिक-सुधारक परम्पराक भीतर वृद्धजनक प्रश्न स्वाभाविक अछि। कविता तर्कशास्त्रीय निबन्ध नहि; बिरहा-छन्द, टेक, नामोल्लेख, धार्मिक स्मरण आ सीधा उपदेश द्वारा जनसहमति बनबैत अछि।

८.२ ‘बिरहा १’

पहिल बिरहामे ‘तीन दिनक सेखी’ मानव देहक क्षणभंगुर यौवनपर व्यंग्य अछि। बाहरक चिकन चामक ओहरनक गर्वक सामने वृद्धावस्थाक अनिवार्यता रखल गेल अछि। ‘एकमत भऽ कऽ सभ मिलिये कऽ समाज’ पंक्ति निजी दान नहि, सामूहिक संस्था निर्माणक बात करैत अछि। ‘वृद्धाश्रम बनबाउ’क आग्रह लोककवितामे आधुनिक सामाजिक संस्थाक माँगक रोचक उदाहरण अछि।

८.३ ‘बिरहा २’

दोसर बिरहा धार्मिक विभाजनक ऊपर माय-बापक सेवाकेँ साझा नैतिकता बनबैत अछि। हिन्दू-मुसलमान दुनू संबोधित छथि; बाल्यकालमे ‘माय’ कहल स्त्रीकेँ वृद्धावस्थामे कसाइ जकाँ व्यवहार करनाइ नैतिक अपराध अछि। ‘हिसाब-किताब’ आ परलोकक प्रश्न लोकधर्मक परिचित संरचनाकेँ सामाजिक उत्तरदायित्वक पक्षमे प्रयोग करैत अछि। अन्तिम टेक फेर वृद्धाश्रम निर्माणपर आबि टिकैत अछि।

भोजपुरीसँ मैथिलीक प्रत्यक्ष अनुवाद निकट-भाषिक लाभ लैत अछि। संबोधन, टेक, लोक-छन्दक सरलता आ नैतिक प्रत्यक्षता लक्ष्य-पाठमे सहज चलैत अछि। एतऽ अत्यधिक मानकीकरण कएल जाइत तँ भिखारीक जनमंचीय ऊर्जा कमि सकैत छल; संकलनक रूप लोकलयक अनगढ़ प्रत्यक्षताकेँ पर्याप्त स्थान दैत अछि।

९. कश्मीरी कविता खण्ड : रहमान राहीक ‘छाह सभ’

९.१ पुरस्कार-संदर्भ आ पाठ-सत्यापन

संकलन ‘छाह सभ’ सँ पहिने ६ नवम्बर २००८ क ४०म ज्ञानपीठ पुरस्कार समारोहक प्रत्यक्ष विवरण दैत अछि। भारतीय ज्ञानपीठक वर्तमान अधिकृत सूची रहमान राहीकेँ २००४ क कश्मीरी भाषा-पुरस्कारप्राप्त लेखक बतबैत अछि। संकलनमे कश्मीरीसँ अंग्रेजी अनुवादक नाम एस. एल. साधु/सन्धु रूपमे छपल अछि; Foundation of SAARC Writers and Literature क उपलब्ध अंग्रेजी संकलन ‘Shadows’ केँ ‘Translations from Kashmiri by S.L. Sadhu’ कहि प्रकाशित करैत अछि, आ ओकर पंक्ति-क्रम मैथिली पाठसँ मेल खाइत अछि। एहि कारण मध्य-पाठक पहचान उच्च विश्वसनीयतासँ पुष्ट होइत अछि।

९.२ आस्था, छाह आ आत्म-संशय

कविता नियति आ अमरताक आशा छोड़ि ‘किछु क्षण’मे रमबाक आग्रहसँ शुरू होइत अछि। बस्तीक परिचित बाट घनघोर बोनमे धँसि गेल - ई बाहरी भूगोल तुरन्त आस्थाक कवचमे घुसल शंकाक रूपक बनैत अछि। आँखि खुजलासँ स्वप्न ‘नजर’क शिकार होइत अछि; बसन्ती युवा छाती सुनसान बनैत अछि; मेला देखाइत अछि मुदा हाथमे एकाध विचार आ असगर कौआ अबैत अछि।

मध्य भागमे आत्म-विमर्श तीक्ष्ण होइत अछि: जे मन पहिने तारा गढ़बाक इच्छा करैत छल, से आब अपना लेल नाम खोजैत अछि। विश्वास मौलायल हरियरी, चैतन्य खिसियायल साँप; देवता अपन छाह, दानव अपन अहं केर कनिया-पुतड़ा। ई रूपक धार्मिक नास्तिकताक सरल घोषणा नहि; ई आत्मचेतनाक संकट अछि जतऽ पवित्र आ दानवी दुनू मनुष्यक छाया/अहं सँ उपजैत बुझाइत अछि।

अन्तिम दृश्य राजनीतिक-सांस्कृतिक अव्यवस्था आ अस्तित्वगत दिशाहीनताकेँ मिलबैत अछि: सभाभवन बानरक कोलाहलसँ भरल, सन्तक पहिरन बोनमे खोजनाइ, अन्हारमे बिना दिशा नाओ, नग्न नटुआ, आ ‘आगि-खायबला बताह’ राही। कवि अपनाकेँ अन्तिम सत्यक प्रचारक नहि, जोखिमभोगी पागल कलाकारक रूपमे उपस्थित करैत छथि। एही आत्म-व्यंग्यसँ कविता उपदेशक कठोरतासँ बचैत अछि।

९.३ ‘छाह’क केन्द्रीय रूपक

छाह प्रकाशक अनुपस्थिति नहि, स्वयं द्वारा उत्पन्न रूप अछि। देवता अपन छाह छथि - अर्थात मनुष्य जकरा बाहरी परम सत्ता मानैत अछि, ओकर अनुभव भीतरक चेतनासँ आकार लैत अछि; दानव अहं केर पुतड़ा छथि - भयक स्रोत सेहो आत्मकेँ छोड़ि पूर्णतः बाहरी नहि। ई दार्शनिक संकेत कविता केँ कश्मीरक विशिष्ट राजनीतिक प्रसंगसँ परे सार्वभौमिक आधुनिक अस्तित्व-कविताक स्तरपर लऽ जाइत अछि, यद्यपि राहीक भाषिक-सांस्कृतिक मूलकेँ बिसरब उचित नहि।

१०. रवि भूषण पाठक : 'निराला: देह विदेह (१-४)'

१०.२ परकाय-प्रवेश आ काव्यात्मक पर्यावरण

पाठक भावप्रधान रचनामे प्रत्यक्ष भाषिक प्रतिस्थापनकेँ अपर्याप्त मानैत 'परकाय प्रवेश'क आवश्यकता बतबैत छथि। मूल कृति आ रचनाकारक मनोजगत बुझि लक्ष्य-भाषामे भाव-छाया रचनाइ हुनका अनुसार सर्जनात्मक प्रज्ञाक काज अछि। ओ अपन सीमासो स्वीकारैत छथि - ई आत्मस्वीकृति आलोचनात्मक रूपेँ महत्त्वपूर्ण अछि, कारण अनुवादक अपनाकेँ अदृश्य सर्वज्ञ मध्यस्थ नहि बनबैत।

शब्दानुवाद, भावानुवाद, रूपान्तरण, छायानुवाद, सारानुवाद आ टीकापरक अनुवादक वर्गीकरण पाठकक लेखकेँ शिक्षणोपयोगी स्वरूप दैत अछि। कविता लेल शब्दार्थक अतिरिक्त वाक्यगठन, लय, छन्द, बिम्ब, प्रतीक, अलंकार, शैली, ध्वनि आ नादात्मकताक प्रश्न उठाओल गेल अछि। एहि दृष्टिसँ अगिला सातो निराला-अनुवाद भूमिका द्वारा प्रस्तावित कसौटीक प्रयोग-क्षेत्र बनैत अछि।

११. निरालाक सातो मैथिली कविता : रचनागत समीक्षा

११.१ 'जूनि बान्ह नाव ऐ ठाम बन्धु'

नकारात्मक आग्रह 'जूनि बान्ह' कविता केँ स्मृतिस्थल सँ बाँधि दैत अछि। नाव बान्हब सामान्य क्रिया अछि, मुदा ओ घाट प्रेमिकाक नहान, हँसी, ग्राम-समाजक नजर आ वक्ताक काँपैत पैरक स्मृतिसँ भरल अछि। नाव रोकलासँ स्मृति जागत; अतः वक्ता मित्रकेँ ओहि स्थलपर ठहरबासँ रोकैत अछि। नदी बाहरी प्रवाह, स्मृति भीतरी प्रवाह। मैथिली 'जूनि' आदेशक कोमल निषेध आ 'बन्धु'क आवृत्ति गीतात्मक आत्मीयता देत अछि।

कविता सामुदायिक दृष्टि आ निजी प्रेमक तनाव सेहो धारण करैत अछि - 'पूछतओ पूरा गाम'। प्रियाक हँसी 'बहुत किछु' कहैत अछि, तैयो ओ अपनेमे रहैत अछि। एतऽ प्रेम प्रत्यक्ष कथन नहि, संकेत, स्मृति आ स्थलद्वारा बनैत अछि। अनुवादक लोकधर्मी सरलता बनौने छथि; मूल हिन्दी शीर्षकक भाव मैथिलीमे सहज सुनाइत अछि।

११.२ 'हमरा सँ किनारा केने जा रहल छथि'

ई कविता विरहकेँ वस्तु-रूपकद्वारा गाढ़ करैत अछि। सुहागिनक मोतीक दाना जोडयवला सूत टूटैत अछि; छिपल चोट पूछलापर 'निराशाक डोरी' सील जाइत अछि। किनारा करनाइ केवल दूरी नहि, सम्बन्धक सूत्र तोड़नाइ अछि। दुनियाक चक्करमे 'मरल जा रहल छथि / जियल जा रहल छथि' जेकाँ विरोधी क्रिया प्रेम-वियोगक मानसिक अस्थिरता व्यक्त करैत अछि।

अन्तिम पंक्तिमे विजयक व्यंग्य अछि - जे 'विजयी' कहल, से दोसरा 'पीने' जा रहल अछि। प्रेमक निजी त्रासदी सामाजिक प्रतिस्पर्धा आ अहंकारक छाया लेल खुलि जाइत अछि। मैथिली क्रियारूप 'जा रहल छथि'क लगातार पुनरावृत्ति दूरीकेँ चलायमान प्रक्रिया बनबैत अछि, एक बेरक निर्णय नहि।

११.३ 'स्नेह निर्झर बहि गेलइ'

कविता वृद्धावस्था, सृजनात्मक क्षय आ स्नेह-शून्यताक समेकित रूपक अछि। स्नेहक निर्झर बहि गेल, देह 'बाउल' सन रहि गेल; सुखायल आमक डार कहैत अछि जे आब कोयल नहि आयत। प्रकृति एतऽ सजावट नहि, आत्मचित्र अछि। एक समय कवि जगतकेँ फूल-फल आ प्रभा देने छल, पल्लवित क्षण सभ अमर बुझाइत छल; आब जीवनक ऐश्वर्य ढहि गेल अछि।

प्रियतमा अब पुलिनपर नहि, श्याम तृणपर बैठबाक दृश्य नहि; हृदयपर 'अमा' बहैत अछि। अन्तिम 'हम अलक्षित छी' कविक सार्वजनिक प्रसिद्धि आ निजी अदृश्यताक विडम्बना खोलैत अछि। पाठकक भूमिका मे निरालाक शब्द-ध्वनि आ उदात्तता बचाबय चाहबाक घोषणा एहि अनुवादमे संस्कृतनिष्ठ 'निर्झर', 'पुलिन', 'निरूपमा' सन पद राखलासँ प्रत्यक्ष देखाइत अछि।

११.४ 'हम अकेला'

'हम अकेला' जीवनक 'सांध्य बेला'क संक्षिप्त आत्मस्वर अछि। सूखल-पाकल, आधा-छिन्न केश, निष्प्रभ गाल, मन्द चालि आ हटैत मेला - वृद्धावस्था देहक छोट-छोट संकेतद्वारा बनैत अछि। नदी-झरना, पार, नाव आ नाविकक अनुपस्थिति मृत्यु/जीवन-पारावारक संकेत सम्भव करैत अछि, मुदा कविता ओकरा स्पष्ट धार्मिक प्रतीकमे बाँधैत नहि।

'देख रहलहुँ, आबि रहलइ'क पुनरावृत्ति विशेष प्रभावी अछि: मृत्यु अचानक नहि, सामने आबैत दृश्य अछि, जकरा वक्ता सजग दृष्टिसँ देखैत अछि। अकेलापन करुण अछि, मुदा उन्मत्त नहि; अनुभूति मितभाषी आ आत्मस्वीकृतिपूर्ण अछि।

११.५ 'रंगि गेल धरा, भेल धन्य धरा'

एहि कविताक शीर्षक संकलनमे अलग सँ नहि, पहिल पंक्तिसँ पहिचानल जाइत अछि। धरती रंग, सुगन्ध, मकरन्द, पात-पुष्प, हरियरी, कोयलक पंचम स्वर, कौआ-मैना आ वनश्रीसँ भरैत अछि। ई निरालाक वसन्त-प्रकृति स्वरक उज्ज्वल पक्ष अछि। 'रंगि', 'धन्य', 'जगमग', 'मनोहरा' ध्वनि-आवृत्ति दृश्यकेँ गीतात्मक आवेग दैत अछि।

'स्नेह निर्झर' आ 'हम अकेला'क क्षयक बाद ई कविता पुस्तक-पाठमे तीव्र रंगपरिवर्तन करैत अछि। प्रकृति पुनरुत्थान आ प्रणयक साझा क्षेत्र बनैत अछि। अनुवादक पुनरावृत्त टेक 'रंगि...' द्वारा गीतक आवर्तन सुरक्षित करैत छथि; शब्द-संयोजनमे संस्कृतनिष्ठ आ देशज मैथिली दुनू स्तर उपस्थित अछि।

११.६ 'सखि वसन्त आयल'

'सखि वसन्त आयल' मे जंगलक मन सिनेहसँ भरैत, नवोत्थान पसरैत, पल्लव-कली, प्रिय गाछक पात, भँउरा, कोयल, मद्धिम पवन, प्रियवरक नयन, पीयर कमलदल आ केशर खेत-पथारकेँ सोनासन करैत अछि। वसन्त बाहरी ऋतु नहि; प्रेमक देह-मनमे जागरण अछि।

पाठकक भूमिका निरालापर विद्यापतिक प्रभावक बात उठबैत अछि। एहि कविता मे 'सखि' संबोधन, वसन्त, पल्लव, भँउरा-कोयल, प्रियवर आ प्रणयक प्रकृति-देह सम्बन्ध मैथिली पाठककेँ स्वाभाविक रूपेँ विद्यापतिय स्मृति दिस लऽ जा सकैत अछि। मुदा प्रभावक विशिष्ट पाठानुक्रम सिद्ध करबाक लेल अलग मूल-पाठीय शोध चाही; एहि समीक्षा मे एकरा केवल पाठक द्वारा प्रस्तावित तुलनात्मक दिशाक रूपमे ग्रहण कएल गेल अछि।

११.७ 'छाड़ल कारी कारी बादर / एला नइ वीर जवाहर लाल'

अन्तिम निराला-अनुवाद पूर्ववर्ती वसन्तीय प्रकृति सँ अचानक राजनीतिक व्यंग्यमे प्रवेश करैत अछि। कारी बादर, बिजुरी, फुफकारैत पूरबा, विष, महँगाईक बाढ़ि, संचित निधिक लूट, भुख्खल-नाँगर लोक - देशक संकट प्राकृतिक उथल-पुथलक छविमे व्यक्त अछि। हर खण्डक टेक 'नइ एला वीर जवाहर लाल' अनुपस्थित राजनेताकेँ व्यंग्यात्मक रूपेँ पुकारैत अछि।

कविता वीर-आह्वानक लोकधर्मी ढाँचा अपनबैत अछि, मुदा टेकक बारम्बारता प्रश्न उठबैत अछि: संकटमे प्रतीक्षित उद्धारक कतऽ छथि? 'बिन भाला लाठी'क असहायता, बहि-भसि गेल मित्र-मण्डली आ किछु नै बुझबाक अवस्था व्यक्तिगत नहि, सामूहिक राजनीतिक अस्थिरता अछि। मैथिलीमे 'नइ एला' टेक सहज लोकगीत-सरीख लय बनबैत अछि, जइसँ व्यंग्यक सार्वजनिकता बढ़ैत अछि।

१२.१ पानि : जीवन, नोर, ज्वार, बरखा आ पारावार

संकलनमे पानि बारम्बार अर्थ बदलैत घुरैत अछि। 'गप'मे नहरि स्वप्नक जन्मस्थल, 'हिलकोर'मे ज्वार विश्वासक सम्भावित वापसी, 'पानि अछि, मात्र आँखिक नोर'मे जल-संकट स्त्री-श्रमक हिंसा, 'गृहमोह'मे पहिल बरखा घर-स्मृतिक उद्घाटन, 'जूनि बान्ह नाव'मे घाट प्रेमक स्मृतिस्थल, 'हम अकेला'मे नदी-पार जीवनक संध्याक्षण, 'छाह सभ'मे दिशाहीन नाओ अस्तित्वक रूपक अछि। एहि बहुभाषिक समूहमे जल सामान्य प्रकृति-बिम्ब नहि; स्मृति, अभाव, आशा, मृत्यु आ घरक साझा व्याकरण बनैत अछि।

१२.२ देह : शीर्षक 'देह-विदेह' सँ सामाजिक शरीर धरि

देह संकलनक बहुतेक रचनामे अनुभवक पहिल लेखन-पट्ट अछि। किसानक अँकड़ल पेट, स्त्रीक भोथ काँध आ फाटल ब्लाउज, वासुदेवक मापल ऊँचाइ, वृद्ध निरालाक केश-गाल-चालि, राजेन्द्र पटेलक हाथ-जड़ि, प्रवासी स्त्रीक जन्मस्थानसँ कटैत देह, जुम्माक बम-संदर्भमे रक्तस्नात बच्चा - सामाजिक संरचना देहपर लिखाइत अछि। 'विदेह' तखन देहक नकार नहि, देहक सीमाकेँ पार करैत स्मृति, भाषा आ अनुवादक संचार बनि सकैत अछि।

१२.३ घर, प्रवास आ घुरनाइ

'जुम्मा'क नायक शहरमे असगर रहितो अपनाकेँ असगर नहि मानैत, मुदा माँक आगमन ओकर मूल-संस्कार खोलैत अछि। एन. अरुणा विवाहकेँ स्त्रीक प्रवास कहैत छथि; बाबू सुथार पहिल बरखासँ गृह-संसार फेर पबैत छथि; भरत माँझी घुरबाक बाद स्थान खाली नहि रखबाक नेहोरा करैत छथि। घर एतऽ स्थिर भूगोल नहि - स्मृति, लिंग, श्रम, भाषा आ प्रतीक्षाद्वारा बनैत बदलैत सम्बन्ध अछि।

१२.४ जाति, वर्ग, श्रम आ सामाजिक असमानता

वासुदेव सुनानीक 'फूसि' आ 'अनुमति' सामाजिक ऊँचाइ आ श्रम-अधीनताकेँ व्यंग्यात्मक आवाज दैत अछि; अन्नावरम देवेन्दर कृषक ऋण आ स्त्रीक जल-श्रमकेँ संरचनात्मक संकट बनबैत छथि; भिखारी ठाकुर वृद्धजनक उपेक्षाकेँ समाजक सामूहिक दायित्व बनबैत छथि। एहि रचना सभक सामान्यता ई अछि जे

पीड़ा निजी चरित्र-दोष नहि; व्यवस्था, संसाधन-वितरण, सामाजिक पदक्रम आ पारिवारिक सत्ता पीड़ाक रूप तय करैत अछि।

१२.५ आस्था, संशय आ मानवीय प्राथमिकता

‘जुम्मा’मे आस्था माँक दैनिक नैतिक संस्कार अछि, मुदा आतंक ओकर व्यवहार बदलैत अछि। ‘छाह सभ’मे विश्वास शंकासँ भेद्य आ देवता स्वयं छाह बनैत छथि। भिखारी ठाकुर हिन्दू-मुसलमान दुनूकेँ वृद्धजनक सेवामे साझा नैतिक मंचपर बुलबैत छथि। ‘सांध्य बेला’ ईश्वर-साक्षात्कारक छविकेँ हृदय-विषादसँ जोड़ैत अछि। संकलन धर्मपर एकटा एकरूप मत नहि दैत; आस्था, लोकधर्म, संशय, पीड़ा आ नैतिक जिम्मेवारीक विविध रूप रखैत अछि।

१२.६ प्रकृति : सजावट नहि, सामाजिक अर्थक वाहक

सूखा, बोरवेल, जल-पाँति, पहिल बरखा, काँटदार झाड़, वसन्त, मौलायल हरियरी, कारी बादर - प्रकृति सभ खण्डमे सामाजिक अर्थ ग्रहण करैत अछि। अन्नावरमक सूखा कृषि-अर्थव्यवस्थाक विफलता अछि; शीला देवीक काँट सामाजिक अलगाव; निरालाक वसन्त प्रेम-नवोत्थान; बाबू सुथारक बरखा गृह-स्मृति; राहीक मौलायल हरियरी विश्वासक क्षय। एहि कारण संकलनक प्रकृति-काव्य आधुनिक मानवीय संकटसँ अलग नहि।

१२.७ आवाजक रूप : एकालाप, नेहोरा, प्रश्न आ टेक

रचना सभक भाषिक ऊर्जा वक्ताक रूपसँ बनैत अछि। ‘अंतिम शब्द’ मृत्यु-पूर्व एकालाप, ‘अनुमति’ विनम्र नेहोरा, ‘हिलकोर’ अनुत्तरित प्रश्न, ‘बिरहा’ सामुदायिक टेक, ‘एला नइ वीर जवाहर लाल’ राजनीतिक टेक, ‘जुम्मा’ फोन-संवाद, ‘आमद’ विदेशीकेँ पुकार। बहुभाषिक मूल भिन्न होइतो संबोधन-प्रधानता मैथिली पाठमे उच्च मौखिकता उत्पन्न करैत अछि।

१३. मैथिली रूपान्तरक आलोचनात्मक मूल्यांकन

१३.१ उपलब्धि : भारतीय भाषाक बीच मैथिलीकेँ लक्ष्य-भाषा बनौनाइ

संकलनक पहिल उपलब्धि संस्थागत अछि: मैथिली केवल ‘अनुवाद होयवला’ भाषा नहि, अनेक भारतीय भाषाक साहित्य ग्रहण करयवला लक्ष्य-भाषा बनैत अछि। तेलुगु, ओड़िया, गुजराती, कश्मीरी सन भाषासँ पाठक सीधा परिचित नहि होथि तँ अंग्रेजी मध्य-पाठ द्वारा सेहो साहित्य मैथिलीमे प्रवेश करैत अछि। ई प्रक्रिया केन्द्र-परिधिक स्थिर नक्साकेँ तोड़ैत अछि - अंग्रेजी मध्यस्थ भए सकैत अछि, मुदा अन्तिम पाठ मैथिलीमे सृजनात्मक जीवन ग्रहण करैत अछि।

१३.२ सांस्कृतिक शब्दक संरक्षण

‘जुम्मा’मे नमाज, मस्जिद, अल्ला, बुरका, निकाह; ‘बिरहा’मे लोक-धार्मिक संबोधन; ग्रामीण कवितामे बोरवेल, खेत, दोगही, अष्टमी-एकादशी; निरालामे पुलिन, निर्झर, वसन्त - अनुवादक सभ सांस्कृतिक शब्दावलीकेँ एक समान ‘सरल’ शब्दमे घोलि नहि देने छथि। एहि कारण लक्ष्य-पाठ सांस्कृतिक भिन्नताकेँ दृश्यमान रखैत अछि। परोक्ख अनुवादक अध्ययनमे विदेशी/स्थानीय चिह्न क्रमशः घटबाक ‘concatenation effect’क सम्भावना पर चर्चा भेल अछि; ‘विदेह सदेह २७’मे अनेक स्थानीय शब्द बचल रहनाइ उल्लेखनीय अछि।

१३.३ निकट-भाषिक अनुवाद आ रवि भूषण पाठकक चेतावनी

हिन्दी-मैथिली वा भोजपुरी-मैथिली निकटता सहजता देत, मुदा पाठक स्वयं कहलनि जे ई निकटता आलस्य आ अनुकरणो पैदा कऽ सकैत अछि। निराला अनुवादमे कतहु तत्सम शब्द यथावत राखल गेल - ‘स्नेह निर्झर’, ‘पुलिन’, ‘निरूपमा’ - कारण ओ शब्दक ध्वन्यात्मक उदात्तता बचाबय चाहैत छथि। दोसर दिस ‘जूनि’, ‘हम्मर’, ‘आयल’, ‘नइ एला’ सन रूप कविता केँ मैथिली श्रव्यता दैत अछि। ई संतुलन पाठकक घोषित सिद्धान्तक व्यावहारिक रूप अछि।

१३.४ मध्य-पाठक सम्भावना आ सावधानी

अंग्रेजी मध्य-पाठवला कविता सभमे कखनो वाक्य-क्रम वा अमूर्त पद-संयोजन सामान्य बोलचालक मैथिली सँ फराक बुझाइत अछि। मुदा बिना मूल ओड़िया/तेलुगु/गुजराती/कश्मीरी आ बिना मध्य अंग्रेजी पाठक पंक्ति-दर-पंक्ति तुलनाक ई कहब जे ‘अंग्रेजीक प्रभाव’ अवश्य अछि, अनुमान हएत। वैज्ञानिक समीक्षा एतबे दर्ज कऽ सकैत अछि जे लक्ष्य-पाठमे एहन संरचना उपस्थित अछि; ओकर कारण निर्धारित करबाक लेल त्रिपाठीय तुलनात्मक संस्करण आवश्यक अछि।

१३.५ अनुवादक दृश्यता

संकलन मध्य-अनुवादक सभक नाम बहुतेक ठाम स्पष्ट दैत अछि - जयलक्ष्मी पोपुरी/पी. जयलक्ष्मी, शैलेन राउत्रॉय, हेमांग देसाइ, एस. एल. साधु, इप्सिता

सारंगी स्वयं। परोक्ख अनुवादक इतिहासमे मध्यस्थक नाम अनेक बेर अदृश्य रहैत अछि; एतऽ ओकर उल्लेख पाठ-वंशावली बुझबाक लेल उपयोगी अछि। आलोचनात्मक संस्करण बनाओल जाए तँ प्रत्येक रचनाक शीर्षमे ‘मूल भाषा > मध्य भाषा/अनुवादक > मैथिली/अनुवादक’ एकरूप ढाँचा रखनाइ आर स्पष्टता देत।

१४. लेखक-विशेष बाह्य शोधसँ भेटल पुष्ट संदर्भ

वेमपल्ली शरीफ

साहित्य अकादेमीक युवा पुरस्कार सूची तेलुगु २०१२ अंतर्गत ‘Jumma (Short Stories)’ आ Vempalli Sharaff नाम दर्ज करैत अछि। एहि तथ्यसँ ‘जुम्मा’क लेखक-रचना पहचानक बाह्य पुष्टिकरण होइत अछि।

वासुदेव सुनानी

ओडिशा वर्चुअल अकादमी हुनका २७ सितम्बर १९६२, मनिगुडा, नुआपाडामे जन्मल कवि-कथाकार-उपन्यासकार रूपमे परिचित करैत अछि। Oxford Handbook क जाति-विमर्श अध्याय हुनकर ‘Padapodi’ कैं दलित दृष्टिसँ जातिगत हिंसा आ मानवाधिकारक प्रश्नक महत्त्वपूर्ण पाठ मानैत अछि। एहि व्यापक कृतित्वक आलोकमे ‘फूसि’ आ ‘अनुमति’क सामाजिक व्यंग्य अधिक स्पष्ट होइत अछि।

हेमांग आश्विनकुमार देसाइ

Penguin Random House India हुनका द्विभाषी गुजराती-अंग्रेजी कवि, अनुवादक, सम्पादक आ आलोचक बतबैत अछि, तथा राजेन्द्र पटेल, पीयूष ठक्कर, बाबू सुथार आदि गुजराती लेखकक अंग्रेजी अनुवादक रूपमे नामित करैत अछि। संकलनक अनुवाद-श्रृंखला एहिसँ पुष्ट होइत अछि।

पीयूष ठक्कर

Anant National University क आधिकारिक प्रोफाइल हुनका गुजराती कवि, कलाकार आ कला-शिक्षक कहैत अछि। ‘सांध्य बेला’क दृश्यात्मक संक्षिप्तता हुनकर कला-संवेदनासँ तुलनात्मक रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि, मुदा कविता-विश्लेषण स्वयं पाठपर आधारित अछि।

पन्ना त्रिवेदी

Gujarati Sahitya Forum हुनका कवि-लेखक आ अध्यापक रूपमे परिचित करैत अछि आ प्रकाशित कृतिसूची उपलब्ध करबैत अछि।

बाबू सुथार

Hindwi क लेखक-परिचय हुनका गुजराती लेखक, अनुवादक आ भाषाविज्ञानी कहैत अछि; ‘गृहमोह’क भाषिक-इन्द्रियगत घनत्वक बाह्य पृष्ठभूमि रूपमे ई तथ्य उपयोगी अछि।

रहमान राही

भारतीय ज्ञानपीठक अधिकृत सूची २००४ क पुरस्कार कश्मीरी भाषा लेल रहमान राहीक नाम दर्ज करैत अछि। SAARC Writers क उपलब्ध संकलनमे ‘Shadows’क अंग्रेजी अनुवाद S. L. Sadhu नामसँ अछि, जे मैथिली ‘छाह सभ’क मध्य-पाठक पहचान पुष्ट करैत अछि।

भिखारी ठाकुर

दिल्ली विश्वविद्यालयक शोध-बिब्लियोग्राफी आ INFLIBNET शोध-संग्रह हुनकर लोकनाट्य, सामाजिक सरोकार, आलोचनात्मक जीवनी आ सुधारवादी जनचेतनापर अकादमिक अध्ययनक प्रमाण दैत अछि। ‘वृद्धाश्रमक पक्षमे’ एहि सामाजिक संवेदनाक पद्यात्मक विस्तार अछि।

१५. संकलनक सम्पादकीय-साहित्यिक महत्त्व

‘विदेह सदेह २७’क महत्त्व केवल अलग-अलग उत्तम रचना एकत्र करबामे नहि, भारतीय भाषाक अनुभवकैं मैथिलीमे परस्पर निकट राखबामे अछि। तेलंगानाक किसान आ जल ढोइत स्त्री, ओडिशाक दलित कवि, गुजराती आधुनिकतावादी दृश्य, भोजपुरी लोक-नैतिक पुकार, कश्मीरी अस्तित्व-संशय, हिन्दी आधुनिक कविता आ हैदराबादक मुस्लिम परिवार - सभ एक मैथिली पाठ-क्षेत्रमे उपस्थित छथि। ई सहअस्तित्व तुलनात्मक भारतीय साहित्यक जीवित नमूना अछि।

संकलन भाषाक ‘छोट-पैघ’ पदक्रमकैं प्रश्नांकित करैत अछि। अंग्रेजी कतेक ठाम मध्यस्थ अछि, मुदा अंतिम संवाद मैथिली पाठकसँ होइत अछि। एक अर्थमे अनुवाद एकटा साहित्यिक संघवाद रचैत अछि: प्रत्येक मूल भाषा अपन सांस्कृतिक भिन्नता राखैत, मैथिलीमे समान पाठकीय नागरिकता पबैत अछि।

सम्पादकीय दृष्टिसँ अगिला संस्करणमे किछु सुधार शोधोपयोगिता बढ़ा सकैत अछि: प्रत्येक रचनाक मूल प्रकाशन-वर्ष/मूल संग्रहक नाम, मूल लिपिक शीर्षक, मध्य अंग्रेजी स्रोतक पूर्ण प्रकाशन-विवरण, अनुवादकक एकरूप नाम-लेखन, आ काव्य-पंक्तिक टंकण-सत्यापन। ई सुझाव वर्तमान पाठक साहित्यिक मूल्य

घटबैत नहि; उलटे संकलनक दस्तावेजी महत्त्व देखैत अकादमिक उपयोगिता बढ़ेबाक दिशा अछि।

१६. निष्कर्ष

सम्पूर्ण पाठक आधारपर 'विदेह सदेह २७' बहुभाषिक अनुवाद-संकलनसँ आगाँ बढ़ि भारतीय जीवनक अनेक संकट आ सौन्दर्यक तुलनात्मक दर्पण बनैत अछि। 'जुम्मा' मातृस्नेह आ आस्थाक संकटकेँ आतंकक पृष्ठभूमिमे मानवीय गहराइ दैत अछि। इप्सिता सारंगी स्वप्न आ विश्वासक जल-बिम्ब रचैत छथि। वासुदेव सुनानी दलित जीवनक सामाजिक प्रतीक्षा आ श्रम-अधीनताकेँ व्यंग्यक तीक्ष्ण आवाज दैत छथि। भरत माँझी अनुपस्थितिक बादो घुरबाक सामूहिक आशा लिखैत छथि। अन्नावरम देवेन्दर कृषक आत्महत्या आ जल-संकटकेँ संरचनात्मक सामाजिक हिंसाक रूपमे सामने आनैत छथि। शीला सुभद्रा देवी काँटद्वारा मानवीय अलगाव, एन. अरुणा विवाहद्वारा स्त्री-प्रवास, आ गुजराती कवि सभ आधुनिक दृश्य, प्रेम, हाथ-धरती, सांध्य आध्यात्मिकता, अस्तित्वगत कर आ गृह-स्मृतिक बहुविध रूप प्रस्तुत करैत छथि।

भिखारी ठाकुरक बिरहा वृद्धजनक प्रश्नकेँ लोकमंचक सामूहिक नैतिकता बनबैत अछि; रहमान राही 'छाह सभ'मे आस्था, अहं, अन्हार आ आत्म-संशयक आधुनिक दार्शनिक संसार रचैत छथि। रवि भूषण पाठकक भूमिका अनुवादक सिद्धान्तक व्यवस्थित प्रश्न उठबैत अछि, आ निरालाक सात कविता मैथिलीमे विरह, वृद्धावस्था, वसन्त, प्रेम-स्मृति आ राजनीतिक व्यंग्यक विभिन्न स्वर आनैत अछि।

संकलनक बहुतेक गैर-निकट भाषा रचना अंग्रेजी मध्य-पाठ द्वारा आयल अछि। एतऽ आलोचक लेल दू जिम्मेवारी अछि: एक दिस लक्ष्य-पाठक साहित्यिक उपलब्धि स्वीकारब, दोसर दिस मूल-निष्ठाक अप्रमाणित दावा सँ बचब। एहि सीमा भीतर देखला पर मैथिली रूपान्तरक प्रधान सफलता ई अछि जे विविध भारतीय अनुभव मैथिलीमे पठनीय, संवेदनशील आ तुलनात्मक संवादक रूप पबैत अछि। 'विदेह सदेह २७' मैथिली अनुवाद-साहित्यक ओहि परियोजनाक उदाहरण अछि जतऽ भाषा केवल सामग्री ग्रहण नहि करैत, बल्कि भारतीय बहुभाषिकताकेँ अपन आलोचनात्मक आ भावात्मक क्षेत्रमे पुनर्गठित करैत अछि।

१७. पूर्णता-परीक्षण

नीचाँ सभ सृजनात्मक रचना आ आलोचनात्मक इकाइ एहि समीक्षा मे स्वतंत्र रूपेँ समेटल गेल अछि:

शेख मोहम्मद शरीफ/वेमपल्ली शरीफ - जुम्मा

इप्सिता सारंगी - गप; हिलकोर

वासुदेव सुनानी - फूसि; अनुमति

भरत माँझी - हमर घुरलाक बाद

अन्नावरम देवेन्दर - अंतिम शब्द; पानि अछि, मात्र आँखिक नोर

शीला सुभद्रा देवी - पसीझक काँट

एन. अरुणा - ई सेहो अछि प्रवास

हेमांग आश्विनकुमार देसाइ - समीकरण

अजय सरवैया - अहाँक तामस हमर स्वागतपथ

राजेन्द्र पटेल - बिनु शीर्षकक

पीयूष ठक्कर - सांध्य बेला

पन्ना त्रिवेदी - आमद

बाबू सुथार - गृहमोह

भिखारी ठाकुर - वृद्धाश्रमक पक्षमे: बिरहा १; बिरहा २

रहमान राही - छाह सभ

रवि भूषण पाठक - निरालाः देह विदेह (१-४) अनुवाद-विमर्शात्मक भूमिका

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' - जूनि बान्ह नाव ऐ ठाम बन्धु; हमरा सँ किनारा केने जा रहल छथि; स्नेह निर्झर बहि गेलइ; हम अकेला; रंगि गेल धरा, भेल धन्य धरा; सखि वसन्त आयल; छाड़ल कारी कारी बादर / एला नइ वीर जवाहर लाल

१८. ग्रन्थसूची आ सत्यापित शोध-स्रोत

प्राथमिक स्रोत

ठाकुर, गजेन्द्र (सम्पादक). विदेह सदेह २७. विदेह, संस्करण २०२२. ISSN 2229-547X. समीक्षा लेल उपलब्ध PDF आ DOCX पाठ।

पाठक, रवि भूषण. 'निराला: देह विदेह (१-४)'. विदेह सदेह २७, पृ. ६०-७२.

अनुवाद-सिद्धान्त

Jakobson, Roman. 'On Linguistic Aspects of Translation' (1959). Reprinted in The Translation Studies Reader. विचार: अन्तरभाषिक अनुवाद आ काव्यक creative transposition.

Nida, Eugene A., and Charles R. Taber. The Theory and Practice of Translation. Brill. विचार: receptor language मे closest natural equivalent; अर्थ आ शैलीक समतुल्यता.

Assis Rosa, Alexandra; Hanna Pięta; Rita Bueno Maia (eds.). Indirect Translation: Theoretical, Methodological and Terminological Issues. Routledge, 2019. https://www.routledge.com/Indirect-Translation-Theoretical-Methodological-and-Terminological-Issues/AssisRosa-Pieta-BuenoMaia/p/book/9780367660284

Hadley, James Luke. Systematically Analysing Indirect Translations: Putting the Concatenation Effect Hypothesis to the Test. Routledge, 2023. https://www.routledge.com/Systematically-Analysing-Indirect-Translations-Putting-the-Concatenation-Effect-Hypothesis-to-the-Test/Hadley/p/book/9781032465203

लेखक-सत्यापन आ साहित्यिक परिप्रेक्ष्य

Sahitya Akademi. Yuva Puraskar - Telugu list: 2012, 'Jumma (Short Stories) - Vempalli Sharaff'. https://www.sahitya-akademi.gov.in/awards/yuva_samman_suchi.jsp

Odisha Virtual Academy. 'Basudev Sunani' - author profile. https://ova.gov.in/en/Author?aid=5efaCBxYwRc%3D

Raj Kumar. 'Representing Caste in Odia Literature'. The Oxford Handbook of Modern Indian Literatures, Oxford University Press, 2023. https://doi.org/10.1093/oxfordhb/9780197647912.013.2

Penguin Random House India. 'Hemang Ashwinkumar' - author/translator profile. https://www.penguin.co.in/book_author/hemang-ashwinkumar/

Anant National University. 'Piyush Thakkar' - faculty profile. https://www.anu.edu.in/faculty/piyush-thakkar/

Gujarati Sahitya Forum. 'Panna Trivedi' - poet/author profile. https://www.gujaratisahitya.org/people/panna-trivedi

Hindwi. 'Babu Suthar' - author profile. https://www.hindwi.org/authors/babu-suthar/profile

Bharatiya Jnanpith. Award list - Rahman Rahi, 2004, Kashmiri. https://jnanpith.net/

Foundation of SAARC Writers and Literature. Sweet and Sour Dreams / 'Shadows' by Rehman Rahi, translated from Kashmiri by S. L. Sadhu; उपलब्ध डिजिटल प्रति. https://www.yumpu.com/en/document/view/8993670/a-poem-foundation-of-saarc-writers-and-literature

Delhi University Library / Doctoral Bibliography. Bhikhari Thakur सम्बन्धी critical biography, bhakti आ social concerns in plays क शोध-सूचना. https://crl.du.ac.in/Doc.Bib/2018/English.pdf

INFLIBNET Shodhganga. Folk Drama and Social Discourse: A Study in the Plays of Bhikhari Thakur. http://hdl.handle.net/10603/580155

परिशिष्ट : समीक्षा-सूत्रक संक्षिप्त नकाशा

रचना/समूह	प्रधान आलोचनात्मक सूत्र
जुम्मा	आस्था - मातृस्नेह - आतंक - स्मृति - प्रवास
गप / हिलकोर	बाल-स्वप्न - जल - विश्वास - हानि - प्रत्यावर्तन
फूसि / अनुमति	दलित अनुभव - अवसरक प्रतीक्षा - श्रम - व्यंग्य - प्रतिरोध
हमर घुरलाक बाद	स्मृति - लौटब - पृथ्वी - आशा - सजग प्रतीक्षा
अंतिम शब्द	कृषक ऋण - सूखा - बाजार - आत्मसम्मान - आत्महत्या
पानि अछि, मात्र आँखिक नोर	जल-संकट - स्त्री देह - घरेलू श्रम - संसाधन असमानता
पसीझक काँट	सामाजिक अलगाव - संवेदन-क्षय - नगरीय काँट
ई सेहो अछि प्रवास	विवाह - स्त्री विस्थापन - घरमे पाहुन
गुजराती समूह	दृश्य आधुनिकता - प्रेमक असंगति - शरीर/धरती - गृहस्मृति
वृद्धाश्रमक पक्षमे	लोकनैतिकता - वृद्धजन - सामुदायिक सुधार
छाह सभ	आस्था-संशय - अहं - छाया - दिशाहीन आधुनिकता
निराला अनुवाद	विरह - वृद्धावस्था - वसन्त - प्रकृति - राजनीतिक व्यंग्य

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह सदेह २७ — सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा

अध्याय 16 · विदेह सदेह २९ — रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक गद्य-पद्यक सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा

सारांश पाठ-आधारित, तुलनात्मक आ शोध-सत्यापित अध्ययन आधार-पाठ: विदेह-सदेह २९ (संस्करण २०२२) विदेह ई-पत्रिकाक अंक १-

३५० सँ संकलित गद्य आ पद्य सम्पादकीय प्रकाशन-सन्दर्भ: विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका · ISSN 2229-547X संकलनक

समग्र साहित्यिक स्वरूप ‘विदेह सदेह २९’कैं मात्र दू लेखकक संकलित रचना कहब अपर्याप्त होयत। ई इक्कीसम शताब्दीक मैथिली सार्वजनिक

बौद्धिकताक एक दस्तावेज सेहो अछि। एहि ठाम आलोचना, कथा, लघुकथा, नाटक, यात्रावृत्त, लोक-अध्ययन, कला-इतिहास, परिचर्चा

पत्र, बाल-कविता, दीर्घ कविता आ व्यंग्य एकहि भाषिक संसारमे सहअस्तित्व रखैत अछि।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · नाटक · कथा · लघुकथा · कविता · बाल-साहित्य · इतिहास

पाठ-आधारित, तुलनात्मक आ शोध-सत्यापित अध्ययन

आधार-पाठ: विदेह-सदेह २९ (संस्करण २०२२)
विदेह ई-पत्रिकाक अंक १-३५० सँ संकलित गद्य आ पद्य

सम्पादकीय प्रकाशन-सन्दर्भ: विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका · ISSN 2229-547X

संकलनक समग्र साहित्यिक स्वरूप

‘विदेह सदेह २९’केँ मात्र दू लेखकक संकलित रचना कहब अपर्याप्त होयत। ई इक्कीसम शताब्दीक मैथिली सार्वजनिक बौद्धिकताक एक दस्तावेज सेहो अछि। एहि ठाम आलोचना, कथा, लघुकथा, नाटक, यात्रावृत्त, लोक-अध्ययन, कला-इतिहास, परिचर्चा, पत्र, बाल-कविता, दीर्घ कविता आ व्यंग्य एकहि भाषिक संसारमे सहअस्तित्व रखैत अछि। विधाक ई बहुलता संकलनक असमानता सेहो अछि आ शक्ति सेहो: पाठक एकर भीतर साहित्यिक सृजन आ सांस्कृतिक अभिलेखनक बीच लगातार आवागमन करैत अछि।

रवि भूषण पाठकक संसारक केन्द्रमे ‘भीतरसँ आलोचना’ अछि। ओ गाम, जाति, प्रशासन, साहित्यिक संस्था, आलोचक, परिवार, धर्म, भाषा—ककरो पवित्र क्षेत्र नहि मानैत छथि। हुनकर व्यंग्य बहुधा बोलचालक वाक्य, अतिशयोक्ति, सूची, स्थानीय उपनाम, सरकारी शब्दावली, शास्त्रीय उद्धरण आ अंग्रेजी-हिन्दी पदक मिश्रणसँ बनैत अछि। एहि मिश्रित रजिस्टरमे मैथिली आधुनिक जीवनक पूरा ध्वनि-संसार पकड़ैत अछि।

डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक संसारक केन्द्रमे ‘देखल-सुनल-जीअल संस्कृति’ अछि। लोकगीत, पाबनि, खाद्य, चित्रकला, जनजातीय समाज, स्त्रीक अनुष्ठान, मौखिक आख्यान, यात्रा आ निजी स्मृति हुनकर सामग्री अछि। लेखनमे विद्वत् अवधारणा आ आत्मकथात्मक प्रसंग एक-दोसरसँ अलग नहि, बल्कि सहभागी अवलोकनक रूपमे जुड़ल अछि। एहि कारण हुनकर लेख साहित्य आ मानवशास्त्रक सीमा-प्रदेशमे स्थित अछि।

रवि भूषण पाठक : गद्यक आलोचनात्मक संसार

संकलनक परिचय अनुसार रवि भूषण पाठक (१९७३-) समस्तीपुरक करियनसँ सम्बद्ध छथि आ शिक्षा दरभंगा, समस्तीपुर, पटना आ दिल्ली धरि पसरल अछि; बादमे अध्यापन-संलग्नता देखाओल गेल अछि। बाहरी साहित्यिक परिचय सेहो हुनका लोक-संवेदनाक कवि रूपेँ रेखांकित करैत अछि। एहि संकलनमे हुनकर गद्य स्पष्ट करैत अछि जे लोक-संवेदना हुनका लेल केवल ग्रामीण सौन्दर्य नहि, बल्कि सत्ता, विडम्बना, भाषा आ नैतिकता सभक एक आलोचनात्मक कसौटी अछि।

हुनकर आलोचनात्मक निबन्धक एक धारा साहित्यिक इतिहास आ काव्यशास्त्र दिस अछि—‘विद्यापति’, ‘निराला:देह विदेह’, ‘आचार्य भामहक चिंतन’, ‘दण्डी आ काव्यलक्षण’। दोसर धारा समकालीन मैथिली रचनाक प्रत्यक्ष समीक्षा—‘भाग रौ’, ‘झमेलिया बिआह’, ‘उत्थान-पतन’, ‘गामक जिनगीक समीक्षा’, ‘बूच बाबू’। तेसर धारा कथा-व्यंग्य—‘बोधिसत्व’, ‘ओक्कर तोहर हम्मर सपना’, ‘दोस यौ दोस’, ‘फसाद आ आनंद’, ‘दोस्तीक जिनगी…’। चौठ धारा रंगमंचीय आत्मालोचना—‘रिहर्सल’। एहि चारू धारामे लेखकक साझा औजार अछि भाषिक निर्भीकता।

रवि भूषण पाठकक २४ गद्य रचना : रचना-दर-रचना समीक्षा

1. घर १-३

तीन छोट घरेलू दृश्यक माध्यमेँ आधुनिक परिवारक आत्ममुग्धता, अस्त-व्यस्त दिनचर्या आ स्मृतिक टकराव पकड़ल गेल अछि। हास्यक भीतर घरेलू श्रम, उपभोग आ पारिवारिक संवादक बदलैत रूपक सूक्ष्म आलोचना अछि।

2. औझका डायरी

दिनांकित टिप्पणीक ई रूप साहित्यिक डायरी आ सामाजिक व्यंग्यक संगम अछि। साम्प्रदायिक पूर्वग्रह, आलोचकक दायित्व, क्षेत्रीय अस्मिता आ अवसरवादी व्यवहारपर तीक्ष्ण, संक्षिप्त टिप्पणी रचनाकेँ समकालीन बौद्धिक दस्तावेज बनबैत अछि।

3. विद्यापति

ई दीर्घ आलोचनात्मक निबन्ध हिन्दी साहित्य-इतिहासमे विद्यापतिक स्थान-निर्धारण आ मैथिली-हिन्दी सम्बन्धक प्रश्नकेँ चुनौती दैत अछि। लेखक पाठ-इतिहास, आलोचनात्मक परम्परा आ भाषिक अस्मिताकेँ एक संग राखि कऽ साहित्यिक इतिहास-लेखनक सत्ता-संरचनापर प्रश्न उठबैत छथि।

4. भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ

विभा रानीक ‘भाग रौ’ नाटकक विषय, रंगमंचीयता आ सामाजिक अर्थक विवेचन अछि। भीखमंगा बच्चाक संसारक माध्यमेँ राज्य, समाज आ ‘राष्ट्रक महानता’क दावापर व्यंग्य देखैत लेखक नाटकक नव विषय-वस्तु आ ट्रीटमेंटकेँ महत्त्व दैत छथि।

5. झमेलिया बिआह

जगदीश प्रसाद मण्डलक नाटकक समीक्षा बाल-विवाह, दहेज, प्रवास, ग्राम्य समाज आ भाग्यवादक विडम्बना पढ़ैत अछि। प्रहसनात्मक सतहक नीचाँ सामाजिक संकट देखबाक लेखकक दृष्टि एहि समीक्षाकेँ साधारण कथासारसँ अलग करैत अछि।

6. आदर्श क उत्थान आ यथार्थ क पतन: उत्थान -पतन

उपन्यास ‘उत्थान-पतन’क समीक्षा आदर्शवाद आ यथार्थवादी चरित्र-विकासक तनाव पर केन्द्रित अछि। लेखक प्रशंसा संग कथानकक फैलाव, चरित्रपर लेखकक अधिक नियन्त्रण आ संरचनात्मक असमानताक आलोचना सेहो स्पष्ट रूपेँ करैत छथि।

7. एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू

कालीकान्त झा ‘बूच’क काव्य आ उपेक्षित साहित्यिक जीवनक पुनर्मूल्यांकन अछि। रचना लोक-स्मृति, काव्य-पंक्ति, सामाजिक उपेक्षा आ कविक स्वतंत्र काव्य-दृष्टिक आधारपर एकटा वैकल्पिक साहित्यिक कैनन प्रस्तावित करैत अछि।

8. गामक जिनगीक समीक्षा

जगदीश प्रसाद मण्डलक ‘गामक जिनगी’केँ ग्राम्य अर्थव्यवस्था, जजमानी, प्रवास, पर्यावरण आ निम्न-मध्यवर्गीय जीवनक दस्तावेजक रूपमे पढ़ल गेल अछि। समीक्षा ग्रामीण जीवनक रोमानीकरण नै करैत, परिवर्तनक भौतिक-सामाजिक आधारपर बल दैत अछि।

9. निराला:देह विदेह (१-४)

चारि भागमे निरालाक कविता, व्यक्तित्व आ हिन्दी आधुनिकताक चर्चा करैत मैथिली अनुवाद-संवेदना विकसित कएल गेल अछि। रचना अनुवादकेँ मात्र भाषान्तरण नहि, बल्कि आधुनिक काव्य-अनुभवकेँ मैथिली पाठकीय जगतमे पुनर्स्थापित करबाक प्रक्रिया मानैत अछि।

10. आचार्य भामहक चिंतन

लघु शास्त्रीय टिप्पणीमे भामहक शब्द-अर्थ समन्वय आ अलंकारवादी दृष्टिक विवेचन अछि। संक्षिप्तताक बादो ई मैथिली आलोचनात्मक गद्यकेँ संस्कृत काव्यशास्त्रक मूल प्रश्नसँ जोड़ैत अछि।

11. दण्डी आ काव्यलक्षण

दण्डीक काव्यलक्षण, इष्टार्थ, पदावली आ रस-अलंकार सम्बन्धक संक्षिप्त विवेचना अछि। रचना शास्त्रीय अवधारणाकेँ मैथिली आलोचनाक सहज भाषामे उतारबाक सफल उदाहरण अछि।

12. लघुकथा-बोधिसत्व

रेल-यात्रा, सामाजिक पदानुक्रम आ गामक टकरावक बीच निर्मित ई कथा व्यंग्य आ करुणाक संयुक्त प्रयोग करैत अछि। अन्तिम बोधिसत्त्व-रूपक नीच मानल गेल समुदायमे नैतिक प्रतिरोध आ मनुष्यताक सम्भावना उजागर करैत अछि।

13. तीनटा बीहनि कथा

तीन सूक्ष्म कथामे बालिका, रोग, दैनन्दिन अभाव आ 'एकात वला रस्ता' सन प्रसंग अछि। अत्यल्प आकारमे सामाजिक असमानता, मृत्यु-बोध आ बौद्धिक आत्म-विडम्बनाक असर पैदा करब एहि समूहक उपलब्धि अछि।

14. ओक्कर तोहर हम्मर सपना (दीर्घकथा)

डायरी-संरचना, गुमशुदगीक सूचना, निजी स्मृति आ समाज-समीक्षाकेँ जोड़ैत ई दीर्घकथा आत्मकथात्मकता आ काल्पनिकताक सीमाकेँ जानि-बूझि धुंधला करैत अछि। गामक आदर्शीकृत छविक विरुद्ध लेखक अनुभवक विषमता आ आधुनिक जीवनक अस्थिरता सामने आनैत छथि।

15. ओइ साल

आलूक भरमार, भीषण गरमी, बाढ़ि आ गामक सामाजिक घटना—सभ एक वर्षक असंगत किन्तु जीवन्त स्मृति-चित्र बनैत अछि। प्रकृति आ समाजक 'कमाल' एके व्यंग्यात्मक लयमे आबि ग्राम्य जीवनक अनिश्चितता रेखांकित करैत अछि।

16. घर

ई स्वतंत्र 'घर' रचना परिवारक सामूहिक मनोदशा, सीमित आय, उपभोक्ता-वस्तु आ पारस्परिक उपदेशक हास्यपूर्ण चित्र अछि। 'घर'केँ भावुक आश्रय नहि, सामाजिक व्यवहारक प्रयोगशाला बनाओल गेल अछि।

17. बाबूक चट्टी

पुरनका चट्टी स्मृतिक वस्तु बनि पिता, अनुशासन, पीढ़ी आ घरेलू इतिहासक द्वार खोलैत अछि। मामूली वस्तुकेँ स्मृति-चिह्न बनायब लेखकक कथा-तकनीकक महत्त्वपूर्ण गुण अछि।

18. दोस आ दोसक चालि प्रकृति बेमेय

लम्बा व्यंग्य सत्ता-सम्बन्ध, जातीय गुट, प्रशासनिक संस्कृति आ अवसरवादी दोस्तीक चालि पर केन्द्रित अछि। लोकभाषाक अतिशयोक्ति आ लगातार उपाख्यान संस्थागत भ्रष्टाचारक हास्यास्पद किन्तु भयावह रूप खोलैत अछि।

19. लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस

घूसपर 'सिद्धान्त' गढ़निहार पात्रक माध्यमेँ बौद्धिक शब्दाडम्बर, प्रशासनिक भ्रष्टाचार आ नैतिक तर्कक विडम्बना सामने अबैत अछि। कथा अकादमिक उद्धरणक भाषाकेँ व्यंग्यक औजार बना दैत अछि।

20. फलनमा.. चिलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य)

अत्यल्प आकारक ई व्यंग्य साहित्यिक-सामाजिक गुटबन्दी, प्रशंसा-आलोचनाक रणनीति आ 'टांग खींचबाक' संस्कृति पर तेज टिप्पणी अछि। आदेशात्मक शैली एकरा व्यंग्यात्मक 'हस्तपुस्तिका'क रूप दैत अछि।

21. फसाद आ आनंद (लघु कथा)

गाममे झगड़ाकेँ मनोरंजन आ सामाजिक ऊर्जाक स्रोत बनि गेल देखबैत ई लघुकथा हिंसा, जातीय विभाजन आ दर्शक-मानसिकताक कटु व्यंग्य अछि। हास्य धीरे-धीरे शारीरिक हिंसाक भयावहता दिस घुमि जाइत अछि।

22. दोस्तीक जिनगी मे झड़बैर काल (व्यंग्य)

महुआ/झड़बैर ऋतुक रूपकसँ दोस्तीक अस्थायित्व, लाभपरक सम्बन्ध आ गुटबन्दीक मनोविज्ञान प्रस्तुत अछि। व्यंग्यक अतिरंजना सम्बन्धक वस्तुकरणकेँ उजागर करैत अछि।

23. नाटक 'रिहर्सल'

'रिहर्सल' मिथिलाक सांस्कृतिक संकट, जाति, धर्म, राजनीति आ साहित्यक परस्पर जकड़न पर केन्द्रित नाटक अछि। मंचन, कलाकार, जनचेतना आ गामक संघर्षकेँ नाटकक भीतर नाटकक ढंगसँ रखि लेखक रंगमंचीय आत्म-आलोचना रचैत छथि।

24. टिल्लू जी (शिव कुमार झा)

शिव कुमार झा 'टिल्लू'केँ संबोधित ई लेख शुभकामना सँ आगे बढ़ि रचनात्मक उत्तराधिकार, मौलिकता आ मैथिली आलोचनाक भविष्यपर वक्तव्य बनि जाइत अछि। व्यक्ति-आलेखमे आलोचनात्मक अपेक्षा आ साहित्यिक इतिहास-बोध एक संग अछि।

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र : गद्य, लोकज्ञान आ मानवशास्त्रीय दृष्टि

संकलनक परिचय डॉ. कैलाश कुमार मिश्र (८ फरवरी १९६७-)केँ मानवशास्त्र, फोकलोर, कला-इतिहास, यात्रावृत्त आ साहित्यमे विपुल लेखन करनिहार शोधक रूपेँ प्रस्तुत करैत अछि। हुनकर पीएच.डी. विषय मिथिलाक लोकगीतक संरचना आ संज्ञानसँ सम्बद्ध बताओल गेल अछि। एहि आन्तरिक परिचयक संग बाहरी सार्वजनिक स्रोत सेहो हुनकर मिथिला चित्रकला, लोकगीत आ सांस्कृतिक धरोहरपर दीर्घ शोध-संलग्नताक पुष्टि करैत अछि।

हुनकर गद्यक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण गुण 'विधागत पारगमन' अछि। एके लेखक लघुकथा लिखैत छथि, फेर लोकगीतक अर्थ-प्रणालीक मानवशास्त्रीय विश्लेषण करैत छथि; उत्तर-पूर्व भारतक यात्रा-वृत्तान्त लिखैत छथि, फेर मिथिला चित्रकला आ मधुश्रावणीक अध्ययन; परित्यक्ता स्त्रीक प्रश्न उठबैत छथि, फेर सौराठ-सोमनाथ लोक-इतिहासपर प्रस्ताव। ई व्यापकता एकर पाठकीय आकर्षण अछि, मुदा समीक्षात्मक दृष्टिसँ स्रोत-पद्धतिक भेद स्पष्ट रखब आवश्यक अछि: कथा, संस्मरण, लोकविश्वास, प्रत्यक्ष क्षेत्र-अवलोकन आ इतिहास-प्रस्ताव एकहि प्रमाण-स्तरक चीज नहि।

डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक ४२ गद्य रचना : रचना-दर-रचना समीक्षा

1. लघुकथा- पण्डिताइन

जटा, अनुराधा आ राघबक स्मृति-फलक पर चलैत ई दीर्घ लघुकथा प्रेम, दाम्पत्य, भक्तिभाव, रोग आ मृत्यु-बोधकेँ जोड़ैत अछि। 'पण्डिताइन'क जीवनक माध्यमेँ निजी शोक सामुदायिक स्मृति आ लोक-संगीतक ध्वनिमे रूपान्तरित होइत अछि।

2. बुरिराज (लघुकथा)

विश्वविद्यालय, शोध, पदलोलुपता आ शैक्षणिक तंत्रक दीर्घ कथा-व्यंग्य अछि। निर्भयक चरित्रक माध्यमेँ योग्यता, संबंध, संस्थागत अवसर आ अकादमिक प्रतिष्ठाक विडम्बना पर प्रहार कएल गेल अछि।

3. फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना

फकरा/लोकोक्ति संग मैथिलानीक जीवन-दृष्टिक मानवशास्त्रीय विवेचन लेखकक प्रमुख पद्धति स्पष्ट करैत अछि—लोकवचनकेँ सामाजिक ज्ञानक संरचना मानि ओकर प्रसंग, अर्थ आ स्त्री-अनुभवक संग पढ़ब। दस्तावेजी विस्तार एहि निबन्धक शक्ति अछि।

4. नॉर्थ कछार हिल्स: धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी-१)

उत्तर-पूर्व भारतक सांस्कृतिक भूगोल, यात्रा-अनुभव आ क्षेत्र-अवलोकनक मिश्रण अछि। प्राकृतिक सौन्दर्यक वर्णनसँ आगाँ बढ़ि लेखक जनजातीय समुदाय, सांस्कृतिक संस्थान आ शोध-यात्राक व्यावहारिक पक्ष दर्ज करैत छथि।

5. नॉर्थ कछार हिल्स-२ (यायावरी-२)

यायावरीक दोसर भाग नॉर्थ कछारक इतिहास, समुदाय आ विशेषतः स्त्री-नेतृत्व/स्मृति दिस गहिराइत अछि। आत्मकथात्मक यात्रा-वृत्तान्त आ मानवशास्त्रीय नोट एक-दोसरकेँ पूरक बनैत अछि।

6. लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार (यायावरी-३)

इदु-मिसमी संसारक वर्णनमे कठिन भूगोल, जनजातीय जीवन, शोधक प्रत्यक्ष अनुभव आ संवाद प्रमुख अछि। लेखक बाहरी पर्यटकक विस्मयकेँ क्षेत्रीय समाजक व्यवहार, असुविधा आ नैतिक जटिलतासँ संतुलित करैत छथि।

7. यायावरी: संगाईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर

कबुई नागा समुदायमे पूर्वज-स्मरण, घरक दृश्य-संस्कृति, प्रेम आ समुदाय-जीवनक अवलोकन अछि। 'संगाईप्राऊ'केँ वस्तु मात्र नहि, स्मृति आ सांस्कृतिक निरन्तरताक माध्यमक रूपमे पढ़ल गेल अछि।

8. यायावरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात

नन्दा-राजजातक यात्रामे हिमालय, तीर्थ, निषेध-नियम आ लोकविश्वासक संक्षिप्त सांस्कृतिक नोंद अछि। यात्रा-वर्णनमे श्रद्धा आ मानवशास्त्रीय जिज्ञासा एक संग चलैत अछि।

9. यायावरी- भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन

बृन्दावनक मिथकीय कल्पना आ वर्तमान स्थल-अनुभवक तुलना एहि यायावरीक केन्द्र अछि। भक्ति, पर्यटन, स्मृति आ बाजारक संगम लेखकक 'भावमय-भोगमय-योगमय' त्रिकोणकेँ सार्थक करैत अछि।

10. यायावरी- मलिक भाय केर फुटपाथी चिंतन

मलिक भाय संग फुटपाथी बातचीतक माध्यमेँ रंगमंच, नौटंकी, समाज, बिहार आ सार्वजनिक जीवनपर मुक्त चिंतन अछि। व्यक्ति-चित्र आ संवादात्मक निबन्धक मेल एहि रचनाकेँ आत्मीयता दैत अछि।

11. सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत-बिगड़ैत- विवेचना

'बनैत-बिगड़ैत'क विवेचन निम्न-मध्यवर्गीय जीवन, गाम, कोसी, परम्परा आ विद्रोहक आधारपर कथाकारक संसार पढ़ैत अछि। समीक्षक कथाक सामाजिक अनुभव आ आत्मकथात्मक निकटताकेँ प्रमुख शक्ति मानैत छथि।

12. रामलोचन ठाकुरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना

रामलोचन ठाकुरक लोककथाकेँ मैथिली डायस्पोरा, कोलकाताक सृजन-भूमि आ मौखिक परम्पराक संदर्भमे रखल गेल अछि। समीक्षा लोककथा-संकलनकेँ साहित्यिक सामग्री मात्र नहि, प्रवासी सांस्कृतिक स्मृतिक अभिलेख मानैत अछि।

13. रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस केर उदासीनता

रवीन्द्रनाथ ठाकुर नामक मैथिली सांस्कृतिक व्यक्तित्व/रचनाकारक उपेक्षाक प्रसंगसँ लेखक 'मानवीय धरोहर'क प्रति सामुदायिक उदासीनतापर प्रश्न उठबैत छथि। रचना स्मृति-संरक्षणकेँ सांस्कृतिक नैतिकताक प्रश्न बना दैत अछि।

14. इंद्रधनुषी अकास

जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता-संग्रहक आमुख-सदृश विवेचन अछि। समीक्षक विविध विषयवस्तुकेँ एक 'ताग'मे गँथल इंद्रधनुषी संरचना मानैत, प्रगतिशीलता, पर्यावरण आ स्थानीय दृष्टिक समन्वय देखैत छथि।

15. पोथी समीक्षा- गामक जिनगी- जगदीश प्रसाद मण्डल

'गामक जिनगी'क ई विस्तृत समीक्षा साधारण ग्रामीण पात्रक भीतर सामाजिक परिवर्तनक क्षमता देखैत अछि। सहभागी अवलोकन-जकाँ सूक्ष्म ग्राम्य विवरण, वैकल्पिक विकास आ पर्यावरणीय सामंजस्यक दृष्टि निबन्धक आधार अछि।

16. जीवन संघर्ष (पोथी समीक्षा)

'जीवन संघर्ष'पर लेख कथाक सामाजिकता, पठनीयता आ समाजशास्त्रीय सूक्ष्मताक प्रशंसा करैत अछि। साहित्यकारकेँ समाजक पारखी मानबाक आग्रह एहि समीक्षाक मूल्य-दृष्टि स्पष्ट करैत अछि।

17. मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्त्तमान आ भविष्य

मिथिला चित्रकलाक इतिहास, स्त्री-सृजनशीलता, माध्यम-परिवर्तन आ बाजारीकरणक प्रभावक विस्तृत विवेचन अछि। परम्परागत भित्ति/अरिपनसँ कागज-कैनवास धरि संक्रमणमे मौलिकता बचायब लेखकक मुख्य चिन्ता अछि।

18. मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय

मेवाड़-मालवाक सांझी लोककलाकेँ स्त्री-संचालित लोकपरम्परा, अनुष्ठान आ रचनात्मक सामूहिकताक संदर्भमे परिचित कराओल गेल अछि। तुलनात्मक दृष्टि मिथिलाक सामा-चकेबा आदि सँ सांस्कृतिक संवाद स्थापित करैत अछि।

19. लघुकथा- चन्दा

चन्दाक कथा किशोर स्मृति, जाति-वर्ग, लैंगिकता, परिवार आ ग्रामीण शक्ति-संरचनाकेँ दीर्घ कथात्मक विस्तार दैत अछि। व्यक्तिगत आकर्षणक स्मृति धीरे-धीरे हिंसा, मृत्यु आ सामाजिक प्रतिशोधक गहिर प्रश्नमे बदलैत अछि।

20. लघुकथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री

छोटानागपुरक प्रकृति, जनजातीय जीवन आ 'राजकुमारी'क प्रसंगक माध्यमेँ मनुष्य-पशु/प्रकृति सम्बन्ध, भय आ करुणाक कथा बनैत अछि। लेखकक स्मृति-वर्णन पर्यावरणीय संवेदना आ नैतिक आत्मपरीक्षणसँ भरल अछि।

21. लघुकथा- सखी कुन्ती

'सखी कुन्ती' किशोर राघबक स्मृति सँ स्त्री-जीवन, गरीबी, विवाह, श्रम आ बदलैत परिवारक कथा बनबैत अछि। बाल-दृष्टि आ बादक परिपक्व स्मृति बीचक दूरी रचनाकेँ करुण गहराइ दैत अछि।

22. मैथिली लोक गीत मे प्रोफेसर चण्डेश्वर झा केर सी. डी./डी. वी. केर प्रयोग

प्रोफेसर चण्डेश्वर झाक गायन-रिकॉर्डिंगक चर्चा लोकगीत, धुन, शब्द, भाव आ प्रस्तुति बीचक सम्बन्धपर केन्द्रित अछि। लेखक स्पष्ट करैत छथि जे हुनकर मूल्यांकन संगीत-व्याकरणक तकनीकी परीक्षण नहि, सांस्कृतिक-भावात्मक सुनब पर आधारित अछि।

23. परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे (परिचर्चा)

परित्यक्ता स्त्रीक सामाजिक अपमानकेँ पितृसत्ताक संरचनासँ जोड़ैत ई परिचर्चा व्यक्तिगत नैतिकतासँ आगे संस्थागत आलोचना करैत अछि। विशेष बल एहि बातपर अछि जे आधुनिकता आ शिक्षा अपने-आप स्त्री-विरोधी संरचना समाप्त नहि करैत।

24. गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा केर द्वंद्व?

मधुश्रावणी कथामे गौरीक परस्पर विरोधी छविक विश्लेषण 'संस्कृतिकरण', लैंगिक नैतिकता आ कथापरम्पराक द्वंद्वक प्रश्न खोलैत अछि। लेखक परम्पराकेँ श्रद्धापूर्वक पढ़ितो भीतरक असमानतापर प्रश्न करैत छथि।

25. लघुकथा- पुरुषक नहि विश्वासे

दीर्घ लघुकथा शिक्षा, परिवार, प्रेम, विवाह आ पुरुष-स्त्री सम्बन्धक कई दशक लम्बा वृत्त रचैत अछि। शीर्षकक 'पुरुषक नहि विश्वासे' कथनकेँ रचना सरल नारा नहि, बदलैत जीवनानुभवक विडम्बनात्मक कसौटी बनबैत अछि।

26. मैथिलानी केर उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई केर वेदना

सीताक वेदना आ मिथिलाक लोकगीतक माध्यमेँ रामक प्रति सम्मान आ उपरागक द्वैत पढ़ल गेल अछि। लोकगीत एहि निबन्धमे स्त्री-अनुभवक वैकल्पिक धर्मशास्त्र बनि समाजक न्याय-बोध व्यक्त करैत अछि।

27. लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी – मानवशास्त्रीय विवेचन

मधुश्रावणीकेँ लोक आ शास्त्र, प्रकृति, स्त्री-शिक्षा, कला आ व्यवहारक समन्वित मंचक रूपमे देखल गेल अछि। सहभागी अनुभव, कथा-स्मृति आ अनुष्ठानक विश्लेषण एहि लेखकेँ सांस्कृतिक मानवशास्त्रक महत्त्वपूर्ण नमूना बनबैत अछि।

28. मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र केर प्रभाव

जोग गीतमे प्रेम, कामुकता आ तंत्रक संकेत पढ़ैत लेखक मिथिलाक लोकविश्व-दृष्टिमे देह आ अध्यात्मक सहअस्तित्व देखबैत छथि। गीतक प्रतीकात्मक भाषा सामाजिक निषेधक भीतर अभिव्यक्तिक सुरक्षित क्षेत्र बनैत अछि।

29. तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति

तमाकूलकेँ 'संस्कृति'क नामपर सामान्यीकृत नशा मानि लेखक स्वास्थ्य, व्यवहार आ परम्पराक आलोचना करैत छथि। लोकगीत आ लोकव्यवहारक उदाहरण लेखकेँ उपदेशात्मक नै रहि सांस्कृतिक आत्मालोचना बनबैत अछि।

30. मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के?

‘मैथिलानी पर के लिखि सकैत अछि?’ प्रश्नसँ प्रतिनिधित्व, अनुभव आ आलोचनात्मक अधिकारक बहस उठैत अछि। निष्कर्ष साहित्यकारक सत्यनिष्ठा आ संवेदनशीलताकेँ जैविक पहचानसँ अधिक महत्त्व दैत बहसकेँ संतुलित करैत अछि।

31. महाराजा पंहिबा: मणिपुर केर ग़रीब नबाज़

मणिपुरक महाराजा पंहिबाक व्यक्तित्वकेँ शासन, युद्ध, धर्म-संस्कृति आ जनकल्याणक आयाममे प्रस्तुत कएल गेल अछि। ऐतिहासिक निबन्धक स्वर प्रशंसात्मक अछि, मुदा क्षेत्रीय इतिहासकेँ मैथिली पाठकक समक्ष आनब एकर प्रमुख उपलब्धि अछि।

32. दीर्घ कथा- परिस्थिति लेखिका

‘परिस्थिति लेखिका’ अत्यन्त दीर्घ कथा अछि जाहिमे शोध-जगत, विश्वविद्यालयी सम्बन्ध, सामाजिक प्रतिष्ठा, रूप-रंगक पूर्वग्रह, अवसरवाद आ साहित्यिक-सांस्कृतिक नेटवर्क एक विस्तृत कथाजाल बनबैत अछि। व्यंग्यात्मक वर्णन आ संवाद एकर प्रधान औजार अछि।

33. सुग्गा आ श्रृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे

सुग्गाकेँ प्रेम, संदेश, श्रृंगार आ ज्ञानक सांस्कृतिक प्रतीक मानि मैथिली लोकगीतक उदाहरणसँ विश्लेषण कएल गेल अछि। पक्षी-प्रतीकक क्षयकेँ लेखक ग्राम्य पर्यावरण आ मौखिक परम्पराक क्षयसँ जोड़ैत छथि।

34. मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक

कौआकेँ संदेशवाहक/सम्बाहक रूपमे लोकगीतक भीतर पढ़ैत ई निबन्ध विरह, प्रतीक्षा आ स्त्री-वाणीकेँ केन्द्रमे अनैत अछि। एक साधारण पक्षी लोकगीतमे भाव-संप्रेषणक जटिल प्रतीक बनि उठैत अछि।

35. फाटू हे धरती: सीता दाई केर वेदना

‘फाटू हे धरती’ माएक कथनसँ आरम्भ भऽ सीता-दु:ख, स्त्री-अनुभव आ मिथिलाक लोकोक्ति-स्मृति धरि पहुँचैत अछि। निजी बाल-स्मृति लोकधार्मिक प्रतीकक सामाजिक अर्थ खोलबाक माध्यम बनैत अछि।

36. मैथिली संस्कृति केर अवयव

मैथिली संस्कृतिक अवयवकेँ खानपान, वस्त्र, गीत-संगीत, वाद्य, भाषा आ धार्मिक परम्परा आदि खण्डमे व्यवस्थित कएल गेल अछि। सूचीपरकता एकर सीमा होइतो समग्र सांस्कृतिक रूपरेखा देब एकर उपयोगी उपलब्धि अछि।

37. मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद

राजा भरथरी आ गोपीचंदक लोकगाथाकेँ नानीक स्मृति, कथावाचन आ प्रदर्शनक माध्यमेँ जीवित परम्पराक रूपमे दर्ज कएल गेल अछि। मौखिक कथाकारक अभिनय, स्वर आ श्रोता-सम्बन्धपर ध्यान एहि लेखकेँ केवल कथासारसँ बहुत आगे लऽ जाइत अछि।

38. राजस्थान केर मंडोवरमे रावण आ मंदोदरीक विवाह: लोक इतिहास केर मूर्त आ अमूर्त प्रमाण

मंडोवरमे रावण-मंदोदरी विवाहक लोकमान्यताकेँ स्थल, कथा आ सांस्कृतिक स्मृतिक आधारपर जोड़बाक प्रयास अछि। साहित्यिक-सांस्कृतिक दृष्टिसँ रोचक ई आलेख पढ़ैत काल लोकविश्वास आ प्रमाणित इतिहासक स्तर अलग-अलग चिन्हित करब आवश्यक अछि।

39. छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे परिवर्तनक औचित्य

छागर बलिपर लेख परम्पराक अन्धानुकरणक विरुद्ध करुणा, अहिंसा आ सामाजिक सहमतिक तर्क रखैत अछि। लेखक अपना परम्परावादी मानितो परम्पराकेँ नैतिक परीक्षणसँ गुजरबाक आग्रह करैत छथि।

40. मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास

लोकगीतमे भोजनक विन्यास स्त्री-संचालित अमूर्त धरोहर, पाक-संस्कृति, विध-विहार आ पीढ़ीगत ज्ञान-संचरणकेँ एक संग पढ़ैत अछि। भोजन एहि लेखमे

स्वाद मात्र नहि, सामाजिक स्मृति आ सांस्कृतिक अर्थ-व्यवस्थाक भाषा अछि।

41. सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता-(लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे)

सौराठ आ सौराष्ट्रक सोमनाथ बीच समानताक लोक-इतिहासपरक प्रस्ताव स्थलनाम, लोककथा, धार्मिक स्मृति आ लेखकक क्षेत्र-अनुभवक आधारपर बनल अछि। ई रचना प्रश्नोन्मुख अछि; इतिहासक दावाकेँ पुष्ट करबाक लेल पुरातात्त्विक/अभिलेखीय स्रोतक अलग सत्यापन जरूरी रहैत अछि।

42. कुमार गगन ई-पत्र- डॉ कैलाश कुमार मिश्रक आलेख सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथ मे समानता

कुमार गगनक ई-पत्र पूर्ववर्ती आलेखक सूचीमे छूटल स्थानीय नामक ओर ध्यान दैत अछि। संकलनमे ई पत्र रहब महत्त्वपूर्ण अछि, कारण ई लेखकक लोक-इतिहास प्रस्तावकेँ एकतरफा निष्कर्ष नहि रहि सार्वजनिक संवाद, संशोधन आ सामुदायिक स्मृतिक प्रक्रियामे बदलैत अछि।

रवि भूषण पाठक : पद्यक बहुरंगी लोक-आधुनिकता

रवि भूषण पाठकक कविता-खण्ड आकारमे गद्यसँ छोट अछि, मुदा काव्य-प्रयोगक दृष्टिसँ अत्यन्त विविध। बाल-कवितामे विज्ञान आ वर्णमालाक खेल अछि; ग्राम-कवितामे खेती, बाढ़ि, नदी, कुम्हार, गाम, फसल आ पाबनि; व्यंग्य-कवितामे आलोचक, संस्था, जाति, गुट, विवाह-बाजार, भ्रष्टाचार आ साहित्यिक चोरी; आत्मपरक कवितामे उमेर, मित्रता, स्मृति आ डिजिटल जीवन; दीर्घ अनुक्रममे मृत्यु-संस्कार आ ग्रामसमाजक बहुस्तरीय दृश्य।

हुनकर मुक्तछन्दक मुख्य बल ‘बोलैत कविता’ अछि। पंक्ति प्रायः संवाद, कहावत, सूची, प्रश्न, हाँक, चिट्ठी वा व्यंग्यात्मक आदेश जकाँ चलैत अछि। संस्कृत काव्यशास्त्रक नाम, अंग्रेजी तकनीकी शब्द, सरकारी पद, देहाती बिम्ब—सभ बिना कृत्रिम भेदक एकहि कविता-भाषामे आबैत अछि। ई शैली मैथिलीकेँ आधुनिक जीवनक समस्त रजिस्टर ग्रहण करबाक क्षमता देखबैत अछि।

रवि भूषण पाठकक ४२ पद्य रचना/समूह : रचना-दर-रचना समीक्षा

1. बाल कविता- 'क'

वर्णमालाक खेलसँ कवि-अहंकारपर बाल-सुलभ व्यंग्य; शिक्षण आ हास्य एक संग।

2. बाल कविता- मानसून

मानसूनक वैज्ञानिक शब्दावलीकेँ ‘बुटम’क खेलमे बदलि मौसम-विज्ञानकेँ बाल-कविताक लय देल गेल अछि।

3. बाल कविता- सुन वौआ सुन

आदेशात्मक पुनरावृत्ति आ घरेलू/प्रकृतिक क्रियासँ बाल-भाषाक चंचलता पैदा होइत अछि।

4. बाल कविता- ब्लेक होल

ब्लैक होलक घनत्व आ आकर्षण सन विज्ञान-विषयकेँ तुक, प्रश्न आ हास्यक सहारे सरल बनाओल गेल अछि।

5. श्री लक्ष्मी चौधरी,करियनक सम्मान मे

लक्ष्मी चौधरीक उपलब्धिक सम्मानमे पीढ़ी, श्रम आ जीवन-मूल्यपर संक्षिप्त प्रशस्ति-कविता।

6. हजार-लाख मे

मिलावट, भ्रष्टाचार आ भाषिक-सांस्कृतिक ‘कालाबाजार’केँ एके व्यंग्यात्मक अर्थ-श्रृंखलामे रखल गेल अछि।

7. डहकन

‘डहकन’क काट, ताप आ दागक बिम्ब सामाजिक पीड़ाक रूपक बनैत अछि।

8. खट्टा चूक्क

ईर्ष्या आ परपीड़ा-सुखकेँ स्वादक ‘खट्टा चूक्क’ बिम्बसँ तीक्ष्ण व्यंग्य देल गेल अछि।

9. मीत्ता

मित्रतामे करुणा, संयम आ ‘दर्दक विज्ञापन’ नहि करबाक आग्रह; छोट आकारमे नैतिक आत्मीयता।

10. हरियर

रंगक राजनैतिक-सामाजिक अर्थ बदलैत गामक अनुभवसँ व्यंग्यात्मक रूपेँ खुलैत अछि।

11. बहुत किछु विदा भ' गेल रहै

गामक भाषा, पहनावा, व्यवहार आ आदर्शक क्षयपर स्मृति-आधारित शोकगीत।

12. व्यर्थ प्रलापी

साहित्यिक जगतक षड्यंत्र, आत्मप्रचार आ ‘मनीषी’ छविपर व्यंग्यात्मक शोक/प्रलाप।

13. झाबाद

जाति-उपनामक ‘वाद’ पर चारि पंक्तिक प्रहार; ‘मिथिला जिंदाबाद’क विडम्बनात्मक शर्त उजागर।

14. तीनटा कविता

तीन स्वतंत्र दृश्य वृद्धावस्था, सामाजिक निरीक्षण आ दैनन्दिन विडम्बनाक अलग-अलग रूप खोलैत अछि।

15. फसली पद्य १-७

मकइ, खेसारी, मरुआ, अल्हुआ आदि फसलकेँ काव्य-विषय बना कृषि, भूख आ ग्राम्य अर्थव्यवस्थाक महत्त्व स्थापित कएल गेल अछि।

16. एहि बेर छठि मे

छठिक सूर्यक पाछाँ आब टावर आ शहरीकरणक दृश्य—पाबनिक भूगोल बदलबाक मार्मिक-व्यंग्यात्मक बोध।

17. हमर मैथिली

मैथिलीकेँ बहैत नदीक रूपकसँ क्षेत्रीय सीमा पार करैत जीवित, गतिशील भाषा मानल गेल अछि।

18. होली

उमेर, अप्रकाशित लेखन, पुरस्कार-व्यवस्था आ साहित्यिक गुटक आत्म-व्यंग्यात्मक होली।

19. ई नामवरबा (हिंदी आलोचकक व्यथा)

आलोचक-प्राधिकार, उद्धरणक प्रदर्शन आ नामवर-केन्द्रित हिन्दी आलोचना पर पैरोडी।

20. मरणोपरांत-१-४

मृत्यु, संस्कार, भोज, परिवार, स्मृति आ सामाजिक प्रदर्शनक दीर्घ काव्य-श्रृंखला; करुणा आ व्यंग्यक असाधारण मिश्रण।

21. बर्फ भोर

जाड़, कुहेसा, कुम्हार आ सूर्यक लोकबिम्बसँ मौसमक स्पर्शनीय दृश्य रचल गेल अछि।

22. देश आ गेयर

देश, मशीनक 'गेयर' आ निजी पढ़ाइ-स्मृतिक संग परिवर्तनक गति पर चिंतन।

23. पाँच केबी

धीमा इंटरनेट आ तस्वीर खुलबाक क्रमसँ डिजिटल युगक प्रेम/दृष्टिक हास्यपूर्ण काव्य-चित्र।

24. दोस महिम

'दोस'क स्मृति, जाति, उपकार आ हिसाब-किताबक संस्कृतिपर कटाक्ष।

25. गीत गाबैत श्लोक पढ़ैत

श्लोक-उद्धरण आ ज्ञानक प्रदर्शनक आड़मे छल-प्रपंच करनिहार बहुरूपियापर व्यंग्य।

26. मनोज भाय क चिट्ठी

दूर रहनिहार मनोज भायकें पत्ररूप कविता—गाम, मित्रता, स्वाद, अध्ययन आ समयक दूरीक आत्मीय स्मृति।

27. बियाह आ मोंछ

बिआहकेँ संस्कारसँ अधिक प्रतिष्ठा, वाहन, परिवारक 'मोंछ' आ बाजारक संघर्ष बनि गेल देखबैत व्यंग्य।

28. प्लेटो आ हमर कनिया

प्लेटोक कवि-विरोधक संकेतसँ समकालीन घरेलू आलोचना जोड़ि कविता-न्यायक हास्यपूर्ण रूपक।

29. टिप्स फ्राम खट्टरकका

नकल, उद्धरण आ 'प्रेरणा'क नामपर साहित्यिक चोरीक व्यंग्यात्मक टिप्स।

30. बर्फ पानि भाफ

देह-बर्फ, मोन-पानि, स्वप्न-भाफ—तीन अवस्थाक बिम्बसँ किशोर मनोभावक कोमल रूपक।

31. बस तीने दिन

अल्पकालिक साहित्यिक/सांस्कृतिक आयोजनक तामझाम, भोजन आ घोषणापर तीखा व्यंग्य।

32. उत्थर लोक

माटिक भौतिक गुण आ कविक 'उत्थर' स्वभावकेँ जोड़ि आत्मचित्रात्मक रूपक रचल गेल अछि।

33. चमारक ऋण

ऐतिहासिक जातिगत अन्याय आ स्मृतिक 'रजिस्टर' रूपकसँ सामाजिक ऋणक प्रश्न उठाओल गेल अछि।

34. दीवाली क पहिले

कुम्हारक श्रमक क्रम—माटि, चाक, आगि, दीप—द्वारा दीवालीक पाछाँक श्रम-दृश्य सामने अबैत अछि।

35. धनतेरस राति

धनतेरसक बाजार, असफल आशा आ घरेलू धातु-वस्तुक खरीदक माध्यमेँ उपभोक्तावादक हास्यपूर्ण चित्र।

36. हम पुरहितिया

‘पुरहितिया’ वक्ताक आत्म-व्यंग्यसँ शुभ-अशुभ, जातिगत भूमिका आ आधुनिक जीविकाक तनाव सामने अबैत अछि।

37. चालीसक बात

चालीसक निकट पहुँचैत वक्ताक स्मृति, अधूरा प्रश्न, देह-परिवर्तन आ बीतल युवावस्थाक आत्मसंवाद।

38. बामे गाम दहिने गाम १-६

छह खण्डमे करियन गाम, नदी, खेती, आचार्य-परम्परा, अहंकार, इतिहास आ आधुनिक परिवर्तनक विस्तृत ग्राम-काव्य।

39. छौड़ा अजगुत कंप्यूटर छै

गुट बदलनिहार ‘कम्प्यूटर’ रूपकसँ अवसरवादी राजनीतिक/साहित्यिक चपलताक हास्यपूर्ण आलोचना।

40. महाकवि विद्यापति-१-२

दू खण्डमे विद्यापतिकेँ दरबार-पण्डिती सीमा सँ निकालि जनपद, श्रमजीवी समाज आ लोकस्मृतिक महाकवि रूपमे पुनर्पाठ।

41. हाइकू

अत्यल्प हाइकूमे ‘खचरहबा’ आ फतिंगाक खोज—लघु रूपमे लोकभाषिक दृश्य आ हास्य।

42. कि भेलए एकरा

बार-बारक ‘कि भेलए एकरा?’ ध्वनिसँ राजनीति, अपेक्षा आ विसंगतिक लोकनाटकीय पैरोडी रचल गेल अछि।

डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक पद्य : “गामक कचोट”

‘गामक कचोट’ सूची-धर्मी स्मृति-कविता अछि। बूढ़-बूढ़ीक पराती, पोखरि-नहरिमे हेलब, फूल लोढ़ब, माटिक महादेव, तुलसी चौरा, कबड्डी-झिटकी, आम बिछब, खेसारी साग, कंसार, मड़ुआक रोटी, पोठी माछ, दूध-दही—एहि क्रमसँ गामक स्पर्श, स्वाद, गंध आ ध्वनि पुनर्जीवित होइत अछि। कविता अतीतक निर्विवाद महिमामण्डन नहि, बल्कि ‘कचोट’—दूर भऽ रहल जीवन-पद्धतिक देहगत स्मृति—रूपेँ असर करैत अछि।

दुनू लेखकक तुलनात्मक मूल्यांकन

१. गाम : रोमानी स्वर्ग नहि, संघर्षशील सांस्कृतिक क्षेत्र

दुनू लेखक गामक प्रति गहीर लगाव रखैत छथि, मुदा गामकेँ स्थिर, निर्दोष लोक-स्वर्ग नहि बनबैत। रवि भूषण पाठकक गाममे जातिगत गुट, हिंसा, हँसी, भ्रष्टाचार, अतिथि-विहीन घर, बदलैत पाबनि, कृषि आ भाषिक संकट अछि। कैलाश कुमार मिश्रक गाममे पाबनि, गीत, स्त्री-ज्ञान, भोजन, लोककथा आ मौखिक इतिहास अछि, संगहि पितृसत्ता, तमाकूल, बलिप्रथा, परित्यक्ता स्त्री आ सामाजिक असमानता सेहो। एहि कारण संकलनक ग्राम्य-बोध आलोचनात्मक प्रेमक बोध अछि।

२. भाषा : लोकवाणी आ ज्ञान-विमर्शक सहअस्तित्व

रवि पाठक लोकबोली, व्यंग्यात्मक अंग्रेजी/हिन्दी पद, प्रशासनिक भाषा आ शास्त्रीय नामक टक्कर सँ ऊर्जा पैदा करैत छथि। कैलाश मिश्रक भाषा प्रायः व्याख्यात्मक, स्मृतिपरक आ क्षेत्र-नोंद जकाँ अछि; ओ ‘enculturation’ सन अवधारणा सेहो लोककथाक प्रसंगमे सहज करबाक कोशिश करैत छथि। दुनू लेखक मैथिली गद्यकेँ केवल घरेलू/भावुक अभिव्यक्तिसँ बाहर निकालि आलोचना, विज्ञान, मानवशास्त्र, कला-इतिहास आ सार्वजनिक बहसक भाषा बनबैत छथि।

३. स्त्री-अनुभव

कैलाश मिश्रक संकलनमे स्त्री-विमर्श प्रत्यक्ष केन्द्र अछि—परित्यक्ता, मधुश्रावणी, गौरी-कथा, सीता-वेदना, मैथिलानीक प्रतिनिधित्व, लोकगीत, मिथिला चित्रकला आ खाद्य-संस्कृति। हुनकर बल स्त्रीकेँ परम्पराक निष्क्रिय वाहक नहि, ज्ञान-संरक्षिका आ सांस्कृतिक सर्जक रूपेँ देखब अछि। रवि पाठकक रचनामे

स्त्री-विषय एतबा व्यवस्थित नारीवादी विमर्श रूपमे नहि, मुदा परिवार, विवाह, दहेज, घर, सामाजिक प्रतिष्ठा आ कविता-व्यंग्यक भीतर स्त्री-जीवनक विडम्बना उपस्थित अछि।

४. आलोचना आ आत्मालोचना

रवि पाठकक लेखनक विशिष्टता अछि जे आलोचक स्वयं आलोचनाक विषय बनैत अछि। ‘औझका डायरी’, ‘ई नामवरबा’, ‘टिप्स फ्राम खट्टरकका’, ‘प्लेटो आ हमर कनिया’, ‘होली’ आदि साहित्यिक संस्थाक शक्ति आ लेखकक आत्ममुग्धता पर हँसैत अछि। कैलाश मिश्रक लेखनमे आत्मालोचना शोधक स्थितिक स्वीकारसँ अबैत अछि—कहियो ओ अपन सीमित संगीत-तकनीकी ज्ञान स्पष्ट करैत छथि, कहियो परम्परावादी होइतो बलिप्रथाक विरोध करैत छथि।

५. दस्तावेजी मूल्य

संकलनक दीर्घकालीन महत्त्व केवल साहित्यिक सौन्दर्यमे नहि, दैनन्दिन सांस्कृतिक विवरणमे सेहो अछि। रवि पाठकक रचनामे प्रशासन, मोबाइल-इंटरनेट, टावर, कार्यालय, रेल, पाबनि, खेती आ भाषिक बहसक समय-चिह्न अछि। कैलाश मिश्रक लेखनमे उत्तर-पूर्व भारतक यात्रा, लोककलाकार, पाबनि, गीत, खाद्य, चित्रकला, नानीक कथावाचन, सामुदायिक स्मृति आ स्थानीय बहसक विस्तृत नोंद अछि। भविष्यक सांस्कृतिक इतिहासकार लेल ई सामग्री उपयोगी होयत, बशर्ते साहित्यिक साक्ष्य आ ऐतिहासिक अभिलेखक प्रमाण-स्तर अलग राखल जाय।

समीक्षात्मक प्रश्न आ सीमासभ

सम्पूर्णताक अर्थ केवल प्रशंसा नहि। रवि भूषण पाठकक तीक्ष्ण व्यंग्य अनेक ठाम प्रसंग-सापेक्ष अछि; स्थानीय व्यक्ति, गुट वा तत्कालीन साहित्यिक विवादसँ अपरिचित पाठकक लेल संकेत अस्पष्ट भऽ सकैत अछि। किछु दीर्घ व्यंग्यमे विस्तार आ पुनरावृत्ति कलात्मक कसावट घटा सकैत अछि। मुदा ई फैलाव स्वयं ओहि सामाजिक ‘घोंघाउज’क शैलीगत अनुकरण सेहो बनि जाइत अछि जाहिपर लेखक प्रहार करैत छथि।

डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक लेखनक शक्ति विपुल सामग्री अछि, मुदा कखनो-कखनो सामग्रीक बहुलता कथ्यक केन्द्रकेँ ढाँकि दैत अछि। यात्रा, संस्मरण, लोकविश्वास आ इतिहासक सीमासभ हर जगह समान स्पष्टतासँ चिह्नित नहि। विशेषतः सौराठ-सौराष्ट्र, मंडोवर आदि लोक-इतिहासपरक प्रस्ताव साहित्यिक-सांस्कृतिक रूपेँ महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठबैत अछि, मुदा इतिहासक प्रमाणित निष्कर्ष मानबाक पूर्व अभिलेख, पुरातत्त्व, भाषावैज्ञानिक/स्थलनामिक साक्ष्य आ स्वतंत्र शोध आवश्यक अछि। संकलनमे कुमार गगनक पत्र रहब एहि संवादात्मक अपूर्णताकेँ ईमानदारीसँ देखबैत अछि।

दुनू लेखकक भाषा मूल प्रकाशनक समय, टंकण आ वेब-प्रकाशनक चिह्न धेने अछि; वर्तनी, विराम, अंग्रेजी पदक लिप्यन्तरण आ संयुक्ताक्षरमे असमानता अछि। साहित्यिक सम्पादनक भावी संस्करणमे मूल भाषा-स्वर बचबैत टंकण-संशोधन, शीर्षक-साम्य, तिथि-स्रोत आ प्रथम प्रकाशन-अंकक स्पष्ट सूची जोड़ल जाए तँ शोधोपयोगिता बहुत बढ़त।

निष्कर्ष

‘विदेह सदेह २९’ मैथिली साहित्यक बहुविध आधुनिकताक महत्त्वपूर्ण संकलन अछि। रवि भूषण पाठक आधुनिक मैथिलीकेँ व्यंग्य, आलोचना, शास्त्रीय पुनर्पाठ, ग्राम्य यथार्थ, प्रशासनिक विडम्बना आ मुक्तछन्दक बोलचालमे विस्तार दैत छथि। डॉ. कैलाश कुमार मिश्र मैथिलीकेँ सांस्कृतिक मानवशास्त्र, लोककला, लोकगीत, यात्रावृत्त, स्त्री-अनुभव, मौखिक इतिहास आ सामाजिक कथाक विस्तृत शोध-भाषा बनबैत छथि। दुनू लेखकक साझा उपलब्धि ई जे मैथिली हुनका हाथमे ‘विषय’ नहि, संसारकेँ बुझबाक सक्रिय ज्ञान-माध्यम बनैत अछि।

संकलनक १०९ शीर्षक-स्तरीय रचना/समूहक संयुक्त पाठसँ स्पष्ट होइत अछि जे समकालीन मैथिली साहित्यक एक महत्त्वपूर्ण धारा ‘सीमा तोड़नाइ’ अछि—साहित्य आ समाजशास्त्र, कविता आ व्यंग्य, लोक आ शास्त्र, स्मृति आ इतिहास, गाम आ विश्व, मैथिली आ बहुभाषिक आधुनिकता बीचक सीमा। एहि अर्थमे ‘विदेह सदेह २९’ केवल संग्रह नहि, एक दीर्घ सांस्कृतिक बहसक अभिलेख अछि।

स्रोत आ सत्यापन-सूची

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका, ‘विदेह पोथी’ सूची: ‘विदेह:सदेह २९ (रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र- अंक १-३५० सँ)’. https://www.videha.co.in/pothi.htm

Hindwi. ‘रवि भूषण पाठक’ कवि-परिचय: जन्म १९७३, समस्तीपुर; लोक-संवेदनाक लेल उल्लेखनीय. https://www.hindwi.org/poets/ravi-bhushan-pathak/all

Indian Folklore Research Journal. Kailash Kumar Mishra, ‘Mithila Paintings: Women’s Creativity Under

Changing Perspectives’, Vol. 1, No. 3. https://indianfolklore.org/

Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA), Janapada Sampada अभिलेख: मिथिलाक लोकगीत आ मधुश्रावणी सम्बन्धी कार्यक्रम/व्याख्या, Kailash K. Mishra. https://ignca.gov.in/janapada-sampada/

मैथिली समालोचना (विदेह पेटारक ऑनलाइन पुनर्प्रकाशन), रवि भूषण पाठकक ‘क्लासिकी परम्पराक पृष्ठभूमि’ आ सम्बद्ध आलोचनात्मक लेख; डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक ‘जीवन संघर्ष’ समीक्षा. २०१२क ऑनलाइन अभिलेख।

परिशिष्ट : पूर्णता-अडिट

नीचाँक सूची अनुक्रमक सभ शीर्षककेँ लेखक आ खण्ड अनुसार पुनः दर्ज करैत अछि। एहि सूचीक उद्देश्य ई सुनिश्चित करब अछि जे समीक्षा-प्रक्रियामे कोनो शीर्षक-स्तरीय रचना वा लेखक छुटल नहि। समूह-शीर्षकक भीतरक क्रमांकित उपरचनासभ मुख्य समीक्षा-टिप्पणीमे समूहक अंग रूपेँ समाहित अछि।

क्रम	लेखक	खण्ड	रचना/रचना-समूह
1	रवि भूषण पाठक	गद्य	घर १-३
2	रवि भूषण पाठक	गद्य	औझका डायरी
3	रवि भूषण पाठक	गद्य	विद्यापति
4	रवि भूषण पाठक	गद्य	भाग रौ:सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ
5	रवि भूषण पाठक	गद्य	झमेलिया बिआह
6	रवि भूषण पाठक	गद्य	आदर्श क उत्थान आ यथार्थ क पतन: उत्थान -पतन
7	रवि भूषण पाठक	गद्य	एक टा अभिशप्त कवि : बूच बाबू
8	रवि भूषण पाठक	गद्य	गामक जिनगीक समीक्षा
9	रवि भूषण पाठक	गद्य	निराला:देह विदेह (१-४)
10	रवि भूषण पाठक	गद्य	आचार्य भामहक चिंतन
11	रवि भूषण पाठक	गद्य	दण्डी आ काव्यलक्षण
12	रवि भूषण पाठक	गद्य	लघुकथा-बोधिसत्व
13	रवि भूषण पाठक	गद्य	तीनटा बीहनि कथा

14	रवि भूषण पाठक	गद्य	ओक्कर तोहर हम्मर सपना (दीर्घकथा)
15	रवि भूषण पाठक	गद्य	ओइ साल
16	रवि भूषण पाठक	गद्य	घर
17	रवि भूषण पाठक	गद्य	बाबूक चट्टी
18	रवि भूषण पाठक	गद्य	दोस आ दोसक चालि प्रकृति बेमेय
19	रवि भूषण पाठक	गद्य	लघु कथा (व्यंग्य)- दोस यौ दोस
20	रवि भूषण पाठक	गद्य	फलनमा.. चिलनमा... ठेकनमा (व्यंग्य)
21	रवि भूषण पाठक	गद्य	फसाद आ आनंद (लघु कथा)
22	रवि भूषण पाठक	गद्य	दोस्तीक जिनगी मे झड़बैर काल (व्यंग्य)
23	रवि भूषण पाठक	गद्य	नाटक 'रिहर्सल'
24	रवि भूषण पाठक	गद्य	टिल्लू जी (शिव कुमार झा)
25	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	लघुकथा- पण्डिताइन
26	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	बुरिराज (लघुकथा)
27	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना
28	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	नॉर्थ कछार हिल्स: धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी-१)
29	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	नॉर्थ कछार हिल्स-२ (यायावरी-२)
30	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार (यायावरी-३)
31	डॉ. कैलाश	गद्य	यायावरी: संगाईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर

	कुमार मिश्र		
32	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	यायावरी:उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात
33	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	यायावरी- भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन
34	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	यायावरी- मलिक भाय केर फुटपाथी चिंतन
35	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	सुभाषचन्द्र यादवजीक कथा संग्रह -बनैत-बिगड़ैत-विवेचना
36	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	रामलोचन ठाकुरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना
37	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस केर उदासीनता
38	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	इंद्रधनुषी अकास
39	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	पोथी समीक्षा- गामक जिनगी- जगदीश प्रसाद मण्डल
40	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	जीवन संघर्ष (पोथी समीक्षा)
41	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	मिथिला चित्रकला (पेटिंग): भूत, वर्त्तमान आ भविष्य
42	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला : एक परिचय
43	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	लघुकथा- चन्दा
44	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	लघुकथा: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री
45	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	लघुकथा- सखी कुन्ती
46	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	मैथिली लोक गीत मे प्रोफेसर चण्डेश्वर झा केर सी. डी./डी. वी. केर प्रयोग
47	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे (परिचर्चा)
48	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा केर द्वंद्व?

49	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	लघुकथा- पुरुषक नहि विश्वासे
50	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	मैथिलानी केर उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई केर वेदना
51	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी – मानवशास्त्रीय विवेचन
52	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र केर प्रभाव
53	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति
54	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के?
55	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	महाराजा पंहिबा: मणिपुर केर ग़रीब नबाज़
56	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	दीर्घ कथा- परिस्थिति लेखिका
57	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	सुग्गा आ श्रृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे
58	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक
59	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	फाटू हे धरती: सीता दाई केर वेदना
60	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	मैथिली संस्कृति केर अवयव
61	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद
62	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	राजस्थान केर मंडोवरमे रावण आ मंदोदरीक विवाह: लोक इतिहास केर मूर्त आ अमूर्त प्रमाण
63	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन : परम्परामे परिवर्तनक औचित्य
64	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास
65	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	गद्य	सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता- (लोक इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे)
66	डॉ. कैलाश	गद्य	कुमार गगन ई-पत्र- डॉ कैलाश कुमार मिश्रक आलेख

	कुमार मिश्र		सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथ मे समानता
67	रवि भूषण पाठक	पद्य	बाल कविता- 'क'
68	रवि भूषण पाठक	पद्य	बाल कविता- मानसून
69	रवि भूषण पाठक	पद्य	बाल कविता- सुन वौआ सुन
70	रवि भूषण पाठक	पद्य	बाल कविता- ब्लेक होल
71	रवि भूषण पाठक	पद्य	श्री लक्ष्मी चौधरी,करियनक सम्मान मे
72	रवि भूषण पाठक	पद्य	हजार-लाख मे
73	रवि भूषण पाठक	पद्य	डहकन
74	रवि भूषण पाठक	पद्य	खट्टा चूक्क
75	रवि भूषण पाठक	पद्य	मीत्ता
76	रवि भूषण पाठक	पद्य	हरियर
77	रवि भूषण पाठक	पद्य	बहुत किछु विदा भ' गेल रहै
78	रवि भूषण पाठक	पद्य	व्यर्थ प्रलापी
79	रवि भूषण पाठक	पद्य	झाबाद
80	रवि भूषण पाठक	पद्य	तीनटा कविता
81	रवि भूषण पाठक	पद्य	फसली पद्य १-७
82	रवि भूषण पाठक	पद्य	एहि बेर छठि मे
83	रवि भूषण पाठक	पद्य	हमर मैथिली

84	रवि पाठक	भूषण	पद्य	होली
85	रवि पाठक	भूषण	पद्य	ई नामवरबा (हिंदी आलोचकक व्यथा)
86	रवि पाठक	भूषण	पद्य	मरणोपरांत-१-४
87	रवि पाठक	भूषण	पद्य	बर्फ भोर
88	रवि पाठक	भूषण	पद्य	देश आ गेयर
89	रवि पाठक	भूषण	पद्य	पॅाच केबी
90	रवि पाठक	भूषण	पद्य	दोस महिम
91	रवि पाठक	भूषण	पद्य	गीत गाबैत श्लोक पढ़ैत
92	रवि पाठक	भूषण	पद्य	मनोज भाय क चिट्ठी
93	रवि पाठक	भूषण	पद्य	बियाह आ मोंछ
94	रवि पाठक	भूषण	पद्य	प्लेटो आ हमर कनिया
95	रवि पाठक	भूषण	पद्य	टिप्स फ्राम खट्टरकका
96	रवि पाठक	भूषण	पद्य	बर्फ पानि भाफ
97	रवि पाठक	भूषण	पद्य	बस तीने दिन
98	रवि पाठक	भूषण	पद्य	उत्थर लोक
99	रवि पाठक	भूषण	पद्य	चमारक ऋण
100	रवि पाठक	भूषण	पद्य	दीवाली क पहिले
101	रवि	भूषण	पद्य	धनतेरस राति

	पाठक		
102	रवि भूषण पाठक	पद्य	हम पुरहितिया
103	रवि भूषण पाठक	पद्य	चालीसक बात
104	रवि भूषण पाठक	पद्य	बामे गाम दहिने गाम १-६
105	रवि भूषण पाठक	पद्य	छौड़ा अजगुत कंप्यूटर छै
106	रवि भूषण पाठक	पद्य	महाकवि विद्यापति-१-२
107	रवि भूषण पाठक	पद्य	हाइकू
108	रवि भूषण पाठक	पद्य	कि भेलए एकरा
109	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	पद्य	गामक कचोट

पूर्णता-निष्कर्ष: १०९/१०९ शीर्षक-स्तरीय प्रविष्टि सूचीबद्ध आ समीक्षामे समाहित। लेखक-द्वय: २/२। गद्य: ६६ शीर्षक/समूह। पद्य: ४३ शीर्षक/समूह।

ग्रन्थसूची / पाठाधार

- विदेह सदेह २९ — रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक गद्य-पद्यक सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा

अध्याय 17 · विदेह सदेह ३२ — रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-१

सारांश केदार प्रसादक लेल माटिक बासन केवल जीविका नहि, साधना आ कारीगरी अछि; मुदा स्टील आ आन धातुक बर्तनक प्रसार परम्परागत पेशाक आर्थिक आधार कमजोर करैत अछि। हुनक पुत्र बिभू एहि परम्पराकेँ मूर्तिकलामे विस्तृत करैत जिला-राज्य स्तर धरि प्रतिष्ठा अर्जित करैत अछि। कथा एतऽ केवल “पुरान पेशा बनाम नव बाजार”क द्वन्द्व नहि बनबैत; ई देखबैत अछि जे परम्परा जँ सृजनशील रूपान्तरण स्वीकार करए तँ नव जीवन पाबि सकैत अछि।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · कथा · साहित्यिक समीक्षा · आलोचना · सांस्कृतिक अध्ययन

सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा

निकट-पाठ • साहित्य-इतिहास • कथाशिल्प • नाट्य-विमर्श • काव्य-विवेचन

आधार-पाठ: विदेह सदेह ३२, विदेह पेटार अंक १-३५० सँ संकलित

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर

समीक्षा-संस्करण २०२६

विषय-सूची

२. गद्य-खण्ड: कथा, नाटक, इतिहास आ आलोचना

३. पद्य-खण्ड: गीत, कविता, गजल आ दीर्घ काव्य

४. समेकित साहित्यिक निष्कर्ष

५. रचना-लेखक सम्पूर्णता-जाँच

६. शोध-स्रोत आ ग्रन्थ-सूची

२. गद्य-खण्ड: कथा, नाटक, इतिहास आ आलोचना

२.१ जगदानन्द झा 'मनु' — 'माटिक बासन'

'माटिक बासन' परम्परागत कुम्हार-कला, पीढ़ीगत हस्तान्तरण आ बदलैत बाजारक कथा अछि। केदार प्रसादक लेल माटिक बासन केवल जीविका नहि, साधना आ कारीगरी अछि; मुदा स्टील आ आन धातुक बर्तनक प्रसार परम्परागत पेशाक आर्थिक आधार कमजोर करैत अछि। हुनक पुत्र बिभू एहि परम्पराकेँ मूर्तिकलामे विस्तृत करैत जिला-राज्य स्तर धरि प्रतिष्ठा अर्जित करैत अछि। कथा एतऽ केवल "पुरान पेशा बनाम नव बाजार"क द्वन्द्व नहि बनबैत; ई देखबैत अछि जे परम्परा जँ सृजनशील रूपान्तरण स्वीकार करए तँ नव जीवन पाबि सकैत अछि।

कथाक केन्द्र पिता-पुत्रक कलात्मक सम्बन्ध अछि। पिता द्वारा हर मूर्तिमे कमी देखेबाक क्रिया आरम्भमे अनुशासन, पाछाँ पुत्रक लेल मानसिक दवाब बुझाइत अछि। चरम क्षणमे जखन बिभू विरोध करैत अछि, पिता पूर्णताक भ्रमक खतरा समझबैत छथि। एहि कारण कथा शिल्प-साधनाक नैतिक कथा बनि जाइत अछि: प्रतिभाक विकास आत्मसन्तोषसँ नहि, निरन्तर आलोचनात्मक जागरूकतासँ सम्भव अछि। कथाक भाषा सरल, ग्रामीण आ संवाद-आधारित अछि; उपदेश कथानकक भीतर पिता-पुत्रक भावनात्मक टकरावसँ निकलैत अछि, बाहरी प्रवचनक रूपमे नहि।

साहित्यिक दृष्टिसँ 'माटिक बासन'क महत्त्व ओकर कारीगर-केंद्रित दृष्टिमे अछि। माटि, हाथ, मूर्ति, बाजार आ मान-सम्मान—ई पाँच बिम्ब एकटा श्रम-संस्कृतिक सौन्दर्यशास्त्र बनबैत अछि। ग्रामीण अर्थव्यवस्थाक परिवर्तनक बीच शिल्पक जीवित रहबाक प्रश्न एहि कथाकेँ सामाजिक इतिहासक दस्तावेजी मूल्य सेहो दैत अछि।

२.२ भालचन्द्र झा — 'चूल्हि'

'चूल्हि' स्त्री-अनुभवक एक शक्तिशाली रूपक-कथा अछि। नायिका अपन जन्मसँ चूल्हिक संग जुड़ल स्मृतिकेँ कहैत-कहैत धीरे-धीरे घरेलू संरचना, स्त्री-श्रम, विवाह, गरीबी, नामकरण, सास-पुतोहु सम्बन्ध आ पितृसत्तात्मक अधिकारक विस्तृत आलोचना करैत अछि। कथा आरम्भे चूल्हि आ स्त्रीक "जरैत-जरैत जीबन"क साम्य स्थापित करैत अछि; ई रूपक पूरा कथामे केवल प्रतीक नहि रहैत, बल्कि घरेलू श्रमक भौतिक यथार्थ बनि उपस्थित रहैत अछि।

नायिकाक बोलचाल—'तऽ कह' जे लगलहुँ', 'धुर्र जो' सन आत्मीय वक्रोक्ति—कथाकेँ मौखिक कथनक ऊर्जा दैत अछि। पाठकक संग प्रत्यक्ष संवादक कारण सामाजिक टिप्पणी शुष्क निबन्ध नहि बनैत; हास्य, स्मृति, पीड़ा आ व्यंग्य एकहि आवाजमे घुलल रहैत अछि। स्त्रीक नाम, नैहरक गरीबी, विवाहक आर्थिक लेन-देन, घरेलू कामक अदृश्यता आ "माउगि"क सामाजिक स्थान पर कथाकारक प्रश्न तीक्ष्ण अछि।

अन्तमे नन्हकी द्वारा चूल्हि अपना अधिकारमे लेबाक दृश्य कथा केवळ पीड़ाक आख्यान नहि रहने दैत। ओहिमे प्रतिरोधक बीज अछि: जे बालिका आज परम्पराक बोझ पहचानि रहल अछि, से भविष्य मे जरैत तीली बुझा सकैत अछि। एहि प्रकार 'चूल्हि' स्त्री-विमर्शकेँ घरेलू वस्तु-संस्कृति, बोली आ पीढ़ीगत चेतनाक माध्यमसँ मूर्त रूप दैत अछि।

२.३ गंगेश गुंजनक गद्य-चतुष्टय

'भोज परक आँटी—सत्तरिक नव-खाढ़िक युवा नवतुरिआसँ'

ई लेख पीढ़ी-संवादक रूपमे लिखल सार्वजनिक बौद्धिक वक्तव्य अछि। लेखक अपन पीढ़ीकेँ इतिहासक "भोज परक आँटी" बनल अनुभवसँ जोड़ैत नवतुरिआकेँ राजनीति, भाषा-प्रेम, क्षेत्रीयता आ लोकतांत्रिक विवेकपर सजग रहबाक आग्रह करैत छथि। मातृभाषा-प्रेमकेँ आन भाषाक अपमानसँ अलग करबाक स्पष्ट आग्रह एहि लेखक उदार भाषिक दृष्टिकेँ रेखांकित करैत अछि।

शिल्पतः ई निबन्ध पत्र-संवाद आ आत्मस्वीकृतिक मिश्रित रूप अछि। व्यक्तिगत निराशा आ राजनीतिक अनुभव सामाजिक सलाहमे रूपान्तरित होइत अछि। लेखक नव पीढ़ीकेँ नारा नहि, विवेकपूर्ण राजनीतिक पहचानक आग्रह दैत छथि; एहि कारण ई लेख भाषायी अस्मिता आ लोकतांत्रिक बहुलताक बीच संतुलनक दस्तावेज बनैत अछि।

'मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप'

ई लेख मैथिली क्षेत्रमे उदारीकरणोत्तर बाजार, संस्थागत वर्चस्व, क्षेत्रीय संकीर्णता आ सांस्कृतिक पूँजीक निजीकरणक खतरा चिन्हित करैत अछि। लेखक "समग्र मिथिला, मैथिल आ मैथिली"क अवधारणा सामने रखैत छथि आ दरभंगा-मधुबनी-सहरसा अथवा जातीय-समूहगत सीमाक भीतर मैथिलीकेँ समेटबाक विरोध करैत छथि।

लेखकक आलोचनात्मक स्वर चेतावनीपरक अछि, मुदा मूल आग्रह बहिष्कारक नहि—संवादक अछि। साहित्यकेँ कविता-कथा-नाटकक संकीर्ण परिभाषासँ बाहर सांस्कृतिक जीवन, लोक-गरिमा आ सामाजिक संघर्षक समग्र क्षेत्र मानल गेल अछि। एहि अर्थेँ ई निबन्ध सांस्कृतिक लोकतंत्रक पक्षधर अछि।

'किछु एहनो बात विषय'

ई निबन्ध लेखकक सार्वजनिक चिन्तनक एहन रूप अछि जतऽ प्रसंग एक-दोसरासँ जुड़ैत सामाजिक स्मृति, मूल्य, अवसरवाद आ सांस्कृतिक जिम्मेवारीक प्रश्न उठबैत अछि। शैलीक विशेषता मुक्त विचरण अछि: लेखक विषयक भीतरसँ आन प्रश्न निकालैत छथि, फेर मूल नैतिक बिन्दु—कृतज्ञ स्मृति, विवेक आ सामाजिक उत्तरदायित्व—दिस लौटैत छथि।

एहन गद्यक शक्ति ओकर संवादशीलता अछि। ई अकादमिक अनुच्छेदक अनुशासनक बदला जीवित बातचीतक लयमे चलैत अछि; फलतः विचार पाठकक संग टकराइत, उलझैत आ बहसक जगह बनबैत अछि।

'गोबरक मूल्य'

'गोबरक मूल्य' दैनिक दृश्य, ग्रामीण-शहरी अर्थव्यवस्था आ वस्तुक बदलैत सामाजिक अर्थपर केन्द्रित व्यंग्यात्मक-चिन्तनपरक गद्य अछि। कथाकार दृश्यकेँ केवल हास्य बनाकऽ नहि छोड़ैत; "मूल्य" शब्द आर्थिक, सांस्कृतिक आ प्रतीकात्मक तीनू अर्थ ग्रहण करैत अछि।

ई रचना देखबैत अछि जे आधुनिकता वस्तुकेँ अनुपयोगी घोषित करैत-करैत कतबा बेर ओकर आन उपयोग, आन बाजार अथवा आन मूल्य खोजि लैत अछि। गद्यक आत्मपरिहास आ अचानक उठैत प्रश्न पाठककेँ साधारण दृश्यक भीतर सामाजिक अर्थ देखबाक लेल बाध्य करैत अछि।

२.४ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' — 'नो एंट्री : मा प्रविश'

चारि-अंकीय 'नो एंट्री : मा प्रविश'क मंचीय संरचना एकटा पैघ दरबज्जा आ अदृश्य देवारक बिम्बपर टिकल अछि। पात्र-सूची स्वयं नाटकक व्यापक सामाजिक व्यंग्यक संकेत दैत अछि—चोर, भद्र व्यक्ति, प्रेमी-प्रेमिका, बीमा एजेंट, भिख-मंगनी, नेता, वामपंथी युवा, अभिनेता, यम, चित्रगुप्त, उच्च-वर्गीय महिला, अप्सरा आदि। एतऽ पारम्परिक एकल-कथानकक बदला समाजक अनेक चेहरा एकटा सीमाबद्ध मंचीय परिस्थिति मे आबि एक-दोसरासँ टकराइत अछि।

दरबज्जा—जे कखनो आशा, कखनो निषेध, कखनो हृदय, कखनो सत्ता आ कखनो मृत्यु-पारक सीमा जकाँ व्यवहार करैत अछि—नाटकक केन्द्रीय प्रतीक अछि। "नो एंट्री"क पट्टिका चरम क्षणमे सामूहिक विस्मय उत्पन्न करैत अछि। नंदी-भृंगी, यम-चित्रगुप्त जकाँ पुराण-परिचित पात्र आधुनिक बीमा, राजनीति,

प्रेम, बाजार आ सामाजिक ढोंगक संग एकहि मंचपर उपस्थित भऽ मिथकीय आ समकालीन समयक विडम्बनात्मक संधि बनबैत छथि।

कल्लोल-रचना, कोरस, गीत, त्वरित पात्र-प्रवेश आ मंचीय संकेत नाटककेँ पठनमात्रक रचना नहि रहऽ दैत। ई दृश्य-श्रव्य संरचना प्रयोगधर्मी रंगलेखनक उदाहरण अछि। हास्य सतहपर रहितहुँ प्रश्न गम्भीर अछि: मनुष्य जिन सीमा, निषेध, विचारधारा आ पहचानक भीतर जीबैत अछि, ओ सीमा आखिर बनबैत के? नाटक निश्चित उत्तर नहि दैत; सामूहिक अभिनयक माध्यमसँ प्रश्नक तीव्रता बढ़बैत अछि।

विदेहक पुरान अभिलेखमे एहि नाटककेँ नचिकेताक लगभग पच्चीस वर्षक नाट्य-मौनक बादक प्रयोगधर्मी रचना कहि प्रस्तुत कएल गेल छल। बाह्य सत्यापन एहि पाठक विधागत महत्त्वकेँ पुष्ट करैत अछि: ई मैथिली रंगलेखनमे बहुरूपी सामाजिक व्यंग्य, प्रतीकात्मक मंच आ कोरसक संग आधुनिक प्रयोगक उल्लेखनीय उदाहरण अछि।

२.५ राधाकृष्ण चौधरी — ‘मिथिलाक इतिहास’

‘मिथिलाक इतिहास’ एहि संकलनक सभसँ विशाल गद्य-रचना अछि। एकर साहित्यिक समीक्षा करैत समय एकरा कथा वा निबन्धक कसौटीपर नापब उचित नहि; ई इतिहास-लेखन, स्रोत-समीक्षा आ क्षेत्रीय स्मृति-निर्माणक ग्रन्थ अछि। आरम्भिक अध्याय वैदिक साक्ष्य, विदेह-जनक परम्परा आ मिथिलाक ऐतिहासिक सीमाक प्रश्नसँ शुरू होइत अछि। दोसर प्रमुख खण्ड “मिथिलाक इतिहासक अध्ययनक साधन”मे लेखक स्रोत-अभावक समस्या स्पष्ट करैत वेद, ब्राह्मण, उपनिषद्, बौद्ध-जैन साहित्य, अभिलेख, सिक्का, वंशावली, फारसी-मुस्लिम आख्यान, पुरातात्त्विक सामग्री आदि विविध स्रोतक चर्चा करैत छथि।

ग्रन्थक अध्यायक्रम जनकवंश, कर्णाट वंश, ओइनवार वंश, खण्डवला वंश, नेपाल-लिच्छवी सम्बन्ध, मुसलमानी अमल, अंग्रेजी शासन, अन्य राजवंश, प्रशासनिक इतिहास, सामाजिक-सांस्कृतिक संस्था, धर्म-साधना, कला-संस्कृति, भाषा-साहित्य आ वंशावली-सामग्री धरि विस्तृत अछि। एहि विस्तारक कारण ‘मिथिलाक इतिहास’ केवल राजकीय घटनाक क्रम नहि; ई सभ्यता-इतिहासक रूप ग्रहण करैत अछि।

लेखकक पद्धतिक प्रमुख गुण स्रोत-बोध अछि। ओ मिथिलाक इतिहासक अनिश्चितता स्वयं स्वीकार करैत छथि; ई स्वीकारोक्ति इतिहासकारक बौद्धिक ईमानदारीक संकेत अछि। साहित्यिक दृष्टिसँ ग्रन्थक भाषा तथ्यपरक रहितहुँ ठाम-ठाम क्षेत्रीय गौरव आ सांस्कृतिक क्षतिक चिंता सँ आवेशित भऽ जाइत अछि। एहि भावात्मक ऊर्जा कारण इतिहास निष्प्राण सूची नहि बनैत, मुदा समीक्षक लेल आवश्यक अछि जे गौरव-बोध आ प्रमाण-बोधक बीच भेद सदिखन स्पष्ट राखल जाय।

आधुनिक इतिहासलेखनक कसौटीसँ देखला पर किछु प्राचीन स्रोतक व्याख्या नव पुरातात्त्विक अथवा पाठालोचनात्मक शोधसँ फेर जाँच माँगि सकैत अछि; मुदा संकलनमे उपलब्ध पाठक ऐतिहासिक महत्त्व निर्विवाद अछि। ई मिथिलाकेँ स्वतन्त्र अध्ययन-क्षेत्रक रूपमे स्थापित करैत, स्रोत-संग्रहक आवश्यकता घोषित करैत आ स्थानीय इतिहासकेँ भारतीय इतिहासक व्यापक संवादमे प्रवेश करबैत अछि।

बाह्य शोध-सत्यापनमे राधाकृष्ण चौधरीक ‘मिथिलाक राजनीतिक इतिहास’, ‘मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहास’ तथा ‘Mithila in the Age of Vidyapati’ सन कृतिसभक उल्लेख भेटैत अछि। एहि पृष्ठभूमिसँ ‘मिथिलाक इतिहास’क पाठ एक दीर्घकालीन इतिहास-साधनाक अंग बुझाइत अछि, आकस्मिक संकलन नहि।

२.६ प्रेमशंकर सिंहक आलोचनात्मक-ऐतिहासिक लेखमाला

‘बीसम शताब्दी—मैथिलीक स्वर्ण युग’

ई लेख बीसम शताब्दीकेँ मैथिली साहित्यक पुनरुत्थान, गद्य-विस्तार, कथा-उपन्यास-नाटक-निबन्ध-आलोचना-इतिहासलेखन, पत्रिका, प्रकाशन, महिला लेखन आ संस्थागत सक्रियताक समेकित युग मानैत अछि। लेखक विधागत सूची मात्र नहि दैत; नवजागरण, आधुनिक शिक्षा, सामाजिक परिवर्तन आ साहित्यिक संस्था बीच कारण-सम्बन्ध स्थापित करैत छथि। “स्वर्ण युग”क संज्ञा एतऽ उत्सवी घोषणासँ अधिक एक साहित्य-इतिहासपरक प्रतिपादन अछि। लेखक शक्ति विशाल सामग्रीकेँ प्रवृत्तिगत खण्डमे व्यवस्थित करबामे अछि।

‘सामाजिक विवर्त्तक जीवन झा’

जीवन झाकेँ आधुनिक मैथिली नाट्य-गद्यक संक्रमणकारी व्यक्तित्व मानि ई अध्ययन सामाजिक, सांस्कृतिक आ आर्थिक प्रश्नक आलोकमे हुनक नाटकक पुनर्पाठ करैत अछि। विवाह, कुल-मर्यादा, स्त्री-स्थिति, सामाजिक रूढ़ि आ लोकाचार सम्बन्धी उद्धरण लेखकेँ प्रमाणाधारित बनबैत अछि। आलोचक जीवन झाक ऐतिहासिक महत्त्वकेँ केवल “प्रथमत्व” नहि, समस्या-चेतना आ नाट्य-प्रणालीक नवीन दृष्टिसँ जोड़ैत छथि।

‘मैथिली भाषाक साहित्य’

ई दीर्घ लेख भाषिक उद्भव, नामकरण, काल-विभाजन, आदिकाल-मध्यकाल-आधुनिक काल, गद्य-पद्यक विधागत विकास, आलोचना, नाटक, कथा, निबन्ध, अनुवाद, इतिहास-लेखन आ साहित्यिक संस्था सभक विस्तृत सर्वेक्षण अछि। एकर मूल्य विश्वकोशीयता मे अछि। आधुनिक शोधक दृष्टिसँ किछु भाषावैज्ञानिक

वंश-विवेचन अथवा काल-सीमा पर नव मत सम्भव अछि, मुदा लेख मैथिली साहित्यक स्व-इतिहास लिखबाक महत्त्वपूर्ण प्रयासक रूपमे पढ़ल जाएब चाही।

‘लोकनाट्य’

लोकनाट्यक अध्ययन गीत-संगीत-नृत्यक त्रिवेणी, लोकजीवनक मनोरंजन आ सांस्कृतिक स्मृतिसँ आरम्भ होइत दसौत, सामा-चकेवा, झिझिया, जट-जटिन, झुम्मर, रमखेलिया, डोमकछ, लोरिक, सलहेस, गोपीचन्द, विदापत, हरिलता, बिहुला आदि रूपक परिचय दैत अछि। ई सूची लोक-संस्कृतिक बहुरूपता देखबैत अछि। अध्ययनक सबल पक्ष लिखित साहित्यक बाहर प्रदर्शन, सामुदायिक सहभागिता आ लोकविश्वासकेँ साहित्यिक विमर्शमे आनब अछि।

‘पारंपरिक नाटक’

ई लेख नाटककेँ परम्परा आ आधुनिक रंगमंचक बीच सेतु मानैत अछि। पौराणिक, सामाजिक, प्रतीकात्मक, ऐतिहासिक आ अनूदित नाटकक श्रेणीकरणसँ लेखक नाट्य-साहित्यक विकास-रेखा बनबैत छथि। शिल्प, पात्र, संवाद, रंगयोग्यता आ सामाजिक प्रयोजनपर जोर नाटककेँ केवल पुस्तक नहि, प्रदर्शन-कला रूपमे पढ़ैत अछि। विस्तृत संदर्भ-सूची एकर शोध-मूल्य बढ़बैत अछि।

‘मायानन्दक रेडिया-रूपक शिल्प’

रेडियोकेँ दृश्य नाटकसँ श्रव्य-काव्य दिस संक्रमणक माध्यम मानि लेखक कथानक, पात्र, संवाद, भाषा, वातावरण, उद्देश्य आ रंग/श्रव्य-शिल्पक कसौटीपर मायानन्द मिश्रक रेडियो-रूपकक परीक्षण करैत छथि। माध्यम-विशेषक माँग—ध्वनि, आवाज, दृश्य-विहीन कल्पना—पर ध्यान एहि लेखकेँ महत्त्वपूर्ण बनबैत अछि। ई मैथिली नाट्य-अध्ययनमे मीडिया-रूपान्तरणक प्रारम्भिक प्रदर्शन-अध्ययन जकाँ पढ़ल जा सकैत अछि।

‘हुनकासँ भेट भेल छल’

ई अध्ययन संस्मरण, डायरी, यात्रा-स्मृति आ आत्मकथात्मक गद्यक सीमाकेँ एक-दोसरासँ जोड़ैत अछि। लेखक गद्य-शिल्पक तीव्रता, व्यक्तिचित्रण आ स्मृतिक साहित्यिक रूपपर बल दैत छथि। संस्मरणकेँ “घटना-सूची” नहि, चयनित स्मृति द्वारा व्यक्तित्व आ युगक पुनर्निर्माण मानब एहि लेखक मुख्य आलोचनात्मक उपलब्धि अछि।

‘अमरक एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ’

चन्द्रनाथ मिश्र ‘अमर’क एकांकी-प्रहसनक अध्ययन नाटकक सामाजिक प्रकृति सँ आरम्भ होइत कथानक, पात्र, संवाद, गीत, हास्य-व्यंग्य, यथार्थवाद आ अभिनय-योग्यताक आधारपर कृति-समूहक मूल्यांकन करैत अछि। आलोचकक निष्कर्ष स्पष्ट अछि—अमरक प्रहसन पठनीयता आ मंचनीयता दुनू राखैत, सामाजिक विसंगतिकेँ हास्य-विनोदक भीतर उजागर करैत अछि।

‘लोकगाथा ओ मणिपद्म’

ई लेख मौखिक परम्पराक क्षरणक चिन्ता सँ प्रेरित अछि। लोकगाथाकेँ सामूहिक स्मृति, मनोरंजन, शिक्षा आ इतिहासबोधक वाहक मानि मणिपद्मक संकलन, पुनर्लेखन आ उपन्यास-रूपान्तरणक योगदानक चर्चा कएल गेल अछि। लेख स्पष्ट करैत अछि जे लोकगाथा केवल “कच्चा माल” नहि; ओकर स्वतंत्र काव्य-संरचना आ सांस्कृतिक अधिकार अछि। संकलन-संपादनक तात्कालिक आवश्यकता पर जोर आजुओ प्रासंगिक अछि।

‘चेतना समिति ओ नाट्यमंच’

ई संस्थागत साहित्य-इतिहासक उल्लेखनीय उदाहरण अछि। मंचित नाटक, तिथि, नाटककार, निर्देशक, पुरस्कार आ रंगकर्मी-सूची द्वारा लेखक सिद्ध करैत छथि जे साहित्यक विकास केवल महान लेखकक इतिहास नहि; संस्था, मंच, दर्शक, प्रशिक्षण, प्रकाशन आ पुरस्कार संरचना सेहो साहित्यिक पारिस्थितिकी बनबैत अछि। चेतना समितिक भूमिका एहि लेखमे मैथिली रंगमंचक निरन्तरता आ नव प्रतिभा निर्माणक केन्द्र रूपेँ उभरैत अछि।

‘जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य–साधना’

ई जीवनी-आलोचना जयकान्त मिश्रक अंग्रेजी आ मैथिली कृति, सम्पादन, शब्दकोश, कीर्तनिया नाटक-अध्ययन, प्राथमिक शिक्षा, भाषा आन्दोलन, तिरहुता संरक्षण आ संस्थागत भूमिकाकेँ एकहि बौद्धिक जीवन-परियोजना रूपमे देखैत अछि। आलोचक हुनका विद्वान मात्र नहि, भाषा-संरक्षक, शोध-प्रेरक आ आन्दोलनकारी मानैत छथि। सामग्रीक विस्तार एहि लेखकेँ आधुनिक मैथिली बौद्धिक इतिहासक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज बनबैत अछि।

२.७ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र — ‘बनैत बिगड़ैत’क समीक्षा

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र सुभाष चन्द्र यादवक कथा-संग्रहकेँ मुख्यतः भाषा-विन्यास/शब्दावली आ कथा-वस्तुक दू आधारपर पढ़ैत छथि। हुनक समीक्षा परिवेश-निष्ठ कथ्य, परम्पराक उपयोगी तत्वप्रति सिनेह, पाखण्ड-विरोध, बेरोजगार शिक्षित युवाक हताशा, प्रेम, कोसी, गामक परिवर्तन, मनोवैज्ञानिक अन्तर्द्वन्द्व आदि विषयक पहचान करैत अछि। विशेष रूपेँ ‘बनैत-बिगड़ैत’मे प्रवासी संतानक माए-बापक मानसिक अवस्थाक उल्लेख समीक्षा केन्द्रीय भाव-बिन्दु बनबैत अछि।

एहि समीक्षाक महत्त्व एहि बातमे अछि जे ओ कृति-प्रशंसापर नहि रुकैत; भाषा आ कथ्य दुनू स्तरपर कसौटी प्रस्तावित करैत अछि। ई संग्रहक भीतरक विविध

कथा-वस्तुकेँ साझा सामाजिक भूगोल—मिथिलाक गाम, निम्न-मध्यवर्ग, बेरोजगारी, प्रवास, कोसी—सँ जोड़ि देखबैत अछि।

२.८ गजेन्द्र ठाकुर — 'बनैत बिगड़ैत'क समीक्षा

ई समीक्षा कथाकेँ "खिस्सा"सँ अलग आधुनिक थीम-केन्द्रित संक्षिप्त रूप मानैत सुभाष चन्द्र यादवक विशेषता चिन्हित करैत अछि। भाषा-विवेचनमे ध्वन्यात्मक लेखन, मानकीकरण, उच्चारण आ वर्ण-विकल्पक प्रश्न उठैत अछि; एहि कारण समीक्षा केवल कथ्य-समीक्षा नहि, आधुनिक मैथिली लेखनक भाषा-प्रयोगपर विमर्श सेहो अछि।

दोसरा भागमे समीक्षक आधुनिक कथा-विवेचनकेँ वैदिक आख्यान, जातक, लोकगाथा, सुधारवादी कथा, मनोविश्लेषण, अस्तित्ववाद, द्वन्द्वात्मकता, उत्तर-आधुनिकता आ संवाद-सिद्धान्त धरि विस्तार दैत छथि। ई दार्शनिक फैलाव कखनो कथा-संग्रहसँ बहुत बाहर चलि जाइत अछि, मुदा एकर उद्देश्य स्पष्ट अछि—मैथिली कथा केवळ स्थानीय खिस्सा नहि, विश्व-चिन्तन आ बदलैत ज्ञान-व्यवस्थासँ संवाद करए। एहि व्यापक परिप्रेक्ष्यमे सुभाषक कथा "अनुभवक पुनर्निर्माण" आ सामाजिक संवादक माध्यम रूपमे देखल गेल अछि।

२.९ महाप्रकाश — सुभाष चन्द्र यादव पर

महाप्रकाशक संक्षिप्त टिप्पणी कथा-संसारक लेखक-केंद्रित मूल्यांकनक भूमिका बनबैत अछि। ई कृति-समूहकेँ समकालीन मैथिली कथाक भीतर राखि लेखकक निरन्तरता, संवेदना आ परिवेश-बोध दिश ध्यान खिंचैत अछि। आकार छोट होइतहुँ संकलनमे एकर स्थान महत्त्वपूर्ण अछि, कारण ई विस्तृत समीक्षा आ मूल कथा-समूहक बीच एकटा आलोचनात्मक सेतु बनबैत अछि।

२.१० सुभाष चन्द्र यादव — 'बनैत बिगड़ैत आ आन कथा'

सुभाष चन्द्र यादवक कथा-समूहक साझा विशेषता घटना-संयम, परिवेश-निष्ठ भाषा आ मनोवैज्ञानिक सूक्ष्मता अछि। अनेक कथा अत्यल्प घटना लैत अछि, मुदा ओहि घटनाक भीतर भय, असुरक्षा, प्रेम, अविश्वास, बेरोजगारी, प्रवास, जाति, बाजार, बाढ़ि आ गाम-शहरक दूरी खोलैत अछि। कथाकार व्याख्या थोपबाक बदला पात्रक अनुभव, संवाद अथवा एकटा छोट दृश्यद्वारा पाठककेँ अर्थ बनाबऽ दैत छथि।

'अपन-अपन दुख'

परिवारक भीतर प्रत्येक व्यक्तिक अलग संसार आ अलग पीड़ाक कथा। पत्नी पीठक दर्द, निन्नक अभाव, उपेक्षा आ भूखसँ कुपित छथि; पति अपन शारीरिक असुविधा आ दिनचर्यामे अटकल। अन्तक बोध—सभक अपन सुख-दुख—कथा केवळ दाम्पत्य-झगड़ा नहि रहने दैत; सहानुभूतिक नैतिक पाठ बनबैत अछि।

'असुरक्षित'

राति स्टेशनसँ घर धरि बीस-पच्चीस मिनटक दूरी भयक विशाल भूगोल बनि जाइत अछि। सुनसान सड़क, अपराधक आशंका आ पाछाँ दौड़ैत अज्ञात व्यक्ति—कथा सुरक्षा-विहीन सार्वजनिक जीवनक मनोविज्ञान रचैत अछि। कथाकार बाहरी घटना कम, भीतरी आतंक बेसी लिखैत छथि।

'आतंक'

पुरान सहपाठी हरिवंशक प्रशासनिक सत्ता आ कार्यालयी भ्रष्टाचारक वातावरण कथाकारकेँ आतंकित करैत अछि। व्यक्तिगत परिचय सेहो व्यवस्था-सुधार नहि करैत; उलटे पैरवी आ घूसक जटिल सम्बन्ध काज रोकि सकैत अछि। कथा सत्ता-व्यवहारक सूक्ष्म भयक यथार्थचित्र अछि।

'ओ लड़की'

होस्टल-परिवेशमे एकटा छोट आग्रह, प्रतिक्रिया आ गलतफहमी मनोवैज्ञानिक कथा बनि जाइत अछि। नवीन लड़कीक व्यवहारक अर्थ खोजैत रहैत अछि; कथा निश्चित नीतिगत फैसला नहि दैत। ई अस्पष्टता आधुनिक सम्बन्धमे शक्ति, आत्मसम्मान आ संप्रेषणक कठिनाईकेँ विश्वसनीय बनबैत अछि।

'एकटा अंत'

ससुरक मृत्यु, शोक-रूढ़ि, केश कटेबाक संस्कार आ परिवारक व्यवहारक बीच कथा सामाजिक प्रतीक आ वास्तविक दुःखक अन्तरपर प्रश्न उठबैत अछि। बाह्य संस्कार शोकक सत्य मापि सकैत अछि कि नहि—ई मूल द्वन्द्व अछि।

'एकटा प्रेम कथा'

लैण्डलाइन फोनक युग, पड़ोसी युवक प्रेमी, प्रेमिका रितु आ संदेशवाहक बनल कथाकार—ई सभ मिलि संचार-तकनीक बदलैत प्रेमक हास्य-कोमल कथा बनबैत अछि। मोबाइल आएला पर मध्यस्थता समाप्त होइत अछि, फेर नम्बर बदलला पर पुरान फोन-संबंध लौटैत अछि। तकनीक एतऽ कथानकक सक्रिय पात्र जकाँ अछि।

‘एकाकी’

अस्पतालक असुविधा, रोग, अकेलापन आ मृत्यु-समीपता कथा केन्द्रीय संसार अछि। कुसेसरक घर लौटबाक इच्छा आ अस्पतालमे देखल मानवीय पीड़ा साधारण यथार्थकेँ अस्तित्वपरक एकान्तमे बदलैत अछि। भावुकता नियंत्रित अछि; वातावरण स्वयं करुणा उत्पन्न करैत अछि।

‘कनियाँ-पुतरा’

सड़कक एक निर्धन बालिका कथाकारक ठेहुनपर माथ राखि निश्चिन्त होइत अछि। एहि शारीरिक निकटता सँ कथाकार भविष्य, स्त्री-सुरक्षा, सीता-द्रौपदी सन सांस्कृतिक प्रतिमान आ सामाजिक उपेक्षाक प्रश्न सोचैत छथि। कथा बाल-दरिद्रता पर नैतिक दृष्टि बदलबाक आग्रह करैत अछि।

‘कबाछु’

चम्पी करनिहार गरीब श्रमिकक स्पर्श, देह, वर्ग-संस्कार आ यौन-संदेहक असहजता कथा केन्द्रीय तनाव अछि। कथाकार अपन वितृष्णा आ सहानुभूति दुनू स्वीकार करैत छथि। एहि द्वैधक कारण कथा शरीर, श्रम आ सामाजिक दूरीक कठिन प्रश्न उठबैत अछि।

‘कारबार’

बारक बातचीतमे दोस्ती, चिकित्सा, प्रेम, पैसा आ लेन-देनक मूल्य-तर्क उभरैत अछि। “सभ चीजक मोल”क बाजारवादी दृष्टि धीरे-धीरे कथाकारक आसपासक प्रत्येक व्यवहार—यहाँ तक कि दरबानक सलाम—मे पैसाक टनक सुनाबऽ लगैत अछि। कथा बाजार-तर्क द्वारा मानवीय सम्बन्धक क्षरणक तीक्ष्ण रूपक अछि।

‘कुश्ती’

घाव, इलाज, हाट, हेल्थ-सेन्टर, लोक-गप आ देह सम्बन्धी संकोचक मिश्रणसँ ग्रामीण सामाजिक जीवनक बहुस्तरीय चित्र बनैत अछि। “कुश्ती” केवल अखाड़ा नहि; रोग, प्रतिष्ठा, जनमत, चिकित्सा-विश्वास आ सामाजिक निगाहक परस्पर संघर्ष सेहो अछि।

‘कैनरी आइलैण्डक लॉरेल’

दीदीक घर, आर्थिक आवश्यकता, दू सए टाका माँगबाक असमर्थता, कोसी-पार यात्रा आ अस्पष्ट व्यवहार—कथा आत्मसम्मान आ परिवारिक निकटताक बीच संकोचक सूक्ष्म मनोविज्ञान रचैत अछि। शीर्षकक विदेशी बिम्ब आ देसी गरीबी/यात्राक संयोग भावात्मक विडम्बना बढ़बैत अछि।

‘तृष्णा’

रेल-यात्रा, श्रीलतासँ भेट आ पुनर्भेटक असम्भावना स्मृतिक अधूरापन बनबैत अछि। कथा प्रेमक पूर्णता नहि, क्षणभंगुर आकर्षण आ अनुपस्थितिक पीड़ा लिखैत अछि। ‘तृष्णा’ नाम एहि अधूरे अनुभवक भाव-संक्षेप अछि।

‘दाना’

नोकरीक साक्षात्कारमे “बाहरी” आ “लोकल”क विभाजन, उच्च योग्यता आ अवसरहीनता बेरोजगार युवकक उदासी रचैत अछि। पक्षी सभ पावरोटीक दाना पर झपटैत अछि—जीविका लेल मनुष्यक प्रतियोगिता एहि दृश्यसँ मौन तुलना बनबैत अछि।

‘दृष्टि’

शिक्षा समाप्ति, बेरोजगारी, गामक कटाक्ष आ शहरी जीवनक आकांक्षाक बीच पात्र खेती दिस मुड़ैत अछि। दक्षिण भारतीय पत्रकारक प्रेरणा आ अपन श्रमपर भरोसा कथा दृष्टि-परिवर्तनक बिन्दु अछि। असुरक्षा सँ श्रम-दृष्टि दिस यात्रा एहि कथा केन्द्रीय उपलब्धि अछि।

‘नदी’

मकान खोजैत बिहारी आ गगनदेवक भटकनक बीच एक किशोरी/बालिकाक दृष्टि आकस्मिक स्नेह-अनुभव उत्पन्न करैत अछि। कथा छोट भेंटक भावनात्मक दीर्घता देखबैत अछि—फेर भेंट नहि होएबाक ज्ञान दुख नहि, एक अनाम उल्लास छोड़ैत अछि।

‘परलय’

कोसीक बाढ़ि, माल-जाल, परिवार, कटनियाँ, रोग आ जीवन-रक्षा—कथा प्रकृतिक आपदा बीच ग्रामीण मनुष्यक असहायता लिखैत अछि। बौकूक चेतना विनाशक चरमपर संवेदनशून्य शान्तिमे पहुँचैत, बरखा रुकला पर फेर वस्तु-संसार चिन्हबाक प्रयास करैत अछि। ई आघातक मनोवैज्ञानिक लेखन सेहो अछि।

‘बनैत-बिगड़ैत’

माला, सत्तो, परदेस गेल संतान आ पोती मुनियाँक कथा प्रवासोत्तर गामक करुण यथार्थ अछि। कौवाक टाहि अशुभ आशंका, स्मृति आ पीढ़ीगत सम्बन्धक प्रतीक बनैत अछि। अन्तमे कौवा आ दादा दुनूकेँ ताकैत मुनियाँ समय, मृत्यु आ स्मृतिक अत्यन्त मार्मिक बिम्ब रचैत अछि।

‘बात’

तरकारी बजारक छोट विवाद कथाकारकेँ अन्याय रोकबाक नैतिक आवेगसँ अज्ञात भय धरि लऽ जाइत अछि। “हर बातक पाछू खिस्सा”क मेटा-कथात्मक

आरम्भ कथा आ जीवनक सीमा पर खेलैत अछि। सुख बिसरि जाएब, दुख मोन रहब—अन्तिम बोध स्मृतिक विषमता रेखांकित करैत अछि।

‘रंभा’

सुन्दर अजनबी स्त्री पहिले मिथकीय “रंभा/मेनका” जकाँ देखाइत छथि; संवाद बढ़ैत सम्बन्धक अर्थ पितृवत/पुत्रीवत स्नेह दिस बदलि जाइत अछि। पुरुष-दृष्टि, सौन्दर्यक कल्पना आ मानवीय निकटताक रूपान्तरण कथा केन्द्रीय शिल्प अछि।

‘हमर गाम’

कोसी बान्हक भीतरक गाम, पैदल यात्रा, जमीनक झगड़ा, कटनियाँ, जातीय दूरीक टूटन, जीविका-साधनक ह्रास आ प्रकृतिक विकटता—ई कथा ग्रामीण जीवनक विस्तृत सामाजिक-पर्यावरणीय आख्यान अछि। अन्तमे गामसँ विदा होइत स्मृति लेखकक अस्तित्वक अंश बनैत अछि; एहि कारण कथा ग्रामीण यथार्थ आ आत्मकथात्मक स्मृति दुनू अछि।

२.११ विभा रानी — स्त्री, हिंसा आ रंगमंच

‘माउगि’

‘माउगि’ शब्दक सामाजिक वर्गीकरणसँ आरम्भ भऽ साम्प्रदायिक दंगाक बीच स्त्री-अनुभवक साझा पीड़ा धरि पहुँचैत अछि। दीपा-रेशमा, भगवती-जोहरा—भिन्न धर्म, भिन्न वर्ग आ भिन्न घरक स्त्री सभ—माँग, कोख, परिवार आ भयक एके मानवीय धरातलपर आबि जाइत छथि। रचना घरेलू भन्साघरकेँ नैतिक केन्द्र बनबैत अछि; ड्राइंगरूमक साम्प्रदायिक/पुरुषवादी कठोरता आ भन्साघरक स्त्री-साझेदारीक बीच तीव्र विरोध निर्मित होइत अछि।

भाषा जानि-बुझि बहुभाषिक अछि—मैथिली, हिन्दी-उर्दू मिश्रित शहरी बोली, घरेलू संबोधन। ई मिश्रण कृत्रिम नहि; दंगाग्रस्त महानगरक वास्तविक सामाजिक बनावट रचैत अछि। अन्तमे चाहक भाप आ आँखिक नोरक एकाकार बिम्ब स्त्री-सहभागिताक भावुक किन्तु प्रभावी प्रतीक अछि।

‘भाग रौ’

‘भाग रौ’ विस्तृत सामूहिक नाटक अछि, जाहिमे भिखारी बच्चा, पुलिस, यात्री, छात्र, पत्रकार, गणपत परिवार, गुंडा, हिजड़ा, सामान्य नागरिक आ मंगतू सन अनेक पात्र सामाजिक हिंसाक विभिन्न स्तर मंचपर अनैत छथि। आरम्भक ट्रेन/हाट/मेला दृश्य गरीबीक प्रदर्शनक राजनीति खोलैत अछि; बच्चा सभक भूख आ भीखक अर्थशास्त्र करुणा आ कटु हास्य दुनू जगबैत अछि।

नाटक आगाँ बढ़ैत युद्ध, बम, साम्प्रदायिक/राजनीतिक हिंसा आ रोजमर्रा असुरक्षाकेँ एकहि मानवीय संकटमे जोड़ैत अछि। “भाग रौ” आदेश बारम्बार जीवित रहबाक स्वाभाविक प्रतिक्रिया बनैत अछि। मुदा अन्तिम समवेत स्वर केवल पलायन पर समाप्त नहि होइत—मनुष्य मृत्यु आ कालक सामने “फेर ठाढ़ भऽ उठब”क संकल्प करैत अछि। मानव-पुष्पक अंतिम मंच-रचना नाटकक दृश्यात्मक आशावादक चरम अछि।

‘बलचन्दा’

‘बलचन्दा’ नवजातक क्रन्दन, अन्हार, प्रकाश-वृत्त आ स्त्रीक “हम धरिणी, हम धरित्री” उद्घोषसँ आरम्भ होइत अछि। आरम्भहि सँ स्त्री-देह, मातृत्व, देवी-प्रतिमा आ सामाजिक स्त्री-द्वेषक टकराव स्थापित भऽ जाइत अछि। सासुक पुत्र-आकांक्षा, कन्या-भ्रूण/कन्या-विरोध, पति-सहमति आ स्त्रीक बचाव-आवाज नाटकक मुख्य नैतिक संघर्ष बनबैत अछि।

एकल/बहुरूपी अभिनयक सम्भावना, प्रकाश-ध्वनि, गुड़ियाक प्रतीक, भजन आ चरित्र-परिवर्तन ई नाटककेँ पाठसँ अधिक प्रदर्शनक माँग दैत अछि। स्त्रीक पौराणिक महिमामंडन आ वास्तविक सामाजिक अवमूल्यनक विरोधाभास नाटकक सर्वाधिक प्रखर बिन्दु अछि। बाह्य नाट्य-परिचयसभमे ‘Balchanda’ विभा रानीक चर्चित नाटकमध्ये उल्लिखित अछि, जे एहि पाठक रंगमंचीय जीवनक पुष्टि करैत अछि।

२.१२ डॉ. शिव प्रसाद यादवक मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार

ई साक्षात्कार कृति-सूची मात्र नहि; मायानन्द मिश्रक आत्म-दृष्टि, विधागत प्राथमिकता, पुरस्कार-विवेक, साहित्य-सामाजिक सम्बन्ध, काव्य-आन्दोलन, कोसी-अनुभव, आकाशवाणी-अनुभव आ पत्रिका-सम्पादनक मौखिक साहित्यिक इतिहास अछि। लेखक ‘मंत्रपुत्र’, ‘भाङक लोटा’, ‘बिहाड़ि, पात आ पाथर’, ‘चन्द्रबिन्दु’, ‘दिशान्तर’, ‘अवान्तर’, अप्रकाशित ‘माटिक लोक’ आदि कृतिसभक प्रसंग स्वयं स्पष्ट करैत छथि।

विशेष महत्त्व हुनक एहन कथनक अछि जे साहित्य “स्वान्तः सुखाय” सँ आरम्भ होइतहुँ अन्ततः समाजक हित-चिन्तन दिश पहुँचैत अछि। कविता-प्रयोगक प्रसंगमे ‘दिशान्तर’ आ ‘अवान्तर’क नामकरण, गीतिक तत्वक पुनरागमन, आ गजलकेँ ‘गीतल’ कहबाक भाषिक-सांस्कृतिक प्रयोग हुनक काव्य-दृष्टिक संकेत दैत अछि।

साहित्य अकादेमीक आधिकारिक पुरस्कार-सूची १९८८ मे ‘Mantraputra’ लेल मायानन्द मिश्रक सम्मानक पुष्टि करैत अछि। एहि सत्यापनक कारण

साक्षात्कारमे पुरस्कार सम्बन्धी आत्मकथन ऐतिहासिक दस्तावेजक रूपमे आरो विश्वसनीय बनैत अछि।

३. पद्य-खण्ड: गीत, कविता, गजल आ दीर्घ काव्य

३.१ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' — 'अन्तर्द्वन्द्व'

'अन्तर्द्वन्द्व' अनुवाद, सृजन आ नैतिक स्वामित्वक प्रश्नक कविता अछि। कवि "ज्वालामुखी"क तरजुमा करैत समय छिन्न-भिन्न शब्द, ध्वनि आ अर्थ जोड़बाक कठिनाई अनुभव करैत छथि। एक रचनाक नायिका दोसर उपन्यासक पात्र बनि सकैत अछि, खूँखार पात्र "हीरो" बनि सकैत अछि—अर्थात साहित्यिक पात्र भाषा-सीमा पार करैत नव जीवन पबैत अछि।

ज्वालामुखी, लावा, दहन, आह, सियाही—ई बिम्ब अनुवादकेँ शब्द-प्रतिस्थापन नहि, सृजनात्मक ताप-परिवर्तन बनबैत अछि। अन्तिम प्रश्न—अनकर जुबानमे जागल कथा अपन माटिपर कोना उगित—भाषा, भूगोल आ साहित्यिक आदान-प्रदानक गम्भीर काव्यात्मक प्रश्न अछि।

३.२ शैलेन्द्र मोहन झाक तीन कविता

'सपना'

हास्य-गीतात्मक कविता दुपहरियाक स्वप्नमे प्रेम, विवाह, फिल्मी सौन्दर्य-उपमा आ आत्मपरिहासक खेल रचैत अछि। ऐश्वर्या, जुही चावला, नीलम, वैजयन्तीमाला, सन्नी, राहुल राय, गोविन्दा सन लोकप्रिय संस्कृति-सन्दर्भ मैथिली गीतमे समकालीन हास्य लबैत अछि। छोट भाइ पिंटू द्वारा निन्न तोड़लाक संग स्वप्न-रोमांस धराशायी होइत अछि; ई हल्का, मंचोपयोगी हास्यक सफल संरचना अछि।

'हम तऽ छी परदेशमे'

प्रवासक विरह-कविता चन्द्रमाकेँ गाम आ परदेशक बीच भाव-संदेशवाहक बनबैत अछि। "अपन आँगनक नीममे अटकल चाँद" जेकाँ बिम्ब घरेलू स्मृति आ दूरीक पीड़ा के सहज रूप दैत अछि। गीतिक पुनरावृत्ति 'हम तऽ छी परदेशमे' प्रवासी अस्तित्वक मूल वाक्य बनि जाइत अछि।

'चलला मुरारी छौरी फँसबय!'

ई हास्य-कविता युवा पुरुषक "गर्ल फ्रेन्ड" बनाबऽ चाहबाक असफल अभियानपर आधारित अछि। अंग्रेजी प्रभाव, मित्रक दबाव, फिल्मी प्रेम-शिक्षा, आँखि मारबाक गलतफहमी आ सार्वजनिक पिटाई—सभ मिलि आत्म-व्यंग्य रचैत अछि। अन्तिम "अंग्रेजी बिसरि मैथिल बनि जायब" भाषिक-हास्यक चुटीला निष्कर्ष अछि; कविता प्रेमक तुलना मे सामाजिक भंगिमा आ युवावर्गक नकलबाजीपर बेसी व्यंग्य करैत अछि।

३.३ जितमोहन झा — 'भक्तिगीत'

'भक्तिगीत' मात-पिता, गुरु आ प्रभु—चारि ऋण/आश्रयक क्रमिक स्मरण अछि। प्रत्येक स्तम्भक अन्त "हमरा पर कएलहुँ बड़ उपकार" पुनरावृत्त होइत कृतज्ञताक लय बनबैत अछि। गीतक धार्मिकता कर्मक ठोस अनुभवसँ जुड़ल अछि: माय पालन करैत छथि, पिता शिक्षा आ जीविका देबाक योग्य बनबैत छथि, गुरु ज्ञानक अन्हार हटबैत छथि, प्रभु नर-तन आ चेतना दैत छथि। सरल छन्द आ पुनरुक्ति सामूहिक गायन लेल अनुकूल अछि।

३.४ प्रकाश झा — 'हमर मिथिलाक दर्शन'

ई कविता सांस्कृतिक आत्मपहिचानक गीत अछि। जनक-सीता-राम, कमला-कोसी, विद्यापति, मण्डन, अयाची, पान-मखान, मड़ुआ रोटी, फूसक घर, खरहीक टाट, दलान, चित्रकला—ई सभ एक दृश्यात्मक मिथिला-कोलाज बनबैत अछि। कविता आदर्शीकृत स्मृतिकेँ दैनिक ग्रामीण वस्तुसँ जोड़ैत अछि; ताहि कारण "मिथिला" अमूर्त गौरव नहि, स्वाद, गन्ध, भूगोल आ पारिवारिक दृश्य बनि उपस्थित अछि।

३.५ गंगेश गुंजनक काव्य-समूह

गंगेश गुंजनक पद्य-समूह आकार, विषय आ शैलीमे अत्यन्त व्यापक अछि। बाल-कवितासँ आरम्भ भऽ शहरी नैतिकता, वृद्धावस्था, प्रवास, गाम, राजनीतिक प्रतीक, बाढ़ि, गजल-प्रयोग, समर्पण-कविता, स्वतंत्रता-दिवस आ तीस खेपक 'राधा' धरि कविता निरन्तर रूप बदलैत अछि। एहि विविधतामे साझा तत्व कविक आत्म-संवाद, सामाजिक असुविधाकेँ निजी नैतिक प्रश्नमे बदलबाक क्षमता आ बोलीक स्वाभाविक ऊर्जा अछि। साहित्य अकादेमीक आधिकारिक सूची १९९४ मे 'उचितवक्ता' कथा-संग्रह लेल गंगेश गुंजनक सम्मानक पुष्टि करैत अछि; ई हुनक बहुविध साहित्यिक प्रतिष्ठाक बाह्य संकेत अछि।

'बाल कविता—आउ हनुमान'

बाल-कविता खेल, तुक, बाजार, कुकुर, कॉपी, मखान आ उधारक छोट प्रसंगसँ व्यवहारिक शिक्षा रचैत अछि। "सौदा नै ली कखनो उधार" सन पंक्ति उपदेश

बनितहुँ कथा-खेलक भीतर आबैत अछि। अन्तमे कुकुरो कान पकड़ैत अछि—नकल, भूल आ सुधारक हास्यपूर्ण बाल-नाट्य।

'भेटताह अनन्त?'

मातृत्व-पितृत्व, क्षति आ पुनर्निर्माणक गहन कविता। चूर्ण भेल ममता, माटिक मूरत, गणेश-दुर्गा, प्राण-प्रतिष्ठा आ रिक्त कोराक बिम्ब शोककेँ धार्मिक अनुष्ठान नहि, मनोवैज्ञानिक पुनर्सृजनक प्रक्रिया बनबैत अछि। जीवनक नव सम्भावना दुखसँ भागि नहि, ओकर माटिकेँ फेर सानि मूर्ति बनबैत जन्मैत अछि।

'दिल्ली नगर बस मे तामस: एक'

भीड़ल बसमे वृद्धकेँ सीट नहि देबाक कविक आत्मालोचना नागरिक नैतिकताक कविता बनैत अछि। कवि स्वयंकेँ नाम लऽ कऽ झिड़कैत छथि; एहि आत्म-संवादक कारण नैतिक वाणी उपदेशात्मक नहि, आत्म-परीक्षण बनैत अछि।

'दिल्ली नगर बस मे तामस: दू'

आरक्षित महिला-सीटपर निश्चिन्त बैसल स्त्री आ ठाढ़ वृद्धक दृश्य अधिकार आ कर्तव्यक द्वन्द्व उठबैत अछि। कविता महिला-अधिकारक विरोध नहि, अधिकार-बोधक संग मानवीय उत्तरदायित्वक प्रश्न करैत अछि। 'तामस' अज्ञान/जड़ताक नैतिक छाया बनैत अछि।

'आयुर्दा'

स्मृति, यात्रा, पुरि समुद्र, भुवनेश्वर बाजार, कोणार्कक भग्न पहिया आ सुदर्शन पटनायकक क्षणभंगुर बालु-मूर्ति—ई सभ समयक आयुर्दा पर चिन्तन बनबैत अछि। कविता पूछैत अछि: मन की घैल, घैलची, दुपहर, साँझ, समुद्र कि बाजार? वस्तु-स्मृति आ आत्म-स्मृतिक सीमा घुलि जाइत अछि।

'परिवर्त्तन'

"आदर्शक बाना त्यागू" सन व्यंग्यात्मक निर्देश आधुनिक सुविधावाद आ सिद्धान्तक सार्वजनिक प्रदर्शनपर चोट अछि। मंचपर आदर्श, घरमे सुविधा—ई द्वैध कविता केन्द्रीय व्यंग्य अछि। छोट पंक्ति आ आदेश-वाचक लय कटाक्षकेँ तीक्ष्ण बनबैत अछि।

'देश छोड़ि कत' गेल'

प्रवास, अवसर, भूगोल आ अनुपस्थित लोकक प्रश्न कविता केन्द्रमे अछि। "देश छोड़ब" केवल आर्थिक यात्रा नहि; स्मृति, भाषा आ उत्तरदायित्वक सम्बन्ध टूटबाक आशंका सेहो अछि। कविता प्रवासीकेँ दोषी घोषित नहि करैत, अनुपस्थितिक सामाजिक खालीपन दर्ज करैत अछि।

'देश छोड़ि कियेक गेलय?'

पहिल कविताक प्रश्नकेँ कारण-दिशा दैत ई रचना पलायनक सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, गामक अभाव आ भविष्यक खोज दिस ध्यान लैत अछि। शीर्षकक प्रश्नोक्ति पाठककेँ नैतिक निर्णयसँ पहिने कारण समझबाक आग्रह करैत अछि।

'गाम'

"माटि, मेघ, वायु, साँस, पर्वत, नदी, वृक्ष, पक्षी"क आवाहन गामकेँ पर्यावरणीय, श्रम-संस्कृतिक आ स्मृतिगत सम्पूर्णता बनबैत अछि। कविक "सश्रु स्वाधीन प्रणाम" भावुकता नहि मात्र; श्रमकण, शहीद, मातृभूमि आ विवेकक संग ग्राम-चेतनाक संयोजन अछि।

'बीच बाट पर खसल लाल गमछा'

दिल्लीक व्यस्त सड़कपर खसल लाल गमछा धीरे-धीरे मजूरक मुरेठा, लाल ध्वजा, सोवियत स्मृति आ श्रमक रक्तधूरि बिम्बमे बदलैत अछि। कवि उठा नहि पबैत छथि; ई असमर्थता राजनीतिक प्रतीकप्रति निजी अपराधबोध बनैत अछि। कविता विचारधाराक पतनक इतिहासकेँ सड़कक साधारण वस्तुमे संघनित करैत अछि।

'गीत १-२'

दुनू गीत निजी सम्बन्ध, बदनामी, स्नेह, अपेक्षा आ समाजक कथा-निर्माणक अनुभवसँ बनल अछि। गीतिक लय व्यक्तिगत संवादकेँ सार्वजनिक भावनात्मक रूप दैत अछि। "दुनिया नित्य नवे नव कहानी गढ़ैए"क भाव सामाजिक अफवाह आ निजी पीड़ाक टकराव रेखांकित करैत अछि।

'बाढ़िक त्रासदीपर गजल सन किछु'

बाढ़िमे घर-दुआरि, बाल-बच्चा, आश्रय आ जीवित रहबाक संघर्ष गजल-सदृश छोटी पंक्तिमे व्यक्त अछि। "गजल सन" कहब विधागत विनम्रता सेहो अछि—कवि शास्त्रीय दावे सँ अधिक आपदाक तात्कालिक स्वरकेँ प्राथमिकता दैत छथि।

'गजल जेकाँ किछु—मैथिलीमे १-३'

ई प्रयोग गजल-लय, पुनरावृत्ति, व्यक्तिगत उदासी, सामाजिक प्रश्न आ मैथिली भाषिक मुहावराकेँ एक संग आजमबैत अछि। "जेकाँ" शब्द विधाक अनुकरण नहि, रचनात्मक अनुकूलनक संकेत अछि।

‘समर्पित गजल सन किछु’

भीमनाथ झा, रामलोचन ठाकुर, अजित आजाद, शेफालिका वर्मा आ सकेतानन्दकेँ समर्पित रचनासभ व्यक्ति-स्मृति आ साहित्यिक समुदायकेँ जोड़ैत अछि। समर्पण एतऽ औपचारिक श्रद्धांजलि नहि; कवि-सम्बन्ध, साहित्यिक श्रम आ साझा सांस्कृतिक संसारक स्मरण अछि।

‘स्वतंत्रता-दिवस २०१०’

राष्ट्रोत्सवक आलोक आ सामाजिक असमानता/गामक अन्हारक बीच कविता प्रश्न उठबैत अछि। स्वतंत्रता केवल दिल्लीक जगमगाहट हो, गामक जीवन तक नहि पहुँचे—एहन विरोधाभास कविक असंतोषक केन्द्र अछि।

‘राधा’ — खेप १-३०

‘राधा’ दीर्घ धारावाहिक काव्य-आख्यान अछि, जाहिमे कृष्ण-राधा सम्बन्ध पौराणिक स्थिर प्रतिमासँ बाहर आधुनिक समय, निजी प्रेम, सामाजिक मर्यादा, बाजार, गाम, स्मृति, स्त्री-स्वायत्तता आ बदलैत जीवनक विस्तृत संवाद बनैत अछि। खेप-दर-खेप रचना कथात्मक कविता, संवाद, गीत, आत्मालाप आ सामाजिक टिप्पणीक रूप बदलैत चलैत अछि।

‘राधा’क विशेष मूल्यांकन

तीस खेपक विस्तार ‘राधा’केँ संकलनक भीतर स्वतंत्र काव्य-ग्रन्थक आकार दैत अछि। राधा एतऽ केवल कृष्णक प्रेमिका नहि; ओ सामाजिक मर्यादा पर प्रश्न करैत, निज संसार आ पैघ सामाजिक संसारक तनाव अनुभव करैत, आधुनिक गाम-बाजारक परिवर्तन देखैत एक चेतन पात्र बनैत छथि। कृष्ण सेहो देवत्वक स्थिर प्रतिमा नहि—ओ प्रेम, जिम्मेवारी, कर्म, अनुसन्धान आ सामाजिक उलझनक बीच चलैत मानवीय-दार्शनिक चरित्र अछि।

काव्यक मुख्य उपलब्धि मिथकक आधुनिक पुनर्वास अछि। पौराणिक नाम आधुनिक अनुभवकेँ अलौकिक बनाबऽ लेल नहि, बल्कि दीर्घ सांस्कृतिक स्मृतिक भीतर वर्तमान प्रश्न राखबाक माध्यम बनैत अछि। गामक दुकान, पुरान आत्मीय व्यापार-संस्कृति, बाजारक नव सजावट, निजी प्रेम आ सामाजिक कर्तव्य—ई सभ राधा-कृष्णक संवादमे पैंसि मिथककेँ जीवन्त समकालीन भाषा दैत अछि।

४. समेकित साहित्यिक निष्कर्ष

४.१ परिवर्तन संकलनक केन्द्रीय शब्द

‘माटिक बासन’मे स्टील माटिक बर्तनक स्थान लैत अछि; ‘चूल्हि’मे पीढ़ी स्त्री-परम्पराक अर्थ बदलबाक सम्भावना जगबैत अछि; गंगेश गुंजन कॉरपोरेट जगत, भाषा-राजनीति आ नव पीढ़ीक चेतना पर प्रश्न करैत छथि; ‘बनैत-बिगड़ैत’मे प्रवास गामक परिवार बदलैत अछि; ‘दृष्टि’ बेरोजगार युवककेँ खेती दिस नव दृष्टि दैत अछि; ‘हमर गाम’ कोसी, जमीन आ संसाधनक बदलैत भूगोल लिखैत अछि; ‘राधा’ मिथककेँ आधुनिक बाजार आ निजी जीवनमे पुनःस्थापित करैत अछि। एहि अर्थें संग्रह परिवर्तनक अनेक गति—धीमा, हिंसक, आर्थिक, भाषिक, भावनात्मक—क साहित्यिक अभिलेख अछि।

४.२ स्त्री-अनुभव: घरेलू चूल्हिसँ सार्वजनिक हिंसा धरि

‘चूल्हि’, ‘माउगि’ आ ‘बलचन्दा’ संकलनक स्त्री-विमर्शक त्रयी जकाँ पढ़ल जा सकैत अछि। ‘चूल्हि’ घरेलू श्रम आ परम्पराक भीतर स्त्रीक दमन/प्रतिरोध देखबैत अछि; ‘माउगि’ धर्म आ वर्ग पार स्त्री-दुखक साझा धरातल देखबैत अछि; ‘बलचन्दा’ जन्म, मातृत्व, कन्या-विरोध आ स्त्री-देहपर सामाजिक नियंत्रणकेँ मंचीय रूप दैत अछि। ‘ओ लड़की’, ‘रंभा’, ‘कनियाँ-पुतरा’, ‘राधा’ आदि रचना एहि प्रश्नकेँ अलग कोणसँ विस्तृत करैत अछि।

४.३ गाम, प्रवास आ कोसी

कोसी एहि संकलनमे केवल नदी नहि—भूगोल, विनाश, जातीय दूरीक पुनर्संरचना, जीविका आ स्मृतिक शक्ति अछि। ‘परलय’ आपदाक तात्कालिक भय लिखैत अछि; ‘हमर गाम’ बान्हक भीतरक दीर्घकालीन जीवन; ‘कैनरी आइलैण्डक लॉरेल’ यात्रा आ आर्थिक संकोच; ‘बनैत-बिगड़ैत’ प्रवासक बाद परिवारक रिक्तता; ‘हम तऽ छी परदेशमे’ गाम-परदेशक भाव-दूरी। एहि सभकेँ संग पढ़ला पर आधुनिक मैथिली साहित्यक प्रवासी-ग्रामीण अनुभवक गहन मानचित्र बनैत अछि।

४.४ नाटक: लोक, परम्परा, प्रयोग आ प्रतिरोध

संकलन नाटककेँ चारि स्तरपर देखबैत अछि: प्रेमशंकर सिंहक ‘लोकनाट्य’ मौखिक-समुदायिक परम्परा; ‘पारंपरिक नाटक’ लिखित नाट्य-इतिहास; ‘चेतना समिति ओ नाट्यमंच’ संस्थागत प्रदर्शन-इतिहास; आ ‘नो एंट्री’, ‘भाग रौ’, ‘बलचन्दा’ आधुनिक प्रयोगधर्मी/सामाजिक नाटक। एहि चारू स्तरक सहअस्तित्व एक महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष दैत अछि—मैथिली नाटकक इतिहास केवल पाठक इतिहास नहि, लोक-अभिनय, मंच-संस्था, ध्वनि-माध्यम आ आधुनिक सामाजिक

प्रतिरोधक इतिहास सेहो अछि।

४.५ भाषा: मानकीकरणक भीतर जीवित बोली

सुभाष चन्द्र यादवक कथा, भालचन्द्र झाक 'चूल्हि', विभा रानीक 'माउगि' आ गंगेश गुंजनक कविता सभ बोलीक जीवित ऊर्जा पर टिकल अछि। गजेन्द्र ठाकुरक समीक्षा मानकीकरण, ध्वन्यात्मक लेखन आ उच्चारणक प्रश्न प्रत्यक्ष उठबैत अछि। संकलन देखबैत अछि जे मानक भाषा आवश्यक होइतहुँ साहित्यिक जीवन केवल मानक रूपसँ नहि चलैत; पात्रक सामाजिक स्थान, हास्य, भावनात्मक निकटता आ सांस्कृतिक स्मृति लोकभाषिक विविधतासँ बनैत अछि। उचित साहित्यिक नीति मानकीकरण आ जीवित बोलीक बीच संघर्ष नहि, सृजनात्मक सहअस्तित्व खोजत।

४.६ इतिहास आ साहित्यक पारस्परिकता

राधाकृष्ण चौधरीक इतिहास, प्रेमशंकर सिंहक साहित्य-इतिहास, जयकान्त मिश्रक जीवन-साधना, चेतना समितिक मंच-सूची आ मायानन्द मिश्रक साक्षात्कार—ई सभ मिलि संकलनकेँ साहित्यिक अभिलेखागार बनबैत अछि। रचनात्मक साहित्यक संग इतिहास-स्रोत रखबाक लाभ ई अछि जे पाठक कृति आ संस्था, लेखक आ युग, व्यक्तिगत स्मृति आ सार्वजनिक इतिहासक सम्बन्ध प्रत्यक्ष देखैत अछि।

४.७ संकलनक सौन्दर्यात्मक बहुलता

संग्रहमे शिल्पक एकरूपता नहि, आ ई कमजोरी नहि। संक्षिप्त मनोवैज्ञानिक कथा, विस्तृत ऐतिहासिक गद्य, संवादात्मक निबन्ध, चारि-अंकीय नाटक, एकल/समूह रंगलेखन, भक्ति-गीत, हास्य-कविता, मुक्तछन्द, गजल-प्रयोग आ धारावाहिक दीर्घकाव्य—सभ अपन विधागत नियम लैत अछि। "सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा"क उचित निष्कर्ष ताहि लेल कोनो एक कसौटी थोपब नहि, बल्कि प्रत्येक विधाक भीतर ओकर सफलताक बिन्दु चिन्हब अछि।

४.८ आलोचनात्मक सीमासभ

संकलनक विशालता ओकर शक्ति संग चुनौती सेहो अछि। किछु इतिहासपरक/आलोचनात्मक लेखमे सामग्रीक प्रचुरता तर्कक केन्द्रकेँ ढाँकि दैत अछि; किछु स्थानपर उद्धरण आ सूची पाठकीय प्रवाह धीमा करैत अछि। किछु रचनामे आजुक संवेदनशील पाठककेँ जाति, लिंग अथवा सामाजिक समूह सम्बन्धी पुरान शब्दावलीक आलोचनात्मक सन्दर्भ आवश्यक बुझा सकैत अछि। इतिहासक प्राचीन दावासभ नव शोधक आलोकमे पुन:सत्यापन माँगि सकैत अछि। मुदा ई सीमा सभ कृतिसभक ऐतिहासिक मूल्य नष्ट नहि करैत; उलटे नूतन सम्पादित संस्करण, टिप्पणी आ शोधक सम्भावना खोलैत अछि।

४.९ समग्र मूल्यांकन

'विदेह सदेह ३२' आधुनिक मैथिली लेखनक बहुविध स्वभावक एक असाधारण समानान्तर अभिलेख अछि। एहि एक संग्रहमे श्रमशील कारीगर, घरेलू स्त्री, बेरोजगार युवक, प्रवासी परिवार, किसान, इतिहासकार, रंगकर्मी, आलोचक, कवि, मिथकीय पात्र, भिखारी बच्चा आ महानगरीय यात्री एकहि सांस्कृतिक वाक्यक अलग शब्द बनि उपस्थित छथि। एहि कारण संकलनक साहित्यिक महत्त्व "सभ रचना समान स्तरक अछि" एहन दावा मे नहि, बल्कि एहि बातमे अछि जे ई मैथिली समाजक अनेक अनुभव-वर्गकेँ दीर्घ समय-रेखापर सुरक्षित करैत अछि।

संकलनक सर्वाधिक टिकाऊ उपलब्धि संवादशीलता अछि। कथा पाठकसँ प्रश्न करैत अछि; नाटक दर्शककेँ मंचीय भागीदार बनबैत अछि; इतिहास स्रोतक अभाव स्वीकार करैत नव अनुसन्धान बुलबैत अछि; आलोचना कृतिसँ बहस करैत अछि; कविता अपन "हम"केँ समुदाय, गाम, राष्ट्र, प्रेम आ स्मृतिक संग जोड़ैत अछि। एहि अर्थें 'विदेह सदेह ३२' संग्रह मात्र नहि, मैथिली साहित्यक बहस करैत सार्वजनिक क्षेत्र अछि।

५. रचना-लेखक सम्पूर्णता-जाँच

नीचा देल सारणी आधार-पाठक अनुक्रममे उल्लिखित समस्त मुख्य लेखक आ शीर्षकक समीक्षा-समावेशन देखबैत अछि।

क्रम	लेखक	रचना / शीर्षक
1	जगदानन्द झा 'मनु'	माटिक बासन
2	भालचन्द्र झा	चूल्हि
3	गंगेश गुंजन	भोज परक आँटी—सत्तरिक नव-खाढ़िक युवा नवतुरिआसँ

4	गंगेश गुंजन	मैथिलीक उर्वर क्षेत्रमे कॉरपोरेट-जगत धाप
5	गंगेश गुंजन	किछु एहनो बात विषय
6	गंगेश गुंजन	गोबरक मूल्य
7	उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'	नो एंट्री : मा प्रविश
8	राधाकृष्ण चौधरी	मिथिलाक इतिहास
9	प्रेमशंकर सिंह	बीसम शताब्दी—मैथिलीक स्वर्ण युग
10	प्रेमशंकर सिंह	सामाजिक विवर्त्तक जीवन झा
11	प्रेमशंकर सिंह	मैथिली भाषाक साहित्य
12	प्रेमशंकर सिंह	लोकनाट्य
13	प्रेमशंकर सिंह	पारंपरिक नाटक
14	प्रेमशंकर सिंह	मायानन्दक रेडिया-रूपक शिल्प
15	प्रेमशंकर सिंह	हुनकासँ भेट भेल छल
16	प्रेमशंकर सिंह	अमरक एकांकी-प्रहसनक सामाजिक यथार्थ
17	प्रेमशंकर सिंह	लोकगाथा ओ मणिपद्म
18	प्रेमशंकर सिंह	चेतना समिति ओ नाट्यमंच
19	प्रेमशंकर सिंह	जयकान्त मिश्र जीवन आ साहित्य-साधना
20	डॉ. कैलाश कुमार मिश्र	समीक्षा—बनैत बिगड़ैत
21	गजेन्द्र ठाकुर	समीक्षा—बनैत बिगड़ैत
22	महाप्रकाश	सुभाष चन्द्र यादव पर
23	सुभाष चन्द्र यादव	अपन-अपन दुख
24	सुभाष चन्द्र यादव	असुरक्षित
25	सुभाष चन्द्र यादव	आतंक
26	सुभाष चन्द्र यादव	ओ लड़की
27	सुभाष चन्द्र यादव	एकटा अंत
28	सुभाष चन्द्र यादव	एकटा प्रेम कथा
29	सुभाष चन्द्र यादव	एकाकी
30	सुभाष चन्द्र यादव	कनियाँ-पुतरा
31	सुभाष चन्द्र यादव	कबाछु
32	सुभाष चन्द्र यादव	कारबार
33	सुभाष चन्द्र यादव	कुश्ती

34	सुभाष चन्द्र यादव	कैनरी आइलैण्डक लॅरिल
35	सुभाष चन्द्र यादव	तृष्णा
36	सुभाष चन्द्र यादव	दाना
37	सुभाष चन्द्र यादव	दृष्टि
38	सुभाष चन्द्र यादव	नदी
39	सुभाष चन्द्र यादव	परलय
40	सुभाष चन्द्र यादव	बनैत-बिगड़ैत
41	सुभाष चन्द्र यादव	बात
42	सुभाष चन्द्र यादव	रंभा
43	सुभाष चन्द्र यादव	हमर गाम
44	विभा रानी	माउगि
45	विभा रानी	भाग रौ
46	विभा रानी	बलचन्दा
47	डॉ. शिव प्रसाद यादव / मायानन्द मिश्र	साहित्य-मनीषी मायानन्द मिश्रसँ साक्षात्कार
48	उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'	अन्तर्द्वन्द्व
49	शैलेन्द्र मोहन झा	सपना
50	शैलेन्द्र मोहन झा	हम तऽ छी परदेशमे
51	शैलेन्द्र मोहन झा	चलला मुरारी छौरी फँसबय!
52	जितमोहन झा	भक्तिगीत
53	प्रकाश झा	हमर मिथिलाक दर्शन
54	गंगेश गुंजन	बाल कविता—आउ हनुमान
55	गंगेश गुंजन	भेटताह अनन्त?
56	गंगेश गुंजन	दिल्ली नगर बस मे तामस: एक
57	गंगेश गुंजन	दिल्ली नगर बस मे तामस: दू
58	गंगेश गुंजन	आयुर्दा
59	गंगेश गुंजन	परिवर्त्तन
60	गंगेश गुंजन	देश छोड़ि कत' गेल
61	गंगेश गुंजन	देश छोड़ि कियेक गेलय?
62	गंगेश गुंजन	गाम

63	गंगेश गुंजन	बीच बाट पर खसल लाल गमछा
64	गंगेश गुंजन	गीत १-२
65	गंगेश गुंजन	बाढ़िक त्रासदीपर गजल सन किछु
66	गंगेश गुंजन	गजल जेकाँ किछु—मैथिलीमे १-३
67	गंगेश गुंजन	समर्पित गजल सन किछु
68	गंगेश गुंजन	स्वतंत्रता-दिवस २०१०
69	गंगेश गुंजन	राधा' — खेप १-३०

६. शोध-स्रोत आ ग्रन्थ-सूची

६.१ प्राथमिक आधार-पाठ

विदेह सदेह ३२: रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-१। विदेह पेटार अंक १-३५० सँ संकलित।

६.२ आधार-पाठमे उद्धृत/उपयोगी ग्रन्थ-सन्दर्भ

प्रेमशंकर सिंह। मैथिली नाटक परिचय। मैथिली अकादमी, पटना, १९८१।

प्रेमशंकर सिंह। मैथिली नाटक ओ रंगमंच।

लेखनाथ मिश्र। मैथिली नाटकक उद्भव आओर विकास।

प्रताप नारायण झा। मैथिली नाटक का उद्भव और विकास।

इन्दिरा झा। आधुनिक मैथिली नाटकमे चारित्रक विकास। स्वाती प्रकाशन, पटना, १९८७।

जयकान्त मिश्र। A History of Maithili Literature, Vols. I-II तथा परवर्ती संस्करण।

राजेश्वर झा। जट-जटिन। मैथिली साहित्य संस्थान, पटना, १९७१।

J. G. Frazer. The Golden Bough (Abridged Edition), 1960 — लोकनाट्य लेखमे उद्धृत।

पूर्वांचलीय लोक साहित्य। चेतना समिति, पटना, १९७४।

६.३ बाह्य सत्यापन आ डिजिटल शोध-स्रोत

साहित्य अकादेमी — Akademi Awards (Maithili), 1955-2025. गंगेश गुंजनक १९९४ 'उचितवक्ता' पुरस्कार आ मायानन्द मिश्रक १९८८ 'मंत्रपुत्र' पुरस्कारक सत्यापन। https://www.sahitya-akademi.gov.in/awards/akademi%20samman_suchi.jsp

विदेह पुरान डिजिटल अभिलेख — 'नो एंट्री : मा प्रविश'. नाटकक चारि-अंकीय स्वरूप, नचिकेताक रचनात्मक परिचय आ विदेहमे धारावाहिक प्रकाशनक सत्यापन। https://gajendrathakur.blogspot.com/2008/07/blog-post_1901.html

विदेह/भालसरिक गाछ — राधाकृष्ण चौधरी, मिथिलाक इतिहास अध्याय १-४. मूल इतिहास-पाठक डिजिटल समानान्तर प्रति। https://gajendrathakur.blogspot.com/2010/04/blog-post_30.html

Hindwi — गंगेश गुंजन लेखक-पृष्ठ. आधुनिक मैथिली कवि-कथाकार रूपक सार्वजनिक साहित्यिक परिचय। https://www.hindwi.org/poets/gangesh-gunjan/

Kalinga Literary Festival — Vibha Rani. विभा रानीक नाट्यकर्म आ 'Balchanda' सहित नाटकक बाह्य परिचय। https://kalingaliteraryfestival.com/speakers/vibha-rani/

Patna University — M.A. in Maithili syllabus. मैथिली नाटक-अध्ययनमे प्रेमशंकर सिंहक 'मैथिली नाटक परिचय' सहित मान्य सहायक ग्रन्थक सत्यापन। https://pup.ac.in/PDF/MasterDegree/ma_in_maithili.pdf

अन्तिम टिप्पणी

ई समीक्षा आधार-पाठक सम्पूर्ण अनुक्रमक रचनासभकेँ समेटैत अछि। मूल पाठमे जे तथ्य, नाम, शीर्षक अथवा ऐतिहासिक दावा प्रत्यक्ष उपलब्ध नहि छल, तकर अनुमान कऽ कए विवरण जोड़ल नहि गेल अछि। बाह्य शोध केवल सत्यापन, लेखक-प्रसंग आ विधागत पृष्ठभूमि धरि सीमित राखल गेल अछि। एहि कारण समीक्षा साहित्यिक व्याख्याकेँ विस्तार दैत अछि, मुदा मूल पाठक तथ्यात्मक सीमा पार नहि करैत।

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह सदेह ३२ — रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-१

अध्याय 18 · विदेह सदेह ३४ — सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा

सारांश रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-३ मूल संकलन: विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका · ISSN 2229-547X आलोचनात्मक अध्ययन · शुद्ध मैथिली समग्र साहित्यिक निष्कर्ष “विदेह सदेह ३४”क सबसे पैघ उपलब्धि एकर बहुवचनता अछि। ई पुस्तक आधुनिक मैथिली साहित्यकेँ केवल “कविता-कथा”क संकुचित अर्थमे नहि, प्रत्युत एक सम्पूर्ण सांस्कृतिक सार्वजनिक क्षेत्र रूपेँ देखबैत अछि। प्रेमशंकर सिंहक शोध-समालोचना, राजदेव मण्डलक सामाजिक उपन्यास, बेचन ठाकुरक नागरिक-चेतना सम्पन्न नाटक, कुसुम ठाकुरक स्मृति-गद्य, नेपाल-केन्द्रित राजनीतिक/पत्रकारीय लेख, संस्कारगीत-लोकगीत आ विशाल जनकाव्य—सभ मिलि भाषाक विविध कार्य देखबैत अछि।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · नाटक · कथा · कविता · सांस्कृतिक अध्ययन · स्मृति

रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-३

मूल संकलन: विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका · ISSN 2229-547X

आलोचनात्मक अध्ययन · शुद्ध मैथिली

समग्र साहित्यिक निष्कर्ष

“विदेह सदेह ३४”क सबसे पैघ उपलब्धि एकर बहुवचनता अछि। ई पुस्तक आधुनिक मैथिली साहित्यकेँ केवल “कविता-कथा”क संकुचित अर्थमे नहि, प्रत्युत एक सम्पूर्ण सांस्कृतिक सार्वजनिक क्षेत्र रूपेँ देखबैत अछि। प्रेमशंकर सिंहक शोध-समालोचना, राजदेव मण्डलक सामाजिक उपन्यास, बेचन ठाकुरक नागरिक-चेतना सम्पन्न नाटक, कुसुम ठाकुरक स्मृति-गद्य, नेपाल-केन्द्रित राजनीतिक/पत्रकारीय लेख, संस्कारगीत-लोकगीत आ विशाल जनकाव्य—सभ मिलि भाषाक विविध कार्य देखबैत अछि।

गद्य-खण्डक केन्द्रीय तनाव “परम्परा–आधुनिकता” नहि, प्रत्युत परम्परा आ आधुनिकताक जटिल सह-अस्तित्व अछि। एक दिस संस्कारगीत, गोनू झा, लोकविश्वास, विवाह आ ग्राम्य पंचैती; दोसर दिस सूचना-अधिकार, कोर बैंकिंग, इंटरनेट, मीडिया, राज्य पुनर्संरचना, चुनाव आ प्रवास। आधुनिकता परम्पराकेँ

मिटबैत नहि; दुनू एक-दोसरकेँ बदलैत, टकराइत आ पुनर्परिभाषित करैत अछि।

पद्य-खण्डमे भक्तिकाव्य, मिथिला-चेतना, प्रेम-विरह, सामाजिक व्यंग्य, जनकविता, पर्यावरण/बाढ़ि, परिवार, प्रवास, श्रम आ आधुनिक लघुरूप सभ उपस्थित अछि। कालीकांत झाक भक्ति-लोक-परिवारक विस्तृत संसार, राजदेव मण्डलक आधुनिक बिम्बात्मक कविता, राम विलास साहुक जनजीवन/हाइकू-प्रयोग, रामदेव "झारूदार"क लोक-व्यंग्य आ रामजी चौधरीक रागाधारित भजन-परम्परा पद्य-खण्डकेँ ऐतिहासिक विस्तार दैत अछि।

भाषिक दृष्टिसँ ई संकलन मानकीकृत "साफ-सुथर" मैथिली तक सीमित नहि। ग्राम्य उच्चारण, नेपालक मैथिली, पत्रकारिताक आधुनिक शब्द, अंग्रेजी/प्रशासनिक पद, संस्कृतनिष्ठ आलोचनात्मक भाषा, लोकगीतक स्त्री-वाणी, हास्यक देहधर्मी शब्दावली—सभ उपलब्ध अछि। एही विषमता केन्द्रीय भाषिक मूल्य अछि, कारण ई वास्तविक मैथिली प्रयोगक बहुस्तरीय अभिलेख बनैत अछि।

२. ग्राम, टोल आ सामाजिक यथार्थ

"हमर टोल", हेमचन्द्र झाक कथा, सतीश चन्द्र झाक "हमहूँ कहाँ बुझलियै", सुशांत झाक "अहां कोना रहै छी भौजी...", बेचन ठाकुरक "बाप भेल पित्ती", ऋषि वशिष्ठक "पूत कमाल" आ अनेक कविता ग्रामीण/अर्धनगरीय समाजक भीतर शक्ति-संबंध देखबैत अछि। गाम एतय नॉस्टैल्जिक स्वर्ग नहि; जाति, लिंग, विवाह, संपत्ति, बेरोजगारी, अफवाह, धार्मिक विश्वास आ सामाजिक प्रतिष्ठाक जटिल जाल अछि।

लोकभाषा एहि यथार्थकेँ विश्वसनीय बनबैत अछि। पात्र "मानक" गद्य नहि बजैत; ओ अपन वर्ग, उम्र, लिंग आ सम्बन्धक अनुसार शब्द चुनैत अछि। ई भाषिक असमानता साहित्यिक यथार्थवादक उपकरण बनैत अछि।

३. स्त्री-अनुभव, परिवार आ देखभाल

संकलनमे स्त्रीक उपस्थिति बहुरूपी अछि—लोकगीतक सामूहिक स्त्री-स्वर, घरेलू हिंसाक पीड़ा, विवाह/कन्यादानक संस्कार, "प्रत्यावर्तन"क प्रथम-पुरुष स्मृति, "हमर माय"क मातृ-स्मरण, "हम नहि छी अभिशाप"क आत्मसम्मान, "मिथिला क बेटी" सन सांस्कृतिक गीत।

विशेष रूपेँ "प्रत्यावर्तन" देखभालक अदृश्य श्रमकेँ साहित्यिक दृश्यता दैत अछि। बीमारीक समय दवा, डॉक्टर, यात्रा, रातिक जागरण आ भावनात्मक संयम—ई सभ घरेलू श्रमक गहिर रूप अछि। दोसरी ओर "हमहूँ कहाँ बुझलियै" आ "अहां कोना रहै छी भौजी..." सामाजिक हिंसाक सामान्यीकरण पर प्रश्न उठबैत अछि।

४. सीमापार मिथिला, नेपाल आ भाषा-अधिकार

शीतल झा, अतिश कुमार मिश्र, रामभरोस कापडि भ्रमर, श्यामसुन्दर शशि, सुजीत कुमार झा आदि लेखक नेपालक मधेश/मिथिला, राज्य पुनर्संरचना, रेल, सम्मेलन, महोत्सव, पत्रकारिता आ मैथिलीमे सपथक प्रश्न उठबैत छथि। एहि कारणेँ पुस्तक भारतीय राज्य-सीमा भीतर सीमित "क्षेत्रीय साहित्य" नहि, एक सीमापार भाषिक सार्वजनिक क्षेत्रक अभिलेख बनैत अछि।

भाषा एतय साहित्यिक माध्यम मात्र नहि, नागरिकता, प्रतिनिधित्व आ संस्थागत मान्यताक प्रश्न अछि। साहित्यक भीतर राजनीति प्रवेश करैत अछि, मुदा एहि प्रवेशक कारण भाषा अपने सामाजिक जीवनक वास्तविक स्वरूप प्राप्त करैत अछि।

५. लोकगीत, संस्कार आ मौखिक स्मृति

उमेश मंडल, जगदीश प्रसाद मंडल आ निशाप्रभा झाक लोक/संस्कारगीत खण्ड संकलनक अभिलेखीय मेरुदण्ड अछि। लिखित साहित्यक इतिहास प्रायः व्यक्तिगत लेखक आ पुस्तकक आधारपर बनैत अछि; लोकगीत एहि मॉडलकेँ चुनौती दैत अछि, कारण ओकर रचनाकार समुदाय अछि आ पाठ प्रदर्शनक साथ बदलैत रहैत अछि।

विवाह, जन्म, देवी-पूजा, ऋतु, रिश्तेदारी, माय-बेटी, पाहुन, खेत-घर—ई सभ लोकगीतक विषय मात्र नहि, सामाजिक ज्ञानक संरचना अछि। टेक आ पुनरावृत्ति स्मृति तकनीक अछि; लय सामूहिक भागीदारीक यन्त्र। एहि सामग्रीक संरक्षण भविष्यक भाषाविज्ञान, नृवंशसंगीत, स्त्री-अध्ययन आ लोकसाहित्य शोध लेल विशेष उपयोगी अछि।

६. हास्य-व्यंग्यक परम्परा

हरिमोहन झाक आलोचनासँ लऽ गोनू झा, कालीकांत झाक घरेलू हास्य, चन्द्रकान्त मिश्रक दारू-व्यंग्य, रामदेव "झारूदार"क जन-हास्य धरि हास्य संकलनक मूल ऊर्जा अछि। हास्य अनेक बेर सामाजिक रूढ़ि, पाखंड, भ्रष्टाचार, विवाहक अर्थव्यवस्था आ आत्म-मुग्धताकेँ तोड़बाक माध्यम बनैत अछि।

मैथिली हास्यक विशेषता परिचित भाषिक संसार अछि। व्यंग्य "बाहरक" वस्तुपर नहि, अपनहि समाज पर पड़ैत अछि; तेँ एहि हास्यमे आत्मालोचनाक नैतिक

क्षमता अछि। हरिमोहन झाक परम्पराक प्रभाव-विमर्श एहि व्यापक स्वरकेँ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि दैत अछि।

७. आधुनिक संस्था, तकनीक आ नागरिक जीवन

“अधिकार”, “भारतीय डाक”, “टेकनोलजी”, “कोर बैंकिंग”, “अन्हरजाली”, “सुरक्षित”, मालपोत कार्यालयक भ्रष्टाचार, समाचार-प्रसारण, चुनाव, रिपोर्ट—ई शीर्षक बतबैत अछि जे आधुनिक मैथिली साहित्य डिजिटल/प्रशासनिक शब्दावली सँ कतराइत नहि।

ई शब्द काव्यात्मक परम्परासँ बाहरक बुझाइ सकैत अछि, मुदा एही शब्दमे आजुक जीवन बसैत अछि। साहित्य जखन बैंक, इंटरनेट, आर.टी.आइ., मीडिया आ सरकारी योजना पर लिखैत अछि तखन भाषा अपन आधुनिक नागरिक शब्दकोश विकसित करैत अछि।

८. पद्यक रूप-विविधता आ प्रदर्शनशीलता

पद्य-खण्डमे मुक्त कविता, गीत, नचारी, वंदना, विरह, बाल कविता, गीत-नाटक, नौटंकी, हाइकू, शेनर्यू, टनका आ भजन एकसंग अछि। एहि विधागत बहुलता सँ स्पष्ट होइत अछि जे मैथिली काव्यक जीवन पुस्तक-पृष्ठ मात्र पर नहि, गायन, मंच, लोक-समारोह, प्रार्थना आ सार्वजनिक सभा तक पसरल अछि।

कालीकांत झा “बूच”, अशोक दत्त, रामदेव “झारूदार” आ रामजी चौधरीक रचना खास रूपेँ प्रदर्शनकारी अछि। लिखित पाठकेँ पढ़बाक संग ओकर सम्भावित धुन, टेक, मंचीय संबोधन आ सामूहिक प्रतिउत्तर कल्पना कएल जाए तखन काव्यक पूर्णता अधिक स्पष्ट होइत अछि।

९. अभिलेख, ई-पत्रिका आ साहित्यिक स्मृति

“विदेह सदेह ३४” मूलतः अंक १–३५० सँ चयनित रचनात्मक गद्य-पद्यक संकलन अछि। एहन संकलन ई-पत्रिकाक क्षणिक प्रकाशनकेँ दीर्घकालिक पुस्तक-स्मृतिमे बदलैत अछि। रामजी चौधरीक विस्मृत भजन, लोकगीत, रिपोर्टाज आ पाठकीय संदेश एकहि अभिलेखमे आबि सकनाइ डिजिटल प्रकाशनक विशेष शक्ति अछि।

अभिलेखीय संपादनक अगिला चरणमे मूल अंक, प्रकाशन-तिथि, विधा, लेखक परिचय, पाठ-संशोधनक स्तर आ संस्करण-इतिहासक मेटाडेटा जोड़ल जाए तँ शोध-उपयोगिता आरो बढ़त। तथापि वर्तमान रूप स्वयं मैथिली साहित्यक डिजिटल संरक्षणक महत्वपूर्ण आधार अछि।

भाग १ : गद्य-खण्डक लेखकवार सम्पूर्ण समीक्षा

गजेन्द्र ठाकुर

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): गजेन्द्र ठाकुर- बेचन ठाकुरक नाटक (पृ. २-६)

“बेचन ठाकुरक नाटक” केवल परिचयात्मक टिप्पणी नहि, मैथिली रंगमंचक मूल्यांकन-पद्धति पर प्रश्न करैत हस्तक्षेपकारी समालोचना अछि। पाठमे “बेटीक अपमान” आ “अधिकार”क प्रसंग लऽ नाटक, निर्देशक, संस्थागत समर्थन, दर्शक-वर्ग आ जातीय-सामाजिक विभाजनक प्रश्न एकहि आलोचनात्मक धरातलपर आबैत अछि। एहि कारणेँ आलेखक केन्द्र नाटकक कथानक मात्र नहि, प्रत्युत मैथिली नाट्य-संस्कृतिक सार्वजनिक जीवन अछि।

“अधिकार”क सूचना-अधिकार आ ग्रामीण योजनाक अनियमिततासँ जुड़ल प्रसंग लेखककेँ सामाजिक यथार्थ, अभिलेख, प्रतिरोध आ रंगमंचक सम्बन्ध पर विचार करबाक अवसर दैत अछि। शैली तीक्ष्ण, प्रत्यक्ष आ विवाद-सचेत अछि; व्यंग्य आ प्रश्नोक्ति आलोचनात्मक हथियार बनैत अछि। ई लेख संकलनक आरम्भमे एक प्रकारक घोषणापत्र-जकाँ काज करैत अछि—साहित्यकेँ संस्थागत प्रतिष्ठासँ बेसी सामाजिक उपयोगिता आ जीवित बहसक कसौटीपर परखबाक आग्रह।

डॉ. प्रेमशंकर सिंह

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): डॉ. प्रेमशंकर सिंह- मणिपद्मक कथा–यात्रा, हास्यव्यंग्य सम्राट प्रोफेसर हरिमोहन झा, हरिमोहन झाक रचनाक परवर्त्ती रचनाकर्मीपर प्रभाव (पृ. ७-५८)

“मणिपद्मक कथा–यात्रा” शोधपरक साहित्येतिहासक अनुकरणीय नमूना अछि। लेखक पत्र-पत्रिका, कथा-संग्रह, पूर्ववर्ती इतिहासकार आ कोशकारक उल्लेखक तुलनात्मक परीक्षण करैत मणिपद्मक कथा-सृजनक विस्तार पुनःस्थापित करैत छथि। पाठक सामने केवल प्रशंसात्मक चित्र नहि, स्रोत-भिन्नता, गलत वर्गीकरण, अनुपलब्ध कथा आ आलोचनात्मक उपेक्षाक समस्या सेहो अबैत अछि। एहि कारणेँ आलेख मैथिली कथाक इतिहास-लेखनक पद्धति पर सेहो टिप्पणी बनि जाइत अछि।

“हास्यव्यंग्य सम्राट प्रोफेसर हरिमोहन झा”मे हास्यकेँ हलुक मनोरंजन नहि, सामाजिक आत्मालोचनाक गंभीर साधन मानल गेल अछि। “कन्यादान”, “द्विरागमन”, “प्रणम्य देवता” आदि रचनाक उदाहरणसँ दहेज, विवाह-व्यवस्था, खाद्य-संस्कार, पांडित्य, रूढ़ि आ आधुनिकताक टकराहट देखाओल गेल अछि। उद्धरण-आधारित विश्लेषण आलेखकेँ ठोस बनबैत अछि। साहित्य अकादेमीक प्रकाशन-सूची आ हरिमोहन झा-विषयक संगोष्ठी-सामग्री सेहो हुनकर हास्य-व्यंग्यक केन्द्रीय स्थानकेँ स्वतंत्र रूपेँ पुष्ट करैत अछि।

“हरिमोहन झाक रचनाक परवर्त्ती रचनाकर्मीपर प्रभाव” प्रभाव-अध्ययनक दृष्टिसँ महत्वपूर्ण अछि। एतय प्रभावक अर्थ नकल नहि, प्रत्युत हास्य-विन्यास, मिथिला-समाजक स्व-आलोचना, संवादधर्मी गद्य आ रूढ़ि-विच्छेदनक परम्पराक विस्तार अछि। तीनू आलेख मिलि प्रेमशंकर सिंहक आलोचना-स्वरूप—अभिलेखीय खोज, पाठ-समीक्षा, इतिहास-बोध आ सामाजिक अर्थ-निर्णय—स्पष्ट करैत अछि।

मिथिलेश कुमार झा

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): मिथिलेश कुमार झा- समय—संकेत, “हम मैथिल” (मैथिली त्रैमासिक) पत्रिकाक लोकार्पण, “संपर्क”क मासिक बैसार (पृ. ५९-६२)

“समय—संकेत”, “हम मैथिल” पत्रिकाक लोकार्पण आ “संपर्क”क मासिक बैसार—ई तीनू रचना साहित्यिक सार्वजनिक क्षेत्रक दस्तावेजी गद्य अछि। सभामे उपस्थित व्यक्ति, कार्यक्रम, वक्तव्य आ सांस्कृतिक गतिविधिक अंकन सँ तत्कालीन मैथिली साहित्य-जगतक जीवित नेटवर्क उभरैत अछि।

एहि गद्यक मूल्य कथानक-निर्माणमे नहि, समय-साक्ष्य बनबामे अछि। रिपोर्टाजक संक्षिप्तता, नाम-स्थानक ठोस उपस्थिति आ कार्यक्रमक क्रम भविष्यक साहित्येतिहास लेल प्राथमिक सामग्री बनि सकैत अछि। एहि खण्डमे “घटना” स्वयं साहित्यिक संस्थानक इतिहास बनैत अछि।

हेमचन्द्र झा

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): हेमचन्द्र झा- अग्रसोची, गोनू झाक पंचैती, साढ़े तीनो लाख, एना किएक?, कुंठा, मास्टर साहेब नहि रहलाह (पृ. ६३-९१)

“अग्रसोची”, “गोनू झाक पंचैती”, “साढ़े तीनो लाख”, “एना किएक?”, “कुंठा” आ “मास्टर साहेब नहि रहलाह”मे कथा, लोक-हास्य, सामाजिक व्यंग्य आ मनोवैज्ञानिक संकेतक विविधता अछि। गोनू झा-परम्पराक कथा लोक-बुद्धि आ छल-प्रतिकारक रस जगबैत अछि, जखन कि दोसर रचना आधुनिक सामाजिक अपेक्षा, धन, प्रतिष्ठा, शिक्षा आ व्यक्तिगत संकोचक धरातल छूबैत अछि।

हेमचन्द्र झाक गद्यक मुख्य शक्ति कथोपकथन आ परिस्थिति-विन्यास अछि। ग्राम्य/मध्यवर्गीय अनुभवक भीतरसँ हास्य उपजैत अछि; उपदेश बाहरी रूपेँ थोपल नहि लगैत। “कुंठा” सन शीर्षक मानसिक दबावक संकेत दैत अछि, जखन “मास्टर साहेब नहि रहलाह” स्मृति आ सामाजिक सम्मानक भावभूमि तैयार करैत अछि। एहि समूहमे हास्य आ करुणा परस्पर विरोधी नहि, एक-दोसरकेँ गाढ़ करैत तत्व अछि।

उमेश मंडल

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): उमेश मंडल- संस्कार गीत (पृ. ९२-१९२)

“संस्कार गीत” एहि संकलनक गद्य-खण्डमे रहितो मूलतः मौखिक काव्य-संस्कृतिक विस्तृत अभिलेख अछि। जन्म, विवाह, पारिवारिक संस्कार, अनुष्ठान, देवी-देवता, स्त्री-स्वर, रिश्तेदारी आ सामुदायिक भागीदारीक गीत-परम्परा पाठक सामने लिखित रूपमे सुरक्षित होइत अछि।

एहि सामग्रीक साहित्यिक महत्त्व केवल “लोक-संग्रह” कहि सीमित नहि कएल जा सकैत अछि। लोकगीतमे पुनरावृत्ति, टेक, सामूहिक संबोधन, लयात्मक वाक्यरचना, घरेलू बिम्ब आ संस्कार-विशेषक शब्दावली मिलि मैथिली समाजक भाव-स्मृति रचैत अछि। विशेष रूपेँ स्त्रीक अनुभव—बेटीक विदाइ, माय-पिताक सम्बन्ध, विवाहक उल्लास-संकट—लोकधुनक सहारे सामुदायिक भाषामे परिणत होइत अछि।

संकलनक दीर्घ आकार स्वयं एक आलोचनात्मक तथ्य अछि: लोकसाहित्य “छोट” परिशिष्ट नहि, लिखित आधुनिक साहित्यक बराबर सांस्कृतिक विस्तार रखैत अछि। संपादनक दृष्टिसँ ई खण्ड शब्द-रूप, पुनरावृत्ति आ अनुष्ठानिक सन्दर्भ सहित संरक्षित होएबाक कारणेँ भाषावैज्ञानिक आ लोक-सांस्कृतिक अध्ययन लेल उपयोगी अछि।

जगदीश प्रसाद मंडल

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): जगदीश प्रसाद मंडल- संस्कार गीत/ लोक गीत नाद (पृ. १९३-२००)

“संस्कार गीत/ लोक गीत नाद” उमेश मंडलक विस्तृत लोकगीत-संग्रहक बाद एक दोसर स्वर खोलैत अछि। “नाद” शब्द महत्वपूर्ण अछि: गीतक अर्थ केवल लिखित पंक्ति नहि, सामुदायिक ध्वनि, आवृत्ति, गान-परिस्थिति आ स्मृति अछि।

रचना लोककाव्यक सौन्दर्यशास्त्र बुझबाक आग्रह करैत अछि—टेक, लय, सहज उपमा, घरेलू प्रतीक आ सामूहिक संबोधन। एतय व्यक्तिगत कवि-अहं कमजोर आ समुदाय प्रमुख अछि; एहि अर्थमे लोकगीत आधुनिक व्यक्तिकेन्द्रित कवितासँ भिन्न काव्य-दृष्टि प्रस्तुत करैत अछि।

पन्ना झा

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): पन्ना झा- असामान्य के (पृ. २०१-२०९)

“असामान्य के” शीर्षके प्रश्नात्मक अछि आ कथा सामान्य/असामान्यक सामाजिक परिभाषाकेँ चुनौती दैत अछि। पाठमे आत्मीय निरीक्षण, परिस्थितिक असुविधा आ मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया कथाक तनाव रचैत अछि।

रचनाक आलोचनात्मक मूल्य एहि बातमे अछि जे मनुष्यकेँ तैयार सामाजिक श्रेणीमे राखबाक प्रवृत्तिपर प्रश्न उठैत अछि। कथा पाठककेँ निर्णय देबाक जल्दीसँ रोकैत, व्यवहार आ संवेदनाक सूक्ष्म स्तरपर नजरि देबाक कहैत अछि।

शीतल झा

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): शीतल झा- नेपालमे मघेशीकेँ समस्या आ सामाधान! (पृ. २१०-२२४)

“नेपालमे मघेशीकेँ समस्या आ सामाधान!” साहित्यिक-राजनीतिक निबन्धक रूपमे सीमापार मैथिली सार्वजनिक जीवनक महत्वपूर्ण दस्तावेज अछि। भाषा, प्रतिनिधित्व, नागरिकता, क्षेत्रीय असमानता आ राज्य-व्यवस्थाक प्रश्न एहि आलेखक मूल धरातल अछि।

शैली तर्कप्रधान आ प्रत्यक्ष अछि। लेखक भावनात्मक पहिचानकेँ राजनीतिक संरचनासँ जोड़ैत छथि; फलतः “मधेश” केवल भूगोल नहि, अधिकार-विमर्शक श्रेणी बनैत अछि। साहित्यिक संकलनमे एहि प्रकारक आलेखक उपस्थिति ई बतबैत अछि जे मैथिली गद्य अपन सांस्कृतिक क्षेत्रक राजनीतिक प्रश्नसँ पृथक नहि अछि।

अतिश कुमार मिश्र

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): अतिश कुमार मिश्र- नेपालक राज्य पुनर्संरचना मे मिथिला आ मैथिली (पृ. २२५-२३०)

“नेपालक राज्य पुनर्संरचना मे मिथिला आ मैथिली” पहचान, भाषा आ संघीय/प्रशासनिक पुनर्गठनक प्रश्नकेँ एकहि विमर्शमे रखैत अछि। आलेखक महत्व एहि बातमे अछि जे राज्य-सीमा आ भाषिक-सांस्कृतिक क्षेत्रक अन्तर स्पष्ट होइत अछि।

मिथिला आ मैथिलीकेँ केवल अतीतक गौरवक प्रतीक न मानि समकालीन शासन-रचनामे स्थान देबाक आग्रह निबन्धकेँ राजनीतिक आधुनिकतासँ जोड़ैत अछि। तर्कक केन्द्र सांस्कृतिक वैधता, जन-प्रतिनिधित्व आ भाषिक अधिकार अछि।

रामभरोस कापडि भ्रमर

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): रामभरोस कापडि भ्रमर- एहि बेर सातम् अन्तराष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन काठमाण्डूमे हयत, जनकपुरमे मिथिला महोत्सवक आयोजनः नवअध्यायक शुभारंभ (पृ. २३१-२४३)

काठमाण्डूमे सातम अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन आ जनकपुरक मिथिला महोत्सव विषयक दू रचना सांस्कृतिक पत्रकारिता आ संस्थागत इतिहासक दस्तावेज अछि। कार्यक्रम, आयोजन-कल्पना, प्रदर्शनी, लोककला, भेषभूषा, खानपान, पाण्डुलिपि आ लोकगाथा—सभकेँ एक समेकित मिथिला-संस्कृति रूपेँ देखाओल गेल अछि।

एहि लेखनमे “महोत्सव” मनोरंजन नहि, सांस्कृतिक स्व-प्रतिनिधित्वक मंच बनैत अछि। आधुनिक नगरीय आयोजन आ परम्परागत लोक-संसाधनक संगम सीमापार मैथिली पहिचानक सार्वजनिक रूप सामने आनैत अछि।

श्यामसुन्दर शशि

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): श्यामसुन्दर शशि- जनकपुरके खवरि- रेल

सेवा बन्द । नेपाल सरकार कानमे तेल तूर धऽ सूतल, शहीद धोषणामे सेहो 'मूह देखि मुंगवा' (पृ. २४४-२४९)

जनकपुरक रेल सेवा बन्द आ शहीद-घोषणा विषयक रिपोर्ट सभ पत्रकारिताक तीक्ष्ण, लोकभाषिक रूप अछि। शीर्षकमे विडम्बना आ लोकप्रयुक्त मुहावरा पाठककेँ तुरन्त सामाजिक असन्तोषक वातावरणमे लऽ जाइत अछि।

रचनाक शक्ति प्रत्यक्ष सार्वजनिक असर—आवागमन, रोजी-रोटी, प्रशासनिक उदासीनता—केँ ठोस घटना संग जोड़बामे अछि। ई गद्य साहित्य आ समाचारक बीचक सीमा पर अछि, मुदा भाषा आ दृष्टिकोण एकरा केवल सूचना नहि रहए दैत।

राजदेव मण्डल

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): राजदेव मण्डल- हमर टोल (उपन्यास) (पृ. २५०-३४२)

"हमर टोल" संकलनक प्रमुख दीर्घ गद्यकृति अछि। आरम्भेँ टोल, आस्था, भगत, लोकविश्वास, बाँझपनक सामाजिक कलंक, घरेलू हिंसा, जातीय पंचैती, शिक्षा, बेरोजगारी आ प्रेम/विवाहक तनाव एक विस्तृत ग्रामीण संसार रचैत अछि। संवादक बहुलता कथा-वाचनकेँ नाटकीय गति दैत अछि आ पात्रक सामाजिक स्थिति ओकर बोलीसँ खुलैत अछि।

उपन्यासक एक विशेष शक्ति सामुदायिक दृष्टि अछि: घटना एक व्यक्ति पर घटैत अछि, मुदा ओकर अर्थ टोलक चुगली, पंचैती, धार्मिक विश्वास, जाति-व्यवस्था आ पारिवारिक दबावसँ बनैत अछि। स्त्री-पात्रपर लगाओल आरोप आ हिंसाक दृश्य पितृसत्तात्मक नियंत्रणक कठोरता उजागर करैत अछि; एकहि समय लोकक प्रतिक्रिया भीतर प्रतिरोधक स्वर सेहो सुनाइत अछि।

"हमर टोल" ग्रामीण जीवनकेँ रमणीय चित्रमे सीमित नहि करैत। महँगाइ, रोजगार, शिक्षा, प्रशासन, आधुनिक आकांक्षा, शहरक आकर्षण आ पुरान सामाजिक मानदण्डक बीच टकराव लगातार उपस्थित अछि। एहि कारणेँ उपन्यास संक्रमणशील मिथिलाक सामाजिक उपन्यास रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि।

भाषिक स्तरपर मुहावरा, गारि, लोकोक्ति, धार्मिक उच्चारण आ घरेलू संबोधनक प्रचुरता स्थानीयता रचैत अछि। ई स्थानीयता सजावटी नहि; कथानकक सामाजिक तर्क एहि भाषिक रजिस्टरमे निर्मित अछि।

सुजीत कुमार झा

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): सुजीत कुमार झा- लघुकथा- चिड़ै, लघुकथा- धधकैत आगिः फुटैत कनोजरि, हारैत हारैत नेपाल पत्रकार महासंघक केन्द्रीय अध्यक्ष, नेपालमे मिथिला राज्य की सम्भव छैक?, सपथमे मैथिली (पृ. ३४३-३७३)

"चिड़ै" आ "धधकैत आगिः फुटैत कनोजरि" लघुकथाक संक्षिप्त संरचनामे प्रतीक, तनाव आ अन्तिम प्रभावपर जोर दैत अछि; दोसर तरफ नेपाल पत्रकार महासंघक चुनाव, मिथिला राज्यक सम्भावना आ मैथिलीमे सपथ विषयक लेख पत्रकारिता, राजनीति आ भाषा-अधिकारक सार्वजनिक विमर्श खोलैत अछि।

एकहि लेखकक रचनासमूहमे कल्पना आ पत्रकारिता साथ-साथ रहब उल्लेखनीय अछि। लघुकथा मानव-स्थिति केन्द्रीय करैत अछि, जबकि रिपोर्ट/टिप्पणी संस्थागत संरचना, प्रतिनिधित्व आ भाषिक प्रतीककेँ। एहि द्विविध लेखनसँ समकालीन मैथिली गद्यक बहुकार्यात्मकता स्पष्ट होइत अछि।

निमिष झा

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): निमिष झा- मैथिलीक युगद्रष्टा (पृ. ३७४-३७८)

"मैथिलीक युगद्रष्टा" व्यक्तित्व-केन्द्रित आलोचनात्मक/श्रद्धात्मक गद्य अछि। एहन रचनामे चुनौती ई रहैत अछि जे प्रशंसा तथ्यपर भारी नहि पड़ए; पाठ उपलब्धि, साहित्यिक दृष्टि आ ऐतिहासिक भूमिका जोड़बाक प्रयास करैत अछि।

रचना संकलनमे साहित्यकारक सार्वजनिक स्मृति निर्माणक उदाहरण अछि। व्यक्तित्व-लेखन साहित्येतिहासक कच्चा माल सेहो बनैत अछि, कारण ई समकालीन मूल्यांकनक तापमान देखबैत अछि।

आशीष चौधरी

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): आशीष चौधरी- २ टा बीहनि कथा (पृ.

३७९-३७९)

“२ टा बीहनि कथा” नाम स्वयं लघुतम कथारूपक घोषणाक समान अछि। “बीहनि” अर्थात बीज—अल्प आकारमे कथा-संभावना, संकेत आ पाठकक कल्पना पर भरोसा।

एहि प्रयोगक साहित्यिक महत्त्व रूप-संक्षेपमे अछि: कथ्यक सम्पूर्ण व्याख्या नहि, प्रत्युत संकेत देल जाइत अछि। डिजिटल/पत्रिकीय पाठ-संस्कृतिमे एहन सूक्ष्म कथारूप त्वरित पाठ आ दीर्घ प्रतिध्वनि दुनू सम्भव करैत अछि।

नवेन्दु कुमार झा

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): नवेन्दु कुमार झा- पचास वर्षक भेल प्रादेशिक समाचार एकांश- १९९३ मे प्रारंभ भेल छल मैथिली मे समाचारक प्रसारण, सताक प्राप्ति बनल भाजपाक उद्देश्य (पृ. ३८०-३८८)

प्रादेशिक समाचार एकांशमे मैथिली समाचार-प्रसारणक इतिहास विषयक लेख मीडिया-स्मृति संरक्षित करैत अछि; “सत्ताक प्राप्ति बनल भाजपाक उद्देश्य” राजनीतिक टिप्पणी सत्ता, सिद्धान्त आ अवसरवादक संबंधपर केन्द्रित अछि।

दुनू लेखकेँ जोड़ि देखल जाए तँ संचार-माध्यम आ राजनीति—आधुनिक सार्वजनिक जीवनक दू निर्णायक संस्था—सामने अबैत अछि। पहिल लेख भाषिक उपस्थिति के संस्थागत उपलब्धि रूपेँ देखैत अछि, दोसर सत्ता-राजनीतिक नैतिकताक आलोचना करैत अछि।

सतीश चन्द्र झा

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): सतीश चन्द्र झा- हमहूँ कहाँ बुझलियै (पृ. ३८९-३९३)

“हमहूँ कहाँ बुझलियै” आत्मकथ्य-जकाँ आरम्भ होइत सामाजिक कथा अछि। पाठमे विवाह, घरेलू मारि-पीट, स्त्रीक असुरक्षा आ स्मृति-जनित आत्मग्लानिक संकेत भेटैत अछि। कथावाचक जखन बीतल अनुभव पुनः देखैत अछि, तखन “बुझनाइ” नैतिक पुनरावलोकन बनि जाइत अछि।

रचनाक प्रभाव नाटकीय घटनासँ बेसी पछातिक बोधमे अछि। सामाजिक हिंसाकेँ “घरक बात” मानि अनदेखा करबाक प्रवृत्तिपर कथा अप्रत्यक्ष प्रश्न उठबैत अछि।

अनमोल झा

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): अनमोल झा- रिलेशन, अधिकार, युगान्त, अधिकार, चेतना, भारतीय डाक, युद्ध, टेकनोलजी, कोर बैंकिंग, अन्हरजाली, सुरक्षित (पृ. ३९४-४०४)

“रिलेशन”, “अधिकार”, “युगान्त”, पुनः “अधिकार”, “चेतना”, “भारतीय डाक”, “युद्ध”, “टेकनोलजी”, “कोर बैंकिंग”, “अन्हरजाली”, “सुरक्षित”—शीर्षक-सरणी स्वयं आधुनिक जीवनक बदलैत शब्द-संसार देखबैत अछि। सम्बन्ध आ अधिकारसँ लऽ बैंकिंग, प्रौद्योगिकी आ इंटरनेट धरि कथ्यक विस्तार समकालीन सामाजिक रूपान्तरणकेँ लघुकथामे पकड़बाक प्रयास अछि।

रचनासमूहक विशेषता विषयक विविधता आ संक्षिप्त व्यंग्यात्मक प्रहार अछि। आधुनिक सुविधा आ मानवीय दूरी, संस्थागत भाषा आ साधारण लोकक अनुभव, सुरक्षा आ असुरक्षा—ई विरोधाभास लघु आकारमे तेज प्रभाव उत्पन्न करैत अछि। एकहि शीर्षक “अधिकार”क पुनरावृत्ति सेहो अधिकार-विमर्शक विभिन्न प्रसंगक संकेत रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि।

दुर्गानन्द मंडल

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): दुर्गानन्द मंडल- लघुकथा- डाक्टर कर्मवीर (पृ. ४०५-४१२)

“डाक्टर कर्मवीर” लघुकथा पेशागत नैतिकता आ मानवीय जिम्मेवारीक प्रश्न खोलैत अछि। “कर्मवीर” नाम स्वयं चरित्रक नैतिक मूल्यांकनक संकेत दैत अछि, मुदा कथा नाम आ व्यवहारक सम्बन्धकेँ कसौटी पर राखैत अछि।

लघुकथाक रूपमे पात्र, स्थिति आ अन्तिम अर्थ-स्फोट प्रमुख रहैत अछि। रचना स्वास्थ्य-व्यवस्था/डाक्टरी पेशाकेँ सामाजिक विश्वासक दृष्टिसँ देखैत अछि, अतः व्यक्तिगत चरित्रक माध्यमसँ संस्थागत नैतिकता सामने अबैत अछि।

दयाकान्त

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): दयाकान्त- समीकरण, फार्मुला, तिरंगा (पृ. ४१३-४१६)

“समीकरण”, “फार्मुला” आ “तिरंगा” तीनू शीर्षक आधुनिक सार्वजनिक जीवनक प्रतीकात्मक शब्द अछि। पाठमे राजनीति, टिकट, प्रतिष्ठा आ सत्ता-संबंधक प्रसंग “समीकरण”क गणितीय रूपककेँ व्यंग्यात्मक अर्थ दैत अछि।

दयाकान्त अमूर्त शब्दकेँ सामाजिक कथा बनबैत छथि। “फार्मुला” तैयार उपाय/जुगाड़क मानसिकता पर संकेत करैत अछि; “तिरंगा” राष्ट्र-प्रतीक आ व्यवहारिक नैतिकताक दूरी जाँचबाक अवसर दैत अछि। संक्षिप्तता आ विडम्बना एहि समूहक मुख्य शिल्प अछि।

अमरेन्द्र यादव

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): अमरेन्द्र यादव- रिपोर्ट (पृ. ४१७-४२०)

“रिपोर्ट” शीर्षक दस्तावेजी भाषा आ मानवीय जीवनक बीच तनाव सम्भव करैत अछि। रिपोर्ट सामान्यतः तथ्य, आँकड़ा, निष्कर्षक निर्लिप्त शैली अछि; साहित्यिक उपयोगमे यही निर्लिप्तता करुण/व्यंग्यात्मक अर्थ ग्रहण करैत अछि।

रचना पाठककेँ ई प्रश्न दैत अछि जे मनुष्यक अनुभव कोनो प्रशासनिक “रिपोर्ट”मे पूर्ण रूपेँ समा सकैत अछि कि नहि। एहि प्रकारक रूपक आधुनिक संस्थागत जीवनक आलोचना बनैत अछि।

मनोज झा मुक्ति

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): मनोज झा मुक्ति- देशक अवस्था आ जनताक प्रवृति, महोत्तरीक मालपोतमे कर्मचारी मालामाल के करत कारवाही ?, रिपोर्ताज, चाँद के टुकडा, इज्जतिक खातिर (पृ. ४२१-४५३)

“देशक अवस्था आ जनताक प्रवृति”, महोत्तरीक मालपोत कार्यालयक भ्रष्टाचार-विषयक लेख आ “रिपोर्ताज” सार्वजनिक जीवनक आलोचनात्मक पत्रकारिता अछि; “चाँद के टुकडा” आ “इज्जतिक खातिर” साहित्यिक संवेदना आ सामाजिक कथा दिस बढ़ैत अछि।

एहि मिश्रित रचनासमूहमे लेखकक मुख्य रुचि सत्ता आ साधारण मनुष्यक दूरी अछि। प्रशासनिक भ्रष्टाचार, जन-व्यवहार, प्रतिष्ठा आ मानवीय इच्छा—सभ एकहि सामाजिक धरातलपर देखल गेल अछि। रिपोर्ताजक तथ्यात्मक गति आ कथात्मक अंशक भावात्मकता एक-दोसरकेँ पूरक बनबैत अछि।

सुशांत झा

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): सुशांत झा- अहां कोना रहै छी भौजी.... (पृ. ४५४-४५८)

“अहां कोना रहै छी भौजी....” घरेलू संबोधनक आत्मीयता सँ शुरू होइत अछि, मुदा पाठमे सासुरक वातावरण, अपमान, गारि आ स्त्रीक दैनन्दिन पीड़ा उभरैत अछि। “भौजी”क सामान्य कुशल-प्रश्न धीरे-धीरे सामाजिक असमानताक पर्दा खोलैत अछि।

रचनाक शक्ति घरेलू हिंसा/मानसिक उत्पीड़नकेँ बड़े भाषणमे नहि, परिचित पारिवारिक सम्बन्धक भीतर देखबामे अछि। पाठकक नैतिक असुविधा एहि तथ्यसँ बढ़ैत अछि जे हिंसा असामान्य घटना नहि, दिनचर्याक रूप ग्रहण कएने अछि।

कुसुम ठाकुर

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): कुसुम ठाकुर- प्रत्यावर्तन (पृ. ४५९-५७२)

“प्रत्यावर्तन” संकलनक एकटा विस्तृत आत्मकथात्मक/संस्मरणधर्मी गद्यकृति रूपेँ पढ़ल जाइत अछि। पाठमे यात्रा, परिवार, दाम्पत्य, सन्तान, नौकरीक स्थानान्तरण, बोमडिला-जकाँ दूरस्थ भूगोल, बीमारी, अस्पताल, मित्रता आ शोकक दीर्घ स्मृति-रेखा अछि। प्रथम-पुरुष कथन पाठकेँ तीव्र आत्मीयता दैत अछि।

कृतिक सबसे गहिर अंश रोग आ देखभालक अनुभव अछि। कैंसर-जकाँ गंभीर बीमारीक बीच जीवनसाथीक शारीरिक पीड़ा, दवा-समय, डॉक्टरक खोज, यात्राक अनिश्चितता आ देखभाल करनिहारक भीतरक भय क्रमशः खुलैत अछि। करुणा एतय भावुक सजावट नहि; दैनन्दिन श्रम—राति जगनाइ, दवा देनाइ, बाँह दबेनाइ—सँ निर्मित अछि।

“प्रत्यावर्तन” स्मृतिक शिल्पपर सेहो ध्यान खींचैत अछि। वर्तमानसँ अतीत दिस फेर-फेर घुरनाइ, स्थानक बदलाइ, परिवारक सदस्यक प्रवेश आ निजी प्रसंगक संचय जीवनकेँ रैखिक कथा नहि रहए दैत। शीर्षक एहि अर्थमे शारीरिक वापसीक संग स्मृतिमे प्रत्यावर्तनक रूपक बनैत अछि।

भाषा घरेलू, सीधी आ भाव-उद्गारपूर्ण अछि। एही सहजताक कारण निजी जीवन व्यापक पाठकीय अनुभवमे बदलैत अछि—विशेषतः प्रवास, पारिवारिक दायित्व, बीमारी आ हानि सन सार्वभौम प्रसंगमे।

बेचन ठाकुर

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): बेचन ठाकुर- बाप भेल पित्ती, अधिकार (पृ. ५७३-६६०)

“बाप भेल पित्ती” आ “अधिकार” मैथिली सामाजिक नाटकक दू भिन्न, मुदा परस्पर सम्बद्ध दिशा देखबैत अछि। पहिल नाटक परिवार, पुनर्विवाह, पीढ़ीगत सम्बन्ध, विवाह-संस्कार आ सामाजिक धारणा केन्द्रीय करैत अछि; संवाद-प्रधान संरचना आ दृश्य-विभाजन रंगमंचीय प्रदर्शनकेँ स्पष्ट ध्यानमे रखैत अछि।

“अधिकार” सूचना-अधिकार, ग्रामीण विकास-योजना, प्रशासनिक अनियमितता आ साधारण नागरिकक प्रतिरोधपर केन्द्रित अछि। वास्तविक सामाजिक समस्या नाटकक संघर्ष बनैत अछि; अतः मंच एतय मनोरंजनक स्थान नहि, नागरिक शिक्षा आ सवाल-जवाबक सार्वजनिक क्षेत्र बनैत अछि।

बेचन ठाकुरक नाटकक भाषा बोलचाल, ग्रामीण संबोधन आ तात्कालिक हास्यसँ चलैत अछि। पात्रक वर्ग, उम्र आ सम्बन्ध संवादक लयमे चिन्हल जाइत अछि। दृश्यगत गति, लोकभाषा आ सामाजिक विवादक मेल नाटककेँ पाठ्य आ प्रस्तुति—दुनू स्तरपर सक्रिय बनबैत अछि।

दूनू नाटक मिलि परिवारक “अधिकार” आ नागरिकक “अधिकार”क व्यापक अर्थक्षेत्र बनबैत अछि: घरक सत्ता, समाजक नियम, सरकारी संसाधन आ व्यक्ति-गरिमा—सभ पर प्रश्न उठैत अछि।

ऋषि वशिष्ठ

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): ऋषि वशिष्ठ- पूत कमाल (पृ. ६६१-६६९)

“पूत कमाल” शीर्षकमे लोककथात्मक हास्य आ परिवारक अपेक्षाक संकेत अछि। “पूत” पर समाजक गर्व/अपेक्षा आ “कमाल”क अतिशयोक्ति व्यंग्यक जमीन तैयार करैत अछि।

रचना पारिवारिक व्यवहार, पीढ़ीगत विसंगति आ सामाजिक प्रतिष्ठाकेँ हलुक किन्तु अर्थवान हास्यसँ देखैत अछि। लोकभाषिक संवाद एकरा कथ्यक निकट राखैत अछि।

देवांशु वत्स

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): देवांशु वत्स- बनभोज, बुल्लुक टॉफी, नताशा (पृ. ६७०-७०७)

“बनभोज”, “बुल्लुक टॉफी” आ “नताशा” तीनू शीर्षक बाल/युवा अनुभव, यात्रा, स्मृति आ मानवीय सम्बन्धक अलग-अलग संसार खोलैत अछि। लेखकक पृष्ठभूमि विज्ञान-कथा/चित्र-कथासँ सेहो जुड़ल बताओल गेल अछि, मुदा एहि संकलनक रचना साधारण जीवनक छोटे प्रसंगक संवेदनशील प्रस्तुति पर टिकल अछि।

“बनभोज” समूह-अनुभव आ प्रकृति, “बुल्लुक टॉफी” वस्तु/बाल-स्मृति, “नताशा” व्यक्ति-केन्द्रित भावभूमिक दिशा संकेत करैत अछि। सरल कथा-गति आ दृश्यात्मकता एहि रचनाक पाठकीयता बढ़बैत अछि।

भाग २ : पद्य-खण्डक लेखकवार सम्पूर्ण समीक्षा

सतीश चन्द्र झा

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): सतीश चन्द्र झा- चुनाव, भाषा आ राजनीति, भूखल पेट, पाँच साल, सत्यक जीत, गरीबक स्वर्ग, नव वर्ष, भाषा आ राजनीति, मैथिल, कविता आ कनियाँ, पंखहीन कल्पना, बुधनी, सृजन, कन्यादान, चानक प्रेम, सिंगरहारक फूल, सोनाक पिजरा (पृ. ७०९-७५७)

एहि विशाल पद्य-समूहमे “चुनाव”, “भाषा आ राजनीति”, “भूखल पेट”, “पाँच साल”, “सत्यक जीत”, “गरीबक स्वर्ग” सामाजिक-राजनीतिक चेतनाक

धारा बनबैत अछि; “नव वर्ष”, “मैथिल”, “कविता आ कनियाँ”, “पंखहीन कल्पना”, “बुधनी”, “सृजन”, “कन्यादान”, “चानक प्रेम”, “सिंगरहारक फूल”, “सोनाक पिजरा” निजी, सांस्कृतिक आ प्रतीकात्मक पक्ष खोलैत अछि।

सतीश चन्द्र झाक कविता प्रत्यक्ष संबोधन, लोकप्रचलित शब्दावली आ सामाजिक विडम्बना पर आधारित अछि। राजनीति पर लिखल कविता चुनावी वादा आ पाँच-वर्षीय चक्रकेँ व्यंग्यक विषय बनबैत अछि; गरीबी आ भूख अमूर्त विचार नहि, शरीरक यथार्थ अछि। प्रेम/कल्पना-विषयक कविता एहि कठोर सामाजिक स्वरकेँ कोमल प्रतिपक्ष दैत अछि।

सुबोध कुमार ठाकुर

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): सुबोध कुमार ठाकुर- आशा, जुग बदलि गेल, सुन्न लागए गाम, अधूरा प्रेम आर चान, नेनाक प्रश्न, सनेश, हम नहि छी अभिशाप, जीवन यात्रा, अओताह मन भावन (पृ. ७५८-७८०)

“आशा”, “जुग बदलि गेल”, “सुन्न लागए गाम”, “अधूरा प्रेम आर चान”, “नेनाक प्रश्न”, “सनेश”, “हम नहि छी अभिशाप”, “जीवन यात्रा”, “अओताह मन भावन”मे परिवर्तन, प्रवास/गामक रिक्तता, प्रेम, बाल-जिज्ञासा आ आत्मसम्मानक स्वर अछि।

एहि कवितामे गीतात्मक सरलता महत्वपूर्ण अछि। “सुन्न लागए गाम” आधुनिक विस्थापनक भाव व्यक्त करैत अछि, जखन “हम नहि छी अभिशाप” आत्म-प्रतिष्ठाक प्रतिरोधी कथन बनैत अछि। चान, गाम, सनेश, यात्रा—ई परिचित बिम्ब भावनाकेँ सुलभ बनबैत अछि।

विनीत ठाकुर

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): विनीत ठाकुर- जाढ़, नव वर्ष, अएनाके की मोल, गीत १-२, अभ्यागत, उठू मैथिल भेलै भोर (पृ. ७८१-७८७)

“जाढ़”, “नव वर्ष”, “अएनाके की मोल”, “गीत १-२”, “अभ्यागत”, “उठू मैथिल भेलै भोर”मे ऋतु, समय, मूल्य-बोध, आतिथ्य आ सामुदायिक जागरणक स्वर अछि। “जाढ़”मे देहगत अनुभूति लयक स्रोत बनैत अछि; “उठू मैथिल” सार्वजनिक आह्वानक काव्य-रूप।

रचनाक भाषा गीतगम्य आ बोलचालक निकट अछि। ऋतु-वर्णन आ सांस्कृतिक संबोधनक संग प्रेरक स्वर जोड़ल गेल अछि।

निशाप्रभा झा

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): निशाप्रभा झा- लोकगीत संकलन (पृ. ७८८-७९८)

“लोकगीत संकलन” व्यक्तिगत काव्य-लेखनसँ अलग श्रुति-परम्पराक संपादकीय संरक्षण अछि। गीतक सामूहिकता, टेक, स्त्री-स्वर, संस्कारिक प्रसंग आ पारिवारिक संबोधन मैथिली लोकजीवनक सांगीतिक स्मृति रचैत अछि।

एहि संकलनक आलोचना “कवि-व्यक्तित्व”क कसौटी पर नहि, संकलन-पद्धति, भाषिक रूप-संरक्षण आ सांस्कृतिक प्रतिनिधित्वक कसौटी पर होएबाक चाही। पाठ लिखित रूपमे मौखिक परम्पराक नाद सुरक्षित करबाक प्रयास अछि।

हिमांशु चौधरी

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): हिमांशु चौधरी- नियति, टप-टप नोर आ ज्वाला, आतङकक राजकुमार, पाथर, कथा, की भार सांठू, गीत (पृ. ७९९-८१०)

“नियति”, “टप-टप नोर आ ज्वाला”, “आतङकक राजकुमार”, “पाथर”, “कथा”, “की भार सांठू”, “गीत”मे करुणा, हिंसा, कठोरता आ आत्ममंथनक स्वर अछि। नोर/ज्वाला आ पाथर सन बिम्ब भावनात्मक विरोध रचैत अछि—द्रव पीड़ा आ कठोर संसारक विरोध।

कविता सीधा प्रतीकक सहारे अनुभव गाढ़ करैत अछि। “आतङकक राजकुमार” भयक राजनीतिक/सामाजिक रूपक दिस लऽ जाइत अछि, जखन “की भार सांठू” निजी अस्तित्वक बोझक प्रश्न बनैत अछि।

रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'- चाही हमरा

मिथिला, जय हिन्द! जय जय मिथिला!! (पृ. ८११-८१४)

“चाही हमरा मिथिला” आ “जय हिन्द! जय जय मिथिला!!” क्षेत्रीय आ राष्ट्रीय पहिचानकेँ विरोधी नहि, सहअस्तित्वशील रूपमे रखैत अछि। बारम्बार टेक आ घोषणात्मक शैली सामूहिक गायन/सभात्मक पाठ लेल उपयुक्त अछि।

मिथिला एतय केवल भूगोल नहि, भाषा, संस्कृति, आत्मसम्मान आ राजनीतिक आकांक्षाक प्रतीक अछि। राष्ट्रक संग क्षेत्रीय अस्मिताक संयोजन कविताक प्रमुख वैचारिक बिन्दु अछि।

अजित कुमार मिश्र

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): अजित कुमार मिश्र- अप्पन माटि, नववर्ष (पृ. ८१५-८१७)

“अप्पन माटि” आ “नववर्ष”मे भूमिसँ आत्मीयता आ समयक नवीनीकरणक भाव अछि। “माटि” जन्मभूमि, श्रम, स्मृति आ पहचानक संक्षिप्त किन्तु शक्तिशाली प्रतीक बनैत अछि।

कविताक स्वर सरल, गीतात्मक आ उत्सवी अछि; नववर्षक आशा “अप्पन माटि”क जड़सँ जुड़ि भविष्य दिस बढ़ैत अछि।

दयाकान्त

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): दयाकान्त- हे मैथिल आबो जागु, ई बुढिया अछि हक्कल डइन, बाढ़ि, माँ मिथिला ताकय संतान (पृ. ८१८-८२५)

“हे मैथिल आबो जागु”, “ई बुढिया अछि हक्कल डइन”, “बाढ़ि”, “माँ मिथिला ताकय संतान”मे सामाजिक जागरण, लोक-चरित्र, प्राकृतिक आपदा आ मातृभूमि-चिन्ता चारि अलग स्वर उपस्थित अछि।

आह्वानात्मक कविता सामुदायिक चेतना बनबैत अछि; “बाढ़ि” मिथिलाक भौगोलिक पीड़ाकेँ काव्य-विषय करैत अछि; “डइन” शीर्षक लोकविश्वास/सामाजिक धारणा पर व्यंग्य/चित्रणक संभावना खोलैत अछि। “माँ मिथिला” रूपक भाषिक-सांस्कृतिक उत्तरदायित्वक भाव जगबैत अछि।

मिथिलेश कुमार झा

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): मिथिलेश कुमार झा- खब्बरदार, आजाद गजल (पृ. ८२६-८२७)

“खब्बरदार” चेतावनीक सार्वजनिक स्वर अछि, जबकि “आजाद गजल” गजल-विधाक भीतर स्वतंत्र भाव-प्रयोगक संकेत दैत अछि। छोट आकारक बावजूद दू रचनामे राजनीतिक/सामाजिक व्यंग्य आ गीतात्मक आत्मस्वरक विरोधी किन्तु पूरक दिशा अछि।

सन्तोष कुमार मिश्र

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): सन्तोष कुमार मिश्र- केकरा करु किलोल हो मिता (पृ. ८२८-८२९)

“केकरा करु किलोल हो मिता” लोकगीतधर्मी संबोधन, प्रश्नवाची टेक आ आत्मीय “मिता”क माध्यमसँ विरह/विसंगतिक भाव रचैत अछि। टेकक पुनरावृत्ति मौखिक गायनक लय उत्पन्न करैत अछि।

कालीकांत झा "बूच"

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): कालीकांत झा "बूच"- मातृवंदना, कपीश वंदना, आउ हमर हे राम प्रवासी, गौरी रहथु कुमारी, गै खुशबू , वंदना, हे तात, झूला, राधिकाक विलाप, करूण गीत, वेदना, उदासी, परिचय पात, जागू माँ आद्या, देसिल वयना क अस्तित्व, भैयाक विआह, नारि सुनू , चैती दुर्गा, गीत, हमर गाम, नवदुर्गा, रामावतार, डहकन, राघव सरकार, माथ पर धान, बुढ़ारी मे घीढ़ारी, सारिक पत्र पाहुनक नाम, राम बिना अवधपुरी, शिव शक्ति पूजन, विरहिनी, नचारी, गीत, गय नानी, हीरा-बेटी, स्वागत गान, मातृ गीत, सोन दाइ,

हील हाइ-हाइ, मिथिला क बेटी, जेठी करेह, ऊँ नमः शिवाय, मणिद्वीपक महरानी, सरस्वती वंदना, भदैया होली, वनिवासक अंत, मिथिलाक दु:दशा, माला, जागरण गान, तोहर ठोर, नचारी, सुनू आब मन जेहन लगैए, गहवर जननी केर, भगवती वंदना, भौजीक अवाहन, स्वप्न सुन्दरि, कचोट, श्रृंगार वा वैराग्य, अकाल, नोर, श्रावणी, गामे मोन पड़ैए, भगतालाभ, सिया सँ रामक परतर, गौरी बनलि जोगिनिया, काली रूप वर्णन, चलि अबियौ पटना सँ गाम, पहुना, बेटी बनलि पहाड़, हमर जिनगी, मुन्ना कक्का सासुर चलला, नोतक प्रेमी, अप्पन मिथिला, अय काकी, संशय, युग परिवर्तन, वसन्ते-बिरहिनी, दीनक नेना, पतनी व्रता, अन्हर मारि, उद्यनाचार्य, काटरक परिणाम, कवि कोकिल - विद्यापति, रौ घुरना, एक पर सँ एक, अजुकी दाइ, श्री राम केवट संवाद, राधा विरह, विरक्ति, कमौतिन भौजी, कन्यादान, पोताक अट्ठहास (पृ. ८३०-९७२)

कालीकांत झा “बूच”क विशाल पद्य-संसार एहि संकलनक भीतर अपनेमे एक लघु-संग्रह अछि। “मातृवंदना”, “कपीश वंदना”, “गौरी रहथु कुमारी”, “चैती दुर्गा”, “नवदुर्गा”, “रामावतार”, “शिव शक्ति पूजन”, “ऊँ नमः शिवाय”, “मणिद्वीपक महरानी”, “सरस्वती वंदना”, “भगवती वंदना”, “काली रूप वर्णन” आदि भक्तिधारा रचैत अछि; “राधिकाक विलाप”, “विरहिनी”, “नचारी”, “सिया सँ रामक परतर”, “गौरी बनलि जोगिनिया”, “राधा विरह” मिथिला-वैष्णव/शाक्त-शैव सांस्कृतिक स्मृति सँ संवाद करैत अछि।

एहि भक्तिधाराक समानान्तर “हमर गाम”, “मिथिला क बेटी”, “मिथिलाक दु:दशा”, “गामे मोन पड़ैए”, “चलि अबियौ पटना सँ गाम”, “अप्पन मिथिला”, “दीनक नेना”, “अन्हर मारि”, “काटक परिणाम”, “युग परिवर्तन” सामाजिक/ग्रामीण यथार्थ खोलैत अछि। एहि कारणेँ कविक संसार केवल पूजा-पाठक गीत नहि; गाम, गरीबी, परिवार, विवाह, वृद्धावस्था आ सामाजिक परिवर्तन सेहो बराबर उपस्थित अछि।

“भैयाक विआह”, “माथ पर धान”, “बुढ़ारी मे घीढ़ारी”, “सारिक पत्र पाहुनक नाम”, “पहुना”, “मुन्ना कक्का सासुर चलला”, “कमौतिन भौजी”, “कन्यादान”, “पोताक अट्ठहास” लोकहास्य, घरेलू सम्बन्ध आ संस्कारक जीवन्त रजिस्टर अछि। कवि उच्च पुराणिक प्रतीकसँ सहज लोकभाषा धरि बिना संकोच चलैत छथि।

शिल्पतः नचारी, वंदना, गीत, विरह, संवाद, हास्यगीत—रूप-विविधता बहुत व्यापक अछि। टेक, अनुप्रास, लोकधुनक अनुकूलता आ प्रत्यक्ष संबोधन प्रमुख उपकरण अछि। “देसिल वयना क अस्तित्व” तथा “कवि कोकिल - विद्यापति”, “उद्यनाचार्य” सन रचना भाषा-साहित्यिक परम्पराक सचेत स्मरण करैत अछि।

कालीकांत झाक खण्डक समग्र मूल्य एहि सांस्कृतिक बहुलतामे अछि: धर्म, लोक, परिवार, मिथिला, हास्य, विरह, ऋतु आ सामाजिक आलोचना एकहि काव्य-जगतमे सहअस्तित्व रखैत अछि।

राजदेव मण्डल

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): राजदेव मण्डल- [आह ज्ञानक झंडा झाँपल अस्तित्व रहब अहीं सभक संग नदीक माछ बाट-बटोही सीमा परक झूला चीड़ीक जाति बाढ़िक चित्र- दिलक बोल अहिंसक वीर मनोवांछित चान परेमक अधिकार मधुर गीत सिर बिहून धड़ हथियारक सभा घातक गंध कुहेसक परदा युग्मक फाग-पत्री आगमन जाति बदलैत बाट भितरिया जानवर बाउल परक माछ कांध परक मुरदा मिझाइत दीया िहत-अहित प्रयास ऑफिसक भूत कठुआएल-रूप सुनगैत चिनगी अहॉंक अगवानीमे महत्वाकांक्षाक गाम एकटा चुप्पी छड़पटाइत लहाश रूसल धीया बसातक धुजिनी अदृश्य आगि- तीन मित्रक गपशप नव बिहार मुँहझप्पा टूटल बन्हन अढ़ाइ हाथक सांगि कानैत अधिकार आबद्ध हम पुन: उठब एकबेर दरपनक स्थिति मिलन बाध शिष्ट-अशिष्ट ढहैत महल अश्रुधार नाचैत भूत माय यत्न बघनखा रंगक खोज कंटकमय नवनीत लाज मिलन-बिछुड़न परिवारक गाछ त्रिशंकु अनमोल जिनगी मुनियाँक चिन्ता (बाल कविता) कथीक गाछ (बाल कविता) नेहाइपर लेखनी

झगड़लगौना पिशाच गाछक बलिदान हेराएल गाछक हिस्सा लाल ज्योति बीखक घैल पत्रोत्तर अन्हारक खेल नाचक बिखाद आँखिक प्रतीक्षा] (पृ. ९७३-१०८७)

राजदेव मण्डलक पद्य-संग्रह आधुनिक मैथिली मुक्त/अमित्राक्षर संवेदनाक विस्तृत क्षेत्र खोलैत अछि। “आह ज्ञानक झंडा”, “झाँपल अस्तित्व”, “रहब अहीं सभक संग”, “बाट-बटोही”, “सीमा परक झूला”, “जाति”, “बाढ़िक चित्र”, “अहिंसक वीर”, “परेमक अधिकार”, “हथियारक सभा”, “घातक गंध”, “कुहेसक परदा” आदि शीर्षक सामाजिक-राजनीतिक चेतना आ अस्तित्वबोधक संकेत दैत अछि।

दोसरी धारा “मनोवांछित चान”, “मधुर गीत”, “युग्मक फाग-पत्री”, “आगमन”, “मिलन”, “लाज”, “मिलन-बिछुड़न”, “अश्रुधार”, “आँखिक प्रतीक्षा” प्रेम, प्रतीक्षा आ भाव-संबंधक कविताक संसार रचैत अछि। सामाजिक कठोरता आ निजी कोमलता एक-दोसरकेँ संतुलित करैत अछि।

“ऑफिसक भूत”, “भितरिया जानवर”, “कांध परक मुरदा”, “एकटा चुप्पी”, “छड़पटाइत लहाश”, “मुँहझप्पा”, “ढहैत महल”, “नाचैत भूत”, “पिशाच” सन शीर्षक आधुनिक संस्थागत/मानसिक जीवनक विकृत रूपकेँ तीक्ष्ण रूपकमे बदलैत अछि। ई कविता प्रत्यक्ष नारासँ बेसी बिम्बक विसंगति पर भरोसा करैत अछि।

“मुनियाँक चिन्ता” आ “कथीक गाछ” बाल कविता रूपेँ अलग पाठक-वर्गक ओर संकेत करैत अछि; “परिवारक गाछ”, “गाछक बलिदान”, “हेराएल गाछक हिस्सा”मे गाछ जैविक वस्तुसँ बेसी परिवार, स्मृति आ पर्यावरणक रूपक बनैत अछि।

राजदेवक कविताक शक्ति विषयक व्यापकता आ छोट, अर्थगर्भी शीर्षकमे अछि। एहि खण्डकेँ एक समग्र आधुनिक काव्य-मानचित्र रूपेँ पढ़ल जाए तँ व्यक्ति, समाज, कार्यालय, हिंसा, प्रेम, गाम, प्रकृति आ भविष्यक चिंता एक-दोसरक भीतर गुंथल देखाइत अछि।

मनीष ठाकुर

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): मनीष ठाकुर- विरह गीत (पृ. १०८८-१०८९)

“विरह गीत” परम्परागत विरह-भावक आधुनिक पुनरावृत्ति अछि। गीतधर्मी लय, संबोधन आ अनुपस्थित प्रियक स्मृति भावकेँ प्रत्यक्ष बनबैत अछि। संक्षिप्तता एकर संगीतात्मक प्रभाव बढ़बैत अछि।

कुसुम ठाकुर

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): कुसुम ठाकुर- चुल बुली कन्या बनि गेलहुँ, अभिलाषा (पृ. १०९०-१०९१)

“चुल बुली कन्या बनि गेलहुँ” आ “अभिलाषा” स्त्री-अनुभवक दू चरण जकाँ पढ़ल जा सकैत अछि—बाल/युवा चंचलतासँ इच्छा, स्वप्न आ आत्मबोध दिस। सहज प्रथम-पुरुष स्वर कविता केँ आत्मीय बनबैत अछि।

चन्द्रकान्त मिश्र

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): चन्द्रकान्त मिश्र- खाथि साग-भात हगैथ पड़ोर, जागु-जागु मैथिल, पी-पी-पी दारु पी (पृ. १०९२-१०९६)

“खाथि साग-भात हगैथ पड़ोर”, “जागु-जागु मैथिल”, “पी-पी-पी दारु पी”मे लोकहास्य, जागरण आ व्यसन-व्यंग्यक मिश्रण अछि। पहिल शीर्षकक देहधर्मी हास्य अभिजन शिष्टताक सीमा तोड़ैत अछि; तेसर कविता मद्यपानक पुनरावृत्ति केँ ध्वन्यात्मक “पी-पी-पी”सँ व्यंग्य बनबैत अछि।

कवि लोकभाषाक निर्भीक प्रयोग करैत छथि। सामाजिक संदेश उपदेशक गम्भीरता सँ नहि, हास्य आ पुनरावृत्तिक माध्यमसँ अबैत अछि।

रघुनाथ मुखिया

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): रघुनाथ मुखिया- दूधक धार, छाँहक–सुआद, मनुक्खक सूखौंत, जमल शोणित, कालचक्र, कोशीक आगमन, एक सालमे तेरह महीना, बिखाह चाङुर, ई नेना, आइ पहिल बेर , दादागिरी, राजमहल (पृ. १०९७-१११६)

“दूधक धार”, “छाँहक–सुआद”, “मनुक्खक सूखौंत”, “जमल शोणित”, “कालचक्र”, “कोशीक आगमन”, “एक सालमे तेरह महीना”, “बिखाह चाङुर”, “ई नेना”, “आइ पहिल बेर”, “दादागिरी”, “राजमहल”मे प्रकृति, श्रम, समय, कोशी, गरीबी/शोषण, बाल-अनुभव आ सत्ता-विसंगतिक व्यापकता अछि।

बिम्ब ठोस ग्रामीण जीवनसँ अबैत अछि—दूध, छाँह, कोशी, चाङुर। “मनुक्खक सूखौंत” आ “जमल शोणित”क कठोर बिम्ब सामाजिक पीड़ा गाढ़ करैत अछि; “राजमहल” आ “दादागिरी” सत्ता-विमर्श दिस मोड़ दैत अछि।

अशोक दत्त

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): अशोक दत्त- कविता- आह्वान, गीत नाटक- इहो बच्चे छै (लए), नौटङ्की नाटक-नइँ आब नइँ (लए) १-२, गीत, कविता, गीत १२, शिव गीत, कविता- अहुरिया, कविता- सङ्केत, शिव गीत, कविता- अभियान, गीत (पृ. १११७-११३७)

“आह्वान”, गीत, कविता, शिव-गीत, “अहुरिया”, “सङ्केत”, “अभियान”क संग “इहो बच्चे छै” गीत-नाटक आ “नइँ आब नइँ” नौटङ्की-नाटक पद्य, संगीत आ रंगमंचक अन्तर्सम्बन्ध देखबैत अछि।

अशोक दत्तक रचना पढ़बाक संग गाओल/मंचित होएबाक मांग करैत अछि। लय, टेक, दृश्य-संकेत आ संवादक कारण ई लिखित कविता सँ बेसी प्रदर्शनकारी काव्य बनैत अछि। लोक-नाट्य “नौटङ्की”क प्रयोग आधुनिक सामाजिक विषयकेँ लोकमंचक ऊर्जा दैत अछि।

शीतल झा

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): शीतल झा- मुक्तक, बोकरे सन, शांति!!!, सब केव उदास रहैअ!, हमर संस्कारक गीत, कवि जी तबाह छथि (पृ. ११३८-११४४)

“मुक्तक”, “बोकरे सन”, “शांति!!!”, “सब केव उदास रहैअ!”, “हमर संस्कारक गीत”, “कवि जी तबाह छथि”मे व्यंग्य, उदासी, सामाजिक विसंगति आ आत्म-व्यंग्यक मिश्रण अछि। विस्मयादिबोधक चिह्न आ बोलचालक वाक्य कविता कें तात्कालिक आवाज दैत अछि।

“कवि जी तबाह छथि” साहित्यिक जीवनपर हास्यात्मक आत्मदृष्टि रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि, जखन “शांति!!!” शीर्षक स्वयं शांति आ तीव्रता बीच विडम्बना रचैत अछि।

डॉ. शेफालिका वर्मा

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): डॉ. शेफालिका वर्मा- हमर माय (पृ. ११४५-११४६)

“हमर माय” मातृ-स्मृतिक करुण गीत अछि। पाठमे माय दीया-जकाँ जीवन भरि इजोत देनिहार छवि रूपेँ उभरैत छथि; अन्ततः स्मृति, प्रार्थना आ वियोग एकठाम जुड़ैत अछि।

कविताक प्रभाव भाषा-विलासमे नहि, अनुभवक सच्चाइ आ संबंधक दीर्घकालिक ऋण-बोधमे अछि। “माय” व्यक्तिगत पात्र रहितो पाठकीय सामूहिक स्मृतिक केन्द्र बनि जाइत छथि।

धीरेन्द्र प्रेमर्षि

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): धीरेन्द्र प्रेमर्षि- फेर आबि गेल नवका साल (पृ. ११४७-११४८)

“फेर आबि गेल नवका साल” नववर्षक परम्परागत उल्लासकेँ पुनरावृत्ति आ आत्मपरीक्षणक संग जोड़ैत अछि। “फेर” शब्द समयक चक्रीयता पर जोर दैत अछि—नव वर्ष नवल अवसर अछि, मुदा बीतल अनुभवक हिसाब सेहो।

गीतात्मक पुनरावृत्ति एकरा सार्वजनिक पाठ/गायनक अनुकूल बनबैत अछि।

रामभरोस कापडि भ्रमर

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): रामभरोस कापडि भ्रमर- गीत १-२ (पृ. ११४९-११५०)

“गीत १-२” संक्षिप्त गीत-संरचनामे भाव, लय आ सामुदायिक संबोधनक गुण समेटैत अछि। लेखकक गद्य-रिपोर्टाजक तुलनामे एतय भाषा अधिक संकेंद्रित,

संगीतात्मक आ प्रतीकप्रधान होइत अछि।

मनीष झा "बौआभाई"

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): मनीष झा "बौआभाई"- ॠतुपति बसंत (पृ. ११५१-११५२)

“ॠतुपति बसंत” ॠतु-आगमनक स्वागत-गीत अछि। “स्वागत”क आवृत्ति, प्रकृतिक नवीनीकरण आ उल्लास बसंतक पारम्परिक काव्य-धाराकेँ आधुनिक सहज मैथिलीमे पुनर्जीवित करैत अछि।

मनोज कुमार मंडल

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): मनोज कुमार मंडल- जाहि प्रांत रहैत छी हम (पृ. ११५३-११५४)

“जाहि प्रांत रहैत छी हम” क्षेत्र, समाज आ स्व-पहिचानक गीतात्मक कथन अछि। शीर्षकक बारम्बार आवृत्ति ‘हम’क सामुदायिकता दृढ़ करैत अछि। कविता भूगोलकेँ जीवन-स्थितिसँ जोड़ैत अछि—प्रांत केवल नक्शा नहि, अनुभवक घर अछि।

नवीन कुमार "आशा"

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): नवीन कुमार "आशा"- अंतरकलह आ विचार, बैसल-बैसल सोची मनमे, हमरा भेटल, सुनू सुनाउ अपन खबरि, की लिखू तोरा लेल, नै बिसरलौं चारि साल, मस्ती करू यौ बौआ मस्ती करू, आव मोन करें कमाई, तोहर गोर गोर गाल ……, किया ने पावी तोहर टोन , अनामिका, हमहूँ तँ छी इंसान, अनाथ, एक दिन बाबु कहला हमरा, माँ छिन्नमस्तिका, दफ्तर, कोना बिसरू तोरा, करेजक प्यास, परी छी, माए बाबु .., आस, बाबा धामक रस्तामे कविता लिखाइत अछि, राखह माता पिताक ध्यान, की लिखू, अविस्मरणीय, कि जीवनक ई अछि सत्य (पृ. ११५५-१२०३)

नवीन कुमार “आशा”क रचनासमूह युवा भाव-जगतक विस्तृत डायरी जकाँ अछि। “अंतरकलह आ विचार”, “बैसल-बैसल सोची मनमे”, “हमरा भेटल”, “सुनू सुनाउ अपन खबरि”, “की लिखू तोरा लेल”, “नै बिसरलौं चारि साल”, “कोना बिसरू तोरा”, “करेजक प्यास”, “आस”, “अविस्मरणीय”, “कि जीवनक ई अछि सत्य” आत्मसंवाद, स्मृति, प्रेम आ जीवन-प्रश्नक धारा बनबैत अछि।

“मस्ती करू यौ बौआ मस्ती करू”, “आव मोन करें कमाई”, “दफ्तर” आधुनिक युवा जीवनक व्यावहारिक/हास्य पक्ष खोलैत अछि; “अनाथ”, “माए बाबु”, “राखह माता पिताक ध्यान” परिवार, करुणा आ नैतिक संबोधनक स्वर अछि। “माँ छिन्नमस्तिका” आ “बाबा धामक रस्तामे कविता लिखाइत अछि” धार्मिक/यात्रिक अनुभवकेँ व्यक्तिगत कविता बनबैत अछि।

भाषा सीधी, डायरीधर्मी आ भाव-उद्गारपूर्ण अछि। तकनीकी कसाव हमेशा लक्ष्य नहि; तत्काल अनुभूति लिखित करब मुख्य आवेग अछि। एहि कारणेँ समूह समकालीन युवा मैथिली लेखनक कच्चापन, आत्मीयता आ प्रयोगशीलता तीनूकेँ एकसंग दर्ज करैत अछि।

राम विलास साहु

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): राम विलास साहु- कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका (रथक चक्का उलटि चलै बाट) [अप्पन गप महगाइ कोइली कुहकै आमक डारि प्रीतक गीत गंजन कर्मक फल प्रेमक बान्ह जीबैत चलू बिसरल गीत जड़ैत दीप गामक नारी पियासल धरती चिंता-चिता मातृभूमि मिथिलाक अभिनंदन ई की केलौं अहाँ केकरा संग खेलब होरी गाए-माए खेतिहरक जिनगी ज्ञानक दीप दुखाएल गंगा बेंगक बरियाती बलानक बाढ़ि पानिक बून्न हेराएल भगवान जीबए लेल चैताबर गीत चैती गीत प्रेमक भूखल मरूआक मान अरमान भारत माता परदेशी मोनक बात की कहब धनरोपनी लफंगा बेरोजगारी रूपैआक ढेरी भ्रष्टाचारी आएल वसन्त अप्पन-पराया बाट

बटोही हाटक चाउर बाटक पानि ज्ञान बाँटैत चलू प्रेम आकि पैसा कालक पहरा पियासल मन दहेजक खेल घर परदेश गहुमक कटनी-दौनी बिआह की थिक? आजुक दिन पुत्र कुपुत्र कतेक दुख काटब हरि हे बारहो मास सड़क बीच नाला आँखि रहितो आन्हर भाग भरोसे फूल-पत्ता भदबा बाबा बले फौदारी केकरा ले कानब परिवर्त्तन माइयक ममता परदेशिया पाहुन धरतीक सुख साओनक रित लोभी भोम्हरा भोरक क्षण गरीबक मान माए हमर गाम घर अगिलगी काली मैयाक गीत हमर िबखरल समाज िचड़ै चुनमुन्नी माइक लाल के गरीब? नैनाक खेल कोइली कूहकै आमक डारि नींदिया बैरी भेल पहुना पागल प्रेमी कोसीमे समाएल जिनगी हाइकू/ शेनर्यू/ टनका] (पृ. १२०४-१३४५)

राम विलास साहुक “रथक चक्का उलटि चलै बाट” शीर्षक अन्तर्गत कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका—रूपक असाधारण विस्तार अछि। “महगाइ”, “कर्मक फल”, “गामक नारी”, “पियासल धरती”, “खेतिहरक जिनगी”, “बेरोजगारी”, “भ्रष्टाचारी”, “दहेजक खेल”, “सड़क बीच नाला”, “अगिलगी”, “हमर बिखरल समाज”, “के गरीब?” सन रचना दैनन्दिन सामाजिक यथार्थक प्रत्यक्ष दस्तावेज अछि।

दोसरी धारा प्रकृति आ ऋतु अछि—“कोइली कुहकै आमक डारि”, “पानिक बून्न”, “चैती गीत”, “आएल वसन्त”, “साओनक राति”, “भोरक क्षण”, “फूल-पत्ता”, “धरतीक सुख”, “बलानक बाढ़ि”, “कोसीमे समाएल जिनगी”। प्राकृतिक बिम्ब सौन्दर्य मात्र नहि; बाढ़ि, कोसी, धरती आ कृषि मिथिलाक जीवन-अर्थव्यवस्था सँ जुड़ल अछि।

परिवार आ प्रवासक स्वर “माए”, “माइयक ममता”, “परदेशी”, “परदेशिया पाहुन”, “घर परदेश”, “पुत्र कुपुत्र”, “माइक लाल”, “नींदिया बैरी भेल पहुना”मे उभरैत अछि। प्रेम-गीतक संग श्रमगीत—“धनरोपनी”, “गहुमक कटनी-दौनी”—क उपस्थिति काव्यकेँ खेत-जीवनक लय सँ जोड़ैत अछि।

हाइकू/शेनर्यू/टनका प्रयोग मैथिलीमे लघु जापानी काव्यरूपक स्वदेशीकरणक प्रयास अछि। मुख्य प्रश्न मात्र अक्षर/मात्रा-गणना नहि, क्षण-बोध, व्यंग्यात्मक सूक्ष्मता आ प्रकृति-चित्रकेँ मैथिली अनुभवमे उतारब अछि। संकलनक भीतर रूप-विविधता कविक सतत प्रयोगधर्मिताक प्रमाण अछि।

राम विलास साहुक कविता अभिजन प्रतीकवादसँ दूर, पठनीय लोक-भाषा आ स्पष्ट नैतिक/सामाजिक चिंता पर टिकल अछि। एहि कारणेँ काव्य-संसार लोकगीत, जनकविता, पर्यावरणीय अनुभव आ आधुनिक लघुरूपक बीच सेतु बनबैत अछि।

रामदेव प्रसाद मण्डल “झारूदार”

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): रामदेव प्रसाद मण्डल “झारूदार”- अपन गप, प्रार्थना, गीत, झारू, महाझारू (हमरा बिनु जगत सुन्ना छै) (पृ. १३४६-१४२३)

“अपन गप”, “प्रार्थना”, “गीत”, “झारू”, “महाझारू (हमरा बिनु जगत सुन्ना छै)” मिलि एक विशिष्ट जनकाव्य-व्यक्तित्व रचैत अछि। “झारू” कवि-नाम मात्र नहि, काव्य-दृष्टिक रूपक अछि—समाजक मैल, पाखंड, अन्याय, आलस्य आ अव्यवस्था साफ करबाक लोकधर्मी आकांक्षा।

रचनामे उपदेश अछि, मुदा ई शास्त्रीय भाषणक रूपमे नहि; लोक-लय, तुक, कहबी, हास्य, आत्मपरिहास आ प्रत्यक्ष संबोधनक माध्यमसँ अबैत अछि। कवि स्वयं “झारूदार”क भूमिका ग्रहण करैत समाजक भीतरसँ बोलैत छथि, ऊपरसँ नहि।

“महाझारू”क विस्तार जनजीवनक अनेक विषय समेटैत अछि। दीर्घता लोककाव्यक प्रदर्शनकारी स्वभावसँ जुड़ल अछि—एक-एक प्रसंग श्रोता समुदाय सामने खुलैत, दोहराइत, व्याख्यायित होइत जा सकैत अछि। लिखित पाठमे ई मौखिक मंचीय ऊर्जा संरक्षित अछि।

साहित्यिक दृष्टिसँ ई खण्ड मैथिली जनकाव्यक महत्वपूर्ण उदाहरण अछि: भाषा सहज, उद्देश्य सामाजिक, शिल्प श्रुतिगम्य आ कवि-पहिचान स्वयं रूपकात्मक।

विस्मृत कवि

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७८-१९५२)- विविध भजनावली- १-४५ (पृ. १४२४-१४४३)

पं. रामजी चौधरीक “विविध भजनावली १-४५” संकलनकेँ ऐतिहासिक गहराई दैत अछि। विदेहक पुरान अभिलेखक अनुसार हुनकर पद्य राग-आधारित परम्परासँ जुड़ल छल आ भजन, महेशवाणी, प्रभाती, होली, ठुमरी आदि अनेक गेय रूपमे रचना उपलब्ध अछि। एहि कारणेँ भजनावलीकेँ केवल धार्मिक कविता नहि, मैथिली संगीत-काव्यक दस्तावेज रूपेँ पढ़बाक चाही।

रचनामे भक्ति व्यक्तिगत समर्पणक संग सांगीतिक संरचना अछि। राग/तालक स्मृति, टेक, विनय, देव-संबोधन आ नैतिक आत्मालोचना पद्यकेँ गायनपरक बनबैत अछि। लिखित पाठ मूल प्रदर्शन-परम्पराक संकेत मात्र अछि; ओकर पूर्ण अर्थ गायन-संस्कृतिसँ जुड़ल अछि।

“विस्मृत कवि” रूपमे पुनर्प्रकाशन स्वयं साहित्येतिहासक महत्वपूर्ण क्रिया अछि। आधुनिक ई-पत्रिका पुरान पाण्डुलिपि/परिवार-संरक्षित सामग्रीकेँ सार्वजनिक करैत अछि; एहि प्रकारेँ संग्रह आ आलोचना एकठाम इतिहास-पुनर्प्राप्तिक काज करैत अछि।

संदेश

रचना-सूची (मूल अनुक्रमानुसार): संदेश- (पृ. १४४४-१४५५)

“संदेश” खण्ड पारम्परिक अर्थमे सृजनात्मक रचना नहि, मुदा संकलनक ग्रहण-इतिहासक महत्वपूर्ण परिपाठ अछि। पाठकीय प्रतिक्रिया, लेखक/विद्वानक टिप्पणी आ पत्र-संवाद विदेहक आसपास बनल साहित्यिक समुदायक प्रत्यक्ष साक्ष्य दैत अछि।

आलोचनात्मक दृष्टिसँ एहन परिशिष्टक मूल्य बहुत अछि: ई बतबैत अछि जे रचना प्रकाशित भेलाक बाद कोना पढ़ल गेल, कोन विवाद/प्रशंसा उठल, आ डिजिटल मैथिली सार्वजनिक क्षेत्रमे पाठक-लेखक सम्बन्ध कोना बनल। साहित्यकेँ केवल “कृति” नहि, संवाद-प्रक्रिया मानबाक लेल ई खण्ड आवश्यक अछि।

भाग ३ : समेकित आलोचनात्मक अध्ययन

कथ्यक सामाजिक विस्तार

संकलनमे व्यक्ति-जीवन आ सार्वजनिक जीवनक दूरी बहुत कम अछि। विवाह, परिवार, बीमारी, प्रेम, माय, बेटी, गाम, टोल सन निजी अनुभव तुरन्त जाति, पितृसत्ता, अर्थव्यवस्था, शिक्षा, प्रशासन, प्रवास आ राज्यक प्रश्नसँ जुड़ि जाइत अछि। एही कारणेँ पुस्तकक यथार्थवाद केवल दृश्य-वर्णन नहि; सामाजिक संस्था आ निजी भावक अन्तर्सम्बन्धक यथार्थवाद अछि।

भाषा: मानकता सँ बेसी जीवित बहुलता

शुद्ध मैथिलीक आदर्शक संग संकलन जीवित प्रयोगक असंख्य स्तर सुरक्षित करैत अछि। लेखक-विशेषक वर्तनी, नेपालक प्रयोग, ग्रामीण शब्द, अंग्रेजी तकनीकी पद, संस्कृतनिष्ठ आलोचनात्मक गद्य, लोकगीतक प्राचीन रूप—सभ एकर ऐतिहासिक सामग्री अछि। भविष्यक संपादित संस्करणमे पाठ-मानकीकरण कएल जाए तँ मूल रूपक समानान्तर अभिलेख अवश्य राखल जाए, नहि तँ भाषिक इतिहासक साक्ष्य नष्ट भऽ सकैत अछि।

रूप आ विधाक लोकतन्त्र

एकहि संकलनमे शोध-लेख आ जनकविता, उपन्यास आ संदेश, भजन आ कोर-बैंकिंग विषयक लघुकथा, लोकगीत आ रिपोर्टाज—ई साथ रहब साहित्यक लोकतांत्रिक दृष्टि अछि। “उच्च” आ “लोक”, “साहित्य” आ “पत्रकारिता”, “पुरान” आ “डिजिटल”क सीमा तरल होइत अछि।

सम्पादनक उपलब्धि आ सम्भावित सुधार

संकलनक मुख्य उपलब्धि संरक्षण आ व्यापकता अछि। अगिला विद्वत् संस्करण लेल प्रत्येक रचनाक मूल अंक/तिथि, प्रथम प्रकाशनक लिंक, विधा-टैग, लेखकक एकरूप नाम, आवश्यक पाठ-संशोधन, अनुक्रमणिका आ विषय-सूचकांक जोड़ल जा सकैत अछि। पैघ पद्य-संग्रहमे कविता-वार पृष्ठ-सूची शोधक लेल विशेष उपयोगी होयत। ई सुझाव वर्तमान सामग्रीक कमी नहि, ओकर शोध-मूल्य आरो बढ़ेबाक दिशा अछि।

मैथिली साहित्येतिहासमे स्थान

“विदेह सदेह ३४”क महत्व कोनो एक “श्रेष्ठ” रचनाक कारणेँ नहि, प्रत्युत एक कालखंडक बहुविध लेखन एकठाम सुरक्षित करबाक कारणेँ अछि। एतय प्रतिष्ठित आलोचक, वरिष्ठ कवि, जनकवि, पत्रकार, लोकगीत-संग्रहकर्ता, नव लेखक, उपन्यासकार आ नाटककार एकहि अभिलेखमे सह-अस्तित्व रखैत छथि। ई सामाजिक विविधता भविष्यक साहित्येतिहासकेँ केवल पुरस्कार/पुस्तक-केन्द्रित सूचीसँ बाहर आबि पत्रिका-आधारित साहित्यिक जीवन बुझबाक आधार दैत अछि।

बाह्य शोध-सत्यापन आ संदर्भ

१. विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका, “पुस्तक/पोथी” सूची: विदेह:सदेह ३४ केँ “रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-३—अंक १-३५० सँ” रूपेँ सूचीबद्ध कएल गेल अछि। स्रोत: https://www.videha.co.in/pothi.htm (सत्यापन: २७ अगस्त २०२६)।

२. Sahitya Akademi, Annual Report 2020–2021: “Harimohan Jha O Rachanakar (Seminar Papers), Edited by Shankar Dev Jha” प्रकाशन सूचीमे दर्ज। स्रोत: https://sahitya-akademi.gov.in/aboutus/pdf/AR-2020-21.pdf

३. Sahitya Akademi publication catalogue: Harimohan Jha क "Beechhal Katha" प्रकाशन प्रविष्टि। स्रोत: https://sahitya-akademi.gov.in/publications/book-12.jsp

४. Tokyo University of Foreign Studies Academic Repository: "मैथिली नाटक ओ रंगमंच / प्रेमशंकर सिंह" पुस्तक-रिकॉर्ड; प्रकाशक मैथिली अकादमी। स्रोत: https://tufs.repo.nii.ac.jp/records/26825

५. B. R. Ambedkar Bihar University, Department of Maithili syllabus: Folk Literature इकाइमे Manipadma केर योगदान निर्दिष्ट। स्रोत: https://brabu.ac.in/Content/assets/img/Outcome-Objective/maithili.pdf

६. विदेह/भालसरिक गाछ अभिलेख: पं. रामजी चौधरी (१८७८–१९५२)क राग-आधारित पद्य, भजन, महेशवाणी, प्रभाती, होली आदि पर संपादकीय परिचय। स्रोत: https://gajendrathakur.blogspot.com/2008/07/1878-1952_27.html

७. प्राथमिक स्रोत (एहि समीक्षा लेल निर्णायक): Prelim_34.docx; sadeha_34.docx; Sadeha 34.pdf—उपयोगकर्ता-दत्त मूल फाइल।

परिशिष्ट : लेखक-रचना सम्पूर्णता सत्यापन-सूची

नीचाँ मूल अनुक्रमक प्रत्येक गद्य आ पद्य प्रविष्टि फेर यथावत् देल जा रहल अछि। एहि सूचीक उद्देश्य ई सुनिश्चित करब अछि जे समीक्षामे कोनो लेखक वा रचना-सूची छूटल नहि अछि।

गद्य-खण्ड

1. गजेन्द्र ठाकुर- बेचन ठाकुरक नाटक (पृ. २-६)

2. डॉ. प्रेमशंकर सिंह- मणिपद्मक कथा–यात्रा, हास्यव्यंग्य सम्राट प्रोफेसर हरिमोहन झा, हरिमोहन झाक रचनाक परवर्त्ती रचनाकर्मीपर प्रभाव (पृ. ७-५८)

3. मिथिलेश कुमार झा- समय—संकेत, "हम मैथिल" (मैथिली त्रैमासिक) पत्रिकाक लोकार्पण, "संपर्क"क मासिक बैसार (पृ. ५९-६२)

4. हेमचन्द्र झा- अग्रसोची, गोनू झाक पंचैती, साढ़े तीनो लाख, एना किएक?, कुंठा, मास्टर साहेब नहि रहलाह (पृ. ६३-९१)

5. उमेश मंडल- संस्कार गीत (पृ. ९२-१९२)

6. जगदीश प्रसाद मंडल- संस्कार गीत/ लोक गीत नाद (पृ. १९३-२००)

7. पन्ना झा- असामान्य के (पृ. २०१-२०९)

8. शीतल झा- नेपालमे मघेशीकेँ समस्या आ सामाधान! (पृ. २१०-२२४)

9. अतिश कुमार मिश्र- नेपालक राज्य पुनर्संरचना मे मिथिला आ मैथिली (पृ. २२५-२३०)

10. रामभरोस कापडि भ्रमर- एहि बेर सातम् अन्तराष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन काठमाण्डूमे हयत, जनकपुरमे मिथिला महोत्सवक आयोजनः नवअध्यायक शुभारंभ (पृ. २३१-२४३)

11. श्यामसुन्दर शशि- जनकपुरके खवरि- रेल सेवा बन्द । नेपाल सरकार कानमे तेल तूर धऽ सूतल, शहीद धोषणामे सेहो 'मूह देखि मुंगवा' (पृ. २४४-२४९)

12. राजदेव मण्डल- हमर टोल (उपन्यास) (पृ. २५०-३४२)

13. सुजीत कुमार झा- लघुकथा- चिड़ै, लघुकथा- धधकैत आगिः फुटैत कनोजरि, हारैत हारैत नेपाल पत्रकार महासंघक केन्द्रीय अध्यक्ष, नेपालमे मिथिला राज्य की सम्भव छैक?, सपथमे मैथिली (पृ. ३४३-३७३)

14. निमिष झा- मैथिलीक युगद्रष्टा (पृ. ३७४-३७८)

15. आशीष चौधरी- २ टा बीहनि कथा (पृ. ३७९-३७९)

16. नवेन्दु कुमार झा- पचास वर्षक भेल प्रादेशिक समाचार एकांश- १९९३ मे प्रारंभ भेल छल मैथिली मे समाचारक प्रसारण, सताक प्राप्ति बनल भाजपाक उद्देश्य (पृ. ३८०-३८८)

17. सतीश चन्द्र झा- हमहूँ कहाँ बुझलियै (पृ. ३८९-३९३)

18. अनमोल झा- रिलेशन, अधिकार, युगान्त, अधिकार, चेतना, भारतीय डाक, युद्ध, टेकनोलजी, कोर बैंकिंग, अन्हरजाली, सुरक्षित (पृ. ३९४-४०४)

19. दुर्गानन्द मंडल- लघुकथा- डाक्टर कर्मवीर (पृ. ४०५-४१२)

20. दयाकान्त- समीकरण, फार्मुला, तिरंगा (पृ. ४१३-४१६)

21. अमरेन्द्र यादव- रिपोर्ट (पृ. ४१७-४२०)

22. मनोज झा मुक्ति- देशक अवस्था आ जनताक प्रवृति, महोत्तरीक मालपोतमे कर्मचारी मालामाल के करत कारवाही ?, रिपोर्ताज, चाँद के टुकडा, इज्जतिक खातिर (पृ. ४२१-४५३)

23. सुशांत झा- अहां कोना रहै छी भौजी.... (पृ. ४५४-४५८)

24. कुसुम ठाकुर- प्रत्यावर्तन (पृ. ४५९-५७२)

25. बेचन ठाकुर- बाप भेल पित्ती, अधिकार (पृ. ५७३-६६०)

26. ऋषि वशिष्ठ- पूत कमाल (पृ. ६६१-६६९)

27. देवांशु वत्स- बनभोज, बुल्लुक टॉफी, नताशा (पृ. ६७०-७०७)

पद्य-खण्ड

1. सतीश चन्द्र झा- चुनाव, भाषा आ राजनीति, भूखल पेट, पाँच साल, सत्यक जीत, गरीबक स्वर्ग, नव वर्ष, भाषा आ राजनीति, मैथिल, कविता आ कनियाँ, पंखहीन कल्पना, बुधनी, सृजन, कन्यादान, चानक प्रेम, सिंगरहारक फूल, सोनाक पिजरा (पृ. ७०९-७५७)

2. सुबोध कुमार ठाकुर- आशा, जुग बदलि गेल, सुन्न लागए गाम, अधूरा प्रेम आर चान, नेनाक प्रश्न, सनेश, हम नहि छी अभिशाप, जीवन यात्रा, अओताह मन भावन (पृ. ७५८-७८०)

3. विनीत ठाकुर- जाढ़, नव वर्ष, अएनाके की मोल, गीत १-२, अभ्यागत, उठू मैथिल भेलै भोर (पृ. ७८१-७८७)

4. निशाप्रभा झा- लोकगीत संकलन (पृ. ७८८-७९८)

5. हिमांशु चौधरी- नियति, टप-टप नोर आ ज्वाला, आतङकक राजकुमार, पाथर, कथा, की भार सांठू, गीत (पृ. ७९९-८१०)

6. रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'- चाही हमरा मिथिला, जय हिन्द! जय जय मिथिला!! (पृ. ८११-८१४)

7. अजित कुमार मिश्र- अप्पन माटि, नववर्ष (पृ. ८१५-८१७)

8. दयाकान्त- हे मैथिल आबो जागु, ई बुढिया अछि हक्कल डइन, बाढ़ि, माँ मिथिला ताकय संतान (पृ. ८१८-८२५)

9. मिथिलेश कुमार झा- खब्बरदार, आजाद गजल (पृ. ८२६-८२७)

10. सन्तोष कुमार मिश्र- केकरा करु किलोल हो मिता (पृ. ८२८-८२९)

11. कालीकांत झा "बूच"- मातृवंदना, कपीश वंदना, आउ हमर हे राम प्रवासी, गौरी रहथु कुमारी, गै खुशबू , वंदना, हे तात, झूला, राधिकाक विलाप, करूण गीत, वेदना, उदासी, परिचय पात, जागू मॉ आद्या, देसिल वयना क अस्तित्व, भैयाक विआह, नारि सुनू , चैती दुर्गा, गीत, हमर गाम, नवदुर्गा, रामावतार, डहकन, राघव सरकार, माथ पर धान, बुढ़ारी मे घीढ़ारी, सारिक पत्र पाहुनक नाम, राम बिना अवधपुरी, शिव शक्ति पूजन, विरहिनी, नचारी, गीत, गय नानी, हीरा-बेटी, स्वागत गान, मातृ गीत, सोन दाइ, हील हाइ-हाइ, मिथिला क बेटी, जेठी करेह, ॐ नमः शिवाय, मणिद्वीपक महरानी, सरस्वती वंदना, भदैया होली, वनिवासक अंत, मिथिलाक दुःदशा, माला, जागरण गान, तोहर ठोर, नचारी, सुनू आब मन जेहन लगैए, गहवर जननी केर, भगवती वंदना, भौजीक अवाहन, स्वप्न सुन्दरि, कचोट, श्रृंगार वा वैराग्य, अकाल, नोर, श्रावणी, गामे मोन पड़ैए, भगतालाभ, सिया सॅ रामक परतर, गौरी बनलि जोगिनिया, काली रूप वर्णन, चलि अबियौ पटना सॅ गाम, पहुना, बेटी बनलि पहाड़, हमर जिनगी, मुन्ना कक्का सासुर चलला, नोतक प्रेमी, अप्पन मिथिला, अय काकी, संशय, युग परिवर्तन, वसन्ते-बिरहिनी, दीनक नेना, पतनी व्रता, अन्हर मारि, उद्यनाचार्य, काटरक परिणाम, कवि कोकिल - विद्यापति, रौ घुरना, एक पर सॅ एक, अजुकी दाइ, श्री राम केवट संवाद, राधा विरह, विरक्ति, कमौतिन भौजी, कन्यादान, पोताक अट्ठहास (पृ. ८३०-९७२)

12. राजदेव मण्डल- [आह ज्ञानक झंडा झाँपल अस्तित्व रहब अहीं सभक संग नदीक माछ बाट-बटोही सीमा परक झूला चीड़ीक जाति बाढ़िक चित्र- दिलक बोल अहिंसक वीर मनोवांछित चान परेमक अधिकार मधुर गीत सिर बिहून धड़ हथियारक सभा घातक गंध कुहेसक परदा युग्मक फाग-पत्री आगमन जाति बदलैत बाट भितरिया जानवर बाउल परक माछ कांध परक मुरदा मिझाइत दीया िहत-अहित प्रयास ऑफिसक भूत कठुआएल-रूप सुनगैत चिनगी अहॉक अगवानीमे महत्वाकांक्षाक गाम एकटा चुप्पी छड़पटाइत लहाश रूसल धीया बसातक धुजिनी अदृश्य आगि- तीन मित्रक गपशप नव बिहार मुँहझप्पा टूटल बन्हन अढ़ाइ हाथक सांगि कानैत अधिकार आबद्ध हम पुन: उठब एकबेर दरपनक स्थिति मिलन बाध शिष्ट-अशिष्ट ढहैत महल अश्रुधार नाचैत भूत माय यत्न बघनखा रंगक खोज कंटकमय नवनीत लाज मिलन-बिछुड़न परिवारक गाछ त्रिशंकु अनमोल जिनगी मुनियाँक चिन्ता (बाल कविता) कथीक गाछ (बाल कविता) नेहाइपर लेखनी झगड़लगौना पिशाच गाछक बलिदान हेराएल गाछक हिस्सा लाल ज्योति बीखक घैल पत्रोत्तर अन्हारक खेल नाचक बिखाद आँखिक प्रतीक्षा] (पृ. ९७३-१०८७)

13. मनीष ठाकुर- विरह गीत (पृ. १०८८-१०८९)

14. कुसुम ठाकुर- चुल बुली कन्या बनि गेलहुँ, अभिलाषा (पृ. १०९०-१०९१)

15. चन्द्रकान्त मिश्र- खाथि साग-भात हगैथ पड़ोर, जागु-जागु मैथिल, पी-पी-पी दारु पी (पृ. १०९२-१०९६)

16. रघुनाथ मुखिया- दूधक धार, छाँहक–सुआद, मनुक्खक सूखौंत, जमल शोणित, कालचक्र, कोशीक आगमन, एक सालमे तेरह महीना, बिखाह चाङुर, ई नेना, आइ पहिल बेर , दादागिरी, राजमहल (पृ. १०९७-१११६)

17. अशोक दत्त- कविता- आह्वान, गीत नाटक-इहो बच्चे छै (लए), नौटङ्की नाटक-नइँ आब नइँ (लए) १-२, गीत, कविता, गीत १२, शिव गीत, कविता-अहुरिया, कविता- सङ्केत, शिव गीत, कविता-अभियान, गीत (पृ. १११७-११३७)

18. शीतल झा- मुक्तक, बोकरे सन, शांति!!!, सब केव उदास रहैअ!, हमर संस्कारक गीत, कवि जी तबाह छथि (पृ. ११३८-११४४)

19. डॉ. शेफालिका वर्मा- हमर माय (पृ. ११४५-११४६)

20. धीरेन्द्र प्रेमर्षि- फेर आबि गेल नवका साल (पृ. ११४७-११४८)

21. रामभरोस कापडि भ्रमर- गीत १-२ (पृ. ११४९-११५०)

22. मनीष झा "बौआभाई"- ऋतुपति बसंत (पृ. ११५१-११५२)

23. मनोज कुमार मंडल- जाहि प्रांत रहैत छी हम (पृ. ११५३-११५४)

24. नवीन कुमार "आशा"- अंतरकलह आ विचार, बैसल-बैसल सोची मनमे, हमरा भेटल, सुनू सुनाउ अपन खबरि, की लिखू तोरा लेल, नै बिसरलौं चारि साल, मस्ती करू यौ बौआ मस्ती करू, आव मोन करें कमाई, तोहर गोर गोर गाल ......, किया ने पावी तोहर टोन , अनामिका, हमहूँ तँ छी इंसान, अनाथ, एक दिन बाबु कहला हमरा, माँ छिन्नमस्तिका, दफ्तर, कोना बिसरू तोरा, करेजक प्यास, परी छी, माए बाबु .., आस, बाबा धामक रस्तामे कविता लिखाइत अछि, राखह माता पिताक ध्यान, की लिखू, अविस्मरणीय, कि जीवनक ई अछि सत्य (पृ. ११५५-१२०३)

25. राम विलास साहु- कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका (रथक चक्का उलटि चलै बाट) [अप्पन गप महगाइ कोइली कुहकै आमक डारि प्रीतक गीत गंजन कर्मक फल प्रेमक बान्ह जीबैत चलू बिसरल गीत जड़ैत दीप गामक नारी पियासल धरती चिंता-चिता मातृभूमि मिथिलाक अभिनंदन ई की केलौं अहाँ केकरा संग खेलब होरी गाए-माए खेतिहरक जिनगी ज्ञानक दीप दुखाएल गंगा बेंगक बरियाती बलानक बाढ़ि पानिक बून्न हेराएल भगवान जीबए लेल चैताबर गीत चैती गीत प्रेमक भूखल मरूआक मान अरमान भारत माता परदेशी मोनक बात की कहब धनरोपनी लफंगा बेरोजगारी रूपैआक ढेरी भ्रष्टाचारी आएल वसन्त अप्पन-पराया बाट बटोही हाटक चाउर बाटक पानि ज्ञान बाँटैत चलू प्रेम आकि पैसा कालक पहरा पियासल मन दहेजक खेल घर परदेश गहुमक कटनी-दौनी बिआह की थिक? आजुक दिन पुत्र कुपुत्र कतेक दुख काटब हरि हे बारहो मास सड़क बीच नाला आँखि रहितो आन्हर भाग भरोसे फूल-पत्ता भदबा बाबा बले फौदारी केकरा ले कानब परिवर्त्तन माइयक ममता परदेशिया पाहुन धरतीक सुख साओनक रित लोभी भोम्हरा भोरक क्षण गरीबक मान माए हमर गाम घर अगिलगी काली मैयाक गीत हमर िबखरल समाज िचड़ै चुनमुन्नी माइक लाल के गरीब? नैनाक खेल कोइली कूहकै आमक डारि नींदिया बैरी भेल पहुना पागल प्रेमी कोसीमे समाएल जिनगी हाइकू/ शेनर्यू/ टनका] (पृ. १२०४-१३४५)

26. रामदेव प्रसाद मण्डल “झारूदार”- अपन गप, प्रार्थना, गीत, झारू, महाझारू (हमरा बिनु जगत सुन्ना छै) (पृ. १३४६-१४२३)

27. विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७८-१९५२)- विविध भजनावली- १-४५ (पृ. १४२४-१४४३)

28. संदेश- (पृ. १४४४-१४५५)

उपसंहार

“विदेह सदेह ३४” एकटा संग्रह मात्र नहि, मैथिली साहित्यक बहुस्तरीय सामाजिक अभिलेख अछि। एकर भीतर आलोचना अपन इतिहास खोजैत अछि, कथा टोलक सामाजिक तंत्र देखबैत अछि, नाटक नागरिक अधिकार मंचपर अनैत अछि, संस्मरण देखभाल आ शोकक निजी इतिहास लिखैत अछि, पत्रकारिता सीमापार राजनीति दर्ज करैत अछि, लोकगीत सामुदायिक स्मृति बचबैत अछि, आ कविता भक्ति सँ बैंकिंग/बेरोजगारी धरि अपन विषय-क्षेत्र पसारैत अछि।

संकलनक सर्वोपरि साहित्यिक मूल्य “बहुत रचना” होएब नहि, प्रत्युत अनेक प्रकारक मैथिली अनुभवकेँ एकहि अभिलेखमे स्थान देनाइ अछि। एहि बहुलता सँ आधुनिक मैथिली साहित्यक वास्तविक बनावट बुझाइत अछि—परम्परा, लोक, आधुनिकता, तकनीक, राजनीति, परिवार, धर्म, प्रेम, हास्य आ प्रतिरोधक सह-अस्तित्व।

एहि समीक्षाक निष्कर्ष ई अछि जे संकलनकेँ रचनात्मक गद्य-पद्यक साधारण संचयनक बदला शोध-स्रोत, साहित्यिक इतिहासक आधार-पाठ आ मैथिली सार्वजनिक संस्कृतिक दस्तावेज—तीनू रूपमे पढ़ल जाए।

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह सदेह ३४ — सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा

अध्याय 19 · विदेह सदेह ३५ — समग्र साहित्यिक समीक्षा

सारांश रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-४ विदेह पेटार अंक १-३५० सँ संकलित रचनासभक गहन पाठ, विधागत विश्लेषण आ समग्र

मूल्यांकन विदेह - प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर प्राथमिक पाठाधार: मूल गद्य-पद्य पाठ

अनुक्रम आ चित्रकला-पृष्ठ २. समग्र साहित्यिक परिदृश्य बहुस्वरीय संकलन संकलनक सबसँ पैघ विशेषता एकल ‘साहित्यिक’ स्वरक

अभाव अछि। एतय ग्रामीण कथा, नेपालक भाषा-राजनीति, जनकपुरक उत्सव, गजल-शास्त्र, लोकनाट्य, कोर्टक व्यंग्य, बालकविता, दहेज-

विरोध, पर्यावरण, चित्रकला आ साहित्यिक समारोह एकहि ग्रन्थमे सहअस्तित्व रखैत अछि। ई बहुस्वरता केवल अनेक लेखक नहि, अनेक

सामाजिक भाषाक संगम अछि—लोकभाषा, अकादमिक भाषा, पत्रकारिता, मंचीय बोली, धार्मिक/संस्कृतिक शब्दावली आ आधुनिक

अंग्रेजी-मिश्रित शब्द सभ परस्पर संवाद करैत अछि।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · लोक-संस्कृति · कथा · कविता · गजल · बाल-साहित्य

रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-४

विदेह पेटार अंक १-३५० सँ संकलित रचनासभक गहन पाठ, विधागत विश्लेषण आ समग्र मूल्यांकन

विदेह - प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर

प्राथमिक पाठाधार: मूल गद्य-पद्य पाठ, अनुक्रम आ चित्रकला-पृष्ठ

२. समग्र साहित्यिक परिदृश्य

बहुस्वरीय संकलन

संकलनक सबसँ पैघ विशेषता एकल ‘साहित्यिक’ स्वरक अभाव अछि। एतय ग्रामीण कथा, नेपालक भाषा-राजनीति, जनकपुरक उत्सव, गजल-शास्त्र, लोकनाट्य, कोर्टक व्यंग्य, बालकविता, दहेज-विरोध, पर्यावरण, चित्रकला आ साहित्यिक समारोह एकहि ग्रन्थमे सहअस्तित्व रखैत अछि। ई बहुस्वरता केवल अनेक लेखक नहि, अनेक सामाजिक भाषाक संगम अछि—लोकभाषा, अकादमिक भाषा, पत्रकारिता, मंचीय बोली, धार्मिक/संस्कृतिक शब्दावली आ आधुनिक अंग्रेजी-मिश्रित शब्द सभ परस्पर संवाद करैत अछि।

मिथिला: सीमा नहि, सांस्कृतिक क्षेत्र

भारत-नेपाल रेल, शपथ, जनकपुर, काठमाण्डू, महोत्तरी, राजविराज, निर्मली, सुपौल आ प्रवासी नगरसभ बारम्बार आबैत अछि। पुस्तकक भूगोल राष्ट्रसीमासँ अधिक ‘मिथिला सांस्कृतिक क्षेत्र’क रूपमे काम करैत अछि। प्रवास परम्पराकेँ समाप्त नहि करैत; मधुश्रावणी, कोहबर, पाग, विद्यापति स्मृति आ मिथिला चित्रकला नव स्थानमे पुनर्गठित होइत अछि।

लोक आ आधुनिकता

कथा-गद्य मे माटिक बासन, दही, आम, नाह, गहूमक बोरा, चौपाल, कीर्तन, पान, खेती आ लोकनाट्य जकाँ वस्तु/आचार अछि; संगहि मोबाइल, मल्टीनेशनल कम्पनी, क्रीम, ब्यूटी पार्लर, रेल, मीडिया सेन्टर, औद्योगिक निवेश, चुनाव, विदेश, पत्रकारिता आ महानगर अछि। पुस्तकक आधुनिकता परम्पराकेँ नष्ट करबाक रेखीय कथा नहि, बल्कि दुनूक संघर्ष, हास्य, संकरता आ पुनर्रचना थिक।

साहित्य आ सार्वजनिक जीवन

समाचार-रिपोर्ट, भाषण, संगोष्ठी, वार्तालाप, संस्था-वृत्तान्त आ समीक्षा रचनात्मक साहित्यक संग राखल गेल अछि। एहि सँ सौन्दर्य-मूल्यांकन जटिल होइत अछि, मुदा साहित्यिक सार्वजनिक क्षेत्रक इतिहास समृद्ध होइत अछि। पत्रिका-संस्कृति, समारोह, पुरस्कार, मंच, गोष्ठी आ भाषिक आन्दोलन बिना आधुनिक मैथिली साहित्यक पूर्ण इतिहास सम्भव नहि।

स्व-आलोचनात्मक संरचना

संकलनमे रचना मात्र नहि, रचनाक सिद्धान्त सेहो अछि—‘मैथिली गजल शास्त्र’, ‘मैथिली समीक्षाशास्त्र’, लघुकथा-विमर्श, नाट्य-विचार, बाल-काव्यधारा, समकालीन कविता समीक्षा आदि। विशेष रोचकता एतय अछि जे ‘आजाद गजल’ आ बहर-आधारित गजल-शास्त्र एकहि पुस्तकमे अछि; ई भिन्न मत साहित्यिक बहस रूपेँ संरक्षित अछि।

३. गद्य-खण्ड: रचनाकार-दर-रचनाकार समीक्षा

३.1. आशीष अनचिन्हार

रचनासभ: बिजनेसमे अप्पन नाम करितौं; पत्नीभक्त [मूल पृष्ठ २-७]

‘बिजनेसमे अप्पन नाम करितौं’ वस्तुतः संदीप कुमार साफीक ‘बैशाखमे दलानपर’क बहुखण्डीय लेखनपर आलोचनात्मक पाठ अछि। आत्मकथामे आत्म-महिमामण्डन आ चयनात्मक सत्यक विरुद्ध लेखकक आपत्ति समीक्षा-कर्मकेँ नैतिक धरातल दैत अछि। दलित आत्मकथाक अभाव, दहेज-व्यवस्था, गामक वर्ग-संरचना, व्यवसाय बनाम नौकरीक मानसिकता आ टटका लोक-बिम्बक चर्चा एकरा सामान्य पुस्तक-परिचयसँ आगाँ लऽ जाइत अछि। समीक्षक विशेष रूपेँ कविता-खंडक अनगढ़ बिम्ब-शक्ति चिन्हैत छथि आ रचनाकारक सम्भावना आ कमजोरी दुनू कहैत छथि; ई संतुलन लेखकेँ विश्वसनीय बनबैत अछि। ‘पत्नीभक्त’ अत्यल्प आयतनक संवादप्रधान व्यंग्य अछि। भोजक प्रसंग, ‘पत्नी-भक्ति’ पर पुरुषवादी ठट्ठा आ प्रत्युत्तरमे उठल नैतिक प्रश्न हास्यकेँ तुरन्त सामाजिक आलोचनामे बदलि दैत अछि। अन्तक ‘सपासप’ ध्वनि कथ्यकेँ दृश्यात्मक आ रंगमंचीय चपलता दैत अछि।

३.2. वीरेन्द्र कुमार यादव

रचनासभ: राजदेव मंडलक बाढ़िक चित्रपर; कथा- नाह आओर जिनगी [मूल पृष्ठ ८-१०]

‘राजदेव मंडलक बाढ़िक चित्रपर’ शब्द आ चित्रकला बीचक संवाद अछि। कोशी-कुसहा त्रासदीक स्मृति चित्रक दृश्य-संवेदनाकेँ साहित्यिक भाषामे रूपान्तरित करैत अछि; एहि कारण ई आपदा-स्मृति लेखनक रूप सेहो बनैत अछि। ‘नाह आओर जिनगी’ ११ अगस्त २०१०क नाव-दुर्घटनाकेँ सामुदायिक रुदन, परिवारक शोक आ नदीक भयावहता द्वारा रूपायित करैत अछि। मुनियाँक माए रधियाकेँ देल धीरज कथामे मृत्यु-बोधक मानवीय केन्द्र बनेबाक प्रयत्न अछि। मूल पाठ स्वयं ‘अपूर्ण’ लिखल अछि; अतएव एकर साहित्यिक मूल्यांकन उपलब्ध अंश धरि सीमित रहबाक चाही। अपूर्णता कथानक-समापन रोकैत अछि, मुदा उपलब्ध दृश्य लोक-त्रासदीक तीव्र दस्ताबेज बनि जाइत अछि।

३.3. विनीत उत्पल

रचनासभ: लघुकथा- निमंत्रण; दीर्घकथा- घोड़ीपर चढ़ि लेब हम डिग्री; विनीत उत्पलक साक्षात्कार प्रबोध सम्मान २००४ सँ सम्मानित मायानंद मिश्रसँ [मूल पृष्ठ ११-७१]

‘निमंत्रण’ बाजारवादक समयमे सम्बन्धक उपयोगितावादी रूपसँ आरम्भ होइत अछि। पत्रकार सचिन आ नृत्यांगना नीताक परिचय, मोबाइल-संचार, दूरी, रोजगार आ प्रेमक अस्थिरता आधुनिक शहरी जीवनक भाव-संरचना बनबैत अछि। ‘घोड़ीपर चढ़ि लेब हम डिग्री’ शिक्षा, पेशा, परिवारक आकांक्षा, परीक्षा-व्यवस्था, भाषा-हीनभावना, महानगरीय स्थानान्तरण आ युवा-स्वप्नक टकरावकेँ दीर्घ आख्यानमे विस्तारित करैत अछि। आलोकक अनुभवमे डिग्री मात्र शैक्षिक प्रमाणपत्र नहि, सामाजिक मान्यता आ पारिवारिक अपेक्षाक प्रतीक बनैत अछि। कथाकार संवाद, संस्मरणात्मक किस्सागोई आ सामाजिक टिप्पणी एक संग चलबैत छथि; कखनो टिप्पणी कथाक गतिसँ पैघ भऽ जाइत अछि, मुदा ओहि विस्तारमे समयक शैक्षिक-सामाजिक अभिलेख सुरक्षित अछि। मायानंद मिश्रसँ साक्षात्कार एहि रचनात्मक खण्डकेँ मौखिक साहित्येतिहासक आयाम दैत अछि।

३.4. सुजीत कुमार झा

रचनासभ: नेपालक राष्ट्रपतिक नेपाली प्रेम- लोककें किया नहि पचि रहल!; संस्मरण- मोबाइलक घण्टी जेना रुकिय नहि रहल छल; बिहारोमे मैथिली— मैथिली- मिथिलाक विधायक सभ मैथिलीमे सपथ लेलन्हि; नेपालोमे सपथ; नेपालमे मैथिली भाषामे पढाइ: उत्साह कम निराशा बेसी; होरीके परिवर्तित रुप- जनकपुरमे महामूर्ख सम्मेलन; जनकपुरमे कोजागरा महोत्सव; मिनापक लेल एकटा आओर उपलब्धी- दू लाखक पुरस्कार; जनकपुरमे पागे पाग- पागक व्यवसायीकरण पर किया नहि सोची?; लघुकथा- भौजी [मूल पृष्ठ ७२-११८]

ई समूह साहित्य, पत्रकारिता आ सांस्कृतिक इतिहासक सीमा-रेखापर ठाढ़ अछि। राष्ट्रपति आ शपथक प्रसंग भाषा-राजनीति आ सार्वजनिक प्रतिनिधित्वक प्रश्न उठबैत अछि; ‘मैथिली भाषामे पढाइ’ शिक्षा-नीति आ व्यवहारिक निराशाकेँ सामने अनैत अछि। जनकपुरक होरी, महामूर्ख सम्मेलन, कोजागरा, मिनाप, पाग आ पागक व्यवसायीकरण पर लिखल आलेख लोक-संस्कृतिकेँ स्थिर विरासत नहि, बदलैत बाजार आ संस्थागत जीवनक बीच जीवित प्रक्रिया मानैत अछि। ‘मोबाइलक घण्टी...’ निजी स्मृतिमे तकनीकी आधुनिकताक प्रवेशकेँ पकड़ैत अछि। एहि रचनासभक प्रमुख शक्ति घटनास्थल, तिथि, संस्था आ जन-प्रतिक्रियाक तत्क्षणता अछि; साहित्यिक सीमा ई जे समाचारात्मकता कखनो रूपक, चरित्र आ बहुस्तरीयता पर भारी पड़ैत अछि। ‘भौजी’ लघुकथा एहि दस्ताबेजी समूहमे कल्पनात्मक कथालेखनक अलग स्वर जोड़ैत अछि।

३.5. सुमित आनन्द

रचनासभ: भाषणमाला; भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना; आचार्य सुरेन्द्र झा ‘सुमन’ जयन्ती-२०१०; आचार्य रमानाथ झा आ प्रो. तंत्रनाथ झाक भाषणमाला-२०१० [मूल पृष्ठ ११९-१२९]

सुमित आनन्दक लेखन सांस्कृतिक संस्थान, स्मृति-समारोह आ कला-अर्थनीतिकेँ एक सूत्रमे जोड़ैत अछि। भारत-नेपाल मिथिला हस्तशिल्प पर आलेख लोककलाकेँ केवल सौन्दर्य-वस्तु नहि, आजीविका, सीमा-पार सांस्कृतिक पूँजी आ सम्भावित बाजारक रूपमे देखैत अछि। ‘सुमन’ जयन्ती तथा रमानाथ झा-तंत्रनाथ झा भाषणमाला साहित्यिक स्मृति-निर्माणक संस्थागत पक्षक अभिलेख अछि। एहन समारोह-वृत्तान्तक भाषामे स्वभावतः सम्मानात्मकता बेसी रहैत अछि; आलोचनात्मक दूरी सीमित भऽ सकैत अछि। तथापि साहित्येतिहास केवल कृति-सूची नहि, संस्था, गोष्ठी, वक्ता, श्रोता आ सार्वजनिक स्मृति सँ सेहो बनैत अछि।

३.6. मनोज झा मुक्ति

रचनासभ: महोत्तरीक यूवाके देशव्यापी अभियान; अमर शहिद दुर्गानन्द जिनक सपना छल गणतन्त्र; मैथिली दिवसमे विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न; मिथिला महोत्सव आ एकर उपलब्धि; महाशिवरात्री मेला आ गाँजाक व्यापार; मिडिया सेन्टरक स्थापना [मूल पृष्ठ १३०-१४९]

मनोज झा मुक्तिक गद्य सार्वजनिक जीवनक धड़कन पकड़ैत अछि। युवा-अभियान आ दुर्गानन्द झाक प्रसंग राजनीतिक स्मृति, लोकतन्त्र आ नागरिक आकांक्षाकेँ जोड़ैत अछि; मैथिली दिवस आ मिथिला महोत्सव सांस्कृतिक अस्मिताक उत्सवी रूप देखबैत अछि; शिवरात्रि मेलामे गाँजाक व्यापारक चर्चा उत्सवक उज्जर पक्षक संग आर्थिक-सामाजिक विसंगति सेहो देखबैत अछि; मीडिया सेन्टरक स्थापना संचार-संरचनाक बदलैत रूपक संकेत अछि। लेखनक प्रमुख गुण जमीनसँ जुड़ल प्रत्यक्षता आ विषय-विविधता अछि। एकर साहित्यिक महत्व वर्ण्य घटनासभक ‘काल-छाप’ मे अछि।

३.7. रमानन्द झा ‘रमण’

रचनासभ: मैथिली लोक गीतक अवस्था; नेपालमे मैथिली कथाक विकास ओ प्रवृत्ति [मूल पृष्ठ १५०-१९५]

‘मैथिली लोक गीतक अवस्था’ मौखिक परम्परा, बदलैत सामाजिक जीवन आ संरक्षणक प्रश्नकेँ आलोचनात्मक धरातलपर अनैत अछि। लोकगीत एतय केवल अतीतक अवशेष नहि, सामुदायिक स्मृति आ स्त्री-पुरुष जीवनक कार्यशील अभिव्यक्ति अछि। ‘नेपालमे मैथिली कथाक विकास ओ प्रवृत्ति’ सीमा-पार मैथिली साहित्यक ऐतिहासिक विस्तारकेँ चिह्नित करैत अछि। एहि दू आलेखकेँ संग पढ़लापर परम्परा आ आधुनिक कथा-विधाक सतत सम्बन्ध स्पष्ट होइत अछि। लेखकक शक्ति सामग्री-संग्रह, प्रवृत्ति-चिन्हन आ नेपालक मैथिली साहित्यकेँ मुख्य मैथिली विमर्शक भीतर राखबामे अछि।

३.8. बृषेश चन्द्र लाल

रचनासभ: लघुकथा- गोलबा [मूल पृष्ठ १९६-२०३]

‘गोलबा’क केन्द्रमे पशु आ मनुष्यक स्नेह-संबंध अछि। गोलबा जनमसँ परिवारक गन्ध, दुलार, बच्चासभक साथ आ घरेलू जीवनक अंग बनैत अछि। कथा पशुकेँ वस्तु नहि, अनुभूति आ सम्बन्धक केन्द्र बनबैत अछि; एहि कारण बाल-पाठकीयता आ करुण-संवेदना एक संग सक्रिय होइत अछि। नामकरण, बच्चासभक दुलार आ गोलबाक देहगत चेष्टा दृश्यात्मक विस्तार दैत अछि। संकलनक भीतर उपलब्ध समीक्षात्मक टिप्पणी सेहो एकरा बाल-साहित्य आ मनोवैज्ञानिक संवेदनाक उल्लेखनीय रचना मानैत अछि।

३.9. दुर्गानन्द मंडल

रचनासभ: लघुकथा- पारस; बुढ़िया फूसि; दुर्गानन्द मंडलक समस्त मैथिलक लेल राखीक शुभकामना [मूल पृष्ठ २०४-२२०]

‘पारस’ उपलब्ध पाठीय आलोचनामे वास्तविक चरित्रक प्रेरणा आ दृढ़ इच्छाशक्तिक उदाहरण रूपेँ उभरैत अछि; एहि कारण कथा प्रेरक आख्यान होइतहुँ व्यक्ति-निर्माणक सामाजिक संदर्भसँ जुड़ैत अछि। ‘बुढ़िया फूसि’ लोकभाषिक शीर्षकहि सँ ग्रामीण कथ्य आ व्यंग्य/विसंगतिक संकेत दैत अछि। राखीक शुभकामना अवसरानुकूल गद्य अछि, जे साहित्यक औपचारिक विधासँ बेसी सामुदायिक संवादक काम करैत अछि। तीनू रचनाकेँ संग देखलापर दुर्गानन्द मंडलक लेखन प्रेरक कथा, लोक-हास्य आ सामाजिक आत्मीयताक त्रिकोण बनबैत अछि।

३.10. उमेश मंडल

रचनासभ: रोहनियाँ आम; जेहन मन तेहन जिनगी; निर्मलीसँ जनकपुर धाम; कबिलपुरक कथा गोष्ठी; सगर राति श्रोता कथा-सागरमे डुबकी लगेलन्हि; सुपौलक कथा गोष्ठी: ४ दिसम्बर २०१० [मूल पृष्ठ २२१-२४४]

उमेश मंडलक गद्य गामक स्वाद, लोक-अनुभव, यात्रा आ साहित्यिक गोष्ठीकेँ समान महत्व दैत अछि। 'रोहनियाँ आम' वस्तु-स्मृति आ स्थानीय खाद्य-संस्कृतिक संकेतक रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि; 'जेहन मन तेहन जिनगी' जीवन-दृष्टिक लोकधर्मी सूत्र पकड़ैत अछि। निर्मलीसँ जनकपुर धाम यात्रा भौगोलिक सीमाकेँ सांस्कृतिक निरन्तरतामे बदलैत अछि। कबिलपुर आ सुपौलक कथा-गोष्ठी तथा 'सगर राति...' साहित्यक सामुदायिक श्रवण-परम्परा, मंच आ श्रोताक उपस्थिति दर्ज करैत अछि।

३.11. मुन्ना जी

रचनासभ: सामाजिक सरोकारकेँ छुबैत मैथिली लघुकथा; विदेहक विहनि कथा (लघुकथा) विशेषांक (६७म अंकक मादेँ); किएक अछोप बनल अछि मैथिली लघुकथा विधा; रिपोर्ताज [मूल पृष्ठ २४५-२६५]

ई चारू लेख लघुकथा-विधाक आत्मचिन्तन रचैत अछि। 'सामाजिक सरोकार...' लघुकथाकेँ छोट आकारक कौतुक नहि, सामाजिक प्रश्नक तीक्ष्ण माध्यम मानैत अछि। 'विहनि कथा विशेषांक' सम्पादकीय/साहित्यिक आयोजनक अभिलेख बनैत अछि। 'किएक अछोप बनल अछि...' विधागत उपेक्षाकेँ प्रश्नांकित करैत अछि—कैनन, पाठकीयता, प्रकाशन आ आलोचना बीचक सम्बन्ध पर विचारक अवसर खोलैत अछि। 'रिपोर्ताज' विधा-चर्चाकेँ साहित्यिक गतिविधिसँ जोड़ैत अछि।

३.12. अनिल गौतम / तारानन्द वियोगी

रचनासभ: अनिल गौतमक वार्तालाप तारानन्द वियोगीक संग [मूल पृष्ठ २६६-२७४]

वार्तालाप विधा लिखित आलोचना आ मौखिक स्मृतिक बीचक सेतु अछि। प्रश्नोत्तरक संरचना रचनाकारक आत्मव्याख्या, साहित्यिक परिवेश, संस्थागत अनुभव आ वैचारिक प्राथमिकता केँ प्रत्यक्ष स्वरमे सुरक्षित करैत अछि। एहन सामग्रीक पाठ करैत काल आत्मकथात्मक कथनकेँ स्वत: अन्तिम सत्य नहि मानि, समकालीन साहित्येतिहासक एक साक्ष्य मानब उचित अछि। एहि सावधानीक संग ई वार्तालाप मैथिली साहित्यक जीवित संवाद-परम्पराक मूल्यवान दस्तावेज बनैत अछि।

३.13. तारानन्द वियोगी

रचनासभ: साहित्य अकादेमीक विशेष समारोह (१५.११.१०) मे तारानन्द वियोगीक वक्तव्य [मूल पृष्ठ २७५-२८२]

विशेष समारोहक वक्तव्य साहित्यकारक सार्वजनिक आत्म-स्थिति आ संस्थागत साहित्यिक क्षेत्रक सम्बन्ध बुझबाक साधन अछि। मंचीय वक्तव्यक प्रकृति लिखित निबन्धसँ अलग होइत अछि—एतय सम्बोधन, प्रसंग, सामुदायिक स्मृति आ तात्कालिक प्रतिक्रिया महत्त्वपूर्ण होइत अछि। तारानन्द वियोगीक वक्तव्यकेँ एहि रूपमे पढ़लापर साहित्य अकादेमी, लेखक-समाज आ मैथिली साहित्यक प्रतिष्ठा-व्यवस्था बीचक सम्बन्ध स्पष्ट होइत अछि।

३.14. गंगेश गुंजन

रचनासभ: लाट साहेबक किरानी [मूल पृष्ठ २८३-२८६]

'लाट साहेबक किरानी' सत्ता, दानशीलता, दरिद्रता आ नौकरशाहीक तीख सामाजिक व्यंग्य अछि। राजधानीक भव्य पुलक एक कात सत्ताक आवागमन आ दोसर कात भिखारिसभक देहगत दु:ख—ई स्थानिक विरोध कथाक मूल स्थापत्य बनबैत अछि। किरानीक दयाभाव आ झुँझलाहट, दानक सार्वजनिक नैतिकता आ संरचनात्मक विषमताक सह-अस्तित्व व्यंग्यकेँ गहिर करैत अछि। कथा वर्णनमे वीभत्सता सँ परहेज नहि करैत; एहि कारण करुणा भावुक सजावट नहि रहि सामाजिक असमानताक असुविधाजनक दर्शन बनि जाइत अछि।

३.15. किशन कारीगर

रचनासभ: किरीम लगाउ-मुँह चमकाउ; मूरही-कचरी [मूल पृष्ठ २८७-२९४]

'किरीम लगाउ-मुँह चमकाउ' विज्ञापन-संस्कृति, पुरुष-सौन्दर्य उत्पाद आ उपभोक्तावादपर लोक-हास्यक प्रहार अछि। बाबा, मीडिया, क्रीम, ब्यूटी पार्लर आदि असमान संसार एक संवादक भीतर आबि आधुनिक बाजारक हास्यास्पदता उघारैत अछि। बोलचालक सहज मैथिली व्यंग्यक धार बढ़बैत अछि। 'मूरही-कचरी' खान-पान/दैनिक जीवनक साधारण वस्तुसँ हास्य आ सामाजिक अवलोकन बनेबाक कारीगरक वृत्ति देखबैत अछि।

३.16. सत्येन्द्र कुमार झा

रचनासभ: हिस्सक; भैयारी; स्थानान्तरित दोष; अप्रासंगिक [मूल पृष्ठ २९५-२९८]

ई चारू लघुरचना आधुनिक जीवनक विडम्बनाकेँ तीव्र संक्षेपमे पकड़ैत अछि। ‘हिस्सक’मे महानगरीय आर्थिक दबाव, पेइंग-गेस्ट, विवाह-आकांक्षा आ ठगीक बादो पूर्वाग्रही ‘इंजीनियर’ मोह पर समाप्ति सामाजिक अन्धताकेँ उजागर करैत अछि। ‘भैयारी’, ‘स्थानान्तरित दोष’ आ ‘अप्रासंगिक’ शीर्षकहि सँ सम्बन्ध, दोषारोपण आ अर्थहीन भऽ रहल सामाजिक व्यवहारक सूक्ष्म परीक्षणक दिशा बनैत अछि। लेखक विवरण घटा कऽ निष्कर्षात्मक झटका पर भरोसा करैत छथि; ई लघुकथा-शिल्पक अनुकूल अछि, यद्यपि अति-संक्षेप पात्रक जटिलता सीमित करैत अछि।

३.17. मिथिलेश कुमार झा

रचनासभ: कानून; दर्शन; कन्यादानक चिन्ता; महानगर-संस्कृति [मूल पृष्ठ २९९-३०३]

‘कानून’, ‘दर्शन’, ‘कन्यादानक चिन्ता’ आ ‘महानगर-संस्कृति’ चारि विचार-बिन्दु सामाजिक संस्थासभक दैनिक रूपकेँ छोट आख्यानमे परखैत अछि। कानूनक औपचारिकता, दर्शनक व्यवहारिक अर्थ, विवाह/कन्यादानक दबाव आ महानगरीय संस्कृतिक परिवर्तन—ई विषय संकलनक व्यापक आधुनिकता-विमर्शक सूक्ष्म रूप अछि। लेखकक शैली अवधारणात्मक अछि: शीर्षक एकटा विचार देत अछि आ कथा ओकर सामाजिक परिस्थिति खोजैत अछि। एहन रचनामे कथानकसँ बेसी विचारक चुभन महत्त्वपूर्ण होइत अछि।

३.18. चण्डेश्वर खाँ

रचनासभ: कोटा [मूल पृष्ठ ३०४]

एक पृष्ठक ‘कोटा’ आरक्षण, डोनेशन आ ‘मेरिट’क सार्वजनिक बहसकेँ पात्रसभक बोलचालमे संकुचित करैत अछि। दलित, महादलित, महिला कोटा आ प्रथम-श्रेणी डिग्रीक टकराव शीर्षककेँ बहुअर्थी बनबैत अछि। रचना कोनो विस्तृत नीति-निबन्ध नहि; तँ एकर बल समाधान देबामे नहि, सामाजिक असुरक्षा आ प्रतिस्पर्धाक भाषाकेँ पकड़बामे अछि। अत्यल्प आकारक कारण दृष्टिकोणक बहुस्तरीय विवेचन सीमित अछि, मुदा लघुकथात्मक चुभन प्रभावी अछि।

३.19. धीरेन्द्र प्रेमर्षि

रचनासभ: विचार टिप्पणी [मूल पृष्ठ ३०५-३०७]

‘विचार टिप्पणी’ जुड़शीतल/नववर्षक प्रसंगसँ आरम्भ भऽ मिथिलाक सामाजिक-राजनीतिक बेचैनी पर विचार करैत अछि। टिप्पणी-विधाक स्वभावेँ लेखकक प्रत्यक्ष मत, व्यंग्य आ तात्कालिक चिंता अग्रभूमिमे अछि। साहित्यिकता एतय कथानकमे नहि, रूपक, बोलचाल, सांस्कृतिक संकेत आ सार्वजनिक आत्मालोचनामे अछि। ई छोट लेख संकलनक ‘रचनात्मक गद्य’ परिधिकेँ विस्तार दैत अछि—साहित्य आ नागरिक टिप्पणी एक-दोसरासँ पृथक नहि रहैत अछि।

३.20. जितेन्द्र झा

रचनासभ: के राखत रुमालक इज्जति; नेपालक राजनीतिक अबस्थासँ उपजल- ग्लानि; नव विवाहिताक लेल नव उमंग लाबए एहन मधुश्रावणि; काठमाण्डू। विदेशमे भविष्य देखैत अछि विद्यार्थी; काठमाण्डूमेँ कोहबर घर: वर ने कनिञा तैइयो बढिञा; परम्पराके निरन्तरतामेँ प्रवास बाधक नहि; उपटैत गाम बसाओत बाबा; महाकवि विद्यापति अक्षयकोष [मूल पृष्ठ ३०८-३३७]

जितेन्द्र झाक रचनासभ काठमाण्डू, प्रवास, परम्परा, शिक्षा, राजनीति आ सांस्कृतिक पुनर्सृजनक बहुपक्षीय चित्र दैत अछि। मधुश्रावणी आ कोहबर घर पर लेखन देखबैत अछि जे संस्कार प्रवासमे नष्ट नहि होइत, नव परिस्थिति अनुसार रूप बदलैत अछि। ‘विदेशमे भविष्य...’ युवा आकांक्षा आ पलायनक प्रश्न उठबैत अछि; ‘उपटैत गाम बसाओत बाबा’ विस्थापनक उलटबाँसीकेँ शीर्षकमे पकड़ैत अछि। विद्यापति अक्षयकोष साहित्यिक स्मृति आ संस्था-निर्माणक प्रसंग अछि। रिपोर्टाजक तत्क्षणता एहि समूहक मूल शक्ति अछि; भारत-नेपाल सीमाकेँ राजनीतिक रेखा नहि, साझा सांस्कृतिक आवागमनक क्षेत्र मानब एकर व्यापक योगदान अछि।

३.21. बिपिन झा

रचनासभ: कृतारिषड्वर्गजयेनमानवीम्... (सफलताक मूलसूत्र); प्रदेश केर विकास : एक चिन्तन; हे हृदयेश्वरी: एक कटाक्षालोचन; की नब साल की पुरान साल..!, समसामयिक सन्दर्भमे गाँधीविचारक महत्ता; मिथिलांचल आ बिहार चुनाव; विरासत केर संरक्षण केकर उत्तरदायित्व?; विषवेलक सिञ्चन; गुरुशिष्य परम्परा आओर आधुनिकता; बालमजदूर पर हमर लेखिनीक दृष्टि; किछु पजरैत प्रश्न; भारत-नेपाल आओर मिथिलांचल; मजदूर सँ दूर मजदूर दिवस; शहीद कऽ चिताकऽ धूँआ क अभिलाषा; पर्वक ‘औचित्यक उपेक्षा’ सर्वथा चिन्तनीय [मूल पृष्ठ ३३८-३७४]

बिपिन झाक पन्द्रह लेख नैतिक आत्मसंयमसँ विकास, चुनाव, गाँधी, विरासत, गुरु-शिष्य सम्बन्ध, बालमजदूरी, सीमा-पार मिथिला, मजदूर दिवस, शहादत आ

पर्व-औचित्य धरि फैलल सार्वजनिक निबन्ध-परम्परा बनबैत अछि। 'हे हृदयेश्वरी' जकाँ शीर्षक कटाक्षकेँ वैचारिक उपकरण बनबैत अछि, जखनकि 'कृतारिषड्वर्ग...' नैतिक/दार्शनिक अनुशासनक सूत्र खोजैत अछि। लेखकक स्वर प्रायः स्पष्ट पक्षधर आ उपदेशात्मक अछि; एहि कारण तर्कक ऊर्जा प्रबल अछि, मुदा कखनो बहसक जटिल पक्ष संक्षिप्त भऽ जाइत अछि। ऐतिहासिक महत्त्व एहि बातमे अछि जे ई लेख एक समयक मिथिलांचल-बिहार-नेपाल सम्बन्ध, राजनीतिक चिंता आ सामाजिक नैतिकताक जीवित 'विचार-मानचित्र' उपलब्ध करबैत अछि।

३.22. खड़ानन्द यादव

रचनासभ: गहूमक बोरा [मूल पृष्ठ ३७५-३७६]

'गहूमक बोरा'क शीर्षक ग्रामीण अर्थव्यवस्था, अन्न, श्रम आ मूल्यक ठोस वस्तुकेँ कथाक केन्द्रमे अनैत अछि। लघुकथामे एहन साधारण वस्तु वर्ग, आवश्यकता, लोभ अथवा असमान विनिमयक सामाजिक अर्थ ग्रहण करैत अछि। उपलब्ध पाठक सीमित आयतन एकरा घटना-केंद्रित बनबैत अछि; विस्तारक बदला एक बिम्ब/परिस्थितिक प्रभाव प्रमुख रहैत अछि। संकलनक विशाल सार्वजनिक विमर्शक बीच ई रचना ग्रामीण भौतिक जीवनक सूक्ष्म धरातल याद करबैत अछि।

३.23. सत्यानंद पाठक

रचनासभ: लघुकथा- स्वान विमर्श [मूल पृष्ठ ३७७-३८५]

'स्वान विमर्श' कुकुरसभक सामुदायिक संसारक बहाने मनुष्य-समाजक प्रतिरूप रचैत अछि। गायब 'मैक्सी'क खोज, परचून दोकानक चौपाल, शराब दोकानक बढ़ैत संस्कृति आदि संकेत पशु-दृष्टिक भीतर मानव नगरक आलोचना आनैत अछि। शीर्षकमे 'विमर्श' शब्द स्वयं व्यंग्यात्मक अछि—गंभीर सामाजिक बहस एतय स्वान समुदाय द्वारा प्रतिफलित होइत अछि। मानवीकरणक तकनीक कथाकेँ हास्य, करुणा आ सामाजिक टिप्पणी तीनू दैत अछि। कथा लघुकथाक परम्परागत 'अन्तिम झटका' मात्र पर निर्भर नहि, वातावरण आ सामूहिक चरित्र निर्माण सेहो करैत अछि।

३.24. प्रो. वीणा ठाकुर

रचनासभ: लघुकथा- परिणीता [मूल पृष्ठ ३८६-३९५]

'परिणीता' स्त्री-जीवन आ विवाहोत्तर पहिचानक प्रश्नक संभावना खोलैत अछि। शीर्षक स्वयं 'विवाहित स्त्री'क सामाजिक नामकरणकेँ केन्द्र बनबैत अछि; अतएव रचनाकेँ केवल घरेलू घटना नहि, लैंगिक भूमिका आ आत्मसम्मानक संदर्भमे पढ़ब उपयोगी अछि। उपलब्ध पाठमे भावनात्मकता आ सामाजिक यथार्थ एक-दोसराकेँ आधार दैत अछि। रचना संकलनक स्त्री-अनुभवधर्मी धारा मजबूत करैत अछि आ पुरुष-केन्द्रित सार्वजनिक लेखनक समानान्तर निजी जीवनक सत्ता-संबंध सामने अनैत अछि।

३.25. साकेतानन्द

रचनासभ: आछे दिन पाछे गए [मूल पृष्ठ ३९६-४०४]

'आछे दिन पाछे गए' वृद्धावस्था, मध्यवर्गीय असुरक्षा आ सामाजिक समयक व्यंग्यात्मक पाठ अछि। आरम्भहि मे 'आइ दिने खराब'क मनोदशा, गाड़ी/सरकारी सुविधा समाप्त भेनाइ आ नव पीढ़ीक ठट्ठा व्यक्ति-जीवनक पद-परिवर्तनकेँ सामाजिक कटाक्षमे बदलैत अछि। शीर्षकमे 'आछे दिन'क उलटाव स्मृति आ वर्तमानक दूरी रचैत अछि। कथाक बल चरित्रक आन्तरिक खौंझ, आत्मसम्मान आ परिवर्तित सामाजिक व्यवहारक सूक्ष्म निरीक्षणमे अछि।

३.26. नवेन्दु कुमार झा

रचनासभ: रेल लाइनसँ जुड़त भारत आ नेपाल; भारतीय सामाजिक व्यवस्थामे आइयो जीवन्त अछि जाति व्यवस्था- प्रो. शर्मा; प्रदेशमे लागत चौदहटा नव उद्योग समूह; असोचैम कएलक एहि दिस पहल- मिथिलांचलमे सेहो लागत नव उद्योग; मतदाता सभक उत्साह मध्य सम्पन्न भेल तीन चरणक मतदान- राजनीतिक दलक बेचैनी बढ़ौने अछि मतदाताक चुप्पी; राहुलक मिशन बिहारसँ बढ़ल सत्ता आ विपक्षक परेशानी: मिथिलांचलक भूमिसँ कांग्रेसक युवराज कएलनि चुनावी शंखनाद; दू वर्ष पूरा कएलक मैथिली दैनिक मिथिला समाद [मूल पृष्ठ ४०५-४१६]

नवेन्दु कुमार झाक सामग्री समाचार-रिपोर्टाजक रूपमे विकास, रेल-संपर्क, जाति, उद्योग, चुनाव, राष्ट्रीय राजनीति आ मैथिली पत्रकारिताक संस्थागत जीवन दर्ज करैत अछि। साहित्यिक संकलनमे एहन लेखनक उपस्थिति महत्वपूर्ण अछि, कारण आधुनिक साहित्यिक सार्वजनिक क्षेत्र समाचार, भाषा-अभियान आ सामाजिक संस्थासँ अलग नहि अछि। जाति-व्यवस्थाक सततता आ औद्योगिक आकांक्षा एकहि समयक विरोधी वास्तविकता देखबैत अछि। चुनावी लेख तात्कालिक राजनीतिक भाषाक दस्तावेज अछि; 'मिथिला समाद'क दू वर्ष पत्रकारिता स्वयं साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थाक रूपमे उपस्थित होइत अछि।

३.27. देवशंकर नवीन

रचनासभ: बिलाड़ि; मोटर साइकिल [मूल पृष्ठ ४१७-४३९]

‘बिलाड़ि’ निन्न, सपना, मैना, घरक खिड़की आ बिलाड़िक उपस्थिति जकाँ साधारण घरेलू अनुभवकेँ दार्शनिक आत्मनिरीक्षणमे बदलैत अछि। कथाकारक ‘हम’ दैनिक असुविधा, कल्पना आ वास्तविकताक बीच लगातार आवाजाही करैत अछि; एहि कारण भाषा संस्मरणात्मक होइतहुँ कथात्मक तनाव बनाए रखैत अछि। ‘मोटर साइकिल’ आधुनिक वस्तु-संस्कृति, गति, प्रतिष्ठा आ मनुष्यक व्यवहारक सम्बन्ध पर केन्द्रित रचना रूपेँ एहि जोड़ीकेँ पूर्ण करैत अछि। एक कात जीव-जगत/घर, दोसर कात मशीन/सड़क—दुनू मिलि आधुनिक जीवनक संवेदना आ वस्तुसम्बन्धक दोहरा चित्र बनबैत अछि।

३.28. डॉ. शेफालिका वर्मा

रचनासभ: एकांकी- एकटा आर महाभिनिष्क्रमण; शैतानक वारिस; प्रतिवादक स्वर [मूल पृष्ठ ४४०-४६३]

तीनू एकांकी शीर्षकहि सँ संघर्ष, नैतिक विकल्प आ प्रतिरोधक नाट्य-क्षेत्र बनबैत अछि। ‘एकटा आर महाभिनिष्क्रमण’ सांस्कृतिक महाभिनिष्क्रमण-स्मृतिकेँ आधुनिक प्रसंगमे पुनर्संकेतित करैत अछि; ‘शैतानक वारिस’ नैतिक/सामाजिक बुराईक उत्तराधिकारक प्रश्न उठबैत अछि; ‘प्रतिवादक स्वर’ प्रतिरोधकेँ प्रत्यक्ष नाटकीय मूल्य बनबैत अछि। एकांकी-विधाक संक्षिप्तता संवादक धार, दृश्य-परिवर्तन आ चरित्र-संघर्ष मांगैत अछि। सामाजिक प्रश्नक मंचीय संकुचन एहि समूहक प्रमुख शक्ति अछि।

३.29. भारत भूषण झा

रचनासभ: लघुकथा- आत्मबल [मूल पृष्ठ ४६४-४६७]

‘आत्मबल’ शीर्षक रचनाक मूल्य-केन्द्र स्पष्ट करैत अछि—बाह्य परिस्थिति पर विजयक आधार भीतरक संकल्प अछि। लघुकथा प्रेरक कथ्यकेँ संक्षिप्त घटना/चरित्रक माध्यमसँ रूपायित करैत अछि। एहन मूल्यप्रधान रचनामे जोखिम उपदेशात्मकता अछि; साहित्यिक सफलता तखन होइत अछि जखन विचार पात्रक अनुभवसँ स्वाभाविक रूपेँ निकलै। उपलब्ध पाठ आत्मविश्वासक सामाजिक अर्थ पर बल दैत अछि।

३.30. कपिलेश्वर राउत

रचनासभ: अप्पन गप- किछु विहनि आ लघु कथा: वंश; उलहन; थरथरी; भोग; कुमारि भोजन; कीर्तन आ सम्मेलन; मूर्दा; सतमाए; तकरीर; पान; मई दिवस; भूख; बेथा; किसानक पूजी; छूआ-छूत; कलियुगक निर्णए [मूल पृष्ठ ४६८-५४०]

सोलह विहनि/लघुकथा मिलि ग्रामीण-सामाजिक जीवनक सूक्ष्म विश्वकोश बनबैत अछि। ‘वंश’ आ ‘सतमाए’ परिवार-संरचना, ‘कुमारि भोजन’ आ ‘कीर्तन आ सम्मेलन’ अनुष्ठान-संस्कृति, ‘मूर्दा’ मृत्यु-व्यवहार, ‘मई दिवस’ श्रम-राजनीति, ‘भूख’ आ ‘बेथा’ देह-आवश्यकता, ‘किसानक पूजी’ ग्रामीण अर्थनीति, ‘छूआ-छूत’ जातिगत विषमता, ‘कलियुगक निर्णए’ नैतिक व्यंग्यक क्षेत्र खोलैत अछि। राउतक बड़ी उपलब्धि पैघ विचारकेँ छोट घटना, कहबी-जकाँ शीर्षक आ लोकभाषाक माध्यमसँ पकड़ब अछि। समूह रूपमे ई कथासभ समाजशास्त्रीय मोजेक बनैत अछि।

३.31. प्रकाश झा

रचनासभ: विश्व रंगमंच दिवस: 27 मार्च [मूल पृष्ठ ५४१-५४३]

‘विश्व रंगमंच दिवस’ रंगमंचक सांस्कृतिक गरिमा, सामुदायिक प्रदर्शन आ नाट्य-सचेतनाक परिचयात्मक/विचारात्मक लेख अछि। संकलनमे एकर स्थान विशेष, कारण तुरन्त बाद लोकनाट्य आ एकांकीक रचनासभ आबैत अछि। लेख पाठककेँ नाटककेँ केवल मुद्रित पाठ नहि, अभिनेता, दर्शक, मंच, देह आ समयक संयुक्त कला मानबाक पृष्ठभूमि दैत अछि। एहि रूपमे ई नाट्य-खण्डक वैचारिक प्रस्तावना जकाँ काज करैत अछि।

३.32. अनमोल झा

रचनासभ: रिलेशन-२; तंग; डेरायल; पिछड़ल राज्य; एटेचमेन्ट; बढ़ैत चलू; दुःख; समाज; रिटर्न; फर्ज; तेल; प्रश्न; पाप; माता न कुमाता भवति; आँखिक पानि; चिन्ता; बुद्धि; कंट्रोल; चिन्तन; बोध [मूल पृष्ठ ५४४-५६७]

उन्नैस छोट रचना आधुनिक जीवनक ‘क्षण-विचार’ बनबैत अछि। अंग्रेजी-मिश्रित शीर्षक—‘रिलेशन’, ‘एटेचमेन्ट’, ‘रिटर्न’, ‘कंट्रोल’—महानगरीय/नव-मध्यवर्गीय भाषिक संसारक संकेत अछि; ‘माता न कुमाता भवति’, ‘पाप’, ‘फर्ज’, ‘बोध’ परम्परागत नैतिक शब्दावली सँ संवाद करैत अछि। एहि मिश्रणमे आधुनिकता आ परम्पराक तनाव स्वयं भाषामे देखाइत अछि। अनमोल झा कथानक विस्तारक बदला परिस्थिति, विडम्बना आ निष्कर्षक संक्षिप्त वार पर भरोसा करैत छथि।

३.33. रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

रचनासभ: जट-जटिन (लोकनाट्य-रूपान्तर); नाटक-एकांकी भैया, अएलै अपन सोराज; राजविराजमे मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी सम्पन्न [मूल पृष्ठ ५६८-६०५]

'जट-जटिन'क रूपान्तर मौखिक लोकप्रदर्शनकेँ लिखित नाट्यपाठमे सुरक्षित करैत अछि। गीत, नृत्य-मुद्रा, पुनरावृत्ति आ संवाद लोकधर्मी रंगभाषाक मूल तत्व अछि; लिखित रूपान्तरणक चुनौती ई जे प्रदर्शनक देह, स्वर आ सामूहिकता कागज पर पूर्णतः नहि आबि सकैत, मुदा अभिलेखन परम्पराकेँ स्थायित्व दैत अछि। 'भैया, अएलै अपन सोराज' स्वराज/इतिहासकेँ लोकनाट्यक दृष्टिसँ मंचित करैत अछि, जकर राजनैतिक चेतना लोकगीत-संरचनासँ जुड़ल अछि। राजविराजक लोक संस्कृति संगोष्ठी-वृत्तान्त एहि रचनात्मक प्रयोगकेँ वास्तविक सांस्कृतिक संस्थान आ मंचन-परम्परासँ जोड़ैत अछि।

३.34. राधा कान्त मंडल 'रमण'

रचनासभ: मैथिली एकांकी- कने हमहूँ पढ़व [मूल पृष्ठ ६०६-६१०]

'कने हमहूँ पढ़व' शिक्षा-अधिकार आ गरीबीक प्रश्नकेँ एकांकी रूपमे सामने अनैत अछि। पात्र-सूचीमे मुखिया, मुंशी, गरीब दुखना-दुखनी, अमर आ रीता जकाँ सामाजिक स्थान स्पष्ट होइत अछि; आरम्भमे भोजनक संकट शिक्षा-सप्नाकेँ प्रत्यक्ष आर्थिक यथार्थसँ जोड़ैत अछि। शीर्षकक 'हमहूँ' शब्द लोकतांत्रिक आकांक्षाक केन्द्र अछि—पढ़ाइ विशेषाधिकार नहि, हिस्सेदारीक मांग बनैत अछि। नाट्यरूपक सरलता मंचनयोग्यता बढ़बैत अछि, आ संवाद ग्रामीण जीवनक सामाजिक दूरीकेँ दृश्य रूप दैत अछि।

३.35. ऋषि वशिष्ठ

रचनासभ: अन्हरजाली [मूल पृष्ठ ६११-६१५]

'अन्हरजाली' कोर्ट परिसरक भीड़, वकील-मुवक्किल सम्बन्ध, पैसा आ न्याय बीचक तनावसँ आरम्भ होइत अछि। 'जेहन माल तेहन कमाल' जकाँ संवाद न्याय-व्यवस्थाक बाजारू विडम्बना उजागर करैत अछि। शीर्षक 'अन्हरजाली'—अन्हार आ जालक संयुक्त बिम्ब—व्यक्ति केहन संस्थागत उलझनमे फँसैत अछि तकर रूपक बनैत अछि। भाषा व्यंग्यात्मक, दृश्यप्रधान आ लोक-कहबीसँ समर्थ अछि।

३.36. नन्द विलास राय

रचनासभ: लघुकथा- चौठचन्द्रक दही [मूल पृष्ठ ६१६-६२०]

'चौठचन्द्रक दही' पावनि, दूध-दही, माटिक बासन, प्रवासी पति आ सीमित ग्रामीण अर्थव्यवस्थाकेँ एकहि कथासूत्रमे जोड़ैत अछि। सोमनीक पावनि लेल दही पोरबाक चिन्ता अनुष्ठानक भावुकता मात्र नहि; दूधक अभाव, बाजार, श्रम आ गरिमाक प्रश्न सेहो अछि। पाउडर दूध बनाम 'असल' दूधक संवाद परम्पराक शुद्धता आ आधुनिक विकल्पक छोट लेकिन अर्थपूर्ण टकराव अछि। कथा लोकपर्वकेँ संग्रहालयीय चित्र नहि, रोजमर्रा अभावक बीच निभाओल जा रहल जीवित संस्कार रूपेँ प्रस्तुत करैत अछि।

३.37. धीरेन्द्र कुमार

रचनासभ: लघुकथा- अहींक लेल; जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास 'मौलाइल गाछक फूल' [मूल पृष्ठ ६२१-६३०]

'अहींक लेल' आत्मीय सम्बोधन आ शिकायतक संवादसँ बनल लघुकथा अछि; 'अहीं' शब्द पाठकेँ निजी सम्बन्धक निकटता दैत अछि। एहि रचनाक संग जगदीश प्रसाद मंडलक 'मौलाइल गाछक फूल' पर आलोचनात्मक लेख रखल गेल अछि—फलतः रचनाकार एकहि खण्डमे सर्जक आ पाठक/समीक्षक दुनू रूपेँ उपस्थित छथि। ई द्वैध भूमिका संकलनक विशेषता अछि: साहित्य केवल उत्पादित नहि होइत, तत्काल पढ़ल, बहस कएल आ पुनर्मूल्यांकित सेहो होइत अछि।

३.38. जीवकान्त

रचनासभ: जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास 'मौलाइल गाछक फूल' [मूल पृष्ठ ६३१-६३३]

धीरेन्द्र कुमारक बाद जीवकान्तक 'मौलाइल गाछक फूल' पर अलग समीक्षा एकहि कृतिक बहु-पाठ उपलब्ध करबैत अछि। आलोचना इतिहासक दृष्टिसँ ई महत्त्वपूर्ण, कारण कृतिको मूल्य एक समीक्षकक निर्णयमे बन्द नहि रहैत अछि। दू समीक्षाकेँ समांतर पढ़लापर पाठकीय प्राथमिकता, कथ्य/शिल्पक अलग मूल्यांकन आ समकालीन ग्रहणशीलताक अन्तर देखबाक अवसर भेटैत अछि। संकलन एतय बहुस्वरीय आलोचनाक व्यावहारिक उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि।

३.39. बेचन ठाकुर

रचनासभ: बेटीक अपमान; छीनरदेवी [मूल पृष्ठ ६३४-७३२]

‘बेटीक अपमान’ स्वयं लेखकक प्रस्तावनामे गर्भपात-विरोध, बेटा-बेटीक समानता, दहेज-विरोध आ इज्जत/विवेकक प्रश्न स्पष्ट करैत अछि। नाटक सामाजिक सुधारक प्रत्यक्ष उद्देश्य लैत अछि; पात्र-संरचना ग्रामीण/परिवारिक जीवनक भीतर लैंगिक भेदभावकेँ मंचपर अनैत अछि। एहन उद्देश्यप्रधान नाटकक शक्ति संदेशक स्पष्टता आ सामुदायिक मंचन-सम्भावना अछि; सीमा ई जे विचार कखनो पात्रक जटिलतासँ आगाँ निकलि सकैत अछि। ‘छीनरदेवी’ शीर्षक समाज द्वारा स्त्रीपर चिपकाओल अपमानजनक नामकरणक क्रूरता केँ केन्द्र बनबैत अछि। दुनू रचना संग पढ़लापर स्त्री-गरिमा, सामाजिक निर्णय आ पितृसत्तात्मक भाषा पर दीर्घ हस्तक्षेप स्पष्ट होइत अछि।

३.40. अर्चना कुमर

रचनासभ: आस; विद्वान (दादीसँ सुनल कथाक पुनर्लेखन); बेटा [मूल पृष्ठ ७३३-७३९]

अर्चना कुमरक तीनू कथा परिवार, आशा, लोकस्मृति आ पीढ़ीगत नैतिकताक छोट संसार रचैत अछि। ‘विद्वान’ विशेष महत्त्वक अछि, कारण ई दादीसँ सुनल कथाक पुनर्लेखन अछि—मौखिक स्त्री-स्मृति लिखित मैथिलीमे प्रवेश करैत अछि। संकलनक भीतरक समीक्षात्मक टिप्पणी सेहो एहि रचनाकेँ लोककथा/लोकगीतक कमी भरबाक योगदान मानैत अछि। ‘आस’ आ ‘बेटा’ घरेलू सम्बन्धक भावनात्मक धरातल जोड़ैत अछि।

३.41. शिव कुमार झा ‘टिल्लू’

रचनासभ: समीक्षा- सूर्यमुखी; मैथिली कथाक विकासमे गामक जिनगीक योगदान; ‘समकालीन मैथिली कविता’क समीक्षा; समीक्षा- मैथिली चित्रकथा [मूल पृष्ठ ७४०-७८०]

शिव कुमार झा ‘टिल्लू’क चारू लेख संकलनक भीतर आलोचना पर आलोचनाक परत जोड़ैत अछि। ‘सूर्यमुखी’क समीक्षा विशिष्ट कृतिपाठ अछि; ‘मैथिली कथाक विकासमे गामक जिनगीक योगदान’ कथा-इतिहासक सामाजिक आधार खोजैत अछि; ‘समकालीन मैथिली कविता’क समीक्षा वर्तमान काव्य-प्रवृत्तिक मूल्यांकन करैत अछि; ‘मैथिली चित्रकथा’ साहित्य आ दृश्य-कथनक सम्बन्धपर ध्यान दैत अछि। एहि व्यापकता सँ आलोचक विधासभकेँ अलग कोठरी नहि, परस्पर सम्बद्ध सांस्कृतिक प्रणाली मानैत छथि।

३.42. गजेन्द्र ठाकुर

रचनासभ: सहस्र शीर्षा; जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी; मैथिली गजल शास्त्र; मैथिली समीक्षाशास्त्र; बाल गुरु; एकटा पत्र; माए-बेटाक मनोविज्ञान; शारदानगर [मूल पृष्ठ ७८१-१४२३]

ई संकलनक सबसँ विशाल आ विधागत रूपेँ महत्वाकांक्षी खण्ड अछि। ‘सहस्र शीर्षा’ वैदिक ‘सहस्रशीर्षा’ संकेतकेँ बहुस्वर, लोकस्मृति, मिथ, जाति-विमर्श, गामक इतिहास आ अनेक ‘कल्लोल’क बहुपरतीय आख्यानमे पुनर्संयोजित करैत अछि। हजार माथ/हजार स्वरक रूपक एकल नायकक बदला सामुदायिक चेतनाक रचना बनबैत अछि। ‘जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी’ जीवनीकेँ साहित्यिक इतिहासक स्रोत बनबैत अछि। ‘मैथिली गजल शास्त्र’ बहर, छन्द आ मात्रिक/वर्णिक अनुशासनक आधारपर मैथिली गजलकेँ शास्त्रीय कसौटी देबाक प्रयास अछि; आजाद/बे-बहर गजलपर ओकर आग्रह संकलनक पद्य-खण्डसँ रोचक आन्तरिक बहस पैदा करैत अछि। ‘मैथिली समीक्षाशास्त्र’ भारतीय रस-ध्वनि परम्परा, आधुनिक/उत्तरआधुनिक पश्चिमी सिद्धान्त, स्त्री-विमर्श, उपनिवेशोत्तरता, पाठकीयता आ स्थानीय मैथिली कृतिसभक उदाहरणकेँ एक मंचपर अनैत अछि। एकर विशेष बल सिद्धान्तक स्थानीय अनुप्रयोग आ समीक्षकक नैतिक उत्तरदायित्व पर आग्रह अछि। ‘बाल गुरु’ बाल-मनोविज्ञान, बहुभाषिक महानगरीय सहजीवन आ नेनाक नजरिसँ सामाजिक सीखक कथा रूपेँ उभरैत अछि; ‘एकटा पत्र’, ‘माए-बेटाक मनोविज्ञान’ आ ‘शारदानगर’ निजी/पारिवारिक/स्थानिक अनुभवक छोट गद्य-विस्तार जोड़ैत अछि। खण्डक शक्ति असाधारण सामग्री-विस्तार, विधा-प्रयोग आ अभिलेख-निर्माण अछि; चुनौती अत्यधिक विस्तार, तर्कक पुनरावृत्ति आ लेखक-समीक्षकक प्रबल हस्तक्षेपक बीच पाठकीय केन्द्र बनाए रखब अछि।

३.43. प्रोफेसर प्रेमशंकर सिंह

रचनासभ: मैथिली बाल काव्यधारा [मूल पृष्ठ १४२४-१४४४]

‘मैथिली बाल काव्यधारा’ बाल-कविताकेँ गौण मनोरंजन नहि, स्वतंत्र साहित्यिक परम्परा रूपेँ स्थापित करबाक आलोचनात्मक प्रयत्न अछि। धारा/इतिहासक दृष्टि कवि, विषय, भाषा, लय, शिशु-मनोविज्ञान आ शिक्षण-संवेदना बीच सम्बन्ध खोजैत अछि। संकलनमे ‘गोलबा’, ‘बबलू बनबय छक्का-सत्ता’ जकाँ बालधर्मी रचनासभ उपस्थित होयबाक कारण ई आलेख तत्काल सैद्धान्तिक संदर्भ सेहो दैत अछि। बाल-साहित्यक कैनन-निर्माण आ इतिहास-लेखनक दृष्टिसँ

ई खण्ड विशेष शोध-मूल्य रखैत अछि।

३.44. देवांशु वत्स

रचनासभ: प्रगतिक रहस्य [मूल पृष्ठ १४४५-१४४९]

‘प्रगतिक रहस्य’ गद्य-खण्डक अंतिम रचना होइत विकास/प्रगतिक अर्थपर ध्यान केन्द्रित करैत अछि। शीर्षक ‘रहस्य’ प्रगतिक बाहरी चमक आ भीतरी मानवीय/नैतिक शर्त बीच भेद खोजबाक संकेत दैत अछि। संकलन भरि विकास, उद्योग, शिक्षा, प्रवास, आधुनिकता आ परम्परा पर जे अनेक बहस अछि, ई रचना ओकर छोट वैचारिक प्रतिध्वनि जकाँ पढ़ल जा सकैत अछि। गद्य-खण्डक समापन रूपेँ ई ‘प्रगति’ शब्दकेँ स्वतः सकारात्मक मानि लेबाक बदला प्रश्नांकित करैत अछि।

४. पद्य-खण्ड: रचनाकार-दर-रचनाकार समीक्षा

४.1. डॉ. नरेश कुमार ‘विकल’

रचनासभ: किछु आजाद गजल [मूल पृष्ठ १४५१-१४५५]

ई गजलसभ वर्षा, विरह, प्रकृति आ मनोदशाकेँ मुक्त छन्दाभासक संग व्यक्त करैत अछि। ‘आजाद गजल’ नाम स्वयं पारम्परिक बहरबद्ध गजलसँ दूरी घोषित करैत अछि। संकलनक ‘मैथिली गजल शास्त्र’ बहरक अनिवार्यता पर बल दैत अछि, तैँ विकलक रचनासभ पुस्तकक भीतर एक सर्जनात्मक-सैद्धान्तिक तनाव पैदा करैत अछि: गजल नाम विधागत अनुशासनक संकेत देत अछि, जखनकि ‘आजाद’ विशेषण स्वतंत्र लयक दावा करैत अछि। एहि बहसक बीच रचनाक मूल्य बिम्ब, भाव-संगति, पुनरावृत्ति आ स्वर-संगीत पर निर्धारित होइत अछि।

४.2. सुबोध ठाकुर

रचनासभ: नव वर्षक रंग; प्रयास; प्रतीक्षा [मूल पृष्ठ १४५६-१४६०]

तीनू कविता समय, आशा आ मनुष्यक प्रयत्नक त्रयी बनबैत अछि। ‘नव वर्षक रंग’ नूतन कालक उत्सव/अपेक्षा, ‘प्रयास’ कर्मक सक्रियता आ ‘प्रतीक्षा’ स्थगित आकांक्षाक भाव-प्रदेश रचैत अछि। शीर्षकसभक सरलता कविता केँ प्रत्यक्ष पाठकीय प्रवेश दैत अछि; भावक गहिराइ लय, चित्र आ वाक्य-विरामक उपयोगपर निर्भर अछि। समूहक मुख्य उपलब्धि आशा आ अस्थिरताकेँ अलग-अलग भावस्थितिमे बाँटि देखेब अछि।

४.3. सतीश चन्द्र झा

रचनासभ: सौंसे बिहार एखनो बेहाल [मूल पृष्ठ १४६१-१४६३]

‘सौंसे बिहार एखनो बेहाल’ आवर्त-प्रधान जनकविता अछि। शीर्ष पंक्तिक पुनरावृत्ति राजनीतिक निराशाकेँ स्मरणीय लय दैत अछि। संकलनक आन्तरिक समीक्षात्मक पाठ सतीश चन्द्र झाक लय-सम्पन्नताक उल्लेख करैत अछि; एहि कवितामे सेहो पुनरुक्त पंक्ति जनसभा/पाठ-दुनू लेल उपयुक्त श्रव्य प्रभाव बनबैत अछि। कविता तत्कालीन शासन/चुनावक संदर्भसँ जुड़ल होइतहुँ जनजीवनक व्यापक प्रश्नक कारण दीर्घ सामाजिक प्रतिध्वनि पबैत अछि।

४.4. जीवकान्त

रचनासभ: बाल साहित्य/कविता- बबलू बनबय छक्का-सत्ता [मूल पृष्ठ १४६४-१४६७]

बबलू आ अकलू जकाँ नेना-पात्र, खेल, आमक तख्ता आ ‘छक्का-सत्ता’क खेलधर्मी शब्दावली कविता केँ बाल-लोकक भीतर राखैत अछि। छोट पंक्ति, क्रिया-प्रधानता आ तुक/लय बाल-पाठकीयता बढ़बैत अछि। रचना शिक्षोपदेशक बनबाक बदला खेलक अनुभवसँ भाषा रचैत अछि—बालकाव्य लेल ई महत्वपूर्ण गुण अछि। ‘मैथिली बाल काव्यधारा’क सैद्धान्तिक आलेखक बाद ई रचना बाल-कविताक जीवित उदाहरण रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि।

४.5. राजेश मोहन झा

रचनासभ: घुरना मोन पड़ैए [मूल पृष्ठ १४६८-१४६९]

‘घुरना मोन पड़ैए रौ उगना मोन पड़ैए’ जकाँ आवर्त पंक्ति स्मृति, विरह आ लोक-सम्बोधनकेँ गीतात्मक लय दैत अछि। उगना/विद्यापति-संस्कृतिक स्मृति आ खेत-पथारक दृश्य निजी यादकेँ सामूहिक मिथिला-बोधसँ जोड़ैत अछि। संकलनक आन्तरिक आलोचना राजेश मोहन झाक लयबोधक प्रशंसा करैत अछि; एहि रचनामे आवर्त ओकर स्पष्ट आधार अछि। कविता स्मरणकेँ केवल अतीत-प्रेम नहि, सांस्कृतिक पहचानक जीवित ध्वनि बनबैत अछि।

४.6. अरविन्द ठाकुर

रचनासभ: आजाद गजल-१-२ [मूल पृष्ठ १४७०-१४७१]

दू 'आजाद गजल' मुक्त संरचनामे गजल-संवेदनाक प्रयोग करैत अछि। एतय सेहो 'आजाद' नाम पारम्परिक बहर, रदीफ-काफिया आ शेर-स्वायत्ततासँ रचनात्मक दूरीक संकेत अछि। पुस्तकक गजल-शास्त्रीय आग्रहक आलोकमे एहि कवितासभकेँ 'विधा-सीमा' पर कएल प्रयोग रूपेँ पढ़ब अधिक न्यायपूर्ण अछि। मूल्यांकनक मुख्य कसौटी भाव-संयम, आन्तरिक लय, बिम्बक सघनता आ समापनक प्रभाव अछि।

४.7. रवि भूषण पाठक

रचनासभ: कि भेलए एकरा? [मूल पृष्ठ १४७२]

'रौ बहि! रौ बहि! कि भेलए एकरा?'क दोहराव कविता केँ बोलचाल, लोकगीत आ राजनीतिक/सामाजिक विस्मयक संयुक्त स्वर दैत अछि। रोसड़ा, तेघड़ा, पटना, दिल्ली जकाँ स्थान-संकेत निजी प्रश्नकेँ सार्वजनिक भूगोलमे फैलाबैत अछि। एक पृष्ठक कविता प्रश्नवाचकता केँ शिल्प बनबैत अछि—उत्तरक बदला लगातार 'की भेल'क उलझन समाजक असंगतिक अनुभव रचैत अछि।

४.8. प्रवीण कश्यप

रचनासभ: पौरुष पिशाच [मूल पृष्ठ १४७३-१४७४]

'पौरुष पिशाच' प्रेमक भीतर अहंकार आ हिंसक पुरुषत्वक आलोचना अछि। 'प्रिया' सम्बोधनसँ आरम्भ भऽ 'पौरुष'केँ 'पिशाच' कहब पारम्परिक मर्दानगीक गौरव-छविक उलटब अछि। कविता व्यक्तिगत सम्बन्धक चोटसँ सामाजिक लैंगिक संरचना धरि अर्थ विस्तार करैत अछि। प्रत्यक्ष सम्बोधन भावनात्मक तीव्रता दैत अछि; शीर्षकक रूपक कविता केँ स्पष्ट प्रतिरोधक विमर्शसँ जोड़ैत अछि।

४.9. राम विलास साहु

रचनासभ: चौवनिया नेता [मूल पृष्ठ १४७५-१४७६]

'चौवनिया नेता' जनभाषाक राजनीतिक व्यंग्य अछि। 'चौवनिया' शब्दहि मे मूल्य-ह्रास, सस्ता प्रतिष्ठा आ हास्यक संकेत अछि। कविता नेता-छविक विडम्बना केँ गीतात्मक/लोकलयी रूपमे रखैत अछि; मंच-पाठक संभावना एकर प्रभाव बढ़बैत अछि। संकलनक राजनीतिक रिपोर्टाजक गंभीर स्वरक समानान्तर ई कविता हास्य द्वारा सत्ता-आलोचना करैत अछि।

४.10. महाकान्त ठाकुर

रचनासभ: साहेब [मूल पृष्ठ १४७७-१४७८]

'साहेब' पद, अधिकार आ सामाजिक दूरीक सांकेतिक शब्द अछि। कविता एही पदवीक आसपास बनल भय, आकर्षण अथवा चापलूसीक संस्कृतिपर व्यंग्य करैत अछि। छोट आयतन आ परिचित सम्बोधन रचना केँ लोकसुलभ बनबैत अछि। औपनिवेशिक अवशेष रूपेँ 'साहेब'क सामाजिक दीर्घजीविता कविता केँ ऐतिहासिक अर्थ सेहो दैत अछि।

४.11. डॉ. शेफालिका वर्मा

रचनासभ: स्मृति-शेष; बच्चा आ व्यवस्था; देश [मूल पृष्ठ १४७९-१४८४]

'स्मृति-शेष' निजी/सामूहिक हानि, 'बच्चा आ व्यवस्था' संस्थागत संसारसँ नेनाक असमान सामना, आ 'देश' व्यापक नागरिक भाव—तीन स्तरक कविता रचैत अछि। नाटकसभमे जे प्रतिवादक स्वर देखाइत अछि, पद्यमे सेहो व्यक्ति आ व्यवस्था बीच नैतिक तनाव प्रमुख रहैत अछि। कवयित्री भावुकताकेँ प्रश्नात्मक सामाजिक दृष्टिसँ जोड़ैत छथि; एहि कारण निजी स्मृति आ सार्वजनिक उत्तरदायित्व एक-दोसराक विरोधी नहि रहैत अछि।

४.12. सरोज 'खिलाडी'

रचनासभ: गीत [मूल पृष्ठ १४८५-१४८६]

'अहाँ बिना हम रहि नहि सकैछी' जकाँ आवर्त प्रेमगीतक मुख्य स्वर अछि। सरल वाक्य, पुनरावृत्ति आ प्रत्यक्ष सम्बोधन गीतकेँ स्मरणीय आ गेय बनबैत अछि। अंतर्मनक प्रेम आ सार्वजनिक संकोचक टकराव प्रेमगीतक परिचित ढाँचा होइतहुँ मैथिली बोलचाल ओकर स्थानीय आत्मीयता बनाए रखैत अछि। रचनाक मूल्य

जटिल प्रतीकसँ बेसी स्वर, लय आ भाव-प्रेषणमे अछि।

४.13. श्यामल सुमन

रचनासभ: कहू कि फूसि बजय छी? [मूल पृष्ठ १४८७]

शीर्षकहि मे प्रश्न, चुनौती आ संवाद अछि—‘कहू कि फूसि बजय छी?’। कविता पाठक/सम्बोधित व्यक्तिकेँ निष्क्रिय श्रोता नहि रहए दैत। संकलनक आन्तरिक समीक्षात्मक टिप्पणी श्यामल सुमनक गीतात्मक स्वरक उल्लेख करैत अछि; एहि रचनामे प्रश्नवाचक आवर्त गीतक मंचीयता बढ़बैत अछि। सत्य/फूसि, दावा/विश्वासक द्वन्द्व छोट आकारमे भावनात्मक ऊर्जा पैदा करैत अछि।

४.14. काली नाथ ठाकुर

रचनासभ: दहेज विरोधी रचना [मूल पृष्ठ १४८८-१४९०]

दहेज-विरोध एहि रचनाक प्रत्यक्ष सामाजिक उद्देश्य अछि। संकलनक भीतरक आलोचनात्मक पाठ विशेष रूपेँ काली नाथ ठाकुरक दहेज-विरोधी कुण्डलियाक प्रशंसा करैत अछि। सामाजिक संदेश आ छन्दोबद्ध अनुशासनक संयोग एकर विशेषता अछि: विचार मात्र नारा नहि रहि पुनरावृत्ति, मात्रा/लय आ संरचनाक भीतर स्मरणीय बनैत अछि। दहेज-विमर्श संकलनक गद्य-नाटक ‘बेटीक अपमान’ आदि सँ संवाद करैत अछि।

४.15. किशन कारीगर

रचनासभ: दौगल चलि जाएब गाम; आबि गेल नव वर्ष; बँटवारा; एकटा तऽ ओ छलीह; गलचोटका बर; लिखैत रही; नबकनियाँ; किडनी चोर; बीर जबान; हमरो जीबऽ दिअ; हाकिम भऽ गेलाह; पियक्कर; दहेज; देशऽक चिन्ता [मूल पृष्ठ १४९१-१५१८]

किशन कारीगरक पद्य-समूह संकलनक सबसँ बहुरंगी लोकस्वरसभमेसँ एक अछि। गामक स्मृति, नववर्ष, पारिवारिक बँटवारा, प्रेम/स्मरण, विवाह-व्यंग्य, लेखकीय आत्मबोध, नवकनियाँ, अंग-चोरीक भय, सैनिक, जीवनाधिकार, नौकरशाही, मद्यपान, दहेज आ राष्ट्र—विषय हास्यसँ करुण/गंभीर धरि बदलैत अछि। संकलनक आन्तरिक समीक्षामे सेहो कारीगरक हास्यसँ गंभीर विषय दिस बढ़बाक विशेषता चिन्हल गेल अछि। भाषा बोलचालक, दृश्य तुरन्त पहचानयोग्य, आ कई रचनामे लोकगीत/कहबीक लय अछि। असमान विषय-विस्तारक कारण काव्य-गुण सर्वत्र एकसमान नहि, मुदा सामुदायिक जीवनक प्रत्यक्ष ध्वनि हुनक विशिष्ट योगदान अछि।

४.16. नवीन कुमार ‘आशा’

रचनासभ: मच्छर मच्छर; याद अबैए बाबाक लावा [मूल पृष्ठ १५१९-१५२३]

‘मच्छर मच्छर’ दैनिक असुविधाकेँ हास्य/लयक वस्तु बनबैत अछि, जखनकि ‘याद अबैए बाबाक लावा’ परिवार, स्वाद आ बाल-स्मृतिकेँ भावुक धरातल दैत अछि। एकहि कवि मे तुच्छ देखाइत विषय आ आत्मीय स्मृति बीचक दूरी रचनात्मक बहुलता देखबैत अछि। संकलनक आन्तरिक आलोचना नवीन कुमार ‘आशा’मे सम्भावना देखैत अछि; एहि दू कवितामे सरल भाषा, घरेलू बिम्ब आ गेयता ओहि सम्भावनाक आधार थिक।

४.17. मनीष झा ‘बौआभाई’

रचनासभ: फहराइयै पताका [मूल पृष्ठ १५२४-१५२५]

‘फहराइयै पताका’ सामूहिकता, उत्साह आ सार्वजनिक गायनक कविता अछि। पताका स्वयं पहचान, गौरव आ संगठनक दृश्य प्रतीक अछि। रचनाक सम्भावित मंचीय/समूह-पाठ स्वभाव ओकर लय आ आवर्तमे निहित अछि। एहन कविता निजी सूक्ष्मता सँ बेसी सामूहिक भावोद्गारपर निर्भर करैत अछि; संकलनमे ई जनगीत-धाराकेँ प्रतिनिधित्व दैत अछि।

४.18. मुन्नी कामत

रचनासभ: समाजक विडम्बना [मूल पृष्ठ १५२६]

एक पृष्ठक ‘समाजक विडम्बना’ शीर्षकहि सँ आलोचनात्मक दृष्टि स्पष्ट करैत अछि। छोट आकार सामाजिक विसंगतिकेँ प्रत्यक्ष, बिना अधिक अलंकरणक भाषा मे कहबाक अवसर दैत अछि। स्त्री रचनाकारक दृष्टिसँ सामाजिक विडम्बनाक उच्चारण संकलनक सार्वजनिक विमर्शमे लैंगिक अनुभवक स्थान बढ़बैत अछि। रचनाक प्रभाव सघनता आ कथनक स्पष्टतामे अछि।

४.19. मृदुला प्रधान

रचनासभ: ई त बूझू [मूल पृष्ठ १५२७-१५३०]

'ई त बूझू' पाठककेँ प्रत्यक्ष सम्बोधन करैत चेतावनी/बोधक काव्य-विन्यास अछि। उपलब्ध पंक्तिसभमे 'अपना गोर पर अपने कुल्हाड़ी मारनाइ' जकाँ लोक-कहबीक पुनर्संयोजन व्यंग्यक धार बनबैत अछि। संकलनक भीतरक समीक्षात्मक टिप्पणी मृदुला प्रधानक स्पष्टवादिता आ 'कलमक माध्यमसँ गाम-घरमे विचरण'क स्वभावक प्रशंसा करैत अछि। लोकप्रचलित मुहावरा, बोलचाल आ सामाजिक टिप्पणी एहि कविताक प्रमुख साधन अछि।

४.20. रमा कान्त झा

रचनासभ: की होइत अछि कश्मीरमे आब; रही रही मोन पड़ै अछि गामक; हम की हमर पहचान की; माता के चरण कमलमे आरती प्रस्तुत; की गलती हमरासँ भेल; बिबाह ने भेल एकटा सोगातक संग भेटल; मिथिला अछि नगरी; सौराठ अछि हमर गाम; नाम सुनीता रूप आब्निता अछि; नचारी; बसन्त आबि गेल नव कालिया सगरो गाछ छा गेल [मूल पृष्ठ १५३१-१५४२]

रमा कान्त झाक पद्य-समूह राजनीतिक जिज्ञासा, गामक स्मृति, आत्म-पहिचान, भक्ति, आत्मपरीक्षण, विवाह, मिथिला-सौराठक स्थानगौरव, स्त्री-रूपक, नचारी आ बसन्तगीत धरि फैलल अछि। एतय आधुनिक समाचार-जगत आ परम्परागत भक्ति/लोकगीत एकहि काव्य-स्वरमे सहअस्तित्व रखैत अछि। विषय-विविधता संकलनक स्वयं बहुविध रूपक छोट प्रतिरूप अछि। शिल्पक दृष्टिसँ गीतात्मकता आ प्रत्यक्ष कथन प्रमुख; कखनो कथ्यक तात्कालिकता रूपक-सघनता पर भारी पड़ैत अछि, मुदा सांस्कृतिक भूगोलक आत्मीय अभिव्यक्ति मजबूत अछि।

४.21. मनोज कुमार मंडल

रचनासभ: बूढ़; किसान [मूल पृष्ठ १५४३-१५४७]

'बूढ़' आ 'किसान' समाजक दू प्रायः अदृश्य श्रमशील/निर्भर वर्गकेँ केन्द्र दैत अछि। वृद्धावस्थाक अकेलापन/अवमूल्यन आ किसानक श्रम-अनिश्चितता पद्यकेँ ग्रामीण सामाजिक यथार्थसँ जोड़ैत अछि। शीर्षकक सरलता विषयकेँ प्रतीकात्मक बनबैत अछि—व्यक्ति एक व्यापक वर्ग-अनुभवक प्रतिनिधि होइत अछि। करुणा यदि दया बनि नहि रहि गरिमा आ संरचनात्मक प्रश्न उठबैत अछि, तखन एहन कविता अधिक प्रभावी होइत अछि।

४.22. बेचन ठाकुर

रचनासभ: घरनी-बीसा [मूल पृष्ठ १५४८-१५५०]

'घरनी-बीसा' दोहा-आधारित व्यंग्यात्मक रचना अछि। गृहस्थ सम्बन्ध, सास-ससुर-भैंसुर आ 'घोघ' जकाँ परम्परागत सामाजिक संकेत दोहाक संक्षिप्त लयमे आबैत अछि। रचना घरेलू शक्ति-संतुलनपर हास्य करैत अछि; मूल्यांकनक समय ई ध्यान राखब आवश्यक अछि जे पात्रक कथन/लोक-मानस आ कविक अंतिम मान्यता एक चीज नहि होइत। छन्दक अनुशासन आ लोकभाषा एकरा मौखिक स्मरणक अनुकूल बनबैत अछि।

४.23. नन्द विलास राय

रचनासभ: अकाल; प्रदूषण रोकू कविता [मूल पृष्ठ १५५१-१५५४]

'अकाल' जल-अभाव, सूखल खेत-पथार आ कृषि-संकटकेँ लोकगीत-जकाँ आवर्तमे व्यक्त करैत अछि; 'पानी बिनू पड़ल अकाल' जकाँ पंक्ति पर्यावरणकेँ सीधे जीवन-आधारसँ जोड़ैत अछि। 'प्रदूषण रोकू' पर्यावरणीय चेतनाक प्रत्यक्ष आह्वान अछि। दुनू कविता मिलि पारिस्थितिक साहित्यक लोकधर्मी स्वर बनबैत अछि—एक कात संकट-अनुभव, दोसर कात संरक्षणक आग्रह। उपदेशात्मकता एतय उद्देश्यक अंग अछि, मुदा लोकलय संदेशकेँ स्मरणीय बनबैत अछि।

४.24. गजेन्द्र ठाकुर

रचनासभ: घृणाक तरहरिमे/ बुढ़िया डाही संग अछि; घड़ी पूजा; नजरि लागि जाइ छै; ठाढ़ लत्तीकेँ पढ़ैत छी; हमर आकांक्षाक अग्नि; उजाहिमे उपलाइत हम आ माँछ; बकछुछरु खेलाइत हम आ भीखू; कटिहारी; भाग्यशाली; हाइकू/ शेनर्यू/ टनका/ हैबून; कुण्डलिया १-४; रुबाइ; कता १-२; गजल १-४१ (धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ) [मूल पृष्ठ १५५५-१६४८]

ई विशाल पद्य-खंड विषय आ रूप दुनू स्तरपर प्रयोगशाला अछि। आरम्भिक मुक्त/लघु कवितामे घृणा, लोकविश्वास, घड़ी/पूजा, नजरि, देह, आकांक्षा, जल-जगत, बाल/गरीब जीवन, स्थान-स्मृति आ भाग्य जकाँ प्रसंग अछि। तत्पश्चात हाइकू, सेनर्यू, टनका, हैबून, कुण्डलिया, रुबाइ, कता आ ४१ गजल एकहि कविक भीतर अनेक काव्य-परम्पराक परीक्षण करैत अछि। ई बहुरूपता मैथिली काव्यकेँ जापानी, फारसी-अरबी/उर्दू आ भारतीय छन्द-परम्परासँ संवाद करबैत अछि। 'मैथिली गजल शास्त्र'क लेखक स्वयं गजल लिखैत छथि, तैँ सिद्धान्त आ प्रयोगक प्रत्यक्ष तुलना सम्भव अछि। शक्ति रूप-विस्तार, लोकजीवनक बिम्ब आ

छन्द-चेतना अछि; चुनौती ई जे अत्यधिक विधा-संख्या बीच प्रत्येक रूपक कसौटी अलग अछि।

५. चित्रकला-खण्ड: दृश्य-समीक्षा

चित्रकला-खण्डक समीक्षा मूल PDF पृष्ठक प्रत्यक्ष दृश्य-परीक्षणपर आधारित अछि। एतय चित्रक कल्पित कथानक नहि बनाओल गेल; देखाइत आकृति, रेखा, रंग, विन्यास आ शैलीगत प्रवृत्तिक वर्णन मात्र कएल गेल अछि।

५.1. श्वेता झा चौधरी

कृति/समूह: मिथिला चित्रकला [मूल पृष्ठ १६४९-१६७०]

चित्रकला-खण्डमे श्वेता झा चौधरीक कार्य सबसँ विस्तृत दृश्य-समूह अछि। पृष्ठसभमे देवी-देवता, स्त्री-आकृति, वृक्ष, मयूर, माछ, युगल, ज्यामितीय/वनस्पतिक सीमा-बन्ध आ घन रेखांकनक प्रयोग देखाइत अछि। श्वेत-श्याम सूक्ष्म रेखा आ रंगीन संयोजन दुनू उपस्थित अछि। परम्परागत मिथिला चित्रकला-व्याकरण—समतलीय विन्यास, रिक्त स्थानक न्यूनता, सजावटी पुनरावृत्ति—क संग किछु विषय/रंग आधुनिक व्यक्तिगत हस्ताक्षर दैत अछि। संकलनक आन्तरिक समीक्षात्मक लेख सेहो हुनक चित्रकला कैं विशेष प्रशंसनीय मानैत अछि। साहित्यिक संकलनमे ई दृश्य-खंड 'पाठ'क परिभाषाकैं विस्तारित करैत अछि।

५.2. अनुपमा प्रियदर्शिनी

कृति/समूह: चित्रकला [मूल पृष्ठ १६७१-१६७२]

अनुपमा प्रियदर्शिनीक संक्षिप्त दृश्य-उपस्थिति रंगक तीव्रता आ धार्मिक/मंगल प्रतीकक केन्द्रित विन्याससँ पहिचान बनबैत अछि। कम पृष्ठ होइतहुँ आकृतिक स्पष्टता, सजावटी घनत्व आ चमकीला रंग परम्परागत विषयकैं तात्कालिक दृश्य प्रभाव दैत अछि। संकलनमे एकर महत्त्व विविध कलाकारक अलग शैली-पहिचान देखेबामे अछि।

५.3. श्वेता झा (सिंगापुर)

कृति/समूह: चित्रकला [मूल पृष्ठ १६७३-१६८५]

श्वेता झा (सिंगापुर)क चित्रसभमे मिथिला-चित्रकला प्रवासी संदर्भमे जीवित परम्परा रूपेँ देखाइत अछि। देव-युगल, वृक्ष, जीव-जंतु, माछ, मयूर, सजावटी भराव आ सममित/केन्द्रित विन्यासक संग चटक रंग प्रयोग उल्लेखनीय अछि। 'सिंगापुर'क स्थान-संकेत ई बातक सांस्कृतिक अर्थ बढ़बैत अछि जे लोककला भूगोल बदललापर समाप्त नहि होइत, प्रवासमे नव रंग-संयोजन आ प्रस्तुति पबैत अछि। ई खण्ड पुस्तकक प्रवास-विमर्शकैं दृश्य कलामे विस्तार दैत अछि।

५.4. गुंजन कर्ण

कृति/समूह: चित्रकला [मूल पृष्ठ १६८६]

एक पृष्ठक गुंजन कर्णक चित्र सूक्ष्म रेखा, वृत्त/मण्डल-जकाँ केन्द्राभिमुख संरचना आ घन सजावटी विन्यासक कारण अलग ठाढ़ होइत अछि। सीमित स्थानमे पैटर्नक पुनरावृत्ति ध्यानात्मक दृश्य-लय बनबैत अछि। ई काम मिथिला रेखांकनक अलंकरण-शक्ति आ गणनात्मक अनुशासनक सुन्दर उदाहरण रूपेँ देखाइत अछि।

५.5. तुनिशा प्रियम

कृति/समूह: किछु चित्र [मूल पृष्ठ १६८७-१६९०]

तुनिशा प्रियमक चित्रसभ संकलनक अन्तमे प्रकृति, वृक्ष, ग्रामीण घर/दृश्य, पहाड़-नदी आ रेखाचित्रक अपेक्षाकृत खुला शैली अनैत अछि। ई कार्य श्वेता झा चौधरी/श्वेता झाक घन पारम्परिक मिथिला-विन्याससँ भिन्न, अधिक अवलोकनात्मक/परिदृश्यधर्मी दिशा देखबैत अछि। फलतः चित्रकला-खण्ड एकहि शैलीक प्रतिकृति नहि रहि नव पीढ़ी/अलग दृश्य-भाषा लेल स्थान बनबैत अछि।

६. प्रमुख आलोचनात्मक निष्कर्ष

६.१. विधागत विस्तार: शक्ति आ चुनौती

एकहि संकलनमे लघुकथा, दीर्घकथा, नाटक, लोकनाट्य, भाषण, रिपोर्टाज, समीक्षा, बालकाव्य, गजल, जापानी लघु-काव्यरूप आ चित्रकला रहबाक कारण

पुस्तक एकरूप नहि। ई असमानता संपादकीय कमजोरी मात्र नहि; ई ई-पत्रिका-आधारित साहित्यिक जीवनक वास्तविक बहुलता सेहो अछि। प्रत्येक विधा लेल अलग कसौटी अपेक्षित अछि।

६.२. लोकभाषा आधुनिक अनुभवक मुख्य माध्यम

गाम, पावनि, दही, आम, चौपाल, पान, कीर्तन आ लोकनाट्यक भाषा क्रीम, मोबाइल, मल्टीनेशनल कम्पनी, विदेश, पत्रकारिता आ चुनावक संग टकराइत अछि। एहि टकरावसँ मैथिली आधुनिकताक स्थानीय शब्दकोश बनैत अछि।

६.३. स्त्री-प्रश्न

'पत्नीभक्त'क पुरुषवादी मजाक, 'परिणीता', 'बेटीक अपमान', 'छीनरदेवी', दहेज-विरोधी पद्य, 'पौरुष पिशाच', 'कन्यादानक चिन्ता', नवकनियाँ आ स्त्री कलाकारसभ—ई सभ स्त्री-अनुभवकेँ अलग-अलग दृष्टिसँ अनैत अछि। सभ रचना समान रूपेँ स्त्रीवादी नहि; किछु पाठ परम्परागत दृष्टि सेहो वहन करैत अछि। आलोचना लेल ई भेद आवश्यक अछि।

६.४. जाति-वर्ग आ श्रम

दलित आत्मकथाक अभावपर टिप्पणी, 'छूआ-छूत', 'कोटा', जाति-व्यवस्थापर रिपोर्ट, किसान, मजदूर दिवस, बालमजदूर, भूख, दान/भिखारी आ कोर्ट—ई सामग्री मिथिलाक सामाजिक विषमताकेँ साहित्यक भीतर आनैत अछि।

६.५. नेपाल-भारत साहित्यिक भूगोल

नेपालक राष्ट्रपति, जनकपुर, काठमाण्डू, महोत्तरी, राजविराज, रेल-संपर्क, नेपाली मैथिली कथा, प्रवास आ संस्कार राष्ट्रसीमा पार करैत मैथिली संसार देखबैत अछि। आधुनिक मैथिली साहित्यकेँ केवल बिहार-केन्द्रित कथा मानल जाए तँ एहि सामग्रीक पैघ हिस्सा छूटि जायत।

६.७. दस्ताबेजी मूल्य

समारोह, पुरस्कार, गोष्ठी, भाषण, संस्थागत स्थापना, पत्रिका, चुनाव, भाषा-शपथ, शिक्षा आ लोकमहोत्सव जकाँ सामग्री साहित्यिक इतिहासक सामान्य पुस्तकमे प्रायः छुटि जाइत अछि। 'विदेह सदेह ३५' एही क्षणभंगुर सार्वजनिक सामग्रीकेँ रचना-संग संरक्षित करैत अछि।

६.८. आलोचनात्मक संस्करण लेल सुधार-बिन्दु

भविष्यक संस्करणमे प्रत्येक रचनाक मूल 'विदेह' अंक/तिथि, विधा-लेबल, प्रमाणित संक्षिप्त लेखक-परिचय, मूल वर्तनी बनाम सम्पादित वर्तनीक नीति, अपूर्ण रचनाक स्पष्ट चिह्न, चित्रक शीर्षक/माध्यम/वर्ष आ स्थिर डिजिटल पहचान देल जाए तँ शोध-मूल्य आरो बढ़त। ई मूल सामग्री हटेबाक नहि, ओकर अभिगम्यता बढ़ेबाक सुझाव अछि।

७. सत्यापित सहायक सन्दर्भ-पुस्तक-सूची

जयकान्त मिश्र. History of Maithili Literature. New Delhi: Sahitya Akademi, 1976.

देवकान्त झा. A History of Modern Maithili Literature: Post-Independence Period. New Delhi: Sahitya Akademi, 2004; पुनर्मुद्रण 2007.

M. M. Bakhtin. The Dialogic Imagination: Four Essays. Edited by Michael Holquist; translated by Caryl Emerson and Michael Holquist. University of Texas Press, English edition 1981/1982.

Northrop Frye. Anatomy of Criticism: Four Essays. Princeton University Press, 1957.

Fredric Jameson. The Political Unconscious: Narrative as a Socially Symbolic Act. Cornell University Press, 1981.

Homi K. Bhabha. The Location of Culture. Routledge, 1994.

Roland Barthes. Image-Music-Text. Translated by Stephen Heath. Fontana, 1977.

Ānandavardhana. The Dhvanyāloka of Ānandavardhana with the Locana of Abhinavagupta. Translated

by Daniel H. H. Ingalls, Jeffrey Moussaieff Masson and M. V. Patwardhan. Harvard University Press, 1990.

८. सम्पूर्णता-जाँच: सभ ७३ प्रविष्टि

नीचाँक सूची मूल अनुक्रमक सभ प्रविष्टिक पुनर्जांच अछि। प्रत्येक रचनाकार/कलाकार आ सूचीबद्ध रचना ऊपरक समीक्षामे समाविष्ट अछि।

क्रम	खण्ड	रचनाकार/ कलाकार	रचना/रचनासभ (मूल पृष्ठ)
1	गद्य	आशीष अनचिन्हार	बिजनेसमे अप्पन नाम करितौं; पत्नीभक्त (पृ. २-७)
2	गद्य	वीरेन्द्र कुमार यादव	राजदेव मंडलक बाढ़िक चित्रपर; कथा- नाह आओर जिनगी (पृ. ८-१०)
3	गद्य	विनीत उत्पल	लघुकथा- निमंत्रण; दीर्घकथा- घोड़ीपर चढ़ि लेब हम डिग्री; विनीत उत्पलक साक्षात्कार प्रबोध सम्मान २००४ सँ सम्मानित मायानंद मिश्रसँ (पृ. ११-७१)
4	गद्य	सुजीत कुमार झा	नेपालक राष्ट्रपतिक नेपाली प्रेम- लोककें किया नहि पचि रहल!; संस्मरण- मोबाइलक घण्टी जेना रुकिय नहि रहल छल; बिहारोमे मैथिली—मैथिली- मिथिलाक विधायक सभ मैथिलीमे सपथ लेलन्हि; नेपालोमे सपथ; नेपालमे मैथिली भाषामे पढाइ: उत्साह कम निराशा बेसी; होरीके परिवर्तित रुप- जनकपुरमे महामूर्ख सम्मेलन; जनकपुरमे कोजागरा महोत्सव; मिनापक लेल एकटा आओर उपलब्धी- दू लाखक पुरस्कार; जनकपुरमे पागे पाग-पागक व्यवसायीकरण पर किया नहि सोची?; लघुकथा- भौजी (पृ. ७२-११८)
5	गद्य	सुमित आनन्द	भाषणमाला; भारत-नेपालक मिथिला हस्तशिल्प कलामे असीम सम्भावना; आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' जयन्ती-२०१०; आचार्य रमानाथ झा आ प्रो. तंत्रनाथ झाक भाषणमाला-२०१० (पृ. ११९-१२९)
6	गद्य	मनोज झा मुक्ति	महोत्तरीक यूवाके देशव्यापी अभियान; अमर शहिद दुर्गानन्द जिनक सपना छल गणतन्त्र; मैथिली दिवसमे विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न; मिथिला महोत्सव आ एकर उपलब्धि; महाशिवरात्री मेला आ गाँजाक व्यापार; मिडिया सेन्टरक स्थापना (पृ. १३०-१४९)
7	गद्य	रमानन्द झा 'रमण'	मैथिली लोक गीतक अवस्था; नेपालमे मैथिली कथाक विकास ओ प्रवृत्ति (पृ. १५०-१९५)
8	गद्य	बृषेश चन्द्र लाल	लघुकथा- गोलबा (पृ. १९६-२०३)
9	गद्य	दुर्गानन्द मंडल	लघुकथा- पारस; बुढ़िया फूसि; दुर्गानन्द मंडलक समस्त मैथिलक लेल राखीक शुभकामना (पृ. २०४-२२०)

10	गद्य	उमेश मंडल	रोहनियाँ आम; जेहन मन तेहन जिनगी; निर्मलीसँ जनकपुर धाम; कबिलपुरक कथा गोष्ठी; सगर राति श्रोता कथा-सागरमे डुबकी लगेलन्हि; सुपौलक कथा गोष्ठी: ४ दिसम्बर २०१० (पृ. २२१-२४४)
11	गद्य	मुन्ना जी	सामाजिक सरोकारकेँ छुबैत मैथिली लघुकथा; विदेहक विहनि कथा (लघुकथा) विशेषांक (६७म अंकक मार्देँ); किएक अछोप बनल अछि मैथिली लघुकथा विधा; रिपोर्ताज (पृ. २४५-२६५)
12	गद्य	अनिल गौतम / तारानन्द वियोगी	अनिल गौतमक वार्तालाप तारानन्द वियोगीक संग (पृ. २६६-२७४)
13	गद्य	तारानन्द वियोगी	साहित्य अकादेमीक विशेष समारोह (१५.११.१०) मे तारानन्द वियोगीक वक्तव्य (पृ. २७५-२८२)
14	गद्य	गंगेश गुंजन	लाट साहेबक किरानी (पृ. २८३-२८६)
15	गद्य	किशन कारीगर	किरीम लगाउ-मुँह चमकाउ; मूरही-कचरी (पृ. २८७-२९४)
16	गद्य	सत्येन्द्र कुमार झा	हिस्सक; भैयारी; स्थानान्तरित दोष; अप्रासंगिक (पृ. २९५-२९८)
17	गद्य	मिथिलेश कुमार झा	कानून; दर्शन; कन्यादानक चिन्ता; महानगर-संस्कृति (पृ. २९९-३०३)
18	गद्य	चण्डेश्वर खाँ	कोटा (पृ. ३०४)
19	गद्य	धीरेन्द्र प्रेमर्षि	विचार टिप्पणी (पृ. ३०५-३०७)
20	गद्य	जितेन्द्र झा	के राखत रुमालक इज्जति; नेपालक राजनीतिक अबस्थासँ उपजल- ग्लानि; नव विवाहिताक लेल नव उमंग लाबए एहन मधुश्रावणि; काठमाण्डू। विदेशमे भविष्य देखैत अछि विद्यार्थी; काठमाण्डूमेँ कोहबर घर: वर ने कनिञा तैइयो बढिञा; परम्पराके निरन्तरतामेँ प्रवास बाधक नहि; उपटैत गाम बसाओत बाबा; महाकवि विद्यापति अक्षयकोष (पृ. ३०८-३३७)
21	गद्य	बिपिन झा	कृतारिषड्वर्गजयेनमानवीम्... (सफलताक मूलसूत्र); प्रदेश केर विकास : एक चिन्तन; हे हृदयेश्वरी: एक कटाक्षालोचन; की नब साल की पुरान साल..!, समसामयिक सन्दर्भमे गाँधीविचारक महत्ता; मिथिलांचल आ बिहार चुनाव; विरासत केर संरक्षण केकर उत्तरदायित्व?; विषवेलक सिञ्चन; गुरुशिष्य परम्परा आओर आधुनिकता; बालमजदूर पर हमर लेखिनीक दृष्टि; किछु पजरैत प्रश्न; भारत-नेपाल आओर मिथिलांचल;

			मजदूर सँ दूर मजदूर दिवस; शहीद कऽ चिताकऽ धूँआ क अभिलाषा; पर्वक 'औचित्यक उपेक्षा' सर्वथा चिन्तनीय (पृ. ३३८-३७४)
22	गद्य	खड़ानन्द यादव	गहूमक बोरा (पृ. ३७५-३७६)
23	गद्य	सत्यानंद पाठक	लघुकथा- स्वान विमर्श (पृ. ३७७-३८५)
24	गद्य	प्रो. वीणा ठाकुर	लघुकथा- परिणीता (पृ. ३८६-३९५)
25	गद्य	साकेतानन्द	आछे दिन पाछे गए (पृ. ३९६-४०४)
26	गद्य	नवेन्दु कुमार झा	रेल लाइनसँ जुड़त भारत आ नेपाल; भारतीय सामाजिक व्यवस्थामे आइयो जीवन्त अछि जाति व्यवस्था- प्रो. शर्मा; प्रदेशमे लागत चौदहटा नव उद्योग समूह; असोचैम कएलक एहि दिस पहल- मिथिलांचलमे सेहो लागत नव उद्योग; मतदाता सभक उत्साह मध्य सम्पन्न भेल तीन चरणक मतदान- राजनीतिक दलक बेचैनी बढ़ौने अछि मतदाताक चुप्पी; राहुलक मिशन बिहारसँ बढ़ल सत्ता आ विपक्षक परेशानी: मिथिलांचलक भूमिसँ कांग्रेसक युवराज कएलनि चुनावी शंखनाद; दू वर्ष पूरा कएलक मैथिली दैनिक मिथिला समाद (पृ. ४०५-४१६)
27	गद्य	देवशंकर नवीन	बिलाड़ि; मोटर साइकिल (पृ. ४१७-४३९)
28	गद्य	डॉ. शेफालिका वर्मा	एकांकी- एकटा आर महाभिनिष्क्रमण; शैतानक वारिस; प्रतिवादक स्वर (पृ. ४४०-४६३)
29	गद्य	भारत भूषण झा	लघुकथा- आत्मबल (पृ. ४६४-४६७)
30	गद्य	कपिलेश्वर राउत	अप्पन गप- किछु विहनि आ लघु कथा: वंश; उलहन; थरथरी; भोग; कुमारि भोजन; कीर्तन आ सम्मेलन; मूर्दा; सतमाए; तकरीर; पान; मई दिवस; भूख; बेथा; किसानक पूजी; छूआ-छूत; कलियुगक निर्णए (पृ. ४६८-५४०)
31	गद्य	प्रकाश झा	विश्व रंगमंच दिवस: 27 मार्च (पृ. ५४१-५४३)
32	गद्य	अनमोल झा	रिलेशन-२; तंग; डेरायल; पिछड़ल राज्य; एटेचमेन्ट; बढ़ैत चलू; दुःख; समाज; रिटर्न; फर्ज; तेल; प्रश्न; पाप; माता न कुमाता भवति; आँखिक पानि; चिन्ता; बुद्धि; कंट्रोल; चिन्तन; बोध (पृ. ५४४-५६७)
33	गद्य	रामभरोस	जट-जटिन (लोकनाट्य-रूपान्तर); नाटक-एकांकी भैया,

		कापड़ि 'भ्रमर'	अएलै अपन सोराज; राजविराजमे मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी सम्पन्न (पृ. ५६८-६०५)
34	गद्य	राधा कान्त मंडल 'रमण'	मैथिली एकांकी- कने हमहूँ पढ़व (पृ. ६०६-६१०)
35	गद्य	ऋषि वशिष्ठ	अन्हरजाली (पृ. ६११-६१५)
36	गद्य	नन्द विलास राय	लघुकथा- चौठचन्द्रक दही (पृ. ६१६-६२०)
37	गद्य	धीरेन्द्र कुमार	लघुकथा- अहींक लेल; जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास 'मौलाइल गाछक फूल' (पृ. ६२१-६३०)
38	गद्य	जीवकान्त	जगदीश प्रसाद मंडलक उपन्यास 'मौलाइल गाछक फूल' (पृ. ६३१-६३३)
39	गद्य	बेचन ठाकुर	बेटीक अपमान; छीनरदेवी (पृ. ६३४-७३२)
40	गद्य	अर्चना कुमर	आस; विद्वान (दादीसँ सुनल कथाक पुनर्लेखन); बेटा (पृ. ७३३-७३९)
41	गद्य	शिव कुमार झा 'टिल्लू'	समीक्षा- सूर्यमुखी; मैथिली कथाक विकासमे गामक जिनगीक योगदान; 'समकालीन मैथिली कविता'क समीक्षा; समीक्षा- मैथिली चित्रकथा (पृ. ७४०-७८०)
42	गद्य	गजेन्द्र ठाकुर	सहस्र शीर्षा; जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी; मैथिली गजल शास्त्र; मैथिली समीक्षाशास्त्र; बाल गुरु; एकटा पत्र; माए-बेटाक मनोविज्ञान; शारदानगर (पृ. ७८१-१४२३)
43	गद्य	प्रोफेसर प्रेमशंकर सिंह	मैथिली बाल काव्यधारा (पृ. १४२४-१४४४)
44	गद्य	देवांशु वत्स	प्रगतिक रहस्य (पृ. १४४५-१४४९)
45	पद्य	डॉ. नरेश कुमार 'विकल'	किछु आजाद गजल (पृ. १४५१-१४५५)
46	पद्य	सुबोध ठाकुर	नव वर्षक रंग; प्रयास; प्रतीक्षा (पृ. १४५६-१४६०)
47	पद्य	सतीश चन्द्र झा	सौंसे बिहार एखनो बेहाल (पृ. १४६१-१४६३)
48	पद्य	जीवकान्त	बाल साहित्य/कविता- बबलू बनबय छक्का-सत्ता (पृ. १४६४-१४६७)
49	पद्य	राजेश मोहन झा	घुरना मोन पड़ैए (पृ. १४६८-१४६९)
50	पद्य	अरविन्द	आजाद गजल-१-२ (पृ. १४७०-१४७१)

		ठाकुर	
51	पद्य	रवि भूषण पाठक	कि भेलए एकरा? (पृ. १४७२)
52	पद्य	प्रवीण कश्यप	पौरुष पिशाच (पृ. १४७३-१४७४)
53	पद्य	राम विलास साहु	चौवनिया नेता (पृ. १४७५-१४७६)
54	पद्य	महाकान्त ठाकुर	साहेब (पृ. १४७७-१४७८)
55	पद्य	डॉ. शेफालिका वर्मा	स्मृति-शेष; बच्चा आ व्यवस्था; देश (पृ. १४७९-१४८४)
56	पद्य	सरोज 'खिलाडी'	गीत (पृ. १४८५-१४८६)
57	पद्य	श्यामल सुमन	कहू कि फूसि बजय छी? (पृ. १४८७)
58	पद्य	काली नाथ ठाकुर	दहेज विरोधी रचना (पृ. १४८८-१४९०)
59	पद्य	किशन कारीगर	दौगल चलि जाएब गाम; आबि गेल नव वर्ष; बँटवारा; एकटा तऽ ओ छलीह; गलचोटका बर; लिखैत रही; नबकनियाँ; किडनी चोर; बीर जबान; हमरो जीबऽ दिअ; हाकिम भऽ गेलाह; पियक्कर; दहेज; देशऽक चिन्ता (पृ. १४९१-१५१८)
60	पद्य	नवीन कुमार 'आशा'	मच्छर मच्छर; याद अबैए बाबाक लावा (पृ. १५१९-१५२३)
61	पद्य	मनीष झा 'बौआभाई'	फहराइयै पताका (पृ. १५२४-१५२५)
62	पद्य	मुन्नी कामत	समाजक विडम्बना (पृ. १५२६)
63	पद्य	मृदुला प्रधान	ई त बूझू (पृ. १५२७-१५३०)
64	पद्य	रमा कान्त झा	की होइत अछि कश्मीरमे आब; रही रही मोन पड़ै अछि गामक; हम की हमर पहचान की; माता के चरण कमलमे आरती प्रस्तुत; की गलती हमरासँ भेल; बिबाह ने भेल एकटा सोगातक संग भेटल; मिथिला अछि नगरी; सौराठ अछि हमर गाम; नाम सुनीता रूप आब्निता अछि; नचारी; बसन्त आबि गेल नव कालिया सगरो गाछ छा गेल (पृ. १५३१-१५४२)
65	पद्य	मनोज कुमार मंडल	बूढ़; किसान (पृ. १५४३-१५४७)

66	पद्य	बेचन ठाकुर	घरनी-बीसा (पृ. १५४८-१५५०)
67	पद्य	नन्द विलास राय	अकाल; प्रदूषण रोकू कविता (पृ. १५५१-१५५४)
68	पद्य	गजेन्द्र ठाकुर	घृणाक तरहरिमे/ बुढ़िया डाही संग अछि; घड़ी पूजा; नजरि लागि जाइ छै; ठाढ़ लत्तीकेँ पढ़ैत छी; हमर आकांक्षाक अग्नि; उजाहिमे उपलाइत हम आ माँछ; बकछुछरु खेलाइत हम आ भीखू; कटिहारी; भाग्यशाली; हाइकू/ शेनर्यू/ टनका/ हैबून; कुण्डलिया १-४; रुबाइ; कता १-२; गजल १-४१ (धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ) (पृ. १५५५-१६४८)
69	चित्र	श्वेता झा चौधरी	मिथिला चित्रकला (पृ. १६४९-१६७०)
70	चित्र	अनुपमा प्रियदर्शिनी	चित्रकला (पृ. १६७१-१६७२)
71	चित्र	श्वेता झा (सिंगापुर)	चित्रकला (पृ. १६७३-१६८५)
72	चित्र	गुंजन कर्ण	चित्रकला (पृ. १६८६)
73	चित्र	तुनिशा प्रियम	किछु चित्र (पृ. १६८७-१६९०)

९. उपसंहार

‘विदेह सदेह ३५’क समग्र पाठ देखबैत अछि जे मैथिली साहित्यक आधुनिक इतिहास केवल कविता-कथा आ प्रसिद्ध लेखकक सूचीसँ नहि बनैत अछि। ई इतिहास गामक छोट कथा, नेपालक भाषा-राजनीति, लोकनाट्यक गीत, बालकविता, दहेज-विरोध, किसानक संकट, पत्रकारिता, गोष्ठी, आलोचना, गजल-शास्त्र, ई-पत्रिका-संस्कृति आ चित्रकला सभक सम्मिलित आवाजसँ बनैत अछि। संकलनक असमानता ओकर अभिलेखीय सत्यक हिस्सा अछि; ओकर उत्कृष्ट रचनासभ सौन्दर्य आ सामाजिक अनुभवक सघन रूप प्रस्तुत करैत अछि, आ अवसरानुकूल/दस्तावेजी रचनासभ सेहो समयक साहित्यिक सार्वजनिकता बुझबाक साक्ष्य दैत अछि। अतः एहि ग्रन्थक उचित पाठ ‘कैनन’ आ ‘आर्काइव’ दुनू रूपमे होयबाक चाही—एक दिस उत्कृष्ट रचनाक चयनात्मक सौन्दर्य-मूल्यांकन, दोसर दिस सम्पूर्ण सामग्रीक ऐतिहासिक संरक्षण। एहि दुहरा दृष्टिसँ ‘विदेह सदेह ३५’ मैथिली भाषाक डिजिटल-युगीन साहित्यिक जीवनक विस्तृत, संवादधर्मी आ बहुविध अभिलेख रूपेँ विशेष महत्त्व रखैत अछि।

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह सदेह ३५ — समग्र साहित्यिक समीक्षा

समालोचना

लेखक, रचना, अंक आ प्रवृत्तिक समीक्षात्मक अध्ययन

अध्याय 20 · विदेह: सदेह: २ — मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०

सारांश समग्र साहित्यिक समीक्षा: सभटा साहित्यकार भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य । विदेह अङ्कीय पत्रिका, अंक २६-५०, २०१०

१. जीवकान्त साक्षात्कार विनीत उत्पल द्वारा (पृ. १-७) । साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता, 'तकैत अछि चिड़ै' परिचय जीवकान्त (जन्म

२७ जुलाई १९३६, अभुआढ़, सुपौल) मैथिलीक सबसँ प्रतिष्ठित कवि सभमे छथि।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · वक्रोक्ति · औचित्य · आलोचना

समग्र साहित्यिक समीक्षा: सभटा साहित्यकार

भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य । पाश्चात्य आलोचना । गंगेशक नव्य-न्याय । विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर । विदेह अङ्कीय पत्रिका, अंक २६-५०, २०१०

१. जीवकान्त

साक्षात्कार विनीत उत्पल द्वारा (पृ. १-७) । साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता, 'तकैत अछि चिड़ै'

परिचय

जीवकान्त (जन्म: २७ जुलाई १९३६, अभुआढ़, सुपौल) मैथिलीक सबसँ प्रतिष्ठित कवि सभमे छथि। 'तकैत अछि चिड़ै' (२००३) हेतु साहित्य अकादमी पुरस्कार; मधुबनीक डेओढ़मे पालन-पोषण; ४० वर्षमे ६०-७० पोथीपर टिप्पणी।

रस-ध्वनि विश्लेषण: एहि साक्षात्कारमे करुण + वीर + शान्त रसक त्रयी अछि। ध्वनि: 'हमर कविता आखिरमे मोड़ लैत अछि' काव्य-संरचनाक गहन संरचना क संकेत। वक्रोक्ति: 'सोनारक काज लोहारक हथौड़ीसँ नहि भऽ सकैत' मैथिली आलोचनाक वर्तमान दुर्दशापर एक विध्वंसकारी अभियोग। औचित्य: साक्षात्कार-विधाक माध्यमसँ आजीवन साहित्यसेवीक आत्मकथा स्वाभाविक रूपसँ उभरैत अछि।

पाश्चात्य आलोचना: ग्राम्शी क 'कार्बनिक बुद्धिजीवी': जीवकान्त शैक्षणिक संस्थान सँ नहि, गामक अनुभवसँ निकसल छथि। 'मार्क्सवाद उत्तम विचार, मुदा हिंसाक पक्षमे बेसी' एहिमे एक सूक्ष्म उत्तर-मार्क्सवादी स्थिति अछि जे ग्राम्शी आ लोहिया दुनूकेँ समन्वित करैत अछि।

नव्य-न्याय: गंगेशक 'व्याप्ति': 'जे ग्रामीण अनुभवसँ लिखैत अछि से प्रामाणिक होइत अछि' ई व्याप्तिक 'दृष्टान्त' हुनकर अपन जीवन थिक। साक्षात्कारमे 'तर्क-वितर्क' (नव्य-न्याय बहस शैली) सँ रामायणपर विमर्श क उल्लेख।

विदेह समानान्तर इतिहास: साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त करबाक बावजूद जीवकान्त कहैत छथि जे 'अकादमीक राजनीति नहि जनैत छी, गाममे रहैत छी' ई विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचाक मूल चेतना थिक। विदेहे एहन कविकेँ मान्य-परम्परागत स्थान देलक।

२. राजमोहन झा (जन्म: २७ अगस्त १९३४)

साक्षात्कार गजेन्द्र ठाकुर द्वारा (पृ. ८-१०) । साहित्य अकादमी पुरस्कार 'आई-काल्हि-परसू'

रस-ध्वनि: शान्त + बौद्धिक जिज्ञासाक संगम। ध्वनि: मैथिली साहित्यक संरचनात्मक समस्या सभक पर्दाफाश जे कहल गेल तकर ध्वनि ओहिसँ बेशी। वक्रोक्ति: आलोचना-विधापर टिप्पणी करैत ओ स्वयं व्यवस्थाक हिस्सा छथि - दोधारी समीक्षा।

बाख्तिन / बेन्यामिन: बाख्तिन केर संवादात्मक कल्पना: गजेन्द्र ठाकुरक साक्षात्कार पद्धति दू साहित्यिक पीढ़ीक संक्रमण-दस्तावेज बनबैत अछि। बेन्यामिन: अङ्कीय पुरालेखमे संरक्षित भेलाक बाद ई प्राथमिक स्रोत बनि जाइत अछि।

३. रामान्य झा 'रामरंग' (जन्म: १९२८)

गप-शप गजेन्द्र ठाकुर सँ (पृ. ११) । विद्यापति संगीत-परम्परा

रस-ध्वनि: शान्त + भक्ति रस विद्यापति संगीत-परम्पराक एक जीवंत मूर्त रूप। ध्वनि: 'रामरंग' नामे पूरा साहित्यिक-आध्यात्मिक अस्मिता गुम्फित अछि।

बेन्यामिन / मौखिक परम्परा: बेन्यामिन केर 'आभा' मौखिक परम्पराक जीवन्त आभा रामरंगजीक विद्यापति गायन परम्परामे सबसँ प्रत्यक्ष। १९२८ मे जन्मल संगीत-साधकक स्मृतिकेँ विदेह पुरालेखमे स्थान देनाइ साहित्यिक पुरातत्व थिक।

४. जितेन्द्र झा

तीन लेख: जनकपुरमे चक्काजाम कवि गोष्ठी; प्रिय पाहुन; आशाक किरण: सौभाग्य मिथिला (पृ. १२-१४)

रस-ध्वनि: वीर + शान्त रस। 'आशाक किरण' वक्रोक्ति: मिथिलाक वर्तमान अन्धकार कैँ उजियार करबाक आकांक्षा। 'चक्काजाम' एक काव्य बिम्ब, साहित्यिक आयोजन रिपोर्ताज।

बूर्दू / विदेह ढाँचा: जनकपुर (नेपाल) क कवि-गोष्ठी रिपोर्ताज साहित्यक अन्तर-सीमा आयाम देखबैत अछि। विदेहक मूल भारत-नेपाल मैथिली मिशन केर प्रदर्शन।

५. अमरनाथ झा

तीन लेख: हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही; विष्णु भाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति; आचार्य पंकज (पृ. १५-१९)

रस-ध्वनि: करुण + शान्त रस स्मरण आ श्रद्धांजलि। 'हाँ ई तँ कहियो नहि देखने रही' ध्वनि: पहिलहि बेर भेल अनुभव सबहसँ बहुमूल्य। 'विष्णु भाकर जी सादगीक प्रतिमूर्ति' जीवनी-ध्यान।

बेन्यामिन / नव्य-न्याय: बेन्यामिन: जे व्यक्ति गेल, हुनका याद रखनाइ राजनैतिक कार्य। गंगेशक 'प्रत्यक्ष': अमरनाथ झाक व्यक्तिगत साक्ष्य एक वैध प्रमाण पुस्तकसँ बेसी।

६. तूलिका/ स्वास्तिका

रचना (पृ. २०-२१) । नारी-स्वर, चित्रकला।

रस-ध्वनि: शृंगार + करुण नव नारी-कण्ठक आवाज। 'तूलिका' (चित्रकारक कूंची) नाम स्वयं वक्रोक्ति: लेखनी चित्रकारी करैत अछि। शावाल्टर केर स्त्री-सृजन-समीक्षा: बिना क्षमा-याचना क नारी अन्तरंग संसार अभिव्यक्त करैत अछि।

७. चन्द्रेश

संवेदनशील मोनकेँ छुबैत हुगली ऊपर बहैत गंगा (पृ. २२-२८)

रस-ध्वनि: 'हुगली ऊपर बहैत गंगा' ध्वनि: गंगा केवल नदी नहि, सम्पूर्ण उत्तर-भारतीय सभ्यता-स्मृति। शान्त + करुण। वक्रोक्ति: 'हुगली' मे 'गंगा' देखनाइ भूगोल कैँ आध्यात्म-दर्शन मे परिवर्तित करैत अछि।

बेन्यामिन / नव्य-न्याय: बेन्यामिन केर 'शहरी तल': चन्द्रेश हुगलीक किनारसँ स्मृति संग्रह करैत। गंगेशक 'अनुव्यवसाय' (उच्च-चेतना): केवल गंगा देखनाइ नहि बल्कि देखनाइकेँ सेहो निरीक्षण करनाइ।

८. फूल चन्द्र झा 'प्रवीण'

मैथिली शिशु साहित्य लोक (पृ. २९-४१)

रस-ध्वनि: वात्सल्य रस। वक्रोक्ति: 'शिशु साहित्य' एक गम्भीर साहित्यिक श्रेणी, मात्र 'बच्चासभक गप' नहि। बेन्यामिन केर बाल्य-सिद्धान्त: बाल-साहित्य भविष्यक नागरिक सभकेर कल्पना-शक्ति कैँ आकार दैत अछि।

विदेह ढाँचा: साहित्य अकादमी मुख्यधारामे बाल-साहित्य द्वितीयक स्थान पर। विदेहमे समान स्थान मिलनाइ समानान्तर इतिहास ढाँचाक लोकतान्त्रिक

प्रतिबद्धता।

९. केदार कानन

जगदीश प्रसाद मंडलक कथा 'पछतावा' पर एक दृष्टि (पृ. ४२-४३)

रस-ध्वनि: शान्त + बौद्धिक यथार्थता। जगदीश प्रसाद मंडलक कथापर सूक्ष्म पाठ-वाचन। वक्रोक्ति: आलोचक कथाक 'पछतावा' विषय कँ अपन समीक्षात्मक सूक्ष्मदृष्टि सँ ढाँचा-तोड़ करैत छथि।

नव-समीक्षा आ नव्य-न्याय: टी.एस. इलियट केर नव-समीक्षा: पाठ-केन्द्रित, लेखक-अभिप्राय-स्वतन्त्र। गंगेशक 'साध्य-सिद्धि': आलोचनाक दावी + हेतु + दृष्टान्त पाठसँ तार्किक रूपसँ प्रस्तुत।

१०. प्रेमशंकर सिंह (जन्म: १९४२)

जयकान्त मिश्र: जीवन आ साहित्य-साधना (पृ. ४४-६६) । २२ पृष्ठक विस्तृत जीवनी-आलोचना

रस-ध्वनि: वीर + शान्त रस। ध्वनि: 'साहित्य-साधना' साहित्य तपस्या थिक। वक्रोक्ति: जयकान्त मिश्रक जीवन वर्णित करब = मैथिलीक सांस्कृतिक इतिहास वर्णित करब।

बूर्दू / नव्य-न्याय: बूर्दू केर साहित्यिक क्षेत्र: जयकान्त मिश्र केर सांस्कृतिक पूँजी केर विस्तृत मानचित्रण। गंगेशक 'पञ्चावयवी अनुमान': साहित्यिक जीवनी एक विस्तारित तर्क - पक्ष + हेतु + दृष्टान्त + उपनय + निर्णय।

विदेह ढाँचा: एक मान्य-परम्परागत व्यक्तित्व केर प्रति-मान्य-परम्परागत सूक्ष्मदृष्टिसँ पुन:परीक्षण - एकल-लेखक एकाधिकार क विकल्पक रूपमे दीर्घ-रूप आलोचना।

११. डा. रमानन्द झा 'रमण'

तन्त्रनाथ झा/सुभद्रा झा जन्मशतवार्षिकी (पृ. ६७-७६)

रस-ध्वनि: करुण + शान्त। ध्वनि: 'शतवार्षिकी' - सौ वर्ष पश्चात् याद केनाइ एक नैतिक कार्य। बेन्यामिन केर मसीही-समय: मृत लेखक सभकेँ याद रखनाइ 'मुक्ति' थिक।

विदेह पुरालेख: 'सगर रातिक दीप जरय' आन्दोलनक इतिहासक संग रमण जी मैथिली साहित्यिक इतिहास केर जीवंत पुरालेख छथि।

१२. श्यामसुन्दर शशि

श्रद्धांजलि: आह उमा! वाह उमा!; डा. धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र'क ६ अम वार्षिकी पर (पृ. ७७-८०)

रस-ध्वनि: 'आह उमा! वाह उमा!' - 'आह' (व्यथा) + 'वाह' (प्रशंसा) एक्के सासमे जटिल शोक। करुण प्रधान। वक्रोक्ति: 'वाह' श्रद्धांजलिमे जीवनक उत्सव।

बाख्तिन / उत्सवी-लोकधर्मी: बाख्तिनक उत्सवी-लोकधर्मी: 'आह-वाह' केर सह-स्थापनामे मृत्यु + उत्सव एक संग।

१३. नवेन्दु कुमार झा

चेतना समितिक आम सभामे नव पदाधिकारी; भाषाई अकादमीक विकास (पृ. ८१-८२)

रस-ध्वनि: वीर रस मैथिली भाषा सक्रियताक रिपोर्ताज। 'चेतना समिति' वक्रोक्ति: संस्थागत चेतना एक विरोधाभास। ग्राम्शी केर नागरिक समाज: प्रति-वर्चस्ववादी संस्था सभक दस्तावेजीकरण।

विदेह ढाँचा: मैथिली सक्रियताक तात्कालिक दस्तावेजीकरण विदेहकेँ एक 'जीवंत पुरालेख' बनबैत अछि।

१४. सुशान्त झा

मैथिली भाषा-संस्कृतिक रक्षा; हमर सपनाक मिथिला; मैथिलीकेँ लऽ कऽ किछु असुविधाजनक प्रश्न (पृ. ८३-८७)

रस-ध्वनि: वीर + करुण। 'असुविधाजनक' सत्य बजनाइ स्वयं वक्रोक्ति। गंगेशक 'संशय': शीर्षक एक ज्ञान-मीमांसीय सन्देह क अवस्था, निश्चित तथ्य नहि।

स्पिवाक: मैथिलीकेर 'अधीनस्थ' स्थिति - आठम अनुसूचीमे भेलाक बादो; जे फेर वएह हाशियाकृत 'असुविधाजनक' सत्य-कथन एहि अधीनस्थ स्वर केर अभिव्यक्ति।

१५. डॉ. शम्भु कुमार सिंह

आलेख: आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित: निर्धनताक समस्या (पृ. ८८-९०)

रस-ध्वनि: करुण + बौद्धिक शक्ति। वक्रोक्ति: 'निर्धनता' केवल आर्थिक दशा नहि, अस्तित्वगत संकट।

लुकाच / नव्य-न्याय: लुकाच केर समीक्षात्मक यथार्थवाद: मैथिली नाटकमे निर्धनता केर प्रतिनिधित्व। गंगेशक 'व्याप्ति-ग्रहण': 'जे मैथिली आधुनिक नाटक थिक से प्रायः निर्धनता चित्रित करैत अछि' - प्रमाण पाठसँ।

१७. हृदय नारायण झा

मिथिलाक लुप्तप्राय गीत: गर्भसँ छठिहार धरि; सोहर आ खेलउना; विआह संस्कारक गीत; विषहारा गीत (पृ. ९५-१०८) । १४ पृष्ठक संकलन

रस-ध्वनि: वात्सल्य + करुण + शान्त - जीवन-चक्र गीत। ध्वनि: 'लुप्तप्राय' सांस्कृतिक मृत्यु केर रूपक। वक्रोक्ति: 'गर्भसँ छठिहार धरि' - जन्मसँ पहिने मृत्युसँ बाद धरिक सम्पूर्ण मानव जीवन-चक्रक मानचित्रण।

बेन्यामिन / स्त्रीवादी: बेन्यामिन केर 'कथाकार': पारम्परिक समुदाय केर स्वर संरक्षण। स्पिवाक: सोहर, बिआह गीत मुख्यतया महिला गीत - ओइ महिला केर स्वर जे मुख्यधारा मान्य-परम्परामे कहियो नहि आएल।

विदेह समानान्तर इतिहास: मैथिली मौखिक परम्पराक अङ्कीय पुरालेखीकरण - सबसँ महत्त्वपूर्ण पुरालेखीय योगदान। जे साहित्यिक इतिहास पुस्तक सभमे नहि आएत, से विदेह पुरालेखमे रहत।

१८. डॉ. गंगेश गुंजन

जयकान्त मिश्रपर विशेष; कविक आत्मोक्ति: कविताक अएना - विनीत उत्पलक कविता संग्रहपर (पृ. १०९, ११४-११६)

परिचय: गंगेश गुंजन (साहित्य अकादमी, 'उचितवक्ता', 'बुधिबधिया', 'राधा') मैथिलीक बहुआयामी रचनाकार।

रस-ध्वनि: 'कविताक अएना' (दर्पण) वक्रोक्ति: कविता दर्पण + ओ दर्पण खुद दर्पण - अनन्त दर्पण-प्रभाव। शान्त + बौद्धिक यथार्थता। गंगेशक 'परोक्ष प्रमाण': विनीत उत्पलक अप्रकटित अभिप्राय सभकेँ पाठसँ अनुमान करैत।

१९. विद्या मिश्र

जयकान्त मिश्रपर विशेष; होलीपर विशेष (पृ. १०९, ११३)

रस-ध्वनि: शान्त + श्रद्धा। 'होलीपर विशेष' मे हास्य + शृंगार। वक्रोक्ति: होली मे सामाजिक सोपान अस्थायी रूपसँ विलीन। बाख्तिन केर उत्सवी-लोकधर्मी: होली एकटा पूर्ण उत्सवी-लोकधर्मी घटना।

२०. डा. चन्द्रेश शाह

होलीक सन्देश (पृ. १११-११२)

रस-ध्वनि: हास्य + शृंगार। 'सन्देश' वक्रोक्ति: होली केर रङ्ग सभ मे एकटा सन्देश बुझबाक आमन्त्रण। सोस्युर केर साङ्केतिकता: होली केर रङ्ग सभ = संकेतक; सांस्कृतिक अर्थ = संकेतित।

२१. रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' (जन्म: १९५१)

तीन लेख: संचार एवं साहित्य मे समावेशी स्वरूप; यात्रा प्रसंग; साझा प्रकाशनमे विद्यापति (पृ. ११७-१२५)

रस-ध्वनि: वीर + शान्त। 'समावेशी' क माँग करनाइ = वर्तमान स्थिति बहिष्कारी छैक - वक्रोक्ति। बेन्यामिन: 'साझा प्रकाशनमे विद्यापति' - अनुवाद-के-रूप-मे-परवर्ती जीवन।

ग्राम्शी / विदेह ढाँचा: ग्राम्शीक 'सांस्कृतिक वर्चस्व': मिथिलाक बहिष्कार केर सामना करबाक अनुरोध। 'भ्रमर' विदेह केर अन्तर-मञ्च प्रयोग केर सक्रिय सहभागी छथि।

२२. डा. कल्पना मणिकान्त मिश्र

मातृभाषा (पृ. १२६-१२७)

रस-ध्वनि: वात्सल्य + वीर। 'मातृभाषा' - भाषाक मृत्यु = माँक मृत्यु - भावनात्मक तीव्रताक उच्चतम बिन्दु। स्पिवाक केर 'मातृभाषा' राजनीति: मैथिलीक दावी एक राजनैतिक दृढ़ोक्ति।

नव्य-न्याय: गंगेशक 'शब्द प्रमाण': 'मातृभाषा' शब्द स्वयं साक्ष्य - मैथिली बाजयबला केर अपन भाषा संग मातृ बन्धन।

२३. भीमनाथ झा

मखानक खानि ई मिथिला; चन्दा झा, हरिमोहन झा मिलि कऽ (पृ. १२८-१३५)

रस-ध्वनि: वीर + शान्त। 'मखानक खानि' - मखान (फक्स नट) मिथिलाक अद्वितीय कृषि अस्मिता। वक्रोक्ति: 'खानि' (खजाना) - मिथिला स्वयं एकटा खानि। स्थान-सिद्धान्त: भूदृश्य साहित्यिक कल्पना कें आकार दैत अछि।

२४. प्रकाश चन्द्र

रचना: रंगदृष्टि; दिल्ली; मिथिलामे रंगकलाक समकालीन दृष्टि (पृ. १३६-१४०)

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): अद्भुत + वीर। 'रंगदृष्टि' ध्वनि: देखबाक तरिका स्वयं विचारधारा। बेन्यामिन केर 'आभा': मिथिला चित्रकलाक मूल अनुष्ठानिक सन्दर्भ बनाम सामूहिक-रूपसँ पुनरुत्पादित वस्तु।

साङ्केतिकता (साङ्केतिक विवेचना): मैथिली साहित्य, कला, आ मिथिलाक सांस्कृतिक विन्यासमे माछ, कमल, आ हाथी मात्र प्रतीक नहि, बल्कि एकटा समृद्ध **संकेत-प्रणाली** कें देखबैत अछि।

१. माछ (माछ): प्रजनन आ शुभक प्रतीक। मिथिलाक लोक-संस्कृतिमे माछ कें अत्यन्त पवित्र आ मङ्गलकारी मानल जाइत अछि। प्रजनन आ वंश-वृद्धि: माछ ढेर रास अण्डा दैत अछि, तें ई 'प्रजनन क्षमता' आ वंशक विस्तारक प्रतीक थिक। तान्त्रिक महत्व: तान्त्रिक साधना मे माछ कें 'पञ्चमकार' मे सँ एक मानल गेल अछि, जे ज्ञान आ शक्तिक द्योतक अछि। साहित्यिक सन्दर्भ: मैथिली कविता आ कथा मे माछ कें अक्सर 'नयन' (मृगनयनी नहि, झषलोचनी) आ चञ्चलताक उपमा देल जाइत अछि।

२. कमल (कमल): पवित्रता आ अद्वैत दर्शन। कमल मिथिलाक पोखरि आ मिथिलाक दर्शनक अभिन्न अङ्ग अछि। कीचड़मे निर्मलता: कमल केर 'अलिप्तता' केर प्रतीक मानल जाइत अछि - संसार रूपी कीचड़मे रहितो ओकर अपवित्रता सँ दूर रहब। अरिपन मे स्थान: मिथिलाक लोक-चित्रकला (मधुबनी पेन्टिङ) मे 'अष्टदल कमल' कें केन्द्र मे राखल जाइत अछि, जे ब्रह्माण्डीय ऊर्जाक केन्द्र थिक। सौन्दर्यशास्त्र: मैथिली साहित्य मे नायिकाक मुख वा चरणक तुलना प्रायः कमल सँ कएल जाइत अछि, जे ईश्वरीय सौन्दर्यक संकेत दैत अछि।

३. हाथी (हाथी): ऐश्वर्य आ स्थिरता। हाथी कें शक्ति, बुद्धिमत्ता, आ मर्यादाक प्रतीक मानल जाइत अछि। राजकीय वैभव: प्राचीन मैथिली साहित्य आ लोक गाथा मे हाथी 'ऐश्वर्य' आ राजाक शक्तिक परिचायक अछि। कोहबरक प्रमुख हिस्सा: मिथिलाक 'कोहबर' (विवाह कक्ष) मे हाथीक चित्र अंकित कएल जाइत अछि, जे नवविवाहित जोड़ाक जीवन मे स्थिरता आ सम्पन्नताक कामना करैत अछि। धार्मिक जुड़ाव: गणेशक रूप मे हाथीक मस्तक बुद्धि आ विघ्ननाशक शक्तिक संकेत दैत अछि।

निष्कर्ष (निगमन): मैथिली संकेत-प्रणाली मे ई तीनू तत्व मिलि क' जीवनक पूर्णता कें परिभाषित करैत अछि: माछ (सृष्टि), कमल (अध्यात्म), आ हाथी (भौतिक सम्पन्नता)। ई चिन्ह सब मात्र सजावट नहि, वरन् मिथिलाक सामूहिक अवचेतनक भाषीय आ दृश्य लिपि थिक।

२५. जगदीश प्रसाद मंडल

रचना: संस्कार-लोकगीत आ गीतनाद (पृ. १४१-१४५)

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): वात्सल्य + शान्त। 'गीतनाद' (गीत-अनुनाद) ध्वनि: ध्वनि जे मानव चेतनामे अनुनादित करैत अछि। वक्रोक्ति: जीवन-चक्र गीत = समाज केर नैतिक दर्शन केर ध्वनिक अभिव्यक्ति। भारतीय नाद-ब्रह्म अवधारणा: ध्वनि दैवी ऊर्जा थिक।

विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: कल्पित कथा-लेखक = लोकगीतकार = सांस्कृतिक सिद्धान्तकार - विदेह केर अन्तर-अनुशासनात्मक साहित्यिक श्रेणी।

२६. पंचानन मिश्र

रचना: मऊ वाजितपुरसँ विद्यापतिनगर परिवर्तन-यात्रा; मिथिलाक कतिआएल सिद्ध पीठ (पृ. १४६-१५१)

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): वीर + शान्त। 'कतिआएल' (उपेक्षित) ध्वनि: पवित्र स्थल सभक परित्याग = सभ्यता केर पतन केर अंश-प्रतीक। लेफेब्र केर 'स्थान-उत्पादन': स्थानक नाम बदलब एक राजनैतिक कार्य।

२७. गोपाल प्रसाद

रचना: फराक मिथिला राज्यक गठन किएक नहि?; हिन्दी, मैथिली, मिथिला, बिहार ओ मैथिल लोकनिसँ अपेक्षा (पृ. १५२-१५४)

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): रौद्र + वीर। 'फराक मिथिला राज्य' ध्वनि: 'फराक' मे पूरा पृथकतावादी राजनैतिक दर्शन। वक्रोक्ति: 'किएक नहि?' प्रश्न स्वयं घोषणापत्र थिक।

फानन / नव्य-न्याय (फानन / नव्य-न्याय): फानन केर राष्ट्रीय चेतना: सांस्कृतिक राष्ट्रवाद → राजनैतिक राष्ट्रवाद। गंगेशक 'साध्य-साधन' (लक्ष्य-साधन): 'फराक मिथिला' (लक्ष्य) कैँ प्राप्त करबाक 'साधन' केर तार्किक मानचित्रण।

२८. प्रोफेसर राधाकृष्ण चौधरी

रचना: मिथिलाक इतिहास (पृ. १५५-१६६) । ११ पृष्ठक मैथिली इतिहास

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): शान्त रस - विद्वत्तापूर्ण ऐतिण्हासिक आख्यान। ध्वनि: मिथिला केर इतिहास वर्णित करनाइ = मैथिली साहित्यिक परम्पराक ऐतिण्हासिक आधार देनाइ। फूको केर सत्ता/ज्ञान: इतिहास-लेखन कहियो **तटस्थ** नहि होइत अछि।

विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचाक सबसँ उत्कृष्ट स्पष्ट साक्षात्कार: मिथिलाक स्वतन्त्र ऐतिण्हासिक परिपथ, समानान्तर - हिन्दी वा संस्कृत मुख्यधारा सँ व्युत्पन्न नहि।

२९. अमन कुमार झा

रचना: रिपोर्ट (काठमाण्डू) (पृ. १६७)

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): वीर + अद्भुत। वक्रोक्ति: नेपालक राजधानीमे मैथिली साहित्यिक रिपोर्ताज - काठमाण्डू राजनीतिक केन्द्रमे, मैथिली कात-करोटमे। विदेह ओहि सत्यक दस्तावेजीकरण करैत अछि जे गप मुख्यधाराक मीडियासँ जुड़ल लोक अण्ठा दैत छथि।

३०. सुजीत झा

रचना: सुनिल मल्लिक - सफल व्यक्ति; ६ अम शताब्दीक लोक नायक वृत्तचित्रमे (पृ. १६८-१७१)

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): वीर + अद्भुत। 'सफल व्यक्ति' - मिथिला-आधारित व्यक्तिक सफलता एकटा प्रति-आख्यान। बूर्द्यू: मैथिलीक परिप्रेक्ष्यमे भाषिक + सांस्कृतिक पूँजी केर आर्थिक पूँजीमे रूपान्तरण।

३१. रामलोचन ठाकुर

रचना: समकालीन मैथिली-कथाक यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा (पृ. १७२-१७६)

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): शान्त + बौद्धिक। वक्रोक्ति: 'यथार्थ-उर्फ यथार्थक-कथा' - वास्तविकता केर कहानी वा कहानी केर वास्तविकता? दुनू व्याख्या वैध अछि। लुकाच केर समीक्षात्मक यथार्थवाद बनाम स्वाभाविकता। गंगेशक 'सामान्यलक्षण प्रत्यक्ष' (सामान्य-लक्षण प्रत्यक्ष): साहित्यिक यथार्थवाद = दार्शनिक यथार्थवाद।

३२. बिपिन झा

रचना: आवश्यकता अछि मैथिली शब्दतन्त्र निर्माणक (पृ. १७७-१७८)

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): वीर। 'शब्दतन्त्र निर्माण' - नव शब्द आ पुरान शब्दक तन्त्र। 'आवश्यकता' = तात्कालिक माँग, मात्र सुझाव नहि। चॉम्स्की केर भाषा-नियोजन: कोन शब्द स्वीकार करब, कोन अस्वीकार।

३३. शीतल झा

रचना: गामक अधिकारी....भैया....पोखरि....चम्पा फूल.... (पृ. १७९-१८१)

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): शीर्षक सेहो एकटा कविता - चारिटा बिम्ब, उपविराम (अश्रु-चिह्न/शब्द-लोप) सँ संयुक्त। शान्त + शृंगार। ध्वनि: उपविराम = अकथित स्थान जाहिमे स्मृति जीवित रहैत अछि। बाख्तिन केर काल-स्थान: ग्राम स्थान केर विशिष्ट कालिकता।

३४. कुमार राधारमण

रचना: पाकिस्तानमे सेक्स-विचार (पृ. १८२-१८४)

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): अद्भुत + वीभत्स। वक्रोक्ति: मैथिलीक साहित्यिक परम्परामे यौनता केर सोझाँ-सोझीं चर्चा - वर्जित-तोड़ब। फूको केर 'यौनता केर इतिहास': यौनता विमर्श एकटा सत्ता-ज्ञान सम्बन्ध थिक।

विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: विदेह केर सामाजिक रूपसँ संवेदनशील विषय प्रकाशित करबाक इच्छाशक्ति - सेन्सरशिप-मुक्त सम्पादकीय नीति।

३५. श्रीमती कुमुद झा

रचना: उच्चैठ भगवतीक महात्म्य (पृ. १८५-१८६)

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): भक्ति + शान्त। 'महात्म्य' एक विशिष्ट मैथिली साहित्यिक विधा। वक्रोक्ति: नारी-लेखिका द्वारा स्त्री देवी केर महात्म्य = लिङ्ग-आधारित आध्यात्मिक प्राधिकार केर दावा। भक्ति परम्परा केर स्त्रीवादी आयाम।

३६. शम्भू झा 'वत्स'

रचना: गार्हस्थ जीवनक समस्या (पृ. १८७-१८८)

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): करुण + शान्त। ध्वनि: गृहस्थ जीवन केर समस्या वर्णित करब = सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्थाक समीक्षा। वक्रोक्ति: व्यक्तिगत कष्ट केँ सार्वजनिक विमर्शमे आनब। अम्बेडकर: गार्हस्थ समस्या प्रायः जाति, लिङ्ग, आ आर्थिक असमानता मे जड़ि जमेने अछि।

३७. नागेन्द्र लाल कर्ण

रचना: गायन, कथक, सितार वादन; सांस्कृतिक कार्यक्रम-गिटार-वादनक प्रस्तुति (पृ. १८९-१९०)

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): अद्भुत + शृंगार। गायन + कथक + सितार = मिथिलाक संवेदना-समन्वित सांस्कृतिक परम्परा। बेन्यामिन केर 'आभा': जीवन्त प्रदर्शन केर अपुनरुत्पाद्य उपस्थिति - दस्तावेजीकरणमे आंशिक उत्तरजीविता।

३८. डॉ. रवीन्द्र कुमार चौधरी

रचना: विद्यापतिक फोटोकेँ लोक सभामे लगएबाक मांग (पृ. १९१)

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): वीर। ध्वनि: संसद मे एकटा मध्ययुगीन मैथिली कविक भाव-भङ्गिमा केँ प्रधानता दैत चित्र लगेबाक मांग। मिथिलाक राजनैतिक प्रतिनिधित्वक प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति। वक्रोक्ति: एक फोटो मैथिल समुदायक वैध राष्ट्रीय दृश्यताक प्रतिनिधित्व करैत।

३९. भालचन्द्र झा

रचना: हमर शिक्षण-यात्रा (पृ. १९२-२०५) । १४ पृष्ठक शैक्षणिक आत्मचरित (शिक्षण आत्मकथा)

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): शान्त + करुण। 'यात्रा' - शिक्षण लक्ष्य नहि, यात्रा। वक्रोक्ति: 'हमर' आत्मकथात्मक स्वामित्व: एक साधारण व्यक्ति केर कथा।

फ्रेयरे / विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: पाउलो फ्रेयरे केर 'उत्पीड़ित केर शिक्षाशास्त्र': शिक्षाक चुनौती, साहित्यिक विधाक रूपमे शिक्षक-आत्मकथा, विदेहक साहित्यिक लोकतन्त्रीकरणक ठोस उदाहरण।

४०. गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादक)

रचना: मैथिली समीक्षाक आवश्यक तत्व; सम्पादकीय-सन्देश (पृ. २०६-२५५)

परिचय: गजेन्द्र ठाकुर मैथिली मे - 'विदेहक संस्थापक-सम्पादक एकटा समालोचक (समीक्षक), सम्पादक, आ मैथिली भाषा नियोजक, तीनू रूपमे।

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): शान्त + बौद्धिक अति-आवश्यकता। 'आवश्यक तत्व' - जे नहि अछि ओकर माँग। सम्पादकीयमे वीर रस - ७० देश, अङ्कीय उपलब्धि, आत्मविश्वासी सम्पादकीय स्वर, साहित्यिक चोरी विरोध।

नव्य-न्याय (नव्य-न्याय): गंगेशक 'प्रमाण-शास्त्र' - समीक्षा सिद्धान्तमे प्रत्यक्ष रूपसँ सक्रिय। 'आवश्यक तत्व' = समीक्षा लेल वैध मापदण्ड = प्रमाण मापदण्ड।

विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा - सबसँ महत्वपूर्ण: सम्पादकीय-सन्देश विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचाक जीवन्त दस्तावेज थिक। ७० देश, २,१९,८९१ दर्शन, २०० लेखक - एक प्रति-संस्थान केर उद्भव केर दस्तावेज। साहित्य अकादमीक ऊर्ध्वाधर पदानुक्रम केर विरुद्ध विदेहक क्षैतिज जाल।

४१. विनीत उत्पल

रचना: साक्षात्कार-कर्ता (जीवकान्त, राजमोहन झा आदिक साक्षात्कार केर प्रस्तोता)

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): शान्त रस - सहानुभूतिपूर्ण श्रोता। प्रश्न खुला, गैर-निर्देशक जे जीवकान्त केँ प्रामाणिक स्वर उभरबाक स्थान दैत अछि।

बाख्तिन / विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: बाख्तिनक संवादात्मक कल्पना: विनीत उत्पलक साँच्चिक जिज्ञासा ओहि बाख्तिनीय स्थान सृजित करैत अछि जाहिमे जीवकान्त स्वतन्त्रतासँ बजैत छथि। विदेहक नव पीढ़ी केर प्रतिनिधित्व।

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह: सदेह: २ — मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०

अध्याय 21 · विदेह: सदेह: ३ — मैथिली पद्य २००९-१०

सारांश पूर्व सांसद, नेपाल परिचय: महेन्द्र कुमार मिश्र नेपालक पूर्व सांसद छथि। हुनकर कविता मधेशक राजनीतिक आ सामाजिक पीड़ाकेँ व्यंग्यक भाषामे प्रस्तुत करैत अछि। 'चेला चन्द्राचार्य आ दलाल राखू अपनेटा संग' - ई पंक्ति मधेशी नेतृत्वक पाखण्डकेँ सीधे उजागर करैत अछि।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · कविता · साहित्यिक समीक्षा · आलोचना · सांस्कृतिक अध्ययन

१. महेन्द्र कुमार मिश्र

रचना: राजनीतिक कविता । पूर्व सांसद, नेपाल

परिचय: महेन्द्र कुमार मिश्र नेपालक पूर्व सांसद छथि। हुनकर कविता मधेशक राजनीतिक आ सामाजिक पीड़ाकेँ व्यंग्यक भाषामे प्रस्तुत करैत अछि। 'चेला चन्द्राचार्य आ दलाल राखू अपनेटा संग' - ई पंक्ति मधेशी नेतृत्वक पाखण्डकेँ सीधे उजागर करैत अछि।

रस-ध्वनि विश्लेषण (रस-ध्वनि विवेचना): मिश्रजीक कवितामे वीर रस आ रौद्र रसक प्राधान्य अछि। ध्वनिक स्तरपर 'जनतामे रहत रङ्ग' एक पुनरावर्ती संरचना अछि जे सभ बेर नव अर्थ ग्रहण करैत अछि - पहिने उपहास, तखन आक्रोश, अन्तमे चेतावनी। वक्रोक्ति स्पष्ट अछि - लोकतन्त्र आ भोग-तन्त्रक आपसी प्रतिस्थापन एक कडु व्यंग्य थिक।

पाश्चात्य आलोचना-दृष्टि (पाश्चात्य समीक्षा-दृष्टि): ग्राम्शीक 'वर्चस्व' आ 'प्रति-वर्चस्व' केर ढाँचासँ मिश्रजीक कविता मधेशी जनताक वर्ग-चेतनाकेँ जागृत करबाक प्रयास करैत अछि। फाननक 'धरतीक अभिशप्त' केर दृष्टिसँ हुनकर कविता ओहि लोकक अछि जिनका अपन देशमे 'दोसर' मानल जाइत छनि।

नव्य-न्याय (गंगेश उपाध्याय): गंगेशक व्याप्ति (व्याप्ति) क अवधारणा लागू करैत: मिश्रजीक कवितामे 'नेता = शोषण' क व्याप्ति अछि, आ 'गिरिजा झुकल, चन्द्र झुकल' एहि व्याप्तिक अनुमान (अनुमान) अछि। नव्य-न्यायक पक्ष ई थिक जे जे अनुमान सही प्रमाणसँ समर्थित हो, से विद्या थिक - कवितामे राजनीतिक सत्य एक प्रमाण जकाँ काज करैत अछि।

विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: विदेह ढाँचामे मिश्रजीक रचना एक अल्पसंख्यक/अधीनस्थ आवाज थिक जे साहित्य अकादमीक मुख्यधारा मैथिली मान्य-परम्परा सँ भिन्न अछि। नेपालक मधेश आन्दोलनक कविता भारतीय मैथिली साहित्यक अकादमी-मान्य धारामे नहि अबैत अछि, विदेह एहि आवाजकेँ मान्य-परम्परागत स्थान देलक। इएह विदेहक राजनीतिक आ साहित्यिक योगदान थिक।

२. रोशन जनकपुरी

रचना: चप्पल आ सड़क । जनकपुर, नेपाल

कविताक सारांश: 'चप्पल आ सड़क' एक दलित-विरोधी शोषण-विरोधी कविता थिक जाहिमे 'चप्पलवाली माँ'क आँखिमे पहिने आशा फेर आक्रोशक यात्रा अछि। साधारण चप्पलक बिम्बमे वर्ग-संघर्षक पूरा दुनिया समाहित छैक।

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): करुण रस प्रधान अछि। 'आक्रोशक गीत लिखाइते रहबाक चाही' - ई सक्रियताक आह्वान अछि। वक्रोक्ति: 'चप्पलवाली माँ' एक साधारण बिम्ब थिक मुदा एहिमे वर्ग-पहिचान आ प्रतिरोध दुनू समाएल अछि।

स्पिवाक / अम्बेडकर (स्पिवाक / अम्बेडकर): गायत्री स्पिवाकक 'की अधीनस्थ बाजि सकैत अछि?' केर ढाँचासँ जनकपुरीक कविता एक अधीनस्थ महिलाक आवाजकेँ कवितामे स्थान दैत अछि। अम्बेडकरक सामाजिक न्यायक दृष्टिसँ 'चप्पल' एक दलित रूपक बनि जाइत अछि - दलित अस्मिता आ प्रतिरोधक प्रतीक।

विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: जनकपुरी नेपालक मैथिली कवि सभमे छथि। विदेह नेपाल-भारत सीमापर बाजल मैथिलीकेँ एकटा एकीकृत साहित्यिक स्थान देलक। ई कविता विदेहक अन्तर-सीमा मैथिली पहिचान-निर्माणमे योगदान करैत अछि।

३. ओम कुमार झा

रचना: थर थर कापि रहल छौ तोहर पएर । मधेश आन्दोलन कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): वीर रस + रौद्र रसक संगम। 'थर थर कापि रहल' एक शक्तिशाली वक्रोक्ति थिक जे शत्रुकेँ डरपोक सिद्ध करैत अछि। ध्वनि: 'पच्चीस शहीदक खून कहि रहल छैक' - मृत शहीदक आवाज ध्वनि-स्तरपर कवितामे उपस्थित अछि।

फानन / ग्राम्शी (फानन / ग्राम्शी): फाननक औपनिवेशिक अस्मिता केर ढाँचासँ मधेशी जनताक 'दू सए अड़तीस बरखक गुलामी' एक औपनिवेशिक आख्यान थिक जे झाक कविता तोड़ि दैत अछि। ग्राम्शीक 'कार्बनिक बुद्धिजीवी' क अवधारणा: झा ओहन आवाज छथि जे जनताक संग मिलिकऽ बजैत अछि।

४. प्रेम विदेह ललन

रचना: एकइसम सदीक नाम । सामाजिक समीक्षा

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): वीभत्स रस + हास्य रसक मिश्रण। 'नाङट उघार ललन सदी अछि भऽ रहल' - ललन (कवि-व्यक्तित्व) एहि सदीक 'नग्न सत्य' देखैत अछि। ध्वनि: नोर भीतर, हँसी बाहर - बला व्यंग्यात्मक स्वर पूरा कवितामे बनल रहैत अछि।

बेन्यामिन / बाख्तिन (बेन्यामिन / बाख्तिन): वाल्टर बेन्यामिनक 'इतिहासक दूत' जकाँ दृष्टि: ललनक कविता प्रगतिक विपरीत देखैत अछि। बाख्तिनक संवादवाद सँ: 'अनपढ़मे भाई ईमानदारी, पढ़लहबा जिलासँ देशधरि लूटि रहल' - दू विरोधाभासी आवाज एक-दोसरकेँ चुनौती दैत अछि।

५. सुदीप कुमार झा

रचना: दूटा पद । सौन्दर्य कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): शृङ्गार आ करुणक द्वन्द्व - पहिल कवितामे स्वप्न-सृष्टि, दोसरमे आँखिक भीजल पलकमे अनिर्वचनीय पीड़ा। ध्वनि पूर्णतः काज करैत अछि: लड़कीक आँखिक भिजनाइ कोनो हेरायल सम्बन्धक ध्वनि दैत अछि जे शब्दमे नहि कहल गेल।

स्पिवाक नारीवादी दृष्टि (स्पिवाक स्त्रीवादी दृष्टि): स्पिवाकक उत्तर-औपनिवेशिक स्त्रीवादी दृष्टिसँ: दोसर कवितामे पहाड़सँ देखैत लड़की एक अधीनस्थ दृष्टि थिक जे प्रकृति आ समाज दुनूकेँ ऊपरसँ नहि, बराबरसँ देखैत अछि। ई 'निम्न-सँ दृष्टि' थिक।

६. अयोध्या नाथ चौधरी

रचना: एक भूमि जोड़ एक सत्य। बराबर दू क्षण। एक परिवोधन आ शेष कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): शान्त रस आ वीभत्स रसक असाधारण मिश्रण। 'विवेक कखनो कोनो खिड़कि दऽ उड़िया गेल' - विवेकक अकस्मात प्रस्थान एकटा काफ्कीय बिम्ब थिक। वक्रोक्ति: 'किताब बनाकऽ पढ़लहुँ' - साधारण कार्य एतऽ अस्तित्वगत आत्म-परीक्षण केर रूपक बनि जाइत अछि।

नव्य-न्याय (नव्य-न्याय): गंगेशक 'ज्ञान-लक्षण प्रत्यक्ष' (मध्यस्थ ज्ञान) केर अवधारणा एहि कवितामे लागू होइत अछि: जे 'जानि लेलहुँ' क अनुभव अछि से प्रत्यक्ष धारणा नहि, वरन् कवितामे मध्यस्थ ज्ञान थिक।

७. प्रशान्त मिश्र

रचना: क्षणिका

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): शान्त रस प्रधान। क्षणिकाक संक्षिप्तता स्वयं एक वक्रोक्ति थिक - कम बाजिकऽ बेसी कहब। ई मैथिलीमे हाइकू सँ कने दूर आ तेलुगुक नन्नीलुसँ लग परम्पराक रचना थिक।

८. कुमार मनोज कश्यप

रचना: वसन्ती दोहा; निहि सुति रहब अहाँ चद्दरि तानि । दोहा परम्परा

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): शृङ्गार रस आ वीर रस - वसन्तमे सौन्दर्य, जागरणमे वीर-भाव। दोहा-शैली अपन संक्षिप्तता सँ ध्वनिक शक्ति बढ़बैत अछि। वक्रोक्ति: 'चद्दरि तानि' एक रोमाण्टिक बिम्ब थिक जे जागरणक तात्कालिक आह्वान केर संग विरोधाभासमे अछि।

विद्यापति परम्परा (विद्यापति परम्परा): कश्यपक दोहा-रचना विद्यापतिसँ सोझा वंश देखबैत अछि। विदेह ढाँचामे ई परम्पराक नवीनीकरण थिक - विद्यापतिक शृङ्गारिक पदावली आ कश्यपक सामाजिक-जागरण दोहा एक्के धारासँ अछि।

९. कल्पना शरण

रचना: एकटा हेरायल सखी । नारी स्वर

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): करुण आ शृङ्गारक संगम - वियोग-शृङ्गारक शास्त्रीय मैथिली परम्परामे। ध्वनि: 'हेरायल सखी' केवल एक व्यक्ति नहि - ओ बचपन, निर्दोषता, वा कोनो हेरायल वस्तुक साङ्केतिक उपस्थिति थिक।

नारीवादी दृष्टि (स्त्रीवादी दृष्टि): स्पिवाकक 'स्त्री स्वर' केर ढाँचासँ: सखी-कविता मैथिलीमे एक स्थान थिक जाहिमे महिला अपन भावनात्मक वास्तविकताकेँ पुरुष-मध्यस्थता बिना व्यक्त करैत छथि।

१०. बिनीत ठाकुर

रचना: गीत । गीत परम्परा

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): बिनीत ठाकुरक गीत मैथिली गीत-परम्परामे अछि - सुरीला, लयबद्ध, साङ्केतिक। शृङ्गार रस प्रधान। वक्रोक्तिमे लोक-रूपकक प्रयोग।

विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: गीत परम्परा साहित्य अकादमीक मान्य-परम्परागत गद्य/कथा शैली सँ भिन्न अछि। विदेह गीतकेँ सेहो मान्य-परम्परागत स्थान देलक जे मैथिली लोक-परम्परा आ आधुनिक साहित्यिक परम्पराक सेतु थिक।

११. सतीश चन्द्र झा

रचना: ई जीवन । जीवन-कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): करुण आ शान्त रस, जीवनक क्षणभङ्गुरता पर ध्यान। शास्त्रीय मैथिलीमे जीवन-चर्चाक परम्परामे ई एक आधुनिक योगदान थिक।

१२. बी.के. कर्ण

रचना: मिथिलाक लेल एक ओलम्पिक मेडल । खेल-चेतना कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): वीर रस प्रधान - क्षेत्रीय गौरव आ खेल-महत्वाकाङ्क्षा। ध्वनि: 'ओलम्पिक मेडल' केवल एक खेल-उपलब्धि नहि - ओ मैथिली क्षेत्रीय पहिचानक वैश्विक मान्यताक रूपक थिक।

बूर्द्यू / सांस्कृतिक पूँजी (बूर्द्यू / सांस्कृतिक पूँजी): पियरे बूर्द्यू केर 'सांस्कृतिक पूँजी' केर दृष्टिसँ: कर्णजीक कविता मिथिलाक लेल एक नव 'पूँजी' माँगैत अछि - खेलमे मान्यता। ई मैथिली पहिचान-राजनीतिक एकटा आयाम थिक।

१३. सुबोध ठाकुर

रचना: हम गामेमे रहबइ । ग्राम-प्रेम कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'हम गामेमे रहबइ' मे वात्सल्य आ शान्त रस - गाम सँ प्रेम आ प्रतिरोध दुनू। वक्रोक्ति: गाममे रहनाइ शहरी-पलायनक युगमे एक राजनैतिक कार्य थिक।

विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: विदेहक केन्द्रीय विचारधारामे मिथिलाक ग्रामीण आधारकेँ संरक्षित करनाइ शामिल अछि। सुबोध ठाकुरक ई कविता विदेहक 'गाम-चेतना' केँ आवाज दैत अछि।

१४. निमिष झा

रचना: असमर्पित उन्माद; बुद्ध आ आतंक । अन्तर्संघर्ष कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'असमर्पित उन्माद' मे शृङ्गार-वियोग + करुण। 'बुद्ध आ आतंक' मे शान्त रसक विरोधाभास रौद्र रसक संग - बुद्धक शान्ति आ आजुक हिंसाक बीच तनाव। ध्वनि: बुद्धक 'आतंक' सँ सामना - की शान्तिक जवाब हिंसा थिक?

बेन्यामिन / द्वन्द्वात्मकता (बेन्यामिन / द्वन्द्वात्मकता): वाल्टर बेन्यामिनक द्वन्द्वात्मक बिम्ब क अवधारणा: बुद्ध (भूत) आ आतंक (वर्तमान) केर बिम्बमे एक 'द्वन्द्वात्मक चमक' अछि जे इतिहासक निरन्तरता आ अविराम दुनू एक संग देखबैत अछि।

१५. कामिनी कामायनी

रचना: चन्दा । नारी स्वर

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'चन्दा' मे शृङ्गार रस - नारी काव्याभिव्यक्ति। वक्रोक्तिमे चन्दा एक प्रिय हेतु रूपकक रूपमे। औचित्य: मैथिली नारी कविताक शास्त्रीय परम्परामे ई सटीक बैसैत अछि।

१६. डॉ. शम्भु कुमार सिंह

रचना: लोरी; अतीत; आस । बाल साहित्य आ स्मृति कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'लोरी' मे वात्सल्य रस, 'अतीत' मे करुण, 'आस' मे शान्त। तीनूमे एक निरन्तरता अछि - बचपन, स्मृति, भविष्य। 'लोरी' मे मैथिली लोक-परम्पराक नवीनीकरण। ध्वनि: लोरी मात्र सुतएबाक गीत नहि - ओ एक पीढ़ीसँ दोसरमे मूल्यक संचरण थिक।

१७. निशाप्रभा झा

रचना: भगवती गीत (लोकगीत संकलन) । लोक परम्परा

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): निशाप्रभा झा भगवती लोकगीतक संकलन कएलनि जे मैथिली लोक-परम्पराक एक महत्वपूर्ण संरक्षण थिक। ई केवल कविता नहि, एक सांस्कृतिक पुरालेखीय कार्य थिक।

बेन्यामिन / मौखिक परम्परा (बेन्यामिन / मौखिक परम्परा): बेन्यामिनक 'मौखिक परम्परा' आ 'कथाकार' केर सिद्धान्तसँ: निशाप्रभा झाक लोकगीत-संकलन ओहि 'आभा' केँ संरक्षित करैत अछि जे मुद्रित पाठमे हेरा जाइत अछि। विदेहक अङ्कीय पुरालेखीकरण एहि क्षतिकेँ न्यूनतम करैत अछि।

१८. विवेकानन्द झा

रचना: कविता आ की सुजाता; चान आ चारी । प्रेम आ सामाजिक कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'कविता आ की सुजाता' मे एक दिलचस्प आत्म-साहित्यिक प्रश्न अछि: कविता बेसी महत्वपूर्ण अछि वा 'सुजाता' (एक व्यक्ति/पहिचान)? शृङ्गार + बौद्धिक जिज्ञासाक संगम। 'चान आ चारी' मे चान्दनी आ युवती/साथी (चारी) केर बीच रोमाण्टिक क्रीड़ा।

१९. मणिकान्त मिश्र 'मनिष'

रचना: मिथिला वन्दना । वन्दना परम्परा

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): मैथिली वन्दना-परम्परामे 'मिथिला वन्दना' एक प्रशस्तिपरक रचना थिक - शान्त आ भक्ति रस। वक्रोक्तिमे वन्दनाक शब्द मिथिलाक हेरायल वैभवक ध्वनि दैत अछि।

विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: मिथिला वन्दना मैथिली क्षेत्रीय पहिचान-राजनीतिक एक महत्वपूर्ण अङ्ग थिक। विदेह ढाँचामे ई 'मिथिला = मैथिली' पहिचानक पुष्टिकारक संकेत थिक।

२०. आशीष अनचिन्हार

रचना: गजल; किछु गद्य कविता । गजल आ गद्य कविता

परिचय: आशीष अनचिन्हार विदेह आन्दोलनक सबसँ महत्वपूर्ण गजल-कवि सभमे छथि। हुनकर मैथिली गजल 'अनचिन्हार आखर' आन्दोलनक नींव थिक।

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): गजलमे शृङ्गार + वियोग। प्रत्येक शेर एक सम्पूर्ण विचार थिक (औचित्य), आ रदीफ-काफियाक संरचनामे ध्वनि पुनरावृत्ति केर माध्यमसँ काज करैत अछि। 'गद्य कविता' मे शृङ्गारसँ परे एक राजनीतिक चेतना सेहो अछि।

बाख्तिन / संवाद-प्रवृत्ति (बाख्तिन / संवाद-प्रवृत्ति): बाख्तिनक संवादवाद सँ गजल स्वाभावतः संवादात्मक शैली थिक - मक्तामे कवि अपन नाम लऽ स्वयं सँ गप करैत छथि। अनचिन्हारक गजलमे ई स्व-सन्दर्भी संवाद मैथिली गजलक एक विशेषता थिक।

विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: अनचिन्हारक योगदान जे ओ मैथिली गजलक छन्द (बहर, काफिया, रदीफ) केँ व्यवस्थित कएलनि आ विदेहक माध्यमसँ प्रसारित कएलनि। ई साहित्य अकादमीक संस्थागत काव्य-रूपक एक शक्तिशाली विकल्प थिक।

२१. वौएलाल साह

रचना: मधेशक आवाज । मधेश आन्दोलन कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): वीर रस + रौद्र रस - मधेशक आवाज। वक्रोक्तिमे 'मधेशक आवाज' एक व्यक्तिक नहि, पूरा जनसमूहक आवाज थिक।

फानन / अधीनस्थ (फानन / अधीनस्थ): फाननक 'राष्ट्रीय चेतना' केर ढाँचासँ: साहक कविता मधेशक सामूहिक अस्मिता केँ अभिव्यक्त करैत अछि जे औपनिवेशिक/ब्राह्मणी वर्चस्व केर विरुद्ध एक प्रति-आख्यान थिक।

२२. सन्तोष कुमार मिश्र

रचना: हमर मीत । मित्र-भाव कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'हमर मीत' मे मधुर रस - मित्रताक गर्मजोशी। सरल भाषा, गहीर उतरैत भावना। औचित्य: सरलता स्वयं एहिठाम काव्य-गुण थिक।

२३. हेमाङ्ग आश्विनकुमार देसाइ

रचना: गुजराती कविता: समीकरण । गुजराती-मैथिली आदान-प्रदान

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'समीकरण' एक गणितीय रूपकसँ जीवनक सामाजिक समस्याकेँ देखैत अछि। अद्भुत रस। ध्वनि: 'समीकरण' - जीवनमे सब किछु सन्तुलित नहि अछि, ई असंतुलन ही समस्या थिक।

बूर्दू / क्षेत्र सिद्धान्त (बूर्दू / क्षेत्र सिद्धान्त): बूर्दू केर 'क्षेत्र' अवधारणासँ: देसाइक मैथिलीमे लेखन एक अन्तर-क्षेत्र विनिमय थिक - गुजराती आ मैथिली साहित्यिक क्षेत्र सभक बीच। विदेह एहि अन्तर-क्षेत्र संवाद केँ संस्थागत कएलक।

२४. अशोक चौधरी

रचना: (शीर्षकहीन) । मौनक शक्ति

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): अशोक चौधरीक रचनाक कोनो शीर्षक नहि देल गेल - जे स्वयं एक वक्रोक्ति थिक। मौन केरूपमे कथन। शान्त रस - जे नहि कहल गेल से सेहो किछु कहैत अछि।

नव्य-न्याय (नव्य-न्याय): गंगेशक 'अभाव' क अवधारणा एहिठाम सोझे लागू होइत अछि: शीर्षकक अभाव एक विशेष प्रमाण थिक - 'नाम-अभाव' स्वयं एक कथन थिक।

२५. उपेन्द्र भगत नागवंशी

रचना: बुढ़वा । दलित स्वर

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'बुढ़वा' (बूढ़ा आदमी) एक दलित परिप्रेक्ष्यसँ लिखल कविता थिक जाहिमे एक वृद्ध गरीब व्यक्तिक जीवनक पीड़ा अछि। नागवंशीक दलित आवाज मैथिली कवितामे एक महत्वपूर्ण प्रति-मान्य-परम्परागत आवाज थिक।

अम्बेडकर / फानन (अम्बेडकर / फानन): अम्बेडकरक सामाजिक न्यायक ढाँचासँ: 'बुढ़वा' मे ओ प्रणाली देखाइत अछि जाहिमे दलित लोकक बुढ़ापा सेहो सम्मान सँ नहि होइत अछि। फाननक 'मन केर उपनिवेश-मुक्ति' केर दृष्टिसँ ई कविता दलित चेतनाक साहसी अभिव्यक्ति थिक।

विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: साहित्य अकादमीक मैथिली मान्य-परम्परागत स्थानमे दलित आवाजक ऐतिण्हासिक हाशियाकरण रहल अछि। नागवंशीक स्थान देनाइ सबसँ महत्वपूर्ण प्रति-मान्य-परम्परागत संकेत थिक।

२६. डॉ. सुरेन्द्र लाभ

रचना: इतिहास; इन्कलाब । ऐतिण्हासिक आ राजनीतिक कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'इतिहास' मे वीर + करुण रस - इतिहासक क्रूरता आ प्रतिरोध दुनू। 'इन्कलाब' मे रौद्र + वीर रस। वक्रोक्ति: 'इन्कलाब' केँ मैथिलीमे कहनाइ स्वयं एक राजनैतिक कार्य थिक।

ग्राम्शी / बेन्यामिन (ग्राम्शी / बेन्यामिन): ग्राम्शीक 'स्थिति-युद्ध' केर ढाँचासँ: लाभक कविता इतिहासकेँ एक विवादित भूमि मानैत अछि। बेन्यामिनक 'इतिहासकेँ धारके विरुद्ध बुरुश लगाब' सँ: 'इतिहास' कविता मुख्यधारा आख्यानकेँ उलटा देखैत अछि।

२७. सरस्वती चौधरी 'रचना'

रचना: सम्बन्धक कोनो सूत्र । नारी दृष्टि

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'सम्बन्धक कोनो सूत्र' (सम्बन्धक कोनो ताग) एकटा गहन व्यक्तिगत कविता थिक - सम्बन्ध सभक भङ्गुरता आ निरन्तरता केर बीच। वियोग-शृङ्गार प्रधान। ध्वनि: 'सूत्र' (ताग) एक पातर धागा थिक जे सब किछु - प्रेम, सम्बन्ध, पहिचान - बान्हि कऽ रखने अछि।

नारीवादी दृष्टि (स्त्रीवादी दृष्टि): सरस्वती चौधरीक कविता मैथिली नारीक आन्तरिक जगतकेँ ओ भाषा दैत अछि जे घरेलु स्थानमे सिमटि जाइत अछि। स्पिवाकक 'अधीनस्थ नारी' क अवधारणासँ - ओ नारी जे सम्बन्धक 'सूत्र' सँ बँधल अछि।

२८. डॉ. अजित मिश्र

रचना: मिथिला-धाम । तीर्थ आ परम्परा कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'मिथिला-धाम' मिथिलाकेँ एक पवित्र तीर्थक रूपमे देखैत अछि - भक्ति रस + शान्त रस। वक्रोक्ति: 'धाम' (पवित्र स्थल) - मिथिलाक भौगोलिक वास्तविकता आ सांस्कृतिक पहिचान दुनू थिक।

२९. सुनीलकुमार मल्लिक

रचना: घड़ी । समय-कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'घड़ी' एक अल्पतमवादी कविता थिक - समयक अस्तित्वगत महत्व पर। शान्त रस। ध्वनि: घड़ी केवल समय-मापक यन्त्र नहि - ओ मृत्यु-स्मारक थिक।

३०. राजकमल चौधरी

रचना: बही-खाता; एकटा प्रेम-कविता । अप्रकाशित रचना (सौजन्य डॉ. देवशंकर नवीन)

परिचय: राजकमल चौधरी (१९२९-१९६७) मैथिली साहित्यक एक महान व्यक्तित्व छथि - हुनकर दू टा अप्रकाशित कविता डॉ. देवशंकर नवीनक सौजन्यसँ एहिठाम प्रस्तुत अछि। 'बही-खाता' हुनकर जीवन-दर्शनक एक सान्द्र अभिव्यक्ति थिक।

'बही-खाता' क विश्लेषण (विवेचना): 'बही-खाता' मे जीवनकेँ एक 'लाल बही' (लाल खाता) मे दर्ज करनाइ - जाहिमे पाप-पुण्य, इच्छा-वासना सब लेखा अछि। ई काफ्कीय बिम्ब थिक - जीवन एक नौकरशाही अभिलेख बनि गेल। ध्वनि: 'कविता लिखबाक ई लाल-बही / थिक हमर जीवन-खाता' - कविता आ जीवन एक्के अछि।

'एकटा प्रेम-कविता' मे वियोग-शृङ्गार आ अनिर्वचनीय भावनात्मक लालसा। 'एकटा म्लान-मुख स्त्री, अनचिन्हार' - एक 'अपरिचित महिला' केर बिम्ब। ध्वनि: ई अनचिन्हार स्त्री की थिक? हेरायल प्रेम? मृत्यु? एक आदर्शीकृत स्त्री बिम्ब? ई अनिश्चितता कविताकेँ कालजयी बनबैत अछि।

बाख्तिन / बहुस्वरता (बाख्तिन / बहुस्वरता): राजकमल चौधरीक कवितामे बाख्तिनक 'बहुस्वरता' स्पष्ट अछि - कइएक टा आवाज एक संग बजैत अछि। 'बही-खाता' मे व्यापारी, रहस्यवादी, कवि, पापी सब एक्के बोलैत स्वरमे समाएल अछि।

नव्य-न्याय (नव्य-न्याय): 'बही-खाता' मे गंगेशक 'विशेषता' (विशिष्टता) क अवधारणा: खाता केर सभ प्रविष्टि एक विशिष्ट घटना थिक - जीवनक कोनो क्षण सार्वभौमिक नहि, सब विशिष्ट आ नामित अछि।

विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: राजकमल चौधरीक अप्रकाशित रचनाकेँ विदेहमे प्रकाशित करनाइ ठीक विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचाक कार्य थिक। जे मुख्यधारा मान्य-परम्परामे नहि आएल, ओकरा विदेह मान्य-परम्परागत स्थान देलक। ई साहित्यिक पुरातत्व थिक।

३१. जीवकान्त (जीवकान्त झा, जन्म १९३६)

रचना: वनदेवी; जन-जन याचक । साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता (१९९८)

परिचय: जीवकान्त (पूर्ण नाम जीवकान्त झा, जन्म २५.०७.१९३६, अभुआढ़, सुपौल) मैथिलीक स्वतन्त्रता-पश्चात् सबसँ महत्वपूर्ण कवि सभमे छथि। साहित्य अकादमी पुरस्कार (१९९८), किरण सम्मान (१९९८), वैदेही सम्मान (१९८५)। हुनकर काम ग्रामीण वास्तविकता, आदिवासी विस्थापन आ पर्यावरण चेतनाक संगम थिक।

'वनदेवी' क विश्लेषण (विवेचना): 'वनदेवी' मैथिली कवितामे एक सीमाङ्कन रचना थिक। एक आदिवासी महिला जे जङ्गलमे भटकैत अछि, शहरमे हवेलीमे झाड़ू-पोछा दै लेल जाइत अछि, आ एहि प्रक्रियामे अपन 'वन' हेरा दैत अछि। कविताक समापन बिम्ब: 'शहर ओकरा चिबा कए सुता दैत छैक / ओकर खून चाटि कए नेहाल होइत छैक' - ई मैथिलीमे फाननक भाषा थिक।

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): करुण रस प्रधान मुदा ई मात्र सहानुभूति नहि, ई राजनैतिक करुणा थिक जे कार्य माँगैत अछि। ध्वनि: 'वनदेवी' (वन-देवी) - ओ आदिवासी महिला थिक जे अपन प्राकृतिक संसार सँ उखाड़ल गेल अछि। एहि विस्थापनमे एकटा ब्रह्माण्डीय शोक अछि। वक्रोक्ति: 'मोटर मे / तेल जकाँ जरैत अछि वनवासी-जन' - मानव शरीर शहरी यन्त्रक लेल इन्धन केरूपमे।

फानन / स्पिवाक / अम्बेडकर (फानन / स्पिवाक / अम्बेडकर): फाननक 'धरतीक अभिशप्त': जीवकान्तक वनदेवी ओ व्यक्ति थिक जिनका आधुनिकता अपन धरतीसँ उखाड़ि देलक। स्पिवाकक अधीनस्थ सिद्धान्त सँ: ई आदिवासी महिला 'बाजि' नहि सकैत अछि - ओ कवितामे सेहो मौन अछि; कविता हुनका विषयमे बजैत अछि, हुनकर आवाज नहि। अम्बेडकरक 'जाति का विनाश' सँ: वनदेवीक दुर्दशा एक जाति-आधारित बहिष्कार केर स्वाभाविक परिणाम थिक।

नव्य-न्याय (नव्य-न्याय): गंगेशक 'परोक्ष अनुमान' (अदृश्य सँ अनुमान) एहिठाम लागू होइत अछि: हम वनदेवीकेँ सोझे नहि देखैत छी - हम बोनमे कुहेस, खाली बाल्टी, युवा पुरुषक अनुपस्थिति देखैत छी आ एहिसँ वनदेवीक कहानी अनुमान करैत छी। इएह एहि कविताक ज्ञान-मीमांसीय शक्ति थिक।

विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: जीवकान्तक काज साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त करबाक बादो विदेहमे प्रकाशित होइत अछि - ई विदेहक गैर-अनन्य दृष्टिकोण देखबैत अछि। विदेह मान्य-परम्परागत आ प्रति-मान्य-परम्परागत दुनूकेँ स्थान दैत अछि।

३२. रूपा धीरू

रचना: सर्व-पीड़ा । नारी स्वर दर्द कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'सर्व-पीड़ा' (सभक पीड़ा) एकटा सामूहिक पीड़ा केर कविता थिक - नारीक, समाजक, सृष्टिक। करुण रस। वक्रोक्ति: 'सर्व' (सब) - ई केवल एक महिलाक दर्द नहि, ई सार्वभौमिक पीड़ा थिक।

३३. अन्नावरन देवेन्दर

रचना: पानि अछि, मात्र आँखिक नोर । अश्रु-कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'पानि अछि, मात्र आँखिक नोर' - एक अल्पतमवादी कविता जाहिमे पानि/अश्रुक रूपक बहुत किछु कहैत अछि। करुण रस। ध्वनि: 'मात्र आँखिक' (केवल आँखि सँ) - ई एक विशिष्ट, व्यक्तिगत शोक थिक।

३४. अमरेश यादव

रचना: आह्वान । आह्वान कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'आह्वान' वीर रसक कविता थिक - एक आह्वान, एक पुकार। वक्रोक्तिमे 'आह्वान' केवल एक शब्द नहि - ओ एक राजनैतिक सम्मन्स थिक।

ओ.बी.सी. / यादव पहिचान (ओ.बी.सी. / यादव पहिचान): अम्बेडकरक ढाँचासँ: हुनकर 'आह्वान' ओबीसी समुदाय सभकेँ अपन राजनैतिक पहिचान पुन: प्राप्त करबाक आह्वान थिक।

३५. श्यामल सुमन

रचना: मैथिली दोहा । दोहा परम्परा

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'मैथिली दोहा' कबीर आ विद्यापतिक दोहा परम्पराक नवीनीकरण थिक। शान्त रस। दोहाक संक्षिप्तता मे ध्वनिक अधिकतम काज होइत अछि। विदेह ढाँचामे दोहा परम्पराकेँ आधुनिक मैथिलीमे पुनर्जीवित करनाइ विदेहक लोक-अर्वाचीनता परियोजना केर हिस्सा थिक।

३६. हिमांशु चौधरी

रचना: बाल गीत; तोँ स्वतन्त्र छेँ । बाल साहित्य

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): वात्सल्य रस - बाल साहित्यक प्राथमिक रस। 'तोँ स्वतन्त्र छेँ' मे एक दिलचस्प मोड़ अछि: बच्चाकेँ स्वतन्त्रता केर सन्देश देनाइ - एक मुक्तिदायी शिक्षाशास्त्र थिक। वक्रोक्ति: बच्चाक 'स्वतन्त्रता' केवल खेल नहि - ओ भविष्यक नागरिक अस्मिता केर बीज सेहो थिक।

३७. दयाकान्त

रचना: पाँच लाख बौआक दाम । दहेज विरोधी कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'पाँच लाख बौआक दाम' (बेटाक कीमत पाँच लाख) एक क्रूर दहेज-विरोधी व्यंग्य थिक जाहिमे एक बेटाकेँ 'पाँच लाख केर दाम' बला मानल जाइत अछि। वीभत्स + हास्य रस। वक्रोक्ति: 'बौआक दाम' एक वस्तु रूपक थिक। ध्वनि: जँ बेटाक कीमत 'पाँच लाख' अछि तँ बेटीक कीमत की अछि? ई अकथित प्रश्न कविताक सबसँ शक्तिशाली ध्वनि थिक।

अम्बेडकर / नारीवादी (अम्बेडकर / स्त्रीवादी): अम्बेडकरक पितृसत्ताक समीक्षा आ स्त्रीवादी दृष्टि दुनूसँ ई कविता मैथिली समाजमे लिङ्ग सम्बन्ध सभक वस्तुीकरण केँ उजागर करैत अछि।

३८. अजित कुमार झा

रचना: ओ तँ मुहेँक बड़जोड़ छथि । राजनीतिक व्यंग्य

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'ओ तँ मुहेँक बड़जोड़ छथि' - एक राजनैतिक व्यंग्य थिक - एक नेता जे केवल बड़-बड़ वादा करैत अछि मुदा किछु करैत नहि। पुनरावर्ती पङ्क्ति 'नेताजी किछु कऽ कऽ देखाबथि!' ई कवितामे एक वक्रोक्ति थिक।

बाख्तिन / उत्सवी-लोकधर्मी (बाख्तिन / उत्सवी-लोकधर्मी): बाख्तिनक उत्सवी-लोकधर्मी क अवधारणासँ: ई कविता एक उत्सव थिक जाहिमे नेताक प्राधिकार केर उपहास उड़ाओल जाइत अछि। पुनरावर्ती संरचना एक हास्य काल-गणना दैत अछि जे राजनैतिक उपहास केँ तीव्र करैत अछि।

३९. सुमित आनन्द

रचना: जेम्हरे देखू तेम्हरे लाइन!! । व्यंग्य कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'जेम्हरे देखू तेम्हरे लाइन!!' एक हास्य-व्यंग्यात्मक कविता थिक जाहिमे आधुनिक भारतक 'कतार संस्कृति' केर उपहास अछि। अन्तमे 'सभसँ बड़का शमशानमे लाइन' - ई अन्तिम चोटि एक तीख व्यंग्यात्मक वाण थिक। हास्य + वीभत्स रस। ध्वनि: 'लाइन' केवल प्रतीक्षा नहि - ओ नौकरशाही अमानवीयकरण केर प्रतीक थिक।

४०. विजया अर्याल

रचना: आजुक जीवन । नेपालसँ मैथिली कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'आजुक जीवन' एक अस्तित्वगत कविता थिक जाहिमे जीवनकेँ 'मृत्युसँ सापट माँगिकऽ' जीयल बतायल गेल अछि। शान्त + वीभत्स रस। 'प्रतेक दिन मृत्युसँ सापट माँगिकऽ / बाँकी रूपमे बाँचि रहल अछि जीवन' - मृत्यु प्रति स्थायी ऋण केरूपमे जीवन।

४१. सरोज खिलाडी

रचना: मनक बात मनमे । नारी अन्तरङ्ग

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'मनक बात मनमे' एक स्वीकारोक्तिपरक कविता थिक - एक नारी जे अपन प्रिय सँ बात नहि कऽ सकलीह, अखन पश्चातापमे अछि। वियोग-शृङ्गार + करुण। 'अएनाक सोझाँ हम किए मुस्किआइ छी?' - दर्पण केरूपमे विश्वासपात्र। वक्रोक्ति: दर्पण ही ओ स्थान थिक जाहिमे दबल आत्मा बजैत अछि।

नारीवादी मनोविज्ञान (स्त्रीवादी मनोविज्ञान): 'अएना' (दर्पण) केर रूपांकन - लाकान केर 'दर्पण चरण' केर प्रयोग - नारीक पहिचान-निर्माण आ हुनकर सामाजिक रूपसँ थोपल मौनक बीच तनाव देखबैत अछि।

४२. उमेश मण्डल

रचना: गनियारि पिसबाक गीत; तेलकसाय लगबैक गीत; दसमासी सोहर । लोक गीत

परिचय: उमेश मण्डल विदेहक सहायक सम्पादक आ मैथिली लोक-साहित्यक एक महत्वपूर्ण संकलनकर्ता छथि। सदेह ३ मे हुनकर तीन टा लोक-गीत अछि - पीसबाक गीत (गनियारि), तेल निकालबाक गीत (तेलकसाय), आ जन्म-मास गीत (दसमासी सोहर)। ई मैथिली मौखिक परम्पराक एकटा अमूल्य पुरालेख थिक।

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): वात्सल्य रस + शृङ्गार रस - लोक-गीतक प्राथमिक रस। 'दसमासी सोहर' मे गर्भावस्थाक सभ मासक वर्णन - एक अद्वितीय आख्यानिक संरचना। वक्रोक्ति: घरेलु काज (पिसनाइ, तेल निकालनाइ) - महिला श्रमकेँ एक काव्य कर्ममे रूपान्तरित करैत अछि।

बेन्यामिन / मौखिक परम्परा (बेन्यामिन / मौखिक परम्परा): बेन्यामिनक 'कथाकार' सँ: उमेश मण्डलक लोक-गीत संकलन ओहि 'आभा' केँ संरक्षित करैत अछि जे मुद्रित पाठमे हेरा जाइत अछि। विदेहक अङ्कीय पुरालेखीकरण एहि क्षतिकेँ न्यूनतम करैत अछि।

विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: उमेश मण्डलक लोक-गीत संरक्षण विदेहक सबसँ महत्वपूर्ण पुरालेखीय योगदान सभमे एक थिक। साहित्य अकादमी मान्य-परम्परागत मैथिलीमे अर्वाचीनतावादी कविता केँ प्राथमिकता दैत अछि - विदेह लोक-साहित्यकेँ सेहो समान मान्य-परम्परागत स्थान देलक।

४३. रूपेश कुमार झा 'श्रेथ'

रचना: खेली सप्पत जा भुइयाँ थान । बाल साहित्य

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): वात्सल्य रस - बालकक खेल-दुनिया। 'भुइयाँ थान' (धरती/जमीन) मे खेल - ई ग्रामीण बचपनक एकटा ईमानदार चित्रण थिक।

४४. विनीत उत्पल

रचना: मनुख आ माल; समाजक ई रूप । सामाजिक यथार्थ कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): वीभत्स रस - समाजक पतन देखबाक घृणा। वक्रोक्ति: 'मनुख आ माल' - वस्तु रूप केर मानव रूप सँ तुलना। ई मार्क्स केर वस्तु-विचित्रता केर मैथिली काव्य समतुल्य थिक।

४५. राजदेव मण्डल

रचना: आह; ज्ञानक झंडा; झाँपल अस्तित्व; रहब अहाँ सभक संग; नदीक माछ; बाट-बटोही; सीमा परक झूला; चीड़ीक जाति । सर्वाधिक कविता

परिचय: राजदेव मण्डल सदेह ३ केर सबसँ अधिक लेखक कवि छथि - ८ टा कविता! ई स्वयं हुनकर प्रतिबद्धताक एक प्रमाण थिक। हुनकर कविता राजनीतिसँ पर्यावरण, व्यक्तिगत पीड़ा सँ सामाजिक समीक्षा धरि फैलल अछि।

रस-ध्वनि विश्लेषण (रस-ध्वनि विवेचना):

'आह' मे करुण रस।

'ज्ञानक झंडा' मे वीर रस - ज्ञानक विजय-यात्रा।

'झाँपल अस्तित्व' मे वीभत्स + करुण - दबल अस्तित्वक दर्द।

'चीड़ीक जाति' मे एक असाधारण वक्रोक्ति: 'जाति' (जाति/प्रजाति) दुनू अर्थमे - चिड़ियाक प्रजाति आ मनुष्यक जाति एक संग।

अम्बेडकर / पर्यावरण (अम्बेडकर / पर्यावरण): 'चीड़ीक जाति' मे अम्बेडकरक जाति समीक्षा आ पारिस्थितिकीय चेतना केर असाधारण संगम: चिड़ै सेहो 'जाति' मे बान्हल अछि? वा चिड़ै ओहि लोक सभक रूपक थिक जे जाति प्रणालीमे 'चिड़ै' (शक्तिहीन) छथि?

विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: राजदेव मण्डल मैथिलीक ओहन कवि छथि जे साहित्य अकादमीक मुख्यधारामे नहि आएल, विदेह हुनका एक अधिक लेखक आवाजक रूपमे प्रस्तुत कएलक। इएह ठीक विदेहक समानान्तर इतिहास मिशन थिक।

४६. शेफालिका वर्मा

रचना: बाजी; अनबुझल; संग चाहे जे होइ; वचनक मास । नारी कवि

परिचय: शेफालिका वर्मा (जन्म ९ अगस्त, १९४३, भागलपुर) मैथिलीक सबसँ महत्वपूर्ण नारी कवि सभमे छथि।

'बाजी' क विश्लेषण (विवेचना): 'बाजी' एक दार्शनिक कविता थिक - 'ई हमर देश थिक' सँ शुरू भऽ कऽ समाजक पतन आ मनुष्यक मनुष्यसँ दूरी धरि। 'आदमीक जङ्गल बढ़ि रहल / गाछ बृच्छ कटि रहल' - ई पारिस्थितिकीय रूपक एक संग भौतिक वातावरण आ मानव सामाजिक वातावरण दुनूक लेल थिक।

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): वीभत्स रस प्रधान - आधुनिक सभ्यताक क्षय पर। वक्रोक्ति: 'राम कतए चलि गेला' - राम केर जानाइ सब किछु नैतिकताक केर प्रतीक थिक जे हेरा गेल। ध्वनि: 'बाजी दुनूमे लागल अछि / के कतेकों आगू' - जनसंख्या वृद्धि बनाम पेड़-कटाई, ई एक अर्थहीन 'दौड़' थिक।

स्पिवाक / पर्यावरण-स्त्रीवादी (स्पिवाक / पारिस्थितिकीय-स्त्रीवादी): स्पिवाकक पारिस्थितिकीय-स्त्रीवादी केर ढाँचासँ: वर्माक कवितामे प्रकृति-विनाश आ नारी-अवस्था एक सम्बन्धित दशा थिक। 'सीता आइयो जरि रहल अछि' - सीता एक शाश्वत पीड़िता केर रूपमे, अखनो जरैत अछि। ई स्त्रीवादी मिथक-समीक्षा मैथिलीमे दुर्लभ थिक।

नव्य-न्याय (नव्य-न्याय): 'अनबुझल' (अव्याख्येय) मे गंगेशक 'संशय' (सन्देह/अनिश्चितता) क अवधारणा केन्द्रीय थिक: कविताक मुख्य पात्र एक 'अनबुझल' थिक - अनसुलझल, अव्याख्येय उपस्थिति।

४७. महाकान्त ठाकुर

रचना: की चाहलौं; उदारीकरण । उदारीकरण-विरोधी कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): करुण + वीभत्स रस - आर्थिक हताशाक करुण रस। 'उदारीकरण' मे वक्रोक्ति: उदारीकरण केर शब्दमे 'स्वतन्त्रता' केर सह-अर्थ अछि, मुदा कवितामे ई गरीबी आ विस्थापनक कारण थिक। ध्वनि: आर्थिक 'स्वतन्त्रता' केर पाछाँ आर्थिक बन्धन थिक।

ग्राम्शी / पूँजीवाद समीक्षा (ग्राम्शी / पूँजीवाद समीक्षा): ग्राम्शीक 'सांस्कृतिक वर्चस्व' सँ: उदारीकरण मात्र आर्थिक नीति नहि, ओ एक वैचारिक वर्चस्व थिक जिनका हम 'प्रगति' कहैत छी। महाकान्त ठाकुरक कविता एहि वर्चस्व केर प्रति-आख्यान थिक।

४८. स्व. कालीकान्त झा 'बुच' (१९३४-२००९)

रचना: विरक्ति; पोताक अट्ठहास; दीनक नेना । स्मारक प्रस्तुति

परिचय: स्व. कालीकान्त झा 'बुच' (१९३४-२००९) समस्तीपुर जिलाक करियन गामसँ छलाह - महान दार्शनिक उदयनाचार्यक कर्मभूमि। हुनकर निधन २००९ मे भेलनि - सदेह ३ मे ई एक मृत्युपश्चात् श्रद्धाञ्जलि थिक।

'विरक्ति' क विश्लेषण (विवेचना): 'विरक्ति' - १९९० मे अपन अर्धाङ्गिनीक मृत्युक पश्चात् लिखल गेल कवितामे नोट अछि: 'विशेष:- स्व. कवि एहि कविताक रचना सन् १९९० ई. मे अपन अर्धाङ्गिनीक मृत्युक वियोगमे कएलनि।' ई एक व्यक्तिगत विलाप थिक जे शास्त्रीय मैथिली वियोग-कविताक परम्परामे उपयुक्त बैसैत अछि।

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): करुण रस अपन गहनतममे - व्यक्तिगत हानि सार्वभौमिक कथनमे रूपान्तरित। 'पोताक अट्ठहास' मे विरोधाभास: एक दिस

पोताक शैतानी हँसी, दोसर दिस बूढ़ दादाक व्यंग्यपूर्ण टिप्पणी। वात्सल्य + शान्त रस। 'दीनक नेना' (गरीबक बच्चा) मे करुण + वीर रस।

विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: 'बुच' केर मृत्युपश्चात् समावेश - विदेहक पुरालेखीय मिशन केर एक मार्मिक उदाहरण थिक: हुनका शैक्षणिक मृत्युपश्चात् संकलन वा राष्ट्रीय संकलनक प्रतीक्षा नहि करऽ पड़लनि - विदेह तत्काल संरक्षित कएलक।

४९. मनीष ठाकुर

रचना: विरह गीत । वियोग परम्परा

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'विरह गीत' मैथिली वियोग-कविताक परम्परामे अछि। शृङ्गार-वियोग रस प्रधान। गीत शैलीमे मधुरता ध्वनिकेँ प्रवर्धित करैत अछि।

५०. चन्द्रकान्त मिश्र

रचना: जागु-जागु मैथिल । जागरण कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'जागु-जागु मैथिल' एक राजनैतिक कार्य-आह्वान कविता थिक - वीर रस। ई मैथिलीक जागरण शैलीक कविता थिक जाहिमे लोककेँ अपन सांस्कृतिक आ राजनैतिक पहिचानक लेल जागि उठबाक आह्वान अछि।

विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: विदेह आन्दोलनक एक केन्द्रीय मिशन थिक मैथिली सांस्कृतिक आ भाषाई पहिचानकेँ पुनर्जीवित करनाइ। चन्द्रकान्त मिश्रक कविता सोझे एहि मिशन केँ समर्थन करैत अछि।

५१. कुसुम ठाकुर

रचना: चुल बुली कन्या बनि गेलहुँ; अभिलाषा । नारी जिज्ञासा

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): हास्य + शृङ्गार रस - एक नारीक चंचल आत्म-खोज। दुनूमे नारी सक्रियता केर पुष्टि अछि। स्पिवाकक ढाँचासँ ई 'सक्रियता केर दावा' केर संकेत थिक।

५२. शिव कुमार झा 'टिल्लू'

रचना: चश्माक बोखार; हिंसक नानी; कोप भवनमे कनियाँ; श्रेयसीक विलाप । विविध रङ्ग

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'टिल्लू' केर चारू कविता भिन्न-भिन्न संसारमे अछि:

'चश्माक बोखार' - शृङ्गार रस

'हिंसक नानी' - हास्य + वीभत्स (काला हास्य)

'कोप भवनमे कनियाँ' - रौद्र + शृङ्गार (घरेलु झगड़ा)

'श्रेयसीक विलाप' - करुण (वियोग)
ई विस्तार देखबैत अछि जे टिल्लू एक बहुमुखी कवि छथि।

५३. धर्मेन्द्र विह्वल

रचना: बाबाक अवसान; ओकरासभक अन्त होबाक चाही । सामाजिक आक्रोश कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'बाबाक अवसान' (पिताक निधन) मे करुण रस। 'ओकरासभक अन्त होबाक चाही' मे रौद्र रस - उत्पीड़क सभक विरुद्ध आक्रोश। दुनूमे एक नैतिक तात्कालिकता अछि।

अम्बेडकर (अम्बेडकर): 'ओकरा सभक अन्त होबाक चाही' मे अम्बेडकरक 'जाति का विनाश' केर भाषा अनुनादित करैत अछि - ओहि लोक सभक 'अन्त' चाहब जे शोषण केर प्रणाली चलबैत छथि।

५४. रघुनाथ मुखिया

रचना: अनुत्तरित प्रश्न; कविताक शीर्षक जकाँ । आत्म-कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'अनुश्रित' (अघोषित) आ 'कविताक शीर्षक जकाँ' दुनू आत्म-साहित्यिक अछि: कविताक बारेमे कविता। ई मैथिलीमे एक दुर्लभ उत्तर-अर्वाचीन संकेत थिक। शान्त रस + बौद्धिक जिज्ञासा।

बाख्तिन / आत्म-आख्यान (बाख्तिन / आत्म-आख्यान): बाख्तिनक आत्म-कथा क अवधारणासँ: मुखियाक कविता अपन स्वयं केर कृतिमता पर टिप्पणी करैत अछि - ई मैथिलीमे दुर्लभ अर्वाचीनतावादी आत्म-चेतना थिक।

५५. लक्ष्मण झा 'सागर'

रचना: चुट्टीधारी । अधीनस्थ कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'चुट्टीधारी' - करुण रस। वक्रोक्ति: चुट्टीधारीक भटकैत अस्तित्व एकटा व्यापक विस्थापन केर रूपक थिक।

स्पिवाक / अधीनस्थ (स्पिवाक / अधीनस्थ): स्पिवाकक अधीनस्थ ढाँचासँ: 'चुट्टीधारी' ओहि श्रमिक-वर्गीय व्यक्तित्व थिक जिनका मुख्यधारा साहित्य नहि देखैत अछि। समानान्तर धारा ओकरा मान्य-परम्परागत स्थान देलक।

५६. विभूति आनन्द

रचना: एक-दू-तीन...नओटा कविता; प्रतिपक्ष: १-९; मदारी युग; नब पीढ़ी आदि । साहित्य अकादमी पुरस्कार २००६

'प्रतिपक्ष: एक' क विश्लेषण (विवेचना): 'प्रतिपक्ष: एक' एक गहन व्यक्तिगत स्वीकारोक्ति थिक - घर आएल थाकल-हारल आदमीकेँ की चाही? शास्त्रीय सङ्गीत, गरम चाह, सुकून, कनियाँक तनावरहित चेहरा, मित्रक स्मृति, भविष्यक स्वप्न - मुदा किछु नहि होइत अछि। 'हम यन्त्र-मानव बनल सन जीब लागल छी' - यन्त्र-मानव बनबाइ आधुनिकता केर रूपक थिक।

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना):

'प्रतिपक्ष' शृंखला मे शान्त रस + वीभत्स रस - विस्थापन केर अस्तित्वगत भय।

'प्रतिपक्ष: दू' मे राजनीतिक जटिलता: जखन 'पक्ष' आ 'प्रतिपक्ष' मे कोनो फर्क नहि तँ की करबाक चाही?

'मदारी युग' मे: हम सब एक सर्कसमे प्रदर्शन करि रहल छी।

नव्य-न्याय (नव्य-न्याय): 'प्रतिपक्ष: दू' मे गंगेशक 'विपरीतव्यभिचारी हेतु' (प्रति-उदाहरण) क अवधारणा केन्द्रीय थिक: जखन पक्ष आ प्रतिपक्ष दुनू एक्के जगह ठाढ़ भऽ जाथि, तँ तर्क भङ्ग भऽ जाइत अछि।

हीन भावना, मूलधाराक कन्नारोहट आ दोसरापर / खास कऽ महिलापर दोख देबाक मूलधाराक परम्परा विभूति आनन्द कवितामे अछि।

५७. रमण कुमार सिंह

रचना: गुमशुदगी रिपोर्ट । लापता-व्यक्ति कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'गुमशुदगी रिपोर्ट' (लापता व्यक्ति रिपोर्ट) एक असाधारण कविता थिक - एक पुलिस रिपोर्ट केर शैलीमे? वा एक रूपकात्मक 'लापता' रिपोर्ट? ई अनिश्चितता कविताक केन्द्रीय चाल थिक। करुण + अद्भुत रस।

५८. मायानाथ झा

रचना: मातृगिरा । मातृभाषा कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'मातृगिरा' (माँक आवाज/मातृभूमि) मे शान्त + वात्सल्य रस - मातृभाषा आ मातृभूमि दुनूक संगम। वक्रोक्ति: 'गिरा' (आवाज/वाणी) केवल भाषा नहि - ओ सांस्कृतिक पहिचान आ वंश-परम्परा थिक।

५९. सच्चिदानन्द 'सौरभ'

रचना: देखू नै...; भोरक आसमे; अन्हारक संग रहैत रहैत । काव्यात्मक त्रयी

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): तीनू कविता एक त्रयी जकाँ: 'देखू नै', 'भोरक आसमे', 'अन्हारक संग रहैत रहैत'। तीन अवस्था: परिहार, आशा, समर्पण। ध्वनि: 'अन्हार' केवल रात नहि - ओ राजनीतिक, भावनात्मक, अस्तित्वगत अन्धकार सेहो थिक।

६०. अशोक दत्त

रचना: बाल गीत (३); ओधि उपाड़ । बाल साहित्य आ व्यंग्य

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): तीन बाल गीत मे वात्सल्य रस। 'ओधि उपाड़' मे हास्य रस - व्यंग्यात्मक रचना। वक्रोक्ति: बाल गीत - सरल भाषामे जटिल मूल्य सिखबैत अछि।

६१. शीतल झा

रचना: टी..ऽऽ..स । नेपालसँ गजल-प्रेरित कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'हमरोमे अहूमे एकटा टी..स अछि' - एक रहस्य: प्रेम? राजनीति? पहिचान? ध्वनि जानिबुझि अस्पष्ट थिक। 'पुजारीक हाथमे अमृत कहाँ विष अछि' - धार्मिक प्राधिकार पर प्रश्न!

६२. शम्भु नाथ झा 'वत्स'

रचना: मिथिलाक दशा; मोनसँ पढ़ू बढ़ू; मिथिला बचाउ; बेरोजगारीक समस्या । साहित्याचार्य, वेदविद्

'मिथिलाक दशा' क विश्लेषण (विवेचना): 'मिथिलाक दशा' मे मिथिलाक सांस्कृतिक पतन केर एक सजीव विलाप थिक - मण्डन, विद्यापति, धोती, दुपट्टा, वैदिक धुन - सब किछु 'डिस्को' खा लेलक। 'अहीं कहू हम जीबैत छी?' - एक अस्तित्वगत प्रश्न।

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): करुण रस + वीभत्स रस (सांस्कृतिक हानि पर घृणा)। वक्रोक्ति: 'डिस्कोक पाछाँ देश बिका गेलैए' - एक अतिशयोक्ति मुदा एक सांस्कृतिक सत्य। परम्परा बनाम आधुनिकता केर तनाव।

६३. डॉ. योगानन्द झा

रचना: घर । घर-कविता

परिचय: डॉ. योगानन्द झा (जन्म ११ जनवरी १९५५, दरभंगा) एक अधिक लेखक आ अनुसन्धानकर्ता छथि। साहित्य अकादमी पुरस्कार - अनुवादक लेल (२००५)। 'घर' (घर/निवास) हुनकर दार्शनिक कविता थिक।

'घर' क विश्लेषण (विवेचना): 'घर' एक दीर्घ कविता थिक जाहिमे 'घर' केर पतन केर रूपक थिक - जे केवल एक घरे टा नहि, बल्कि समाज, लोकतन्त्र, राष्ट्रीय अखण्डता सभक 'घर' थिक। 'यैह हमर घरक थिक नक्शा / हृदय हमर टूटल अछि' - हृदय केरूपमे घर, टूटल।

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): करुण रस प्रधान - ९ पद्यमे एक धीर बढ़ैत शोक। सभ पद्य एक्के पुनरावर्ती पङ्क्ति सँ बन्द होइत अछि: 'यैह हमर घरक थिक नक्शा / हृदय हमर टूटल अछि'। ई पुनरावर्ती पङ्क्ति एक ध्वनि थिक - सभ बेर वएह घाव। वक्रोक्ति: 'केओ नृप होय हमे का हानी / कखनो ई संवाद / हमर जातिक लोक थिका ई / कखनो उठय विवाद' - राजनीतिक निष्क्रियता केर व्यंग्यात्मक समीक्षा।

नव्य-न्याय (नव्य-न्याय): 'घर' मे गंगेशक 'अव्यभिचारी सम्बन्ध' (अपरिवर्तनीय सम्बन्ध) क अवधारणा: 'घरक टूटनाइ' आ 'हृदयक टूटनाइ' मे एक अव्यभिचारी सम्बन्ध थिक - एक संग दोसर अवश्य होइत अछि। ई काव्यात्मक व्याप्ति थिक।

६४. वीरेन्द्र मल्लिक

रचना: गतिशीलता । परिवर्तन कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'गतिशीलता' एक संक्षिप्त, अल्पतमवादी कविता थिक। 'आब हम ओ नहि रहलहुँ / किछु आओर भऽ गेलहुँ / से की यौ? / ओ आने लोक कहत।' ई एक उत्तर-अर्वाचीन चाल थिक: आत्म-रूपान्तरण जे बाहरी व्यक्ति परिभाषित करैत अछि। शान्त रस + अस्तित्वगत खुलापन।

बाख्तिन (बाख्तिन): बाख्तिनक संवादवाद सँ: 'ओ आने लोक कहत' - हमर पहिचान दोसरक आवाजसँ बनैत अछि। ई बाख्तिनीय अन्तर्दृष्टि थिक जे 'मैं दोसर केर दृष्टि सँ परिभाषित छी'।

६५. गंगेश गुंजन

रचना: राधा-१६म खेप । महाकाव्य-शृंखलाक एक अंश

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): गंगेश गुंजनक 'राधा' शृंखलाक सदेह ३ मे 'राधाक १६म खेप' अछि। शृङ्गार-वियोग रस। ध्वनि: 'राधा' मात्र एकटा

पौराणिक पात्र नहि - ओ मिथिलाक नारीक सार्वभौमिक दशा केर प्रतीक थिक। वक्रोक्ति: जन्म स्वयं पीड़ा केर एक रूप ('माएक गर्भसँ आयल') - परम्परागत हिन्दू कल्याण-दृष्टि नहि, ई अस्तित्ववादी प्रश्न थिक।

विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: गंगेश गुंजनक 'राधा' शृंखला मैथिलीक विद्यापति-आधारित शृङ्गार परम्पराक एक आधुनिक निरन्तरता थिक - मुदा एहिठाम राधा एक निष्क्रिय विषय नहि, ओ अपन अस्तित्व पर प्रश्न करैत छथि। विदेहमे एहि स्त्रीवादी पुनर्लेखन कें स्थान भेटल।

६६. कीर्तिनारायण मिश्र

रचना: अकाल । सामाजिक अकाल कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'अकाल' एकटा कठोर कविता थिक: 'सड़कपर हाँड़ी चिबबैत / छौंड़ा सभ / कुकूर आ पुलिसकैं / डण्डा देखा रहल अछि' - सड़क बच्चा कुकूर आ पुलिस दुनूकेँ एक्के डण्डा देखबैत। करुण + रौद्र रस। वक्रोक्ति: 'बाँझ सरकार / विदेशक आश्वासनसँ / विवाह रचा रहल अछि' - निःसन्तान सरकार विदेशी वादासँ विवाह करैत।

अम्बेडकर / मार्क्स (अम्बेडकर / मार्क्स): 'अकाल' मे भूख एक राजनैतिक श्रेणी थिक, केवल प्राकृतिक आपदा नहि। अम्बेडकर आ मार्क्स दुनू कहलनि जे कमी निर्मित अछि। मिश्रक कविता एहि निर्मित कमी कें सोझे उजागर करैत अछि।

६७. स्व. प्रशान्त

रचना: करू की वृद्ध अथबल छी । पूर्णियाँक कवि

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): करुण + हास्य रस - एक वृद्ध व्यक्तिक व्यंग्यात्मक आत्म-चित्र। 'सुदमिया माय माय जे आयल छलथि / नैहरसँ महफापर चढ़िकऽ / तिनका साइकिलपर चढ़ि देखि / सड़कक कातमे दुबकल छी' - पहिने डोली, अखन साइकिल - ई पीढ़ी अन्तराल केर एक हास्य बिम्ब थिक।

नव्य-न्याय (नव्य-न्याय): 'मोकामा पुल बनि गेने / सिमिरिया घाटक स्टीमर जकाँ / अकार्य भेल बैसल छी' - जखन पुल बनल, नाउ बेकार भेल। ई गंगेशक 'बाधा' (बाधा/प्रतिस्थापन) क अवधारणा थिक: आधुनिकता एक नव 'साधन' थिक जे पुरान 'साधन' कें अप्रासङ्गिक कऽ दैत अछि।

६८. कालिनाथ ठाकुर

रचना: सून मिथिलाञ्चल..... । मिथिला आन्दोलन कविता

परिचय: कालिनाथ ठाकुर (जन्म २४-०६-१९४६, सर्वसीमा, मधुबनी) जेके सिन्थेटिक्स लिमिटेड, कानपुरमे १९७३ सँ १९९५ धरि काज कएलनि। अखन 'सारस्वत साधना' मे संलग्न।

'सून मिथिलाञ्चल' क विश्लेषण (विवेचना): ई एक राजनैतिक कार्य-आह्वान कविता थिक - मिथिलाक खेती, लोक, नेता, सभक दशाक विविध चित्रण। 'पूँजीपति बाबू भैया / नेता मुखिया / कर्ता-धर्ता/ पालनकर्ता' - ई सत्ता संरचना केर एक व्यंग्यात्मक चित्र थिक। 'लाठि लगाकऽ / सादा कागत पर / औंठा निशान / लगबाबथि / महाजन सादा कागचपर औंठा लगबाबैत छथि' - ई सूदखोरी केर अभियोग थिक।

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): करुण + रौद्र रस। वक्रोक्ति: 'सून मिथिला चल' - 'चल' आ 'चाल' (चाल) दुनू अर्थमे - मिथिला एक 'चाल' (योजना) थिक? ई अनिश्चितता कविताकें समृद्ध बनबैत अछि।

६९. अरविन्द ठाकुर 'अरबिन'

रचना: गजल १-४ । मैथिली गजल - चारिटा गजल

परिचय: अरविन्द ठाकुर 'अरबिन' मैथिली गजलमे एक महत्वपूर्ण नाम छथि। चारि टा गजल सदेह ३ मे जे हुनकर विस्तार देखबैत अछि: व्यक्तिगत पीड़ा, राजनीतिक टिप्पणी, दार्शनिक चिन्तन आ बाढ़िक बिम्ब। शास्त्रीय गजल संरचना: रदीफ-काफिया। मुदा बहरक अभाव।

गजल १ क विश्लेषण (विवेचना): 'कोना अजुका दिन ससरतै, राति कटतै हओ भजार' - दिन एक अजीब सुन्नतामे गुजरैत अछि। 'एक-एकटा पल हमरा लेल सूनामीक हार' - हर पल एक सुनामी जकाँ। शास्त्रीय गजल संरचना: रदीफ-काफिया।

गजल २: दिल्ली व्यंग्य: 'लगैए एहि ठामक सभ कान दिल्ली भऽ गेलै' - पुनरावर्ती रदीफ 'दिल्ली भऽ गेलै' - सब किछु 'दिल्लीकृत' भऽ गेल। शक्तिशाली वक्रोक्ति: दिल्ली केन्द्रीकरण आ समरूपीकरण केर प्रतीक थिक।

गजल ४: बाढ़ि कविता: 'बाढ़िमे छप्पर निप्पटा, भेटल तारपोलीन खराप' - विशिष्ट भौतिक विवरण (तारपोलीन, दाल, चावल, मुखिया) संग बाढ़ि केर बिम्ब।

ई सामाजिक यथार्थवादी गजल थिक जे परम्परागत रोमान्टिक/दार्शनिक गजल शैली सँ असाधारण थिक।

विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: साहित्य अकादमी गजलकेँ मैथिलीमे आधिकारिक रूपसँ मान्यता नहि देलक - विदेह देलक।

७०. कुमार पवन (डॉ. पवन कुमार झा)

रचना: निहि बिसरैछ; काल्हि तँ रवि छै । प्रेम आ प्रकृति कविता

परिचय: डॉ. पवन कुमार झा (जन्म २७/१२/१९५८, मुरैठा, दरभंगा)। पीजीटी हिन्दी, केन्द्रीय विद्यालय कटिहार। एक दशकक मौनक बाद २००८ मे लेखनक दोसर पारी शुरू।

'नहि बिसरैछ' क विश्लेषण (विवेचना): 'नहि बिसरैछ' एक दीर्घ कविता थिक जाहिमे मुज़फ्फरपुर स्टेशन पर एक ट्रेन दृश्य अछि - एक १० बरखक दुबर-पातर बच्चा ट्रेनमे चढ़ल, बहैत नाक, फाटल शर्ट। कवितामे विशिष्ट इन्द्रिय-विवरण केर कमाल: 'जाड़क ओ टिठुरैत कनकनायल भोर', 'अवध आसाम एक्सप्रेस'।

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): करुण रस - मुदा ई नहि बिसरबला करुण थिक। 'नहि बिसरैछ' - स्मृति एक नैतिक कार्य केर रूपमे: कवि ओहि बच्चाकेँ नहि बिसरत। वक्रोक्ति: 'नहि बिसरैछ' केर की मतलब? केवल याद? वा गरीब केँ नहि बिसरबाक एक राजनैतिक प्रतिबद्धता?

बेन्यामिन (बेन्यामिन): वाल्टर बेन्यामिनक 'इतिहास केर अवधारणा पर' सँ: ई ट्रेनक यात्रा इतिहास केर 'आपात ब्रेक' थिक - अतीतक पीड़ाकेँ याद रखनाइ ओ प्रायश्चित (मुक्तिदायी कार्य) थिक जे बेन्यामिनक प्रस्तावनामे केन्द्रीय अछि।

७१. श्री विद्यानन्द झा

रचना: कोशीक ताण्डव; दहेज दानव । प्रकृति आ सामाजिक कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'कोशीक ताण्डव' - कोसी बाढ़ि-आपदाक कविता थिक जे बिहारमे एक आवर्ती त्रासदी थिक। 'ताण्डव' = शिव केर मृत्यु-नृत्य - ई मूलभूत विनाश थिक। रौद्र + करुण रस। वक्रोक्ति: 'ताण्डव' (नृत्य) एक सकारात्मक शब्द थिक, मुदा एहिठाम मृत्यु-नृत्य थिक।

'दहेज दानव' - सोझा दहेज-विरोधी कविता। करुण + वीभत्स रस।

७२. मो. गुल हसन

रचना: सभटा चौपट भऽ गेल । मुसलमान मैथिली आवाज

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'सभटा चौपट भऽ गेल' एक व्यंग्यात्मक विलाप थिक जाहिमे सब किछु 'चौपट' (बरबाद) भऽ गेल। 'सभटा चौपट' - पुनरावर्ती पङ्क्ति एक वक्रोक्ति थिक: 'चौपट' (बरबाद) एक लोक-शब्द थिक जे एहिठाम एक विध्वंसकारी राजनैतिक टिप्पणी बनि जाइत अछि। वीभत्स + हास्य रस।

बूर्द्यू / धार्मिक बहुलता (बूर्द्यू / धार्मिक बहुलता): बूर्द्यू केर 'प्रतीकात्मक हिंसा' केर दृष्टिसँ: मो. गुल हसनक मैथिलीमे लिखनाइ एक स्थान केर पुनःदावा केर कार्य थिक - एक एहन साहित्यिक परम्परामे जे ऐतिण्हासिक रूपसँ हिन्दू-ब्राह्मण प्रधान रहल अछि।

विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: विदेहक सम्पादकीय नीति - मुसलमान, दलित, ओबीसी, नारी सब आवाजकेँ समान स्थान देनाइ - केन्द्रीय रहल अछि।

७३. मनोज कुमार मण्डल

रचना: बहीन । भाई-बहिन कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'बहीन' मे वात्सल्य + करुण रस - भाई-बहिनक ऋण्यताक एक कोमल चित्र। एहि ऋण्यताकेँ मैथिलीमे कवितामे आनब - औचित्यक एक सिद्ध उदाहरण थिक - ई विषय एहि शैलीमे स्वाभाविक रूपसँ उपयुक्त बैसैत अछि।

७४. आमोद कुमार झा

रचना: मैथिल नइँ छोटका । पहिचान कविता

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): 'मैथिल नइँ छोटका' (मैथिली छोट नहि) - एक पहिचान कविता थिक - ई 'छोटका' के थिक? जिनका 'मैथिली नहि' बुझाओल गेल? ई अनिश्चितता कविताक केन्द्रीय प्रश्न थिक। करुण + अद्भुत रस।

भाषाई पहिचान (भाषाई पहिचान): मैथिलीकेँ ८ म अनुसूचीमे शामिल करबाक पश्चात् सेहो पहिचान-राजनीति जटिल अछि। आमोद कुमार झाक कविता एहि जटिलता केँ पकड़ैत अछि।

७५. गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादक)

रचना: आकाश मध्य लिखल हमर लेख । सम्पादक-कवि

परिचय: गजेन्द्र ठाकुर विदेहक सम्पादक आ सदेह ३ केर सम्पादक छथि। हुनकर अपन कविता 'आकाश मध्य लिखल हमर लेख' एहिमे शामिल अछि - जे सम्पादक आ कवि दुनूक एक अद्वितीय स्थिति थिक।

'आकाश मध्य लिखल हमर लेख' क विश्लेषण (विवेचना): आकाशमे लिखनाइ - क्षणिक लेखन। ई कविता ठाकुरक अपन साहित्यिक पहिचानक एक ध्यान थिक। सम्पादक जे स्वयं सेहो कवि छथि, एहि दोहरा भूमिका केर तनाव कवितामे अनुभव होइत अछि।

रस-ध्वनि (रस-ध्वनि विवेचना): शान्त + अद्भुत रस। 'आकाश मध्य लिखल' - आकाश-लेखन क्षणिक, असंरक्षणीय थिक। ध्वनि: की मैथिली साहित्य सेहो आकाशमे लिखल क्षणिक? वा विदेह आ सदेहक पुरालेखीय परियोजना एक 'आकाश-लेखन' केँ 'संरक्षित' करैत अछि?

बाख्तिन (बाख्तिन): सम्पादकक अपन कविता शामिल करनाइ एक आत्म-साहित्यिक कार्य थिक - ठाकुर ई कहि रहल छथि जे विदेह/सदेह केवल पुरालेखीय परियोजना नहि, ओ एक जीवन्त साहित्यिक सृजन थिक जाहिमे सम्पादक सेहो सहभागी करैत अछि। ई बाख्तिनक 'लेखक केरूपमे पात्र' केर अवधारणा थिक।

नव्य-न्याय (नव्य-न्याय): गंगेश उपाध्यायक नव्य-न्यायमे सम्पादक आ कवि दुनूक लेल एक प्रमाणक आवश्यकता अछि। ठाकुरक कविता हुनकर 'व्यक्तिगत प्रमाण' थिक - 'सम्पादकीय आत्म-साक्ष्य - संकलनक नेपथ्य सँ सम्पादकक कथन' कहल जा सकैत अछि।

विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: ठाकुरक सदेह ३ मे अपन कविता शामिल करनाइ विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचाक एक परिभाषाक क्षण थिक: सम्पादक मात्र इतिहास नहि लिखैत, ओ इतिहासक हिस्सा सेहो छथि। ई विदेह आन्दोलनक एक आधारभूत दार्शनिक कथन थिक।

उपसंहार: सदेह ३ क समग्र महत्व

सदेह ३ मैथिली पद्य २००९-१० - ७५ कवि केर एक असाधारण संकलन थिक जे मैथिली कविताक पूरा विस्तार केँ एक जगह प्रस्तुत करैत अछि। एहिमे राजनैतिक आवाज (महेन्द्र कुमार मिश्र, ओम कुमार झा, कालिनाथ ठाकुर), पारिस्थितिकीय आवाज (जीवकान्त, कीर्तिनारायण मिश्र), स्त्रीवादी आवाज (शेफालिका वर्मा, कल्पना शरण, सरोज खिलाडी), दलित आवाज (उपेन्द्र भगत नागवंशी, राजदेव मण्डल), मुस्लिम आवाज (मो. गुल हसन), गजल आवाज (आशीष अनचिन्हार, अरविन्द ठाकुर), लोक-परम्परा (उमेश मण्डल, निशाप्रभा झा), बाल-साहित्य (हिमांशु चौधरी, अशोक दत्त), वरिष्ठ मान्य-परम्परागत कवि (जीवकान्त, राजकमल चौधरी) आ नव आवाज सब एक संग अछि।

चारि ढाँचाक संश्लेषण जे एहि समीक्षामे कएल गेल अछि से देखबैत अछि:
(१) भारतीय रस सिद्धान्त मैथिली कविताक भावनात्मक-सौन्दर्यात्मक डीएनए केँ पकड़ैत अछि;
(२) पाश्चात्य समीक्षा-सिद्धान्त [बूर्द्यू, स्पिवाक, बाख्तिन, ग्राम्शी, बेन्यामिन, फानन, अम्बेडकर] सामाजिक-राजनैतिक आयाम सभकेँ प्रकाशित करैत अछि;
(३) गंगेशक नव्य-न्याय ज्ञान-मीमांसा कवितामे ज्ञान-निर्माण केर तर्क केँ देखैत अछि;
(४) विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा देखबैत अछि जे ई संकलन मैथिली साहित्यमे एक संस्थागत प्रति-वर्चस्व केर हिस्सा थिक।

विदेह आन्दोलनक सबसँ बड़ योगदान ई थिक जे ओ एहि ७५ कवि केँ एक एकल मान्य-परम्परागत स्थान देलक जाहिमे साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त (जीवकान्त, आदि) आ नव, अप्रकाशित, अधीनस्थ आवाज दुनू एक संग अछि। ई 'बिना बहिष्कार समावेश' विदेहक परिभाषाक विशेषता थिक आ सदेह ३ ओकर एक स्मारक थिक।

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह: सदेह: ३ — मैथिली पद्य २००९-१०

अध्याय 22 · विदेह: सदेह: ४ — मैथिली कथा २००९-१०

सारांश समग्र साहित्यिक समीक्षा: सभटा साहित्यकार भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य। आइएसबीएन: 978-93-80538-07-5

१. कुमार मनोज कश्यप कथा: चौबिटया पर। केन्द्रीय सचिवालय कथाक सारांश: 'चौबिटया पर' एक युवाक कथा थिक जे सिविल सेवा परीक्षामे पास नै करैए।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · वक्रोक्ति · औचित्य · कथा

समग्र साहित्यिक समीक्षा: सभटा साहित्यकार

भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य। पाश्चात्य आलोचना। गंगेशक नव्य-न्याय। विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर । विदेह अङ्कीय पत्रिका, अंक २६-५०, २०१० । आइएसबीएन: 978-93-80538-07-5

१. कुमार मनोज कश्यप

कथा: चौबिटया पर। जन्म: १९६९, सलेमपुर, मधुबनी । केन्द्रीय सचिवालय

कथाक सारांश: 'चौबिटया पर' एक युवाक कथा थिक जे सिविल सेवा परीक्षामे पास नै करैए। ककाक कठोर स्वर 'मैथिलक पछुएबाक कारण सरकारी नोकरीकेँ पाछु भागब' ओकरा तोड़ि दैत छैक।

रस-ध्वनि विश्लेषण: करुण रस प्रधान। 'चौबिटया पर' ध्वनि: चौराहा केवल भूगोल नहि, अस्तित्वगत - कतऽ जाउ? वक्रोक्ति: 'मरीचिका बुझू सरकारी नोकरी' - मिथिलाक मध्य वर्गक शिक्षित वर्ग लेल विचित्र स्थिति उत्पन्न करैत अछि। औचित्य: मध्य वर्गक आकांक्षापर सटीक बैसैए।

बूर्द्यू / सामाजिक संरचना: पियरे बूर्द्यू केर 'शैक्षणिक पूँजी' आ 'आर्थिक पूँजी' केर बीचक तनाव: मुख्य पात्र केर शैक्षणिक पूँजी (सिविल सेवा तैयारी) उचित पुरस्कार नहि भेटल। मैथिली समाज केर विशिष्ट सांस्कृतिक पूँजी - सरकारी नोकरी = प्रतिष्ठा - ई कथा व्यवस्थित रूपसँ ढाँचा-तोड़ैत अछि।

नव्य-न्याय: गंगेशक 'अनुमान': कका क तर्क 'आब ककरो सरकारी नोकरी भेटैत' एक मिथ्या व्याप्ति (अति-सामान्यीकरण) थिक। मुख्य पात्र केर अनुभव एहि व्याप्ति केँ मिथ्या सिद्ध करैत अछि - ई कथा एक प्रति-उदाहरण (विपरीत-व्यभिचार) थिक।

विदेह ढाँचा: मिथिलाक शिक्षित बेरोजगारी केर आख्यान मुख्यधारा हिन्दी/अङ्ग्रेजी कल्पित कथामे अनुपस्थित। विदेह केर कथा-संकलन एहि क्षेत्रीय विशिष्टता केँ मान्य-परम्परागत साहित्यिक स्थान दैत अछि।

२. डॉ. शम्भु कुमार सिंह

तीन अनुदित कथा + मौलिक कथा: एकटा आर रबि; अवसरक निमन्त्रण; सोंगर; नागपंचमी । जन्म: 18 अप्रैल 1965, महिषी, सहरसा

'पाखलो' (कोंकणी उपन्यास) क मैथिली अनुवाद सेहो हुनकर अछि। ऐ सम्पूर्ण खण्डमे हुनकर अनुवादकक-रूप-मे-साहित्यिक-अभ्यास सबसँ स्पष्ट अछि।

'एकटा आर रबि' रस-ध्वनि: करुण रस। ध्वनि: रबिवार केवल छुट्टी नहि, एक पुनरावर्ती शून्यता क प्रतीक। वक्रोक्ति: 'आर' (अन्य, फेर एक) - ई पुनरावृत्ति विषाद उत्पन्न करैत अछि।

'अवसरक निमन्त्रण' रस-ध्वनि: वीर रस + करुण। 'अवसरक निमन्त्रण' वक्रोक्ति: की अवसर निमन्त्रण पठबैत अछि? ई प्रश्न स्वयं एक व्यंग्यपूर्ण उलटफेर थिक। मुख्य पात्र केर सक्रियता बनाम संरचनात्मक भाग्य।

'सोंगर' आ 'नागपंचमी' अनुवाद-सिद्धान्त: बेन्यामिन केर अनुवाद सिद्धान्त: (कोंकणी मूल) क मैथिली अनुवाद। बेन्यामिन क 'पाठ केर परवर्ती जीवन' - अनुवाद मूल क एक नव जन्म थिक। डॉ. शम्भु कुमार सिंह केर अनुवाद-अभ्यास विदेह केर अन्तर-साहित्यिक आदान-प्रदान परियोजना केर केन्द्र थिक।

नव्य-न्याय / विदेह: गंगेशक 'उपादान कारण' (भौतिक कारण): मूल पाठ हुनकर उपादान (कच्चा माल) थिक, आ मैथिली अनुवाद एक नव साहित्यिक वस्तु सृजित करैत अछि। विदेह केर समावेशी मान्य-परम्परा: कोंकणी + मैथिली = एक लोकतान्त्रिक साहित्यिक स्थान।

३. कुसुम ठाकुर

कथा: प्रत्यावर्तन पहिल खेप (पृ. ९-१६) । नारी कथाकार

कथाक सारांश: (फिर्ती) एक नारीक जीवन-यात्रा जाहिमे सामाजिक अपेक्षा, विवाह, अस्मिता सब प्रश्नगत होइत अछि। 'पहिल खेप' (पहिल किस्त) - ई श्रृंखलाबद्ध रूप सुझाव करैत अछि कि ई एक वृहद आख्यान क आरम्भ थिक।

रस-ध्वनि: वियोग-शृंगार + करुण। ध्वनि: रूपान्तरण संग हानि सेहो होइत अछि। 'पहिल खेप' - डिकेन्सीय श्रृंखलाबद्ध संरचना। वक्रोक्ति: 'व्यावर्तन' (रूपान्तरण) केर अर्थ - आगू बढ़नाइ या पाछाँ मुड़नाइ? दुनू एक साथ।

स्त्रीवादी/ स्पिवाक: स्पिवाक केर स्त्रीवादी उत्तर-औपनिवेशिक सिद्धान्त: मैथिली महिलाक 'प्रत्यावर्तन' - ओ रूपान्तरण थिक जे सामाजिक संरचना अनुमति दैत अछि बनाम जे ओ वास्तवमे प्राप्त कर सकैत अछि। ई अन्तर कथाक आख्यानिक तनाव थिक।

नव्य-न्याय: गंगेशक 'प्रत्यभिज्ञा' (पुनः-पहिचान): एक पुरान आत्मा केर पुनः-पहिचान/स्वीकार होइत अछि जे नारी छलीह ओ घुरि कऽ देखैत अछि। ई एक नव्य-न्याय ज्ञान-मीमांसीय क्षण- आत्म-ज्ञान केर पुनः-प्राप्ति।

४. सुरेश किशोर झा

कथा: साथी दुखमे न कोइ। मध्यमवर्गीय पारिवारिक कथा

रस-ध्वनि: करुण रस। 'साथी दुखमे न कोइ' ध्वनि: - ई एकाकीपन अर्वाचीन/अर्ध-शहरी मैथिली जीवन केर मूलभूत दशा थिक। वक्रोक्ति: 'साथी' (सङ्गी) शब्द एक अनुपस्थिति (साथी केर अभाव) वर्णित करैत अछि।

लुकाच / यथार्थवाद: लुकाच केर 'विशिष्ट परिस्थितिमे विशिष्ट पात्र': सुरेशजीक कथाक मुख्य पात्र एक 'विशिष्ट' मैथिली मध्यमवर्गीय व्यक्ति थिक - आकांक्षा, आर्थिक बाध्यता, पारिवारिक दायित्व सब विशिष्ट। ई समीक्षात्मक यथार्थवाद केर शक्ति थिक।

नव्य-न्याय: गंगेशक 'व्याप्ति': 'दुखमे कोनो साथी नहि रहैत' - ई एक व्याप्ति (सार्वभौमिक नियम) केर रूप थिक। कथाक दृष्टान्त (आख्यानिक उदाहरण) एहि व्याप्ति कैँ स्थापित करैत अछि।

५. अनमोल झा

कथा: प्राथमिकता

रस-ध्वनि: 'प्राथमिकता' वक्रोक्ति: जीवनमे की 'प्राथमिक' (प्राथमिकता) होएबाक चाही - ई प्रश्न एक सम्पूर्ण मूल्य-प्रणाली केर समीक्षा थिक। शान्त रस + बौद्धिक तनाव। ध्वनि: जे चुनैत छी तकरा प्राथमिकता कहाइत अछि, मुदा जे नहि चुनैत छी से सेहो एक विकल्प थिक।

अस्तित्ववाद: सार्त्र केर 'अस्तित्व पहिले, तखन सार': 'प्राथमिकता' क विकल्प चुननाइ अस्मिता सृजित करैत अछि- ई अस्तित्ववादी अन्तर्दृष्टि कथामे अन्तर्निहित अछि।

६. मिथिलेश कुमार झा

कथा: एडवांस युग मे । जन्म: 12-01-1970, मनपौर

रस-ध्वनि: 'एडवांस युग मे' (अर्वाचीन/उन्नत युगमे) ध्वनि: 'एडवांस' (अर्वाचीन) शब्द अङ्ग्रेजी उधार-शब्द थिक जे अर्वाचीन मैथिली केर शाब्दिक वास्तविकता प्रतिबिम्बित करैत अछि। हास्य + व्यंग्य रस - अर्वाचीनता केर वादा बनाम मिथिलाक ग्रामीण वास्तविकता।

बाख्तिन / बहुभाषिक विभिन्नता: बाख्तिनक 'विभिन्न-भाषात्व': एक पाठके भीतर अनेक भाषा - 'एडवांस युग' केर मैथिली केर भीतर अङ्ग्रेजी मिश्रण एक बाख्तिनीय कथन थिक। ई भाषिक मिश्रण मैथिली समाज केर संकर अर्वाचीनता केर प्रतीक थिक।

विदेह ढाँचा: विदेह केर 'नव मैथिली' जे परम्परा संरक्षण करबाक संग अर्वाचीनता स्वीकार करैत अछि - मिथिलेश झाक कथा एहि सन्तुलन केर अन्वेषण करैत अछि।

७. पालन झा

कथा: गरीबक जिन्दगी

रस-ध्वनि: करुण रस - गरीबीक यथार्थ चित्रण। 'गरीबक जिन्दगी' ध्वनि: 'जिन्दगी' (जीवन) ई बहुवचन नहि, एकवचन- एक विशिष्ट गरीब व्यक्ति केर जीवन,

जे अनेक केर प्रतिनिधि अछि। वक्रोक्ति: 'जिन्दगी' शब्द - उर्दू-मैथिली साङ्केतिक-परिवर्तन जे स्वयं वर्ग अस्मिता केर सूचक थिक।

मार्क्स / अम्बेडकर: मार्क्स केर वर्ग-संघर्ष + अम्बेडकर केर जाति-वर्ग अन्तर्विच्छेद: मैथिलीक गरीबी प्रायः जाति-आधारित। पालन झाक कथा एहि दोबर-बोझ (गरीब + निम्न-जाति) केर आख्यान करैत अछि।

नव्य-न्याय: गंगेशक 'अभाव' (वंचना/अनुपस्थिति) क सिद्धान्त: कथामे जे 'नहि अछि' (भोजन, सम्मान, अवसर) - ओकर व्यवस्थित गणना ऐ अभाव क सूची थिक।

८. कामिनी कामायनी

कथा: लाल काकी। नारी कथाकार

रस-ध्वनि: 'लाल काकी' ध्वनि। 'काकी' (चाची/पिताक भौजी) - गृहस्थी। दुनू केर संयोजन एक तनाव पैदा करैत अछि। करुण + शृंगार। वक्रोक्ति: 'लाल काकी' - एक साधारण गृहस्थीय व्यक्तित्व जाहिमे एक असाधारण अन्तरंग जीवन अछि।

स्त्रीवादी / बोव्वार: सिमोन द बोव्वार केर 'द्वितीय लिंग': 'काकी'- चाची प्रायः पारिवारिक आख्यानमे अदृश्य। कामिनी कामायनी 'लाल काकी' कैं केन्द्र करैत छथि- अदृश्य महिला केर स्त्रीवादी पुनःप्राप्ति।

विदेह ढाँचा: मैथिली मुख्यधारा कल्पित कथामे महिला प्रायः परिधीय। विदेह केर स्थान कामिनी कामायनी जिनका महिला-केन्द्रित आख्यान लिखबाक मञ्च दैत अछि।

९. जगदीश प्रसाद मंडल

कथा: बहीन। दलित कथाकार

रस-ध्वनि: 'बहीन'। ध्वनि: बहिनक प्रति भाइक सुरक्षात्मक प्रेम आ ओहि प्रेम केर सीमा- कथामे अन्वेषित। वात्सल्य + करुण। वक्रोक्ति: 'बहीन' एक व्यक्तिगत सम्बन्ध शीर्षक थिक जे एक साथ एक सामाजिक स्थिति (महिलाक रूपमे संरक्षित/असुरक्षित) वर्णित करैत अछि।

अम्बेडकर / जाति: मंडल केर कल्पित कथा लगातार जाति केर प्रश्न करैत अछि। 'बहीन' कहानी- दलित महिला केर सम्मान, पारिवारिक बन्धन, सामाजिक बाध्यता एक संग। अम्बेडकर केर तर्क: दलित महिला दोबर उत्पीड़ित - जाति + लिंग।

नव्य-न्याय: गंगेशक 'उपादान कारण': 'बहीन' कहानी केर कच्चा माल थिक, मुदा कथा ओहि सम्बन्ध केर सामाजिक निर्माण उजागर करैत अछि।

१०. साकेतानन्द

कथा: कृतं न् मन्ये

रस-ध्वनि: संस्कृत-व्युत्पन्न शीर्षक - एक शास्त्रीय स्तर स्थापित करैत अछि। शान्त + करुण। वक्रोक्ति: संस्कृत शीर्षक + समकालीन मैथिली आख्यान - ई काल-वैषम्य स्वयं सार्थक थिक।

पाठान्तर्सम्बन्ध: संस्कृत साहित्यिक परम्परा संग अर्वाचीन मैथिली कल्पित कथाक संवाद। बाख्तिन केर पाठान्तर्सम्बन्ध: 'कृतं' (जे कएल गेल) - कर्म केर दार्शनिक प्रतिध्वनि।

११. सुजीत कुमार झा

कथा: प्रियंका

रस-ध्वनि: 'प्रियंका' एक नारी-नाम शीर्षक। शृंगार + करुण। ध्वनि: 'प्रियंका' जे प्रिय अछि, केर जीवन-यात्रा। वक्रोक्ति: नाम केर अर्थ आ वास्तविक जीवन केर व्यंग्यपूर्ण विरोधाभास।

स्त्रीवादी/ आख्यान-सिद्धान्त: नामकरणक रूपमे अस्मिता-राजनीति: कोनो नारीक नाम कि ओकर मूल्य प्रेम-वस्तु होबै पर निर्भर अछि? सुजीत कुमार झाक कथा एहि प्रश्न केर अन्तर्निहित अन्वेषण करैत अछि।

१२. आशीष चमन

कथा: पछता रोटी।

रस-ध्वनि: 'पछता रोटी' ध्वनि। करुण + वीभत्स। वक्रोक्ति: 'रोटी' आर्थिक रूपक - आर्थिक लेनदेन।

अस्तित्ववाद / पश्चाताप: सार्त्र केर 'दुर्भावना': 'पछता रोटी'- एक पात्र केर दुर्भावना जे विकल्प कएलक तकर परिणाम केर सामना करए नहि चाहैत।

१३. आशीष कुमार चौधरी

कथा: जीत गयो मोर काहा

रस-ध्वनि: 'जीत गयो मोर काहा' ध्वनि: कथनक जीत - एक आख्यान कहल जएबाक लेल। वीर रस। वक्रोक्ति: 'जीत' (विजय) केर स्वामित्व दावा केनाइ - ई विजय सार्वजनिक विमर्श केर हिस्सा बनैत अछि।

१४. दुर्गानन्द मंडल

कथा: बकलेल। ओबीसी/दलित स्वर

रस-ध्वनि: 'बकलेल' (अचम्भित/असमञ्जस) ध्वनि: असमञ्जस एक सामाजिक अवस्था थिक - जाहिठाम ओकर स्थान अछि ताहिठाम ओ उपयुक्त नहि बैसैत। करुण + रौद्र। वक्रोक्ति: 'बकलेल' ओहि व्यक्ति केर आन्तरिक अवस्था वर्णित करैत अछि जे बाह्य प्रणाली केर तर्क नहि बुझैत - मुदा वास्तवमे ओ प्रणाली अतार्किक अछि।

फानन/ अम्बेडकर: फानन केर 'औपनिवेशिक विस्थापन' + अम्बेडकर केर जाति-बहिष्कार: 'बकलेल' भेनाइ ओबीसी/दलित व्यक्ति केर दैनिक अनुभव थिक - ओहि प्रणाली सभमे असमञ्जस भेनाइ जे ओकरा लेल अभिकल्पित नहि छैक।

१५. कपिलेश्वर राउत

कथा: छूआ-छूत

रस-ध्वनि: 'छूआ-छूत' (अस्पृश्यता) ध्वनि: ई दू शब्द मैथिली समाज केर सबसँ पीड़ादायक वास्तविकता केर नाम थिक। रौद्र + करुण। दुर्गा पूजा केर पर्व पृष्ठभूमिमे शम्भू मंडल - दलित व्यक्ति केँ मन्दिरमे प्रवेशसँ रोकल जाइत अछि - ई सह-स्थापना विध्वंसकारी अछि।

अम्बेडकर / दलित साहित्य: बी.आर. अम्बेडकर केर 'जाति का विनाश': 'छूआ-छूत' कथा सीधे अम्बेडकर केर परियोजना केँ सक्रिय करैत अछि। पर्वमे बहिष्कार - होली/दुर्गा पूजा जे 'एकता' क दावा करैत अछि - दलित बहिष्कार केर सबसँ कपटपूर्ण क्षण थिक।

नव्य-न्याय: गंगेशक 'विपक्ष-बाधक तर्क': पुजारी केर तर्क 'सोलकन (दलित) देवी केँ नहि छू सकैत' - एक मिथ्या तार्किक दावा थिक। 'छूआ-छूत' कथा एहि मिथ्या दावा केँ उजागर करैत अछि - एक नव्य-न्याय शैली प्रति-तर्क।

विदेह समानान्तर इतिहास: दलित साहित्य साहित्य अकादमी मान्य-परम्परागत मैथिलीमे ऐतिहासिक रूपसँ कम प्रतिनिधित्व भेटल। विदेह केर 'छूआ-छूत' केँ सम्मिलित करनाइ एक प्रति-मान्य-परम्परागत विकल्प थिक।

१६. राजदेव मंडल

कथा: रखबार

रस-ध्वनि: 'रखबार' (संरक्षक) ध्वनि: सुरक्षा करबाक उत्तरदायित्व + ओकर बोझ। शान्त + करुण। वक्रोक्ति: 'रखबार' - ओ व्यक्ति जे दोसराकेँ रखवाली करैत अछि मुदा खुद कोनो रखवाली नहि पबैत।

ग्राम्शी / कार्बनिक बुद्धिजीवी: ग्राम्शी केर 'कार्बनिक बुद्धिजीवी': राजदेव मंडल लगातार अपन समुदाय केर कहानी लिखैत छथि। 'रखबार' एक समुदाय-रखवाला व्यक्तित्व केर कहानी थिक।

१७. शरदिन्दु चौधरी

कथा: समय-संकेत

रस-ध्वनि: 'समय-संकेत' ध्वनि: समय केर 'संकेत' - ई कालिक चेतना केर साहित्यिक रूपक थिक। शान्त रस। वक्रोक्ति: एक छोट कथा जे एक सम्पूर्ण 'युग' (समय) केर 'संकेत'क दावा करैत अछि।

बेन्यामिन/ कालिक: बेन्यामिन केर 'वर्तमान-काल': 'समय-संकेत' ओहि क्षण थिक जतय अतीत आ वर्तमान एक संग चमकैत अछि।

१८. विजय-हरीश

किछु लघु कथा: छोट बला गमछा; किकिऔनी; भावी-रणनीति; तृष्णा।

रस-ध्वनि: चारि रस: 'छोट बला गमछा' - हास्य+करुण; 'किकिऔनी' - हास्य; 'भावी-रणनीति' - अद्भुत+वीर; 'तृष्णा' - करुण। लघुकथा शैलीमे ध्वनि अधिकतम सान्द्रतापर काज करैत अछि - न्यूनतम शब्द, अधिकतम अनुनाद।

अल्पतमवाद / चेखव: आन्तोन चेखव केर लघुकथा सिद्धान्त: लघुकथामे 'दीवार पर बन्दूक' सिद्धान्त – सभ तत्व सार्थक। विजय-हरीश केर चारि लघुकथा चेखव केर आख्यान-मितव्ययिता केर प्रदर्शन करैत अछि।

नव्य-न्याय: गंगेशक 'तर्क-संक्षेप' (संक्षिप्त तर्क): लघुकथा एक संकुचित तार्किक तर्क थिक - न्यूनतम आधार, अधिकतम निष्कर्ष।

१९. सुनीता ठाकुर

कथा: अपहरणक सच। नारी कथाकार

रस-ध्वनि: 'अपहरणक सच' रौद्र + करुण। ध्वनि: 'सच' (सत्य) - अपहरण केर 'वास्तविक कहानी' जे ऊपरसँ नहि देखाइत अछि। वक्रोक्ति: 'अपहरण' भौतिक अगवा नहि, एक व्यापक सामाजिक 'अपहरण' महिलाक सक्रियता केर।

स्त्रीवादी/ अपराध कथा: स्त्री अपराध कथा एक स्त्रीवादी शैलीक रूपमे: अपहरण कहानी प्रायः महिलाकेँ पीड़ित/वस्तुक रूपमे पुनरुत्पादित करैत अछि। सुनीता ठाकुर ऐ शैलीमे महिलाक 'सच' उजागर करैत छथि- सक्रियता + प्रतिरोध।

२०. राकेश कुमार रोशन

कथा: पंचैति

रस-ध्वनि: 'पंचैति' (ग्राम्य न्यायाधिकरण) ध्वनि: पञ्चायत एक संस्था थिक जे न्याय देवाक दावा करैत अछि मुदा वास्तविक न्याय? करुण + रौद्र। वक्रोक्ति: 'पंचैति' - न्यायिक प्रक्रिया केर अनुष्ठानिक प्रदर्शन बनाम वास्तविक न्याय।

ग्राम्शी / स्थानीय सत्ता: ग्राम्शी केर स्थानीय वर्चस्व: ग्राम पञ्चायत वृहद सत्ता संरचना सभक सूक्ष्म जगत थिक। 'पंचैति' कहानी पञ्चायत संस्था केर समीक्षात्मक परीक्षण करैत अछि।

२१. हेमचन्द्र झा

कथा: बाट

रस-ध्वनि: 'बाट' (पथ/रास्ता) ध्वनि: भौतिक पथ + जीवन-पथ। शान्त + करुण। वक्रोक्ति: 'बाट' (सड़क) रूपक - ई शाब्दिक यात्रा थिक या रूपकात्मक? दुनू एक संग।

अस्तित्ववाद / हाइडेगर: हाइडेगर केर 'संसारमे-सत्ता': 'बाट' केर दृष्टिसँ मानव अस्तित्व- पथ केर रूपमे परिभाषित - कोन पथ चुनल, कोन छोड़ल।

२२. सुभाष चन्द्र यादव

कथा: पति-पत्नी संवाद। ओबीसी स्वर

रस-ध्वनि: 'पति-पत्नी संवाद'- बाख्तिन केर संवादवाद केर सबसँ प्रत्यक्ष रूप। हास्य + शृंगार। वक्रोक्ति: 'संवाद' (वार्तालाप)- पति-पत्नीक बीच वास्तविक संवाद अछि या सत्ता-गतिकी?

बाख्तिन/ संवाद: बाख्तिनक संवादवाद: वास्तविक संवाद समानता आवश्यक करैत अछि। 'पति-पत्नी संवाद' मे ई समानता अछि? सुभाष चन्द्र यादव केर कहानी एहि प्रश्न केर अन्वेषण करैत अछि।

२३. मानेश्वर मनुज

कथा: जीत

रस-ध्वनि: 'जीत' (विजय) वीर + करुण। ध्वनि: 'जीत' एक आकांक्षात्मक शब्द - मुदा ककर 'जीत', किनका ऊपर? वक्रोक्ति: सभ 'जीत' केर सेहो हार होइत अछि जे ओ परास्त केलक।

अम्बेडकर/ ग्राम्शी: अम्बेडकर केर 'सामाजिक गतिशीलता': मानेश्वर मनुज केर 'जीत' कहानी - एक हाशियाकृत व्यक्ति केर विजय कहानी। ग्राम्शी केर 'स्थिति-युद्ध': छोट-छोट विजय - संचयी परिवर्तन सृजित करैत अछि।

२४. परमेश्वर कापड़ि

कथा: धुमगिज्जर । नेपाल, मैथिली

रस-ध्वनि: रौद्र + वीर। जीवनक संघर्ष केर रूपकात्मक तीव्रता। वक्रोक्ति: नेपाल पक्ष केर मैथिली जीवन केर विशिष्ट पारिस्थितिकीय आ सामाजिक दशा।

विदेह अन्तर-सीमा: परमेश्वर कापड़ि नेपाल केर मैथिली लेखक छथि। विदेह केर अन्तर-सीमा समावेश- नेपाल मिथिला केर कहानी सेहो समान मान्य-परम्परागत स्थान पबैत अछि।

२५. ऋषि वशिष्ठ

कथा/व्यंग्य: जुआनी जिन्दाबाद

रस-ध्वनि: 'जुआनी जिन्दाबाद' (युवा दीर्घजीवी!) हास्य + वीर। 'जिन्दाबाद' (उर्दू: दीर्घजीवी) एक राजनैतिक नारा थिक- युवा सक्रियता, क्रान्ति। वक्रोक्ति: युवा केर विद्रोह केर प्रशंसा + व्यंग्य एक साथ।

बाख्तिन/ उत्सवी-लोकधर्मी: बाख्तिनक उत्सवी-लोकधर्मी: युवा विद्रोह एक उत्सव थिक - स्थापित व्यवस्था अस्थायी रूपसँ उलटल। 'जिन्दाबाद' नारा एक उत्सवी-लोकधर्मी संकेत थिक।

२६. शिवशंकर श्रीनिवास

कथा: पण्डित ओ हुनक पुत्र। जन्म: लोहना, मधुबनी । चर्चित कथाकार-आलोचक

रस-ध्वनि: 'पण्डित ओ हुनक पुत्र' (विद्वान आ ओकर पुत्र) करुण + शान्त। ध्वनि: 'पण्डित' आ 'पुत्र' - पीढ़ी अन्तराल, पिता-पुत्र सम्बन्ध, जाति-आधारित ज्ञान-संचरण। वक्रोक्ति: 'पण्डित' (विद्वान व्यक्ति) केर पुत्र - हुबहू नहि - उत्तराधिकार भंग।

बूर्द्यू/ सांस्कृतिक पूँजी: बूर्द्यू केर सांस्कृतिक पूँजी-संचरण: 'पण्डित' केर सांस्कृतिक पूँजी (संस्कृत ज्ञान, अनुष्ठानिक विशेषज्ञता) पुत्रमे संचरित होएत वा नहि? कहानी एहि अन्तर-पीढ़ीगत स्थानान्तरण पर प्रश्न करैत अछि। पुत्र बादमे दुखी होइत अछि।

नव्य-न्याय: गंगेशक 'परम्परा' (परम्परा) बनाम 'नवता' (नवीनता): पण्डित केर पारम्परिक ज्ञान-प्रणाली - एहि तनाव नव्य-न्याय केर अपन ऐतिहासिक चुनौती (परम्परा बनाम नव ज्ञान-मीमांसा) केर दर्पण थिक।

२७. श्यामल सुमन

कथा/व्यंग्य: अथ तन्त्र लोकतन्त्रीय मुक्ति

रस-ध्वनि: 'अथ तन्त्र लोकतन्त्रीय मुक्ति' ध्वनि: संस्कृत 'अथ' (आब शुरू) + 'तन्त्र' (प्रणाली) + 'लोकतन्त्रीय' (लोकतान्त्रिक) + 'मुक्ति' (मुक्ति) - ई चारि शब्द एक व्यंग्यात्मक घोषणापत्र बनबैत अछि। हास्य + रौद्र। वक्रोक्ति: संस्कृत स्तरमे राजनैतिक व्यंग्य - शास्त्रीय भाषा राजनैतिक समीक्षा कैं प्रवर्धित करैत अछि।

बाख्तिन/ राजनैतिक व्यंग्य: बाख्तिनक उत्सव केर राजनैतिक आयाम: 'लोकतन्त्रीय मुक्ति' केर उपहास-महाकाव्यीय प्रस्तुति लोकतान्त्रिक प्रणाली केर कपटता कैं उजागर करैत अछि।

२८. मनोज झा 'मुक्ति'

कथा: इज्जतिक खातिर

रस-ध्वनि: 'इज्जतिक खातिर' (सम्मान/प्रतिष्ठा खातिर) रौद्र + करुण। ध्वनि: 'इज्जत' (सम्मान) एक विवादित शब्द - सम्मान, ककरा द्वारा परिभाषित? वक्रोक्ति: 'मुक्ति' (मुक्ति) नाम केर लेखक सम्मान केर बाध्यता केर अन्वेषण करैत छथि।

अम्बेडकर / सम्मान: अम्बेडकर केर सम्मान-संस्कृति केर समीक्षा: 'इज्जत' प्रायः जाति/लिंग पदानुक्रम केर प्रवर्तन करैत अछि। 'इज्जतिक खातिर' - सम्मान-आधारित हिंसा, सामाजिक दबाव, आत्म-बलिदान।

२९. जगदीश प्रसाद मंडल

बाल-किशोर लेल प्रेरक कथा: उत्थान-पतन; प्रतिभा; मर्म; अधखड्डुआ; समयक बरबादी; पहिने तप तखन ढलिहेँ। बाल-कथा

रस-ध्वनि: वात्सल्य रस + वीर रस - बाल-प्रेरणा। 'प्रेरक कथा' ध्वनि: ई मात्र मनोरंजन नहि, निर्माण थिक। वक्रोक्ति: 'पहिने तप तखन ढलिहेँ'- आध्यात्मिक स्तरमे।

बेन्यामिन / शिक्षाशास्त्र: बेन्यामिन केर शिक्षा-सिद्धान्त: कहानी पीढ़ी सभक बीच मूल्य संचरण केर एक विधा केर रूपमे। मंडल केर बाल-कथा मैथिली समुदाय मूल्य (अनुशासन, प्रतिभा, बलिदान) केर साङ्केतिकीकरण करैत अछि।

विदेह ढाँचा: मिथिलाक अगिला खाढ़ी लेल मैथिली पठन-सामग्री - विदेह केर बाल-साहित्य पहल।

३०. डा. सुरेश लाभ

कथा-नाटक/ एकांकी: माई गे! भूख लागल हए

रस-ध्वनि: 'माई गे! भूख लागल हए' (माँ! भूख लागल अछि!) करुण रस अपन सबसँ प्रत्यक्ष रूपमे। ध्वनि: बच्चाक 'माई गे!' (माँ!) एक सार्वभौमिक पुकार। वक्रोक्ति: 'भूख'- केवल भोजन नहि, सम्मान, प्रेम, न्याय, अवसर केर भूख।

मार्क्स/ अम्बेडकर/ भूख राजनीति: भूख एक राजनैतिक श्रेणी (मार्क्स + अम्बेडकर दुनू)। सुरेश लाभक कहानी भूख केर व्यक्तिगत/पारिवारिक स्तरसँ राजनैतिक स्तर धरि अनुरेखण करैत अछि।

नव्य-न्याय: गंगेशक 'अन्वय-व्यतिरेक': जाहिठाम भोजन अछि ताहिठाम सम्मान अछि, जाहिठाम नहि ताहिठाम नहि - ई साधारण सह-अस्तित्व/अनुपस्थिति तर्क कथाक मूल तर्क थिक।

३१. श्री ललन प्रसाद ठाकुर

कव्वाली: साढ़ूनामा (तेसर कड़ी)। जन्म: ५ फरवरी १९५१, मुंगेर

रस-ध्वनि: 'साढ़ूनामा' (साढ़ू केर गाथा) कव्वाली शैलीमे! हास्य + श्रृंगार। ध्वनि: 'साढ़ू' (पत्नी केर बहिनक पति = सम्बन्धी) एक जटिल रक्त-सम्बन्ध शब्द जे मैथिली परिवार संरचना केर विशिष्टता देखबैत अछि। वक्रोक्ति: 'नामा' (आख्यान/इतिहास) - एक साधारण सम्बन्ध केर महाकाव्यीय रूप।

बाख्तिन/ उत्सवी-लोकधर्मी: बाख्तिनक उत्सव: कव्वाली शैली स्वाभाविक रूपसँ उत्सवी-लोकधर्मी अछि- दर्शक सहभागिता, पुकार-आ-प्रतिक्रिया, सामाजिक सम्बन्ध केर उपहास। 'साढ़ूनामा' मैथिली सामाजिक सम्बन्ध सभक हास्यपूर्ण ढाँचा-तोड़ैत अछि।

लोक साहित्य / विदेह: कव्वाली मूलतः उर्दू-हिन्दी शैली मैथिलीमे: ई भाषिक संकरता विदेह केर समावेशी मान्य-परम्परा केर प्रदर्शन करैत अछि। मैथिली + उर्दू/हिन्दी = एक लोकतान्त्रिक लोक स्थान।

३२. उमेश मंडल

कथा: परहेज।

रस-ध्वनि: 'परहेज' (निवृत्ति/परिहार) शान्त + करुण। ध्वनि: 'परहेज' चिकित्सीय शब्द - चिकित्सक आदेश। वक्रोक्ति: सामाजिक 'परहेज' (किछु लोक/स्थान सभसँ परिहार) - दलित बहिष्कार केर चिकित्सीय भाषामे साङ्केतिकीकरण।

अम्बेडकर/ अस्पृश्यता: चिकित्सीय भाषा केर सामाजिक अनुप्रयोग: 'परहेज' (चिकित्सीय परिहार) आ जाति-आधारित 'परिहार' (अस्पृश्यता) केर समानान्तरता। उमेश मंडलक कहानी एहि भाषिक समानान्तरता केर उपयोग करैत अछि।

३३. कमला चौधरी

कथा: कथा-गुणनफल। नारी कथाकार

रस-ध्वनि: 'कथा-गुणनफल' (अद्भुत रस। 'गुणनफल' एक गणितीय शब्द - ध्वनि: कहानी दोसर कहानी कें जन्म दैत अछि। वक्रोक्ति: गणित + आख्यान = एक अप्रत्याशित संयोजन जे पठन केर बारेमे -रूपमे कहानी उत्पादक प्रक्रिया केर स्वयं-पाठ।

आख्यान-सिद्धान्त : बाख्तिन केर 'उपन्यासता': उपन्यास हमेशा स्वयं पर चिन्तन करैत अछि। कमला चौधरीक शीर्षक स्वयं एक साहित्यिक सिद्धान्त कथन थिक।

नव्य-न्याय: गंगेशक 'व्युत्पत्ति' (व्युत्पत्ति): 'गुणनफल' - कहानी संख्या जकाँ गुणा होइत अछि। प्रत्येक कहानी केर पात्र होइत अछि – पाठान्तर्सम्बन्धक रूपमे गुणा।

३४. बेचन ठाकुर

कथा-नाटक: छीनरदेवी

परिचय: बेचन ठाकुर मैथिली नाट्य-परम्परामे ज्योतिरीश्वर ठाकुर केर समानान्तर नाटकक उत्तराधिकारी मानल जाइत छथि। 'छीनरदेवी' एक नाटकीय शैलीमे लिखल कथा थिक- पात्र सूची, वार्तालाप-आधारित आख्यान।

रस-ध्वनि: 'छीनरदेवी' ध्वनि: एहि नाममे एक भयानक व्यंग्य अछि। रौद्र + करुण। पात्र: सुभाष ठाकुर, ललन ठाकुर, पवन, मटुक - एक पारिवारिक नाटक। वक्रोक्ति: देवी जे अछि - पितृसत्ता केर परम अपवित्रीकरण।

भिखारी ठाकुर / नौटंकी: भिखारी ठाकुर केर लोक-नाट्य परम्परा: बेचन ठाकुर एहि परम्परा केर निरन्तरता करैत छथि। लोक रंगमञ्च- निम्न-जाति समुदाय सभक साहित्यिक स्थान थिक।

अम्बेडकर / स्त्रीवादी: 'छीनरदेवी' - एक महिला/देवी ई स्त्रीवादी कथन आ दलित कथन दुनू थिक। अम्बेडकर केर दोबर समीक्षा: पितृसत्ता + जाति एक संग ई उल्लङ्घन सृजित करैत अछि।

विदेह ढाँचा: लोक-नाट्य शैली कैँ मान्य-परम्परागत विदेह स्थान देनाइ- साहित्य अकादमी केर पारम्परिक 'साहित्यिक कल्पित कथा' श्रेणी केर बाहर। विदेह केर समावेशी विधा-परिभाषा।

३५. डॉ. कैलाश कुमार मिश्र

कथा: सखी कुन्ती। जन्म: ८ फरवरी १९६७ । दिल्ली विश्वविद्यालय एम.एस. सी., एम.फिल.।

रस-ध्वनि: 'सखी कुन्ती' करुण। ध्वनि: 'सखी' (महिला मित्र) एक अप्रत्याशित संयोजन। वक्रोक्ति: मित्रता केर शैली? ई सम्बन्ध केर जटिलता - प्रतिस्पर्धात्मक अन्तरङ्गता।

बाख्तिन / संघर्ष: बाख्तिनक 'संघर्ष': 'सखी कुस्ती' एक संघर्षपूर्ण मित्रता थिक जतय प्रतिस्पर्धा आ स्नेह एक संग सह-अस्तित्व रखैत अछि। ई बाख्तिनीय संवादवाद केर भौतिक रूप थिक।

३६. गजेन्द्र ठाकुर

उपन्यास अंश: सहस्रशीर्षा। विदेह सम्पादक । प्रयोगात्मक कल्पित कथा

परिचय: गजेन्द्र ठाकुर विदेहक सम्पादक आ मैथिली प्रयोगात्मक कल्पित कथा केर प्रणेता। उपन्यासक एक अंश। ऋग्वेद केर पुरुष सूक्त। रस-ध्वनि: अद्भुत रस। ध्वनि: 'सहस्र' (हजार) - अनेकता, सामूहिकता, ब्रह्माण्डीय। वक्रोक्ति: वैदिक ब्रह्माण्डीय पुरुष (पुरुष) जे 'सहस्र शीर्ष' (हजार-शीर्ष) अछि - ई एक उपन्यास केर शीर्षक - वैदिक ब्रह्माण्डविद्या केर अर्वाचीन उपन्याससँ जोड़नाइ।

जोइस / अर्वाचीनतावादी उपन्यास: जेम्स जोइस केर 'युलिसिस'/'फिननेगन्स वेक' केर पौराणिक ढाँचा: गजेन्द्र ठाकुर वैदिक ढाँचा कैँ अर्वाचीन मैथिली उपन्यासमे प्रयुक्त करैत छथि- हुबहू जोइस केर होमर-डबलिन समानान्तरता।

नव्य-न्याय: गंगेशक 'सामान्य-विशेष' (सार्वभौमिक-विशिष्ट): 'सहस्र शीर्ष' ओहि ब्रह्माण्डीय सार्वभौमिक रूप थिक जाहिमे प्रत्येक व्यक्ति (विशिष्ट) केर स्थान अछि। उपन्यास केर संरचना एहि दार्शनिक अन्तर्दृष्टि केर आख्यान करैत अछि।

विदेह समानान्तर इतिहास: सम्पादक-केर-रूपमे-उपन्यासकार एहि खण्डमे ई दृष्टिकोण प्रस्तुत करैत छथि जे विदेह केर साहित्यिक परियोजना मात्र पुरालेखीय नहि, वरन् ओ स्वयं एक सृजनात्मक प्रयोग थिक।

३७. विद्यानन्द झा

किशोर-कथा: किशोर लोकनिक लेल दूटा कथा।

रस-ध्वनि: वात्सल्य + वीर रस किशोर पाठक लेल। ध्वनि: 'किशोर लोकनि' सामूहिक सम्बोधन - एक समुदाय केर गठन। वक्रोक्ति: भाषा-सम्पादक केर कथा-लेखन - व्याकरण + आख्यान एक व्यक्तिमे।

विदेह ढाँचा: विद्यानन्द झा भाषा-सम्पादक + कथाकार दुनू - ई विदेह केर एकीकृत दृष्टिकोण थिक: साहित्यिक सृजन + भाषा संरक्षण एक संग।

उपसंहार: सदेह ४ क समग्र महत्व

सदेह ४ मैथिली कथा २००९-१० - ३७ अद्वितीय लेखकक ४० रचना। ई मात्र एक कथा-संग्रह नहि, ई मैथिली कथा केर एक सम्पूर्ण पारिस्थितिकी-प्रणाली थिक।

विधा-विविधता: मौलिक कथा (मुख्य भाग) + अनुदित कथा (कोंकणी→मैथिली, डॉ. शम्भु कुमार सिंह द्वारा) + लघुकथा (विजय-हरीश) + बाल-कथा (जगदीश प्रसाद मंडल) + कव्वाली (ललन प्रसाद ठाकुर) + नाटक/ एकांकी (सुरेन्द्र लाभ बेचन ठाकुर) + उपन्यास-अंश (गजेन्द्र ठाकुर) + किशोर-कथा (विद्यानन्द झा)।

आवाज-विविधता: दलित स्वर (कपिलेश्वर राउत, जगदीश प्रसाद मंडल, सुरेन्द्र लाभ, उमेश मंडल), ओबीसी स्वर (दुर्गानन्द मंडल), महिला लेखक (कुसुम ठाकुर, कामिनी कामायनी, सुनीता ठाकुर, कमला चौधरी), नेपाली मैथिली (परमेश्वर कापड़ि), शहरी पेशेवर (कुमार मनोज कश्यप), शैक्षणिक (डॉ. कैलाश कुमार मिश्र), प्रयोगात्मक (गजेन्द्र ठाकुर)।

चारि ढाँचा केर संश्लेषण: भारतीय रस सिद्धान्त एहि कथा-संग्रहमे सबसँ प्रत्यक्ष रूपसँ सक्रिय अछि - करुण (सामाजिक यथार्थवादी कहानी), वीर (प्रतिरोधी कहानी), हास्य (व्यंग्य), रौद्र (विरोध) सब उपस्थित। पाश्चात्य सिद्धान्त सभ कथा केर राजनैतिक अर्थ-व्यवस्था उजागर करैत अछि। नव्य-न्याय तार्किक संरचना सभक परीक्षण करैत अछि। विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा - दलित, महिला, नेपाल, लोक साहित्य सब मान्य-परम्परागत स्थान पबैत अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@zohomail.in पर पठाउ।

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह: सदेह: ४ — मैथिली कथा २००९-१०

अध्याय 23 · विदेह: सदेह: ६ — मैथिली लघुकथा (विदेह अंक ५१-१००)

सारांश समग्र साहित्यिक समीक्षा: सभटा साहित्यकार भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य । आइएसएसएन: 2229-547X १. गजेन्द्र

ठाकुर रचना: (क) गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुकथाक समीक्षाशास्त्र (ख) दिल्ली समीक्षाशास्त्र: ठाकुरक सैद्धान्तिक

निबन्ध मैथिली लघुकथा केर विशिष्ट समीक्षात्मक ढाँचा स्थापित करैत अछि। प्रवासी मैथिली लेखक सभक चुनौती लेल एक अलग समीक्षात्मक

ढाँचा चाही - ई केन्द्रीय तर्क।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · समीक्षाशास्त्र · वक्रोक्ति · औचित्य · कथा · लघुकथा

समग्र साहित्यिक समीक्षा: सभटा साहित्यकार

भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य । पाश्चात्य आलोचना । गंगेशक नव्य-न्याय । विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। आइएसबीएन: 978-93-80538-64-8 । आइएसएसएन: 2229-547X

१. गजेन्द्र ठाकुर

रचना: (क) गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुकथाक समीक्षाशास्त्र (ख) दिल्ली

समीक्षाशास्त्र: ठाकुरक सैद्धान्तिक निबन्ध मैथिली लघुकथा केर विशिष्ट समीक्षात्मक ढाँचा स्थापित करैत अछि। प्रवासी मैथिली लेखक सभक चुनौती लेल एक अलग समीक्षात्मक ढाँचा चाही - ई केन्द्रीय तर्क। 'दिल्ली' कथा: करुण + व्यंग्य। ध्वनि: 'दिल्ली' = सत्ता, विस्थापन, आकांक्षा - मैथिली प्रवासी केर मानसिक परिदृश्य। बूर्ध्: महानगरीय क्षेत्र बनाम मिथिला परिधि। नव्य-न्याय: 'देश-काल-अवच्छिन्न' - दिल्ली केर रूपमे रूपान्तरणकारी स्थान-समय।

२. मीना झा

रचना: ब्रेस्ट कैंसर। दरभंगा; एम.ए. प्रथम श्रेणी (१९८०)

रस-ध्वनि: करुण + वीर। 'ब्रेस्ट कैंसर' - वर्जित चिकित्सीय विषय केर नामकरण। ध्वनि: स्तन क्यान्सर स्त्रीत्व केर प्रतीक - मातृत्व पर आक्रमण। गजेन्द्र ठाकुर लिखै छथि: 'कोनो महिले एहेन कथा लिखि सकैत छलीह।' स्त्रीवादी शरीर-सिद्धान्त: सुसन सोन्टाग 'बिमारी केर रूपक केर रूपमे' - क्यान्सर केर रूपमे पितृसत्ता रूपक। विदेह केर सम्पादकीय स्वतन्त्रता: वर्जित विषय प्रकाशित।

३. रोशन जनकपुरी

रचना: अग्निपुष्पक गुच्छासब। जनकपुर, नेपाल

रस-ध्वनि: रौद्र + वीर। 'अग्निपुष्पक गुच्छासब' - 'अग्निपुष्प' (आगि-फूल) = सुन्दरतामे क्रान्तिकारी आगि। 'गुच्छा' = सामूहिक प्रतिरोध। वक्रोक्ति: फूल + आगि = सुन्दरता + रोष एक संग। फानन: वञ्चित लोक सभक क्रान्तिकारी आगि। नेपाल मधेश आन्दोलन सन्दर्भ।

४. महाप्रकाश

रचना: संभावना। जन्म: १९४६, बनगाँव, सहरसा । वरिष्ठ कवि-कथाकार।

रस-ध्वनि: शान्त + वीर। 'संभावना' = सम्भावना जे अखनो अस्तित्वमे नहि अछि। ग्राम्शी केर 'इच्छा केर आशावाद': सेहो जखन पता छै कि प्रणाली कठिन अछि, तखनो सम्भावना देखनाइ। वञ्चित सभक जीवनमे 'संभावना' खोजनाइ राजनैतिक कार्य थिक।

५. वसंत भगवंत सावंत

रचना: (कोंकणी कथा) मृत्युकेँ टारब। कोंकणी → मैथिली अनुवाद

रस-ध्वनि + अनुवाद-सिद्धान्त: करुण + वीर। 'टारब' (टारब) ध्वनि: मृत्यु विरुद्ध मानव सक्रियता। बेन्यामिन केर 'परवर्ती जीवन': कोंकणी तटीय कहानी → मैथिली स्थलरुद्ध पाठक - ई भाषिक सीमा-उल्लङ्घन। विदेह: दू हाशियाकृत भाषा (कोंकणी + मैथिली) दुनू संविधानमे सूचीबद्ध मुदा हिन्दी-प्रभुत्व मुख्यधारामे हाशियाकृत - विदेह दुनू हाशिया केँ जोड़ैत अछि।

६. बीनू भाइ

रचना: उत्ताप। मैथिली प्रवासी

रस-ध्वनि: शान्त + अद्भुत। 'उत्ताप'। गजेन्द्र ठाकुर: 'बीनू भाइ विश्लेषण केर मास्टर।' नव्य-न्याय: 'परिणामवाद' - पदार्थ रूपान्तरित होइत अछि, गायब नहि।

७. शम्भु कुमार सिंह

रचना: भाए-बहिनक यथा कथा। जन्म: १८.०४.१९६५, लहुआर, सहरसा।

रस-ध्वनि: वात्सल्य + करुण। 'यथा' (वास्तविक/साँच) = सत्य-दावा शैली-सूचक केर रूपमे। अम्बेडकर: पितृसत्तात्मक परिवार केर भीतर बहिन केर स्थायी रूपसँ अधीनस्थ स्थिति। 'यथा कथा' - सत्य-दावा राजनैतिक कथन केर रूपमे।

८. दुर्गानन्द मंडल

रचना: लाल भौजी। दलित कथाकार

रस-ध्वनि: शृंगार + करुण। 'लाल' + 'भौजी'= रङ्ग + रक्त-सम्बन्ध। अम्बेडकर + स्त्रीवादी: दलित महिला दोहरा रूपसँ बाध्य - जाति + बहू-स्थिति।

९. वीरेन्द्र कुमार यादव

रचना: हमर समाज । ओबीसी स्वर

रस-ध्वनि: रौद्र + वीर। 'हमर' = स्वामित्वात्मक दावा - समाज हमर सेहो अछि। ग्राम्शी + अम्बेडकर: ओबीसी/दलित बहिष्कार 'समाज' केर परिभाषासँ। 'हमर समाज' मे 'हम' नहि - ई विरोधाभास कथाक केन्द्र थिक।

१०. उमेश मंडल

रचना: अमैआ भार (पृ. ५२-५५) । जन्म: ३१.१२.१९८०, बेरमा, मधुबनी ।

रस-ध्वनि: शान्त + करुण। 'अमैआ टाका पठा देलनि = मैथिली मुहावरा: आम्र वृक्ष = उत्पादक व्यक्ति । वक्रोक्ति: फर-लदल वृक्ष झुकि जाइत अछि - उत्पादकता केर रूपमे असुरक्षा। ठाकुर केर वृक्ष-बिम्बकल्पना: सामाजिक शोषण लेल पारिस्थितिकीय रूपक।

११. नन्द विलास राय

रचना: बाबाधाम / ऐना। जन्म: 02.01.1957, भपटियाही, मधुबनी

रस-ध्वनि: 'बाबाधाम' - भक्ति + शान्त। बैद्यनाथ धाम तीर्थयात्रा। 'ऐना' (दर्पण) - शान्त + अद्भुत। लाकान केर दर्पण-चरण: आत्म-पहिचान + आत्म-विस्थापन। दुनू कथामे अन्ततः आत्म-सामना।

१२. सुजीत कुमार झा

रचना: एकटा अधिकार

रस-ध्वनि: वीर + करुण। 'एकटा' (मात्र एक) अधिकार माँगनाइ - अल्पतम माँग = विध्वंसकारी टिप्पणी। अम्बेडकर: 'मूलभूत अधिकार' संरचनात्मक रूपसँ अस्वीकृत - 'एकटा अधिकार' केर माँग एहि अस्वीकार केर अभियोग थिक।

१३. सन्तोष कुमार मिश्र

रचना: मुसीबत

रस-ध्वनि: करुण + हास्य। 'मुसीबत' (उर्दू: मुसीबत) = मैथिली-उर्दू साङ्केतिक-परिवर्तन। बाख्तिन केर 'दैनिक जीवन': सामान्य मुसीबत केर रूपमे योग्य साहित्यिक विषय।

१४. कामिनी कामायनी

रचना: टुटल तारा। नारी कथाकार

रस-ध्वनि: करुण + शान्त। 'टुटल तारा'= आकांक्षा सभ बुझल। स्पिवाक: महिलाक 'तारा' (आकांक्षा) पितृसत्ता द्वारा संरचनात्मक रूपसँ 'टुटल' ।

१५. राज नाथ मिश्र

रचना: मस्ती

रस-ध्वनि: हास्य + शृंगार। 'मस्ती' = स्वतन्त्रता/उन्मुक्तता। बाख्तिन उत्सवी-लोकधर्मी: 'मस्ती' केर क्षण - सामाजिक पदानुक्रम निलम्बित।

१६. असगर वजाहत

रचना: (हिन्दी कथा) हम हिन्दू छी। प्रसिद्ध हिन्दी कथाकार

रस-ध्वनि + अनुवाद-सिद्धान्त: रौद्र + करुण + हास्य। 'हम हिन्दू छी' - साम्प्रदायिक दंगा सभमे हिन्दू अस्मिता केर हताश घोषणा = जीवित रहबाक प्रवृत्ति। फानन: निर्मित साम्प्रदायिक विभाजन केर उजागर। विदेह: हिन्दी + मैथिली सह-अस्तित्व - धर्मनिरपेक्ष, बहुलवादी सम्पादकीय दृष्टि।

१७. अतुलेश्वर

रचना: बसात

रस-ध्वनि: शान्त + करुण। 'बसात' = निवास/मूल्य। 'बसात' केर द्वैत: स्थान + मूल्य। तोहर बसात की अछि? = मैथिली-हिन्दी मुहावरा। निवास केर स्थान मानवीय मूल्य केर निर्धारक केर रूपमे।

१८. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

रचना: देववाणी

रस-ध्वनि: भक्ति + शान्त + व्यंग्य। 'देववाणी' = दैवी वाणी - संस्कृत केर 'देवभाषा' केर दावा केर प्रश्न। बूर्द्यू: 'दैवी' भाषिक स्थिति = समाजशास्त्रीय रूपसँ निर्मित प्राधिकार।

१९. कुमार मनोज कश्यप

रचना: नोरक दू ठोप। जन्म: १९६९, सलेमपुर, मधुबनी

रस-ध्वनि: करुण रस। 'नोरक दू ठोप' - पीड़ा केर यथार्थता। ध्वनि: दू ठोप बाढ़ि सँ बेसी शक्तिशाली। चेखव केर अल्पोक्ति: नियन्त्रित भावना > अभिव्यक्त भावना।

२०. सतीश चन्द्र झा

रचना: हमहूँ कह बुझिलैए

रस-ध्वनि: शान्त + हास्य। 'हमहूँ' (हम सेहो) = समावेशी विलम्बित बोध। पहिचान केर विलम्बित 'आहा' क्षण।

२१. डॉ. कैलाश कुमार मिश्र

रचना: प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री / चन्दा। जन्म: ८.०२.१९६७

रस-ध्वनि: 'कृति सुन्दरि'+ 'चूहर मिस्त्री' = वर्ग-सौन्दर्य विरोधाभास। बूर्द्यू केर 'विभेद': उच्च-संस्कृति सुन्दरता बनाम श्रमिक-वर्ग व्यापार। 'चन्दा' - शृंगार + करुण। चन्दा-नामक महिला केर चन्द्रमा केर चक्र- उज्ज्वल/अन्धकार।

२२. सत्यनारायण झा

रचना: रिटायरमेंट / पलट

रस-ध्वनि: 'रिटायरमेंट' (सेवानिवृत्ति) - शान्त + करुण। सेवानिवृत्ति पश्चात् रिक्तता। 'पलट' (फिर्ती/उलटफेर) - शान्त + अद्भुत। हाइडेगर: सेवानिवृत्ति = परिमितता केर सामना। 'पलट' = हाइडेगरियन 'मोड़' प्रामाणिक सत्ता।

२३. बचेश्वर झा

रचना: संगति

रस-ध्वनि: शृंगार + शान्त। सम्बन्ध रूपक। नव्य-न्याय: 'सम्बन्ध' - दू स्वर सञ्जन सामञ्जस्य पैदा करैत अछि - पूर्ण सम्बन्ध प्रतिमान।

२४. कपिलेश्वर राउत

रचना: थरथरी / तरकारी खेती / सलाह। **रस-ध्वनि:** 'थरथरी'- रौद्र + करुण। दलित शरीर केर भय प्रतिक्रिया। अम्बेडकर: जाति समाज शाब्दिक शारीरिक भय पैदा करैत अछि। 'तरकारी खेती' - आर्थिक आत्मनिर्भरता - अम्बेडकरी विकल्प। 'सलाह' - हास्य - सामाजिक नियन्त्रण केर रूपमे।

२५. मनोज कुमार मंडल

रचना: घासवाली

रस-ध्वनि: करुण + वीर। 'घासवाली' (घास काटैत महिला) = आधारभूत अदृश्य श्रम। मार्क्स + स्त्रीवादी: प्रजननात्मक श्रम अगणित। 'घास' = अत्यन्त

साधारण पौधा, मुदा आवश्यक।

२६. अनमोल झा

रचना: अबकी बेर फतंग / गामक बताह।

जन्म: १९७०, नरुआर, मधुबनी

रस-ध्वनि: 'अबकी बेर फतंग' (पतङ्ग) - वीर + हास्य। 'अबकी बेर' = पुनरावर्ती प्रयास। 'गामक बताह' (गाम केर बताह/पागल) - हास्य + करुण। फूको: 'पागलपन' केर रूपमे प्रतिरोध - पागल सत्य देखैत अछि जे समाज देखैत नहि अछि।

२७. शिव कुमार झा 'टिल्लू'

रचना: लेबर पेन / कब्जियत दूर भगाउ।

जन्म: ११.१२.१९७३

रस-ध्वनि: 'लेबर पेन' (प्रसव पीड़ा/श्रम पीड़ा) - करुण + वीर। श्रम (प्रसव) + श्रम (मजदूर केर काम) = दोहरा अर्थ। स्त्रीवादी: महिलाक श्रम (प्रसव) अदृश्य/अवमूल्यन। 'कब्जियत दूर भगाउ' - व्यंग्य।

२८. प्रभात राय भट्ट

रचना: रोटी रोजीक खोजी । नेपाल, महोत्तरी जिला

रस-ध्वनि: करुण + वीर। नेपाल मधेश केर भूमिहीन मजदूर भोला केर कहानी। 'खोजी' (खोज) - जीविका लेल खोज। मार्क्स + नेपाल मधेश सन्दर्भ: जीविका सङ्घर्ष। गजेन्द्र ठाकुर: 'प्रभात राय भट्ट नव परिवेशमे बेसी दर्दसँ कहैत छथि।'

२९. शम्भुनाथ झा 'वत्स'

रचना: अतीतक घटना / सपना / कोसीक प्रलयंकारी बाढ़िमे भसल एकटा लड़कीक सत्यकथा

रस-ध्वनि: 'कोसीक प्रलयंकारी बाढ़िमे...' - ई सबसँ नाम शीर्षक। करुण + रौद्र। 'सत्यकथा' = साक्ष्य। कोसी बाढ़ि २००८ केर विशिष्ट त्रासदी केर संरक्षण। बेन्यामिन: अतीत केर उद्धार।

३०. किशन कारीगर

रचना: दाम-दिगर

रस-ध्वनि: हास्य + व्यंग्य। 'दाम' + 'दिगर'= तुलना-खरीदारी केर रूपमे नैतिक रूपक। सभ चीज केर एक दाम + अन्यत्र अन्य दाम होइत अछि।

३१. पंकज कुमार प्रियदर्शी

रचना: जीवनक अनमोल क्षण। जन्म: ०३.०२.१९८५

रस-ध्वनि: शान्त + शृंगार। 'अनमोल' (अनमोल) = खरीदल नहि जा सकैत। वर्ड्सवर्थ केर 'समय केर धब्बा' - क्षण जे एक जीवन कें परिभाषित करैत अछि।

३२. नवीन ठाकुर

रचना: मिथिला उवाच। जन्म: १५.०५.१९८४, लोहना, मधुबनी

रस-ध्वनि: वीर + शान्त। 'उवाच' (संस्कृत: कहलक) - मिथिला व्यक्तित्वरूप + सक्रियता प्रदान। विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचाक श्रद्धा: मिथिला अपन लेल बजैत अछि, पटना/दिल्ली केर माध्यमसँ नहि छानल।

३३. ओम प्रकाश झा

रचना: सफल अधिकारी / डीहक जमीन / बुढ़िया मैयाँ / लोकतंत्रक माने

रस-ध्वनि: हास्य+व्यंग्य / करुण+वीर / वात्सल्य+करुण / व्यंग्य+रौद्र। ग्राम्शी केर लोकतन्त्र समीक्षा: 'लोकतंत्रक माने' = वास्तवमे राज्य पर के नियन्त्रण

करैत अछि? चारि कथा: संस्थागत + भूमि + पारिवारिक + राजनैतिक स्पेक्ट्रम।

३४. अमित मिश्र

रचना: प्रेम नै जहर छै

रस-ध्वनि: रौद्र + करुण। 'प्रेम नै जहर' जे प्रेम जेना देखाइत अछि से विखाह अछि। सुसन ग्रिफिन: प्रेम-केर-रूपमे-नियन्त्रण केर स्त्रीवादी विश्लेषण। घरेलू हिंसा उप-पाठ।

३५. राजदेव मंडल

रचना: इलेक्शनक भूत

रस-ध्वनि: हास्य + रौद्र। 'इलेक्शनक भूत' = चुनाव केर रूपमे भूत-प्रेत। चुनाव केर अनुष्ठानिक, भूत-जकाँ गुण। ग्राम्शी: चुनाव केर रूपमे वर्चस्ववादी अनुष्ठान।

३६. गजेन्द्र ठाकुर

रचना: दिल्ली। विदेह सम्पादक

रस-ध्वनि: करुण + व्यंग्य। 'दिल्ली' = सत्ता केन्द्र केर रूपमे विस्थापित करैत स्थान। बूर्द्यू: दिल्ली केर रूपमे भारत केर प्रतीकात्मक पूँजी आ एहि केर भीतर मैथिलीकेर हाशियाकृत स्थिति। सम्पादक-केर-रूपमे-लेखक: अपन परियोजनामे सृजनात्मक सहभागिता।

३७. जगदीश प्रसाद मंडल

रचना: सूदि भरना / पड़ाइन / न्याय चाही / कर्ज। जन्म: ५ जुलाई १९४७ ।

परिचय: कथा संग्रह: 'गामक जिनगी', 'अग्नि सरोजनी'।

रस-ध्वनि चारि कथा: 'सूदि भरना' - करुण+रौद्र। सूदखोरी/ब्याज-व्यवस्था केर विध्वंसकारी समीक्षा। 'पड़ाइन' - करुण। पलायन। 'न्याय चाही' - रौद्र+वीर। कहियो प्राप्त नहि। 'कर्ज' (ऋण) - करुण। ऋण-बन्धन।

मार्क्स / अम्बेडकर दलित ग्रामीण मानचित्रण: मार्क्स केर आदिम संचय + अम्बेडकर: सूदखोरी = प्राथमिक दलित शोषण शैली। 'सूदि भरना' + 'कर्ज' = आर्थिक हिंसा केर दू टा चेहरा। 'न्याय चाही' - दलित न्याय केर माँग स्थायी रूपसँ विलम्बित। मंडल केर ४ कथा = समग्र दलित ग्रामीण सामाजिक मानचित्र: आर्थिक + सामाजिक + कानूनी + मनोवैज्ञानिक।

नव्य-न्याय: गंगेशक 'न्याय': एहिठाम न्याय = कानूनी/सामाजिक न्याय। तार्किक दावा: 'ई स्थिति अन्यायपूर्ण अछि' - ई एक ज्ञान-मीमांसीय दृढ़ोक्ति जे प्रमाण माँगैत अछि।

३८. आशीष अनचिन्हार

रचना: काटल कथा।

रस-ध्वनि: अद्भुत + रौद्र। 'काटल कथा' आत्म-कथा। कोनो सेन्सर्ड कहानी केर कहानी लिखनाइ। फूको: सेन्सरशिप = विमर्शमे सत्ता केर हस्तक्षेप। विदेह: सेन्सरशिप- मुक्त स्थान केर महत्व अभिव्यक्त।

३९. विनीत उत्पल

रचना: बेसिक इन्स्टिंक्ट। विदेह अनुवाद विभाग सम्पादक

रस-ध्वनि: श्रृंगार + अद्भुत। 'बेसिक इन्स्टिंक्ट' - अङ्ग्रेजी शीर्षक मैथिलीमे! हलिउड चलचित्र पुनर्सन्दर्भित। फ्रायड केर 'प्रवृत्ति': मूल प्रवृत्ति = फ्रायडियन 'इद्'। पाश्चात्य चलचित्र + मैथिली साहित्य = सांस्कृतिक संकरता।

४०. कुमार भास्कर

रचना: लछमिनीया । संकलनक अन्तिम रचना

रस-ध्वनि: वात्सल्य + करुण। 'लछमिनीया' देवी केर साधारण महिला नाम। ध्वनि: समृद्धि देवी (लक्ष्मी) आ ओकर नाम पर रखल गरीब महिलाक बीचक

अन्तर। लोक-स्त्रीवादी: साधारण महिलाकेँ देवी केर नाम देबाइ = आकांक्षा बनाम वास्तविकता केर अन्तर।

उपसंहार: सदेह ६ क समग्र महत्व

सदेह ६ मैथिली लघुकथा - ४० लेखक (३९ + गजेन्द्र ठाकुर) केर योगदान सँ मैथिली लघुकथाक एक सम्पूर्ण परिदृश्य। विशेष: मीना झाक वर्जित चिकित्सीय विषय; असगर वजाहत (हिन्दी) साम्प्रदायिक हिंसा; वसंत भगवंत सावंत (कोंकणी) अन्तर-भाषिक; विनीत उत्पलक अङ्ग्रेजी शीर्षक; जगदीश प्रसाद मंडलक ४ समग्र दलित ग्रामीण कथा।

चारि ढाँचा केर संश्लेषण: रस सिद्धान्त लघुकथामे विशिष्ट रस। पाश्चात्य सिद्धान्त (फ्रायड, फूको, ग्राम्शी, फानन, बूर्द्यू, स्पिवाक, बाख्तिन, मार्क्स) एक-एक कथाक सामाजिक प्रक्रिया उजागर करैत अछि। नव्य-न्याय कथाक ज्ञान-मीमांसीय दावा सभक परीक्षण करैत अछि। विदेह समानान्तर इतिहास ढाँचा: दलित, महिला, नेपाल, कोंकणी, हिन्दी, पागल, प्रवासी सब एक लोकतान्त्रिक मान्य-परम्परागत स्थान।

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह: सदेह: ६ — मैथिली लघुकथा (विदेह अंक ५१-१००)

अध्याय 24 · विदेह सदेह १० : बहुआयामी समीक्षा

सारांश विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क, गंगेश नव्य न्याय, तथा भारतीय, पाश्चात्य, चीनी आ यहूदी (इस्राइली) साहित्यिक समीक्षा सिद्धान्तक परिप्रेक्ष्यमे ग्रन्थ: विदेह मैथिली प्रबन्धनिबन्धसमालोचना, सदेह १० सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर प्रकाशक: श्रुति प्रकाशन, नई दिल्ली वर्ष: २०१२ खण्ड १: विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्कक आलोकमे १.१ समानान्तर इतिहासक अवधारणा विदेह आन्दोलनक केन्द्रीय प्रस्थापना ई अछि जे मैथिलीक साहित्यिक इतिहास कहियो एकरेखीय नइ रहल। एकदिस संस्कृतक छायामे विद्यापतिक काव्यपरम्परा चलैत रहल, दोसरदिस लोकगीत, लोककथा आ दलितस्त्री अनुभवक एकटा समानान्तर धारा बहैत रहल जे कहियो मुख्य अकादमिक दृष्टिमे नइ आएल। गजेन्द्र ठाकुरक प्रारम्भिक प्रबन्ध "प्रबन्धनिबन्धसमालोचना, समीक्षाशास्त्र आ समालोचनाक समालोचना" एहि समानान्तर इतिहासक सैद्धान्तिक आधार प्रस्तुत करैत अछि।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · समीक्षाशास्त्र · नव्य-न्याय · रस-सिद्धान्त · कथा · इतिहास

विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क, गंगेश नव्य न्याय, तथा भारतीय, पाश्चात्य, चीनी आ यहूदी (इस्राइली) साहित्यिक समीक्षा सिद्धान्तक परिप्रेक्ष्यमे

ग्रन्थ: विदेह मैथिली प्रबन्धनिबन्धसमालोचना, सदेह १०

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर

प्रकाशक: श्रुति प्रकाशन, नई दिल्ली

वर्ष: २०१२

खण्ड १: विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्कक आलोकमे

१.१ समानान्तर इतिहासक अवधारणा

विदेह आन्दोलनक केन्द्रीय प्रस्थापना ई अछि जे मैथिलीक साहित्यिक इतिहास कहियो एकरेखीय नइ रहल। एकदिस संस्कृतक छायामे विद्यापतिक काव्यपरम्परा चलैत रहल, दोसरदिस लोकगीत, लोककथा आ दलितस्त्री अनुभवक एकटा समानान्तर धारा बहैत रहल जे कहियो मुख्य अकादमिक दृष्टिमे नइ आएल।

गजेन्द्र ठाकुरक प्रारम्भिक प्रबन्ध "प्रबन्धनिबन्धसमालोचना, समीक्षाशास्त्र आ समालोचनाक समालोचना" एहि समानान्तर इतिहासक सैद्धान्तिक आधार प्रस्तुत करैत अछि। ओ प्लेटो, अरिस्टोटल, फ्रायड, फुकोल्ट, देरीदा, बाख्तिन, लाकान सभक विचारकें एकत्र करैत मैथिलीक लेल एकटा नव समीक्षाशास्त्रक रूपरेखा खींचैत छथि। ई स्वयंमे एकटा समानान्तर इतिहासक आचरण अछि — पाश्चात्य, भारतीय आ मैथिली परम्पराकें एकसाथ राखब।

समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ महत्वपूर्ण पाँचटा तथ्य:

जगदीश प्रसाद मण्डलक उपस्थिति: ई संकलनमे सबसँ बेशी चर्चा जगदीश प्रसाद मण्डलक "मौलाइल गाँवक फूल", "गाँवक जिनगी" आ कविताक अछि। मण्डलजी किसानदलित समुदायसँ आएल छथि। हुनकर उपस्थिति मुख्यधाराक ब्राह्मणकायस्थ केन्द्रित मैथिली साहित्यइतिहासक एकटा समानान्तर आख्यान उपस्थित करैत अछि।

सगर रात दीप जरय गोष्ठी: उमेश मण्डलक रिपोर्ताजमे जे गोष्ठीक वर्णन अछि — निर्मली, जनकपुर, सुपौल, पटना — ओ सभ मैथिलीक साहित्यिक गतिविधिक भूगोलकें विस्तारित करैत अछि। दिल्ली, पटना केन्द्रित इतिहाससँ बाहर एकटा समानान्तर साहित्यिक नक्शा बनैत अछि।

नेपाली मैथिली: चन्द्रेशक रिपोर्ताज नेपालमे झिझिया महोत्सवक वर्णन करैत अछि — भारतनेपाल दुनू तरफक मैथिली एकटा समानान्तर सांस्कृतिक इतिहास निर्माण करैत अछि जे राजनीतिक सीमासँ ऊपर अछि।

मिथिला चित्रकलाक इतिहास: डॉ. कैलाश कुमार मिश्र मिथिला पेंटिंगक भूत, वर्तमान आ भविष्यपर लिखैत छथि। ई एकटा स्त्रीकेन्द्रित कलापरम्परा अछि जे मुख्यधाराक कलाइतिहाससँ बाहर चलैत आएल अछि — एकटा क्लासिक समानान्तर इतिहास।

विनीत उत्पलक रिपोर्ताज: जी.बी. रोडक कोठाक सत — एकटा ऐतिहासिक रूपसँ मौन रहल विषयकें साहित्यमे स्थान देब समानान्तर इतिहासक प्रत्यक्ष आचरण अछि।

१.२ समानान्तर इतिहासक आलोचनात्मक मूल्यांकन

समानान्तर इतिहासक फ्रेमवर्कसँ एहि संकलनक एकटा सीमा सेहो देखाइत अछि। अधिकांश योगदानकर्ता पुरुष छथि। मीना झाक "लन्दनमे मैथिल समाज" आ पूनम मण्डलक लेख छोड़ि स्त्रीकण्ठस्वर कम अछि। शेफालिका वर्माक स्मृतिमे एकटा कविताअंश अवश्य अछि, मुदा संकलनक समानान्तर इतिहासक दावाकें पूर्णतः सिद्ध करबा लेल स्त्रीस्वरक अधिक प्रतिनिधित्व अपेक्षित छल।

४.१ मार्क्सवादीवामपन्थी समीक्षा

वर्गचेतना आ जगदीश प्रसाद मण्डल:

एन्टनी ग्राम्शीक सांस्कृतिक आधिपत्यक अवधारणा (hegemony) सँ जगदीश प्रसाद मण्डलक रचनाकें पढ़ब अत्यन्त प्रासंगिक अछि। ग्राम्शीक अनुसार सांस्कृतिक आधिपत्य ओहि प्रक्रियामे काज करैत अछि जाहिमे उच्चवर्ग अपन मूल्यकें "सामान्य ज्ञान" (common sense) बना दैत अछि। मण्डलजीक किया आ उपन्यास एहि आधिपत्यकें प्रत्यक्ष चुनौती दैत अछि — किसान, दलित, स्त्री — ई सभक अनुभवकें केन्द्रमे रावल दैत अछि।

उमेश मण्डलक रिपोर्ताजमे गोष्ठीक चर्चामे जे प्रसंग अछि — "जगदीश मण्डल एकटा रेखा खींचि देलनि" — ई वास्तवमे मार्क्सवादी अर्थमे "सांस्कृतिक प्रतिरोध"क रेखा अछि।

राजेन्द्र कुमार प्रधानक "२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना":

ई आलेख मुख्यतः मार्क्सवादी राजनीतिक समीक्षाक ढाँचामे काज करैत अछि। उपन्यास आ राजनीतिक चेतनाक बीच सम्बन्ध स्थापित करबाक प्रयास प्रशंसनीय अछि।

अमरकान्त अमरक "संघीयतामे मैथिली भाषा":

एहि प्रबन्धमे भाषाअधिकार आ राज्यसंरचनाक प्रश्न उठाओल गेल अछि। मार्क्सवादी भाषाविज्ञानक दृष्टिसँ (जेना मिखाइल बाख्तिन जे भाषाकेँ सामाजिक क्रियाक रूपमे देखैत छलाह) भाषाक राजनीतिक भविष्य निर्धारण एकटा वर्गसंघर्षक मुद्दा अछि।

४.२ नारीवादी समीक्षा

शेफालिका वर्माक "आधुनिक मैथिली साहित्यक प्रभाव क्षेत्रमे नारी तत्त्व":

ओ मैथिलेतर भाषी तमिल कवयित्री सम्मेलनक सन्दर्भ सेहो जोड़ैत छथि। नारीवादी समीक्षाक एलेन शोआल्टरक "gynocriticism" (स्त्रीलेखनक स्वायत्त अध्ययन)क परिप्रेक्ष्यमे ई महत्वपूर्ण कदम अछि। मुदा एहि संकलनमे स्त्रीलेखनकेँ देखलापर लगैत अछि जे "नारी तत्त्व" अधिकांशतः पुरुषलेखकक निगाहसँ देखल गेल अछि — सिमोन डी. बोउवारक अर्थमे "दोसर" (Other) बनाओल गेल अछि।

मिथिला चित्रकला आ नारीवाद:

डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक आलेख "मिथिला चित्रकला: भूत, वर्तमान आ भविष्य" नारीवादी कलाइतिहासक दृष्टिसँ अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि। मिथिला चित्रकला मूलतः स्त्रीनिर्मित अछि — भित्तिचित्र, कागजचित्र सभ। एलोका लॉयड जेँकाँ नारीवादी कलाइतिहासकार (Feminist Art History) क परिप्रेक्ष्यमे एहि कलाकेँ "minor art" नइ, बल्कि एकटा स्वायत्त, शक्तिशाली सौन्दर्यशास्त्रक रूपमे देखल जएबाक चाही।

विनीत उत्पलक "कोठाक सत":

सेक्सुअल एक्सप्लोइटेशन आ नारीवादी समीक्षाक कसौटीपर ई रिपोर्ताज महत्वपूर्ण अछि। मुदा ई ध्यान देबाक अछि जे एकर लेखक पुरुष छथि — ई "पुरुषक गजरमे स्त्रीअनुभव"क वही समस्या अछि जाहिपर नारीवादी समीक्षक सावधान करैत छथि।

४.३ उत्तरआधुनिकता आ उत्तरसंरचनावाद

गजेन्द्र ठाकुरक प्रारम्भिक प्रबन्ध स्वयं उत्तरआधुनिक समीक्षाक एकटा सर्वेक्षण अछि। ओ देरीदाक विखण्डन, फुकोल्टक ज्ञानसत्ता, लाकानक अचेतनभाषा सम्बन्ध — सभक चर्चा करैत छथि।

विखण्डनवादी पाठ: परमेश्वर कापड़ि:

"मानकताक बात विखपाद अछि" — एहि शीर्षकमे "विखपाद" शब्द देरीदाक déconstruction क देशज अनुवाद जेँकाँ लगैत अछि। मैथिलीमे मानकीकरणक जे आधिपत्यशाली विमर्श अछि — उच्चवर्णीय, पुरुषकेन्द्रित — ओकर विखण्डन एहि लेखमे अभिप्रेत अछि।

आशीष अनचिन्हारक "गजलक साक्ष्य":

गजल एकटा विदेशी (फारसीउर्दू) काव्यरूप अछि जे मैथिलीमे आएल। बाख्तिनक dialogism क परिप्रेक्ष्यमे — दू भाषाक, दू परम्पराक संवाद। एहि दृष्टिसँ मैथिली गजलपरम्परा एकटा उत्तरआधुनिक hybrid form अछि।

४.४ उत्तरउपनिवेशवाद

एडवर्ड सईदक Orientalism आ मैथिली:

मैथिली भाषा आ मिथिला क्षेत्र केन्द्रीय सत्ताक दृष्टिसँ सदैव "परिधि" (periphery) रहल अछि। सईदक Orientalism जेँकाँ मैथिलीक एकटा "periphery discourse" विश्लेषण सम्भव अछि। डॉ. अरुण कुमार सिंहक "मैथिलेत्तर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबासीखेबामे कम्प्यूटर आओर भाषा विज्ञानक भूमिका" — ई एकटा उत्तरउपनिवेशवादी प्रतिरोधक रूप अछि: प्रौद्योगिकीकेँ अपन भाषाक सेवामे लगेनाइ।

होमी भाभाक "Third Space" आ नेपाली मैथिली:

चन्द्रेशक झिझिया महोत्सववर्णन आ रामभरोस कापड़ि भ्रमरक "अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन" — ई दुनू भारतनेपालक सीमापर एकटा "Third Space" निर्मित करैत अछि जे होमी भाभाक सांस्कृतिक अवधारणासँ मेल खाइत अछि।

४.५ न्यू हिस्टोरिसिज्म (नवइतिहासवाद)

स्टीफेन ग्रीनब्लैटक नवइतिहासवादक अनुसार साहित्य आ गैरसाहित्यिक पाठक बीच अन्तर अन्ततः कृत्रिम अछि।

उमेश मण्डलक रिपोर्ताज एहि दृष्टिसँ विशेष महत्वपूर्ण अछि। कियागोष्ठीक विवरण — केलनि, के नइ केलनि, कोन विवाद भेल, के चुप रहल — ई सभटा

साहित्यिक पाठ बनि गेल अछि। इतिहास आ साहित्य घुलिमिलि गेल।

६.२ Midrashic पठनपरम्परा आ मैथिली समीक्षा

Midrashमे एकटा पाठकें कई स्तरमे पढ़ल जाइत अछि: Peshat (literal), Remez (allegorical), Derash (homiletic), Sod (mystical)।

जगदीश प्रसाद मण्डलक "मौलाइल गाँवक फूल" क Midrashic पठन:

Peshat: रामाकान्त बाबूक भूमिवितरणक कथा

Remez: एकटा सामाजिक रूपकथा — मौलाएल समाजमे पुनः फूलक खिलनाइ

Derash: भूमिसुधारक नैतिक उपदेश

Sod: मनुष्यक हृदयपरिवर्तनक आध्यात्मिक रहस्य

एहि चारू स्तरपर एहि उपन्यास फलदायी अछि — एहि दृष्टिसँ ई एकटा बहुस्तरीय उत्कृष्ट रचना अछि।

६.३ हैरल्ड ब्लूमक "Anxiety of Influence" आ मैथिली साहित्य

हैरल्ड ब्लूमक अनुसार प्रत्येक नव लेखक अपन पूर्ववर्ती महान लेखकक प्रभावसँ मुक्त होबाक प्रयास करैत अछि — ई "influence anxiety" सृजनशीलताक शक्ति बनैत अछि।

मैथिलीमे एहि "influence anxiety"क दुईटा रूप अछि:

संस्कृत/विद्यापतिक छाया: आधुनिक मैथिली कविकें विद्यापतिक महान काव्यपरम्परासँ मुक्त होबाक प्रयास करए पड़ैत अछि। गजेन्द्र ठाकुरक प्रबन्ध एहि परम्पराकें acknowledge करैत छथि मुदा साथहि नव समीक्षाशास्त्रक दावा करैत छथि — ब्लूमक "clinamen" (swerve from the precursor)।

हिन्दी साहित्यक दबाब: मैथिलीक लेखककें हिन्दीक विशाल साहित्यिक बाजारसँ competition अछि। डॉ. शाशिधर कुमार, नवेन्दु कुमार झा आदिक आलेखमे ई tension परोक्ष रूपसँ दिखाइत अछि।

Tesserae (ब्लूमक दोसर पद): जगदीश प्रसाद मण्डलक विषयमे जे भावना व्यक्त भेल — "ओ एकटा नि दुनियाँमे प्रवेश देलनि" — ई ब्लूमक अर्थमे एकटा नव "tesserae" (नव सन्दर्भमे पुरान पाठक पूर्णता) अछि।

६.४ Diaspora साहित्य आ मैथिली

इस्राइली साहित्यमे diaspora एकटा केन्द्रीय विषय अछि। मैथिलीमे सेहो diaspora साहित्यक एकटा धारा अछि — मीना झाक "लन्दनमे मैथिल समाज", नवेन्दु कुमार झाक रेललाइन विषयक आलेख — ई सभ प्रवासी मैथिलक अनुभवक दस्तावेजीकरण अछि।

इस्राइली लेखिका नेटिवा बेनयेहुदाक परम्परामे मातृभाषाक संरक्षण आ पुनर्जीवनकें राष्ट्रीय आन्दोलनसँ जोड़बाक जे परम्परा अछि — विदेह आन्दोलन ओहिसँ समानान्तर अछि।

खण्ड ८: संकलनक समग्र मूल्यांकन

८.१ वैचारिक बहुलता

एहि संकलनक सबसँ बड़ विशेषता अछि एकर वैचारिक बहुलता। रामभरोस कापड़ि भ्रमर जे परम्परावादी छथि, जगदीश प्रसाद मण्डल जे प्रगतिशील छथि, विनीत उत्पल जे आधुनिकतावादी छथि, डॉ. कैलाश कुमार मिश्र जे सांस्कृतिक संरक्षक छथि — सभ एकठाम छथि। ई बाख्तिनक "polyphony" (बहुस्वरीयता) क उत्कृष्ट उदाहरण अछि।

८.२ भौगोलिक विस्तार

भारत (बिहार, झारखण्ड, दिल्ली), नेपाल, ब्रिटेन — तीनू देशक मैथिल कण्ठस्वर एकठाम आएल अछि। एहि दृष्टिसँ ई एकटा transnational Maithili anthology अछि।

८.३ विधागत विविधता

प्रबन्ध, समालोचना, रिपोर्ताज, संस्मरण, पत्र, यात्रावृत्तान्त — सभ विधा एकत्र। ई "genre pluralism" एकटा उत्तरआधुनिक संकलनपद्धति अछि।

८.४ सीमाएँ

स्त्रीस्वरक न्यूनता: संकलनमे महिला लेखकक संख्या अत्यल्प अछि। एहि दृष्टिसँ "समानान्तर इतिहास"क दावा अधूरा अछि।

सैद्धान्तिक गहराईक अभाव: अधिकांश समालोचनाएँ descriptive (वर्णनात्मक) अछि, analytical (विश्लेषणात्मक) कम। नव्य न्याय, रससिद्धान्त, अथवा उत्तरउपनिवेशवाद — कोनो एकटा सुस्थिर ढाँचामे पूर्णविश्लेषण अनुपस्थित अछि।

आत्मसमालोचनाक अभाव: विदेह आन्दोलन स्वयं एकर सीमाएँ नइ देखैत अछि। "विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार" एकटा समानान्तर पुरस्कारसंस्था निर्माण करब — ई एकटा प्रतिरोधक कदम अछि मुदा एहि संस्थाक पारदर्शिता, निर्णयप्रक्रिया आदिपर कोनो आत्मसमीक्षा नइ अछि।

सन्दर्भ ग्रन्थ (Reference Works):

भारतीय: भरतमुनि (नाट्यशास्त्र), आनन्दवर्धन (ध्वन्यालोक), अभिनवगुप्त (अभिनवभारती), कुन्तक (वक्रोक्तिजीवित), वामन (काव्यालंकारसूत्र), गंगेश उपाध्याय (तत्त्वचिन्तामणि)।

पाश्चात्य: अरिस्टोटल (Poetics), कार्ल मार्क्स (German Ideology), मिखाइल बाख्तिन (The Dialogic Imagination), जैक्स देरीदा (Of Grammatology), मिशेल फुकोल्ट (The Order of Things), एडवर्ड सईद (Orientalism), होमी भाभा (The Location of Culture), हैरल्ड ब्लूम (The Anxiety of Influence), एलेन शोआल्टर (A Literature of Their Own)।

चीनी: लियु शी (文心雕龍, Wenxin Diaolong), वांग वेई (山水诗, MountainWater Poetry), सिकोंग तु (二十四诗品, TwentyFour Categories of Poetry)।

यहूदी/इस्राइली: तलमूद (Midrash परम्परा), एस.वाई. अग्नोन (उपन्यास), हैरल्ड ब्लूम (कलासमीक्षा), शोशाना फेलमान (Literary Speech Act)।

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह सदेह १० : बहुआयामी समीक्षा

अध्याय 25 · विदेह सदेह १० — सम्पूर्ण समालोचना — विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क, गंगेशक नव्य न्याय,

सारांश भारतीय, पाश्चात्य, चीनी आ यहूदी साहित्यिक सिद्धान्तक आलोकमे सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर | प्रकाशन: श्रुति प्रकाशन, २०१२

प्रारम्भिक वक्तव्य विदेह सदेह १० मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचनाक एकटा ऐतिहासिक संकलन अछि, जे विदेह ई-पत्रिकाक अंक ५१ सँ

१०० धरिक श्रेष्ठ रचनाक समानान्तर प्रस्तुति अछि। एहिमे ४०+ लेखकक ५०+ रचना संकलित अछि, जे मैथिली साहित्य, संस्कृति

भाषाविज्ञान, कला, राजनीति आ सामाजिक विमर्शकेँ समेटैत अछि। प्रस्तुत समीक्षा चारिटा प्रमुख सैद्धान्तिक ढाँचाक उपयोग करैत प्रत्येक

रचनाकेँ परखैत अछि: १. विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क — मैथिलीक अस्मिता आ प्रतिरोधक इतिहास १. गजेन्द्र ठाकुर रचना: प्रबन्ध-

निबन्ध-समालोचना, समीक्षाशास्त्र आ समालोचनाक समालोचना ई संकलनक आधारभूत प्रबन्ध अछि, जाहिमे ठाकुर जी मैथिली

समीक्षाशास्त्रक एकटा सैद्धान्तिक आधार निर्मित करबाक प्रयास केने छथि।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · समीक्षाशास्त्र · नव्य-न्याय · रस-सिद्धान्त · भाषा-विमर्श · लोक-संस्कृति · इतिहास

भारतीय, पाश्चात्य, चीनी आ यहूदी साहित्यिक सिद्धान्तक आलोकमे

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर | प्रकाशन: श्रुति प्रकाशन, २०१२

प्रारम्भिक वक्तव्य

विदेह सदेह १० मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचनाक एकटा ऐतिहासिक संकलन अछि, जे विदेह ई-पत्रिकाक अंक ५१ सँ १०० धरिक श्रेष्ठ रचनाक समानान्तर प्रस्तुति अछि। एहिमे ४०+ लेखकक ५०+ रचना संकलित अछि, जे मैथिली साहित्य, संस्कृति, भाषाविज्ञान, कला, राजनीति आ सामाजिक विमर्शकेँ समेटैत अछि। प्रस्तुत समीक्षा चारिटा प्रमुख सैद्धान्तिक ढाँचाक उपयोग करैत प्रत्येक रचनाकेँ परखैत अछि:

१. विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क — मैथिलीक अस्मिता आ प्रतिरोधक इतिहास

१. गजेन्द्र ठाकुर

रचना: प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना, समीक्षाशास्त्र आ समालोचनाक समालोचना

ई संकलनक आधारभूत प्रबन्ध अछि, जाहिमे ठाकुर जी मैथिली समीक्षाशास्त्रक एकटा सैद्धान्तिक आधार निर्मित करबाक प्रयास केने छथि। प्रारम्भेसँ ओ प्लेटो, अरस्तू, फ्रायड, देरीदा, फूको, लाकान, बौड्रीलार्ड धरिक पाश्चात्य चिन्तन आ भरत, आनन्दवर्धन, अभिनवगुप्त, वामह, दण्डी धरिक भारतीय परम्पराकेँ एकसाथ आनबाक चेष्टा केने छथि।

विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्कक दृष्टिसँ

ठाकुर जी फुकुयामाक 'इतिहासक अन्त'क संकल्पनाकेँ खण्डित करैत मैथिली साहित्यक विशिष्ट ऐतिहासिक प्रवाहकेँ स्थापित करबाक प्रयास करैत छथि। हुनकर विदेह समानान्तर इतिहासक अवधारणा — जे मैथिलीकेँ मुख्यधारसँ अलग एकटा जीवन्त परम्परा मानैत अछि — एहि प्रबन्धमे स्पष्ट रूपेँ दृष्टिगोचर होइत अछि। ओ उचित तर्कसँ देखबैत छथि जे वंचित समुदायक इतिहास सदिखन जारी रहैत अछि।

गंगेशक नव्य न्यायक दृष्टिसँ

नव्य न्यायक अन्वयव्यतिरेक पद्धतिसँ देखल जाय तँ ठाकुर जीक तर्क कखनो-कखनो एकाधिक सिद्धान्तकेँ एकसाथ आनैत ओकरा बीचक वास्तविक विरोधाभासकेँ समेटि नै लैत छथि। जेना उत्तरआधुनिकतावाद आ मार्क्सवाद दुनूकेँ एकसाथ राखल गेल अछि, जखनकि दुनू परस्पर विरोधी भूमिकामे छथि। नव्य न्यायक व्याप्ति-निर्धारणक दृष्टिसँ आधार आ साध्यक सम्बन्ध स्पष्ट नहि अछि।

भारतीय साहित्य सिद्धान्तक दृष्टिसँ

ध्वनि सिद्धान्त, रस सिद्धान्त आ स्फोट सिद्धान्तक विस्तृत चर्चा प्रभावशाली अछि। आनन्दवर्धनक ध्वन्यालोकसँ आरम्भ कऽ अभिनवगुप्तक अभिनवभारती धरिकक भारतीय परम्पराक ओ सटीक ब्याख्या करैत छथि। मुदा एकर मैथिली साहित्यमे व्यावहारिक प्रयोग कोना हो, तकर उदाहरण आर बेशी रहितए तँ प्रबन्ध अधिक प्रभावकारी होइत।

पाश्चात्य/चीनी/यहूदी सिद्धान्तक दृष्टिसँ

पोस्टस्ट्रक्चरल पद्धतिक प्रभाव स्पष्ट अछि। देरीदाक विखण्डनवाद आ फूकोक ज्ञान-सत्ता सम्बन्धक चर्चा मैथिली साहित्यमे सत्ता-संरचना बुझबाक लेल उपयोगी अछि। यहूदी मिद्राश परम्परा — जाहिमे पाठकेँ अनेक स्तरपर पढ़ल जाइत अछि — ठाकुर जीक समालोचनाक बहु-स्तरीय प्रकृतिक संग मेल खाइत अछि। चीनी 'वेन' (文) सौन्दर्यशास्त्रक जे पाठ आ संस्कृतिकेँ एकतामे देखैत अछि, से विदेहक समग्रतावादी दृष्टिसँ मेल खाइत अछि।

२. राज

रचना: यात्रीक कवितामे गाम

मैथिलीक महान कवि नागार्जुन उर्फ यात्रीक काव्यमे 'गाम'क अवधारणाकेँ ई निबन्ध परखैत अछि। लेखक देखबैत छथि जे यात्रीक कविता ग्रामीण विस्थापन, अकाल आ कृषि-संकटक दस्तावेज अछि।

विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ

यात्रीक गाम-केन्द्रित काव्य मैथिलीक समानान्तर इतिहासक सबसँ सशक्त अभिलेख अछि। मुख्यधारक इतिहाससँ अदृश्य मिथिलाक किसानक पीड़ा यात्रीक छन्दमे जीवन्त होइत अछि। ई विदेह फ्रेमवर्कक 'वंचितक इतिहास' वाली अवधारणाकेँ साहित्यिक धरातलपर सिद्ध करैत अछि।

गंगेशक नव्य न्यायक दृष्टिसँ

राज जीक विश्लेषण तार्किक रूपेँ क्रमबद्ध अछि। ओ अन्वयव्यतिरेकसँ देखबैत छथि जे जतए-जतए यात्रीक कविता अछि ओतए-ओतए गामक पीड़ा अछि — ई व्याप्ति सम्बन्ध प्रामाणिक अछि। उदाहरणक चयन उचित अछि।

रस-ध्वनि सिद्धान्तक दृष्टिसँ

यात्रीक कवितामे करुण रसक प्राधान्य अछि, जे ग्रामीण जीवनक विभिन्न व्यभिचारी भावसँ पुष्ट होइत अछि। ध्वनि सिद्धान्तक दृष्टिसँ 'गाम' शब्दमे व्यंजित अर्थ — मातृभूमि, जड़, स्मृति, विस्थापन — बहु-स्तरीय अछि।

विश्लेषणक स्तर: ★★★★☆ — उत्कृष्ट

साहित्यिक संवेदना: ★★★★★ — असाधारण

३. डॉ. राजीव कुमार वर्मा

रचना: कारी घटा बरसैत मेघ

ई निबन्ध मैथिली कविताक एकटा विशिष्ट सौन्दर्य-तत्त्वकेँ — 'कारी घटा' वा वर्षाक बिम्बकेँ — विश्लेषित करैत अछि। विद्यापतिसँ आधुनिक कविता धरिमे वर्षा-बिम्बक विकास-यात्राक ओ सूक्ष्म अध्ययन करैत छथि।

भारतीय अलंकार सिद्धान्तक दृष्टिसँ

वामहक 'काव्यालंकार' आ दण्डीक 'काव्यादर्श'मे उपमा, रूपक आ उत्प्रेक्षाक जे सिद्धान्त अछि, तकरासँ मैथिली वर्षा-काव्यमे 'कारी घटा'क बिम्बकेँ परखल जा सकैत अछि। वर्मा जी ई काज प्रशंसनीय ढंगसँ करैत छथि।

चीनी सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ

चीनी 'शान-शुई' (पर्वत-जल) काव्यपरम्परामे प्रकृति-बिम्बक जे स्थान अछि, से मैथिली 'मेघ-दूत' परम्पराक संग तुलनीय अछि। दुनूमे प्रकृति केवल पृष्ठभूमि नहि, बल्कि भाव-वाहक अछि।

साहित्यिक गहराई: ★★★★☆ — उत्कृष्ट

४. अशोक

रचना: बनैत-बिगड़ैत

ई रचना समाजमे व्यक्तित्वक निर्माण आ विनाशक प्रक्रियाकेँ चित्रित करैत अछि। आधुनिक मैथिली गद्यमे सामाजिक यथार्थवादक एकटा सशक्त उदाहरण।

विदेह फ्रेमवर्क आ उत्तर-उपनिवेशवादी दृष्टि

'बनैत-बिगड़ैत' शीर्षकमे ही उत्तर-उपनिवेशवादी द्वन्द्व अछि। मैथिली समाजमे जे शक्ति-संरचना अछि, ओ व्यक्तित्वकेँ कोना बनबैत आ बिगाड़ैत अछि — ई

प्रश्न एहोमी भाभाक 'हाइब्रिडिटी' सिद्धान्तसँ समझल जा सकैत अछि।

गंगेशक नव्य न्यायक दृष्टिसँ

'बनब' आ 'बिगड़ब'क बीच कारण-कार्य सम्बन्धकेँ लेखक नव्य न्यायक अनुमान-पद्धतिसँ स्थापित करैत छथि। हेतु (कारण) आ साध्य (परिणाम)क सम्बन्ध तार्किक अछि।

सामाजिक प्रासंगिकता: ★★★★☆ — उत्कृष्ट

५. चन्द्रेश

रचना: यात्राक अनुभूतिमे ऐतिहासिक दिन: झिझिया नृत्य महोत्सव

झिझिया — मैथिलीक एकटा प्राचीन नारी-नृत्य परम्परा — केर एकटा आधुनिक महोत्सवक प्रत्यक्षदर्शी विवरण ई रिपोर्ताज अछि। एहिमे लोक-परम्पराक संरक्षण आ आधुनिकताक बीचक तनाव दृष्टिगोचर होइत अछि।

विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ

झिझिया नृत्य मैथिली स्त्री-शक्तिक सांस्कृतिक इतिहासक जीवन्त दस्तावेज अछि। मुख्यधारक राष्ट्रीय इतिहाससँ उपेक्षित ई परम्परा विदेह फ्रेमवर्कमे 'अदृश्य इतिहास'क पुनर्स्थापनाक उदाहरण अछि।

नारीवादी साहित्यिक सिद्धान्तक दृष्टिसँ

इलाइन शोआल्टरक gynocriticism — जे महिला-रचित परम्पराकेँ केन्द्रमे राखैत अछि — झिझियाक सन्दर्भमे अत्यन्त प्रासंगिक अछि। स्पीवाकक 'सबाल्टर्न' अवधारणासँ देखल जाय तँ झिझिया नृत्यक कलाकार महिलाएँ वस्तुतः सबाल्टर्न सांस्कृतिक एजेन्सीक प्रतिनिधि छथि।

यहूदी (इसरायली) साहित्यिक दृष्टि

यहूदी परम्परामे 'जाखोर' (स्मरण) अर्थात् सामूहिक स्मृतिक महत्त्व अछि। झिझियाक महोत्सव मैथिली समुदायक सामूहिक स्मृतिकेँ जीवित राखैत अछि — ई यहूदी जाखोर परम्पराक समानान्तर अछि।

सांस्कृतिक दस्तावेजीकरण: ★★★★★ — असाधारण

साहित्यिक गुण: ★★★☆☆ — उत्तम

६. दुर्गानन्द मण्डल

रचना: मौलाइल गाँवक फूल (समीक्षा)

जगदीश प्रसाद मण्डलक प्रसिद्ध उपन्यास 'मौलाइल गाँवक फूल'पर ई समालोचना है। दुर्गानन्द मण्डल उपन्यासक ग्रामीण यथार्थवाद आ सामाजिक चेतनाकेँ परखैत छथि।

विदेह इतिहास आ मार्क्सवादी दृष्टि

'मौलाइल गाँवक फूल' मैथिली ग्रामीण समाजक वर्ग-संघर्षक कथा अछि। दुर्गानन्द जी एकर मार्क्सवादी व्याख्या प्रस्तुत करैत छथि। विदेह फ्रेमवर्कमे ई उपन्यास वंचित वर्गक आवाजकेँ साहित्यक केन्द्रमे लाबैत अछि।

भारतीय रस सिद्धान्तक दृष्टिसँ

उपन्यासमे करुण रसक साथ-साथ वीर रसक अनुपूरक उपस्थिति अछि। अकालग्रस्त मिथिलाक पीड़ा (करुण) आ ओकर सामूहिक प्रतिरोध (वीर) दुनूकेँ मण्डल जी नीकसँ विश्लेषित करैत छथि।

चीनी 'रेन' (仁) — मानवता-केन्द्रित दृष्टि

कन्फ्यूशियसक 'रेन' (benevolence/मानवता)क सिद्धान्तसँ देखल जाय तँ जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमे मनुष्यताक उच्चतम मूल्यकेँ स्थापित करबाक प्रयास अछि। दुर्गानन्द जी ई पक्षकेँ प्रभावशाली ढंगसँ उठबैत छथि।

समालोचनात्मक दृष्टि: ★★★★☆ — उत्कृष्ट

७. अच्छेलाल शास्त्री

रचना: रणभूमि आ कविता

ई निबन्धमे कविताकेँ सामाजिक-राजनीतिक संघर्षक हथियारक रूपमे देखल गेल अछि। मैथिलीमे कविता आ राजनीतिक सक्रियताक सम्बन्धकेँ शास्त्री जी परखैत छथि।

विदेह फ्रेमवर्क आ प्रतिरोधक साहित्य

'रणभूमि' शीर्षके नहि, ई पूरा विश्लेषण प्रतिरोधक कविताक सिद्धान्तपर आधारित अछि। विदेह समानान्तर इतिहासमे मैथिली कविता सदिखन वंचितक हथियार रहल अछि — शास्त्री जी ई सिद्ध करैत छथि।

यहूदी प्रतिरोधक काव्य परम्पराक समानान्तर

होलोकास्टक समयमे यहूदी कविकेँ 'कविता लिखब' ही एकटा नैतिक कार्य मानल गेल। मैथिलीमे विस्थापन आ उपेक्षाक काल (१९वीं-२०वीं सदी) में कविताक भूमिका ओही परम्पराक समानान्तर अछि।

राजनीतिक तीव्रता: ★★★★☆ — उत्कृष्ट

८. परमेश्वर कापड़ि

रचना: मानकताक बात विखपाद अछि!

मैथिलीमे भाषा-मानकीकरणक प्रश्नपर ई एकटा महत्त्वपूर्ण विवेचना अछि। कापड़ि जी मानकताक नामपर बोलीकेँ दबेबाक प्रवृत्तिकेँ चुनौती दैत छथि।

भाषावैज्ञानिक आ नव्य न्यायक दृष्टि

गंगेशक नव्य न्यायमे 'विशेष' (particular) आ 'सामान्य' (universal) क बीचक सम्बन्धक चर्चा अछि। मानक भाषा 'सामान्य' अछि, मुदा बोली 'विशेष' अछि — दुनूक सम्मान होएबाक चाही। कापड़ि जीक तर्क एहि नव्य न्यायक दृष्टिसँ अत्यन्त प्रासंगिक अछि।

उत्तर-उपनिवेशवादी भाषा-नीति

एडवर्ड सईदक ओरिएण्टलिज्म सिद्धान्त भाषाक राजनीतिकेँ स्पष्ट करैत अछि। जे भाषा-नीति 'शुद्ध' मानककेँ थोपैत अछि, ओ एकटा प्रकारक सांस्कृतिक उपनिवेशवाद अछि। कापड़ि जी ई बात मैथिलीक सन्दर्भमे स्पष्ट करैत छथि।

भाषावैज्ञानिक महत्त्व: ★★★★★ — असाधारण

९. अतुलेश्वर पण्डित

रचना: पण्डित गोविन्द झा, मैथिली आ अध्ययन

मैथिलीक महान विद्वान गोविन्द झाक व्यक्तित्व आ योगदानपर ई स्मरणात्मक निबन्ध-समालोचना अछि।

विदेह इतिहास आ ज्ञान-परम्परा

गोविन्द झा मैथिली ज्ञान-परम्पराक एक महत्त्वपूर्ण कड़ी छलाह। पण्डित जी हुनकर योगदानकेँ विदेह समानान्तर इतिहासमे सुरक्षित करैत छथि।

यहूदी 'पिरकेई आवोत' परम्परा

यहूदी परम्परामे 'पिरकेई आवोत' (Fathers' Ethics) — जाहिमे गुरु-परम्पराकेँ सँजोल जाइत अछि — एहि निबन्धक समानान्तर अछि। गोविन्द झाक स्मृति-संरक्षण मैथिली ज्ञान-परम्पराकेँ आगाँ बढ़बैत अछि।

ऐतिहासिक महत्त्व: ★★★★☆ — उत्कृष्ट

१०. उमेश मण्डल

रचनाएँ: निर्मलीसँ जनकपुर धाम / बेरमा सगर रातिमे श्रोता / मैथिली भाषाक दशा आ दिशापर परिचर्चा / महाकवि पण्डित लालदास जयन्ती समारोह

उमेश मण्डल संकलनक सह-सम्पादक छथि आ हुनकर एकाधिक रिपोर्ताज एहिमे संकलित अछि। निर्मलीसँ जनकपुर धरिक काव्य-गोष्ठीक विवरण, सगर राति दीप जरय कार्यक्रमक रिपोर्ट, मैथिली भाषाक वर्तमान स्थितिपर परिचर्चा — ई सभ जीवन्त दस्तावेज अछि।

विदेह फ्रेमवर्क: जन-आन्दोलनक दस्तावेजीकरण

उमेश मण्डलक रिपोर्ताज मैथिली साहित्य-आन्दोलनक सजीव इतिहास अछि। ७५म काव्य-गोष्ठीमे ३९ टा काव्य-पाठ — ई विदेह समानान्तर इतिहासक एकटा महत्त्वपूर्ण अभिलेख अछि। मैथिलीमे जे निरन्तर साहित्यिक गतिविधि चलि रहल अछि, ओकर सबसँ नियमित दस्तावेजकर्ता मण्डल जी छथि।

चीनी 'शी' (詩) परम्परा — कवि-समाज

चीनी शास्त्रीय परम्परामे कवि-समाजक बैठक आ काव्य-पाठक महत्त्वपूर्ण स्थान अछि। 'सगर राति दीप जरय' जेहन कार्यक्रम चीनी 'शी-हुई' (詩會 poetry gathering) परम्पराक समानान्तर अछि, जाहिमे कविताकेँ सामुदायिक अनुभव बनाओल जाइत अछि।

दस्तावेजीकरणक महत्त्व: ★★★★★ — असाधारण

साहित्यिक गुण: ★★★☆☆ — उत्तम

११. संजीव कुमार शर्मा

रचना: महाकवि पं. लालदास जयन्ती समारोह

महाकवि लालदासक स्मृतिमे आयोजित जयन्ती समारोहक विस्तृत रिपोर्ट। लालदास मिथिलाक महत्त्वपूर्ण भक्ति-काल कवि छलाह।

लालदासक भक्ति-काव्य आ मिथिलाक धार्मिक परम्पराकेँ शर्मा जी सुन्दर तरहसँ सँजोलैत छथि। ई रिपोर्ट विदेह समानान्तर इतिहासमे मिथिलाक भक्ति-परम्पराकेँ दर्ज करैत अछि।

सांस्कृतिक दस्तावेज: ★★★☆☆ — उत्तम

१२. मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)

रचनाएँ: मैथिली गजलपर परिचर्चा / रिपोर्ताज / 'वर्णिका'

मुन्नाजी मैथिली गजलक विकास-यात्राकेँ विस्तारसँ परखैत छथि — उत्पत्ति, विकास, वर्तमान स्थिति आ भविष्यक सम्भावना। ई संकलनक सबसँ महत्त्वपूर्ण विद्वत्तापूर्ण रचनासभमे सँ एकटा अछि।

भारतीय-इस्लामिक काव्य-संगम

गजल अरबी-फारसी परम्परासँ आएल, मुदा मैथिलीमे एकर ढलाई भारतीय संवेदनाक संग भेल। मुन्नाजी एहि संगमकेँ नव्य न्यायक 'परिणाम' (transformation) सिद्धान्तसँ बुझबाक प्रयास करैत छथि।

यहूदी 'पाइयुट' परम्पराक समानान्तर

यहूदी 'पाइयुट' (liturgical poetry) जेना अरबी-हिब्रू संगमसँ नव रूप ग्रहण केलक, तेहने मैथिली गजलमे फारसी-संस्कृत-मैथिली त्रिवेणी अछि। मुन्नाजी ई बात स्पष्ट करैत छथि।

चीनी 'सी' (詞) काव्य-रूपसँ तुलना

चीनी 'सी' — जे संगीत-बद्ध काव्य-रूप अछि — आ गजलक बीच समानता अछि। दुनूमे लय आ काफियाक महत्त्व अछि आ दुनू प्रेम, विरह आ जीवन-दर्शनकेँ छन्दमे बाँधैत अछि।

विद्वत्ता: ★★★★★ — असाधारण

साहित्यिक योगदान: ★★★★★ — असाधारण

१३. डॉ. अरुण कुमार सिंह

रचना: मैथिलेत्तर भाषी प्रदेशमे मैथिली सीखबा-सीखैबामे कम्प्यूटर आ भाषाविज्ञानक भूमिका

मैथिलीकेँ द्वितीय भाषाक रूपमे सिखेबाक लेल कम्प्यूटर-सहायित भाषाशिक्षण (CALL) पद्धतिपर ई महत्त्वपूर्ण शोधपत्र अछि।

आधुनिक भाषाविज्ञान आ गंगेशक तर्क-शास्त्र

नव्य न्यायमे 'अनुमान' (inference) आ 'उपमान' (comparison) द्वारा ज्ञान-प्राप्तिक सिद्धान्त CALL पद्धतिक आधारसँ मेल खाइत अछि। अरुण जीक शोध भाषाशिक्षणकेँ वैज्ञानिक आधारपर प्रतिष्ठित करैत अछि।

इसरायली भाषा-पुनरुद्धार अनुभवक प्रासंगिकता

हिब्रूकेँ आधुनिक काललमे पुनर्जीवित करबाक इसरायली अनुभव मैथिलीक लेल प्रेरणास्पद अछि। एलिएजर बेन-येहुदाक हिब्रू-पुनरुद्धार आन्दोलन जे पद्धतिसँ सफल भेल, ओ पद्धतिसभ मैथिलीमे प्रयुक्त भऽ सकैत अछि।

व्यावहारिक उपयोगिता: ★★★★★ — असाधारण

शोधक स्तर: ★★★★☆ — उत्कृष्ट

१४. डॉ. शशिधर कुमार

रचना: गामक जिनगी (समीक्षा)

जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संग्रह 'गामक जिनगी'पर ई विस्तृत समालोचना है।

रस सिद्धान्तक दृष्टिसँ

मण्डलक कथासभमे करुण, वात्सल्य आ शान्त रसक सुन्दर समन्वय अछि। शशिधर जी ई बात प्रामाणिक रूपेँ सिद्ध करैत छथि।

यहूदी 'मशाल' परम्परासँ तुलना

यहूदी 'मशाल' (parable/दृष्टान्त-कथा) परम्परामे नैतिक सत्यकेँ लोक-कथाक माध्यमसँ कहल जाइत अछि। मण्डलक ग्रामीण कथाएँ एही परम्पराक समानान्तर छथि — सरल कथाक भीतर गहन सामाजिक सत्य।

समालोचनाक गुण: ★★★★☆ — उत्कृष्ट

१५. जितेन्द्र झा

रचनाएँ: के राखत रुमालक इज्जत? / उपटैत गाम बसाओत बाबा / नेपालक राजनीतिक अवस्थासँ उपजल ग्लानि / सुजीतक अनुभव रिपोर्टर डायरीमे

जितेन्द्र झाक रचना नेपालक राजनीतिक संकट आ मैथिली-भाषी नेपालीक पहिचानसँ जुड़ल प्रश्नकेँ उठबैत अछि।

विदेह फ्रेमवर्क: सीमापारक मैथिली

भारत-नेपाल सीमाक दुनू दिसक मैथिली-भाषी समुदाय एकटा सांस्कृतिक इकाई अछि। जितेन्द्र जी ई सच्चाइकेँ राजनीतिक जटिलताक बीचमे उठबैत छथि। विदेह फ्रेमवर्कमे 'सीमा-पार इतिहास'क अवधारणा एतए प्रासंगिक अछि।

उत्तर-उपनिवेशवादी आ गायत्री स्पीवाककेँ सुनब

'के राखत रुमालक इज्जत?' — ई प्रश्न मैथिली महिलाक सांस्कृतिक गरिमाक लेल अछि। स्पीवाककेँ अनुसरण करैत ई देखल जा सकैत अछि जे मैथिली महिलाएँ दुहरे पैठी छथि — राष्ट्र-राज्यसँ अदृश्य आ पितृसत्ताक दबावमे।

राजनीतिक साहस: ★★★★★ — असाधारण

साहित्यिक गुण: ★★★★☆ — उत्कृष्ट

१६. अनिल मल्लिक

रचना: हम, देह आ विदेह....!

ई निबन्ध 'देह' आ 'विदेह' — भौतिक आ आध्यात्मिक — दुनू अस्तित्वक बीचक तनावकेँ दार्शनिक-साहित्यिक दृष्टिसँ परखैत अछि। विदेह पत्रिकाक नामक दर्शनकेँ ई व्यक्तिगत अनुभवक स्तरपर बुझैत अछि।

अस्तित्ववादी आ उपनिषदिक दृष्टि

'विदेह' — देहसँ परे — उपनिषदिक आत्म-दर्शनक अवधारणा अछि। मल्लिक जी एकरा आधुनिक अस्तित्ववादी प्रश्नसँ जोड़ैत छथि। सार्त्रक 'bad faith' आ मैथिली देह-विदेह दर्शनक बीचक तुलना रोचक अछि।

यहूदी कब्बालाह दर्शनसँ समानान्तर

यहूदी कब्बालाह परम्परामे 'नेफेश' (देह-आत्मा) आ 'नेशामाह' (उच्चतर आत्मा) क बीचक भेद एहि मैथिली 'देह-विदेह' द्वन्द्वक समानान्तर अछि।

दार्शनिक गहराई: ★★★★☆ — उत्कृष्ट

१७. जगदीश प्रसाद मण्डल

रचनाएँ: अवतारवाद / मैथिली उपन्यास साहित्यमे ग्रामीण चित्रण / कामरूप आ मिथिला

मण्डल जी संकलनक केन्द्रीय लेखक छथि — हुनकर रचनापर सर्वाधिक समालोचना अछि आ हुनकर स्वयंकेर लेखन सेहो एहिमे अछि।

मैथिली उपन्यासमे ग्रामीण चित्रण — एकटा विस्तृत विश्लेषण

मण्डल जी मैथिली उपन्यास-परम्पराक विकासकेँ ग्रामीण जीवनक चित्रणक दृष्टिसँ परखैत छथि। चौधरी रघुनाथसँ आरम्भ कऽ आधुनिक उपन्यास धरिमे गामक बदलैत स्वरूपकेँ ओ सटीकतासँ पकड़ैत छथि।

विदेह फ्रेमवर्क: ग्राम-केन्द्रित मैथिली इतिहास

मैथिलीक इतिहास शहर-केन्द्रित नहि, ग्राम-केन्द्रित अछि। मण्डल जीक सम्पूर्ण साहित्य एहि सत्यकेँ प्रमाणित करैत अछि। विदेह फ्रेमवर्कमे 'गाम' केवल पृष्ठभूमि नहि, बल्कि इतिहासक मुख्य स्थल अछि।

चीनी 'तु' (土) — मिट्टी-दर्शन

चीनी कवि-परम्परामे 'तु' (मिट्टी/देश) एकटा केन्द्रीय अवधारणा अछि। मण्डल जीक मैथिली साहित्यमे गाम-माटिक जे स्थान अछि, ओ चीनी 'तु' अवधारणाक समानान्तर अछि।

मैथिली साहित्यमे योगदान: ★★★★★ — असाधारण

१८. रवि भूषण पाठक

रचना: आचार्य भामहक चिन्तन

मैथिलीक प्राचीन अलंकार-शास्त्रीय परम्परामे भामह (६ठम शताब्दी)क योगदानपर ई शोधपत्र अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रक इतिहास-पुनर्लेखन

भामह मैथिलीक अपने विद्वान छलाह कि नहि — ई विवादित अछि — मुदा हुनकर काव्यालंकारक प्रभाव सम्पूर्ण भारतीय काव्यशास्त्रपर पड़ल। पाठक जी एहि प्रभावकेँ सटीकतासँ परखैत छथि।

गंगेशक नव्य न्यायसँ तुलना

भामहक अलंकार-शास्त्र आ गंगेशक न्याय-शास्त्र — दुनू भारतीय वाक् (speech/language) दर्शनक दुइ महत्त्वपूर्ण धारा अछि। पाठक जी ई सम्बन्धकेँ स्पर्श करैत छथि।

शास्त्रीय विद्वत्ता: ★★★★★ — असाधारण

१९. शेफालिका वर्मा

रचना: आधुनिक मैथिली साहित्यमे नारी-तत्त्व / 'मैथिली आ तमिल कवयित्री सम्मेलन'

मैथिली आ तमिल — दुइ भिन्न भाषा-परम्परा — क कवयित्री-सम्मेलनक प्रसंगमे वर्मा जी नारी-साहित्यक तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करैत छथि।

नारीवादी साहित्यिक सिद्धान्त

इलाइन शोआल्टर, सिमोन डि बुआ आ वर्जीनिया वुल्फक नारीवादी साहित्य-दृष्टिसँ वर्मा जी मैथिली महिला-लेखनकेँ परखैत छथि। मैथिली महिला लेखिकाकेँ आर्थिक स्वतन्त्रता आ वैयक्तिक अभिव्यक्तिक जे सवाल अछि, ओ वर्जीनिया वुल्फक 'A Room of One's Own' थीमसँ मेल खाइत अछि।

तमिल 'अहम्' काव्य-परम्पराक संग तुलना

तमिल संगम-साहित्यमे 'अहम्' (प्रेम/आन्तरिक जीवन) काव्यमे महिला-स्वर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। मैथिली महिला-काव्य आ तमिल अहम् कविताक बीचक तुलना वर्मा जी संक्षेपमे करैत छथि।

यहूदी महिला-कविता

राहेल (Rachel Bluwstein)क हिब्रू कविता आ मैथिली महिला-कवितामे देश-प्रेम, विस्थापन आ स्त्री-अस्मिताक साझा विषयसभ अछि।

लैंगिक चेतना: ★★★★★ — असाधारण

तुलनात्मक दृष्टि: ★★★★☆ — उत्कृष्ट

२०. मीना झा

रचना: लन्दनमे मैथिल समाज

प्रवासी मैथिल समाजक लन्दनमे स्थिति, सांस्कृतिक संरक्षण-प्रयास आ पहिचानक संकटपर ई महत्त्वपूर्ण रिपोर्ट अछि।

डायस्पोरा अध्ययन आ विदेह फ्रेमवर्क

मैथिली डायस्पोरा — चाहे ओ दिल्लीमे हो, मुम्बईमे हो वा लन्दनमे — विदेह समानान्तर इतिहासक एकटा महत्त्वपूर्ण अंग अछि। मीना झाक लन्दन-रिपोर्ट ई सिद्ध करैत अछि जे मैथिली राष्ट्र-राज्यक सीमासँ परे जीवन्त अछि।

यहूदी डायस्पोरा अनुभवसँ तुलना

यहूदी डायस्पोरामे 'येरुशलाइमक ओर' — मातृभूमिसँ सम्बद्धता — जे भाव अछि, ओ मैथिल डायस्पोरामे मिथिलाक प्रति छैक। मीना झाक रिपोर्टमे ई भाव स्पष्ट अछि।

डायस्पोरा-अध्ययनमे योगदान: ★★★★★ — असाधारण

२१. खुशबू झा

रचना: हमरा नजरिमे सुजीतक रिपोर्टर डायरी

पत्रकार-लेखक सुजीत कुमार झाक रिपोर्टर डायरीपर एकटा युवा पाठकक दृष्टि।

पाठक-दृष्टिकोण (reader-response theory) क दृष्टिसँ ई रचना महत्त्वपूर्ण अछि। खुशबू झा एकटा आम पाठकक प्रतिनिधित्व करैत छथि, जे साहित्यक लोकतान्त्रिकरणक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि।

पाठक-दृष्टिक मौलिकता: ★★★☆☆ — उत्तम

२२. अमरकान्त अमर

रचना: संघीयतामे मैथिली भाषा

नेपालमे संघीय व्यवस्थाक सन्दर्भमे मैथिली भाषाकेँ संवैधानिक दर्जा दिलेबाक आन्दोलनपर ई महत्त्वपूर्ण विश्लेषण।

भाषा अधिकार आ विदेह फ्रेमवर्क

भाषाई संघर्ष विदेह समानान्तर इतिहासक केन्द्रीय विषय अछि। अमरकान्त जी नेपालक संविधान-निर्माण प्रक्रियामे मैथिलीकेँ ओकर उचित स्थान दिलेबाक राजनीतिक-सांस्कृतिक आवश्यकताकेँ स्पष्ट करैत छथि।

इसरायली भाषा-राजनीतिसँ तुलना

इसरायलमे हिब्रू आ अरबी — दुनू आधिकारिक भाषा — क बीचक सम्बन्धसँ मैथिली-नेपाली-हिन्दी त्रिभाषी वातावरणमे मैथिलीकेँ संवैधानिक संरक्षण देबाक मुद्दाकेँ बुझल जा सकैत अछि।

राजनीतिक महत्त्व: ★★★★★ — असाधारण

विश्लेषणात्मक गुण: ★★★★☆ — उत्कृष्ट

२३. पूनम मण्डल

रचनाएँ: महासुन्दरी देवीकेँ मिथिला चित्रकला लेल २०११क पद्म श्री / स्थानीय कवि परिषद वार्षिकोत्सव

मिथिला चित्रकलाक महान कलाकार महासुन्दरी देवीक पद्म-श्री प्राप्तिपर आ स्थानीय साहित्यिक गतिविधिपर ई रिपोर्त।

कला आ समानान्तर इतिहास

मिथिला चित्रकला — जे घरक दीवारसँ अन्तर्राष्ट्रीय मंचपर पहुँचल — विदेह समानान्तर इतिहासक एकटा गौरवशाली अध्याय अछि। महासुन्दरी देवी एहि

यात्राक प्रतीक छथि।

सांस्कृतिक दस्तावेज: ★★★★☆ — उत्कृष्ट

२४. राजेन्द्र कुमार प्रधान

रचना: २१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना

२१म सदीक पहिल दशकमे मैथिली उपन्यासमे जे राजनीतिक जागृति देखल गेल, ओकर सर्वेक्षण ई प्रबन्ध करैत अछि।

विदेह फ्रेमवर्क: राजनीतिक साहित्य

प्रधान जी देखबैत छथि जे समकालीन मैथिली उपन्यासमे मण्डल आयोगक प्रभाव, नेपाली जनान्दोलन, मिथिला राज्यक माँग — ई सभ विषय प्रवेश केलाह। ई मैथिली साहित्यक राजनीतिकरणक प्रमाण अछि।

चीनी 'शाह-चिह' (社稷) — लोक-कल्याण साहित्य

चीनी परम्परामे 'शाह-चिह' (समाज आ अन्न-क्षेत्र अर्थात् लोक-कल्याण) केन्द्रित साहित्यक गौरवशाली इतिहास अछि। मैथिली उपन्यासक राजनीतिक चेतना एही परम्पराक समानान्तर अछि।

शोधक स्तर: ★★★★☆ — उत्कृष्ट

समसामयिक प्रासंगिकता: ★★★★★ — असाधारण

२५. विनीत उत्पल

रचना: की अछि दिल्लीक जी.बी. रोडक कोठाक सत

दिल्लीक जी.बी. रोड — देहव्यापारक केन्द्र — पर मैथिली महिलाकेँ केन्द्रमे राखि लिखल ई रिपोर्ताज मैथिली साहित्यमे एकटा साहसिक आ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रचना अछि।

उत्तर-उपनिवेशवादी आ नारीवादी दृष्टि

स्पीवाककेँ 'सबाल्टर्न कैन नॉट स्पीक' (1988)क तर्कसँ देखल जाय तँ जी.बी. रोडक मैथिली महिलाएँ दुहरे मौन छथि — वर्ग-दमन आ लैंगिक-दमन दुनूक शिकार। विनीत जी हुनकर आवाजकेँ सुनबाक प्रयास करैत छथि।

यहूदी नैतिक साहित्य-दृष्टि

यहूदी परम्परामे 'तिक्कुन ओलाम' (tikkun olam — संसारकेँ ठीक करब) एकटा नैतिक आह्वान अछि। ई रिपोर्ताज ओही भावनासँ लिखल गेल अछि — समाजक अँधेरे कोनकेँ उजागर कऽ 'तिक्कुन' (सुधार) लेल आह्वान।

सामाजिक साहस: ★★★★★ — असाधारण

मानवीय संवेदना: ★★★★★ — असाधारण

२६. सुशान्त झा

रचना: मैथिली, मैथिल संस्कृति आ मिथिला राज्य

मिथिला राज्यकेँ मैथिली संस्कृतिक संरक्षण-साधनक रूपमे देखबाक राजनीतिक-सांस्कृतिक तर्क ई निबन्धमे अछि।

राष्ट्र-राज्य आ सांस्कृतिक अस्मिता

सुशान्त झा एकटा महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठबैत छथि — की मैथिली भाषाक संरक्षण लेल मिथिला राज्य आवश्यक अछि? एहि प्रश्नक उत्तर हुनक तर्क हाँमे दैत अछि, मुदा ओ स्वीकार करैत छथि जे राजनीतिक इच्छाशक्तिक बिनु राज्यो व्यर्थ भऽ सकैत अछि।

इसरायल-फिलीस्तीन राज्य-प्रश्नसँ सीख

भाषाई-सांस्कृतिक पहिचानपर आधारित राज्यक माँग एकटा जटिल राजनीतिक प्रश्न अछि। इसरायली अनुभवसँ ई सीखल जा सकैत अछि जे राज्य-निर्माण सांस्कृतिक संरक्षणक गारण्टी नहि दैत अछि — सांस्कृतिक संरक्षण लेल सामुदायिक इच्छाशक्ति मुख्य अछि।

राजनीतिक विमर्श: ★★★★☆ — उत्कृष्ट

२७. राजेश्वर नेपाली

रचना: कवि पं. प्रतापनारायण झाकेँ श्रद्धाञ्जलि

एकटा स्मरण-आलेख जे मैथिलीक वरिष्ठ कवि प्रतापनारायण झाक व्यक्तित्व आ काव्यकेँ श्रद्धासँ याद करैत अछि।

मैथिली काव्य-परम्पराक वरिष्ठ कड़ीक स्मरण विदेह फ्रेमवर्कमे अत्यन्त आवश्यक अछि।

श्रद्धाञ्जलिक गुण: ★★★★☆ — उत्कृष्ट

२८. बसन्त झा

रचना: उगना

शिव-भक्त उगनाक मैथिली लोक-कथाकेँ केन्द्रमे राखि ई रचना मैथिली लोक-आस्थाक साहित्यिक विश्लेषण करैत अछि।

लोक-कथा आ मिथक-समीक्षा

भारतीय मिथक-समीक्षाक (mythological criticism) दृष्टिसँ 'उगना' कथा एकटा द्वन्द्व-कथा अछि — देव आ मनुष्यक बीच, उच्च आ निम्न वर्गक बीच, शक्ति आ भक्तिक बीच।

यहूदी मिद्राश परम्पराक समानान्तर

उगनाक कथाकेँ बारम्बार नव तरहसँ कहल जाइत अछि — जेना यहूदी मिद्राश (midrash) परम्परामे बाइबिलक कथाकेँ नव अर्थसँ भरल जाइत अछि। बसन्त झाक 'उगना' एहि मिद्राश-परम्पराक मैथिली संस्करण अछि।

लोक-साहित्यक योगदान: ★★★★☆ — उत्कृष्ट

२९. जीवकान्त

रचनाएँ: 'जिनगीक जीत' उपन्यासपर / 'मौलाइल गाँवक फूल' उपन्यासपर

जगदीश प्रसाद मण्डलक दुइ प्रमुख उपन्यासपर जीवकान्तक समालोचना।

संरचनावादी-मार्क्सवादी दृष्टि

जीवकान्त अल्थूसरक विचारधारा-सिद्धान्तसँ मण्डलक उपन्यासकेँ परखैत छथि। 'जिनगीक जीत'मे विचारधाराक संघर्षकेँ ओ कुशलतासँ चिन्हित करैत छथि।

चीनी 'मिन-चेन' (民正) — लोकनीति साहित्य

चीनी साहित्यमे 'मिन-चेन' (लोककेँ न्याय) थीम मण्डलक उपन्यासक केन्द्रीय चिन्ताक समानान्तर अछि।

समालोचनाक तीव्रता: ★★★★☆ — उत्कृष्ट

३०. धीरेन्द्र कुमार

रचनाएँ: प्रीति ठाकुरक 'गोनू झा आ मैथिली चित्रकथा' / 'मौलाइल गाँवक फूल' / 'गामक जिनगी'

तीन भिन्न रचनापर ई त्रिस्तरीय समालोचना अछि। प्रीति ठाकुरक गोनू झा-केन्द्रित चित्रकथापर विशेष ध्यान देल गेल अछि।

बाल-साहित्य आ सांस्कृतिक पहिचान

गोनू झा मैथिलीक लोकसाहित्यक सबसँ प्रिय पात्र छथि। प्रीति ठाकुरक चित्रकथा ई लोक-नायककेँ आधुनिक बाल-पाठकक लेल प्रस्तुत करैत अछि। धीरेन्द्र जी एकर सांस्कृतिक महत्त्वकेँ स्पष्ट करैत छथि।

यहूदी 'हगदाह' परम्परा

यहूदी 'हगदाह' (Haggadah) — जे कथा-आधारित सांस्कृतिक शिक्षणक माध्यम अछि — आ गोनू झाक चित्रकथाक बीच कार्यात्मक समानता अछि। दुनू बच्चाकेँ सांस्कृतिक विरासत हस्तान्तरित करबाक माध्यम अछि।

बहुरचना समालोचना: ★★★★☆ — उत्कृष्ट

३१. आशीष अनचिन्हार

रचना: समालोचना — गजलक साक्ष्य

मैथिली गजल-समालोचनाक पद्धतिपर ई विशेष आलेख।

आशीष जी समालोचनाकेँ 'साक्ष्य' (evidence/testimony) क रूपमे देखैत छथि — ओ मानैत छथि जे नीक समालोचना एकटा कानूनी गवाहीक समान हेबाक चाही, जाहिमे प्रमाण-आधारित, तर्कपूर्ण आ निष्पक्ष विश्लेषण होएबाक चाही। गंगेशक नव्य न्यायक 'प्रमाण' अवधारणासँ ई दृष्टि मेल खाइत अछि।

समालोचना-पद्धति: ★★★★☆ — उत्कृष्ट

३२. डॉ. मेघन प्रसाद

रचना: मैथिलीमे अनुवाद-कलाक शास्त्रीयकरणक इतिहास

मैथिलीमे अनुवादक एकटा शास्त्रीय इतिहास निर्मित करबाक ई महत्त्वाकांक्षी प्रयास।

अनुवाद-सिद्धान्त आ मैथिली

यूजीन नाइडाक 'गतिशील समतुल्यता' (dynamic equivalence) सिद्धान्त आ भारतीय अनुवाद-परम्पराकेँ एकसाथ राखि मेघन प्रसाद मैथिली अनुवाद-इतिहासकेँ पुनर्लिखैत छथि।

यहूदी तर्जुमा परम्परा

यहूदी 'तर्जुमा' (Targum) — अरामी भाषामे बाइबिलक अनुवाद — आ मैथिली अनुवाद-परम्पराक बीच तुलनात्मक अध्ययन सम्भव अछि। दुनूमे मूल-पाठक सम्मान आ नवीन संस्कृतिक अनुकूलन एकसाथ चलैत अछि।

अनुवाद-शास्त्रमे योगदान: ★★★★★ — असाधारण

३३. बिपिन झा

रचना: यान्त्रिक अनुवाद आ Polysemy

मैथिलीमे मशीन-अनुवादक चुनौती — विशेषतः एकाधिक अर्थवाले शब्द (polysemy) — पर ई तकनीकी-भाषावैज्ञानिक विश्लेषण।

नव्य न्याय आ कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान

गंगेशक नव्य न्यायमे 'उपाधि' (qualifier) आ 'अनुयोगी' (subject) क जे सूक्ष्म विश्लेषण अछि, ओ मशीन-अनुवादक अर्थ-विश्लेषणमे प्रयुक्त हो सकैत अछि। बिपिन झा ई सम्बन्धकेँ स्पर्श करैत छथि।

इसरायली कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञानसँ तुलना

इसरायलमे हिब्रूक लेल विकसित कम्प्यूटेशनल भाषाविज्ञान-पद्धति मैथिलीक लेल अनुकरणीय अछि।

तकनीकी-भाषावैज्ञानिक योगदान: ★★★★★ — असाधारण

३४. डॉ. कैलाश कुमार मिश्र

रचनाएँ: मिथिला चित्रकला (पेंटिंग): भूत, वर्तमान आ भविष्य / यायावरी (हाफलोंग, बृन्दावन, लोअर दिहांग घाटी, संगाईप्राउ: नागा पूर्वजक स्मरण)

डॉ. मिश्रक यायावरी — भारतक विविध क्षेत्रक यात्रा-वृत्तान्त — संकलनक सबसँ विविध आ रोचक रचनाएँ अछि।

मिथिला चित्रकला — समानान्तर इतिहासमे कला

मिथिला चित्रकलाक इतिहास-पुनर्लेखन डॉ. मिश्रक प्रमुख योगदान अछि। कैसेपर बनाओल घर-चित्रसँ वैश्विक कला-दीर्घाकेँ पहुँचबाक यात्रा — ई विदेह समानान्तर इतिहासक एकटा गौरवशाली अध्याय अछि।

यायावरी — बहुसांस्कृतिक दृष्टि

हाफलोंग (असम), बृन्दावन, दिहांग घाटी (अरुणाचल), संगाईप्राउ (नागालैण्ड) — ई यात्राएँ भारतक सांस्कृतिक विविधताक दर्पण अछि। चीनी 'यूजी' (游

ड्ट travel literature) परम्परामे जेना यात्रा-विवरण दार्शनिक चिन्तनक माध्यम बनैत अछि, तेहने डॉ. मिश्रक यायावरी अछि।

इसरायली ओरिएण्टेशन दर्शन

'माँकेर भाय'क फुटपाथी चिन्तन — गरिबी, सम्मान आ जीवन-दर्शनपर — मार्टिन बुबरक 'I-Thou' (मैं-तुम) दर्शनसँ तुलनीय अछि, जाहिमे दुसरकेँ वस्तु नहि, व्यक्ति मानल जाइत अछि।

सांस्कृतिक विविधता: ★★★★★ — असाधारण

साहित्यिक गुण: ★★★★★ — असाधारण

३५. मानेश्वर मनुज

रचनाएँ: मैथिल दृष्टिक प्रसंग मुम्बईसँ एक चिट्ठी / बुच्ची दाइक नीलामी कोना से देखू / मानसरोवरक भूमिकाक प्रासंगिकता

मनुज जी तीन भिन्न विधा आ विषयमे लिखैत छथि — पत्र, व्यंग्य-निबन्ध आ तीर्थ-विश्लेषण।

'बुच्ची दाइक नीलामी' — व्यंग्यमे सामाजिक समालोचना

ई व्यंग्य-निबन्ध मैथिली महिलाकेँ 'नीलाम'क रूपमे देखबाक पितृसत्तात्मक दृष्टिपर कठोर प्रहार करैत अछि। देरीदाक विखण्डन (deconstruction) पद्धतिसँ देखल जाय तँ 'नीलामी' शब्दमे ही समाजक विकृति छुपल अछि।

मानसरोवरक आध्यात्मिक-सांस्कृतिक विश्लेषण

तिब्बती बौद्ध धर्म, हिन्दू आस्था आ मैथिली सांस्कृतिक परम्पराक त्रिवेणी — मानसरोवरक प्रासंगिकतापर मनुज जीक दृष्टि बहु-सांस्कृतिक अछि।

व्यंग्यक तीव्रता: ★★★★★ — असाधारण

३६. ज्योति झा चौधरी

रचनाएँ: एलिंग आर्ट ग्रुपक ९५म वार्षिक कला प्रदर्शनी / यूके में मिथिला सांस्कृतिक कार्यक्रम

लन्दनमे मिथिला कलाक प्रदर्शनी आ सांस्कृतिक कार्यक्रमक विवरण।

डायस्पोरा कला आ सांस्कृतिक पहिचान

लन्दनमे मिथिला कलाक प्रदर्शनी ई साबित करैत अछि जे मैथिली संस्कृति राष्ट्र-राज्यक सीमाकेँ पार कऽ विश्व-मंचपर उपस्थित अछि।

यहूदी डायस्पोरा कला-परम्परासँ प्रेरणा

यहूदी डायस्पोरामे कलाक माध्यमसँ सांस्कृतिक पहिचानकेँ जीवित रखबाक परम्परा मैथिली डायस्पोरा कलाकारकेँ प्रेरित करि सकैत अछि।

डायस्पोरा-कला दस्तावेज: ★★★★☆ — उत्कृष्ट

३७. नर्श कुमार झा

रचनाएँ: मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण / कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनिक / 'अंबरा'

मैथिली उपन्यासमे दलित प्रतिनिधित्वपर ई शोधपत्र एकटा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण योगदान अछि।

दलित साहित्य आ विदेह समानान्तर इतिहास

मैथिली साहित्यमे दलित पात्रकेँ कोना चित्रित कएल गेल अछि — ओकरा 'अन्य'क रूपमे देखल गेल या 'व्यक्ति'क रूपमे — ई प्रश्न नर्श कुमार झाक केन्द्रीय चिन्ता अछि।

स्पीवाकक 'सबाल्टर्न' सिद्धान्त

स्पीवाककेँ अनुसरण करैत देखल जाय तँ मैथिली साहित्यमे दलित पात्र प्रायः 'सबाल्टर्न' छथि — हुनकर आवाज या तँ अनुपस्थित छनि या उच्च-वर्गीय लेखकक मध्यस्थतासँ आबैत अछि। नर्श कुमार झा एहि सीमाकेँ स्पष्टतासँ चिन्हित करैत छथि।

यहूदी 'एदुत' (साक्ष्य) परम्परा

यहूदी परम्परामे 'एदुत' (testimony/साक्ष्य) — होलोकास्ट-साक्ष्य साहित्यक परम्परा — दलित साहित्यक 'अनुभव-केन्द्रितता' (experience-

centeredness)क समानान्तर अछि। दुनू प्रणालीमे 'जे भोगल, ओएह कहत' — ई सिद्धान्त केन्द्रीय अछि।

दलित साहित्य-अध्ययन: ★★★★★ — असाधारण

३८. रमाकान्त राय 'रमा' (आचार्य दिव्यचक्षु)

रचनाएँ: गामक नवजिनगी / आरसी बाबूक व्यक्तित्व / राष्ट्रीय सेमिनार / 'मौलाइल गाँवक फूल'

बहुविध रचनाएँ एकटा विपुल लेखक आ आलोचकक।

प्रगतिशील आ सनातन विचारधाराक समन्वय

रमाकान्त राय जीक सबसँ मौलिक योगदान अछि — मैथिलीमे प्रगतिशील आ परम्परावादी विचारधाराकेँ एकटा सार्थक संवादमे लाबैत उपन्यासकेँ 'समन्वयात्मक' घोषित करब। ई हेगेलक द्वन्द्वात्मक (thesis-antithesis-synthesis) पद्धतिक मैथिली अनुप्रयोग अछि।

वैचारिक योगदान: ★★★★☆ — उत्कृष्ट

३९. डॉ. योगानन्द झा

रचनाएँ: गामक जिनगी / उषा किरण खानक 'जाइ सँ पहिने' / 'मौलाइल गाँवक फूल'

उषा किरण खानक खण्डकाव्यपर ई विश्लेषण विशेष उल्लेखनीय अछि।

नारीवादी पाठ — सीताक पुनर्पाठ

उषा किरण खानक 'जाइ सँ पहिने'मे सीताकेँ एकटा सशक्त नारी-पात्रक रूपमे पुनः स्थापित कएल गेल अछि। योगानन्द जी ई नारीवादी पाठकेँ सहानुभूतिक संग विश्लेषित करैत छथि।

यहूदी 'मिद्राश' आ सीताक पुनर्पाठ

जेना यहूदी मिद्राश परम्परामे महिला पात्रकेँ (एस्थर, रूथ, देबोरा) नव दृष्टिसँ पढ़ल जाइत अछि, तेहने मैथिली-हिन्दी-संस्कृत परम्परामे सीताक पुनर्पाठ एकटा नव नारीवादी मिद्राश अछि।

नारीवादी समालोचना: ★★★★★ — असाधारण

४०. डॉ. बचेश्वर झा

रचना: मौलाइल गाँवक फूल

'मौलाइल गाँवक फूल'पर एकटा और समालोचना।

उपन्यासक सामाजिक यथार्थवादकेँ डॉ. झा मैथिली साहित्यक दीर्घ परम्पराक सन्दर्भमे रखैत विश्लेषित करैत छथि।

शास्त्रीय विश्लेषण: ★★★☆☆ — उत्तम

४१. नवेन्दु कुमार झा

रचनाएँ: रेल लाइनसँ जुड़त भारत आ नेपाल / जाति व्यवस्था / मिथिलांचलमे नव उद्योग

तीन पत्रकारिता-वृत्त जे मिथिलाक समसामयिक विकास-प्रश्नसभपर केन्द्रित अछि।

विकास, जाति-व्यवस्था आ सीमापारक सम्बन्ध — ई तीनू विषय मिथिलाक वर्तमान जीवनक मुख्य प्रश्न छथि। नवेन्दु जीक पत्रकारिता विदेह समानान्तर इतिहासकेँ समसामयिक बनाइत अछि।

पत्रकारितामे योगदान: ★★★★☆ — उत्कृष्ट

४२. मन्थेश्वर झा

रचना: चरित्र चित्रणक बाजीगर — जगदीश प्रसाद मण्डल

जगदीश प्रसाद मण्डलक चरित्र-चित्रण कलापर एकटा सुन्दर विश्लेषण।

मण्डलक पात्रसभ जीवन्त छथि कारण ओ सामाजिक प्रकार्य (social type) नहि, बल्कि व्यक्ति अछि। मन्थेश्वर झा एहि बातकेँ ई.एम. फोस्टरक 'flat' बनाम 'round' character सिद्धान्तसँ परखैत छथि।

चरित्र-विश्लेषण: ★★★★☆ — उत्कृष्ट

४३. राजदेव मण्डल

रचना: कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनिक लेल पत्र

एकटा उपन्यास-विधिमे लिखल पत्र — जे समसामयिक समालोचनाक एकटा नव रूप प्रस्तुत करैत अछि।

पत्र-विधिमे लिखल समालोचना एकटा अभिनव प्रयोग अछि। एहिमे समालोचकक व्यक्तित्व आ रचनाकारक बीच एकटा संवाद-सम्बन्ध स्थापित होइत अछि।

नव समालोचना-रूप: ★★★★☆ — उत्कृष्ट

४४. कृपानन्द झा

रचना: मैथिलक जन-नायक चुनचुन मिश्र

मैथिली आन्दोलनक प्रसिद्ध नेता चुनचुन मिश्रक जीवन आ संघर्षपर ई जीवनी-वृत्त।

जन-नायक आ विदेह फ्रेमवर्क

चुनचुन मिश्र मिथिला राज्य आन्दोलनक एकटा प्रमुख व्यक्तित्व छलाह। कृपानन्द जी हुनकर संघर्षकेँ विदेह समानान्तर इतिहासमे एकटा महत्त्वपूर्ण अध्यायक रूपमे दर्ज करैत छथि।

ऐतिहासिक दस्तावेज: ★★★★★ — असाधारण

४५. रमेश

रचनाएँ: प्रो. मायानन्द मिश्रक 'रमनगर' कथामे लागल 'मुदा' / पंकज पराशरक साहित्यिक चोरी

दुइ विवादास्पद विषयपर ई रचनाएँ — एकटा साहित्यिक व्याख्याक त्रुटिपर आ दोसर साहित्यिक चोरीपर।

साहित्यिक नैतिकता आ नव्य न्याय

गंगेशक नव्य न्यायमे 'अपदेश' (false argument) आ 'दोष' (fallacy)क विस्तृत वर्गीकरण अछि। साहित्यिक चोरी एकटा 'दोष' अछि — रमेश जी एहि नैतिक प्रश्नकेँ साहस सहित उठबैत छथि।

यहूदी नैतिक सिद्धान्त 'ईमेत'

यहूदी नैतिकतामे 'ईमेत' (emet — सत्य) केन्द्रीय मूल्य अछि। साहित्यिक चोरीक विरोध एही 'ईमेत' मूल्यक रक्षा अछि।

साहसिक समालोचना: ★★★★★ — असाधारण

४६. सुमित आनन्द

रचना: संवाद — कार्यशालाक आयोजन

एकटा साहित्यिक कार्यशालाक रिपोर्त।

साहित्यिक संवाद-आयोजनक दस्तावेजीकरण विदेह फ्रेमवर्कमे अत्यन्त उपयोगी अछि।

दस्तावेज: ★★★☆☆ — उत्तम

४७. धनाकर ठाकुर

रचना: जगदीश प्रसाद मण्डलक 'गामक जिनगी'

'गामक जिनगी'पर एकटा और विश्लेषण, जे विभिन्न दृष्टिकोणसँ एकही कृतिकेँ परखबाक एहि संकलनक पद्धतिकेँ दर्शबैत अछि।

एकटा उपन्यासपर बहुत रास समालोचनाएँ — ई मैथिली समालोचना-परम्परामे संवाद आ बहसकेँ प्रोत्साहित करबाक एकटा महत्त्वपूर्ण प्रयास अछि।

बहु-दृष्टि विश्लेषण: ★★★★☆ — उत्कृष्ट

४८. वीरेन्द्र कुमार यादव

रचना: महाविष्णु यज्ञ-मेलाक दृश्य

एकटा धार्मिक-सांस्कृतिक आयोजनक विवरण।

मिथिलाक धार्मिक-सांस्कृतिक जीवनकेँ दर्ज करब विदेह समानान्तर इतिहासमे उपयोगी अछि।

सांस्कृतिक दस्तावेज: ★★★☆☆ — उत्तम

४९. रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

रचना: अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन २०६७

नेपालमे आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनक विस्तृत रिपोर्ट।

अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन मैथिली भाषाकेँ वैश्विक मंचपर स्थापित करबाक महत्त्वपूर्ण प्रयास अछि। कापड़ि 'भ्रमर' जीक रिपोर्ट नेपाली मैथिलीक संघर्ष आ सम्भावनाकेँ एकसाथ दर्शबैत अछि।

वैश्विक मैथिली दस्तावेज: ★★★★☆ — उत्कृष्ट

समग्र मूल्यांकन

विदेह सदेह १०क ऐतिहासिक महत्त्व

विदेह सदेह १० मैथिली साहित्य समालोचनाक एकटा ऐतिहासिक दस्तावेज अछि। एहिमे ४९+ लेखकक ५०+ रचना संकलित अछि, जे मैथिलीक सम्पूर्ण साहित्यिक-सांस्कृतिक-राजनीतिक परिदृश्यकेँ एकटा समानान्तर इतिहासक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि।

चारि सैद्धान्तिक ढाँचाक निष्कर्ष

१. विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क

संकलन एहि फ्रेमवर्कक सबसँ सशक्त उदाहरण अछि। मैथिली मुख्यधारसँ अलग, मुदा जीवन्त आ प्रवाहमान अछि — ई सिद्धान्त ई संकलन पृष्ठ-दर-पृष्ठ सिद्ध करैत अछि। डायस्पोरा (लन्दन, मुम्बई, दिल्ली) सँ लऽ नेपाल धरि मैथिलीक उपस्थिति एहि इतिहासक व्यापकताकेँ प्रमाणित करैत अछि।

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह सदेह १० — सम्पूर्ण समालोचना — विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क, गंगेशक नव्य न्याय,

अध्याय 26 · विदेह सदेह-११ — Videha Sadeha 11

सारांश १. प्रारम्भिक संदर्भ: संकलनक स्वरूप आ महत्त्व विदेह सदेह-११ विदेह ई-पत्रिका (www.videha.co.in) क अंक १०१-११० सँ

चुनल सर्वश्रेष्ठ मैथिली गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन थिक। श्रुति प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा २०१२ मे प्रकाशित ई संकलन ५५१ पृष्ठ

आ लगभग ५०-६० रचनाकारक प्रतिनिधि सृजन समेटने अछि। गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादक), उमेश मण्डल (सह-सम्पादक), शिव कुमार झा

मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण), नागेन्द्र कुमार झा, पञ्जीकार विद्यानन्द झा, ज्योति झा चौधरी, रश्मि रेखा सिन्हा, डॉ. जया वर्मा, डॉ. राजीव

कुमार वर्मा, बेचन ठाकुर, पूनम मण्डल, प्रियंका झा, विनीत उत्पल — एहि विशाल सम्पादकीय दलक नेतृत्वमे तैयार ई संकलन विदेह

मैथिली साहित्य आन्दोलनक मूल नारा 'मानुषीमिह संस्कृताम्' केँ सार्थक करैत अछि।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · आलोचना · सांस्कृतिक अध्ययन · समाज-समीक्षा

१. प्रारम्भिक संदर्भ: संकलनक स्वरूप आ महत्त्व

विदेह सदेह-११ विदेह ई-पत्रिका (www.videha.co.in) क अंक १०१-११० सँ चुनल सर्वश्रेष्ठ मैथिली गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन थिक। श्रुति प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा २०१२ मे प्रकाशित ई संकलन ५५१ पृष्ठ आ लगभग ५०-६० रचनाकारक प्रतिनिधि सृजन समेटने अछि। एकर ISSN 2229-547X अछि।

गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादक), उमेश मण्डल (सह-सम्पादक), शिव कुमार झा, मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण), नागेन्द्र कुमार झा, पञ्जीकार विद्यानन्द झा, ज्योति झा चौधरी, रश्मि रेखा सिन्हा, डॉ. जया वर्मा, डॉ. राजीव कुमार वर्मा, बेचन ठाकुर, पूनम मण्डल, प्रियंका झा, विनीत उत्पल — एहि विशाल सम्पादकीय दलक नेतृत्वमे तैयार ई संकलन विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलनक मूल नारा 'मानुषीमिह संस्कृताम्' केँ सार्थक करैत अछि।

चारि सैद्धान्तिक धुरीपर एहि संकलनक समीक्षा करबाक उद्देश्य अछि — (१) भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति सौन्दर्यशास्त्रक परम्परामे एहि रचनाकारक अवदान तौलब, (२) पाश्चात्य समालोचनाक औजारसँ एहि पाठक संरचना, विचारधारा आ प्रतिरोधक स्वर विश्लेषित करब, (३) गङ्गेश उपाध्यायक अन्वय-व्याप्ति-प्रमाण त्रयीसँ एहि पाठमे ज्ञानमीमांसीय सत्यक खोज करब, आ (४) विदेह समानान्तर साहित्य इतिहासक ढाँचामे एहि रचनाकार सभक संस्थागत अवस्थिति निर्धारित करब।

— — —

२. सम्पादकीय खण्डक समीक्षा

२.२ नवजु उत्सव — सम्पादकीय: 'बहिरा नाचए अपने ताल'

नवजु उत्सव (नव कुमार झा) क सम्पादकीय तीव्र आलोचनात्मक वैयक्तिक वक्तव्य थिक। शीर्षकेमे वक्रोक्ति — 'बहिरा नाचए अपने ताल' — साहित्यिक संस्थाक बाधिरतापर कटाक्ष करैत अछि। रस-दृष्टिसँ एहिमे रौद्र रसक सञ्चार अछि।

— — —

३. गद्य खण्ड — निबन्ध, प्रबन्ध, समालोचना

३.१ डॉ. अरुण कुमार सिंह

३.१.१ उजड़ैत गाम: बसैत शहर?

'उजड़ैत गाम: बसैत शहर?' एकटा यात्रावृत्त-सह-समाजशास्त्रीय निबन्ध थिक। लेखक डॉ. अरुण कुमार सिंह कोशी कातक 'बलुआहा' आ 'शिशौना' गामक भ्रमण-वृत्तान्तक माध्यमे आधुनिक ग्रामीण संकटक गहन चित्रण करैत छथि।

रस-सिद्धान्त दृष्टिसँ: 'ओइ ठामक लोकक जीवन केर मार्मिक चित्रण मैथिली साहित्यकेँ के कहए, भारतक अनेको साहित्य मध्य विद्वान लेखक लोकनि प्रस्तुत कए चुकल छथि' — एहिमे करुण रसक स्थायिभाव शोक आ संचारिभाव विषाद प्रत्यक्ष अछि। अभिनवगुप्तक रसास्वाद सिद्धान्त कहैत अछि जे करुण रसमे

पाठक 'सहृदय' बनैत अछि — एहि निबन्धक पाठक एहिना विगलित होइत अछि।

पाश्चात्य दृष्टिसँ: गोल्डस्मिथक 'The Deserted Village' (१७७०) आ ओलिभर गोल्डस्मिथक ग्रामीण पलायन-विमर्शसँ एहि निबन्धक तुलना उचित अछि। Raymond Williamsक 'The Country and the City' (१९७३) क तर्क — जे ग्रामीण idealisation पूँजीक विरोधाभाससँ उत्पन्न होइत अछि — एहिठाम परीक्षणीय अछि।

नव्य-न्याय दृष्टिसँ: लेखक AC-युक्त गाड़ीसँ 'उजड़ैत गाम' देखैत छथि — एहिमे 'प्रमाता' (knower) आ 'विषय' (known) क अन्तर्विरोध अछि। गङ्गेशक 'प्रमाणविभाग' — अर्थात् ज्ञानक माध्यम सत्यकेँ किएना प्रभावित करैत अछि — एहि स्तरपर प्रासंगिक।

नोट: डॉ. अरुण कुमार सिंहक 'भाषा जातिगत सम्पत्ति नहि अपितु सामाजिक सम्पत्ति' — ई दोसर लेख भाषाशास्त्रीय-राजनीतिक निबन्ध थिक जाहिमे Noam Chomskyक Universal Grammar आ Saussureक langue/parole द्वन्द्वक भारतीय प्रयोग अछि।

३.२ राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' — मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' क लेख लोकनायक सलहेसपर आयोजित संगोष्ठीक विवरण थिक। सलहेस — दुसाध (पासवान) जातिक महानायक — क आख्यानकेँ मुख्यधाराक मैथिली साहित्यसँ प्राय: बाहर राखल गेल अछि।

विदेह इतिहास-ढाँचासँ: ई लेख दलित आ सुबाल्टर्न साहित्य-परम्पराकेँ मैथिली इतिहासमे स्थापित करबाक प्रयास थिक। Antonio Gramsciक subaltern history theory आ B.R. अम्बेडकरक सांस्कृतिक पुनर्निर्माण-सिद्धान्तक अनुगामी।

३.३ मधुपनाथ झा — बिदापत नाच

मधुपनाथ झाक 'बिदापत नाच' फणीश्वरनाथ रेणुक 'नेपोटाज' (Nepotage) क अनुवाद थिक। बिदापत नाच मिथिलाक लोकनाट्य-परम्पराक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विधा। रेणुक मूल हिन्दीसँ मैथिलीमे ई अनुवाद विदेहक अनुवाद विभागक सक्रियता दर्शबैत अछि।

रस-दृष्टि: बिदापत नाच मुख्यतः शृङ्गार आ हास्य रसक लोकनाट्य थिक। रेणुक गद्यमे लोकसंस्कृतिक गहन ज्ञान आ करुण रसक मिश्रण अछि। मधुपनाथ झाक अनुवाद मूलक रसभावकेँ मैथिलीमे सुरक्षित करबामे सफल अछि।

३.४ अतुलेश्वर — सगर रातिक राजनीति

अतुलेश्वर (अतुलेश्वर) क 'सगर रात दीप जरए, आन्दोलन आ बभनभोज' एकटा महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक लेख थिक। ई लेख 'सगर रात दीप जरए' आन्दोलनपर साहित्य अकादेमी आ सामन्ती प्रवृत्तिक घुसपैठक विरुद्ध चेतावनी थिक।

पाश्चात्य दृष्टिसँ: Pierre Bourdieuक 'field theory' — जे साहित्यिक क्षेत्रमे capital (सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक) क प्रतिस्पर्धा देखैत अछि — एहि लेखक विश्लेषणमे अत्यन्त उपयोगी। 'बभनभोज' शब्दमे caste capital क प्रयोग अछि।

विदेह ढाँचासँ: ई लेख संस्थागत कब्जाक विरुद्ध जनतान्त्रिक आन्दोलन-रक्षाक घोषणापत्र थिक। विदेहक समानान्तर संस्था-निर्माणक औचित्य एहिसँ स्पष्ट होइत अछि।

३.५ विनीत उत्पल — आधुनिक मैथिली नाटक आ जातिवादी रंगमंच

विनीत उत्पलक दीर्घ आलोचनात्मक लेख 'आधुनिक मैथिली नाटक आ टुच्चा नाटककारक जातिवादी रंगमंचक अवधारणा' मैथिली रंगकर्मक इतिहास-राजनीतिक विश्लेषण थिक।

मुख्य तर्क: (१) बेचन ठाकुरक समानान्तर रंगमंच जातिवादी मैथिली नाटककारक विरोधमे ठाढ़ अछि, (२) दिल्लीमे भेल साहित्य अकादेमी कथा गोष्ठी (तथाकथित ७६म सगर रात दीप जरए) मे मात्र १८ लोक भोर तक रहल, जखन कि मिथिलाक गाममे मचान आ चौबटियापर हजारो लोक मुँहजबानी कथा सुनैत अछि।

पाश्चात्य दृष्टिसँ: Bertolt Brechtक epic theatre — जे दर्शककेँ critical observer बनबैत अछि — आ Paulo Freireक pedagogy of the oppressed — जे उत्पीड़ितकेँ अपन सांस्कृतिक अभिव्यक्ति स्वयं देबाक अधिकार दैत अछि — एहि लेखक सैद्धान्तिक आधार थिक।

रस-सिद्धान्त: विनीत उत्पल वीर रसमे लिखैत छथि। 'ओ टुच्चा कोना अछि जे बिना कोनो तामझामक, बिना मीडिया प्रबंधनक, बिना प्रचारक, अपन रचनात्मकतामे लागल अछि' — एहिमे उत्साहक संचार (वीर रसक स्थायिभाव) स्पष्ट।

३.६ पूनम मण्डल — आरती कुमारी आ सगर रात दीप जरए

पूनम मण्डलक लेख डॉ. आरती कुमारी (१९६७-२०१२) क प्रति श्रद्धाञ्जलि आ 'सगर रात दीप जरए' आन्दोलनक विवादक दस्तावेजीकरण दुनू थिक। यवन आरती जी गोष्ठीक माला उठेने रहथिन, तकर बादो हुनका सँ सामन्ती रूपेँ माला लऽ लेल गेल — ई प्रसंग करुण रसक सञ्चार करैत अछि।

नव्य-न्याय दृष्टिसँ: लेखमे Facebook conversation क प्रत्यक्ष उद्धरण — ई digital primary source क प्रामाणिकता (pratyaksha pramana) क नव रूप थिक।

३.७ आशीष अनचिन्हार — मैथिली गजलकार परिचय श्रृंखला

आशीष अनचिन्हार मैथिली गजलक प्रमुख समालोचक थिकाह। 'सगर रात दीप जरए' केर अन्त आ साहित्य अकादेमी कथा गोष्ठीक उदय' — एहि लेखमे आशीष अनचिन्हार सांस्थानिक राजनीतिक विश्लेषण करैत छथि।

अनचिन्हार मैथिली गजलमे 'बहर' (prosodic metre) क विशेषज्ञ छथि। हुनकर गजल-सिद्धान्त (जकरा 'अनचिन्हार फॉर्मूला' कहल जाइत अछि) अरबी-फारसी प्रोसोडी आ मैथिली छन्दशास्त्रक संश्लेषण करैत अछि।

३.८ उमेश मण्डल — मैथिली युवा रचना-धर्मिता

उमेश मण्डलक 'मैथिली युवा रचना-धर्मिता: परम्परा परिवर्तन आ भविष्य' एकटा विचारोत्तेजक निबन्ध थिक जाहिमे ओ साहित्य अकादेमीक शहरी-केन्द्रित गोष्ठी परम्परापर प्रश्न उठबैत छथि।

'गोष्ठी गामो-घरक शहर-कसबामे हुअए जेना झंझारपुर, मधेपुर, सकरी, धनश्यामपुर...' — एहिमे decentralization of cultural capital क माँग अछि। Bourdieuक sense: ई मैथिलीक native speakers केँ cultural production मे शामिल करबाक आग्रह थिक।

एकैसम शताब्दीक पहिल दशकक सर्वश्रेष्ठ कवि राजदेव मण्डलकेँ कोलकाता कवि गोष्ठीमे नहि बजाओल गेल — एहि प्रसंगमे सांस्थानिक exclusion क तीव्र आलोचना अछि। विदेहक समानान्तर आन्दोलनक औचित्य एहिसँ पुष्ट होइत अछि।

— — —

४. कथा खण्ड — विहनि-लघु-दीर्घ कथाक विश्लेषण

४.१ जगदानन्द झा 'मनु' — बहु-कथा संग्रह

जगदानन्द झा 'मनु' (ग्राम पोस्ट: हरिपुर डिह्टोल, मधुबनी) एहि संकलनक सर्वाधिक उत्पादक कथाकार थिकाह। हुनकर कथाक श्रृंखला — 'जबाव भोज', 'अनाथ', 'मार बाढ़नि — तेसरो बेटीए', 'की भगवती हमर घर एती?', 'एक करोड़क दहेज', 'उपकार', 'बलिक वागर', 'खुशी', 'आठ लाखक कार', 'कुण्ठित मानवता' — मिथिला समाजक बहुआयामी यथार्थक दस्तावेज थिक।

'जबाव भोज'

एकादशाक भोजमे डीलर साबक खर्चक आकलन करैत दू मित्रक संवाद — 'आठ-दस लाख रुपैया तँ लगबे करतैन' — एहिमे मृत्यु-अनुष्ठानक आर्थिक राजनीतिक विश्लेषण अछि। रस-दृष्टि: बीभत्स आ हास्य रसक मिश्रण। वक्रोक्ति: 'जबाव भोज' शीर्षक स्वयं wry irony थिक।

'अनाथ'

'अनाथ तँ आई हम भए गेलहुँ' — अस्सी वर्षक पिताक मृत्युपर पुत्रक आत्म-शोक। बड़का बेटा जे मुम्बईमे नोकरी करैत छथि, हुनकर 'तोरा लेल तँ एखन हम जीबैत छियौक' — एहिमे मातृत्व-पितृत्वक उलटाव करुण-काव्यात्मक वक्रोक्ति थिक। Freudian sense मे grief का displacement यहाँ उपस्थित अछि।

'मार बाढ़नि — तेसरो बेटीए'

रोशनी IAS परीक्षामे भारतमे पहिल दशमे स्थान पेबैत अछि — आ 'फूलो काकी' खुशीमे बाजैत छथि 'हे यौ हेमन्त बौआ, अहाँक तेसर ई फेटलाही बेटी तँ सगरो खनदान केँ जगमगा देलक' — एहिमे कन्या-विरोधी सामाजिक मनोवृत्तिक ironic reversal अछि। एहि विलक्षण संरचनामे anagnorisis (अरिस्टोटलक recognition scene) क मैथिली रूपान्तर अछि।

'एक करोड़क दहेज'

सामाजिक दहेज-विरोध कथाक क्षेत्रमे ई कथा नव आयाम जोड़ैत अछि — वर-पिता स्वयं 'एक करोड़' माँगैत अछि, मुदा ई दहेज-विरोधक ironic तरीका

थिक: 'जखन माँगने पन्द्रह लाख भेटत तँ एक करोड़ किएक नहि।' Brechtian alienation effect एहिमे कार्यरत अछि।

'उपकार'

रग्घू मजदूर अपन बीमार पत्नीकेँ कन्हापर उठा अस्पताल लऽ जाइत अछि — 'अहाँ जुनि चिन्ता करु, रिक्शासँ नीक सवारी हमर पीठक होएत' — एहिमे शरीर (labour) क मानवीय करुणामे रूपान्तरण अछि। मार्क्सिस्ट सेन्समे: alienated labour केँ dignity दैत ई कथा विश्वसाहित्यक श्रेणीमे अछि।

'खुशी'

बजारमे धनीपात बेचैत बच्चीसँ दीनानाथजी सभटा किनि बरदकेँ खुवा दैत छथि — 'ओई खुशीक मोल कतौ दस रुपैयासँ बेसी हेतैक' — एहिमे अर्थशास्त्र (economic value) आ मानवीय मूल्य (intrinsic value) क द्वन्द्व अछि। Tagoreक 'Gitanjali' क 'जखन ओ मोस्कि उठल' — तहिना एहि कथामे spiritual economy अछि।

'कुण्ठित मानवता'

मुरारीजी रातिक ताड़ीमे बेहोश पड़ल रहलाह — लोक बाजैत रहल 'बेसी शराब पी क' ड्रामा कय रहल अछि' — मुदा ओ एपेन्डिसाइटिसक पीड़ासँ मरि गेलाह। समाजक moral blindness क यथार्थवादी चित्रण। Tolstoyक 'The Death of Ivan Ilyich' (१८८६) क समान गहनता एहि लघु कथामे।

मनु जीक कथाशिल्प-विश्लेषण: (१) संवाद-प्रधान शिल्प, (२) अन्तमे ironic twist, (३) ग्रामीण मिथिलाक सूक्ष्म सामाजिक अवलोकन, (४) भाषाक लोकतान्त्रिक सरलता। रस-सिद्धान्तसँ: ओ करुण आ शान्त रसक मध्य आवागमन करैत छथि। नव्य-न्याय दृष्टिसँ: प्रत्येक कथा एकटा 'anumana' (inference) थिक — परिस्थितिसँ मानव-स्वभावक निष्कर्ष।

४.२ किशन कारीगर — 'अकल भेल वी'

किशन कारीगरक 'अकल भेल वी' लघुकथा थिक। शीर्षक स्वयं वक्रोक्ति थिक — बुद्धि आ मूर्खताक बीच philosophical reversal। दलित चेतना आ जातिव्यवस्थापर व्यंग्य। विदेह ढाँचासँ: दलित आ पिछड़ावर्गक स्वर विदेहमे सर्वाधिक प्रामाणिकरूपेँ अछि।

४.३ दुगानन्द मण्डल — 'कुकमा'

दुगानन्द मण्डलक 'कुकमा' मिथिलाक ग्रामीण जीवनक भाविक कथा थिक। लेखकक शिल्पमे स्थानीय वातावरण (milieu) क प्रामाणिक चित्रण अछि। रस-दृष्टि: प्राकृतिक बिम्बक माध्यमे शान्त रसक निर्माण।

४.४ ज्योति झा चौधरी — 'पुनरन्वेषण'

ज्योति झा चौधरी कला-सम्पादक होबाक अतिरिक्त रचनाकार सेहो थिकीह। 'पुनरन्वेषण' कथाक शीर्षकमे ही चेतनाक reorientation क संकेत अछि। नारी-चेतनाक परिप्रेक्ष्यमे एहि कथाक महत्त्व अछि। पाश्चात्य feminist narratology क दृष्टिसँ।

४.५ अमित मिश्र — 'प्रेमक अन्त', 'मोह', 'चोरि'

अमित मिश्रक तीन लघुकथा शृङ्गार आ मोहभङ्गक विविध आयाम प्रस्तुत करैत अछि। 'प्रेमक अन्त' मे प्रेम-सम्बन्धमे disillusionment क मनोविश्लेषणात्मक चित्रण, 'मोह' मे attachment आ detachment क बौद्ध-वेदान्तिक परिप्रेक्ष्य, 'चोरि' मे सामाजिक नैतिकताक ironic प्रश्न।

४.६ कामिनी कामायनी — 'सण्टूक उपहार'

कामिनी कामायनी मैथिली साहित्यक वरिष्ठ महिला रचनाकारिणी थिकीह। 'सण्टूक उपहार' बाल-मनोविज्ञान आ पारिवारिक सम्बन्धक कथा थिक। शिशु-दृष्टिकोण (child's point of view) सँ आख्यान — Piaget क cognitive development theory सँ सम्बद्ध।

४.७ ओमप्रकाश झा — 'निमोनहिया', 'गहींर आँखिक व्यथा', 'ढेपमारा गोसाईं'

ओमप्रकाश झा मैथिली गजलक विद्वान समीक्षक होबाक अतिरिक्त कथाकार सेहो थिकाह। हुनकर तीनू कथा मिथिलाक ग्रामीण जीवनक विविध पक्ष उद्घाटित करैत अछि। 'निमोनहिया' मे शहरी-ग्रामीण चिकित्सा असमानता, 'गहींर आँखिक व्यथा' मे स्त्री-यन्त्रणाक गहन मनोवैज्ञानिक चित्रण, 'ढेपमारा गोसाईं' मे लोकधर्म आ अन्धविश्वासक ironic विश्लेषण।

४.८ सुजीत कुमार झा — 'नव व्यापार', 'मिथिलाक कण-कणमे राम-सीता'

सुजीत कुमार झाक 'नव व्यापार' आधुनिक बाजारवादक व्यंग्यात्मक चित्रण थिक। 'मिथिलाक कण-कणमे राम-सीता' प्रबन्ध-निबन्ध थिक जाहिमे राम-सीताक मिथिला-विशिष्ट सांस्कृतिक अस्मिताक विवेचन अछि। एहिमे postcolonial mythography क प्रयोग — Homi Bhabhaक 'third space' क मिथिला-संस्करण।

४.९ चन्दन कुमार झा — 'ठकबुद्धि', 'लोहनावाली', 'बुच्चू भइया', विहनि कथाक श्रृंखला

चन्दन कुमार झा (सरर, मदनेश्वर स्थान, मधुबनी) एहि संकलनक अत्यन्त विपुल आ विविध रचनाकार थिकाह। हुनकर रचनाक श्रृंखला — 'ठकबुद्धि', 'लोहनावाली', 'बुच्चू भइया', 'समए होत बलवान', 'अनकर दुर्गति' — मिथिला समाजक बहुस्तरीय यथार्थ प्रस्तुत करैत अछि।

'ठकबुद्धि'

विलट राम कलेक्टर बनैत छथि — मुदा बुद्धिनाथ (पुरान दुश्मन) बेचनी (माय) क दरवज्जापर बैसल लोककेँ देखि 'राम-राम...चमारक दुआरपर...' बजैत अछि। ई जातिवादी मानसिकताक प्रत्यक्ष उद्घाटन थिक। 'ठकबुद्धि' — विलटक ओ समझ जे बच्चाबाबूक 'ठकपन' बुझैत छथि — Hegelian dialecticक resolution।

'लोहनावाली'

घरेलू हिंसाक शिकार लोहनावाली, मुटठियाचाउरक परम्परा, बच्चाक भविष्यमे आशा — एहि कथामे मैथिली महिला-लेखनक श्रेष्ठ उदाहरण अछि। Simone de Beauvoirक feminist existentialism — 'one is not born a woman, but rather becomes one' — एहिमे caste + gender double oppression क यथार्थ अछि।

'बुच्चू भइया'

'सभक भाई' बुच्चू भइयाक जीवन आ मृत्यु — समुदायक collective grief — एहिमे क्षेमेन्द्रक औचित्यशास्त्र (appropriateness theory) क दृष्टिसँ लोक-नायकत्वक portrayal उचित थिक। वीरोचित जीवन, करुण मृत्यु — करुण-वीर रसक मिश्रण।

'समए होत बलवान' (विहनि कथा)

'समय होत बलवान' — जमींदारी-युगक पतन आ मानवीय सम्बन्धमे परिवर्तन — एहि विहनि कथामे magical realism क आभास अछि। 'मलकाइन कहैत होइथिन... उठल — समय होत बलवान।'

४.१० जवाहर लाल कश्यप — 'ड्युटी'

'ड्युटी' एकटा तीव्र सामाजिक व्यंग्यकथा थिक। रमेसरा (ग्रामीण बालक) बम्बईमे दवाई खोजैत भटकैत अछि — एक सज्जन पता बतबैत छथि — मुदा चौकीदार बिना पूछने 'ड्युटी निर्वाह' कहि थप्पड़ मारि भगा दैत अछि। Kafka-esque bureaucratic absurdism — 'The Trial' आ 'The Castle' क मैथिली संस्करण।

४.११ रवि भूषण पाठक — 'तीनटा विहनि कथा'

रवि भूषण पाठकक विहनि कथाक संग्रह मिथिला जीवनक तीन अलग-अलग पक्षकेँ सञ्जीवनी देबैत अछि। लेखकक विहनि कथाक शिल्प-विशेषता — compression (सघनता), surprise ending, symbolic resonance।

४.१२ सत्यनारायण झा — 'डायरी', 'पाहुन'

'डायरी' आत्मकथात्मक-शिल्पमे लिखल कथा थिक। डायरी-रूपक प्रयोगसँ subjectivity आ interiority क आख्यान सम्भव होइत अछि — Samuel Richardsonक epistolary novel परम्पराक मैथिली रूप। 'पाहुन' मिथिलाक आतिथ्य परम्पराक बदलते रूपक चित्रण।

४.१३ मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण) — 'सबला'

'सबला' — शब्दमे ही प्रतिरोध — 'अबला' शब्दक उलटाव। मैथिली महिला-चेतनाक विकासक दृष्टिसँ यह कथा महत्त्वपूर्ण अछि। Judith Butlerक gender performativity theory एहिमे प्रासंगिक।

— — —

५. पद्य खण्ड — कविता आ गजलक विश्लेषण

५.१ सन्दीप कुमार साही — 'अप्पन गाँव'

'अप्पन गाँव' एकटा nostalgic कविता थिक जे मिथिलाक ग्रामीण जीवनक स्मृतिकेँ काव्यरूप दैत अछि। रस-दृष्टि: शृङ्गार-विप्रलम्भ आ करुण रसक मिश्रण — घरसँ दूर रहबाक वेदना।

५.२ शान्तिलक्ष्मी चौधरी — गजल १-४

शान्तिलक्ष्मी चौधरी मैथिली महिला-गजलकारक परम्परामे महत्त्वपूर्ण स्थान राखैत छथि। हुनकर चारि गजल स्त्री-अनुभव आ सामाजिक यथार्थकेँ गजल-विधामे ढालैत अछि। 'अनचिन्हार आखर' ब्लॉगक परम्परामे एहि गजलक स्थान उल्लेखनीय।

५.३ रमेश रञ्जन — 'बारुद'

'बारुद' एकटा राजनीतिक कविता थिक। 'कतेक धृष्ट अछि / बरुदक वेगवान कण / बेधैत चलि जाइत अछि शरीर / कम-सँ-कम जाति भेद तँ करितै' — एहि विलक्षण ironic imageमे जाति-भेद आ हिंसाक संयोजन अछि। Adorno क 'negative dialectics' क काव्यात्मक रूप।

'आन्दोलनपर गढ़गर / जातिक रंग लेपन कऽ कऽ / नरसंहारसँ रक्तच्छादित / अपना देहके / आकाशमे भूर कऽ कऽ' — एहिमे मिथिला आन्दोलनमे जातिवादी घुसपैठ आ उसकर bloodshed केर शक्तिशाली काव्यात्मक निरूपण अछि।

५.४ प्रकाश प्रेमी — 'रे गोधिया तो कोन्नी वे?'

'रे गोधिया तो कोन्नी वे, एन्हर आ चल देखे तमाशा' — यह लोकगीत-शैलीमे रचित राजनीतिक कविता थिक। 'माइयक वाति चिरे खातिर, नेतवा आउर फेकै हई पासा' — मातृभूमिक शोषण आ राजनीतिक जुआ-खेलक metaphor। भोजपुरी-मैथिली सीमावर्ती लोकभाषाक प्रयोग।

५.५ कामिनी कामायनी — 'काशीक घाट', 'फागुन राग'

'काशीक घाट'

'बाबन टा घाट सँ / टघरैत बहैत / नुकैत मुस्कैत...' — काशी-दर्शनमे पर्यावरणीय-आध्यात्मिक संकटक समन्वय। 'पण्डा सभहक लूट खसोट / वृद्ध आ नगरवधू...' — धर्म आ व्यापारिक शोषणक ironic juxtaposition।

रस-दृष्टि: शान्त रसक माध्यमे दार्शनिक चिन्तन। 'वएह तँ हमर स्वप्नक चिर प्रतीक्षित गाम' — काशी जखन गाम (मिथिला) बनि जाइत अछि, एहिमे Yeatsian Celtic revivalism क मैथिली रूपान्तर अछि।

'फागुन राग'

होलीक गीतमे प्रकृति, कामुकता, भोजन, सामाजिकता — सभक उत्सवी संयोजन। वाल्मीकिक किष्किन्धा-कांड (वसन्त-वर्णन) आ विद्यापतिक ऋतु-कविताक परम्परामे।

५.६ ज्योति झा चौधरी — 'प्रजातन्त्रक पुनर्निर्माण'

राजनीतिक-व्यंग्य कविता जे लोकतन्त्रक निर्माण आ ध्वंसक चक्रपर प्रश्न उठबैत अछि। Neruda आ Bertolt Brecht क committed poetry क मैथिली परम्पराक अनुगमन।

५.७ रूबी झा — 'निमोही', 'ओढ़नी लाल'

रूबी झाक 'निमोही' स्त्री-विरह आ प्रेम-व्यथाक लयात्मक अभिव्यक्ति थिक। 'ओढ़नी लाल' मे रंग-बिम्बक माध्यमे स्त्री-चेतना — Adrienne Richक Diving into the Wreck क मैथिली equivalent।

५.८ डॉ. धनाकर ठाकुर — 'जँ हो अपनापर विश्वास'

आत्मविश्वास आ स्वाभिमानपर कविता। डॉ. धनाकर ठाकुर मैथिली-हिन्दी दुनू भाषाक वरिष्ठ लेखक छथि। एहि कवितामे existentialist आत्म-स्वीकृतिक आह्वान अछि।

५.९ ओमप्रकाश झा — कुण्डलिया, रुबाइ, कविता, गीत

ओमप्रकाश झाक काव्य-रचना बहुविध छन्दमे अछि। कुण्डलिया (षट्पद-दोहा आधारित) आ रुबाइ (फारसी चतुष्पद) — दुनू परम्पराक संश्लेषण। एहिमे क्षेमेन्द्रक औचित्यशास्त्र — बहुविध विधा-प्रयोगक औचित्य — प्रमाणित होइत अछि।

५.१० जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' — गजल १-४, 'सभ्यता आ संस्कृति'

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' (जन्म: २७.११.१९५०, शम्भुआर, मधुबनी) मैथिली गजल परम्पराक महत्त्वपूर्ण स्तम्भ थिकाह।

गजल १: 'हम तमसायब गजल सुनायब'

'माइक करजा माटिक करजा / हमहूँ चुकायब गजल सुनायब'

एहिमे गजल-विधाकेँ सामाजिक ऋण-चुकानेक माध्यम बनाओल गेल अछि। रदीफ 'गजल सुनायब' — सभ शेरमे refrain थिक। काफिया 'तमसायब-अगुतायब-आयब-चुकायब-पड़ायब-आयब-सजायब' — नियमित। अनचिन्हार ब्लॉगक मानदण्डपर परीक्षण: मूलतः इन्द्रवज्रा वार्णिक बहरक निकट।

गजल २: 'गावी लुबधल आम साढ़ू'

'हमरा खातिर गाम स्वर्ग थिक / आ घर चारू धाम साढ़ू' — गाम-प्रेमक अभिव्यक्ति। काफिया 'साढ़ू' — रदीफसँ अलग काफिया।

'सभ्यता आ संस्कृति' (कविता)

'हम कहलियनि हम अपन विवाह सेहो ठीक कऽ लेलहुँ / बाबूजी नाराज भऽ गेलाह'

प्रेम-विवाह, दहेज-अस्वीकृति — आधुनिक पारिवारिक मूल्यक संघर्ष इस कविता का केन्द्रीय विषय। Anti-dowry discourse क काव्यात्मक प्रस्तुति।

५.११ मुन्नी कामत — 'नोराएल आँखि', 'किए वी हम अवूत', 'हमर मिथिला हमर प्राण', 'नारी'

मुन्नी कामत मैथिली महिला-काव्यमे दलित-स्त्री चेतनाक विशिष्ट स्वर थिकीह।

'किए वी हम अवूत'

'कोइ कहाबए हिन्दू-मुस्लिम / आ कोइ अवूत' — जाति-भेद आ धर्म-भेदक समान निषेध। अम्बेडकरीय दर्शनक काव्यात्मक रूपान्तरण। 'हम दूत (दूत) छी माँ जगदम्बाक / जे सबकेँ देखैत अछि समान' — सार्वभौमिक मातृत्वक आह्वान।

५.१२ पंकज झा — 'स्वयंके रीढ़युक्त बनाएमे लागल वी'

'स्वयंके रीढ़युक्त बनाएमे लागल वी' — आत्मसम्मान आ स्वाभिमानक काव्यात्मक आह्वान। Jean-Paul Sartre क 'bad faith' (mauvaise foi) — अर्थात् दूसरोक दृष्टिसँ स्वयंकेँ परिभाषित करबाक विरोध — एहि कवितामे।

५.१३ राजदेव मण्डल — 'कामना'

राजदेव मण्डल एकैसम शताब्दीक पहिल दशकक सर्वश्रेष्ठ मैथिली कवि (विदेह-मान्यता) थिकाह। हुनकर 'अम्बरा' कविता-संग्रह (२०१०) एहि संकलनमे स्थान पाओल। 'कामना' कवितामे राजदेव मण्डलक विशिष्ट काव्यदृष्टि — जे मिथिलाक माटि-पानि आ पिछड़ा-दलित जीवनक प्रामाणिक अभिव्यक्ति करैत अछि — स्पष्ट होइत अछि।

रस-दृष्टि: शान्त रस आ करुण रसक संयोजन। नव्य-न्याय दृष्टि: राजदेव मण्डलक कविताक प्रत्येक बिम्ब एकटा 'vyapti' (pervasive relation) स्थापित करैत अछि — जे मिथिलाक विशिष्टताकेँ सार्वभौमिकतासँ जोड़ैत अछि।

५.१४ अमित मिश्र — गीत, 'पहिल टिकुला', 'बुढ़ी काकी', 'गुलाम वी कनियाँक', 'मच्छर', 'आधुनिक बैण्ड'

अमित मिश्रक गीत-श्रृंखला मिथिलाक सामाजिक यथार्थकेँ हास्य-व्यंग्यक माध्यमे उद्घाटित करैत अछि। 'गुलाम वी कनियाँक' — प्रेम-गुलामी आ जेण्डर-हास्यक interplay। 'मच्छर' — मच्छरपर व्यंग्यक बहानेमे सामाजिक व्यंग्य।

५.१५ नवीन ठाकुर — 'द्वन्द्व निर्वाह'

'द्वन्द्व निर्वाह' — जीवनक विरोधाभासकेँ कोना निभाओल जाइत अछि — एहि विषयपर दार्शनिक कविता। Heraclitusक logos (विरोधी शक्तिक एकता) क काव्यात्मक रूप।

५.१६ डॉ. अरुण कुमार सिंह — 'भारतीय भाषाक हम बेटी मैथिली'

मैथिलीकेँ 'बेटी' रूपमे देखब — भाषाकेँ जेण्डर्ड personification देब — भारतीय साहित्यिक परम्परामे। Benedict Andersonक 'imagined community' — मैथिलीभाषी communities केँ एक करबाक काव्यात्मक प्रयास।

५.१७ आनन्द कुमार झा — 'मैया अहाँ बसै वी'

मातृभक्ति आ मिथिला-भूमिक प्रति भावनात्मक सम्बन्ध। रस-दृष्टि: भक्ति रसक काव्यात्मक अभिव्यक्ति। विदेह समानान्तर इतिहासमे भूमि-सम्पर्की काव्य-परम्पराक निरन्तरता।

५.१८ नवीन कुमार 'आशा' — 'विदेह परिवार बिनु रहब कोना', 'गर्भक आवाज', 'यौ भाई दहेजक अन्त करू', 'मिथिलाक की करू बखान'

नवीन कुमार 'आशा' विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलनक प्रति प्रतिबद्ध नव कवि छथि। 'विदेह परिवार बिनु रहब कोना' — इहाँ ई कविता साहित्यिक समुदाय आ digital community क एकत्वक घोषणापत्र थिक। 'गर्भक आवाज' — नारी-शरीरक अधिकारपर केन्द्रित।

५.१९ दिनेश 'रसिया' — 'हम पत्रकार'

पत्रकारिताक आत्म-परिचय आ सामाजिक भूमिकापर कविता। मैथिली पत्रकारिताक विकासमे विदेहक योगदान आ एहि कवितामे जागरूकता-अभियानक काव्यात्मक प्रतिनिधित्व।

५.२० जवाहरलाल कश्यप — 'यौ मीत'

मित्रताक गीत। मैथिली गीत-परम्पराक लोकतान्त्रिक रूप।

५.२१ अयोध्यानाथ चौधरी — 'कोनो किम्मत पर मिथिला महान चाही'

मिथिला-राज्य आन्दोलनक काव्यात्मक समर्थन। 'कोनो किम्मत पर' — absolute commitment क घोषणापत्र।

५.२२ रवि भूषण पाठक — 'बामे गाम दहिने गाम'

भौगोलिक-सांस्कृतिक identity क काव्यात्मक अन्वेषण। देशज बिम्बावली।

५.२३ नन्द विलास राय — 'मानवता', 'शिक्षित बेरोजगार'

'शिक्षित बेरोजगार' — आधुनिक भारतक शिक्षा-बाजार आ रोजगार-संकटपर व्यंग्यात्मक कविता।

५.२४ दमन कुमार झा — 'एकरा की कहबै..?'

बाल साहित्यक सम्पादक डॉ. दमन कुमार झाक कविता। शीर्षकेमे जिज्ञासा।

५.२५ नारायण झा — 'सम्मान', 'रहुआ संग्राम', 'मिथिला राज्यक आह्वान'

'मिथिला राज्यक आह्वान' — Mithila State Movement क सशक्त काव्यात्मक अभिव्यक्ति। 'रहुआ संग्राम' — जलसंकटपर।

५.२६ बेचन ठाकुर — 'वनभोज'

बेचन ठाकुर (मैथिली समानान्तर रंगमंचक प्रणेता) क 'वनभोज' कविता — शायद प्रकृति-उत्सवक रूपमे।

५.२७ रमेश मण्डल — 'ई व हि स्कूल प्राइवेट ट्यूटर'

शिक्षा-व्यापारीकरणपर व्यंग्य।

५.२८ सोनू कुमार झा 'रश्मि' — 'सन्तुलन'

जीवन-सन्तुलनपर दार्शनिक कविता।

५.२९ किशन कारीगर — मुखिया जी देखहिन / पदक दुरुपयोग / आगिला अंकमे छपत / एना किए ई की? / करीक्का रुपैया

किशन कारीगरक व्यंग्यात्मक कविता-श्रृंखला ग्रामीण राजनीतिक भ्रष्टाचार, सामाजिक अन्याय आ दलित जीवनक विविध पक्षकेँ sharp ironyसँ उद्घाटित करैत अछि।

५.३० कपिलेश्वर राउत — 'माइक ओरमे जे भाषा सिखलक'

माइक (microphone) माध्यमसँ भाषायी शक्ति-सम्बन्धपर कविता। Media आ लोकतन्त्रपर।

———

६. अनुवाद विभाग

६.१ मंगलेश डबराल (हिन्दी→मैथिली, अनुवाद: विनीत उत्पल)

मंगलेश डबराल हिन्दी कविताक प्रमुख आवाज थिकाह। विनीत उत्पल एहि कविता सभक ('बेर-बेर कहैत छलौं हम', 'दिल्ली मे एकटा दिन', 'भोठियाएल', 'अभिनय', 'किछु कालक लेल', 'घर शान्त अछि') मैथिली अनुवाद केलनि अछि। एहिमे हिन्दी आधुनिक काव्यक मैथिलीमे reception अछि।

६.२ स्व. लल्लन प्रसाद ठाकुर — 'हे रे चन्दा'

परम्परागत मैथिली गीत-परम्पराक पुनर्जीवन।

६.३ नित्यानन्द गायेनक हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद — आशीष अनचिन्हार

अनुवाद-विधाक माध्यमे भाषायी सेतु-निर्माण। आशीष अनचिन्हारक अनुवाद-कौशल।

६.४ कुरानक मैथिली अनुवाद — आशीष अनचिन्हार

कुरानक मैथिली अनुवाद — मैथिली भाषाक धार्मिक-बहुलतावादी चरित्रक प्रमाण। एहि प्रयासमे George Steinerक After Babel (1975) — translation as intercultural dialogue — क मैथिली रूप अछि।

———

७. गजल खण्डक विश्लेषण

७.१ शिव कुमार झा 'टिल्लू' — 'सगर रात दीप जरए'

एहि गजलमे 'सगर रात दीप जरए' आन्दोलनकेँ काव्यात्मक श्रद्धाञ्जलि अछि।

७.२ कमल मोहन चुन्नू — आजाद गजल १-२

'आजाद गजल' (free ghazal) क प्रयोग। ओमप्रकाश झाक समालोचना-दृष्टिसँ: आजाद गजलक औचित्य तखने जखन एकर घोषणा स्पष्ट होइ।

७.३ अनिल मल्लिक — गजल

मैथिली गजल-आन्दोलनमे अनिल मल्लिकक योगदान।

७.४ प्रेमचन्द पंकज — आजाद गजल १-२

प्रेमचन्द पंकज मैथिली गजलक स्थापित हस्ताक्षर थिकाह।

७.५ प्रभात राय भट्ट — गीत १-४, गजल

प्रभात राय भट्ट गीत आ गजल दुनू विधामे सक्रिय।

— — —

८. बाल साहित्य खण्ड

८.१ डॉ. शशिधर कुमर 'विदेह' — बाल साहित्य

डॉ. शशिधर कुमर 'विदेह' मैथिली बाल साहित्यक प्रमुख हस्ताक्षर थिकाह। 'बखा रानी', 'मिथिलाक धिया', 'नेनपन', 'पर्यावरण बचाउ', 'रौदी-दाही', 'हमहूँ आई सँ इस्कूल जएबै', 'कीनि दे हमरो खेलौना' — ई सात बाल-रचना अत्यन्त विविध।

'हमहूँ आई सँ इस्कूल जएबै' — बालिका शिक्षाक लेल प्रेरणात्मक। 'पर्यावरण बचाउ' — पारिस्थितिकीय चेतनाक बाल-स्तरपर प्रसार। 'कीनि दे हमरो खेलौना' — बच्चाक अधिकारक Unicef Convention on Rights of Child क मैथिली काव्यात्मक रूप।

८.२ डॉ. दमन कुमार झा — एकैसम शताब्दीक पहिल दशकमे मैथिली बाल साहित्य

डॉ. दमन कुमार झाक विद्वत्-लेख मैथिली बाल साहित्यक इतिहास आ वर्तमान स्थितिक सर्वेक्षण थिक। ई लेख मैथिली साहित्य इतिहासक दृष्टिसँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण संदर्भ-स्रोत थिक।

८.३ मिहिर झा, अमित मिश्र, चन्दन कुमार झा, जगदानन्द झा मनु, रूबी झा — बाल गजल

बाल गजलक परम्परा विदेहमे विशेष रूपेँ विकसित भेल अछि। चन्दन कुमार झाक आठ बाल गजल — बच्चासभक जिज्ञासा, आनन्द, समस्या — सभकेँ गजल-विधामे ढालब एकटा विशिष्ट प्रयोग थिक।

८.४ जगदीश प्रसाद मण्डल — लघुकथा 'एकोटा ने'

जगदीश प्रसाद मण्डल (विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११ विजेता) क 'एकोटा ने' लघुकथा बाल साहित्य खण्डमे अछि। मण्डल जी मैथिली कथा साहित्यक सबसँ सशक्त स्वर थिकाह।

'एकोटा ने' — नकारात्मक शीर्षक जे सकारात्मक सन्देश दैत अछि — ई paradox मण्डल जीक शिल्पक विशेषता थिक।

— — —

९. ओमप्रकाश झाक गजल-समालोचना — विशेष विश्लेषण

ओमप्रकाश झाक दू महत्त्वपूर्ण समालोचनात्मक लेख एहि संकलनमे स्थान पेने अछि:

९.१ 'बहुरूपिया रचना मे' — अरविन्द ठाकुरक गजल संग्रहपर

ओमप्रकाश झाक समालोचना अत्यन्त विद्वत्-पूर्ण आ निर्मम दुनू थिक। अरविन्द ठाकुरजीक 'बहुरूपिया प्रदेशमे' गजल संग्रहक गजलमे बहरक दोखक विस्तृत विश्लेषण करैत ओ लिखैत छथि: 'बिना दुरूस्त काफिया भेने गजल नहि भऽ सकैत अछि।' एहिमे नव्य-न्याय अनुशासन (prmakalakshana) क सैद्धान्तिक आग्रह अछि।

आलोचनाक नव्य-न्याय पद्धति: ओमप्रकाश झा प्रत्येक दोष-उदाहरणक साथ पृष्ठ-संख्या देबैत छथि — ई empirical criticism क भारतीय रूप थिक जे गङ्गेशक 'anumana' (inference from evidence) क अनुगामी।

९.२ 'घोघ उठबैत गजल' — विभूति आनन्दक गजल संग्रहपर

विभूति आनन्दक 'उठा रहल घोघ तिमिर' (१९८१) पर समालोचना। ओमप्रकाश झा एहि संग्रहकेँ 'अनचिन्हार आखर' युगसँ पूर्वक कृति मानि एहिक ऐतिहासिक महत्त्व स्वीकारैत छथि। 'एहि संग्रहक काफियाक नियम-पालनक प्रतिशत वर्तमान समयक संग्रह सभसँ बेसी अछि' — एहि निष्कर्षमे

comparative literary history अछि।

— — —

१०. सांस्कृतिक-संस्थागत विमर्श

१०.१ अरविन्द ठाकुर — 'मिथिलाक संस्कृति: किछु अप्रिय बिन्दु'

मिथिला संस्कृतिक आत्मालोचना — एकटा सांस्कृतिक insider द्वारा। 'अप्रिय बिन्दु' कहनाई स्वयं वक्रोक्ति थिक।

१०.२ नाटककार गुणनाथ झासँ चन्दन कुमार झाक गपशप

मैथिली रंगमंचक वरिष्ठ नाटककार गुणनाथ झासँ साक्षात्कार। रंगमंचक इतिहास, वर्तमान समस्या, आ भविष्यक संभावनापर। विदेहक oral history documentation क महत्त्वपूर्ण उदाहरण।

१०.३ परमेश्वर कापडि — 'मिथिला राज्य संघर्ष समिति'

मिथिला राज्य आन्दोलनक दस्तावेजीकरण। राजनीतिक माँगकेँ साहित्यिक मंचसँ उठाएब — विदेहक समानान्तर भूमिकाक उदाहरण।

१०.४ सुमित आनन्द — 'सोसाइटी टुडेक लोकार्पण'

पुस्तक-लोकार्पणक विवरण — साहित्यिक समाजशास्त्रक document।

१०.५ दुगानन्द मण्डल — 'टैगोर साहित्य पुरस्कारक बहाने', 'जीवन-संघर्ष (समीक्षा)'

टैगोर साहित्य पुरस्कार विवाद — जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ टैगोर पुरस्कार नहि देल जाएबाक विरुद्ध आन्दोलनात्मक लेख। 'जीवन-संघर्ष' पोथीक समीक्षा।

१०.६ डॉ. शशिधर कुमर 'विदेह' — 'अम्बरा (समीक्षा)'

राजदेव मण्डलक 'अम्बरा' (एकैसम शताब्दीक पहिल दशकक सर्वश्रेष्ठ मैथिली कविता-संग्रह) पर समीक्षा। एहि समीक्षामे भारतीय रस-सिद्धान्त आ मार्क्सिस्ट सौन्दर्यशास्त्र दुनूक समन्वय।

— — —

११. संश्लेषणात्मक मूल्यांकन

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह सदेह-११ — Videha Sadeha 11

अध्याय 27 · विदेह सदेह-१२ — Videha Sadeha 12

सारांश १. प्रारम्भिक संदर्भ: संकलनक स्वरूप आ महत्त्व विदेह सदेह-१२ विदेह ई-पत्रिका (www.videha.co.in) क अंक १११-११५ सँ

चुनल मैथिली गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन थिक। सहायक सम्पादक: शिव कुमार झा, मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)। भाषा-

सम्पादन: नागेन्द्र कुमार झा, पञ्जीकार विद्यानन्द झा।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · आलोचना · सांस्कृतिक अध्ययन · समाज-समीक्षा

१. प्रारम्भिक संदर्भ: संकलनक स्वरूप आ महत्त्व

विदेह सदेह-१२ विदेह ई-पत्रिका (www.videha.co.in) क अंक १११-११५ सँ चुनल मैथिली गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन थिक। श्रुति प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा २०१२ मे प्रकाशित एहि संकलनमे ISSN 2229-547X आ ISBN 978-93-80538-90-7 अछि। मूल्य भा.रू. २०० अछि।

सम्पादक गजेन्द्र ठाकुर, सह-सम्पादक उमेश मण्डल। सहायक सम्पादक: शिव कुमार झा, मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)। भाषा-सम्पादन: नागेन्द्र कुमार झा, पञ्जीकार विद्यानन्द झा। कला-सम्पादन: ज्योति झा चौधरी, रश्मि रेखा सिन्हा। सम्पादक-शोध-अन्वेषण: डॉ. जया वर्मा, डॉ. राजीव कुमार वर्मा। नाटक-रंगमंच-चलचित्र: बेचन ठाकुर। सूचना-सम्पर्क-समाद: पूनम मण्डल, प्रियंका झा। अनुवाद विभाग: विनीत उत्पल।

एहि संकलनमे सम्पादकीय, समालोचना, आशीष अनचिन्हारक 'काविया' (गजल-सिद्धान्त-ग्रन्थ), बाल गजल-सिद्धान्त, विभिन्न विधाक कविता, गजल, कथा (विहनि/लघु/दीर्घ), नाटक, पत्रकारिता आ संस्थागत विमर्श सभ अछि। ई संकलन मैथिली साहित्यक democratic parallel canon क एकटा महत्त्वपूर्ण स्तम्भ थिक।

———

२. गजेन्द्र ठाकुर — सम्पादकीय: संस्थागत राजनीति आ समानान्तर प्रतिरोध

एहि अंकक सम्पादकीय मैथिली साहित्यक संस्थागत राजनीतिक सर्वाधिक गहन दस्तावेज थिक। चारि प्रमुख विषय उठाओल गेल अछि:

२.२ राजकमल चौधरी मोनोग्राफ प्रकरण

सुभाष चन्द्र यादव द्वारा रचित राजकमल चौधरी मोनोग्राफ जे साहित्य अकादेमी द्वारा 'रामदेव झा आ मोहन भारद्वाजक कृपासँ' प्रकाशित नै भऽ सकल — एहि प्रकरणपर गङ्गेश गुञ्जनक प्रतिक्रिया सेहो उद्धृत अछि। गङ्गेश गुञ्जन लिखैत छथि जे 'समकालीन आ आगत पीढ़ी सेहो बुझओ ई कारी-कथा!'

विदेह ढाँचासँ: ई प्रकरण दर्शबैत अछि जे साहित्य अकादेमी केवल literary merit नै, अपितु जातिगत loyalty क आधारपर प्रकाशन निर्णय करैत अछि। Spivakक 'Can the Subaltern Speak?' — एहि प्रसंगमे उत्तर स्पष्ट अछि: विदेहक माध्यमे ओ बाजि सकैत अछि।

२.३ साहित्य अकादेमीमे ब्लैक मार्केटिंग

मैथिली समन्वयक पद लेल कालाबाजारीक विस्तृत रिपोर्ट सम्पादकीयमे अछि। सम्पादक उद्घाटित करैत छथि जे ऐमे सम्मिलित संस्थाएँ — 'विद्यापति सेवा संस्थान दरभंगा', 'अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद' आदि — 'कागजी अछि वा साहित्यिक नै, राजनीतिक अछि आ जातिवाद, क्षेत्रवाद आ आनुवंशिक आधारपर संचालित अछि।'

पाश्चात्य दृष्टिसँ: Max Weberक 'bureaucratic rationality' क विपरीत एहि 'patrimonial bureaucracy' (जातिगत-पारिवारिक नियन्त्रण) क उद्घाटन थिक। Foucaultक 'power/knowledge' — साहित्यिक संस्था केना power k माध्यमेँ ज्ञान (canonical literature) निर्माण करैत अछि — एहि विश्लेषणमे स्पष्ट अछि।

२.४ 'घर-बाहर' जातिवादी रंगमंच

'घर-बाहर' पत्रिका जुलाई २०१२ मे पंकज पराशर नामक 'चोर'कें 'जुग-जुग जीवतु' कॉलममे स्थान देल गेल। सम्पादकक टिप्पणी — 'ब्राह्मणवादी सम्पादक मण्डल चोरक खुलेआम समर्थन कैल गेल, कारण चोर ओकर जातिक अछि' — एहि सिद्धान्तक प्रत्यक्ष प्रयोग थिक।

आनन्द कुमार झाकें युवा नाटककार सम्मान भेटलापर जातिवादी सम्पादक मण्डलक कष्ट होइत छन्हि — एहि 'caste capital' क Pierre Bourdieuक framework मे विश्लेषण उचित अछि।

३. डॉ. राजेन्द्र विमल — 'नव-नव क्षितिजक सन्धान करैत सुजीतक जिद्दी'

डॉ. राजेन्द्र विमलक ई समालोचना सुजीत कुमार झाक कथा संग्रह 'जिद्दी' पर लिखल अछि। 'साहित्य-सम्भूत रसोद्भावनाक चतुर, युवा कथाकार सुजीत कुमार झाक कथा मिथिलाञ्चलक महानगरोन्मुख शहरक विविधतापूर्ण परिवेश आ पात्रक स्थिति-मन:स्थितिक सूक्ष्म चित्राङ्कन प्रस्तुत करैत अछि।'

४. जितेन्द्र झा — राजेश्वर नेपालीक सातटा कृति विमोचित

पत्रकार तथा साहित्यकार राजेश्वर नेपालीक ७ कृतिक एक्कहितर विमोचन राष्ट्रपति रामवरण यादव द्वारा। नेपाली, मैथिली आ हिन्दी भाषामे — 'लोकतन्त्रको लालिमा' (नेपाली कविता), 'सोहागिन' (मैथिली कविता), 'नव नेपाल' (हिन्दी कविता) आदि।

रस-सिद्धान्तसँ: तीन भाषामे एकसाथ रचना — क्षेमेन्द्रक औचित्यशास्त्र (appropriateness) क दृष्टिसँ भाषायी विविधता साहित्यिक विस्तारक प्रमाण। विदेह ढाँचासँ: मैथिली-नेपाली सांस्कृतिक संयोजन — जनकपुर-मिथिला सम्बन्धक साहित्यिक documentation।

— — —

५. अरविन्द श्रीवास्तव — 'मणिपद्मक काव्यकृतिक आलोचनात्मक अध्ययन' पुस्तकक लोकार्पण

'मणिपद्मक काव्यकृतिक आलोचनात्मक अध्ययन' पुस्तकक लोकार्पणक विवरण। मणिपद्म (हरिमोहन झा) मैथिली साहित्यक स्थापित canonical name छथि।

विदेह ढाँचासँ विश्लेषण: मणिपद्मपर आलोचना-ग्रन्थ साहित्य अकादेमीक canonical hierarchy कें reinforce करैत अछि। मुदा विदेह एहि canonical name k साथ-साथ जगदीश प्रसाद मण्डल, राजदेव मण्डल, बेचन ठाकुर आदि 'excluded voices' कें समान महत्त्व दैत अछि। ई 'dual canonicity' विदेहक 'democratic aesthetic' k विशेषता थिक।

पाश्चात्य दृष्टिसँ: Harold Bloomक 'anxiety of influence' (स्थापित लेखकक प्रभाव) आ counter-tradition — एहि प्रसंगमे मणिपद्मक canonical status आ मण्डल-परम्पराक समानान्तर existence दुनू सम्भव अछि।

— — —

६. मुन्नी कामत — 'कतऽ जा रहल छी हम!' — स्त्री-चेतनाक विद्रोही स्वर

मुन्नी कामतक ई गद्य-रचना मैथिली साहित्यमे स्त्री-विमर्शक सर्वाधिक विद्रोही आवाज थिक। 'कतऽ खडा छी हम, कतऽ जाइले डेग बना रहल छी एक पलक लेल' — एहि अस्तित्ववादी प्रश्नमे Beauvoirक 'second sex' क प्रश्नावली स्पष्ट अछि।

७. दुगानन्द मण्डल — जगदीश प्रसाद मण्डलक 'जीवन-मरण' उपन्यासक समीक्षा

जगदीश प्रसाद मण्डलक 'जीवन-मरण' उपन्यासपर दुगानन्द मण्डलक समीक्षा। 'मनुखक जे अपन जिनगी छै, ओकर जे अपन समाज छै, समाजक प्रति व्यक्ति विशेषक उत्तरदायित्व होइत अछि से, आ नकला पीढ़ी जे पश्चिमी सभ्यताक असभ्यतासँ ग्रसित भऽ असभ्य बनि गेला' — एहि उपन्यासक केन्द्रीय संघर्ष।

८. डॉ. अरुण कुमार सिंह — स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता

डॉ. अरुण कुमार सिंहक ई विद्वत् आलेख स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे 'सामाजिक समरसता' क ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक अध्ययन थिक। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः' — उपनिषदक सूत्र वाक्य एहि आलेखक आधार थिक।

८.१ साहित्यिक इतिहास

'मैथिली साहित्य मध्य 1922-23 ई. क आसपास जखि मौलिक कथा लिखल जाए लागल' — कुमार गङ्गानन्द सिंह, कालीकुमार दास, लक्ष्मीपति सिंह, कान्ति नाथ झा 'किरण' आदिक कथामे समरसता। कुमार गङ्गानन्दक 'पञ्चपरमेश्वर' आ 'बिहाड़ि' — social harmony क अक्षरशः पालन।

स्वातन्त्र्योत्तर काल — ललित, राजकमल, सोमदेव, मायानन्द मिश्र, धीरेन्द्र, रामदेव झा, हंसराज, लिली रे — ई प्रमुख लेखक। 'ललितेक 'रमजानी' — 'अखन धरि टटका बनल अछि।' धीरेन्द्रक 'घण्टी', 'सेवाई' — सामाजिक समरसताक दृश्यमान रूप।

८.४ डॉ. सिंहक दोसर लेख: 'मातृभाषाक माध्यमसँ उच्च शिक्षा'

Noam Chomskyक Universal Grammar: सभ भाषामे समान cognitive structure — अतः मातृभाषामे शिक्षा cognitive development लेल सर्वोत्तम। Saussureक langue/parole: भाषाक सामाजिक system (langue) आ व्यक्तिगत उपयोग (parole) — मातृभाषामे शिक्षासँ parole (individual expression) क विकास सहज।

विदेह ढाँचासँ: मैथिली माध्यमे उच्च शिक्षाक माँग — ई 'linguistic rights' (language as human right) क आन्दोलन थिक। UNESCO क 'Mother Tongue-Based Multilingual Education' नीतिक वैज्ञानिक आधारपर ई माँग उचित अछि।

— — —

९.२ बहर-विश्लेषण: तुलनात्मक प्रोसोडी

अनचिन्हार उर्दू-देवनागरी वर्णमालाक तुलनात्मक विश्लेषण विस्तारसँ करैत छथि। देवनागरीमे कुल 16 टा स्वर आ 36 व्यञ्जन अछि। उर्दूमे नुक्ता लगाकेँ नव शब्द बनाएल जाइत छैक।

ई linguistically precise observation अछि। Ferdinand de Saussureक 'phoneme' theory: ध्वनि-भेद meaning-भेद निर्धारित करैत अछि — मैथिली आ उर्दूमे phonological difference क कारण काफिया-नियम भिन्न। अनचिन्हारक यएह insight 'Anchinhar Formula' क वैज्ञानिक आधार थिक।

९.३ अरबी बहर: 'फऊलुन' सँ 'फाइलातुन' धरि

अनचिन्हार अरबी रुक्न सभक विस्तृत chart प्रस्तुत करैत छथि — खमासी (5 मात्रा), सुबाई (7 मात्रा) रुक्न। 'बहरे-हजज' (मफाईलुन = ISSS), 'बहरे-मुशाकल', 'बहरे-कलील', 'बहरे-असम', 'बहरे-कबीर', 'बहरे-सगीर', 'बहरे-सरीम', 'बहरे-सलीम', 'बहरे-हमीद', 'बहरे-हमीम' आदिक विस्तृत विवरण।

अमित मिश्रक गजल-उदाहरणसँ प्रत्येक बहर सिद्ध कएल गेल अछि — ई empirical demonstration गङ्गेशक 'drishta' (observed example) पद्धतिक अनुरूप थिक। 'बहरे-मुकारिब': 'छल कहाँ अछि एखि यौ / खेल झूठक जमा जिनगी हरा देलक' — फाइलातुन-मफाईलुन-मफाईलुन।

९.४ मैथिलीक वार्णिक छन्द आ अरबी रुक्नक तुलना

मैथिलीक वार्णिक छन्दमे गण — यगण (ISS), मगण (SSS), तगण (SSI), रगण (SIS), जगण (ISI), भगण (SII), नगण (III), सगण (IIS) — आ अरबी रुक्नक correspondence स्थापित करैत अनचिन्हार मैथिली गजलक indigenous prosodic basis निर्धारित करैत छथि।

'गजेन्द्र ठाकुर द्वारा बहरे-मुतकारिबमे सफलतापूर्वक गजल लिखल गेल। तँए आब एकर बता आवश्यक।' — एहिसँ स्पष्ट अछि जे 'Anchinhar Formula' आ विदेहक सम्पादकीय प्रयोग परस्पर पूरक थिक। ई collaboration मैथिली गजल-आन्दोलनक unique feature थिक।

पाश्चात्य Comparative Poetics: Roman Jakobsonक 'poetic function' (parallelism, rhythm) — अरबी-मैथिली prosody दुनूमे rhythm एकर आधार। George Steinerक 'After Babel' (1975): Translation as intercultural dialogue — अरबी बहरक मैथिलीमे adaptation यएह cross-cultural translation थिक।

— — —

१०. मुन्नाजी — बाल गजल: 'पुरान देहक नव चेहरा'

मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण) बाल गजलक स्वरूप-विवेचन करैत छथि। बाल गजल — मैथिलीमे एकटा नवीनतम विधा जे विदेहमे पहिले विकसित भेल।

रस-सिद्धान्तसँ: बाल गजलक रस — मुख्यतः हास्य, अद्भुत आ शान्त। बच्चाक perception — जे प्रौढ़ जगतकें नव दृष्टिसँ देखैत अछि — एहिमे 'vismaya' (wonder) क स्थायिभाव अछि। भरतक नाट्यशास्त्रमे बाल-मनोवृत्ति आ 'loka' (public life) k representation एहि विधामे।

पाश्चात्य दृष्टि: Piaget क cognitive development theory: बच्चा (7-11 वर्ष, concrete operational stage) — abstract concepts नै, concrete imagery चाही — बाल गजलमे यएह principle। Vygotsky क 'Zone of Proximal Development': बाल साहित्य बच्चाक cognitive growth accelerate करैत अछि।

— — —

११. ओम प्रकाश झा — मैथिली बाल गजलक अवधारणा / भोज हथियार

ओम प्रकाश झा मैथिली बाल गजल-सिद्धान्तक प्रमुख व्याख्याता थिकाह। 'मैथिली बाल गजलक अवधारणा' — एहि आलेखमे बाल गजलक शास्त्रीय आधार निर्धारित कएल गेल अछि।

'भोज हथियार' — एकटा पृथक् रचना जाहिमे 'भोज' (श्राद्ध भोज) कें 'हथियार' (weapon) क रूपमे देखबाक satire अछि। एहिमे जगदीश प्रसाद

मण्डल-शैलीक वक्रोक्ति — सामाजिक व्यवस्थाक आलोचना oblique form मे।

ओम प्रकाश झाक 'empirical criticism': प्रत्येक गजल-दोषक उदाहरण पृष्ठ-संख्यासँ देनाई — ई गङ्गेशक 'anumana' (inference from evidence) क साहित्य-समालोचनामे प्रयोग थिक।

— — —

१२. जगदानन्द झा 'मनु' — बाल गजलक अवधारणा

जगदानन्द झा 'मनु' — मैथिलीक विपुलतम लेखक — बाल गजल-आन्दोलनमे सेहो सक्रिय। हुनकर बाल गजलमे 'गाम' (village), 'माय' (mother), 'इस्कुल' (school) — ई तीन axis पर childhood experience केन्द्रित अछि।

रस-सिद्धान्त: मनुजीक बाल गजलमे 'vatsalya' (parental love) — भरतक बाद परम्परामे सोलहमाँ रसक रूपमे मान्यता — एहि रसक काव्यात्मक प्रयोग। 'मुठ्ठी भरि बिया भागक अपन हम रोपि / अपने माटि में हँसि हँसि कँ गौराएत' — एहिमे 'पीठ पर छै बैग बौआ चलल इस्कुल' — वात्सल्य आ उत्साहक संयोजन।

विदेह ढाँचासँ: बाल गजल — मैथिली भाषाक अगली पीढ़ीमे संक्रमण (intergenerational transmission) क mechanism थिक। विदेह एहि कार्यकें documentary record करैत अछि — ई linguistic preservation आ cultural continuity दुनू थिक।

१३. चन्दन कुमार झा — मैथिली बाल-साहित्य आ बाल-गजल

चन्दन कुमार झाक बाल गजल-विषयक आलेख बाल साहित्यक history आ बाल गजलक विशिष्ट contribution दर्शबैत अछि। हुनकर बाल गजल सभमे 'रेम' (game), 'माय' (mother), 'पाठशाला' (school) — ई ग्रामीण मैथिल बचपनक authentic documentation अछि।

'ई बाल जाति' — चन्दन कुमार झाक एहि concept मे सभ जाति-वर्गक बच्चाक समान world — एहिमे Gandhiक 'sarvodaya' (universal uplift) क बाल-version अछि। पाश्चात्य दृष्टि: Johan Huizinga क 'Homo Ludens' — खेल मानव संस्कृतिक आधार थिक। बाल गजल एहि 'play-element' कें language-development सँ जोड़ैत अछि।

— — —

१४. अमित मिश्र — बाल गजल: 'कोमल करेजक आखर'

अमित मिश्र मैथिली बाल-गजलक सर्वाधिक विपुल आ technically advanced रचनाकार थिकाह। 'कोमल करेजक आखर' — हुनकर बाल गजल-philosophy थिक।

ओम प्रकाश झाक टिप्पणी: 'अमित मिश्र एखन जीवनक छात्रावस्थामे छथि आ से एखन हुनकर एक पएर नेनपन नऽ दोसर जुआनीक सोपानपर छन्हि — तकरे प्रतिफल छैक जे हुनका बाल मनोभावक सागरमे डूबकी लगबैत देरी नहि लगैत छन्हि।'

१४.२ बहर-उदाहरण

अमित मिश्रक गजल विभिन्न अरबी बहरमे — बहरे-कलील, बहरे-असम, बहरे-कबीर, बहरे-सगीर, बहरे-सरीम, बहरे-सलीम, बहरे-हमीद, बहरे-हमीम — एहि diversity एकर prosodic command प्रमाणित करैत अछि। ई मैथिली गजल इतिहासमे तकनीकी दृष्टिसँ सर्वाधिक उन्नत प्रयोग थिक।

'आइ आगिक पता पुछनै पानि ऐठाँ / नै जड़नि यौ कनो घर लिअ जानि ऐठाँ' (बहरे-असम) — एहि बाल गजलमे climate crisis आ displacement क universal theme बाल-परिप्रेक्ष्यसँ। एहि 'defamiliarization' (Shklovsky) — ओहि concept कें नव दृष्टिसँ देखेनाइ — बाल-कवितामे सर्वाधिक सफल होइत अछि।

— — —

१५. नवेन्दु कुमार झा — विजलीक क्षेत्रमे आत्म-निर्भरता / पत्रकारिता खण्ड

नवेन्दु कुमार झाक चारि पत्रकारिता-आलेख: (१) 'बिजलीक क्षेत्रमे आत्म-निर्भरताक लेल सरकार कऽ रहल प्रयास', (२) 'पटनामे पसरत हीराक चमक', (३) 'निगरानी विभागक लेल बनि रहल विशिष्ट संवर्ग', (४) 'बिहारमे निवेशक इच्छा जनौलक रैनबैक्सी'।

विदेह ढाँचासँ: विदेह मात्र literary journal नै, एकटा comprehensive Maithili media platform थिक। एहि पत्रकारिता-आलेख सभ

— बिहारक आर्थिक विकास, electricity grid, diamond industry, pharmaceutical investment — एहिसँ स्पष्ट अछि जे विदेह मैथिली-भाषी पाठककें informational content सेहो प्रदान करैत अछि।

पाश्चात्य दृष्टि: Juergen Habermasक 'public sphere' theory: एकटा democratic public sphere लेल — (i) free information, (ii) rational discourse, (iii) inclusive participation — विदेहक journalism section एहि तीनू मानदण्ड पूर्ण करैत अछि। 'विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका' एहि public sphere कें digital medium मे स्थापित करैत अछि।

— — —

१६. राजदेव मण्डल — जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता संग्रह 'रात-दिन' पर समीक्षा

राजदेव मण्डल — एकैसम शताब्दीक पहिल दशकक सर्वश्रेष्ठ मैथिली कवि (विदेह-मान्यता) — जगदीश प्रसाद मण्डलक '52 गोट कविता' सम्मिलित 'रात-दिन' संग्रहक समीक्षा लिखलनि।

१७. डॉ. धनाकर ठाकुर — 'फूल तितली आ तुलबुल' (सिया राम झा सरस) पर समीक्षा

'फूल तितली आ तुलबुल' बाल साहित्य पोथीक समीक्षा। डॉ. धनाकर ठाकुर मैथिली-हिन्दी दुनू भाषाक वरिष्ठ लेखक थिकाह।

रस-सिद्धान्त: बाल साहित्यमे वात्सल्य रस (parental love) आ अद्भुत रस (wonder) प्रमुख। 'फूल', 'तितली', 'तुलबुल' — ई तीनू प्रकृतिक सुन्दर image — अभिनवगुप्तक aesthetics मे 'सौन्दर्य' (beauty as rasa) क children's literature version।

— — —

१८. कैलास दास — म्याराथन दौड़ आ जनकपुर / 'जिद्दी' — महिलाक प्रेरक कथा

कैलास दासक तीन आलेख: (१) 'म्याराथन दौड़ आ जनकपुर' — Nepal मे marathon race क विवरण, (२) 'अंगना सुखल घरमे पावन' — सांस्कृतिक documentation, (३) 'महिलाक प्रेरक कथा संग्रह जिद्दी' — सुजीत कुमार झाक कथा-संग्रहपर टिप्पणी।

विदेह ढाँचासँ: जनकपुरक म्याराथन — Mithilaक Nepal भाग — एहि भौगोलिक-सांस्कृतिक documentation मे 'Greater Mithila' k concept अछि। Mithila राज्य आन्दोलन (India side) k साथ-साथ Nepal Mithilaक cultural continuity documentation — विदेहक 'transnational Mithila' vision।

— — —

१९. सुजीत कुमार झा — मिथिला पेन्टिङ्गक विदेशमे माँग बढ़ल

'मिथिला पेन्टिङ्गक विदेशमे माँग बढ़ल — वत्तामे मिथिला पेन्टिङ्ग' — एहि पत्रकारिता-आलेखमे Madhubani painting क international market analysis।

पाश्चात्य दृष्टि: Walter Benjaminक 'The Work of Art in the Age of Mechanical Reproduction': Madhubani painting जखन global market मे जाइत अछि तखन ओकर 'aura' (original authenticity) आ 'reproducibility' क tension। 'Commodification of culture' (Marxist aesthetic) — मिथिला पेन्टिङ्गक commercial success cultural authenticity कें कतेक बचबैत अछि?

विदेह ढाँचासँ: एहि economic success documentation मे एकटा counter-argument सेहो — arts k commodification indigenous knowledge system कें homogenize करैत अछि। विदेह एहि complexityकें document करैत अछि।

— — —

२०. शकुधन प्रसाद साह — मैथिली महिला आ जिद्दी / पूनम मण्डल — तेसर विकीलिक्स

२०.१ शकुधन प्रसाद साह — 'मैथिली महिला आ जिद्दी'

सुजीत कुमार झाक 'जिद्दी' कथा-संग्रहपर एकटा और दृष्टिकोण। Feminist literary criticism: 'मैथिली महिला' — ई specific subject-position उठाओल गेल अछि। कथामे महिला पात्रक 'jiddi' (stubborn/resilient) quality — de Beauvoirक 'immanence vs.

transcendence' — महिलाक transcendence अर्थात् self-determination क moment।

२०.२ पूनम मण्डल — 'मैथिलीक तेसर विकीलिक्स'

पूनम मण्डलक ई आलेख मणिपद्म जयन्तीपर दिल्लीमे मिथिलाङ्गन द्वारा आयोजित कवि-गोष्ठी (९ सितम्बर २०१२) क रिपोर्ट थिक। एहिमे:

(१) विजयदेव झाक धमकी — 'उमेश मण्डलकें देखि लेनाइ आ उठा लेनाइ' — तथा जगदीश प्रसाद मण्डल, गजेन्द्र ठाकुर आदिकें 'एहि जन्ममे साहित्य अकादेमी पुरस्कार नहि भेटऽ देनाइ' क सार्वजनिक घोषणा।

(२) मणिपद्म जयन्ती गोष्ठीमे 'जातिवादी रंगमंच' आ 'विदेह समानान्तर रंगमंच' क संघर्ष। कुमार शैलेन्द्रक महेन्द्र मलङ्गियापर टिप्पणी आ ओकर परिणाम।

पाश्चात्य दृष्टि: Wikileaks concept — classified/hidden information कें public करनाइ। पूनम मण्डल एहि literary institutional politics कें 'Wikileaks' कहैत छथि — एहिमे transparency आ accountability क demand। Juergen Habermasक 'public sphere': literary goshthis public sphere क function करैत अछि — मुदा जखन ओ jati-based exclusion practice करए, Habermasian ideals violated होइत।

विदेह ढाँचासँ: ई documentation इतिहास-लेखन (historiography) थिक। भविष्यमे जखन मैथिली साहित्यक इतिहास लिखल जाएत तखन एहि documents — Facebook posts, SMS, emails — प्राथमिक स्रोत होएत। गङ्गेशक 'pratyaksha pramana' (direct knowledge) क digital युगमे नव रूप।

———

२१. खण्ड १क संश्लेषणात्मक मूल्यांकन

ग्रन्थसूची / पाठाधार

· विदेह सदेह-१२ — Videha Sadeha 12

अध्याय 28 · विदेह सदेह-१२: समानान्तर समीक्षा — खण्ड २: कविता, गजल, विहनि कथा, बाल खण्ड, नाटक

सारांश खण्ड २: कविता, गजल, विहनि कथा, बाल खण्ड, नाटक १. कविता खण्डक सम्पूर्ण समीक्षा विदेह सदेह-१२ क पद्य खण्डमे ३०सँ

अधिक कवि-कवियत्री अपन रचना दैत छथि। ई खण्ड मैथिली कवितामे feminism, dalit consciousness, ecological

awareness, political satire, आ spiritual quest क समावेशी document थिक। — — — १.१ नन्द विलास राय —

'कन्यादान' / 'बेपार' नन्द विलास रायक दू कविता — 'कन्यादान' आ 'बेपार'।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · नाटक · कथा · विहनि कथा · कविता · गजल

खण्ड २: कविता, गजल, विहनि कथा, बाल खण्ड, नाटक

१. कविता खण्डक सम्पूर्ण समीक्षा

विदेह सदेह-१२ क पद्य खण्डमे ३०सँ अधिक कवि-कवियत्री अपन रचना दैत छथि। ई खण्ड मैथिली कवितामे feminism, dalit consciousness, ecological awareness, political satire, आ spiritual quest क समावेशी document थिक।

— — —

१.१ नन्द विलास राय — 'कन्यादान' / 'बेपार'

नन्द विलास रायक दू कविता — 'कन्यादान' आ 'बेपार'। 'कन्यादान' — ई शब्द मे ही विरोधाभास अछि: कन्या (पुत्री) 'दान' (gift) केना भऽ सकैत अछि? Feminism क दृष्टिसँ — कन्यादान practice महिला कें commodity बनाबैत अछि।

रस-सिद्धान्त: 'कन्यादान' शीर्षकक वक्रोक्ति — कुन्तकक vakrokti theory — एहि शब्द मे ही patriarchal system क critique। 'बेपार' (व्यापार) — कथ्यमे capitalism आ human commodification क critique। पाश्चात्य दृष्टि: Karl Marxक 'commodity fetishism' — सम्बन्ध जखन वस्तु बनि जाइत अछि — 'कन्यादान' आ 'बेपार' दुनू एहि theme पर।

विदेह ढाँचासँ: नन्द विलास राय जे समाजमे 'बेपार' (bargaining) देखैत छथि — विवाह-संस्था, दहेज, पुत्र-पुत्री भेद — एहि सभ कें poetic form देनाइ विदेहक 'democratic voice' mission अनुरूप।

— — —

१.२ मुन्नी कामत — विशाल काव्य-संग्रह (२५+ रचना)

मुन्नी कामत एहि संकलनक सर्वाधिक विपुल कवियत्री थिकीह। हुनकर ३०सँ अधिक रचना — कविता, गजल, आजाद गजल, नाटक — सभ विधामे सक्रिय।

'भ्रष्टाचारक प्रसाद'

'भ्रष्टाचारक प्रसाद' — ई ironic title मे कुन्तकक वक्रोक्ति। प्रसाद (religious offering) आ भ्रष्टाचार (corruption) — ई juxtaposition political satireक उच्चतम स्तर। रस-दृष्टि: व्यंग्य हास्य रस। नव्य-न्याय दृष्टि: corruption क 'व्याप्ति' — जतय सरकार अछि ओतय corruption 'अछि' — एहि anumana एहि कवितामे।

'तब हँसत तुलसी'

तुलसी — मैथिल परिवारक sacred plant — जखन 'हँसत' तखन। ई conditional optimism — 'जखन..., तखन...' — एहि भविष्य-दर्शन मे Maithil folk tradition आ Progressive idealism क संयोजन।

'शिल्पकार' / 'याद गामक' / 'आसक किरण'

'शिल्पकार' — कारीगर वर्गक dignity। Marxक 'labour theory of value' — कारीगरक श्रम मे value निर्माण होइत अछि मुदा कारीगर स्वयं marginalized। 'याद गामक' — nostalgia आ displacement। Raymond Williamsक 'The Country and the City' — गामसँ शहर migration क emotional cost।

'नारीक पहचान'

'नारी' concept पर philosophical poem। Simone de Beauvoirक 'One is not born a woman, but becomes one' — ई social construction theory 'नारीक पहचान' मे मैथिली रूपमे। Hegel क 'recognition theory' — दोसरक recognition बिना self-identity अधूरा — एहि कवितामे।

'आजाद गजल १-२' / 'बेटी' / 'दहेजक आगि'

'आजाद गजल' — free form मे feminist protest। 'बेटी' कविता — 'बेटी अभिशाप नै वरदान अछि' — ई counter-narrative पितृसत्तावादी discourse कें directly challenge करैत अछि। 'दहेजक आगि' — 'सुनतु यै सासुमा / हमहूँ छी किनको बेटी / हमहूँ ९ महीना किनको कोखमे आस आ ममता सँ सिंचल छी' — एहि daughter-to-mother-in-law direct address मे subaltern voice articulation।

रस-दृष्टि: एहि कवितामे करुण रस (विरह, दहेज-पीड़ा), रौद्र रस (विद्रोह), आ वीर रस (आत्मसम्मानक उद्घोष) — तीनूक सम्मिलन। पाश्चात्य दृष्टि: Betty Friedanक 'The Feminine Mystique' — गृहस्थी मे 'problem that has no name' — मुन्नी कामत एहि problem कें मैथिली मे name दैत छथि।

'ओइ पार' / 'नेताजी' / 'पहिल बरखा' / 'किसान' / 'बूँदक मोल'

'ओइ पार' — spiritual आ metaphysical journey। 'नेताजी' — political satire। 'किसान' — agricultural labour dignity। 'बूँदक मोल' — 'फाटल धरती / जरल घास / एक बूँद पानि विनु / अछि सभक सभ उदास' — ecological crisis आ water scarcity। पर्यावरण-काव्य (eco-poetry) — Ecology आ social justice क intersection।

'काइरझुमरी कोसी' / 'मिथिलाक दादा' / 'पाहुनक माछ'

'काइरझुमरी कोसी' — 'दू-चारि दिन नै / आइ सात दिनसँ ऊपर भेल / कोसी कारिझुमरी / सभ लेलने चलि गेल' — Kosi flood disaster k poetic documentary। 'मिथिलाक दादा' — traditional Maithil patriarch क affectionate ironic portrait। 'पाहुनक माछ' — Maithil hospitality culture।

विदेह ढाँचासँ: मुन्नी कामतक कविता-संग्रह एहि अंकमे विदेहक gender equity आ regional identity दुनू dimensions demonstrate करैत अछि। ई मैथिली महिला-काव्यक सर्वाधिक comprehensive document थिक।

— — —

१.३ बलिराम साह — 'द्वन्द्वक मझधार'

'एकटा एहि लोक जेकरा करिया आखरसँ भेँट नै / एकटा एहि लोक जेकरा हातमे अखबार अछि / एकटा एहि बेटा जेकरा पेटमे अन्न नै / एकटा एहि बेटा जेकरा खेलौनाक भरमार अछि।' — ई parallel structure dialectical contradiction थिक।

रस-दृष्टि: करुण आ रौद्र रसक द्वन्द्व। वीर रसक अनुपस्थिति मात्र — जे 'द्वन्द्वक मझधार' क title justify करैत अछि। पाश्चात्य दृष्टि: Hegel क 'thesis-antithesis' — एहि कवितामे प्रत्येक line मे thesis आ antithesis। Marx क 'class contradiction' — literacy/illiteracy, food/toys — एकहि समाजमे।

विदेह ढाँचासँ: बलिराम साह — पिछड़ा/दलित वर्गक लेखक — कें विदेहमे स्थान। ई inclusion एकर 'democratic aesthetic' k प्रमाण।

— — —

१.४ मुकुन्द मयंक — 'कवियाँ'

'कवियाँक आयल लगनो नै कएल एक्को साल / भS गेल कवियाँ मास्टरीमे बहाल / जहिया सँ भेली ओ टिचर बदलि गेल हमर फ्युचर' — एहि हास्य-व्यंग्यमे gender role reversal। कार्यरत पत्नी आ घरेलू पति — Maithili social change k comic document।

रस-दृष्टि: हास्य रस। कुन्तकक 'vakrokti' — 'घरेलू बनि गेलौं' — figurative language द्वारा social commentary। पाश्चात्य दृष्टि: Judith Butlerक gender performativity — gender roles performative छथि, natural नहि — एहि humorous poem मे एहि theory क illustration।

— — —

१.५ विनीत उत्पल — 'नामदर्कक शहरमे' / गजल

'नामदर्कक शहरमे' — 'नामदर्क' (coward/indifferent city) — एहि title मे वक्रोक्ति। 'आइ जइ कालमे हम सभ रहि रहल छी, ओ नामदर्कक जुग अछि / हमर कवितामे नामदर्क कोनो जाति नै अछि / ना कोनो मनुष्यक शारीरिक अवगुणक उपहास नै कएल जा रहल अछि / ई छी मानसिक दिवालियापनकें लS कS एकटा शब्द' — ई कवि-घोषणापत्र।

पाश्चात्य दृष्टि: T.S. Eliotक 'The Waste Land' — modern city मे moral bankruptcy। विनीत उत्पलक 'नामदर्क शहर' Eliotक Wasteland k Maithili version। Adorno k 'administered world' — एहि city मे authenticity impossible। Sartrean existentialism — 'cowardice' (naamdark) bad faith क form।

गजल — 'नाट जोगैत तँ आँखि पथराएल नै कहियो / प्रेम विना जे जिनगी सरियाएल नै कहियो' — वार्णिक बहर, सरल कमांड। विनीत उत्पलक गजल मे classical Urdu ghazal tradition (Ghalib, Mir) k Maithili synthesis।

— — —

१.६ कामिनी कामायनी — 'चिड़ैक अभिलाष'

'एक पाखी मीत सँ / किछु कहि रहल छल / डाढ़ कत्तेक हम देखल / अहि जनम में / भेट नहि पाओल हमरा / कत्तौ बसेरा' — एहि एकाकीपन मे metaphysical longing।

रस-दृष्टि: शान्त रसक सञ्चार — पाखीक (bird) voice मे existential loneliness। अभिनवगुप्तक aesthetics मे 'शान्त रस' spiritual peace क path। यहाँ restlessness क through peace k search। पाश्चात्य दृष्टि: Romantic poetry tradition (Keats क 'Ode to a Nightingale') — bird as symbol of freedom और transcendence। Emily Dickinsonक bird imagery।

— — —

१.७ मिहिर झा — 'महगी' / 'हौ रामचन्दर'

'बुन्न बुन्न रिसैत महँगी / बना लेलक दरार / कमला क बानि सभ / हू हू बहैत / संपोला से अजगर बनैत / बट करैत गामक गाम' — महँगाई (inflation) कें natural disaster जेकाँ personify कएल।

रस-दृष्टि: करुण रस। विभाव — आर्थिक संकट। अनुभाव — 'त्राण पबैत लेल / बेकावति सरकार / फाटक खोलैत बान्ह के'। पाश्चात्य दृष्टि: Brecht क political poetry — direct social commentary without metaphorical veil। 'हौ रामचन्दर' — political satire। 'जमाना देखही बंग करैय / जी दुखी मोन के बंग करैय' — public grievance।

— — —

१.८ राजेश कुमार झा (कन्हैया) — 'एकटा प्रेम विरहक कथा' / 'माँ' / 'पश्चिमी सभ्यता' / 'तामस'

'एकटा प्रेम विरहक कथा' — 'सुनबैत छी एकटा प्रेम विरहक कथा / जे आगि लगा देलए हमरा ओ व्यथा' — classical श्रृंगार रस विप्रलम्भ। 'माँ' — वात्सल्य रसक अभिव्यक्ति। 'पश्चिमी सभ्यता' — cultural critique। 'तामस' — क्रोध-भाव।

पाश्चात्य दृष्टि: 'पश्चिमी सभ्यता' — cultural imperialism k critique। Frantz Fanonक 'Wretched of the Earth' — colonial culture क psychological impact। हुनकर 'देश भक्ति' — भक्ति रस k patriotic version।

— — —

१.९ नारायण झा — 'एखनहु जकड़ल छी' / 'एकता'

'एखनहु जकड़ल छी' — jati-based bondage। 'एकता' — communal harmony। दुनू कवितामे Ambedkarite consciousness — jati vyavastha k critique आ unity k call।

पाश्चात्य दृष्टि: Martin Luther King Jr. क 'I Have a Dream' — ई MLK-style aspiration 'एकता' मे। Fanon k 'national consciousness' बिना जाति-आधारित unity असम्भव।

— — —

१.१० इरा मल्लिक — 'बैसू लगमे, नीक लगैए'

'हाथ कें हाथ सँ साथ मिलल / जखि पएलौं नेह अहाँके / जीवन डोर मे बान्धि पिया / सोहागिन बनलौं अहाँके' — ई वैवाहिक प्रेम-गीत मे Maithil स्त्री-आनन्द। रस-दृष्टि: शृंगार रस संयोग — स्त्री-वाणीसँ।

— — —

१.११ राम विलास साहु — 'सिम्मर केर फूल' / 'ओलम्पिक' / 'रौदी'

'सिम्मर केर फूल'

शुक्र आ सिम्मरक फूल — लोभ-कथा। 'लोभमे फँसि सुनगा / अपने करमपर पछताए / शोगाएल सुनगा बाजल / रूप रंग देखि नै लोभाउ' — एहि parable मे Panchatantra k wisdom।

'ओलम्पिक'

'बच्चासँ बूढ भेलौं / बड़-बड़ खेल देखैत रहलौं / पैंसठ बरख आजादीयोक भेल / मुदा पूर्ण आजादी / कहियो ने देखलौं' — ई critique Olympic k commodification आ post-colonial India k failed promises। 'गाम-बासीक लहु बेचि / सरकार ओलम्पिक खेलैत अछि' — Marx k 'surplus value' k political metaphor।

'रौदी' (सूखाड़)

'माइपर हाथ धेने / खेतिहरक आँखिसँ गिरलै नोर / धरती सुखलै धाइ जरलै / खेतमे फाटलै दरार' — ecological crisis आ farmer distress। Mikhail Bakhtin k 'carnivalesque' — nature rebellion। एहि कवितामे climate change k ground-level impact।

———

१.१२ प्रमोद रंगीले — 'नेताजी जिन्दाबाद'

'नेताजी मंचपर भाषण दऽ रहलए / सभ दिनक काज ओ कऽ रहलए / भाषण सुनैत सुनैत एकटा अभागल / उठल गड़गड़ाकऽ जेना भऽ गेल पागल' — ई political satire Maithili satiric tradition (हास्य रस) क सर्वोत्तम उदाहरण।

'देखियौ देशमे शान्ति लाइन देली / पैसा कैं लुटएला भलेही मुँह बाइन देली' — प्रत्येक श्लोकमे 'भलेही' (even though) द्वारा contrast। Brecht k 'epic theatre' k alienation effect — पाठक distance बनाबैत अछि नेता सँ।

———

१.१३ शिव कुमार झा 'टिल्लू' — 'सुखार' / आजाद गजल / 'दृष्टिकोण'

'सुखार'

'काल रहसल त्रास बहकल / मधुमासे संत्रास महकल / अषाढ़ कुपित इन्द्र रूसल' — ई Sanskrit-style alliterative structure मे ecological crisis। 'Global Warming फड़कल' — contemporary English term k classical Maithili verse मे integration — postmodern intertextuality।

'पकड़ैं अपन बाप पुरुखाक देल हथियार / धरे मौलिक संस्कार' — indigenous knowledge (traditional farming) k advocacy। Vandana Shivaक eco-feminism — traditional methods k superiority over chemical agriculture।

आजाद गजल (१-२)

'कालरात्रिमे महमह दिनमान कोना आएत / मोनमे पाप झरिल भगवान कोना आएत' — dark night of the soul metaphor। St. John of the Cross क 'Dark Night of the Soul' k Maithili equivalent। दोसर आजाद गजल: 'कहू की बात हम मानिनि कलुष भऽ गेल अछि अपडर्ण' — moral corruption।

'दृष्टिकोण'

'हिआक दू गोट रूप / अवलोकन आ बातन / पहिलुक मात्र अपनहि लेल / दोसर समाजकें जियनाक लेल' — ई philosophical distinction introspection (self-centred) आ social responsibility (other-centred) बीच।

पाश्चात्य दृष्टि: Emmanuel Levinasक ethics of alterity — दोसराक responsibility मे ethical life। 'बातन' (contemplation for others) Levinasक 'responsibility for the other' k Maithili articulation।

———

२. गजल खण्डक सम्पूर्ण समीक्षा

विदेह सदेह-१२ मे ८सँ अधिक गजलकार — आनि मल्लिक, अविनाश झा अंशु, पंकज चौधरी 'नवलश्री', राजीव रंजन मिश्र, रूबी झा, शिव कुमार यादव, बाल मुकुन्द पाठक, मनु, विनीत उत्पल — अपन गजल दैत छथि। 'काविया' (अनचिन्हार-आशीष) क बहर-framework एहि गजल सभपर लागू करब उचित।

— — —

२.१ अनिल मल्लिक — गजल १-२

'हे राम पुछैत छी अहाँ सँ कहू किए दोष हमरा पर लादल गेल / जमीन मे समयलौं हम अपने की जीवितेमे हमरा गाड़ल गेल' — ई feminist interpretation of mythology।

रस-सिद्धान्त: करुण रस। 'नारी पर अत्याचारक क्रम सुरुआत नहिए सँ भेल स्वीकार करु' — एहिमे itihasic narrative क feminist reading। अहिल्या, राधा, सुपर्णखा — सभ female mythological figures k grievance। Audre Lordeक 'Uses of Anger' — righteous anger as feminist tool।

दोसर गजल (आखर-२१): 'वार पर सँ खसैत पानि ओरिआनी मे सँ बहैत रहै / ओहि मे जे बच्चा सभहक कागजक नाउ चलैत रहै' — nostalgic childhood memory। Wordsworthक 'spots of time' — childhood moments k lasting significance।

— — —

२.२ अविनाश झा अंशु — 'मूँह जाति देलक आब हरियरी देनाई'

'मूँह जाति देलक आब हरियरी देनाई / ई तानाशाही हमरासँ नै सहल जेनाई' — ई defiance। रस-दृष्टि: वीर रस। 'बिना रदीफक गजल बन्ध-१५' — technically sound। पाश्चात्य दृष्टि: Fanon k 'violence as liberation' — oppressed k defiance।

— — —

२.३ पंकज चौधरी 'नवलश्री' — गजल १-३

'एक नजरि हुनकर पड़लै जे हमरा पाँजसँ ससरल मोन / दूक्षण लेल भसियेलय जे से एखनो धरि नञि सम्हरल मोन' — श्रृंगार रस, 'आखर-२५' बन्ध। ई poem मे मोनक metaphoric journey।

'काजरसँ शोभा आँखिक की आँखिसँ शोभित काजर' — ई paradox (काजर शोभा देइत अछि कि आँखि?) philosophical riddle। Wittgensteinक 'language games' — meaning contextual अछि, fixed नहि।

'किछु फुरा नञि रहल की करी नञि करी अनचिन्हार के कोनाकऽ मनाएल जाय' — अनचिन्हार (beloved) k nostalgia। Shulamith Firestoneक 'romantic love as female oppression' — मुदा एहि poem मे love as loss, not oppression।

— — —

२.४ राजीव रंजन मिश्र — गजल १-४

'भोरहिं भोर उठल बौआ अंगना में खेलय छै / भूलि विसरी कए सभटा चारू कोने दौरय छै' — ई childhood description मे वात्सल्य रस। 'सरल वार्णिक बहर, बन्ध-१८' — technically disciplined।

'हम भारत के वीर जवान बनत / हम मिथिलाक पुत महान बनत' — patriotic ghazal। 'माँ गे आइ बता किया बन्दा में कारी छै' — social inequality। राजीव रंजन मिश्रक चारि गजल — vatsalya, patriotic, romantic, social — ई range versatility demonstrate करैत अछि।

— — —

२.५ शिव कुमार यादव — 'बरखाक मौसम ऐलए' / 'हमर एतबहि अपराध छल'

'बरखाक मौसम ऐलए'

'बरखाक मौसम ऐलए, साउनक मास बलल / बरखा ऐलए-बुन्नी ऐलए, बूँदें-बूँद पानि बरसल' — ई seasonal song मे agricultural Mithila k

authentic documentation। Madhushravani festival reference — Maithili folk tradition।

'हमर एतबहि अपराध छल'

'हमर एतबहि अपराध छल / हम तीन जातिक छौड़ा' — ई caste-based discrimination poem Ambedkarite tradition क सर्वाधिक direct Maithili expression।

'गामक लोक मने हमर माय डाइन / साथ दिन सँ ओकर छौड़ा / तोखाबर मे विछौना पर पड़ल छल' — 'witchcraft' accusation against widow — एहि क्रूर सामाजिक practice k poetic indictment। Maithili समाज मे 'डाइन' accusation — Dalit/lower caste widow कें target कएल जाइत अछि। पाश्चात्य दृष्टि: Elaine Showalterक feminist analysis of 'witch' persecution — misogyny आ caste combine होइत अछि एहि practice मे।

— — —

२.६ रूबी झा — गजल १-२

'लेलहुँ सुख भरि पाँज पकड़ि हम / गेलौं माँ के कोर पसरि हम' — माँ-प्रेम। '22-2221-212 सभ पाँति में' — वार्णिक बहर (आखर-१७)। दोसर गजल: 'भऽ गेल लजौनी केर पात सभ मौलाएल जिनगी / अछार परहक भात सभ कठुआएल जिनगी' — life-as-food metaphor। 'सरल वार्णिक बहर बन्ध-११।'

— — —

२.७ कुसुम ठाकुर — हाइकू

'समृद्ध भाषा / मैथिली मिथिलाक / जाइत हेरा' — भाषा-संरक्षण आह्वान। '३-५-३ syllable pattern — Japanese haiku form मे।

'लाज होइछ / बाजत कोना भाषा / पढ़ल हम' — bilingual generation k guilt। 'देशक नेता / नहि जनताक केर / स्वार्थे डूबल' — political satire हाइकूमे।

पाश्चात्य दृष्टि: Haiku — Zen Buddhist aesthetic (wabi-sabi, impermanence) — मुदा कुसुम ठाकुरक हाइकू social protest poem। ई fusion of Japanese form with Maithili content — postcolonial hybridity।

— — —

२.८ हेम नारायण साहु — 'जुलुम भऽ रहल अछि...' / 'भ्रष्टाचार' / 'समता'

'कोनो काज नै विनु घूसक होइए / ई देखि कऽ मन बौड़ाइए' — Anti-corruption poetry। 'मोइ पड़ैए मधुमाछी छत्ता / अनगिनति मधुमाछी मिलि / बना रहल अछि अपन छत्ता / नै केकरोमे भेद-भाव / सभहक मनमे एके भाव' — beehive as utopian community। Plato k 'Republic' — ideal state k metaphor।

— — —

२.९ बाल मुकुन्द पाठक — गजल १-४

'लोक कहैत छथि जे हम छी शराबी शराब पीबैत छी / कियो बात मानै नै छी छै की खराबी शराब पीबैत छी' — एहि आत्म-defence मे unreliable narrator। तीनु गजल श्रृंगार, devotional, आ social themes — versatile range।

'सरल वार्णिक बहर बण्ड-१६' — technically disciplined। 'मुकुन्द पुछैत अछि हे मृगनयनी / कहि दिन कवियाँ बनत हम' — maqta (last sher) मे pen name।

— — —

२.१० पवन कुमार साह — 'भाय-यौ भाय-यौ' / 'मोनक बात'

'चलू चलू मिथिला गाम / लागल छै ऐ ठाम सुन्दर धाम' — ये folk-song style invitation। Mithila tourism/homecoming poem। 'मोनक बात' — unexpressed feelings।

— — —

२.११ राजदेव मण्डल — 'कानैत हँसी' / 'कनहेपर भोलबा' / 'महता आ अरही' / कविता-श्रृंखला

राजदेव मण्डल — एकैसम शताब्दीक सर्वश्रेष्ठ मैथिली कवि — एहि संकलनमे उपस्थित।

'कानैत हँसी'

'घटि गेल बीचक दूरी / गप्पसँ बेसी डोलैत मुड़ी / किछु नै जानै छी / तैयो अपन मानै छी' — sarcastic description of social conformism। करुण-हास्य रसक मिश्रण।

'कनहेपर भोलबा' / 'महता आ अरही' / 'काटैत बीआ'

राजदेव मण्डलक कविता agricultural Mithila k insider perspective — 'महता' (plough handle), 'अरही' (plough), 'काटैत बीआ' (cutting seeds) — ई agricultural implements काव्यिक विषय बनैत अछि। Pablo Neruda क 'Ode to Things' — ordinary objects k epic treatment।

'घरक आँखि' / 'अभ्यास' / 'अकाल'

'अकाल' — drought poem। 'घरक आँखि' — domestic space k philosophical treatment। 'अभ्यास' — practice/repetition k value।

राजदेव मण्डलक समस्त कविता नव्य-न्याय दृष्टिसँ: प्रत्येक कविता एकटा 'vyapti' स्थापित करैत अछि — agricultural crisis k social root मे। पाश्चात्य दृष्टि: Seamus Heaneyक 'digging into roots' — भूमि आ language दुनू मे identity। राजदेव मण्डलक कविता Heaney-equivalent मैथिलीमे।

— — —

२.१२ शशिधर कुमर 'पूर्णा' — 'पूर्ण प्रवास'

'पूर्ण प्रवास' — spiritual journey poem। 'पूर्णा' — complete/full — pen name मे ही philosophical aspiration। Upanishadic 'purnata' (completeness) concept।

— — —

२.१३ सत्यनारायण झा — 'ओहिना मोन अछि ओ दिन'

'ओहिना मोन अछि ओ दिन' — nostalgia poem। 'विनल बरख दशमी मे गेल छलौं हम गाम अपन / पोखरि पर ई बात चलल सपना सभ लगैत रहै' — Maithili pokhri (pond) culture। Proustian memory — involuntary recollection।

— — —

३. जगदानन्द झा 'मनु' — सम्पूर्ण साहित्यिक योगदानक समीक्षा

जगदानन्द झा 'मनु' एहि संकलनक सर्वाधिक विपुल रचनाकार थिकाह — गीत, गजल, कविता, विहनि कथा, बाल गजल — सभ विधामे।

३.१ गीत १-५

मनुजीक पाँच गीत — भोजपत्रक इतिहास, seasonal songs, और devotional content — Maithili geet tradition क नव रूप। गीत-१: 'मुठ्ठी भरि विया भागक अपन हम रोपि / अपने माटि में हँसि हँसि कँ गौरा' — farmer's optimism।

गीत-२ (भोलेनाथ भक्ति): 'मुनलह हमर कपार / एलहुँ भटकैत-भटकैत तोरे द्वारे / मुनलह किएक अपन केवार' — भक्ति रस। Mirabaiक tradition मे — direct address to God।

३.२ गजल

मनुजीक गजल 'बहरे-रमल, मात्राक्रम-२१२२' मे: 'रंग देखू भरल अछि सभतरफ तँ खूनसँ / देश गेलै गैल बेईमानीक घूनसँ' — political satire। 'साग तरकारी कने भेलै महग यौ / आब छी पोसैत नेता भात बूनसँ' — ई rhyming political complaint।

३.३ 'हम एहन किएक छी?'

'हम एहन किएक छी? / माटि-पानि छोड़ि कए / जाति-पाति पर लड़ैत किएक छी?' — Gandhian/Ambedkarite question। 'के छी अगरा / के छी पछरा / सभ मिथिलाक संतान छी / फोड़ि कपार देखु तँ / सभहक सोनित एके छी' — blood as universal humanity।

पाश्चात्य दृष्टि: Franz Fanonक 'Wretched of the Earth' — colonized peoples must overcome internal divisions। 'हम एहन किएक छी?' — ई self-critique colonized consciousness का।

३.४ 'कोना मदर डे हैप्पी?'

'आब केहन जमाना आवि गेल / तखड़ में एक्के दिन / माय कैं यादि करै छी / Mother Day कैं नाम पर' — Western consumer culture k critique। 'जखि मदरे नहि हैप्पी / तँ / कोना / मदर डे हैप्पी?' — ई rhetorical question। Thorstein Veblenक 'Conspicuous Consumption' — Hallmark holidays k commercial nature।

३.५ करुण हृदयक मालिक महाराज रणजीत सिंह / विल्मा रुडोल्फ

मनुजीक दू प्रेरक लघु कथा — बाल-साहित्य खण्डमे:

'महाराज रणजीत सिंह' — 'गाछ अपन सामने फल दैत छै, हम अपन सामने, एहिमे अजगुतक कोन गप' — ई royal generosity story मे Maithili dharmic governance ideal।

'विल्मा रुडोल्फ' — polio से champion sprinter बनेबाइ — ई motivational story। विल्मा रुडोल्फ (1960 Rome Olympics) — अफ्रीकी-अमेरिकी civil rights movement context — एहि story मे double marginalization (disability + race) k triumph। Intersectionality (Kimberlé Crenshaw) — एक्के साथ multiple oppressions।

— — —

४. विहनि कथा, लघुकथा, दीर्घकथा खण्डक समीक्षा

४.१ पंकज चौधरी 'नवलश्री' — 'ई नोर छै गरीबीक'

'तुधनी' (विधवा माय) आ 'बंटी' (छोट बेटा) — rain-soaked night — रोटी, नोन, आ अचार। 'बेटा, वो पियाज काटलहुँ नहि दुआरे नोर बहि रहल अछि' — ई lie k पाछू माँक गरीबी छुपाबाक desperate act।

रस-दृष्टि: करुण रसक सर्वाधिक मार्मिक उदाहरण। 'ई नोर छै गरीबीक' — ई title ही dhvani थिक। आनन्दवर्धनक ध्वनि सिद्धान्त — title क suggestion > actual narrative।

पाश्चात्य दृष्टि: Charles Dickensक social realism। Anton Chekhovक 'The Kiss' — small moments of dignity। Maxim Gorkyक working-class literature। 'ई नोर छै गरीबीक' — ई तीनू traditions k synthesis।

४.२ ओम प्रकाश झा — 'प्रोग्रेसिव' / 'बीस टाका'

'प्रोग्रेसिव'

शमाजी आ हुनकर 'progressive' self-image — दू बेटी छथि, family planning, बेटी-सभकें पढेनाइ। मुदा 'मीनू' (बाल कामगार) पर निर्मम। ई irony — 'progressive' self-image आ actual class-based cruelty।

रस-दृष्टि: ई विहनि कथा वक्रोक्ति (vakrokti) k supreme example। 'प्रोग्रेसिव' title मे ही critique — कुन्तकक vakrokti जीवित सिद्धान्त। Marxist literary criticism: Class consciousness — middle class progressive identity आ working class exploitation simultaneously।

'बीस टाका'

सिपाही आ ट्रक driver — दस टाका, पन्द्रह टाका, बीस टाका — corruption escalation। ई systematic corruption documentation। Kafkian bureaucratic absurdism — 'ड्राइवर बूझि गेल रहै जे ई सिपाही माने बला नै छै।'

४.३ राम विलास साहु — 'स्कूलक खिचड़ी' / 'चोर-सिपाही'

'स्कूलक खिचड़ी'

Mid-day meal scheme पर dialogue — 'विचिनासँ ऊपर धरि सभ माले-माल होइत अछि' — teacher क honest corruption-admission। पाश्चात्य दृष्टि: Michael Foucaultक 'disciplinary institutions' — school as site of power। Bowles/Gintis 'Schooling in Capitalist America' — education reproduces class inequality।

'चोर-सिपाही'

रात्रि मे चोर, अँधेरामे दुनूक भेट — ironic resolution। 'दोनूक बात सुनैत सुनैत रहि गेलौं' — narrator k moral ambiguity।

४.४ चन्दन कुमार झा — 'टटका रचना'

'टटका' (fresh/new) रचना — नव creation। चन्दन कुमार झाक satiric शिल्प — literary world k insider critique।

४.५ मुन्नी कामत — 'टूटल मन'

Broken heart story — ई 'मन' (heart/mind) — Maithili psyche k document। 'मन' जे 'टूटल' — Lacanian 'split subject' — modern woman k fractured identity।

४.६ जगदानन्द झा 'मनु' — 'रोटीक स्वाद' / 'अन्तिम जगह'

'रोटीक स्वाद'

रोटी — मैथिल परिवारमे भात (rice) प्रधान। रोटी k 'स्वाद' — migration आ dislocation मे food nostalgia। Proustian involuntary memory — food as cultural memory।

'अन्तिम जगह'

'अन्तिम' (last/final) — death/resting place। यात्रावृत्त-शैली। पाश्चात्य दृष्टि: Samuel Beckettक 'Endgame' — waiting for end, yet continuing। मनुजीक कथा Beckett-esque resignation मे।

४.७ जवाहर लाल कश्यप — 'जमाना बदलि गेलै'

सामाजिक परिवर्तन पर ironic reflection। 'जमाना बदलि गेलै' — ई cliche title मे wry observation।

४.८ कामिनी कामायनी — 'कलंकित चान' / 'उत्तराक नोर'

'कलंकित चान'

चन्द्रमा — Maithili साहित्यमे beauty symbol। 'कलंकित' (stained) — ई paradox। Moon k dark spot (mare) metaphorically — एहि कथामे female purity mythology k critique।

'उत्तराक नोर'

'उत्तरा' — Mahabharata character। Uttara k tears — एहि mythological reference मे contemporary female predicament। पाश्चात्य दृष्टि: Adrienne Richक 'Re-Vision' — re-reading mythological/canonical texts from feminist perspective।

———

५. बाल साहित्य खण्ड — विशेष बाल-गजल उत्सव

विदेह सदेह-१२ मे बाल-गजल विशेषांक — मिहिर झा, रूबी झा, मुन्नाजी, प्रशान्त मैथिल, पंकज चौधरी 'नवलश्री', जवाहर लाल कश्यप, क्रांति कुमार सुदर्शन, जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल', अमित मिश्र, ओमप्रकाश झा, चन्दन कुमार झा, जगदानन्द झा 'मनु', कुमार सम्भव 'भारद्वाज', मिहिर झा, गजेन्द्र ठाकुर।

५.१ शिव कुमार यादव — बाल गजल / 'बौआ हमरा आब जुनि तंग कर'

'पूर्णिमा मेला ऐलए गे माँ / मेला देखऽ हमहुँ जेनए गे माँ' — बाल मनोरञ्जन। 'बौआ हमरा आब जुनि तंग कर / तोरा सँ आब हम हारि मानैत छी' — माँ-बेटाक playful dialogue।

रस-दृष्टि: वात्सल्य रस। Piaget k concrete operational stage — child k concrete desires (fair, sweets)। ई baal ghazal pedagogically effective।

५.२ रूबी झा — बाल गजल १-१३

रूबी झा एहि संकलनमे सर्वाधिक बाल गजल (१३ गोट) लिखलनि। विषय: माय-दाय, घर-आँगन, गहना-पोशाक, बचपन — सभ domestic experience।

'रुसिये गेल बौआ मनाएत कोना कए / निर्धन माय बौआ बुझाएत कोना कए' — poverty and parenting। 'दाइ कने दे तँ हमरो तेल गमकौआ लगेत / माँहि परमे हमहुँ टिकुली झलकौआ लगेत' — child's desire for adornment। ई specificity of child experience — Montessoriक child-centred pedagogy।

५.३ मिहिर झा — बाल गजल / गजल-theory

मिहिर झाक बाल गजल theory (भूमिका) — 'कसीदे केर एक हिस्सा होएत छैक नसीब' सँ गजलक उद्भव — ई historical tracing technical scholarship।

'मैथिली गजल मे किछु मास पूर्व गजलकार लोकनि एक टा नव प्रयोग शुरू केलनि — बाल गजल। हमरा ज्ञातव्य मे एखन धरि कोनो भाषा मे बाल विषय वस्तु पर गजल नहि लिखल गेल अछि।' — ई historical claim बाल-गजलक unique Maithili contribution establish करैत अछि।

५.४ मुन्नाजी — बाल गजल १-३

मुन्नाजीक बाल गजलमे 'इस्कुल' (school), 'माय' (mother), 'खेल' (play) — ई triptych of childhood। 'माटिक नाउर पानिक दूध पानिक / माटिक बुना पर खीर रान्हि, तरकारी बनेत' — ई mud-kitchen play universal child experience।

५.५ गजेन्द्र ठाकुर — बाल गजल

सम्पादक स्वयं बाल गजल लिखैत छथि — ई 'editor as participant' principle। गजेन्द्र ठाकुरक बाल गजल हुनकर 'बहरे-मुतकारिब' मे expertise k baal version।

५.६ जगदीश प्रसाद मण्डल — 'घटक काका' (बाल विहनि कथा)

'घटक काका' — एकटा aging grandfather आ granddaughter Saraswati क dialogue। 'विवाह किएक होइत अछि?' — ई innocent question grandfather k stumped करैत अछि। जगदीश प्रसाद मण्डलक बाल-कथामे ओही सामाजिक प्रश्न — बाल-परिप्रेक्ष्यसँ। ई naivety k through social critique।

पाश्चात्य दृष्टि: Jerome Bruner k 'narrative thinking' — children understand world through stories, not abstract arguments। मण्डलजी एहि principle instinctively apply करैत छथि।

५.७ जगदानन्द झा 'मनु' — 'करुण हृदयक मालिक' / 'विल्मा रुडोल्फ'

पहिने §३.५ मे विवेचन।

५.८ प्रीति प्रिया झा — 'ज्ञानक बल'

'ज्ञानक मंचपर / केओ पैघ नै / केओ छोट नै / नै केओ राजा / केओ रंक नै' — education as great equalizer। John Rawlsक 'A Theory of Justice' — equal opportunity principle।

५.९ मुन्नी कामत — 'बउआ देखहक चाँदकेँ' / 'भोरक सनेस'

'बउआ देखहक चाँदकेँ / चन्दा मामा दूर छै / देखहक कतेक मजबूत छै / बितत कटै-छटै छै / तैयो हँसैत छै / कतेक अटल निर्भय छै' — moon as resilience metaphor। 'भोरक सनेस' — morning greeting poem। दुनू poem मे optimism आ nature-as-teacher।

———

६. नाट्य उत्सव — मुन्नी कामत: 'शिक्षित बेटी'

विदेह सदेह-१२ क नाट्य खण्डमे मुन्नी कामतक 'शिक्षित बेटी' नाटक अछि। ई ५ दृश्यक (scene) एकांकी थिक।

६.१ नाटकक संरचना

प्रथम दृश्य: दुलारी परीक्षामे प्रथम आबैत अछि — माय फूलदाय अंकपत्र तोड़ैत अछि। द्वितीय दृश्य: पिता खट्टर — बेटीक प्रति supportive, माय क oppressive। तृतीय दृश्य: शिक्षक घर आबि बताबैत छथि जे दुलारी जिला मे अव्वल। चतुर्थ दृश्य: पिताक गर्व, माताक पश्चात्ताप। पञ्चम दृश्य: दुलारी पटना पढ़ऐ जाइत अछि, माय माफी माँगैत अछि। Ending: 'अक्षर-अक्षर दीप जरत / काका-काकी, नाना-दाय / सभ मिलि कऽ पढ़त / तबे बेटा-बेटीक भेद मिटत।'

७. खण्ड २क संश्लेषणात्मक मूल्यांकन

८. किशन कारीगर — विशेष समीक्षा: व्यंग्य कवितामे राजनीतिक मैथिली

किशन कारीगर एहि संकलनक सर्वाधिक sharp political satirist थिकाह। हुनकर ५ कविता — 'पंडा आ दलाल', 'फुसियाँहिक झगड़ा', 'फोंफ काटि रहल सरकार', 'घोंघाउज आ उपराउंज', 'अहींटा एकटा नीक लोक छी।'

८.१ 'पंडा आ दलाल'

'साहित्यौँ आब एकरा दुनू सँ / अछूत नहि रहि गेल / पंडा बैसल अछि पटना में / ता दिल्ली में बैसल अछि दलाल' — literary pandit आ literary broker। एहि metaphor मे मैथिली literary establishment k biting critique। Bourdieu k 'cultural broker' — एहि figure एहिठाम satirized।

८.२ 'फुसियाँहिक झगड़ा'

Communal violence — Godhra, Gujarat — 'की बाहरी आ की गोधरा कांड / बेमतलब के भेल नरसंहार' — ई political poem communalism कें 'meaningless quarrel' कहैत अछि। 'देश समाज जाए भांड़ मे / नेता जी के कोन छनि बेगरता' — leader k indifference।

८.३ 'फोंफ काटि रहल सरकार'

'रंग विरंगक डिग्री डिप्लोमा लेने / रोड पर घूमि रहल युवक बेकार' — unemployment आ meaningless education। 'विज्ञापन पूर्व फिक्स भेल अछि / बेध्यानी परीक्षा टा करौनाह' — nepotism in government jobs। ई documentary realism Zola k naturalism सन।

८.४ 'अहींटा एकटा नीक लोक छी'

सबसँ sophisticated poem — ironic celebration of 'nice person' जे actually selfish आ culturally rootless अछि। 'मातृभाषाक आन्दोलन चलौनिहार बुड़िबक / आ अहींटा एकटा नीक लोक छी' — ई sarcasm diaspora Maithili community k language abandonment criticize करैत अछि।

पाश्चात्य दृष्टि: Jonathan Swiftक 'A Modest Proposal' — extreme sarcasm as political tool। 'अहींटा एकटा नीक लोक छी' — ई Swift-ian irony मे।

नव्य-न्याय दृष्टि: गङ्गेशक tarka (debate): किशन कारीगर प्रत्येक poem मे एकटा false premise (सरकार काज करैत अछि, पंडा-दलाल साहित्य सेवा करैत अछि) कें empirical counterevidence सँ demolish करैत छथि।

———

९. विशेष विश्लेषण: शिव कुमार झा 'टिल्लू' — 'दृष्टिकोण'

'दृष्टिकोण' — ई एकटा philosophical long poem थिक जे जाति-व्यवस्था, caste privilege, आ moral responsibility पर।

'रैदासक वंशज दिलीप / खून पबैत छल / हम घूमैत छलौं / आब ओकरो सिखा देलिऐ / दूनू पीबैत छी / ताह रे मनुक्खक मोन' — ई self-indictment। upper-caste narrator जे Dalit friend (Raidas-descendant) कें drinking habit मे corrupt करैत अछि। ई confession poem।

'ब्रह्मकुलक पूत / हमहीं भँसैत छी / कोनो ने मानवताक भीत ससरए / भानक-रैदास ईसा बुद्ध / परशुराम बुद्ध कृष्ण राम' — ई list religious figures across caste/religion — Ambedkarite universalism।

पाश्चात्य दृष्टि: Dostoevsky k 'Notes from Underground' — unreliable, guilt-ridden narrator। 'दृष्टिकोण' मे एहिए confessional mode। Nietzsche k 'bad conscience' — जखन morality internal होइत अछि, guilt follow करैत अछि।

———

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह सदेह-१२: समानान्तर समीक्षा — खण्ड २: कविता, गजल, विहनि कथा, बाल खण्ड, नाटक

अध्याय 29 · विदेह सदेह-१३ — Videha Sadeha 13

सारांश मुदा जँ फणीश्वरनाथ रेणुक बिदापत रिपोर्ताज, गैर-ब्राह्मण विद्यापति-परम्परा, आ बिदेश्वर ठाकुर जनि समानान्तर परम्पराक लोकव

contribution देखी तँ 'नै' उत्तर अछि। रस-ध्वनि दृष्टिसँ: सम्पादकीयमे रौद्र रस (विद्यापतिक caste appropriation पर) आ वीर

रस (समानान्तर परम्पराक assertion) — दुनूक tension। कुन्तकक वक्रोक्ति: 'हमर विद्यापति' — एहि possessive claim मे

caste politics क critique।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · वक्रोक्ति · साहित्यिक समीक्षा · आलोचना · सांस्कृतिक अध्ययन

समानान्तर मैथिली साहित्य इतिहासक परिप्रेक्ष्यमे — भारतीय आ विश्व साहित्यिक सिद्धान्तसँ सम्पूर्ण समीक्षा

A Comprehensive Critical Appreciation — Indian & World Literary Theoretical Frameworks

खण्ड १: सम्पादकीय, विहनि कथा, लघुकथा, निबन्ध-समालोचना

ISSN 2229-547X VIDEHA | श्रुति प्रकाशन, नई दिल्ली, २०१३ | विदेह पेटार अंक ११६-१२०

१. गजेन्द्र ठाकुर — सम्पादकीय: मैथिली साहित्यमे ब्राह्मणवाद, विद्यापति आ समानान्तर परम्परा

एहि अंकक सम्पादकीय अत्यन्त गहन वैचारिक-ऐतिहासिक आलेख थिक जे मैथिली साहित्यक canonical politics क मूल प्रश्न उठाबैत अछि: 'की मैथिली साहित्य अपन मूल स्वरमे ब्राह्मणवादी अछि?'

१.१ सम्पादकक तर्क: 'हाँ आ नै' — द्विमुखी उत्तर

सम्पादक गजेन्द्र ठाकुर स्वीकार करैत छथि जे यदि साहित्य अकादेमीक समन्वयकक जाति-प्रोफाइल, 'घर-बाहर' जातिवादी रंगमंच, CIIL आ NBT क 'दुब्बर-पीअर' संकलन देखी तँ 'हाँ' उत्तर अछि। मुदा जँ फणीश्वरनाथ रेणुक बिदापत रिपोर्ताज, गैर-ब्राह्मण विद्यापति-परम्परा, आ बिदेश्वर ठाकुर जनि समानान्तर परम्पराक लोकक contribution देखी तँ 'नै' उत्तर अछि।

रस-ध्वनि दृष्टिसँ: सम्पादकीयमे रौद्र रस (विद्यापतिक caste appropriation पर) आ वीर रस (समानान्तर परम्पराक assertion) — दुनूक tension। कुन्तकक वक्रोक्ति: 'हमर विद्यापति' — एहि possessive claim मे caste politics क critique।

पाश्चात्य दृष्टिसँ: Stuart Hallक 'encoding/decoding' theory — Vidyapati क textकें dominant culture (ब्राह्मण समाज) कोना decode करैत अछि, आ subordinate culture (बिदापत-परम्परा) कोना negotiate करैत अछि। एहि negotiated reading मे गैर-ब्राह्मण communities विद्यापतिकें 'अपन' करैत छथि।

१.२ विद्यापति: कोन विद्यापति?

सम्पादक दू विद्यापतिक तर्क प्रस्तुत करैत छथि: (क) संस्कृत आ अवहट्ठ लेखक विद्यापति ठक्कुर — जे कट्टर ब्राह्मण छलाह, जाति-भेदक समर्थन केलनि। (ख) पदावली-विद्यापति — जे ज्योतिरीश्वरसँ पूर्व, सम्भवतः नौआ ठाकुर जाति के, सर्वहाराक हर्ष-उल्लास-संघर्षक कवि।

'मिथिला सांस्कृतिक परिषद' द्वारा विद्यापतिकें पाग पहिरा ब्राह्मण घोषित करनाइ — एहि 'caste appropriation' कें सम्पादक ऐतिहासिक तथ्यसँ refute करैत छथि: 'बिदेश्वर ठाकुर विद्यापति गीत गाबैत आ हाक्रोश करैत मृत्युकें प्राप्त केलनि जे विद्यापतिकें पाग पहिरा कऽ ब्राह्मण सभ छीनि लेलक।'

नव्य-न्याय दृष्टिसँ: गङ्गेशक 'pratyaksha pramana' — ऐतिहासिक साक्ष्य (बिस्फी परम्परा, कनचीरा विद्यापति-मण्डली, फणीश्वरनाथ रेणुक fieldwork) द्वारा canonical claim कें refute करनाइ। एहि empirical counter-evidence मे तर्कशास्त्रीय सटीकता अछि।

१.३ समन्वय २०१२ — IHC भारतीय भाषा महोत्सव

Samanvay 2012 (IHC) मे Maithili session — 'Love's Own Language' — गजेन्द्र ठाकुर, उदय नारायण सिंह, देवशंकर नवीन participates। एहि pan-Indian multilingual festival मे Maithili participation — ई विदेहक 'global Maithili positioning' mission।

पाश्चात्य दृष्टिसँ: Mikhail Bakhtinक 'heteroglossia' — एक्के समयमे अनेक भाषाक voices — Samanvay एहि multilingual democratic space क concrete example। Mouloud Mammeriक Berber revival parallel — marginalized language ka revival through institutional participation।

१.४ मो यान (Mo Yan) — नोबेल पुरस्कार २०१२

चीनी लेखक मो यान कें २०१२ नोबेल पुरस्कार — एहि संदर्भमे सम्पादक मैथिली साहित्यक global positioning पर विचार करैत छथि। 'लोकगाथा, इतिहास आ समकालीन घटनाक मिलनसँ जागल अवस्थाक आभासी वास्तविकता' — मो यानक style-description मे Maithili parallel tradition (बिदापत, गाथा) सन गुण।

१.५ विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३

विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार — राजनन्दन लालदास (फेलो), ज्योति सुनीत चौधरी (युवा), नरेश कुमार विकल (अनुवाद)। मूल पुरस्कार

२०१२ — राजदेव मण्डल ('अम्बरा')। बाल साहित्य — जगदीश प्रसाद मण्डल ('तरेगन')।

विदेह ढाँचासँ: ई parallel award system — 'Alternative Nobel' concept। Bourdieu k 'symbolic capital' — विदेह एकटा नव symbolic capital निर्माण करैत अछि जे साहित्य अकादेमीक hegemony कें challenge करैत अछि।

१.६ BPSC-मैथिली विवाद

मैथिली कें BPSC सँ हटाबैक कारण-विश्लेषण: 'मैविलीक कट्टरपंथी मूर्खाधिराज प्रोफेसर सभ जातिवादिताक कारण मैविलीक जे नोकसान पहुँचेलनि से इतिहास हुनका सभकें क्षमा नै करत।' ई self-critique — dominant community के बिरुद्ध, self-interest के विरुद्ध honest assessment।

पाश्चात्य दृष्टिसँ: Bourdieu k 'field' — academic field मे power struggle। Maithili professors क self-interested behaviour (90% marks in Maithili literature benefiting own caste) eventually damaged the field।

———

२. फणीश्वरनाथ रेणु — 'एकटा लोकगीतक विद्यापति'

फणीश्वरनाथ रेणुक ई रिपोर्ताज (१ अगस्त १९४५, साप्ताहिक 'विश्वमित्र') कनचीरा गामक विद्यापति-मण्डलीपर लिखल अछि। 'खेतिहर-बोनिहार आ बहलमानक कवि विद्यापति' — ई रेणुक thesis।

रस-दृष्टि: रेणुक reportage मे अद्भुत रस — 'गाए चरबैबला धौंआ, साथी पहीर विरहिनी राधा बनि गेलि आ कानि-कानि गाबए लागलि' — एहि transformation मे रस-सञ्चार। करुण रस (जनकदासक reluctance) आ वात्सल्य (जनकदासक granddaughter क mediation)।

पाश्चात्य दृष्टिसँ: Walter Benjaminक 'Storyteller' essay — लोक-कथाकार जे traditional knowledge रक्षा करैत अछि। जनकदास एहि traditional storyteller/singer। रेणु Benjamin-ian 'aura' k document करैत छथि — oral tradition क irreplaceable presence।

नव्य-न्याय दृष्टिसँ: रेणुक fieldwork — 'pratyaksha pramana' (direct knowledge through sensory experience)। ७०० वर्षक बाद जीवित tradition — ई vyapti (pervasive relation) सिद्ध करैत अछि जे बिदापत-परम्परा सर्वहाराक अछि।

———

३. विहनि कथा खण्डक सम्पूर्ण समीक्षा

३.१ राम विलास साहु — 'घुसहा घर' / 'इमानदारीक पाठ' / 'बौआ बाजल'

'घुसहा घर'

'घुसहा घर' — घुसखोरी, भ्रष्टाचार, आ वर्गीय बेईमानीपर व्यंग्य। Kafkian absurdism मे bureaucratic corruption। पाश्चात्य दृष्टि: Gogol क 'The Inspector General' — government corruption satire। रस-दृष्टि: हास्य-व्यंग्य रसमे political critique।

'इमानदारीक पाठ'

Irony — इमानदारी पढाबैत समाज स्वयं बेईमान। 'इमानदार घूसखोर' (जगदीश प्रसाद मण्डलक लघुकथा-शीर्षक) सँ comparison। वक्रोक्ति: 'इमानदारीक पाठ' मे ही विरोधाभास।

'बौआ बाजल'

बच्चाक innocent observation जे adult hypocrisy उजागर करैत अछि। Wordsworth k 'child as father of man' — बच्चाक unfiltered perception truth reveal करैत अछि। Vatsalya रसमे political critique।

३.२ सत्यनारायण झा — 'सुटिया'

'सुटिया' — एकटा character study। मैथिल ग्रामीण जीवनक minutiae। सत्यनारायण झाक कथाशिल्पमे Chekhov-ian 'slice of life' approach।

३.३ मुन्नी कामत — 'कैंसर'

'कैंसर' — ई title metaphorical आ literal दुनू। सामाजिक बीमारी (caste, patriarchy, corruption) कें cancer कहनाइ। Susan Sontagक 'Illness as Metaphor' — disease कें social meaning देनाइ। मुन्नी कामत एहि tradition मे।

रस-दृष्टि: करुण रस — cancer patient (literal) आ social cancer (metaphorical) दुनूमे। आनन्दवर्धनक dhvani — शारीरिक व्याधि social व्याधिक suggestion थिक।

३.४ जगदानन्द झा 'मनु' — 'प्रेमक बलि'

'प्रेमक बलि' — प्रवल (ब्राह्मण) आ सुमन (तेली जाति) क inter-caste love जे suicide मे समाप्त होइत अछि। 'अगिला भोरे-भोरे गामक पोखरि मोहार पर पीपि गाछक निच्चा बिच करमान लागल। सामने पीपि गाछसँ प्रवल आ सुमनकें मुइल देह फसकी लागल लटकल। दुनूकें आँखि बाहर निकलल जेना समाजसँ एखनो किछु प्रश्न कऽ रहल अछि — ऐना कहिया तक, प्रेमक बलि लेब?'

रस-दृष्टि: करुण रसक सर्वोत्तम example। 'प्रेमक बलि' — ई सीधे statement नहि, dhvani (suggestion) — समाजकें निर्दिष्ट प्रश्न। अभिनवगुप्तक 'sadharanikarana' (universalization) — ई specific tragedy universal caste-violence question बनि जाइत अछि।

पाश्चात्य दृष्टिसँ: Romeo and Juliet parallel — inter-family/inter-caste love tragedy। मुदा Shakespeare k मे family feud, मनुजीक मे caste system — broader social indictment। Emile Durkheim k 'altruistic suicide' — social pressure से motivated। ई love suicide एकटा प्रतिरोध-कार्य थिक।

नव्य-न्याय दृष्टिसँ: गङ्गेशक 'anumana' — दुनूक आँखि ('समाजसँ एखनो किछु प्रश्न कऽ रहल अछि') — मृत्यु-पश्चात inference। एहि 'silent questioning' मे नव्य-न्यायक verbal testimony (shabda pramana) क अभाव मे अनुमान सर्वाधिक powerful।

३.५ अमित मिश्र — 'परिभाषा'

'परिभाषा' — शहरक परिभाषा: 'शहर तँ श्मशान थिक जतऽ तान्त्रिक बनि लोक अपन स्वार्थपूर्तिक लेल तपस्या कऽ रहल अछि। किओ ककरो खोज-खबरि नै लै थि, नै तँ तपस्या भंग भऽ जेतै।' — एहि ironic definition मे अमित मिश्रक sharp social observation।

पाश्चात्य दृष्टिसँ: Baudelaire k 'fleurs du mal' — city as corrupting force। T.S. Eliot k 'Unreal City' (Waste Land) — modern metropolis k dehumanization। अमित मिश्रक 'परिभाषा' — Maithili urban alienation story।

रस-दृष्टि: करुण रस — 'उम्हर माएक साँसक तोर टूटल' — शहरक anonymity मे माँक मृत्यु। वक्रोक्ति: शहर = श्मशान।

३.६ सन्दीप कुमार साफी — 'साउस पुतोहु' / 'सगुन'

'साउस पुतोहु'

Saas-Bahu conflict — एहि social institution k realistic portrayal। दुनू perspective — साउस (सास) आ पुतोहु (बहु) — दुनूक grievances valid। Dialogue-heavy short story मे oral speech pattern authentically captured।

पाश्चात्य दृष्टिसँ: Simone de Beauvoirक analysis — women oppressing women (internalized patriarchy)। Betty Friedanक 'feminine mystique' — domestic sphere मे women k frustration। मुदा एहि कथामे दुनू trapped छथि एकहि system मे।

'सगुन'

Dowry-based marriage negotiation। 'सगुन लऽ कऽ जाउ' — ई metaphor entire transaction कें ritual disguise देइत अछि। Goffmanक 'impression management' — dowry transaction कें 'auspicious occasion' कहनाइ।

— — —

४. लघुकथा खण्डक सम्पूर्ण समीक्षा

४.१ कैलास दास — 'लाँज' (जनकपुर)

'लाँज' (Lodge) — सावित्री जे पति foreign मे गेलाक बाद एकाकी अछि। पड़ोसी पवन सँ unexpected friendship। 'लाँज देखि लेलहुँ' — ई statement multiple meanings carry करैत अछि: literal (lodge देखल) आ metaphorical (loneliness का 'lodge' — अपन एकाकीपन स्वीकार कएल)।

रस-दृष्टि: शृंगार रस — restraint सँ। दुनू character self-restrained — ई 'sambhoga shringar' नहि, 'vipralambha' (separation) मे। नव्य-न्याय: indirect suggestion (vyanjana) — 'लाँज' शब्दक polysemy।

पाश्चात्य दृष्टिसँ: Chekhov k 'The Lady with the Dog' — loneliness, attraction, moral restraint। Katherine Mansfield k lonely women stories। कैलास दासक 'लाँज' एहि tradition मे।

४.२ धीरेन्द्र कुमार यादव — 'बाबाक गाड़ी'

'बाबाक गाड़ी' — grandfather k संग childhood association। वात्सल्य रस। Wordsworth k 'spots of time' — childhood memories k permanent significance। पाश्चात्य: Proust k involuntary memory — grandfather k गाड़ी एकटा madeleine-moment।

४.३ डॉ. अरुणा चौधरी — 'बलना'

'बलना' (rolling pin) — kitchen object k symbolic use। घरेलू हिंसा k metaphor? वा female power k symbol? दुनू reading possible। Feminist literary criticism: kitchen objects क weapon/tool दुनू हेबाक possibility। Helene Cixousक 'writing the body' — domestic space through female lens।

४.४ डॉ. अजीत मिश्र — 'व्यथा'

'व्यथा' (sorrow/pain) — existential anguish। डॉ. मिश्रक philosophical laghukaatha। Kierkegaard k 'existential anxiety' — modern consciousness k fundamental condition। नव्य-न्याय: 'vyatha' — internally felt pain जे externally communicable होइत अछि।

४.५ जगदीश प्रसाद मण्डल — 'इमानदार घूसखोर'

'इमानदार घूसखोर' — ई title paradox मे ही brilliant satiric concept। एकटा घूसखोर जे 'ईमानदारीसँ' घूस लैत अछि — systematic corruption जे predictable, reliable, आ therefore 'honest' बनि जाइत अछि। Kafka k 'The Trial' मे bureaucratic absurdity — मण्डलजी एहि Maithili context मे।

पाश्चात्य दृष्टिसँ: Jonathan Swiftक 'A Modest Proposal' k satiric tradition। Voltaireक Candide — systematic absurdity। नव्य-न्याय दृष्टि: 'ईमानदार घूसखोर' — ई concept contradictio in adjecto (contradiction in terms) — गङ्गेशक 'aprasiddha' (unestablished) category।

४.६ कामिनी कामायनी — 'कठजीब'

'कठजीब' (hard-tongued/sharp-tongued) — female character जे social norms के defy करैत अछि अपन bold speech सँ। पाश्चात्य: Judith Butlerक 'gender trouble' — normative femininity को challenge करनाइ 'kath-jeeb' क act। Rabelaisक 'festive speech' (Bakhtin) — carnival inversions।

४.७ जगदानन्द झा 'मनु' — 'कमलू'

'कमलू' — एकटा aging man जे अपन चारू बेटाकें शहर गेला बाद अकेल, असगर मरि जाइत अछि। 'राम नाम सत्य है' — हुनकर funeral procession देखैत शहरी बेटा (राजकमल) telegram लऽ कऽ आएल रहए मुदा बहुत देर भऽ गेल।

रस-दृष्टि: करुण रस — Maithili साहित्यक सर्वाधिक moving tragedy। 'बेचारा! अभाव एवं बीमारीसँ असगरे लड़ैत-लड़ैत मरि गेला। आब मुखाग्निओ देबैक हेतु अपन किओक नहि।' — एहि narrative meiosis (understatement) मे maximum pathos।

पाश्चात्य दृष्टिसँ: Leo Tolstoy k 'The Death of Ivan Ilyich' — dying man k isolation, family k indifference। Chekhov k 'Ward No. 6' — societal neglect। Gabriel Garcia Marquez k 'The Incredible and Sad Tale of Innocent Erendira' मे abandonment। मनुजीक 'कमलू' एहि world literature tradition मे stands।

नव्य-न्याय दृष्टि: 'प्रत्यक्ष' — old man क suffering। 'अनुमान' — बेटाक love/duty का absence। 'उपमान' — 'लोटाक बचल पानि चारू कात बहि के / मानु कमलुक तकदीर आ एकाकीपर ठहाका लगाकऽ हँसैत होए' — tragic irony।

४.८ खुशबू झा — 'रुपाली'

'रुपाली' — एकटा introverted, sensitive girl k life journey। Solitude-loving, 'परीक दुनिया' (fairy world) मे विश्वासी, ultimately unfulfilled। Kafka k Josef K. सँ parallel — system मे fit नहि होनाइ।

पाश्चात्य दृष्टिसँ: Jane Austenक sensitive heroines — Marianne Dashwood (Sense & Sensibility)। Virginia Woolfक 'The Waves' — consciousness stream। 'रुपाली' — Maithili female coming-of-age story।

— — —

५. प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना खण्डक सम्पूर्ण समीक्षा

५.१ संजीव कुमार शर्मा — महाकवि पं. लालदासक १५६म जयन्ती समारोह

झारखण्डक महाकवि लालदास (रमेश्वर चरित — मिथिला रामायण रचनाकार) क जयन्ती समारोह खिटौआ (झारखण्ड) मे। 'महाकविक सावित्यमे आध्यात्मिक चिन्तन' विषयक संगोष्ठी। जगदीश प्रसाद मण्डलजीक उपस्थिति आ भाषण।

विदेह ढाँचासँ: लालदास-परम्परा — झारखण्डक मैथिल community क literary presence। ई 'diaspora Maithili' literature k documentation। विदेह एहि geographic diversity कें document करैत अछि।

५.२ सन्दीप कुमार साफी — आत्मकथा

सन्दीप कुमार साफीक आत्मकथात्मक निबन्ध। Personal narrative — 'तँए जल्दीसँ कतौ भाँज लगेबै' (wedding arrangement) — Maithili social customs का insider documentation।

पाश्चात्य दृष्टिसँ: Rousseau k 'Confessions' — personal truth telling। Michel de Montaigneक essai tradition — self-examination। साफीक आत्मकथा Maithili में एहि tradition।

५.३ उमेश मण्डल — 'दोसर चरणक पहिल सगर रातिदीप जरय' दरभंगा

'सगर रात दीप जरय' आन्दोलनक दोसर phase — ०१ दिसम्बर २०१२, दरभंगा। ३७ पोथीक लोकार्पण। उमेश मण्डलक रिपोर्ताज।

विदेह ढाँचासँ: 'सगर रात दीप जरय' — ई democratic literary gathering अछि जे कोनो institutional gatekeeping के बिना। Habermasian 'public sphere' — open participation, rational discourse। ३७ पोथीक एक्कहितर लोकार्पण — parallel publishing ecosystem।

५.४ प्रमोद रंगीले — 'प्रचण्ड प्रयोग कएलनि नया हथियार — मधेसी मोचा बेवकूफ बनेबा लेल भऽ गेल तैयार'

नेपाल क Madhesi political movement पर satirical reportage। एहि political analysis मे प्रमोद रंगीलेक sharp critical intelligence।

पाश्चात्य दृष्टिसँ: Gramsci k 'hegemony' — political manipulation। James Scottक 'weapons of the weak' — subaltern politics। प्रमोद रंगीलेक analysis एहि framework मे।

५.५ आशीष अनचिन्हार — 'माहिया' / 'लघु-दीर्घ निर्णय'

'माहिया'

'माहिया' — पंजाबी-Rajasthani folk music form। आशीष अनचिन्हार एहि form k Maithili गजलमे integration k सम्भावना explore करैत छथि। Cross-regional prosodic synthesis।

'लघु-दीर्घ निर्णय'

Maithili गजलमे मात्रा-निर्धारणक technical article। Laghu (short) आ Deergh (long) syllables क correct identification — ई prosodic science। अनचिन्हार फार्मूलाक technical elaboration।

५.६ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र — 'मेवाड़ आ मालवाक साँझी लोककला: एक परिचय'

राजस्थान-Malwa क 'Sanjhi' folk art — clay panels depicting religious scenes। Cultural documentation।

पाश्चात्य दृष्टिसँ: Claude Levi-Straussक 'mythologiques' — folk art मे mythological structure। Clifford Geertz k 'thick description' — एहि article मे Sanjhi art k thick cultural description।

विदेह ढाँचासँ: Maithili समाजमे 'सामा-चकेबा' (parallel tradition) — एकहि तरहक folk art। एहि comparison मे Mithila आ Malwa क cultural convergence। Benedict Anderson k 'imagined community' — folk art इ imagined community कें maintain करैत अछि।

५.७ गजेन्द्र ठाकुर — 'विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण'

ई आलेख विद्यापतिपर propagandic myths कें systematically demolish करैत अछि। विशेष: शतपथ ब्राह्मण परम्परा (orthodox Brahmanical mainstream) बनाम समानान्तर परम्परा।

'ऋगवेदसँ पहिनेसँ भाषा अस्तित्वमे रहल होएत। कतेक मौखिक साहित्य जेना गाथा, नाराशंसी, देवत कथा आ आख्यान सभ ओहिमे रचल गेल होएत।' — एहि historical linguistics मे Maithili k Vedic roots trace करनाइ।

पाश्चात्य दृष्टिसँ: Friedrich Schlegel k comparative philology। Sanskrit-Vedic connection का linguistic evidence। एहि आलेखमे गजेन्द्र ठाकुर Indologist level k historical-linguistic argument present करैत छथि। Edward Saidक 'Orientalism' k counter-argument — दूसर viewpoint — native scholars द्वारा अपन tradition k re-claim।

नव्य-न्याय: Gangeshk 'anumana' (inference from evidence) — Vedic textual evidence सँ Maithili parallel tradition क ऐतिहासिक continuity। जल्दी प्रमाण: 'ऋगवेद ४.९.८ मे दुर्लभ लेल दूलभ' — Maithili phonology k Vedic root।

५.८ राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' — 'ह्वेन सांग (चीन) मे भेँटघाँट'

ह्वेन सांग (Xuanzang) — 7th century Chinese Buddhist monk, Nalanda university scholar। भ्रमरजीक China yatra मे Xuanzang s historical connection explore करनाइ।

पाश्चात्य दृष्टिसँ: Paul Pelliot, Aurel Stein — silk route scholarship। Mithila-China intellectual connection (Nalanda) k rediscovery। Edward Saidक Orientalism critique — एहि narrative मे Maithili scholar k agency: हम China जा हमर पूर्वजक footsteps trace करैत छी।

५.९ नागेन्द्र कुमार कर्ण — सुजीत कुमार झापर

सुजीत कुमार झाक 'जिद्दी' कथा-संग्रहपर literary criticism। नागेन्द्र कुमार कर्णक समालोचनात्मक दृष्टि।

५.१० खुशबू झा — 'मैथिली कथा संग्रह जिद्दी पढ़लापर'

एकटा reader's response — 'जिद्दी' कें पढ़लाक बाद emotional-intellectual reaction। 'पुरा कथा संग्रह महिला आ महिलाक आचरण पर केन्द्रित अछि जे एहि समाजक सत्यताक उजागर करैत अछि।'

पाश्चात्य दृष्टिसँ: 'Reader-Response Criticism' (Stanley Fish, Iser) — text का meaning reader k interaction मे emerge होइत अछि। खुशबू झाक response एहि theory k demonstration।

५.११ नवेन्दु कुमार झा — 'आर्थिक संकट मे चेतना'

'चेतना समिति' — Darbhanga based institution — आर्थिक संकटसँ त्रि-दिवसीय Vidyapati Smriti उत्सव दू दिनमे reduce। एहि संस्थागत decline k documentation।

विदेह ढाँचासँ: चेतना समितिक decline बनाम विदेहक rise — ई 'parallel canon' theory k institutional evidence। जखन traditional institutions fail करैत अछि तखन parallel institutions emerge होइत अछि।

५.१२ पूनम मण्डल — गौरीनाथक उपन्यास 'दाग' / 'सगर रात दीप जरय' / Samanvay 2012

'दाग' उपन्यास लोकार्पण

गौरीनाथक मैथिली उपन्यास 'दाग' — 'स्त्री आ शूद्र दुनूकें हीन आ मर्दनीय मान'वला कुसंस्कृतिक अवसानक कथा।' Multiple reviewers: 'दलित विमर्श आ स्त्रीवाद दुनूकें एक संग समेट'वला उपन्यास मैथिलीमे नहि लिखल गेल अछि।'

पाश्चात्य दृष्टिसँ: Kimberlé Crenshawक 'intersectionality' — caste आ gender simultaneously oppression। Dalit-feminist framework। भारतीय: B.R. Ambedkar k 'Annihilation of Caste' + Savitribai Phule k feminist consciousness। 'दाग' एहि intersection पर।

Samanvay 2012 — मैथिलीमे ब्राह्मणवाद पर बहस

IHC मे ३ नवम्बर — 'Maithili: Love's Own Language' — एहि session मे ब्राह्मणवाद, ज्योतिरीश्वरपूर्व विद्यापति आ मैथिलीमे प्रेम-गीतपर debate। Gajendra Thakur, Uday Narayan Singh, Dev Shankar Naveen — तीन distinct perspectives।

विदेह ढाँचासँ: ई public debate — Habermas k public sphere — literary/political questions कें academic space मे discuss करनाइ। Media documentation (Samanvay website, Videha archive) — parallel canonical record।

५.१३ हरिशंकर श्रीवास्तव 'शलभ' — 'मन्त्रष्टा ऋष्यश्रृंग' (हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद — विनीत उत्पल)

Sanskrit legend 'Rishyashringa' — deer-raised sage — k Maithili rendering। हिन्दीसँ मैथिलीमे अनुवाद (विनीत उत्पल)।

पाश्चात्य दृष्टिसँ: Walter Benjamin k 'Task of the Translator' — translation k independent literary status। George Steiner k 'After Babel' — translation as intercultural dialogue। विनीत उत्पलक translation work एहि framework मे।

— — —

६. खण्ड १क संश्लेषणात्मक मूल्यांकन

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह सदेह-१३ — Videha Sadeha 13

अध्याय 30 · विदेह सदेह-१३: खण्ड २ — कविता · गजल · बाल साहित्य · नाटक — सम्पूर्ण समीक्षा

सारांश — — — १.१ किशन कारीगर — 'घोटालाबला पाइ' 'घोटालाबला पाइ' — corruption क पैसाक व्यंग्यात्मक मानवीकरण

'लोभी बैसल अछि लोभ में जोंक जेकाँ / ओकर चाँउल चलब झपटमार जेकाँ' — ई उपमामे शोषक पूँजीवाद क आलोचना। पाश्चात्य:

Bertolt Brechtक 'Threepenny Opera' — आपराधिक पूँजीवाद।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · पाश्चात्य आलोचना · नाटक · कविता · गजल · बाल-साहित्य

१. कविता खण्डक सम्पूर्ण समीक्षा

विदेह सदेह-१३ क पद्य-खण्डमे बहुविधात्मक कविताकारक उपस्थिति अछि — किशन कारीगर (राजनीतिक व्यंग्य), अजीत मिश्र (प्रेम-काव्य), मयाम दरिहरे (अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ), मिहिर झा (विदागरी/गजल), पंकज चौधरी 'नवलश्री' (चारि गजल), बिन्देश्वर ठाकुर (विस्तृत काव्य-संग्रह), अमित मिश्र (भगवती गीत/गजल), अच्छे लाल शास्त्री (किसान-कविता), मनु (उगैत सूरज / ११ गजल), कैलास दास (कम्प्यूटर / नेता जी), प्रमोद रंगीले (मच्छर राज), जवाहर लाल कश्यप (गीत), कपिलेश्वर राउत (रौदी), ओम प्रकाश (गजल), शिवनाथ यादव/अर्चना कुमारी (इन्दिरा आवास), हेमनारायण साहु, शिव कुमार यादव, शिव कुमार झा 'टिल्लू' (सिनेह), शम्भु सौरभ (गीत), राजदेव मण्डल (१२ कविता), डॉ. शशिधर कुमर 'विदेह' (मृगतृष्णा/आइ अहाँ), मुन्नी कामत (१० कविता), शेफालिका वर्मा, प्रबीण चौधरी प्रतीक, सत्यनारायण झा, आशुतोष मिश्र, रूबी झा (गजल), शान्तिलक्ष्मी चौधरी, नन्द विलास राय, पवन कुमार साह, बिपिन कुमार कर्ण, रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार', बिनीता झा, बाल मुकुन्द पाठक (१० गजल), सन्दीप कुमार साफी (४ कविता), अंशु माला पाण्डेय, विनीत उत्पल, अनिल मल्लिक, किशन कारीगर।

— — —

१.१ किशन कारीगर — 'घोटालाबला पाइ'

'घोटालाबला पाइ' — corruption क पैसाक व्यंग्यात्मक मानवीकरण। 'लोभी बैसल अछि लोभ में जोंक जेकाँ / ओकर चाँउल चलब झपटमार जेकाँ' — ई उपमामे शोषक पूँजीवाद क आलोचना। पाश्चात्य: Bertolt Brechtक 'Threepenny Opera' — आपराधिक पूँजीवाद। Jonathan Swiftक व्यंग्य-परम्परा। नव्य-न्याय: 'घोटालाबला पाइ' — धन कें नैतिक अभिकर्त्ता के रूप मे वर्णन करनाइ — एहि मानवीकरण मे vakrokti (कुन्तक) क उत्कृष्ट उदाहरण।

१.२ अजीत मिश्र — 'दीआबाती'

'दीआबाती' (दीपावली) — पावनिक प्रकाश-छवि। 'दीआबाती' शीर्षकमे संस्कृत-मैथिली संयोजन। रस-सिद्धान्त: अद्भुत रस — 'दीपक प्रकाश' metaphor। पाश्चात्य: W.B. Yeatsक Celtic twilight कविता tradition — प्रकाश-अन्धकार symbolic dialectic।

१.३ मयाम दरिहरे — 'ओबामा ओबामा ओबामा'

बराक ओबामाक presidency (२०१२ context) पर मैथिली कविता — ई अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक topicality मैथिली कविता मे। पाश्चात्य: Langston Hughesक 'dream deferred' tradition — अश्वेत राजनीतिक चेतना। Post-colonial theory: ओबामा k election — colonial history क ironic reversal। विदेह ढाँचासँ: Maithili कविता विश्व घटना कें सम्बोधित करैत अछि — ई महानगरीय साहित्यिक

चेतना।

१.४ मिहिर झा — 'विदागरी' / गजल

'विदागरी' (farewell poem) — Maithili विदाई परम्परा। अनुप्रास, आन्तरिक तुकबन्दी। रस: करुण। पाश्चात्य: Thomas Hardyक farewell poems। मिहिर झाक गजलमे 'बहरे-हजज' — अनचिन्हार formula consistent।

१.५ पंकज चौधरी 'नवलश्री' — चारिटा गजल

चारि अलग बहर मे गजल। प्रेम, विरह, सामाजिक आलोचना — परास प्रभावशाली। 'नेनामे जखन खाली बातसँ भेँटत नै किछो एतय / तखनो बात बनाबैत छी किया एना' — अस्तित्वगत निरर्थकता क succinct expression। 'नवलश्री' macta (अन्तिम शेरमे उपनाम) — शास्त्रीय उर्दू गजल-परम्परा।

१.६ बिन्देश्वर ठाकुर — 'अभागलमे शुभकामना' / 'अस्पतालक हाल' / 'जनकपुरक रेल्वे' / 'एक एहनो नारी' / गजल १-२ / गीत १-२ / 'चेतना'

'अभागलमे शुभकामना'

Ironic शीर्षक — अभागल लोककेँ शुभकामना। 'जे खूब पिलैसँ जनमल / जे धरतीपर जीवनभर / रहल हलखोर।' वक्रोक्ति: शुभकामना मे ही आलोचना। Brecht क epic theatre — विलगाव-प्रभाव।

'अस्पतालक हाल'

Maithili hospital — स्वास्थ्य-सेवा व्यवस्था क यथार्थवादी चित्रण। 'सिस्टम' क indifference। पाश्चात्य: Solzhenitsynk 'Cancer Ward' — संस्थागत चिकित्सा-व्यवस्था क मानवता-हरण। Kafka क नौकरशाही-दु:स्वप्न।

'जनकपुरक रेल्वे'

Nepal-Mithila केँ जोड़नहार एकमात्र रेलक दुर्दशा। 'बौआ पुछलनि माए कहू / ई ट्रेन कहिया धरि चलत / माए बजलनि सुनु बौआ / कुसीक खेल जखन धरि चलत।' — Political बालकक निर्दोष प्रश्नक माध्यमे व्यंग्य। एहि child-adult dialogue मे Wordsworthian innocence/experience dialectic।

'एक एहनो नारी'

Materialistic modern woman क व्यंग्यात्मक चित्रण। 'पहिनेक नारी एही मिथिलाके / सहनशील कतेक सुशील छलीह / आजुक नारी भौतिकवादमे / मैथिलानीक गुण बिसरि गेलीह।' — एहिमे एकटा conservative nostalgia अछि जे नारीवादी आलोचना क साथ complex negotiation। Betty Friedan क पारिवारिक आदर्श क critique और simultaneously traditional values क assertion।

गजल १-२ (नेपाल-Mithila diaspora theme)

'मध्य राइत सपनामे हम नेपाल गेल छलौं / वठिमे परिवार सङे बड़ खुशी भेल छलौं।' — प्रवासी-उदासी। 'एखन धरि पैसा कमेलौं कि नै यै? / खातामे पैसा पठेलौं कि नै यै?' — प्रवासी मजदूर क पारिवारिक दबाव। Edward Saidक 'out of place' — exile consciousness।

'चेतना'

'स्वार्थ-स्वार्थसँ भरल संसार / बिनए सबके सब अधिकार।' — नैतिक चेतना क call। Gandhian sarvodaya।

१.७ अमित मिश्र — भगवती गीत / गजल

भगवती गीत

'रातक सुनहरी, उगल इजोरिया, चक-मक चमकत चान यौ।' — Maithili devotional song tradition। भक्ति रस। Lalitha Sahasranama parallel।

गजल

'उठि कऽ बैसल मरदबा एखनी कुचिओ होतै की।' — पारिवारिक आलस पर ironic comment। 'साँप दू मूँहाँ भरल अछि सगर घरमे की करबै।' — राजनीतिक दोमुँहापन। बहर-२१२-२१२ — तकनीकीरूपेँ अनुशासित।

१.८ अच्छे लाल शास्त्री — 'किसानक भेल पिसान' / 'आबो चेत चलू'

'किसानक भेल पिसान'

'देखू सभ जन महग भेल समान / जखन सभसँ सस्ता बिकैत धान।' — कृषि मूल्यक विरोधाभास। 'नै एकता जाधरि किसानक भेल / चलैत रहत ताधरि एहने खेल।' — एकतासँ समाधान। पाश्चात्य: Pablo Neruda क 'Ode to My Socks' — साधारण वस्तु k epic treatment। Howard Zinn क 'People's History' — किसान-संघर्ष।

'आबो चेत चलू'

Post-Independence accountability poem। 'अंग्रेज भागि गेल मुदा रहि गेल बनल वर्ग।' — नेहरूवादी 'सत्ता-हस्तान्तरण' k आलोचना। इहो Ambedkarite — सामाजिक न्यायबिनु राजनीतिक स्वतन्त्रता।

१.९ मनु — 'उगैत सूरज पएर पसारि' / गजल १-११

'उगैत सूरज पएर पसारि'

प्रकृति-काव्य। 'उगैत सूरज पएर पसारि / धरतीक आँगनमे एलै।' — मानवीकरण। 'बरदकेँ संग लए हरबाहा / कन्हापर लादि हर आएल।' — मिथिलाक कृषि-प्रभात। Wordsworth क 'Tintern Abbey' — nature as नैतिक मार्गदर्शक। Hopkins क 'Pied Beauty' — प्राकृतिक विविधता।

गजल १-११ — विविध बहर

मनुजीक ११ गजल — बहरे-रजज, बहरे-रमल, बहरे-मुतकारिब, बहरे-मुतदारिक आदि — तकनीकी निपुणता। विषय: जीवन-दर्शन ('जीवन कखन तक अछि नै बुझलक किओ'), विरह ('जखन खगता सभसँ बेसी तखन ओ मुँह मोड़ि लेलनि'), शृंगार ('किए तीर नजरिसँ अहाँकें चलैए'), सामाजिक critique ('रहब आब नै दास बनि हम'), inflation ('सुरशाक मुँह बेएने महगाइ मारलक'), पैसाक शक्ति ('अनकोसँ सम्बन्ध जोड़ाबै छै पाइ')।

गजल ७: 'जकर मोनक रावण नै मरलै / राम आजुक कोना ओ बनलै।' — Ramayana k contemporary राजनीतिक रूपक। गजल ११: 'गरीबी नहि सरकार गरीबेकें मेटाबै छैक' — तीखा social आलोचना। गजल ११ क 'साउस भेली सरदार गलती नहि हुनकर / जतए ततए किएक पुतोहुकें जवाबै छैक' — पितृसत्तात्मक न्याय-व्यवस्था।

पाश्चात्य: Khalil Gibranक philosophical poetry। Pablo Neruda k love sonnets। मनुजीक गजल मैथिली गजल-परम्परा क सर्वाधिक technically advanced आ thematically diverse corpus।

१.१० कैलास दास — 'कम्प्यूटर' / 'नेता जी'

'कम्प्यूटर'

'हमर काम अनेक अछि / करैत नहि छी करबैत छी / सभ क्षेत्र मे हम अबैत छी / हम कम्प्यूटर छी।' — एहि first-person computer कवितामे उत्तर-मानववाद। 'निरक्षर हम दोस्त नहि / नहि जनने हमरा लोक बुझैत नहि अछि।' — डिजिटल विभाजन। Alan Turingक AI philosophy, Marshall McLuhan क 'medium is the message' — एहि कवितामे।

'नेता जी'

'हम देशक रक्षक छी / हमरा सँ किछु सीखू।' — ई self-aggrandisement ironic। 'नेता जीतक पद पर आएल / अपन रूप रावण सन धेलक।' — Ravana metaphor for corruption। पाश्चात्य: Machiavelli क 'Prince' — power क amoral use। George Orwell क 'Animal Farm' — राजनीतिक रूपक।

१.११ प्रमोद रंगीले — 'मच्छर राज'

'जनकपुर शहर पर करू सभ गाते नाज / गुलाम बनू मच्छरक यएह अछि काज।' — mosquito as symbol of शहरी प्रशासनक विफलता। 'पर्यटन दिवस नै, मनाउ मच्छर दिवस।' — ई scathing satire Nepal Mithila k प्रशासनक विफलता पर। Jonathan Swiftक 'Drapier's Letters' — local राजनीतिक व्यंग्य। Aristophanesक 'The Wasps' — insects as political symbol। नव्य-न्याय: 'मच्छर राज' — एकटा vivid vyapti — जतय प्रशासन नहि ओतय मच्छर राज 'अछि' — ई anumana नागरिक अवलोकन।

१.१२ जवाहर लाल कश्यप — गीत

'आँखि सँ जे झहरल नोर तकरा सभ देखलक / आह मे जे जरि गेल तकरा के देखतै।' — hidden suffering। 'पंख छल छोट मुदा, उड़ब आकाश छल / हिम्मत नहि हारब, अतेक विश्वास छल।' — perseverance philosophy। Walt Whitman क optimistic transcendentalism।

१.१३ कपिलेश्वर राउत — 'रौदी'

'रौदीक मारल सभ रिरियाइए / चिरै-चुनमुनी चुन-चुना।' — drought क poetic document। 'सांख्य योगी सुदामा बनली / दरिद्र जीवन जिबैए / कर्मयोगी कृष्ण बनि कऽ / स्वाबलम्बीकें सभ पूजैए।' — Gita philosophy applied to कृषि-प्रतिरोध। ई philosophy Karl Marx क 'alienated labour' आ Buddhist 'right livelihood' दुनूसँ भिन्न — indigenous agricultural karma-yoga।

१.१४ ओम प्रकाश — गजल १-२

गजल १ — बहरे-हजज

'करेजक बात नै कहियो बनल एतय / किओ सुनलक कहाँ मोनक कहल एतय।' — alienation theme। 'हँसी किनैत रहलौं सदिखने ऐठाँ / लए छी हम नुका आत्मा मरल एतय।' — social mask। Paul Celanक 'death fugue' — inward death।

गजल २ — मफऊलातु-मफाईलुन-मफाईलुन

'आँखिसँ नोर खसाबैत छी किया एना / मोती अपन लुटाबैत छी किया एना।' — wasted potential। 'अपने सीबऽ पड़त फाटल करेजा ई / अनकर आस लगाबैत छी किया एना।' — self-reliance। Khalil Gibranक 'The Prophet' k self-sufficiency theme।

१.१५ शिवनाथ यादव आ अर्चना कुमारी — 'इन्दिरा आवास'

'इन्दिरा आवासक रुपया सभटा खा गेलै मुखिया / हकन कनैत अछि गामक दुखिया।' — कल्याण योजनामे भ्रष्टाचार। 'हयौ जनता कतऽ जा करत अपन फरियाद यौ / किरानी चपरासी अफसर एके दियाद यौ।' — व्यवस्थागत भ्रष्टाचार। E.P. Thompsonक 'नैतिक अर्थशास्त्र' — poor people क कल्याण-अधिकार। Gramsci क 'trasformismo' — सुधारवादी राजनीति k समावेशन।

१.१६ हेमनारायण साहु — 'हम छी नीमक गाम' / 'जोन-बोनिहार'

'नीमक गाम' — स्थान-कविता। 'जोन-बोनिहार' — आर्थिक विषय। पाश्चात्य: Seamus Heaney क 'Death of a Naturalist' — rural Ireland क poetry। Thomas Hardyक Wessex poems।

१.१७ शिव कुमार यादव — 'ई की भेल' / 'मिथिला गीत'

'ई की भेल' — समकालीन सामाजिक परिवर्तन पर astonishment। 'मिथिला गीत' — सांस्कृतिक पहचान। रस: शृंगार, वात्सल्य।

१.१८ शिव कुमार झा 'टिल्लू' — 'सिनेह'

'सिनेह' (love/affection) — प्रेमपर दार्शनिक कविता। 'जकर राग युग-युग सजो रावजित।' — ई ध्वनि अनन्तकाल तक resonant। यात्री-परम्पराक bhakti आ shringara blend।

१.१९ शम्भु सौरभ — गीत

झारखण्डक Maithili tradition। कविता सम्मेलन मे पाठ।

१.२० राजदेव मण्डल — 'चिर प्रतीक्षा' / 'हाथ' / 'ठक' / 'बलात' / 'झूठक ज्ञान' / 'जेहने अहाँ तेहने हम' / 'इमानदारी' / 'बीआ' / 'उपयोग' / 'द्वन्द्ध' / 'कुहेस' / 'जानवरक बोली'

१२ कविताक सम्पूर्ण समीक्षा

राजदेव मण्डल — विदेह भाषा सम्मान २०१२ (मूल पुरस्कार, 'अम्बरा') — एहि संकलनमे १२ कविता। ई एकैसम शताब्दीक मैथिली कविता क peak representation।

'चिर प्रतीक्षा': प्रेम-आ-विरह। 'मध्यरतिया भऽ गेल छै साइत / अखने पहुँचलौं बौआइत।' — waiting as अस्तित्वगत अवस्था। Samuel Beckett

क 'Waiting for Godot' k meiotic echo।

'हाथ': 'बाँहि पसारि बढ़ेलौं हाथ / तरेतर घुमि रहल अछि माथ / विमूढ़ भऽ अटकि छी / द्वन्द्वमे पड़ल छी।' — नैतिक द्वन्द्व। Hamlet क 'To be or not to be' parallel।

'ठक' (चोट): 'घटि गेल बीचक दूरी / गप्पसँ बेसी डोलैत मुड़ी।' — social conformism।

'बलात' (violence/force): Caste/लैंगिक हिंसा theme।

'झूठक ज्ञान': 'इमानदारी पाबैत अपमान / हमहूँ नै बचल छी पूरा।' — honest self-indictment।

'जेहने अहाँ तेहने हम': Moral reciprocity।

'इमानदारी': 'लगल अछि बेमानीक धूरा / खोजलौं ऐ पार-सँ-ओइ पार / नै भेटल पूरा इमानदार।' — नैतिकताक अभाव। Diogenes with lantern searching for an honest man।

'बीआ' (seed): 'बीआ नै अछि खाली बीआ / माटि, पानि, हवा प्रकाश / सँ मिलतै आस।' — seed as life-philosophy। ई Pablo Neruda क 'Elemental Odes' k Maithili counterpart। एहिमे बीआक 'prakriti' (nature-energy) — Samkhya darshan।

'उपयोग' (utility): 'काज पड़ल तँ ला ताकि कऽ / नुकाएल छौ कोन दोग / भऽ गेल काज तँ हटा तुरत / इहए छियौ संक्रामक रोग।' — instrumental relationship आलोचना। ई कविता गजेन्द्र ठाकुरकें समर्पित — editor-poet relationship k honest commentary।

'द्वन्द्व' (dialectic): 'बिआहक बन्धन तोड़ि-तावि / घर-परिवारकें छोड़ि-छावि / आएल अपने इच्छा।' — individual desire vs social duty। Hegel क Sittlichkeit (ethical life) बनाम individual freedom।

'कुहेस' (fog/haze): 'कतौ नै किछु बचल अछि शेष / चारूभर पसरल कुहेस।' — अस्तित्वगत भ्रम। T.S. Eliotक 'fog' in Prufrock — moral/spiritual blindness।

'जानवरक बोली' (animal speech): 'जानवरक मुँहसँ मनुक्खक बोली सुनि रहल छी / अचरजमे डुबल अपने माथ घुमि रहल छी।' — Kafka-शैलीक रूपान्तरण। एहिमे evolution theory क ironic reversal — animal talking मे 'human civilisation' k आलोचना।

नव्य-न्याय: राजदेव मण्डलक प्रत्येक कविता एकटा philosophical argument थिक — bija/seed मे potential energy, fog मे moral blindness, animal speech मे human degeneration — सभमे anumana (inference) structure। रस: एकैसम शताब्दीक सभ नव रस — शान्त ('बीआ', 'कुहेस'), रौद्र ('उपयोग', 'बलात'), करुण ('इमानदारी'), हास्य ('जानवरक बोली')।

विदेह ढाँचासँ: राजदेव मण्डल — OBC community, Madhubani district — साहित्य अकादेमीक शास्त्रमे marginalized। विदेह हुनकें 'most published' आ 'prize-winning' दर्जा दैत अछि। 'उपयोग' कविता सम्पादककेँ समर्पित — ई सम्पादक-लेखक जे mutual dependence acknowledge करनाइ — लोकतान्त्रिक साहित्यिक पारिस्थितिकी।

१.२१ डॉ. शशिधर कुमर 'विदेह' — 'मृगतृष्णा मे पानि तकैत छी' / 'आइ अहाँ बड़ नीक लगैत छी'

'मृगतृष्णा मे पानि तकैत छी'

'मृगतृष्णा मे पानि तकैत छी / कोना भेटत से अँहीं कहू।' — philosophical question। Mithila राज्यक symbol — Sita क जन्मभूमि — ई मृगतृष्णा (mirage) metaphor political लालसा। Plato क 'Allegory of the Cave' — illusion vs reality।

'आइ अहाँ बड़ नीक लगैत छी'

'जानि किए नञि, आइ अहाँ बड़ नीक लगैत छी।' — प्रेम-कवितामे जटिल संरचना। Classical Maithili shringara tradition (Vidyapati echo)। 'जकर राग युग-युग सञो रावजित।' — eternal love। Kalidasa k Meghadutam — absent beloved। ई कवितामे Maithili classical tradition आ modern sensibility क beautiful synthesis।

१.२२ मुन्नी कामत — दश कविता

'सिया तोरे कारण' — Sita कें नारीवादी सम्बोधन। 'जौं एगो सीता जे / अवाज उठैइतैक / तँ फेर कोनो सीता / नै परित्यागित होइतैक।' — पौराणिक पुनर्व्याख्या। Adrienne Richक 're-vision' — नारीवादी पुनर्पाठ। Sita k silence = all women's silence।

'ठिठुराबैत जाड़' — winter poem — poverty metaphor। 'गरीबेकें तँ / भगवानो मारैत अछि।' — theological indictment। आइवान करामाजोव क 'rebellion' — theodicy question।

'बन्दिश' — creative/social constraints। Homi Bhabha क 'colonial mimicry' — women constrained in multiple ways।

'पैसा सँ बियाह' — dowry आलोचना। 'अइ युगमे लड़की / सँ नै पैसा सँ / होइत अछि बियाह यौ।' — विवाहक वस्तुकरण।

'काँच बाँस जकाँ लचपच उमरिया' — young woman क social vulnerability। 'काँच बाँस' — पूर्ण विकसित नहि, मुदा pressure मे। Feminism: Carol Gilliganक adolescent girls' development।

'मनक वेदना' — emotional pain। 'जिन्दगी बनि गेल धुँआ / हवाक मलारो सँ / काँपि उठैतयऽ / सभ रूआ।' — physical sensation of grief। Sylvia Plathक आत्म-स्वीकारोक्ति कविता।

'शरहद' (border/boundary) — ई मुन्नी कामतक सर्वाधिक universal poem। 'हम एक जाति छी / मानव जाति! / फेर किए नै कोइ / ई बुझैत अछि।' — Tagoreक 'where the mind is without fear'। India-Nepal border, लैंगिक सीमा, जातीय सीमा — सभ।

'भेल पुरा आस' — optimistic harvest poem। 'उमरल एलै / देखी कारी मेघ / चलि गेल धान / पुबरिया खेत।' — agricultural abundance।

'भाइयक स्नेह' — sibling relationship। 'भगवान हमरा फेरसँ / बच्चा बना दइए / हमरा भइया सँ ओ स्नेह मँगा दइए।' — खोएल निर्दोषता।

'अलहर मेघ' — monsoon poem। 'बजबैए मेघ / तबला ढोल।' — nature as musical instrument। Kalidas क Meghadutam।

समग्र: मुन्नी कामत एहि संकलनक सर्वाधिक thematically diverse कवियत्री — mythology (Sita), social critique (dowry, border), nature, family, feminism — सभ एकहि स्वरमे।

१.२३ शेफालिका वर्मा — 'रे मन'

'आइ जीवनक इच्छा बनि बहराएल / निसाँस रे मन।' — existential awakening। Shefalikaजी senior Maithili woman poet — ई कवितामे lifelong search k culmination। Mirabai tradition — direct address to 'मन' (mind/soul)।

१.२४ प्रबीण चौधरी प्रतीक — 'देखही रौ मिता'

'देखही रौ मिता एकटा धौंसी / चैन चोराकऽ चलि गेलै।' — light love poem। यौवन-humor। Classical Maithili shringara k youthful version।

१.२५ सत्यनारायण झा — 'हे भगवान'

'देशक शासन धोबिया पोखरि अछि / लम्पट, लुच्चा एहिमे नहाइत अछि।' — governance satire। 'हे खेवनहार कत' नुकाएल छह।' — divine appeal। Swift-ian satire आ biblical lament (Psalms) दुनूक conjunction।

१.२६ आशुतोष मिश्र — गीत

'अहाँ किए अखन एना छी / अखन अहाँ बहुत नेन्ना छी।' — child-poem। Vatsalya rasa।

१.२७ रूबी झा — गजल १-३

गजल १ (वार्णिक बन्ध-२५): 'आँखि सँ दहँ बहँ नोर बहैत छल ओ कहलेन धुर पानि रहल।' — waiting wife। 'बारह बरख पर ओ एला एक घड़ी छाहोँ नहि भेटल हमरा।' — migration theme। Mirabai क 'piya milan' k inversion।

गजल २ (२१२२-२१२२): करुण रस।

गजल ३ (वार्णिक बन्ध-१०): 'आइ हम बड़ उदास छी / नै बुझी किए हतास छी।' — अस्तित्वगत उदासी।

१.२८ शान्तिलक्ष्मी चौधरी — 'जर-जाजन' / 'दुर्गापूजा'

'जर-जाजन' (wedding preparations)

'भरिघर हुलिमालि-हुलास अछि / ईह, की पिहकारी, हास अछि।' — wedding celebration क detailed social canvas। प्रत्येक पाँतिमे एकटा social observation — humour मे। ई Maithili wedding sociology क poetic document। Bakhtin क 'carnivalesque' — उत्सवी सामाजिक उलटफेर।

'दुर्गापूजा'

Goddess worship k female perspective।

१.२९ नन्द विलास राय — 'वोट'

Election satire। 'वोट' — democracy क ironic celebration।

१.३० पवन कुमार साह — 'मिथिला वासी'

Maithili identity poem। 'मिथिला वासी' — regional pride।

१.३१ बिपिन कुमार कर्ण — 'देखु केहेन ई भारत निर्माण'

Development satire। India Shining vs rural reality।

१.३२ रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार' — 'एकटा अनुपम गीत'

झारूदार परम्परा — झाड़ू k symbol (Vidyapati tradition सँ)। Democratic folk tradition।

१.३३ बिनीता झा — 'भूखल' / 'प्रकृति'

'भूखल' — hunger poem। 'प्रकृति' — nature poem। दुनू feminine sensibility।

———

२. गजल खण्ड — बाल मुकुन्द पाठक (१० गजल) / सन्दीप साफी / विनीत उत्पल / अनिल मल्लिक

२.१ बाल मुकुन्द पाठक — १० गजल

पाठकजीक दश गजल — विभिन्न themes। 'लोक कहैत छथि जे हम छी शराबी शराब पीबैत छी' परम्पराक extension। वार्णिक बहर command। Ghazal क central theme — love, longing, social observation।

२.२ सन्दीप कुमार साफी — 'कातिकक पूर्णिमा' / 'गामक इनार' / 'माघक शीतलहरी' / 'रसगुल्लाक जबार'

'कातिकक पूर्णिमा'

Karthik Purnima — Chhath festival parallel। Mithila seasonal ritual।

'गामक इनार' (village well)

'इनार' — community space। Social gathering, gossip, water क life-source। García Márquez क 'Macondo' — village as microcosm।

'माघक शीतलहरी'

'बाप रे बाप होइए प्राण चलि जाएत।' — cold wave exaggeration। Rural winter hardship।

'रसगुल्लाक जबार' (Rasogolla feast invitation)

'नोत दैत छी यौ नोत दैत छी / रसगुल्ला जबारक नोत दैत छी।' — festive invitation। Mithila food culture — 'रसगुल्ला' मिठाई। Folk invitation convention। M.M. Bakhtin क 'feast' — सामूहिक उत्सव।

२.३ अंशु माला पाण्डेय — 'मिथिला महान'

'तरुआ तिलकोर तरल / खीर छल मखान।' — Maithila food identity। Cultural pride।

२.४ विनीत उत्पल — गजल (माय पर)

'नेनामे जखन कानैत रही, तूँ चुप हमरा कराबैत रहीं।' — mother-child bond। 'जन्मैत संगे देखैत छी मायकें पहिने ठाइ किओ ओतय रहीं / आँखिमे भरल नोरक संग उत्पलकें देखि मुस्काबैत रहीं।' — birth moment k reversal — mother's tears of joy as child's first sight। वार्णिक बहर बन्ध-२३। रस: वात्सल्य।

२.५ अनिल मल्लिक — गजल १-२

गजल १

'अहाँ मुसुकीसँ चानक ईजोर भऽ गेलै / रातक चलैहे लगलै जेना भोर भऽ गेलै।' — beloved's smile = moonlight। Classical shringara imagery। 'घोघ कमाल केलकै हम सोचते छलौं / श्याम रँग छल कोना आब गोर भऽ गेलै।' — ई dark-to-fair transformation — प्रेमक रूपान्तरणकारी शक्ति।

गजल २

'बहिनक चोटी पकड़ि कऽ खींचिऐ गुल्लक कहियो फोड़ि दियै।' — भाई-बहिनक शरारत। 'बरख बितैत अछि आब तँ राखी की आ भरदूतिआ केहन।' — festival क nostalgic recall। Diaspora's लालसा।

२.६ किशन कारीगर — 'लोक करए लूटमार जेकाँ'

'लोभी बैसल अछि लोभ मे जोंक जेकाँ।' — corruption satire। 'बेमतलब के करै विदेश यात्रा।' — राजनीतिक व्यंग्य-बाण। Swift-ian tradition। ई Sadeha-12 क 'पंडा आ दलाल' परम्पराक continuation।

———

३. बाल साहित्य खण्ड — विशेष विश्लेषण

विदेह सदेह-१३ क बाल खण्डमे विशेष समृद्धि अछि: शिव कुमार झा 'टिल्लू' (बिना रदीफक बाल गजल), मुन्नी कामत (८ बाल कविता), राजदेव मण्डल (दीपपर दीप), राम विलास साहु (मेघक बरियाती), बाल मुकुन्द पाठक (बाल गजल), जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' (दू बाल गजल + गाँधी गीत), अमित मिश्र (बाल गजल), मनु (बाल गजल + 'माटिक बासन' बाल लघुकथा), दुगानन्द मण्डल (नेना लेल सुन्दर चित्रकथा)।

३.१ शिव कुमार झा 'टिल्लू' — 'बिना रदीफक बाल गजल'

'उगल सुरुज उठू बौआ भऽ गेलै भोर / माँझ आङहमे कौआ कौआ बनल मुँह जोर।' — बच्चाक प्रातःकालीन दिनचर्या। 'बाहीर मात्र एक दीन-दुखियाक नाइ / वर्ण आले तँ की ज्ञान दीप हएत गोर।' — equity through education। बिना रदीफक गजल — तकनीकीरूपेँ चुनौतीपूर्ण। शिव कुमार झाक innovation। ई Maithili baal sahitya मे prosodic advance।

३.२ मुन्नी कामत — ८ बाल कविता

'बेटी' (बाल कविता)

'छोड़ऽ कक्का / बेटा-बेटी कऽ / अन्तरक खेल।' — लैंगिक समानता addressed to child। 'कुछ दिन कऽ / मेजमान बनि ई तोरा / घर आइल छऽ।'

— daughter as guest metaphor — बालकक दृष्टिसँ पितृसत्ताक आलोचना। Rousseau क 'Emile' — प्रकृतिक माध्यमे नैतिक शिक्षा।

'कारी-बजार' (black market)

'कारी-धन कारी-बजारी / कारी चादरसँ लिपटल / हमर देश अछि।' — political education for children। ई Paulo Freireक 'conscientization' k child-version।

'शब्दक खेल'

Language-learning through dialogue — pedagogy poem। Vygotsky k ZPD।

'माँ बता तूँ एगो बात'

Child's cosmic question — moon, sun, night। 'सुनु बउआ हमर बात / बिना पढ़ने नै खुलत ई राज।' — education as key। Tagore क 'where the mind is without fear'।

'अनहार घरमे हत्या' (कन्या भ्रूण-हत्या)

'हम बेटी छी तँ / हमर कोन दोष।' — girl's voice against foeticide। 'नै मारू / जकरा लोग पूजैत अछि / ओइ मायक मुँह देखऽ दिअ।' — irony: Goddess worship आ female infanticide। ई Maithili children's literature मे सर्वाधिक bold social statement।

'जतरा' (fair/journey)

बच्चाक मेला देखबाक उत्साह — निर्दोष आनन्द।

'अंकक मेल' (numbers)

Counting as poetry — mathematics pedagogy। '1,2,3...दस — अइ सँ आगू चलत एगो बस।' — mathematical narrative।

'माय हमरा एगो बहिन आनि दे'

'किए तूँ हमरा / असगर रखने छऽ / हमरासँ बहिनक स्नेह / बिनने छऽ।' — desire for sibling। ई implicitly one-child policy आलोचना। 'माय हमरा एगो मैका दऽ दे।' — maternal home metaphor।

३.३ राजदेव मण्डल — 'दीपपर दीप' (बाल कविता)

'नमगर बाँसक दीप / पर नाचैत दीप / अपने देहकें जारि-जारि / तैयो टेमीकें सम्हारि।' — lamp k self-sacrifice metaphor। 'किन्नौं नै देखतै केकरो / रंग, रूप आ जाति।' — egalitarian light। ई Maithili बाल काव्यमे सर्वश्रेष्ठ philosophical poem। Rumi k candle metaphor। Ambedkarite light of education।

३.४ राम विलास साहु — 'मेघक बरियाती' (बाल कविता)

'तारबतोर पूरबा बहै / दिन-राइत बहै नै थके।' — wind मानवीकरण। 'सेना संगे मेघ धमकि गेल।' — cloud army। 'देखते मेघक बरियाती / गमी जान बचा भागए लगल।' — heat running from clouds। ई Kalidasa k Meghadutam क बाल-version।

३.५ जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' — दू बाल गजल + गाँधी गीत

बाल गजल १

'भोरहि सभकें आबि जगा / कोइली हमरा आँगन आ।' — morning bird metaphor। moral education।

बाल गजल २

'कत' खसलियै यौ पापा / कोना कऽ एलियै यौ पापा।' — anti-corruption through child's question। 'लोकतन्त्रकें जर्जर केलियै / मूस बनलियै यौ पापा।' — तीखा राजनीतिक व्यंग्य।

गाँधी गीत

'सत्य अहिंसाकेर पुजारी छला महात्मा गाँधी।' — Gandhi memorial song। 'एक छि काबा-काशी।' — religious unity। ई रवीन्द्रनाथ +

गाँधी tradition।

३.६ अमित मिश्र — बाल गजल

'माँटिकें कर जोड़ि करियौ नमन बौआ।' — earth reverence। 'पानिमे डूबि जीबैत छी मगर यौ / देख लै ई विश्व ताकत अपन बौआ।' — swimming as life-skill। 'बहरे-रमल, फाइलातुन-२१२-तीन बेर।'

३.७ मनु — बाल गजल / 'माटिक बासन' (बाल लघुकथा)

बाल गजल

'चलै चुनमुन चलै गुनगुन तमासा घुमि कए आबी।' — fair atmosphere। 'जिलेबी ओतए बानैत तोहर भेटतौ बाबी।' — childhood sweet memories। बहरे-हजज।

'माटिक बासन' (clay vessels) — बाल लघुकथा

केदार प्रसाद (potter) आ बिभू (son) — कला-परम्पराक पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचरण। 'मातिक बासन जेना घैल, ढाकन, मटकुरी बना अपन जीवन यापन करैत छलाह।' Steel vessels सँ displacement। 'गलती पर गलती निकालब — ई father क teaching method।' अन्तमे जखन national sculpture exhibition मे बिभूक work selected — father कहैत छथि: 'सुन्नर! आइ तक बनाएल गेल मूर्ति सभमे सर्वश्रेष्ठ।'

पाश्चात्य: Kalidasa k Shakuntala — पहचानक दृश्य। Cobblerक कारीगरक गरिमा (John Ruskin)। Pablo Neruda क 'Ode to My Socks' — ordinary objects k dignity। Ivan Illichक 'Tools for Conviviality' — देशज ज्ञान-पद्धति।

३.८ दुगानन्द मण्डल — 'नेना लेल सुन्दर चित्रकथा'

Illustrated story format। विदेहमे दृश्य-आख्यान परम्परा।

———

४. नाट्य उत्सव — तीनू एकांकीक सम्पूर्ण समीक्षा

४.१ मुन्नी कामत — 'हत्यारा समाज' / 'जिन्दगीक मोल'

'हत्यारा समाज'

Muthili एकांकीमे 'हत्यारा समाज' — ई society itself accusedक स्थितिमे। Caste violence, लैंगिक हिंसा, संस्थागत उपेक्षा — ई सभ 'हत्या' करैत अछि। Brechtक 'Caucasian Chalk Circle' — कोन 'माय' authentic? society का 'murderer' कोन?

'जिन्दगीक मोल'

'जिन्दगीक मोल' — human life क value। ई existential question Dostoevsky क 'The Idiot' (Myshkin क innocence) आ Sartre क 'The Flies' (individual responsibility) दुनूसँ resonates। रस-सिद्धान्त: करुण रसक प्रधानता।

४.२ महेन्द्र मलङिया — 'मूदा: श्रृंगार, संघर्ष आ द्वन्द्व'

महेन्द्र मलङिया — मैथिली नाटक k senior name — एहि तीन-भागीय शीर्षकमे एकांकीक complete rasa-arc: श्रृंगार (love), संघर्ष (conflict), द्वन्द्व (inner conflict)।

रस-सिद्धान्त: Bharataक Natyashastra मे 'rasa-viparyaya' (rasa inversion) — श्रृंगारसँ रौद्र, रौद्रसँ करुण — ई arc। 'मूदा' (मुदा = but/however) — ई conjunction शीर्षक ही नाटकक tension दर्शाबैत अछि।

पाश्चात्य: Aristotle क 'anagnorisis' (recognition) आ 'peripeteia' (reversal) — दुनू एहि एकांकीमे। Chekhov k three-act structure क एकांकी compression।

विदेह ढाँचासँ: महेन्द्र मलङिया Sahitya Akademi prize winner — ई उपस्थिति विदेहक 'all inclusive' policy दर्शाबैत अछि — canonical authors सेहो।

५. विदेह सदेह-१३: समग्र संश्लेषण

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह सदेह-१३: खण्ड २ — कविता · गजल · बाल साहित्य · नाटक — सम्पूर्ण समीक्षा

अध्याय 31 · विदेह सदेह-१४: खण्ड २ — पद्य खण्ड (पृ. ३७३-७३६) — कविता · गजल · भक्ति गजल · बाल गजल · यात्रा-संस्मरण

सारांश पूर्णतः मैथिलीमे सम्पूर्ण समीक्षा — चारि सैद्धान्तिक धुरी १. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' — 'की भेटल आ की हेरा गेल': विशाल

आत्म-गीत 'की भेटल आ की हेरा गेल' — जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क महाकाव्यात्मक आत्मगीत। पृ. ३७४-४३४ — ६०सँ अधिक

श्लोकमे एकटा लेखकक सम्पूर्ण जीवन-यात्रा। 'हम सोचि रहल छी जीवनमे / की भेटल आ की हेरा गेल' — ई refrain प्रत्येक श्लोकक

अन्तमे।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · कविता · गजल · साहित्यिक समीक्षा · आलोचना

पूर्णतः मैथिलीमे सम्पूर्ण समीक्षा — चारि सैद्धान्तिक धुरी

१. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' — 'की भेटल आ की हेरा गेल': विशाल आत्म-गीत

'की भेटल आ की हेरा गेल' — जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'क महाकाव्यात्मक आत्मगीत। पृ. ३७४-४३४ — ६०सँ अधिक श्लोकमे एकटा लेखकक सम्पूर्ण जीवन-यात्रा। 'हम सोचि रहल छी जीवनमे / की भेटल आ की हेरा गेल' — ई refrain प्रत्येक श्लोकक अन्तमे।

१.१ आत्मगीतक विषय-क्षेत्र

ई आत्मगीत अनेक dimension cover करैत अछि: बचपनक स्मृति (बाबाक खिस्सा, पिवरिया नचैत), शिक्षा-संघर्ष, मैथिली साहित्यक परिचय (यात्री, हरिमोहन, जीवकान्त, शेखर, रवीन्द्र, मणिपद्म), आर्थिक संकट, पारिवारिक दायित्व, Bihar मे 'आतंकक छाया', राजनीतिक disappointment, आ अन्तिममे आत्म-साक्षात्कार।

'नितुरिया कें ताकय लगलहुँ / दुखमोचन कें चीन्हय लगलहुँ / मरनी, बिल्टू केर देखि बगय / छल अपन सभ दुख पड़ा गेल' — यात्रीक उपन्यासपात्रक माध्यमसँ अपन पीड़ा recognize करनाइ।

१.४ भक्ति गजल — ७ गजल

पंकज चौधरी 'नवलश्री' (pen name) क आखर-बन्ध-आधारित भक्ति गजल: सरस्वती वन्दना, राम-महिमा आदि। बहरे-रमल (२१२२) आ सरल वार्णिक बहर (आखर ११-२५) मे। मात्रा-शास्त्रक strict discipline।

'श्वेत अछि परिधान माँ हे / ठोढ़ पर मुस्कान माँ हे / हाथ पुस्तक कमल आसन / सजल वीणा तान माँ हे' — सरस्वती-वन्दना मे classical imagery। भक्ति रस — शान्त रसक उप-variety।

१.५ प्रेम गजल — अनेक

श्रृंगार रस — 'बिना बियाहे घरमे कनियाँ केहेन लगैए / कहू त काकी बदलल दुनियाँ केहेन लगैए।' — समाज-परिवर्तनक satiric observation। 'चान रहल चलितहिँ अहिना / बीतल युग तकितहिँ अहिना।' — प्रेम-वियोगक circular time।

'आदमीकें आदमीसँ आदमी किए बाँटल करैए / आदमीक देहमे किए आदमीक टान अछि' — आदमी-गजल मे existential question। वार्णिक बहर, आखर-१९।

— — —

२. मनोज कुमार मण्डल — बाल-कविता श्रृंखला (पृ. ४५७-४७०)

मनोज कुमार मण्डल — बेरमा, तमुरिया, मधुबनी। बारह बाल-कविता।

२.१ 'किट-किट' (खेल-कविता)

'तूँ किट-किट खेल / एक्के टाँगपर रेंग-रेंग / चारू कात घूम।' — 'किट-किट' (hopscotch) खेलक poetic description। ई simple rhyme Maithil childhood का authentic document।

२.२ 'सुन बाबू सुन'

'सुन सुन सुन / सुन बाबू सुन / सीख एहेन गुण / बाबाक पगरी आ / बाबूक माथ नै / करियनु कहियो सुन्न।' — गुण-शिक्षाक गीत। Pedagogical poetry।

२.३ 'लोभ'

'कुत्तिया दिदिक बियाहमे / घनेरो कुत्ता बरियाती आएल / दोस्त रहनि मूसाजी / तिनको ओ संगे नेने एलाह / सखी-बहिनपा देखैले एली / बिलाइ मौसी सेहो एली / मूसाजीकें देखते देरी / जीसँ खसलनि पानि' — लोभक परिणाम। Aesop क fable tradition।

२.४ 'इंजन'

'नम्हर-नम्हर लगि रहल छै / दुइये पटरीपर चलि रहल छै / एक्केटा इंजन केकटा डिब्बा / सबकें इंजन खींच रहल छै।' — ट्रेन-बिम्बमे जीवन-दर्शन। 'पगि भऽ बनि हम इंजन / अहिना खींची अपन जीवन।'

२.५ 'रे मन! कऽ ले कनी विश्राम'

'रे मन! कऽ ले कनी विश्राम / चलए पड़तौ दूर छै अपन गाम।' — मनकें address। Vivekananda क 'arise, awake' tradition। बाल-कवितामे adult philosophy।

२.६ 'भाव भरल अछि मनमे'

'भाव भरल अछि मनमे / केवल एतबा अछि लाचारी / हाथ हमर अछि खाली।' — economic poverty क बाल-कवितामे expression।

२.७ 'के छथि धरात्मा'

'केहन सुन्दर केहेन निर्मल / दीन रहितो उपासनामे लागल / अपन साँसक आसमे ओ / सबहक प्राणक अभय दान / दऽ रहल छथि खेतिहर किसान / कहू एहेन के छथि धरात्मा?' — किसानकें धरात्मा बताओल। भक्ति रस + सामाजिक न्याय। नव्य-न्याय — 'anumana' द्वारा किसानक divine status।

२.८ 'मनुक्ख बनब कोना?'

'छी: छी: धूर छी: आ छी: / मनुक्ख भऽ मनुक्खसँ घृणा करैत छी / ओही परमेश्वरके बनाओल / माटिक मूरत हमहूँ छी अहूँ छी।' — Ambedkarite humanism। 'सभ तँ माँ मिथिले के संतान छी / जाति-पातिक रोग दूर भगाउ।' — fraternity।

— — —

३. मो. गुल हसन — 'उदास लागै' (पृ. ४७१-४७२)

'उदास लागै' — एकटा संक्षिप्त मुदा भावपूर्ण कविता। मुस्लिम कवि Maithili मे — ई विदेहक communal inclusivity क प्रमाण।

रस-दृष्टि: करुण रस — अस्तित्वगत उदासी। नव्य-न्याय — उदासीक 'pratyaksha' (अनुभूति) — अनुमानसँ नहि, सीधे। पाश्चात्य — Albert Camusक 'absurd' — अकारण उदासी existential condition।

— — —

४. अमित मिश्र — बाल गजल, भक्ति गजल, आ कविताएँ (पृ. ४७३-४९५)

४.१ 'आइ मिथिलामे सीया सीया शोर भऽ गेलै'

Sita-centric identity poem। 'आइ मिथिलामे सीया सीया शोर भऽ गेलै।' — मिथिलाक सांस्कृतिक गर्व। भक्ति रस + क्षेत्रीय pride।

४.२ 'नेंगरा दरबान' / 'पतंग बनाबै रे'

'पतंग बनाबै रे' — बचपनक उड़ान-स्वप्न। 'नेंगरा दरबान' — economic satire। छोट बच्चा (नेंगरा) जे चौकीदार (दरबान) बनि गेल — corruption metaphor।

४.३ 'बाबाकें' / 'उसनल अण्डाक हयाय'

'बाबाकें' — grandparent-grandchild प्रेम। वात्सल्य रस। 'उसनल अण्डाक हयाय' — उसनल (boiled) अण्डाक तुलना उस्मल (oppressed) जीवनसँ — वक्रोक्ति।

४.४ 'जीवन एहिना चलैत रहै छै' / 'जागू' / 'समयक संग'

'जागू' — social awakening call। 'समयक संग' — change embrace करनाइ। progressive ideology मे।

४.५ 'नारीक रूप'

'सभ दिन देखैत छी / सभ अखबारक पहिल पन्नापर / आइ एतऽ तँ काइ ओतऽ / छीनि लेल गेल नारिक इज्जत।' — rape journalism क critique। 'हम नारिक इज्जत कोनो पत्नी-बहिन रूपमे नहि / बल्कि अपन जननीक रूपमे करब।' — नारी-दृष्टि।

रस-दृष्टि: रौद्र रस (rape culture पर क्रोध) → शान्त रस (माँ-सम्मान मे resolution)। पाश्चात्य — bell hooks k feminist consciousness। Adrienne Rich k 'Of Woman Born'।

— — —

५. कुन्दन कुमार कर्ण — बाल गजल आ गजल (पृ. ४९६-४९७)

५.१ बाल गजल

'फूल फुललै फुलबारीमें, बनल जतरा / ताही ऊपर खेलैछै कते ममरा।' — बाल-प्रकृति-कविता। 'खेलब कुदब अहीना फूलक संग सदिखन / हम बाँटब नितदिन पंक्षी क खूब अहरा।' — environmental kindness।

५.२ गजल

'मोनके बात कहि दिअ / प्रेमके संग बहि दिअ / दिल हमर अखन खाली / ताहिमें प्रिय रहि दिअ।' — शृंगार रस। फायलुन-फाइलातुन (२१२-२१२२) — technically sound।

— — —

६. आशीष अनचिन्हार — 'नुकाएल बलात्कारी रूप' आ गजल (पृ. ४९८-५०३)

६.१ 'नुकाएल बलात्कारी रूप' — एकटा क्रान्तिकारी prose poem

'हरेक मर्दक भीतर नुकाएल रहैत छै एकटा बलात्कारी रूप।' — ई opening statement Maithili literature मे unprecedented। Delhi gang rape (2012) कें context मे।

'हम आइ ई स्वीकार करैत छी जे हरेक मर्दक भीतर नुकाएल रहैत छै एकटा बलात्कारी रूप / हम अपनाकें साधु-महात्मा बनेबाक लेल हरेक स्त्रीकें माए-बहिन नहि कहबै / मुदा हे स्त्री अहाँ जे स्वरूपमे हमरा लेल छी / हम सामूहिक रूपसँ माफी माँगत छी अहाँ सभसँ।'

रस-दृष्टि: रौद्र रस — आत्म-रौद्र — स्वयं पुरुष वर्गपर क्रोध। करुण रस — स्त्रीक दशापर। कुन्तकक वक्रोक्ति — 'बलात्कारी रूप' — patriarchal masculinity क ही linguistic expose।

पाश्चात्य दृष्टिसँ: Simone de Beauvoir, Andrea Dworkin, bell hooks — radical feminist tradition मे। Michel Foucault क 'power/knowledge' — male gaze k power structure। एहि poem मे male author स्वयं एहि power structure k acknowledge करैत अछि — ई rare confessional mode।

नव्य-न्याय दृष्टिसँ: गङ्गेशक 'anumana' द्वारा — rape case देखलापर सभ पुरुषक conditioned reaction — 'stare differently' — ई एकटा universal vyapti जे इहि कविता empirically document करैत अछि।

६.२ गजलएँ — तीन

'लिखबाक छल गरीबक लाचारी गजल / देखू मुदा लिखल हम सुतारी गजल।' — आत्म-व्यंग्य। 'रक्तसँ छै बनल नोर हम्मर / भेल हँसी तँ अंगोर हम्मर।' — पीड़ाक paradox। 'हाथ बढ़लै दुन्नू दिससँ / डेग उठलै दुन्नू दिससँ' — bilateral motion metaphor।

'काबा काशी एक छै / सभहंक दाता एक छै / मतलब छै काजहिसँ नहि / खुरपी खाता एक छै / धधकै छै स्त्री घरहिमे / चुमा जाँता एक छै।' — ई गजल मे सब religious equality + gender inequality simultaneously। वार्णिक बहर — सधुक्करी पाँतिक अनुवाद।

— — —

७. किशन कारीगर — 'होरी मे मचाउ हुरदंग' / 'डिनर डिप्लोमेसी' / 'दूधपीबा नेना' / 'मनुक्ख बनब कोना?' (पृ. ५०४-५११)

७.१ 'होरी मे मचाउ हुरदंग' (हास्य कविता)

'होरी मे मचाउ कनी हुरदंग / खुशी सँ जिनगी हुए रंग-बिरंग / कारीगर दैत अछि मुस्काइना / खूब होरी खेलाउ दोस महीमक संग।' — Holi festival k collective joy। हास्य रस — light-hearted, community-oriented।

७.२ 'डिनर डिप्लोमेसी' (हास्य कविता)

'डिनर टेबल पर परोसल अछि / मटर पनीर आ माही पनीर / छौंकल अछि घी देसी / आउ-आउ ई छी डिनर डिप्लोमेसी।' — राजनीतिक गठबन्धनक satiric description। 'अहाँ सभ जे खाएब / हम अहाँक फरमाइश पुराएब / मुदा एकटा गप कहि दी / बाहरी सभ समर्थन के कहाबद्ध कराएब।' — coalition politics k bribe dynamics।

रस-दृष्टि: हास्य रस + व्यंग्य। Jonathan Swiftक political satire tradition। 'dinner table' politics k mocking exposure।

७.३ 'दूधपीबा नेना' (nostalgic कविता)

'आइ मोन होइए फेरसँ / बनि जाए हम दूधपीबा नेना।' — वयस्कक बचपन-उत्कण्ठा। William Wordsworth क 'Intimations of Immortality' — childhood innocence।

७.४ 'मनुक्ख बनब कोना?'

'छी: छी: धूर छी: आ छी: / मनुक्ख भऽ मनुक्खसँ घृणा करैत छी।' — caste discrimination पर तीखा आक्रोश। 'सभ तँ माँ मिथिले के संतान छी /

जाति-पातिक रोग दूर भगाउ / सभ मिलि कऽ लिअ गारा मिलान।' — Ambedkarite unity।

— — —

८. मुन्नी कामत — 'किअए बेटी बनेलहक विधाता?' / 'दुनियाँ तबाह भऽ गेल!' / 'बेटी-लहास' / 'फगुआ' / 'आन्हर कानून' (पृ. ५१२-५१८)

८.१ 'किअए बेटी बनेलहक विधाता?'

'पजेब अछि पएरमे / जेकर घ्वनि मधुर अछि / मुदा पकर बहुत मजगुत / कहैत अछि कि तूँ आजाद छेँ / मुदा अछि सीमा / कदम-कदमपर।' — स्वतन्त्रता आ बन्धनक विरोधाभास — anklet k double symbolism। 'एकटा एहेन दिवारक जे / बनल अछि / बनु बालु-सिमेन्टसँ / सोचक दिवार!' — patriarchyक wall।

'आखिर कतेक जन्म तक / पाछाँ करत ई दिवार! / आ कखैन तक हम कहब / किअए बेटी बनेलहक विधाता!!!' — ई existential feminine cry।

रस-दृष्टि: रौद्र रस — विधाताकें challenge। करुण रस — बेटीक दशा। आनन्दवर्धनक ध्वनि — पजेबक 'मधुर घ्वनि' आ 'मजगुत पकर' दुनू एकसाथ — बन्धनक ही आनन्ददायी होएब — tragic dhvani।

पाश्चात्य दृष्टिसँ: Simone de Beauvoir क 'one is not born a woman, but becomes one' — एहि कवितामे। Mary Wollstonecraft k 'A Vindication of the Rights of Woman'। गङ्गेश — 'anumana' — दिवारक ऊँचाइ 'नहि खत्म होइत अछि' — ई universal inference patriarchy कें empirically नापैत अछि।

८.२ 'दुनियाँ तबाह भऽ गेल!'

'बाबू किअए एहेन / समैक घारा बदललैए / सच्चे कहैए छेलैए / मुसहरू कक्का / दू हजार बारहमे / दुनियाँ तबाह भऽ गेलै!' — 2012 (Delhi rape year) k historical inscription। 'मनुख-मनुखकें / मारने फिरै छै / माय-माय आ बेटा बापकें / कोदारिसँ काटने फिरै छै।' — domestic violence।

८.३ 'बेटी-लहास'

बेटीक हत्या (female infanticide/feticide) पर करुण विलाप। ई कविता मुन्नी कामतक सामाजिक सरोकारक सबसँ तीव्र expression।

८.४ 'फगुआ'

होली पर्वक feminist reading। 'फगुआ' (Holi) मे रंग उड़ेबाक आजादी — स्त्री लेल भी। हास्य रस + feminist consciousness।

८.५ 'आन्हर कानून'

Blind law — न्याय-व्यवस्थाक अन्धत्व। Lady Justice k blindfold — western symbol — मुदा एहिठाम blindfold = injustice। रौद्र रस।

— — —

९. राजदेव मण्डल — २४ कविताक विशेष समीक्षा (पृ. ५२४-५५३)

राजदेव मण्डल — विदेह भाषा सम्मान (मूल पुरस्कार) विजेता, 'अम्बरा' काव्य-संग्रह लेखक — एहि संकलनमे २४ कविता। ई एकैसम शताब्दीक मैथिली काव्यक सर्वोच्च स्तर।

९.१ 'पसरैत प्रशाखा' (spreading branches)

'स्वजन-परिजन आस-पास / एकेटासँ बढ़ि केतेक रास / संगे चलैत सिरजन विनाश / झूठ-साँच मध्य नचैत नाच / हम बन छी अनचिन्हक गाछ।' — एकटा unknown tree क image मे poetic autobiography। Anonymous existence क assertion।

९.२ 'खसैत बुन्द' (falling drops)

'खसैत बून-बून / गाबै गुन-गुन / चिमैत चुन-चुन / झिंगुर झुन-झुन / बरसैत मगन धन।' — onomatopoeia क मैथिलीमे उत्कर्ष। प्रकृतिक musical description। Wordsworth क 'spots in time'।

९.३ 'गन्तव्यक भरम' (illusion of destination)

'जेकरा बुझलौं मंजिल / ओ कहलक अहाँकें नहि अछि अकिल / लटकल छी अधरममे / फँसल छी मरममे।' — Kafka k Josef K. parallel — destination जे destination नहि। Absurdist philosophy।

९.४ 'दरदक भोर' (dawn of pain)

'अखन तँ भेलै दर्दक भोर / साँझमे देखबै अन्तिम छोर / चिचियाइत मन करैत शोर।' — pain k temporal mapping — morning pain, evening resolution।

९.५ 'केहेन माँग' (what demand)

'असली माँग / बजल अद्धांग / जिनगी भरि बनले रहब बताह।' — passionate half-insane demand for life। Dostoevsky k passionate characters।

९.६ 'लटकल छी' (hanging)

'दुनू हाथ अछि कमीसँ बान्हल / ओहीपर हम अँटकल छी / पएरक नीचाँ उधियाइत समुन्दर / आसमानमे लटकल छी।' — suspension between earth and sky — existential condition। Camus k 'The Myth of Sisyphus'। 'नहि डरबै कठिन कारासँ / लभबै वेगयुक्त धारासँ / करबे करब पार।' — resolution।

९.७ 'बटमारिक गीत' (highwayman's song)

'किएक कऽ रहल छी / एना ठेवम-ठेल यौ / हम नहि छी बकलेल यौ।' — marginal voice k self-assertion। एकटा outsider/rebel k dignity।

९.८ 'रूचिगर' (interesting/tasty)

'केहेन चीज अहाँक लगत नीक / हमरा भेटत ओहीसँ सीख।' — आत्म-रुचि बनाम दोसरक पसन्द। Pablo Neruda k 'I want to do with you what spring does with cherry trees'।

९.९ 'बजैत एकान्त' (speaking solitude)

'बजैत अछि सुन-मसान / किओ नहि दैत अछि कान / गाबैत रहैत अछि अनवरत गान।' — एकान्त क silence मे music। John Cage k 'silence as sound'।

९.१० 'स्वरक चेन्ह' (traces of voice)

'स्वर आबि रहल आकाशक कोनो छोरसँ / दरद उठि रहल देहक पोरे-पोरसँ।' — प्रेम-विरहमे voice k residual presence।

९.११ 'सुखक भाय' (companion of joy)

'तोड़ि रहल छी फूल / गवि गेल हाथमे मूल / भऽ रहल केहेन स्पर्शक सुख / हाथमे गमल काँटक दुख।' — joy और pain as inseparable।

९.१२ 'हएत अगारी' (will move forward)

'जखैन नेतेहि स्वार्थी भऽ गेल / पुनः ताकबै खेल रहतै जारी / जे नहि भेलै से हेतै अगारी।' — political disappointment के बावजूद optimism।

९.१३ 'मनुखदेवा' (humanized deity)

'छलै जे पावन / बना देलिऐ अपावन / भऽ गेलै निष्प्राण / छुबलासँ घटि गेलै मान / पहिने बनल छल देवा / आब भेल मनुखदेवा।' — deity को mortal बनेबाक paradox। Nietzsche k 'God is dead'।

९.१४ 'अप्पन हारि' (own defeat)

'सभ दुश्मनकें मारि देलौं / कतेककें माटि तर गारि देलौं / घर-परिवारकें तावर देलौं / तैयो अपनासँ हारि गेलौं।' — external victory, internal defeat। Tolstoy k moral psychology।

९.१५ 'दगध सुर' (scorched melody)

'कलीकें स्वर सुनि / पिक भेल पागल / अन्तरमे किछु जागल।' — Spring arrival k music k impact पर।

९.१६ 'इजोतक वस्त्र' (garment of light)

'घर-दुआरिकें नीप / हाथमे लेने जरैत दीप / अन्धारसँ लड़बाक इच्छा।' — feminine domestic ritual k symbolic significance। Diya = knowledge।

९.१७ 'बाबा केर लाठी' (grandfather's staff)

'ठरल हिआमे टौआ रहल छी / टोले-टोले बौआ रहल छी / बाबाक देल घण्टी गलामे टाँगने छी।' — inherited identity। 'लाठी हाथमे देखते लोक करए सन-सन।' — inherited power/fear।

९.१८ 'गीतक पूर्व संगीत'

'पहिले जँ जानितौं / एना नहि कानितौं।' — musical preparation k importance। Goethe k 'Faust' — prior knowledge।

९.१९ 'शिशुक स्वर' (child's voice)

'शिशुक कोमल स्वर / उठैत अछि घर-भर।' — नव जीवनक celebration। Vatsalya rasa।

९.२० 'बोलती बन्न' (silenced)

'बोलती बन्न भऽ गेल छी / हारिक आनन्दमे डूबल छी।' — paradox of defeat।

९.२१ 'दिलक आवाज' (heart's voice)

श्रृंगार रस मे। प्रेम-आवाज जे दिलसँ उठैत अछि।

९.२२ 'नेंगरा मजदूर' (child labourer)

'बजैत अछि सुन-मसान।' — child labour k silence। श्रम-शोषण क terse condemnation।

९.२३ 'मनक दुआर' (door of the mind)

मनक ताला-खुलबाक metaphor। introspection।

९.२४ 'छाँहक रूप' (form of shadow)

'छाँह' (shadow) — negative presence। One's shadow = one's alter ego। Jung k 'shadow archetype'।

राजदेव मण्डलक समस्त २४ कविताक नव्य-न्याय विश्लेषण: प्रत्येक कविता एकटा philosophical proposition थिक। 'खसैत बुन्द' मे pratyaksha (sensory experience)। 'गन्तव्यक भरम' मे anumana (inference)। 'बाबा केर लाठी' मे upamana (analogy)। 'बजैत एकान्त' मे shabda (verbal testimony)। — चारू pramana एकहि कवि-संग्रहमे। ई Tattvacintamani k literary manifestation।

———

१०. अन्य कवि — संक्षिप्त समीक्षा

१०.१ राम विलास 'साफी' — 'पढ़ल-लिखल तनि गौर करियो बबूआ'

'पढ़ल-लिखल तनि गौर करियो बबूआ।' — शिक्षित वर्गसँ सामाजिक जिम्मेवारीक आग्रह। Paulo Freireक 'conscientization' क मैथिली expression।

१०.२ सन्तोष कुमार मिश्र — 'गुलामी सँ'

'गुलामी सँ' — आजादी आ स्वाभिमान। Tagore k 'Gitanjali' k freedom theme। मनुष्यक dignity।

१०.३ जितेन्द्र 'जितु' — 'गरीबीक जाड़' / 'कथी लए...?' / 'यथार्थ'

'गरीबीक जाड़' — poverty k physical sensation — ठण्ड metaphor। 'कथी लए...?' — existential question। 'यथार्थ' — stark realism। Karl Marx k proletariat experience।

१०.४ राजेश कुमार झा — 'जों अहाँ नहि छी'

'जों अहाँ नहि छी' — beloved k absence मे जीवन-प्रश्न। शृंगार-विरह।

१०.५ शाहित लक्ष्मी चौधरी — 'मतिभ्रम'

'मतिभ्रम' (confusion of mind) — philosophical kavita।

१०.६ शेफालिका वर्मा — 'अहाँक गाम कतऽ अछि?' / 'पाहन अप्पन प्राण भेल!'

'अहाँक गाम कतऽ अछि?' — identity question। Displacement and belonging। 'पाहन अप्पन प्राण भेल!' — पत्थरक spiritual significance। Tagore k 'jeevan devata'।

१०.७ बिनीता झा — 'वरदान' / 'तम्बाकू दिवस पर' / 'चैन' / 'देखू आइ FB परक खेल'

'देखू आइ FB परक खेल' — social media satire। Digital age k hollow relationships। Baudrillard k simulacra। 'तम्बाकू दिवस पर' — anti-tobacco health advocacy।

१०.८ कामिनी कामायनी — 'ई केक्कर शोणित?' / 'खिड़की' / 'भरोस' / 'पुष्पांजलि' / 'आस्थाक पूर्ण कलश' / 'खिलैत पलास वन' / 'आधुनिक स्त्रीगण'

कामिनी कामायनी एहि संकलनक सर्वाधिक thematically diverse कवियत्री। 'ई केक्कर शोणित?' — जाति-आधारित हिंसा पर। 'पुष्पांजलि' — devotion। 'आस्थाक पूर्ण कलश' — spiritual fullness।

'आधुनिक स्त्रीगण' — पाँच खण्डमे — आधुनिक स्त्रीक पाँच dimensions: स्वाभिमान, संघर्ष, माया, दायित्व, vision। 'चौकन्ना आँखि / स्थिर मुखमण्डल / जाइत अछि स्कूल / खेलाइत अछि।' — नव पीढ़ीक बेटी। 'ओ नहि आब सम्पत्ति / ओकरो चाही सम्पत्ति।' — inheritance rights।

'दलान पर राखल लालटेन / नहि छै खाली बौआ माय सभक लेल / बेलैत छै चकलापर / उनटाबैत छै ताबा परका सोहारी / रटैत छै एच टू एस ओ फोर।' — kitchen science। 'बातरसक दर्दसँ / लोभ बनल सौस लेल।' — arthritis metaphor for patriarchy।

———

११. अनिल मल्लिक — गजल (पृ. ५९६)

'आब नहि छै केओ गुलाम से के नहि कहैत छै / मुदा जतै भेटैत छै मौका गदैन के नहि रेटैत छै।' — formal slavery गेल मुदा informal subjugation बाकी। 'मजदूर दिवसके अछि बधाई अपने लोकनिके / भूखक आगिमे जरैत नेनपनकें के जे देखैत छै।' — May Day irony।

— — —

१२. बिन्देश्वर ठाकुर 'नेपाली' — विस्तृत काव्य-संग्रह (पृ. ५९७-६१२)

१२.१ भक्ति गजल

'अहीं छी हमर ममानी मैया हम अहाँकें मानैत छी।' — माँ-भक्ति। सरल वार्णिक, आखर-१९।

१२.२ प्रेम-गजल

'पानसन पातर ई ठोर अहाँके / अहाँ छी चान्द हम चकोर अहाँके।' — चाँद-चकोर classical metaphor। वियोग शृंगार।

१२.३ 'प्रवासक वेदना' (diaspora pain)

'हमर जिनगीक कोनो हिसाब नहि रहल / पढ़बाक लेल कोनो किताब नहि रहल / बैसल छी एखनो असगरे एकान्तमे / किन्तु पीबाक लेल कोनो मराब नहि रहल।' — Qatar मे migrant Maithil worker k isolation।

'छी मैथिल हम मिथिलाक बासी / दूर छी तैयो अपन प्रदेशसँ / विवशताक मारल, परतापल / पत्र लिखैत छी अलग देशसँ।' — diaspora identity। Edward Saidक 'out of place'।

१२.४ 'सुनि लिअ दू बात हमर'

'मेला करब तँ मेला मिलत / बुरा करब तँ बुरा मिलत।' — karma philosophy। 'हम सभ मैथिल एक रही / एकजुट भऽ साथ चली।' — unity call।

१२.५ 'अन्हार जिनगी' / 'हिसाब जिनगीक'

'अन्हार जिनगी' — Muslim woman k burqa mein life। 'एखन धरि अनुमानित हम / ५ लाखक दारू पीने हएब / २ लाख ५० हजार ७०० क माँस खेने हएब।' — 'हिसाब जिनगीक' मे autobiographical waste-accounting। Tolstoy k 'The Death of Ivan Ilyich' — retrospective self-examination।

१२.६ 'प्रेमक फल' / 'पिया अहाँक यादमे' / 'हमर समाज बौरा गेल'

प्रेम-विरह, nostalgia, social critique — तीनू themes।

— — —

१३. मनु — रुबाइ, बाल गजल, भक्ति गजल, गजल (पृ. ६१५-६३९)

१३.१ रुबाइ

Omar Khayyamक Rubaiyat tradition मे मैथिली rubaai। चारि-पंक्तिक philosophical gems।

१३.२ गजल श्रृंखला — ११ गजल

मनुजीक गजल — बहरे-रजज, बहरे-रमल, बहरे-मुतकारिब — विभिन्न बहर मे। 'जीवन कखन तक अछि नहि बुझलक किओ / कखनो करेजक गप्प नहि जनलक किओ।' — philosophical ghazal।

'जखन खगता सभसँ बेसी तखन ओ मुँह मोड़ि लेलनि।' — betrayal ghazal। 'किए तीर नजरिसँ अहाँकें चलैए / हँसी ई तँ घाएल हमरा करैए।' — shringara ghazal। 'माँ वारिदे वरदान दिअ / हमरो हृदयमे ज्ञान दिअ।' — bhakti ghazal।

१३.३ बाल कविता — 'होएत जँ'

'हाथक मुरली हमर खुरपी बनल / गोबरधन बनल अछि ढाकी।' — कृष्ण-लीलाक बाल-version मे agricultural reality। 'होएत जँ हमरो माए यशोदा / सभक प्रिय बनितहुँ हम।' — wishful thinking थ्रू mythology।

— — —

१४. शिव कुमार यादव — गजल (पृ. ६४०-६४४)

पाँच गजल — प्रेम, माए, पत्नी-पति, सामाजिक। 'मइया मोने हम बड़ नीक / मौजीक मोने हम बड़ तीत।' — माए आ पत्नीक competing affections — humorous observation। वार्णिक बहर।

— — —

१५. राम विलास साहु — 'सुखल खेत आ भूखल पेट' / 'मिथिलाक पियास' / 'किअए छुबाइ छी' / 'पुसक राति' / 'केना कहब भारत महान' (पृ. ६४५-६५२)

१५.१ 'सुखल खेत आ भूखल पेट'

'सुखल खेत जरैत जजाति / खेतक दारवर देख-देख / दरकि करेजा जरैत रहलै / पानि बिनु खेत बज्जर भेलै।' — Bihar drought crisis। 'छियासठि बरख आजादीक भेल / देशक किसान कंगाले अछि।' — post-Independence farmer distress।

पाश्चात्य — John Steinbeck k 'The Grapes of Wrath' — agricultural depression। Howard Zinn k 'A People's History'। गङ्गेशक anumana — 'सुखल खेत' → 'भूखल पेट' — ई empirical vyapti।

१५.२ 'मिथिलाक पियास'

'मिथिलाक पियास / नहि बुझा सकल कोइ।' — एकटा metaphorical thirst। मिथिला — अपन cultural recognition लेल तरसैत। Decolonial yearning।

१५.३ 'किअए छुबाइ छी'

'छुबैसँ जखन छुबाइ छी / तँए कि परिवत्तर्न देखैत छी / काज जखन नहि छुबाइए / देहक लहू पानि नहि बनैए।' — untouchability k logical exposure। 'मनुखकें मनुख नहि बुझैत छी / समाजकें कमजोर केना छी।' — Ambedkarite argument।

१५.४ 'पुसक राति' (winter night)

'पुसक राति / जादक मारल / मरमराइत देह / केना बचाएब प्राण।' — poor people k winter vulnerability। 'कतेककें लइत छै प्राण।' — winter mortality। Social Darwinism critique।

१५.५ 'केना कहब भारत महान'

'जे देशक लेल त्याग करैए / ओकरे जिनगी नरक सन बनल-ए।' — veteran/poor citizen k plight। 'गरीब बनल छै अखनो गुलाम।' — post-Independence continuity of poverty।

— — —

१६. रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार' — झारू-गीत (पृ. ६५३-६५६)

'झारूदार' परम्परा — झाड़ू बनेनहार artisan k poetic voice। Vidyapati-era non-Brahmin tradition k continuation।

'झारू बिनु ने घरक मोभा, ने हमरा बिनु हएत हवन / हमरा बिनु ने मन्दिर-मस्जिद, और ने देशक संसद भवन।' — झारू बिनु कोनो संस्था नहि चलत — ई sweeper community k dignity assertion। Ambedkarite dignifying of 'unclean' labour।

गीत: 'माए गइ बोल तोहर छौ / बाइबिल वेद कुरान गइ।' — religious inclusivity। 'तूँ तँ अल्ला, ईशू, महेश / कार्तिक गणपति और गणेश।' — syncretic vision।

— — —

१७. शिव कुमार झा 'टिल्लू' — 'पुरीक यात्रा' (यात्रा-संस्मरण, पृ. ६५७-६६५)

Puri (Odisha) k Jagannath Temple यात्राक poetic narrative। 'जीवन यात्रा थिक / जैव पथिक / अजैव दर्शक / शरीर शाश्वत नहि / ई क्षणभंगुर-नाश्वर / आत्मा मौलिक तत्त्व।' — philosophical travel-writing।

टिल्लूजीक यात्रा-संस्मरण मे Maithil-Odia cultural interface — भाषा, भोजन, परम्परा। Pilgrimage k through self-discovery। Bruce Chatwin k travel-writing tradition।

— — —

१८. सुमित मिश्र, सुरेन्द्र शैल, बाल मुकुन्द पाठक, अन्य

१८.१ सुमित मिश्र — भक्ति गजल आ गजल (पृ. ६६६-६७२)

भक्ति-शृंगार दुनू। Classical bahr मे।

१८.२ सुरेन्द्र शैल — 'मुदा करबै की?' / 'बटोही' / 'नवका महेशवारी' / 'चुहाड़' (पृ. ६७३-६७९)

'मुदा करबै की?' — political helplessness। 'बटोही' (traveller) — existential journey। 'नवका महेशवारी' — new goddess invocation। 'चुहाड़' — एकटा historical poem।

'चुहाड़' — ई कविता एकटा itihasa-kavita। Sikandar, Puru, Ghori, Ghazni, Babur — इतिहासक invaders क chronicle — 'एकरा मुँह मे ऊक लगाउ / कूर खेत चुगला झमकाउ।' — defend homeland।

१८.३ बाल मुकुन्द पाठक — गजल (पृ. ६८०-६८७)

'रौद आ बिहावरिसँ जे लड़ल अछि एहि ठाइ / ओतबे गाछ पैघ भऽ बचल अछि एहि ठाइ।' — survival = strength। 'भ्रष्टाचारी शासनमें बिकल सरकारी सीट / चुप्पी मारि लोक घरे सूतल अछि एहि ठाइ।' — political satire।

सात गजल — शृंगार, करुण, हास्य-व्यंग्य — तीनू। 'बहरे सलीम', 'बहरे हजज', 'बहरे खफीफ' — technical variety। 'मुकुन्दा' maqta (pen-name in last sher) — classical convention।

— — —

१९. पसुपुलेटि गीता — 'दुमजा' (तेलुगुसँ मैथिली अनुवाद — विनीत उत्पल, पृ. ६८८-६९१)

Delhi gang rape (December 2012) पर तेलुगु कवि पसुपुलेटि गीताक कविता। तेलुगु → हिन्दी (आर. शान्ता सुन्दरी) → मैथिली (विनीत उत्पल)।

'देह भऽ गेल अछि एकटा इतिहास-दोख / दूटा ठोढ़, दूटा गाल / दूटा स्तन, दूटा जाँघ / जोड़ा चुहचुही / दुइए युगमे एहन जेना जिनगी भऽ गेल खत्म।' — female body's history of violation। 'मनुष्यता बनि झहरऽ पड़त / हमरा अहाँमे पैसि / मातृत्व बनि बहए पड़त।'

रस-दृष्टि: बीभत्स आ करुण रसक collision। आनन्दवर्धनक ध्वनि — 'दुमजा' (two bodies? dual suffering?) — शीर्षकक polysemy। पाश्चात्य — Sylvia Plath k 'Lady Lazarus' — female body's resurrection through suffering।

विदेह ढाँचासँ: Telugu → Maithili translation — दू marginalized literature का confluence। विनीत उत्पलक translation एकटा trans-linguistic feminist act।

— — —

२०. हेम नारायण साहु — 'हम छी मैथिल' (पृ. ६९२-६९४)

'हम छी मैथिल हमर छी मिथिला / मिथिला हमर गाम छी।' — identity assertion। 'ऐठाइक लोक-गाथा / ठोहि पावि कानि रहल छै। / कतए गेल जट-जटीन / ओ झमनी गीत।' — endangered folk traditions।

'बिसरि गेल सभ दिना-मदरीक गाथा।' — एहि cultural mourning मे Maithil folk tradition k preservation call। Cultural memory studies।

— — —

२१. डॉ. शिव कुमार प्रसाद — 'खेबैया' / 'माय हमर नव कुम्भ नहेली' / 'देख एलौ हम पटना' / 'शहर ओ गेल' / 'बौआ केर उबटन' (पृ. ६९५-७०४)

२१.१ 'खेबैया'

'सभहक नाँकें भेटल खेबैया / बिनु खेबैया हमरे नाँ अछि।' — eunuch (hijra) community k voice — 'खेबैया' (one who eats at auspicious occasions)। एकटा marginalized community कें poetic space।

२१.२ 'माय हमर नव कुम्भ नहेली'

'नहि हुनका मन पापक गेठरी / नहि हुनका मन बाँझक धोकरी / नयना-मुदुकाक साँस हास सन / जिनगी भरि ओ खूब नहेली।' — माँक purity। गंगाक Kumbh तुलना।

२१.३ 'देख एलौ हम पटना'

Patna यात्राक satiric account — 'हलसल-फुलसल बसमे बैसि कऽ / पहुँचि गेलौं हम पटना।' आधुनिक Bihar capital k disillusionment।

— — —

२२. अन्तिम खण्ड — 'बच्चा लोकनि द्वारा स्मरणीय श्लोक' (पृ. ७३१-७३६)

शिशु-पाठ्य श्लोक-संग्रह। संस्कृत-मैथिली दुनू। बाल-संस्कार-निर्माण। गुरुकुल-परम्पराक निरन्तरता।

— — —

२३. विदेह सदेह-१४: समग्र पद्य-खण्डक संश्लेषण

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह सदेह-१४: खण्ड २ — पद्य खण्ड (पृ. ३७३-७३६) — कविता · गजल · भक्ति गजल · बाल गजल · यात्रा-संस्मरण

अध्याय 32 · विदेह सदेह-१५ : एकटा समग्र साहित्यिक आलोचना — ---

सारांश --- प्रस्तावना विदेह सदेह-१५ मैथिली साहित्यक एकटा ऐतिहासिक संकलन अछि जाहिमे गद्य आ पद्य दुनू खण्डक उत्कृष्ट रचना सभ

एकत्र कएल गेल अछि। संपादक गजेन्द्र ठाकुरक सम्पादनमे प्रकाशित ई संकलन विदेह ई-पत्रिकाक अंक १३३-१४४ सँ सङ्कलित अछि।

एहिमे विविध विधा — गजल, लघुकथा, निबन्ध, समालोचना, हाइकू, रुबाइ, कविता, काव्य-कथा — सभक समावेश अछि।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · कथा · लघुकथा · कविता · गजल · हाइकू

प्रस्तावना

विदेह सदेह-१५ मैथिली साहित्यक एकटा ऐतिहासिक संकलन अछि जाहिमे गद्य आ पद्य दुनू खण्डक उत्कृष्ट रचना सभ एकत्र कएल गेल अछि। संपादक गजेन्द्र ठाकुरक सम्पादनमे प्रकाशित ई संकलन विदेह ई-पत्रिकाक अंक १३३-१४४ सँ सङ्कलित अछि। एहिमे विविध विधा — गजल, लघुकथा, निबन्ध, समालोचना, हाइकू, रुबाइ, कविता, काव्य-कथा — सभक समावेश अछि। एहि संकलनक महत्ता एहि कारणेँ अधिक अछि जे ई मात्र रचनाक संग्रह नहि अछि, अपितु मैथिली गजलशास्त्रक विकासक एकटा जीवन्त दस्तावेज अछि।

गद्य खण्ड : आलोचना आ निबन्ध

गजेन्द्र ठाकुर — मैथिलीक वर्तमान-गजल आ 'माँझ आँगनमे कतिआएल छी'

संकलनक आरम्भ सम्पादक गजेन्द्र ठाकुरक दूटा महत्त्वपूर्ण लेखसँ होइत अछि। पहिल लेख मैथिली गजलक वर्तमान स्थितिपर एकटा गम्भीर आलोचनात्मक दृष्टि प्रस्तुत करैत अछि। ठाकुर रमानन्द झा "रमण"क वक्तव्यसँ आरम्भ करैत देखाबैत छथि जे मंचीय गजलकेँ किछु आलोचक साहित्यसँ बाहर कोनो साधारण विधा बुझि लैत छथि — एहि अन्यायपर ठाकुर सशक्त प्रतिवाद करैत छथि।

ई लेख मैथिली गजलमे छन्दक प्रश्नकेँ केन्द्रमे राखि कलानन्द भट्ट, तारानन्द वियोगी, देवशंकर नवीन, नरेन्द्र, डॉ महेन्द्र, रमेश आ सोमदेवक गजल सभक सरल वार्णिक आ मात्रिक गणनाक दृष्टिसँ परीक्षण करैत अछि। ई परीक्षण अत्यन्त वैज्ञानिक आ विस्तृत अछि — प्रत्येक शेरक वर्णगणना आ मात्रासंख्या देखाओल गेल अछि। एहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे पहिलुका कालक गजलकार लोकनिमे छन्दशास्त्रक अनुशासन प्रायः अनुपस्थित रहल। एकर व्यंग्य ई अछि जे तथाकथित "लालकिलावादी" गजलकार लोकनि "बिन बहर गजल" केर झण्डा उठाबैत रहलाह, जखन कि युवा गजलकार आशीष अनचिन्हार, सुनील कुमार झा आदि अन्तर्जालपर टिप्पणीक बाद अपन गजल सरल वार्णिक छन्दमे संशोधित कए सकैत छलाह।

दोसर लेखमे ठाकुर मुन्नाजीक संग्रह "माँझ आँगनमे कतिआएल छी" केर सरस आलोचना करैत छथि। ओ मुन्नाजीक रुबाइ आ गजलमे निहित मानवीय करुणा, प्रेम, सामाजिक व्यंग्य आ आत्मनिरीक्षणकेँ रेखांकित करैत छथि। मुन्नाजीक शेर "डाहसँ पहुँचब कोस-दू कोस / आगू बढ़बा लेल तँ प्रेम चाही" — एहन पंक्तिकेँ ठाकुर "गजलत्व"क उदाहरण रूपमे प्रस्तुत करैत छथि। "महगाइसँ खूने नहि हड्डियो सुखाइए / आब झुलैत मचान सन लगैए लोक" — एहन विम्बमे सामाजिक पीड़ाकेँ काव्यात्मक गरिमा भेटल अछि। मुन्नाजीक गजल "स्वच्छन्द रूपसँ बमकोला जेकाँ बहल अछि" — ई ठाकुरक मूल्यांकन उचित अछि।

धीरेन्द्र प्रेमर्षि — मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना

प्रेमर्षिक ई आलेख विदेहक अंक-२१मे प्रकाशित पुरान लेख अछि। स्वयं लेखकक स्वीकार्यता उल्लेखनीय अछि जे "ओ कोनो गम्भीर आलेख नहि अछि" — मुदा एहि विनम्रताक सत्त्वेक ई आलेख मैथिली गजलकेँ बुझबाक हेतु उपयोगी अछि।

प्रेमर्षि गीत आ गजलक तुलना एकटा सुन्दर रूपकसँ करैत छथि — "गजल मेलामे बिछुड़ल गीतक सहोदर अछि जे अरबदिस पहुँचि विकसित भेल।" गजलक स्वभावमे जे "उस्सठपन" आ प्रेमक "तरुआरिजकाँ सीधे बेध देब" — ई विशेषता ओ स्पष्ट करैत छथि। गजलमे प्रत्येक शेरक स्वतन्त्र अर्थपूर्णता, हलक-कानक संरचना — एहि तत्त्वसभकेँ ओ सहज भाषामे विवेचित करैत छथि। हालांकि यद्यपि ई आलेख वर्तमान समयमे कनेक हल्लुक लागि सकैत अछि, तथापि मैथिली गजलक इतिहासबोधक दृष्टिसँ एकर महत्त्व अछि।

मुन्नाजी — बाल गजल : पुरान देहक नव चेहरा

मुन्नाजीक ई टिप्पणी बाल गजलक अवधारणाकेँ प्रतिपादित करैत आशीष अनचिन्हारक योगदानकेँ रेखांकित करैत अछि। २४ मार्च २०१२ केर साहित्य अकादेमीक कवि गोष्ठीमे अनचिन्हार जीक बाल गजलक घोषणा मैथिली साहित्यमे एकटा नूतन विधाक श्रीगणेश कएलक। "जेना गद्य विधा वा अन्य विधामे बाल साहित्य लिखल जाइत अछि तहिना गजलमे सेहो बाल मनोविज्ञानपर आधारित बाल गजल लिखल जाए" — ई प्रस्ताव मैथिली साहित्यमे नवोन्मेषक

उदाहरण अछि।

कामिनी कामायनी — सोर आ कोन डारि पर केकर खोता

कामिनी कामायनीक दुटा रचना गद्य खण्डमे संगृहीत अछि। "सोर" एकटा दीर्घ उपन्यास-खण्ड सन कथा अछि जाहिमे स्वाति नामक एकटा मेधावी छात्राक मनोवैज्ञानिक संकटकेँ केन्द्रमे राखल गेल अछि। भाषाक प्रवाह सुन्दर अछि — कामायनी मिथिला आ शहरक बीच फँसल युवा स्त्रीक एकाकीपन, आत्मग्लानि, आ अवसादकेँ चित्रित करैत छथि। "सम्पूर्ण मुख मण्डल तँ खापड़क पेंदी बनि गेल आब, केहन परिहासक दृष्टिसँ छलनी छलनी करय लेल, वाणीसँ फुइसक सहानुभूतिसँ, आत्महत्या धरि करबाक लेल प्रेरित करबा लेल बेकल समाज ओकर प्रतीक्षामे बाहर ठाढ़ अछि" — एहन पंक्तिसभमे समाजक क्रूरताक जीवन्त चित्र अछि।

"लतुकथा — कोन डारि पर केकर खोता" — ई रचना ग्रामीण स्त्रीजीवनक व्यथाकेँ अनेक पात्रसभक माध्यमसँ प्रस्तुत करैत अछि। दू बहिनक एकाकी जीवन, उत्तराधिकारक द्वन्द्व, सम्पत्तिक विवाद — एहि सभकेँ कामायनी ग्रामीण मैथिली बोलीमे सजीव ढंगसँ प्रस्तुत करैत छथि। "बान्हल जाइत छलैक सखी-बहिनपाक एहने बन्धन मजगूत, जे विआहे बन्धन सनक होइत छलैक सुपवित्र अजगूत" — एहन पंक्तिमे स्त्री-स्त्री अनुबन्धक गरिमाक चित्रण विशेष रूपसँ उल्लेखनीय अछि।

कुमार पृथु — नापल तौलल पसरल पथार (परमेश्वर कापड़िक पथार)

कुमार पृथुक ई लेख परमेश्वर कापड़िक कथा-संग्रह "पथार" केर आलोचना अछि। ई समीक्षा मैथिली आलोचनाक दृष्टिसँ उत्कृष्ट अछि। "सहज सुन्दर लोकभाषामे सामाजिक-सांस्कृतिक परम्पराक तत्त्व-दर्शन सहित लोकजीवनयथार्थ आ लौकिक युगसत्य एहिमे एहन भऽ कऽ नहि सज्झर-मिज्झर अछि जे बहुत अंशमे ई मैथिली ग्रामीण-कथाक नीक स्वरूपक आह्लादक भावबोध करबैत अछि" — पृथुक ई मूल्यांकन संग्रहक सारतत्त्वकेँ भलीभाँति उजागर करैत अछि। "पथारमे गुण्ड-चाउर फँकैत आस-मोरि अछि, हँसोड़िया मारैत ककुलता बेगरता अछि, तै-कटैत ललसा आ मचकी झुलैत सपनासभ अमार लागल अछि" — एहन भाव-चित्र लाक्षणिक भाषाक प्रभावशाली प्रयोग अछि।

डॉ. अरुण कुमार सिंह — अभिकलनात्मक (Computational) मैथिली व्याकरण

भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरक शोधार्थी डॉ. सिंहक ई आलेख मैथिली भाषाविज्ञानमे एकटा नूतन आयाम प्रस्तुत करैत अछि। भाषाक संगणनात्मक विश्लेषण, मैथिली व्याकरणक मशीन-प्रयोज्य संरचनाक निर्माण — एहि दिशामे ई आलेख महत्त्वपूर्ण योगदान करैत अछि। मैथिली साहित्यिक पत्रिकामे एहन विज्ञान-उन्मुख आलेखक उपस्थिति विदेहक बहु-आयामी दृष्टिकोणकेँ प्रमाणित करैत अछि।

अनामिका राज — सीमा

अनामिका राजक "सीमा" एकटा संक्षिप्त किन्तु प्रभावशाली गद्य-रचना अछि जाहिमे स्त्रीक जीवनमे आरोपित "सीमा"केँ प्रश्नांकित कएल गेल अछि।

आशीष अनचिन्हार — पहरा-अधपहरा

आशीष अनचिन्हारक दीर्घ गद्य-खण्ड एहि संकलनक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भाग अछि। एहिमे अनेक आलेख, समालोचना आ विहनि कथा संगृहीत अछि।

"पहरा-अधपहरा" शीर्षक अन्तर्गत अनचिन्हार बाबा वैद्यनाथ कृत गजल-संग्रह "पहरा इमानपर" (१९८९) केर त्रिस्तरीय आलोचना — व्याकरण पक्ष, भाषा पक्ष, आ भाव पक्ष — प्रस्तुत करैत छथि। व्याकरण पक्षमे ओ दर्शाबैत छथि जे तीसो गजलमे बहर नहि अछि, अर्थात् संग्रह पूर्णतः बेबहर अछि। तथापि ओ एकर भाव पक्षकेँ उन्नत मानैत छथि। "मैथिली साहित्यमे 'भाव' सभसँ सस्ता अछि" — ई व्यंग्योक्ति अनचिन्हारक आलोचनाक तीक्ष्णताकेँ प्रकट करैत अछि। तखन सेहो ओ बाबा वैद्यनाथक उपलब्धिकेँ स्वीकार करैत छथि।

"प्रिन्ट पत्रिकाक सम्पादक आ गजलकारसँ अपील" शीर्षक आलेखमे अनचिन्हार गजलकार आ सम्पादक दुनूकेँ उनकर दायित्वक बोध करबैत छथि — बहर लिखने रचना पठाउ, सम्पादक बहर बुझि कऽ प्रकाशित करू। "अज्ञानी सम्पादकक फेरमे मरैत गजल" — ई शीर्षक स्वयंमे ई समस्याक सार अछि।

"मैथिली गजलमे लोथ गजलकारक भूमिका" — एहिमे अनचिन्हार ओहन गजलकारसभक आलोचना करैत छथि जे न स्वयं बहरयुक्त गजल लिखैत छथि आ

न किनकोर समालोचना करैत छथि। "मैथिली गजलक वर्तमान" शीर्षक आलेखमे ओ सिद्ध करैत छथि जे मैथिली गजल तेजीसँ अरबी बहर-विधानक दिशामे विकसित भऽ रहल अछि।

"विहनि कथा — खाए बला पाटी" अनचिन्हारक कथा-रचनाशक्तिकेँ उजागर करैत अछि। व्यंग्य आ यथार्थक सम्मिश्रण एहि विहनि कथामे दर्शनीय अछि।

बाल मुकुन्द पाठक — प्रेम : वरदान वा अभिशाप

बाल मुकुन्द पाठकक ई लेख प्रेमक दार्शनिक विवेचन करैत अछि। प्रेमकेँ वरदान आ अभिशाप दुनू रूपमे देखबाक ई प्रयास विचारोत्तेजक अछि।

पूनम मण्डल — प्राज्ञ कापड़ि, सगर राति दीप जरय

पूनम मण्डलक ई रिपोर्ताज "सगर राति दीप जरय"क ७९म आ ८०म आयोजनक विवरण प्रस्तुत करैत अछि। एहिमे रमानन्द झा "रमण"क नव-ब्राह्मणवादी टिप्पणीपर बेचन ठाकुरक प्रतिवादक उल्लेख विशेष रूपसँ महत्त्वपूर्ण अछि। "लोकक मगजमे अखनो जाति-पाति भरल अछि" — एहि सत्यकेँ खुलि कऽ सामने राखि देल गेल अछि। एहि रिपोर्ताजक माध्यमसँ मैथिली साहित्यिक जगतक आन्तरिक राजनीति आ जातिवादी प्रवृत्तिकेँ उजागर कएल गेल अछि।

रवि भूषण पाठक — ओइ साल, घर, बाबूक चट्टी

रवि भूषण पाठकक तीनटा लघु गद्य-रचना एहि संकलनमे विशेष महत्त्वक अछि। "ओइ साल" — एहिमे बाढ़, गर्मी, आलूक फसल, एकटा युवतीक "पलायन" — एहि सभकेँ एकटा वर्षक अलग-अलग छवि रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि। लेखनक शैली संक्षिप्त, ब्यंग्यपूर्ण आ प्रभावशाली अछि।

"घर" — एहिमे आधुनिक पारिवारिक जीवनक विघटनकेँ व्यंग्यात्मक दृष्टिसँ चित्रित कएल गेल अछि। "प्रसन्न रहैक मून होए तँ पड़ोसीक तरक चोरी, बगल वालाक बेटी भागनै, पंडीजीक बेटाके कैंसर भेनए — ई सभ खुशीक कारण रहैक" — एहन विडम्बनापूर्ण वाक्य आधुनिक मानवीय सम्बन्धक खोखलेपनकेँ बेनकाब करैत अछि।

"बाबूक चट्टी" — ई संस्मरण अत्यन्त मार्मिक अछि। पिताक पुरान चप्पल — एकटा साधारण वस्तु — जीवनक अनेक स्मृतिकेँ जागृत करैत अछि। "ई चप्पल एकटा बीतल युगक कैलिडोस्कोप नेने तर मे तुसि गेल रहैक" — एहन वाक्यमे कथाकारक गद्य-कौशल प्रकट होइत अछि।

सन्दीप कुमार साफी — राजा अओर परजा

साफीजीक ई विचार-बिन्दु लोकतन्त्र आ जनप्रतिनिधित्वक संकटपर केन्द्रित अछि। पहिलुका युगक "राजा-परजा"क सम्बन्धसँ आजुक नेता-जनता सम्बन्धक तुलना करैत ओ दर्शाबैत छथि जे आजुक व्यवस्थामे नेता परजाक मदति नहि करैत, अपितु अपन स्वार्थपूर्ति लेल जनताक उपयोग करैत अछि। भाषा सरल आ सम्प्रेषणीय अछि।

नवेन्दु कुमार झा — रिपोर्ताज

झाजीक ई रिपोर्ताज मैथिली साहित्यिक आ सांस्कृतिक जगतक समाचार-विश्लेषण प्रस्तुत करैत अछि — कोसी महासेतु, "सगर राति"क आयोजन, चेतना समिति — एहि सभपर सूचनात्मक लेखन।

शिवकुमार झा 'टिल्लू' — बड़का साहेब

"बड़का साहेब : परम्परागत संस्कार केर पराभवक वृत्तचित्र" — एहि शीर्षकमे नौकरशाहीमे नैतिक अधःपतनकेँ चित्रित कएल गेल अछि।

मो. असरफ — शहरिया घरवाली

मो. असरफक एहि लघुकथामे शहरी जीवन आ ग्रामीण मूल्यक द्वन्द्वकेँ चित्रित कएल गेल अछि।

बिहदेश्वर ठाकुर — पश्चताप, उपकारके चुपकार, प्रतिशोध, आदि

बिहदेश्वर ठाकुरक एहि रचनासभमे नैतिक मूल्यसभपर प्रकाश राखल गेल अछि। "जेहन करनी तेहन भरनी", "हयाय", "आत्मग्लानि", "अभिशाप" — एहि लघु-आख्यानसभमे मानवीय व्यवहारक परिणाम चित्रित अछि।

परमेश्वर कापड़ि — लक्ष्मी आ गोधन

कापड़िजीक "लक्ष्मी आ गोधन" ग्रामीण जीवनकेँ केन्द्रमे राखि लिखल एकटा कथा अछि जाहिमे आर्थिक संघर्ष आ मानवीय सम्बन्धक चित्रण अछि।

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' — चिन्तन : मैथिलीक भविष्यक प्रसंग

भ्रमरजीक ई चिन्तन मैथिली भाषाक भविष्यपर एकटा गम्भीर विमर्श अछि।

कुमार अभिनन्दन — दुर्गास्तुतिक लोकपरम्परा : झिझिया

अभिनन्दनजीक ई लेख झिझियाक लोक-परम्पराकेँ शास्त्रीय आ लोकवैज्ञानिक दृष्टिसँ विवेचित करैत अछि। झिझिया — नवरात्रिमे गाओल जाएबाला स्त्रीगणक परम्परागत नृत्य-गीत — केर सांस्कृतिक महत्त्वकेँ ई आलेख रेखांकित करैत अछि।

जगदानन्द झा 'मनु' — गजलक लहास, सेल्समेन, उपहार, आदि

जगदानन्द झा 'मनु'क ई लेखसभ गजल-समालोचनाक क्षेत्रमे महत्त्वपूर्ण स्थान रखैत अछि। "गजलक लहास" शीर्षक व्यंग्यात्मक रूपसँ ओहन गजलकारपर प्रहार करैत अछि जे गजलक देहमे प्राण नहि भरैत। "सेल्समेन", "उपहार", "नीक", "कनियाँ दाइ", "मौसी", "हारि" — एहन गजलसभमे मनुजीक शेरक तीक्ष्णता आ मानवीय अनुभवक गहराई दर्शनीय अछि।

अखिलेश कुमार मण्डल — पँचवेदी

मण्डलजीक "पँचवेदी" एकटा विहनि कथा अछि जाहिमे ग्रामीण जीवनक व्यंग्यात्मक चित्रण अछि।

उमेश मण्डल — जीविते नरक

उमेश मण्डलक "जीविते नरक" एकटा मर्मभेदी लघुकथा अछि जाहिमे आर्थिक विपन्नता आ सामाजिक उपेक्षाक बीच जीवित रहबाक यातनाकेँ चित्रित कएल गेल अछि।

राम विलास साहु — शिक्षाक महत

शिक्षाक सामाजिक महत्त्वपर साहुजीक ई लेख सुविचारित आ सुलिखित अछि।

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' — प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल, अरविन्दजीक आजाद गजल

अनिलजी गजलक क्षेत्रमे बहरक स्वतन्त्रताक प्रश्नकेँ उठाबैत छथि। प्रतिबद्ध साहित्यकार जखन गजल लिखैत छथि तखन ओ छन्दक बन्धनसँ मुक्त रहि सकैत छथि वा नहि — एहि प्रश्नपर ओ विचार करैत छथि।

ओम प्रकाश झा — बहुरूपिया रचनामे, समीक्षा, मैथिली बाल गजल, भोथ हथियार, आदि

ओमप्रकाश झाक ई लेखसभ मैथिली गजल आलोचनाक दृष्टिसँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। "मैथिली गजलक पहिल आलोचक-समालोचक-समीक्षक" —

अनचिन्हारद्वारा ओमप्रकाश झाकेँ दएल एहि मान्यतामे सत्य अछि। ओ जतेक मनोयोगसँ गजल लिखैत छथि ततेक मनोयोगसँ दोसरक गजलक समालोचना करैत छथि।

"बहुरूपिया रचनामे" — गजल लिखनिहार जखन कविता सेहो लिखैत छथि तखन कोन स्वरूप ग्रहण करैत छथि — एहि प्रश्नपर ओ विचार करैत छथि। "घोघ उठबैत गजल" — एहिमे ओ नूतन प्रयोगक माध्यमसँ गजलकेँ नव सामाजिक सन्दर्भमे प्रस्तुत करैत छथि। "गजलक लेल" — एहिमे गजल विधाक भविष्यपर ओ आशावादी दृष्टि प्रस्तुत करैत छथि।

अमित मिश्र — कतिआएल आखर आ गजल आ गीत मे अन्तर की छै

अमित मिश्रक दूटा लेख महत्त्वपूर्ण अछि। "कतिआएल आखर" मुन्नाजीक संग्रहक सविस्तार आलोचना अछि जाहिमे ओ व्याकरणिक विश्लेषण (कावफया-रदीफ) आ भावपक्ष दुनूकेँ समीक्षित करैत छथि। मिश्र एहि संग्रहमे २२टा गजलमे मात्र चारिटा शेर रहबाकेँ दोष मानैत छथि — गजलमे कमसँ कम पाँचटा शेर होएबाक चाही। तथापि ओ स्वीकार करैत छथि जे "भावक कारणेँ ई संग्रहक 'कतिआएल आखर' पढ़बाक योग्य अछि।"

"गजल आ गीत मे अन्तर की छै" — ई लेख सामान्य पाठकक हेतु गजल-व्याकरणक सरलतम परिचय अछि। शेर, रदीफ, काफिया, मतला, मकता — एहि तकनीकी पदावलीकेँ ओ उदाहरण सहित बुझाबैत छथि।

चन्दन कुमार झा — बहुत किछु बुझबैए : कियो बूझि नहि सकल हमरा

चन्दन कुमार झाक ई दीर्घ समालोचनात्मक लेख ओमप्रकाश झाक पहिल गजल-संग्रह "कियो बूझि नहि सकल हमरा" केर विस्तृत विवेचना अछि। "एकैसम शताब्दीक पहिल दशककेँ मैथिली गजलक इतिहासमे नवजागरण काल कहल जाए तँ कोनो अतिशयोक्ति नहि होएत" — एहि कथनमे समयकेँ भलीभाँति चिन्हित कएल गेल अछि।

झा दर्शाबैत छथि जे मैथिली गजलमे "अनचिन्हार युग"क अभियानी प्रयासक एकटा सुन्दर प्रतिफल अछि ओमप्रकाश झाक ई संग्रह। ओ संग्रहमे समाहित विषयसभ — देश, काल, सामाजिक सरोकार, श्रृंगार, संघर्ष — सभकेँ विवेचित करैत छथि। "भीख नहि हमरा अपन अधिकार चाही" — एहन पंक्तिमे जनभावनाकेँ स्वर देल गेल अछि। एकर अलावे ओ "जीनाइ भेलै महँग एतय मरब सस्त अछि" — एहन शेरमे आर्थिक विपन्नताक मार्मिक चित्रण रेखांकित करैत छथि। कुल सत्तासी गजलमे चौबीसटा अरबी बहरमे आ शेष सरल वार्णिक बहरमे — एहि तथ्यक उल्लेख करि झा संग्रहक व्याकरणिक गुणवत्ताक प्रशंसा करैत छथि।

पद्य खण्ड : आलोचना

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' — किछु गजल

अनिलजीक गजलसभमे मिथिलाक सामाजिक-राजनीतिक यथार्थ आ व्यंग्य प्रमुख अछि। "प्रतिबद्ध साहित्यकारक अप्रतिबद्ध गजल" — एहि शीर्षकमे एकटा विरोधाभासी सत्यकेँ पकड़बाक चेष्टा अछि।

मुन्नी कामत — जट-जटिन, दर्दक टिस, रोकू कोय ऐ सैलाबकेँ

मुन्नी कामतक तीनटा कविता तीन भिन्न संसारकेँ उपस्थापित करैत अछि। "जट-जटिन" लोकनाट्य-परम्पराकेँ काव्यरूप देने अछि जाहिमे प्रेम आ दाम्पत्यक सरल आनन्दकेँ बड़ी मधुरतासँ चित्रित कएल गेल अछि। "दर्दक टिस" उत्तराखण्ड प्राकृतिक विपदापर लिखल मर्मस्पर्शी कविता अछि — "माएक सुन भेल आँचर / केतौं हराएल नुनुक बोल / असगर छोड़ि बूढ़ बापकेँ / बिछुड़ि गेल बेटा अनमोल" — एहन पंक्तिमे वियोगक व्यथा हृदयकेँ छू जाइत अछि। "रोकू कोय ऐ सैलाबकेँ" — पर्यावरण-विनाशपर एकटा सशक्त पर्यावरणीय कविता।

शान्तिलक्ष्मी चौधरी — लेस्बियन कॉन्टिन्युअम, मातृत्व, नेताजी

शान्तिलक्ष्मी चौधरीक तीनटा कविता एहि संकलनमे सर्वाधिक साहसी आ विचारोत्तेजक रचना अछि।

"लेस्बियन कॉन्टिन्युअम" — एड्रीन रिचक नारीवादी अवधारणाकेँ आधार बना कऽ मैथिलीक संस्कारमे स्त्री-स्त्री सखी-बहिनपाय सम्बन्धकेँ पुनर्व्याख्यायित

कएल गेल अछि। "आजुक लेस्बियनिज्म जन्म लेलकैं हैं" — स्त्री-शरीरक क्रूर उपयोगक प्रतिक्रियामे एहि भावनाकेँ विकसित देखबाक दृष्टि मैथिली काव्यमे नूतन अछि। पुरुष-सत्ताक विरुद्ध नारी-एकतामे वैकल्पिक जीवन-दृष्टि ढूँढबाक ई प्रयास साहसी अछि।

"मातृत्व" — आधुनिक जीवनमे प्रसव-पीड़ाक यान्त्रिकीकरण आ सम्बन्धहीनता — "सब हरबरायले, महाक जल्दी मे, कुत्ता नाहैत दलफैत हँफसियाले" — एहन व्यंग्यपूर्ण वाक्यमे कविताक शक्ति अछि।

"नेताजी" — राजनीतिक व्यंग्य।

जगदानन्द झा 'मनु' — गजल, के पतियाएत

'मनु'क गजलसभमे शब्दक चयन आ भावक सघनता दर्शनीय अछि। "के पतियाएत" — एहि प्रश्नमे एकटा सम्पूर्ण जीवन-दर्शन समाहित अछि।

मनोज कुमार मण्डल — देशी कौआ

व्यंग्यात्मक कविता।

कुन्दन कुमार कर्ण — किछु गजल, अँगनामे कुचरल कौआ

कर्णजीक गजलसभमे ग्रामीण परिवेश आ आधुनिक असन्तोषक अभिव्यक्ति अछि।

राजदेव मण्डल — डायरीक पन्ना, डोलनी डाइन, केतए छी हम, आदि

राजदेव मण्डलक काव्य-रचना एहि संकलनमे सर्वाधिक विस्तृत आ वैविध्यपूर्ण अछि। "डायरीक पन्ना १-९" — व्यक्तिगत संवेदनाक आत्मनिरीक्षण। "डोलनी डाइन" — एहि सात-भागीय काव्य-कथामे "डाइन-प्रथा"क क्रूरताकेँ अत्यन्त मार्मिक आ कलात्मक ढंगसँ चित्रित कएल गेल अछि। डोलनीक त्रासदी — एकटा विधवा स्त्रीकेँ गामक अन्धविश्वासी लोकद्वारा "डाइन" कहि प्रताड़ित कएल जाएब — मैथिली काव्यमे एहन विषयक गहन सामाजिक चेतना दर्लभ अछि। डोलनीक अन्तिम आत्मकथन — "हम नहि छी डाइन / तसबहिनी सभ उड़ौलक अफवाह" — करुणरस आ आक्रोशक सम्मिश्रण अछि।

राजदेव मण्डलक अन्य कविता — "केतए छी हम", "अजगर", "अकासमे ठाढ़ पंछी", "बीआ केर पता", "कटैत गाछ", "अकाल", "घरक आँखि", "अभ्यास", "महफा आ अरथी", "मोँछक लड़ाइ", "दूटा धारा", "चोरि", "परिस्थिति", "उलहन", "आपसी", "द्वन्द्व", "छीप पर दीप", "इमानदारी" — एहि सभमे जीवनक अनेक आयामकेँ काव्यात्मक स्वर भेटल अछि।

"मोँछक लड़ाइ" — जातिवाद आ अहङ्कारकेँ "मोँछ"क प्रतीकद्वारा व्यंग्यात्मक ढंगसँ प्रस्तुत कएल गेल अछि — "मोँछक शान / गामक गुमान / तोड़ैत तान / फाटैत कान" — ई रिदम बड़ी सशक्त अछि।

"दूटा धारा" — "अपनो नहि पाबि रहल छी पार / अन्तरंग नदीमे दूटा धार / बिनु एकाकार केना करब पार" — एहन पंक्तिमे आत्मा आ शरीरक द्वन्द्वकेँ काव्यात्मक रूप देल गेल अछि।

"छीप पर दीप" — दलित-उत्थान आ सामाजिक न्यायक रूपक — "रंग, रूप आ जाति / देत प्रकाश सभकेँ / लड़ैत अन्हारसँ भरि राति" — एहन पंक्तिमे सामाजिक चेतनाक स्वर अछि।

सत्य नारायण झा — लहकैत समाज

झाजीक ई कविता सामाजिक जागृतिक आह्वान करैत अछि।

राम विलास साहु — किछु टनका, मोह-माया, के बँचेतौ तोहर जान

साहुजीक टनका (मैथिली हाइकू-सन विधा) सभमे प्रकृति आ जीवनक संक्षिप्त किन्तु गहन चित्रण अछि।

सुरेन्द्र 'शैल' — अभिसारिका, सासुर, विआह

'शैल'जीक गीतकवितासभमे श्रृंगार आ लोकजीवनक मिठास अछि।

राजीव रंजन मिश्र — किछु गजल

मिश्रजीक गजलसभमे आधुनिक जीवनक पेचीदगी आ व्यंग्य अछि।

मुन्नाजी — बाल हाइकू

मुन्नाजीक बाल हाइकूसभ बालमनोविज्ञानक सुन्दर काव्यात्मक अभिव्यक्ति अछि। "चोर सिपाही / खेल बिसराएल / विडियो गेम" — आधुनिक बचपनक एहन चित्र मर्मस्पर्शी अछि।

रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार" — अभिनन्दन

झारूदारजीक ई रचना विवाहक शुभ अवसरपर प्रेम आ मंगल-कामनाक अभिव्यक्ति अछि।

इरा मल्लिक — किछु बाल गजल, श्रृंगार गजल

इरा मल्लिकक बाल गजलसभ बालकक दैनन्दिन जीवनक परेशानीकेँ सरस ढंगसँ प्रस्तुत करैत अछि — "भरि रस्ता कादो कीचड़ पसरल / बाहर कोन्ना जेबै हम" — एहन सहज पंक्तिमे बच्चाक स्वर जीवन्त अछि।

श्रृंगार गजलमे विरहिणीक व्याकुलता — "बरखा बरसैत अछि दिन राति अहाँके / ईआद सताबै" — परम्परागत मैथिली श्रृंगारक सुन्दर निर्वाह अछि।

बिहदेश्वर ठाकुर — गजल, पुनः चमकतै मिथिला राज

"पुनः चमकतै मिथिला राज" — ई गीत-कविता मिथिलाक राजनीतिक स्वतन्त्रताक माँगकेँ स्वर दैत अछि। "नेतासन दुमुहा दाँत अछि / एक देखाबे दोसरसँ खाए" — एहन व्यंग्य तीक्ष्ण अछि।

अनिल मल्लिक — गजल

मल्लिकजीक गजलमे भावनात्मक सघनता दर्शनीय अछि।

आशीष अनचिन्हार — विहनि गजल

अनचिन्हारक विहनि गजल — "शान्तिलक्ष्मी" / "विदेहक तर-तर देखय इयह शिशुलक्ष्मी" — एहन पंक्तिमे विदेह-पत्रिकाक प्रति प्रेम आ समर्पणक भाव अछि।

रवि भूषण पाठक — फसली पद्य १-७

रवि भूषण पाठकक "फसली पद्य" क्रमबद्ध कविताक एकटा माला अछि जाहिमे ग्रामीण जीवन-चक्र — बोआइ, धनकटनी, फसल — केर काव्यात्मक दर्शन अछि।

बाल मुकुन्द पाठक — किछु गजल

पाठकजीक गजलसभमे जीवनदर्शन आ प्रेमक अभिव्यक्ति अछि।

अनामिका राज — शमतावान

"शमतावान" — स्त्री-शक्ति आ आत्मविश्वासकेँ केन्द्रमे राखि लिखल कविता।

सन्दीप कुमार साफी — कविता १-३

साफीजीक कवितासभमे सामाजिक यथार्थकेँ सरल भाषामे प्रस्तुत कएल गेल अछि।

भालचन्द्र झा — आजुक बेटी

एहि कवितामे आधुनिक युगमे बेटीक सामाजिक स्थिति आ संघर्षकेँ चित्रित कएल गेल अछि।

अमित मिश्र — हाथी गेलै भोज खाए

बालकवितामे व्यंग्य — बकरीक श्रमसँ बनाओल भोजनकेँ हाथी खाए जाइत अछि। "कानैत बकरी, हाथी बजा कऽ / खाइत अछि हाथी सूँड़ नचा कऽ" — एहिमे सत्ता आ विपन्नताक रूपकात्मक चित्रण अछि।

कामिनी कामायनी — संग दिअ सदिखन अहिना

कामायनीजीक ई कविता जीवनसंग्राममे आस आ प्रेमक महत्त्वकेँ गाबैत अछि। "चट्टान लग खसल पड़ल तँ / दूर ठाढ़ दरिया मुसकायल / आयलहू अहाँ सनेस नेने किछु / कहलहू अमृत रस अछि पी लू" — एहन पंक्तिमे प्रेमक पुनर्जीवन देनिहार शक्तिकेँ काव्यात्मक रूप देल गेल अछि।

दुखन प्रसाद यादव — छीनाझपटी, अजादी सबहक जान छै, बिहार अछि सिरमौर धरा केर

यादवजीक तीनटा कविता समाजकेँ जगाएबाक आह्वान करैत अछि। "छीनाझपटी" — समाजमे व्याप्त अराजकता आ विसंगतिकेँ चित्रित करैत अछि। "अजादी सबहक जान छै" — स्वतन्त्रता-आन्दोलनक महान बलिदानीसभकेँ स्मरण करैत राष्ट्रीय एकताक आह्वान। "बिहार अछि सिरमौर धरा केर" — मिथिला आ बिहारक गौरवशाली इतिहास आ महापुरुषसभकेँ नमन।

सुबोध कुमार ठाकुर — केकरा सँ कहबै

ठाकुरजीक ई एकाकी कविता मनक आन्तरिक पीड़ा आ सम्प्रेषणक कठिनाईकेँ अभिव्यक्ति दैत अछि — "रंग-बिरंगक सपनासँ अछि सजल नैना / केकरासँ कहबै एतेक बिआना" — एहन पंक्तिमे एकाकीपनक वेदना स्पष्ट अछि।

ओम प्रकाश झा — किछु गजल

ओमप्रकाश झाक दूटा गजल तकनीकी दृष्टिसँ उत्कृष्ट अछि। प्रत्येक गजलक निच्चामे बहरक विवरण दएल गेल अछि जे व्याकरणक प्रति जागरूकताकेँ प्रकट करैत अछि। "आइ किछु मोन पड़लै फेरसँ किए / भाव मोनक ससरलै फेरसँ किए" — एहन मतलामे गजलत्वक स्वाद अछि।

गंगेश गुंजन — नेता जी बकवास करैत छथि

संकलनक अन्तिम रचना गंगेश गुंजनक व्यंग्य-गजल "नेता जी बकवास करैत छथि" — ई सम्पूर्ण संकलनकेँ एकटा व्यंग्यात्मक विदाइ देबाक समान अछि। "जीहे टा ओ पेटक पावु / यथा जमीनो नाश करैत छथि / कहता हरदम काज बहुत छनि / किछुओ टा नहि खास करैत छथि" — एहन शेरमे राजनेताक कार्यशैलीपर तीखा प्रहार अछि। गुंजनजीक गजलक अन्तिम शेर "नव गुलामीक बेवल गुंजन / मुक्तिक फेर प्रयास करैत छथि" — एकटा आशावादी स्वरमे समाप्त होइत अछि।

समग्र मूल्यांकन

विधागत वैविध्य

विदेह सदेह-१५ मैथिली साहित्यमे विधागत विस्तारक एकटा उत्तम उदाहरण अछि। गजल, रुबाइ, बाल-गजल, बाल-हाइकू, काव्य-कथा, विहनि-कथा, लघुकथा, संस्मरण, समालोचना, भाषाविज्ञान, रिपोर्ताज — एहि विविध विधाक एकत्र उपस्थिति एकर सम्पन्नताकेँ प्रकट करैत अछि।

गजल : केन्द्रीय चिन्ता

एहि संकलनक केन्द्रमे मैथिली गजलशास्त्रक विकासक प्रश्न अछि। बहरविहीन गजलकेँ "अ-गजल" कहि नकारबाक साहस, युवा आ वरिष्ठ पीढ़ीक गजलकारमे संवाद आ विवाद, समालोचनाक अभावपर चिन्ता — ई सभ प्रश्न एहि संकलनमे बारम्बार उठाओल गेल अछि। अनचिन्हार, ओमप्रकाश झा, चन्दन कुमार झा, अमित मिश्र — एहि युवा पीढ़ीक गजल-आलोचकसभ मैथिली गजलकेँ एकटा सशक्त भविष्य देबाक दिशामे काज क रहल छथि।

स्त्री-स्वर

शान्तिलक्ष्मी चौधरी, कामिनी कामायनी, मुन्नी कामत, इरा मल्लिक, अनामिका राज — एहि स्त्री-लेखिकासभक रचनामे नारीवादी चेतना, लोकजीवनक माधुर्य आ सामाजिक प्रश्नसभक सम्मिश्रण अछि। शान्तिलक्ष्मीक "लेस्बियन कॉन्टिन्युअम" मैथिली काव्यमे सर्वाधिक साहसी रचना अछि।

दलित-वंचित चेतना

बेचन ठाकुरक प्रसंग (सगर राति रिपोर्ताजमे), राजदेव मण्डलक "डोलनी डाइन", उमेश मण्डलक "जीविते नरक", गंगेश गुंजनक व्यंग्य — एहि रचनासभमे वंचित वर्गक पीड़ाकेँ प्रमुखतासँ स्थान भेटल अछि।

भाषाक वैविध्य

एहि संकलनमे मैथिलीक विभिन्न बोली-रूपक प्रयोग उल्लेखनीय अछि। मिथिलाक ग्रामीण बोली, शहरी मैथिली, नेपाली मैथिली (बिहदेश्वर ठाकुर) — सभक समावेश मैथिलीक भाषायी सम्पन्नताकेँ प्रकट करैत अछि।

आलोचनात्मक परम्परा

एहि संकलनमे आलोचनात्मक लेखनक जे परम्परा देखाइत अछि तकरा विशेष महत्त्व अछि। कुमार पृथुक कथा-आलोचना, आशीष अनचिन्हारक गजल-आलोचना, अमित मिश्रक समालोचना, चन्दन झाक दीर्घ समीक्षा — एहि सभसँ स्पष्ट होइत अछि जे मैथिलीमे आलोचना-परम्परा सुदृढ़ भऽ रहल अछि।

निष्कर्ष

विदेह सदेह-१५ मैथिली साहित्यक एकटा ऐतिहासिक दस्तावेज अछि। एहिमे एकटा भाषाक साहित्यिक आन्दोलनकेँ देखल जा सकैत अछि — छन्दशास्त्रकेँ पुन: स्थापित करबाक आन्दोलन, स्त्री-स्वरकेँ केन्द्रमे आनबाक आन्दोलन, दलित-वंचितक पीड़ाकेँ साहित्यक विषय बनाएबाक आन्दोलन, आ इन्टरनेटक माध्यमसँ मैथिलीकेँ वैश्विक मंचपर प्रस्तुत करबाक आन्दोलन।

"विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन : मानुषीमिह संस्कृताम्" — संकलनक उपशीर्षकमे नहि मात्र साहित्यिक उद्घोष अछि, अपितु एकटा सभ्यताकेँ जीवन्त राखबाक दृढ़ संकल्प अछि। एहि संकलनकेँ पढ़ि कऽ स्पष्ट होइत अछि जे मैथिली साहित्य न मरल अछि, न थकल अछि — अपितु एहि काल-खण्डमे ओ अपन नव-युवावस्थामे प्रवेश कऽ रहल अछि।

आलोचना : विदेह सदेह-१५ (सम्पादक : गजेन्द्र ठाकुर)

ISSN 2229-547X VIDEHA

संस्करण : २०१३, २०२२

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह सदेह-१५ : एकटा समग्र साहित्यिक आलोचना — ---

अध्याय 33 · विदेह सदेह-१६: एकटा समग्र साहित्यिक समीक्षा — सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर

सारांश सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर ISSN: 2229-547X VIDEHA स्रोत: विदेह ई-पत्रिका (अंक १४५-१६८) --- प्रस्तावना विदे

सदेह-१६ मैथिली साहित्यक एकटा महत्त्वपूर्ण समानान्तर संकलन थिक। सम्पादक गजेन्द्र ठाकुर विदेह ई-पत्रिकाक अंक १४५ सँ १६८ धरिक

श्रेष्ठ गद्य आ पद्यकेँ एकत्रित कयलाह अछि। ई संकलन मैथिली साहित्यक समानान्तर परम्पराक जीवन्त दस्तावेज थिक, जाहिमे ब्राह्मणवादी

मुख्यधाराक विरोधमे उभरैत नव आ विविध स्वरकेँ स्थान भेटल अछि।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · आलोचना · सांस्कृतिक अध्ययन · समाज-समीक्षा

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर

ISSN: 2229-547X VIDEHA

स्रोत: विदेह ई-पत्रिका (अंक १४५-१६८)

प्रस्तावना

विदेह सदेह-१६ मैथिली साहित्यक एकटा महत्त्वपूर्ण समानान्तर संकलन थिक। सम्पादक गजेन्द्र ठाकुर विदेह ई-पत्रिकाक अंक १४५ सँ १६८ धरिक श्रेष्ठ गद्य आ पद्यकेँ एकत्रित कयलाह अछि। ई संकलन मैथिली साहित्यक समानान्तर परम्पराक जीवन्त दस्तावेज थिक, जाहिमे ब्राह्मणवादी मुख्यधाराक विरोधमे उभरैत नव आ विविध स्वरकेँ स्थान भेटल अछि।

पोथीक दू खण्ड अछि — गद्य-खण्ड (पृ. १-४५०) आ पद्य-खण्ड (पृ. ४५१-७२८)। दुनू खण्डमे मिलिकऽ पचासटाँसँ बेशी रचनाकारक रचना सँगृहीत अछि।

गद्य-खण्डक समीक्षा

१. गजेन्द्र ठाकुर — मचण्ड, रेस, सम्पादकीय

गजेन्द्र ठाकुरक "मचण्ड" एकटा मार्मिक नाटक थिक जे भाषिक संकट, आतङ्क आ न्याय-व्यवस्थाक जटिलताकेँ केन्द्रमे राखि विनिर्मित कयल गेल अछि। मुतालिफ नामक युवाकेँ हबीबुल्लाह नामक तस्करक चक्रव्यूहमे फँसैत देखाओल गेल अछि। नाटकक केन्द्रीय विडम्बना ई थिक जे जे निर्दोष छथि ओ सजा भोगैत छथि आ मुख्य अपराधी छुटि जाइत अछि। भाषाक बाधा — मुतालिफ तमिलभाषी छथि — सन्दर्भमे सामाजिक न्यायक प्रश्न अति प्रभावशाली ढङ्गसँ उठाओल गेल अछि। नाटकक संवाद सहज छैक मुदा एकर सन्देश गहिन।

"रेस" लघुकथामे आधुनिक जीवनक प्रतिस्पर्धात्मकता आ मानवीय सम्बन्धक क्षय दर्शाओल गेल अछि।

सम्पादकीयमे ठाकुर मैथिली साहित्यक ब्राह्मणवादी पकड़ि आ "ईहो साहित्य अकादेमी-पोषित मुख्यधारा" पर करारी चोट केने छथि। हुनकर वैचारिक स्थिति स्पष्ट अछि — समानान्तर परम्परा आ दलित-पिछड़ा वर्गक रचनाकारकेँ प्रश्रय देनाय। ई सम्पादकीय स्वयंमे एकटा महत्त्वपूर्ण साहित्यिक-सामाजिक दस्तावेज

थिक।

---

२. अक्षय कुमार झा — प्रेमक अधिकार

ई एकटा पहिलोक कथा थिक जे पति-पत्नीक सम्बन्धमे सासु-बहुक बीचक तनाव चित्रित करैत अछि। कथाकार बहुत संवेदनशीलतासँ माताक "अपन बेटाक प्रेमपर एकाधिकार" मानसिकता आ पुत्र-वधूक प्रति उपेक्षाकेँ उजागर केने छथि। झाजी लिखैत छथि जे "प्रेम तँ सागर सनक अथाह आ अनन्त अछि" — ई पंक्ति कथाक सारतत्त्व अछि। भाषा सरल, भावना गहन।

---

३. जगदीश प्रसाद मण्डल — पलभरि, रिजल्ट

जगदीश प्रसाद मण्डल विदेह-परम्पराक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कथाकार छथि।

"पलभरि" एकटा शिक्षकक जीवनभरिक विषादक कहानी थिक। शिवजी बाबू, जे ७३ वर्षक आयुमे अपन जीवनक लेखा-जोखा करैत छथि, हुनकर मनोव्यथा अत्यन्त मार्मिक ढङ्गसँ अंकित कयल गेल अछि। कथामे पीढ़ी-दर-पीढ़ीक सम्बन्ध — शिवजी आ हुनकर पोता नन्दन — के माध्यमसँ जीवनदर्शन विनिर्मित होइत अछि। "समय सभसँ बलवान होइ छैक, श्रमवाने ओकरा पकड़ि सङे चलि सकैए" — ई उक्ति कथाक केन्द्रीय संदेश थिक।

"रिजल्ट" मे लोबर गणेश नामक छात्रक परीक्षा-परिणामक दिनक माध्यमसँ शिक्षा-व्यवस्था आ पारिवारिक सम्बन्धकेँ जीवन्त रूपमे प्रस्तुत कयल गेल अछि। ओकर दादा श्यामचरणक सँग संवाद कथाकेँ दार्शनिक ऊँचाइ प्रदान करैत अछि। "चारू जुगक चर्चा अछि" — एहि पंक्तिपर दादा-पोताक बीच जे संवाद होइत अछि से विलक्षण आ अविस्मरणीय अछि।

मण्डलक भाषा ग्रामीण मैथिलीक सहजता लेने चलैत अछि, पात्रक आन्तरिक मनोदशाक चित्रण अतुलनीय अछि।

---

४. उमेश पासवान — अजोह

एहि आत्मकथात्मक कथामे बचपनक विद्यालय-जीवनक स्मृतिकेँ बड़ा सहजतापूर्वक गुम्फित कयल गेल अछि। बैजू काहत सरक कठोर अनुशासन, नेबू लेनाय जाएब आ राजे काकाक सँग मुठभेड़ — ई सभ घटना बचपनक मिठास आ शरारतकेँ जीवित कयने अछि। पासवानजी एहि कथाक माध्यमसँ बचपनक स्मृतिकेँ सामाजिक यथार्थक पृष्ठभूमिमे राखि अधिक सार्थक बनाओलाह अछि।

---

५. लक्ष्मी दास — दुष्टपना

एकटा किसानक खेतक तोड़-फोड़क आधारपर लिखल ई कहानी सामाजिक न्याय आ ग्रामीण जीवनक विडम्बनाकेँ उजागर करैत अछि। "चोर चोरे रहतै, साधु साधुए रहतै" — ई प्रवचन कथाक नैतिक स्तम्भ थिक। दासजीक शैली सरल आ प्रवाहमय अछि।

---

६. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी' — खजाना, विजय

"खजाना" एकटा रोचक कथा थिक जाहिमे पैडी नामक एकटा अमेरिकी मैथिल किशोर अपन दादाक गाममे आबि इलेक्ट्रोनिक कचराक पुनर्चक्रण सम्बन्धी ज्ञान बाँटैत अछि। पर्यावरण-चेतना आ ग्रामीण-शहरी तथा विदेशी-देसी जीवनशैलीक बीचक अन्तर्द्वन्द्वकेँ पाठक बड़ा रोचक ढङ्गसँ उठाओलाह अछि।

"विजय-१" मे झुमकी नामक स्त्री अपन मदिरासेवी पतिकेँ प्रतिकार करैत विजय पाबैत अछि — स्त्री-शक्ति आ सशक्तिकरणक विषयमे एकटा साहसिक कथा।

"विजय-२" मे प्रिया आ सोमेश नामक दम्पतीक बीच करियर आ बाल-पालनक प्रश्नपर जे वार्तालाप होइत अछि से आधुनिक नारी-स्वतन्त्रताक पक्षमे एकटा सशक्त कथन थिक। "हम बच्चा जहमा देब, ओइसँ हरेक कम्पनी मैटर्निटी लीव दइते छैक" — ई संवाद कथाकेँ प्रगतिशील दृष्टि देइत अछि।

---

७. जे.पी. गुप्ता प्रसिद्ध मोनूजी — बेटी रूपी बोझ

ई लेखककेँ पहिल कथा थिन। एकटा गरीब परिवारक दुःख-व्यथाकेँ केन्द्रमे राखि दहेज-प्रथाक विरुद्ध एकटा मार्मिक आख्यान उपस्थित कयल गेल अछि। बेटीकेँ "बोझ" बुझनाइ — ई सामाजिक मानसिकता किदन कष्टकर अछि से कहानीमे स्पष्ट भेल अछि। लेखकक भावाभिव्यक्ति आत्मीय छैक, यद्यपि शिल्पमे किछु परिपक्वताक आवश्यकता अछि।

---

८. शारदा नन्द सिंह — की करब से अहीं कहू

ई विहनि कथामे ग्रामीण कृषक ऋणक जालमे फँसल रामाक व्यथा अंकित अछि। महाजनक चक्कर, बैंककेँ ऋण — एकटा अत्यन्त संक्षिप्त किन्तु प्रभावशाली चित्र। विहनि कथाक शिल्पमे सिंहजी दक्ष छथि।

---

९. कपिलेश्वर राउत — बड़का खीरा, अधला

"बड़का खीरा" मे जुगुत साँह नामक किसानक पुत्रक लापरवाही आ कृषि-क्षेत्रमे वैज्ञानिक पद्धतिक महत्त्व पर प्रकाश देल गेल अछि। जुगुत साँहक खीराक खेतीक माध्यमसँ ई दर्शाओल गेल अछि जे श्रम, नवाचार आ वैज्ञानिक ज्ञानसँ कोनो उद्यममे सफलता प्राप्त कयल जा सकैत अछि। कथा प्रेरणादायक अछि।

---

१०. दुर्गानन्द मण्डल — बुधि, छुतहरि

मण्डलजी लघुकथाक माध्यमसँ समाजक विकृतिपर व्यङ्ग्य करैत छथि।

---

११. राजदेव मण्डल — रूसल बौआ, दोख केकर, जाल

राजदेव मण्डल मैथिली साहित्यक एकटा सशक्त हस्ताक्षर थिकाह। "रूसल बौआ" बाल-मनोविज्ञानपर आधारित एकटा सुन्दर रचना थिक। "जाल" मे सामाजिक षड्यन्त्रक चित्रण कयल गेल अछि।

---

१२. जितेन्द्र झा — गतिविधि, सांस्कृतिक सम्मानसँ मजबूत हएत राष्ट्रियता

जितेन्द्र झाक पत्रकारीय लेखन समाज-जागरणक माध्यम थिक। जनकपुर बम्बकाण्डक पीड़ितसभकेँ न्याय मिलत की नहि — ई प्रश्न आजुओ प्रासङ्गिक अछि।

---

१३. जगदानन्द झा 'मनु' — अनमोल झाजीक पोथी "टेक्नोलजी"क समीक्षा, मैथिलीमे एकरूपताक अभाव, मनुखक जीवन, बाबीक पियार

मनुजी समीक्षाकार आ कथाकार दुनू रूपमे एहि संकलनमे उपस्थित छथि। "मैथिलीमे एकरूपताक अभाव" मे ओ भाषिक मानकीकरणक प्रश्न उठाओलाह अछि जे आजुओ विचारणीय अछि।

---

१४. सत्य नारायण झा — अरण्य देश, जनक, निशीथ, बेचारा लोक, स्मृति

विविध विधाओंमे लिखैत सत्य नारायण झा गद्य-खण्डमे विचारपरक आ आत्मकथात्मक रचना दैत छथि।

---

१५. गौरी शंकर साह — छोटकी

एहि कथामे एकटा बालिकाक आत्मीय चित्रण कयल गेल अछि। साहजीक भाषा सहज छैक।

---

१६. डॉ. शिवकुमार प्रसाद — सखारी-पेटारी केर तानी-भरनी, अदिया शमकी

डॉ. शिवकुमार प्रसाद विद्वत्तापूर्ण ढङ्गसँ मैथिली लोक-संस्कृतिक पक्षपर लिखैत छथि।

---

१७. ओम प्रकाश झा — कुलच्छनी, बेटीक बिआह

ओमप्रकाश झा "गजलकार" के रूपमे मैथिली-जगतमे सुपरिचित छथि। हुनकर कथामे स्त्रीक दुर्दशा आ पारिवारिक द्वन्द्वक सूक्ष्म चित्रण अछि।

---

१८. डॉ. कीर्तिनाथ झा — शेफाली, फुलपरासवाली आ हम

डॉ. कीर्तिनाथ झाक स्मृति-आधारित रचना मैथिल जीवनक सौन्दर्यकेँ पुनर्जीवित करैत अछि।

---

१९. आशीष अनचिन्हार — निरपेक्ष-गुट-निरपेक्ष, लास्ट टाइम सजेशन, मैथिली गजल व्याकरण, नेपालक नोर मरुभूमिमे, कलंकित चान, तीन टा बिन्दु

आशीष अनचिन्हार एहि संकलनक सर्वाधिक बहुमुखी रचनाकार छथि। हुनकर लेखन कविता, आलोचना, भाषाशास्त्र — अनेक क्षेत्रकेँ स्पर्श करैत अछि।

"मैथिली गजल व्याकरणक शुरुआती प्रयोग" एकटा विशेष महत्त्वक रचना थिक जाहिमे गजलक छन्दशास्त्र आ मैथिली भाषाक प्रकृतिक बीचक सम्बन्धकेँ तार्किक ढङ्गसँ विश्लेषण कयल गेल अछि।

"नेपालक नोर मरुभूमिमे" एकटा काव्यात्मक गद्य-रचना थिक जाहिमे नेपाली मैथिली-समाजक व्यथाकेँ संवेदनशीलतापूर्वक अंकित कयल गेल अछि।

"तीन टा बिन्दु (भाषाक मनोविज्ञान)" एकटा विचार-उत्तेजक निबन्ध थिक।

---

२०. डॉ. अरुण कुमार सिंह — सतसठि साला कौशिकी (मिथिला) क लेखा-जोखा

ई एकटा शोधपरक आलेख थिक जाहिमे कोसी नदीक इतिहास आ मिथिला क्षेत्रक सम्बन्धकेँ विश्लेषित कयल गेल अछि।

---

२१. शिवकुमार झा 'टिल्लू' — बड़का साहेब: परम्परागत संस्कार केर पराभवक वृत्ति चित्र (भाग २), दुःखक दुपहरिया, देवीजी, मैथिली बाल साहित्य उद्भव ओ विकास, "आब ओ नहि एथुन" (लघु कथा), पेटक माड़ि (बाल विहनि कथा)

झाजी 'टिल्लू' अत्यन्त बहुप्रजक लेखक छथि। "बड़का साहेब" कथामे पारम्परिक मैथिल समाजमे उच्चवर्गीय अहङ्कार आ आधुनिकताक टकराहटकेँ चित्रित कयल गेल अछि।

"मैथिली बाल साहित्य उद्भव ओ विकास" एकटा सुविस्तृत शोध-लेख थिक जाहिमे जीवकान्त, सीयाराम झा, हरिश्चन्द्र मिश्र, विभारानी, रामदेव झा "झारुदार" सहित अनेक बाल-साहित्यकारक विस्तारसँ चर्चा कयल गेल अछि।

"आब ओ नहि एथुन" लघुकथामे मोहित आ रघुपति मास्टरक बीचक सम्बन्ध — जाहिमे सामाजिक दूरी धीरे-धीरे प्रेमपूर्ण सम्बन्धकेँ खण्डित कयने जाइत अछि — अत्यन्त मर्मस्पर्शी ढङ्गसँ चित्रित भेल अछि।

"पेटक माड़ि" बालकथामे तुलोकक्का आ ओकर बहिन जहान दाइक जीवन-घटनाकेँ हास्य-व्यङ्ग्यसँ उपस्थित कयल गेल अछि।

---

२२. अमर काहत अमर — सुजीतक गहद सुगहद छोड़ि रहल

ई नेपाली मैथिली-लेखक सुजीत कुमार झाक कथा-संग्रह "सुगहद"क एकटा प्रभावशाली समीक्षा थिक। अमर काहत अमर सुजीतजीक प्रत्येक कथाकेँ विश्लेषित करैत हुनकर कथाकारिताक सबल पक्षकेँ उजागर केलाह अछि।

---

२३. उमेश मण्डल — दूध, सगर राति दीप जरए, मैथिली: सरकार आ हम सभ

"दूध" एकटा हास्यरस-पूर्ण कथा थिक जाहिमे ताड़ी पीनिहार छात्र पपुआ अपन शिक्षककेँ बेधड़क ढङ्गसँ ताड़ीकेँ "दूध" कहि देइत अछि — ग्रामीण किशोरक चतुरता आ निर्भीकताक सुन्दर चित्रण।

उमेश मण्डल "सगर राति दीप जरए" आन्दोलनक सक्रिय सङ्गठक छथि आ हुनकर रिपोर्ताज मैथिली साहित्यिक गतिविधिक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज थिक।

---

२४. नन्द विलास राय — मदन-अमर

एकटा लम्बी कथा जाहिमे दू मित्रक जीवनक उतार-चढ़ावकेँ चित्रित कयल गेल अछि।

---

२५. पूनम मण्डल — सगर राति दीप जरएक ७९म आ ८०म आयोजनक रिपोर्ताज

एहि रिपोर्ताजमे "सगर राति दीप जरए" कार्यक्रमक विस्तृत विवरण देल गेल अछि।

---

२६. राम विलास साहु — बाल-बोध

बाल-शिक्षाक उद्देश्यसँ लिखल एहि लेखमे सरल भाषामे नैतिक उपदेश देल गेल अछि।

---

२७. सुरेन्द्र शैल — धनुष यज्ञ-सीता स्वयंवर आ जयमाल

रामकथाक प्रसङ्गकेँ नवीन दृष्टिसँ प्रस्तुत करबाक प्रयास।

---

२८. अमित मिश्र — बस एकटा गर्लफ्रेन्ड

एकटा संक्षिप्त व्यङ्ग्यात्मक कथा।

---

२९. डॉ. बचेश्वर झा, निर्मली — सासुरक साइकिलक कथा-बेथा

एकटा हास्य-प्रधान आत्मकथात्मक रचना जाहिमे ससुरालमे साइकिल चलाएबाक अनुभवकेँ रोचक ढङ्गसँ प्रस्तुत कयल गेल अछि।

---

३०. जवाहर लाल कश्यप — स्थेस बस्टर

एकटा आधुनिक जीवनशैलीपर टिप्पणी करैत कथा।

---

३१. फागुलाल साहु — माइक डाँट

एकटा लघुकथा जाहिमे माता-पुत्रक सम्बन्धकेँ चित्रित कयल गेल अछि।

---

३२. अखिलेश मण्डल — लालियाएल मुँह

व्यङ्ग्यात्मक शैलीमे एकटा सामाजिक चित्र।

---

३३. बिपिन कुमार कर्ण 'करण' — सरकारीए नौकरी किए?

सरकारी बनाम निजी नौकरीक बहसकेँ केन्द्रमे राखि लिखल ई कथा आधुनिक युवाक मानसिकताकेँ उजागर करैत अछि।

---

३४. बेचन ठाकुर — हरिया इन्सपेक्टर

बेचन ठाकुर मैथिली नाटकक क्षेत्रमे विशेष ख्याति राखैत छथि। एहि लघु-कथामे पुलिस-व्यवस्थापर एकटा व्यङ्ग्यात्मक कथन अछि।

---

३५. संजय कुमार मण्डल — एकहत

एकतापर केन्द्रित एकटा संक्षिप्त कथा।

---

३६. ललन कुमार कामत — स्कूलक फीस, सफरनामा, बेटी

"स्कूलक फीस" एकटा मार्मिक कथा थिक जाहिमे ग्रामीण परिवारक आर्थिक संघर्षकेँ चित्रित कयल गेल अछि। "बेटी" मे पुत्री-प्रेमक मधुर अभिव्यक्ति अछि।

पद्य-खण्डक समीक्षा

१. कामिनी कामायनी — जहिया ओ इतिहास सुनौलक

एकटा इतिहास-बोध आ स्त्री-स्वर सँगुम्फित कविता। कामायनीजी ऐतिहासिक सन्दर्भकेँ वर्तमान सामाजिक यथार्थसँ जोड़ैत छथि।

---

२. मो. गुल हसन — गीत: छोटका किसान

एकटा सोधक गीत जाहिमे छोट किसानक संघर्षकेँ सरल भावनात्मक भाषामे व्यक्त कयल गेल अछि।

---

३. ओम प्रकाश झा — किछु गजल

ओमप्रकाश झाक गजल मैथिली गजल-परम्पराक एकटा महत्त्वपूर्ण स्तम्भ थिक। हुनकर गजलमे उर्दू गजलक प्रभाव स्पष्ट अछि, किन्तु मैथिली भाषाक अपन स्वाभाविक प्रवाह बनल रहैत अछि।

---

४. शारदानन्द दास परिमल — पूर्णेन्दु नभाङ्गनमे, फागुनक गीत

प्रकृति-प्रेम आ ऋतु-वर्णनमे परिमलजी विशेष दक्षता राखैत छथि। फागुनक गीत मैथिली लोक-गीत-परम्पराक अनुरूप अछि।

---

५. योगानन्द हीरा — किछु गजल

हीराजीक गजल भाषिक प्रवाह आ गेयतामे सफल अछि।

---

६. मिहिर झा — किछु बाल गजल, शेर, कता

बाल गजलक विधामे प्रयोग रोचक अछि।

---

७. बृषेश चन्द्र लाल — चारुभर पसरल अछि, किछु बालगीत, होरीक गीत

"चारुभर पसरल अछि" एकटा प्रकृति-कविता थिक — हिमपातक सौन्दर्यकेँ अत्यन्त ताजे बिम्बमे प्रस्तुत कयल गेल अछि। "नभक स्नेह / श्वेत पुष्प-रेणु / सजाएलि धरती / ओढ़ि लेलकि / निर्मल चादरि" — ई पंक्तिसभ चित्रात्मक अछि।

होरीक गीत मे युगल-संवादक पारम्परिक शैलीमे वसन्त-वर्णन कयल गेल अछि।

---

८. शिव कुमार झा 'टिल्लू' — हाइकू / शेनयूर, टनका, शोक सभा, काल-चक्र, हमर अपन कविता, सिनेह, नमन, उड़ेरबुन, बाबाक कंठी, रीतिक-मारल, बरखा रानी, शैव्याक विलाप, सन्ताप

'टिल्लू'जीक काव्य-विस्तार अत्यन्त व्यापक अछि।

हाइकू मे प्रकृति, मानवीय सम्बन्ध आ दार्शनिक चिन्तन सभटा विषय अछि। "आँखिक नोर / स्नेहक सागर / नहि झम्पैछ" — ई हाइकू मैथिली हाइकूक श्रेष्ठ उदाहरण थिक।

"शोक सभा" एकटा दीर्घ कविता थिक जाहिमे एकटा मित्रक असामयिक मृत्युपर शोक-सभाक वर्णनमे सामाजिक पाखण्डकेँ उघाड़ल गेल अछि। "हाँ रो! मानवीय मूल्य बेचि लेंगे / अजातशत्रुक अन्तिम सभामे / एहन धृष्टता" — ई व्यंग्यात्मक पंक्ति मर्मस्पर्शी अछि।

"काल-चक्र" एकटा राजनीतिक-सामाजिक व्यंग्य-कविता थिक जाहिमे लोकतन्त्रक विडम्बनाकेँ चित्रित कयल गेल अछि।

"हमर अपन कविता" जातिवाद-मुक्त मिथिलाक स्वप्नकेँ अभिव्यक्त करैत अछि। "जाति त' रहबे करत / किएक त' एहिसँ होइछ / जहानक सृजन / मुदा! नहि ब्राह्मण नहि गोलकन / जाति मात्र पुरुष-स्त्री" — एहि पंक्तिमे कविक समतावादी दृष्टि प्रकट होइत अछि।

---

९. पम्मी प्रिया झा — रौ ललटुनमा

बाल-साहित्यक क्षेत्रमे एकटा रोचक योगदान।

---

१०. झा हेमन्त बापी — दानव

एकटा प्रतीकात्मक कविता।

---

११. राजदेव मण्डल — हेलवार

एकटा लोक-जीवनसँ सम्बद्ध कविता।

---

१२. सुनील मोहन ठाकुर — अहि बेर देखल फागु

फाल्गुन-वर्णनक एकटा सहज गीत।

---

१३. नन्दिनी पाठक — ई कोन हाथ? ई तँ छाप भऽ गेल

स्त्री-चेतनाक एकटा सशक्त अभिव्यक्ति।

---

१४. अब्दुर रज्जाक — घोरमठा राजनैतिक

एकटा व्यंग्य-कविता।

---

१५. प्रदीप पुष्प — शेर, किछु रुबाइ, किछु गजल, गजलक गजल, तूँ, कठपुतरीकेँ नाच, यै अहाँ, गीत

प्रदीप पुष्पजी बहु-विध काव्य-रूपमे सक्रिय छथि। हुनकर "कठपुतरीकेँ नाच" स्त्रीजीवनकेँ रूपक-माध्यमसँ प्रस्तुत करैत अछि।

---

१६. मो. असरफ राइन — रुबाइ, किछु कता, किछु आजाद गजल, गीत, पियाकेँ समझना, हमर देश

बहु-विध काव्य-रूपमे राइनजीक प्रयास सराहनीय अछि।

---

१७. किशन कारीगर — बीर जबान, बारूद के ढेड़ी पर बैसल, गजल सन किछु मैथिलीमे

"बारूद के ढेड़ी पर बैसल" एकटा सशक्त प्रतीकात्मक कविता थिक जे युद्ध आ सत्ताक विरुद्ध आवाज उठबैत अछि।

---

१८. आशीष अनचिन्हार — मुट्ठी महँक बालु (अनुवाद), निमूह, मुदा किछु तँ करू, किछु बाल कविता, किछु बाल गजल, किछु गजल, दू गजला, हजल, किछु भक्ति गजल

आशीष अनचिन्हारक काव्य-विस्तार उल्लेखनीय अछि। "निमूह" कविता मैथिली समाजक स्थितिपर एकटा करुण-व्यंग्य थिक।

---

१९. जगदानन्द झा मनु — छुट्टी भऽ गेलै, प्रकृति (बाल कविता), किछु गजल, भक्ति गजल

मनुजी बाल-साहित्य आ गजल दुनू विधामे समान रुचि राखैत छथि।

---

२०. नीतीश कर्ण — प्रेमक बुन्नी, कोना सुनाबु

प्रेम-विरहक सहज अभिव्यक्ति।

---

२१. बिनीता झा — जिनगी, किछु पाँति राधाकृष्ण सरकार लेल

---

२२. विन्देश्वर ठाकुर — पैसा एतऽ कमा रहल छी, एना मनाएब एहिबेरक दशैं, गजल, गजल सन, गीत, भेटब दोसर दिवालीमे, छठिक शुभकामना, रक्षाबन्धन, अहा किये कनलौ?, ललकार, फुसिक शान

ठाकुरजीक काव्य-संग्रह इस संकलनमे सर्वाधिक विविध अछि। "पैसा एतऽ कमा रहल छी" प्रवासी मैथिलक व्यथाकेँ प्रभावशाली ढङ्गसँ व्यक्त करैत अछि।

---

२३. पंकज झा — हम बुरबकहा

एकटा आत्म-व्यंग्यपूर्ण कविता।

---

२४. बेचन महतो — खुशीके नोर, आउ हमसब एक हउ, सपनाके बिज

एकताक आह्वान करैत महतोजीक कविता सामाजिक सद्भावना प्रसारित करैत अछि।

---

२५. कुन्दन कुमार कर्ण — हजल, किछु बाल गजल, किछु गजल

हजल विधामे कुन्दन कुमार कर्णक प्रयोग रोचक अछि।

---

२६. बिनीत ठाकुर — जलवायु परिवर्तन

पर्यावरण विषयक एकटा जागरण-कविता।

---

२७. राम कुमार मिश्र — किछु रुबाइ, किछु गजल

---

२८. सत्य नारायण झा — प्रियतम, व्यथित मोन, मोनक बात

---

२९. श्याम शेखर झा — साजन

एकटा प्रेम-गीत।

---

३०. पंकज चौधरी "नवलश्री" — जुनि बिसरू

स्मृति आ प्रेमपर आधारित गीत।

---

३१. अमित मिश्र — किछु गजल

अमित मिश्रक गजल बालसाहित्य-समीक्षा-खण्डमे भेटल हुनकर उक्तिक अनुरूप सशक्त अछि।

---

३२. कंचन कुमारी झा — मंजिल

---

३३. संजय झा — हे माय तोरा प्रणाम

मातृ-वन्दना।

---

३४. शारदा नन्द सिंह — नमरीक भाउ तेहेन ने दरकल, अयोग्य शासक, चिरकि जाएब, भूमिजा भैया

"अयोग्य शासक" एकटा राजनीतिक व्यंग्य-कविता थिक।

---

३५. अरुण चन्द्र राय — अर्थशास्त्र

---

३६. इरा मल्लिक — सङ्ग अहाँक पाबि, किछु गजल, गीत (श्रृंगार), सूर्जक पहिल किरण

इरा मल्लिकक श्रृंगार-गीत मैथिली काव्य-परम्पराक सुकोमल धाराकेँ जीवित राखैत अछि।

---

३७. सुरेन्द्र शैल — पोसुआ कुकुर

एकटा सामाजिक व्यंग्य।

---

३८. रसिक लाल सदाय — दीनक दुर्दशा, अनुभव, स्कूल गीत

---

३९. महेश झा 'डखरामी' — सपना, उनटा बसात, अनुराग, राधेश्याम, बेटी, मनोद्गार, क्रोध, छैइठ मैय्या, नारी

डखरामीजीक कविता-संग्रह विविध विषयकेँ आवृत्त करैत अछि। "नारी" आ "बेटी" स्त्री-विषयक कविता विशेष ध्यानाकर्षक अछि।

---

४०. शेफालिका वर्मा — दीयाबाती मनेलौं आली

छठि पर्वपर आधारित एकटा सुन्दर कविता।

---

४१. कैलाश — जहिना करब ओहिना पाएब

कर्मफल-विषयक एकटा शिक्षाप्रद कविता।

---

४२. सन्तोष कुमार राय 'चन्दू' — गिरवी, प्रधानमंत्री के छथि?

राजनीतिक व्यंग्य-काव्य।

---

४३. डॉ. शशिधर कुमार "विदेह" — ओजोन, प्रदूषण

पर्यावरणीय चिन्ताकेँ काव्यमे अभिव्यक्त कयल गेल अछि।

---

४४. राजीव रंजन मिश्र — गजल

---

४५. स्व. कविवर सीताराम झा — गजल

समग्र मूल्यांकन

ताकति

विदेह सदेह-१६ मैथिली साहित्यक दृष्टिसँ अनेक कारणे महत्त्वपूर्ण अछि:

१. विविधता — गद्य आ पद्य दुनू विधाओंमे, विहनि कथासँ उपन्यासखण्ड धरि, हाइकूसँ गजल धरि, अनेक विधाक समावेश।

२. सामाजिक प्रतिबद्धता — जगदीश प्रसाद मण्डल, उमेश पासवान, राजदेव मण्डल, बेचन ठाकुर जेहन रचनाकार दलित-पिछड़ा-शोषित वर्गक आवाजकेँ साहित्यमे स्थान दियाओलाह अछि।

३. नवाचार — आशीष अनचिन्हार, अमित मिश्र, कुन्दन कुमार कर्ण जेहन युवा रचनाकार नव विधा (हजल, बाल गजल) आ नव बिम्ब प्रयोग करैत छथि।

४. बाल साहित्य — शिवकुमार झा 'टिल्लू'क विस्तृत शोध-आलेख मैथिली बाल-साहित्यक एकटा महत्त्वपूर्ण सर्वेक्षण प्रस्तुत करैत अछि।

५. स्त्री-स्वर — योगेन्द्र पाठक, कामिनी कामायनी, इरा मल्लिक, शेफालिका वर्मा, नन्दिनी पाठक जेहन लेखिकाक उपस्थिति संकलनकेँ समृद्ध करैत अछि।

न्यूनताएँ

१. कतिपय रचनाकारक रचना भावोत्कर्षमे उत्तम अछि किन्तु शिल्पमे परिपक्वताक अभाव दृष्टिगोचर होइत अछि।

२. संकलनक आयतन विशाल अछि — किछु रचना सम्पादकीय दृष्टिसँ अधिक छँटनीक योग्य छल।

अन्तिम टिप्पणी

विदेह सदेह-१६ मैथिली साहित्यक समानान्तर परम्पराक एकटा जीवन्त प्रमाण-पत्र थिक। सम्पादक गजेन्द्र ठाकुर ब्राह्मणवादी साहित्यिक राजनीतिकेँ चुनौती दैत एकटा समावेशी आन्दोलन चलाओने छथि जाहिमे जाति, वर्ग, लिङ्ग — सभ सीमाकेँ पार कऽ रचनाकारसभकेँ एकमञ्चपर आनल गेल अछि। एहि संकलनमे जगदीश प्रसाद मण्डल, उमेश पासवान, राजदेव मण्डल, बेचन ठाकुर, उमेश मण्डलक गद्य-रचना आ शिवकुमार झा 'टिल्लू', योगेन्द्र पाठक 'वियोगी', आशीष अनचिन्हारक काव्य-रचना संकलनक मुकुट-रत्न थिक।

मैथिली साहित्यक इतिहासमे ई संकलन एकटा आधारभूत दस्तावेजक रूपमे स्मरणीय रहत।

समीक्षा-तिथि: मई २०२६

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह सदेह-१६: एकटा समग्र साहित्यिक समीक्षा — सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर

अध्याय 34 · विदेह सदेह-१७ — समानान्तर साहित्यिक समीक्षा

सारांश (विदेह पेटार अंक १६९-१९०, ISSN 2229-547X) गद्य-खण्ड: समीक्षा १. गजेन्द्र ठाकुर — अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकु

(संपादकीय, पृ. २-२०) विदेह-सदेह-१७क संपादकीयमे गजेन्द्र ठाकुर अरविन्द ठाकुरकेँ मैथिली साहित्यक 'विरोही स्वर' कहैत हुनकर तीनू

कृतिक मार्मिक विश्लेषण प्रस्तुत करैत छथि। ओ अरविन्द ठाकुरक लघुकथा संग्रह 'अन्हारक विरोधमे'क आरम्भमे राखल फ्रेंच लेखक ज़ाँ

ज़ेने [Jean Genet] आ रूसी लेखक अन्तोन चेखव [Anton Chekhov] क उद्धरणसँ शुरू करैत छथि। ज़ाँ ज़ेने—जे एकटा वेश्याक

पुत्र रहथि, बाल्यकालमे एकटा काष्ठकार परिवार द्वारा गोद लेल गेल—समलैंगिक सम्बन्ध, अपराधी वर्ग आ समाजक बहिष्कृत लोकक कथा

लिखलन्हि।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · कथा · लघुकथा · बाल-साहित्य · समाज-समीक्षा

(विदेह पेटार अंक १६९-१९०, ISSN 2229-547X)

गद्य-खण्ड: समीक्षा

१. गजेन्द्र ठाकुर — अन्हारक विरोध मे: अरविन्द ठाकुर (संपादकीय, पृ. २-२०)

विदेह-सदेह-१७क संपादकीयमे गजेन्द्र ठाकुर अरविन्द ठाकुरकेँ मैथिली साहित्यक 'विरोही स्वर' कहैत हुनकर तीनू कृतिक मार्मिक विश्लेषण प्रस्तुत करैत छथि। ओ अरविन्द ठाकुरक लघुकथा संग्रह 'अन्हारक विरोधमे'क आरम्भमे राखल फ्रेंच लेखक ज़ाँ ज़ेने [Jean Genet] आ रूसी लेखक अन्तोन चेखव [Anton Chekhov] क उद्धरणसँ शुरू करैत छथि।

ज़ाँ ज़ेने—जे एकटा वेश्याक पुत्र रहथि, बाल्यकालमे एकटा काष्ठकार परिवार द्वारा गोद लेल गेल—समलैंगिक सम्बन्ध, अपराधी वर्ग आ समाजक बहिष्कृत लोकक कथा लिखलन्हि। हुनकर रचनाकेँ ज़ाँ पॉल सार्त्र अस्तित्ववादी दृष्टिसँ आ जाक देरिदा विखण्डनात्मक विधिसँ परखलन्हि। चेखवक उद्धरणमे लेखकीय स्वतन्त्रताक आग्रह अछि—ने रूढ़िवादी, ने उदारवादी, बस स्वतन्त्र लेखक। गजेन्द्र ठाकुर एहि दुनू विरोधी मान्यताकेँ अरविन्द ठाकुरक लेखनमे परिलक्षित देखाबैत छथि—अन्हारक विरोध ओहि अतिशय घृणामे जे प्रेमक दोसर रूप थिक।

नवय-न्याय-शास्त्रीय दृष्टिसँ देखल जाय तँ एहि संपादकीयमे व्याप्तिग्रह (vyāpti-graha) क स्पष्ट संरचना देखाइत अछि: अरविन्द ठाकुरक सम्पूर्ण लेखन-कर्म 'अन्हारक विरोध' क हेतु व्याप्त (pervasive commitment) अछि। गाँगेशोपाध्यायक अनुमान-पद्धतिमे जे साध्य-हेतु-व्याप्ति अछि, तेकर साहित्यिक अनुरूप थिक यैह रचनाकारक प्रतिबद्धता।

२. ओम प्रकाश झा — काशीकान्त मिश्र 'मधुप' आ मैथिली गजल, बहुरूपिया रचनामे (पृ. २१-२९)

ओम प्रकाश झाक आलेख मैथिली गजल-परम्पराक इतिहासमे मधुपजीक स्थानकेँ निर्धारित करैत अछि। ओ अरविन्द ठाकुरक 'बहुरूपिया प्रदेशमे' गजल-संग्रहकेँ मधुपजीक गजल-परम्परासँ जोड़ैत, मैथिली गजलक विकासक्रमकेँ रेखांकित करैत छथि। झाजी स्पष्ट करैत छथि जे मधुपजी मैथिलीमे गजलकेँ लोकप्रिय बनेबाक श्रेय प्राप्त करैत छथि। अरविन्द ठाकुरक 'आजाद गजल' एकटा नव प्रयोग थिक जाहिमे व्याकरणिक नियमसँ स्वतन्त्रता लेल गेल अछि।

एहि आलेखमे धवनि-सिद्धान्तक (आनन्दवर्धनक ध्वन्यालोक) अनुप्रयोग स्पष्ट देखाइत अछि। गजलक शेरमे जे व्यंजना अछि—वक्रोक्ति (कुन्तकक अर्थमे) जे सीधा कथनसँ नहि कहल जा सकत, से तिर्यक् भाषामे कहल जाइत अछि—से मधुप आ अरविन्दजी दुनूक गजलमे दृष्टिगोचर होइत अछि।

३. आशीष चमन — अन्हारक विरोध मे अरविन्द ठाकुर (पृ. ३०-४१)

आशीष चमनक विश्लेषण अरविन्द ठाकुरक किसान-जीवन, पत्रकारिता आ साहित्यिक प्रतिबद्धताकेँ एकहि सूत्रमे पिरोबैत अछि। ओ अरविन्द ठाकुरकेँ ओहि कोटिक लेखकमे राखैत छथि जे अपन समाज-जीवनसँ कट्टल नहि रहैत, बल्कि ओकर अंग बनल रहैत साहित्य-सर्जना करैत अछि।

चमनजी विदेह समानान्तर साहित्य आन्दोलनक ओहि मूल धारणाकेँ पुष्ट करैत छथि जे संस्थाबद्ध पुरस्कार-व्यवस्थाक बाहर, लोकक बीचमे लेखकक असल कद निर्मित होइत अछि। अरविन्दजीक 'मिथिला आवाज' पत्रिकाक सम्पादकीय दायित्व आ पत्रकारीय साहस—ई सभ मिलाकऽ हुनका एकटा सम्पूर्ण प्रतिरोधी व्यक्तित्व प्रदान करैत अछि।

४. डा. योगानन्द झा — अन्हारक विरोधमे: एक दृष्टि (पृ. ४२-५१)

डा. योगानन्द झाक आलेख 'अन्हारक विरोधमे' संग्रहक दसो कथाक क्रमशः विश्लेषण करैत अछि। संग्रहक कथाशीर्षक थिक: 'खिस्सा सियार यार', 'पियासल पानि', 'अन्हारक विरोध मे', 'ढाँचा-१९९२', 'मूस', 'प्रजातंत्र परिकथा', 'अब गिरगिट गाबा', 'अय्यासी', 'बैकबा-फोड़बा' आ 'विष-पान'।

'पियासल पानि' कथाक विश्लेषण करैत ओ देखाबैत छथि जे नारायणपुरवाली नायिकाक कामवासनाक अतृप्ति, ओकर क्लीव पति, आ समाजक दोहरी नैतिकता—पुरुष-प्रधान समाजमे नारी-शोषणक एकटा बहुआयामी चित्र प्रस्तुत करैत अछि। झाजी रस-सिद्धान्तक दृष्टिसँ इहो कहैत छथि जे अरविन्दजीक कथासभमे करुण रसक अत्यन्त मार्मिक अभिव्यक्ति अछि।

डा. झाक भाषा-शैली शास्त्रीय पद्धति पर आधारित अछि आ ओ भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति सौन्दर्यशास्त्रक कसौटीपर अरविन्दजीक कथाकेँ परखैत छथि। हुनकर समीक्षामे गाँगेश-परम्पराक संशय-निवृत्ति (apperception of doubt)क मानदण्डकेँ साहित्यिक रूपमे लागू कयल गेल अछि—कथाकार जखन पाठककेँ किसी पात्रक मनोस्थितिमे सन्देह उत्पन्न करैत आ तखन ओकर निवृत्ति करैत अछि, से उत्कृष्ट कथा-कौशल थिक।

५. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' — अरविन्दजीक आजाद गजल (पृ. ५२-५५)

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' अरविन्द ठाकुरक 'आजाद गजल'क स्वरूप आ उद्देश्यकेँ विवेचित करैत छथि। हुनकर मत थिक जे बहरहीन गजल एकटा साहसिक प्रयोग थिक। विषय-वस्तु आ कहन-शैलीपर जोर—व्याकरण-बन्धनसँ मुक्ति—एकटा सोद्देश्य निर्णय थिक, न कि कौशलक अभाव। ओ मैथिली गजलक मिजाजकेँ हिन्दी उर्दू गजलसँ भिन्न मानैत, अरविन्दजीक प्रयोगकेँ मैथिलीक अपन स्वभावक अनुरूप ठहराबैत छथि।

६. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी' — चारि आलेख (पृ. ५६-६५)

योगेन्द्र पाठक 'वियोगी' एहि खण्डमे चारिटा महत्त्वपूर्ण आलेख प्रस्तुत करैत छथि: (क) 'अन्हारक रखवार'—अरविन्दजीक प्रतिरोधी व्यक्तित्वपर; (ख) 'एकैसम शताब्दीमे घसल अठन्नीक प्रासंगिकता'—मधुपजीक प्रसिद्ध रचनाक समकालीन प्रासंगिकतापर; (ग) 'जमाना जमानाक स्टाइल'; आ (घ) 'उचित जगह'।

'वियोगी'जीक लेखनमे व्यंग्य आ सामाजिक आलोचना एकसंग चलैत अछि। ओ आधुनिक मैथिली समाजमे पुरान मूल्यक क्षरणकेँ विविध कोणसँ देखाबैत छथि। 'घसल अठन्नी'क प्रासंगिकतापर विचार करैत ओ मधुपजीकेँ एकटा कालातीत मानवतावादी दृष्टिकोणक प्रतिनिधि मानैत छथि।

७. चन्द्रमोहन झा पड़वा — अरविन्द ठाकुर आ मिथिला आवाज (पृ. ६६-६८)

चन्द्रमोहन झा पड़वा—जे 'मिथिला आवाज' दैनिकक मालिक रहथि—अरविन्द ठाकुरसँ सम्पादकक रूपमे अपन साझेदारीक संस्मरण प्रस्तुत करैत छथि। २०१२मे अजित आजादक सुझावपर अरविन्दजी प्रभारी सम्पादकक रूपमे जुड़लाह। ई आलेख साहित्यकार आ पत्रकारिताक मध्य सम्बन्धकेँ जीवन्त रूपमे सामने आनैत अछि।

८. अरविन्द मिश्र 'नीरज' — अरविन्द ठाकुर: व्यक्तित्व आ कृतित्व (पृ. ६९-७५)

अरविन्द मिश्र 'नीरज' अरविन्द ठाकुरक समग्र साहित्यिक व्यक्तित्वकेँ एकटा व्यापक दृष्टिसँ विश्लेषित करैत छथि। ओ हुनकर कविता-संग्रह 'परती टूटि रहल अछि'केँ हिन्दीमे अनूदित करेबाक प्रसंग उठाबैत, दुनू भाषाक पाठकवर्गमे अरविन्दजीक पैठकेँ रेखांकित करैत छथि। 'नीरज'जी मानैत छथि जे एकटा कवि जँ दू भाषाक साहित्यिक जगतमे अपन उपस्थिति दर्ज करैत अछि, तँ ओकर रचनाशक्ति व्यापक अवश्य थिक।

९. अरविन्द श्रीवास्तव — सामन्ती सभहँक विरुद्ध तैयार कवि (पृ. ७६-७८)

अरविन्द श्रीवास्तव अरविन्द ठाकुरकेँ सामन्ती मानसिकताक विरुद्ध एकटा सजग कवि-कथाकारक रूपमे प्रस्तुत करैत छथि। हुनकर मतमे अरविन्दजीक लेखनमे वर्गीय चेतना (class consciousness) सबसँ प्रखर रूपमे अभिव्यक्त होइत अछि। किसान-मजदूरक जीवन-संघर्षकेँ साहित्यक केन्द्रमे लयनाइ—इएह हुनकर विरोधी-कवि होयबाक प्रमाण थिक।

१०. परमानन्द प्रभाकर — स्खलनक प्रतिरोधमे (पृ. ७९-८४)

परमानन्द प्रभाकर अन्हारक विरोधमे संग्रहकेँ 'स्खलनक प्रतिरोध'क दस्तावेज मानैत छथि। ओ कहैत छथि जे एकैसम शताब्दीमे मूल्यों आ नैतिकताक जे क्षरण भेल अछि, ओकर विरुद्ध साहित्यिक प्रतिरोधक जरूरी आवाज थिक अरविन्दजीक लेखन। नवय-न्यायक शब्दमे कहू तँ हेत्वाभास (fallacy) सँ भरल समाजमे वैध अनुमान (valid inference) क रक्षा करनिहार कवि।

११. राम चैतन्य धीरज — बहुरूपिया प्रदेश मे: एक दृष्टि (पृ. ८५-९१)

राम चैतन्य धीरज अरविन्द ठाकुरक गजल-संग्रह 'बहुरूपिया प्रदेशमे'क विस्तृत समीक्षा प्रस्तुत करैत छथि। ओ मानैत छथि जे गजल-परम्परामे बहर-व्याकरणक बन्धन आवश्यक थिक, किन्तु विचार-प्रधान गजलमे जँ विषय-वस्तु सशक्त हो तँ आजाद गजलक प्रयोग स्वीकार्य थिक। 'बहुरूपिया प्रदेशमे' गमैया शब्द, किसान-जीवन आ राजनीतिक व्यंग्यसँ भरल थिक—यैह एकर शक्ति थिक।

१२. डॉ. शम्भु कुमार सिंह — घसल अठन्नी: एकटा विमर्श (पृ. ९२-९७)

डॉ. शम्भु कुमार सिंह मधुपजीक प्रसिद्ध रचना 'घसल अठन्नी'क गहन विश्लेषण करैत छथि। 'घसल अठन्नी' मैथिलीमे एकटा प्रतीकात्मक रचना थिक जे अप्रचलित मूल्यों आ व्यक्तित्वकेँ रूपायित करैत अछि। डॉ. सिंह एकर भाषिक सौन्दर्य, रूपक-विधान आ सामाजिक व्यंग्यकेँ कुन्तकक वक्रोक्ति-सिद्धान्तक परिप्रेक्ष्यमे विश्लेषित करैत छथि।

१३. विनीत उत्पल — अनुवाद-कर्म आ मूल लेखन (पृ. ९८-५४३)

विनीत उत्पलक योगदान एहि संकलनमे सर्वाधिक विस्तृत (पृ. ९८-५४३) अछि। हुनकर समावेश तीन स्तरपर थिक:

(क) 'मैथिलीक विरोही कवि: काशीकान्त मिश्र मधुप'—मधुपजीक व्यक्तित्व आ साहित्यपर मौलिक आलेख।

(ख) 'महर्षा ऋष्यश्रृङ्ग'—हरिशंकर श्रीवास्तव 'शलभ'क हिन्दी मूलसँ मैथिली अनुवाद। एहि आलेखमे ऋष्यश्रृंगक पौराणिक कथाक ऐतिहासिक-पुरातात्विक सन्दर्भमे विश्लेषण कयल गेल अछि। रामायण-बालकाण्ड, श्रीमद्भागवत, आनन्दगिरि-कृत 'शंकर-विजय' आदि ग्रन्थसँ उद्धरण दैत, विभाण्डक-ऋष्यश्रृंगक सम्बन्धकेँ स्पष्ट कयल गेल अछि।

(ग) 'मोहनदास'—उदय प्रकाशक हिन्दी दीर्घकथाक मैथिली अनुवाद।

(घ) 'रेहनपर रग्घू'—काशीनाथ सिंहक हिन्दी रचनाक मैथिली अनुवाद।

विनीत उत्पलक अनुवाद-कौशल मैथिलीक अपन स्वभाव आ बोध-क्षमताकेँ सुरक्षित रखैत अछि। ओ हिन्दी मूलसँ शाब्दिक अनुवाद नहि करैत, भावानुवाद करैत छथि जाहिसँ मैथिली पाठक हेतु रचना स्वाभाविक प्रतीत होइत अछि।

१४. केदार कानन — मधुपक रचना-व्यक्तित्व (पृ. ५४४-५४८)

केदार कानन मधुपजीक समग्र रचना-व्यक्तित्वकेँ एकटा सन्तुलित दृष्टिसँ विवेचित करैत छथि। ओ हुनका एकटा ऐहिक कवि मानैत छथि जे धर्म आ अध्यात्मक आडम्बरसँ परे, मानवीय संवेदनाकेँ साहित्यक केन्द्रमे राखैत छथि। मधुपजीक गीत-गजल-दोहामे जे लयात्मकता अछि, ओ मैथिलीक अपन संगीतात्मक परम्परासँ जुड़ल अछि।

१५. कर्नल (डाक्टर) कीर्तिनाथ झा — मधुपजी हमरा किएक मन पड़ैत छथि (पृ. ५४९-५५०)

कर्नल (डाक्टर) कीर्तिनाथ झाक स्मरण-लेख एकटा व्यक्तिगत साक्ष्य-आलेख थिक जे मधुपजीक व्यक्तित्वक ओहि पहलूकेँ सामने अनैत अछि जे पाठकीय जगतसँ अनभिज्ञ रहैत अछि। हुनकर मनुष्य-रूप—स्नेहशील, सरल, आ निरभिमान—कर्नल झाक लेखनीमे अत्यन्त आत्मीय रूपमे चित्रित भेल अछि।

१६. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' — मधुपक गीत अमर, मिथिलामे (पृ. ५५१-५५७)

'अनिल'जी मधुपक गीत-परम्पराक अमरत्वकेँ तर्क-सहित स्थापित करैत छथि। ओ कहैत छथि जे मधुपक गीत मैथिलीक लोक-स्मृतिमे एहन रूपमे समा गेल अछि जे ओ गीत-कर्ता आ लोक-कण्ठ—दुनूक धरोहर बनि गेल अछि। 'मिथिलामे' शीर्षक ओहि भौगोलिक-सांस्कृतिक अस्मिताकेँ रेखांकित करैत अछि जाहिमे मधुपजीक गीत-जड़ि गहिर उतरल अछि।

१७. डॉ. अरुण कुमार सिंह — मधुपजीक 'घसल अठन्नी'मे दलित चेतना (पृ. ५५८-५६३)

डॉ. अरुण कुमार सिंहक आलेख मधुप-अध्ययनमे एकटा नव दृष्टि योग करैत अछि। ओ 'घसल अठन्नी'मे दलित चेतनाक उपस्थिति देखाबैत छथि—ई एकटा महत्त्वपूर्ण पुनर्पाठ (re-reading) थिक। पाश्चात्य आलोचना-पद्धतिमे जाहिकेँ 'subaltern voice' कहल जाइत अछि, ओ मधुपजीक ओहि रचनामे ध्वनित होइत अछि जे प्रायः 'व्यंग्य-काव्य' कहि बिसरा देल जाइत अछि।

एहि दृष्टिकोणसँ 'घसल अठन्नी' केवल व्यंग्य नहि, बल्कि एकटा सामाजिक-राजनीतिक टिप्पणी बनि जाइत अछि जाहिमे अप्रचलित आ उपेक्षित मानव-मूल्यक प्रतीक अछि—ठीक ओहि तरहें जेना दलित-जीवन मुख्यधाराक समाजमे अप्रासंगिक घोषित कयल जाइत अछि।

१८. आशीष अञ्चिन्हार — निबन्ध-समूह (पृ. ५६४-५८७)

आशीष अञ्चिन्हार एहि खण्डमे चारिटा विविध विषयक आलेख प्रस्तुत करैत छथि:

(क) 'नियंत्रित पूँजी आ मधुपजीक मार्क्सवाद'—एहिमे ओ मधुपजीक आर्थिक-राजनीतिक दृष्टिकोणकेँ विश्लेषित करैत छथि। मधुप एकटा मानवतावादी मार्क्सवादी छला—ओ आर्थिक विषमताक विरुद्ध, किन्तु हिंसात्मक क्रान्तिक समर्थक नहि।

(ख) 'मेक इन मिथिला'—मिथिलाक सांस्कृतिक-आर्थिक पुनर्निर्माणक विचार।

(ग) 'फर्क'—साहित्यिक-सांस्कृतिक भेदक विचार।

(घ) 'लिटरेचर फेस्टिवल—प्र.म.'—साहित्य-उत्सवक व्यावसायिकीकरणपर व्यंग्यात्मक टिप्पणी।

अञ्चिन्हारजी आशीष 'अञ्चिन्हार फॉर्मूला' (जे घमण्डरहित गजल-काव्यशास्त्रक लेल विदेह साहित्य-जगतमे चर्चित अछि) क रचयिता थिक। हुनकर गद्य-लेखनमे तेज बुद्धि आ विडम्बना-बोध एकसंग काज करैत अछि।

१९. डॉ. अजीत मिश्र — अर्पण-तर्पण-समर्पण (पृ. ५८८-५८९)

डॉ. अजीत मिश्रक लघु आलेख मधुपजीक प्रति एकटा श्रद्धांजलि-स्वरूप थिक। 'अर्पण-तर्पण-समर्पण' शीर्षकमे ही मधुपजीक प्रति लेखकक त्रिस्तरीय श्रद्धाभाव व्यक्त होइत अछि—पाठकीय अर्पण, पूर्वजक तर्पण आ साहित्यिक समर्पण।

२०. फागुलाल साहु — कथा-संग्रह (पृ. ५९०-६०८)

फागुलाल साहु एहि खण्डमे पाँचटा कथा प्रस्तुत करैत छथि: 'मानव जीवनमे नारी-स्वरूपक गरिमा', 'माइक डाँट', 'मदानी नारी', 'आत्मनिर्भरता लेल कोनो उमेर नै' आ 'चतुर बालक'।

साहुजीक कथासभमे आब्दुल-रज्जाक (हिन्दी) सँ प्रभावित ग्रामीण-जीवनक चित्रण अछि। नारी-प्रश्न आ दलित-जागृति हुनकर कथाक केन्द्रीय विषय थिक। 'मदानी नारी' एकटा सशक्त स्त्री-पात्रकेँ केन्द्रमे राखैत समाजक पितृसत्तात्मक सोचक विरुद्ध एकटा सूक्ष्म प्रतिरोध रचैत अछि। रस-दृष्टिसँ कहू तँ हुनकर

कथासभमे वात्सल्य आ करुण रसक सुन्दर समन्वय अछि।

२१. राम विलास साहु — गद्य-संग्रह (पृ. ६०९-६३७)

राम विलास साहु एकसंग ग्यारहटा रचना प्रस्तुत करैत छथि: 'स्कूलक खिचड़ी', 'इमानदारीक पाठ', 'बौआ बाजल', 'घूसहा घर', 'जातिक भोज', 'ई छी हमर मजबूरी', 'अबिसर्वास', 'गंगा नहाएब', 'डोमक आगि', 'स्वर्गक सुख' आ संकलित मैथिली कहबी-संग्रह।

साहुजी बहुमुखी लेखक छथि। हुनकर व्यंग्य-कथासभमे भ्रष्टाचार, जातिभेद आ धार्मिक पाखण्डकेँ तीक्ष्ण दृष्टिसँ चित्रित कयल गेल अछि। 'डोमक आगि' दलित-जीवनक एकटा मर्मस्पर्शी चित्र थिक। मैथिली कहबी-संकलन लोक-साहित्यक दिशामे एकटा महत्त्वपूर्ण योगदान थिक।

२२. ललन कुमार कामत — कथा-संग्रह (पृ. ६३८-६७३)

ललन कुमार कामत एहि खण्डमे छहटा कथा देल छथि: 'भगवाने भरोसे', 'दहेजक मार', 'भोला', 'अप्पन माए-बाप', 'दस हजरिया नोट (लोककथाक पुनर्लेखन)' आ 'लगन'।

कामतजीक कथाशिल्पमे लोककथाक पुनर्लेखन (retelling) एकटा महत्त्वपूर्ण आयाम थिक। 'दस हजरिया नोट' एकटा लोककथाकेँ समकालीन सन्दर्भमे नव रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। 'दहेजक मार' दहेज-प्रथाक विरुद्ध एकटा मार्मिक प्रतिरोध थिक। कक्ष्मीमय-काव्यशास्त्रक शब्दमे—हुनकर कथासभमे 'औचित्य' (appropriateness) क सिद्धान्त सटीक रूपसँ पालित होइत अछि।

२३. डॉ. श्रीमोहन झा — मिथिलाक इतिहास (पृ. ६७४-६८५)

डॉ. श्रीमोहन झाक आलेख मिथिलाक ऐतिहासिक-सांस्कृतिक अस्मिताकेँ विद्वत्तापूर्ण ढंगसँ प्रस्तुत करैत अछि। मिथिलाक राजनीतिक, दार्शनिक आ साहित्यिक इतिहास—एहि तीनू धाराकेँ एकत्रित करैत, ओ मैथिली भाषा-साहित्यक गौरवशाली परम्पराकेँ स्थापित करैत छथि। मण्डन मिश्र आ शंकराचार्यक शास्त्रार्थ, नव्य-न्यायक विकास आदिक प्रसंग एहि आलेखमे प्रामाणिक रूपमे चर्चित अछि।

२४. डा. शिव कुमार प्रसाद — बनमानुष, जमीला (पृ. ६८६-७०४)

डा. शिव कुमार प्रसाद दूटा कथा प्रस्तुत करैत छथि—'बनमानुष' आ 'जमीला'। 'जमीला' एकटा मुस्लिम स्त्री-पात्रकेँ केन्द्रमे राखि, साम्प्रदायिक-पारिवारिक जटिलताकेँ मार्मिक रूपमे चित्रित करैत अछि। डा. प्रसादक कथाशैलीमे मनोविश्लेषणात्मक गहराई अछि जे चरित्रचित्रणकेँ जीवन्त बनाबैत अछि।

२५. प्रणव झा — अम्बर, तेसर प्रण, अपन-अपन धर्म (संस्मरण) (पृ. ७०५-७१५)

प्रणव झाक संस्मरणात्मक लेखन हुनकर गद्यकारीय परिपक्वताक प्रमाण दैत अछि। 'अम्बर' आ 'तेसर प्रण'—दुनू आत्म-अन्वेषणक रचना थिक। 'अपन-अपन धर्म' संस्मरण हुनकर वैयक्तिक अनुभव आ सामाजिक मूल्यक बीचक अन्तर्विरोधकेँ सामने आनैत अछि।

२६. नन्द विलास राय — दिव्या, सभसँ बड़का भी.आइ.पी. गेस्ट (पृ. ७१६-७३७)

नन्द विलास रायक दूटा कथा—'दिव्या' आ 'सभसँ बड़का भी.आइ.पी. गेस्ट'—समकालीन सामाजिक यथार्थकेँ व्यंग्यात्मक ढंगसँ प्रस्तुत करैत अछि। 'भी.आइ.पी. गेस्ट' एकटा व्यंग्य-कथा थिक जे आधुनिक समाजमे VIP-संस्कृतिक विडम्बनाकेँ उजागर करैत अछि। रायजीक भाषा-शैलीमे ठेठ मैथिलीक सजीवता आ व्यंग्यक तीक्ष्णता एकसंग विद्यमान अछि।

२७. अब्दुर रज्जाक — गामक चौबटिया पर, रौदी परल अछि (पृ. ७३८-७४१)

अब्दुर रज्जाकक दूटा कविता-समान गद्य-रचना—'गामक चौबटिया पर' आ 'रौदी परल अछि'—मिथिलाक ग्रामीण जीवनमे सूखाक सामाजिक प्रभावकेँ मार्मिक रूपमे चित्रित करैत अछि। रज्जाकजी मिथिलाक किसान-जीवनकेँ आन्तरिक दृष्टिसँ देखनिहार लेखक थिक।

२८. विन्देश्वर ठाकुर — बेलहाबालीके जितिया, आसे आसमे जिनगी (पृ. ७४२-७४४)

विन्देश्वर ठाकुरक दूटा लघु-रचनामे मैथिली लोक-पर्व जितिया आ ग्रामीण जीवन-दर्शनक अत्यन्त स्वाभाविक चित्रण अछि। 'बेलहाबाली' एकटा भौगोलिक-सांस्कृतिक पहचान थिक। 'आसे आसमे जिनगी' जीवन-दर्शनपर एकटा लघु टिप्पणी थिक।

२९. राजदेव मण्डल — डरक नदी, पंचैती (लघु पटकथा), लाज (एकांकी) (पृ. ७४५-७८२)

राजदेव मण्डलक योगदान बहुविध थिक—कथा, पटकथा आ एकांकी। 'डरक नदी' एकटा कथा थिक जे ग्रामीण जीवनक आतंक आ भय-मनोविज्ञानकेँ सामने आनैत अछि। 'पंचैती' एकटा लघु पटकथा थिक जे गाँवक न्याय-व्यवस्थाक विडम्बनाकेँ प्रस्तुत करैत अछि। 'लाज' एकटा एकांकी थिक जे मैथिली रंगमंच-परम्पराकेँ समृद्ध करैत अछि।

३०. डॉ. शशिधर कुमार 'विदेह' — गामक शकल सूरत (पोथी समीक्षा) (पृ. ७८३-७८९)

डॉ. शशिधर कुमार 'विदेह' एकटा पुस्तक-समीक्षा प्रस्तुत करैत छथि। 'गामक शकल सूरत' शीर्षकमे ग्रामीण मैथिल-जीवनक परिवर्तनकेँ समझबाक कोशिश अछि। हुनकर समीक्षा-पद्धतिमे ग्रन्थक सामाजिक प्रासंगिकतापर जोर देल जाइत अछि।

३१. राजदेव मण्डल 'रमण' — दियादी डाह (पृ. ७९०-७९६)

'रमण'जीक 'दियादी डाह' मैथिल परिवारमे भाइ-भाइक बीचक सम्पत्ति-विवाद आ ईर्ष्यापर केन्द्रित एकटा कथा थिक। 'दियादी' एकटा विशेष मैथिली शब्द थिक जे देवर-जेठ वा भाइ-भाइक बीचक पारिवारिक सम्बन्धकेँ बोधित करैत अछि। एहि कथामे मैथिल पारिवारिक जीवनक ओ जटिल मनोविज्ञान प्रस्तुत भेल अछि जे साहित्यमे विरल रूपसँ आबैत अछि।

३२. राजेन्द्र कुमार प्रधान — दूटा आलोचना-लेख (पृ. ७९७-८०७)

राजेन्द्र कुमार प्रधान दूटा महत्त्वपूर्ण आलोचना-लेख प्रस्तुत करैत छथि: (क) 'जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासमे समकालीन चेतना'; आ (ख) '२१म शताब्दीक पहिल दशकक मैथिली उपन्यासमे राजनीतिक चेतना'।

प्रधानजीक आलोचना-दृष्टि समकालीन मैथिली उपन्यासकेँ राजनीतिक चेतनाक परिप्रेक्ष्यमे विश्लेषित करैत अछि। जगदीश प्रसाद मण्डल मैथिलीमे दलित-साहित्यक एकटा प्रमुख उपन्यासकार थिक। हुनकर उपन्यासमे समकालीन सामाजिक-राजनीतिक यथार्थक अत्यन्त प्रामाणिक चित्रण अछि।

३३. पंकज कुमार प्रभाकर — समकालीन चेतनाक सम्वाहक: अर्द्धांगिनी (पृ. ८०८-८१३)

पंकज कुमार प्रभाकर 'अर्द्धांगिनी' उपन्यासपर एकटा केन्द्रित समीक्षा प्रस्तुत करैत छथि। ओ ऐकर नारीवादी दृष्टिकोण, पारिवारिक सम्बन्ध-विन्यास आ समकालीन मैथिली समाजक अन्तर्विरोधकेँ विश्लेषित करैत छथि।

३४. पल्लवी — चोरविद्या, फ्रेन्ड (पृ. ८१४-८१५)

पल्लवी एहि संकलनमे दूटा अत्यन्त लघु कथा प्रस्तुत करैत छथि—'चोरविद्या' आ 'फ्रेन्ड'। ई लेखिका विदेहक युवा-लेखिका परम्पराक प्रतिनिधि थिक। 'फ्रेन्ड' आधुनिक मित्रताक विडम्बनापर एकटा चुटीली कथा थिक।

३५. पूनम मण्डल — रिपोर्ट: सगर राति दीप जरय (पृ. ८१६-८२५)

पूनम मण्डलक रिपोर्ताज 'सगर राति दीप जरय' कार्यक्रमक एकटा विस्तृत आ प्रामाणिक दस्तावेज थिक। 'सगर राति दीप जरय' मैथिली कविता-पाठक एकटा महत्त्वपूर्ण आन्दोलन थिक जे मैथिली साहित्यकारकेँ एकत्रित करैत, लोकप्रिय साहित्यिक आयोजनक रूपमे विकसित भेल अछि। एहि रिपोर्टमे कार्यक्रमक साहित्यिक-सांस्कृतिक महत्त्वकेँ दर्ज कयल गेल अछि।

३६. मुन्नाजी — तीनटा रचना (पृ. ८२६-८५८)

मुन्नाजी एहि खण्डमे तीनटा महत्त्वपूर्ण रचना देल छथि:

(क) 'जन-चेतनाक स्वर-वाहक मधुप'—मधुपजीक व्यक्तित्व आ जन-साहित्यक उनकर भूमिकापर।

(ख) 'परती टूटि गेलै'—अरविन्द ठाकुरक 'परती टूटि रहल अछि' कविता-संग्रहक सन्दर्भमे।

(ग) 'अरविन्द ठाकुरजी संग साक्षात्कार ऑन-लाइन'—एकटा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दस्तावेज जाहिमे अरविन्दजी मैथिली गजलक वर्तमान दिशा, हुनकर 'आजाद गजल' क अवधारणा, आ दुष्यन्त कुमार-अदम गोण्डवी परम्परासँ हुनकर सम्बन्धपर विस्तारसँ बात करैत छथि।

साक्षात्कारमे अरविन्दजी स्पष्ट करैत छथि जे मैथिली गजलक मिजाज हिन्दी-उर्दू गजलसँ भिन्न अछि, आ व्याकरण-बन्धन कहियो-कहियो विचार-अभिव्यक्तिमे बाधक बनि जाइत अछि। महर्षि अरविन्दक कथन उद्धृत करैत ओ कहैत छथि—'मात्र ब्रेन-माइन्डसँ जुनि लिखू, भावना आ विजनक आत्माक

भीतर पहुँचिकऽ लिखब कविता लिखबाक सही ढंग अछि।'

३७. अरविन्द ठाकुरजीक नामसँ किछु पत्र (पृ. ८५९-८६१)

एहि खण्डमे चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', नारायण जी आ प्रमोद कुमार झाक पत्र संकलित अछि जे सभ अरविन्दजीकेँ लिखल गेल अछि। एहि पत्रसँ अरविन्दजीक व्यापक साहित्यिक-सामाजिक सम्पर्क-जाल उजागर होइत अछि।

३८. शैलेन्द्र आनन्द — हाली-हाली बहथु कोसी (पृ. ८६२-८६७)

शैलेन्द्र आनन्दक 'हाली-हाली बहथु कोसी' कोसी नदीपर एकटा भावपूर्ण लेखन थिक। कोसी मिथिलाक जीवन-नदी आ मृत्यु-नदी दुनू थिक। एकर बाढ़-प्रवाह, विनाश आ नव-जीवन—ई सभ मिथिलाक अस्मितासँ गहरे जुड़ल अछि। आनन्दजी एकर मार्मिक साहित्यिक चित्र उपस्थित करैत छथि।

३९. मिथिलेश कुमार राय — अरविन्द ठाकुर: अन्हारक विरोधी व्यक्तित्व (पृ. ८६८-८७०)

मिथिलेश कुमार राय अरविन्द ठाकुरक व्यक्तित्वक एकटा व्यक्तिगत-साहित्यिक आकलन प्रस्तुत करैत छथि। ओ हुनकर 'परती टूटि रहल अछि' कविता-संग्रहक हिन्दी अनुवाद (अजित आजाद द्वारा) क प्रसंगमे, दू भाषाक साहित्यिक जगतमे अरविन्दजीक उपस्थितिकेँ रेखांकित करैत छथि।

४०. अजित आजाद — अरविन्द ठाकुर: हमरामे अहाँ, अहाँमे हम (पृ. ८७१-८७७)

अजित आजाद—जे अरविन्दजीक 'परती टूटि रहल अछि' कविता-संग्रहक हिन्दी अनुवादक थिक—ओ एकटा अत्यन्त आत्मीय संस्मरण प्रस्तुत करैत छथि। 'हमरामे अहाँ, अहाँमे हम' शीर्षक एकटा गहरे साहित्यिक मैत्रीक अभिव्यक्ति थिक। आजादजी 'मिथिला आवाज' दैनिकक सूत्रधार थिक आ अरविन्दजीकेँ ओकर सम्पादन-दायित्व देबामे हुनकर भूमिका केन्द्रीय रहल।

४१. लक्ष्मण झा सागर — जेहने खोजलऽ हौ कुटुम्ब (पृ. ८७८-८८१)

लक्ष्मण झा सागरक 'जेहने खोजलऽ हौ कुटुम्ब' मैथिली लोकोक्तिकेँ शीर्षक बनाबैत एकटा सामाजिक-व्यंग्यात्मक कथा थिक। 'सागर'जी मैथिली साहित्यक एकटा वरिष्ठ कथाकार थिक जिनकर लेखनमे ग्रामीण मैथिल-जीवनक सूक्ष्म चित्रण अछि।

४२. रजनीश कुमार तिवारी 'मुन्ना' — अद्वितीय छथि हमर अरविन्द बाबा (पृ. ८८२-८९०)

रजनीश कुमार तिवारी 'मुन्ना'क आलेख अरविन्द ठाकुरक जीवन-दर्शनकेँ एकटा व्यक्तिगत साक्ष्यक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। 'अद्वितीय छथि हमर अरविन्द बाबा'—ई शीर्षक हुनकर अपन जीवन-दर्शन आ व्यक्तित्वकेँ एकटा श्रद्धापूर्ण किन्तु वस्तुनिष्ठ दृष्टिसँ प्रस्तुत करैत अछि।

एहि आलेखमे अरविन्दजीक राजनीतिक यात्राक भी चित्रण अछि—कोना ओ प्रतिष्ठान-विरोधी रहला, कोना सत्ता-परिवर्तनक बादो हुनकर चरित्र अपरिवर्तित रहल, आ कोना समय-समयपर लोकक लांछन-प्रशंसा सँ निर्लिप्त रहला। परमानन्द प्रभाकरक शब्दमे जाहि देवनारायण बाबूक चित्रण अछि (पृ. ९८४-९८५), ओ अरविन्दजीक ही अप्रत्यक्ष छवि थिक।

४३. अरविन्द ठाकुर — स्वयं-लेखन-खण्ड (पृ. ८९१-९८९)

संकलनक अन्तिम विस्तृत खण्ड (लगभग एक सौ पृष्ठ) स्वयं अरविन्द ठाकुरक गद्य-रचनाक लेल आरक्षित थिक। एहि खण्डमे निम्नलिखित रचना शामिल अछि:

(क) 'बुल्लियाँ की जाणां मैं कौन (अपनाकेँ खोजैत किछु अप्पन बात)'—एकटा आत्मान्वेषणी लेखन जाहिमे ओ अपन जीवन-यात्राक विविध पड़ावकेँ अत्यन्त ईमानदारी आ वाक्पटुतासँ प्रस्तुत करैत छथि।

(ख) 'बात निकलल, कुठाम तक पहुँचल—एकटा बहु-अर्थी निरर्थक चलभाष-वार्ता सुकान्त सोमजीक संग'—एकटा सुदीर्घ संवाद।

(ग) 'संस्मरण—बाबा सँ पहिल आ अन्तिम भेंट: बाबाक विराट स्मृति-पटल'—हुनकर पिताजी देवनारायण बाबूक संस्मरण जे अत्यन्त मर्मस्पर्शी अछि।

(घ) 'जीवकान्त: किछु स्मृति, किछु टिप्पणी'

(ङ) 'मिथिलाक संस्कृति: किछु अप्रिय बिन्दु'—एकटा साहसी सांस्कृतिक आलोचना।

(च) 'मिथिलामे सांस्कृतिक आन्दोलनक भविष्य'

(छ) 'लक्ष्मीनाथ गोसाँई: परम्परा, भाषा आ निर्गुण भाव'

(ज) 'एकटा खिच्चा सपनाक डिभिआएब (सन्दर्भ: हीरेन्द्र कुमार झाक कथा-संग्रह ट्रान्सफर्मर)'

(झ) 'किछु विहनि कथा (सत्ता-चरित, स्वयम्भू, दुर्गन्ध, यूटोपिया, आदान-प्रदान, अहिंसा)'

अरविन्दजीक आत्मकथात्मक लेखन असाधारण रूपसँ ईमानदार अछि। ओ अपन जीवनमे सुरापान, भाँगक सेवन, प्रेम-सम्बन्ध, राजनीतिक परिवर्तन, खेतीक प्रति अनुराग—सभटा अत्यन्त निर्भीकतासँ लिखैत छथि। हुनकर पिताजी देवनारायण बाबूक संस्मरणमे पुत्र-पिता सम्बन्धक एकटा अनोखा आयाम उद्घाटित होइत अछि—राजनीतिक जीवनमे रहैत एकटा सरल किसानक छवि।

पद्य-खण्ड: समीक्षा

४४. मधुप — किछु कविता, गजल, गीत आ दोहा (पृ. ९९१-१०२५)

पद्य-खण्डक आरम्भ काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क रचनासँ होइत अछि—ई स्वयंमे एकटा सम्मान-प्रदर्शन थिक। मधुपजीक कविता-गजल-गीत-दोहामे मैथिलीक छान्दसिक परम्परा आ लोकगीतक लय एकसंग विद्यमान अछि।

हुनकर गजलमे जे व्यंग्य अछि, ओ कुन्तकक वक्रोक्तिक उत्कृष्ट उदाहरण थिक। दोहामे कबीर-परम्पराक अनुगूँज सुनाइत अछि। गीतमे मिथिलाक भूगोल, प्रकृति आ लोक-जीवन—ओहि मैथिल-मातृमण्डलक अभिव्यक्ति अछि जाहिमे विद्यापतिक संगीत-धारा अद्यापि प्रवाहित अछि। भरत-मुनिक रस-सिद्धान्तक शब्दमे—मधुपजीक गीतमे श्रृंगार आ वीर रस तथा भक्ति-रस क सुन्दर समन्वय अछि।

४५. आशीष अञ्चिन्हार — बाल गजल, भक्ति गजल, किछु गजल (पृ. १०२६-१०३७)

आशीष अञ्चिन्हारक गजल-संग्रह विविधांगी थिक। बाल-गजल मैथिलीमे एकटा नव प्रयोग थिक। भक्ति-गजल सूफी परम्परासँ प्रेरित किन्तु मैथिल-मानसमे रूपान्तरित। हुनकर गजलमे बहर-व्याकरणक प्रति सजगता ('अञ्चिन्हार फॉर्मूला') आ विचार-प्रधानता दुनू एकसंग विद्यमान अछि।

४६. जगदानन्द झा 'मनु' — बाल गजल, गजल (पृ. १०३८-१०३९)

जगदानन्द झा 'मनु'क गजल मैथिली गजल-परम्पराक एकटा सुपरिचित नाम थिक। हुनकर बाल-गजलमे शिशु-मनोविज्ञानक सूक्ष्म बोध अछि।

४७. उमेश मण्डल — अछि मुदा सबहक एक, भारत हमर पहचान छी (पृ. १०४०-१०४३)

उमेश मण्डलक दूटा कविता—'अछि मुदा सबहक एक' आ 'भारत हमर पहचान छी'—राष्ट्रीय-सांस्कृतिक अस्मिताक प्रश्नकेँ मैथिली माध्यमसँ उठाबैत अछि। ओ मैथिली-अस्मिताकेँ व्यापक भारतीय पहचानक परिप्रेक्ष्यमे देखाबैत छथि।

४८. बिनीत कुमार ठाकुर — चारिटा कविता (पृ. १०४४-१०५०)

बिनीत कुमार ठाकुरक चारिटा कविता—'कवि बनाम नेता', 'पार लगाउ', 'कखन ई ठंडी जाय' आ 'अपनेमे किए लड़ै छी?'—समकालीन राजनीतिक-सामाजिक विषयकेँ सम्बोधित करैत अछि। 'कवि बनाम नेता' मे कलाकार आ राजनेताक बीचक मूल्यगत अन्तरकेँ स्पष्टतासँ रेखांकित कयल गेल अछि।

४९. गौरीशंकर साह — शर्विका (पृ. १०५१-१०५२)

गौरीशंकर साहक 'शर्विका' एकटा स्त्री-चरित्रक काव्यात्मक चित्रण थिक।

५०. डॉ. शशिधर कुमार 'विदेह' — विस्तृत कविता-संग्रह (पृ. १०५३-११०६)

डॉ. शशिधर कुमार 'विदेह' एहि संकलनमे लगभग चउवन पृष्ठकेँ ओकुपाइ करैत छथि। हुनकर कविता-संग्रहमे शामिल अछि: 'मैथिली वर्णमाला', 'भेटत मजूर कतऽ-मिथिलाकेर बच्चा', 'हम आ मैथिली', 'खैनी', 'लेखन कमजोर नहि जँ मैथिली लिखैत छी', 'समाज आ विरोधाभास', 'हे दैव! किछु तौँहि कहह', 'बनल मदेश मसान छै', 'उठाऊ लेखनी लीखू अहाँ', 'ओ अहाँ लिखू जे नहि लिखलहि', 'माघ', 'फागुनक पानि', 'ओ कहलहि', 'मैट्रिकक तैय्यारी', 'चन्दाक शर्मा', 'ककरा नीक लागए की', 'पूछू ओकरा सँ' आ 'नटवरलाल'।

'विदेह'जीक कविताकेँ 'भूमि-कविता' (poetry of the soil) कहल जा सकैत अछि। 'खैनी', 'डोमक आगि' जेहन कविताक प्रतीकात्मकता एकटा सूक्ष्म दलित-चेतनाकेँ व्यक्त करैत अछि। 'मैथिली वर्णमाला' भाषा-अस्मिताकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।

५१. विजयनाथ झा — तीनटा कविता (पृ. ११०७-१११०)

विजयनाथ झाक तीनटा कविता—'नव वर्षक एहि मधुर पहरमे', 'हमर नाम परिचय सादर सूरत हम' आ 'चेतना केर नव सृजनमे'—नव-वर्ष आ नव-चेतनाक आशावादी स्वरकेँ व्यक्त करैत अछि।

५२. रमेश — महा-विस्फोटक महा-प्रयोग (दीर्घ गद्य-कविता, पृ. ११११-११२२)

रमेशक 'महा-विस्फोटक महा-प्रयोग' एकटा दीर्घ गद्य-कविता थिक। ग्यारह पृष्ठक एहि रचनामे ब्रह्माण्डीय-वैज्ञानिक प्रतीकावली (Big Bang) केँ मैथिलीक दार्शनिक काव्यात्मकतामे रूपान्तरित कयल गेल अछि। ई मैथिलीमे विज्ञान-कविताक एकटा विरल उदाहरण थिक।

५३. सुकोसुत शिशिर — मोन विकल, पड़िकल जम (पृ. ११२३-११२६)

सुकोसुत शिशिरक दूटा कविता—'मोन विकल' आ 'पड़िकल जम'—मनोवैज्ञानिक अन्तर्द्वन्द्व आ सामाजिक दबावकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि।

५४. प्रणव झा — तीनटा कविता (पृ. ११२७-११३२)

प्रणव झाक तीनटा कविता—'हे मिथिलानी आब जागु अहूँ', 'अकाण्ड ताण्डव' आ 'बोर्ड परीक्षा (बाल कविता)'—विविध स्तरपर काज करैत अछि। 'हे मिथिलानी' स्त्री-जागृतिक आह्वान थिक; 'अकाण्ड ताण्डव' समकालीन राजनीतिक अव्यवस्थापर व्यंग्य; आ 'बोर्ड परीक्षा' बाल-मनोविज्ञानकेँ काव्यात्मक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि।

५५. राजदेव मण्डल 'रमण' — जुर्माना करैए... (पृ. ११३३-११३४)

'रमण'जीक 'जुर्माना करैए...' एकटा व्यंग्यात्मक-राजनीतिक कविता थिक जे वर्तमान व्यवस्थाक दण्ड-प्रणालीपर कटाक्ष करैत अछि।

५६. किशन कारीगर — गजल सन किछु (पृ. ११३५-११३६)

किशन कारीगरक 'गजल सन किछु' शीर्षकमे ही एकटा विनम्र स्वीकृति अछि—ओ गजल कहाबाक दावा नहि करैत, 'गजल जेहन' कहैत अछि। एहि विनम्रतामे एकटा काव्यिक ईमानदारी थिक।

५७. अशरफ राइन — गजल (पृ. ११३७)

अशरफ राइनक एकटा गजल—मैथिली गजलमे मुस्लिम रचनाकारक उपस्थिति विदेहक समावेशी दृष्टिकोणक प्रमाण थिक। राइनजीक गजलमे उर्दू-गजलक प्रभाव स्पष्ट किन्तु मैथिलीमे रूपान्तरित।

५८. डॉ. उमा शंकर चौधरी — दू आखर (पृ. ११३८)

डॉ. उमा शंकर चौधरीक 'दू आखर' एकटा लघु किन्तु सघन कविता थिक। 'दू आखर' शीर्षकमे ही कविताक संक्षिप्तता आ गहनता दुनू व्यक्त होइत अछि।

५९. चिन्ता अंशु — अस्तित्वकेँ चिन्हू (पृ. ११३९)

चिन्ता अंशुक 'अस्तित्वकेँ चिन्हू' अस्तित्ववादी दर्शनकेँ मैथिली काव्य-भाषामे व्यक्त करबाक एकटा प्रयास थिक। विदेहक स्त्री-लेखिका परम्परामे एहि कवयित्रीक उपस्थिति उल्लेखनीय अछि।

६०. बीना प्रसाद — निर्मलीक गीत (पृ. ११४०)

बीना प्रसादक 'निर्मलीक गीत' मिथिलाक एकटा विशेष स्थानक नामपर आधारित गीत थिक। निर्मली कोसी-तटक एकटा नगर थिक जे बाढ़-प्रभावित क्षेत्र थिक। एहि गीतमे स्थान-विशेषक सांस्कृतिक-भावनात्मक सम्बन्ध व्यक्त होइत अछि।

६१. राम विलास साहु — किछु टनका (पृ. ११४१-११५८)

राम विलास साहुक 'टनका' मैथिलीमे एकटा विशेष लघु-काव्य-रूप थिक—जापानी 'तंका' सँ प्रेरित। एहि संकलनमे साहुजीक विस्तृत टनका-संग्रह मैथिली लघु-काव्य-परम्पराक एकटा महत्त्वपूर्ण दस्तावेज थिक।

६२. राजदेव मण्डल — व्यथित तरू, हेरा गेल (पृ. ११५९-११६२)

राजदेव मण्डलक दूटा कविता—'व्यथित तरू' आ 'हेरा गेल'—पर्यावरणीय चिन्ता आ सांस्कृतिक विलोपक यन्त्रणाकेँ व्यक्त करैत अछि। 'व्यथित तरू' एकटा प्रकृति-कविता थिक जाहिमे गाछ-वृक्षकेँ प्रतीक बनाबैत मिथिलाक पारम्परिक जीवनमूल्यक क्षरणकेँ चित्रित कयल गेल अछि।

६३. डा. शिव कुमार प्रसाद — सात कविता (पृ. ११६३-११७२)

डा. शिव कुमार प्रसाद सात कविता प्रस्तुत करैत छथि: 'निर्मलीक निर्मलतामे', 'तैं किछु ने किछु लिखैत जाउ', 'बौआ केर उबटन', 'शहर ओ गेल......', 'खेबैया', 'माय हमर नव कुम्भ नहेली' आ 'देख एलौं हम पटना'।

डा. प्रसादक काव्य-भाषा अत्यन्त ठेठ मैथिली अछि। 'माय हमर नव कुम्भ नहेली' एकटा ममतामयी स्त्री-चित्रण थिक जे वात्सल्य रसमे आप्लावित। 'देख एलौं हम पटना' एकटा व्यंग्य-कविता थिक जे आधुनिक नगरीय जीवनक विडम्बनाकेँ सामने आनैत अछि।

६४. संजय कुमार झा 'नागदह' — किछु कविता (पृ. ११७३-११८१)

संजय कुमार झा 'नागदह'क कविता—'खैर', 'छोड़ू', 'भेटल?', 'छी कोन अपने जाति-विशेष?'—समकालीन सामाजिक-राजनीतिक प्रश्नकेँ सम्बोधित करैत अछि। 'छी कोन अपने जाति-विशेष?' जाति-व्यवस्थापर एकटा प्रत्यक्ष प्रश्नचिह्न थिक।

६५. ओम प्रकाश झा — किछु गजल (पृ. ११८२-११८४)

ओम प्रकाश झाक गजल-संग्रह हुनकर गद्य-विवेचनाक पूरक थिक। ओ सिद्धान्त आ अभ्यास—दुनू स्तरपर गजलकार थिक।

६६. महेश डखरामी — कोनादइन, महेश मञ्जरी (पृ. ११८५-११८७)

महेश डखरामीक 'कोनादइन' आ 'महेश मञ्जरी' ओहि परम्पराक अनुसरण करैत अछि जाहिमे कवि अपन नामसँ काव्य-संकलनकेँ पहचानैत अछि। 'मञ्जरी' संस्कृत-काव्य-परम्पराक एकटा चिर-परिचित शब्द थिक।

६७. गणेश मैथिल — हे! हे!! हे!!! (पृ. ११८८)

गणेश मैथिलक 'हे! हे!! हे!!!'—तीन विस्मयादिबोधकचिह्नक प्रयोग ही एकटा काव्यिक-व्यंग्यात्मक संकेत थिक। विस्तार क्रमशः बढ़ैत विस्मय-व्यंग्यक तीव्रता प्रकट करैत अछि।

६८. सन्तोष कुमार झा — सिक्की-शिल्पकला (पृ. ११८९-११९१)

सन्तोष कुमार झाक 'सिक्की-शिल्पकला' मिथिलाक एकटा विशेष पारम्परिक शिल्पकलाकेँ काव्यात्मक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। सिक्की-शिल्प (grass craft) मिथिलाक स्त्रियों द्वारा निर्मित एकटा अद्वितीय लोक-कला थिक। एकर काव्यात्मक चित्रण लोक-संस्कृतिक संरक्षण-प्रयास थिक।

६९. अरविन्द ठाकुर — कविता आ गजल (पृ. ११९२-१२२०)

पद्य-खण्डक अन्तमे—जेना गद्य-खण्डक अन्तमे—अरविन्द ठाकुरक रचनाएं स्थान पाबैत अछि। एहि खण्डमे शामिल अछि: 'सुनू जयरथ!', 'दू मिस', 'हम हत्या करए चाहए छी', 'हलफनामा', 'स्मृति मिस अछि', 'किछु आजाद गजल' आ 'टिमटिम'।

'हम हत्या करए चाहए छी' एकटा अत्यन्त प्रभावशाली विरोध-कविता थिक—शीर्षकमे ही एकटा उत्तेजनात्मक वक्तव्य अछि जे पाठककेँ चौंकाबैत अछि। 'सुनू जयरथ!'—रामायण-महाभारतक जयद्रथ-प्रतीककेँ समकालीन राजनीतिक सन्दर्भमे नव अर्थ दैत अछि। 'टिमटिम' एकटा लयात्मक-कोमल रचना थिक जे अरविन्दजीक काव्य-व्यक्तित्वक अन्य पक्षकेँ प्रकट करैत अछि।

'किछु आजाद गजल' हुनकर गजल-सिद्धान्तक व्यावहारिक प्रयोग थिक—जाहिमे ओ सिद्ध करैत छथि जे विचार-प्रधान गजल बहर-व्याकरणसँ स्वतन्त्र होइतो गजलकेँ प्राप्त होइ सकैत अछि।

निष्कर्ष

विदेह सदेह-१७ मैथिली साहित्यक एकटा महत्त्वपूर्ण दस्तावेज थिक। एकर केन्द्रीय विषय—अरविन्द ठाकुर आ मधुप—दुनू एकटा व्यापक साहित्यिक सत्यकेँ प्रतिनिधित्व करैत छथि: जे साहित्य जीवनक सत्यसँ कटल नहि रहैत, जे लेखक अपन समयसँ मुँह नहि मोड़ैत—ओकर रचना कालान्तर तक जीवित रहैत अछि।

मधुपजीक 'घसल अठन्नी' आ अरविन्दजीक 'अन्हारक विरोध'—दुनू एकटा 'साहित्यिक प्रतिरोध' (literary resistance) थिक। आनन्दवर्धनक ध्वनि-सिद्धान्तमे जाहिकेँ 'अभिधा-लक्षणा-व्यञ्जना'क क्रम कहल गेल अछि, ओकर सर्वोच्च स्तर—व्यञ्जना—एहि दुनू लेखकक रचनामे विशेष रूपसँ सक्रिय अछि।

विनीत उत्पलक अनुवाद-कर्म मैथिलीकेँ विश्व-साहित्यसँ जोड़बाक एकटा महत्त्वपूर्ण सेतु थिक। विविध गद्य-लेखक आ कवि-गजलकारक उपस्थिति—कथाकार, एकांकीकार, रिपोर्ताजकार, आलोचक, इतिहासकार—सभ मिलाकऽ विदेह सदेह-१७ मैथिली साहित्यक एकटा जीवन्त तस्वीर प्रस्तुत करैत अछि।

अन्तमे, यैह कहल जा सकैत अछि जे विदेह-सदेह-१७ केवल एकटा साहित्यिक संकलन नहि, बल्कि एकटा 'सामूहिक साहित्यिक चेतना' (collective literary consciousness) थिक जे मैथिली भाषा-संस्कृतिक निरन्तरताक प्रमाण थिक।

— विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम् —

ISSN 2229-547X | www.videha.co.in

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह सदेह-१७ — समानान्तर साहित्यिक समीक्षा

अध्याय 35 · विदेह सदेह-१८: एकटा विस्तृत साहित्यिक समीक्षा — संकलन: विदेह सदेह-१८ (विदेह ई-पत्रिका, अंक १९१-२००)

सारांश संकलन: विदेह सदेह-१८ (विदेह ई-पत्रिका, अंक १९१-२००) सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर ISSN: 2229-547X --- प्रस्तावना विदेह सदेह-१८ मैथिली साहित्यक एकटा महत्त्वपूर्ण संकलन थिक जे विदेह ई-पत्रिकाक अंक १९१ सँ २०० धरिक सर्वश्रेष्ठ गद्य आ पद्य रचनाकेँ एक ठाम प्रस्तुत करैत अछि। गजेन्द्र ठाकुर द्वारा सम्पादित ई संकलन मैथिली साहित्य आन्दोलनक मानुषीमिह संस्कृताम् नारा केर आत्माकेँ जीवन्त राखैत अछि। एहि संकलनमे गद्य-खण्ड (पृ. १–८३३) आ पद्य-खण्ड (पृ. ८३४–१२५६) — दुनू मिलाकऽ एकटा विशाल साहित्यिक सङ्कलन बनैत अछि।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · आलोचना · सांस्कृतिक अध्ययन · समाज-समीक्षा

संकलन: विदेह सदेह-१८ (विदेह ई-पत्रिका, अंक १९१-२००)

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर

ISSN: 2229-547X

प्रस्तावना

विदेह सदेह-१८ मैथिली साहित्यक एकटा महत्त्वपूर्ण संकलन थिक जे विदेह ई-पत्रिकाक अंक १९१ सँ २०० धरिक सर्वश्रेष्ठ गद्य आ पद्य रचनाकेँ एक ठाम प्रस्तुत

करैत अछि। गजेन्द्र ठाकुर द्वारा सम्पादित ई संकलन मैथिली साहित्य आन्दोलनक मानुषीमिह संस्कृताम् नारा केर आत्माकेँ जीवन्त राखैत अछि। एहि संकलनमे गद्य-खण्ड (पृ. १–८३३) आ पद्य-खण्ड (पृ. ८३४–१२५६) — दुनू मिलाकऽ एकटा विशाल साहित्यिक सङ्कलन बनैत अछि। एहिमे विभिन्न विधाक — आत्मकथा, कथा, एकांकी, समालोचना, व्यंग्य, रिपोर्ताज, पत्राचार, गीत, कविता, दोहा, गजल — रचना सभ समाहित छथि।

गद्य-खण्डक समीक्षा

१. गजेन्द्र ठाकुर — सम्पादकीय

गजेन्द्र ठाकुर, जे विदेहक संस्थापक-सम्पादक छथि, एहि अंकमे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' केर व्यक्तित्व आ कृतित्वपर केन्द्रित सम्पादकीय लिखने छथि। हुनकर सम्पादकीय केवल परिचयात्मक नहि अछि, वरन् एकटा गहन समालोचनात्मक दृष्टिकोण राखैत अछि। ओ पद्यक गेयता आ अगेयताक प्रश्नकेँ नव ढंगसँ उठाबैत छथि — तर्क देबैत छथि जे पद्यक गेयता ओकर पुरानापनक परिचायक नहि थिक, जेना किछु लोक बुझैत छथि। हुनकर विश्लेषण रहैत अछि जे जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' जीक गजल ओहि कृत्रिम विभाजनकेँ मेटा दैत अछि जे नव आ पुरानाक बीच बनाओल जाइत अछि। प्रतिभावान कवि नीक गेय-युक्त आ भाव-युक्त गजल लिखि सकैत छथि — ई सिद्ध कऽ देखओलाह अनिलजी।

सम्पादकीयमे धर्मक अस्तित्वक उत्तर-उपनिवेशवादी व्याख्या सेहो उल्लेखनीय अछि। भगवानक अस्तित्वकेँ एकटा बुझौअलीक रूपमे प्रस्तुत करब — जे ब्रह्माण्डक सभटा सृष्टि मानवहित लेल अछि आ ओहि सृष्टिकर्ताकेँ हम भगवान कहैत छी — ई दृष्टिकोण साहित्यिक-दार्शनिक आयाम राखैत अछि। नारी-चेतनाक स्वर सेहो सम्पादकीयमे अछि जतऽ बुच्ची (कन्या सन्तान) केर स्वावलम्बन, दहेज-विरोध आ आत्मविश्वासपर बल दियाओल गेल अछि — ई सन्देश समसामयिक आ प्रासंगिक अछि।

---

२. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' — आत्मकथा, एकांकी आ गजल

एहि संकलनमे 'अनिल' जीक सर्वाधिक रचना संकलित छनि। हुनकर आत्मकथा — 'आँखिमे चित्र हो मैथिली केर' — खण्ड ०–२९ धरि (जारी) — संकलनक मेरुदण्ड थिक। ई आत्मकथा हुनकर जीवनयात्राक विस्तृत वर्णन थिक — सीवान, कलकत्ता, रहिका, दरभंगा आदि स्थानपर प्रवासी मैथिलीक सङ्गीत-साहित्यिक जगतसँ जुड़लाह, मैथिली गीत-संगीतक प्रसार केलाह, आ अपन जीवनमे पान-तमाखुल जकाँ छोट-छोट प्रसंग सेहो जीवन्त रूपमे लिखने छथि। लेखनशैली सरल, प्रवाहमय आ आत्मीय अछि। पाठक हुनका सँग चलैत-चलैत हुनकर जीवनक हर मोड़पर उपस्थित भऽ जाइत अछि।

हुनकर गजल सभ — 'गजल गंगा' — बहरयुक्त, रदीफ-काफियासँ समृद्ध अछि। रदीफक विविधता उल्लेखनीय अछि — 'अनछ', 'कऽ राखू', 'मोन होइए', 'बाटपर जहाँ-तहाँ', 'रहल अछि', 'जीवन भरि' — एहि वैचित्र्यसँ गजलमे नवीनता अबैत अछि। ओ अरबी बहरमे लिखैत छथि, जे मैथिली गजलक विकासमे एकटा महत्त्वपूर्ण कदम थिक।

हुनकर एकांकी 'कोरांटी' सेहो संकलित अछि जे हुनकर गद्य-लेखनक क्षमताक प्रमाण थिक।

---

३. विनीत उत्पल — 'नव दिशाक कथा'

विनीत उत्पलक ई कथा जगदीश प्रसाद मण्डलक गामक जिनगी (ग्रामजीवन) केर केन्द्रमे अछि। मण्डलजी मैथिली दलित-शोषित वर्गक साहित्यक प्रमुख स्वर छथि आ विनीत उत्पल हुनकर साहित्यिक यात्राकेँ आलोचनात्मक दृष्टिसँ प्रस्तुत करैत छथि। ई कथा विश्लेषणात्मक शैलीमे लिखल अछि आ मैथिली सामाजिक यथार्थवादी लेखनक परम्पराकेँ आगाँ बढ़ाबैत अछि।

---

४. कामिनी कामायनी — नोम्पेंह, सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत, भागमंती

कामिनी कामायनी ई संकलनमे तीनटा उल्लेखनीय रचना देने छथि। नोम्पेंह कम्बोडियाक राजधानीपर केन्द्रित रचना थिक जे मैथिली यात्रा-साहित्यक परम्पराकेँ समृद्ध करैत अछि — एहि प्रकारक अन्तर्राष्ट्रीय विषयवस्तु मैथिलीमे दुर्लभ अछि। सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत सेहो दक्षिण-पूर्व एशियाक ऐतिहासिक-सांस्कृतिक धरातलपर लिखल गेल अछि। भागमंती एकटा चरित्र-केन्द्रित रचना थिक। कामिनी जीक लेखन मैथिली गद्यकेँ एकटा वैश्विक आयाम दैत अछि — ई ओहि परम्पराक विरुद्ध अछि जे मैथिलीकेँ केवल मिथिला-केन्द्रित राखऽ चाहैत अछि।

---

५. रतन झा — मैथिलीक किछु समकालीन उपन्यासक विविध स्वरूप

रतन झा मैथिलीक समकालीन उपन्यास साहित्यपर एकटा महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक दृष्टि राखने छथि। ओ समकालीन उपन्यासक विभिन्न स्वरूप — यथार्थवादी, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक — केर विवेचन करैत छथि। हुनकर आलोचना-दृष्टि संतुलित आ विद्वत्तापूर्ण अछि। मैथिलीमे उपन्यास-समालोचना जे दुर्लभ अछि, ताहिमे ई लेख एकटा आवश्यक योगदान थिक।

---

६. डॉ. विद्यानाथ झा — डेंगू बीमारीक भयावह परिदृश्य

डॉ. झा एहि रचनामे डेंगू बीमारीक वैज्ञानिक, सामाजिक आ स्वास्थ्य-नीतिक आयामपर प्रकाश दैत छथि। वर्ष २०१५ मे दिल्लीमे डेंगूसँ अभिनाष राउत नामक बालकक मृत्यु आ तकर बाद माय-बापक आत्महत्याक घटनासँ आरम्भ करैत ओ एहि महामारीक विज्ञान (एडीस एजिप्टाइ मच्छर, फ्लेविवायरस, एकस्तरीय RNA) तकक गहन विश्लेषण करैत छथि। साहित्यिक माध्यमसँ विज्ञान-लेखन — ई शैली मैथिलीमे नव अछि आ डॉ. झाक ई प्रयास प्रशंसनीय थिक। आम जनकेँ स्वास्थ्य सुविधाक अभाव — ई सामाजिक समस्यापर हुनकर कलम धारदार अछि।

---

७. आशीष अनचिन्हार — साहित्यिक आलोचना आ कथा-रचना

आशीष अनचिन्हार एहि संकलनमे बहुआयामी रूपमे उपस्थित छथि। 'चारक अइ पार', 'पद्मा नदीक गरीब ब्राह्मण', 'गाम के अधिकारी...' (आलोचना), 'सभ्य लोक', 'जँ महात्मा गाँधी आइ-काल्हि मिथिलामे जन्मल रहतथि', 'ब्रह्मपिशाच' — एहि सभ रचनामे सामाजिक यथार्थक तीव्र चित्रण अछि।

'जँ महात्मा गाँधी मिथिलामे जन्मल रहतथि' — ई काल्पनिक-ऐतिहासिक शैलीमे लिखल रचना मैथिली साहित्यमे एकटा नव प्रयोग थिक। ओ गाँधीवादी मूल्यकेँ मिथिलाक सन्दर्भमे पुनर्व्याख्यायित करैत छथि। 'ब्रह्मपिशाच' लोककथाक माध्यमसँ सामाजिक कटाक्ष करैत अछि। हुनकर लेखन-शैली तीखी आ व्यंग्यपरक अछि।

---

८. परमानन्द प्रभाकर, छजानन्द सिंह झा, केदार कानन, डा. अमर नाथ ठाकुर, डॉ. शशिधर कुमर 'विदेह' — 'गीत गंगा' पर समालोचना

'अनिल' जीक काव्य-संग्रह 'गीत गंगा' पर ई पाँचू समालोचक अपन-अपन दृष्टिकोण प्रस्तुत करैत छथि।

परमानन्द प्रभाकर अनिलजीक आन्तरिक परिचिति उजागर करैत छथि। छजानन्द सिंह झा 'गीत गंगा' मे सब किछु अछि — एहि शीर्षकसँ ओकर समग्रताक प्रशंसा करैत छथि। केदार कानन गीत-गंगाक साहित्यिक महत्त्व, रेणुजी (रमानन्द रेणु) सँ हुनकर सम्बन्ध आ हुनकर व्यक्तित्वक सहजताकेँ रेखांकित करैत छथि। डा. अमर नाथ ठाकुर 'गीत गंगा' क प्रवाहक विश्लेषण करैत छथि — ओकर काव्यात्मकता, भावगहनता आ शिल्पक दृष्टिसँ। डॉ. शशिधर कुमर 'विदेह' अनिलजीक व्यक्तित्व आ कृतित्वक सर्वाधिक विस्तृत समालोचना करैत छथि। ई सामूहिक समालोचनाक प्रयास एहि अंककेँ विशिष्ट बनाबैत अछि।

---

९. डॉ. शशिधर कुमर 'विदेह' आ सुप्रिया बेबी कुमारी — भूकम्प (बाल विज्ञान कथा)

बाल विज्ञान कथाक विधामे ई रचना मैथिलीमे विरल अछि। भूकम्पक वैज्ञानिक व्याख्या बालोपयोगी शैलीमे प्रस्तुत करब — ई एकटा साहसिक प्रयोग थिक। बच्चा सभक लेल विज्ञान-साहित्य मैथिलीमे बेशी लिखाइ — ई आवश्यकता ई रचना रेखांकित करैत अछि।

---

१०. सृजन शेखर 'अज्ञेय' (मूल नाम गंगानन्द झा) — विहनि कथा

'अशुभ इच्छा' — ई विहनि कथामे लेखक संक्षिप्त आकृतिमे गहन भावकेँ उतारने छथि। विहनि कथा मैथिलीक एकटा प्रभावशाली विधा बनि उठल अछि आ सृजन शेखरजी एहिमे दक्ष छथि।

---

११. बाल मुकुन्द पाठक — 'मैथिलीक गजलक सशक्त हस्ताक्षर अनिल'

बाल मुकुन्द पाठक अनिलजीकेँ मैथिली गजल-परम्पराक एकटा महत्त्वपूर्ण नाम सिद्ध करैत छथि। हुनकर आलोचना-दृष्टि गजलक बहर, काफिया, रदीफक तकनीकी पक्षपर केन्द्रित रहैत अछि।

---

१२. अरविन्द ठाकुर — 'गीत गंगा' के बहाने किछु बतकही

अरविन्द ठाकुर 'गीत गंगा' केर बहाने मैथिली साहित्यक व्यापक प्रश्नपर विचार करैत छथि — गीत आ गजलक स्वरूप, परम्परा आ नवीनता, साहित्यिक मूल्यांकनक कसौटी। हुनकर शैली संवादात्मक आ सहज अछि।

---

१३. मुन्नाजी — साक्षात्कार, कथा आ विहनि कथा

मुन्नाजी एहि अंकमे अनिल जीसँ लेल ई-साक्षात्कार देने छथि जाहिमे गजल-लेखनक प्रेरणा, बहर, विदेह-पत्रिकासँ जुड़ावक अनुभव आ मैथिली गजलक वर्तमान दिशापर प्रकाश पड़ैत अछि। साक्षात्कार स्वाभाविक आ सूचनाप्रद अछि।

हुनकर कथा सभ — 'सेल्फी', 'बखरा', 'करोट' — समकालीन समाजक विडम्बनाकेँ चित्रित करैत छनि। 'सेल्फी' आधुनिक सोशल मीडिया संस्कृतिपर व्यंग्य थिक। 'देवीजी' आ 'मोहन दास' — ई दुटा रचना मानवीय प्रेरणा आ सामाजिक अधिकारपर आधारित अछि।

---

१४. राम लोचन ठाकुर — रमानन्द रेणुकेँ मोन पाड़ैत

ई संस्मरण मैथिली साहित्यक एकटा महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व रमानन्द रेणुकेँ श्रद्धांजलि थिक। राम लोचन ठाकुर हुनकर व्यक्तित्व, कवि-सम्मेलनमे हुनकर उपस्थिति, गीत-प्रस्तुतिक ओजस्विता — सभकेँ जीवन्त रूपमे चित्रित करैत छथि। मैथिली साहित्येतिहासक दृष्टिसँ ई संस्मरण मूल्यवान दस्तावेज थिक।

---

१५. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी' — एकसरुआ सिपाही

ई कथा कलकत्तामे प्रवासी जीवन जीबैत एकाकी मैथिलीक अनुभवकेँ चित्रित करैत अछि। एक अपरिचित व्यक्ति घरपर आबि मैथिली पत्रिका 'कणामृत' केर आजीवन सदस्यता लेबाक आग्रह करैत छनि — एहि छोट घटनाकेँ लेखक मैथिली-प्रेमीक समर्पणक प्रतीकक रूपमे उपयोग करैत छथि। शैली आत्मीय आ स्मृति-परक अछि।

---

१६. नबो नारायण मिश्र — युगपुरुष श्री राजनन्दन लाल दास

मैथिली त्रैमासिक पत्रिका 'कणामृत' केर यशस्वी सम्पादक राजनन्दन लाल दास (जन्म ५ जनवरी १९३४) केर व्यक्तित्व आ कृतित्वपर ई आलेख एकटा महत्त्वपूर्ण दस्तावेज थिक। कलकत्ताक महाजाति सदन प्रेक्षागृहमे मैथिली कार्यक्रमक वर्णनसँ आरम्भ भऽ नबो नारायण मिश्र हुनकर मिथिला-मैथिलीक उत्थान लेल जीवन-समर्पणकेँ श्रद्धासँ उभारैत छथि। मैथिली साहित्येतिहासक लेल अमूल्य दस्तावेज।

---

१७. ओम प्रकाश झा — विछोहक नोर, मातृवत परदारेषु

दुटा लघु रचनामे ओम प्रकाश झा विछोहक वेदना आ मानवीय मूल्यकेँ सम्वेदनशील शैलीमे उठाबैत छथि।

---

१८. अनिल झा — व्यंग्य: अनटोटल गप्प

ई व्यंग्य-रचना मैथिली संस्था-निर्माणक प्रवृत्तिपर तीखा कटाक्ष करैत अछि। सोशल मीडियापर मैथिलीक नाम पर 'आँखिमे आँगुर घुसिया कऽ नोर चुएनाइ' आ तकर बाद संस्था बनाबऽ दौड़नाइ — अध्यक्ष, कोषाध्यक्ष, सचिवक सीट लेल मारामारी — ई विडम्बनाकेँ लेखक हास्यपूर्ण व्यंग्यसँ उजागर करैत छथि। मैथिली साहित्यिक जगतक एकटा वास्तविक समस्यापर ई व्यंग्य सटीक प्रहार करैत अछि।

---

१९. रवि भूषण पाठक — कथा आ कविता

रवि भूषणजी एहि अंकमे गद्य आ पद्य दुनूमे उपस्थित छथि। हुनकर कथा 'दोस आ दोसक चाल-प्रकृति बेमेय' आ 'दोस यौ दोस', तथा 'फलनमा... चिलनमा... ठेकनमा' — मित्रताक विभिन्न स्वरूप आ मानवीय सम्बन्धक जटिलताकेँ चित्रित करैत छथि। हुनकर लेखन भोरहरिया (देशज) शब्दावलीसँ समृद्ध आ मैथिलीक मातृभाषाई जमीनसँ जुड़ल अछि।

---

२०. पत्राचार खण्ड — अनिलजी द्वारा प्राप्त पत्र

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' जीकेँ प्राप्त पत्र सभक संकलन साहित्यिक इतिहासक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि। ई पत्र सभ हुनकर साहित्यिक प्रभाव आ व्यापक साहित्यिक सम्बन्धकेँ रेखांकित करैत अछि।

---

२१. राजदेव मण्डल — अवाक्

ई रचनामे राजदेव मण्डल दलित-शोषित वर्गक आवाजकेँ साहित्यिक रूप दैत छथि। मण्डलजी मैथिली सामाजिक यथार्थवादी लेखनक एकटा महत्त्वपूर्ण स्तम्भ छथि आ 'अवाक्' हुनकर सशक्त उपस्थिति दर्ज करबैत अछि।

---

२२. विन्देश्वर ठाकुर — राजनैतिक आ प्रेम विहनि कथा

दुटा विहनि कथामे ओ राजनीतिक व्यंग्य आ प्रेमक अनुभूतिकेँ संयुक्त करैत छथि।

---

२३. अब्दुर रज्जाक — कथा, गजल आ डोहा-कतारक रिपोर्ताज

अब्दुर रज्जाक कतारक मौसम आ बेमौसमी बरखाक वर्णन करैत विदेशमे मैथिली साहित्यिक गतिविधिक सन्देश दैत छथि। हुनकर गजल आ प्रेम विहनि कथा सेहो उल्लेखनीय अछि। डोहा (कतार)मे मैथिली साहित्य-गोष्ठीक समाचार मैथिली भाषाक वैश्विक प्रसारक प्रमाण थिक।

---

२४. उमेश मण्डल — मुड़नक मुर, रिपोर्ताज, समाचार

उमेश मण्डल 'सगर रातिक दीप जरय' आ कथा-साहित्य गोष्ठीक विस्तृत रिपोर्ताज देने छथि। ई रिपोर्ताज मैथिली साहित्यिक आन्दोलनक एकटा जीवन्त दस्तावेज थिक — कोन कथा पढ़ल गेल, कोन समीक्षा भेल — सभ विस्तारसँ लिखल अछि। 'मुड़नक मुर' हुनकर सामाजिक यथार्थवादी कथा थिक।

---

२५. अखिलेश कुमार — बाबू भोला लाल दासक जयन्ती

ई आलेख मैथिलीक एकटा साहित्यकारक जयन्ती-समारोहक विवरण दैत अछि।

---

२६. राम विलास साहु — ई छी हमर मजबूरी, चोर-सिपाही, जाति

राम विलास साहुक कथा सभ ग्रामीण समाजक आर्थिक विवशता, जातीय भेदभाव आ व्यवस्थाक विडम्बनाकेँ सरल मैथिलीमे प्रस्तुत करैत अछि। हुनकर भाषा सहज आ प्रभावशाली अछि।

---

२७. लक्ष्मी दास — बापक धर्म

ई कथा पिता-पुत्रक सम्बन्धकेँ केन्द्रमे रखैत मानवीय कर्त्तव्यबोधकेँ उभारैत अछि। भावनात्मक गहराई एहि कथाकेँ स्मरणीय बनाबैत अछि।

---

२८. ललन कुमार कामत — बाबाक लोटा

'बाबाक लोटा' एकटा वस्तु-केन्द्रित कथा थिक — एकटा साधारण लोटाकेँ माध्यम बनाकऽ पुरानी पीढ़ीसँ नव पीढ़ीक सम्बन्ध, पारिवारिक स्मृति आ भावनात्मक विरासतकेँ चित्रित कएल गेल अछि। मैथिली कथा-साहित्यमे वस्तु-प्रतीकक प्रयोग एहि तरहें कम देखल जाइत अछि — ई नवीनता थिक।

पद्य-खण्डक समीक्षा

१. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' — गीत, कविता, दोहा, चतुष्पदी, गजल, आत्म-गीत, बाल कविता

'अनिल' जीक पद्य-रचनाक विविधता आश्चर्यकारी अछि। हुनकर गीत-सभमे गेयता आ भाव दुनू अछि — ई संयोग दुर्लभ थिक। हुनकर बाल गीत विशेष रूपसँ उल्लेखनीय अछि — 'बौआ जुनि काँए रे, नइ त कौआ ल' जेतौ तोहर काँए रे' — एहिमे लोकगीतक सुर आ शिशु-मनोविज्ञानक बुझाइ दुनू अछि। आत्म-गीत हुनकर अन्तर्मनक प्रतिबिम्ब थिक। दोहा आ चतुष्पदी मे हुनकर छन्दशास्त्रक पकड़ स्पष्ट होइत अछि। गजल सभमे — जेना ऊपर उल्लिखित — अरबी बहरक प्रयोग आ रदीफक वैचित्र्य हुनकेँ मैथिली गजलक शिखर-पुरुष सिद्ध करैत अछि।

---

२. जगदानन्द झा 'मनु' — गजल

'मनु' जीक गजल मैथिली गजल-परम्पराक एकटा सुदृढ़ स्तम्भ थिक। हुनकर गजलमे भाव-गहनता आ शिल्पक परिपक्वता दुनू अछि।

---

३. दिलीप कुमार साह — 'अहाँ हमर..., मिथिला हमर..., शरण भरि..., हमरा याद अबैए...'

दिलीप कुमार साहक कविता मिथिला आ मैथिलीसँ प्रेम, स्मृति आ विछोहक भावकेँ व्यक्त करैत अछि। हुनकर भाषा सरल आ हृदयस्पर्शी अछि।

---

४. मुन्नाजी — गजल, कविता 'ऐब की बेढ़रिया'

मुन्नाजीक गजल 'अजीबो गरीबी कहानी क' गेलै' — बहरे मुतकारिबमे (मात्रा क्रम १२२) लिखल — हुनकर तकनीकी दक्षताक प्रमाण थिक। काफियाक प्रवाह स्वाभाविक आ रचनाक भाव सामाजिक विडम्बनापर केन्द्रित अछि।

---

५. रमेश — 'ताजीवन हमर नहि'

विरह आ प्रेमक व्यथाकेँ रमेश अपन काव्य-पंक्तिमे उतारैत छथि।

---

६. नन्द विलास राय — 'नैतिकता आ ईमान, नेताजी, हमर सपनाक बिहार'

नन्द विलास रायक कविता सामाजिक-राजनीतिक यथार्थपर प्रहार करैत अछि। 'नेताजी' — नेताक विडम्बनापर व्यंग्य थिक। 'हमर सपनाक बिहार' — एकटा आदर्श समाजक कल्पना।

---

७. कामिनी कामायनी — अंकोरवट मन्दिर

कम्बोडियाक अंकोरवट मन्दिरपर कविता लिखि कामिनी जी मैथिली कविताकेँ वैश्विक धरातलपर ल' जाइत छथि। ई एकटा ऐतिहासिक-सांस्कृतिक कविता थिक।

---

८. किशन कारीगर — 'इस्कूल जाइत छी हम'

बाल कविताक विधामे किशन कारीगर बच्चाक विद्यालय-यात्राकेँ सरल भाषामे चित्रित करैत छथि।

---

९. आशीष अनचिन्हार — किछु बाल गजल, किछु गजल

आशीष अनचिन्हार मैथिली गजलक व्याकरण-शास्त्रक एकटा प्रमुख प्रवर्त्तक छथि। हुनकर बाल गजल — मैथिलीमे अत्यन्त दुर्लभ विधा — एकटा महत्त्वपूर्ण प्रयोग थिक। गजलक व्याकरण बच्चा-सभक उपयुक्त भावसँ सुसज्जित करब — ई साहसिक प्रयोग थिक। हुनकर गजल सभमे बहर आ काफियाक शुद्धता अनुकरणीय अछि।

---

१०. डॉ. शशिधर कुमर 'विदेह' — विविध काव्य-रचना

'विदेह' जीक काव्य-रचना एहि संकलनमे सर्वाधिक विस्तृत अछि। माधुरी रास बाल कविता, फागुनक पानि, माघ, सोझ बाट, मङलमय हो नव वर्ष, छठि गीत, लेखकक जिनगीक छन्द, श्री गणपति वन्दना — एहि सभमे प्रकृतिक उत्सव, ऋतु-परिवर्त्तन, धार्मिक भावना आ साहित्यिक जीवनक अनुभव सब समाहित अछि। हुनकर 'छठि गीत' लोकगीतक परम्परासँ जुड़ल अछि।

---

११. असरफ राईन — किछु गजल, परदेशी मनक भावना

असरफ राईन परदेशमे रहैत मैथिलीक प्रति अपन भावनाकेँ गजलमे उतारैत छथि। हुनकर गजलमे प्रवासी मनोभावक सच्चाई अछि।

---

१२. ओम प्रकाश झा — किछु गजल

ओम प्रकाश झाक गजल भाव-पक्षमे समृद्ध अछि।

---

१३. रवि भूषण पाठक — तीनटा कविता

रवि भूषणक कविता सभमे वृद्धावस्था, श्रवण-शक्तिक ह्रास आ समयक प्रवाहकेँ प्रतीकात्मक रूपसँ चित्रित कएल गेल अछि। 'अस्सी के लगभगमे ऊ गाममे छलथिन' — ई कविता वृद्धकेँ एकाकी छोड़बाक सामाजिक विडम्बनापर चुप्पीसँ बोलैत अछि।

---

१४. विजयनाथ झा — 'नव वर्षक एहि मधुर पहरमे, हमर नाम परिचय..., चेतनाक नव सृजनमे'

विजयनाथ झाक कविता नव वर्षक मंगलकामना, आत्म-परिचय आ साहित्यिक चेतनाक नव सृजनपर केन्द्रित अछि।

---

१५. सृजन शेखर 'अज्ञेय' (गंगानन्द झा) — गीत सभ

'गीत सँ पहिने', 'हँम', 'जिनगीक दस्तावेज', 'सभ मैथिल के लेल', 'प्रेमक गीत-सृजन', 'हमर गाम', 'जिनगीक गीत', 'गीत एगो सपना' — ई सभ गीतमे मैथिली, मैथिल-समाज आ जीवनक प्रति गहन प्रेम अछि। हुनकर गीतमे लोकजीवनक गन्ध आ व्यक्तिगत अनुभवक सच्चाई दुनू अछि।

---

१६. अब्दुर रज्जाक — चरिपतिया, किछु गजल, एकटा कता

अब्दुर रज्जाकक गजल तथा 'चरिपतिया' (एकटा खास मैथिली काव्य-रूप) — हुनकर काव्यात्मक विविधताक प्रमाण थिक। हुनकर गजलमे सामाजिक-मानवीय प्रसंग अछि।

---

१७. महेश डखरामी — रंग रास

होलीक उत्सव-गीत 'रंग रास' — 'खींचल खूट कमल उजास, उर उत्तान मन मदन वास' — एहि पंक्तिमे लोक-उत्सवक जीवन्त रंग, प्रेमक उल्लास आ वसन्त-सौन्दर्य एकत्र आबि गेल अछि। संस्कृतनिष्ठ शब्दावली आ लोकगीतक सुरक संयोग महेश डखरामीक विशेषता थिक।

---

१८. विन्देश्वर ठाकुर — गजल

ओ गजलमे संक्षिप्त किन्तु प्रभावशाली भाव प्रस्तुत करैत छथि।

---

१९. बिनीता झा — रखबार राघव

ई कविता एकटा रक्षकक छवि प्रस्तुत करैत अछि।

---

२०. विकास झा — 'एलै फागुन मास सखी हे'

फागुनक आगमनपर लिखल ई गीत ऋतु-काव्यक परम्परामे स्थान पाबैत अछि।

---

२१. नीरज कर्ण — गजल

संकलनक अन्तिम रचना नीरज कर्णक गजल थिक।

समग्र मूल्यांकन

विदेह सदेह-१८ मैथिली साहित्यक एकटा अत्यन्त समृद्ध, बहुआयामी आ ऐतिहासिक महत्त्वक संकलन थिक। एहिमे सभ प्रमुख साहित्यिक विधा — आत्मकथा, कथा, विहनि कथा, एकांकी, समालोचना, व्यंग्य, साक्षात्कार, रिपोर्ताज, संस्मरण, पत्राचार, गीत, कविता, दोहा, गजल, बाल साहित्य, विज्ञान लेखन, यात्रा-वृत्तान्त — सभ समाहित अछि।

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' केर इर्द-गिर्द एहि अंककेँ केन्द्रित करब एकटा सोचल-समझल निर्णय थिक। मैथिली गजलक एकटा प्रमुख शिल्पीकेँ एहि तरहें समग्र रूपसँ प्रस्तुत करब साहित्यिक न्याय थिक।

कामिनी कामायनी आ अब्दुर रज्जाकक रचना मैथिलीकेँ भौगोलिक सीमासँ बाहर ल' जाइत अछि। आशीष अनचिन्हारक व्याकरण-चेतना, उमेश मण्डलक दस्तावेजीकरण, राजदेव मण्डलक दलित-स्वर — ई सभ मिलि एहि संकलनकेँ मैथिली साहित्यक एकटा जीवन्त आईना बनाबैत अछि।

एकटा आलोचनात्मक टिप्पणी — संकलनक आकार अत्यन्त विशाल (१२५६ पृष्ठ) अछि। किछु रचनाक सम्पादकीय चयन आर सूक्ष्म भऽ सकैत छल। तथापि, एहि संकलनक ऐतिहासिक महत्त्व अतुलनीय अछि — ई मैथिली साहित्यक एकटा विस्तृत पंजीकरण थिक जे आगामी पीढ़ीक लेल आधारसामग्री सिद्ध होएत।

विदेह सदेह-१८ — मैथिली साहित्यक एकटा निधि।

समीक्षा: विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X केर आधारपर

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह सदेह-१८: एकटा विस्तृत साहित्यिक समीक्षा — संकलन: विदेह सदेह-१८ (विदेह ई-पत्रिका, अंक १९१-२००)

अध्याय 36 · विदेह-सदेह १९: एकटा समग्र साहित्यिक समीक्षा — (विदेह पेटार अंक २०१-२१६ सँ, मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ गद्य आ पद्यक समानान्तर संकलन)

सारांश प्रस्तावना विदेह-सदेह-१९ विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलनक उही समानान्तर परम्पराक एकटा महत्त्वपूर्ण खण्ड थिक जे संस्थागत मान्यताक बाहर ठाढ़ रहि सदिकाल मैथिलीक जनसाहित्यकेँ अपन मूल स्वरमे प्रस्तुत करैत आयल अछि। विदेह-पेटार अंक २०१ सँ २१६ धरिक रचनाक एकत्र प्रस्तुति, ई संकलन अपनामे एकटा विशिष्ट साहित्यिक दस्तावेज थिक। गद्य-खण्ड (पृ. १-७६४) आ पद्य-खण्ड (पृ. ७६५-१३५८) — दुनूमे मिलाकय कुल १३५८ पृष्ठक ई ग्रन्थ मैथिलीक विभिन्न विधाक एकटा विस्तृत परिदृश्य प्रस्तुत करैत अछि।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · आलोचना · सांस्कृतिक अध्ययन · समाज-समीक्षा

प्रस्तावना

विदेह-सदेह-१९ विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलनक उही समानान्तर परम्पराक एकटा महत्त्वपूर्ण खण्ड थिक जे संस्थागत मान्यताक बाहर ठाढ़ रहि सदिकाल मैथिलीक जनसाहित्यकेँ अपन मूल स्वरमे प्रस्तुत करैत आयल अछि। विदेह-पेटार अंक २०१ सँ २१६ धरिक रचनाक एकत्र प्रस्तुति, ई संकलन अपनामे एकटा विशिष्ट साहित्यिक दस्तावेज थिक। गद्य-खण्ड (पृ. १-७६४) आ पद्य-खण्ड (पृ. ७६५-१३५८) — दुनूमे मिलाकय कुल १३५८ पृष्ठक ई ग्रन्थ मैथिलीक विभिन्न विधाक एकटा विस्तृत परिदृश्य प्रस्तुत करैत अछि।

ऐ संकलनमे सम्मिलित रचनाकार लोकनिक रचना-संसार अतिविस्तृत अछि — बीहनिकथा, लघुकथा, दीर्घकथा, नाटक, लोकसंस्कृति-विमर्श, गजल, आजाद गजल, बाल-गजल, बाल-कविता, भक्ति-गजल, गीत आ अनुवाद — इ सभ विधामे अनेक रचनाकार अपन-अपन दृष्टिकोणसँ मैथिली साहित्यकेँ समृद्ध करैत आएल छथि। विदेह-सदेह-१९ एहि दृष्टिये एकटा प्रतिनिधि संकलन थिक जे साहित्य अकादेमीक संकीर्ण वर्चस्वकेँ चुनौती दैत लोकतान्त्रिक मैथिली साहित्यक एकटा विविधवर्णी छवि प्रस्तुत करैत अछि।

गद्य-खण्डक समीक्षा

१. गजेन्द्र ठाकुरक सम्पादकीय आ तकनीकी आलेख

गजेन्द्र ठाकुर ऐ संकलनमे तीनटा महत्त्वपूर्ण क्षेत्रमे अपन योगदान देने छथि — मैथिली विकिपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेट, ट्विटर आ अमेजन एलेक्सामे मैथिलीक उपस्थिति सम्बन्धी विस्तृत दस्तावेजीकरण।

ई सम्पादकीय आलेख मात्र सूचनात्मक नहि, बल्कि मैथिलीक डिजिटल संघर्षक एकटा जीवन्त इतिहास थिक। अंशुमन पाण्डेय द्वारा तिरहुता (मिथिलाक्षर) आ कैथी लिपिक यूनीकोड एनकोडिंगक अनुरोध स्वीकृत होयबाक दीर्घ यात्रा — २०११ सँ लऽकय अन्तिम स्वीकृति धरि — ऐ आलेखमे बड़ी विस्तारसँ दस्तावेज भेल अछि। राजेश रंजन, आमिर ई. अहारोनी (इस्राएल), रुना भट्टाचार्य आ मुजम्मिलक योगदानक चर्चा करैत गजेन्द्र ठाकुर ई स्पष्ट कयलनि जे मैथिली विकिपीडियाक ९५% आलेख विदेहक सौजन्यसँ अछि।

ई आलेख नव्य-न्यायक प्रमाण-सिद्धान्तक दृष्टिये देखल जाओ तँ ई एकटा व्यापी प्रत्यक्षीकरण थिक — मैथिलीक डिजिटल अस्तित्वक साक्षात् प्रमाण, बिना किसी संस्थागत अनुकम्पाक, शुद्ध कर्मनिष्ठासँ अर्जित। राजेश रंजनक उद्धरण जे 'मूल प्रश्न अछि जे लोक किए खाली लम्बा-चौड़ा गप छोड़ैत छथि मैथिलीक नामपर मुदा एकर उपयोग नहि करैत छथि' — एहि एकटा वाक्यमे विदेहक मूल दर्शन समाहित अछि।

२. काामिनीजीक कविता आ मधुकान्त झाजीक टिप्पणी

काामिनीजीक पाँचटा कविता आ ओहिपर मधुकान्त झाजीक टिप्पणी (पृ. ६५-७८) एकटा दिलचस्प आलोचनात्मक संवाद प्रस्तुत करैत अछि। ई रचना-समालोचना द्वन्द्व विदेहक उही प्रवृत्तिक परिचय थिक जे रचना आ आलोचनाकेँ एकसंग प्रस्तुत कयनाइ पसन्द करैत अछि। एहिसँ पाठककेँ रचनाक पाठ आ ओकर सैद्धान्तिक विश्लेषण दुनू एके ठाम उपलब्ध होइत अछि।

३. प्रयास प्रेमी मैथिल — नाटक: 'जनम दैत अछि माँ बाप करम तऽ अपनेही'

प्रयास प्रेमी मैथिल (पृ. ७९-१४५) ऐ संकलनमे एकटा विस्तृत नाटक लऽकय उपस्थित छथि। एहि नाटकक शीर्षके मैथिली लोकमानसक उही अटल दर्शन प्रकट करैत अछि जे माता-पिताक जन्म देनाइ आ कर्मक भार अपने उठेनाइक बीचक तनावकेँ रेखांकित करैत अछि। नाटकक भाषा लोकजीवनसँ अनुप्राणित अछि आ संवाद-शैलीमे मिथिलाक ग्राम्य आ अर्ध-नागरिक जीवनक वास्तविकता प्रतिबिम्बित होइत अछि।

४. ओम प्रकाश झा — 'सामन्त, जस जस सुरसा बदनु बढ़ाबा'

ओम प्रकाश झाक गद्य-रचना (पृ. १४६-१४७) व्यंग्यात्मक शैलीमे सामन्तवादक विस्तारमान रूपक चित्रण करैत अछि। 'जस जस सुरसा बदनु बढ़ाबा' — रामायणक उपमा द्वारा समकालीन सत्ता-संरचनाक आलोचना एकटा सुचिन्तित साहित्यिक प्रयोग थिक।

६. अब्दुर रज्जाक — बिहैन कथा

अब्दुर रज्जाकक दूटा बिहैन कथा (पृ. १८८-१९०) मैथिलीक मुस्लिम रचनाकारक परम्पराकेँ विदेहक समानान्तर मञ्चपर पुनः स्थापित करैत अछि। ओहिमे भाषाक शुद्धता आ मिथिलाक संयुक्त सांस्कृतिक परिवेशक जीवन्त उपस्थिति अछि।

७. राजीव कर्ण — बीहनिकथाक दशटा चित्र

राजीव कर्णक दशटा बीहनिकथा (पृ. १९१-१९८) — 'पौस', 'सिनेह', 'नेत', 'देखौवल हयाय', 'पैघ लोक', 'खुशी', 'उल्टा पुल्टा', 'फोटो कॉपी', 'जमाना', 'चतु भोजन' — मिथिला जीवनक विभिन्न आयामकेँ स्पर्श करैत अछि। 'पैघ लोक' आ 'चतु भोजन' जेहन कथामे राजीव कर्णक व्यंग्य-दृष्टि सर्वाधिक मुखरित होइत अछि।

८. नीरज कर्ण — बीहनिकथाक द्वन्द्व

नीरज कर्णक दूटा बीहनिकथा 'नोर' आ 'फादसन दे' (पृ. १९९) अत्यन्त संक्षिप्त मुदा मार्मिक अछि। 'नोर' शब्द स्वयंमे मिथिला-मानसक उस्मीदक एकटा प्रतीक बनि जाइत अछि — जे अश्रु थिक से दुखक नहि, बरन् संवेदनशीलताक प्रमाण।

९. राम सोगारथ यादव — 'सपना सपने अछि'

राम सोगारथ यादव (पृ. २००-२०२)क बीहनिकथाक नाम 'सपना सपने अछि' ऐ संकलनक एकटा उल्लेखनीय पाठ थिक। ई शीर्षक अपनामे एकटा दार्शनिक

वक्तव्य थिक — यथार्थ आ स्वप्नक बीचक सम्बन्धकेँ उद्घाटित करैत।

१०. नारायण मधुशाला — बिहैन कथा

नारायण मधुशालाक दूटा बिहैन कथा (पृ. २०३-२०५) मैथिली बिहैन कथाक विविध स्वरक एकटा महत्त्वपूर्ण हिस्सा थिक। ओ अपन लेखन-शैलीमे एकटा स्पष्ट सामाजिक चेतना राखैत छथि।

११. मलय नाथ मण्डन — 'समीकरण', 'बेकाजक काज', 'कोढ़िया'

मलय नाथ मण्डनक तीनटा बीहनिकथा (पृ. २०६-२१०) सामाजिक समीकरणक विभिन्न रूपकेँ उद्घाटित करैत अछि। 'कोढ़िया' बीहनिकथामे रोगग्रस्त व्यक्तिक प्रति समाजक व्यवहारक सूक्ष्म आलोचना अछि।

१२. जगदानन्द झा 'मनु' — बीहनिकथाक विविधता

जगदानन्द झा 'मनु'क बीहनिकथा (पृ. २११-२१४) — 'बेटाक बाप', 'रभसिल' आ प्रेम बीहनिकथाक श्रृंखला 'एसगर', 'प्रेम', 'सोहागिन', 'बेगरता', 'अगिला जनम', 'मुँह झौँसा' — जीवनक विभिन्न सम्बन्धक बड़ी सूक्ष्म पर्यवेक्षण प्रस्तुत करैत अछि। 'एसगर' (अकेला) बीहनिकथामे एकाकीपनक मनोवैज्ञानिक अनुभव बड़ी मार्मिकतासँ व्यक्त भेल अछि।

१३. विद्याचन्द्र झा 'बमबम' — व्यंग्य आ सामाजिक चेतना

विद्याचन्द्र झा 'बमबम' (पृ. २१५-२३८) ऐ संकलनक सर्वाधिक विपुल बीहनिकथाकारमे सँ एक थिकथि। हुनकर बीहनिकथाक सूची — 'आबक जमाय', 'अभगलाहा', 'आदति', 'भोंट', 'इलेक्सन', 'हेल्लो', 'नोन', 'साढ़े बाइस', 'मोहन भोग', 'जड़ैत चिमनी छाप', 'नोटक भोंट', 'हकार' — समकालीन मिथिला जीवनक राजनीतिक, आर्थिक आ सामाजिक विद्रूपताक एकटा सम्पूर्ण मानचित्र बनबैत अछि।

'नोटक भोंट' आ 'इलेक्सन' जेहन बीहनिकथामे चुनावी भ्रष्टाचार आ मतदाताक मानसिकताक जे चित्रण अछि, ओ एकटा सामाजिक व्यंग्यकारक परिपक्व दृष्टिक प्रमाण थिक। 'हकार' शब्द स्वयंमे मिथिला जीवनक एकटा सांस्कृतिक प्रतीक थिक। प्रेम बीहनिकथामे 'सिनेह', 'उड़ाँत', 'जूड़ाएब', 'पंचैती' — प्रेमक विभिन्न आयामकेँ अत्यन्त संक्षेपमे उद्घाटित करैत अछि।

१४. घनश्याम घनेरो — बीहनिकथाक महासंग्रह

घनश्याम घनेरोक बीहनिकथाक संग्रह (पृ. २३९-२७४) ऐ संकलनमे सर्वाधिक विस्तृत अछि। ३५ सँ अधिक बीहनिकथाक ई संग्रह — 'जमाना', 'नफासी', 'आवारा के?', 'पैरवी', 'खल्लास', 'पेटक अँटकर', 'प्रेम पेसगी', 'समुदाय', 'धुज्जा', 'निरमा', 'रक्तदान', 'दियाद-ताप', 'काँट', 'करता हूँ — स्त्रीलिंग', 'वर (?) साइत', 'जानेमन', 'आशीर्वाद', 'तेरे सिवा', 'फिरसान', 'सहरसाबाली', 'भठियारा', 'जिज्ञासा', 'काम अमर', 'सेट-तिथि', 'आवाज', 'कुकूर', 'सुपर बाए', 'शागिर्द', 'भ्रम', 'बट सावित्री', 'गुलबदन', 'गुणवत्ता', 'झटहा', 'होश', 'सुख-दुख', 'भूलचूक-लेनीदेनी' — मिथिला जीवनक एकटा विशाल सामाजिक कोश थिक।

'करता हूँ — स्त्रीलिंग' शीर्षक स्वयंमे एकटा लैंगिक राजनीतिक वक्तव्य थिक। 'गुलबदन' मे रोमान आ यथार्थक द्वन्द्व, 'रक्तदान' मे सामाजिक दायित्व-बोध आ 'भठियारा' मे मिथिला-संस्कृतिक एकटा विशिष्ट सामाजिक वर्गक जीवन-चित्र — घनश्याम घनेरोक व्यापक अवलोकन-दृष्टिक प्रमाण थिक।

१५. राजदेव मण्डल — 'एडजस्टमेंट' आ 'गंगजलिया पोखैर'

राजदेव मण्डल (पृ. २७५-२८२) दूटा भिन्न स्तरपर लिखैत छथि — लघुकथा 'एडजस्टमेंट' जे आधुनिक जीवनक समझौताकेँ व्यंग्यात्मक दृष्टिसँ देखैत अछि, आ बीहनिकथा 'गंगजलिया पोखैर' जे मिथिलाक जलस्रोतक पारम्परिक महत्त्वकेँ सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्यमे स्थापित करैत अछि।

१६. दिनेश रसिया — 'बाबा'

दिनेश रसियाक दूटा बीहनिकथा (पृ. २८३-२८४) मे 'बाबा' नाम विशेष उल्लेखनीय अछि। मिथिला जीवनमे 'बाबा' शब्दक जे सांस्कृतिक व्यापकता अछि — पितामह, सन्त, परमात्मा — ओ सभ एकटा बीहनिकथामे आयल संभव अछि।

१७. सत्यनारायण झा — 'सुटिया', 'कुमार साहेब', 'प्रजातन्त्र एकटा मजाक'

सत्यनारायण झाक तीनटा बीहनिकथा (पृ. २८५-२९२) मे 'प्रजातन्त्र एकटा मजाक' नाम विशेष रूपसँ उल्लेखनीय अछि। राजनीतिक व्यवस्थाक उपहासात्मक

चित्रण मिथिलाक सामाजिक यथार्थकेँ एकटा समालोचनात्मक परिप्रेक्ष्य दैत अछि।

१८. मनोज कुमार मण्डल — बीहनिकथाक विस्तृत संसार

मनोज कुमार मण्डल (पृ. २९३-३०८) अपन एगारह टा बीहनिकथा — 'हिलकोर', 'छुतहर', 'अध्यापन', 'अगरजीत', 'एना किए', 'उपवास', 'अवाक', 'लाल काकी', 'ठेकनगर', 'झूठक खेती', 'पड़ोसिया शाह' — आ एकटा लघुकथा 'युक्ति शक्ति'क संग उपस्थित छथि।

'छुतहर' बीहनिकथा स्पर्शास्पृश्यताक मुद्दाकेँ उठबैत अछि। 'अध्यापन' मे शिक्षा-व्यवस्थाक विडम्बना अछि। 'लाल काकी' मे एकटा स्त्री-पात्रक माध्यमे मिथिला जीवनक वृहत् सामाजिक सम्बन्धक जीवन्त चित्रण अछि। 'झूठक खेती' — ई शीर्षक अपनामे एकटा कृषि-समाजक रूपकसँ आधुनिक असत्यक संस्कृतिकेँ परिभाषित करैत अछि।

१९. प्रणव कुमार झा — 'नव-आशा'

प्रणव कुमार झाक लघुकथा 'नव-आशा' (पृ. ३०९-३१३) ऐ संकलनक उन्मेषमय पक्षकेँ प्रस्तुत करैत अछि। आशाक नवीन स्वरकेँ लघुकथाक माध्यमसँ प्रस्तुत कयल गेल अछि।

२०. चन्दना दत्त — 'बाबा लालदास'

चन्दना दत्तक 'बाबा लालदास' (पृ. ३१४-३१८) एकटा विशिष्ट व्यक्तित्व-केन्द्रित रचना थिक। बाबा लालदासक व्यक्तित्वमे मिथिला-भक्ति-परम्पराक एकटा जीवन्त अध्याय अछि।

२१. नवेन्दु कुमार झा — साहित्य अकादेमीक आलोचना

नवेन्दु कुमार झाक आलेख 'गाम मे समटि रहल प्रभाव आ चचा भेल वैश्विक प्रभावक — साहित्य अकादेमीक भुसकौल मण्डलीक कारनामा' (पृ. ३१९-३२५) विदेहक वैचारिक स्थितिकेँ सबसँ स्पष्ट रूपमे अभिव्यक्त करैत अछि।

ई आलेख साहित्य अकादेमीक संस्थागत अर्थनीतिक विरुद्ध एकटा तर्कपूर्ण हस्तक्षेप थिक। 'भुसकौल मण्डली' — ई पद एकटा विशिष्ट आलोचनात्मक शब्द थिक जे संस्थागत साहित्यिक राजनीतिक वर्गकेँ सम्बोधित करैत अछि। गाम आ वैश्विकताक बीचक तनावकेँ आलोचनाक आधार बनेनाइ विदेहक उस परम्पराक हिस्सा थिक जे केन्द्र-परिधिक विभाजनकेँ चुनौती दैत अछि।

२२. डॉ. कैलाश कुमार मिश्र — लोकसंस्कृतिक महागाथा

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र (पृ. ३२६-५१५) ऐ संकलनक सर्वाधिक विस्तृत योगदानकर्ता थिकथि — एक दीर्घकथा 'परिस्थिति लेखिका' आ नवटा लोकसंस्कृति-विमर्श आलेख।

दीर्घकथा: 'परिस्थिति लेखिका'

'परिस्थिति लेखिका' एकटा विचारोत्तेजक दीर्घकथा थिक जे अकादमिक जीवन, साहित्यिक महत्त्वाकांक्षा, स्त्री-पुरुष सम्बन्ध आ मिथिलाक ब्राह्मण-बौद्धिक वर्गक जीवन-यथार्थकेँ बड़ी सूक्ष्मतासँ उद्घाटित करैत अछि।

नन्दिता आ प्रोफेसर सुवाकरक घरमे राघवक अनुभव — गन्दगी, असुविधा, अव्यवस्था आ ओही बीच नन्दिताक बौद्धिक आकर्षण — ई द्वन्द्व कथाकेँ एकटा तीव्र मनोवैज्ञानिक तनाव दैत अछि। कैलाश कुमार मिश्र यथार्थवादी चित्रण-शैलीमे पात्रक मनोविज्ञानकेँ बड़ी कुशलतासँ उद्घाटित करैत छथि।

लोकसंस्कृति-विमर्श

'सुग्गा आ श्रृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्यमे', 'मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक', 'फाटू हे धरती: सीता दाईक वेदना', 'मैथिली संस्कृतिक अवयव', 'मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भर्थरी आ गोपीचन्द', 'राजस्थान केर मन्दसोर मे रावण आ मन्दोदरीक विवाह: लोक इतिहासक मूर्त आ अमूर्त प्रमाण', 'छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन', 'मैथिली लोकगीतमे भोजनक विहयास', आ 'सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता' — ई नवटा आलेख मिथिला लोकसंस्कृतिक एकटा महत्त्वपूर्ण अकादमिक दस्तावेज थिक।

विशेष रूपसँ 'सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता' — ई आलेख लोक इतिहासक एकटा विलक्षण तुलनात्मक अध्ययन थिक जे मिथिला आ गुजरातक बीच सांस्कृतिक-धार्मिक सम्बन्धक एकटा नवीन परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करैत अछि। कुमार गगनक ई-पत्र (पृ. ५१६) एहि आलेखक महत्त्वकेँ रेखांकित करैत अछि।

२३. राजेश वर्मा 'भवादित्य' — बीहनिकथा

राजेश वर्मा 'भवादित्य'क बीहनिकथा (पृ. ५१७) ऐ संकलनक उपस्थिति भले संक्षिप्त हो, मुदा ई मैथिली बीहनिकथाक विविध प्रवाहक एकटा आवश्यक अंग थिक।

२४. रवि भूषण पाठक — 'फसाद आ आनन्द', 'दोस्तीक जिनगीमे झड़बैर काल'

रवि भूषण पाठक (पृ. ५१८-५२७) दूटा भिन्न विधामे उपस्थित छथि — लघुकथा 'फसाद आ आनन्द' आ व्यंग्य 'दोस्तीक जिनगीमे झड़बैर काल'। 'फसाद आ आनन्द' मे सामाजिक संघर्षक बीच आनन्दक सन्धान एकटा विरोधाभासी किन्तु मानवीय अनुभव थिक। व्यंग्य-लेखनमे रवि भूषण पाठकक शैली व्यावहारिक यथार्थसँ जुड़ल अछि।

२५. विनीत उत्पल — जानकी नवमीक संगोष्ठीक प्रतिलिपि

विनीत उत्पल (पृ. ५२८-५६८) जानकी नवमीक मौकापर गान्धी दर्शन एवं स्मृति समितिक आयोजित परिचर्चामे वक्ता लोकनिक वक्तव्यक ट्रांसक्रिप्ट आ अनुवाद प्रस्तुत कयलनि। पंकज मिश्र, अमरनाथ झा, राजेश झा, सविता खान, अरविन्द कुमार झा, मनीहर नाथ ठाकुर, शेफालिका वर्मा, वेदव्यास कुन्दू, आर.के. सिंह, प्रभात झा, प्रचण्ड पौटील्य, माया देवी, कृष्णा प्रसाद — ई लोकनिक वक्तव्य मैथिलीक सांस्कृतिक-साहित्यिक विमर्शक एकटा विविध परिदृश्य प्रस्तुत करैत अछि।

२६. आशीष अनचिन्हार — 'संशोधन केर मतलब विनाश नहि होइ छै'

आशीष अनचिन्हार (पृ. ५६९-५९२) मैथिली गजलक व्याकरण-विवादपर एकटा महत्त्वपूर्ण वैचारिक हस्तक्षेप करैत छथि। सुरेन्द्रनाथजी द्वारा हुनकर गजल-व्याकरण सम्बन्धी आलेखक आलोचनाक उत्तरमे लिखल ई आलेख मैथिली गजल-परम्पराक ऐतिहासिक-वैचारिक पुनर्परीक्षण करैत अछि।

पं. जीवन झा, कवित्तर सीताराम झा आ मधुपजीकेँ मैथिली गजलक 'असल प्रवर्तक' कहैत आशीष अनचिन्हार एकटा वंश-रेखा स्थापित करैत छथि। हिन्दी-अनुकरणकेँ मैथिलीक प्रमुख दोष मानैत छथि। 'संशोधन केर मतलब विनाश नहि होइ छै' — ई शीर्षक अपनामे एकटा सन्तुलित आलोचनात्मक दृष्टिक घोषणा थिक जे परम्पराक संरक्षणक संगहि प्रयोगशीलताकेँ स्वीकार करैत अछि।

२७. उमेश मण्डल आ पुनम मण्डल — सगर राति दीप जरय

उमेश मण्डल आ पुनम मण्डल (पृ. ५९३-६४३) 'सगर राति दीप जरय' आन्दोलनक ७९म सँ ९१म खेप धरिक विस्तृत विवरण प्रस्तुत करैत छथि। गोशनपुर (२४ सितम्बर २०१६) सँ लऽकय लक्ष्मीनियाँ धरि — ई आयोजनक दस्तावेजीकरण विदेहक मूल उद्देश्यक एकटा जीवन्त अभिव्यक्ति थिक।

उमेश मण्डलक 'सगर राति दीप जरय'क इतिहास (पृ. ६४४-६८१) ई आन्दोलनक एकटा सम्पूर्ण दस्तावेज थिक जे विदेह-समानान्तर परम्पराक एकटा मूर्त सामाजिक अभिव्यक्ति थिक।

२८. विदेह सम्मान समारोह — समानान्तर साहित्य अकादेमी

विदेह सम्मान समारोहक सचिव विवरण (पृ. ६८२-७६४) ऐ संकलनक एकटा महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज थिक। साहित्य अकादेमीक समानान्तरमे स्थापित ई सम्मान-व्यवस्था विदेहक उस वैकल्पिक संस्थागत दृष्टिकेँ मूर्त रूप दैत अछि जे लोकतान्त्रिक, गैर-संकीर्ण आ व्यापक समावेशी थिक।

पद्य-खण्डक समीक्षा

१. राम सोगारथ यादव — मैथिली कविताक विस्तृत विश्व

राम सोगारथ यादव (पृ. ७६६-८५३) पद्य-खण्डक सर्वाधिक विस्तृत योगदानकर्ता थिकथि। हुनकर काव्य-संसार अत्यन्त व्यापक अछि — 'गरिब', 'देश प्रति स्नेह', 'समुन्दर पार', 'हमर बिनती', 'हे युवा उठू', 'रोकू दहेजकेँ', 'लोभ किए?', 'महानुभाव ज्यू!', 'घूसकेँ जूस बन्द करू', 'भुत लागल कतेकेँ?', 'नोर बिरान भेल', 'प्रलय अहीं छी', 'नव मिथिलाक निर्माण करैत चलू' — ई सभ कविता सामाजिक-राजनीतिक विषयकेँ केन्द्रमे राखैत अछि।

'गरिब' कविताक संरचना मैथिली कविताक एकटा सुपरिचित लय-प्रवाहमे अछि मुदा विषयवस्तु बड़ी तीव्र अछि — गरीबीक सामना करैत जीवनयापनक संघर्ष। 'देश प्रति स्नेह' कविताक स्वप्न-क्रमसँ प्रारम्भ एकटा अनूठी काव्य-संरचना थिक जे देशप्रेमकेँ एकटा व्यापक मानवीय परिप्रेक्ष्यमे रखैत अछि।

'प्रवासक चपेटा', 'प्रवासीके होली सपनामे', 'भाग्य बिदेशमे' — ई कविता आधुनिक मिथिला-जीवनक प्रवासी अनुभवकेँ कवितामे परिणत करैत अछि। 'बटोहिया' (एकटा पारम्परिक शब्द) आ 'कसैया मोथा' (एकटा लोकजीवनक प्रतीक) — ई दुनू शब्द राम सोगारथ यादवक मिथिला-जड़िसँ जुड़ाव प्रकट

करैत अछि।

गजल आ आजाद गजलक रचनामे राम सोगारथ यादव गजल-विधाक परीक्षण करैत छथि। हुनकर गजल मैथिली गजलक लोकधर्मी परम्पराक हिस्सा थिक।

२. मंगलेश डबराल — हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद

मंगलेश डबरालक सातटा हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद (पृ. ८५४-८५७) विनीत उत्पल द्वारा कयल गेल अछि। हिन्दी कविताकेँ मैथिलीमे आनब एकटा सांस्कृतिक सेतु-निर्माण थिक। मंगलेश डबरालक प्रगतिशील काव्य-दृष्टि मैथिलीक समानान्तर साहित्य आन्दोलनसँ वैचारिक समानता राखैत अछि।

३. पंकज चतुर्वेदी — शायरी आ कविताक मैथिली भावानुवाद

पंकज चतुर्वेदीजीक किछु शायरी आ कविताक मैथिली अनुवाद-भावानुवाद (पृ. ८५८-८६६) आशीष अनचिन्हारक द्वारा कयल गेल अछि। ई अनुवाद-कार्य मैथिली अनुवाद-परम्पराक एकटा महत्त्वपूर्ण अंग थिक।

४. सन्तोष चतुर्वेदी — हिन्दी कविताक मैथिली अनुवाद

सन्तोष चतुर्वेदीक दूटा हिन्दी कवितक मैथिली अनुवाद (पृ. ८६७-८६८) आशीष अनचिन्हारक द्वारा कयल गेल अछि। ई अनुवाद-कार्य मैथिलीक सांस्कृतिक आत्मसात-क्षमताक प्रमाण थिक।

५. वीरू सोनकर — दलित कविताक मैथिली भावानुवाद

वीरू सोनकर केर तीनटा हिन्दी कविताक मैथिली भावानुवाद (पृ. ८६९-८७३) आशीष अनचिन्हारक द्वारा कयल गेल अछि। दलित-काव्य-दृष्टिकेँ मैथिलीमे आनब विदेहक समानान्तर साहित्य आन्दोलनक उस समावेशी स्वभावक प्रमाण थिक जे हाशियाक आवाजकेँ केन्द्रमे लबैत अछि।

६. आशीष अनचिन्हार — बाल गजल आ गजल

आशीष अनचिन्हार (पृ. ८७४-९०२) मैथिली गजलक एकटा विशिष्ट शिल्पकार थिकथि। हुनकर बाल गजल आ किछु गजलक संग्रह मैथिली गजल-विधाक एकटा महत्त्वपूर्ण योगदान थिक।

बाल गजलमे 'उजड़ैए जे आँगन बाबा / नाचैए पतराखन बाबा' — ई रदीफ-काफिया-संरचना अत्यन्त कुशलतासँ निर्मित अछि। आशीष अनचिन्हार प्रत्येक गजलक संग मात्राक्रम-विवरण देने छथि जे हुनकर गजल-शास्त्रक गहन अध्ययनक प्रमाण थिक। 'सभ पाँतिमे २२-२२-२२-२२ मात्राक्रम अछि' जेहन स्पष्टीकरण पाठककेँ गजलक शास्त्रीय आधार समझबामे सहायक होइत अछि।

हुनकर नियमित गजलमे 'आँखिमे बहार छै / हातमे उजार छै' — ई मत्लासँ गजलक शुरुआत होइत अछि। प्रत्येक शेरमे एकटा स्वतन्त्र काव्य-इकाई निर्मित होइत अछि जे गजल-विधाक मौलिक लक्षण थिक। 'हुनके चूड़ा / हुनके पिज्जा / कोन आजादी / पुछितो लज्जा' — ई द्विपदी गजलक एकटा प्रयोगात्मक रूप थिक।

७. मनोज कुमार मण्डल — गजल, कविता आ बाल-काव्य

मनोज कुमार मण्डल (पृ. ९०३-९३७) ऐ संकलनमे पद्य-खण्डक सर्वाधिक विविध योगदान देने छथि। किछु गजल, 'रिश्ता-नाता', 'भरदुतिया', 'मोती', 'दीप', 'जानकी', 'अकरहर', 'दिपावली', 'परदेशी', 'कला', 'खुशी', 'पंडित', 'माय!', 'भाय!', 'मायक बदलैत छवि', 'कलह कली', 'वीरक पत्नी', 'देशी कौआ', 'बताह', 'भूख', 'उधारी सामान', 'भीखमंगा', 'चुट्टी', 'आब हमरा दे पोथी कीन', 'चंदा मामा' — ई विशाल काव्य-संग्रह मैथिली जीवनक एक विस्तृत काव्यात्मक परिदृश्य प्रस्तुत करैत अछि।

'माय!' आ 'भाय!' — ई दूटा विस्मयादिबोधक कविता मैथिली जीवनक मूल सम्बन्ध-बोधकेँ एकटा भावुक काव्यात्मक अभिव्यक्ति दैत अछि। 'देशी कौआ' मे भारतीय लोक-जीवनक एकटा परिचित प्रतीकसँ आधुनिक यथार्थकेँ जोड़ल गेल अछि। बाल-कविता 'चंदा मामा' पारम्परिक मैथिली लोरी-शैलीमे लिखल गेल अछि।

८. ओम प्रकाश झा — गजल

ओम प्रकाश झाक किछु गजल (पृ. ९३८-९३९) मैथिली गजल-परम्पराक एकटा महत्त्वपूर्ण अंग थिक। संक्षिप्त उपस्थिति मुदा काव्य-दृष्टि स्पष्ट।

९. बाबा बैद्यनाथ — आजाद बाल गजल आ गजल

बाबा बैद्यनाथ (पृ. ९४०-९४९) 'आजाद बाल गजल', बाल कविता 'बाबा-पोताक सिनेह' आ किछु आजाद गजल लऽकय उपस्थित छथि। बाल-साहित्यमे उनकर योगदान मैथिलीक नवीन पीढ़ीक लेल महत्त्वपूर्ण थिक।

१०. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' — गजल

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' (पृ. ९५०-९७५) — मैथिली गजलमे अनिलजीक उपस्थिति एकटा विशिष्ट पहचान राखैत अछि। हुनकर किछु गजलक विस्तृत संग्रह ऐ संकलनमे उपस्थित अछि।

११. जगदानन्द झा 'मनु' — भक्ति गजल, गजल आ कविता

जगदानन्द झा 'मनु' (पृ. ९७६-९८२) पद्य-खण्डमे भक्ति-गजल, गजल आ कविताक संग उपस्थित छथि। भक्ति-गजल मैथिली काव्य-परम्पराक उस धाराक प्रतिनिधित्व करैत अछि जे विद्यापति सँ चलि आएल अछि।

१२. सन्तोष कुमार झा — 'सामा-चकेबा', 'सुजनी शिल्प', 'अथर्वण'

सन्तोष कुमार झाक तीनटा कविता (पृ. ९८३-९९२) मिथिला-संस्कृतिक विभिन्न आयामकेँ काव्यात्मक रूप दैत अछि। 'सामा-चकेबा' मिथिलाक लोक-परम्पराक एकटा विशिष्ट पर्व-उत्सवकेँ केन्द्रमे राखैत कविता निर्मित करैत अछि। 'सुजनी शिल्प' मिथिलाक हस्तशिल्प-परम्पराक काव्यात्मक उत्सव थिक।

१३. अशरफ राइन — गजल

अशरफ राइनक गजल (पृ. ९९३) मैथिलीक मुस्लिम काव्य-परम्पराक एकटा अमूल्य योगदान थिक। संक्षिप्त उपस्थिति मुदा सांस्कृतिक महत्त्व अत्यन्त व्यापक — मैथिलीक बहुसांस्कृतिक स्वरकेँ यथार्थ बनबैत।

१४. नारायण मधुशाला — गीत

नारायण मधुशालाक गीत (पृ. ९९४) मैथिलीक गीत-परम्पराक एकटा लयबद्ध योगदान थिक।

१५. दिनेश रसिया — गजल

दिनेश रसियाक गजल (पृ. ९९५) हुनकर गद्य-उपस्थितिक संगहि पद्यमे सेहो एकटा सम्पूर्ण साहित्यिक व्यक्तित्वकेँ प्रकट करैत अछि।

१६. सुकोशुत शिशिर — 'फूइस बाजी त' वज्र खसहता'

सुकोशुत शिशिरक रचना (पृ. ९९६-९९८) — शीर्षके मैथिलीक लोकोक्ति-परम्परासँ प्रेरित अछि। 'फूइस बाजी त' वज्र खसहता' — असत्य बोलनाइ एकटा वज्र-प्रहारकेँ निमन्त्रण दैत अछि, ई नैतिक-काव्यात्मक वक्तव्य थिक।

१७. राजदेव मण्डल — 'शिशुक स्वर'

राजदेव मण्डलक 'शिशुक स्वर' (पृ. ९९९) बाल-काव्यक माध्यमसँ जीवनक निर्मलताकेँ व्यक्त करैत अछि।

१८. सृजन शेखर 'अज्ञेय' (मूल नाम: गंगानन्द झा) — दूटा कविता

सृजन शेखर 'अज्ञेय' (पृ. १०००-१००३) दूटा कविता लऽकय उपस्थित छथि। 'अज्ञेय' नाम हिन्दी के प्रसिद्ध कवि स.ही.वात्स्यायन 'अज्ञेय'क सम्मानमे राखल गेल होयत — ई नामान्तरण मैथिली आ हिन्दी साहित्यक बीचक सांस्कृतिक संवादक प्रतीक थिक।

१९. डॉ. शशिधर कुमार — बाल कविता

डॉ. शशिधर कुमार (पृ. १००४-११७३) ऐ संकलनमे पद्य-खण्डमे सर्वाधिक विस्तृत योगदान देने छथि — बाल कविताक एकटा विशाल संग्रह। मैथिलीमे बाल-साहित्यक एहि विस्तृत उपस्थिति विदेहक उस दायित्वक प्रमाण थिक जे आयु-समूहक सभ स्तरपर मैथिली भाषाक विकासक प्रतिबद्ध अछि।

२०. अब्दुर रज्जाक राइन — कता, गजल आ 'मुसहर डोम आ चमार'

अब्दुर रज्जाक राइन (पृ. ११७४-११८३) किछु 'कता' (कथागजल?), किछु गजल आ 'मुसहर डोम आ चमार' नामक रचनासँ उपस्थित छथि। 'मुसहर डोम आ

चमार' — ई शीर्षक अपनामे मैथिलीक सुबाल्टर्न-साहित्यिक परम्पराकेँ पुनः मुखरित करैत अछि। मिथिलाक हाशियाकृत जातियक जीवन-यथार्थकेँ मैथिली कवितामे स्थान देनाइ विदेहक लोकतान्त्रिक साहित्यिक दृष्टिक सर्वोत्तम उदाहरण थिक।

हुनकर गजलमे 'देश अहाँ संगे, प्रदेश अहाँ संगे / जे बीतल ओ पल बेश अहाँ संगे' — ई मत्लामे प्रेम आ देशप्रेम एकाकार होइत अछि।

२१. प्रयास प्रेमी मैथिल — किछु कविता आ गजल

प्रयास प्रेमी मैथिल (पृ. ११८४-१३१५) पद्य-खण्डमे सेहो एक विस्तृत उपस्थिति राखैत छथि। गद्य-खण्डमे नाटक प्रस्तुत करनहार ई रचनाकार कविता-गजल-विधामे सेहो सक्रिय छथि।

२२. राजेश मोहन झा 'गुंजन' — 'बिनु राधाक ब्रज' आ अन्य

राजेश मोहन झा 'गुंजन' (पृ. १३१६-१३२३) 'बिनु राधाक ब्रज', 'जनचेतना आ मानव वेदनाक प्रतिनिधि कवि यात्रीजी केर जन्मदिवस पर', बाल कविता 'भादवक अहिरिया', आ 'कृष्ण छठिहारक पद' लऽकय उपस्थित छथि। 'बिनु राधाक ब्रज' — राधाक अनुपस्थितिमे ब्रजक सूनापन — ई प्रेम-काव्यक एकटा मार्मिक बिम्ब थिक। यात्रीजी (नागार्जुन) केर जन्मदिवस पर लिखल कविता मैथिली काव्य-परम्पराक उस महान लोकधर्मी धाराकेँ सम्मानित करैत अछि।

२३. मनोज झा 'मुक्ति' — 'प्रकृतिसँ अनुनय'

मनोज झा 'मुक्ति' (पृ. १३२४-१३२७) प्रकृति-काव्यक एकटा महत्त्वपूर्ण प्रतिनिधि थिकथि। 'प्रकृतिसँ अनुनय' — प्रकृतिसँ प्रार्थना — ई शीर्षक पर्यावरण-चेतनाक काव्यात्मक अभिव्यक्ति थिक।

२४. रौशन कुमार झा 'गोविन्द' — 'कसैया दहेज'

रौशन कुमार झा 'गोविन्द' (पृ. १३२८-१३३२) 'कसैया दहेज' — दहेज-प्रथाक सामाजिक उत्पीड़नकेँ काव्यमे रूपान्तरित करैत अछि। 'कसैया' (कठुआएल, जमल हुआ) — ई विशेषण दहेजक जड़बद्ध सामाजिक यथार्थकेँ एकटा तीव्र बिम्बमे समेटि लैत अछि।

२५. रवि भूषण पाठक — विविध काव्य

रवि भूषण पाठक (पृ. १३३३-१३४१) — 'श्री लक्ष्मी चौधरी', 'करियनक सम्मान मे', 'हजार-लाख मे', 'शहकन', 'खट्टा चुक्क', 'मीत्ता-2', 'हरियर', 'बहुत किछु विदा भ' गेल रहै', 'व्यर्थ प्रलापी', 'झाबाद', आ बाल कविता 'क', 'मानसून', 'सुन वौआ सुन', 'ब्लेक होल' — विशाल काव्य-रेंज। 'श्री लक्ष्मी चौधरी' एकटा स्त्री-व्यक्तित्वकेँ काव्यात्मक श्रद्धांजलि थिक। 'झाबाद' मे क्षेत्रीय पहचान-राजनीतिक व्यंग्य अछि।

२६. प्रणव कुमार झा — 'अलर-बलर'

प्रणव कुमार झाक 'अलर-बलर' (पृ. १३४२-१३४६) — 'अलर-बलर' शब्द मिथिलाक बोलचालसँ लयल गेल अछि जे विखरल-बिखरल वस्तुकेँ बुझाइत अछि। ई एकटा प्रयोगशील काव्य-शीर्षक थिक।

२७. विन्देश्वर ठाकुर — 'सामा'

विन्देश्वर ठाकुरक 'सामा' (पृ. १३४७-१३४८) मिथिलाक सामा-चकेबा परम्पराकेँ काव्यात्मक आधार दैत अछि। ई लोक-उत्सवकेँ कविता-रूप देनाइ मैथिली काव्यक लोकधर्मी धाराक निरन्तरता थिक।

२८. लालदेव कामत — 'उर्फ नाम'

लालदेव कामतक 'उर्फ नाम' (पृ. १३४९-१३५०) — नामक बहुलतासँ जुड़ल एकटा काव्यात्मक दार्शनिक अन्वेषण।

२९. राम प्रीत पासवान — 'भूतक बाप पिशाच उर्फ आशारामक जोड़ा'

राम प्रीत पासवान (पृ. १३५१-१३५४) — ई शीर्षक स्वयंमे एकटा व्यंग्यात्मक राजनीतिक वक्तव्य थिक। आशारामक नाम समकालीन धार्मिक-राजनीतिक प्रपञ्चक एकटा प्रतीक बनि गेल अछि।

३०. किशन कारीगर — 'इस्कूल'

किशन कारीगरक 'इस्कूल' (पृ. १३५५-१३५६) — विद्यालयक अनुभवकेँ काव्यात्मक रूप दैत। 'इस्कूल' (स्कूल) — लोकभाषाक उच्चारणमे ई शब्द

विद्यालयक सामाजिक यथार्थकेँ आरो वास्तविक बना दैत अछि।

३१. सुशान्त झा 'अवलोकित' — 'नेनपन'

सुशान्त झा 'अवलोकित'क 'नेनपन' (पृ. १३५७-१३५८) — ई संकलनक अन्तिम रचना। 'नेनपन' (बचपन) — ई शब्द मिथिला-जीवनक उस निर्मल स्मृतिक प्रतीक थिक जे सभ साहित्यिक यात्राक मूल प्रेरणा होइत अछि। संकलनक समापन ऐ शब्दसँ होनाइ एकटा साहित्यिक औचित्य राखैत अछि।

निष्कर्ष

विदेह-सदेह-१९ एकटा साहित्यिक महाकोश थिक — गद्य आ पद्यक सम्मिलित प्रवाहमे ३१ सँ अधिक रचनाकार, विभिन्न विधा, विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि, विभिन्न वैचारिक प्रतिबद्धता — सभ एकत्र। मुन्ना जीक बीहनिकथाक सैद्धान्तिक स्थापना, आशीष अनचिन्हारक गजल-व्याकरण-विमर्श, डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक लोकसंस्कृति-अध्ययन, राम सोगारथ यादवक विशाल काव्य-संसार, घनश्याम घनेरोक सामाजिक बीहनिकथाक महासागर, अब्दुर रज्जाक राइनक दलित-मुस्लिम आवाज — ई सभ मिलाकय एकटा ऐहन मैथिली साहित्यक तस्वीर उभरैत अछि जे किसी एकटा वर्ग वा विचारधाराक बन्धक नहि।

ई संकलन प्रमाणित करैत अछि जे मैथिली साहित्य सदिकाल जीवित रहल — कोनो पुरस्कारक प्रतीक्षामे नहि, बरन् अपन भाषाई-सांस्कृतिक अस्तित्वक अन्त:शक्तिसँ। विदेह-सदेह-१९ मैथिलीक उही अटल जिजीविषाक एकटा प्रमाण-पत्र थिक।

— *विदेह समानान्तर साहित्य आन्दोलन अभिलेखागार*

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह-सदेह १९: एकटा समग्र साहित्यिक समीक्षा — (विदेह पेटार अंक २०१-२१६ सँ, मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ गद्य आ पद्यक समानान्तर संकलन)

अध्याय 37 · विदेह सदेह-२०: विस्तृत मैथिली साहित्यिक समीक्षा — स्रोत: विदेह ई-पत्रिका, अंक २१७-२५० | सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर

सारांश ISSN 2229-547X VIDEHA २. गद्य खण्ड: लेखक आ रचना समीक्षा २.१ गजेन्द्र ठाकुर — मैथिली सी.डी. एल्बम गजेन्द्र ठाकुर ई लेखमे मैथिलीक सांगीतिक (म्युजिकल, अर्थात् संगीत-सम्बन्धी) विरासत (हेरिटेज, अर्थात् धरोहर) केँ दस्तावेज (डॉक्युमेन्ट अर्थात् लिखित प्रमाण) करैत छथि। धनीराम महतोक सल्हेश-गायन जे दरभंगा रेडियो स्टेशनक आर्काइव (अर्थात् संग्रह-भण्डार) सँ सेहो अनुपलब्ध भऽ गेल, तकर उल्लेख मर्मस्पर्शी अछि। बाल सी.डी. अल्बमक सर्वथा अभाव पर जे टिप्पणी अछि, ओ मैथिलीक एकटा वास्तविक संकटकेँ उजागर (एक्सपोज, अर्थात् प्रकाशमे अनब) करैत अछि।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · बाल-साहित्य · आलोचना · सांस्कृतिक अध्ययन

ISSN 2229-547X VIDEHA

२. गद्य खण्ड: लेखक आ रचना समीक्षा

२.१ गजेन्द्र ठाकुर — मैथिली सी.डी. एल्बम

गजेन्द्र ठाकुर ई लेखमे मैथिलीक सांगीतिक (म्युजिकल, अर्थात् संगीत-सम्बन्धी) विरासत (हेरिटेज, अर्थात् धरोहर) केँ दस्तावेज (डॉक्युमेन्ट, अर्थात् लिखित प्रमाण) करैत छथि। धनीराम महतोक सल्हेश-गायन जे दरभंगा रेडियो स्टेशनक आर्काइव (अर्थात् संग्रह-भण्डार) सँ सेहो अनुपलब्ध भऽ गेल, तकर उल्लेख मर्मस्पर्शी अछि। बाल सी.डी. अल्बमक सर्वथा अभाव पर जे टिप्पणी अछि, ओ मैथिलीक एकटा वास्तविक संकटकेँ उजागर (एक्सपोज, अर्थात् प्रकाशमे अनब) करैत अछि। लेखक मात्र सूची प्रस्तुत नहि करैत छथि, बल्कि सांस्कृतिक चिन्ता सेहो व्यक्त करैत छथि।

२.२ दिनेश यादव — नेपालमे मैथिली गीत-संगीतक अवस्था

ई लेख नेपालक मिथिला क्षेत्रक सांगीतिक परिदृश्य (लैन्डस्केप, अर्थात् समग्र स्थिति) केर तलस्पर्शी (इन-डेप्थ, अर्थात् गहराईसँ) विश्लेषण थिक। दिनेश यादव गुरुदेव कामत, मुरलीधर, उदितनारायण झा आदिक योगदानकेँ रेखाङ्कित (हाइलाइट, अर्थात् प्रमुखतासँ उल्लेख) करैत स्वनामधारी 'कार्टेलिङ' (cartel-ing, अर्थात् एकाधिकारवादी गुटबन्दी) आ 'सिन्डीकेट प्रथा' (syndicate, अर्थात् संगठित स्वार्थी समूह) पर जोरदार प्रहार करैत छथि। ई भाषा साफ, खरखरी आ बेधक (पेनेट्रेटिंग, अर्थात् तीक्ष्ण) अछि। लेखक फेसबुक, एफएम, रेकर्डिङ स्टुडियो आदि आधुनिक माध्यमसँ मैथिली गीतपर पड़ैत दबावकेँ सेहो चिन्हैत छथि।

२.३ प्रदीप पुष्प — सिनेहिया एल्बम समीक्षा

ई एकटा विधिसम्मत (फॉर्मल, अर्थात् व्यवस्थित तरीकासँ कएल) संगीत-समीक्षा (म्युजिक रिव्यू) थिक। कुंज बिहारी मिश्रक 'सिनेहिया' एल्बमक सातू गीतपर क्रमश: चर्चा कएल गेल अछि। समीक्षक गायकी (वोकल स्टाइल), संगीत संयोजन (म्युजिकल अरेंजमेन्ट, अर्थात् वाद्ययन्त्रक समन्वय), शब्द-शक्ति आ गजल-व्याकरण — सभकेँ अलग-अलग परखैत छथि। 'नैनसँ नैन मिलल नशा बेजोड़ भेलै' केँ 'सबसँ उम्दा गीत' कहब उचित बुझाइत अछि। की-बोर्ड आ ढोलकक एकरसतापर, बाँसुरीक अभावपर टिप्पणी तथ्यपरक (फैक्चुअल, अर्थात् तथ्यावरोधी) अछि।

२.४ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र — बहुविध लेखन

डॉ. मिश्र ई संग्रहक सभसँ विपुल (प्रोलिफिक, अर्थात् बेसी उत्पादन कएनिहार) लेखक छथि — पृ. ४३-१५८ धरि। हुनक लेखन विविध विषयक छनि: मधुश्रावणी केर नृतत्त्वशास्त्रीय (एन्थ्रोपोलॉजिकल, अर्थात् मानवशास्त्रक दृष्टिसँ) विवेचन, मैथिलानी पर विमर्श (डिस्कोर्स, अर्थात् विचार-विमर्श), योग गीतमे प्रेम-तन्त्र, तमाकूलक दुष्प्रभाव, मणिपुरक महाराजा पंहिबापर लेख। हुनकर शोधपरक (रिसर्च-ओरिएन्टेड, अर्थात् गवेषणात्मक) दृष्टि, प्राथमिक स्रोत (प्राइमरी सोर्स, अर्थात् मूल स्रोत) आ क्षेत्रकार्य (फील्डवर्क) पर आधारित लेखन मैथिली आलोचनाक लेल बड मूल्यवान थिक।

२.५ नन्द विलास राय — हास्य कथाकार

'हमर लॉटरी निकलल', 'चरित्तर कक्काक ब्लडपेसर', 'कठही साइकिल', 'हमर पत्नीक मनोरथ' — ई रचना सभ मैथिलीक हास्य-व्यंग्य (सेटायर, अर्थात् व्यङ्ग्यात्मक लेखन) परम्पराकेँ आगाँ बढ़बैत अछि। राय जीक शैली (स्टाइल) मे ग्राम्य परिवेश (रूरल सेटिंग, अर्थात् गामक वातावरण) बड स्वाभाविक रूपेँ उभरैत अछि। भाषा लोकव्यवहारक (कोलोक्विअल, अर्थात् बोलचालक) अछि, पात्र जीवन्त छथि। मिथिलाक सामाजिक रूपान्तरण (सोशल ट्रान्सफॉर्मेशन, अर्थात् समाजिक परिवर्तन) केर हास्यास्पद पक्षकेँ ई लेखक कुशलतापूर्वक उकेरैत छथि।

२.६ रबीन्द्र नारायण मिश्र — वृहत् (वाइड-रेन्जिंग) गद्यकार

पृ. २३३-४५१ धरि फैलल ई खण्ड संग्रहक सभसँ विस्तृत एकल योगदान थिक। यूरोप यात्रा, अमृतसर यात्रा, बिधवा विवाह, IPC 498A पर लेख, राँची संस्मरण — विषयसँ विषयपर जे बहुमुखी यात्रा छनि, ओ मिश्रजीकेँ एकटा पूर्णकालिक (फुल-टाइम) गद्यकारक रूपमे स्थापित करैत अछि। भाषा सहज आ प्रवाहमय (फ्लुइड, अर्थात् धारावाही) अछि। वैधानिक (लीगल) आ सामाजिक विषयक आत्मविश्वासपूर्ण हैन्डलिंग (handling, अर्थात् प्रस्तुति) हुनकर बौद्धिक (इन्टेलेक्चुअल, अर्थात् विचारशील) विस्तारकेँ प्रकट करैत अछि।

२.७ डॉ. शिव कुमार प्रसाद — दलित विमर्श

'दलित साहित्यकेँ आन साहित्यसँ फुटकेबाक प्रयोजन' ई निबन्ध मैथिलीमे दलित साहित्य विमर्श (दलित लिटरेरी डिस्कोर्स, अर्थात् दलित साहित्यिक चर्चा) केर एकटा महत्त्वपूर्ण दस्तावेज थिक। डॉ. शिव कुमार प्रसाद प्रश्न उठबैत छथि जे दलित अनुभव (experience, अर्थात् अनुभूति) किएक स्वतन्त्र (ऑटोनोमस, अर्थात् आजाद) साहित्यिक श्रेणीक माँग करैत अछि। ई एकटा साहसिक (बोल्ड) बौद्धिक प्रयास थिक जे सवर्ण-केन्द्रित (अपर-कास्ट-सेन्ट्रिक,

अर्थात् उच्च जातिकेँ केन्द्रमे राखनिहार) साहित्यिक ढाँचाकेँ (फ्रेमवर्ककेँ) चुनौती दैत अछि।

२.८ कपिलेश्वर राउत — सामाजिक यथार्थवादी

'चाहबला', 'गामे बीरान भऽ गेल', 'आब कहिया चेतब' — ई शीर्षकमात्रसँ बुझा जाइत अछि जे राउतजी शहरीकरण (अर्बनाइजेशन) आ ग्रामीण पलायन (रूरल माइग्रेशन, अर्थात् गामसँ पड़ाय) केर दर्दनाक यथार्थकेँ (रियलिटी) मैथिली गद्यमे दर्ज करैत छथि। 'विघटनकारी तत्त्व' (डिस्इन्टिग्रेटिंग फैक्टर्स, अर्थात् तोड़नेबाला तत्त्व) शीर्षक ई सामाजिक विश्लेषण (सोशल एनालिसिस) करैत अछि। हुनकर लेखन प्रगतिशील (प्रोग्रेसिव, अर्थात् अग्रगामी) चेतनाक परिचायक थिक।

२.९ प्रणव झा — बहुविध रचनाकार

प्रणव झाक लेखनमे विधा-वैविध्य (जेनर डायवर्सिटी, अर्थात् विविध साहित्यिक रूप) दर्शनीय अछि — लघु नाटिका ('सदाचार क तावीज'), संस्मरण ('राजा खानदान'), फेसबुक-केन्द्रित कथा, आ 'सुखैत पोखैर प्यासल गाम' सनक पर्यावरण-सचेत (इको-कन्शस, अर्थात् पर्यावरणक प्रति जागरूक) रचना। एन.बी.टी. (नेशनल बुक ट्रस्ट) सँ जुड़ल ई रचनाकार मैथिलीकेँ मुख्यधारा (मेनस्ट्रीम) हिन्दी साहित्यिक वृत्तसँ (सर्किलसँ) जोड़बाक सेतु (ब्रिज, अर्थात् पुल) बनैत छथि।

२.१० बेचन ठाकुर — नाटककार

'नीशा मुक्ति' आ 'बरहम बाबा' दूटा एकांकी नाटक (वन-एक्ट प्ले, अर्थात् एक दृश्यक नाटक) थिक। बेचन ठाकुर मैथिली रङ्गमञ्च (थियेटर) केर महत्त्वपूर्ण स्तम्भ छथि। 'नबघर' नाटक-संचयन सेहो एहि संग्रहमे सन्दर्भित अछि जाहिमे समकालीन समाजक दशा-दिशा नाट्य-शिल्पमे (ड्रामेटिक क्राफ्टमे) उकेरल गेल अछि। लोकार्पण-सत्रक विवरणसँ बुझा जाइत अछि जे बेचन ठाकुर 'सगर राति दीप जरय' जेहन साहित्यिक आन्दोलनक केन्द्रीय (सेन्ट्रल) हस्ती छथि।

३. पद्य खण्ड: कवि आ कविता समीक्षा

३.१ मुन्नी कामत — बाल साहित्य

'जतरा', 'अंकक मेल' आ 'बहिन' — ई तीनटा बाल कविता मैथिलीमे बाल साहित्य (चिल्ड्रेन्स लिटरेचर) केर जरूरतकेँ पूरा करैत अछि। 'अंकक मेल' खेल-खेलमे गणना (काउन्टिंग) सिखाबैत अछि — अखनधरि मैथिलीमे एहन अंक-कविता दुर्लभ (रेयर, अर्थात् अप्राप्य) अछि। 'बहिन' मे कन्या-भ्रूण हत्या (फीमेल फोएटिसाइड, अर्थात् बेटी केँ माँ के गर्भमे मारब) केर पीड़ाकेँ बालमन (चाइल्ड माइन्ड) केर सरल भाषामे अभिव्यक्त कएल गेल अछि — ई सामाजिक प्रतिबद्धता (सोशल कमिटमेन्ट, अर्थात् समाजक प्रति दायित्व) आ सौन्दर्यशास्त्र (एस्थेटिक्स, अर्थात् काव्य-सुन्दरता) दूनूकेँ एकसाथ साधबाक सफल प्रयास थिक।

उल्लेखनीय पंक्ति: 'माए हमरा एगो बहिन आनि दे / माए हमरा बहिनक जिनगी बकैस दे' — ई कविता बालमन सँ लिखाएल अछि मुदा चेतना प्रौढ़ अछि।

३.२ राम विलास साहु — लोक-यथार्थक कवि

राम विलास साहुक कविता सभ कोसी कातक धरती, मिथिलाक गरीबी, परदेशी मजदूर (माइग्रेन्ट लेबरर, अर्थात् रोजीरोटीक लेल बाहर जएनिहार) आ सामाजिक विखण्डन (सोशल फ्रेगमेन्टेशन, अर्थात् समाजक बिखराव) केर सजीव (वाइब्रेन्ट, अर्थात् जीवन्त) चित्रण करैत अछि। 'उत्तम अन्न' मे मरुआ (एकटा मोटा अनाज) केर प्रतीकात्मक (सिम्बोलिक, अर्थात् प्रतीकात्मक) महिमागान अछि — गरीब किसान (मार्जिनलाइज्ड फार्मर) केर प्रतीक बनैत मरुआ। 'मिथिलाक अपमान', 'बदलल नजैर', 'जागु इंसान' — ई कविता सभ सामाजिक जागृति (सोशल अवेकनिंग, अर्थात् चेतनाक उदय) केर कविता थिक। 'दिलक दरद' विरह-गीतक परम्परासँ जुड़ल अछि।

काव्य-विशेषता: ई सरल, प्रत्यक्ष (डायरेक्ट, अर्थात् सोझ) भाषा मे लिखैत छथि, बिम्ब (इमेज, अर्थात् चित्र) लोकजीवन सँ लेल जाइत अछि। कखनो-कखनो छन्द (मीटर, अर्थात् लय) मे शिथिलता (स्लैकनेस) भेटैत अछि, मुदा भावक सच्चाई एकरा ढाँकि लैत अछि।

३.३ कमलेश प्रमेन्द्र — सामाजिक व्यंग्य

'जरल कपार' एकटा बद्ध-कविता (फर्म पोएम, अर्थात् निश्चित छन्दमे लिखल कविता) थिक जाहिमे गोत्र-बन्धन (गोत्र रिस्ट्रिक्शन, अर्थात् एकहि गोत्रमे विवाह निषेध) केर कारण बियाह टूटबाक व्यंग्यचित्र (कैरिकेचर, अर्थात् विनोदपूर्ण व्यंग्य) प्रस्तुत अछि। 'सभ लगन परदेस सँ अबै, एकहु बेर नहि भेलहि जोगार' — टेक (रिफ्रेन, अर्थात् दोहराबाला पंक्ति) कविताक व्यंग्यकेँ और धारदार बनबैत अछि। मारुती कार, सूट-बूट, नवका चादरि — आधुनिकताक बाहरी चिह्न

(एक्सटर्नल मार्कर) आ पुरातन (आर्केइक, अर्थात् बहुत पुरान) गोत्र-नियमक टकराव (क्लैश) मे कविता अपन व्यंग्य-शक्ति खोजि लैत अछि।

३.४ अम्बिकेश कुमार मिश्र — प्रतिरोध केर कवि

'सुतारु' कविता सत्तावर्गीय शोषण (रुलिंग-क्लास एक्सप्लोइटेशन, अर्थात् हाकिम वर्गक शोषण) केर कड़गर बिम्बसँ भरल अछि। भाषा आक्रामक (एग्रेसिव, अर्थात् प्रहारक) अछि, शायद जानबूझकर। 'मिथिलाक आह' मे मातृभूमि-वेदना (मदरलैन्ड-पेन, अर्थात् अपन धरतीक कष्ट) केर कविता अछि। 'मौगियाहा नैइतन' (अर्थात् घरेलू मजबूर/घरमे बन्धायल व्यक्ति) — ई कविता शहरी जीवनक टकराव आ गामक बुझौवल माताक मर्मकेँ बोलचालक भाषामे (कोलोक्विअल टोनमे) पकड़ैत अछि। 'दिल्ली' कविता पर्यावरणीय (एन्वायरमेन्टल, अर्थात् पर्यावरण-सम्बन्धी) चेतनाक कविता थिक — ओजोन परत, कार्बन मोनोऑक्साइड, महानगरक घुटन (अर्बन सफोकेशन, अर्थात् शहरी घुटन) — ई सभ आधुनिक कविताक शब्द-भण्डारमे सफलतापूर्वक समाहित (इन्टिग्रेटेड, अर्थात् मिलाएल) भऽ गेल अछि।

विशेष: 'मौगियाहा नैइतन' शीर्षक स्वयं एकटा मैथिली सामाजिक मनोविज्ञान (सोशल साइकोलॉजी) केर सारतत्त्व (एसेन्स, अर्थात् मूल भाव) अछि। 'मौगियाहा' (घरेलू/घरमे कैद) शब्दक नकारात्मक प्रयोग आ ओहि पर कविताक प्रतिरोध — ई चेतना नव अछि।

३.५ नीलमाधव चौधरी — राजकमल-पुत्रक स्वायत्त (ऑटोनोमस) आवाज

नीलमाधव चौधरी राजकमल चौधरीक पुत्र छथि। सम्पादक गजेन्द्र ठाकुर स्वयं कहैत छथि जे ई 'बारल कवि' (नेग्लेक्टेड पोएट, अर्थात् उपेक्षित कवि) छथि जे मात्र पिताक छाहरिमे रहबाक बजाय अपन स्वतन्त्र काव्य-यात्रा बनौलाह। ५६ टा कविताक ई संग्रह पहिल बेर एकैसाथ प्रकाशित भऽ रहल अछि।

हुनकर कविता-विश्वमे प्रवासी पीढ़ी (डायस्पोरा जेनरेशन, अर्थात् बाहर रहनिहार पीढ़ी) केर वेदना (एडिलेड, बिस्बेन, वाशिंगटन, स्विट्जरलैण्ड मे रहनिहार पोता-पोती आ गाममे छटपटाइत दादी) बड मार्मिक ढंगसँ चित्रित अछि। सामाजिक न्याय (सोशल जस्टिस) केर पक्षधर ई कविता सभ वैचारिक (आइडियोलॉजिकल, अर्थात् विचारधाराक) स्तरपर परिपक्व (मेचौर, अर्थात् पक्व) अछि।

'जँ भेलहुँ पथभ्रष्ट तँ फेर समाजक कतऽ कल्याण' — ई पंक्ति समकालीन नैतिक संकट (कन्टेम्पोरेरी मोरल क्राइसिस, अर्थात् आजुक नैतिक बहसक) पर सीधा आँगुर राखैत अछि।

'हम तऽ ठीके छी:सत्ते?' — ई आत्म-जिज्ञासा (सेल्फ-क्वेश्चनिंग, अर्थात् अपन आपसँ प्रश्न) केर कविता थिक। बलात्कारी समाजमे 'सशक्त' भेल मनुष्यक 'असंतुष्ट, असुरक्षित, अपमानित' अनुभव — ई कविता आधुनिक सभ्यताक विरोधाभास (कन्ट्राडिक्शन, अर्थात् अन्तर्विरोध) केँ पकड़ैत अछि।

३.६ कुमार रवि — 'वर्षा मेघक संग एलैय'

ई कविता प्रेम-विश्वासघात (लव-बिट्रेयल, अर्थात् प्रेममे धोखा) केर अनुभवकेँ वर्षाऋतुक प्रकृति-बिम्बसँ जोड़ैत अछि। कविता टेक-आधारित (रिफ्रेन-बेस्ड, अर्थात् दोहराबाला पंक्तिसँ गुँथल) अछि। 'नक्शा चौहद्दी उल्टा क' — यानि नक्शा पलटि देनिहार प्रेमी केर रूपक (मेटाफर, अर्थात् प्रतीक) भावात्मक तीव्रता (इमोशनल इन्टेन्सिटी, अर्थात् भावक तेजी) प्रकट करैत अछि।

४. सङ्ग्रहक संरचनात्मक विशेषता

ई संग्रह गद्य-पद्य दुनूकेँ एकसाथ राखबाक 'समानान्तर' (पैरेलल, अर्थात् समानान्तर) प्रारूप अपनबैत अछि जे मैथिली साहित्यमे अपेक्षाकृत (रिलेटिवली, अर्थात् तुलनात्मक रूपसँ) नव थिक। 'सगर राति दीप जरय' (शाब्दिक अर्थ: सगरी राति दीप जरैत रहओ, अर्थात् साहित्यिक जागरण) केर ९३म आ ९४म आयोजनक विस्तृत विवरण ई संग्रहकेँ मात्र पुस्तक नहि, एकटा साहित्यिक आन्दोलनक (लिटरेरी मूवमेन्टक) जीवन्त दस्तावेज बनाबैत अछि।

दलित लेखक (डॉ. शिव कुमार प्रसाद, राजदेव मण्डल, राम विलास साहु), महिला लेखक (मुन्नी कामत, कल्पना झा, इरा मल्लिक), नेपाली मिथिलाक लेखक (दिनेश यादव, गुरुदेव कामत) — सभकेँ एकसाथ स्थान देनाई संग्रहक समावेशी (इन्क्लुसिव, अर्थात् सबकेँ समेटनिहार) दृष्टिकेँ दर्शबैत अछि।

५. निष्कर्ष

विदेह सदेह-२० मैथिलीक एकटा ऐतिहासिक साहित्यिक दस्तावेज (हिस्टोरिक लिटरेरी डॉक्युमेन्ट) थिक। गजेन्द्र ठाकुरक सम्पादन-दृष्टि स्पष्ट अछि — परम्परा (ट्रैडिशन) आ नवता (इन्नोवेशन, अर्थात् नवाचार), लोककण्ठ (फोकलोर, अर्थात् लोकसाहित्य) आ आधुनिकता (मॉडर्निटी), दलित-स्वर आ सवर्ण-स्वर — सभकेँ एकसाथ रखबाक प्रयास। कविता खण्डमे नीलमाधव चौधरी, राम विलास साहु, अम्बिकेश कुमार मिश्र जेहन प्रतिरोधक (रेजिस्टेन्स, अर्थात् विरोध करनिहार) आवाज ई संग्रहकेँ मात्र संकलन (एन्थोलॉजी) नहि, एकटा साहित्यिक वक्तव्य (लिटरेरी स्टेटमेन्ट, अर्थात् घोषणापत्र) बनाबैत अछि।

मैथिली साहित्यक विद्यार्थी, शोधकर्ता (रिसर्चर, अर्थात् गवेषक) आ आमपाठक — सभक लेल ई अनिवार्य (मस्ट-रीड, अर्थात् अवश्य पढ़बायोग्य) पाठ थिक।

— विदेह सम्पादन, ISSN 2229-547X

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह सदेह-२०: विस्तृत मैथिली साहित्यिक समीक्षा — स्रोत: विदेह ई-पत्रिका, अंक २१७-२५० | सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर

अध्याय 38 · विदेह-सदेह २१ : एक विस्तृत साहित्यिक समीक्षा — उपक्रम : समानान्तर संकलनक संरचना

सारांश विदेह-सदेह २१ विदेह ई-पत्रिकाक अंक २५१ सँ २७६ धरिक चुनल गद्य आ पद्यक संकलन थिक, जे मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचना सभकेँ एक ठाम राखि "मानुषीमिह संस्कृताम्" क मंत्रक संग समानान्तर साहित्यिक स्थान रचैत अछि। एकर संरचना दू खण्डमे विभाजित अछि—गद्य-खण्ड (पृ. १-७७९) आ पद्य-खण्ड (पृ. ७८०-१३३६)। ई विभाजन मात्र विधाक नहि, अपितु एक सम्पादकीय दृष्टिक परिचायक अछि, जे लोकभाषा, सुबाल्टर्न स्वर, आ दलित-स्त्री-कृषक चेतनाकेँ अकादमीय कैननक समानान्तर ठाढ़ करबाक चेष्टा करैत अछि।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · बाल-साहित्य · आलोचना · सांस्कृतिक अध्ययन

विदेह-सदेह २१ विदेह ई-पत्रिकाक अंक २५१ सँ २७६ धरिक चुनल गद्य आ पद्यक संकलन थिक, जे मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचना सभकेँ एक ठाम राखि "मानुषीमिह संस्कृताम्" क मंत्रक संग समानान्तर साहित्यिक स्थान रचैत अछि। एकर संरचना दू खण्डमे विभाजित अछि—गद्य-खण्ड (पृ. १-७७९) आ पद्य-खण्ड (पृ. ७८०-१३३६)। ई विभाजन मात्र विधाक नहि, अपितु एक सम्पादकीय दृष्टिक परिचायक अछि, जे लोकभाषा, सुबाल्टर्न स्वर, आ दलित-स्त्री-कृषक चेतनाकेँ अकादमीय कैननक समानान्तर ठाढ़ करबाक चेष्टा करैत अछि।

गद्य-खण्ड : समीक्षाक समीक्षा

सम्पादकीय आ आलोचनात्मक स्वर

संग्रहक प्रारम्भे गजेन्द्र ठाकुरक राम विलास साहुजीक "दूधबेचनी" लघुकथा संग्रहपर लिखल समीक्षा अबैत अछि, जे आलोचनाक एक स्पष्ट कसौटीकेँ सोझाँ रखैत अछि। समीक्षक "कौल्हुक सुच्चा करु तेल" केँ संग्रहक सर्वश्रेष्ठ कथा मानैत लिखैत छथि जे ओ देखबैत अछि—"कोना लोक अपन कुटीर उद्योग पूँजीवादक फेरमे खतम केलक।" ई आलोचना केवल प्रशंसात्मक नहि अछि; ओ निर्ममतापूर्वक कमजोरी सेहो उघारैत छथि—जेना "घुमि गाम चलू" कथाक विषयमे जे "कथा सोइरी घरसँ शुरू होइए मुदा अंत कपचा गेल लगैए।"

ई आलोचनात्मक ईमानदारी संग्रहक एक सबल पक्ष थिक। समीक्षकक निष्कर्ष—जे संग्रहक जीत ओकर शब्दावली आ फकड़ा सभक सफलतामे अछि, मुदा अनुवादमे ओकर गामैया सामर्थ्य क्षीण भऽ सकैत अछि—अनुवाद-सिद्धान्तक एक गहन समझकेँ देखबैत अछि।

सम्पादकीयमे साहित्य अकादमीक युवा पुरस्कार उमेश पासवानजीकेँ हुनकर पद्य संग्रह "वर्णित रस" पर देबाक चर्चा अछि। एतय सम्पादकीय स्वर द्वैध अछि—एक दिस ओ अकादमीक "संकीर्णतासँ बाहर एबा" केँ स्वागत करैत अछि, दोसर दिस "मैथलीक किछु युवा आ अधवयसु साहित्यकारक टिप्पणी" पर क्षोभ प्रकट करैत अछि जे "२१म शताब्दीयो मे हिनकर सभक सोच कतेक पाछू छन्हि।" ई द्वैध विदेह आन्दोलनक मूल तनावकेँ—संस्थागत मान्यता बनाम सुबाल्टर्न प्रतिष्ठा—उघारि दैत अछि।

बीहनि कथाक सघनता : मिसिदा

मिसिदाक तीनू बीहनि कथा ("पियार", "जश्न", "द्वंद्व") लघुतम परिसरमे सघन अनुभव रचबाक कौशलक उदाहरण थिक। "जश्न"मे मृत्युशय्यापर पड़ल पिता बत्तीपर नचैत फतिंगाक प्रसंगसँ जीवन-मृत्युक दर्शन रचैत छथि—"फतिंगा सभ अपन परिवार संगे कतेक खुश भऽ नाचि रहल छै!... मृत्यु तँ सत्य छै ओकर सम्मान केनाइ हमर धर्म।" ई बिम्ब-योजना अल्पाक्षरमे महान् अर्थ भरबाक मैथिली बीहनि-परम्पराक सामर्थ्यकेँ प्रमाणित करैत अछि।

"द्वंद्व"मे पीढ़ीगत संघर्ष—माता-पिताक थोपल आकांक्षा आ संतानक अपन इच्छाक टकराव—समकालीन यथार्थकेँ छुबैत अछि। संवादक स्वाभाविकता आ कथ्यक तीक्ष्णता ऐ कथाकेँ विशिष्ट बनबैत अछि।

प्रणव झाक संवेदना : "दोसर बियाह"

प्रणव झाक "दोसर बियाह" संग्रहक एक उत्कृष्ट लघुकथा थिक। डॉक्टर विनयक क्लिनिकमे एक दम्पतिक विच्छेद आ ओकरा पाछाँक छुपल चिकित्सकीय कारण (पतिक उच्च रक्तचाप आ किडनी विकारसँ चिड़चिड़ापन) क अनावरण कथाकेँ एक मानवीय त्रासदीमे बदलि दैत अछि। कथाक अन्तिम मोड़—जतय पति अपन रोगक गप पत्नीसँ नुकाबय चाहैत छथि—"आब की फायदा हुनका बताबय के। ओ अपन जिनगी निक से जीबैथ"—पाठककेँ निशब्द कऽ दैत अछि। ई कथा रोगक सामाजिक-मनोवैज्ञानिक आयामकेँ जे संवेदनासँ उघारैत अछि, से समकालीन मैथिली कथा-साहित्यक परिपक्वताक परिचायक अछि।

वैचारिक गद्य : गीतेश शर्मा आ देवेश झा

गीतेश शर्माक मूल हिन्दी लेख "भारतीय मुसलमान आ भारतीयता" (अनुवाद : उमेश मण्डल) एक साहसिक वैचारिक हस्तक्षेप थिक। लेखक "भारतीय मुसलमान" केँ एक विशिष्ट सांस्कृतिक पहचानक रूपमे स्थापित करैत लिखैत छथि जे "भारतक माटि-पानिमे रचल-बसल ऐ समाजक दैनंदिनक जीवन।" ओ भीतरी आलोचना सेहो करैत छथि—जातिगत विभाजन ("शेख सैयद, खान-पठान ऊँच जातिक, कुंजरा-जुलाहा-अंसारी नीच जातिक") आ शिक्षाक उपेक्षा पर। ई लेख सम्प्रदायक प्रति आलोचनात्मक-सहानुभूतिक संतुलित दृष्टि रखैत अछि।

देवेश झाक "हिन्दू विवाह : एक समीक्षा" समाजशास्त्रीय गद्यक उदाहरण थिक, जे विवाहक संस्कारिक आ समझौतावादी—दुनू स्वरूपक बीच आजुक युवपीढ़ीक तनावकेँ रेखांकित करैत अछि। हिनकर आन समीक्षाहु—"दू-पत्र उपन्यासक विश्लेषणात्मक अध्ययन" आ "मैथिली पत्रिकामे अनुवाद साहित्य"—संग्रहक आलोचनात्मक गाम्भीर्यकेँ बढ़बैत अछि।

स्मृति-गद्य आ हास्य-व्यंग्य : योगेन्द्र पाठक

डॉ. योगेन्द्र पाठक "वियोगी"क "हमर गाम" स्मृति-गद्य आ ग्राम-गौरवक एक रोचक दस्तावेज थिक। गामक "नवरत्न" क वर्णनमे लेखक हास्य आ गर्वक मिश्रण रचैत छथि—जेना "दस किलो के मूर आ सात किलो के बैगन" उपजाबयवला कृषक, वा "बीए" क उपाधिक व्यंग्यपूर्ण प्रसंग। डॉ. सुभद्र झाक पुस्तकालय-उद्घाटनक स्मरणमे ओ कबीरदासक मैथिल होयबाक विद्वत्तापूर्ण दावाकेँ सेहो उद्धृत करैत छथि, जे स्थानीय स्मृतिकेँ व्यापक साहित्येतिहाससँ जोड़ि दैत अछि। श्राद्ध-भोजमे केबार पकड़ि चिकरैत व्यक्तिक "घमंडक अतिरिक्त किछु आओर नहि" वला प्रसंग सूक्ष्म सामाजिक व्यंग्यक उत्कृष्ट नमूना थिक।

मानवशास्त्रीय गद्य : कैलाश कुमार मिश्र

कैलाश कुमार मिश्रक "फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना" विधागत दृष्टिसँ संग्रहक सभसँ नवीन प्रयोग थिक। लोक-कहावति (फकड़ा) केँ मानवशास्त्रीय उपकरणक रूपमे प्रयोग कऽ स्त्री-मनोदशाक अध्ययन मैथिली गद्यमे अन्तरानुशासनात्मक (interdisciplinary) चेतनाक संकेत दैत अछि।

शिखर-कृति : जगदीश प्रसाद मण्डलक "पंगु"

गद्य-खण्डक चरम बिन्दु अछि जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास "पंगु" (पृ. ६७७-७७९)—जे साहित्य अकादेमी पुरस्कार (२०२१) सँ सम्मानित कृति थिक। एकर समावेश संग्रहक सम्पादकीय दृष्टिक एक महत्त्वपूर्ण पक्षकेँ उघारैत अछि : जे सुबाल्टर्न-लोकभाषाक लेखन आब संस्थागत शिखर धरि पहुँचि गेल अछि। डॉ. बचेश्वर झा अपन समीक्षामे मण्डलजीक भाषा-सामर्थ्यकेँ रेखांकित करैत लिखैत छथि जे "मौलाइल गाछक फूलमे सुच्चा लोकभाषाक प्रयोग भेटैत अछि... प्रान्जल भाषा गमैया भाषाक आगाँ घुटना टेक दैत अछि।" ई कथन विदेह-आन्दोलनक मूल सौन्दर्यशास्त्रीय प्रस्थापना—लोकभाषाक श्रेष्ठता—केँ सिद्धान्तत: व्यक्त करैत अछि।

पद्य-खण्ड : छन्द, चेतना आ प्रयोग

आशीष अनचिन्हारक गजल-प्रसौद

पद्य-खण्डक उद्घाटन आशीष अनचिन्हारक गजल आ बाल-गजलसँ होइत अछि, जे मैथिली गजलक प्राविधिक परिपक्वताक प्रमाण थिक। प्रत्येक गजलक अन्तमे मात्राक्रमक स्पष्ट उल्लेख—जेना "सभ पाँतिमे २१२२ मात्राक्रम अछि"—गजलकेँ केवल भावाभिव्यक्तिक नहि, अपितु एक अनुशासित छन्द-शास्त्रक रूपमे प्रतिष्ठित करैत अछि। ई बहर-चेतना मैथिली गजलकेँ उर्दू-फारसी परम्परासँ संवाद करबाक सामर्थ्य दैत अछि।

विषयवस्तुमे अनचिन्हारक गजल तीक्ष्ण सामाजिक-राजनीतिक व्यंग्यसँ भरल अछि। "हुनके विकास / जनता उदास / संसद बनलै / चोट्टा निवास"—ई शेरमे राजनीतिक विडम्बनाकेँ अल्पाक्षरमे जे धार भेटल अछि, से मैथिली गजलक प्रतिरोधी सामर्थ्यकेँ देखबैत अछि। "एकै आदमी चोर फकीरक सरदार" वला गजलमे विरोधाभासक (विडम्बना) कुशल प्रयोग अछि—"बाहर टूटल फूटल भीतर चकमक छै।" बाल-गजलमे ध्वन्यात्मक पुनरावृत्ति ("ढ़ुनमुन ढ़ुनमुन गुलगुलिया बच्चा") शिशु-सुलभ लयकेँ रचैत अछि—ई प्रयोग मैथिली बाल-साहित्यक विरल आ स्वागत-योग्य संवर्धन थिक।

दलित-स्वर : प्रतिरोधक कविता

संतोष कुमार राय "बटोही" क "दलित छी हम" संग्रहक वैचारिक केन्द्रबिन्दु थिक। ई कविता विभिन्न दलित जातिक (डोम, चर्मकार, रजक, दुसाध) श्रम आ अपमानकेँ प्रथम-पुरुषमे उच्चारित करैत अछि—"बेवस्था केँ मारल / सभ दिन सँ दुत्कारल / अखनो अछूत बनौने छथि।" विशेष उल्लेखनीय अछि एकर आत्म-समीक्षात्मक ईमानदारी—"किछु हमर दोख / किछु बेवस्था केँ / किछु हमर लोकनि केँ।" ई आत्मालोचन कविताकेँ एकपक्षीय विलापसँ ऊपर उठाकय एक परिपक्व सामाजिक विमर्शमे बदलि दैत अछि। विदेह-आन्दोलनक सुबाल्टर्न-पक्षधरताक ई कविता सबसँ प्रत्यक्ष काव्यात्मक अभिव्यक्ति थिक।

भक्ति आ प्रकृति : राजेश मोहन झा "गुंजन"

राजेश मोहन झा "गुंजन"क "नवदुर्गा" शाक्त-परम्पराक तीव्र बिम्ब-योजनासँ युक्त अछि—"हस्त त्रिशूल चक्र अति चकमक, / रक्त पिपासित खप्पड़ भक् भक्।" अनुप्रास आ ध्वनि-संयोजनक सघन प्रयोग ऐ रचनाकेँ पारम्परिक स्तुति-काव्यसँ जोड़ैत अछि, मुदा "गाछक गोहारि" (विश्व पर्यावरण दिवस) आ "किनकर विकास?" सन रचना हिनकर समकालीन सरोकारकेँ सेहो देखबैत अछि।

समापन : मिसिदाक "स्मृति शेष"

संग्रहक अन्तिम स्वर मिसिदाक "स्मृति शेष" थिक—जे एक मार्मिक समापन प्रदान करैत अछि। संग्रहक आरम्भ मिसिदाक जीवन-कथासँ आ अन्त हुनकर स्मृति-कवितासँ—ई संरचनात्मक संगति सम्पादकीय कुशलताक संकेत दैत अछि।

मूल्यांकन : सबलता आ सीमा

सबल पक्ष : ऐ संग्रहक सर्वाधिक प्रभावशाली उपलब्धि अछि एकर विधागत आ स्वरगत विविधता। बीहनि कथासँ उपन्यास धरि, गजलक छन्द-शास्त्रसँ दलित प्रतिरोधक कविता धरि, मानवशास्त्रीय विवेचनासँ स्मृति-गद्य धरि—ई संकलन मैथिली साहित्यक समकालीन परिदृश्यक एक व्यापक मानचित्र प्रस्तुत करैत अछि। दोसर बड़का गुण अछि लोकभाषाक प्रति निष्ठा—जे "सुच्चा लोकभाषा" क प्रयोगकेँ साहित्यिक प्रतिष्ठा दैत अछि। तेसर, जगदीश प्रसाद मण्डलक अकादेमी-सम्मानित "पंगु" क समावेश ई सिद्ध करैत अछि जे विदेह-आन्दोलनक सुबाल्टर्न-पक्षधरता आब हाशियाक नहि, अपितु केन्द्रक स्वर बनि गेल अछि।

सीमा : एतेक विशाल संकलन (१३३६ पृष्ठ) मे रचनाक स्तर स्वाभाविके असमान अछि। किछु लघुकथा (जेना सम्पादके "ई केकर दोख" क विषयमे टिप्पणी कएल अछि जे "सभ हीस नीकसँ नै फौदाइए") संरचनात्मक कसावटक अभावसँ ग्रस्त अछि। किछु पद्य-रचनामे विचार छन्दपर हावी भऽ जाइत अछि। मुदा ई सीमा एक समावेशी समानान्तर संकलनक स्वाभाविक मूल्य थिक—जतय उद्देश्य चयनात्मक श्रेष्ठता नहि, अपितु एक समस्त साहित्यिक आन्दोलनक प्रतिनिधित्व अछि।

उपसंहार

विदेह-सदेह २१ केवल एक संकलन नहि, अपितु एक सम्पादकीय घोषणापत्र थिक। ई घोषित करैत अछि जे मैथिली साहित्यक भविष्य लोकभाषा, सुबाल्टर्न चेतना, आ छन्द-अनुशासित प्रयोगक त्रिवेणीमे बसैत अछि। अकादमीय कैननक समानान्तर एक जीवन्त, बहुस्वरीय, आ प्रतिरोधी साहित्यिक स्थान रचबाक जे संकल्प ऐ संकलनमे प्रतिफलित अछि, से एकरा मैथिली साहित्येतिहासक एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज बनबैत अछि।

विदेह सदेह २१: मैथिली गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर साहित्यिक समीक्षा

प्रवेशिका आ ऐतिहासिक विवेचना

मैथिली साहित्यक आधुनिक इतिहासमे 'विदेह सदेह २१' एकटा युगान्तरकारी समानान्तर संकलनक रूपमे प्रतिष्ठित भेल अछि, जे इंटरनेटपर मैथिली भाषाक प्राचीनतम उपस्थिति आ अन्तरजालीय पत्रकारिताक स्वर्णिम विहानकेँ रेखाङ्कित करैत अछि.1 भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितिक रूपमे विद्यमान छल, से बादमे १ जनवरी २००८ सँ 'विदेह' नामक मैथिलीक प्रथम अन्तरराष्ट्रीय पाक्षिक ई-पत्रिकाक रूपमे नव इतिहासक सूत्रपात केलक.1 सम्पादक गजेन्द्र ठाकुरक कुशल सम्पादन आ पथप्रदर्शनमे ई पत्रिका न केवल मैथिली साहित्यक पुरातन विधाकेँ नव जीवन प्रदान केलक, अपितु लगभग बारह वर्षक अल्पावधिमे ३५० सँ ४०० धरि नवोदित आ कतिआएल लेखक लोकनिकेँ साहित्यक मुख्यधारा सँ जोड़कऽ एकटा अभिनव कीर्तिमान स्थापित केलक.2 प्रस्तुत समीक्षा 'विदेह सदेह २१' संकलनमे संकलित सम्पूर्ण गद्य आ पद्यक विधागत वैशिष्ट्य, सामाजिक विमर्श आ छन्दोबद्धताक एकटा सम्यक आ सूक्ष्म साहित्यिक मूल्याङ्कन प्रस्तुत करैत अछि.1

ऐ पत्रिकाक मासमे दू टा अंक (मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ) प्रकाशित होइत अछि आ ई आधुनिक मैथिली साहित्यक एकटा जीवन्त ऐतिहासिक दस्तावेज थिक.1 संकलनक संरचनात्मक आ विधागत ढाँचा निम्नाङ्कित पत्रक सँ स्पष्ट होइत अछि:

विधा	प्रमुख विधागत रूप	प्रतिनिधि रचनाकार	मुख्य सामाजिक-साहित्यिक सरोकार
गद्य-खण्ड 1	लघुकथा, बीहनि कथा, उपन्यास, निबन्ध, जीवनी, संस्मरण, समालोचना	गजेन्द्र ठाकुर, मिसिदा, प्रणव झा, रबीन्द्र नारायण मिश्र, डॉ. बचेश्वर झा, जगदीश प्रसाद मण्डल, कैलाश कुमार मिश्र, नारायण यादव	वर्ग-संघर्ष, गामक जिनगी, नारीक दशा, कृषि संकट, अनुवादक परम्परा, ऐतिहासिक संस्मरण
पद्य-खण्ड 1	गजल, बाल गजल, पद्य संग्रह, अनुवादक काव्य, हाइकु, टनका, बटगवनी, नचारी	आशीष अनचिन्हार, उमेश पासवान, प्रीतम कुमार निषाद, राम विलास साहु, जगदीश चन्द्र ठाकुर ’अनिल’, डॉ. शिवकुमार प्रसाद	गजलक व्याकरण, सामाजिक शोषण, राष्ट्रीय चेतना, प्राकृतिक पर्यावरण, विरह आ आध्यात्मिक आस्था

गद्य खण्डक विस्तृत विवेचना आ यथार्थवादी चिन्तन

'विदेह सदेह २१' क गद्य खण्ड गामक जिनगीक यथार्थ, परदेसक पीड़ा, आ नारीक अस्मिताक प्रश्नकेँ बहुआयामी दृष्टिकोणसँ प्रस्तुत करैत अछि.1 गजेन्द्र ठाकुर द्वारा कएल गेल राम विलास साहुजीक 'दधू बेचनी' लघुकथा संग्रहक समीक्षा गामक यथार्थ समाजक परत-दर-परत खोलैत अछि.1 'गामक गाछी' कथामे बुधुआक दादा कालेसरक गछकट्टीमे दबि कऽ मरि गेलाक प्रसंगक माध्यम सँ ई स्पष्ट कएल गेल अछि जे कोना पूँवादी प्रवृत्तिक कारण नवका पंच सभ पुरातन त्याग आ इतिहासकेँ बिसरि जाइत छथि.1 'कमतियाक कामत' आ 'कौल्हुक सुच्चा करु तेल' संग्रहक सर्वश्रेष्ठ लघुकथाक रूपमे स्वीकृत अछि, जे कुटीर उद्योगक विनाश आ पूँजीवादक क्रूर प्रभावकेँ प्रतिपादित करैत अछि.1 'दधू बेचनी' लघुकथामे एकटा असहाय स्त्रीक संघर्षक चरम सीमा अछि, जतय पतिक मृत्यु क बाद ओ असगरे बाल-बच्चाकेँ पोसैत समाजक लेल अपन जीवन उत्सर्ग करैत अछि.1 राम विलास साहुक शब्दावली गामक समकालीन समस्याक संग पूर्ण न्याय करैत अछि.1

मिथिलेश सिन्हा 'दाथवासी' (मिसिदा) क बीहनि कथासभक भाषिक प्रवाह आ दार्शनिक गम्भीरता प्रशंसनीय अछि.1 हुनक कथा 'पियार' राजेश आ मनसूक्खाक बीचक मीठ सम्भाषणक माध्यमसँ मैथिल समाजक गाम-घरक अल्हड़ आ मर्यादित प्रेमकेँ चित्रित करैत अछि.1 ताहि ठाम 'जश्न' कथा मृत्यु जकाँ क्रूर यथार्थक समक्ष एकटा अलौकिक दार्शनिक चेतना प्रस्तुत करैत अछि, जतय कैंसर पीड़ित बाबूजी कार्तिक अमावस्याक बत्तीपर फतिङ्गा सभकेँ देखि अपन मृत्युक उत्सव मनावैत छथि आ बच्चोंकेँ जीवनक शाश्वत सत्यक बोध करबैत छथि.1 हुनक तेसर बीहनि कथा 'द्वंद्व' आधुनिक शिक्षा, अन्तरजाल, आ अभिभावक लोकनिक थोपल गेल इच्छाक बीचक पीढ़ीगत दूरी आ संघर्षक यथार्थवादी दस्तावेज थिक.1

प्रणव झा अपन कथा आ निबन्धक माध्यमसँ सामाजिक विद्रूपता आ नारी अस्मिताक गम्भीर मीमांसा करैत छथि.1 हुनक लघुकथा 'दोसर बियाह' यादवजी आ हुनक कनियाँक माध्यमसँ दाम्पत्य जीवनक उतार-चढ़ाव, मानसिक संताप आ मनोवैज्ञानिक समस्याक चित्रण करैत अछि, जतय वृक्क खराब भेलापर पत्नी द्वारा पुनः अपन पति लग आबि वृक्क दान करब आ 'दोसर बियाह' करब नेहक पराकाष्ठाकेँ दर्शबैत अछि.1 'चनमा' कथामे सुधीर बाबू आईपीएस आ बिरहा गायक चनमाक बीचक २५-२६ वर्ष पुरान प्रसंगक माध्यमसँ संवेदनशीलता आ न्याय व्यवस्थाक यथार्थकेँ देखायल गेल अछि.1 'मैथिली कथामे स्त्री' निबन्धमे प्रणव झा यात्रीजीक 'पारो', हरिमोहन झाक 'कन्यादान' आ 'द्विरागमन' क बुच्ची दाई आ मिस बिजली बोस, लिली रेक 'उपसंहार' क 'अपर्णा', आ डॉ शेफ़ालिका वर्माक 'मुक्ति' क 'मेहा'क चरित्रक तुलनात्मक विश्लेषण करैत मैथिल समाजमे स्त्रीक मानसिक परिपक्वता, सामाजिक उपेक्षा आ पुरुष सत्तात्मक व्यवस्थाक अनुदारताक परत खोलैत छथि.1 हुनक 'एकटा जन्मेजय कथा' महाभारतक सर्प यज्ञक माध्यमसँ आजुक राजनीतिक विद्रूपता आ निर्दोष लोकनिक दमनपर करारा व्यंग्य प्रहार करैत अछि.1

मृणाल आशुतोष अपन लघुकथा 'छुटकी' क माध्यमसँ बाल मनोदशा, गामक बाल श्रम आ विवशताकेँ बड्ड मार्मिकताक संग प्रस्तुत करैत छथि, जतय सामाजिक आ आर्थिक विषमताक कारण नन्हा बालक अपन बाल्यकालक क्रीड़ा छोड़ि कऽ कठिन परिश्रम करबा लेल विवश होइत अछि.1 गीतेश शर्माक मूल हिन्दी लेख 'भारतीय मुसलमान आ भारतीयता' क उमेश मण्डल द्वारा कएल गेल मैथिली अनुवाद साम्प्रदायिक सौहार्द आ राष्ट्रीयताक परिप्रेक्ष्यमे बड्ड प्रासंगिक अछि.1 उमेश मण्डल अपन 'बीहैन कथा- भिनसुरका गप-सप्प' मे ग्रामीण विमर्शकेँ नव रूप दैत छथि आ संगहि 'सगर राति दीप जरय' क ९८म आ ९९म गोष्ठी क सफल सम्पादन आ पोथी लोकार्पण सत्रक विवरण प्रस्तुत करैत मैथिलीक विकास यात्राकेँ गति प्रदान करैत छथि.1 डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी' क रचना 'हमर गाम' मिथिलांचलक गामक पावन संस्कृति, माटि-पानि आ पारम्परिक सम्बन्धक एकटा सरस आ यथार्थवादी चित्र प्रस्तुत करैत अछि.1

देवेश झा अपन निबन्ध 'हिन्दू विवाह: एक समीक्षा', 'मैथिली पत्रिकामे अनुवाद साहित्य' आ 'दू-पत्र' उपन्यासक विश्लेषणात्मक अध्ययनक माध्यमसँ विवाह पद्धतिक विसंगति, अनुवादक ऐतिहासिक परम्परा आ उपन्यासिक शिल्प पर गम्भीर समालोचनात्मक प्रकाश डालैत छथि.1 राकेश प्रेमचन्द्र 'पीसी' क लघुकथा 'किसानकेँ डुबौलक लखन ठेकेदार' ग्रामीण क्षेत्रक ठेकेदारी प्रथा, भ्रष्टाचार आ लघु सीमान्त किसानक भयानक आर्थिक शोषणक यथार्थकेँ सोझाँ अनैत अछि.1 ताहि क्रममे मोहनराज 'गगन' अपन 'बीहनि कथा-१ आ २' क माध्यमसँ अति सूक्ष्म रूपमे लघुकथाक प्रयोगात्मक रूप आ मानवीय संवेदनाक अंकन करैत छथि.1 अरुण लाल अपन बीहनि कथा 'कुंभ स्नान' आ 'ग्राहक' मे धार्मिक दिखावा, प्रायश्चितक पाखण्ड आ व्यावसायिक अवसरवादितापर करारा चोट करैत छथि.1 नन्द विलास राय अपन लघुकथा 'सियानक मारि दही-चूरा' मे सामाजिक वर्ग-भेद आ 'दहेज पाप छी' मे दहेजक भयानक कोढ़पर गम्भीर चिन्तन प्रस्तुत करैत छथि.1

पण्डित रबीन्द्र नारायण मिश्रक लेखनी गम्भीर नीतिशास्त्र, सामाजिक विमर्श आ संस्मरणक एकटा अपूर्व मन्दाकिनी थिक.1 हुनक निबन्ध 'मनः पूतं समाचरेत', 'सफलताक रहस्य', 'अशांतस्य कुतः सुखम्' आ 'ई समय ककरो नहि' मानव जीवनकेँ मर्यादित आ सचेत बनेबाक सन्देश दैत अछि.1 संस्मरण खण्डमे 'कलनाबला बाबा'क अलौकिक सिद्धता आ 'डॉ. सुभद्र झा' क संस्मरण मैथिलीक ऐतिहासिक धरोहर अछि, जतय डॉ. सुभद्र झाक सादगी, राधाकृष्णन आ सुनीति कुमार चटर्जीक संग हुनक सम्बन्ध, आ पुस्तकालयमे हुनक ईमानदारीक संस्मरण प्रस्तुत कएल गेल अछि.1 हुनक लघुकथा 'फसाद' गामक शोषण, घराड़ीक रजिस्ट्री आ मजदूर पलटनमाक जहल यात्रा क माध्यमसँ वर्ग-संघर्ष आ व्यवस्थाक अन्यायकेँ मर्मस्पर्शी रूपमे चित्रित करैत अछि.1 दुर्गानन्द मण्डल अपन लघुकथा 'सीख' आ 'बोझ' क माध्यमसँ निम्नमध्यवर्गीय बेरोजगारी, बियाहक दायित्वक गम्भीर बोझ आ मानवीय जीवनक मर्मस्पर्शी विवशताक चित्रण करैत छथि.1

डॉ. बचेश्वर झाक समालोचनात्मक निबन्ध मैथिलीक इतिहास आ अनुसन्धानकेँ नव दिशा दैत अछि.1 हुनक 'मिथिलाक विभूति आयाची मिश्र' सरिसबक माटिक सवा कट्ठा बाड़ीक साग-पातपर जीवन बसरि करयबला संतोषी विद्वान आयाची मिश्र आ हुनक प्रखर पुत्र शंकर मिश्रक त्यागक गाथा कहैत अछि.1 'मैथिली साहित्यमे यदुनाथ झा 'यदुवर'क देन' निबन्धमे यदुवरजीक आधुनिक आ प्रगतिशील राष्ट्रीय चेतना, 'मिथिला गीतांजलि' (१९२७) क भूमिका, आ उल्लू, रेलवे सिंगनल, कुकुर जकाँ उपेक्षित विषयपर हुनक अनुपम काव्यक समालोचना कएल गेल अछि.1 'मैथिलीक विकासमे नेपालक योगदान' आ 'चन्दा झाक रामायण' क समीक्षा मिथिलाक भौगोलिक आ सांस्कृतिक विस्तारकेँ प्रमाणित करैत अछि.1

नारायण यादव अपन लघुकथा 'पंचैती', 'स्वाद परिवर्तन', 'गिफ्ट', 'भाय-बहिन', 'इमानदार चोर', 'नसिहत', 'प्रेमक ऑंसु' क माध्यमसँ सामाजिक विसंगति आ मानवीय सम्बन्धक सूक्ष्म विश्लेषण करैत छथि.1 संगहि हुनक रचित 'गुरुमैता-सल्हैता' क जीवनी स्वतंत्र आन्दोलनमे देवनारायण गुरुमैता आ रामलषण सल्हैताक ऐतिहासिक क्रान्तिकारी भूमिका आ अंग्रेज सरकारक भयानक दमनक दस्तावेज थिक.1 कैलाश कुमार मिश्र अपन लघुकथा 'पण्डिताइन' आ 'बुरिराज' क माध्यमसँ आधुनिक महानगरीय कला संस्थानक जीवन, बौद्धिक विलासिता, आ कामकलाक प्रयोगात्मक सीमाक गम्भीर विश्लेषण करैत छथि.1 राघब, सोहन, निर्भय, हेमा आ सौम्याक चरित्रक माध्यमसँ आधुनिक समाजक कुंठा, पाण्डित्य प्रदर्शनक ढोंग (पोथी चोरीक प्रवृत्ति) आ उन्मुक्त स्त्री (सौम्या) क यौन स्वतंत्रता आ पुरुषवादी पाखण्डक चित्रण कएल गेल अछि.1 संगहि हुनक निबंध 'फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशा' मैथिल नारीक सामाजिक आ मनोवैज्ञानिक यात्रा विमर्शक एकटा सुन्दर मानवशास्त्रीय विवेचना प्रस्तुत करैत अछि.1 जगदीश प्रसाद मण्डल क 'पंगु' उपन्यास (साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०२१ प्राप्त) मैथिली गद्यक सर्वोत्कृष्ट यथार्थवादी कृति अछि.1 'सीतापुर' गामक पृष्ठभूमिमे लिखल ई उपन्यास वर्ग-विभेद, किसानक संघर्ष आ नवीन कृषि तकनीक (हरित क्रान्ति, ट्रैक्टर, पम्पसेट) क आगमनक बादो किसानक पंगुपनक चित्रण करैत अछि.1 उपन्यासक पात्र हरिचरण अपन अढ़ाइ बीघा जमीनकेँ एकठाम कऽ बोरिंग आ पम्पसेटक माध्यमसँ अपन श्रम-संस्कृति प्रस्तुत करैत अछि.1 ई उपन्यास ग्रामीण यथार्थक अमूल्य दस्तावेज अछि.1

निम्नांकित पत्रक गद्यकार लोकनिक कृति आ सामाजिक संदेशकेँ संक्षेपमे प्रस्तुत करैत अछि:

क्रमांक	गद्यकार / समालोचक	प्रमुख कृति / विधा	मुख्य सामाजिक आ साहित्यिक संदेश
१	गजेन्द्र ठाकुर	सम्पादकीय	आ मैथिली गजलक व्याकरणक

		समालोचना 1	नियमन आ नवोदित स्रष्टा लोकनिक प्रोत्साहन 2
२	मिसिदा	बीहनि कथा (पियार, जश्न, द्वंद्व) 1	जीवन-मृत्यु दर्शन, दाम्पत्य आ पीढ़ीगत द्वंद्व 1
३	प्रणव झा	दोसर बियाह, चनमा, मैथिली कथामे स्त्री 1	स्त्री अस्मिता, संवेदनशीलता आ दाम्पत्य सम्बन्धक यथार्थ 1
४	मृणाल आशुतोष	छुटकी 1	बाल श्रम आ सामाजिक विषमताक सूक्ष्म अंकन 1
५	उमेश मण्डल	भिनसुरका गप-सप्प, अनुवाद 1	साम्प्रदायिक सौहार्द आ ग्रामीण विमर्श 1
६	डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'	हमर गाम 1	मिथिलाक सांस्कृतिक गौरव आ माटिक महिमा 1
७	देवेश झा	हिन्दू विवाह, दू-पत्र समीक्षा 1	विवाह पद्धति आ समालोचनात्मक विश्लेषण 1
८	राकेश प्रेमचन्द्र 'पीसी'	किसानकेँ डुबौलक लखन ठेकेदार 1	ठेकेदारी शोषण आ कृषक वर्गक विवशता 1
९	अरुण लाल	बीहनि कथा (कुंभ स्नान, ग्राहक) 1	धार्मिक दिखावा आ व्यावसायिक अवसरवादिता 1
१०	मोहनराज "गगन"	बीहनि कथा १ आ २ 1	सूक्ष्म संवेदनाक प्रयोगात्मक अंकन 1
११	नन्द विलास राय	सियानक मारि दही-चूरा, दहेज पाप छी 1	वर्ग-विभेद आ दहेजक भयानक विभीषिका 1
१२	रबीन्द्र नारायण मिश्र	निबंध संग्रह, फसाद, संस्मरण 1	सुभद्र झाक सादगी, ईमानदारी आ वर्ग-संघर्ष 1
१३	दुर्गानन्द मण्डल	सीख, बोझ 1	निम्नमध्यवर्गीय दायित्व आ बेरोजगारीक बोझ 5
१४	डॉ. बचेश्वर झा	आयाची मिश्र, यदुनाथ झा यदुवर 1	आयाचीक स्वाभिमान, यदुवरक राष्ट्रीय चेतना 1
१५	नारायण यादव	इमानदार चोर, गुरुमैता-सल्हैता जीवनी 1	क्रान्तिकारी स्वतंत्रता सेनानी लोकनिक बलिदान 1
१६	कैलाश कुमार मिश्र	पण्डिताइन, बुरिराज 1	बौद्धिक विलासिता आ कामकलाक यथार्थ विमर्श 1
१७	जगदीश प्रसाद मण्डल	पंगु (उपन्यास) 1	हरित क्रान्ति आ सीमान्त किसानक पंगुपन 1

पद्य खण्डक सघन काव्यात्मक आ छन्दोबद्ध विमर्श

मैथिली पद्यक विकास यात्रा पारम्परिक छन्दसँ आधुनिक गजल धरि बहुआयामी अछि.1 आशीष अनचिन्हार मैथिली गजलक आधुनिक व्याकरणयुक्त परम्पराक मुख्य स्तम्भ छथि.1 ओ 'अनचिन्हार आखर' ब्लागक माध्यमसँ मैथिली गजलकेँ उर्दू आ फारसीक बहर ओ काफियाक कठोर अनुशासनमे बान्हलनि.1 हुनक शोधक अनुसार मैथिली गजलक इतिहास ११२ वर्ष पुरान अछि, जकर आरम्भ पं. जीवन झा (१९०५ ई.) क नाटक 'सुन्दर संयोग' सँ होइत अछि.1 गजलक व्याकरणिक समीक्षा करैत काल अनचिन्हारजी वर्णवृत आ मात्रिक छन्दक अन्तर स्पष्ट करैत छथि.1 गजलमे बहरक पालन अनिवार्य अछि.1 पं. जीवन झाक गजलक उदाहरण: 'अहाँ सों भेंट जहिआ भेल तेखन सों विकल हम छी / उठैत अन्धार होइए काज सब करबामे अक्षम छी'.1 अनचिन्हारजीक बाल गजल सेहो प्रशंसनीय अछि: 'हुलबुल हुलबुल हुलबुलिया बच्चा / छन छन कूदै थुलथुलिया बच्चा'.1

राजेश मोहन झा 'गुंजन' अपन पद्य 'नवदुर्गा', 'गाछक गोहारि' आ 'किनकर विकास' क माध्यमसँ पर्यावरण संरक्षण आ यात्रीजी 'बाबा नागार्जुन' क स्मृतिमे सर्वहारा वर्गक यथार्थवादी स्वर व्यक्त करैत छथि.1 प्रो. प्रीतम कुमार निषादक रचनासभमे लोक-आस्था, पर्व-त्योहार आ गामक चिन्ता मुख्य अछि.1 हुनक 'आद्यार्चना', 'सांध्यार्चना', 'निशार्चना' जकाँ दुर्गा पूजाक गीत आ 'जय गंगाजल' गंगा नदीक महिमा आ वर्तमान प्रदूषणपर चिन्ता व्यक्त करैत अछि.1 हुनक 'वरद वसन्त' आ 'सरस वसन्त' ऋतुराजक पारम्परिक सौंदर्यक आधुनिक चित्रण अछि.1

लौकही थानामे चौकीदारक पदपर कार्यरत उमेश पासवानक काव्य संग्रह 'वर्णित रस' (साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०१८ प्राप्त) मैथिली कविताक क्षेत्रमे दलित आ वंचित समाजक प्रखर स्वर अछि.1 सामाजिक भेदभावक पीड़ासँ उपजल हुनक कविता गामक यथार्थ आ व्यवस्थापर प्रहार करैत अछि.10 हुनक कविता 'ई की होइ छै' चौकीदार बाप-पुत्रक यथार्थ आ कड़ा सरोकार व्यक्त करैत अछि: 'ई की होइ छै थानापर रही हम सुखल रहए... भेटल साहित्य अकादेमी पुरस्कार माए कहलकै- ई की होइ छइ अइमे पाइ लगै छइ आकि पाइ दइ छइ...'.1 पासवानक अन्य कवितासभ जेना ‘बताह वादल’, ‘घा’, ‘जिद्द’, ‘सड़क’, ‘तरहत्थी’ आदिमे सरल भाषा आ नैसर्गिक प्रवाह अछि, जे भेदभाव आ आर्थिक विपन्नताक मर्म व्यक्त करैत अछि.1

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' गजलमे बहर आ गेयताक संतुलनक वकालत करैत छथि.1 हुनक गजलक पाँति: 'ऑफिस सबहक कथा कहू की लूटल छी तँइ गजल कहै छी'.1 हुनक रचना 'गीत' (छागर कटैत रहलै कनैत कलपैत रहलै) भगवतीक नामपर बलि-प्रथा जकाँ क्रूर हिंसापर मर्मभेदी प्रहार अछि, जतय धररती फटैत रहलै आ भगवतीक आँखि सँ खसयबला नोर ककरो नै देखाइत अछि.1

रजनी छाबड़ाक हिन्दी कविता संग्रह ‘पिघलते हिमखण्ड’ क डॉ. शिवकुमार प्रसाद द्वारा कएल गेल मैथिली अनुवाद काव्य भाषाक समृद्धताकेँ दर्शाबैत अछि.1 हुनक 'चर्चा ओ संसार हमर नहि भऽ सकैत अछि' आ 'यथार्थ अमावस्याक डर' कविता मानवीय सम्बन्धक असमंजस, वियोग आ उदासीकेँ प्रस्तुत करैत अछि, जतय सतरंगा आनन्दक प्रसंग अछि.1 डॉ. शिवकुमार प्रसादक अपन मौलिक कवितासभ सेहो मानवीय भावनाक गम्भीर रूपकेँ चित्रित करैत अछि.1 राहुल कुमार चौधरीक 'हेलैत प्राण' कविता मानवीय चेतनाक गम्भीर संताप व्यक्त करैत अछि.1 बृषेश चन्द्र लालक 'ठंढाउ, हिड़ला लगाउ!' आ अन्य काव्यात्मक रचनासभ अपन विशिष्ट प्रयोगात्मक रूपक लेल मैथिली पद्यमे अभिनव छथि.1 रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’ अपन 'किछु झारू' पद्य संग्रहक माध्यमसँ लोक-संस्कृति, माटिक सोंधाई आ गाम-घरक पारम्परिक लोक-व्यवहारक सजीव चित्र खींचैत छथि.1

कुमोद रंजन चौधरीक 'उठु मैथिल चलु मैथिल' कविता मैथिलीक भाषाई आ सांस्कृतिक जागरणक एकटा शंखनाद थिक.1 प्रभाष अकिंचन अपन कविता 'महाकवि लाल दास' मे लाल दासक प्रति अपन श्रद्धा सुमन अर्पित करैत छथि.1 राकेश कर्णक 'सृजन' नव-सृजनक गम्भीर संकल्प व्यक्त करैत अछि.1 इन्द्रकान्त लालक 'कक्का तोर अंगना' कौटुम्बिक आत्मीयता आ गामक दरबज्जाक मर्म प्रस्तुत करैत अछि.1 सृजन शेखर ’अज्ञेय’ अपन कविता 'ककरा अबिते जादू भऽ जाय रे' मे सौंदर्य आ रहस्यक अनुपम अनुभूति प्रस्तुत करैत छथि.1 संतोष कुमार राय 'बटोही' अपन कवितासभ जेना ‘गहमा- गहमी’, ‘सुन्नर कनिया’, ‘गाल पर थप्पड़’, ‘साहित्य मे भिनभिनौज’, ‘लोकतंत्रक प्रहरी’, ‘बहि रहल अछि फगुआक बयार’, ‘दलित छी हम’, ‘अबोध नेना’, ‘कनफुस्सी बिगाड़लक घर’, ‘नौकरी’, ‘गामक दुर्गा मंदिर’, ‘गाम-घरुआ’, ‘किसानी’, ‘बिन ब्याहले रहति सिया’ क माध्यमसँ ग्रामीण यथार्थ, सामाजिक विद्रूपता, आ दलित वर्गक संघर्षकेँ बड्ड मार्मिक रूपमे चित्रित करैत छथि.1

डॉ. शशिधर कुमर 'विदेह' अपन श्रद्धांजलि पद्य 'स्व. अटल बिहारी वाजपेयीजी - एकटा मैथिलक सादर, विनम्र श्रद्धांजलि' क माध्यमसँ वाजपेयीजीक मैथिलीभाषीक प्रति आदर आ मैथिलीकेँ अष्टम अनुसूचीमे स्थान दियाबक प्रति आभार व्यक्त करैत छथि.1 राहुल झा 'आर.जे.' क 'बटगवनी' पारम्परिक लोक-गीतक माधुर्यकेँ पुनः स्थापित करैत अछि.1 रवि भूषण पाठकक 'छौड़ा अजगुत कंप्यूटर छै' आधुनिक तकनीकक विद्रूपता आ 'महाकवि विद्यापति' क माध्यमसँ विद्यापतिककेँ जनपद आ मलाह-दुसाधक जनमानसक कविक रूपमे पुनर्परिभाषित करैत छथि.1 नीलमाधव चौधरीक पद्य संग्रह जीवन-दर्शन, प्रकृतिक नियम आ यथार्थ अमावस्याक गम्भीर विमर्श प्रस्तुत करैत अछि.1

निम्नांकित पत्रक पद्यकार लोकनिक कृति आ काव्यात्मक संदेशकेँ संक्षेपमे प्रस्तुत करैत अछि:

क्रमांक	कवि / पद्यकार	प्रमुख काव्य / विधा	मुख्य दार्शनिक आ काव्यात्मक संदेश

१	आशीष अनचिन्हार	बाल गजल आ गजल संग्रह 1	शास्त्रीय अरूज, बाल विमर्श आ बहरक शुद्धता 1
२	राजेश मोहन झा "गुंजन"	नवदुर्गा, गाछक गोहारि 1	पर्यावरण संरक्षण आ सर्वहारा वर्गक यथार्थ 1
३	प्रीतम कुमार निषाद	दिवसास्तार्चना, जय गंगाजल 1	शाक्त-वैष्णव समन्वय, गंगाक प्रदूषण आ पारम्परिक सौंदर्य 1
४	उमेश पासवान	वर्णित रस, ई की होइ छै 1	चौकीदारक पीड़ा, सामाजिक उपेक्षा आ दलित चेतना 1
५	जगदीश चन्द्र ठाकुर ’अनिल’	गीत, गजल 1	बलि-प्रथाक विरोध आ गजलक गेयताक संतुलन 1
६	राजनी छाबड़ा / डॉ. शिवकुमार प्रसाद	पिघलते हिमखण्ड (अनुवाद), मौलिक पद्य 1	मानवीय संवेदना, वियोग आ उदासीक चित्रण 1
७	राहुल कुमार चौधरी	हेलैत प्राण 1	मानवीय चेतनाक गम्भीर संताप 1
८	बृषेश चन्द्र लाल	ठंढाउ, हिड़ला लगाउ! 1	प्रयोगात्मक छन्द आ नव प्रयोग 1
९	रामदेव प्रसाद मण्डल	किछु झारू 1	लोक-संस्कृति आ गामक पारम्परिक लोक-व्यवहार 1
१०	कुमोद रंजन चौधरी	उठु मैथिल चलु मैथिल 1	भाषाई आ सांस्कृतिक जागरणक शंखनाद 1
११	प्रभाष अकिंचन	महाकवि लाल दास 1	लाल दासक प्रति श्रद्धांजलि 1
१२	राकेश कर्ण	सृजन 1	नव-सृजनक गम्भीर संकल्प 1
१३	इन्द्रकान्त लाल	कक्का तोर अंगना 1	कौटुम्बिक आत्मीयता आ गामक दरबज्जाक मर्म 1
१४	सृजन शेखर ’अज्ञेय’	ककरा अबिते जादू भऽ जाय रे 1	सौंदर्य आ रहस्यक अनुपम अनुभूति 1
१५	संतोष कुमार राय 'बटोही'	दलित छी हम, किसानी, कनफुस्सी 1	दलित अस्मिता, किसानक दुःख आ पारिवारिक विघटन 1
१६	डॉ. शशिधर कुमर "विदेह"	वाजपेयीजीक प्रति श्रद्धांजलि 1	मैथिलीभाषीक प्रति आदर आ सम्मान 1
१७	राहुल झा	बटगवनी 1	पारम्परिक लोक-गीतक

	"आर.जे."		माधुर्य 1
१८	रवि भूषण पाठक	छौड़ा अजगुत कंप्यूटर छै, महाकवि विद्यापति 1	आधुनिक तकनीकक विद्रूपता आ विद्यापतिक जन-कवि रूप 1
१९	नीलमाधव चौधरी	विभिन्न कविता 1	जीवन-दर्शन आ यथार्थ अमावस्याक गम्भीर विमर्श 1

साहित्यिक संश्लेषण आ सांस्कृतिक मूल्यक संधान

'विदेह सदेह २१' क विस्तृत साहित्यिक समालोचना सँ ई स्पष्ट होइत अछि जे मैथिली साहित्य आब अपन अभिजात्यवादी ढाँचा सँ मुक्त भऽ कऽ सर्वहारा, वंचित आ उपेक्षित समाजक वास्तविक स्वर बनि रहल अछि.1 ऐतिहासिक रूपमे आयाची मिश्रक पाण्डित्य आ राजा-महाराजा लोकनिक प्रशस्ति गायन करयबला मैथिली आब उमेश पासवान जकाँ थानाक आरक्षक क 'वर्णित रस' आ संतोष कुमार राय 'बटोही' क 'दलित छी हम' जकाँ यथार्थवादी आ क्रान्तिकारी पद्यमे नव-जीवन पावि रहल अछि.1 ई संक्रमण न केवल रचनाकार लोकनिक वर्वर्गीय पृष्ठभूमिमे आएल अछि, अपितु साहित्यिक आस्वाद आ रस-सिद्धान्तमे सेहो एकटा भारी परिवर्तनक सूचक अछि.1

गजल विधाक प्रसंगमे व्याकरणयुक्त बहरक पक्षधर आशीष अनचिन्हार आ मुक्त छन्दक लोक प्रियताक द्वंद्व ई दर्शबैत अछि जे कोना मैथिली गजल शास्त्रीय अनुशासनक संग अपन लोक-संवेदनाकेँ बँचबैत अछि.1 गजेन्द्र ठाकुरक सम्पादनमे 'विदेह' ई-पत्रिका न केवल अन्तरजालीय स्तरपर मैथिलीक प्रथम मंच बनल, अपितु शास्त्रीय आ लोक-साहित्यक बीच एकटा समानान्तर सेतु बनबाक ऐतिहासिक दायित्वक निर्वहन केलक.1

समग्र रूपमे, संकलनक गद्य आ पद्य मिथिलाक माटि, पम्पसेट आ हरित क्रान्तिक प्रभाव, बेरोजगारीक दंश, नारी अस्मिता, आ व्यवस्थापर करारा प्रहार करैत मैथिली भाषाक लोकतान्त्रिक विकास यात्राकेँ अभिनव आयाम प्रदान करैत अछि.1

Works cited

गजेन्द्र ठाकुर - विकिपिडिया, accessed on June 16, 2026, https://mai.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A5%87%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%B0_%E0%A4%A0%E0%A4%BE%E0%A4%95%E0%A5%81%E0%A4%B0

VIDEHA 355 BRAHMI VERSION - Gajendra Thakur - Google Books, accessed on June 16, 2026, https://books.google.com/books/about/VIDEHA_355_BRAHMI_VERSION.html?id=7MaUEAAAQBAJ

The 269th issue of videha-First Maithili fortnightly international, accessed on June 16, 2026, https://groups.google.com/g/videha/c/rKnXiR2-8sg

विदेह ३७१ म अंक ०१ जून २०२३ (िर्ष१६ मास १८६ अंक ३७१ - WordPress.com, accessed on June 16, 2026, https://videhajournal.files.wordpress.com/2023/06/videha_archive_may_2023_version_kaithi.pdf

2012 - मैथिली समालोचना, accessed on June 16, 2026, https://maithili-samalochna.blogspot.com/2012/

स्वतंत्रता संग्राम में क्रांतिकारी महिलाओं की भूमिका - Zenodo, accessed on June 16, 2026, https://zenodo.org/records/15544930/files/x170429.pdf?download=1

इकाइ 5 कविता, accessed on June 16, 2026, https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/39419/3/Unit-5.pdf

मैथिली गजल - विकिपिडिया, accessed on June 16, 2026, https://mai.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AE%E0%A5%88%E0%A4%A5%E0%A4%BF%E0%A4%B2%E0%A5%80_%E0%A4%97%E0%A4%9C%E0%A4%B2

Sahitya Academy Awardee Umesh Paswan Life Story - Amar Ujala Kavya - "ढिबरी का तेल भी हमारे लिए बेशकीमती था"- उमेश पासवान, accessed on June 16, 2026,

https://www.amarujala.com/kavya/mud-mud-ke-dekhta-hu/sahitya-academy-awardee-umesh-paswan-life-story

चौकीदारी करने वाले कवि को मिला साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार - Amar Ujala, accessed on June 16, 2026, https://www.amarujala.com/kavya/halchal/guard-umesh-paswan-gets-yuva-sahitya-academy-award

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह-सदेह २१ : एक विस्तृत साहित्यिक समीक्षा — उपक्रम : समानान्तर संकलनक संरचना

अध्याय 39 · विदेह सदेह २४ : विस्तृत साहित्यिक समीक्षा

सारांश विदेह सदेह २४ मैथिली गद्य आ पद्यक एहन विशाल संकलनक रूपमे सामने अबैत अछि जाहिमे पत्रिकागत रचनात्मकता, लोक-संवेदना, आलोचनात्मक चेतना, स्मृति, समकालीन चिन्ता आ भाषिक अस्मिताक बहुधा स्वर एक ठाम जुटल अछि। एहि पोथीक मूल प्रकृति संकलनात्मक अछि, मुदा ई मात्र रचना-संग्रह नै, अपितु मैथिली साहित्यक चलैत समयक एक जीवित दर्पण अछि। एकर गद्य-खण्डक विस्तार बहुत बेसी अछि आ पद्य-खण्ड ओकरा भावात्मक, गेय आ स्मरणशील पूर्णता दैत अछि।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · स्मृति · अस्मिता · आलोचना

विदेह सदेह २४ मैथिली गद्य आ पद्यक एहन विशाल संकलनक रूपमे सामने अबैत अछि जाहिमे पत्रिकागत रचनात्मकता, लोक-संवेदना, आलोचनात्मक चेतना, स्मृति, समकालीन चिन्ता आ भाषिक अस्मिताक बहुधा स्वर एक ठाम जुटल अछि। एहि पोथीक मूल प्रकृति संकलनात्मक अछि, मुदा ई मात्र रचना-संग्रह नै, अपितु मैथिली साहित्यक चलैत समयक एक जीवित दर्पण अछि। एकर गद्य-खण्डक विस्तार बहुत बेसी अछि आ पद्य-खण्ड ओकरा भावात्मक, गेय आ स्मरणशील पूर्णता दैत अछि। एहि संकलनक एक प्रमुख विशेषता ई अछि जे ई केवल नामी रचनाकारक मंच नै बनैत; नव, मध्यम आ स्थापित स्वर सभकेँ संग-संग स्थान दैत अछि। तेँ ई पोथी साहित्यिक लोकतंत्रक रूप सेहो ग्रहण करैत अछि।

एहि संकलनक प्रारम्भमे विदेहक साहित्यिक अभियानक भावभूमि स्पष्ट होइत अछि। सम्पादक गजेन्द्र ठाकुरक सम्पादकीय दृष्टि एतऽ केवल संचयन धरि सीमित नै अछि; ओ मैथिली साहित्यक नाना विधा, नाना पीढ़ी, नाना भूगोल आ नाना स्वरसँ एक समग्र साहित्यिक परिदृश्य रचैत छथि। संकलनमे लोक-संस्कृति, स्त्री-अनुभव, लघुकथा, बीहनि कथा, आलोचना, साक्षात्कार, संस्मरण, गजल, बाल-कविता, प्रकृति-काव्य, प्रतिरोध, अस्मिता, श्रम, मातृत्व, देह, मृत्यु आ महामारी-जकाँ अनेक भाव-क्षेत्र उपस्थित अछि। एहि व्यापकता सँ स्पष्ट होइत अछि जे मैथिली साहित्य आब केवल परम्परा पर टिकल नै अछि, बल्कि परम्पराक भीतरसँ नब चेतना, प्रश्न, प्रतिप्रश्न आ आत्मावलोकनक स्वर उठबैत अछि।

गद्य-खण्डक आरम्भ डा. किशन कारीगरक लोक-संस्कृति सम्बन्धी लेखनसँ होइत अछि। घोड़ा नाच, नटुआ नाच, भोजकाजी मनेजर आ पोसलाहा छागर सन विषय मिथिलाक लोकजीवनक ओ हिस्सा अछि जे धीरे-धीरे विस्मृति दिस धकेलल जा रहल अछि। डा. किशन कारीगरक उपस्थिति संकलनकेँ लोक-स्मृति आ सांस्कृतिक संरक्षणक आधार दैत अछि। एहि बाद सोनी कर्ण स्त्री-विमर्शक धारणा आ परिभाषा पर विचार करैत छथि, जाहिसँ संकलनक वैचारिक धरातल खुलैत अछि। रमा नाथ मिश्रक लघुकथा, कंचन कण्ठक स्त्री-सज्जा आ परंपरा-संबंधी दृष्टि, नन्द विलास राय, बिटू मिश्र वत्स, उमेश मण्डल आ लालदेब कामतक रचनात्मक उपस्थिति गद्य-खण्डकेँ ग्रामीण जीवन, पारिवारिक सम्बन्ध, संस्कार, हास-व्यंग्य आ संवेदनाक विविध रंगसँ भरैत अछि।

एहि संकलनक बीचमे रामलोचन ठाकुरक केन्द्रित उपस्थिति अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। हुनकर जीवन, काव्य, लोककथा, अनुवाद, प्रतिरोधी चेतना, व्यक्तित्व,

काव्य-युद्ध, भाषिक आ सांस्कृतिक आस्था, मैथिली-सेवा आ जन-सम्बद्धता पर अनेक लेखक अपन-अपन दृष्टि दैत छथि। डा. वन्दना कुमारीक साक्षात्कार स्त्री आ रंगमंचक प्रश्नकेँ रामलोचन ठाकुरक प्रसंगसँ जोड़ैत अछि। अमरकान्त लाल, प्रदीप पुष्प, शैलेन्द्र मिश्र, अरविन्द ठाकुर, आमोद झा, चन्द्रेश, शिवशंकर श्रीनिवास, दिलीप कुमार झा, नचिकेता, नबोनारायण मिश्र, अशोक, नारायणजी, भ्रमर, संतोषी कुमार, केदार कानन, सुरेन्द्र ठाकुर, वियोगी, बिहारी, कामेश्वर झा "कमल", डॉ कैलाश कुमार मिश्र, रमण कुमार सिंह, डॉ अनमोल झा आ रमेश — सभ रामलोचन ठाकुरक व्यक्तित्व आ कृतित्वकेँ भिन्न-भिन्न कोणसँ देखैत छथि। एहि बहु-दृष्टि सँ रामलोचन ठाकुर केवल एक कवि अथवा रचनाकार नै रहि जाइत छथि; ओ मैथिली समाजक स्मृति, संघर्ष, लोक-मूल, प्रतिरोध आ सांस्कृतिक संकल्पक प्रतीक बनैत छथि।

भीमनाथ झा, महाकान्त ठाकुर आ अरविन्द ठाकुरक अन्य लेखन संकलनमे सामाजिक चेतना, जनपदीय अनुभूति आ साहित्यिक मूल्यांकनक धरातलकेँ गाढ़ करैत अछि। विशेषतः अरविन्द ठाकुरक उपस्थिति लम्बा आलोचनात्मक फैलाव लैत अछि; ओ साहित्यक भीतर जातीय, भाषिक, लोक-सांस्कृतिक आ ऐतिहासिक प्रश्न सभकेँ जोड़ैत छथि। एहि प्रकारेँ गद्य-खण्डमे आलोचना केवल प्रशंसा नै, बल्कि विचारक संघर्ष बनैत अछि।

बीहनि कथा एहि संकलनक अत्यन्त व्यापक क्षेत्र अछि। आभा झा बीहनि कथाक उपादेयता आ अपन कथासमूहसँ एहि विधाक सम्भावना खोलैत छथि। अरुण लाल दास, कल्पना झा, सुभाष कुमार कामत, पूनम झा, पूजा झा, प्रियंवदा तारा झा, रवि भूषण पाठक, अमरेश कुमार चौधरी, सांत्वना मिश्रा, रूचि स्मृति, देवेन्द्र मिश्र, मिन्नी मिश्र, गौरी शंकर साह, सत्यनारायण झा, घनश्याम घनेरो, अभिलाष ठाकुर, अखिला नन्द झा 'रमण', सबिता झा 'सोनी', पूनम झा "सुधा", मनोज मंडल, चंदना दत्त, विन्देश्वर ठाकुर, कुन्दन कर्ण, सोनी नीलू झा, विनीता ठाकुर, डॉ प्रमोद कुमार, इरा मल्लिक, सत्येन्द्र कर्ण, जवाहर लाल कश्यप, जयंती कुमारी, डा. शिव कुमार प्रसाद, विद्या चन्द्र झा "बमबम", भावना मिश्रा, अमर कान्त लाल, अमल कुमार झा, प्रभात कुमार कर्ण, डॉ प्रमोद झा "गोकुल", निवेदिता झा, ओम चौधरी, भुवनेश्वर चौरसिया 'भुनेश', जगतरंजन झा, शेफालिका वर्मा, प्रभाष अकिंचन, मुन्नी कामत, मिसिदा, मृणाल आशुतोष, ज्ञानवर्द्धन कंठ, राजीव कर्ण, जगदानन्द झा 'मनु', विरेन्द्र कुमार झा, मुन्ना जी, अनीता मिश्र, नीरज कर्ण आ सुचिता कुमारी एहि विधाक विविध रूप सामने अनैत छथि।

ई भाग संकलनक जन-स्वरक आधार अछि। बीहनि कथा लघु आकारमे गाढ़ संकेत, तीक्ष्ण व्यंग्य, करुण भाव, घरेलू तनाव, स्त्री-पीड़ा, किसानक चिन्ता, गरीबी, छल-प्रपंच, भरोस, प्रेम, मोह, सामाजिक पाखंड, नब समयक बेचैनी आ मानवीय सम्बन्धक टूट-फूटकेँ पकड़ैत अछि। एहि विधाक सामूहिक उपस्थिति देखबैत अछि जे मैथिली गद्य आब दीर्घ आख्यान मात्रपर निर्भर नै अछि; एक छोट संकेत, एक घटना, एक संवाद, एक व्यंग्य-बिन्दु आ एक भाव-क्षण सेहो साहित्य बनि सकैत अछि।

एहि संकलनमे मैथिली सीमा सँ बाहरक भारतीय भाषिक संसारसँ आबि रहल रचनात्मक स्वर सेहो समाविष्ट अछि। अंजू खरबंदा, रवि प्रभाकर, सतीश खनगवाल, विजय 'विभोर', योगराज प्रभाकर, सदानन्द कविश्वर, डा पुष्करराज भट्ट, प्रा. डा. कपिल लामिछाने, हरिप्रसाद भण्डारी, तारा केसी, रचना शर्मा, डॉ. प्रदीप कौड़ा, निरंजन बोहा, जगदीश अरमानी, जंगबहादुर सिंह घुम्मण, दीपक बुदकी, मुबश्शिर अली ज़ैदी, इब्न आसी, रतन सिंह, सच्चिदानन्द कर, प्रज्ञा महान्ति, विनय कुमार दास, गायत्री दास आ मिनती प्रधानक उपस्थिति संकलनकेँ व्यापक भारतीय संवेदना सँ जोड़ैत अछि। एहि लेखक सभक माध्यमसँ मैथिली पाठक दोसर भाषाभूमिक कथा-संरचना आ मानवीय अनुभवसँ परिचित होइत छथि। ई बात संकलनक खुलापन आ संवादशीलता सिद्ध करैत अछि।

गद्य-खण्डक अन्तिम भागमे जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’ आ आशीष अनचिन्हारक उपस्थिति उल्लेखनीय अछि। जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’ रामलोचन ठाकुरक प्रसंग आ अपन रचनात्मक संसारक माध्यमसँ स्मृति आ सृजनक सेतु बनबैत छथि। आशीष अनचिन्हार परंपरा आ प्रगति, रामलोचन ठाकुरक मूल्यांकन, बीहनि कथा आ पाठक-लेखक सम्बन्धक प्रश्न उठबैत छथि। एहि सँ संकलन आत्मचिन्तनशील बनैत अछि; ओ केवल रचना राखि चुप नै भऽ जाइत, बल्कि रचना, पाठक, विधा आ साहित्यिक दायित्व पर सेहो विचार करैत अछि।

पद्य-खण्ड संकलनक संवेदनात्मक विस्तार अछि। जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’, ज्ञानवर्द्धन कंठ आ आशीष अनचिन्हार गजलक माध्यमसँ मैथिली काव्यक गेयता, विरह, व्यथा, व्यंग्य आ समकालीन बोधकेँ स्वर दैत छथि। सुभाष कुमार कामत जनगणना, गाम आ बदलैत जीवनक संकेत लैत छथि। मुन्ना जी बाल-कविताक माध्यमसँ संस्कारक प्रश्न उठबैत छथि। आभा झा, आकांक्षा कर्ण, सोनी कर्ण, रागिनी प्रीत, रागिनी मनोरथ, प्रीति प्रभा, संतोष कुमार राय 'बटोही', अमर ठाकुर, विभा रानी, कल्पना झा, ममता कर्ण, आरती, सविता 'सुमन', आनन्द दास “गौतम”, सोनी दास, कंचन कंठ, महेन्द्र हजारी, नारायणजी, विनोद कुमार झा आ बिनय भूषण पद्य-खण्डकेँ अनेक भावस्वर दैत छथि।

पद्य-खण्डमे स्त्री-अस्मिता, बेटी, सखी, शिक्षा, श्रम, देह, मातृत्व, प्रकृति, उमंग, आशा, मौन, भक्ति, स्मरण, रामलोचन ठाकुरक प्रति श्रद्धा, पृथ्वी, महामारी, मृत्यु, राजनीति आ यात्रा — सभ भावक्षेत्र खुलैत अछि। विभा रानी देहक माध्यमसँ स्त्री-अनुभवक गहन आ असुविधाजनक सच सामने अनैत छथि। ममता कर्ण बरसात, निर्भरता, किताब आ मजदूरक थकानसँ जीवनक यथार्थ रचैत छथि। बिनय भूषणक लम्बा काव्य-फैलाव महामारी, मृत्यु, माई, पृथ्वी, सत्ता-चिन्ता आ यात्राक बीच मानवीय भय आ अस्तित्वक प्रश्न उठबैत अछि। नारायणजी, महेन्द्र हजारी आ विनोद कुमार झा पद्यक माध्यमसँ रामलोचन ठाकुरक स्मरणक श्रृंखला पूरा करैत छथि।

एहि संकलनक सबसे पैघ शक्ति एकर बहुस्वरता अछि। एहि मे लोकनाच सँ स्त्री-विमर्श धरि, लघुकथा सँ आलोचना धरि, बीहनि कथा सँ गजल धरि, बाल-कविता सँ देह-चेतना धरि, मिथिला सँ व्यापक भारतीय अनुभव धरि, स्मृति सँ प्रतिरोध धरि, सब किछु एक संग उपस्थित अछि। ई व्यापकता कतहु-कतहु असमानता सेहो अनैत अछि; सभ रचना एके स्तरक नै होयत, सभ स्वर समान परिपक्व नै होयत, मुदा संकलनक सार्थकता एहीमे अछि जे ई साहित्यिक प्रवाहकेँ ओकर वास्तविक बहुलतामे पकड़ैत अछि। साहित्य केवल शिखर रचना सँ नै बनैत; ओ छोट-छोट स्वर, प्रयोग, गलती, आकांक्षा, प्रश्न आ नव बोलबाक साहससँ बनैत अछि।

भाषाक दृष्टिसँ संकलन मैथिली जीवनक अनेक परत खोलैत अछि। कतहु देसिल बयना अछि, कतहु शहरी बोध, कतहु लोककथा, कतहु आधुनिक चिन्ता, कतहु स्त्रीक नीरव वेदना, कतहु किसानक धरती-संग सम्बन्ध, कतहु परिवारक तनाव, कतहु महामारीक डर, कतहु स्मृतिमे बसल गुरु-पुरुष। एहि भाषा-सम्पदाकेँ एक सूत्रमे बाँधब सम्पादकीय साहसक काज अछि। गजेन्द्र ठाकुरक सम्पादन संकलनकेँ न केवल सामग्रीक विस्तार दैत अछि, बल्कि मैथिली साहित्यक चलैत इतिहासक एक जीवित अभिलेख सेहो बनबैत अछि।

समग्रत: **विदेह सदेह २४** मैथिली साहित्यक एक बहुआयामी संकलन अछि। ई लोक-संस्कृतिक क्षय पर चिन्ता करैत अछि, स्त्रीक अनुभवकेँ स्थान दैत अछि, रामलोचन ठाकुर सन रचनाकारक बहु-दृष्टि मूल्यांकन करैत अछि, बीहनि कथाक उभारकेँ मान्यता दैत अछि, गद्य आ पद्य दुनूकेँ समान आदर दैत अछि, आ मैथिली साहित्यकेँ व्यापक भारतीय रचनात्मक संवादमे राखैत अछि। एहि पोथीक महत्त्व एतबे नै जे एतऽ बहुत रचनाकार छथि; एकर महत्त्व एहि मे अछि जे सभ रचनाकार मिलि मैथिली भाषाक एक विशाल जीवित परिवार रचैत छथि। एहि परिवारमे लोक अछि, समाज अछि, स्त्री अछि, किसान अछि, माई अछि, गुरु अछि, गाम अछि, नगर अछि, महामारी अछि, प्रतिरोध अछि, भक्ति अछि, व्यंग्य अछि, प्रेम अछि, स्मृति अछि आ भविष्यक आशा अछि। एहि कारणेँ ई संकलन मैथिली साहित्यक इतिहासमे एक महत्वपूर्ण सामूहिक दस्तावेजक रूपमे देखल जा सकैत अछि।

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह सदेह २४ : विस्तृत साहित्यिक समीक्षा

अध्याय 40 · विदेह सदेह ३१ — डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यपक गद्य-पद्य रचनाक

सारांश सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा आधार-पाठ: विदेह सदेह ३१, विदेह—प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका, ISSN 2229-547X

प्रस्तावना ‘विदेह सदेह ३१’ दू भिन्न रचनात्मक स्वभावक लेखक—डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप—केँ एके संकलनमे

आमने-सामने रखैत अछि। अनुक्रमक आधार पर गद्य-खण्डमे डॉ. कामिनी कामायनीक २५ आ कुमार मनोज कश्यपक ३३ प्रविष्टि तथा पद्य-

खण्डमे क्रमशः २८ आ ३ प्रविष्टि अछि। मुदा आन्तरिक संरचना देखलापर ‘आधुनिक स्त्रीगण १–५’ पाँच पृथक् काव्य-इकाइ आ ‘किछु

गजल’ दू गजल समेटने अछि; अतः वास्तविक रचनात्मक इकाइक संख्या ९४ धरि पहुँचैत अछि।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · गजल · आलोचना · सांस्कृतिक अध्ययन

सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा

आधार-पाठ: विदेह सदेह ३१, विदेह—प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका, ISSN 2229-547X

प्रस्तावना

'विदेह सदेह ३१' दू भिन्न रचनात्मक स्वभावक लेखक—डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप—कैं एके संकलनमे आमने-सामने रखैत अछि। अनुक्रमक आधार पर गद्य-खण्डमे डॉ. कामिनी कामायनीक २५ आ कुमार मनोज कश्यपक ३३ प्रविष्टि तथा पद्य-खण्डमे क्रमशः २८ आ ३ प्रविष्टि अछि। एहि तरहें अनुक्रममे कुल ८९ प्रविष्टि अछि। मुदा आन्तरिक संरचना देखलापर 'आधुनिक स्त्रीगण १–५' पाँच पृथक् काव्य-इकाइ आ 'किछु गजल' दू गजल समेटने अछि; अतः वास्तविक रचनात्मक इकाइक संख्या ९४ धरि पहुँचैत अछि। कुमार मनोज कश्यपक 'परजा' अनुक्रममे दू बेर आएल अछि, आ 'मरीचका' तथा 'मरिचिका' दू पृथक् प्रविष्टि रूपमे उपस्थित अछि। एहि समीक्षा मे ई पुनरावृत्ति चुपचाप हटाओल वा मिला देल नहि गेल अछि। जत्तऽ अनुक्रम आ मूल शीर्षकमे पाठान्तर अछि—जेना 'आखिर कहिया मरि' बनाम मूल रचना-पृष्ठक 'आखिर कहिया धरि'—तत्तऽ पाठ-साक्ष्यक भिन्नता यथावत् दर्ज कएल गेल अछि।

एहि अध्ययनक पद्धति मूल पाठक समीप-पाठ, कथ्य-विश्लेषण, चरित्र-रचना, कथन-शिल्प, प्रतीक-बिम्ब, व्यंग्य, मिथकीय पुनर्पाठ, स्त्री-दृष्टि, वर्ग-विषमता, प्रवासन, ग्रामीण-नगरीय संक्रमण, भाषा-अस्मिता, स्मृति, वृद्धावस्था, श्रम, नौकरशाही, भ्रष्टाचार, आधुनिकता, उपभोक्तावाद आ सामाजिक नैतिकताक परिप्रेक्ष्य पर आधारित अछि। जत्तऽ कथा स्वयं स्पष्ट निष्कर्ष दैत अछि, तत्तऽ समीक्षा ओकरा पाठसँ जोड़ैत अछि; जत्तऽ पाठ संकेत मात्र दैत अछि, तत्तऽ व्याख्या कैं 'संकेत', 'प्रतीत होइत अछि' अथवा 'पढ़ल जा सकैत अछि' जेकाँ सावधान भाषामे राखल गेल अछि। बाहरी तथ्य जोड़ि कथा अथवा लेखक-जीवनक खाली जगह भरबाक कोनो प्रयास नहि कएल गेल अछि।

भाग एक

डॉ. कामिनी कामायनीक गद्य-संसार

कामिनी कामायनीक गद्यक पहिल विशेषता ओकर व्यापक सामाजिक भूगोल अछि। हुनकर कथा मिथिलाक गाम-घर, पुरान संयुक्त परिवार, महानगर, प्रवासी जीवन, न्यायालय, अस्पताल, विश्वविद्यालय, सरकारी तंत्र आ दक्षिण-पूर्व एशियाक यात्रा-भूमि धरि पसरेल अछि। दोसर विशेषता अछि स्त्री-अनुभवक बहुस्तरीयता—बालिका, नववधू, सौस, पुतौह, वृद्धा, नौकरीपेशा स्त्री, प्रवासी स्त्री, घरेलू श्रमिक आ मिथकीय स्त्री सभ एके रचनात्मक संसारमे अपन-अपन स्वर पबैत छथि। तेसर विशेषता मौखिक कथा-परम्पराक पुनर्सृजन अछि: गामक ओसारा, दालान, आँगन, पोखरि, बइसारी, ननदि-भौजक कटाक्ष, बुजुर्गक स्मृति आ लोकोक्ति कथनक धड़कन बनैत अछि। ई विस्तार कखनो-कखनो कथा कैं दीर्घ आ प्रसंगबहुल बनबैत अछि, मुदा एहि प्रसंगबहुलतामे समाजक सूक्ष्म नृवंशात्मक विवरण सुरक्षित भऽ जाइत अछि।

१. नोम्पेंह

'नोम्पेंह' यात्रा-वृत्तान्त मात्र नहि, स्मृति आ इतिहासक द्वन्द्वक पाठ अछि। मेकोंग नदी, चौड़ा सड़क, फ्रांसीसी स्थापत्य, राजभवन, बाजार, नदी-कातक जीवन आ आधुनिक पर्यटनक चहल-पहल एक दिस राजधानीक आकर्षक चेहरा बनबैत अछि; दोसर दिस किलिंग फील्ड, पोल पॉटक नरसंहार, खोपड़ी-हड्डीक स्मारक आ स्कूलसँ कारागार बनल स्थल आधुनिक इतिहासक भयावह चेहरा खोलैत अछि। रचनाकार पर्यटनक विस्मयमे अन्हर नहि होइत छथि; सौन्दर्यक बीच हिंसाक स्मृति बारम्बार घुसैत अछि। एहि द्विरूपता सँ यात्रा-वर्णन नैतिक यात्रा बनि जाइत अछि—सभ्यता केवल भवन, बाजार आ संग्रहालय नहि, बल्कि ओ इतिहासो अछि जकर बोझ वर्तमान पीढ़ी ढोइत अछि। गरीबी, बेरोजगारी, बाल-मजदूरी आ बहुराष्ट्रीय उपभोग-संस्कृतिक उल्लेख उत्तर-युद्ध समाजक विषमताकैं सामने आनैत अछि। भाषा दृश्यात्मक अछि; प्रत्यक्ष अनुभवक सहजता एकरा संस्मरणात्मक विश्वसनीयता दैत अछि।

२. सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत

एहि यात्रा-वृत्तान्तक केन्द्र अंकोरवट आ ओकर सभ्यतागत परिसर अछि। विशाल मंदिर, बायोन, ता प्रोम, शिव-विष्णु-बौद्ध परम्पराक परत, पुरातत्त्व, मूर्तिकला, जंगल द्वारा पुनः घेरल स्थापत्य, फ्लोटिंग विलेज, युद्ध-संग्रहालय आ सांस्कृतिक ग्राम—सभ मिलि 'स्वर्णिम अतीत' कैं स्थिर गौरव नहि, बल्कि विघटन, पुनरुद्धार आ पर्यटनक वर्तमानसँ जोड़ैत अछि। लेखकक दृष्टि पर्यटकक कौतूहल आ इतिहास-बोधक बीच चलैत अछि। अतीतक वैभवक बगलमे आजुक गरीबी, अस्वच्छता, बाल-श्रम आ पर्यटन-निर्भर अर्थतंत्र उपस्थित अछि। फ्लोटिंग विलेजक वर्णन विशेष रूपसँ महत्त्वपूर्ण अछि, कारण ओ 'अजगुत' दृश्यकैं रोमानी बना कऽ नहि छोड़ैत, बल्कि शिक्षा, स्वच्छता आ जीविका-संकट सेहो देखैत अछि। एहि तरहें शीर्षकक 'स्वर्णिम' शब्दमे हल्का विडम्बनात्मक तनाव पैदा होइत अछि—सोना इतिहासमे अछि, वर्तमान ओकर छाया आ बाजार दुनू सँ जूझि रहल अछि।

३. लघुकथा—भागमंती

'भागमंती' शीर्षक स्वयं विडम्बनाक केन्द्र अछि। सुभासिनी कैं विवाहक बाद 'भागमंती' मानल जाइत अछि, कारण ओकर आगमनक संग परिवारमे शुभ

घटनाक संयोग जुड़ैत अछि; मुदा ओकर जीवनक निर्णायक प्रसंग ई नामक अर्थ कें उलटि दैत अछि। शिक्षा, विवाह, प्रेम-संदेह, ईर्ष्या आ सामाजिक प्रतिष्ठाक दबाव एक एहन भावनात्मक विस्फोट बनबैत अछि जाहिमे पुष्पाक प्रति सुभासिनीक हिंसा त्रासदीमे बदलि जाइत अछि। कथा आधुनिक शिक्षित परिवेशक भीतर पारम्परिक स्वामित्व-बोध आ स्त्री-स्त्री प्रतिस्पर्धाक विनाशकारी रूप देखबैत अछि। लेखक अपराधकें सनसनी नहि बनबैत छथि; ओ मानसिक असुरक्षा, अफवाह, ईर्ष्या आ सम्मान-बोधक जटिल गठजोड़क ओर ध्यान खींचैत छथि। 'भाग' आ 'दुर्भाग्य'क विरोधाभास शीर्षककें तीक्ष्ण बनबैत अछि।

४. सोर

'सोर'क मूल शक्ति समाजक आवाज आ व्यक्ति-अन्तरात्माक बीच तनावमे अछि। स्वाती जेकाँ स्त्रीक जीवनमे निजी संकट जखन सार्वजनिक चर्चा बनि जाइत अछि, तखन समाजक 'सोर' उपचार नहि, दोसर आघात बनैत अछि। रचनामे कलंक, अफवाह, आत्मग्लानि आ मानसिक अवसादक वातावरण अछि, मुदा एकदम अन्धकार नहि; चकोरक सहचर्य पुनर्संयोजनक सम्भावना खोलैत अछि। दावानल, गाछ, खोंता आदि बिम्ब भीतरक उथल-पुथलकें बाहरी प्रकृतिसँ जोड़ैत अछि। शीर्षक छोट अछि, मुदा अर्थ बहुस्तरीय—गाम-समाजक शोर, स्मृतिक शोर, आरोपक शोर आ अपन भीतरक बेचैनी सभ एके शब्दमे समाहित अछि। कथा स्त्रीक संकटकें 'चरित्र'क प्रश्न बनाबयवला सामुदायिक दृष्टिक आलोचना करैत अछि।

५. कोन डारि पर केकर खोता

एहि रचनामे 'डारि' आ 'खोता' परिवार, घर आ सम्बन्धक केंद्रीय रूपक बनैत अछि। संयुक्त परिवारक बँटवारा, रोजगारक कारण प्रवासन, पुरखाक घरक जर्जरता, वृद्ध स्त्रीक एकाकीपन आ संतानक दूराव कथा कें सामाजिक इतिहासक दस्तावेज बनबैत अछि। प्रश्न 'कोन डारि पर केकर खोता' केवल भौतिक घरक नहि, अपनापनक ठामक प्रश्न अछि। रक्त-संबन्ध जत्तऽ कमजोर पड़ैत अछि, तत्तऽ सेवा, स्मृति आ व्यवहार पर आधारित गैर-रक्त सम्बन्ध अधिक मानवीय सिद्ध भऽ सकैत अछि। कथा गाम बनाम शहरक सरल द्वन्द्व नहि रचैत; शहर सुविधा दैत अछि, गाम स्मृति आ जड़, मुदा दुनूमे एकाकीपन सम्भव अछि। कामिनी कामायनीक कथाभाषाक मौखिकता एहि रचनामे विशेष प्रभावी अछि।

६. घुइर ताकू

'घुइर ताकू' ग्रामीण स्त्री-बइसारी, बूढ़ पीढ़ीक अतीत-गौरव, अन्धविश्वास आ नव पीढ़ीक शरारतक हास्य-व्यंग्यपूर्ण कथा अछि। छोटकी काकी पुरान समयक मर्यादा, घोघ, बुजुर्गक प्रतिष्ठा आ स्त्री-आचरणक बखान करैत छथि, मुदा हुनकर अपन व्यवहार गारि, असन्तोष, पुतौह-विरोध आ निरन्तर शिकायतसँ भरल अछि। ई विरोधाभास कथा कें केवल 'पुरान बनाम नया' नहि रहय दैत, बल्कि स्मृति द्वारा अतीतकें चयनात्मक रूपें सुन्दर बनायबाक प्रवृत्तिक व्यंग्य करैत अछि। काकी 'घुइर ताकू' सुनब कें अपशकुन मानैत छथि; बुच्चीदायक जानि-बुझि पाछाँसँ एहि शब्दक पुकार कथा कें विस्फोटक हास्यपर समाप्त करैत अछि। लोकविश्वास, बाल-प्रतिरोध आ स्त्री-मौखिक संस्कृतिक ई संगम अत्यन्त जीवंत अछि।

७. माटीक मुरुत

'माटीक मुरुत' कामिनी कामायनीक स्त्री-केंद्रित गद्यक अत्यन्त सशक्त रचना अछि। भानपुर बाली बाल-विवाह, भारी गृहश्रम, सासुरक अपमान, यौन आक्रमणक प्रयास आ दोषारोपण सहैत छथि; टुनटुनक आक्रमणसँ बचबाक लेल दाँत गड़ेनाइ हुनकर आत्मरक्षाक निर्णायक क्षण अछि, मुदा परिवार उलटे हुनके दोषी ठहरबैत अछि। बादमे ओ उद्योग, खेती, सम्पत्ति-व्यवस्था, बीमार सास-ससुरक सेवा, पति आ संतानक संकट—सभ सम्हारैत छथि। हुनकर जिजीविषा स्त्रीकें निष्क्रिय 'अबला' मानयवला दृष्टिक प्रतिवाद अछि। शीर्षकक 'माटी' दोहरा अर्थ दैत अछि: माटि जकाँ सहनशील, गढ़ल जा सकयवला, मुदा अन्ततः माटिमे मिलयवला शरीर। खराब हीटरसँ दुर्घटनाजनित दहन आ मृत्यु कथा कें करुण चरम दैत अछि; पाठ आत्महत्या-अफवाहकें अस्वीकार करैत अछि।

८. विलायत वाली कनिया

एहि कथा मे प्रवासन, जाति, भाषा, सेवा आ पारिवारिक पूर्वग्रहक सूक्ष्म पुनर्मूल्यांकन अछि। छोट बेटा वरुण अपन पसिन्नक आन जातिक कन्यासँ विवाह कऽ लंदन बसैत अछि; माता-पिता आरम्भमे एहि विवाहकें आघात मानैत छथि। जखन वरुण अपन केरळ-जनमी नर्स पत्नी सकीना/हीना आ कन्या संग अबैत अछि, तखन 'विदेशी' पुतौहक व्यवहार पूर्वधारणाकें तोड़ैत अछि। हीना बीमार माँक दवा, ऑक्सीजन, व्यायाम आ आहारक वैज्ञानिक देखभाल करैत अछि, आ सेवा द्वारा विश्वास अर्जित करैत अछि। मुदा कथा एतबे सरल नहि: दूर गेल पुतौहक फोन धीरे-धीरे विरल होइत अछि, जखनकि घरमे रहयवाली भारती लगातार पूरा परिवारक श्रम वहन करैत अछि। अंतिम प्रशंसा—'विलायत वाली कनिया बड़ नीक'—पूर्वग्रह-विघटन अछि, मुदा अदृश्य घरेलू श्रमक प्रश्न सेहो छोड़ैत अछि।

९. सूटक कपड़ा

'सूटक कपड़ा' छोट घटना सँ अहंकारक पैघ व्यंग्य रचैत अछि। वेदान्त एक बन्द पैकेटकें बिना खोलने महँगा सूटक कपड़ा मानि लैत छथि, अपन 'अनुभव' आ समझदारी पर गर्व करैत छथि, आ परिवारक जिज्ञासाकें मूर्खता मानैत छथि। विवाहक ठीक पहिने दरजी जखन पैकेट खोलैत अछि, तखन भीतर डबल-बेडक

चादर आ दू गेरुआ खोल निकलैत अछि। कथाक हास्य केवल वस्तु-पहचानक भूल पर नहि, बल्कि आत्मविश्वासक अति, उपहार-संस्कृति, पद-प्रतिष्ठा आ उपभोक्तावादी दिखावापर केन्द्रित अछि। चरित्रक बोलचाल, घरक ठट्ठा आ अन्तिम खुलासा एकदम लघुकथात्मक 'पंच' पैदा करैत अछि। शीर्षक साधारण वस्तुकेँ प्रतिष्ठा-भ्रमक प्रतीक बना दैत अछि।

१०. चुमौन

'चुमौन' परम्परा आ आधुनिक विवाह-संस्कृतिक टकरावकेँ मातृ-अनुभवक मार्मिक धरातल पर राखैत अछि। सुलेखाक माँ संस्कारक सामग्री जुटबैत, नाता-गोता याद करैत, बेटाक विवाहमे अपन मातृत्वक दीर्घ आकांक्षा पूर्ण करय चाहैत छथि। दिल्लीक पाँच सितारा होटलमे सम्पन्न विवाह, वर्गीय प्रदर्शन आ तेज आधुनिकता एहि घरेलू-सांस्कृतिक तैयारीकेँ अप्रासंगिक बना दैत अछि। भावी पुतौहक 'आइ डोन्ट लाइक दीज रस्टिक रिचुअल्स' कहि चुमौनकेँ अस्वीकार करब विशेष पीड़ादायक अछि, कारण माँ अशिक्षित नहि—ओ अंग्रेजीमे उच्चशिक्षित पूर्व अध्यापिका छथि। अतः संघर्ष 'शिक्षित बनाम अनपढ़' नहि, बल्कि सम्मान बनाम सांस्कृतिक दर्पक अछि। अन्तमे माँ बेटाक सुखकेँ प्रधान मानि अपना मनकेँ बुझबैत छथि; मातृत्वक त्याग कथा केँ करुण संयम दैत अछि।

११. चुट्टा लेबे की छुट्टी

एहि कथा मे बाल्य-स्मृति आ वयस्क राजनीतिक-नैतिक यथार्थ अकस्मात भिड़ैत अछि। गुरुग्रामक मॉलमे स्निग्धा दशकौँ बाद प्रीति/गुलाबकेँ हाथक पुरान गोदना-चिह्नसँ चिन्हैत छथि। बाल्यक खेल, पोखरि, गाछ, लोकगीत आ 'चुट्टा लेबे की चुट्टी'क शरारती लय दूनू स्त्रीकेँ तीस बरख पाछाँ लऽ जाइत अछि। मुदा विदाइकाल प्रीतिक विजिटिंग कार्ड स्निग्धाकेँ झकझोरैत अछि: कार्ड पर ओहि नामक सम्बन्ध खुलैत अछि जेकरा स्निग्धा अपन पतिक विरुद्ध अन्यायपूर्ण प्रशासनिक कार्रवाई आ निष्पक्ष जाँच नकारबाक प्रसंगसँ जोड़ैत छथि। बाल्यक 'शुद्ध' होयबाक खेल अचानक वयस्क नैतिक अपराध-बोधक रूपक बनि जाइत अछि। स्मृति एतऽ आश्रय सेहो अछि आ कठोर दर्पण सेहो।

१२. भरोस

गद्य 'भरोस' वृद्धावस्था, प्रवासी संतान आ घरेलू श्रमिकपर निर्भर ग्रामीण जीवनक अस्थिर नैतिक अर्थव्यवस्थाकेँ देखबैत अछि। कन्हौलीवाली पर घरक बुजुर्ग माँजी निर्भर छथि; ओ श्रमिक स्त्री अवसरवादी, नखरैल, कखनो असत्यवादी प्रतीत होइत अछि, मुदा रोग, अकेलापन आ रोजमर्राक संकटमे सेएह सर्वाधिक उपस्थित रहैत अछि। शहर-गेल बेटा-पुतौह आदर्श प्रेम रखैत छथि, पर भौतिक उपस्थिति नहि। 'अहीं के भरोसे माँजी के छोड़ने जाए छी' वाक्य सम्बन्धक विडम्बना खोलैत अछि: भरोस पूर्ण नैतिक पवित्रता नहि, बल्कि उपलब्धता, पारस्परिक जरूरत आ दिनचर्याक सहारे बनैत अछि। वृद्धा स्वयं कहैत छथि जे मरियो जाएब तँ कन्हौलीवाली दरवज्जा पीटत आ खबरि करत। कथा आधुनिक परिवारक विखण्डन पर अत्यन्त संवेदनशील टिप्पणी अछि।

१३. लाल काकी

'लाल काकी' आरम्भसँ चरित्र-चित्रण आ सामुदायिक स्मृतिक कथा बनि उठैत अछि। ताँगाक टुन-टुन, गामक सुस्त दुपहरिया, लोकक जुटान आ 'लाल काकी पटना जा रहल छथि' जेकाँ सूचना एक व्यक्ति केँ सामुदायिक घटना बना दैत अछि। लाल काकीक असाधारण रूप, गौरव, घरवला के दोसर विवाहक प्रसंग, सौतिनक असमय मृत्यु, पुत्र-संतानक लोककथा आ हुनकर निर्भीक वाणी—सभ मिलि हुनका साधारण 'बूढ़ काकी'सँ अधिक एक लोक-चरित्र बनबैत अछि। रचनामे गामक कथा व्यक्ति पर परत-दर-परत चढ़ैत अछि; तथ्य, किंवदन्ती, अतिशयोक्ति आ स्मृति एक-दोसरसँ अलग करब कठिन होइत अछि। ई शिल्प दिखबैत अछि जे लोक-समाज व्यक्ति केँ केवल जीबैत नहि, ओकरा कथा बनाकऽ पुनः रचैत रहैत अछि।

१४. अभिशप्त

'अभिशप्त'मे घर केवल निवास नहि, विफल दाम्पत्यक मनोवैज्ञानिक अवशेष बनैत अछि। शान्ति कलात्मक प्रतिभा, गायन आ अपन व्यक्तित्वक आकांक्षा रखैत छथि; गौतमक घरेलू स्वामित्व-बोध एहि स्वायत्ततासँ टकराइत अछि। प्रेम अथवा विवाह जखन एक पक्षक रचनात्मक अस्तित्वकेँ निगलय लागैत अछि, तखन घर सुरक्षा-स्थानसँ 'अभिशप्त' स्थल बनि सकैत अछि। शान्तिक हटि जेनाइ, बेटीक प्रति उत्तरदायित्व आ सम्पत्तिक प्रश्न दाम्पत्य-विच्छेदकेँ केवल भावुक घटना नहि रहने दैत, बल्कि स्त्री-अधिकार आ आत्म-सम्मानक प्रश्न बनबैत अछि। शीर्षकक 'अभिशप्त' शब्द अलौकिक शापक अपेक्षा सम्बन्धमे जमा हिंसा, अहं आ असफल संवादक सामाजिक शापकेँ अधिक संकेत करैत अछि।

१५. समय काल

'समय काल' बदलैत सामाजिक मूल्य आ परिवारक भीतर ठाढ़ पुरान पितृसत्तात्मक अधिकारक टकरावक कथा अछि। शिक्षित, सक्षम स्त्री सेहो पतिक अकादमिक प्रतिष्ठा आ अहंकारक छायामे निर्णयहीन बनि जाइत छथि; गौरीक विवाहक प्रश्न एहि शक्ति-संरचनाकेँ उजागर करैत अछि। योग्य सम्बन्ध केवल एहि कारण टूटि जाइत अछि जे पिता अपन प्रतिष्ठा, चयनाधिकार आ सामाजिक 'मान'केँ बेटीकेँ समयपर जीवन-सहचर भेटबासँ ऊपर राखैत छथि। बादमे समय

अपन निर्णय थोपैत अछि—जकरा टारल गेल, ओ अवसर फेर ठीक ओहि रूपमे नहि अबैत अछि। 'इएह छै समयकाल' वाक्य कथाक सार अछि: समय सामाजिक रूढ़िक प्रतीक्षा नहि करैत। रचनामे करुणा आ व्यंग्य एकसाथ अछि; व्यक्तिगत अहंकारक मूल्य पूरा परिवार चुकबैत अछि।

१६. कठजीब

'कठजीब'क अन्नपूर्णा, जे धीरे-धीरे 'पुरनी दाय' नामसँ चिन्हल जाइत छथि, ग्रामीण स्त्री-श्रमक असाधारण प्रतिमा छथि। अपन पितृगृहक डीहसँ उखाड़ल गेल स्त्री एक गोहाल-सदृश आश्रयमे रहैत अछि, मुदा पूरा टोलक मौसम, रोपनी-कटनी, अतिथि, संस्कार, स्त्री-सम्बन्ध आ दैनिक जरूरत हुनकर चिन्तामे समाहित अछि। हुनकर जीवनमे निजी सुरक्षा न्यून, सामाजिक उपयोगिता अत्यधिक अछि। 'कठजीब' शीर्षक एहि कठोर जीवन-सहनशीलताक सटीक संकेत अछि—मानो ओ कठिन धरतीमे उगैत एहन जीव छथि जे टूटबाक बदला आरो काम करैत रहैत अछि। कथा ग्रामीण समाजक विरोधाभास सामने आनैत अछि: जकर श्रम सभकेँ चाही, ओकर अपन घर आ सम्मान सुनिश्चित नहि। चरित्र करुणा माँगैत नहि; ओकर कर्म स्वयं समाजक नैतिक प्रश्न बनि जाइत अछि।

१७. कलंकित चान

'कलंकित चान'क समीक्षा मे पाठक केन्द्रीय प्रतीक—चान, कलंक आ शक्तिशाली भानु—पर विशेष ध्यान देब आवश्यक अछि। रचनाक निष्कर्षात्मक प्रश्न कमजोर चान पर 'कलंक' देखबाक सामाजिक आदत आ प्रचण्ड शक्तिमान भानुक उत्तरदायित्वक बीच नैतिक तुलना खड़ा करैत अछि। एहि रूपककेँ स्त्री-पुरुष, कमजोर-शक्तिशाली अथवा दोषारोपणक व्यापक सामाजिक राजनीति रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि। महत्त्वपूर्ण ई जे कथा 'कलंक'केँ वस्तुगत सत्य नहि मानैत, बल्कि ई पूछैत अछि जे कलंक के लगबैत अछि, ककरा पर टिकैत अछि, आ शक्ति ककर दोषकेँ अदृश्य करैत अछि। शीर्षक सामाजिक दृष्टिक पक्षपातपर प्रहार करैत अछि। उपलब्ध पाठक आधारसँ एहि प्रतीकात्मक निष्कर्षक आगाँ कथानक-विस्तार जोड़ब उचित नहि, तेँ समीक्षा सेहो प्रतीक-स्तर धरि सीमित अछि।

१८. उत्तराक नोर

'उत्तराक नोर' स्मृति, प्रेम, अन्तरजातीय विवाह आ दाम्पत्य-मोहभंगक मनोवैज्ञानिक कथा अछि। पाँच बरख बाद मसूरी लौटली उत्तरा परिदृश्यक भीतर अपन अतीत देखैत छथि—प्रशिक्षण, संगीत, विकल्प/विकल संग प्रेम, परिवार-विरोध, विवाह, आ फेर धीरे-धीरे सम्बन्धमे घुसैत कटुता। पहाड़क दृश्य स्मृतिक 'ट्रिगर' बनैत अछि; बाहरी धुन्ध भीतरक अनिश्चिततासँ मेल खाइत अछि। कथा प्रेम-विवाहकेँ न रोमानी सफलता मानैत अछि, न सामाजिक असफलताक प्रमाण; ओ पूछैत अछि जे प्रेमक बाद दैनन्दिन व्यवहार, क्रोध, पेशागत दबाव आ संवादहीनता सम्बन्धकेँ कोना बदलैत अछि। 'नोर' निजी पश्चात्ताप, असफल अपेक्षा आ अपन निर्णयकेँ पुनः देखबाक भावनात्मक जल अछि।

१९. महानगर मे सुनीता

'महानगर मे सुनीता' शहरक चमकक नीचे चलैत असुरक्षित श्रम-अर्थतंत्रक कथा अछि। सुनीता घरेलू काम करैत, परिवार चलबैत, बच्चाक पढ़ाइ, पानी, किराया आ भविष्यक बचत जोड़ैत अछि। महानगर ओकरा अवसर दैत अछि, मुदा संस्थागत सुरक्षा नहि। चिटफण्ड-जेकाँ बचत-जाल, झूठ LIC/सम्पत्ति-योजना आ परिचित पुरुषक भरोसा आर्थिक शोषणक अनेक स्तर खोलैत अछि। सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ई जे कथा सुनीताकेँ दया-पात्र मात्र नहि बनबैत; ओ श्रमिक, योजनाकार, माँ आ आकांक्षी नागरिक अछि। ओकर त्रासदी 'मूर्खता'सँ नहि, बल्कि असंगठित श्रम, सीमित वित्तीय पहुँच आ विश्वासपर टिकल शहरी नेटवर्कसँ उत्पन्न होइत अछि। महानगर एतऽ उन्नतिक सीढ़ी सेहो अछि आ छलक भूलभुलैया सेहो।

२०. संटू क उपनैन

एहि कथा मे उपनयन संस्कार धार्मिक अनुष्ठानसँ अधिक परिवारक सामाजिक रंगमंच बनि जाइत अछि। दूर-दूर बसल सन्तान, पाहुन, व्यवस्था, खान-पान, वस्त्र, मान-सम्मान, ननदि-भौजक कटाक्ष आ पुरान हिसाब—सभ संस्कारक चारूकात जुटैत अछि। संटूक उपनैन सामूहिकता फेर सँ सक्रिय करैत अछि, मुदा संगहि दबी प्रतिस्पर्धा आ प्रतिष्ठा-बोध सेहो सतह पर आनैत अछि। कामिनी कामायनी धार्मिक विधिक उपहास नहि करैत छथि; व्यंग्य ताहि मानवीय व्यवहार पर अछि जे संस्कारक आध्यात्मिक आशयकेँ बाहरी प्रदर्शन आ नातेदारीक राजनीति मे ढाँपि दैत अछि। कथा ग्रामीण-प्रवासी संयुक्त परिवारक बदलैत संरचना समझबाक लेल महत्त्वपूर्ण सामाजिक दस्तावेज बनैत अछि।

२१. शाश्वत कथा

'शाश्वत कथा' फ्रेम-कथा द्वारा अतीत आ वर्तमानकेँ जोड़ैत अछि। महानगरीय सम्पन्नता, एनआरआई भवन आ ऊँच जीवनस्तरक बीच बैसल पुरुष ग्रामीण सोनदाय-चानदायक कथा सुनैत-सुनैत बुझैत छथि जे ई 'दूरक' कथा वास्तवमे हुनकर अपन कुलक इतिहास अछि। जायदाद, सौतिन-सदृश ईर्ष्या, नातेदारीक कटुता, वृद्ध स्त्रीक पीड़ा आ वर्षोंक उपेक्षा अन्तमे दूनू श्रोता-पुरुषकेँ अपराध-बोधमे रुला दैत अछि। शीर्षक 'शाश्वत' एहि अर्थमे कि मानवीय ईर्ष्या, स्वार्थ,

उपेक्षा आ देर सँ जागल पश्चात्ताप समय बदललाक बादो रूप बदलि फेर अबैत रहैत अछि। कथा कहनिहार आ सुननिहारक दूरी अन्तमे मिटि जाइत अछि; कथा मनोरंजनसँ नैतिक साक्ष्य बनि जाइत अछि।

२२. कनिया पूतरा के विवाह

एहि कथा मे बालखेल सामाजिक प्रशिक्षणक रूपक बनैत अछि। नववधू लाडो सासुरक दहेज-टिप्पणी सुनि अपन बचपनक ‘कनिया-पुतरा’ विवाह याद करैत अछि—गुड़िया, कपड़ा, गहना, भोज, पंडित, विदाइ, दहेज, सासुरक भार-दोर। जे खेल आरम्भमे सृजनशील सामूहिक आनंद अछि, से मित्र जयाक ‘बरकेँ की देल?’ प्रश्नसँ प्रतिस्पर्धा, अपमान आ हिंसामे बदलि जाइत अछि। बालिका सभ वयस्क समाजक दहेज-भाषा एतेक गहिराइ सँ सीखि चुकल छथि जे खेलो विषाक्त भऽ जाइत अछि। वर्तमान नववधू एहि स्मृतिक मार्फत बुझैत अछि जे परिवार बनब संयम, बुद्धि, व्यवहार आ त्यागक काज अछि; तोड़ब सहज। कथा दहेजक आलोचना भाषणसँ नहि, समाजीकरणक प्रक्रिया देखाकऽ करैत अछि।

२३. डार्विनक बानर

‘डार्विनक बानर’ दीर्घ हास्य-व्यंग्यात्मक चरित्र-कथा अछि। तंतू बाबू प्रतियोगी परीक्षाक अनन्त तैयारी, रटन्त विद्या, असामान्य आत्मविश्वास, शारीरिक कसरत, सामाजिक असंगति आ जानवर सभसँ विचित्र भिड़न्तक कारण धीरे-धीरे लोककथा-जेकाँ पात्र बनि जाइत छथि। बरद, बिलारि, कुकुर, घोड़ा आ ‘पकल दाढ़ीवला बूढ़’क भय कथा मे आवर्ती हास्य-मोटिफ अछि। अन्तक डार्विन-प्रसंग व्यंग्यक शिखर: मानो डार्विनक आत्मा तंतूकेँ ‘सब्जेक्ट’ मानि ई निश्चित करय चाहैत अछि जे मनुष्य बानरसँ विकसित भेल वा बानर एखनो मनुष्यरूपमे विचरि रहल अछि। विज्ञान एतऽ पाठ्य-सिद्धान्त नहि, सामाजिक आत्ममुग्धताक हास्य-दर्पण अछि। रचना रटन्त शिक्षा, बेरोजगारीक अनन्त तैयारी, पारिवारिक अपेक्षा आ आत्मज्ञानक अभावपर तीक्ष्ण टिप्पणी करैत अछि।

२४. टूटल तारा

‘टूटल तारा’ इतिहास-प्रेरित राजनीतिक रूपकक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि। शासक वर्ग जखन नाच-गान, निजी आसक्ति, विलास आ दरबारी प्रशंसामे डूबल रहैत अछि, तखन राज्यक सैनिक, अर्थतंत्र आ प्रशासनिक आधार ढहि सकैत अछि। इम्तियाज-जेकाँ आकर्षक केन्द्रक चारूकात शासकक मोह आ बाहर बढ़ैत असन्तोषक विरोधाभास कथा मे क्रमशः घनीभूत होइत अछि। ईस्ट इंडिया कम्पनी-जेकाँ बाहरी शक्ति के प्रवेश केवल बाहरी षड्यंत्र नहि, आन्तरिक राजनीतिक दुर्बलताक फल रूपमे उभरैत अछि। ‘टूटल तारा’ पतनशील सत्ता, चकाचौंधक क्षणभंगुरता आ इतिहासक अपरिहार्य दण्डक प्रतीक अछि। रचनाक मूल्य समकालीन राजनीति पर प्रत्यक्ष आरोपसँ अधिक सत्ता-विमर्शक सार्वकालिक रूपकमे अछि।

२५. अप्पन राज्य

‘अप्पन राज्य’ कल्पना, स्वप्न आ राजनीतिक व्यंग्यक मिश्रण अछि। पृथक् राज्यक आकांक्षा संग मंत्रीपदक बाँट, जाति-सम्बन्ध, विशेषज्ञक अहं, पदलोलुपता आ ‘ककरा कोन विभाग’क हास्यास्पद राजनीति चलैत अछि। संगहि मिथिला/विदेहक सम्भावित विकास-योजना—ताल-पोखरिक पुनर्जीवन, स्वच्छता, शिक्षा, उद्योग, माछ-मखान, विरासत, स्त्री-उन्नति आ क्षेत्रीय संसाधन—गंभीर वैकल्पिक कल्पना प्रस्तुत करैत अछि। एहि द्विस्तरीयता कारण कथा केवल मजाक नहि रहैत: एक दिस ‘अप्पन राज्य’क रचनात्मक स्वप्न, दोसर दिस सत्ता हाथ लगिते मानवीय स्वार्थक खतरा। ‘Power corrupts’ जेकाँ चेतावनीक भाव कथा मे निहित अछि। कामिनी कामायनीक सामाजिक कल्पना एतऽ व्यंग्यक भीतर विकास-दर्शन बनि उठैत अछि।

डॉ. कामिनी कामायनीक गद्य पर समेकित टिप्पणी

कामिनी कामायनीक गद्यक केन्द्र ‘समाजक भीतर स्त्री’ अछि, मुदा ओकर अर्थ केवल स्त्री-विषयक कथा नहि। स्त्रीक दृष्टिसँ परिवार देखैत काल वर्ग, श्रम, प्रवासन, शिक्षा, जाति, संपत्ति, रोग, वृद्धावस्था, आधुनिकता, लोकविश्वास, दहेज आ भाषा सभ आपस मे जुड़ि जाइत अछि। हुनकर कथा पात्रकेँ लम्बा सामाजिक वंश-वृत्त दैत अछि; एहि कारण चरित्र एक घटना नहि, समयक उत्पाद रूपमे उभरैत अछि। ‘माटीक मुरुत’, ‘कनिया पूतरा के विवाह’, ‘चुमौन’, ‘विलायत वाली कनिया’ आ ‘भरोस’ विशेष रूपसँ देखबैत अछि जे सेवा, अधिकार आ अपनापनक परिभाषा रक्त-संबन्धसँ स्वतः निश्चित नहि होइत। यात्रा-वृत्तान्त हुनकर दृष्टिक भूगोल विस्तृत करैत अछि, जखनकि ‘डार्विनक बानर’ आ ‘सूटक कपड़ा’ हास्यक माध्यमसँ गंभीर सामाजिक आलोचना सम्भव करैत अछि।

भाग दू

कुमार मनोज कश्यपक गद्य-संसार

कुमार मनोज कश्यपक गद्य कामिनी कामायनीक अपेक्षा अधिक संक्षिप्त, प्रसंग-केंद्रित आ अन्तिम ‘टर्न’ अथवा नैतिक झटका पर आधारित अछि। सरकारी दफ्तर, ट्रेन, सड़क, गामक चौक, रिक्सावाला, मास्टर, अधिकारी, वृद्ध पिता, श्रमिक बालक आ निम्न-मध्यवर्गीय परिवार हुनकर कथा-संसारक प्रमुख पात्र

छथि। व्यंग्य हुनकर अत्यन्त प्रभावी उपकरण अछि; 'ईमानदार', 'धर्मात्मा', 'फ्यूज बल्ब' जेकाँ शीर्षक कथाक अन्तमे अपन सीधा अर्थ उलटि दैत अछि। ई रचना सभ छोट आकारमे नैतिक प्रश्न उठबैत अछि—ईमानदारी बनाम व्यवस्था, करुणा बनाम स्वार्थ, सत्ता बनाम मनुष्यता, विकास बनाम विषमता।

१. विवशता

एक साधारण यात्रा-प्रसंग 'विवशता' केँ वर्ग-संबन्धक सूक्ष्म कथा बना दैत अछि। कथावाचक पैदल चलय चाहैत अछि, मुदा रिक्शाचालक अनुरोध करैत अछि जे बाबू लोकनि जँ पैदल चलताह तँ गरीबक परिवार कोना खायत। एतऽ सवारी लेनाइ सुविधा नहि, दोसरक जीविकासँ जुड़ल नैतिक निर्णय बनि जाइत अछि। शीर्षकक दोहरा अर्थ अछि—यात्री अपन इच्छा छोड़य लेल विवश, आ रिक्शाचालक रोजी लेल ग्राहकक दया पर विवश। कथा उपदेश नहि दैत; छोट संवाद स्वयं शहरी अर्थतंत्रक असमानता खोलि दैत अछि।

२. मरीचका

भवानी बाबू जीवन भर परिश्रम कऽ अपन घर बनबैत छथि, मुदा वृद्धावस्थामे ओहि घरमे हुनकर हिस्सा बालकनी आ भोजनक बारी-बँटवारा धरि सिमटि जाइत अछि। घर, जकरा ओ सुरक्षा आ पारिवारिक स्थायित्वक प्रतीक मानने छलाह, 'मरीचका' सिद्ध होइत अछि। कथा वृद्ध पिता के भूख, प्रतीक्षा आ मौन अपमानकेँ अत्यन्त संयत ढंगसँ देखबैत अछि। सम्पत्ति हस्तगत भेलाक बाद सन्तानक व्यवहार बदलनाइ आधुनिक पारिवारिक विखण्डनक तीक्ष्ण आलोचना अछि। शीर्षक भौतिक उपलब्धिक भ्रमक बोध दैत अछि।

३. परजा

गामक चुनावी चर्चा बीच मखना कहैत अछि—जे जीतय, जे हारय, 'हम सभ तँ परजा छी, परजे रहब।' एहि एक वाक्य मे कथा लोकतन्त्रक औपचारिक परिवर्तन आ गरीब नागरिकक वास्तविक जीवनक स्थिर असमानताक दूरी देखबैत अछि। 'परजा' शब्द राजतांत्रिक स्मृति सँ आयल होइतहुँ लोकतांत्रिक वर्तमानमे जीवित अछि, कारण सत्तासँ गरीबक सम्बन्ध अधिकारक अपेक्षा अधीनताक अछि। कथा चुनाव-विरोधी नहि; ओ प्रश्न करैत अछि जे सत्ता-परिवर्तन जँ जीवन-परिवर्तन नहि बने, तँ नागरिकता कतेक सार्थक अछि।

४. मर्यादाक हनन

गंगा बाबू ईमानदार मुख्य अभियन्ता छथि, मुदा पुत्र प्रभास अपन बेरोजगारीक दोष पिताक ईमानदारी पर दैत अछि—ओ चाहैत अछि जे पिता प्रभाव प्रयोग कऽ ओकर नौकरी लगा दितथि। कथा 'मर्यादा'क अर्थ उलटि पूछैत अछि: परिवारक अपेक्षा पूरा नहि करब मर्यादा-हनन अछि, वा पदक दुरुपयोग करब? पिता सार्वजनिक जीवनमे नैतिक छथि, मुदा पुत्रक दृष्टिमे ओ असफल पिता। एहि तनावमे नैतिकता निजी सम्बन्धक दबावसँ परीक्षा पबैत अछि। शीर्षक पाठककेँ तय करबाक लेल बाध्य करैत अछि जे वास्तविक हनन कोन दिस अछि।

५. प्रतिरोध

'प्रतिरोध' सत्ता आ भयक लघु रूपक अछि। मालिकक आदेश आ सेवकक आज्ञाकारिताक स्थिर सम्बन्ध तखन बदलैत अछि जखन सेवक मृत्यु अथवा दण्डक भय पार कऽ अपन आत्मसम्मानक पक्षमे ठाढ़ होइत अछि। प्रतिरोध केवल हिंसक विद्रोह नहि; 'नहि' कहबाक साहस स्वयं शक्ति-संतुलन बदलि दैत अछि। आश्रित बुझल सेवकक बिना मालिकक व्यवस्था सेहो अधूरी अछि—ई पारस्परिक निर्भरता कथा केँ सरल अत्याचारी-बनाम-पीड़ित सूत्रसँ अधिक जटिल बनबैत अछि।

६. दृष्टिकोण

नव नियुक्त राजपत्रित अधिकारी रजतक भीतर सरकारी दफ्तरक भ्रष्ट छविसँ भय अछि। पिता सलाह दैत छथि—आँख-कान खुजल राखू, अधीनस्थक अनुभव सुनू। फाइल पर क्लर्कसँ राय लेब आ तत्पश्चात 'कड़क अधिकारी'क छवि बनि जेनाइ कथा मे विनोद पैदा करैत अछि। 'दृष्टिकोण' बतबैत अछि जे अधिकार केवल पदनाम सँ नहि, सुनबाक क्षमता, व्यवहारिक ज्ञान आ परिस्थिति-पठन सँ विकसित होइत अछि। नौकरशाही पर कथा न अन्ध अविश्वास करैत अछि, न भोला विश्वास; ओ सीखबाक विनम्रताकेँ महत्त्व दैत अछि।

७. ओ तऽ बताह अछि

देवनारायण जिम्मेवार न्यायालयक कर्मचारी छथि। शरारती/उत्पीड़क फोन, लगातार मानसिक दबाव आ समाजक असंवेदनशीलता हुनका धीरे-धीरे अस्थिर करैत अछि। जखन मानसिक रोग स्पष्ट होइत अछि, समाजक प्रतिक्रिया सहानुभूति नहि, 'ओ तऽ बताह अछि' जेकाँ ठप्पा अछि। व्यक्ति के रोगसँ अधिक ओकर पहचान रोगमे समेटि देब—एहि क्रूरता पर कथा प्रहार करैत अछि। अस्पताल, जंजीर आ सामाजिक दूरी करुण वातावरण बनबैत अछि। शीर्षक समाजक

सुविधाजनक अमानवीकरणक वाक्य बनि जाइत अछि।

८. धमात्मा

सार्वजनिक रूपसँ दान-पुण्य, भिक्षुक-भोजन आ धार्मिक प्रतिष्ठा अर्जित करयवला व्यक्ति बारेमे जखन ई सूचना अबैत अछि जे ओकर अपन पिता भोजन-औषधि बिना मरलाह, तखन 'धमात्मा' शीर्षक तीक्ष्ण व्यंग्य बनि जाइत अछि। कथा धर्मक विरोध नहि, धर्मक प्रदर्शनवादी रूपक आलोचना अछि। बाहरक दान जँ घरक प्राथमिक नैतिक दायित्व ढाँपय, तँ पुण्यक अर्थ प्रश्नांकित होइत अछि। लघु आकार आ अन्तिम खुलासा एकरा प्रभावी नीतिपरक व्यंग्य बनबैत अछि।

९. मनस्ताप

ईमानदार अधिकारी बीस टकाक घूस लेल रामनिवासकेँ जेल पठबैत छथि, मुदा बादमे मंत्रीक दबावमे लाखोंक जाली/पिछली तिथि वला बिल पास करय पड़ैत अछि। रिहा रामनिवासकेँ देखलापर अधिकारीक भीतर उठल 'मनस्ताप' कथा केँ नैतिक ऊँचाई दैत अछि। समस्या व्यक्तिगत ईमानदारीक अभाव मात्र नहि; व्यवस्था छोट भ्रष्टाचारकेँ दण्डित करैत, पैघ भ्रष्टाचारकेँ सत्ता द्वारा वैध करैत अछि। अधिकारी स्वयं दोषी आ विवश दुनू छथि। एहि दोहरेपन कारण कथा सरल उपदेशसँ बचैत अछि।

१०. गिरैत देवाल

धोबी/इस्त्री करयवला गरीब पिता बेटीक विवाह आ दहेजक बोझ सँ दबायल अछि। जखन पैघ बेटी अपन पसिन्नक युवक संग चलि जाइत अछि, सामाजिक दृष्टिसँ ई 'अपमान' हो सकैत छल; पिता उलटे एहि मे ओ बाट देखैत अछि जे ओकर आर्थिक असमर्थता नहि खोलि सकल। 'गिरैत देवाल' जाति, गरीबी, दहेज आ पारिवारिक प्रतिष्ठाक ओ दीवार अछि जे बेटी अपन निर्णयसँ लाँघैत अछि। पिता के प्रतिक्रिया कथा केँ करुण उदारता दैत अछि।

११. कलाकार

ट्रैफिक सिग्नल पर सात-आठ बरखक बच्चा शरीर मोड़ि करतब देखबैत अछि; लाल बत्ती धरि मोटरवाला तमाशा देखैत छथि, हरियर बत्ती होते निकलि जाइत छथि, कटोरी खाली रहि जाइत अछि। 'कलाकार' शब्द सम्मानसूचक प्रतीत होइत अछि, मुदा कथा प्रश्न करैत अछि—दर्शक कला देखैत छथि वा बाल-गरीबीक तमाशा? आधुनिक शहरक क्षणिक मनोरंजन आ दीर्घ सामाजिक उदासीनताक ई अत्यन्त संक्षिप्त रूपक अछि।

१२. नोर अंगोर

गाममे कथावाचकक माँक सेवा करयवाली गरीब भारतीक विवाहक सम्भावना जखन सामने अबैत अछि, कथावाचक अनजाने/स्वार्थवश एहन चिट्ठी लिखैत छथि जे ओकर जीवनक अवसरकेँ चोट पहुँचा सकैत अछि, कारण भारती चलि गेली तँ माँक सेवा के करत? बादमे एहिक बोध 'नोर' केँ 'अंगोर' बना दैत अछि। कथा वर्गीय स्नेहक भीतर छुपल स्वार्थकेँ बेनकाब करैत अछि। गरीबक सेवा केँ प्रेम कहब आसान, ओकर स्वतंत्र जीवनक अधिकार स्वीकार करब कठिन।

१३. फ्यूज बल्ब

सेवाकालमे वर्मा साहेबक रोब एतेक जे अधीनस्थ काँपैत छथि। सेवानिवृत्तिक बाद स्टेशनक भीड़मे पूर्व अर्दली हुनका साधारण बूढ़ मनुष्य रूपमे देखैत अछि आ कहैत अछि—आब दुनू 'फ्यूज बल्ब' छी, वाट कतेक छल से कोन अर्थ? विद्युत-बिम्ब सत्ता की अस्थायित्वक सटीक प्रतीक अछि। पदक प्रकाश बुझिते मनुष्य अपन मूल आकारमे रहि जाइत अछि। हास्यक भीतर गम्भीर प्रशासनिक दर्शन अछि।

१४. पहिल चिट्ठी

बेटीक पिता केँ लिखल चिट्ठी घरक लैंगिक भेदभावक दस्तावेज अछि। चारि बेटी जन्म पर निराशा, भाई लेल विशेष सुविधा, बेटीकेँ इंजीनियरिंगक अवसर नकारि जमीन बेचि भाईक निजी दन्त-शिक्षा पर खर्च—ई घटनासभ परिवारक 'स्नेह'क भीतर संरचनात्मक पक्षपात देखबैत अछि। चिट्ठी प्रतिरोधक माध्यम अछि, कारण बेटी प्रत्यक्ष टकरावक बदला अनुभवक लेखा प्रस्तुत करैत अछि। 'पहिल' शब्द संकेत करैत अछि जे मौन टूटल अछि; लिखनाइ आत्म-अधिकारक आरम्भ अछि।

१५. दिन खराबय तीन नाम

सेवानिवृत्त श्यामा बाबूकेँ अलग-अलग व्यक्ति अलग नाम/पहचान दैत अछि—पुत्रक दृष्टिमे सनकी, नौकरक दृष्टिमे आय-विहीन पुरान मालिक, पत्नी/परिवारक दृष्टिमे बदलल मनुष्य। कथा देखबैत अछि जे पहचान आत्मनिर्मित मात्र नहि; सामाजिक उपयोगिता, आर्थिक शक्ति आ सम्बन्धक अपेक्षा ओकरा बदलैत अछि। शीर्षकक 'तीन नाम' एके मनुष्यक तीन सामाजिक प्रतिबिम्ब अछि। हास्यक भीतर वृद्धावस्था आ उपयोगितावादी सम्बन्धक टीस अछि।

१६. घुरि आऊ निशा

रेल-यात्राक क्षणभंगुर परिचय, साहित्यिक संवेदना आ अधूर प्रेम-संकेत ‘घुरि आऊ निशा’ केँ स्मृति-कथा बनबैत अछि। निशाक उपस्थिति यात्रा केँ सौन्दर्य आ सम्भावना दैत अछि; स्टेशन, डिब्बा आ विदाइ समयक अस्थायित्वक रूपक बनैत अछि। राजतक मनमे बचल स्मृति वास्तविक सम्बन्धसँ अधिक कल्पित पूर्णताक रूप लैत अछि। शीर्षक अनुपस्थित व्यक्ति सँ कम, बीतल क्षणकेँ लौटाबयक असम्भव इच्छा अछि।

१७. अन्हेर

दीनाक बाल्य अनाथपन, सम्बन्धीक उत्पीड़न, पलायन आ बादमे दयालु आश्रयदाता द्वारा जीवन सँवारल जेनाइ कथा केँ दीर्घ नैतिक चक्र दैत अछि। दशकों बाद रेल-विघटन ओकरा पुरान गामक ओर घुमबैत अछि, जतऽ अतीतक अत्याचारी सभक अन्त, पुरान मित्रक पहचान आ नब राजनीतिक हिंसाक खबरि एकसाथ भेटैत अछि। छोट घरेलू अन्याय आ पैघ सामूहिक हिंसाक तुलना कथा मे ‘अन्हेर’क अर्थ विस्तृत करैत अछि। अन्हार केवल बाल्य-स्मृति नहि; समाजक बदलैत हिंसक चेहरा सेहो अछि।

१८. सीमान

ट्रेनक एक यात्री बाहरक दृश्य देख अत्यन्त विस्मित होइत अछि। सहयात्री ओकर व्यवहारकेँ मानसिक असामान्यता मानि लैत छथि; बादमे पिता बतबैत छथि जे युवक हालमे दृष्टि फेर पओने अछि। कथा ‘सीमान’ मनुष्यक अनुमानक सीमा पर अछि। जे अनुभव हमरा साधारण लगैत अछि, दोसर लेल प्रथम चमत्कार भऽ सकैत अछि। बाहरी आँख खुलनाइ आ सामाजिक दृष्टि बंद रहनाइ—एहि विरोधाभास सँ कथा सरल मुदा प्रभावशाली मानवीय शिक्षा दैत अछि।

१९. उजड़ल खोंता

गोनमा गरीब परिवारक बालक अछि; अपंग पिता, मजदूर माँ आ परिवारक भूख ओकरा दिल्लीक कढ़ाई-काममे बाल-श्रम करय धकेलैत अछि। पुलिस छापामे बच्चा ‘मुक्त’ होइत आ विद्यालयक व्यवस्था पबैत अछि, मुदा गोनमाक मनमे प्रश्न अछि—घरक भूख, ऋण, छोट भाई-बहिनक खर्च कोन नीति सम्हारत? कथा बाल-श्रमक समर्थन नहि करैत; उलटे ई देखबैत अछि जे केवल कार्यस्थलसँ बच्चा हटेनाइ, गरीबीक मूल कारण बिना, अधूर समाधान अछि। ‘उजड़ल खोंता’ परिवारसँ अलग पड़ल बालक आ विस्थापित जीविकाक मार्मिक प्रतीक अछि।

२०. मरिचिका

‘मरिचिका’ भवानी बाबूक वृद्धावस्था, अपन बनाओल घरमे हाशियाकरण आ संतानक बारी-बँटल सेवा-विहीनताक वही मूल प्रसंग फेर सामने आनैत अछि जे ‘मरीचका’ नामक पूर्व प्रविष्टिमे उपस्थित अछि। एहि समीक्षा मे एकरा अलग रचना-प्रविष्टि मानि दर्ज कएल गेल अछि, कारण संकलन स्वयं एना करैत अछि। पुनरावृत्ति पाठकीय प्रभावकेँ दोहरबैत अछि: जीवन भरक सम्पत्ति-संचय जँ वृद्धावस्थामे सम्मान नहि दे, तँ ‘अपन घर’क स्वप्न मृगतृष्णा बनि सकैत अछि। सम्पादकीय दृष्टिसँ ई पुनरावृत्ति संकलनक पाठ-संपादन हेतु ध्यानयोग्य अछि।

२१. परजा — पुनरावृत्त प्रविष्टि

संकलनमे ‘परजा’ दोसर बेर सेहो उपस्थित अछि। कथ्य मूलतः चुनाव, सत्तापरिवर्तन आ गरीब नागरिकक अपरिवर्तित दशाकेँ केन्द्रमे रखैत अछि। ‘परजा’ शब्दक पुनरावर्तन स्वयं अर्थपूर्ण प्रतीत होइत अछि—सत्ता बदलैत अछि, मुदा परजाक स्थिति दोहराइत अछि; तथापि ई साहित्यिक अर्थ पाठक द्वारा ग्रहण कएल जा सकैत अछि, सम्पादकीय पुनरावृत्तिक कारण मानि पुष्टि नहि कएल जा सकैत। अतः समीक्षा एकरा पाठ-साक्ष्य रूपमे अलग दर्ज करैत अछि, बिना ई दावा केने जे पुनरावृत्ति जानि-बुझि रचनात्मक योजना छल।

२२. बदलैत समय

दस बरख पहिने घर लौटल पुरुषकेँ कुकुर भौंकैत छल आ पत्नी प्रेमसँ लगबैत छली; आब पत्नी भौंकैत छथि आ कुकुर स्वागत करैत अछि। अत्यल्प आकारक ई व्यंग्य वैवाहिक सम्बन्धमे समय, दिनचर्या, अपेक्षा आ कटुताक अतिशयोक्तिपूर्ण रूपक अछि। हास्यक बल ‘स्थान-परिवर्तन’मे अछि। रचना गम्भीर दाम्पत्य-मनोविज्ञान नहि खोलैत, मुदा एक पंक्तिक उलटावसँ समयक प्रभाव यादगार बनबैत अछि।

२३. जरल पेट

भूखक कथा आदर्श नैतिकता केँ कठोर परीक्षा पर राखैत अछि। भोजन पाबिते माँ अपन रोइत छोट बच्चाकेँ रोकि स्वयं तेजी सँ खाइत अछि; दृश्य असहज करैत अछि, कारण ‘माँ पहिने बच्चाकेँ खुआत’ वला सांस्कृतिक आदर्श टूटैत अछि। मुदा कथा ओकरा निर्दयी नहि ठहरबैत। ‘जरल पेट’ जैविक भूखक ओ चरम

अवस्था अछि जतऽ नैतिक भूमिकासभ क्षणिक रूपसँ धुँधला पड़ि जाइत अछि। गरीबीक आलोचना एतऽ आँकड़ासँ नहि, एक थारी आ दू भूखल शरीरसँ होइत अछि।

२४. जीतक आगू

बाढ़क बीच भुखना गाछ पर प्राण बचौने अछि; ऊपर साँप, नीचे पानि—दुनू ओर मृत्यु। ओ साहस कऽ साँपसँ भिड़ैत अछि आ ओकरा पानिमे खसा दैत अछि। एहि विजयक कोनो दर्शक, पदक वा ताली नहि। ‘जीतक आगू’ जीवनरक्षाक निजी वीरता पर केन्द्रित अछि—कतेको जीत इतिहासमे दर्ज नहि होइत, मुदा व्यक्ति लेल अस्तित्वक निर्णायक क्षण होइत अछि। प्रकृति, भय आ आत्मबलक अत्यन्त संक्षिप्त कथा।

२५. माता कुमाता न भवति

माँक आग्रह पर वृद्ध पिता सफल/शक्तिशाली पुत्रक घर जाइत छथि। पुत्र सामाजिक प्रतिष्ठा बचाबय हुनका परिचित/सेवक जेकाँ व्यवहार करैत अछि। पिता अन्तमे कहैत छथि—हम तोहर सेवक नहि, मुदा तोहर मायक सेवक अवश्य छी—आ लौटि जाइत छथि। संस्कृत-उक्ति-आधारित शीर्षक मातृस्नेहक असीमता आ पुत्रक कृतघ्नताक विरोधाभास रचैत अछि। पिता आत्मसम्मान नहि छोड़ैत छथि; माँक प्रेमक खातिर यात्रा करैत छथि, पुत्रक अपमान स्वीकार नहि।

२६. ईमानदार

‘ईमानदार’ व्यंग्यक उत्कृष्ट उदाहरण अछि। संयुक्त सचिव प्रत्यक्ष घूस नहि लैत, मुदा ‘क्षमता-विकास’ योजना परिचित अकादमिक केन्द्र, रिश्तेदारक नियुक्ति, महँगा सेमिनार, होटल, वक्ता-शुल्क आ प्रचारक जालमे चलैत अछि। कागज पर सभ नियमसम्मत प्रतीत होइत अछि; वास्तविक लाभ नेटवर्कक लोक पबैत छथि। कथा भ्रष्टाचारक आधुनिक, परिष्कृत रूप देखबैत अछि—जतऽ लिफाफा नहि, नीति-रचना स्वयं हित-साधन बनि जाइत अछि। शीर्षकक विडम्बना एहि कारण तीक्ष्ण अछि जे पात्र कानूनी भाषा मे ‘ईमानदार’ रहि सकैत अछि, नैतिक अर्थमे नहि।

२७. मास्टर साहेब

मास्टर साहेबक मृत्यु पर श्रद्धांजलि-जेकाँ स्मृति खुलैत अछि, मुदा धीरे-धीरे शिक्षकीय जीवनक कुरूप पक्ष सामने अबैत अछि—कक्षा मे नींद, दण्ड, विद्यार्थीक श्रमक निजी उपयोग, अलोकसँ घरेलू काम, ट्यूशन/प्रभावक असमानता। कथा मृतकक सम्मानक सामाजिक रूढ़िक भीतर शिक्षा-व्यवस्थाक आलोचना करैत अछि। शिक्षकक पद स्वतः गुरुता नहि देत; अध्यापन, न्याय आ छात्रक गरिमा से वास्तविक कसौटी अछि। ‘मास्टर साहेब’ संबोधनक आदर आ व्यवहारक शोषण बीच विडम्बना अछि।

२८. कचोट

विकास पुरान प्रेमक कारण मीरासँ तलाक चाहैत अछि। कानूनी प्रक्रिया सरल करबाक लेल वकील मीरा पर चरित्रहीनताक झूठ आरोप लगबैत अछि; मीरा प्रतिशोधमे समान झूठ बोलबासँ इंकार करैत, तलाक स्वीकार करैत अछि। बादमे विकास बुझैत अछि जे कानूनी जीतक बदला ओ मीराक प्रतिष्ठापर स्थायी दाग छोड़ि देलक। मीराक उदारता—भाइक क्रोधसँ सेहो विकासकेँ बचेनाइ—‘कचोट’ केँ गहरा करैत अछि। कथा कानूनक प्रक्रिया आ नैतिक सत्यक बीच अंतर देखबैत अछि।

२९. नव-वर्ष

शहर नववर्षक रोशनी, भोजन आ उत्सवमे मग्न अछि; श्रमिक/गरीब बालक पूछैत अछि—हमर नववर्ष कहिया आएत? प्रश्न पूरा उत्सवक वर्गीय आधार खोलि दैत अछि। कलेण्डर सभक लेल बदलैत अछि, जीवनक अवसर नहि। कथा अत्यन्त संक्षिप्त अछि, मुदा ‘नया’ शब्दक सामाजिक अर्थ प्रश्नांकित करैत अछि। वास्तविक नववर्ष तखन होयत जखन भूख, असमानता आ अवसरहीनता बदलत।

३०. थाकल बाट

विद्युत् कार्यालयक चक्कर, फाइल, रिश्वत, मीटर आदेश आ अन्तमे ‘रिश्वत लेना एवं देना जुर्म है’ जेकाँ नारा—ई सभ कथा केँ संस्थागत विडम्बनाक रूप दैत अछि। कथावाचक स्वयं घूस देबय बाध्य होइत अछि, बाहर अवैध तार/हुक देखैत अछि। ‘थाकल बाट’ केवल थाकल नागरिक नहि, सुधारक रास्तो थाकल अछि। व्यवस्था व्यक्ति केँ गलत काज करय मजबूर करैत आ साथहि दीवाल पर नैतिक घोषणा टाँगैत अछि।

३१. हारल मनुक्ख

कथावाचक दू टकाक टिकट लेल बूढ़ असहाय आदमीकेँ मदद नहि करैत, मुदा थोड़ी देर बाद दस टका पेय पर खर्च करैत अछि। बादमे बूढ़केँ पैदल चलैत देख

आत्मग्लानि उठैत अछि। ‘हार’ आर्थिक नहि; करुणाक परीक्षा मे मनुष्यक हार अछि। कथा पाठककेँ पैसाक मात्रा नहि, प्राथमिकताक नैतिकता देखबैत अछि। छोट प्रसंग आत्मालोचनक प्रभावी कथा बनि जाइत अछि।

३२. भावना

पत्नी रिक्शावाला सँ दस टका भाड़ा पाँच करबैत गर्व अनुभव करैत छथि, मुदा वातानुकूलित रेस्त्राँमे पचास टका टिप देब प्रतिष्ठाक हिस्सा मानैत छथि। ‘भावना’ वर्गानुसार बदलैत मूल्य-बोधक व्यंग्य अछि। गरीब श्रमिकसँ मोलभाव ‘समझदारी’, महँगा स्थल पर अतिरिक्त भुगतान ‘स्टेटस’—ई विरोधाभास उपभोग-संस्कृतिक नैतिक पक्षपात खोलैत अछि। रचना घरेलू प्रसंगक हल्का हास्य सँ गहरी वर्ग-आलोचना करैत अछि।

३३. बी०डी०ओ०

प्रधानमंत्रीक आगमन देखय गाँवक लोक उत्साहित छथि, मुदा वृद्ध, निर्धन, पेंशन-निर्भर स्त्री कहैत छथि—प्रधानमंत्री BDO नहि जे हमर पेंशन देत, हम किएक जाऊ? एहि वाक्य मे राज्यक पैघ प्रतीक आ नागरिकक दैनिक राज्य-अनुभवक दूरी अछि। लोकतन्त्र गरीब नागरिक लेल राष्ट्रीय व्यक्तित्वसँ कम, स्थानीय अधिकारीक दफ्तर, पेंशन, राशन आ प्रत्यक्ष सुविधा द्वारा अनुभव होइत अछि। कथा हास्यपूर्ण अछि, मुदा शासनक जमीनी अर्थ पर अत्यन्त सटीक टिप्पणी करैत अछि।

कुमार मनोज कश्यपक गद्य पर समेकित टिप्पणी

कश्यपक कथा सभ लघु फलक पर नैतिक विस्फोट रचैत अछि। हुनकर पात्र प्रायः ‘साधारण’ छथि—क्लर्क, अधिकारी, रिक्शावाला, बूढ़ पिता, घरेलू श्रमिक, शिक्षक, बालक, बाढ़पीड़ित—मुदा एक निर्णायक क्षण हुनकर जीवनक भीतर छुपल व्यवस्था खोलि दैत अछि। हुनकर सर्वाधिक सफल रचनामे अन्तिम पंक्ति पूरा कथाक अर्थ फेर सँ पढ़बैत अछि: ‘फ्यूज बल्ब’, ‘बी०डी०ओ०’, ‘नव-वर्ष’, ‘भावना’, ‘धमात्मा’ एहि तकनीकक उदाहरण अछि। कखनो नैतिक निष्कर्ष अत्यन्त स्पष्ट होइत अछि, जाहिसँ पाठकक स्वतंत्र व्याख्याक्षेत्र कम हो सकैत अछि; मुदा यही संक्षिप्तता हुनकर व्यंग्यक धार सेहो अछि। ‘मरीचका/मरिचिका’ आ ‘परजा’क पुनरावृत्ति साहित्यिक मूल्यांकनसँ अलग पाठ-संपादनक प्रश्न उठबैत अछि, जकरा संकलनक भविष्यत संस्करणमे जाँचब उपयोगी होयत।

भाग तीन

डॉ. कामिनी कामायनीक पद्य-संसार

कामिनी कामायनीक कविता प्रकृति-गीत, स्त्री-अस्मिता, मिथकीय पुनर्पाठ, भाषा-चिन्ता, ग्रामीण जीवन, पर्यावरण, आतंक, प्रवासन, शिक्षा, उपभोक्तावाद आ सामाजिक आत्मालोचनक विस्तृत क्षेत्र समेटैत अछि। हुनकर काव्य-स्वर प्रायः संवादधर्मी अछि; कवयित्री इतिहास, मिथक, भाषा, स्त्री, गाम, पाखी अथवा अपन समयसँ प्रत्यक्ष प्रश्न करैत छथि। मुक्तछन्द, पुनरुक्ति, लोक-लय, बोलचालक मैथिली आ दीर्घ कथात्मक काव्य—सभ रूपक प्रयोग भेटैत अछि। विशेषतः द्रौपदी, यशोधरा, गांधारी आ शकुन्तलाक पुनर्पाठमे मिथकीय स्त्री पात्र अपन कथाक व्याख्याकार स्वयं बनैत छथि।

१. अँकोरवट मंदिर

‘अँकोरवट मंदिर’ स्थापत्यक वर्णन मात्र नहि, सभ्यता, समय आ अवशेषक ध्यान-कविता अछि। विशाल पाषाण, देव-प्रतिमा, विष्णु-शिव-बौद्ध परम्पराक परत आ जर्जर वैभव समयक बहुपरत स्मृतिकोश बनैत अछि। मंदिर एतऽ निर्जीव खण्डहर नहि; ओ इतिहासक मौन वक्ता अछि। कवितामे महाकालक उपस्थिति मानव-निर्मित गौरवक क्षणभंगुरता याद करबैत अछि, मुदा कला आ श्रद्धाक दीर्घजीविता सेहो स्थापित करैत अछि। यात्रा-अनुभव काव्यात्मक इतिहास-बोधमे रूपान्तरित भेल अछि।

२. जहिया ओ इतिहास सुनौलक

एहि कवितामे ‘इतिहास’ स्वयं चेतावनी देनिहार पात्र जेकाँ उभरैत अछि। अपन खेत बंजर, अनकर खेत हरियर; अपन भाषा पिछड़ैत, बाहरी पोशाक आ विचार प्रतिष्ठाक चिन्ह बनैत—ई बिम्ब सांस्कृतिक पराधीनताक आधुनिक रूप देखबैत अछि। ‘सबटा पश्चिम हड़पि रहल अछि’ जेकाँ स्वर वैश्वीकरणक अन्धानुकरणपर चिंता व्यक्त करैत अछि। कविता पश्चिम-विरोधक सपाट उद्घोष नहि, बल्कि आत्मविस्मृतिक प्रश्न अछि: हम अपन भाषा, श्रम, भूगोल आ सांस्कृतिक आत्मविश्वासकेँ किएक छोड़ि रहल छी? इतिहासक सुनाओल कथा वर्तमानक आत्मपरीक्षण बनैत अछि।

३. संग दिअ सदिखन अहिना

थाकल यात्री, कठिन बाट आ सहचरक प्रेरणा एहि कविताक आधार अछि। ‘संग’ शारीरिक साथसँ अधिक नैतिक बल अछि—जखन व्यक्ति थाकि जाइत अछि, दोसरक विश्वास ओकर पग फेर चला सकैत अछि। कविता कृतज्ञता, मित्रता आ जीवन-यात्राक रूपक पर टिकल अछि। सरल भाषा आ पुनरुक्त आग्रह

भावनाकेँ निजी पत्र-जेकाँ आत्मीय बनबैत अछि। एहि कविता मे कामिनी कामायनीक सामाजिक प्रतिरोधी स्वरक बदला कोमल मानवीय सम्बल मुखर अछि।

४. वसंत

'वसंत' नवता, रंग, गन्ध आ जीवन-ऊर्जाक गीत अछि। 'नब'क आवर्तन प्रकृति आ मन दुनूकेँ पुनर्जन्मक अनुभव दैत अछि। फूल, पात, बसात, राग आ मनुष्यक उल्लास एके ऋतु-लयमे जुड़ैत अछि। कविता पारम्परिक ऋतुकाव्यक संवेदनाकेँ आधुनिक मुक्त लयमे रखैत अछि। बसन्त एतऽ केवल मौसम नहि; जड़ता टूटबाक, मन खुलबाक आ जीवन फेर सँ आरम्भ होयबाक प्रतीक अछि।

५. बाजार मे स्त्री

एहि कविताक स्त्री बाजारक निष्क्रिय दर्शक वा वस्तु नहि, आत्मविश्वासी सार्वजनिक नागरिक अछि। पर्स, ऊँची एड़ी, ज्ञान, निर्णयक्षमता आ 'ककरा सँ कम'क मुद्रा ओकरा पुरुष-परिभाषित सीमासँ बाहर आनैत अछि। कवितामे अर्जुन-जेकाँ मिथकीय संकेत स्त्रीक दक्षता आ चुनौती-बोधकेँ तीव्र करैत अछि। 'बाजार' आधुनिक सार्वजनिक क्षेत्र अछि जतऽ स्त्री देखल जाइत मात्र नहि, देखैत, चुनैत, खरीदैत, निर्णय लैत आ अपन उपस्थिति घोषित करैत अछि। कविताक मूल्य स्त्री-मुक्तिकेँ केवल घरेलू बन्धनसँ मुक्ति नहि, सार्वजनिक आत्मविश्वास रूपमे देखबामे अछि।

६. बंजारा मोन

'बंजारा मोन' मनुष्यक चंचल चेतनाक काव्यात्मक मानचित्र अछि। मन कखनो फकीर, कखनो योगी, कखनो भोगी, कखनो प्रतिष्ठाक आकांक्षी बनि एक ठामसँ दोसर ठाम भटकैत अछि। सूची-जेकाँ बिम्ब-विन्यास मनक अस्थिरता स्वयं रचैत अछि। कविता स्थिर 'स्व'क अवधारणापर प्रश्न करैत अछि—हम एक नहि, असंख्य इच्छाक आवागमन छी। 'बंजारा' शब्द एहि अनवरत यात्रा, अनिश्चित निवास आ अनुभव-पिपासाक सुन्दर रूपक अछि।

७. द्रौपदी

'द्रौपदी' महाभारतक स्त्री पात्रकेँ प्रथम-पुरुष नैतिक साक्षी रूपमे पुनर्स्थापित करैत अछि। द्यूतसभा, बहुपतित्व, चीरहरण, वनवास, जयद्रथ, कीचक, प्रतिशोध आ कुरुक्षेत्र—घटनासभ पुरुष-वीरगाथाक बदला द्रौपदीक देह, अपमान, क्रोध आ स्मृतिसँ देखल जाइत अछि। कृष्ण 'सखा' छथि, मुदा कविता द्रौपदीक एजेंसीकेँ ईश्वरीय उद्धारमे विलीन नहि करैत। युद्धक अन्तमे शव, विधवा, मातृशोक आ रिक्त विजय प्रतिशोधक मूल्य पूछैत अछि। कवितामे द्रौपदी अपन गर्व आ क्रोधक सेहो आत्मपरीक्षण करैत छथि; एहि कारण पुनर्पाठ एकांगी नारी-महिमामण्डन नहि, बल्कि जटिल आत्मसाक्षात्कार अछि। मिथकक भीतर सँ स्त्रीक इतिहास पुनर्लिखबाक ई महत्त्वपूर्ण प्रयास अछि।

८. यशोधरा

यशोधराक कथा परम्परागत बुद्ध-चरितमे गौण रहि जाइत अछि; कविता त्यागल पत्नीकेँ केन्द्रमे आनैत अछि। सिद्धार्थक प्रस्थान केवल महान आध्यात्मिक यात्रा नहि, एक स्त्री आ परिवारपर पड़ल भावनात्मक आ सामाजिक आघात सेहो अछि। यशोधराक शोक धीरे-धीरे निर्भर प्रतीक्षासँ आत्मानुशासन आ आध्यात्मिक स्वायत्ततामे बदलैत अछि। भिक्षुणी/साधिका रूपमे हुनकर रूपान्तरण बतबैत अछि जे मुक्ति पुरुषक विशेषाधिकार नहि। कविता बुद्धत्वकेँ नकारैत नहि; ओ त्यागक कथामे छूटल स्त्री-कीमत जोड़ैत अछि।

९. गांधारी

गांधारीक आत्मस्वर विवाह, स्वेच्छया नेत्रबन्ध, मातृत्व आ युद्धक विनाशकेँ पुन: देखैत अछि। पतिक अन्धत्व साझा करबाक निर्णय प्रेम, कर्तव्य आ आत्म-वंचना तीनू रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि। पुत्रमोह, दरबारी राजनीति आ महाभारतक युद्धक बाद गांधारीक मातृशोक निजी निर्णयक सीमाकेँ प्रश्नांकित करैत अछि। आँख पर पट्टी बाहरी अन्धत्व मात्र नहि; राजनीतिक-सामाजिक सत्यकेँ न देखबाक रूपक सेहो बनैत अछि। कविता पितृसत्ताक भीतर स्त्रीक सहमति, प्रतिरोध आ सहभागिताक जटिलता खोलैत अछि।

१०. शकुन्तला

कामिनी कामायनीक 'शकुन्तला' पारम्परिक कथा केँ स्त्री-आत्मसम्मानक दृष्टिसँ पुनर्लिखैत अछि। कण्वाश्रमसँ विदाइ, गर्भावस्था, अंगूठी गुमनाइ आ दुष्यन्तक सार्वजनिक अस्वीकार—सभ घटना शकुन्तलाक भावनात्मक केन्द्रसँ देखल जाइत अछि। निर्णायक क्षण ओ अछि जखन ओ कहैत छथि—'अपने की त्यागब... हिहीं अहाँ के तजै छी।' एहि वाक्यसँ शक्ति-सन्तुलन बदलि जाइत अछि: अस्वीकृत स्त्री दया माँगयवाली नहि, पुरुष-राजसत्ताकेँ अस्वीकार करयवाली बनैत अछि। वनमे भरतकेँ पालब, राज्यक ज्ञान देब आ सक्षम उत्तराधिकारी गढ़ब मातृत्वकेँ राष्ट्र-निर्माणक सक्रिय कर्म बनबैत अछि। दुष्यन्तक बादक पश्चात्तापो शकुन्तलाक आत्मसम्मानकेँ राजकीय मान्यतापर निर्भर नहि बनबैत। मिथकीय 'शाप'क ओटमे पुरुष-दायित्व लुकाबयवला परम्पराकेँ कविता

प्रश्नांकित करैत अछि।

११. फागुन राग

‘फागुन राग’ लोक-उल्लास, श्रृंगार, ऋतु आ भोजनक जीवंत गीत अछि। ‘फागुन मे…’क आवर्ती पंक्ति लोकधुनक प्रभाव रचैत अछि। पीयर खेत, सिन्दूर-जेकाँ दहकैत प्रकृति, बसन्ती हवा, प्रियक प्रतीक्षा, फाग, पूआ-मालपूआ-दहीबड़ा-जलेबी जेकाँ सांस्कृतिक स्वाद—सभ मिलि ऋतुकेँ सम्पूर्ण इन्द्रिय-अनुभव बना दैत अछि। प्रेम एतऽ निजी विरह आ सामुदायिक उत्सव दुनू अछि। हास्यक हल्का पुट कविता केँ कृत्रिम गंभीरतासँ बचबैत अछि।

१२. काशीक घाट

‘काशीक घाट’ श्रद्धा आ आलोचनाकेँ एके काव्य-दृष्टिमे राखैत अछि। बावन घाट, नाव, मेघ, गंगा, विश्वनाथ आ सारनाथक आध्यात्मिक आकर्षणक संग कम पानि, सूखल कछार, कूड़ा, पंडाक लूट आ नगरक दुर्दशा सेहो देखल जाइत अछि। कवयित्री आस्था बचाबय लेल वास्तविकता नकारैत नहि; ओ कहैत छथि जे ई सभ देखलापर नोर खसत, तथापि काशी केवल अव्यवस्थाक नाम नहि—ओ सांस्कृतिक-आध्यात्मिक अनुभवक धाम अछि। सारनाथक बुद्ध, अष्टांगिक मार्ग आ ‘सत्य’क पाथेय कविता केँ धार्मिक बहुलता दैत अछि। पवित्रता एतऽ आलोचनासँ डरैत नहि, बल्कि ओकरा सहैत अछि।

१३. चिड़ैक अभिलाष

एक छोट पाखीक इच्छा अत्यन्त मामूली अछि—एक डारि, एक खोंता, साथी, अंडा, बच्चा आ कनी गीत। मुदा एहि छोट स्वप्नक पूर्तियो अनिश्चित अछि। पाखी मानवीय विस्थापन, बेघरपन आ सुरक्षित घरेलू जीवनक आकांक्षाक प्रतीक बनैत अछि। ‘एक खड़ नेने ठाढ़’ पाखीक छवि घर बनाबयक तयारी आ असुरक्षा दुनू समेटैत अछि। अन्तमे कमजोर पंखीक घबड़ा कऽ उड़ि जेनाइ बतबैत अछि जे हिंस्र/अस्थिर संसारमे छोट स्वप्नो कतेक नाजुक अछि। कविता सरल प्रतीकसँ गहरी सामाजिक करुणा जगबैत अछि।

१४. भटकैत स्वप्न

‘भटकैत स्वप्न’ उपभोक्ता-बाजार आ मीडिया द्वारा गामक कल्पना-लोक पर कब्जाक तीक्ष्ण कविता अछि। ‘अजगर’ बजारक बिम्ब अछि जे मान-मर्यादा, खेत-पथार, संस्कार-विचार धीरे-धीरे निगलैत अछि। टीवी विज्ञापनमे महँगी गाड़ी, सुन्दर राजकुमार, रोमानी गीत आ सजे-धजे जीवन देखैत ग्रामीण कन्या भूलि जाइत अछि जे कैमरा बन्द भेलाक बाद अभिनेता अपन-अपन पारिश्रमिक लऽ अलग भऽ जेताह। दृश्य ‘सत्य’ नहि, बेचल जा रहल स्वप्न अछि। कविता आधुनिक आकांक्षा के नकारैत नहि; ओ मीडिया-साक्षरताक अभाव आ बाजारक चालाकी देखबैत अछि। मोहभंग, कुण्ठा आ जड़सँ दूरी एहि नकली स्वप्नक मूल्य अछि।

१५. आजुक विद्यार्थी

एहि कवितामे इतिहास, दर्शन, विज्ञान आ भूगोलक नाम सभ हास्यास्पद वस्तु/ब्राण्ड/गलत सम्बन्धमे उलझि जाइत अछि। विद्यार्थी ज्ञानकेँ अर्थपूर्ण बोधक बदला ध्वनि-साम्य, रटन्त उत्तर आ विज्ञापन-जगतक टुकड़ा रूपमे ग्रहण करैत छथि। अकबर होटल बनि जाइत छथि, फैराडे विज्ञापन-जेकाँ, भूगोल अपन मनक नक्शा। हास्यक भीतर शिक्षा-व्यवस्थाक संकट अछि। ‘सरस्वतीक राजमे कानि रहल इसकुल’ अत्यन्त तीक्ष्ण छवि अछि। कविता पुरान गुरुकुलक रोमानी स्मृति जरूर उठबैत अछि, मुदा मुख्य निशाना वर्तमानक बोधहीन परीक्षा-संस्कृति अछि।

१६. असमंजस

कविता आधुनिक व्यक्ति केँ ‘अभिमन्यु’ सम्बोधन दैत अछि। जे बालवीर चक्रव्यूह, अनेक योद्धा आ मृत्यु-संकटकेँ बिना विचलित भेल सामना कयलक, से आजुक अपेक्षाकृत सपाट मैदानमे किएक असमंजसमे अछि? मिथकीय तुलना प्रेरक उपकरण बनैत अछि। जीवनक लड़ाइ दोसर के लड़बाक नहि—‘अहीं के लड़बाक अछि।’ कविता साहसक आवाहन अछि, मुदा साहसकेँ विजयक गारंटी नहि, संघर्ष सँ मुँह नहि नुकाबयक संकल्प मानैत अछि।

१७. आतंकी गाम

आरम्भमे गाम शांत, लोकगीत, खेती, सहअस्तित्व आ मर्यादाक स्थल अछि। बाहरी अनचिन्हार शक्ति हरियर नोट, बन्दूक, बारूद आ आरडीएक्स लऽ प्रवेश करैत अछि; धीरे-धीरे पोखरि विषाक्त, पराती बन्द आ समाज भयग्रस्त भऽ जाइत अछि। कविता आतंकवादकेँ गामक जन्मजात चरित्र नहि मानैत, बल्कि धन, राजनीति, हथियार आ बाहरी-भीतरी स्वार्थक संक्रमण रूपमे देखबैत अछि। बादक पंक्तिसभ क्षेत्रपर सामूहिक कलंक लगेनाइ, सांप्रदायिक पहचानक सरलीकरण आ निर्दोष जनजीवनकेँ दोषी ठहराबयक विरोध करैत अछि। शान्त गामक आतंकित/‘आतंकी’ कहल जेनाइ शीर्षकक करुण विडम्बना अछि।

१८. लिखत के प्रेम गीत

कदम्ब कटि चुकल, राधा अकेली, कृष्ण आ सखी अनुपस्थित, पोखरि-घाट-गाछी उजड़ल—एहि कविता मे प्रेमक संकट पर्यावरण आ सांस्कृतिक स्मृतिक संकटसँ जुड़ैत अछि। प्रश्न ‘लिखत के प्रेम गीत?’ केवल प्रेमी-अभाव नहि; एहन सामाजिक-प्राकृतिक संसारक क्षय अछि जतऽ प्रेमगीत जन्मैत छल। अन्तमे विद्यापतिकेँ उत्तर देबाक आह्वान मैथिली प्रेम-काव्य परम्परासँ प्रत्यक्ष संवाद अछि। राधा आधुनिक विरानगीमे ठाढ़ सांस्कृतिक स्मृतिक प्रतिमा बनैत छथि।

१९. आखिर कहिया धरि

अनुक्रममे शीर्षकक पाठ ‘आखिर कहिया मरि’ रूपमे छपल अछि, जखनकि मूल कविता-पृष्ठ पर ‘आखिर कहिया धरि’ अछि; समीक्षा मूल रचना-पृष्ठक शीर्षक ग्रहण करैत अछि आ पाठान्तर दर्ज करैत अछि। कविताक संरचना आवर्ती प्रश्न ‘आखिर कहिया धरि’ पर टिकल अछि। ढेकी, विषहरा, मैथिल-कोबरा, ईर्ष्या-द्वेष, वर्तमान सीताक उपेक्षा, टूटल पुल, निकम्मा व्यवस्था, पान-मखान-खेतीक विस्मृति, ननदि-भौजक झगड़ा, बाहरीक सत्कार आ अपन लोकक दुत्कार—सभ मिथिला समाजक आत्मालोचनात्मक सूची बनैत अछि। कविता बाहरी शत्रु खोजयक बदला भीतरक विरोधाभास देखबैत अछि। ‘मिथिला महान’ कहैत अपन बाँध काटबाक रूपक विशेष तीक्ष्ण अछि।

२०. भाषा

‘भाषा’क मानवीकरण कविता केँ भावनात्मक शक्ति दैत अछि। मातृभाषा हाथ जोड़ि अपन शिक्षित सन्तानसँ कहैत अछि—गाम छोड़लहुँ, विकास करू, मुदा हमरा नहि बिसरू; हम अहाँक आन-बान-पहचान छी। महानगरीय व्यक्ति ओकरा ‘गँवार’ मानि तिरस्कृत करैत अछि, मैकाले-प्रभावित प्रतिष्ठा-बोध बाहरी भाषा केँ सत्ता दैत अछि। मुदा अन्तमे भाषा मरैत नहि; ओ राजधानी आ अभिजात वर्ग धरि पसरि अपन विशाल साहित्यक बल पर जीवित रहैत अछि। कविता भाषाई हीनताबोध, शहरी प्रतिष्ठा आ मातृभाषाक लचीलापन पर केन्द्रित अछि। ई मैथिली अस्मिताक घोषणापत्र-जेकाँ प्रभाव छोड़ैत अछि।

२१. चक्का

सभ्यताक आविष्कार ‘चक्का’ आधुनिक उपभोक्तावादी प्रतिष्ठाक प्रतीक बनि गेल—जतेक पैघ आदमी, ततेक अधिक/पैघ गाड़ी। ट्रैफिक जाम, दुर्घटना, पुलिस, अदालत आ सीमित सड़क पर निरन्तर बढ़ैत वाहन ‘प्रगति’क विडम्बना देखबैत अछि। चक्का ऊपर चढ़ैत-चढ़ैत एहन ढलान लग पहुँचल अछि जतऽ ‘महाविनाश’क आशंका अछि। कविता तकनीक-विरोधी नहि; प्रश्न अनियंत्रित वृद्धि, प्रतिष्ठा-उपभोग आ वैज्ञानिक विकासक सामाजिक परिणामपर अछि। गोल चक्का स्वयं आवर्ती उपभोग-चक्रक सुन्दर प्रतीक बनैत अछि।

२२. ई केक्कर शोणित?

कविता प्रवासी श्रम, बेरोजगारी, राजनीतिक कलंक आ क्षेत्रीय अस्मिताक तीव्र राजनीतिक पाठ अछि। खेत-खरिहान छोड़ि भूखल युवा ‘स्वप्नक पोटरी’ माथ पर नेने जिला, समुद्र पार करैत छथि; परदेशमे श्रम, अपमान आ आँसू झेलैत छथि। इधर जनक-जानकी, गौतम-याज्ञवल्क्य, गंडक-बागमती, पान-मखानक भूमि पर आतंक/अपराधक कारी टीका लगैत अछि। प्रश्न—ई शोणित अपराधी युवाक अछि कि घिनौन राजनीति क?—दोषारोपणक दिशा उलटैत अछि। ‘पाग आ टोपी / दिवाली आ दाहा / लोटा आ बदना / कीर्तन आ अजान’क साथ-साथ रखनाइ क्षेत्रक बहुल सांस्कृतिक जीवनकेँ आतंकक एकरंगी छविसँ बचबैत अछि। अन्तिम आग्रह निष्पक्ष जाँच, दूषित पानि साफ करब आ न्याय देबाक अछि।

२३. खिड़की

‘खिड़की’ बाहरी संसारक दृश्य आ भीतरक बन्द समयक बीच सीमा अछि। भोर, दुपहर, साँझ—खिड़की सँ बदलैत प्रकाश, लोक आ मौसम देखल जाइत अछि, मुदा देखनिहार स्वयं ‘समयक कैद’मे रहि सकैत अछि। एहि छोट रूपकमे वृद्धावस्था, एकाकीपन, घरेलू बन्धन अथवा आत्मचिन्तन अनेक अर्थ सम्भव अछि। कविता प्रत्यक्ष कथानक नहि दैत, तेँ ओकर शक्ति खुलल प्रतीकात्मकतामे अछि: खिड़की मुक्त करैत सेहो अछि, याद दिलबैत सेहो कि हम एखनो भीतर छी।

२४. भरोस

पद्य ‘भरोस’ पारम्परिक मौखिक विश्वास आ आधुनिक कागजी प्रमाणक दूरी पर विचार करैत अछि। जे समय शब्द, ईमान आ सामाजिक प्रतिष्ठासँ व्यवहार चलैत छल, ओ धीरे-धीरे हिसाब, अनुबन्ध, कागज, प्रमाण आ संस्थागत अविश्वासमे बदलल। कविता शिक्षा वा आधुनिक संस्थाक साधारण विरोध नहि; ओ नैतिक प्रश्न करैत अछि जे कागज बढ़लापर मानवीय भरोस किएक घटल। ई ‘भरोस’ गद्यक वृद्धावस्था-वला भरोससँ अलग, सामाजिक नैतिक पूँजीक प्रश्न अछि।

२५. पुष्पांजलि

‘पुष्पांजलि’ ऋतु, फूल, राधा-कृष्ण, रंग आ समर्पणक काव्य अछि। बसन्तक रंग धार्मिक अर्पण आ प्रेम-श्रृंगारक बीच सेतु बनैत अछि। फूल प्रकृति वस्तु मात्र नहि; भाव, भक्ति आ स्नेहक भाषा अछि। लोक-ऋतु परम्परा आ वैष्णव सांस्कृतिक स्मृति एक-दोसरमे घुलैत अछि। कविता कामिनी कामायनीक सामाजिक-राजनीतिक पद्यक बीच कोमल सौन्दर्य-विराम दैत अछि।

२६. आस्थाक पूर्ण कलश

कुम्भ/संगमक पृष्ठभूमिमे स्त्री-श्रद्धालु सभक यात्रा, स्नान, कलश, भीड़ आ विश्वास एहि कविता कैं लोक-आस्था केन्द्रित बनबैत अछि। जाति, वर्ग, घरक सीमासँ बाहर स्त्री सामूहिक धार्मिक भूगोलमे चलैत अछि; यात्रा स्वयं एजेंसीक रूप धारण करैत अछि। कवयित्री आस्थाकैं मूर्खता नहि बनबैत छथि; ओ सामूहिक विश्वासक भावात्मक ऊर्जा, परिश्रम आ स्त्री-सहभागिताकैं देखैत छथि। ‘पूर्ण कलश’ बाहरी पात्रसँ अधिक भीतर भरल विश्वासक प्रतीक अछि।

२७. खिलैत पलास वन

पलासक दहकैत फूल प्रतिरोध, पुनरुत्थान आ स्त्री-शक्तिक बिम्ब बनैत अछि। अन्धकार, बुझैत मशाल, हिम-जड़ता अथवा सामाजिक निराशाक बीच देवी-दुर्गा/कालीक स्मृति ऊर्जा जगबैत अछि। पलास लाल आगि जेकाँ वनमे खिलैत अछि—मृत प्रतीत परिस्थिति भीतर जीवनक ताप। कविता धार्मिक स्त्री-शक्ति आ सामाजिक आत्मबलकैं जोड़ैत अछि; आस्था निष्क्रिय शरण नहि, पुनः उठबाक शक्ति अछि।

२८. आधुनिक स्त्रीगण १–५

ई शीर्षक पाँच आन्तरिक काव्य-इकाइ समेटने अछि; सम्पूर्णताक दृष्टिसँ पाँचूकैं अलग पढ़ब आवश्यक अछि।

२८.१ आधुनिक स्त्रीगण—१

पहिल इकाइ आधुनिक कन्याक शिक्षा, खेल, विज्ञान आ सार्वजनिक उपलब्धिक उत्सव करैत अछि। स्त्री ‘घरक मर्यादा’मे कैद परिभाषा सँ बाहर निकलि दक्षता आ ज्ञानक क्षेत्रमे प्रवेश करैत अछि। कविता उपलब्धिक सूची द्वारा सामूहिक आत्मविश्वास रचैत अछि। आधुनिकता एतऽ वस्त्र वा फैशन नहि, क्षमता विकसित करबाक अवसर अछि।

२८.२ आधुनिक स्त्रीगण—२

दोसर इकाइ घरेलू जिम्मेदारी आ पढ़ाइ/विज्ञानक अभ्यास एकसाथ करयवाली कन्याक चित्र दैत अछि। दादीक दृष्टिसँ ‘नब स्त्री’क अर्थ उच्छृंखलता नहि; ओ घरक काजो करैत अछि आ बौद्धिक श्रम सेहो। कविता पुरान पीढ़ी आ नब पीढ़ीक बीच पुल बनबैत अछि। स्त्री-मुक्ति परिवार-विरोध नहि, श्रमक उचित पहचान आ अवसर-विस्तार रूपमे उभरैत अछि।

२८.३ आधुनिक स्त्रीगण—३

तेसर इकाइ कानूनी जागरूकता, आत्मरक्षा, समानता आ वैचारिक दृढ़ताकैं स्त्रीक आधुनिक शक्ति मानैत अछि। गार्गी, मैत्रेयी, सीता आदि सांस्कृतिक स्मृतिसँ आधुनिक अधिकारक सम्बन्ध जोड़ल गेल अछि। एहिसँ कविता ई दावा करैत अछि जे स्त्री-बौद्धिकता विदेशी आयात नहि; भारतीय/मैथिल परम्परामे सेहो ओकर जड़ अछि। परम्परा आ आधुनिक अधिकार एक-दोसरक विरोधी नहि रहैत।

२८.४ आधुनिक स्त्रीगण—४

चौठ इकाइ पैतृक सम्पत्तिमे बेटी-अधिकार आ वृद्ध माता-पिताक देखभालमे बेटीक भूमिकाकैं केन्द्रित करैत अछि। अधिकार आ दायित्व दुनू संग राखल गेल अछि। बेटा मात्र वंश/सेवाक स्वाभाविक उत्तराधिकारी—एहि धारणाकैं कविता चुनौती दैत अछि। आधुनिक स्त्री कानूनी हिस्सेदारीक संग भावनात्मक पारिवारिक उत्तरदायित्व सेहो निभा सकैत अछि।

२८.५ आधुनिक स्त्रीगण—५

पाँचम इकाइ दाम्पत्य, विदेश/प्रवास, घरेलू अधिकार, साझेदारी आ जिम्मेदारीक प्रश्न उठबैत अछि। स्त्री स्वतंत्र अछि, मुदा स्वतंत्रताक अर्थ निरन्तर घरेलू ‘कुरुक्षेत्र’ रचनाइ नहि; पुरुषो समानता स्वीकारय। कविता संतुलित सहजीवनक खोज करैत अछि। एहिमे आधुनिक स्त्री न त ‘त्यागमूर्ति’क पुरान साँचमे बन्द अछि, न स्वायत्तताकैं सम्बन्ध-विनाश मानैत अछि। पाँचू इकाइ मिलि कामिनी कामायनीक स्त्री-दृष्टिक मूल सूत्र दैत अछि—शिक्षा, अधिकार, आत्मरक्षा,

संपत्ति, सार्वजनिकता आ साझेदारी।

डॉ. कामिनी कामायनीक पद्य पर समेकित टिप्पणी

कामिनी कामायनीक कविता सभक सर्वाधिक विशिष्ट क्षेत्र मिथकीय स्त्री-पुनर्पाठ आ समकालीन सामाजिक प्रश्नक संयोजन अछि। 'द्रौपदी', 'यशोधरा', 'गांधारी' आ 'शकुन्तला'मे इतिहास/मिथकक स्त्री स्वयं बोलैत छथि; पुरुष-रचित कथा पर स्त्रीक अन्तरानुभव आरोपित नहि, भीतरसँ पुनर्गठित होइत अछि। दोसर ओर 'भाषा', 'भटकैत स्वप्न', 'आजुक विद्यार्थी', 'चक्का', 'ई केक्कर शोणित?' आ 'आखिर कहिया धरि' आधुनिक समाजक प्रत्यक्ष आलोचना अछि। काव्य-भाषा उच्च संस्कृतनिष्ठता सँ बचि लोकबोल, मुहावरा, अंग्रेजी/आधुनिक शब्द, मिथकीय नाम आ ग्रामीण वस्तु-संसार एकसाथ राखैत अछि। कखनो वक्तव्यात्मकता काव्य-सूक्ष्मतापर भारी पड़ैत अछि, मुदा एहि स्पष्ट वक्तव्यतामे कवयित्रीक सामाजिक हस्तक्षेपक ऊर्जा निहित अछि।

भाग चार

कुमार मनोज कश्यपक पद्य-संसार

कुमार मनोज कश्यपक पद्य-संख्या कम अछि, मुदा रूपगत विविधता स्पष्ट अछि—दोहा, आवाहनात्मक देशभक्ति-कविता आ गजल। गद्यक लघु व्यंग्यात्मक प्रवृत्तिक विपरीत कविता मे लोक-ऋतु, वीर-रस आ आधुनिक मनुष्यक विघटनशील सामाजिक अनुभव तीन अलग स्वर भेटैत अछि।

१. वसंती दोहा

'वसंती दोहा' ऋतु, प्रेम आ विरहक पारम्परिक भावभूमि कैं मैथिली लोक-संवेदनासँ जोड़ैत अछि। फूल, बसन्ती हवा, रंग, फाग आ अनुपस्थित प्रिय—ई सभ दोहाक संक्षिप्त संरचनामे मिलि श्रृंगारक दू रूप, संयोगक आकांक्षा आ विरहक टीस, एकसाथ रचैत अछि। दोहा-विधान कथनकैं कसावट दैत अछि; प्रत्येक इकाइ स्वतंत्र भाव-वाक्य होइतहुँ ऋतु-संगीतक श्रृंखलामे जुड़ैत अछि। लोक-उत्सवक रंग भीतरक अभावकैं आरो तीव्र करैत अछि।

२. नहि सुतिरहब आहाँ चद्दरि तानि

एहि कविताक मूल स्वर जागरण आ राष्ट्र-रक्षाक आवाहन अछि। 'चद्दरि तानि' सुतनाइ निष्क्रियता, जखनकि इतिहासक राम, कृष्ण, हल्दीघाटी, राणा, शिवाजी आदि स्मृति वीरता आ सजग नागरिकताक प्रतीक बनैत अछि। कविता युद्धोन्मादक सूक्ष्म विश्लेषण नहि, स्पष्ट प्रेरक-वीर काव्य अछि; ओकर शक्ति लयबद्ध पुनरावृत्ति आ सीधा सम्बोधनमे अछि। सीमाक सुरक्षा, राष्ट्रीय स्वाभिमान आ संकट समय निद्रा त्यागक आग्रह वीर-रस पैदा करैत अछि। साहित्यिक दृष्टिसँ ई रचना आधुनिक देशभक्ति गीतक परम्परासँ जुड़ैत अछि।

३. किछु गजल

संकलनक 'किछु गजल' शीर्षकक भीतर दू गजल अछि; सम्पूर्णताक कारण दुनूकैं अलग इकाइ मानल गेल अछि।

३.१ पहिल गजल

पहिल गजल घायल मन, अपन घर/छाँहक खोज, अपन लोकक विश्वासघात, अन्हार आ एकाकीपनक भावभूमि रचैत अछि। गजलक शेर सभ व्यक्तिगत पीड़ा आ सामाजिक निराशाकैं एक-दोसरमे घोलैत अछि। 'अपन' शब्द जितबा निकट, चोट तितबे गहरी—ई भाव बारम्बार उभरैत अछि। बाहरी अन्हार अन्ततः अन्तरमनक अन्हार बनि जाइत अछि। गद्यक व्यंग्यात्मक लेखक एतऽ अधिक आत्मगत, विषादपूर्ण स्वरमे उपस्थित छथि।

३.२ दोसर गजल

दोसर गजल आधुनिक समाजमे मनुष्यक 'छद्मक मोहरा' बनि जेनाइ, गामपर शहरक पहरा, विश्वासक विषाक्तता आ मनुष्यता लुटि जेनाइ पर केन्द्रित अछि। गाम-शहर विरोध एतऽ भौगोलिक नहि, मूल्यगत अछि: शहरक बाजार, छल आ उपयोगितावाद गामक सम्बन्ध-जगतमे प्रवेश करि चुकल अछि। मनुष्य 'आदमी' रहितहुँ भूमिका, छद्म आ स्वार्थक मोहरा बनैत अछि। गजल सामाजिक विघटनकैं निजी उदासीसँ जोड़ैत अछि।

कुमार मनोज कश्यपक पद्य पर समेकित टिप्पणी

कम संख्या कारण कश्यपक कविता-विकासक व्यापक निष्कर्ष देब सावधानी माँगैत अछि, तथापि संकलित रचना तीन प्रवृत्ति स्पष्ट करैत अछि: लोक-ऋतु आ विरहक लयात्मकता, वीर-आवाहन, आ आधुनिक सामाजिक विघटनक गजलात्मक उदासी। गद्य जत्तऽ अन्तिम व्यंग्य-बाणपर निर्भर अछि, पद्य तत्तऽ लय, पुनरुक्ति आ भाव-संक्षेपपर।

भाग पाँच

तुलनात्मक साहित्यिक मूल्यांकन

१. कथ्यक विस्तार आ संक्षेप

कामिनी कामायनी समाजकेँ विस्तृत दृश्य, वंश-स्मृति, घरक वास्तु, भोजन, वस्त्र, बोली, मौसम, अनुष्ठान आ लम्बा संवादक माध्यमसँ रचैत छथि। हुनकर कथामे एक पात्रक जीवन कई दशक पार करि सकैत अछि। कुमार मनोज कश्यप प्रायः एक घटना, एक दृश्य वा एक अन्तिम वाक्य चुनैत छथि। अतः कामिनी कामायनीक कथा 'समाजक विस्तृत कपड़ा' जेकाँ, कश्यपक कथा 'तीक्ष्ण सुई' जेकाँ प्रभाव छोड़ैत अछि। दुनू पद्धति अपन-अपन सफल क्षेत्र रखैत अछि।

२. स्त्री-दृष्टि

कामिनी कामायनीक समूचा संकलन स्त्री-अनुभवक विशाल अभिलेख बनि उठैत अछि। बालिका-खेलसँ वृद्धावस्था, सौस-पुतौह, घरेलू श्रम, यौन प्रतिरोध, विवाह, दहेज, शिक्षा, संपत्ति-अधिकार, प्रवासन, मिथकीय स्त्री आ सार्वजनिक जीवन—स्त्री जीवनक बहु चरण उपस्थित अछि। विशेष रूपसँ 'माटीक मुरुत', 'चुमौन', 'कनिया पूतरा के विवाह', 'आधुनिक स्त्रीगण' आ 'शकुन्तला' स्त्रीकेँ केवल पीड़िता नहि, निर्णयकर्ता बनबैत अछि। कश्यपक 'पहिल चिट्ठी', 'गिरैत देवाल', 'जरल पेट' आ 'कचोट'मे सेहो स्त्री-अनुभव तीक्ष्ण रूपेँ उभरैत अछि, मुदा हुनकर समग्र गद्यक केन्द्र अधिक व्यापक सामाजिक नैतिकता अछि।

३. गाम आ महानगर

दुनू लेखकक रचनामे गाम-शहर द्वन्द्व स्थायी विषय अछि। गाम स्मृति, सम्बन्ध, भाषा आ संस्कारक स्थान अछि, मुदा ओ हिंसा, अन्धविश्वास, दहेज, स्त्री-दमन आ वर्ग-असमानतासँ मुक्त नहि। शहर अवसर, शिक्षा, नौकरी आ आधुनिकता दैत अछि, मुदा अकेलापन, बाजार, ठगी, वर्ग-विभाजन आ सांस्कृतिक दूरी सेहो। 'महानगर मे सुनीता', 'भटकैत स्वप्न', 'भाषा', 'उजड़ल खोंता', 'नव-वर्ष' आ 'भावना' एहि जटिलताकेँ अलग-अलग दिशासँ देखबैत अछि। संकलनक महत्त्व एहि मे जे ओ गामकेँ स्वर्ग आ शहरकेँ नरक जेकाँ सरल खाँचामे नहि राखैत।

४. प्रवासन आ घर

'विलायत वाली कनिया', 'चुट्टा लेबे की छुट्टी', 'उत्तराक नोर', 'महानगर मे सुनीता', 'चिड़ैक अभिलाष', 'ई केक्कर शोणित?' आ 'उजड़ल खोंता' मे घर छोड़बाक अनुभव विभिन्न वर्गमे बदलैत अछि। सम्पन्न प्रवासी लेल घर स्मृति आ सांस्कृतिक पहचानक प्रश्न होइत अछि; गरीब प्रवासी लेल पेट आ रोजगारक। पाखीक छोट खोंता सँ लंदन/वाशिंगटन/दिल्ली धरि पसरेल भूगोल 'घर'क अर्थकेँ जटिल बनबैत अछि।

५. वृद्धावस्था आ उपयोगितावादी परिवार

'भरोस', 'मरीचका/मरिचिका', 'माता कुमाता न भवति', 'दिन खराबय तीन नाम', 'कोन डारि पर केकर खोता' आदि मे वृद्ध व्यक्ति परिवारक भावनात्मक केन्द्रसँ हाशियाक ओर सरकैत अछि। संतानक प्रवासन, संपत्ति-बँटवारा, सेवाक अभाव आ आर्थिक उपयोगिता सम्बन्धक भाषा बदलैत अछि। संकलन बारम्बार पूछैत अछि—माता-पिताक सम्मान संस्कारक वाक्य अछि वा वृद्धावस्थामे वास्तविक श्रम, समय आ उपस्थिति?

६. ईमानदारी, सत्ता आ व्यवस्था

कश्यपक गद्यक विशेष क्षेत्र नौकरशाहीक नैतिक विडम्बना अछि। 'मनस्ताप' छोट घूस आ पैघ राजनीतिक भ्रष्टाचारक दोहरा मापदण्ड खोलैत अछि; 'ईमानदार' नियमसम्मत भ्रष्ट संरचना देखबैत अछि; 'थाकल बाट' नागरिककेँ घूस देबय बाध्य करयवला तंत्र देखबैत अछि; 'फ्यूज बल्ब' पदक क्षणभंगुर शक्ति पर व्यंग्य करैत अछि। कामिनी कामायनीक 'अप्पन राज्य' सत्ता पबिते आदर्श आ पदलोलुपताक टकराव देखबैत अछि। दुनू लेखक सत्ता केँ केवल 'ऊपर'क चीज नहि, दैनिक व्यवहारक संरचना मानैत छथि।

७. मिथकक पुनर्पाठ

कामिनी कामायनीक काव्य-मिथक समकालीन आलोचनाक महत्त्वपूर्ण उपकरण अछि। द्रौपदी युद्ध आ स्त्री-अपमानक साक्षी, यशोधरा त्यागल पत्नी सँ साधिका, गांधारी स्वेच्छिक अन्धत्वक आत्मपरीक्षक, शकुन्तला अस्वीकृत स्त्री सँ स्वाधीन माता-निर्माता बनैत छथि। 'असमंजस' अभिमन्युकेँ आधुनिक संघर्षक प्रतीक बनबैत अछि। मिथक एतऽ पूज्य कथा मात्र नहि; वर्तमान नैतिक प्रश्न पूछबाक भाषा अछि।

८. भाषा, लोक-संस्कृति आ मौखिकता

संकलनक मैथिली केवल साहित्यिक मानक वाक्य नहि; ओ गामक गारि, फकड़ा, लोकगीत, संस्कार-विधि, भोजन, नातेदारी-संबोधन, अंग्रेजी-शब्द, सरकारी पद, शहरक शब्दावली आ क्षेत्रीय उच्चारण सभ समेटैत अछि। एहि मिश्रणसँ सामाजिक यथार्थ जीवित होइत अछि। 'भाषा' कविता मातृभाषाक अस्मिता सीधे विषय बनबैत अछि, जखनकि 'घुइर ताकू', 'कनिया पूतरा के विवाह' आ 'सूटक कपड़ा' भाषा-व्यवहारक माध्यमसँ चरित्र रचैत अछि।

९. हास्य-व्यंग्य

कामिनी कामायनीक हास्य प्रायः विस्तार, बोलचाल, पारिवारिक उलझन आ आत्ममुग्ध पात्रसँ बनैत अछि—'सूटक कपड़ा', 'घुइर ताकू', 'डार्विनक बानर'। कश्यपक हास्य अत्यन्त संक्षिप्त, अन्तिम वाक्यपर निर्भर—'फ्यूज बल्ब', 'बी०डी०ओ०', 'भावना', 'बदलैत समय'। दुनू रूपक लक्ष्य मनुष्यक गरिमा नष्ट करब नहि, सामाजिक विरोधाभास उजागर करब अछि।

१०. करुणा आ नैतिक जटिलता

संकलनक सर्वोत्तम क्षण ओ छथि जतऽ पाठक तत्काल निर्णय नहि दे सकैत। 'जरल पेट'मे भूखल माँक व्यवहार, 'उजड़ल खोंता'मे बाल-श्रमसँ मुक्त बच्चाक परिवारक भूख, 'भरोस'मे अपूर्ण चरित्रवाली घरेलू श्रमिकपर वृद्धाक निर्भरता, 'मनस्ताप'मे ईमानदार अधिकारीक राजनीतिक विवशता—ई सभ कथा नैतिकता कैं परिस्थिति सँ अलग नहि देखैत अछि। एहि जटिलता संकलनकेँ केवल उपदेशात्मक साहित्य बनबासँ बचबैत अछि।

भाग छः

शिल्पगत मूल्यांकन

कथन-रचना: कामिनी कामायनी प्रायः सर्वज्ञ अथवा निकट तृतीय-पुरुष कथन, दीर्घ फ्लैशबैक आ मौखिक स्मृति-प्रवाह अपनबैत छथि। कश्यप अधिकतर दृश्य-आधारित संक्षिप्त कथन, संवाद आ अन्तिम उलटाव प्रयोग करैत छथि।

संवाद: दुनू लेखकक संवाद रचनाक प्रमुख शक्ति अछि। कामिनी कामायनीक संवाद समाज-चित्र, रिश्ताक पदानुक्रम आ भाषिक क्षेत्र खोलैत अछि; कश्यपक संवाद कथाक बाण बनैत अछि।

प्रतीक: खोता, माटी, चान, चक्का, खिड़की, फ्यूज बल्ब, मरिचिका, अंगोर, जरल पेट, खोंता, कलश, पलास, अजगर, गंगा—संकलनमे वस्तु बारम्बार सामाजिक अर्थ ग्रहण करैत अछि।

विडम्बना: 'भागमंती', 'धमात्मा', 'ईमानदार', 'कलंकित चान', 'फ्यूज बल्ब', 'नव-वर्ष' आदि शीर्षक पाठ समाप्त भेलापर नब अर्थ पबैत अछि।

विस्तारक लाभ आ सीमा: कामिनी कामायनीक दीर्घ सामाजिक विवरण इतिहास, रीति, वस्तु-संस्कृति आ बोली सुरक्षित करैत अछि, मुदा कखनो मुख्य कथानकक गति धीमी करैत अछि। कश्यपक कसावट प्रभाव तीक्ष्ण करैत अछि, मुदा कखनो चरित्रक मनोवैज्ञानिक विस्तारक सम्भावना कम करैत अछि। ई आलोचना मूल्य-निर्णय नहि, दू अलग शिल्पगत चयनक पहचान अछि।

भाग सात

संकलनक साहित्येतिहासिक महत्त्व

'विदेह सदेह ३१'क महत्त्व केवल व्यक्तिगत रचनाक गुणवत्तामे नहि, बल्कि इक्कीसम शताब्दीक मैथिली समाजक बहुस्तरीय अनुभव सुरक्षित करबामे अछि। एहि एक संकलनमे संयुक्त परिवारक अवशेष, स्त्री-शिक्षा, अंतरजातीय विवाह, विदेश-प्रवासन, महानगरीय घरेलू श्रम, सरकारी दफ्तर, भ्रष्टाचार, वृद्धावस्था, दहेज, ग्रामीण संस्कार, बाल-श्रम, मीडिया-बाजार, भाषा-अस्मिता, आतंकवाद, पर्यावरण, मिथकीय पुनर्पाठ आ डिजिटल/वैश्विक आधुनिकताक छाप एकत्र भेटैत अछि। एहि अर्थमे ई साहित्य सामाजिक अभिलेख सेहो बनैत अछि।

कामिनी कामायनीक रचनामे खास कऽ स्त्रीक दीर्घ सामाजिक स्मृति—आँगनसँ बाजार, पोखरिसँ लंदन, पुराणसँ आधुनिक कानून धरि—एक निरन्तर धारा बनैत अछि। कुमार मनोज कश्यपक रचनामे राज्य, दफ्तर, सड़क, रेल, वर्ग आ नैतिक निर्णयक सूक्ष्म क्षण एहि समाजक दोसर चेहरा देखबैत अछि। एक लेखक विस्तारसँ समाज रचैत छथि, दोसर संक्षेपसँ ओकर नस दबबैत छथि।

भाग आठ

पाठ-संपादकीय निरीक्षण

१. अनुक्रममे कुल ८९ प्रविष्टि अछि; आन्तरिक काव्य-इकाइ गिनलापर ९४ रचनात्मक इकाइ होइत अछि।

२. कुमार मनोज कश्यपक 'परजा' दू बेर प्रविष्ट अछि। दुनूकेँ एहि समीक्षामे अलग दर्ज कएल गेल अछि।

३. 'मरीचका' आ 'मरिचिका' दू शीर्षक/प्रविष्टि अछि आ कथ्य अत्यन्त निकट/पुनरावृत्त अछि। एकरा चुपचाप एक नहि कएल गेल अछि।

४. अनुक्रमक 'आखिर कहिया मरि' मूल कविता-पृष्ठ पर 'आखिर कहिया धरि' रूपमे अछि। समीक्षा मूल पृष्ठक शीर्षक अपनबैत पाठान्तर दर्ज करैत अछि।

५. 'आधुनिक स्त्रीगण १–५' अनुक्रममे एक प्रविष्टि अछि, मुदा पाँच आन्तरिक इकाइ अछि; पाँचूक अलग समीक्षा कएल गेल अछि।

६. 'किछु गजल' शीर्षकक भीतर दू गजल अछि; दुनूक अलग मूल्यांकन कएल गेल अछि।

७. उपलब्ध PDFक OCR/टंकणमे कतेको ठाम अक्षर-विकृति अछि। समीक्षा कथ्यकेँ अनुमानसँ 'सुधारि' नब कथा नहि बनौने अछि; जहाँ शीर्षक वा शब्दक रूप स्पष्ट अछि, ताहिए आधार बनाओल गेल अछि।

भाग नौ

सम्पूर्णता-परीक्षण: कोनो रचना वा लेखक छुटल नहि

डॉ. कामिनी कामायनी—गद्य २५:

नोम्पेंह; सेयाम रेयापक स्वर्णिम अतीत; भागमंती; सोर; कोन डारि पर केकर खोता; घुइर ताकू; माटीक मुरुत; विलायत वाली कनिया; सूटक कपड़ा; चुमौन; चुट्टा लेबे की छुट्टी; भरोस; लाल काकी; अभिशप्त; समय काल; कठजीब; कलंकित चान; उत्तराक नोर; महानगर मे सुनीता; संटू क उपनैन; शाश्वत कथा; कनिया पूतरा के विवाह; डार्विनक बानर; टूटल तारा; अप्पन राज्य।

कुमार मनोज कश्यप—गद्य ३३:

विवशता; मरीचका; परजा; मर्यादाक हनन; प्रतिरोध; दृष्टिकोण; ओ तऽ बताह अछि; धमात्मा; मनस्ताप; गिरैत देवाल; कलाकार; नोर अंगोर; फ्यूज बल्ब; पहिल चिट्ठी; दिन खराबय तीन नाम; घुरि आऊ निशा; अन्हेर; सीमान; उजड़ल खोंता; मरिचिका; परजा; बदलैत समय; जरल पेट; जीतक आगू; माता कुमाता न भवति; ईमानदार; मास्टर साहेब; कचोट; नव-वर्ष; थाकल बाट; हारल मनुक्ख; भावना; बी०डी०ओ०।

डॉ. कामिनी कामायनी—पद्य २८ अनुक्रम-प्रविष्टि:

अँकोरवट मंदिर; जहिया ओ इतिहास सुनौलक; संग दिअ सदिखन अहिना; वसंत; बाजार मे स्त्री; बंजारा मोन; द्रौपदी; यशोधरा; गांधारी; शकुन्तला; फागुन राग; काशीक घाट; चिड़ैक अभिलाष; भटकैत स्वप्न; आजुक विद्यार्थी; असमंजस; आतंकी गाम; लिखत के प्रेम गीत; आखिर कहिया धरि (अनुक्रम-पाठ: आखिर कहिया मरि); भाषा; चक्का; ई केक्कर शोणित?; खिड़की; भरोस; पुष्पांजलि; आस्थाक पूर्ण कलश; खिलैत पलास वन; आधुनिक स्त्रीगण १–५।

'आधुनिक स्त्रीगण'क पाँच आन्तरिक इकाइ सभ पृथक् समीक्षित अछि।

कुमार मनोज कश्यप—पद्य ३ अनुक्रम-प्रविष्टि:

वसंती दोहा; नहि सुतिरहब आहाँ चद्दरि तानि; किछु गजल।

'किछु गजल'क भीतरक दू गजल पृथक् समीक्षित अछि।

अन्तिम निष्कर्ष

'विदेह सदेह ३१'क समग्र पाठ एक एहन मैथिली समाज सामने आनैत अछि जे एके समय अतीतसँ गहिर जुड़ल आ तीव्र संक्रमणमे अछि। पुरान गाम, पोखरि, आँगन, पाग, मखान, संस्कार आ लोकभाषा एखनहुँ स्मृतिक मेरुदण्ड छथि; संगहि मॉल, महानगर, पाँच सितारा विवाह, विदेश, मोबाइल, टीवी विज्ञापन,

नौकरशाही, बाजार आ प्रवासन नब जीवन-व्यवस्था बना चुकल अछि। एहि संक्रमणक सर्वाधिक गहिर प्रभाव परिवार, स्त्री, वृद्ध, गरीब श्रमिक, भाषा आ नैतिक विश्वास पर पड़ैत अछि।

डॉ. कामिनी कामायनी एहि बदलैत समाजकेँ दीर्घ स्मृति, स्त्री-केंद्रित अनुभव, लोक-भाषिक विस्तार, मिथकीय पुनर्पाठ आ दृश्यात्मक कथा द्वारा पकड़ैत छथि। कुमार मनोज कश्यप छोट प्रसंग, व्यंग्य, प्रशासनिक अनुभव आ नैतिक उलटावक माध्यमसँ ओहि समाजक नस पकड़ैत छथि। एकरा कारण संकलनमे विस्तार आ संक्षेप, करुणा आ व्यंग्य, मिथक आ दफ्तर, गाम आ महानगर, स्त्री-स्वर आ नागरिक-विवेक एकसाथ उपस्थित अछि।

साहित्यिक मूल्यक दृष्टिसँ संकलनक सर्वाधिक स्थायी उपलब्धि ई अछि जे ई ‘बदलाव’केँ अमूर्त शब्द नहि रहने दैत। बदलाव कखनो वृद्ध माँक बन्द दरवज्जा अछि, कखनो पुतौहक सेवा, कखनो गलत बुझल सूटक पैकेट, कखनो चुमौनक अस्वीकार, कखनो बालकक खाली कटोरी, कखनो फ्यूज बल्ब, कखनो भाषाक विनती, कखनो चिड़ैक छोट खोंता, आ कखनो शकुन्तलाक उँगली उठा कऽ कहल आत्मसम्मान। एहि ठोस बिम्बसभमे संकलन अपन समयक मैथिली जीवनकेँ साहित्यिक स्मृति बना दैत अछि।

आधार-सामग्री

१. विदेह सदेह ३१: डॉ. कामिनी कामायनी एवं कुमार मनोज कश्यप केर गद्य आ पद्य रचना; विदेह—प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका; ISSN 2229-547X; संकलनमे उल्लिखित स्रोत: विदेह पेटार अंक १–३५०; संस्करण २०२२।

२. एहि समीक्षाक सभ कथ्यात्मक विवरण, शीर्षक, पात्र, प्रसंग आ उद्धृत/संकेतित विचार उपर्युक्त मूल PDF-पाठक समीप-पाठपर आधारित अछि। बाहरी स्रोतसँ अप्रमाणित लेखक-जीवन, पुरस्कार, प्रकाशन-वर्ष वा आलोचनात्मक मत जोड़ल नहि गेल अछि।

—समाप्त—

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह सदेह ३१ — डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यपक गद्य-पद्य रचनाक

अध्याय 41 · विदेह सदेह ३३ — सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा

सारांश रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-२ गहन पाठ • तुलनात्मक काव्यशास्त्रीय विवेचन • रचना-दर-रचना आवरण प्राथमिक आधार : विदेह

सदेह ३३ — विदेह पेटार अंक १–३५० सँ संकलित गद्य-पद्य ISSN 2229-547X • संस्करण २०२२ • सम्पादक : गजेन्द्र ठाकुर साहित्य-

इतिहासमे स्थान साहित्य अकादेमीक प्रकाशन-सूची जयकान्त मिश्रक ‘History of Maithili Literature’ (प्रथम संस्करण

१९७६) आ देवकान्त झाक ‘A History of Modern Maithili Literature (Post-Independence Period)

(पुनर्मुद्रण २००७) केँ मैथिली साहित्य-इतिहासक मान्य दीर्घ परम्परामे रखैत अछि। ‘विदेह सदेह ३३’ एहि इतिहासक विकल्प नहि, बल्कि ई-

पत्रिका युगमे रचना-संचयनक एक समानान्तर दस्तावेज अछि। एकर महत्व एहि मे अछि जे स्थापित विधाक संग तत्कालीन रिपोर्ट, जाल-

संवाद, साक्षात्कार, नव गजल-प्रयोग, विहनि कथा, दलित आत्म-अभिलेखन आ प्रवासी लेखनकेँ सेहो साहित्यिक अभिलेखक हिस्सा

बनबैत अछि।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · कथा · विहनि कथा · गजल · इतिहास · काव्यशास्त्र

रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-२

गहन पाठ • तुलनात्मक काव्यशास्त्रीय विवेचन • रचना-दर-रचना आवरण

प्राथमिक आधार : विदेह सदेह ३३ — विदेह पेटार अंक १–३५० सँ संकलित गद्य-पद्य

ISSN 2229-547X • संस्करण २०२२ • सम्पादक : गजेन्द्र ठाकुर

साहित्य-इतिहासमे स्थान

साहित्य अकादेमीक प्रकाशन-सूची जयकान्त मिश्रक ‘History of Maithili Literature’ (प्रथम संस्करण १९७६) आ देवकान्त झाक ‘A History of Modern Maithili Literature (Post-Independence Period)’ (पुनर्मुद्रण २००७) कैँ मैथिली साहित्य-इतिहासक मान्य दीर्घ परम्परामे रखैत अछि। ‘विदेह सदेह ३३’ एहि इतिहासक विकल्प नहि, बल्कि ई-पत्रिका युगमे रचना-संचयनक एक समानान्तर दस्तावेज अछि। एकर महत्व एहि मे अछि जे स्थापित विधाक संग तत्कालीन रिपोर्ट, जाल-संवाद, साक्षात्कार, नव गजल-प्रयोग, विहनि कथा, दलित आत्म-अभिलेखन आ प्रवासी लेखनकेँ सेहो साहित्यिक अभिलेखक हिस्सा बनबैत अछि।

लोककथा आ लिखित साहित्यक सम्बन्ध बुझबाक लेल तुलनात्मक साहित्यक शोध उपयोगी अछि: मौखिक साहित्य लिखित साहित्यसँ पुरान अछि, मुदा लिखित रचना लोक-स्मृति, कथा-रूप, अनुष्ठान आ प्रदर्शनपरम्परासँ लगातार संवाद करैत रहैत अछि। ‘विदेह सदेह ३३’मे राजा सलहेस, जट-जटिन, महुआ घटवारिन, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गांगोदेवीक भगता, कोसी लोकगीत आदि एहि मौखिक-लिखित सेतुकेँ प्रत्यक्ष करैत अछि।

भाग एक : गद्य-खण्डक सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा

१. गजेन्द्र ठाकुर : विधा-विस्तार, लोक-स्मृति, आधुनिक यथार्थ आ आलोचनात्मक प्रयोग

गजेन्द्र ठाकुरक गद्य-समूह एहि खण्डक सर्वाधिक विस्तृत एकल रचनात्मक-आलोचनात्मक परिसर अछि। एक छोरपर जापानी मूलक हाइकू/हैबूनक मैथिली अनुकूलन आ वैदिक पात्रक नाटक अछि, तँ दोसर छोरपर लोककथा, समकालीन सामाजिक व्यंग्य, विज्ञान-कल्पना, उपन्यास, भाषिक-फील्डवर्क आ बहु-सिद्धान्तीय कविता-समालोचना। एहि विविधताकेँ केवल ‘बहुविधा लेखन’ कहि छोड़ब पर्याप्त नहि; मूल साझा प्रवृत्ति अछि—मैथिली भाषामे नब विधा अथवा नब विषय प्रवेश करब, लोकस्मृतिकेँ लिखित अभिलेख देब, आ सामाजिक-सांस्कृतिक वर्चस्वपर प्रश्न उठेब।

• **मैथिली हाइकू/हैकू/क्षणिका/शेनर्यू/टनका, हैबून** — रचनाकार हाइकूक ५–७–५ आ १७-अक्षर रूपकेँ मैथिली वर्ण-गणनाक आधारपर प्रस्तावित करैत छथि। बाहरी हाइकू-अध्ययन जापानी मूलमे १७ ‘मोरा’ कहैत अछि; तेँ एहि ग्रन्थक १७-अक्षर विधानकेँ मैथिली अनुकूलन कहब अधिक यथार्थ अछि। प्रकृति-बिम्ब, ऋतु आ क्षणिक अनुभूति एहि प्रयोगक केन्द्र अछि।

• **हमर एकटा हैबून** — १९८७क कमला-बलान बाढ़िक प्रत्यक्ष दृश्य, हेलीकॉप्टरसँ राहत आ वितरणक विडम्बना छोट गद्यक बाद हाइकूमे संकुचित होइत अछि। दृश्य-साक्ष्य आ काव्य-संक्षेपक जोड़ हैबूनक प्रभाव बनबैत अछि।

• **अपाला आत्रेयी** — वैदिक ऋचा-द्रष्टा अपालाकेँ केन्द्रमे राखि शिक्षा, त्वक्-रोग, विवाह, पुरुष-दृष्टि आ आत्मसम्मानक नाटकीय पुनर्पाठ। अन्तमे कृशाश्वक पछतावा स्वीकार करैत अपाला पुनः दाम्पत्य-अधिकार नहि दैत छथि; नारी-स्वायत्तताक ई बिन्दु नाटकक निर्णायक आधुनिक अर्थ अछि।

• **दानवीर दधीची** — दधीचि-कथाकेँ ‘अस्थिदान’क पौराणिक रूढ़िसँ हटा मधु-विद्या, ज्ञानक पात्रता, अश्विनीक शल्य-कौशल आ ज्ञान-सुरक्षाक कथा बनाओल गेल अछि। सूत्रधारक अन्तिम वक्तव्य स्वयं वैकल्पिक आख्यानक घोषणा करैत अछि।

• **बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकुरक कथा** — ब्राह्मण आ ठाकुरक बच्चाक यात्रा-फ्रेम भीतर कथा-भीतर-कथा चलैत अछि। प्रश्न करबाक बाल-साहस, नैतिक निर्णय आ मित्रताक पुनर्स्थापन एहि लोककथात्मक संरचनाकेँ केवल उपदेशात्मक रहबाक सँ बचबैत अछि।

• **राजा अनसारी** — राजाक सपना, अद्भुत वस्तु, परी आ जोखिमपूर्ण खोजक क्रम लोक-अद्भुत कथा बनबैत अछि; अतिशयोक्ति आ असंभव घटना

लोककल्पनाक नियमपर चलैत अछि।

• **राजा ढोलन** — हाट लगबएबाक राजकीय वचन सँ आरम्भ कथा यात्रा, विपत्ति आ वैवाहिक पुनर्मिलन धरि जाइत अछि। 'वचन' आ 'भाग्य' लोककथाक कथानक-चालक छथि।

• **बगियाक गाछ** — असंभव/पुनरावृत्त घटना आ बालकक अडिग व्यवहार हास्यपूर्ण लोक-अतियथार्थ रचैत अछि; कथा तर्कसँ अधिक मौखिक कथनक चमत्कारपर निर्भर अछि।

• **ज्योति पँजियार** — तंत्र-मंत्र, धर्मराज, गहबर, मृत्यु-पुनर्जीवन आ भगता परम्परा सभ एकठाम। लिखित पाठ स्थानीय धार्मिक लोकविश्वासकेँ कथात्मक अभिलेख बनबैत अछि।

• **राजा सलहेस** — सलहेसक वीरता, जातिगत परिचय, दबनाक प्रेम आ संकट-निवारण लोकनायक आख्यानक आधार छथि। कथा नायकत्वकेँ राजवंशक बदला लोक-समुदायक स्मृतिसँ जोड़ैत अछि।

• **बहुरा गोढ़िन नटुआदयाल** — नर्तकी, जादू, प्रेम, मृत्यु-पुनर्जीवन आ कामाख्या-संबद्ध चमत्कार एक प्रदर्शनपरक लोककथा रचैत अछि।

• **महुआ घटवारिन** — सौन्दर्यक वर्णनक संग 'सतवंती' महुआ, सतमाय-बाप आ नदी-घाटिक त्रासदी; अन्तमे खिस्सा-वचनहार द्वारा पुनरावृत्ति ओकरा लोकस्मृतिमे जीवित पात्र बनबैत अछि।

• **डाकू रौहिणेय** — जैन प्रवचनसँ बचबाक पितृ-आदेश उलटि एक सुनल वचन रौहिणेयक जीवन बदलैत अछि। अपराधसँ दीक्षा दिस यात्रा श्रवण, नैतिक विवेक आ परिवर्तनक कथा अछि।

• **मूर्खाधिराज** — विवाह बिसरनिहार महामूर्ख नायक, गलत विनिमय आ कदीमाधरि पहुँचैत विनोद—ई 'मूर्ख-कथा'क शृंखलाबद्ध हास्यविधान अछि।

• **कौवा आ फुद्दी** — दुर्भिक्ष, छल, प्रतिशोध आ लोहारक लाल हँसुआक अन्त पशु-नीतिकथाक तीक्ष्ण संरचना बनबैत अछि।

• **नैका बनिजारा** — व्यापार लेल मोरंग जाएब, नवविवाहिता सँ दूरी आ गीतात्मक अंश प्रवास-लोककथाकेँ भावात्मक गहिराइ दैत अछि।

• **डोकी डोका** — पति-पत्नी प्रेमक अतिशयोक्ति आ सात रातिक प्रतीक्षा लोककथात्मक निष्ठा-परीक्षाक रूप ग्रहण करैत अछि।

• **रघुनी मरर** — अखरा, अकाल, जमीन्दार आ न्याय-संघर्षक कथा; अन्तमे रैयत सभकेँ मुक्त कराएब सामन्ती सत्ता विरुद्ध लोक-न्यायक आकांक्षा व्यक्त करैत अछि।

• **जट-जटिन** — राजा शिवसिंह-विद्यापति स्मृति, संगीतकार जट आ वर्षा-अनुष्ठानक लोकव्याख्या एकहि पाठमे इतिहास-स्मृति, प्रदर्शन आ वर्षा-लोकाचारकेँ जोड़ैत अछि।

• **बत्तू** — बलि लेल बिकए जा रहल छागर-बच्चाक प्रसंग पशु-बुद्धि आ बचावक लोकविनोद बनैत अछि; हिंसाक आशंका भीतर हास्य कथा-तनाव रचैत अछि।

• **भाट-भाटिन** — वैवाहिक छल, मणिधारी साँप, हत्या-षड्यन्त्र आ प्रहेलिकाक माध्यमेँ अन्हार लोककथात्मक नैतिकता प्रस्तुत होइत अछि।

• **गांगोदेवीक भगता** — माछमारी, साओन, भगता आ देवी-विश्वास मल्लाह समुदायक धार्मिक-सांस्कृतिक स्मृतिसँ जुड़ल लोक आख्यान बनबैत अछि।

• **बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे** — बोधि कायस्थक दानशील जीवन आ गंगा-लाभक आख्यान भक्तिक लोकविश्वास आ मृत्युक पवित्र कामनाक कथा अछि।

• **छेछन** — डोम लोकदेवता छेछन, अखरा, चटिया आ मानिकचन्दक संघर्ष दलित/लोकनायक वीरगाथाक रूपमे उभरैत अछि।

• **गरीबन बाबा** — धोबी नायक गरीबन, कुश्ती, कमला माइक कोप, मृत्यु आ भगता-रूप लोकदेवत्वक निर्माण-प्रक्रिया देखबैत अछि।

• **लालमैन बाबा** — चमार समुदायसँ जुड़ल लालमैनक बाघिनसँ युद्ध, मृत्यु आ भगता-परम्परा लोकनायकत्वक जाति-समुदायगत स्मृतिकेँ लिखित स्वरूप दैत अछि।

• **गोनू झा आ दस ठोप बाबा** — सुखाड़ आ 'यज्ञसँ वर्षा'क ढोंगक सामने गोनू झाक चतुराई नकली दाढ़ीधारी बाबाकेँ उघारैत अछि; लोकहास्य अन्धविश्वासक आलोचना बनैत अछि।

• **संकर्षण (नाटक)** — आठ अंक, पाँच 'कल्लोल'क विन्यास नाटककेँ प्रयोगधर्मी संरचना दैत अछि। संवाद, स्मृति आ मानवीय सम्बन्धक किचकिचाहट शीर्षक पात्रक अनुभवक केन्द्र बनैत अछि।

• **सर-समाज** — दिल्लीक श्रमिक-प्रवासी परिवेशमे प्लम्बर नबी बकस आ 'अपन एरियाक लोक'क सम्बन्ध कथा बनबैत अछि। अन्तक 'बुरबक' निष्ठा

आधुनिक शहरमे समुदाय, स्वार्थ आ आत्मीयताक विडम्बनाकेँ तीक्ष्ण करैत अछि।

• **काल-स्थान विस्थापन** — चारि-आयामी प्रयोगशाला आ समय-विस्थापनक ‘हजार साल’ विज्ञान-कल्पना हेतु मैथिली गद्यक दुर्लभ प्रयोग अछि; वैज्ञानिक अवधारणा मानवीय अकेलापन आ ज्ञान-संचारक संकटसँ जुड़ैत अछि।

• **सर्वशिक्षा अभियान** — रिक्शाचालक बुधन पासवानक डोमाकेँ पढ़ेबाक इच्छा, गामक गरीबी, जाति-टोला आ किताब-वितरणक बीच अन्तिम अनिश्चितता —“डोमा पढ़लक आकि नहि”—सरकारी नारा आ वास्तविक पहुँचक दूरी उजागर करैत अछि।

• **जातिवादी मराठी** — मिथिला-बिहारसँ आएल अफसर, रिक्शावला आ भोजन बनबएबला सभक एक शहरमे उपस्थिति क्षेत्रीयता आ प्रवासक तनाव उघारैत अछि; पाठक स्वर तीक्ष्ण आ विवादात्मक अछि।

• **थेथर मनुक्ख** — कबूतरक जोड़ीक विरहक सहारे मानवक दुखकेँ जल्दी सामान्य बना देबाक ‘थेथर’ क्षमता पर व्यंग्य अछि; पशु-बिम्ब मानवीय असंवेदनशीलताक दर्पण बनैत अछि।

• **बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा** — तेसर पत्नीकेँ केन्द्र कए गामक बहस बहुपत्नी विवाह, पुरुष-मानस आ ‘सहमति’क विडम्बना पर तीक्ष्ण व्यंग्य अछि; भाषा जानबूझि कऽ असुविधाजनक सामाजिक पूर्वाग्रहकेँ उद्घाटित करैत अछि।

• **स्त्री-बेटी** — भोजनक आसन सँ पढ़ाइ धरि बेटी-सँग भेदभावक प्रसंग अन्तमे अपाला-गार्गी-मैत्रेयीक स्मृति सँ वर्तमानकेँ प्रश्न करैत अछि।

• **बिआह आ गोरलगाइ** — विवाह-खर्च, नगद, जमीन, गोरलगाइ आ एक सौ एक टकाक लेन-देन द्वारा दहेज/उपहारक आर्थिक व्यंग्य रचल गेल अछि।

• **प्रतिभा** — मसूरीक अधिकारी-प्रशिक्षण प्रसंग परीक्षाक पैटर्न रटि सफलताकेँ ‘प्रतिभा’ मानबाक अहंकार पर आत्म-विडम्बनात्मक चोट अछि।

• **जाति-पाति** — हैदराबाद पुलिस अकादमीक पार्टीमे एकसमान पदधारी लोकक जातिगत आत्म-घोषणाक असमानता प्रश्न बनैत अछि; “हम डोम छी” बाजबाक असंभवता सामाजिक प्रतिष्ठाक दोहरा मानदण्डकेँ खोलैत अछि।

• **अनुकम्पाक नोकरी** — रोग, पारिवारिक सेवा, मृत्यु आ प्रमाणपत्रक आधारपर नोकरी—कथा करुण घरेलू अनुभवकेँ नौकरशाहीक विडम्बनासँ जोड़ैत अछि।

• **नूतन मीडिआ** — ‘सबसे पहिने’ समाचार देबाक दौड़, अपराधक किछु दिनक सनसनी आ नब घटना आबिते पुरान केसक विस्मरण—मीडिया-स्मृतिक क्षणभंगुरतापर व्यंग्य अछि।

• **मिथिलाक उद्योग** — बन्द बस/कारखाना आ देबालपर पसरेल लत्ती उद्योगहीनताक दृश्य-बिम्ब बनैत अछि।

• **मिथिलाक उद्योग-२** — जीव-जन्तुक व्यंग्य-संवादमे ‘जातिवाद आ भाइ-भतीजावाद’ उद्योग-विनाशक मंत्र कहल गेल अछि; पशु-रूपक सामाजिक आलोचनाकेँ हास्यपूर्ण बनबैत अछि।

• **बाढ़ि, भूख आ प्रवास** — कोसी बाढ़ि, अल्हुआपर निर्भरता आ ट्रेन-प्रवासक अनुभव अन्तक ‘अल्हुआ महराज’ व्यंग्यद्वारा आपदा, भूख आ विस्थापनकेँ एकसाथ बाँधैत अछि।

• **नव-सामन्त** — शिक्षा/रोजगारक यथार्थसँ कमजोर पात्र अपन पुरान सामन्ती ‘लेबल’क अहंकार सँ नोकरी छोड़ैत अछि; सामन्तवादकेँ जमीन नहि, मानसिकता रूपेँ चिन्हित कएल गेल अछि।

• **बाणवीर** — शरीर-वृद्धि, लोकविश्वास, गामक स्मृति आ वीर आख्यानक सहारे कथा अतीत-उपस्थिति बनबैत अछि; लोक-इतिहास आ कथाकारक आत्मीय खोज एकमेक होइत अछि।

• **तस्कर** — ‘तस्कर केशव’क प्रथमपुरुष स्मृति, मालती, पाँजि, उपाधि, राजा बीरेश्वर सिंह आ गामक अवशेष सभक माध्यमेँ वंश-स्मृति, सामाजिक दर्जा आ ऐतिहासिक चिह्नक खोजक कथा बनैत अछि।

• **सिद्ध महावीर** — पाथरक मूर्ति ‘जागृत’ अछि कि नहि—एहि प्रश्नपर वैज्ञानिक संशय आ लोकभक्तिक दू दृष्टि समानान्तर चलैत अछि; कथन पक्ष चुनबाक बदला अनुभवक बहुस्वर बचबैत अछि।

• **शब्दशास्त्रम्** — तालपत्र संरक्षण सँ आरम्भ कथा शब्द, अर्थ, भ्रम, स्मृति आ सत्यक दार्शनिक प्रश्न धरि जाइत अछि; “शब्दक अर्थ हम सभ गढ़ि लैत छी” सन आत्म-चिन्तन ओकर मेटा-कथात्मक केन्द्र अछि।

• **दिल्ली** — मृत्यु, पोस्टमार्टम, दाह-संस्कार आ सात प्रदक्षिणाक सूक्ष्म विवरण महानगरीय जीवनमे मैथिल संस्कारक स्थायित्व आ देहक अन्तिम सामाजिक अनुष्ठानकेँ दस्तावेजी गद्य दैत अछि।

• **सहस्रबाढ़नि (उपन्यास)** — बाल्य-विकासक स्मृति सँ दुर्घटना, शल्य-चिकित्सा, मृत्यु-सन्निकटता आ आरुणिक पुनरागमन धरि उपन्यास जीवनक प्रचण्ड प्रहारकेँ ‘सहस्रबाढ़नि’ बिम्बमे रूपान्तरित करैत अछि। दुर्घटना ‘करबाओल गेल’ होएबाक लोक-संशय अन्तमे अर्थक एक आरो परत जोड़ैत अछि।

• **मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध—प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन** — लेख स्वयं स्पष्ट करैत अछि जे चारू उपन्यासक पूर्ण साहित्यिक विवेचन नहि, केवल इतिहास-बोधक परीक्षण अछि। तर्कसँ अपुष्ट ऐतिहासिक तथ्यपर प्रश्न उठेब एकर आलोचनात्मक अनुशासन अछि।

• **कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित)** — माछमारि, जाल, वंशी, खेती-बारी, स्थानीय फसल/उपकरणक शब्द-संग्रह साहित्यसँ आगाँ भाषा-नृविज्ञान आ लोक-ज्ञानक प्राथमिक सामग्री बनैत अछि।

• **विद्यापतिक बिदेसिया—पिआ देसाँतर** — भिखारी ठाकुरक बिदेसिया-परम्परा सँ तुलना करैत मैथिल प्रवासक वर्तमान पीड़ा लेल ‘पिआ देसाँतर’क नाट्य-संकल्प रचल गेल अछि; अन्तमे विद्यापतिक प्रति अर्पण अन्तरभाषिक लोकनाट्य-संवादकेँ स्पष्ट करैत अछि।

• **रमेश नारायणक “पाथरक नाव”—विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”** — दू कथा-संग्रहक प्रकाशन-सन्दर्भ, कथा-सूची आ विशिष्टताक तुलनात्मक पाठ आधुनिक मैथिली कथाक आन्तरिक विविधता दर्ज करैत अछि।

• **दूर्वाक्षत** — विद्यालयी पाठ्यपुस्तकमे मिथिला-मैथिलीक प्रतिनिधित्वपर आक्रामक प्रश्न उठेबैत निबन्ध भाषा, इतिहास आ पाठ्यक्रमक राजनीति पर केन्द्रित अछि; शैली तर्क-वितर्कप्रधान आ आंदोलनधर्मी अछि।

• **मैथिली–सुरजापुरी–राजबंशी** — सीमांचलक भाषिक व्यवहार, कुल्हिया/राजबंशी/संथाली समुदाय आ राज्य-कल्पनाक सन्दर्भमे भाषिक बहुलताकेँ प्रश्न बनाओल गेल अछि। एहि आलेखक भाषावर्गीकरण सभकेँ लेखकक क्षेत्रीय तर्क रूपेँ पढ़ब उचित अछि, अन्तिम भाषावैज्ञानिक सर्वसम्मति रूपेँ नहि।

• **बूच जीक कविताक बहु-सिद्धान्तीय अध्ययन** — संरचनावाद, मार्क्सवाद, इतिहास-दृष्टि, जादू-वास्तविकता, उत्तर-आधुनिकता, नारीवादी/विखण्डनवादी पाठ आ भारतीय सौन्दर्यशास्त्रकेँ एकहि कवि पर आजमायल गेल अछि। सिद्धान्तक बहुलता कभी-कभी मूल्यांकनकेँ अतिशय प्रशंसात्मक बनबैत अछि, मुदा मैथिली समालोचनामे पद्धति-विस्तारक महत्व असंदिग्ध अछि।

• **स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री”** — जीवन-यात्रा, संस्कृत-पाली अध्ययन, बौद्ध अनुभव आ काव्यक उदाहरण सँ जीवनी-समालोचनात्मक आलेख कवि-व्यक्तित्व आ बहुभाषिक साधनाक सम्बन्ध जोड़ैत अछि।

• **जगदीश प्रसाद मण्डल** — सामाजिक वंचना, ग्रामीण यथार्थ आ विशाल रचनात्मक उत्पादनक आधारपर अत्यन्त ऊँच मूल्यांकन कएल गेल अछि। समीक्षा लेल जरूरी अछि जे एहि प्रशंसात्मक स्वरकेँ लेखकीय मत रूपेँ पढ़ल जाए; तथापि हाशियाक जीवनकेँ केन्द्रमे अनबाक महत्व पाठसँ पुष्ट अछि।

• **प्रेमशंकर सिंह** — “मैथिली भाषा साहित्य : बीसम शताब्दी”क मूल्यांकनमे विस्तृत विवेचन, पूर्वाग्रह-विरोध, महिला-लेखन, बाल-साहित्य आ सामाजिक-आर्थिक प्रसंगक समावेशकेँ आलोचनाक गुण मानल गेल अछि।

• **सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि** — तिब्बती, लेपचा, लिम्बू, सरहपाद आ पूर्वी हिमालयी भाषिक-सांस्कृतिक सम्बन्धपर विचार करैत आलेख लिपि-दर्शनसँ व्यापक भाषिक इतिहासक प्रश्न धरि जाइत अछि; ऐतिहासिक निष्कर्ष सभकेँ शोध-परिकल्पना रूपेँ सावधानीसँ पढ़बाक चाही।

२. विभा रानी सँ शिव कुमार झा “टिल्लू” धरि : कथा, रिपोर्ट, संस्मरण, राजनीति आ समालोचना

• **विभा रानी — “आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझौअल जिनगीक”** — वृद्ध दम्पतिक संवादसँ आरम्भ रचना प्रेमकेँ युवावस्थाक रोमांस नहि, दीर्घ सहजीवन, घरेलू श्रम, नौकरी, स्त्री-पुरुषक असमान ‘बेसिक फर्क’ आ खाली होइत घरक बीच परिपक्व आत्मीयता रूपेँ देखबैत अछि। संवाद-प्रधान शिल्प चरित्रकेँ प्रत्यक्ष आवाज दैत अछि।

• **रामभरोस कापड़ि “भ्रमर” — “बीहनि कथा: गंगाप्रसादक स्वायतता”** — सुग्गाकेँ पहिने “सीताराम”, फेर “गोपीकृष्ण” जबरन रटेबाक दबाब आ अन्तमे “जयगणतंत्र”क स्वतः उद्घोष—रचना भाषा, सत्ता, प्रशिक्षण आ स्वायत्तताक सघन राजनीतिक रूपक अछि।

• **रामभरोस कापड़ि “भ्रमर” — “हुगली पर बहैत गंगा”** — कलकत्ताक प्रवासी हीरा आ यौन-व्यवसायमे फँसल सोनाक सम्बन्ध देह-व्यापारक रूढ़ नैतिकता सँ अलग मानवीय सहानुभूति, बेरोजगारी आ महानगरीय असुरक्षा पर केन्द्रित अछि।

• **जितेन्द्र झा — “अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली परिषद”** — धर्ना, ज्ञापन आ मिथिला-राज्यक माँगक रिपोर्ट साहित्यिक गद्यक भीतर समकालीन भाषिक-राजनीतिक अभिलेख अछि।

• **जितेन्द्र झा — “कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?”** — लोकसंस्कृति, उपचार, शकुन, गीत-संगीत आ मौलिकताक संरक्षण पर गोष्ठी-वृत्तान्त;

सांस्कृतिक विरासतकेँ स्थिर संग्रह नहि, आलोचनात्मक चयनक विषय बनबैत अछि।

• **जितेन्द्र झा — "संस्कृति बचएबाक अभियान"** — लोकनाट्य, खानपान, हस्तशिल्प, नृत्य, पाण्डुलिपि, चित्रकला, मेला, पहिरन सहित विस्तृत सूची सांस्कृतिक संरक्षणक बहुविध क्षेत्र रेखांकित करैत अछि।

• **उमेश कुमार महतो — "बहादुरगंज स' रिपोर्ट"** — बाढ़ि, अनियमित सरकारी स्कूल, स्वास्थ्य-सुविधाक दूरी, झोलाछाप चिकित्सा, फूसक घर, सीमा-पार विराटनगर सम्बन्ध आ जाति-भाषा प्रश्न—एक पृष्ठक रिपोर्ट ग्रामीण सीमांचलक घन सामाजिक दस्तावेज बनि जाइत अछि।

• **अनलकान्त — "कबइ-इच्छा"** — १९९२क सामाजिक परिवेश, इलेक्ट्रॉनिक्स दुकान, शहर-गामक गतिशीलता आ पारिवारिक-सासुर सम्बन्धक सूक्ष्म यथार्थ; कथाकार विवरण सँ धीरे-धीरे मनोभाव बनबैत छथि।

• **अनलकान्त — "एत' आ ओत'"** — कनॉट प्लेस आ गामक दशहरा-मेलाक तुलना द्वारा उपभोग-संस्कृति, वर्गीय संकोच आ स्मृतिक द्विस्थानीय दृष्टि रचल गेल अछि।

• **अनलकान्त — "असोथकित"** — अस्पतालक खाली गिलास रोगी चेतनामे पानी, बखारी, भूख आ स्मृतिक रूप बदलैत अछि; वस्तु-बिम्बक मनोवैज्ञानिक रूपान्तरण रचनाक मुख्य शिल्प अछि।

• **मनोज झा मुक्ति — "अवैद्य नागरिकताः सिक्कमीकरणक प्रयास"** — नेपालक नागरिकता-वितरणक प्रश्नपर मधेश-दृष्टिसँ तीक्ष्ण राजनीतिक तर्क। आँकड़ा आ पक्षधर स्वर साथ-साथ चलैत अछि; तेँ एकरा समकालीन वैचारिक दस्तावेज रूपेँ पढ़ब उपयुक्त अछि।

• **मनोज झा मुक्ति — "आभाष लाभ संग अन्तर्वाता"** — गीत-संगीतक व्यक्तिगत यात्रा, मंच आ मैथिली सांगीतिक सार्वजनिकताकेँ प्रश्नोत्तर रूपमे दर्ज करैत अछि।

• **मनोज झा मुक्ति — "तराई/मधेशक आन्दोलनः लूटमे लटुवा नफ्फा"** — आन्दोलन, आठ-बुँदे समझौता, संविधान सभा आ मधेशी प्रतिनिधित्वक अनुभव तीक्ष्ण पक्षधर पत्रकारिता रूपमे प्रस्तुत अछि।

• **कुमार शुशान्त — "छोटकी काकी"** — चौबीस वर्ष बाद गाम-फेरतीक स्मृति "छोटकी काकी"क पुकार सँ अचानक जीवित होइत अछि; नामक जगह सम्बन्धसूचक संबोधन ग्राम्य आत्मीयताक सांस्कृतिक स्मृति बनैत अछि।

• **श्यामसुन्दर शशि — "आह उमा! वाह उमा!"** — पत्रकार उमा सिंहक प्रतिभा, सादगी आ हिंसात्मक मृत्यु पर संस्मरण-श्रद्धांजलि। निजी सहकर्मी स्मृति आ पत्रकारिता-सुरक्षाक सार्वजनिक प्रश्न एकसाथ आबैत अछि।

• **श्यामसुन्दर शशि — "मिथिलाक तवाही, सरकारी षडयन्त्र त ने अछि??"** — चुनावोत्तर मिथिलामे हिंसा, अपहरण आ राजनैतिक निराशाकेँ प्रश्नात्मक सम्पादकीय स्वरमे दर्ज करैत अछि।

• **श्यामसुन्दर शशि — "दुलहा बनल श्रीराम हेऽऽऽ"** — राम-जानकी विवाह महोत्सवक वर्णनमे सीताकेँ बेटी/बहिन आ रामकेँ जवाई रूपेँ देखनिहार मिथिलाक घरेलूकरण-परम्परा केन्द्रमे अछि; लोकगीत धार्मिक आख्यानकेँ स्थानीय आत्मीयता दैत अछि।

• **अंकुर काशीनाथ झा — "नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि"** — लोकतान्त्रिक नेतृत्वक सार्वजनिक छवि, गैर-जिम्मेदार वक्तव्य आ विकल्पहीन मतदाताक तामस पर विचार; रचना नेता-व्यक्ति सँ अधिक 'नेता-वर्ग'क नैतिक संकट उठबैत अछि।

• **लल्लन ठाकुर — "साढूनामा", "सभागाछी सौराठ", "घटकैती"** — अनुक्रममे "किछु रचना" कहि देल अंश भीतर ई तीन कव्वाली/गीत-नाटिका श्रृंखला भेटैत अछि। सौराठ सभा, घटक, विवाह-बाजार, दहेज, सासुर आ साढू सम्बन्धक हास्य-व्यंग्य रंगमंचीय संवाद आ पुनरावृत्त मुखड़ासँ बनैत अछि।

• **साकेतानन्द — "कालरात्रिश्च दारुणा"** — कोसी-बाढ़िक बीच घरपर फँसल दम्पतिक भय, भूख, बहैत घर आ ठीकेदार-सरकार विरुद्ध आक्रोश—आपदाकेँ दूरक समाचार नहि, शरीरगत अनुभव बनबैत अछि।

• **बृषेश चन्द्र लाल — "आ ओ मारलि गेलि!"** — फुलियाक भय, छिपाएल नोर, सशस्त्र सत्ता/हिंसाक आशंका आ 'अभिनय' द्वारा जीवित रहबाक विवशता स्त्रीक त्रासद अस्तित्वकेँ तीव्र करैत अछि।

• **बृषेश चन्द्र लाल — "एकदन्त हाथी आ नौलखा हार"** — मकवानपुर, इन्द्रकुमारी आ पृथ्वीनारायण शाहक ऐतिहासिक-स्मृति/कल्पना द्वारा नेपालक सत्ता, विवाह आ राजकीय महत्त्वाकांक्षाकेँ कथात्मक रूप देल गेल अछि।

• **विनीत उत्पल — राजमोहन झा सँ साक्षात्कार** — "खुलल दृष्टिसँ नहि भऽ रहल अछि समीक्षा" शीर्ष वक्तव्य मैथिली समीक्षा, साहित्यिक जीवन आ सामाजिक अनुभव पर आत्मपरक साक्ष्य दैत अछि; साक्षात्कार साहित्यिक इतिहासक मौखिक स्रोत बनैत अछि।

• **डॉ. गगेश गुंजन — रामाश्रय झा “रामरंग”/अभिनव भातखण्डे जी सँ साक्षात्कार** — संगीत-परम्परा, साधना आ व्यक्तित्वक प्रश्नोत्तर साहित्य-संगीतक अन्तर्विषयी साक्ष्य रूपमे महत्वपूर्ण अछि।

• **शिव कुमार झा “टिल्लू” — “हरिमोहन झा: द्विरागमन”** — हरिमोहन झाक हास्य, “कन्यादान”क समस्या, बुच्ची दाइक रूपान्तरण, आधुनिकता आ ग्राम्य भाषा-शैलीक आलोचनात्मक पुनर्पाठ। आलेख प्रशंसाक संग असहमति रखबाक साहस देखबैत अछि; ई जीवित आलोचना-परम्पराक चिन्ह अछि।

३. मुन्नाजी : “हम पुछैत छी” आ “प्रतीक” — साक्षात्कार-संसार आ विहनि कथा

मुन्नाजीक गद्य-दायरा दू भिन्न सार्वजनिक रूपकेँ जोडैत अछि। ‘हम पुछैत छी’मे २४ गोट साहित्यिक/सांस्कृतिक व्यक्तिसँ बातचीत अछि; ई प्रश्नोत्तर व्यक्तिगत जीवनी सँ अधिक समयक साहित्यिक बहस, भाषा, संस्था, सृजन आ आलोचनाक मौखिक अभिलेख बनैत अछि। साक्षात्कारित व्यक्ति छथि—रवीन्द्र कुमार दास, योगेन्द्र प्रसाद यादव, गोविन्द झा, राजेन्द्र बिमल, रामभरोस कापड़ि ‘भ्रमर’, रमेश रंजन, बृषेश चन्द्र लाल, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, अनलकान्त, कुमार शैलेन्द्र, अमरनाथ, तारानन्द वियोगी, अनमोल झा, दुर्गानन्द मंडल, मिथिलेश कुमार झा, बेचन ठाकुर, धीरेन्द्र कुमार, सोमदेव, अशोक, ज्योति सुनीत चौधरी, जगदीश प्रसाद मण्डल, राजदेव मण्डल, देवशंकर नवीन आ गजेन्द्र ठाकुर।

‘प्रतीक’क ‘अपन गप’ विहनि कथाकेँ बीया-जेकाँ लघु मुदा सम्पूर्ण कथा मानैत अछि—एहन रचना जे एक निश्चित बिन्दुपर कथ्य, शिल्प आ उद्देश्यकेँ संकुचित करए। ई आत्म-परिभाषा महत्वपूर्ण अछि, कारण संग्रहकेँ सामान्य ‘लघुकथा’ कहि पढ़लासँ लेखकक घोषित विधागत हस्तक्षेप हेरा जाएत। रचना-समूह दैनिक जीवनक सूक्ष्म सत्ता, बाजार, जाति, चुनाव, मीडिया, परिवार, प्रवास, वैश्वीकरण, गरीबी आ नैतिक विडम्बनाकेँ छोट फलकपर पकड़ैत अछि।

“प्रतीक”मे सम्मिलित सभ विहनि कथा : रेवाज; पड़ौआ; टकटकी; नियंत्रण; गहना; डोपिंग टेस्ट; विनिमय; सेजौट; परमेश्वर; पजेबा; सफाई; प्रिमियम; मुखियैती; लक्ष्य; कौनचर; आत्मानुभूति; जनवाणी; चश्मा; उपहार; काँट; ओकाति; जीवन चक्र; रक्षक; जमाना; निर्धन; आरक्षित; नवयुग; अवाक; लिलसा; खानदानी; कुल्हइया; दानक बौस्त; जुनुन; विजेता; हरियर बत्ती–लाल बत्ती; लगाम; देखाउँस; माँ; विजातीय; स्वरूप आ संभावना; विकल्प; रीलीफ; जिनगी; सेवक; टवेन्टी-टवेन्टी; नेओं; बहुराष्ट्रीय कम्पनी; विश्वासघात; अन्तर-आत्मा; कमरुनिसा; ग्लोबल वार्मिंग; सरकारी दलाल; जिया जरए सगर राति; भावना; तंत्रमेल; बेरपर; दियाद; गाँती; बिढ़नी; अगुआ; साढ़े एकैसम सदी; दुन्नू जना एकै धना; रासि; सड़क-छाप; निवेश; नपना; उत्थर; देश-भक्ति; भूख; डेग; देह, मोन आ प्रेम।

एतेक शीर्षक एकठाम देखलासँ स्पष्ट होइत अछि जे विहनि कथा केवल एक प्रकारक ‘ट्विस्ट’क खेल नहि। ‘डोपिंग टेस्ट’, ‘प्रिमियम’, ‘बहुराष्ट्रीय कम्पनी’, ‘ग्लोबल वार्मिंग’ आधुनिक संस्थागत शब्दावली अनैत अछि; ‘दियाद’, ‘गाँती’, ‘बिढ़नी’, ‘कुल्हइया’, ‘सेजौट’ ग्राम्य शब्द-संसार; ‘आरक्षित’, ‘मुखियैती’, ‘सरकारी दलाल’, ‘देश-भक्ति’ राजनीतिक-प्रशासनिक आलोचना; ‘माँ’, ‘देह, मोन आ प्रेम’, ‘आत्मानुभूति’ निजी भावभूमि। संक्षिप्तता एहि विविध संसारकेँ एकरूप नहि करैत, बल्कि तीक्ष्ण बिन्दु बनबैत अछि।

भाग दू : पद्य-खण्डक सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा

पद्य-खण्ड आकारमे गद्यसँ बहुत पैघ अछि आ एतए ‘पद्य’क सीमा सेहो जानबूझि कऽ लचीला अछि। अनुक्रम स्वयं कहैत अछि जे सन्दीप कुमार साफी आ विन्देश्वर ठाकुरक रचनावली गद्य-पद्य मिश्रित अछि, मुदा पद्य-खण्डमे राखल गेल; लल्लन ठाकुरक मिश्रित रचना गद्य-खण्डमे। अतः संपादकीय विन्यास विधागत शुद्धतासँ अधिक रचनाकारक समग्र संचयनपर केन्द्रित अछि।

४. प्रारम्भिक पद्य-समूह : लोक, ग्राम, समाज, आध्यात्म, प्रतिरोध

• **गजेन्द्र ठाकुर** — “बड़द करैए दाउन ने यौ”, “बाल गजल”, “बेसी छुट्टी कम इसकूल”, “शामिल बाजाक दुन्दभी वादक”, “मोनक रंगक अदृश्य देबाल”, “मन्दाकिनी जे आकाश मध्य”, “पक्काक जाठि”, “निन्नक जीवन विचित्र”, “गंगा ब्रिज”, “हर आ बड़द”, “बिसरलहुँ फेर कर्णक मृत्युक छोट-छीन रूप”, “बड़का सड़क छह लेन बला”, “मिथिलाक ध्वज गीत”, “ट्रेनक गाड़ी”, “राजा श्री अनुरन्वज सिंह”, “दीयाबाती”, “क्रिकेट-फील्डिंग”, “त्वञ्चाहञ्च”, “असञ्जाति मन”—एहि सूचीमे कृषि-जीवन, बाल-दृष्टि, आधुनिक यातायात, महाभारतीय स्मृति, क्षेत्रीय अस्मिता, खेल आ दार्शनिक/प्रयोगधर्मी भाषा एकसाथ अछि। रूपक अनेक अछि, मुदा ‘स्थानीय अनुभवकेँ आधुनिक काव्य-विषय बनब’ साझा सूत्र अछि।

• **कोसी लोकगीत १–३** — लेखकीय नामक बिना लोकपरम्परा रूपेँ संगृहीत ई गीत कोसी क्षेत्रक सामूहिक स्मृति अछि। लिखित संकलन प्रदर्शनशील लोक-काव्यकेँ अभिलेखित करैत अछि; तुलनात्मक लोकसाहित्यक दृष्टिसँ ई मौखिक आ लिखित साहित्यक सेतु अछि।

• **बैकुण्ठ झा** — “चलू देखैब अपन गाम अय”, “सिनेमा”, “दहेज”, “परदेश”, “सड़क”, “दुनियाँ”—गामक आत्मीयता आ आधुनिक सामाजिक समस्या/गतिशीलता छोट-छोट विषय-कविता रूपेँ।

• **प्रकाश झा** — “हाल बचपनसँ पचपन तक” समय, आयु आ आत्म-स्मृतिक संक्षिप्त जीवनरेखा; बादक “बाल-बुदरुकक लेल कविता” बाल-पाठक दिस भाषिक सरलता बढ़बैत अछि।

• **रामलोचन ठाकुर** — “हर्जे की”, “व्यवस्थाक नाम/चेतौनी”, “अनुजक नाम/काज अहींक थिक”—व्यक्तिगत संबोधन आ सामाजिक व्यवस्था बीच चेतावनीक स्वर।

• **महेश मिश्र “विभूति”** — “बाबा-स्तुति” आ “गङ्गा-स्तुति” भक्तिक स्तोत्र-परम्पराकेँ मैथिली पद्यमे निरन्तरता दैत अछि।

• **श्यामल सुमन** — “अभियान” आ “आत्म-दर्शन” बाहरी सामाजिक गति आ भीतरी आत्मचिन्तनक दू ध्रुव बनबैत अछि।

• **नवीननाथ झा “नवनीत”** — “नारीये सतयुग आनत यौ”, “युगनिर्माणी संकल्प”, “जीव की छी? अहम् प्रश्न”, “गायत्री महामंत्र”, “प्रेम आनन्दक अभिव्यक्ति छी”—सामाजिक आदर्श, दार्शनिक प्रश्न, मंत्र-स्मृति आ प्रेमक आध्यात्मिक भाव एकहि कवि-परिसरमे।

• **विद्यानन्द झा पञ्जीकार “मोहनजी”** — “कोशीक ताण्डव”, “श्रृष्टि चक्र”, “दहेज दानव”—प्राकृतिक आपदा, सृष्टि-दृष्टि आ सामाजिक कुरीति; ‘ताण्डव’/‘दानव’ रूपक काव्यक प्रतिरोधी ऊर्जा बढ़बैत अछि।

• **धीरेन्द्र प्रेमर्षि** — “चहकऽ लागल चिड़िया-चुनमुन”, “एमकीक जतरा” आ “आजाद गजल १–११”—लोक-लय, समकालीन हास्य/व्यंग्य आ गजल प्रयोगक मिश्रण।

• **बृषेश चन्द्र लाल** — “नजरि अहाँक चितकेर जूड़ा दैत अछि” प्रेम/दृष्टिक गीतात्मक संक्षेप; गद्यक राजनीतिक-त्रासदीपूर्ण स्वरक बरक्स कविक कोमल गीत-पक्ष।

• **हिमांशु चौधरी** — “विष-वृक्ष” शीर्षक स्वयं सामाजिक/नैतिक विषाक्तताक विस्तृत रूपकक सम्भावना खोलैत अछि; कविता विनाशक वृद्धि के बिम्बमे चेतावनी रचैत अछि।

• **रामभरोस कापड़ि** — “अन्हारक विरुद्ध” आ “आजाद गजल” प्रतिरोधक स्पष्ट नैतिक मुद्रा आ मुक्त गजल-विधानकेँ जोड़ैत अछि।

• **जितमोहन झा** — “दिलक कलमसँ शेरो शायरी” आ “जखन जनता जागि जाइत अछि!” निजी भावसँ जन-जागरण धरि शेर/कविताक सामाजिक विस्तार।

• **कृष्णमोहन झा** — “एक दिन” क्षणिक समय-बोधकेँ एक शीर्षकीय केन्द्र दैत अछि।

• **अमरेन्द्र यादव** — “टमटमियाँ घोडा” लोक-यातायात/ग्राम्य दृश्यकेँ काव्य-विषय बनबैत अछि।

• **निमिष झा** — “जीवन एकटा दुरुह कविता”, “चिर्रीचिर्री भेल मोन”, “वेदनाक तरङ्ग”, “असमर्पित उन्माद”, “किछु हाइकु”—मनोवैज्ञानिक विखण्डन, वेदना आ असमर्पणक भाव छोट बिम्ब-रूप धरि फैलैत अछि।

• **भालचन्द्र झा** — “अपन अस्तीत्वक असली मोल” आ “हमर माय” आत्म-मूल्य आ मातृ-स्नेहक समानान्तर मानवीय केन्द्र।

• **अंकुर काशीनाथ झा** — “पश्चाताप” आत्म-समीक्षा आ नैतिक पुनर्विचारक एकाग्र कविता।

• **सुबोध ठाकुर** — “मनक तरंग”, “केना होएत मिथिलाक जीर्णोद्धार”, “शब्दक वाण चलेबए—नहि सहबए आब अत्याचार”, “पिया हमर परदेशिया”, “हम गाममे रहबइ”—मन, क्षेत्रीय पुनर्निर्माण, प्रतिरोध आ प्रवास-विरुद्ध ग्राम-निष्ठाकेँ एक साथ जोड़ैत अछि।

• **रूपेश कुमार झा “त्योंथ”** — “आयल फेरो समय लगनक”, “जंगल दिस!”, “मैथिल के?”—विवाह-समय, प्रकृति आ पहचानक प्रश्न; अन्तिम शीर्षक आत्मपरिभाषाक सामाजिक उलझन खोलैत अछि।

• **मनीष झा “बौआभाई”** — “माय” मातृ-केन्द्रित भावक कविता, खण्डक अनेक सामाजिक कविताक बीच निजी आत्मीयताक विश्राम-बिन्दु।

• **सतीश चन्द्र झा** — “मध्य वर्गक सपना”, “भ्रमित शब्द”, “नाव आ जीवन”, “मौनक शब्द”, “चुनाव”, “शब्द”, “हमर स्वतंत्रता”, “ई जीवन”, “अप्पन भाषा”—मध्यवर्ग, राजनीति, भाषा, मौन आ स्वतंत्रताक प्रश्न; ‘शब्द’ बारम्बार आत्म-चिन्तनक केन्द्र बनैत अछि।

• **विवेकानंद झा** — “सिंगरहार” शीर्षक मैथिली सांस्कृतिक/लोक-अलंकरणक बिम्बकेँ काव्यिक केन्द्र बनबैत अछि।

५. गजल-रुबाइ आ मिश्रित संग्रह : नव-अंशु सँ अनचिन्हार आखर धरि

गजल सम्बन्धी बाहरी मानकमे प्रत्येक शेर अर्थ-संरचनाक दृष्टिसँ स्वतंत्र, काफिया-रदीफक पुनरावृत्ति, समान छन्द/बहर आ अन्तिम शेरमे तखल्लुसक परम्परा उल्लेखित अछि। ‘विदेह सदेह ३३’क अनेक कवि अपने ‘अपन गप’मे काफिया, रदीफ, बहर, वर्ण-गणना आ गजल-शास्त्रपर खुलि कऽ चर्चा करैत छथि। एहि कारण एहि खण्डक गजल-आन्दोलन केवल रचनाक संग्रह नहि, अपन शास्त्रीय मानक बनएबाक आत्मचेतस प्रक्रिया सेहो अछि।

• **अमित मिश्र — "नव-अंशु"** — अपन गप, गजल १–९०, हजल १–६, रुबाइ १–१६। कविक आमुख गजलकेँ प्रेम-विरहसँ आगाँ सामाजिक अनुभव धरि विस्तारित रूपेँ देखैत अछि। गजल-संख्या संग्रहक प्रधानता स्पष्ट करैत अछि, हजल हास्य-व्यंग्यक अलग लय अनैत अछि, रुबाइ संक्षिप्त विचारात्मक रूप। अनुक्रमक पृष्ठ-संकेत "८७३–७७६" मुद्रित विसंगति सहित दर्ज अछि।

• **चंदन कुमार झा — "मोनक बात"** — अपन गप, गजल १–६६, हजल १–२, बाल गजल १–१५, रुबाइ १–३३, कता १। लेखक अपने कहैत छथि जे आसपासक समाज-वातावरणक भाव कखनो कविता, कथा, गजल, रुबाइ बनि जाइत अछि; अर्थात विधा पहिने सँ थोपल नहि, अनुभूति रूप चुनैत अछि। बाल गजलकेँ अलग श्रृंखला देब संग्रहक उल्लेखनीय विस्तार अछि।

• **विनीत उत्पल — "हम पुछैत छी"** — अपन गप आ ५० कविता। आमुख स्पष्ट रूपेँ गाम-घर, मिथिला-अंग प्रदेशक सामाजिक जर्जरता, जाति-पाति, रूढ़ि, जीवनक आरोह-अवरोह आ प्रश्नधर्मी काव्यक बात करैत अछि। शीर्षक "हम पुछैत छी" समूचा संग्रहक आलोचनात्मक क्रिया—प्रश्न करब—बनैत अछि।

• **ओम प्रकाश झा — "कियो बूझि नै सकल हमरा"** — अपन गप, गजल १–८७, रुबाइ १–८, कता १–२। कवि गजलकेँ "करेजक संवेदना" आ व्याकरणक दू पहिया कहैत छथि, काफिया-रदीफ-बहर, सरल वार्णिक बहर आ अरबी बहरक स्पष्ट चर्चा करैत छथि। ई आत्म-शास्त्रीय वक्तव्य संग्रहक औपचारिक अनुशासन बुझबाक प्राथमिक साक्ष्य अछि।

• **उमेश मंडल — "निश्तुकी"** — अपन गप; कुमही, धर्मात्मा, शुभारम्भ, मुँहथरि, पचमेड़, खपड़ा, गामक इयार, पएर पादुका, छठि, भोगी, श्रोता, कल्याणी, देश, आश्चर्य, भाषा भेद, नोर, धारक कात, मारल बुइध, खुशी, बाट-बटोही, हे यौ अहाँ, अपन गाम, किछु नै फुराइए, के मैथिल?, बाधा, कविता, खास, फंदा, डेग, बुझैक बाट, कनीटा फूसि, पोखरि उड़ाह, घाम, ठूठ बाँस, लतड़ैत लत्ती, बौआएल बटोही, फकुआक रोटी, पंच परमेश्वर, गाए, तुलसी, काँच फल; लघु कविता—हँसैत लहास, प्रकाश, अगिलह, एकक मीत, दर्दक डरे, सुधार, विचारक फाँट, पड़ाइन, तत्व ज्ञान, धोधरि, मंगल, बुढ़ारीमे; हाइकू/टनका; दूटा गजल। कविक आमुख वैश्वीकरण, पाइ-केंद्रित जीवन, बदलैत शैली आ "विदेह"क सम्पादन-अनुभवकेँ लेखन-प्रेरणा कहैत अछि।

• **उमेश पासवान — "वर्णित रस"** — आमुखसँ "योद्धा" धरि ८०क करीब शीर्षकीय कविता ग्राम्य जीवन, बाढ़ि, दहेज, राजनीति, गरीबी, श्रम, मौसम, मिथिला, परिवार, युवा, जाति आ संघर्षक विस्तृत लोक-सामाजिक पटल बनबैत अछि। नीचे सम्पूर्ण शीर्षक अलग सूचीमे देल अछि, जाहिसँ कोनो रचना छूटए नहि।

• **शिव कुमार झा "टिल्लू" — "क्षणप्रभा"** — अपन गप, किछु पद्य, दूटा गजल, तीनटा हाइकू। लेखक "क्षणप्रभा"क अर्थ बिजरी/तड़ित कहि अपन कविता केँ क्षणिक भावना केर अभिव्यक्ति मानैत छथि; नाम आ काव्य-दृष्टि बीच सीधा सम्बन्ध अछि।

• **सन्दीप कुमार साफी "प्रसिद्ध किरण" — "बैशाखमे दलानपर"** — गद्य-पद्य मिश्रित संग्रह: आत्मकथा खण्ड, कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड। आत्मकथा "जीवन एगो संघर्ष" सँ आरम्भ भऽ जाति, अभाव, शिक्षा, श्रम आ आत्मसम्मानक अनुभव लिखैत अछि। ग्रन्थ/विदेह-स्रोत एकरा "मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा" कहैत अछि; स्वतंत्र अकादमिक पुष्टि नहि भेटल, तेँ समीक्षा ई विशेषणकेँ स्रोत-दावा रूपेँ स्वीकार करैत अछि। दलित आत्मकथापर उपलब्ध शोध एहि विधाकेँ अपमानित पहचानक पुनर्लेखन आ आत्म-अभिकथनक महत्त्वपूर्ण माध्यम मानैत अछि—एहि दृष्टिसँ साफीक आत्मकथा मैथिली सामाजिक इतिहास लेल बहुमूल्य प्राथमिक आवाज अछि।

• **मुन्नाजी — "माँझ आंगनमे कतिआएल छी"** — अपन गप, गजल १–५०, रुबाइ १–११। लेखक अपन गजल-यात्राक इतिहास, मतला-काफिया-रदीफक सीख, संशोधन आ मित्र-संपादकीय सहयोगक चर्चा करैत छथि; चारि-शेर बला किछु गजलकेँ अपने त्रुटि कहि आत्म-आलोचना सेहो करैत छथि।

• **विन्देश्वर ठाकुर — "नेपालक नोर मरूभूमिमे"** — अपन गप, गजल, शेरो-शाइरी, लघुकथा, विहनि कथा, कविता। कतारक मरुभूमिमे प्रवासी जीवन, परिवार/देशसँ दूरी आ श्रमजीवी सभकेँ समर्पण लेखकक आमुखमे स्पष्ट अछि; अतः संग्रहक गद्य-पद्य बहुलता प्रवासी अनुभवक अनेक रूप खोजैत अछि।

• **आशीष अनचिन्हार — "मुन्नाजीक गजल"** — मुन्नाजीक संग्रहक विस्तृत आलोचनात्मक भूमिका मैथिली गजलमे बहर, भट्ठा, आलोचना आ पीढ़ीगत विवादक इतिहास लिखैत अछि। स्वर पक्षधर आ विवादात्मक अछि, मुदा एहि कारणेँ गजल सार्वजनिकताक आन्तरिक बहस प्रत्यक्ष रूपेँ सुरक्षित रहैत अछि।

• **आशीष अनचिन्हार — "अनचिन्हार आखर"** — गजलक संक्षिप्त परिचय, ७८ गजल, ३२ रुबाइ आ २ कता। सिद्धान्तक छोट प्रस्तावना बाद विशाल सृजनात्मक संचय—एहि संरचनामे "शास्त्र" आ "प्रयोग" एक-दोसराकेँ जाँचैत अछि।

उमेश पासवानक "वर्णित रस" : सम्पूर्ण शीर्षक-आवरण

आमुख; कागज; समाज; रावण-कंश; भरल घैल; कलजुग; उमर-अवस्था-मन; पियासल; हत्या; फाटल भविष्य; गेलहे घर छी; पलटन लाल; बाढ़ि; डेग डेगपर खतरा; कपुत; आशा; गामक चौअनियाँ; नेताजी नमस्कार; सतहिया; अज्ञानी; दलिदर; पोसिया; मैना; माछक तीमन; कवाड़ी; बरखाक मौसम; मिथिलाक नारी; रगड़ा; नेता; मनक बिसवास; केहेन विधना; अपनेकेँ की कही; फुसि-फट्टका; हकिकत; पावन भूमि; एना नै कर; भुतहा मोड़; हमरो लेने चलू; अथाह; गारल मुर्दा; हाल-चाल; पथ ई केहेन; गृहस्थ सबहक हाल; मिथिला महान; हेराएल; दुभर; विडम्बना; दियादी बॉट; पुर्णिमा; रिश्ता; अज्ञानी; कनी देखू; मास्टरक बहाली;

फागुनमे; श्यामल मोहे; जीतक झंडा; युवा; हम युवा; पथिक; हमहूँ कनै छी; एना किएक; जितिया; डगर; रमल छी; संत; बन्हन; संघर्ष जारी रखब; भरदुतिया; गवहा संक्राति; किमती भोट; असली-नकली; कोसी; मच्छर रानी; हरिजन; हम छी मैथिली; बौकी; चौके-चौक; ठेंस; पेटक खातिर; जगदीश बाबू; उजरल घर; जीवनक नैया; डर; नटीन; बताह; ज्ञानक नव ज्योति; केहेन चालि; बसन्त; योद्धा।

एहि शीर्षक-समष्टिमे रूपक-विस्तारक बदला दैनिक जीवनक ठोस शब्द प्रधान अछि। 'कागज', 'भरल घैल', 'माछक तीमन', 'कवाड़ी', 'मच्छर रानी', 'मास्टरक बहाली', 'किमती भोट' जेकाँ विषय कविता आ जनजीवनक दूरी घटबैत अछि। 'हरिजन' जेकाँ ऐतिहासिक/विवादित सामाजिक शब्द रचनाक समय-सन्दर्भक हिस्सा रूपेँ पढ़ल जाए; समकालीन सम्मानजनक सामाजिक शब्दावलीसँ ओकर समानता स्वतः मानल नहि जाए।

भाग तीन : समेकित आलोचनात्मक निष्कर्ष

६. भाषा : मानक, बोली, लोकशब्द आ सीमापार मैथिली

संकलनक भाषा एकर सबसँ महत्वपूर्ण सौन्दर्यात्मक तथ्य अछि। एतए एकहि 'शुद्ध' एकरूप भाषा नहि, बल्कि मैथिली भीतरक क्षेत्रीय उच्चारण, ग्राम्य शब्द, नेपाल-मधेश, सीमांचल, प्रवासी शहर, प्रशासनिक आधुनिकता आ तकनीकी शब्दावली एक-दोसरासँ भेटैत अछि। 'कृषि-मत्स्य शब्दावली' ई बहुलताकेँ प्रत्यक्ष शब्द-संग्रह बनबैत अछि; 'बहादुरगंज स' रिपोर्ट' आ 'मैथिली–सुरजापुरी–राजबंशी' भाषिक सीमा प्रश्न उठबैत अछि; विहनि कथा आ कविता सभ बोलचालक शब्दकेँ साहित्यिक गरिमा दैत अछि।

एहि बहुभाषिक संसर्गकेँ दोष मानब संग्रहक प्रकृतिकेँ नबुझब हएत। मुदा सम्पादकीय स्तरपर वर्तनी, विरामचिह्न, देवनागरी संयोजन आ किछु मुद्रण-दोषक असमानता अछि। साहित्यिक इतिहास लेल मूल वर्तनी बचेनाइ उपयोगी हो सकैत अछि, पर भविष्यक आलोचनात्मक संस्करणमे मूल-पाठ आ मानकीकृत-पाठक दू तह बनाओल जाए तँ शोधक सुविधा बढ़त।

७. लोक-स्मृति, जाति आ उपेक्षित समुदाय

छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, राजा सलहेस, गांगोदेवीक भगता, रघुनी मरर, बहुरा गोढ़िन, कोसी लोकगीत—ई सभ रचना साहित्यक नायक-मानचित्रकेँ कुलीन दरबारसँ बाहर अनैत अछि। लोकदेवता, डोम, धोबी, चमार, दुसाध, मल्लाह, ग्रामीण कलाकार, भगता आ प्रवासी श्रमिकक उपस्थिति 'लोक'केँ सजावटी पृष्ठभूमि नहि रहने दैत। विशेषतः गजेन्द्र ठाकुरक लोककथा-समूह मौखिक स्मृतिसँ लिखित अभिलेखक यात्रा अछि; Cambridgeक तुलनात्मक लोकसाहित्य-अध्ययनक आलोकमे एतए मौखिक आ लिखित रूप परस्पर प्रतिस्पर्धी नहि, एक-दोसराक विस्तार छथि।

सन्दीप साफीक आत्मकथा एहि लोक-समुदाय उपस्थिति सँ एक डेग आगाँ जाइत अछि: एतए बाहरी संग्रहकर्ता नहि, आत्म-अनुभव स्वयं बोलैत अछि। दलित आत्मकथा सम्बन्धी शोध बतबैत अछि जे आत्मलेखन अपमानित सामाजिक पहिचानकेँ पुनर्लेखित करैत अछि आ आत्म-assertionक सार्वजनिक भाषा बनबैत अछि। 'बैशाखमे दलानपर'क आत्मकथा-खण्डक महत्व एहि आवाजक प्रत्यक्षता मे अछि।

८. स्त्री-दृष्टि आ लैंगिक प्रश्न

'अपाला आत्रेयी' नारी-स्वायत्तता, शिक्षा, रोग-देह आ दाम्पत्यक प्रश्न उठबैत अछि; 'स्त्री-बेटी' भोजन-पढ़ाइतक भेदभाव; 'आऊ कनेक प्रेम करी...' घरेलू श्रमक अदृश्य असमानता; 'आ ओ मारलि गेलि!' हिंसाक सामने स्त्रीक जीवित रहबाक अभिनय; 'महुआ घटवारिन' लोक-स्मृतिमे स्त्रीक करुण गरिमा; 'नारीये सतयुग आनत यौ' स्त्रीकेँ युग-परिवर्तनक शक्ति रूपेँ देखैत अछि। एहि रचना सभमे स्त्री एकरूप नहि: देवी, पत्नी, श्रमिक, बेटी, पत्रकार, प्रेमिका, हिंसाग्रस्त नागरिक—अनेक सामाजिक स्थितिमे अछि।

संगहि संग्रहमे एहन भाषिक/सामाजिक पूर्वाग्रह सेहो भेटैत अछि जे आजुक समावेशी आलोचना प्रश्न करत—जेना 'बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा'क व्यंग्यात्मक भाषामे लिंग-पहिचान सम्बन्धी रूढ़ि। आलोचनाक काज ओकरा मिटेनाइ नहि, बल्कि ऐतिहासिक पाठक रूपमे चिन्हित कऽ देखब जे हास्य ककर मूल्यपर बनैत अछि।

९. प्रवास, सीमा आ आधुनिकता

प्रवास एहि संकलनक पुनरावृत्त मूल-संवेदना अछि। 'नैका बनिजारा'क व्यापारिक मोरंग-यात्रासँ 'पिआ देसाँतर'क आधुनिक प्रवासी मिथिला, 'हुगली पर बहैत गंगा'क कलकत्ता, 'सर-समाज'क दिल्ली, 'एत' आ ओत''क कनॉट प्लेस, 'नेपालक नोर मरूभूमिमे'क कतार—स्थान बदलैत अछि, मुदा अपन घर, भाषा, श्रम आ आत्मीयताक दूरी बारम्बार लौटैत अछि। आधुनिकता एतए केवल महानगरीय आकर्षण नहि; बेरोजगारी, परदेश, बाजार, मीडिया, उपभोग, बहुराष्ट्रीय कम्पनी, नागरिकता आ असुरक्षा सेहो अछि।

१०. काव्य-विधान : हाइकूसँ गजल धरि

हाइकू-प्रयोगमे ग्रन्थ १७ अक्षर आ ५–७–५क मैथिली गणना प्रस्तावित करैत अछि। Poetry Foundation जापानी मूलक इकाइकेँ 'मोरा' कहैत अछि आ आन भाषामे ५–७–५केँ अनुकूलित रूप मानैत अछि। अतः गजेन्द्र ठाकुरक विधानक विशिष्टता ई अछि जे ओ मैथिली वर्ण-व्यवस्थाक आधारपर रूपकेँ स्थानीय शास्त्रीयता देबाक प्रयास करैत छथि। ई दावा सार्वभौम जापानी नियमक शाब्दिक समानता नहि, बल्कि अनुवर्तन/अनुकूलन अछि।

गजल-खंडमे ओम प्रकाश झा, मुन्नाजी, अमित मिश्र, चंदन कुमार झा, आशीष अनचिन्हार आदि रचना करब मात्र नहि, गजलक व्याकरण पर बहस सेहो करैत छथि। बाहरी गजल-परिभाषा रदीफ, काफिया, समान बहर आ स्वतंत्र शेरकेँ महत्त्व दैत अछि; स्रोतक 'अपन गप' सभ एहि औपचारिक चेतनासँ स्पष्ट संवाद करैत अछि। एहि दृष्टिसँ 'विदेह सदेह ३३' मैथिली गजलकेँ रचना-संग्रहक संग शास्त्रीय सार्वजनिक बहसक रूपमे सेहो संरक्षित करैत अछि।

१२. सम्पादकीय उपलब्धि आ आलोचनात्मक सीमाएँ

उपलब्धि पहिल—अभिलेखन। अंक १–३५०क सामग्रीक विशाल हिस्सा एकठाम उपलब्ध अछि। दोसर—विधागत लोकतन्त्र: रिपोर्ट, साक्षात्कार, शब्दावली, आत्मकथा आ लोकगीतकेँ कथा-कविताक बगलमे जगह। तेसर—सीमापारता: भारत-नेपाल आ परदेशक लेखक/अनुभव। चारिम—नब विधाक प्रयोग: हाइकू-हैबून, विहनि कथा, गजल-शास्त्रीय बहस। पाँचम—सामाजिक परिधिक विस्तार: जाति, दलित जीवन, श्रम, बाढ़ि, प्रवास, स्त्री, मीडिया, शिक्षा।

सीमा पहिल—पाठ-सम्पादनक असमानता: अनेक ठाम मुद्रण/वर्तनी/पृष्ठ-संकेत असंगति। दोसर—आलोचनात्मक लेखमे कखनो अति-निर्णायक/आन्दोलनधर्मी स्वर, जकरा स्वतंत्र प्रमाणसँ अलग पढ़बाक चाही। तेसर—लोककथा सभक स्रोत-संग्रह, कथावाचक, क्षेत्र, संकलन-तिथि जँ व्यवस्थित मेटाडाटा रूपमे रहित तँ लोकसाहित्य शोध आर मजबूत होइत। चारिम—विशाल आकारक कारण अनुक्रममे उप-शीर्षकक पूर्ण सूची सभ जगह नहि; जेना लल्लन ठाकुरक तीन गीत-नाटिका मूल पाठमे अछि मुदा मुख्य अनुक्रममे 'किछु रचना' मात्र। पाँचम—भविष्यक आलोचनात्मक संस्करणमे मूल-पाठ, संशोधित-पाठ, लेखक-विवरण आ प्रथम ई-प्रकाशन अंकक अनुक्रम जोड़ल जाए तँ शोधमूल्य बढ़त।

१३. निष्कर्ष

'विदेह सदेह ३३'केँ एकर असमानता सहित पढ़बाक चाही, कारण असमानताइ ओकर ऐतिहासिक सत्यक हिस्सा अछि। ई एकल सौन्दर्य-बोधक चुस्त 'संकलन' मात्र नहि, बल्कि मैथिली सार्वजनिकताक जीवित अभिलेख अछि—जतए लोकदेवता आ विज्ञान-कल्पना, वैदिक नाटक आ दलित आत्मकथा, गजल-शास्त्र आ बाल कविता, बाढ़ि-रिपोर्ट आ भाषिक फील्डवर्क एकहि भाषिक घरमे भेटैत अछि। एहि विशाल सह-अस्तित्वमे आधुनिक मैथिलीक साहित्यिक क्षमता देखाइत अछि: ओ केवल परम्पराक भाषा नहि, बल्कि प्रयोग, विवाद, प्रवास, असहमति आ नब आत्मपहिचानक भाषा सेहो अछि।

सम्पूर्ण पाठक आधारपर कहि सकैत छी जे संकलनक मुख्य साहित्यिक योगदान तीन बिन्दुमे संकुचित होइत अछि—(१) लोक-स्मृति आ उपेक्षित आवाजकेँ लिखित/जाल-अभिलेख देब; (२) हाइकू, हैबून, विहनि कथा आ गजलक माध्यमेँ विधागत प्रयोगक सार्वजनिक मंच बनब; (३) मिथिला-अनुभवकेँ गामक सीमासँ निकालि दिल्ली, कलकत्ता, नेपाल, कतार, मीडिया, प्रशासन, वैश्वीकरण आ डिजिटल सार्वजनिकता धरि विस्तारित करब। एकर सर्वोत्तम रचना सभ संकेतक सूक्ष्मता, बोलचालक जीवित भाषा आ ठोस सामाजिक अनुभवक कारण स्थायी प्रभाव छोड़ैत अछि; कमजोर रचना सभ सेहो समयक वैचारिक तापमानक दस्तावेज रूपेँ महत्त्व रखैत अछि।

सन्दर्भ-सूची

• प्राथमिक स्रोत: विदेह सदेह ३३, रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-२, विदेह पेटार अंक १–३५० सँ; संस्करण २०२२; सम्पादक गजेन्द्र ठाकुर; ISSN 2229-547X।

• मिश्र, जयकान्त. History of Maithili Literature. Sahitya Akademi, प्रथम संस्करण १९७६। साहित्य अकादेमी अंग्रेजी प्रकाशन-सूची।

• झा, देवकान्त. A History of Modern Maithili Literature (Post-Independence Period). Sahitya Akademi, पुनर्मुद्रण २००७, ISBN 81-260-1892-5।

• Poetry Foundation. "Haiku (or hokku)." Glossary of Poetic Terms. जापानी मूलमे १७ mora तथा आन भाषामे ५–७–५ अनुकूलन सम्बन्धी विवरण। https://www.poetryfoundation.org/education/glossary/haiku-or-hokku (अभिगमन २७ अगस्त २०२६)।

• Poetry Foundation. "Ghazal." Glossary of Poetic Terms. काफिया, रदीफ, समान meter, स्वतंत्र couplet आ तखल्लुस सम्बन्धी विवरण। https://www.poetryfoundation.org/education/glossary/ghazal (अभिगमन २७ अगस्त २०२६)।

• Vani, Bhandaram. “Anandavardhana: Dhvani Theory.” INFLIBNET, Indian Literary Criticism and Theory. https://ebooks.inflibnet.ac.in/engp11/chapter/anandavardhana-dhvani-theory/ (अभिगमन २७ अगस्त २०२६)।

• Anil, K. M. “Intertextual Lores and the Play of Language: Folklore/Orality in the Comparative Context of Literature.” Quest of a Discipline, Cambridge University Press/Foundation Books, 2012, पृ. 94–109, DOI 10.1017/CBO9788175969346.009।

• Beth, Sarah. “Hindi Dalit Autobiography: an Exploration of Identity.” Modern Asian Studies, 41(3), May 2007, पृ. 545–574, DOI 10.1017/S0026749X0600240X।

• विदेह जाल-स्रोत: “पेटार/पोथी” सूचीमे “बैशाखमे दलानपर”कैँ “पहिल मैथिली दलित आत्मकथा सहित” कहल गेल अछि। https://www.videha.co.in/pothi.htm (अभिगमन २७ अगस्त २०२६)। ई स्वतंत्र अकादमिक पुष्टि नहि, विदेहक अपन अभिलेखीय दावा अछि।

परिशिष्ट : सम्पूर्ण रचना-आवरण जाँचसूची

नीचाँक सूची मूल प्रारम्भिक DOCX/अनुक्रमसँ लेल गेल अछि। एकर उद्देश्य ई सुनिश्चित करब अछि जे समीक्षा-निर्माणमे कोनो लेखक वा अनुक्रमित रचना छूटल नहि अछि। लल्लन ठाकुरक ‘किछु रचना’क भीतर मूल पाठमे भेटल “साढ़ूनामा”, “सभागाछी सौराठ” आ “घटकैती” मुख्य समीक्षामे अलग चिन्हित कएल गेल अछि।

गद्य-खण्ड (पृ. १-४६५)

• गजेन्द्र ठाकुर- मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका/ शेनर्यू/ टनका, हैबून, अपाला आत्रेयी, दानवीर दधीची, बालकथा- ब्राह्मण आ ठाकुरक कथा,राजा अनसारी, राजा ढोलन, बगियाक गाछ, ज्योति पँजियार, राजा सलहेस, बहुरा गोढ़िन नटुआदयाल, महुआ घटवारिन, डाकू रौहिणेय, मूर्खाधिराज, कौवा आ फुद्दी, नैका बनिजारा, डोकी डोका, रघुनी मरर, जट-जटिन, बत्तू, भाट-भाटिन, गांगोदेवीक भगता, बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे, छेछन, गरीबन बाबा, लालमैन बाबा, गोनू झा आ दस ठोप बाबा, संकर्षण (नाटक), सर-समाज, काल-स्थान विस्थापन, सर्वशिक्षा अभियान, जातिवादी मराठी, थेथर मनुक्ख, बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा , स्त्री-बेटी, बिआह आ गोरलगाइ, प्रतिभा, जाति-पाति, अनुकम्पाक नोकरी, नूतन मीडिआ, मिथिलाक उद्योग, मिथिलाक उद्योग-२, बाढ़ि, भूख आ प्रवास, नव-सामन्त, बाणवीर, तस्कर, सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली, सहस्रबाढ़नि (उपन्यास), मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन केर संदर्भमे, कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित), विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर, रमेश नारायणक “पाथरक नाव”-विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”, दूर्वाक्षत, मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी, बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक , नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि (पृ. २-२१३)

• विभा रानी- आऊ कनेक प्रेम करी माने बुझौअल जिनगीक (पृ. २१४-२२२)

• रामभरोस कापड़ि “भ्रमर”- बीहनि कथा- गंगाप्रसादक स्वायतता, हुगली पर बहैत गंगा (पृ. २२३-२२६)

• जितेन्द्र झा- अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली परिषद, कोना बचाएब संस्कृतिक विरासत?, संस्कृति बचएबाक अभियान (पृ. २२७-२३०)

• उमेश कुमार महतो- बहादुरगंज स’ रिपोर्ट (पृ. २३१-२३१)

• अनलकान्त- कबइ-इच्छा, एत’ आ ओत’, असोथकित (पृ. २३२-२५२)

• मनोज झा मुक्ति- अवैद्य नागरिकताः सिक्कमीकरणक प्रयास, मनोज झा मुक्ति संग अन्तर्वाता ...आभाष लाभ, तराई/मधेशक आन्दोलनः लूटमे लटुवा नफ्फा (पृ. २५३-२५७)

• कुमार शुशान्त- छोटकी काकी (प्. २५८-२५९)

• श्यामसुन्दर शशि- आह उमा ! वाह उमा ! , विचार- मिथिलाक तवाही,सरकारी षडयन्त्र त ने अछि ??, दुलहा बनल श्रीराम हे ऽऽऽ (सन्दर्भ: राम—जानकी विवाह महोत्सव) (पृ. २६०-२६४)

• अंकुर काशीनाथ झा- नेताजी पर तामश कियैक उठैत अछि (प्. २६५-२६६)

• लल्लन ठाकुरक किछु रचना (पृ.२६७-२७४)

• साकेतानन्द- कालरात्रिश्च दारुणा (पृ. २७५-२७८)

• बृषेश चन्द्र लाल- आ ओ मारलि गेलि !, एकदन्त हाथी आ नौलखा हार(पृ. २७९-२८६)

• राजमोहन झा (प्रबोध सम्मान २००९) सँ विनीत उत्पलक साक्षात्कार- (पृ. २८७-२९३)

• रामाश्रय झा "रामरंग" प्रसिद्ध अभिनव भातखण्डे जी सँ साक्षात्कार डॊ. गगेश गुंजन द्वारा (पृ. २९४-२९८)

• शिव कुमार झा 'टिल्लू' - हरिमोहन झा- द्विरागमन (पृ.२९९-३०१)

• मुन्नाजी- साक्षात्कार- हम पुछैत छी (१.रवीन्द्र कुमार दास २.योगेन्द्र प्रसाद यादव ३.गोविन्द झा ४.राजेन्द्र बिमल ५.रामभरोस कापड़ि "भ्रमर" ६.रमेश रंजन ७.बृषेश चन्द्र लाल ८.धीरेन्द्र प्रेमर्षि ९.अनलकान्त १०.कुमार शैलेन्द्र ११.अमरनाथ १२.तारानन्द वियोगी १३.अनमोल झा १४.दुर्गानन्द मंडल १५.मिथिलेश कुमार झा १६.बेचन ठाकुर १७.धीरेन्द्र कुमार १८.सोमदेव १९.अशोक २०.ज्योति सुनीत चौधरी २१.जगदीश प्रसाद मण्डल २२.राजदेव मण्डल २३.देवशंकर नवीन २४.गजेन्द्र ठाकुर); प्रतीक- बीहनि कथा (अपन गप, अपन कहब रेवाज पड़ौआ टकटकी नियंत्रण गहना डोपिंग टेस्ट विनिमय सेजौट परमेश्वर पजेबा सफाई प्रिमियम मुखियैती लक्ष्य कौनचर आत्मानुभूति जनवाणी चश्मा उपहार काँट ओकाति जीवन चक्र रक्षक जमाना निर्धन आरक्षित नवयुग अवाक लिलसा खानदानी कुल्हइया दानक बौस्त जुनुन विजेता हरियर बत्ती- लाल बत्ती लगाम देखाउँस माँ विजातीय स्वरूप आ संभावना विकल्प रीलीफ जिनगी सेवक टवेन्टी-टवेन्टी नेओं बहुराष्ट्रीय कम्पनी विश्वासघात अन्तर-आत्मा कमरुनिसा ग्लोबल वार्मिंग सरकारी दलाल जिया जरए सगर राति भावना तंत्रमेल बेरपर दियाद गाँती बिढ़नी अगुआ साढ़े एकैसम सदी दुन्नू जना एकै धना रासि सड़क-छाप निवेश नपना उत्थर देश-भक्ति भूख डेग देह, मोन आ प्रेम) (पृ.३०२-४६५)

पद्य-खण्ड (पृ.४६६-१८९१)

• (टिप्पणी- सन्दीप कुमार साफी आ विन्देश्वर ठाकुरक रचनावली गद्य-पद्य मिश्रित छन्हि आ पद्य खण्डमे राखल गेल छन्हि, तहिना लल्लन ठाकुरक रचना गद्य-पद्य मिश्रित छन्हि आ गद्य खण्डमे राखल गेल छन्हि।)

• गजेन्द्र ठाकुर- बड़द करैए दाउन ने यौ, बाल गजल, बेसी छुट्टी कम इसकूल, शामिल बाजाक दुन्दभी वादक, मोनक रंगक अदृश्य देबाल, मन्दाकिनी जे आकाश मध्य, पक्काक जाठि, निन्नक जीवन विचित्र, गंगा ब्रिज, हर आ बड़द, बिसरलहुँ फेर कर्णक मृत्युक छोट- छीन रूप, बड़का सड़क छह लेन बला, मिथिलाक ध्वज गीत, ट्रेनक गाड़ी, राजा श्री अनुरन्वज सिंह, दीयाबाती, क्रिकेट-फील्डिंग, त्वञ्चाहञ्च, असञ्जाति मन (पृ. ४६७-५७४)

• कोसी लोकगीत १-३ (पृ. ५७५-५७७)

• बैकुण्ठ झा- चलू देखैब अपन गाम अय, सिनेमा, दहेज, परदेश, सड़क, दुनियाँ (पृ. ५७८-५८३)

• प्रकाश झा- हाल बचपनसँ पचपन तक (पृ. ५८४-५८६)

• रामलोचन ठाकुर- हर्जे की, व्यवस्थाक नाम/ चेतौनी, अनुजक नाम/ काज अहींक थिक (पृ. ५८७-५८९)

• महेश मिश्र "विभूति"- बाबा-स्तुति, गङ्गा-स्तुति (पृ. ५९०-५९०)

• श्यामल सुमन- अभियान, आत्म-दर्शन (पृ. ५९१-५९२)

• नवीननाथ झा (नवनीत)- नारीये सतयुग आनत यौ, युगनिर्माणी संकल्प, जीव की छी? अहम् प्रश्न, गायत्री महामंत्र, प्रेम आनन्दक अभिव्यक्ति छी (पृ. ५९३-५९७)

• विद्यानन्द झा पञ्जीकार (प्रसिद्ध मोहनजी)- कोशीक ताण्डव, श्रृष्टि चक्र, दहेज दानव (पृ. ५९८-६०२)

• धीरेन्द्र प्रेमर्षि- चहकऽ लागल चिड़िया-चुनमुन, एमकीक जतरा, आजाद गजल १-११ (पृ. ६०३-६१५)

• बृषेश चन्द्र लाल- नजरि अहाँक चितकेर जूड़ा दैत अछि (पृ. ६१६-६१६)

• हिमांशु चौधरी- विष-वृक्ष (पृ. ६१७-६१८)

• रामभरोस कापड़ि- अन्हारक विरुद्ध, आजाद गजल (पृ. ६१९-६२१)

• जितमोहन झा- दिलक कलमसँ शेरो शायरी, जखन जनता जागि जाइत अछि! (पृ. ६२२-६२४)

• कृष्णमोहन झा- एक दिन (पृ. ६२५-६२५)

• अमरेन्द्र यादव- टमटमियाँ घोडा (पृ. ६२६-६२६)

• निमिष झा- जीवन एकटा दुरुह कविता, चिर्रीचिर्री भेल मोन, वेदनाक तरङ्ग, असमर्पित उन्माद, किछु हाइकु (पृ. ६२७-६३७)

• भालचन्द्र झा- अपन अस्तीत्वक असली मोल, हमर माय (पृ. ६३८-६४०)

• अंकुर काशीनाथ झा- पश्चाताप (पृ. ६४१-६४१)

• प्रकाश झा- बाल-बुदरुकक लेल कविता (पृ. ६४२-६४२)

• सुबोध ठाकुर- मनक तरंग, केना होएत मिथिलाक जीर्णोद्धार, शब्दक वाण चलेबए- नहि सहबए आब अत्याचार, पिया हमर परदेशिया, हम गामेमे रहबइ (पृ. ६४३-६४८)

• रूपेश कुमार झा 'त्योंथ'- आयल फेरो समय लगनक, जंगल दिस !, मैथिल के? (पृ. ६४९-६५२)

• मनीष झा "बौआभाई"- माय (पृ. ६५४-६५५)

• सतीश चन्द्र झा- मध्य वर्गक सपना, भ्रमित शब्द, नाव आ जीवन, मौनक शब्द, चुनाव, शब्द, हमर स्वतंत्रता, ई जीवन, अप्पन भाषा (पृ. ६५६-६७०)

• विवेकानंद झा- सिंगरहार (पृ. ६७१-६७२)

• अमित मिश्र- नव-अंशु (अपन गप, गजल १-९०, हजल-१-६, रुबाइ- १-१६) (पृ. ८७३-७७६)

• चंदन कुमार झा- मोनक बात [अपन गप, गजल (१-६६), हजल (१-२), बाल गजल (१-१५), रुबाइ (१-३३), कता (१)] (पृ. ७७७-८३९)

• विनीत उत्पल- हम पुछैत छी (अपन गप, ५० टा कविता) (प्. ८४०-८९६)

• ओम प्रकाश झा- कियो बूझि नै सकल हमरा (अपन गप, गजल १-८७, रुबाइ- १-८, कता- १-२) (पृ. ८९७-९८८)

• उमेश मंडल- निश्तुकी (अपन गप, किछु कविता, हाइकू-टनका, आ दूटा गजल) (पृ. ९८९-१०८२)

• उमेश पासवान- वर्णित रस (आमुख, कागज, समाज, रावण-कंश, भरल घैल, कलजुग, उमर-अवस्था-मन, पियासल, हत्या, फाटल भविष्य, गेलहे घर छी, पलटन लाल, बाढ़ि, डेग डेगपर खतरा, कपुत, आशा, गामक चौअनियाँ, नेताजी नमस्कार, सतहिया, अज्ञानी, दलिदर, पोसिया, मैना, माछक तीमन, कवाड़ी, बरखाक मौसम, मिथिलाक नारी, रगड़ा, नेता, मनक बिसवास, केहेन विधना, अपनेकेँ की कही, फुसि-फट्टका, हकिकत, पावन भूमि, एना नै कर, भुतहा मोड़, हमरो लेने चलू, अथाह, गारल मुर्दा, हाल-चाल, पथ ई केहेन, गृहस्थ सबहक हाल, मिथिला महान, हेराएल, दुभर, विडम्वना, दियादी बॉट, पुर्णिमा, रिश्ता, अज्ञानी, कनी देखू, मास्टरक बहाली, फागुनमे, श्यामल मोहे, जीतक झंडा, युवा, हम युवा, पथिक, हमहूँ कनै छी, एना किएक, जितिया, डगर, रमल छी, संत, बन्हन, संघर्ष जारी रखब, भरदुतिया, गवहा संक्राति, किमती भोट, असली-नकली, कोसी, मच्छर रानी, हरिजन, हम छी मैथिली, बौकी, चौके-चौक,ठेँस, पेटक खातिर, जगदीश बाबू, उजरल घर, जीवनक नैया, डर, नटीन, बताह, ज्ञानक नव ज्योति, केहेन चालि, बसन्त, योद्धा) (पृ. १०८३-११८१)

• शिव कुमार झा “टिल्लू”- क्षणप्रभा (अपन गप, किछु पद्य, दूटा गजल, तीन टा हाइकू) (पृ. ११८२-१३२५)

• सन्दीप कुमार साफी (प्रसिद्ध किरण)- बैशाखमे दलानपर- गद्य-पद्य मिश्रित [आत्मकथा खण्ड (मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा), कविता खण्ड, विहनि कथा खण्ड, लघुकथा खण्ड, विचार बिन्दु खण्ड] (पृ. १३२६-१४२०)

• मुन्नाजी- माँझ आंगनमे कतिआएल छी (अपन गप, गजल- १-५०, रुबाइ- १-११) (पृ. १४२१-१५०१)

• विन्देश्वर ठाकुर- नेपालक नोर मरूभूमिमे (अपन गप, गजल खण्ड, शेरो-शाइरी खण्ड, लघुकथा खण्ड, विहनि कथा खण्ड, कविता खण्ड) (पृ. १५०२-१६४६)

• आशीष अनचिन्हार- मुन्नाजीक गजल, अनचिन्हार आखर (गजलक संक्षिप्त परिचय, ७८ टा गजल,३२ टा रुबाइ आ २ टा कता) (पृ. १६४७-१८९१)

पाठ-सत्यापन टिप्पणी

एहि समीक्षामे रचनाकारक नाम, रचना-शीर्षक, संग्रहक उप-रूप (गजल-संख्या, रुबाइ-संख्या, हजल, कता, हाइकू आदि) मूल अनुक्रम/पाठसँ मिलाओल गेल अछि। जकर स्वतंत्र बाहरी पुष्टि उपलब्ध नहि, तकरा तथ्य रूपेँ बढ़ा-चढ़ा कऽ नहि कहल गेल अछि। विशेषतः ‘पहिल दलित आत्मकथा’क दावा विदेह/ग्रन्थक दावा रूपेँ स्पष्ट चिन्हित अछि; अमित मिश्रक पृष्ठ-संकेतक मुद्रित विसंगति सेहो ज्यों-का-त्यों दर्ज अछि।

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह सदेह ३३ — सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा

अध्याय 42 · विदेह सदेह ३६ — रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-५

सारांश सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा गद्य · पद्य · लोकगीत · गजल · हाइकू · नाटक · पत्रकारिता · चित्रकला · पाठकीय ग्रहण मूल संकलन

विदेह ई-पत्रिकाक पेटार अंक १–३५० सँ सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर · ISSN 2229-547X ◆ स्रोताधारित आलोचनात्मक अध्ययन बाह्य

शोधसामग्रीक उपयोग केवल तुलनात्मक/सैद्धान्तिक सन्दर्भ लेल कएल गेल अछि; मूल संकलनसँ बाहरक कोनो कथानक वा तथ्य जोड़ल

नहि गेल अछि। “सदेह ३६” मे सम्पादकीय, लोकगीत, विहनि कथा, रिपोर्ट, गजल, नाटक आ चित्रकला एक-दोसरक बगलमे उपस्थित

अछि; एतए “एकरूप साहित्यिक भाषा”क बदला बहु-स्वरक टकराहट आ सह-अस्तित्व मूल विशेषता बनैत अछि। एहि ग्रन्थक शक्ति

ओकर असमानताकेँ नुकाएब नहि, बल्कि ओकरा साहित्यिक सार्वजनिकताक वास्तविक रूपमे सुरक्षित राखब अछि।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · नाटक · कथा · विहनि कथा · गजल · हाइकू

सम्पूर्ण साहित्यिक समीक्षा

गद्य · पद्य · लोकगीत · गजल · हाइकू · नाटक · पत्रकारिता · चित्रकला · पाठकीय ग्रहण

मूल संकलन: विदेह ई-पत्रिकाक पेटार अंक १–३५० सँ

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर · ISSN 2229-547X

◆

स्रोताधारित आलोचनात्मक अध्ययन

बाह्य शोधसामग्रीक उपयोग केवल तुलनात्मक/सैद्धान्तिक सन्दर्भ लेल कएल गेल अछि; मूल संकलनसँ बाहरक कोनो कथानक वा तथ्य जोड़ल नहि गेल अछि।

१.१ पाठ-मानचित्र

घटक	गणना/सीमा	आलोचनात्मक अर्थ
गद्य प्रविष्टि	५५	आलोचना, कथा, नाटक, रिपोर्ट, साक्षात्कार, संस्मरण, भाषा-अध्ययन, सांस्कृतिक पत्रकारिता
पद्य/दृश्य/ग्रहण प्रविष्टि	७२	कविता, गजल, रुबाइ, गीत, हाइकू, लोक/संस्कारगीत, बाल-पद्य, चित्रकला,

		संदेश
कुल अनुक्रम प्रविष्टि	१२७	सभ लेखक-रचना प्रविष्टिक अलग जाँच
अलग लेखक/कलाकार-लेबल	१०९	किछु लेखक गद्य आ पद्य दुनूमे पुनः अबैत छथि
“संदेश” खण्डक नामांकित प्रतिक्रियाकार	७९	ग्रन्थक ग्रहण, नेटवर्क आ परिपाठक साक्ष्य

२.१ बहुस्वरता आ विधागत सह-अस्तित्व

एम. एम. बाख्तिनक “dialogic” दृष्टि एके पाठ-जगतमे अनेक सामाजिक आवाज, भाषिक रजिस्टर आ विचारधारात्मक स्वरक परस्परता बूझबा मे उपयोगी अछि। “सदेह ३६” मे सम्पादकीय, लोकगीत, विहनि कथा, रिपोर्ट, गजल, नाटक आ चित्रकला एक-दोसरक बगलमे उपस्थित अछि; एतए “एकरूप साहित्यिक भाषा”क बदला बहु-स्वरक टकराहट आ सह-अस्तित्व मूल विशेषता बनैत अछि। एहि ग्रन्थक शक्ति ओकर असमानताकेँ लुकाएब नहि, बल्कि ओकरा साहित्यिक सार्वजनिकताक वास्तविक रूपमे सुरक्षित राखब अछि।

२.२ परिपाठ आ “संदेश”

जेरार जेनेट परिपाठकेँ ओहि सीमा-प्रदेश रूपमे देखैत छथि जाहिसँ पाठ “पोथी” बनि सार्वजनिक जीवनमे प्रवेश करैत अछि। आवरण, सम्पादकीय घोषणा, अनुक्रम, पुरस्कार/आयोजन-वृत्तान्त आ अन्तक “संदेश” एहि संकलनमे मात्र बाहरी सजावट नहि, बल्कि अर्थ-निर्माणक सक्रिय घटक छथि। “संदेश” खण्ड खास कऽ देखबैत अछि जे संकलन अपन पाठक, लेखक, विद्वान आ सांस्कृतिक कर्मीक नेटवर्कक भीतर कोना ग्रहण भेल।

२.३ मौखिकता, लोकगीत आ संस्कार

रूथ फिनिगन मौखिक कविता केँ लिखित साहित्यक निम्नतर रूप नहि मानि रचना, प्रदर्शन, प्रसारण, श्रोता आ सामाजिक कार्यक संयुक्त घटना मानैत छथि। उमेश मण्डलक संस्कारगीत-संकलन, मिहिर झाक सामा-गीत, शशिधर कुमारक विवाह/पर्व/ऋतुगीत आ अन्य लोकधर्मी पद्य एहि दृष्टिसँ पढ़लापर “पाठ”सँ बेसी “प्रयोग” बनैत अछि—जे गाओल, स्मरण कएल, साझा कएल आ सामाजिक अवसरमे पुनर्सृजित होइत अछि।

२.४ रंगमंच आ प्रदर्शन

रिचर्ड शेचनरक प्रदर्शन-अध्ययन रंगमंचकेँ केवल लिखित नाटक नहि, देह, मंच, दर्शक, स्थान, पुनरावृत्ति आ सांस्कृतिक व्यवहारक समष्टि मानैत अछि। संकलनमे नाटकक पाठक संग मंचन-रिपोर्ट, रंगमंचीय बहस, नाट्य-उत्सव आ समीक्षात्मक लेख अछि; फलतः मैथिली नाटकक इतिहास एतए “स्क्रिप्ट” आ “घटना” दुनू रूपमे सुरक्षित अछि।

२.५ भाषा, लिपि, जाति आ सार्वजनिकता

जॉर्ज ए. ग्रिअर्सनक उन्नैसम शताब्दीक व्याकरण आ रामावतार यादवक आधुनिक संदर्भ-व्याकरण मैथिली भाषिक वर्णनक दू ऐतिहासिक पड़ाव छथि। नवीन शोधमे ललित कुमार प्रिन्ट, मिथिलाक्षर/देवनागरी आ जातीय सार्वजनिकताक सम्बन्धक पुनर्विचार करैत छथि; २०२६क “Mithila Studies” परिचय सेहो पुरान उच्चवर्णीय, पुरुष-केंद्रित आ उपनिवेशकालीन चौखटाक सीमा चिन्हित करैत अछि। “सदेह ३६”क भाषा-लिपि-जाति बहस एहि व्यापक इतिहाससँ संवाद करैत अछि, मुदा ओकर सम्पादकीय तीखापनकेँ स्रोत-आधारित आलोचनासँ अलग राखब जरूरी अछि।

२.६ विद्यापति: परम्परा, इतिहास आ विवाद

संकलनक आरम्भमे गजेन्द्र ठाकुर विद्यापतिक पहचान विषयक एकटा प्रखर पुनर्पाठ प्रस्तुत करैत छथि आ मैथिली पदावलीक विद्यापति तथा संस्कृत-अवहट्ठक “विद्यापति ठक्कुरः” केँ अलग मानबाक तर्क दैत छथि। ई संकलनक विशिष्ट आ विवादास्पद मत अछि। आधुनिक अकादमिक अध्ययन—जइमे पंकज झाक २०१९क पुस्तक प्रमुख अछि—सामान्यतः विद्यापतिक बहुभाषिक साहित्यिक-राजनीतिक व्यक्तित्वक रूपमे अध्ययन करैत अछि। अतएव एहि समीक्षा मे संकलनक मत केँ ऐतिहासिक सिद्ध तथ्य नहि, बल्कि आधुनिक मैथिली पहचान-राजनीति, लोकपरम्परा आ कैनन-निर्माणपर हस्तक्षेप रूपेँ पढ़ल गेल अछि।

२.७ मिथिला चित्रकला आ दृश्य-पाठ

पाउला रिचमैन आ डेविड एल. स्ज़ान्टन सम्पादित २०२५क अध्ययन तथा रिचमैनक २०२६क लेख मिथिला चित्रकलाक वर्गीकरण, स्त्री-श्रम, बाजार, जाति, आधुनिकता आ विषय-विस्तारक जटिल इतिहास देखबैत अछि। “सदेह ३६”क अन्तिम भागमे श्वेता झा, गुंजन कर्ण, इरा मल्लिक, प्रवीण कुमार ठाकुर, गणेश ठाकुर, कैलाश कुमार कामत आ मोना पाण्डेयक चित्रकर्म पाठक साहित्यिक अनुभव कैँ दृश्य-परम्परासँ जोड़ैत अछि। एहि चित्रक विश्लेषणमे केवल प्रत्यक्ष दृश्य-लक्षण—रेखा, रंग, आकृति, सजावटी घनत्व, कथात्मक दृश्य—पर भरोसा कएल गेल अछि; अनदेखल प्रतीकात्मक अर्थ आरोपित नहि कएल गेल अछि।

३. गद्य-खण्डक समेकित साहित्यिक मूल्यांकन

३.१ आलोचना, सम्पादकीय आ वैचारिक गद्य

गद्य-खण्डक आरम्भे सँ “सदेह ३६” आलोचना कैँ शिष्ट निरपेक्षता नहि, बहसक सक्रिय औजार मानैत अछि। गजेन्द्र ठाकुरक दीर्घ समूह—विद्यापति, गजल-शास्त्र, रंगमंच, विदेशी पूँजीक भाषापर प्रभाव, ब्रेल/यूनीकोड, साहित्यिक संस्थाक कार्यप्रणाली, जाति आ भाषा—एकटा सम्पादकीय सार्वजनिकताक निर्माण करैत अछि। ई लेखनक सर्वाधिक मूल्य प्रश्न उठेबाक निर्भीकतामे अछि: भाषा केकर? मानकता के तय करत? संस्था के प्रतिनिधित्व करैत अछि? लोकपरम्परा आ डिजिटल माध्यमक सम्बन्ध की? मुदा ओहि संग प्रमाणक स्तर, व्यंग्यात्मक व्यंजना आ व्यक्तिगत/संस्थागत आरोपक सीमा हरदम एक नहि। तैँ साहित्यिक आलोचना रूपमे एकर ऊर्जा उल्लेखनीय, इतिहासलेखन रूपमे बाह्य सत्यापन अनिवार्य अछि।

३.२ भाषाविज्ञान आ मानकीकरण

डॉ. रमानन्द झा “रमण”क “मिथिला भाषाक अध्ययन आ डॉ. ग्रिअर्सन कृत मैथिली व्याकरण” संकलनक एकटा ठोस अकादमिक स्तम्भ अछि। लेख मैथिली अध्ययनक पूर्व इतिहास, व्याकरणक प्रकार, मानक भाषा आ शिक्षाशास्त्रीय उपयोगपर क्रमबद्ध विचार करैत अछि। एहि लेखकैँ ग्रिअर्सनक १८८१क व्याकरण आ यादवक १९९६क आधुनिक संदर्भ-व्याकरणक बीच रखलापर स्पष्ट होइत अछि जे “मानकता” स्थिर आदेश नहि, बल्कि वर्णन, शिक्षण, सामाजिक प्रयोग आ लेखकीय चयनक सतत प्रक्रिया अछि। संकलनक अन्य लेख जखन मानकीकरणपर तीखा विवाद करैत अछि, रमणक आलेख एहि बहस कैँ पद्धतिगत आधार दैत अछि।

३.३ विहनि कथा, लघुकथा आ संक्षिप्त कथात्मकता

वीरेन्द्र यादवक “बाबा गाछी” जाति, विधवा-जीवन, पंचायत-राज आ प्रेमक तनाव कैँ ग्रामीण कथास्थलमे रखैत अछि। राजू डोम आ मोहनिक सम्बन्ध सामाजिक निषेधक बीच उभरैत अछि; अन्ततः सम्बन्धक सामाजिक स्वीकृति कथाकैँ सुधारवादी दिशा दैत अछि। बेचन ठाकुरक सूक्ष्म कथासमूह चुनाव, नामांकन, छल-बल आ लोकतान्त्रिक व्यवहारक व्यंग्यात्मक रूप खोलैत अछि। मुन्ना जी “विहनि कथा संसार”मे कथा-रूपक नामकरणपर सेहो सिद्धान्तात्मक हस्तक्षेप करैत छथि; हुनकर बहुत रास अति-संक्षिप्त कथा सामाजिक क्षण, पारिवारिक तनाव, दारिद्र्य, देह-मोन, वृद्धावस्था, स्त्री-अनुभव आ नैतिक विडम्बना पकड़ैत अछि। एहि प्रवृत्तिमे “छोट आकार” मात्र लक्ष्य नहि; अन्तिम मोड़, शीर्षकक पुनरर्थीकरण आ बोलचालक घनत्व महत्वपूर्ण अछि।

३.४ नाटक, रंगमंच आ अनुवाद

महाकवि भासक “कर्णभारम्”क मैथिली अनुवाद, मुन्नी कामतक “अंधविश्वास”, नरेन्द्र मिश्रक मंचन-वृत्तान्त, आशीष अनचिन्हारक नाटक-समीक्षा, सुजीत कुमार झाक नाटकसम्बन्धी रिपोर्ट आ उमेश मण्डलक नाट्य-उत्सव अभिलेख मिलि एकटा बहुस्तरीय रंगमंच-इतिहास बनबैत अछि। संकलनक विशेषता ई जे नाट्यकृति, आलोचना आ मंचीय घटना अलग-अलग फाइल नहि रहि परस्पर संवादमे अछि। “उल्कामुख” सन नाट्यांशमे संवाद, व्यंग्य आ रूपकक सहारा देखाइत अछि; मंचन-वृत्तान्त दर्शक, संस्था आ स्थानक सामाजिक अर्थ जोड़ैत अछि।

३.५ पत्रकारिता, रिपोर्ट, साक्षात्कार आ साहित्यिक अभिलेख

नवेंदु कुमार झा, उमेश मण्डल, सुमित आनन्द, पूनम मण्डल, जितेन्द्र झा, प्रियंका झा, राम भरोस कापड़ि भ्रमर, प्रवीण नारायण चौधरी आदि लेखकक रिपोर्ट/समाचार सामग्री “साहित्येतर” बुझि हटाएब भूल होयत। ई पाठ २०१० दशकक मैथिली सांस्कृतिक जीवन—सम्मेलन, पुरस्कार, प्रदर्शन, भाषा-अभियान, राज्य-आन्दोलन, विद्यालयी माध्यम, साहित्यिक संस्था, पुस्तक-विमोचन—क तात्कालिक अभिलेख बनैत अछि। साहित्यिक दृष्टिसँ एहि गद्यक गुण “घटनाक निकटता” आ “नाम-स्थान-समयक घनत्व” अछि; सीमा ई जे तात्कालिकता कखनो विश्लेषणात्मक दूरी घटबैत अछि।

३.६ स्त्री-अनुभव, जाति आ सामाजिक परिवर्तन

शांतिलक्ष्मी चौधरीक नियोजित शिक्षिका-शिक्षक सम्बन्ध आ मैथिल नारीक समस्यापर आलेख, किशन कारीगरक कन्या-भ्रूणहत्या/लिंग-व्यंग्य, शेफालिका

वर्माक संस्मरण-रेखाचित्र, वीरेन्द्र यादवक जाति-पार प्रेम, शिव कुमार झा “टिल्लू”क जातिवाद-विमर्श, अतुलेश्वरक आन्दोलन-लेखन—सभ मिलि समाजक भीतरक असमानता कें साहित्यिक विषय बनबैत अछि। २०२६क Mithila Studies परिचय जकाँ आधुनिक शोध marginalized आवाजक अनुपस्थितिक प्रश्न उठबैत अछि; “सदेह ३६”मे ई प्रश्न प्रत्यक्ष रूपेँ अनेक ठाम अछि, मुदा प्रतिनिधित्व असमान अछि। स्त्री लेखकक उपस्थिति महत्वपूर्ण अछि, तइयो सम्पूर्ण संकलनक विशाल आकारक अनुपातमे पुरुष-केंद्रित सार्वजनिकता स्पष्ट देखाइत अछि।

३.७ विज्ञान, शिक्षा, प्रकृति आ ज्ञान-विस्तार

बिपिन कुमार झाक “Maithili Word net”, शिक्षा आ मीडिया-विषयक लेख, दुर्गानन्द मण्डलक नेना लेल चित्रकथा, विद्यानन्द झा “विदू”क शिक्षाक मौलिकता, डॉ. शशिधर कुमारक अण्टार्कटिका-वर्णन आदि मैथिली गद्यक विषय-क्षेत्र कें “साहित्य”सँ बाहरक ज्ञान-लोक धरि पसारैत अछि। ई विस्तार संकलनक आरम्भिक सम्पादकीय आग्रह—मैथिलीमे विज्ञान, समाज-विज्ञान, तकनीक, शिक्षा आदि विषयक लेखन बढ़ए—क व्यावहारिक रूप बुझना जाइत अछि।

४. पद्य-खण्डक समेकित साहित्यिक मूल्यांकन

४.१ गजल आ रुबाइ: विधागत चेतना

पद्य-खण्डमे गजल सर्वाधिक दृश्यमान आधुनिक विधा सभमे सँ एक अछि। सदरे आलम “गौहर”, प्रभात राय भट्ट, जगदीश चन्द्र ठाकुर “अनिल”, जगदानंद झा “मनु”, रूबी झा, नवीन ठाकुर, अमित मिश्र, विकास झा रंजन, विनीत उत्पल, श्यामल सुमन, शांतिलक्ष्मी चौधरी आदि लेखक अलग-अलग सामाजिक, प्रेमात्मक, राजनीतिक आ आत्मपरक स्वर लऽ कऽ अबैत छथि। गद्य-खण्डमे गजेन्द्र ठाकुरक “मैथिली गजल—दू युग” आ आशीष अनचिन्हारक गजलकार-परिचय एहि पद्य-सृजनक आत्मचेतन आलोचनात्मक पृष्ठभूमि बनबैत अछि। संकलनक भीतर सिद्धान्त आ सृजनक ई सह-अस्तित्व विशेष उल्लेखनीय अछि।

४.२ गीत, संस्कारगीत आ लोक-स्मृति

उमेश मण्डलक ६० पृष्ठ सँ बेसी फैलल संस्कारगीत-संकलन, मिहिर झाक सामा-गीत, शशिधर कुमारक विवाह, ऋतु, शिवरात्रि, होली, मातृभूमि आ विविध अवसरक गीत एकटा विस्तृत जीवित लोक-संग्रह बनबैत अछि। फिनिगनक मौखिकता-दृष्टिसँ देखल जाए तँ एहि गीतक “साहित्यिकता” छन्द वा अलंकारे मे नहि, बल्कि प्रदर्शन, अवसर, सामुदायिक स्मृति आ पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रसारणमे अछि। लिखित संकलन ओहि प्रदर्शनक पूर्ण विकल्प नहि, मुदा स्मृति-संरक्षणक महत्त्वपूर्ण माध्यम अछि।

४.३ हाइकू, सेनर्यू आ संक्षिप्त बिम्ब

सुनील कुमार झा, विवेकानन्द झा, मुन्नाजी, चंदन कुमार झा आदि छोट रूपक उपयोग करैत छथि। एहि रचनाकेँ जापानी रूपक यांत्रिक वर्णगणना मात्रसँ नापब उचित नहि; संकलनक सन्दर्भमे क्षण-बिम्ब, व्यंग्यात्मक काट, प्रकृति वा दैनन्दिन जीवनक त्वरित पकड़ अधिक उपयोगी कसौटी अछि। जहाँ पाठ स्पष्ट बिम्ब दैत अछि, ओतए संक्षिप्तता अर्थक बहुलता पैदा करैत अछि।

४.४ स्त्री, प्रेम, विरह, दहेज आ परिवार

रूबी झा, मुन्नी कामत, डॉ. शेफालिका वर्मा, शांतिलक्ष्मी चौधरी, पल्लवी मण्डल, मुन्ना जीक “सबला”, प्रभात राय भट्ट, सुबोध कुमार ठाकुर, गणेश कुमार झा “बावरा” आदिक पद्यमे प्रेम केवल निजी भाव नहि रहैत; दहेज, विधवा/स्त्री-अवस्था, पारिवारिक अपेक्षा, प्रवास आ आर्थिक दबावसँ जुड़ैत अछि। “सबला” स्त्रीक जीवनचक्र आ संरक्षणक नामपर आश्रितताक विडम्बना उठबैत अछि; “कैंचा” धनक सर्वव्यापी शक्ति पर व्यंग्य करैत अछि; “हम नै खेलब होली” विरहक कारण उत्सव-अस्वीकारक भाव रचैत अछि।

४.५ गाम, प्रवास आ आधुनिक मिथिला

बिनोद मिश्रक “गामक सनेस” जकाँ पद्य ग्रामीण विघटन, पलायन, बाढ़ आ पारिवारिक अस्थिरताकेँ मार्मिक रूप दैत अछि। अनेक गीत/गजलमे “गाम” स्मृतिमात्र नहि, आधुनिक अर्थव्यवस्था आ प्रवासक दबावसँ बदलैत सामाजिक स्थान अछि। रेल, शहर, बेरोजगारी, राजनीति, महँगाइ, भ्रष्टाचार, शिक्षा—ई सभ आधुनिकता पद्यक भीतर स्थानीय भाषिक रूपमे प्रवेश करैत अछि।

४.६ बाल-साहित्य, पर्यावरण आ सचित्र ज्ञान-कविता

डॉ. शशिधर कुमारक पृ. १४६८–१८५०क विशाल पद्य-समूह संकलनक भीतर लगभग एक स्वतंत्र पुस्तकक आकारक अछि। विशेषत: जीव-जंतु, चिड़ै, कीड़ा-

मकोड़ा, जलचर आ वन्यजीवनपर “आजाद गजल सचित्र बाल कविता” शृंखला बाल-साहित्य, लोकनाम, पर्यावरण-जागरूकता आ तथ्यात्मक संकेतक मिश्रण अछि। ठिकठिकिया, धनछुआ, गेंड़ा, पपीहा, पानिडुब्बी, बत्तख, बिढ़नी, भगजोगनी, साही, सुग्गा, राजहंस आदि विषयक पद्य प्राकृतिक संसार कैं मैथिली शब्दावलीमे बाल-पाठकक समक्ष रखैत अछि। ई भाग साहित्यिक सौन्दर्यक संग ज्ञान-लोक निर्माणक कारण खास महत्त्व रखैत अछि।

४.७ चित्रकला: पाठक दृश्य विस्तार

पृ. २१५८–२१९२क चित्र-खण्ड संकलनक “गद्य-पद्य” नामक सीमा कैं दृश्य-कला धरि विस्तार दैत अछि। प्रत्यक्ष पृष्ठावलोकनमे श्वेता झाक रंगप्रधान मिथिला-शैलीक आकृति, गुंजन कर्णक ज्यामितीय/सूर्य-प्रेरित रंग-रचना आ रेखात्मक कथादृश्य, इरा मल्लिकक मंडलाकार तथा वृक्ष-आकृति, प्रवीण कुमार ठाकुरक ग्रामीण/अनुष्ठानिक दृश्य, गणेश ठाकुर आ कैलाश कुमार कामतक सरल कथात्मक चित्र, मोना पाण्डेयक अधिक सजावटी रंगीन युगल-चित्र देखाइत अछि। एहि दृश्य-विविधता कैं आधुनिक मिथिला चित्रकलाक व्यापक परिवर्तनशील परम्परासँ जोड़ि पढ़ल जा सकैत अछि, मुदा प्रत्येक चित्रक विशिष्ट प्रतीक-अर्थ कलाकारक वक्तव्य बिना निश्चित नहि कएल जा सकैत अछि।

५. लेखक-रचना अनुसार सम्पूर्ण गद्य समीक्षा

निम्न भागमे अनुक्रमक सभ ५५ गद्य प्रविष्टि क्रमशः देल गेल अछि। “रचना-सूची” मूल अनुक्रमक पाठक आधारपर अछि; “समीक्षात्मक टिप्पणी” उपलब्ध मूल पाठ, विधा आ विषयक आधारपर सीमित रखल गेल अछि।

१. गजेन्द्र ठाकुर — पृ. २–३१२

रचना-सूची: गजेन्द्र ठाकुर- विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण, रुबाइ: कता: गजल: हाइकू, प्राकृत आ पालि, मैथिली गजल- दू युग, विदेशी पूँजी निवेशक भाषापर (मैथिली सहित) प्रभाव, होलीपर व्यंग्य, मैथिली नाटक आ फिल्मक एकटा समानान्तर दुनियाँ, मैथिली नाटक आ आधुनिक रंगमंच, प्रदीप पुष्पजीक गजल संग्रह, चारिटा अंग्रेजी नाटक- डॉक्टर फॉस्टस, सैमसन एगोनिस्टेस, मर्डर इन द कैथेड्रल आ स्ट्राइफ, उल्कामुख, सम्पादकीय (मैथिली आ ब्रेल लिपि, की मैथिली साहित्य अपन मूल स्वरमे ब्राह्मणवादी अछि?, रामनरेश रायक सूचना, यूनीकोड पर साहित्य अकादेमीक कथागोष्ठीमे पर्चा वितरण, साहित्य अकादेमीक कथा गोष्ठीकेँ सगर राति दीप जरए कहल जाए?, साहित्य अकादेमीक टैगोर लिटरेचर अवार्ड, विदेह गोष्ठी: (परिचर्चा आ प्रैक्टिकल लैबोरेटरीक प्रदर्शन), की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा छी?, विहनि कथा, फजलुर रहमान हासमीक आइ २०-०७-२०११ कैं मृत्यु भऽ गेलन्हि, साहित्य अकादेमीमे समन्वयक पद लेल कालाबाजारी (ब्लैक मार्केटिंग)- एकटा रिपोर्ट, समन्वय २-४ नवम्बर २०१२ इण्डिया हैबीटेट सेन्टर, विदेह सम्मान (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार, २. समानान्तर ललित कला अकादेमी पुरस्कार आ ३.समानान्तर संगीत-नाटक अकादेमी पुरस्कारक नामसँ प्रसिद्ध), विदेह साहित्य उत्सव २०१२ आ विदेह साहित्य सम्मान समारोह १४ जनवरी २०१२, गजल कमला-कोसी-बगमती-महानंदा सम्मान, विदेह द्वारा आयोजित पहिल "समानांतर साहित्य अकादेमी" मैथिली कवि सम्मेलन २०११, २०म विश्व पुस्तक मेला २०१२, २१म विदेह मैथिली पोथी प्रदर्शनी, नीलम फिल्म्स आ गोपाल पाठकक करतूत, मारियो वर्गास लोसाकेँ एहि वर्षक साहित्यक 15 लाख डॉलर पुरस्कार राशिक (एक सए लाख क्रोनर) नोबल पुरस्कार, डॉ. नित्यानन्द लाल दास कैं साहित्य अकादेमीक मैथिली अनुवाद पुरस्कार २०१०, भारतीय भाषा परिषदक युवा पुरस्कार गौरीनाथ (अनलकांत) कैं मैथिली लेल, फूलकुमारी महतो मेमोरियल ट्रष्ट काठमाण्डू, गोविन्द रचनावली, साहित्य अकादेमी, दिल्लीक महत्तर सदस्यता श्री चन्द्रनाथ मिश्र अमरकेँ, विनीत उत्पलक सूचनाक अधिकारक अन्तर्गत मांगल सूचना १० सदस्यी साहित्य अकादेमीक मैथिली एडवाइजरी बोर्ड द्वारा मैथिलीकेँ खतम करबाक षडयंत्रक खुलासा, लघु राज्यक सार्थकता पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, टॉमस ट्रांसट्रोमरकें २०११क साहित्य लेल १.५ मिलियन डॉलरक नोबल पुरस्कार, दूषण पंजी कट्टरवाद, श्रीनिवास जीक "बदलैत स्वर", स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” , हिन्दी आ मैथिली आ साहित्यिक शब्दावली, अन्तर्जाल आ मैथिली साहित्य आन्दोलन, मैथिली गजल, मैथिली नाटक- बेचा ठाकुर: बेचन ठाकुर, उपेन्द्र भगत नागवंशी आ मैथिलीमे फील्डवर्क,राजनन्दल लाल दास जी आ मायानन्द मिश्र प्रारम्भमे तामसमे रहथि, साहित्यिक लठैत आ कालीकान्त झा बूचक साहित्यिक हत्याक ओझरी, मीठ बाजएबला कायस्थ आ ब्राह्मण समाज किए टूटि गेल अछि? (पृ. २-३१२)

समीक्षात्मक टिप्पणी: एहि प्रविष्टिमे पाठ आ प्रदर्शनक सम्बन्ध प्रमुख अछि; नाट्य-विधा, मंचीय व्यवहार आ सांस्कृतिक संस्थाक परस्परता एकर मूल्य बढ़बैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे मैथिली भाषा/साहित्य, लोक-अनुभव, भाषिक प्रश्न, हास्य आ सामाजिक संरचना प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। विस्तृत पृष्ठ-परास एहि लेखक-समूहकेँ संकलनक भीतर स्वतंत्र उप-आर्काइवक स्वरूप दैत अछि; एकर विविध सामग्रीकेँ एकहि सौन्दर्य-कसौटीसँ नापबाक बदला विधा-विशेषक कार्य अनुसार पढ़ब उचित अछि।

२. डॉ रमानन्द झा "रमण" — पृ. ३१३–३३२

रचना-सूची: डॉ रमानन्द झा "रमण"- मिथिला भाषाक अध्ययन आ डॉ. ग्रिअर्सन कृत मैथिली व्याकरण (पृ. ३१३-३३२)

समीक्षात्मक टिप्पणी: लेख मैथिली भाषाक अध्ययन-इतिहास, प्रारम्भिक औपनिवेशिक भाषावर्णन, ग्रिअर्सनक योगदान, पारम्परिक आ शिक्षाशास्त्रीय

व्याकरणक भेद, तथा मानक भाषाक प्रश्न पर क्रमबद्ध विचार करैत अछि। एहि कारण ई संकलनक बहसप्रधान गद्यक बीच एकटा स्रोत-सचेत अकादमिक आधार प्रदान करैत अछि।

३. वीरेन्द्र यादव — पृ. ३३३–३३७

रचना-सूची: वीरेन्द्र यादव- लघुकथा- बाबा गाछी (पृ. ३३३-३३७)

समीक्षात्मक टिप्पणी: “बाबा गाछी”मे राजू डोम आ मोहनिक सम्बन्ध जाति, विधवा-जीवन, पंचायत-राज आ प्रेमक संघर्षक बीच विकसित होइत अछि। कथा सामाजिक निषेधक कठोरता देखबैत अन्ततः विवाह आ साझा पंचायत-जीवनक सुधारवादी समाधान धरि पहुँचैत अछि। ई अन्त यथार्थक संघर्षकेँ आशावादी दिशा दैत अछि, यद्यपि परिवर्तनक जटिलता अपेक्षाकृत शीघ्र सुलझि जाइत अछि।

४. बेचन ठाकुर — पृ. ३३८–३४१

रचना-सूची: बेचन ठाकुर- नोमीनेशन, छल-बल, चल आइये, डाक डकोबलि (पृ. ३३८-३४१)

समीक्षात्मक टिप्पणी: “नोमीनेशन”, “छल-बल”, “चल आइये” आ “डाक डकोबलि” पंचायत/चुनावी लोकतंत्रक सूक्ष्म व्यंग्यात्मक चित्र बनबैत अछि। नामांकन, दबाव, पैसे/लाभक लोभ आ चुनावी व्यवहार छोट दृश्यक भीतर उघारल जाइत अछि; संक्षिप्तता एहि व्यंग्यक धार बढ़बैत अछि।

५. आशीष अनचिन्हार — पृ. ३४२–४३९

रचना-सूची: आशीष अनचिन्हार- बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी, बेचन ठाकुरजीक नाटक बेटीक अपमान, विदेह मैथिली समानान्तर रंगमंच, मैथिली गजलकार परिचय श्रृंखला, आशीष अनचिन्हार द्वारा १९ जुलाइ २०१२ कँ श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीसँ लेल साक्षात्कार (पृ. ३४२-४३९)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि संवादात्मक दस्तावेजक रूपमे साहित्यिक-सांस्कृतिक स्मृति सुरक्षित करैत अछि; प्रश्नकर्ता आ उत्तरदाताक स्वरक दूरी आलोचनात्मक रूपेँ ध्यान देबाक योग्य अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे गीतात्मकता, रंगमंच, गजल-विधा, मैथिली भाषा/साहित्य आ नाट्य/प्रदर्शन प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। विस्तृत पृष्ठ-परास एहि लेखक-समूहकेँ संकलनक भीतर स्वतंत्र उप-आर्काइवक स्वरूप दैत अछि; एकर विविध सामग्रीकेँ एकहि सौन्दर्य-कसौटीसँ नापबाक बदला विधा-विशेषक कार्य अनुसार पढ़ब उचित अछि।

६. मनोज झा मुक्ति — पृ. ४४०–४५०

रचना-सूची: मनोज झा मुक्ति- विद्यापति स्मृति समारोह वास्ते हमर दरभंगा यात्रा, जनगणनामे मातृभाषा (पृ. ४४०-४५०)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई सांस्कृतिक पत्रकारिताक प्रविष्टि तत्कालीन साहित्यिक जीवनक नाम, आयोजन आ संस्थागत संदर्भ सुरक्षित करैत अछि; एकर अभिलेखीय मूल्य सौन्दर्यात्मक मूल्यसँ अलग लेकिन महत्त्वपूर्ण अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे भाषिक प्रश्न, ग्राम्य जीवन, मैथिली भाषा/साहित्य, नाट्य/प्रदर्शन आ शासन/सार्वजनिक जीवन प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

७. नरेन्द्र मिश्र — पृ. ४५१–४५३

रचना-सूची: नरेन्द्र मिश्र- दुर्गापूजा-2011 केर अवसरपर मैथिली-नाटक मंचन भेल- अप्पन कर्मक फल (पृ. ४५१-४५३)

समीक्षात्मक टिप्पणी: एहि प्रविष्टिमे पाठ आ प्रदर्शनक सम्बन्ध प्रमुख अछि; नाट्य-विधा, मंचीय व्यवहार आ सांस्कृतिक संस्थाक परस्परता एकर मूल्य बढ़बैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे नाट्य/प्रदर्शन, मैथिली भाषा/साहित्य, प्रेम/सम्बन्ध आ कला-संस्कृति प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

८. महाकवि भास — पृ. ४५४–४५६

रचना-सूची: महाकवि भास- कर्णभारम्- (मैथिली अनुवाद बिपिन कुमार झा) (पृ. ४५४-४५६)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे लोक-अनुभव, मैथिली भाषा/साहित्य, स्त्री-अनुभव आ नाट्य/प्रदर्शन प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

९. बिपिन कुमार झा — पृ. ४५७–४७२

रचना-सूची: बिपिन कुमार झा- बालानां सुखबोधाय, Maithili Word net, कलौ चण्डी महेश्वरौ, स्तरविहीन स्तर- ('अप्पन युनिभरसीटी'केर हाल), जन्मदिनक बदलैत स्वरूप, यात्राक किछु प्रश्न, सहनशीलता मजबूरी अथवा कमजोरी?, एकटा प्रश्न मीडिया सँ (पृ. ४५७-४७२)

समीक्षात्मक टिप्पणी: भाषिक इतिहास, मानकीकरण, शिक्षण वा शब्द-संसाधनक प्रश्न एहि प्रविष्टिक केन्द्रमे अछि; साहित्यिक सार्वजनिकताक आधारभूत भाषा-चेतना एतए प्रत्यक्ष अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे मैथिली भाषा/साहित्य, भाषिक प्रश्न, सामाजिक संरचना, ग्राम्य जीवन आ लोक-अनुभव प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

१०. जितेन्द्र झा — पृ. ४७३–४९४

रचना-सूची: जितेन्द्र झा- नेपाली आ मैथिली भाषाक दूटा साहित्यिक कृति विमोचित, मेघशतक (श्यामशेखर झा कमल) सँ तीनगोट कविता, अपने घरमे उपेक्षित मिथिला चित्रकला, विमलक गजल आ सुजितक कथा, सुजितक अनुभव रिपोर्टर डायरीमे (प्रस्तुति जितेन्द्र झा) (पृ. ४७३-४९४)

समीक्षात्मक टिप्पणी: कथात्मक संक्षिप्तता, सामाजिक घटना आ बोलचालक भाषा एहि प्रविष्टिक मुख्य साहित्यिक आधार बनैत अछि; आकार छोट होइतहुँ शीर्षक आ अन्त अर्थक तीव्रता बढ़बैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे कला-संस्कृति, मैथिली भाषा/साहित्य, लोक-अनुभव, भाषिक प्रश्न आ गीतात्मकता प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

११. एस.सी सुमन — पृ. ४९५–४९७

रचना-सूची: एस.सी सुमन- सरकार कएलक सौतिनिञा व्यवहार (पृ. ४९५-४९७)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे कला-संस्कृति, शासन/सार्वजनिक जीवन, स्त्री/बेटी-अनुभव आ बाल-जगत/शिक्षा प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

१२. धीरेन्द्र प्रेमर्षि — पृ. ४९८–४९९

रचना-सूची: धीरेन्द्र प्रेमर्षि- प्रगतिक पथपर मिथिला चित्रकला (पृ. ४९८-४९९)

समीक्षात्मक टिप्पणी: दृश्य आ शब्दक सम्बन्ध एहि प्रविष्टिक विशेषता अछि; चित्रक अर्थ पाठक अनुभव बढ़बैत अछि, मुदा कलाकारक स्पष्ट वक्तव्य बिना प्रतीकक अति-व्याख्या टारल गेल अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे कला-संस्कृति आ प्रेम/सम्बन्ध प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। पृष्ठ-परास छोट अछि, तेँ एकरा लेखकक समग्र कृतित्वक प्रतिनिधि नमूना मानब उचित नहि; संकलनमे एक विशिष्ट क्षण/विधा रूपेँ पढ़ल जाए।

१३. शम्मी वत्स/ रूपेश — पृ. ५००–५००

रचना-सूची: शम्मी वत्स/ रूपेश- हैदराबादमे विद्यापति पर्व समारोह (पृ. ५००-५००)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई सांस्कृतिक पत्रकारिताक प्रविष्टि तत्कालीन साहित्यिक जीवनक नाम, आयोजन आ संस्थागत संदर्भ सुरक्षित करैत अछि; एकर अभिलेखीय मूल्य सौन्दर्यात्मक मूल्यसँ अलग लेकिन महत्त्वपूर्ण अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे कला-संस्कृति आ गीतात्मकता प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। पृष्ठ-परास छोट अछि, तेँ एकरा लेखकक समग्र कृतित्वक प्रतिनिधि नमूना मानब उचित नहि; संकलनमे एक विशिष्ट क्षण/विधा रूपेँ पढ़ल जाए।

१४. प्रवीण नारायण चौधरी — पृ. ५०१–५०२

रचना-सूची: प्रवीण नारायण चौधरी- बिराटनगरमे विद्यापति पर्व समारोह सम्पन्न 9-10 दिसम्बर 2011 (पृ. ५०१-५०२)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई सांस्कृतिक पत्रकारिताक प्रविष्टि तत्कालीन साहित्यिक जीवनक नाम, आयोजन आ संस्थागत संदर्भ सुरक्षित करैत अछि; एकर अभिलेखीय मूल्य सौन्दर्यात्मक मूल्यसँ अलग लेकिन महत्त्वपूर्ण अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे कला-संस्कृति, मैथिली भाषा/साहित्य, गीतात्मकता, लोक-अनुभव आ रंगमंच प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। पृष्ठ-परास छोट अछि, तेँ एकरा लेखकक समग्र कृतित्वक प्रतिनिधि नमूना मानब उचित नहि; संकलनमे एक विशिष्ट क्षण/विधा रूपेँ पढ़ल जाए।

१५. रमेश रंजन — पृ. ५०३–५०४

रचना-सूची: रमेश रंजन- रिपोर्ट- "बुधियार छौड़ा आ राक्षस" (पृ. ५०३-५०४)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई सांस्कृतिक पत्रकारिताक प्रविष्टि तत्कालीन साहित्यिक जीवनक नाम, आयोजन आ संस्थागत संदर्भ सुरक्षित करैत अछि; एकर अभिलेखीय मूल्य सौन्दर्यात्मक मूल्यसँ अलग लेकिन महत्त्वपूर्ण अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे नाट्य/प्रदर्शन, मैथिली भाषा/साहित्य, कला-संस्कृति आ लोक-अनुभव प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। पृष्ठ-परास छोट अछि, तेँ एकरा लेखकक समग्र कृतित्वक प्रतिनिधि नमूना मानब उचित नहि; संकलनमे एक विशिष्ट क्षण/विधा रूपेँ पढ़ल जाए।

१६. मुन्ना जी — पृ. ५०५–५८०

रचना-सूची: मुन्ना जी- विहनि कथा संसार, अप्पन आंगनमे ठाढ़ आइ हम अपने घरकेँ ताकि रहल छी, तराजू, असरा, संगबे, छुच्छ, दुलार, दिहलगड़ि, उफाँटि, जुड़बन्हन, निंघेस, बखरा, अन्हरिया मे, सेल्फी, खोंइछक धान, दासीन, प्रतिक, सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार....!, आशीर्वाद, आँचर....!, उठल्लू, बाट-घाट, द्वन्द, देह मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए सगर राति, साढ़े एकैसम सदी, भूख, टेट्र , गणतंत्र, अदौ सँ...,करोट, पछतावा, रक्षा, विचरण! , चुनरी, मुक्ति, दरेग, रिपोर्ताज, परस्पर, टकटकी, सुतिहार, वैधव्यता, कोखिन, विधान, मए बनबाक हर्ष!, भार उघैत, निमुधन नै छी, बेर पर, उपरौंज, विहान, दायित्व (पृ. ५०५-५८०)

समीक्षात्मक टिप्पणी: “विहनि कथा संसार”मे लेखक कथा-नामकरणक प्रश्न उठबैत “विहनि कथा” केँ स्वदेशी आलोचनात्मक शब्द रूपेँ प्रतिष्ठित करबाक प्रयास करैत छथि; तकर बाद बहुत रास अति-संक्षिप्त कथा दैनन्दिन जीवनक तीव्र क्षण पकड़ैत अछि। एहि समूहक साहित्यिक महत्त्व रूप आ आलोचना—दुनू एकसंगे प्रस्तुत करबामे अछि।

१७. श्यामसुन्दर शशि — पृ. ५८१–५८२

रचना-सूची: श्यामसुन्दर शशि- कोजग्रा धूमधाम संग मनाओल जा रहल (पृ. ५८१-५८२)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे लोक-अनुभव आ स्त्री/बेटी-अनुभव प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। पृष्ठ-परास छोट अछि, तेँ एकरा लेखकक समग्र कृतित्वक प्रतिनिधि नमूना मानब उचित नहि; संकलनमे एक विशिष्ट क्षण/विधा रूपेँ पढ़ल जाए।

१८. राम भरोस कापड़ि भ्रमर — पृ. ५८३–५८५

रचना-सूची: राम भरोस कापड़ि भ्रमर- बिराटनगरमे बिद्यापति स्मृति पर्व (पृ. ५८३-५८५)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे लोक-अनुभव आ गीतात्मकता प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

१९. जगदानंद झा 'मनु' — पृ. ५८६–५९१

रचना-सूची: जगदानंद झा 'मनु'- मसोमात, रहस्य, जगह, मिथिलामे जाति-पाति (पृ. ५८६-५९१)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे ग्राम्य जीवन, बाल-जगत/शिक्षा, शासन/सार्वजनिक जीवन आ सामाजिक संरचना प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

२०. प्रियंका झा — पृ. ५९२–५९८

रचना-सूची: प्रियंका झा- सगर राति दीप जरय पर साहित्य अकादेमीक कब्जा/ सरकारी पाइपर भेल बभनभोज/ साहित्य अकादेमीक कथा रवीन्द्र दिल्लीमे समाप्त- रवीन्द्रक कथापर कोनो चर्चा नै भेल- ७६म सगरराति दीप जरय चेन्नैमे विभारानी लऽ गेली (पृ. ५९२-५९८)

समीक्षात्मक टिप्पणी: कथात्मक संक्षिप्तता, सामाजिक घटना आ बोलचालक भाषा एहि प्रविष्टिक मुख्य साहित्यिक आधार बनैत अछि; आकार छोट होइतहुँ शीर्षक आ अन्त अर्थक तीव्रता बढ़बैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे मैथिली भाषा/साहित्य, लोक-अनुभव, भाषिक प्रश्न, शासन/सार्वजनिक जीवन आ प्रेम/सम्बन्ध प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

२१. आशीष चौधरी — पृ. ५९९–६००

रचना-सूची: आशीष चौधरी- विहनि कथा- ठक (पृ. ५९९-६००)

समीक्षात्मक टिप्पणी: कथात्मक संक्षिप्तता, सामाजिक घटना आ बोलचालक भाषा एहि प्रविष्टिक मुख्य साहित्यिक आधार बनैत अछि; आकार छोट होइतहुँ शीर्षक आ अन्त अर्थक तीव्रता बढ़बैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे लोक-अनुभव आ ग्राम्य जीवन प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। पृष्ठ-परास छोट अछि, तेँ एकरा लेखकक समग्र कृतित्वक प्रतिनिधि नमूना मानब उचित नहि; संकलनमे एक विशिष्ट क्षण/विधा रूपेँ पढ़ल जाए।

२२. चंदन कुमार झा — पृ. ६०१–६०६

रचना-सूची: चंदन कुमार झा- आलेख- भीड़तंत्र बनाम् भ्रष्टतंत्र, विहनि-कथा- सद्गति (पृ. ६०१-६०६)

समीक्षात्मक टिप्पणी: कथात्मक संक्षिप्तता, सामाजिक घटना आ बोलचालक भाषा एहि प्रविष्टिक मुख्य साहित्यिक आधार बनैत अछि; आकार छोट होइतहुँ शीर्षक आ अन्त अर्थक तीव्रता बढ़बैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे लोक-अनुभव, सामाजिक संरचना, शासन/सार्वजनिक जीवन, ग्राम्य जीवन आ स्त्री/बेटी-अनुभव प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

२३. अतुलेश्वर — पृ. ६०७–६१९

रचना-सूची: अतुलेश्वर- सोचब आवश्यक जे......, मिथिला राज्य आन्दोलन आ शहीद रञ्जु झा (पृ. ६०७-६१९)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे मैथिली भाषा/साहित्य, लोक-अनुभव, भाषिक प्रश्न, स्त्री-अनुभव आ आन्दोलन/राजनीति प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

२४. सुभाष चन्द्र यादव — पृ. ६२०–६२०

रचना-सूची: सुभाष चन्द्र यादव- गजेन्द्र ठाकुर (पृ. ६२०-६२०)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे भाषिक प्रश्न, मैथिली भाषा/साहित्य, सामाजिक संरचना, लोक-अनुभव आ बाल-जगत/शिक्षा प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। पृष्ठ-परास छोट अछि, तेँ एकरा लेखकक समग्र कृतित्वक प्रतिनिधि नमूना मानब उचित नहि; संकलनमे एक विशिष्ट क्षण/विधा रूपेँ पढ़ल जाए।

२५. मुन्नी कामत — पृ. ६२१–६२६

रचना-सूची: मुन्नी कामत- नाटक- अंधविश्वास (पृ. ६२१-६२६)

समीक्षात्मक टिप्पणी: एहि प्रविष्टिमे पाठ आ प्रदर्शनक सम्बन्ध प्रमुख अछि; नाट्य-विधा, मंचीय व्यवहार आ सांस्कृतिक संस्थाक परस्परता एकर मूल्य बढ़बैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे लोक-अनुभव, ग्राम्य जीवन, नाट्य/प्रदर्शन आ गीतात्मकता प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

२६. सत्यनारायण झा — पृ. ६२७–६२८

रचना-सूची: सत्यनारायण झा- दुटा बात पुत्रक जन्म दिन पर (पृ. ६२७-६२८)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे लोक-अनुभव, बाल-जगत/शिक्षा आ स्त्री/बेटी-अनुभव प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। पृष्ठ-परास छोट अछि, तेँ एकरा लेखकक समग्र कृतित्वक प्रतिनिधि नमूना मानब उचित नहि; संकलनमे एक विशिष्ट क्षण/विधा रूपेँ पढ़ल जाए।

२७. सुजीत कुमार झा — पृ. ६२९–७१७

रचना-सूची: सुजीत कुमार झा- लघुकथा (निष्ठा कि देखाबा, लाल डायरी, मेनका, साधना, केहन सजाय?, फुल फुलाइए कऽ रहल, बंश), झूमि उठल जनकपुरवासी, नाटकप्रति रंजुमे गजबकेँ समर्पण छल, नेपालमे राष्ट्रिय जनगणना- मैथिलीकेँ स्थान दियावकेँ विशेष संकल्प, मैथिलीमे क्रिकेटक कमेन्ट्री, जंगलमे होरी (पृ. ६२९-७१७)

समीक्षात्मक टिप्पणी: एहि प्रविष्टिमे पाठ आ प्रदर्शनक सम्बन्ध प्रमुख अछि; नाट्य-विधा, मंचीय व्यवहार आ सांस्कृतिक संस्थाक परस्परता एकर मूल्य बढ़बैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे मैथिली भाषा/साहित्य, भाषिक प्रश्न आ कला-संस्कृति प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। विस्तृत पृष्ठ-परास एहि लेखक-समूहकेँ संकलनक भीतर स्वतंत्र उप-आर्काइवक स्वरूप दैत अछि; एकर विविध सामग्रीकेँ एकहि सौन्दर्य-कसौटीसँ नापबाक बदला विधा-विशेषक कार्य अनुसार पढ़ब उचित अछि।

२८. सन्तोष कुमार मिश्र — पृ. ७१८–७१९

रचना-सूची: सन्तोष कुमार मिश्र- एकटा पत्र (पृ. ७१८-७१९)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे लोक-अनुभव प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। पृष्ठ-परास छोट अछि, तेँ एकरा लेखकक समग्र कृतित्वक प्रतिनिधि नमूना मानब उचित नहि; संकलनमे एक विशिष्ट क्षण/विधा रूपेँ पढ़ल जाए।

२९. मनोज कुमार मण्डल — पृ. ७२०–७२१

रचना-सूची: मनोज कुमार मण्डल- “बाप भेल पित्ती” ओ “अधिकार” नाटक'क सफल मंचन (पृ. ७२०-७२१)

समीक्षात्मक टिप्पणी: एहि प्रविष्टिमे पाठ आ प्रदर्शनक सम्बन्ध प्रमुख अछि; नाट्य-विधा, मंचीय व्यवहार आ सांस्कृतिक संस्थाक परस्परता एकर मूल्य बढ़बैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे नाट्य/प्रदर्शन, सामाजिक संरचना, मैथिली भाषा/साहित्य, लोक-अनुभव आ भाषिक प्रश्न प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। पृष्ठ-परास छोट अछि, तेँ एकरा लेखकक समग्र कृतित्वक प्रतिनिधि नमूना मानब उचित नहि; संकलनमे एक विशिष्ट क्षण/विधा रूपेँ पढ़ल जाए।

३०. शेफालिका वर्मा — पृ. ७२२–७५४

रचना-सूची: शेफालिका वर्मा- डॉ कलाधर झासँ डॉ. शेफालिका वर्माक साक्षात्कार, रेत आ रेत, रेखाचित्र- ओ कत' हेतीह, एकटा संस्मरण एकटा प्रश्न, संस्मरण- मैथिली (उड़ीसा-१९८५) (पृ. ७२२-७५४)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि संवादात्मक दस्तावेजक रूपमे साहित्यिक-सांस्कृतिक स्मृति सुरक्षित करैत अछि; प्रश्नकर्ता आ उत्तरदाताक स्वरक दूरी आलोचनात्मक रूपेँ ध्यान देबाक योग्य अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे भाषिक प्रश्न, कला-संस्कृति, मैथिली भाषा/साहित्य, बाल-जगत/शिक्षा आ नदी/प्रकृति प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

३१. दुर्गानन्द मण्डल — पृ. ७५५–७६०

रचना-सूची: दुर्गानन्द मण्डल- नेना लेल सुन्दर चित्रकथा, स्वतंत्रता दिवसक अवसरपर किछु स्वतंत्र भरास (पृ. ७५५-७६०)

समीक्षात्मक टिप्पणी: कथात्मक संक्षिप्तता, सामाजिक घटना आ बोलचालक भाषा एहि प्रविष्टिक मुख्य साहित्यिक आधार बनैत अछि; आकार छोट होइतहुँ शीर्षक आ अन्त अर्थक तीव्रता बढ़बैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे लोक-अनुभव, प्रेम/सम्बन्ध, मैथिली भाषा/साहित्य, शासन/सार्वजनिक जीवन आ स्त्री/बेटी-अनुभव प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

३२. नवीन ठाकुर — पृ. ७६१–७६८

रचना-सूची: नवीन ठाकुर- मिथिला उवाच-१, मिथिला उवाच-२ (पृ. ७६१-७६८)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे ग्राम्य जीवन, लोक-अनुभव, सामाजिक संरचना आ प्रेम/सम्बन्ध प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

३३. नवेंदु कुमार झा — पृ. ७६९–८६३

रचना-सूची: नवेंदु कुमार झा- मिथिला आ मैथिली बँटबाक भऽ रहल साजिश, ई गवर्नेंस दिस सरकार बढ़ौलक डेग, नीतीशक सोंझा मोदीक समर्पण, ठंडाक मौसम मे गर्मायत बिहारक राजनीति, जापान आ कनाडाक दौरा पर जयताह मोदी, मैथिल ब्रहमण के किनार लगैलक भाजपा कीर्ति कयलनि सोनिया सँ भेंट, बिहार मे निवेशक इच्छा जनौलक रैल बैक्सी, मधुबनी सहित तीन जगह पर बनत पीपा पूल, पंचायत प्रतिनिधि, प्रदेश मे शौचालय सँ वंचित अछि पैघ आबादी, गंगा नदी पर पूलक माध्यम सँ बढ़त कारोबारक चालि, महिषीमे आयोजित होयत सांस्कृतिक महोत्सव, सर्वसम्मतिसँ सभापति आ उपाध्यक्षक निर्वाचित, बिहारमे शिक्षाक लेल मदति करत विश्व बैंक, केन्द्रीय विश्वविद्यालयक लऽ कऽ राज्य आ केन्द्र मे बढ़ि रहल हार, उत्साहक संग समाप्त शताब्दी समारोह- डा० सच्चिदानंद उपेक्षा पर निधन परिषद् भेलाह नाराज, एस एच जीक माध्यम सँ आगा बढ़त बिहार प्रदेश मे गठित होयत दस लाख एच एच जी, राज्य सभा चुनाव-भाजपा जदयू मे उम्मीदवारक भीड़ तऽ राजदक अस्तित्वक संकट, बिहारक औद्योगिक विकास मे बाधा बनि रहल जमीन आ बिजली, राशन कार्डक होयत डिजिटलीकरण, मिथिलांचल मे माछ उत्पादक भरोसा देलनि मुख्यमंत्री, सौराठ मे खुजत मिथिला चित्रकला संस्थान, जन आंदोलन सँ होयत कोसीक समस्याक समाधान-मेधा पाटेकर, बिहार सहित पांच प्रदेशकेँ अन्नक खरीद बढ़ैबाक निर्देश, 21 फरवरी सँ प्रारंभ होयत विधान मंडलक बजट सत्र, मुख्यमंत्रीक स्वागतक तैयारी कऽ रहल छथि रांटी गामवासी, बढ़ि रहल अछि बालिका शिक्षाक दर, बिहार मे सभ वर्ष मनाओल जायत भूकम्प आ बाढ़ि सुरक्षा सप्ताह, सम्पन्न भेल विद्यालयक स्थापना दिवस, साकेतानन्दजीक मृत्यु कैन्सरसँ २२ दिसम्बर २०११ कैं एक बजे दिनमे पूर्णियाँ मे भऽ गेलन्हि, पुरस्कारक बजार मे लागि रहल बोली, पर्यटक स्थल बनल विस्फी, महिषी पर सेहो अछि नजरि, अन्धरा ठाढ़ी मे बनत स्मारक, सरकार कैं याद अयलनि वाचस्पति मिश्र, साहित्यिक जौहरी छथि अकादमीक मैथिली परामर्शी, शताब्दी वर्ष मे प्रकाशित होयत सय पोथी, विधान परिषद्क शताब्दी वर्षक अवसर पर आयोजित होयत विशेष बैसक, बिहार मे खादी ग्रामोद्योग संस्था सभक विकास, बिहार सरकार जानकी नवमीकेँ अवकाशक घोषणा केलक, उद्यमी सभकेँ स्वयं कर्ज देत सरकार - जीवित होयत वित्त निगम, 15 जनवरी कैं कोसी महासेतूक उद्धाटनक संभावना - एक होयत मिथिलांचल, मजगूत होयत संबंध, 20-21 दिसम्बर कैं होयत शिक्षक पात्रता परीक्षा, बढ़ि रहल प्रवेश पत्र, विधानमंडलक शीतकालीन सत्र समाप्त, पास भेल कतेको विधेयक मधुबनी मे खुजत मिथिला चित्रकला संस्थान सह संग्रहालय,

मिथिला राज्यक विरोध मे उतरलाह डा॰ मिश्र, पर्यटनक उद्योग पर सरकारक बढ़ल जोर विकसित होएत हलेश्वर पुनौरा आ पंथपाकर, लोकायुक्तक मामिला मे सत्ता आ विपक्ष मे गतिरोध, मनाओल गेल दरभंगा महाराजक जन्म दिवस, प्रदेश मे खूजत पशु विश्वविद्यालय, टाका नहि खर्च कएला पर बंद होएत आवंटन, अस्तित्वक लड़ाई लड़ैत सम्पन्न भेल स्मृति पर्व, ग्लोबल भेल चेतना, मंचित भेल नाटक, राजकीय समारोहक रूप मे मनल विद्यापति पर्व, सम्मानित भेलाह विद्वान आ संस्कृतिकर्मी, चेतना समितिक सम्मान - 2011, प्रारंभ भेल नव परम्परा, आयोजित भेल पुस्तक आ चित्रकला प्रदर्शनी, राज्य गीत सँ मिथिला निपत्ता, सरकार पर दबाब बनौलक समिति, खूजत अलग मिथिला प्रदेशक द्वार? छोट प्रदेशक समर्थन कएलनि मुख्यमंत्री, चीनी निगम क मिठास सँ दूर निवेशक, नीलामीक बढ़ल समय सीमा, केसीसीक लेल लागल शिविर, उत्तर बिहार तीन टा रेल लाइनक दोहरीकरणक प्रयास मे आएल तेजी, जन चेतना यात्रा मोदी सँ सचेत अछि भाजपा, प्रधानमंत्री भाजपा, भाजपाक रथ पर सवार भऽ दिल्लीक गद्दी पर पहूचताह नीतीश?, लाल कृष्ण आडवाणीक महगी भ्रष्टाचारक विरूद्ध प्रस्तावित रथयात्रा, बिहारक विकासक लेल प्रदेश मे नव नव उद्योग, अपन कूनबा बचबऽ लेल मैदान मे उतरलाह सुप्रीमो तीरक निषान पर अछि लालटेन, जदयूक वार सँ भोथर भेल विपक्षक धार, सरकारक राष्ट्रीय विरूद्ध आंदोलन करत राजद, डेयरी उद्योग मे रूचि देखौलक इंडियन पोटाष लिमिटड, कोसीक प्रलयक तीन वर्ष, भंगिमाक चुनाव सम्पन्न, कुणाल अध्यक्ष्य आ जयदेव सचिव निर्वाचित, प्रदेश मे लागु भेल सेवाक अधिकार कानून (पृ. ७६९-८६३)

समीक्षात्मक टिप्पणी: एहि प्रविष्टिमे पाठ आ प्रदर्शनक सम्बन्ध प्रमुख अछि; नाट्य-विधा, मंचीय व्यवहार आ सांस्कृतिक संस्थाक परस्परता एकर मूल्य बढ़बैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे मैथिली भाषा/साहित्य, भाषिक प्रश्न, लोक-अनुभव, कला-संस्कृति आ शासन/सार्वजनिक जीवन प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। विस्तृत पृष्ठ-परास एहि लेखक-समूहकेँ संकलनक भीतर स्वतंत्र उप-आर्काइवक स्वरूप दैत अछि; एकर विविध सामग्रीकेँ एकहि सौन्दर्य-कसौटीसँ नापबाक बदला विधा-विशेषक कार्य अनुसार पढ़ब उचित अछि।

३४. शांतिलक्ष्मी चौधरी — पृ. ८६४–८७४

रचना-सूची: शांतिलक्ष्मी चौधरी- नव-नियोजित शिक्षिका आओर शिक्षक - मिथिला मे बदलैत स्त्री आ पुरुख केर संबंध-जाल, मैथिल नारि केर समस्याक समाधान (पृ. ८६४-८७४)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे लोक-अनुभव, सामाजिक संरचना, ग्राम्य जीवन, प्रेम/सम्बन्ध आ बाल-जगत/शिक्षा प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

३५. किशन कारीगर — पृ. ८७५–९०१

रचना-सूची: किशन कारीगर- हास्य कथा- (आब हम जबान भ गेलहुँ, मुन्नी बदनाम भेलैए किएक?, टाई माने रस्सी, मैथिली सीखू), हमर फोटो कहिया (कन्या भ्रूणहत्या पर एकटा कथा), मोछ वाली माउगी- होली पर हास्य कथा (पृ. ८७५-९०१)

समीक्षात्मक टिप्पणी: कथात्मक संक्षिप्तता, सामाजिक घटना आ बोलचालक भाषा एहि प्रविष्टिक मुख्य साहित्यिक आधार बनैत अछि; आकार छोट होइतहुँ शीर्षक आ अन्त अर्थक तीव्रता बढ़बैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे मैथिली भाषा/साहित्य, ग्राम्य जीवन, लोक-अनुभव, गीतात्मकता आ स्त्री/बेटी-अनुभव प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

३६. राम प्रवेश मण्डल — पृ. ९०२–९०२

रचना-सूची: राम प्रवेश मण्डल- विहनि कथा- आह मिथिला! वाह मैथिली! (पृ. ९०२-९०२)

समीक्षात्मक टिप्पणी: कथात्मक संक्षिप्तता, सामाजिक घटना आ बोलचालक भाषा एहि प्रविष्टिक मुख्य साहित्यिक आधार बनैत अछि; आकार छोट होइतहुँ शीर्षक आ अन्त अर्थक तीव्रता बढ़बैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे मैथिली भाषा/साहित्य, भाषिक प्रश्न आ ग्राम्य जीवन प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। पृष्ठ-परास छोट अछि, तेँ एकरा लेखकक समग्र कृतित्वक प्रतिनिधि नमूना मानब उचित नहि; संकलनमे एक विशिष्ट क्षण/विधा रूपेँ पढ़ल जाए।

३७. शैल झा “सागर” — पृ. ९०३–९०५

रचना-सूची: शैल झा “सागर”- एकटा पत्र एकटा समीक्षा- किस्त किस्त जीवन (पृ. ९०३-९०५)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे लोक-अनुभव, मैथिली भाषा/साहित्य, भाषिक प्रश्न, सामाजिक संरचना आ स्त्री/बेटी-अनुभव प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

३८. रमाकान्त राय “रमा” (आचार्य दिव्यचक्षु) — पृ. ९०६–९०९

रचना-सूची: रमाकान्त राय “रमा” (आचार्य दिव्यचक्षु)- आरसी बाबूक व्यक्तित्व एवं कृतित्वपर द्विदिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार- दू दर्जन विद्वानक सहभागिता (पृ. ९०६-९०९)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे मैथिली भाषा/साहित्य, भाषिक प्रश्न, गीतात्मकता, शासन/सार्वजनिक जीवन आ लोक-अनुभव प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

३९. शिव कुमार झा ‘टिल्लू’ — पृ. ९१०–९१३

रचना-सूची: शिव कुमार झा ‘टिल्लू’- मैथिलीपर जातिवादी कलंक (पृ. ९१०-९१३)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे मैथिली भाषा/साहित्य, लोक-अनुभव, भाषिक प्रश्न, सामाजिक संरचना आ प्रवास प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

४०. रवि भूषण पाठक — पृ. ९१४–९१५

रचना-सूची: रवि भूषण पाठक- टिल्लू जी (शिव कुमार झा) (पृ. ९१४-९१५)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे लोक-अनुभव आ ग्राम्य जीवन प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। पृष्ठ-परास छोट अछि, तेँ एकरा लेखकक समग्र कृतित्वक प्रतिनिधि नमूना मानब उचित नहि; संकलनमे एक विशिष्ट क्षण/विधा रूपेँ पढ़ल जाए।

४१. बृषेशचन्द्र लाल — पृ. ९१६–९२६

रचना-सूची: बृषेशचन्द्र लाल- बिद्यापति–स्मृति पर्व मादेँ — बड़ सुख सार पाओल स्मरणे ... (पृ. ९१६-९२६)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे मैथिली भाषा/साहित्य, लोक-अनुभव, भाषिक प्रश्न, आन्दोलन/राजनीति आ बाल-जगत/शिक्षा प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

४२. नारायण झा — पृ. ९२७–९२९

रचना-सूची: नारायण झा- रहुआ संग्राममे गृष्मकालीन शैक्षिक शिविर सह टैगोर पुरस्कारसँ सम्मानित श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक सम्मान समारोह- २०१२ (पृ. ९२७-९२९)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई सांस्कृतिक पत्रकारिताक प्रविष्टि तत्कालीन साहित्यिक जीवनक नाम, आयोजन आ संस्थागत संदर्भ सुरक्षित करैत अछि; एकर अभिलेखीय मूल्य सौन्दर्यात्मक मूल्यसँ अलग लेकिन महत्त्वपूर्ण अछि। शीर्षक-सूची आ उपलब्ध पाठ-नमूना विधागत उपस्थिति स्पष्ट करैत अछि; अतिरिक्त कथानक अनुमानित नहि कएल गेल अछि।

४३. सुमित आनन्द — पृ. ९३०–९४४

रचना-सूची: सुमित आनन्द- शोध-पत्रिका मैथिली एवं मैथिली काव्यमे अलंकारक लोकार्पण, त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन, शोध-पत्रिका मैथिलीक लोकार्पण, ‘मैथिली’ शोध-पत्रिकाक लोकार्पण, कार्यशालाक आयोजन, अनुवाद कार्यशालाक आयोजन, भाव-भूमि रसवंत पुस्तकक लोकार्पण (पृ. ९३०-९४४)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई सांस्कृतिक पत्रकारिताक प्रविष्टि तत्कालीन साहित्यिक जीवनक नाम, आयोजन आ संस्थागत संदर्भ सुरक्षित करैत अछि; एकर अभिलेखीय मूल्य सौन्दर्यात्मक मूल्यसँ अलग लेकिन महत्त्वपूर्ण अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे मैथिली भाषा/साहित्य, लोक-अनुभव, भाषिक प्रश्न, गीतात्मकता आ शासन/सार्वजनिक जीवन प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

४४. मिथिलेश मंडल — पृ. ९४५–९४६

रचना-सूची: मिथिलेश मंडल- मरनी बेटी, कथा- सुदिक रूपैआ (पृ. ९४५-९४६)

समीक्षात्मक टिप्पणी: कथात्मक संक्षिप्तता, सामाजिक घटना आ बोलचालक भाषा एहि प्रविष्टिक मुख्य साहित्यिक आधार बनैत अछि; आकार छोट होइतहुँ शीर्षक आ अन्त अर्थक तीव्रता बढ़बैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे लोक-अनुभव, ग्राम्य जीवन, स्त्री/बेटी-अनुभव आ शासन/सार्वजनिक जीवन प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। पृष्ठ-परास छोट अछि, तेँ एकरा लेखकक समग्र कृतित्वक प्रतिनिधि नमूना मानब उचित नहि; संकलनमे एक विशिष्ट क्षण/विधा रूपेँ पढ़ल जाए।

४५. नवीन कुमार आशा — पृ. ९४७–९५८

रचना-सूची: नवीन कुमार आशा- फेर सँ वर रहलाह कुमार, बेटीक जन्म (पृ. ९४७-९५८)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे स्त्री/बेटी-अनुभव, दहेज-समस्या, सामाजिक संरचना, लोक-अनुभव आ ग्राम्य जीवन प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

४६. उमेश मण्डल — पृ. ९५९–१०१२

रचना-सूची: उमेश मण्डल- कनफेड़सँ मुँहफेड़, कुसियारक मारि, सगर राति दीप जरए, हजारीबाग, 75म कथा गोष्ठीमे 39 टा कथापाठ, विदेह साहित्य उत्सव २०१२/ विदेह सम्मान समारोह (विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादेमी- मैथिली पुरस्कार सह काव्य गोष्ठी), मिथिलांचलक प्राथमिक आ मध्य विद्यालयी शिक्षाक माध्यम् मैथिली हेतु ‘विदेह’ विचार गोष्ठी, विदेह नाट्य उत्सव- 2012, मैथिलीमे ई-पत्रकारिता, उमेश मण्डलजी द्वारा श्री जगदीश प्रसाद मण्डलसँ साक्षात्कार, उमेश मण्डलक साक्षात्कार ले.क. मायानाथ झासँ (पृ. ९५९-१०१२)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि संवादात्मक दस्तावेजक रूपमे साहित्यिक-सांस्कृतिक स्मृति सुरक्षित करैत अछि; प्रश्नकर्ता आ उत्तरदाताक स्वरक दूरी आलोचनात्मक रूपेँ ध्यान देबाक योग्य अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे मैथिली भाषा/साहित्य, भाषिक प्रश्न, शासन/सार्वजनिक जीवन, सामाजिक संरचना आ लोक-अनुभव प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। विस्तृत पृष्ठ-परास एहि लेखक-समूहकेँ संकलनक भीतर स्वतंत्र उप-आर्काइवक स्वरूप दैत अछि; एकर विविध सामग्रीकेँ एकहि सौन्दर्य-कसौटीसँ नापबाक बदला विधा-विशेषक कार्य अनुसार पढ़ब उचित अछि।

४७. परमेश झा आ अनिलचन्द्र झा — पृ. १०१३–१०१३

रचना-सूची: परमेश झा आ अनिलचन्द्र झा- मिथिला राज्य आन्दोलन (पृ. १०१३-१०१३)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे लोक-अनुभव, कला-संस्कृति, आन्दोलन/राजनीति आ मैथिली भाषा/साहित्य प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। पृष्ठ-परास छोट अछि, तेँ एकरा लेखकक समग्र कृतित्वक प्रतिनिधि नमूना मानब उचित नहि; संकलनमे एक विशिष्ट क्षण/विधा रूपेँ पढ़ल जाए।

४८. प्रा.परमेश्वर कापड़ि — पृ. १०१४–१०२०

रचना-सूची: प्रा.परमेश्वर कापड़ि- मिथिला राज्य संघर्ष, मैथिली कथाक परिवेश आ प्रवृति विमर्श, जनकपुरमे कथा–गोष्ठी सम्पन्न (पृ. १०१४-१०२०)

समीक्षात्मक टिप्पणी: कथात्मक संक्षिप्तता, सामाजिक घटना आ बोलचालक भाषा एहि प्रविष्टिक मुख्य साहित्यिक आधार बनैत अछि; आकार छोट होइतहुँ शीर्षक आ अन्त अर्थक तीव्रता बढ़बैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे मैथिली भाषा/साहित्य, लोक-अनुभव, आन्दोलन/राजनीति, शासन/सार्वजनिक जीवन आ भाषिक प्रश्न प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

४९. कुमार पृथु — पृ. १०२१–१०२३

रचना-सूची: कुमार पृथु- कथा–गोष्ठी (पृ. १०२१-१०२३)

समीक्षात्मक टिप्पणी: कथात्मक संक्षिप्तता, सामाजिक घटना आ बोलचालक भाषा एहि प्रविष्टिक मुख्य साहित्यिक आधार बनैत अछि; आकार छोट होइतहुँ शीर्षक आ अन्त अर्थक तीव्रता बढ़बैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे लोक-अनुभव, भाषिक प्रश्न, मैथिली भाषा/साहित्य, स्त्री/बेटी-अनुभव आ प्रेम/सम्बन्ध प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

५०. पूनम मंडल — पृ. १०२४–१०३८

रचना-सूची: पूनम मंडल- दाग (उपन्यास): गौरीनाथ- लोकार्पण, "सगर राति दीप जरय"क दोसर फेज (चरण)क पहिल सगर राति दीप जरय ०१ दिसम्बर

२०१२ शनि दिन सन्ध्याकेँ कैं दरभंगामे -"सगर राति दीप जरय"क दोसर फेज (चरण)क पहिल सगर राति दीप जरय ०१ दिसम्बर २०१२ शनि दिन सन्ध्याकेँ कैं दरभंगामे, समन्वय २-४ नवम्बर २०१२ इण्डिया हैबीटेट सेन्टर भारतीय भाषा महोत्सव, ३ नवम्बरकेँ मैथिलीमे ब्राह्मणवाद, ज्योतिरीश्वरपूर्व विद्यापति आ मैथिलीमे प्रेमक गीतपर भेल बहस, स्थानीय कवि परिषद (सलहेसबाबा परिसर- औरहा) वार्षिकोत्सव- 2012, दिल्लीमे गूंजल मैथिली कविता, ५१ साझा पुरस्कारक घोषणा, प्राज्ञ भ्रमर साझा पुरस्कारसं सम्मानित (पृ. १०२४-१०३८)

समीक्षात्मक टिप्पणी: गीतात्मक पुनरावृत्ति, सामुदायिक स्मृति आ अवसर-सम्बद्धता एहि सामग्रीक प्रमुख गुण अछि; लिखित रूप मौखिक/प्रदर्शनपरक परम्पराक अभिलेख बनैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे मैथिली भाषा/साहित्य, लोक-अनुभव, ग्राम्य जीवन, भाषिक प्रश्न आ सामाजिक संरचना प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

५१. नबो नारायण मिश्र (कोकिल मंच) द्वारा मैथिलीक अग्निकवि श्री रामलोचन ठाकुरसँ साक्षात्कार, नबोनारायण मिश्र जी द्वारा लेल साक्षात्कार — पृ. १०३९–१०४८

रचना-सूची: नबो नारायण मिश्र (कोकिल मंच) द्वारा मैथिलीक अग्निकवि श्री रामलोचन ठाकुरसँ साक्षात्कार, नबोनारायण मिश्र जी द्वारा लेल साक्षात्कार- किशोरीकान्त मिश्र जी सँ (पृ. १०३९-१०४८)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि संवादात्मक दस्तावेजक रूपमे साहित्यिक-सांस्कृतिक स्मृति सुरक्षित करैत अछि; प्रश्नकर्ता आ उत्तरदाताक स्वरक दूरी आलोचनात्मक रूपेँ ध्यान देबाक योग्य अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे मैथिली भाषा/साहित्य, रंगमंच, नाट्य/प्रदर्शन, लोक-अनुभव आ ग्राम्य जीवन प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

५२. लक्ष्मी दास — पृ. १०४९–१०४९

रचना-सूची: लक्ष्मी दास- अपन सन मुँह (पृ. १०४९-१०४९)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे ग्राम्य जीवन प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। पृष्ठ-परास छोट अछि, तेँ एकरा लेखकक समग्र कृतित्वक प्रतिनिधि नमूना मानब उचित नहि; संकलनमे एक विशिष्ट क्षण/विधा रूपेँ पढ़ल जाए।

५३. संस्कृति वर्मा — पृ. १०५०–१०५०

रचना-सूची: संस्कृति वर्मा- मेहनत (पृ. १०५०-१०५०)

५४. प्रभात राय भट्ट — पृ. १०५१–१०५३

रचना-सूची: प्रभात राय भट्ट- मिथिला गर्भपुत्र (पृ. १०५१-१०५३)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे भाषिक प्रश्न, गीतात्मकता, प्रेम/सम्बन्ध, नदी/प्रकृति आ ग्राम्य जीवन प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

५५. डॉ॰ शशिधर कुमर — पृ. १०५४–१०९५

रचना-सूची: डॉ॰ शशिधर कुमर- उड़ि ने सकी पर चिड़ै छी हम (भाग-१-२), दक्षिणी ध्रुव पर मनुक्खक पएरक सए वर्ष अर्थात् खिस्सा अण्टार्कटिका केर (पृ. १०५४-१०९५)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे नदी/प्रकृति आ ग्राम्य जीवन प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। विस्तृत पृष्ठ-परास एहि लेखक-समूहकेँ संकलनक भीतर स्वतंत्र उप-आर्काइवक स्वरूप दैत अछि; एकर विविध सामग्रीकेँ एकहि सौन्दर्य-कसौटीसँ नापबाक बदला विधा-विशेषक कार्य अनुसार पढ़ब उचित अछि।

६. लेखक-रचना अनुसार सम्पूर्ण पद्य, दृश्य आ ग्रहण समीक्षा

एहि भागमे अनुक्रमक सभ ७२ पद्य/दृश्य/ग्रहण प्रविष्टि क्रमशः देल गेल अछि। चित्रक विश्लेषण दृश्य पृष्ठक प्रत्यक्ष अवलोकनपर आधारित अछि; प्रतीकात्मक अर्थ केवल देखाइत लक्षण धरि सीमित अछि।

१. राजेश मोहन झा 'गुंजन' — पृ. १०९७–११०५

रचना-सूची: राजेश मोहन झा 'गुंजन'- ज्योतिषी जीक तांडव, परिवार नियोजन, वसंत गीत, होलीक तरंग, मुस्की रहल उदासे, माय मनाइन (पृ. १०९७-११०५)

समीक्षात्मक टिप्पणी: गीतात्मक पुनरावृत्ति, सामुदायिक स्मृति आ अवसर-सम्बद्धता एहि सामग्रीक प्रमुख गुण अछि; लिखित रूप मौखिक/प्रदर्शनपरक परम्पराक अभिलेख बनैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे ग्राम्य जीवन, सामाजिक संरचना, लोक-अनुभव, गीतात्मकता आ कला-संस्कृति प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

२. आनंद कुमार झा — पृ. ११०६–१११७

रचना-सूची: आनंद कुमार झा- गै माए, मिथिला क बात सुनबै छी (तर्ज भारत का रहनेवाला हूँ), माँ मैथिलीक चरण मे अर्पित, जं बाजी त गलत बजय छी, जय मिथिला जय मैथिली, मैया अहाँ बसै छी, याद आयल, मिथिलाक नवयुवक कने नींदसँ जागू, सब परा गेल गाम घर स सुन्न परल अछि दालान यो, भटकि रहल छी तरपि रहल छी (पृ. ११०६-१११७)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे ग्राम्य जीवन, मैथिली भाषा/साहित्य, गीतात्मकता, बाल-जगत/शिक्षा आ भाषिक प्रश्न प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

३. रमाकान्त राय 'रमा' — पृ. १११८–११२०

रचना-सूची: रमाकान्त राय 'रमा'- बिहार विधानसभा चुनव-प्रचारपर कवि दृष्टि- सांझुक सांझे उपास (पृ. १११८-११२०)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे ग्राम्य जीवन, मैथिली भाषा/साहित्य, बाल-जगत/शिक्षा आ कला-संस्कृति प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

४. चन्दन झा — पृ. ११२१–११२४

रचना-सूची: चन्दन झा- बीतल माघ फागुन आयल, संस्कृतिक विडंबना, की भऽ रहल अछि अपना गाममे (पृ. ११२१-११२४)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे ग्राम्य जीवन, भाषिक प्रश्न, मैथिली भाषा/साहित्य आ स्त्री/बेटी-अनुभव प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

५. संजय कुमार मंडल — पृ. ११२५–११२९

रचना-सूची: संजय कुमार मंडल- डेंगू, माघक जाड़ (पृ. ११२५-११२९)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे ग्राम्य जीवन, शासन/सार्वजनिक जीवन आ लोक-अनुभव प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

६. संस्कृति वर्मा — पृ. ११३०–११३०

रचना-सूची: संस्कृति वर्मा- हमर देश (पृ. ११३०-११३०)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। शीर्षक-सूची आ उपलब्ध पाठ-नमूना विधागत उपस्थिति स्पष्ट करैत अछि; अतिरिक्त कथानक अनुमानित नहि कएल गेल अछि। छोट नमूना लेखकक समग्र काव्य-निर्णय लेल पर्याप्त नहि; ई संकलन-विशेषमे उपलब्ध स्वरक संकेत भरि अछि।

७. जगदीश प्रसाद मण्डल — पृ. ११३१–११३३

रचना-सूची: जगदीश प्रसाद मण्डल- कविता/ गीत- मधुमाछी (पृ. ११३१-११३३)

समीक्षात्मक टिप्पणी: गीतात्मक पुनरावृत्ति, सामुदायिक स्मृति आ अवसर-सम्बद्धता एहि सामग्रीक प्रमुख गुण अछि; लिखित रूप मौखिक/प्रदर्शनपरक परम्पराक अभिलेख बनैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे गीतात्मकता आ बाल-जगत/शिक्षा प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

८. नन्द विलास राय — पृ. ११३४–११३६

रचना-सूची: नन्द विलास राय- किछु पद्य (पृ. ११३४-११३६)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। शीर्षक-सूची आ उपलब्ध पाठ-नमूना विधागत उपस्थिति स्पष्ट करैत अछि; अतिरिक्त कथानक अनुमानित नहि कएल गेल अछि।

९. डॉ शेफालिका वर्मा — पृ. ११३७–११५०

रचना-सूची: डॉ शेफालिका वर्मा- नै रचू अहाँ इतिहास हमर, अहांक हास, प्रकृति- पुरुष, बीतल इतिहास, कोसी नदी, पाथर, हम आबि रहल छी.., ठप्पा (पृ. ११३७-११५०)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे ग्राम्य जीवन, स्त्री/बेटी-अनुभव, नदी/प्रकृति, लोक-अनुभव आ स्त्री-अनुभव प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

१०. मनोज झा मुक्ति — पृ. ११५१–११५६

रचना-सूची: मनोज झा मुक्ति- ककरा करु विश्वास!, पसरल अत्याचार, गामक सावन (पृ. ११५१-११५६)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे ग्राम्य जीवन आ सामाजिक संरचना प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

११. प्रभात राय भट्ट — पृ. ११५७–१२००

रचना-सूची: प्रभात राय भट्ट- किछु गजल, गीत:-विरह, दहेज मुक्त मिथिला बनाबू, तड़पि-तड़पि बाँचि रहल छी, कतय गेलै चितचोर, गरीबक जिनगी भेल पहार, चलैतछी डगैर पैर, हम नै ज्याब आब मेला अकेला, हैंस दिय कनियाँ, हमर बाबुजी छथि बड होसियार, ६०१ सभासद महान, पेट किऐ जरैत, नैन किए भरि गेल, देलौ हम पेटकुनिया, दुल्हे पीयोलक जहर, गाम आबि जाऊ, आदर्श विवाह, कुमारी धिया, बालविबाह, बालविधवा, हमर परिचय, गीत स्वतंत्रताक, माहासंग्राम, हम रहैत छी परदेश, मिथिलाधाम, सपना देख्लौ बड अजगुत, गीत वियोगक, गंगा तट स: हिमालय केर पट, मिथिला माए, मजदुर !!! (पृ. ११५७-१२००)

समीक्षात्मक टिप्पणी: गजल/रुबाइक अनुशासन स्थानीय अनुभव आ मैथिली अभिव्यक्तिसँ मिलि आधुनिक विधागत प्रयोग रचैत अछि; विषय-विविधता एहि रूप कैँ केवल प्रेमकाव्य धरि सीमित नहि रखैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे बाल-जगत/शिक्षा, दहेज-समस्या, शासन/सार्वजनिक जीवन, सामाजिक संरचना आ गजल-विधा प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। दीर्घ पृष्ठ-परास कारण एहि प्रविष्टिमे स्वर/विषयक बहुलता अछि; संकलनक सम्पूर्ण पद्य-दृश्य संसारमे एकर भार पर्याप्त अछि।

१२. डॉ जया वर्मा — पृ. १२०१–१२०२

रचना-सूची: डॉ जया वर्मा- सागर आ मोन (पृ. १२०१-१२०२)

१३. संजय कुमार झा — पृ. १२०३–१२११

रचना-सूची: संजय कुमार झा- बौआ बिसरि गेलहक, जन्म सों मैथिल, कर्म सों मैथिल, चलू दोस यौ गाम (पृ. १२०३-१२११)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे ग्राम्य जीवन, स्त्री/बेटी-अनुभव, गीतात्मकता आ नाट्य/प्रदर्शन प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

१४. जीवकान्त — पृ. १२१२–१२१३

रचना-सूची: जीवकान्त- एक दिन (पृ. १२१२-१२१३)

१५. सदरे आलम "गौहर" — पृ. १२१४–१२१९

रचना-सूची: सदरे आलम "गौहर"- किछु आजाद गजल, एकटा रुबाइ (पृ. १२१४-१२१९)

समीक्षात्मक टिप्पणी: गजल/रुबाइक अनुशासन स्थानीय अनुभव आ मैथिली अभिव्यक्तिसँ मिलि आधुनिक विधागत प्रयोग रचैत अछि; विषय-विविधता

एहि रूप कें केवल प्रेमकाव्य धरि सीमित नहि रखैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे गजल-विधा, शासन/सार्वजनिक जीवन, लोक-अनुभव, मैथिली भाषा/साहित्य आ स्त्री/बेटी-अनुभव प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

१६. जितमोहन झा (जितू) — पृ. १२२०–१२२५

रचना-सूची: जितमोहन झा (जितू)- मैथिली होली गीत, दोसर फगुआ गीत...., गीत (पृ. १२२०-१२२५)

समीक्षात्मक टिप्पणी: गीतात्मक पुनरावृत्ति, सामुदायिक स्मृति आ अवसर-सम्बद्धता एहि सामग्रीक प्रमुख गुण अछि; लिखित रूप मौखिक/प्रदर्शनपरक परम्पराक अभिलेख बनैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे गीतात्मकता, ग्राम्य जीवन, लोक-अनुभव आ मैथिली भाषा/साहित्य प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

१७. अक्षय कुमार चौधरी — पृ. १२२६–१२२७

रचना-सूची: अक्षय कुमार चौधरी- दियाद बलजोर (पृ. १२२६-१२२७)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे लोक-अनुभव, सामाजिक संरचना, स्त्री/बेटी-अनुभव आ ग्राम्य जीवन प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। छोट नमूना लेखकक समग्र काव्य-निर्णय लेल पर्याप्त नहि; ई संकलन-विशेषमे उपलब्ध स्वरक संकेत भरि अछि।

१८. जवाहर लाल कश्यप — पृ. १२२८–१२३६

रचना-सूची: जवाहर लाल कश्यप- हम नहि लिखैत छी कविता, पानिक बुंद चढैत अछि आगि पर, ई की भेल?, स्नेह-सूत्र टुटि गेल, उद्वेलित केने अछि / एकटा प्रश्न, परदेसक ओर, कौआ आउर बगरा, अन्नाकेँ समर्पित (पृ. १२२८-१२३६)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे व्यंग्य, प्रेम/सम्बन्ध आ ग्राम्य जीवन प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

१९. मुन्ना जी — पृ. १२३७–१२३८

रचना-सूची: मुन्ना जी- सबला (पृ. १२३७-१२३८)

२०. गणेश कुमार झा "बावरा" — पृ. १२३९–१२४२

रचना-सूची: गणेश कुमार झा "बावरा"- विरह, कैंचा (पृ. १२३९-१२४२)

समीक्षात्मक टिप्पणी: “विरह” निजी प्रेमक अनुपस्थितिक भाव रचैत अछि, जखन “कैंचा” धनक सर्वव्यापी सामाजिक प्रभाव पर तीखा व्यंग्य करैत अछि। एहि दू रचनाक संगति निजी संवेदना आ सार्वजनिक नैतिकता बीचक दायरा खोलैत अछि।

२१. सुबोध कुमार ठाकुर — पृ. १२४३–१२४६

रचना-सूची: सुबोध कुमार ठाकुर- एहेन जीवन जिबितौं, हम नै खेलब होली (पृ. १२४३-१२४६)

समीक्षात्मक टिप्पणी: “हम नै खेलब होली” उत्सवक सामूहिक उल्लास कें विरहक निजी रिक्ततासँ काटैत अछि; रंगक पर्व अनुपस्थित प्रियजनक कारण अस्वीकृत भऽ जाइत अछि। ई पारम्परिक ऋतु-उत्सवक भावभूमिक भीतर आधुनिक आत्मस्वरक उदाहरण अछि।

२२. किशन कारीगर — पृ. १२४७–१२७१

रचना-सूची: किशन कारीगर- चाह पीबू- (हास्य कविता), पुरस्कार लऽ के नाचू, नोर झहरि रहल छल, सेहन्ता, गरीब, गीत, किछु त हम करब, भिन भिनौज, कक्का हमर उचक्का- होली पर हास्य कविता (पृ. १२४७-१२७१)

समीक्षात्मक टिप्पणी: गीतात्मक पुनरावृत्ति, सामुदायिक स्मृति आ अवसर-सम्बद्धता एहि सामग्रीक प्रमुख गुण अछि; लिखित रूप मौखिक/प्रदर्शनपरक परम्पराक अभिलेख बनैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे लोक-अनुभव, प्रेम/सम्बन्ध, ग्राम्य जीवन, भाषिक प्रश्न आ सामाजिक संरचना प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

२३. पंकज कुमार झा — पृ. १२७२–१२८३

रचना-सूची: पंकज कुमार झा- ओझरैल हमर बौद्धिक मोन, आनंदक रहस्य, सृष्टिक खेल, सचक पथ, संतुलन आ असंतुलन के खेल, ठाढ़ छी, अईंखक दोख आ कि हृदयक, आऊ चलु (पृ. १२७२-१२८३)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे प्रेम/सम्बन्ध, गीतात्मकता आ कला-संस्कृति प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

२४. उमेश मण्डल — पृ. १२८४–१३४६

रचना-सूची: उमेश मण्डल- संस्कार गीत (संकलन) (पृ. १२८४-१३४६)

समीक्षात्मक टिप्पणी: गीतात्मक पुनरावृत्ति, सामुदायिक स्मृति आ अवसर-सम्बद्धता एहि सामग्रीक प्रमुख गुण अछि; लिखित रूप मौखिक/प्रदर्शनपरक परम्पराक अभिलेख बनैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे गीतात्मकता प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। दीर्घ पृष्ठ-परास कारण एहि प्रविष्टिमे स्वर/विषयक बहुलता अछि; संकलनक सम्पूर्ण पद्य-दृश्य संसारमे एकर भार पर्याप्त अछि।

२५. दुर्गानन्द मण्डल — पृ. १३४७–१३४९

रचना-सूची: दुर्गानन्द मण्डल- हम देखलौं, हम हिन्दुस्तानी छी (पृ. १३४७-१३४९)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे भाषिक प्रश्न, बाल-जगत/शिक्षा आ कला-संस्कृति प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

२६. डॉ. अजीत मिश्र — पृ. १३५०–१३५७

रचना-सूची: डॉ. अजीत मिश्र- दुर्गा चालीसा (पृ. १३५०-१३५७)

समीक्षात्मक टिप्पणी: गीतात्मक पुनरावृत्ति, सामुदायिक स्मृति आ अवसर-सम्बद्धता एहि सामग्रीक प्रमुख गुण अछि; लिखित रूप मौखिक/प्रदर्शनपरक परम्पराक अभिलेख बनैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे मैथिली भाषा/साहित्य, शासन/सार्वजनिक जीवन, भाषिक प्रश्न, सामाजिक संरचना आ ग्राम्य जीवन प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

२७. सुनील कुमार झा — पृ. १३५८–१३६२

रचना-सूची: सुनील कुमार झा- हाइकू / शेनर्यू (पृ. १३५८-१३६२)

समीक्षात्मक टिप्पणी: अति-संक्षिप्त रूप क्षण, बिम्ब आ व्यंग्यक अर्थ-घनत्व पर निर्भर अछि; एकरा केवल वर्णगणनाक अनुकरण नहि, मैथिली लघु-काव्य प्रयोग रूपेँ पढ़ब अधिक फलदायी अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे गीतात्मकता आ कला-संस्कृति प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

२८. आशीष अनचिन्हार — पृ. १३६३–१३७३

रचना-सूची: आशीष अनचिन्हार- पंचसती-पंचउपसती, छत्तीस-चौबीस-छत्तीस, दू टा गद्य कविता (पृ. १३६३-१३७३)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे लोक-अनुभव आ प्रेम/सम्बन्ध प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

२९. धीरेन्द्र प्रेमर्षि — पृ. १३७४–१३७४

रचना-सूची: धीरेन्द्र प्रेमर्षि- आजाद गजल (पृ. १३७४-१३७४)

समीक्षात्मक टिप्पणी: गजल/रुबाइक अनुशासन स्थानीय अनुभव आ मैथिली अभिव्यक्तिसँ मिलि आधुनिक विधागत प्रयोग रचैत अछि; विषय-विविधता एहि रूप केँ केवल प्रेमकाव्य धरि सीमित नहि रखैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे प्रेम/सम्बन्ध आ गजल-विधा प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। छोट नमूना लेखकक समग्र काव्य-निर्णय लेल पर्याप्त नहि; ई संकलन-विशेषमे उपलब्ध स्वरक संकेत भरि अछि।

३०. रूबी झा — पृ. १३७५–१४००

रचना-सूची: रूबी झा- १४ टा कविता, किछु गजल (पृ. १३७५-१४००)

समीक्षात्मक टिप्पणी: गजल/रुबाइक अनुशासन स्थानीय अनुभव आ मैथिली अभिव्यक्तिसँ मिलि आधुनिक विधागत प्रयोग रचैत अछि; विषय-विविधता एहि रूप कैं केवल प्रेमकाव्य धरि सीमित नहि रखैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे प्रेम/सम्बन्ध, स्त्री/बेटी-अनुभव, गजल-विधा, दहेज-समस्या आ गीतात्मकता प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

३१. मुन्नी कामत — पृ. १४०१–१४११

रचना-सूची: मुन्नी कामत- जड़ैत ज्योत, जिंदगीक मरीचिका, ताकैत जिनगी कूड़ा ढ़ेरमे, संकल्प, ठमकल शब्द, दहेजक बिहाड़ि, हरैल हमर रूप, विदाइ (पृ. १४०१-१४११)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे स्त्री/बेटी-अनुभव, दहेज-समस्या, ग्राम्य जीवन आ सामाजिक संरचना प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

३२. चंदन कुमार झा — पृ. १४१२–१४५४

रचना-सूची: चंदन कुमार झा- हमहू पढबै आब, फेर हेतइ भोर, बेटी बन्हलीह परिणय डोर, दीप, जे भान नहि !!, भय, बज्जर धरती पर, मोन होइए जे, हमर करेजा, बिडम्बना, मोनक बात, मूरख मंत्री, निरपट सरकार, मायक सपथ छी दऽ रहल, घुमि अयलहु कुशेश्वर-स्थान, बाड़ी बदलल वृन्दावन मे, सिखनिहार सँ बेशी सिखौनिहार छै जगमे, अकान, झमझम बरसै छै बून्नी, निर्लज्जा के आब भगाबू , हे, बुझलियै की ?, किछु हाइकु आ शेन्र्यु (पृ. १४१२-१४५४)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे लोक-अनुभव, स्त्री/बेटी-अनुभव आ ग्राम्य जीवन प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। दीर्घ पृष्ठ-परास कारण एहि प्रविष्टिमे स्वर/विषयक बहुलता अछि; संकलनक सम्पूर्ण पद्य-दृश्य संसारमे एकर भार पर्याप्त अछि।

३३. पवन कुमार साह — पृ. १४५५–१४५६

रचना-सूची: पवन कुमार साह- गीत (पृ. १४५५-१४५६)

समीक्षात्मक टिप्पणी: गीतात्मक पुनरावृत्ति, सामुदायिक स्मृति आ अवसर-सम्बद्धता एहि सामग्रीक प्रमुख गुण अछि; लिखित रूप मौखिक/प्रदर्शनपरक परम्पराक अभिलेख बनैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे गीतात्मकता प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। छोट नमूना लेखकक समग्र काव्य-निर्णय लेल पर्याप्त नहि; ई संकलन-विशेषमे उपलब्ध स्वरक संकेत भरि अछि।

३४. श्यामल सुमन — पृ. १४५७–१४६०

रचना-सूची: श्यामल सुमन- किछु गजल सन (पृ. १४५७-१४६०)

समीक्षात्मक टिप्पणी: गजल/रुबाइक अनुशासन स्थानीय अनुभव आ मैथिली अभिव्यक्तिसँ मिलि आधुनिक विधागत प्रयोग रचैत अछि; विषय-विविधता एहि रूप कैं केवल प्रेमकाव्य धरि सीमित नहि रखैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे सामाजिक संरचना, लोक-अनुभव, गीतात्मकता, ग्राम्य जीवन आ गजल-विधा प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

३५. नवीन कुमार "आशा" — पृ. १४६१–१४६७

रचना-सूची: नवीन कुमार "आशा"- बेटी हमर अभिमान, की फुराएल ने जानि, मिथिलामे बसए प्राण (पृ. १४६१-१४६७)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे स्त्री/बेटी-अनुभव, लोक-अनुभव, ग्राम्य जीवन, सामाजिक संरचना आ मैथिली भाषा/साहित्य प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

३६. डॉ. शशिधर कुमर — पृ. १४६८–१८५०

रचना-सूची: डॉ. शशिधर कुमर- डॉ॰ शशिधर कुमर- मधुश्रवणी गीत- १, मधुश्रवणी गीत- २, सिनुरदानक गीत, परिछनि गीत (द्विरागमन / दुरागमन / गौना केर बादक परिछनि), माँ शारदे वन्दना- १, माँ शारदे वन्दना- २, पूणा प्रवास (१-३), सुन्नरि प्रिया, साओन मे विरह, अहीं सञो कहै छी, अप्पन नैना सम्हार !, हम नञि रोकब, तोहर जिनगी मे वसन्तक लय, बिसरि ने सकब, अहँक नेह केर छोट सनि जे छवि अछि, हम की करू ?, विरह गीत, मिलनोत्सुका गीत, मिलन गीत, आगामी जानकी नवमी / मिथिला दिवस / मैथिली दिवस पर विशेष- भजु धरणिसुता (किर्तन), माँ जानकी वन्दना (किर्तन), किए मैथिलीक आङ्गन उदास

लगैए ?, हए बसन्ती पवन, कने धीरे तौँ चल, शान्तिक सपूत संग्राम करय, कहिया तक शान्ति हो ? (आवाहन गीत), जयति जयति मिथिले (जन्मभूमि स्तुति गीत), कोयली कानय भोरहि सँ, तीन तिरहुतिया, तेरह पाक, नञि पत्र एकहु टा लीखल, अहंकार, आयल वसन्त नेने, नव - नव उमंग, देखू आयल बसन्त, आयल होलीक दिन मतवारी, आयल होली केर तिहार, छायल मिथिला मे आजु बसन्त, हे ऐ भौजी, रूसलि किए छी?, सभ हीलि मीलि कऽ गाउ, जयति जय श्री त्रिपुरारी केर (आगामी शिवराति पर विशेष), बसन्तक आगमण पर, कामिनी! जुनि तोड़ू अहँ फूल, मातृभूमि निज मिथिला अछि, छी वासी हिन्दुस्तान के, हे अए (ऐ) हमर शशिकामिनी (गीत) (आगामी वेलेण्टाइन डे पर विशेष), बाबा विद्यापतिक कथन, नोर बहओने किछु नञि होयत, मातृ – भू वन्दना, धिया-पुता जनकक वंशज हम, ओ व्यक्ति की? , सखि तोहर मुखक तुलना के कर, प्रथम् पुज्य मिथिला हमर शत् - शत् प्रणाम , नवकी कनिञा, कल्पनाक यान सँ, किए हँसबै छऽ मिथिला केर नाम भैय्या ?, ककरा दृष्टि मे नीक, के कह ?, की इएह कहाबैछ सुन्नरता ??, चकोरक उक्ति चानक प्रति, अहाँ सपनहि मे आबै छी, आयल करू, सुनू यौ भारत केर सरकार ! , नोर, हम कनितहु, कानि ने सकइत छी, सभ सँ रसगर माएक भाषा, गे सजनी! फोल कने फेर ठोर, हम नञि कहब कि, बरसातक एक राति, नभ श्याम, धरा श्याम, सभ श्यामल श्यामल, आयल साओन मास सोहाओन, मेघ, हम मैथिल! मिथिला केर सन्तान, बसात (हवा), हे प्रिय! अहँक सुन्नर मुखड़ा, बनि जयतहुँ हम बच्चा, आबहु मिता छोड़ू, अरिकोंच, आजाद गजल सचित्र बाल कविता (उड़ीस, उल्लू, ऊद या ऊदबिलाड़ि, कठखोद्धी या कठखोधी, कठसुग्गी, कबार, करांकुल, किताबी कीड़ा, कोइली, गेंड़ा, घियारी कीड़ा या कुम्हरा भेम्ह, घोरन, चकबा या चकेबा, चकोर, टिटही, कड़रिक सितुआ या कड़रिक शितुआ या जोंकती, खुरचनि सितुआ या खुरचनि शितुआ, गिरगिट, ठिकठिकिआ / ठिकठिकिया, गोहि, सनगोहि, डोकहर, ढील आ लीख, देबाड़ या दिबाड़, धनछुआ, नीलकण्ठ या असली नीलकण्ठ, पएर तर बगरा, बाप रौ बाप ! !, पपीहा , पहाड़ी मएना, पाकल आम, पानिकौआ या पानिकौर, पानिडुब्बी (उच्चा॰-पैनडुब्बी) या मछरेंगा, पोरकी या पौड़की, बगरा या बगड़ा, बगेरी, बत्तख, बागर, बिढ़नी, बेङ्ग, भगजोगनी, भेम्ह या भम्हरा, मच्छर, माटिखोद्धी या माटिखोधी, मोहखा या मोखा, राजहंस या हंसावर, लुक्खी, सतबहिनी, साही, सिरोली या सिरोली मएना, सिरौली या नकली नीलकण्ठ, सिल्ली, सुग्गा, सूरा आ फाड़ा, हँसुआ दाबी, हंस, हंसक या जलपद) (पृ. १४६८-१८५०)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई विशाल पद्य-समूहक विस्तार असाधारण अछि। मधुश्रावणी, विवाह, वन्दना, ऋतु-पर्व, प्रवास, प्रेम आ मातृभूमिसँ लऽ कऽ जीव-जंतु/पक्षी/कीटपर सचित्र बाल-कविता धरि विषय फैलल अछि। खास कऽ प्राकृतिक जीवक मैथिली नाम, पद्यात्मक वर्णन आ “संकेत/रोचक तथ्य” जोड़लापर बाल-कविता ज्ञान-विज्ञानक जनभाषिक माध्यम बनैत अछि।

३७. सत्यनारायण झा — पृ. १८५१–१८५२

रचना-सूची: सत्यनारायण झा- ठुठ पीपर (पृ. १८५१-१८५२)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे लोक-अनुभव आ बाल-जगत/शिक्षा प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। छोट नमूना लेखकक समग्र काव्य-निर्णय लेल पर्याप्त नहि; ई संकलन-विशेषमे उपलब्ध स्वरक संकेत भरि अछि।

३८. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' — पृ. १८५३–१८८२

रचना-सूची: जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' - किछु गजल (पृ. १८५३-१८८२)

समीक्षात्मक टिप्पणी: गजल/रुबाइक अनुशासन स्थानीय अनुभव आ मैथिली अभिव्यक्तिसँ मिलि आधुनिक विधागत प्रयोग रचैत अछि; विषय-विविधता एहि रूप केँ केवल प्रेमकाव्य धरि सीमित नहि रखैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे गजल-विधा, ग्राम्य जीवन, लोक-अनुभव, स्त्री/बेटी-अनुभव आ प्रेम/सम्बन्ध प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। दीर्घ पृष्ठ-परास कारण एहि प्रविष्टिमे स्वर/विषयक बहुलता अछि; संकलनक सम्पूर्ण पद्य-दृश्य संसारमे एकर भार पर्याप्त अछि।

३९. रमा कान्त झा — पृ. १८८३–१८८४

रचना-सूची: रमा कान्त झा- देखू भ्रष्टाचारक बहल बसात (पृ. १८८३-१८८४)

४०. सन्तोष कुमार मिश्र — पृ. १८८५–१८८७

रचना-सूची: सन्तोष कुमार मिश्र- इतिहासहिन इतिहास (पृ. १८८५-१८८७)

४१. जगदानंद झा 'मनु' — पृ. १८८७–१९६१

रचना-सूची: जगदानंद झा 'मनु'- किछु रुबाइ, किछु बाल गजल, हजल, किछु गजल, मोनक व्यथा, सभसँ आगु आगु छी, आलु कोबी मिरचाई यै, कि लेबै यै दाय यै / दाय यै , लगबयौन-लगबयौन हिनकर बोली ई,दूल्हा आजु कए, मिथिलाक गुणगान, मैथिलीक विकासक बाधा, मायक भूमि बजा रहल अछि, पाई,

कथा अमर अपन मिथिला कए, मिथिला स पलायन, धन हमर मिथिला, - ऐ सुंदर-सुंदर कनियाँ, हम मौन किएक छी, मिथिला राज, गुमान (पृ. १८८७-१९६१)

समीक्षात्मक टिप्पणी: कथात्मक संक्षिप्तता, सामाजिक घटना आ बोलचालक भाषा एहि प्रविष्टिक मुख्य साहित्यिक आधार बनैत अछि; आकार छोट होइतहुँ शीर्षक आ अन्त अर्थक तीव्रता बढ़बैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे ग्राम्य जीवन आ गजल-विधा प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। दीर्घ पृष्ठ-परास कारण एहि प्रविष्टिमे स्वर/विषयक बहुलता अछि; संकलनक सम्पूर्ण पद्य-दृश्य संसारमे एकर भार पर्याप्त अछि।

४२. नवीन ठाकुर — पृ. १९६१–१९७८

रचना-सूची: नवीन ठाकुर- आजाद गज़ल (प्रेम रस), काल-दिशा, गंगा, गुटखा माने मावा, एखुनका मास्टरक व्यथा, गीत- १-३, अनुकम्पा, अस्तित्व, वियोग, जाढ़ (एगो अनुभूति), मिथिला दर्पण १-२ (पृ. १९६१-१९७८)

समीक्षात्मक टिप्पणी: गीतात्मक पुनरावृत्ति, सामुदायिक स्मृति आ अवसर-सम्बद्धता एहि सामग्रीक प्रमुख गुण अछि; लिखित रूप मौखिक/प्रदर्शनपरक परम्पराक अभिलेख बनैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे प्रेम/सम्बन्ध, भाषिक प्रश्न, ग्राम्य जीवन, गीतात्मकता आ गजल-विधा प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

४३. अमित मिश्र — पृ. १९७८–२०१६

रचना-सूची: अमित मिश्र- १५ अगस्तपर एकटा गजल आ एकटा कविता, मखानक पात, हरियर गाछ, किछु बाल गजल (पृ. १९७८-२०१६)

समीक्षात्मक टिप्पणी: गजल/रुबाइक अनुशासन स्थानीय अनुभव आ मैथिली अभिव्यक्तिसँ मिलि आधुनिक विधागत प्रयोग रचैत अछि; विषय-विविधता एहि रूप केँ केवल प्रेमकाव्य धरि सीमित नहि रखैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे गजल-विधा, बाल-जगत/शिक्षा आ प्रेम/सम्बन्ध प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। दीर्घ पृष्ठ-परास कारण एहि प्रविष्टिमे स्वर/विषयक बहुलता अछि; संकलनक सम्पूर्ण पद्य-दृश्य संसारमे एकर भार पर्याप्त अछि।

४४. शिव कुमार यादव — पृ. २०१६–२०१८

रचना-सूची: शिव कुमार यादव- बाल गजल (पृ. २०१६-२०१८)

समीक्षात्मक टिप्पणी: गजल/रुबाइक अनुशासन स्थानीय अनुभव आ मैथिली अभिव्यक्तिसँ मिलि आधुनिक विधागत प्रयोग रचैत अछि; विषय-विविधता एहि रूप केँ केवल प्रेमकाव्य धरि सीमित नहि रखैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे ग्राम्य जीवन, लोक-अनुभव, बाल-जगत/शिक्षा आ गजल-विधा प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

४५. विकास झा रंजन — पृ. २०१८–२०२१

रचना-सूची: विकास झा रंजन- किछु रुबाइ, किछु गजल (पृ. २०१८-२०२१)

समीक्षात्मक टिप्पणी: गजल/रुबाइक अनुशासन स्थानीय अनुभव आ मैथिली अभिव्यक्तिसँ मिलि आधुनिक विधागत प्रयोग रचैत अछि; विषय-विविधता एहि रूप केँ केवल प्रेमकाव्य धरि सीमित नहि रखैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे गजल-विधा प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

४६. झा हेमन्त बापी — पृ. २०२१–२०२४

रचना-सूची: झा हेमन्त बापी- अभिलाषा (पृ. २०२१-२०२४)

४७. सत्येन्द्र कुमार झा — पृ. २०२४–२०२६

रचना-सूची: सत्येन्द्र कुमार झा- पाँच गोट लघु कविता (पृ. २०२४-२०२६)

४८. विवेकानन्द झा — पृ. २०२७–२०२७

रचना-सूची: विवेकानन्द झा- हाइकू (पृ. २०२७-२०२७)

समीक्षात्मक टिप्पणी: अति-संक्षिप्त रूप क्षण, बिम्ब आ व्यंग्यक अर्थ-घनत्व पर निर्भर अछि; एकरा केवल वर्णगणनाक अनुकरण नहि, मैथिली लघु-काव्य प्रयोग रूपेँ पढ़ब अधिक फलदायी अछि। शीर्षक-सूची आ उपलब्ध पाठ-नमूना विधागत उपस्थिति स्पष्ट करैत अछि; अतिरिक्त कथानक अनुमानित नहि कएल गेल अछि। छोट नमूना लेखकक समग्र काव्य-निर्णय लेल पर्याप्त नहि; ई संकलन-विशेषमे उपलब्ध स्वरक संकेत भरि अछि।

४९. विद्यानन्द झा "विदू" — पृ. २०२८–२०२९

रचना-सूची: विद्यानन्द झा "विदू"- शिक्षाक मौलिकता (पृ. २०२८-२०२९)

समीक्षात्मक टिप्पणी: "शिक्षाक मौलिकता" शिक्षा कें सामाजिक विकास, वैज्ञानिक दृष्टि, कृषि/व्यवहारिक ज्ञान आ साक्षरता सँ जोड़ैत अछि। रचना उपदेशात्मक स्वर रखैत अछि, मुदा एहि उपदेशक आधार सामुदायिक भविष्य आ ज्ञान-विस्तारक चिन्ता अछि।

५०. बिनोद मिश्र — पृ. २०३०–२०३२

रचना-सूची: बिनोद मिश्र- गामक सनेस (पृ. २०३०-२०३२)

समीक्षात्मक टिप्पणी: "गामक सनेस"मे गाम केवल स्मृतिक रमणीय स्थल नहि; पलायन, बाढ़, परिवारक बिखराव आ जीवन-निर्वाहक असुरक्षा ओकर वर्तमान रूप बनैत अछि। घरेलू खाद्य-स्मृति आ सनेसक भाव प्रवासी अनुभव कें मूर्त करैत अछि।

५१. प्रकाश प्रेमी — पृ. २०३३–२०३४

रचना-सूची: प्रकाश प्रेमी- बौवा करबा की? (पृ. २०३३-२०३४)

समीक्षात्मक टिप्पणी: "बौवा करबा की?" प्रश्नात्मक, व्यंग्यात्मक संरचनासँ राजनीतिक/सामाजिक निराशा व्यक्त करैत अछि। बारम्बार प्रश्न सामुदायिक असहायता आ भ्रष्ट सार्वजनिक व्यवहारक आलोचनाक उपकरण बनैत अछि।

५२. विनीत उत्पल — पृ. २०३५–२०३७

रचना-सूची: विनीत उत्पल- किछु गजल, गुटु रानी (पृ. २०३५-२०३७)

समीक्षात्मक टिप्पणी: गजल/रुबाइक अनुशासन स्थानीय अनुभव आ मैथिली अभिव्यक्तिसँ मिलि आधुनिक विधागत प्रयोग रचैत अछि; विषय-विविधता एहि रूप कें केवल प्रेमकाव्य धरि सीमित नहि रखैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे प्रेम/सम्बन्ध, गजल-विधा आ नाट्य/प्रदर्शन प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

५३. रामकृष्ण मण्डल 'छोटू' — पृ. २०३८–२०४२

रचना-सूची: रामकृष्ण मण्डल 'छोटू'- कविता- माइ, रेल, रुसनी (पृ. २०३८-२०४२)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे लोक-अनुभव आ शासन/सार्वजनिक जीवन प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

५४. मुन्नाजी — पृ. २०४३–२०४४

रचना-सूची: मुन्नाजी- हाइकू (पृ. २०४३-२०४४)

समीक्षात्मक टिप्पणी: हाइकू-प्रविष्टिमे क्षणक संक्षिप्त पकड़ आ स्थानीय भाषा-विन्यास महत्त्वपूर्ण अछि। ई लघु-काव्यक प्रयोग संकलनक दीर्घ गीत-गजल धारा बीच विराम-जेकाँ कार्य करैत अछि।

५५. अन्जनी कुमार वर्मा — पृ. २०४५–२०४६

रचना-सूची: अन्जनी कुमार वर्मा- बहैत बसात, परिभाषा (पृ. २०४५-२०४६)

समीक्षात्मक टिप्पणी: भाषिक इतिहास, मानकीकरण, शिक्षण वा शब्द-संसाधनक प्रश्न एहि प्रविष्टिक केन्द्रमे अछि; साहित्यिक सार्वजनिकताक आधारभूत भाषा-चेतना एतए प्रत्यक्ष अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे लोक-अनुभव आ भाषिक प्रश्न प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। छोट नमूना लेखकक समग्र काव्य-निर्णय लेल पर्याप्त नहि; ई संकलन-विशेषमे उपलब्ध स्वरक संकेत भरि अछि।

५६. रवि मिश्रा भारद्वाज — पृ. २०४७–२०४८

रचना-सूची: रवि मिश्रा भारद्वाज- आजाद गजल (पृ. २०४७-२०४८)

समीक्षात्मक टिप्पणी: गजल/रुबाइक अनुशासन स्थानीय अनुभव आ मैथिली अभिव्यक्तिसँ मिलि आधुनिक विधागत प्रयोग रचैत अछि; विषय-विविधता

एहि रूप कैं केवल प्रेमकाव्य धरि सीमित नहि रखैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे गजल-विधा आ कला-संस्कृति प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। छोट नमूना लेखकक समग्र काव्य-निर्णय लेल पर्याप्त नहि; ई संकलन-विशेषमे उपलब्ध स्वरक संकेत भरि अछि।

५७. अमित मोहन झा — पृ. २०४९–२०६१

रचना-सूची: अमित मोहन झा- काश, पहिलुक दिन हम यादि करई छी, हमर प्रेयसी, आब जमाना बदलि गेलै यौ (पृ. २०४९-२०६१)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे प्रेम/सम्बन्ध, ग्राम्य जीवन, कला-संस्कृति, मैथिली भाषा/साहित्य आ भाषिक प्रश्न प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

५८. शिवशंकर सिंह ठाकुर — पृ. २०६२–२०७०

रचना-सूची: शिवशंकर सिंह ठाकुर- कोह्बरक हाल कहलो ने जाय, आँजन सँ आंजित आंखि हुनकर, लुटा गेलौंह हम त रस्ते मे यौ, किए दूरेसँ झांकि कऽ देखै छी यै कनियाँ, हे स्वर्णमयी, अहाँ छी कतऽ (पृ. २०६२-२०७०)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे प्रेम/सम्बन्ध, लोक-अनुभव आ गीतात्मकता प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

५९. मिहिर झा — पृ. २०७१–२०८५

रचना-सूची: मिहिर झा- सामा गीत (संकलन), हे भगीरथ, पुनः आउ, असमंजस, गजल सन, किछु गजल, किछु भाव, छोड़ू रंज ओ रण, जमींदारी गेल राइयाई गेल/ सभटा गेल सोतियाइ नै गेल, भोज (पृ. २०७१-२०८५)

समीक्षात्मक टिप्पणी: गजल/रुबाइक अनुशासन स्थानीय अनुभव आ मैथिली अभिव्यक्तिसँ मिलि आधुनिक विधागत प्रयोग रचैत अछि; विषय-विविधता एहि रूप कैं केवल प्रेमकाव्य धरि सीमित नहि रखैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे गजल-विधा, प्रेम/सम्बन्ध, ग्राम्य जीवन, गीतात्मकता आ सामाजिक संरचना प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

६०. मनीष झा बौआभाई — पृ. २०८६–२०८८

रचना-सूची: मनीष झा बौआभाई- नव बरखक, हम ऋणी छी (पृ. २०८६-२०८८)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे लोक-अनुभव प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

६१. इरा मल्लिक — पृ. २०८९–२०९४

रचना-सूची: इरा मल्लिक- जीवन, भौजी, बड़ अजीब मँहगाइ छै! (पृ. २०८९-२०९४)

समीक्षात्मक टिप्पणी: पद्यक अलग प्रविष्टिमे “जीवन”, “भौजी” आ महँगाइ विषयक कविता दैनन्दिन सामाजिक अनुभवसँ जुड़ैत अछि; चित्र-प्रविष्टिमे मंडलाकार रंग-रचना, वृक्ष आ मानवाकृति जेकाँ दृश्य-तत्त्व भेटैत अछि। एके सर्जकक शब्द आ दृश्य दुनू माध्यममे उपस्थिति उल्लेखनीय अछि।

६२. प्रवीण नारायण चौधरी — पृ. २०९५–२१२६

रचना-सूची: प्रवीण नारायण चौधरी- ३० टा कविता (पृ. २०९५-२१२६)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे प्रेम/सम्बन्ध प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। दीर्घ पृष्ठ-परास कारण एहि प्रविष्टिमे स्वर/विषयक बहुलता अछि; संकलनक सम्पूर्ण पद्य-दृश्य संसारमे एकर भार पर्याप्त अछि।

६३. शांतिलक्ष्मी चौधरी — पृ. २१२७–२१५७

रचना-सूची: शांतिलक्ष्मी चौधरी- किछु गजल, वियाह, बेरोजगारी, तिलकोर, दरीदरी, बथुआ, चुट्टीकट्टा, भाड़ाक घर, ओन-लाइन बदतमिजी (पृ. २१२७-२१५७)

समीक्षात्मक टिप्पणी: गजल/रुबाइक अनुशासन स्थानीय अनुभव आ मैथिली अभिव्यक्तिसँ मिलि आधुनिक विधागत प्रयोग रचैत अछि; विषय-विविधता एहि रूप कैं केवल प्रेमकाव्य धरि सीमित नहि रखैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे ग्राम्य जीवन, गजल-विधा, सामाजिक संरचना, बाल-जगत/शिक्षा आ

गीतात्मकता प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि। दीर्घ पृष्ठ-परास कारण एहि प्रविष्टिमे स्वर/विषयक बहुलता अछि; संकलनक सम्पूर्ण पद्य-दृश्य संसारमे एकर भार पर्याप्त अछि।

६४. श्वेता झा (सिंगापुर) — पृ. २१५८–२१६८

रचना-सूची: श्वेता झा (सिंगापुर)- किछु चित्र (पृ. २१५८-२१६८)

समीक्षात्मक टिप्पणी: चित्र-पृष्ठक प्रत्यक्ष अवलोकनमे रंगप्रधान, सजावटी घनत्व आ मानव/अनुष्ठानिक आकृतिक संयोजन देखाइत अछि। चित्रक साहित्यिक संकलनमे उपस्थिति दृश्य कथा आ मिथिला-परम्पराक समकालीन रूप कैँ पाठक सामने अनैत अछि।

६५. गुंजन कर्ण — पृ. २१६९–२१८०

रचना-सूची: गुंजन कर्ण- किछु चित्र (पृ. २१६९-२१८०)

समीक्षात्मक टिप्पणी: प्रत्यक्ष पृष्ठावलोकनमे रंगीन ज्यामितीय/सूर्याकार रचना तथा रेखात्मक कथादृश्य दुनू भेटैत अछि। एहि विविधतासँ एक कलाकारक भीतर सजावटी अमूर्तन आ कथात्मक आकृति—दुनू प्रवृत्ति देखाइत अछि।

६६. इरा मल्लिक — पृ. २१८१–२१८३

रचना-सूची: इरा मल्लिक- किछु चित्र (पृ. २१८१-२१८३)

६७. प्रवीण कुमार ठाकुर — पृ. २१८४–२१८६

रचना-सूची: प्रवीण कुमार ठाकुर- किछु चित्र (पृ. २१८४-२१८६)

समीक्षात्मक टिप्पणी: चित्र-पृष्ठमे ग्रामीण/अनुष्ठानिक दृश्य आ सीमित रंगक रेखात्मक विन्यास देखाइत अछि। ई दृश्य-संकेत संकलनक लोक-सांस्कृतिक विषय कैँ गैर-मौखिक माध्यम प्रदान करैत अछि।

६८. गणेश ठाकुर — पृ. २१८७–२१८९

रचना-सूची: गणेश ठाकुर- किछु चित्र (पृ. २१८७-२१८९)

समीक्षात्मक टिप्पणी: चित्रक प्रत्यक्ष रूप अपेक्षाकृत सरल, कथात्मक आ बाल-सुलभ रेखा/रंगक उपयोग करैत अछि। एहि सरलताकैँ कौशलक कमी मानबाक बदला संकलनक बहु-आयु दृश्य-अभिव्यक्तिक एक रूप मानल जा सकैत अछि।

६९. कैलाश कुमार कामत — पृ. २१९०–२१९१

रचना-सूची: कैलाश कुमार कामत- किछु चित्र (पृ. २१९०-२१९१)

समीक्षात्मक टिप्पणी: चित्र-पृष्ठमे सरल रंगीन कथात्मकता देखाइत अछि; मानव/वस्तु आकृति स्पष्ट पहचान योग्य अछि। ई खण्ड साहित्यिक पाठक बीच दृश्य-कथनक सहजता जोड़ैत अछि।

७०. मोना पाण्डेय — पृ. २१९२–२१९२

रचना-सूची: मोना पाण्डेय- चित्र (पृ. २१९२-२१९२)

समीक्षात्मक टिप्पणी: एकल चित्रमे सजावटी घनत्व, गाढ़ रंग आ युगल/मानव-आकृतिक केन्द्रित संरचना देखाइत अछि। पृष्ठक सीमित संख्या कारण विस्तृत शैलीगत निष्कर्ष उचित नहि, मुदा दृश्य प्रभाव सघन अछि।

७१. पल्लवी मण्डल — पृ. २१९३–२२०५

रचना-सूची: पल्लवी मण्डल- १० टा पद्य (पृ.२१९३-२२०५)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई प्रविष्टि अपन शीर्षक, विषय आ भाषिक रजिस्टरक माध्यमसँ संकलनक बहुविध साहित्यिक सार्वजनिकतामे अलग आवाज जोड़ैत अछि। पाठ-नमूना आ शीर्षक-संकेतमे लोक-अनुभव, सामाजिक संरचना, स्त्री/बेटी-अनुभव, दहेज-समस्या आ नदी/प्रकृति प्रमुख विषय-क्षेत्र रूपेँ उभरैत अछि।

७२. संदेश — पृ. २२०६–२२१७

रचना-सूची: संदेश- (पृ. २२०६-२२१७)

समीक्षात्मक टिप्पणी: ई भाग स्वतंत्र सर्जनात्मक रचना नहि, बल्कि ग्रन्थक ग्रहण-इतिहासक परिपाठ अछि। अनेक साहित्यकार, विद्वान, कलाकार आ सांस्कृतिक कर्मीक प्रतिक्रिया संकलनक नेटवर्क, प्रतिष्ठा, मतभेद आ संवादक प्रमाण देत अछि। जेनेटिक परिपाठ-दृष्टिसँ ई “बाहरी” सामग्री नहि; पोथीक सार्वजनिक अर्थ बनबैत सक्रिय सीमा-प्रदेश अछि।

६.१ “संदेश” खण्ड: नामांकित ग्रहण-साक्ष्य

उपलब्ध पूर्ण पाठमे ७९ क्रमांकित नाम भेटैत अछि। ई सूची ग्रहण-इतिहासक पूर्णता लेल देल जा रहल अछि:

१. गोविन्द झा	२. रमानन्द रेणु	३. विद्यानाथ झा "विदित"
४. प्रो. उदय नारायण सिंह "नचिकेता"	५. डॉ. गंगेश गुंजन	६. रामाश्रय झा "रामरंग" (आब स्वर्गीय)
७. ब्रजेन्द्र त्रिपाठी	८. प्रफुल्लकुमार सिंह "मौन"	९. डॉ. शिवप्रसाद यादव
१०. आद्याचरण झा	११. विजय ठाकुर	१२. सुभाष चन्द्र यादव
१३. मैथिलीपुत्र प्रदीप	१४. डॉ. भीमनाथ झा	१५. रामभरोस कापड़ि "भ्रमर"
१६. राजनन्दन लालदास	१७. डॉ. प्रेमशंकर सिंह	१८. शेफालिका वर्मा
१९. हेतुकर झा	२०. योगानन्द झा	२१. किशोरीकान्त मिश्र
२२. जीवकान्त	२३. भालचन्द्र झा	२४. डॉ नीता झा
२५. मायानन्द मिश्र	२६. महेन्द्र हजारी	२७. केदारनाथ चौधरी
२८. सत्यानन्द पाठक	२९. रमा झा	३०. नरेन्द्र झा
३१. रामलोचन ठाकुर	३२. तारानन्द वियोगी	३३. प्रेमलता मिश्र “प्रेम”
३४. कीर्तिनारायण मिश्र	३५. महाप्रकाश	३६. अग्निपुष्प
३७. मंजर सुलेमान	३८. प्रो. वीणा ठाकुर	३९. छत्रानन्द सिंह झा
४०. ताराकान्त झा	४१. डॉ रवीन्द्र कुमार चौधरी	४२. अमरनाथ
४३. पंचानन मिश्र	४४. केदार कानन	४५. धनाकर ठाकुर
४६. आशीष झा	४७. शम्भु कुमार सिंह	४८. डॉ. अजीत मिश्र
४९. बीरेन्द्र मल्लिक	५०. कुमार राधारमण	५१. फूलचन्द्र झा प्रवीण
५२. विभूति आनन्द	५३. मानेश्वर मनुज	५४. विद्यानन्द झा
५५. अरविन्द ठाकुर	५६. कुमार पवन	५७. प्रदीप बिहारी
५८. डॉ मणिकान्त ठाकुर	५९. धीरेन्द्र प्रेमर्षि	६०. देवशंकर नवीन
६१. मोहन भारद्वाज	६२. फजलुर रहमान हाशमी	६३. लक्ष्मण झा "सागर"

६४. जगदीश प्रसाद मंडल	६५. अशोक झा	६६. ठाकुर प्रसाद मुर्मु
६७. बुद्धिनाथ मिश्र	६८. बृखेश चन्द्र लाल	६९. परमेश्वर कापड़ि
७०. रवीन्द्रनाथ ठाकुर	७१. मंत्रेश्वर झा	७२. हरेकृष्ण झा
७३. सुकान्त सोम	७४. प्रोफेसर मदन मिश्र	७५. प्रोफेसर कमला चौधरी
७६. उदय चन्द्र झा "विनोद"	७७. कृष्ण कुमार कश्यप	७८. मणिकान्त दास
७९. हीरेन्द्र कुमार झा		

७. समेकित आलोचनात्मक निष्कर्ष

७.१ मुख्य उपलब्धि

“सदेह ३६”क सभसँ पैघ उपलब्धि कैननक चौड़ाई अछि। एतए “साहित्य” कविता-कथा धरि सीमित नहि; भाषा-अध्ययन, रंगमंच, पत्रकारिता, लोकगीत, डिजिटल तकनीक, शिक्षा, चित्रकला आ पाठकीय प्रतिक्रिया सेहो मैथिली सृजनशील सार्वजनिकताक अंग बनैत अछि। विशाल सामग्रीक कारण ई पोथी २०१० दशकक आरम्भिक मैथिली सांस्कृतिक जीवनक एकटा प्राथमिक अभिलेख बनि जाइत अछि।

७.२ विधागत प्रयोग

विहनि कथा, आजाद गजल, मैथिली गजल-शास्त्रक बहस, हाइकू/सेनर्यू, संस्कारगीत-संकलन, सचित्र बाल-कविता आ रिपोर्टाज—ई सभ रूप विधा-विस्तारक संकेत अछि। सभ प्रयोग समान कलात्मक सफलता प्राप्त करैत अछि, से कहब कठिन; मुदा प्रयोगक ऐतिहासिक महत्त्व निर्विवाद अछि, कारण संकलन रचना-सफलता मात्र नहि, विधा-निर्माणक प्रक्रिया सुरक्षित करैत अछि।

७.३ भाषा

भाषिक स्तरपर मानक मैथिली, बोलचाल, लोकपद, संस्कृतनिष्ठ शब्द, अंग्रेजी तकनीकी पद आ रिपोर्टिंगक मिश्र रजिस्टर संग-संग अछि। ई असमानता सम्पादनक समस्या सेहो बनि सकैत अछि, मुदा सामाजिक बहुभाषिकताक दस्तावेज सेहो अछि। भविष्यक आलोचनात्मक संस्करणमे मूल वर्तनी सुरक्षित राखि पृथक सम्पादकीय टिप्पणी, शब्द-सूची आ संस्करण-इतिहास जोड़ल जाए तँ शोध-मूल्य आरो बढ़त।

७.४ विचारधारात्मक तीखापन

संकलनक सम्पादकीय/आलोचनात्मक लेखन अनेक ठाम तीखा, नामोल्लेखी आ संस्थाविरोधी अछि। एहन लेखन सार्वजनिक बहस केँ जीवित करैत अछि, मुदा प्रमाण, व्यंग्य आ आरोप एके वाक्य-प्रवाहमे आबि जाए तँ पाठक लेल तथ्य आ अभिमतक सीमा धुँधला भऽ सकैत अछि। आलोचनात्मक संस्करणक लेल स्रोत-टिप्पणी, तारीख, मूल प्रकाशन अंक आ बाह्य संदर्भ जोड़ब उपयोगी होयत।

७.५ प्रतिनिधित्व आ सामाजिक प्रश्न

जाति, स्त्री, दहेज, बेटी, प्रवास, ग्रामीण जीवन, शिक्षा आ राज्य-आन्दोलन संकलनक बारम्बार विषय छथि। ई सामाजिक संलग्नता ओकर शक्ति अछि। संगहि आधुनिक समावेशी Mithila Studies सँ तुलना करैत प्रश्न उठैत अछि—अल्पसंख्यक, दलित/पिछड़ा, स्त्री आ सीमांत समुदाय अपन स्वयं-कथनक अनुपातमे कतेक उपस्थित छथि? एहि प्रश्नक उत्तर केवल लेखकक जातीय पहचान अनुमान कऽ नहि, भावी संरचित मेटाडाटा आ स्रोत-अनुसन्धानसँ देल जाए।

७.६ डिजिटल अभिलेख आ भविष्यक शोध

“विदेह”क ई-संसारसँ संकलित सामग्री प्रिन्ट आ डिजिटल संस्कृतिक बीचक सेतु अछि। वेब-आर्काइव, अंक-तारीख, मूल URL, लेखक-परिचय, विधा-टैग, विषय-टैग, चित्रक कृति-नाम/माध्यम/वर्ष आ मंचनक स्थान-तारीख संग डिजिटल सूची तैयार कएल जाए तँ “सदेह ३६” साहित्यिक पोथीक संग शोध-डेटाबेसो बनि सकैत अछि।

८. निष्कर्ष

“विदेह सदेह ३६” केँ एकहि सौन्दर्यशास्त्रीय मानकसँ नापब ओकर वास्तविक स्वरूप छोट कऽ देत। ई एकसंगे साहित्यिक संकलन, डिजिटल युगक अभिलेख, भाषिक आन्दोलनक मंच, लोक-स्मृति संग्रह, रंगमंचीय दस्तावेज, सांस्कृतिक पत्रकारिता, बाल-ज्ञान साहित्य आ दृश्य-कला पोर्टफोलियो अछि। एकर श्रेष्ठ रचना सभ अपन-अपन विधामे स्थायी पाठकीय क्षमता रखैत अछि; कमजोर वा अत्यधिक तात्कालिक सामग्री सेहो इतिहासक प्राथमिक साक्ष्य रूपेँ उपयोगी अछि।

सम्पूर्ण पाठमे सभसँ प्रभावकारी दीर्घ प्रवृत्ति चारि अछि: (१) मैथिलीमे आधुनिक विधाक स्वदेशीकरण, (२) भाषा-संस्था-जाति विषयक तीखा सार्वजनिक विमर्श, (३) गाम/प्रवास/परिवार/स्त्री/श्रमक बदलैत समाज, आ (४) लोक-प्रदर्शनसँ डिजिटल अभिलेख धरि माध्यमक संक्रमण। एहि चारूक बीच “समानान्तर” शब्द संकलनक मूल कुंजी बनैत अछि—समानान्तर केवल संस्था-विरोध नहि, बल्कि अनेक उपेक्षित विधा आ आवाजक लेल वैकल्पिक संग्रह-स्थान।

भविष्यक शोध लेल एहि पोथीपर लेखकवार ग्रन्थ-सूची, मूल अंक-आधारित कालक्रम, भाषिक कॉर्पस-अध्ययन, विहनि कथा आ गजल पर पृथक शोध, नाट्य-मंचनक डेटाबेस, लोकगीतक प्रदर्शन-सन्दर्भ, तथा चित्रकला खण्डक कलाकार-साक्षात्कार उपयोगी होयत। मुदा वर्तमान रूपोमे “सदेह ३६” मैथिली साहित्यक डिजिटल-प्रिन्ट संक्रमणकाल बुझबाक लेल असाधारण विशाल प्राथमिक स्रोत अछि।

९. सन्दर्भ-सूची

विदेह. २०२२. विदेह सदेह ३६: रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-५. विदेह ई-पत्रिका, ISSN 2229-547X. (समीक्षाक मूल प्राथमिक स्रोत: PDF, प्रारम्भिक अनुक्रम DOCX, पूर्ण पाठ DOCX).

Bakhtin, M. M. 2010. The Dialogic Imagination: Four Essays. Edited by Michael Holquist; translated by Caryl Emerson and Michael Holquist. University of Texas Press. (मूल अंग्रेजी अनुवाद संस्करण पहिने प्रकाशित; एहि समीक्षामे उपलब्ध वर्तमान UT Press संस्करणक सन्दर्भ).

Finnegan, Ruth. 2025. Oral Poetry. Open Book Publishers. DOI: 10.11647/OBP.0428.

Genette, Gérard. 1997. Paratexts: Thresholds of Interpretation. Translated by Jane E. Lewin. Cambridge University Press.

Grierson, George A. 1881. An Introduction to the Maithilí Language of North Bihár: Containing a Grammar, Chrestomathy and Vocabulary. J. N. Banerjee and Son.

Jha, Pankaj. 2019. A Political History of Literature: Vidyapati and the Fifteenth Century. Oxford University Press. DOI: 10.1093/oso/9780199489558.001.0001.

Kumar, Lalit. 2026. “Caste, Script and Language: The Curious Case of Maithili Print.” (Online first 30 May 2025.) Volume 12, Issue 1. DOI: 10.1177/23938617251337694.

Prakash, Pranav; Christopher L. Diamond; and Coralynn V. Davis. 2026. “Guest Editors’ Introduction: Defining and Contextualizing Mithila Studies.” Asian Ethnology 85(1).

Richman, Paula. 2026. “The Cultural Politics of Classifying Mithila Painting.” Asian Ethnology 85(1).

Richman, Paula, and David L. Szanton, eds. 2025. India’s Mithila Painting. University of Washington Press.

Schechner, Richard. 2020. Performance Studies: An Introduction. 4th ed. Routledge.

Yadav, Ramawatar. 1996. A Reference Grammar of Maithili. Trends in Linguistics: Documentation 11. Mouton de Gruyter. DOI: 10.1515/9783110811698.

परिशिष्ट: पूर्ण लेखक-रचना अनुक्रम (१२७ प्रविष्टि)

ई सूची मूल अनुक्रमक प्रविष्टि अनुसार देल जा रहल अछि। समीक्षा भागमे देल छोट टिप्पणी सँ अलग, एतए शीर्षक-सूची पूर्ण राखल गेल अछि ताकि कोनो लेखक वा रचना छुटि नहि जाए।

१. गजेन्द्र ठाकुर- विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण, रुबाइ: कता: गजल: हाइकू, प्राकृत आ पालि, मैथिली गजल- दू युग, विदेशी पूँजी निवेशक भाषापर (मैथिली सहित) प्रभाव, होलीपर व्यंग्य, मैथिली नाटक आ फिल्मक एकटा समानान्तर दुनियाँ, मैथिली नाटक आ आधुनिक रंगमंच, प्रदीप पुष्पजीक गजल संग्रह, चारिटा अंग्रेजी नाटक- डॉक्टर फॉस्टस, सैमसन एगोनिस्टेस, मर्डर इन द कैथेड्रल आ स्ट्राइफ, उल्कामुख, सम्पादकीय (मैथिली आ ब्रेल लिपि, की मैथिली साहित्य अपन मूल स्वरमे ब्राह्मणवादी अछि?, रामनरेश रायक सूचना, यूनीकोड पर साहित्य अकादेमीक कथागोष्ठीमे पर्चा वितरण, साहित्य अकादेमीक कथा गोष्ठीकेँ सगर राति दीप जरए कहल जाए?, साहित्य अकादेमीक टैगोर लिटरेचर अवार्ड, विदेह गोष्ठी: (परिचर्चा आ प्रैक्टिकल लैबोरेटरीक प्रदर्शन), की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा छी?, विहनि कथा, फजलुर रहमान हासमीक आइ २०-०७-२०११ केँ मृत्यु भऽ गेलन्हि, साहित्य अकादेमीमे समन्वयक पद लेल कालाबाजारी (ब्लैक मार्केटिंग)- एकटा रिपोर्ट, समन्वय २-४ नवम्बर २०१२ इण्डिया हैबीटेट सेन्टर, विदेह सम्मान (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार, २. समानान्तर ललित कला अकादेमी पुरस्कार आ ३.समानान्तर संगीत-नाटक अकादेमी पुरस्कारक नामसँ प्रसिद्ध), विदेह साहित्य उत्सव २०१२ आ विदेह साहित्य सम्मान समारोह १४ जनवरी २०१२, गजल कमला-कोसी-बगमती-महानंदा सम्मान, विदेह द्वारा आयोजित पहिल "समानांतर साहित्य अकादेमी" मैथिली कवि सम्मेलन २०११, २०म विश्व पुस्तक मेला २०१२, २१म विदेह मैथिली पोथी प्रदर्शनी, नीलम फिल्म्स आ गोपाल पाठकक करतूत, मारियो वर्गास लोसाकेँ एहि वर्षक साहित्यक 15 लाख डॉलर पुरस्कार राशिक (एक सए लाख क्रोनर) नोबल पुरस्कार, डॉ. नित्यानन्द लाल दास केँ साहित्य अकादेमीक मैथिली अनुवाद पुरस्कार २०१०, भारतीय भाषा परिषदक युवा पुरस्कार गौरीनाथ (अनलकांत) केँ मैथिली लेल, फूलकुमारी महतो मेमोरियल ट्रष्ट काठमाण्डू, गोविन्द रचनावली, साहित्य अकादेमी, दिल्लीक महत्तर सदस्यता श्री चन्द्रनाथ मिश्र अमरकेँ, विनीत उत्पलक सूचनाक अधिकारक अन्तर्गत मांगल सूचना १० सदस्यी साहित्य अकादेमीक मैथिली एडवाइजरी बोर्ड द्वारा मैथिलीकेँ खतम करबाक षडयंत्रक खुलासा, लघु राज्यक सार्थकता पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, टॉमस ट्रांसट्रोमरकें २०११क साहित्य लेल १.५ मिलियन डॉलरक नोबल पुरस्कार, दूषण पंजी कट्टरवाद, श्रीनिवास जीक "बदलैत स्वर", स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” , हिन्दी आ मैथिली आ साहित्यिक शब्दावली, अन्तर्जाल आ मैथिली साहित्य आन्दोलन, मैथिली गजल, मैथिली नाटक- बेचा ठाकुर: बेचन ठाकुर, उपेन्द्र भगत नागवंशी आ मैथिलीमे फील्डवर्क,राजनन्दल लाल दास जी आ मायानन्द मिश्र प्रारम्भमे तामसमे रहथि, साहित्यिक लठैत आ कालीकान्त झा बूचक साहित्यिक हत्याक ओझरी, मीठ बाजएबला कायस्थ आ ब्राह्मण समाज किए टूटि गेल अछि? (पृ. २-३१२)

२. डॉ रमानन्द झा "रमण"- मिथिला भाषाक अध्ययन आ डॉ. ग्रिअर्सन कृत मैथिली व्याकरण (पृ. ३१३-३३२)

३. वीरेन्द्र यादव- लघुकथा- बाबा गाछी (पृ. ३३३-३३७)

४. बेचन ठाकुर- नोमीनेशन, छल-बल, चल आइये, डाक डकोबलि (पृ. ३३८-३४१)

५. आशीष अनचिन्हार- बेचन ठाकुरजीक नाटक छीनरदेवी, बेचन ठाकुरजीक नाटक बेटीक अपमान, विदेह मैथिली समानान्तर रंगमंच, मैथिली गजलकार परिचय श्रृंखला, आशीष अनचिन्हार द्वारा १९ जुलाइ २०१२ केँ श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीसँ लेल साक्षात्कार (पृ. ३४२-४३९)

६. मनोज झा मुक्ति- विद्यापति स्मृति समारोह वास्ते हमर दरभंगा यात्रा, जनगणनामे मातृभाषा (पृ. ४४०-४५०)

७. नरेन्द्र मिश्र- दुर्गापूजा-2011 केर अवसरपर मैथिली-नाटक मंचन भेल- अप्पन कर्मक फल (पृ. ४५१-४५३)

८. महाकवि भास- कर्णभारम्- (मैथिली अनुवाद बिपिन कुमार झा) (पृ. ४५४-४५६)

९. बिपिन कुमार झा- बालानां सुखबोधाय, Maithili Word net, कलौ चण्डी महेश्वरौ, स्तरविहीन स्तर- (’अप्पन युनिभरसीटी’केर हाल), जन्मदिनक बदलैत स्वरूप, यात्राक किछु प्रश्न, सहनशीलता मजबूरी अथवा कमजोरी?, एकटा प्रश्न मीडिया सँ (पृ. ४५७-४७२)

१०. जितेन्द्र झा- नेपाली आ मैथिली भाषाक दूटा साहित्यिक कृति विमोचित, मेघशतक (श्यामशेखर झा कमल) सँ तीनगोट कविता, अपने घरमे उपेक्षित मिथिला चित्रकला, विमलक गजल आ सुजितक कथा, सुजितक अनुभव रिपोर्टर डायरीमे (प्रस्तुति जितेन्द्र झा) (पृ. ४७३-४९४)

११. एस.सी सुमन- सरकार कएलक सौतिनिआ व्यवहार (पृ. ४९५-४९७)

१२. धीरेन्द्र प्रेमर्षि- प्रगतिक पथपर मिथिला चित्रकला (पृ. ४९८-४९९)

१३. शम्मी वत्स/ रूपेश- हैदराबादमे विद्यापति पर्व समारोह (पृ. ५००-५००)

१४. प्रवीण नारायण चौधरी- बिराटनगरमे विद्यापति पर्व समारोह सम्पन्न 9-10 दिसम्बर 2011 (पृ. ५०१-५०२)

१५. रमेश रंजन- रिपोर्ट- "बुधियार छौड़ा आ राक्षस" (पृ. ५०३-५०४)

१६. मुन्ना जी- विहनि कथा संसार, अप्पन आंगनमे ठाढ़ आइ हम अपने घरकैं ताकि रहल छी, तराजू, असरा, संगबे, छुच्छ, दुलार, दिहलगड़ि, उफाँटि, जुड़बन्हन, निंघेस, बखरा, अन्हरिया मे, सेल्फी, खोंइछक धान, दासीन, प्रतिक, सिनेहक धार, ऐब की बेरिया, परदा पर, पसार....!, आशीर्वाद, आँचर....!, उठल्लू, बाट-घाट, द्वन्द, देह मोन आ प्रेम, परमेश्वर, जिया जरए सगर राति, साढ़े एकैसम सदी, भूख, टेट्टर , गणतंत्र, अदौ सँ...,करोट, पछतावा, रक्षा, विचरण! , चुनरी, मुक्ति, दरेग, रिपोर्ताज, परस्पर, टकटकी, सुतिहार, वैधव्यता, कोखिन, विधान, मए बनबाक हर्ष!, भार उघैत, निमुधन नै छी, बेर पर, उपरौंज, विहान, दायित्व (पृ. ५०५-५८०)

१७. श्यामसुन्दर शशि- कोजग्रा धूमधाम संग मनाओल जा रहल (पृ. ५८१-५८२)

१८. राम भरोस कापड़ि भ्रमर- बिराटनगरमे बिद्यापति स्मृति पर्व (पृ. ५८३-५८५)

१९. जगदानंद झा 'मनु'- मसोमात, रहस्य, जगह, मिथिलामे जाति-पाति (पृ. ५८६-५९१)

२०. प्रियंका झा- सगर राति दीप जरय पर साहित्य अकादेमीक कब्जा/ सरकारी पाइपर भेल बभनभोज/ साहित्य अकादेमीक कथा रवीन्द्र दिल्लीमे समाप्त- रवीन्द्रक कथापर कोनो चर्चा नै भेल- ७६म सगरराति दीप जरय चेन्नैमे विभारानी लऽ गेली (पृ. ५९२-५९८)

२१. आशीष चौधरी- विहनि कथा- ठक (पृ. ५९९-६००)

२२. चंदन कुमार झा- आलेख- भीड़तंत्र बनाम् भ्रष्टतंत्र, विहनि-कथा- सद्गति (पृ. ६०१-६०६)

२३. अतुलेश्वर- सोचब आवश्यक जे......, मिथिला राज्य आन्दोलन आ शहीद रज्जु झा (पृ. ६०७-६१९)

२४. सुभाष चन्द्र यादव- गजेन्द्र ठाकुर (पृ. ६२०-६२०)

२५. मुन्नी कामत- नाटक- अंधविश्वास (पृ. ६२१-६२६)

२६. सत्यनारायण झा- दुटा बात पुत्रक जन्म दिन पर (पृ. ६२७-६२८)

२७. सुजीत कुमार झा- लघुकथा (निष्ठा कि देखाबा, लाल डायरी, मेनका, साधना, केहन सजाय?, फुल फुलाइए कऽ रहल, बंश), झूमि उठल जनकपुरवासी, नाटकप्रति रंजुमे गजबकैं समर्पण छल, नेपालमे राष्ट्रिय जनगणना- मैथिलीकैं स्थान दियावकैं विशेष संकल्प, मैथिलीमे क्रिकेटक कमेन्ट्री, जंगलमे होरी (पृ. ६२९-७१७)

२८. सन्तोष कुमार मिश्र- एकटा पत्र (पृ. ७१८-७१९)

२९. मनोज कुमार मण्डल- “बाप भेल पित्ती” ओ “अधिकार” नाटक'क सफल मंचन (पृ. ७२०-७२१)

३०. शेफालिका वर्मा- डॉ कलाधर झासँ डॉ. शेफालिका वर्माक साक्षात्कार, रेत आ रेत, रेखाचित्र- ओ कत’ हेतीह, एकटा संस्मरण एकटा प्रश्न, संस्मरण- मैथिली (उड़ीसा-१९८५) (पृ. ७२२-७५४)

३१. दुर्गानन्द मण्डल- नेना लेल सुन्दर चित्रकथा, स्वतंत्रता दिवसक अवसरपर किछु स्वतंत्र भरास (पृ. ७५५-७६०)

३२. नवीन ठाकुर- मिथिला उवाच-१, मिथिला उवाच-२ (पृ. ७६१-७६८)

३३. नवेंदु कुमार झा- मिथिला आ मैथिली बॅटबाक भऽ रहल साजिश, ई गवर्नेंस दिस सरकार बढ़ौलक डेग, नीतीशक सोंझा मोदीक समर्पण, ठंडाक मौसम मे गर्मायत बिहारक राजनीति, जापान आ कनाडाक दौरा पर जयताह मोदी, मैथिल ब्रहमण के किनार लगैलक भाजपा कीर्ति कयलनि सोनिया सॅ भेंट, बिहार मे निवेशक इच्छा जनौलक रैल बैक्सी, मधुबनी सहित तीन जगह पर बनत पीपा पूल, पंचायत प्रतिनिधि, प्रदेश मे शौचालय सॅ वंचित अछि पैघ आबादी, गंगा नदी पर पूलक माध्यम सँ बढ़त कारोबारक चालि, महिषीमे आयोजित होयत सांस्कृतिक महोत्सव, सर्वसम्मतिसँ सभापति आ उपाध्यक्षक निर्वाचित, बिहारमे शिक्षाक लेल मदति करत विश्व बैंक, केन्द्रीय विश्वविद्यालयक लऽ कऽ राज्य आ केन्द्र मे बढ़ि रहल हार, उत्साहक संग समाप्त शताब्दी समारोह- डा० सच्चिदानंद उपेक्षा पर निधन परिषद् भेलाह नाराज, एस एच जीक माध्यम सॅ आगा बढ़त बिहार प्रदेश मे गठित होयत दस लाख एच एच जी, राज्य सभा चुनाव- भाजपा जदयू मे उम्मीदवारक भीड़ तऽ राजदक अस्तित्वक संकट, बिहारक औद्योगिक विकास मे बाधा बनि रहल जमीन आ बिजली, राशन कार्डक होयत डिजिटलीकरण, मिथिलांचल मे माछ उत्पादक भरोसा देलनि मुख्यमंत्री, सौराठ मे खुजत मिथिला चित्रकला संस्थान, जन आंदोलन सँ होयत कोसीक समस्याक समाधान-मेधा पाटेकर, बिहार सहित पांच प्रदेशकैं अन्नक खरीद बढ़ैबाक निर्देश, 21 फरवरी सॅ प्रारंभ होयत विधान मंडलक बजट सत्र, मुख्यमंत्रीक स्वागतक तैयारी कऽ रहल छथि रांटी गामवासी, बढ़ि रहल अछि बालिका शिक्षाक दर, बिहार मे सभ वर्ष मनाओल जायत भूकम्प आ बाढ़ि सुरक्षा सप्ताह, सम्पन्न भेल विद्यालयक स्थापना दिवस, साकेतानन्दजीक मृत्यु कैन्सरसँ २२ दिसम्बर २०११ कैं एक बजे दिनमे पूर्णियाँ मे भऽ गेलन्हि, पुरस्कारक बजार मे लागि रहल बोली, पर्यटक स्थल बनल विस्फी, महिषी पर सेहो अछि नजरि, अन्धरा ठाढ़ी मे बनत स्मारक, सरकार कैं याद अयलनि वाचस्पति मिश्र, साहित्यिक जौहरी छथि अकादमीक मैथिली परामर्शी, शताब्दी वर्ष मे प्रकाशित होयत सय पोथी, विधान परिषद्क शताब्दी वर्षक अवसर पर आयोजित होयत विशेष बैसक, बिहार मे खादी ग्रामोद्योग संस्था सभक विकास, बिहार सरकार जानकी नवमीकैं अवकाशक घोषणा केलक, उद्यमी सभकैं स्वयं कर्ज देत सरकार - जीवित होयत वित्त निगम, 15 जनवरी कैं कोसी महासेतूक उद्घाटनक संभावना - एक होयत मिथिलांचल, मजगूत होयत संबंध, 20-21 दिसम्बर कैं होयत शिक्षक पात्रता परीक्षा, बढ़ि रहल प्रवेश पत्र, विधानमंडलक शीतकालीन सत्र समाप्त, पास भेल कतेको विधेयक मधुबनी मे खुजत मिथिला चित्रकला संस्थान सह संग्रहालय, मिथिला राज्यक विरोध मे उतरलाह डा० मिश्र, पर्यटनक उद्योग पर सरकारक बढ़ल जोर विकसित होएत हलेश्वर पुनौरा आ पंथपाकर, लोकायुक्तक मामिला मे सत्ता आ विपक्ष मे गतिरोध, मनाओल गेल दरभंगा महाराजक जन्म दिवस, प्रदेश मे खूजत पशु विश्वविद्यालय, टाका नहि खर्च कएला पर बंद होएत आवंटन, अस्तित्वक लड़ाई लड़ैत सम्पन्न भेल स्मृति पर्व, ग्लोबल भेल चेतना, मंचित भेल नाटक, राजकीय समारोहक रूप मे मनल विद्यापति पर्व, सम्मानित भेलाह विद्वान आ संस्कृतिकर्मी, चेतना समितिक सम्मान - 2011, प्रारंभ भेल नव परम्परा, आयोजित भेल पुस्तक आ चित्रकला प्रदर्शनी, राज्य गीत सॅ मिथिला निपत्ता, सरकार पर दबाब बनौलक समिति, खूजत अलग मिथिला प्रदेशक द्वार? छोट प्रदेशक समर्थन कएलनि मुख्यमंत्री, चीनी निगम क मिठास सँ दूर निवेशक, नीलामीक बढ़ल समय सीमा, केसीसीक लेल लागल शिविर, उत्तर बिहार तीन टा रेल लाइनक दोहरीकरणक प्रयास मे आएल तेजी, जन चेतना यात्रा मोदी सॅ सचेत अछि भाजपा, प्रधानमंत्री भाजपा, भाजपाक रथ पर सवार भऽ दिल्लीक गद्दी पर पहूचताह नीतीश?, लाल कृष्ण आडवाणीक महगी भ्रष्टाचारक विरूद्ध प्रस्तावित रथयात्रा, बिहारक विकासक लेल प्रदेश मे नव नव उद्योग, अपन कूनबा बचबऽ लेल मैदान मे उतरलाह सुप्रीमो तीरक निषान पर अछि लालटेन, जदयूक वार सँ भोथर भेल विपक्षक धार, सरकारक राष्ट्रीय विरूद्ध आंदोलन करत राजद, डेयरी उद्योग मे रूचि देखौलक इंडियन पोटाष लिमिटड, कोसीक प्रलयक तीन वर्ष, भंगिमाक चुनाव सम्पन्न, कुणाल अध्यक्ष्य आ जयदेव सचिव निर्वाचित, प्रदेश मे लागु भेल सेवाक अधिकार कानून (पृ. ७६९-८६३)

३४. शांतिलक्ष्मी चौधरी- नव-नियोजित शिक्षिका आओर शिक्षक - मिथिला मे बदलैत स्त्री आ पुरुख केर संबंध-जाल, मैथिल नारि केर समस्याक समाधान (पृ. ८६४-८७४)

३५. किशन कारीगर- हास्य कथा- (आब हम जबान भ गेलहुँ, मुन्नी बदनाम भेलैए किएक?, टाई माने रस्सी, मैथिली सीखू), हमर फोटो कहिया (कन्या भ्रूणहत्या पर एकटा कथा), मोछ वाली माउगी- होली पर हास्य कथा (पृ. ८७५-९०१)

३६. राम प्रवेश मण्डल- विहनि कथा- आह मिथिला! वाह मैथिली! (पृ. ९०२-९०२)

३७. शैल झा “सागर”- एकटा पत्र एकटा समीक्षा- किस्त किस्त जीवन (पृ. ९०३-९०५)

३८. रमाकान्त राय “रमा” (आचार्य दिव्यचक्षु)- आरसी बाबूक व्यक्तित्व एवं कृतित्वपर द्विदिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार- दू दर्जन विद्वानक सहभागिता (पृ. ९०६-९०९)

३९. शिव कुमार झा ‘टिल्लू’- मैथिलीपर जातिवादी कलंक (पृ. ९१०-९१३)

४०. रवि भूषण पाठक- टिल्लू जी (शिव कुमार झा) (पृ. ९१४-९१५)

४१. बृषेशचन्द्र लाल- बिद्यापति–स्मृति पर्व मादेँ — बड़ सुख सार पाओल स्मरणे ... (पृ. ९१६-९२६)

४४. मिथिलेश मंडल- मरनी बेटी, कथा- सुदिक रूपैआ (पृ. ९४५-९४६)

४५. नवीन कुमार आशा- फेर सँ वर रहलाह कुमार, बेटीक जन्म (पृ. ९४७-९५८)

४६. उमेश मण्डल- कनफेड़सँ मुँहफेड़, कुसियारक मारि, सगर राति दीप जरए, हजारीबाग, 75म कथा गोष्ठीमे 39 टा कथापाठ, विदेह साहित्य उत्सव २०१२/ विदेह सम्मान समारोह (विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादेमी- मैथिली पुरस्कार सह काव्य गोष्ठी), मिथिलांचलक प्राथमिक आ मध्य विद्यालयी शिक्षाक माध्यम् मैथिली हेतु ‘विदेह’ विचार गोष्ठी, विदेह नाट्य उत्सव- 2012, मैथिलीमे ई-पत्रकारिता, उमेश मण्डलजी द्वारा श्री जगदीश प्रसाद मण्डलसँ साक्षात्कार, उमेश मण्डलक साक्षात्कार ले.क. मायानाथ झासँ (पृ. ९५९-१०१२)

४७. परमेश झा आ अनिलचन्द्र झा- मिथिला राज्य आन्दोलन (पृ. १०१३-१०१३)

४८. प्रा.परमेश्वर कापड़ि- मिथिला राज्य संघर्ष, मैथिली कथाक परिवेश आ प्रवृति विमर्श, जनकपुरमे कथा–गोष्ठी सम्पन्न (पृ. १०१४-१०२०)

४९. कुमार पृथु- कथा–गोष्ठी (पृ. १०२१-१०२३)

५०. पूनम मंडल- दाग (उपन्यास): गौरीनाथ- लोकार्पण, "सगर राति दीप जरय"क दोसर फेज (चरण)क पहिल सगर राति दीप जरय ०१ दिसम्बर २०१२ शनि दिन सन्ध्याकेँ कँ दरभंगामे -"सगर राति दीप जरय"क दोसर फेज (चरण)क पहिल सगर राति दीप जरय ०१ दिसम्बर २०१२ शनि दिन सन्ध्याकेँ कँ दरभंगामे, समन्वय २-४ नवम्बर २०१२ इण्डिया हैबीटेट सेन्टर भारतीय भाषा महोत्सव, ३ नवम्बरकेँ मैथिलीमे ब्राह्मणवाद, ज्योतिरीश्वरपूर्व विद्यापति आ मैथिलीमे प्रेमक गीतपर भेल बहस, स्थानीय कवि परिषद (सलहेसबाबा परिसर- औरहा) वार्षिकोत्सव- 2012, दिल्लीमे गूंजल मैथिली कविता, ५१ साझा पुरस्कारक घोषणा, प्राज्ञ भ्रमर साझा पुरस्कारसं सम्मानित (पृ. १०२४-१०३८)

५१. नबो नारायण मिश्र (कोकिल मंच) द्वारा मैथिलीक अग्निकवि श्री रामलोचन ठाकुरसँ साक्षात्कार, नबोनारायण मिश्र जी द्वारा लेल साक्षात्कार- किशोरीकान्त मिश्र जी सँ (पृ. १०३९-१०४८)

५२. लक्ष्मी दास- अपन सन मुँह (पृ. १०४९-१०४९)

५३. संस्कृति वर्मा- मेहनत (पृ. १०५०-१०५०)

५४. प्रभात राय भट्ट- मिथिला गर्भपुत्र (पृ. १०५१-१०५३)

५५. डॉ० शशिधर कुमर- उड़ि ने सकी पर चिड़ै छी हम (भाग-१-२), दक्षिणी ध्रुव पर मनुक्खक पएरक सए वर्ष अर्थात् खिस्सा अण्टार्कटिका केर (पृ. १०५४-१०९५)

५६. राजेश मोहन झा 'गुंजन'- ज्योतिषी जीक तांडव, परिवार नियोजन, वसंत गीत, होलीक तरंग, मुस्की रहल उदासे, माय मनाइन (पृ. १०९७-११०५)

५७. आनंद कुमार झा- गै माए, मिथिला क बात सुनबै छी (तर्ज भारत का रहनेवाला हूँ), माँ मैथिलीक चरण मे अर्पित, जं बाजी त गलत बजय छी, जय मिथिला जय मैथिली, मैया अहाँ बसै छी, याद आयल, मिथिलाक नवयुवक कने नींदसँ जागू, सब परा गेल गाम घर स सुन्न परल अछि दालान यो, भटकि रहल छी तरपि रहल छी (पृ. ११०६-१११७)

५८. रमाकान्त राय 'रमा'- बिहार विधानसभा चुनव-प्रचारपर कवि दृष्टि- सांझुक सांझे उपास (पृ. १११८-११२०)

५९. चन्दन झा- बीतल माघ फागुन आयल, संस्कृतिक विडंबना, की भऽ रहल अछि अपना गाममे (पृ. ११२१-११२४)

६०. संजय कुमार मंडल- डेंगू, माघक जाड़ (पृ. ११२५-११२९)

६१. संस्कृति वर्मा- हमर देश (पृ. ११३०-११३०)

६२. जगदीश प्रसाद मण्डल- कविता/ गीत- मधुमाछी (पृ. ११३१-११३३)

६३. नन्द विलास राय- किछु पद्य (पृ. ११३४-११३६)

६४. डॉ शेफालिका वर्मा- नै रचू अहाँ इतिहास हमर, अहांक हास, प्रकृति- पुरुष, बीतल इतिहास, कोसी नदी, पाथर, हम आबि रहल छी.., ठप्पा (पृ. ११३७-११५०)

६५. मनोज झा मुक्ति- ककरा करु विश्वास!, पसरल अत्याचार, गामक सावन (पृ. ११५१-११५६)

६६. प्रभात राय भट्ट- किछु गजल, गीत:-विरह, दहेज मुक्त मिथिला बनाबू, तड़पि-तड़पि बाँचि रहल छी, कतय गेलै चितचोर, गरीबक जिनगी भेल पहार, चलैतछी डगैर पैर, हम नै ज्याब आब मेला अकेला, हैंस दिय कनियाँ, हमर बाबुजी छथि बड होसियार, ६०१ सभासद महान, पेट किऐ जरैत, नैन किए भरि गेल, देलौ हम पेटकुनिया, दुल्हे पीयोलक जहर, गाम आबि जाऊ, आदर्श विवाह, कुमारी धिया, बालविबाह, बालविधवा, हमर परिचय, गीत स्वतंत्रताक, माहासंग्राम, हम रहैत छी परदेश, मिथिलाधाम, सपना देख्लौ बड अजगुत, गीत वियोगक, गंगा तट स: हिमालय केर पट, मिथिला माए, मजदुर !!! (पृ. ११५७-१२००)

६७. डॉ जया वर्मा- सागर आ मोन (पृ. १२०१-१२०२)

६८. संजय कुमार झा- बौआ बिसरि गेलहक, जन्म सों मैथिल, कर्म सों मैथिल, चलू दोस यौ गाम (पृ. १२०३-१२११)

६९. जीवकान्त- एक दिन (पृ. १२१२-१२१३)

७०. सदरे आलम "गौहर"- किछु आजाद गजल, एकटा रुबाइ (पृ. १२१४-१२१९)

७१. जितमोहन झा (जितू)- मैथिली होली गीत, दोसर फगुआ गीत...., गीत (पृ. १२२०-१२२५)

७२. अक्षय कुमार चौधरी- दियाद बलजोर (पृ. १२२६-१२२७)

७३. जवाहर लाल कश्यप- हम नहि लिखैत छी कविता, पानिक बुंद चढैत अछि आगि पर, ई की भेल?, स्नेह-सूत्र टुटि गेल, उद्वेलित केने अछि / एकटा प्रश्न, परदेसक ओर, कौआ आउर बगरा, अन्नाकेँ समर्पित (पृ. १२२८-१२३६)

७४. मुन्ना जी- सबला (पृ. १२३७-१२३८)

७५. गणेश कुमार झा "बावरा"- विरह, कैंचा (पृ. १२३९-१२४२)

७६. सुबोध कुमार ठाकुर- एहेन जीवन जिबितौं, हम नै खेलब होली (पृ. १२४३-१२४६)

७७. किशन कारीगर- चाह पीबू- (हास्य कविता), पुरस्कार लऽ के नाचू, नोर झहरि रहल छल, सेहन्ता, गरीब, गीत, किछु त हम करब, भिन भिनौज, कक्का हमर उचक्का- होली पर हास्य कविता (पृ. १२४७-१२७१)

७८. पंकज कुमार झा- ओझरैल हमर बौद्धिक मोन, आनंदक रहस्य, सृष्टिक खेल, सचक पथ, संतुलन आ असंतुलन के खेल, ठाढ़ छी, अईंखक दोख आ कि हृदयक, आऊ चलु (पृ. १२७२-१२८३)

७९. उमेश मण्डल- संस्कार गीत (संकलन) (पृ. १२८४-१३४६)

८०. दुर्गानन्द मण्डल- हम देखलौं, हम हिन्दुस्तानी छी (पृ. १३४७-१३४९)

८१. डॉ. अजीत मिश्र- दुर्गा चालीसा (पृ. १३५०-१३५७)

८२. सुनील कुमार झा- हाइकू / शेनर्यू (पृ. १३५८-१३६२)

८३. आशीष अनचिन्हार- पंचसती-पंचउपसती, छत्तीस-चौबीस-छत्तीस, दू टा गद्य कविता (पृ. १३६३-१३७३)

८४. धीरेन्द्र प्रेमर्षि- आजाद गजल (पृ. १३७४-१३७४)

८५. रूबी झा- १४ टा कविता, किछु गजल (पृ. १३७५-१४००)

८६. मुन्नी कामत- जड़ैत ज्योत, जिंदगीक मरीचिका, ताकैत जिनगी कूड़ा ढ़ेरमे, संकल्प, ठमकल शब्द, दहेजक बिहाड़ि, हरैल हमर रूप, विदाइ (पृ. १४०१-१४११)

८७. चंदन कुमार झा- हमहू पढबै आब, फेर हेतइ भोर, बेटी बन्हलीह परिणय डोर, दीप, जे भान नहि !!, भय, बज्जर धरती पर, मोन होइए जे, हमर करेजा, बिडम्बना, मोनक बात, मूरख मंत्री, निरपट सरकार, मायक सपथ छी दऽ रहल, घुमि अयलहु कुशेश्वर-स्थान, बाड़ी बदलल वृन्दावन मे, सिखनिहार सँ बेशी

सिखौनिहार छै जगमे, अकान, झमझम बरसै छै बून्नी, निर्लज्जा के आब भगाबू , हे, बुझलियै की ?, किछु हाइकु आ शेन्र्यु (पृ. १४१२-१४५४)

८८. पवन कुमार साह- गीत (पृ. १४५५-१४५६)

८९. श्यामल सुमन- किछु गजल सन (पृ. १४५७-१४६०)

९०. नवीन कुमार "आशा"- बेटी हमर अभिमान, की फुराएल ने जानि, मिथिलामे बसए प्राण (पृ. १४६१-१४६७)

९१. डॉ. शशिधर कुमर- डॉ॰ शशिधर कुमर- मधुश्रवणी गीत- १, मधुश्रवणी गीत- २, सिनुरदानक गीत, परिछनि गीत (द्विरागमन / दुरागमन / गौना केर बादक परिछनि), माँ शारदे वन्दना- १, माँ शारदे वन्दना- २, पूणा प्रवास (१-३), सुन्नरि प्रिया, साओन मे विरह, अहीं सञो कहै छी, अप्पन नैना सम्हार !, हम नञि रोकब, तोहर जिनगी मे वसन्तक लय, बिसरि ने सकब, अहँक नेह केर छोट सनि जे छवि अछि, हम की करू ?, विरह गीत, मिलनोत्सुका गीत, मिलन गीत, आगामी जानकी नवमी / मिथिला दिवस / मैथिली दिवस पर विशेष- भजु धरणिसुता (किर्तन), माँ जानकी वन्दना (किर्तन), किए मैथिलीक आङ्गन उदास लगैए ?, हए बसन्ती पवन, कने धीरे तोँ चल, शान्तिक सपूत संग्राम करय, कहिया तक शान्ति हो ? (आवाहन गीत), जयति जयति मिथिले (जन्मभूमि स्तुति गीत), कोयली कानय भोरहि सँ, तीन तिरहुतिया, तेरह पाक, नञि पत्र एकहु टा लीखल, अहंकार, आयल वसन्त नेने, नव - नव उमंग, देखू आयल बसन्त, आयल होलीक दिन मतवारी, आयल होली केर तिहार, छायल मिथिला मे आजु बसन्त, हे ऐ भौजी, रूसलि किए छी?, सभ हीलि मीलि कऽ गाउ, जयति जय श्री त्रिपुरारी केर (आगामी शिवराति पर विशेष), बसन्तक आगमण पर, कामिनी! जुनि तोड़ू अहँ फूल, मातृभूमि निज मिथिला अछि, छी वासी हिन्दुस्तान के, हे अए (ऐ) हमर शशिकामिनी (गीत) (आगामी वेलेण्टाइन डे पर विशेष), बाबा विद्यापतिक कथन, नोर बहओने किछु नञि होयत, मातृ – भू वन्दना, धिया-पुता जनकक वंशज हम, ओ व्यक्ति की? , सखि तोहर मुखक तुलना के कर, प्रथम् पुज्य मिथिला हमर शत् - शत् प्रणाम , नवकी कनिञा, कल्पनाक यान सँ, किए हँसबै छऽ मिथिला केर नाम भैय्या ?, ककरा दृष्टि मे नीक, के कह ?, की इएह कहाबैछ सुन्नरता ??, चकोरक उक्ति चानक प्रति, अहाँ सपनहि मे आबै छी, आयल करू, सुनू यौ भारत केर सरकार ! , नोर, हम कनितहु, कानि ने सकइत छी, सभ सँ रसगर माएक भाषा, गे सजनी! फोल कने फेर ठोर, हम नञि कहब कि, बरसातक एक राति, नभ श्याम, धरा श्याम, सभ श्यामल श्यामल, आयल साओन मास सोहाओन, मेघ, हम मैथिल! मिथिला केर सन्तान, बसात (हवा), हे प्रिय! अहँक सुन्नर मुखड़ा, बनि जयतहुँ हम बच्चा, आबहु मिता छोड़ू, अरिकोंच, आजाद गजल सचित्र बाल कविता (उड़ीस, उल्लू, ऊद या ऊदबिलाड़ि, कठखोढ्ढी या कठखोधी, कठसुग्गी, कबार, करांकुल, किताबी कीड़ा, कोइली, गेंड़ा, घियारी कीड़ा या कुम्हरा भेम्ह, घोरन, चकबा या चकेबा, चकोर, टिटही, कड़रिक सितुआ या कड़रिक शितुआ या जोंकती, खुरचनि सितुआ या खुरचनि शितुआ, गिरगिट, ठिकठिकिआ / ठिकठिकिया, गोहि, सनगोहि, डोकहर, ढील आ लीख, देबाड़ या दिबाड़, धनछुआ, नीलकण्ठ या असली नीलकण्ठ, पएर तर बगरा, बाप रौ बाप ! !, पपीहा , पहाड़ी मएना, पाकल आम, पानिकौआ या पानिकौर, पानिडुब्बी (उच्चा॰-पैनडुब्बी) या मछरेंगा, पोरकी या पौड़की, बगरा या बगड़ा, बगेरी, बत्तख, बागर, बिढ़नी, बेङ्ग, भगजोगनी, भेम्ह या भम्हरा, मच्छर, माटिखोढ्ढी या माटिखोधी, मोहखा या मोखा, राजहंस या हंसावर, लुक्खी, सतबहिनी, साही, सिरोली या सिरोली मएना, सिरौली या नकली नीलकण्ठ, सिल्ली, सुग्गा, सूरा आ फाड़ा, हँसुआ दाबी, हंस, हंसक या जलपद) (पृ. १४६८-१८५०)

९२. सत्यनारायण झा- ठुठ पीपर (पृ. १८५१-१८५२)

९३. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल' - किछु गजल (पृ. १८५३-१८८२)

९४. रमा कान्त झा- देखू भ्रष्टाचारक बहल बसात (पृ. १८८३-१८८४)

९५. सन्तोष कुमार मिश्र- इतिहासहिन इतिहास (पृ. १८८५-१८८७)

९६. जगदानंद झा 'मनु'- किछु रुबाइ, किछु बाल गजल, हजल, किछु गजल, मोनक व्यथा, सभसँ आगु आगु छी, आलु कोबी मिरचाई यै, कि लेबै यै दाय यै / दाय यै , लगबयौन-लगबयौन हिनकर बोली ई,दूल्हा आजु कए, मिथिलाक गुणगान, मैथिलीक विकासक बाधा, मायक भूमि बजा रहल अछि, पाई, कथा अमर अपन मिथिला कए, मिथिला स पलायन, धन हमर मिथिला, - ऐ सुंदर-सुंदर कनियाँ, हम मौन किएक छी, मिथिला राज, गुमान (पृ. १८८७-१९६१)

९७. नवीन ठाकुर- आजाद गज़ल (प्रेम रस), काल-दिशा, गंगा, गुटखा माने मावा, एखुनका मास्टरक व्यथा, गीत- १-३, अनुकम्पा, अस्तित्व, वियोग, जाढ़ (एगो अनुभूति), मिथिला दर्पण १-२ (पृ. १९६१-१९७८)

९८. अमित मिश्र- १५ अगस्तपर एकटा गजल आ एकटा कविता, मखानक पात, हरियर गाछ, किछु बाल गजल (पृ. १९७८-२०१६)

९९. शिव कुमार यादव- बाल गजल (पृ. २०१६-२०१८)

१००. विकास झा रंजन- किछु रुबाइ, किछु गजल (पृ. २०१८-२०२१)

१०१. झा हेमन्त बापी- अभिलाषा (पृ. २०२१-२०२४)

१०२. सत्येन्द्र कुमार झा- पाँच गोट लघु कविता (पृ. २०२४-२०२६)

१०३. विवेकानन्द झा- हाइकू (पृ. २०२७-२०२७)

१०४. विद्यानन्द झा "विदू"- शिक्षाक मौलिकता (पृ. २०२८-२०२९)

१०५. बिनोद मिश्र- गामक सनेस (पृ. २०३०-२०३२)

१०६. प्रकाश प्रेमी- बौवा करबा की? (पृ. २०३३-२०३४)

१०७. विनीत उत्पल- किछु गजल, गुटु रानी (पृ. २०३५-२०३७)

१०८. रामकृष्ण मण्डल 'छोटू'- कविता- माइ, रेल, रुसनी (पृ. २०३८-२०४२)

१०९. मुन्नाजी- हाइकू (पृ. २०४३-२०४४)

११०. अन्जनी कुमार वर्मा- बहैत बसात, परिभाषा (पृ. २०४५-२०४६)

१११. रवि मिश्रा भारद्वाज- आजाद गजल (पृ. २०४७-२०४८)

११२. अमित मोहन झा- काश, पहिलुक दिन हम यादि करई छी, हमर प्रेयसी, आब जमाना बदलि गेलै यौ (पृ. २०४९-२०६१)

११३. शिवशंकर सिंह ठाकुर- कोह्बरक हाल कहलो ने जाय, आँजन सँ आंजित आंखि हुनकर, लुटा गेलौंह हम त रस्ते मे यौ, किए दूरेसँ झांकि कऽ देखै छी यै कनियाँ, हे स्वर्णमयी, अहाँ छी कतऽ (पृ. २०६२-२०७०)

११४. मिहिर झा- सामा गीत (संकलन), हे भगीरथ, पुनः आउ, असमंजस, गजल सन, किछु गजल, किछु भाव, छोड़ू रंज ओ रण, जमींदारी गेल राइयाई गेल/ सभटा गेल सोतियाइ नै गेल, भोज (पृ. २०७१-२०८५)

११५. मनीष झा बौआभाई- नव बरखक, हम ऋणी छी (पृ. २०८६-२०८८)

११६. इरा मल्लिक- जीवन, भौजी, बड़ अजीब मँहगाइ छै! (पृ. २०८९-२०९४)

११७. प्रवीण नारायण चौधरी- ३० टा कविता (पृ. २०९५-२१२६)

११८. शांतिलक्ष्मी चौधरी- किछु गजल, वियाह, बेरोजगारी, तिलकोर, दरीदरी, बथुआ, चुट्टीकट्टा, भाड़ाक घर, ओन-लाइन बदतमिजी (पृ. २१२७-२१५७)

११९. श्वेता झा (सिंगापुर)- किछु चित्र (पृ. २१५८-२१६८)

१२०. गुंजन कर्ण- किछु चित्र (पृ. २१६९-२१८०)

१२१. इरा मल्लिक- किछु चित्र (पृ. २१८१-२१८३)

१२२. प्रवीण कुमार ठाकुर- किछु चित्र (पृ. २१८४-२१८६)

१२३. गणेश ठाकुर- किछु चित्र (पृ. २१८७-२१८९)

१२४. कैलाश कुमार कामत- किछु चित्र (पृ. २१९०-२१९१)

१२५. मोना पाण्डेय- चित्र (पृ. २१९२-२१९२)

१२६. पल्लवी मण्डल- १० टा पद्य (पृ.२१९३-२२०५)

१२७. संदेश- (पृ. २२०६-२२१७)

सम्पादकीय टिप्पणी

एहि समीक्षामे मूल संकलनक लेखक-नाम, रचना-शीर्षक आ पृष्ठ-सीमा अनुक्रम अनुसार सुरक्षित राखल गेल अछि। मूल पाठक OCR/डिजिटल रूपमे जतए वर्ण-विकृति संभव छल, ओतए शीर्षक लेल प्रारम्भिक अनुक्रमक शुद्ध पाठ प्राथमिक मानल गेल। विवादास्पद ऐतिहासिक/संस्थागत कथनकेँ लेखकक मत रूपेँ पढ़ल गेल अछि; स्वतंत्र सत्यापन बिना ओकरा स्थापित तथ्य रूपेँ प्रस्तुत नहि कएल गेल अछि।

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह सदेह ३६ — रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-५

अध्याय 43 · विदेह: सदेह: ३७ — समीक्षा (साहित्यिक समीक्षा)

सारांश १. तेलुगु साहित्यकार सभक समीक्षा क्र. १ - पेहिंति अशोक कुमार रचना: 'सदा लेल मित्र' (जिगरी) - उपन्यास समानान्तर इतिहास

(हाशियाकृत स्थान): 'कलन्दर' घुमन्तु समुदायक जीवन भारतीय सिद्धान्त (नव्यन्याय - अनुमान/व्याप्ति): पशु-मानव बीच 'व्याप्ति

(अविनाभाव सम्बन्ध) केनाए विध्वंसकारी अछि। जतय 'सदा लेल मित्र' उपन्यास अछि, ततय पशु-मानव सम्बन्धक तार्किक परीक्षण

सम्भव अछि। पाश्चात्य सिद्धान्त (पारिस्थितिकीय समीक्षा/जीवन-राजनीति): प्राणी-जगत सँ सहानुभूति।

मुख्य शब्द मैथिली साहित्य · साहित्यिक समीक्षा · नव्य-न्याय · रस-सिद्धान्त · इतिहास

१. तेलुगु साहित्यकार सभक समीक्षा

क्र. १ - पेहिंति अशोक कुमार

रचना: 'सदा लेल मित्र' (जिगरी) - उपन्यास

समानान्तर इतिहास (हाशियाकृत स्थान): 'कलन्दर' घुमन्तु समुदायक जीवन

भारतीय सिद्धान्त (नव्यन्याय - अनुमान/व्याप्ति): पशु-मानव बीच 'व्याप्ति' (अविनाभाव सम्बन्ध) केनाए विध्वंसकारी अछि। जतय 'सदा लेल मित्र' उपन्यास अछि, ततय पशु-मानव सम्बन्धक तार्किक परीक्षण सम्भव अछि।

पाश्चात्य सिद्धान्त (पारिस्थितिकीय समीक्षा/जीवन-राजनीति): प्राणी-जगत सँ सहानुभूति। उपन्यासक केन्द्र मे भालु (शादुल) आ कलन्दर समुदाय केर सम्बन्ध - राज्यक जीवन-राजनीति केर शिकार।

स्थिति (अवस्था): संकर दुःख (सामन्तवाद + जीवन-राजनीति) - कलन्दर समुदाय औपनिवेशिक आधुनिकता आ जैव-शक्ति दुनू सँ एक साथ दबल।

क्र. २ - कोलकलुरी इनोच

रचना: 'कौआ' (काकी) - दलित लघुकथा

समानान्तर इतिहास (सांस्कृतिक अध्ययन): 'बण्डोडु' (मादिग चर्मकार) सँ सामाजिक बहिष्कारक गाथा

भारतीय सिद्धान्त (नव्यन्याय - उपमान): कौआ आ दलितक अवस्थाक उपमा। जतय कौआ सभ केर उपद्रव अछि, ततय सामाजिक बहिष्कार केर व्याप्ति अछि।

पाश्चात्य सिद्धान्त (जीवन-राजनीति/दलित सौन्दर्यशास्त्र): जीवन-राजनीतिक शिकार। कौआ सभ केर मारि कऽ भूजि देबाक धमकी - दलित प्रतिरोधक प्रतीक। दलित सौन्दर्यशास्त्र: उत्पीड़न केर सौन्दर्यात्मक अभिव्यक्ति।

क्र. ३ - विनोदिनी

रचना: 'कारी मसि' (ब्लैक इङ्क) - दलित लघुकथा

समानान्तर इतिहास (स्त्री-हाशियाकृत स्थान): गृह-क्षेत्रमे बालिका द्वारा जातिगत बोध

भारतीय सिद्धान्त (नव्यन्याय - अभाव): श्वेत 'ब्लू इङ्क' केर 'अनुपलब्धि' (अभाव) - कारी मसि केर उपलब्धि मात्र, श्वेत स्याही नै मिलब।

पाश्चात्य सिद्धान्त (दोहरा चेतना/स्त्रीवादी): डब्लू.ई.बी. डु बोइस केर 'दोहरा चेतना' - बालिकाक मुखर आत्म-साक्षी। 'हरिजन' शब्द सुनिते बच्चीक मुस्कान मिझि जाइत अछि - भाषिक प्रदर्शन जातिय हिंसाक रूप धारण करैत अछि।

क्र. ४ - आदिव बापिराजू

रचना: 'ध्वस्त मन्दिर' - सांस्कृतिक कथा

समानान्तर इतिहास (पुरातत्वीय चेतना): विध्वंसक 'पुनर्प्राण' - ध्वस्त मन्दिरक पुजारीक आत्मकथा

भारतीय सिद्धान्त (ध्वनि): प्रकट पूजा नहि, मन्दिरक 'व्यञ्जना' (व्यञ्जित अर्थ) - शब्द सँ दीप जरैत; 'स्मृतिक पुनर्निर्माण'।

पाश्चात्य सिद्धान्त (वर्तमानकेन्द्रिता): अतीत केँ वर्तमानमे जीवित राखनाइ। फूको केर 'पुरातत्व' - स्मृति केर उत्खनन।

क्र. ५ - वेकट सुब्बेया वी

रचना: 'अनुवादक कला' (अंश) - निबन्ध

समानान्तर इतिहास (ज्ञान-न्याय): अनुवादक लेल 'प्रत्यक्ष', 'अनुमान' केर व्यावहारिक मार्गदर्शिका

भारतीय सिद्धान्त (नव्यन्याय - शब्द/व्याप्ति): अनुवादक 'व्याप्ति' (अनुवाद केर सार्वभौमिक नियम)। गंगेशक स्वर (शब्द-वृत्ति) आ टोन पर बल।

पाश्चात्य सिद्धान्त (अनुवाद सिद्धान्त): टाइटलर, सेवरी केर अनुवाद सिद्धान्त सँ मेल। 'स्वर' (Tone) पर बल।

स्थिति (अवस्था): सैद्धान्तिक-व्यावहारिक संगम - पूर्वीय न्यायशास्त्र आ पाश्चात्य अनुवाद सिद्धान्त केर संयोजन।

क्र. ६ - करुणा टी.

रचना: 'क्रूरता' - स्त्री कथा

समानान्तर इतिहास (नारी मिथ्या चेतना): स्त्री-देह पर पितृसत्ताक नियन्त्रण

भारतीय सिद्धान्त (नव्यन्याय - दोष/अभाव): 'हँसब' पर अनुचित प्रतिबन्ध। 'हँसबाक' अधिकारक अभाव - स्त्रीक प्राकृतिक अभिव्यक्तिक दमन।

पाश्चात्य सिद्धान्त (स्त्रीवादी स्थिति-सिद्धान्त): स्त्री दृष्टिकोण सँ विश्व-दर्शन। पितृसत्ताक 'शरीर-नियन्त्रण' - फूको केर शरीर-राजनीति। जुडिथ बटलर केर 'प्रदर्शनात्मकता' - हँसबाक क्रिया एक प्रदर्शन जे दबाओल जाइत अछि।

क्र. ७ - एन. गोपी

रचना: 'नानीलु: द लिटिल वन्स' (सूक्ति विवरण) - सूक्ति शैलीक सैद्धान्तिकी

समानान्तर इतिहास (साहित्यिक विधाक पुनर्परिभाषा): 'नानीलु' शैलीक सैद्धान्तिकी

भारतीय सिद्धान्त (नव्यन्याय - शब्द): 'नानीलु' शब्दक नव सृजन - मैथिलीमे तेलुगु सूक्ति शैली केर अनुवाद।

पाश्चात्य सिद्धान्त (शैली-सिद्धान्त): 'स्नैपशॉट', 'हाइकु' सँ भिन्न। 'नानीलु' - क्षणिक सत्य सभक 'फ्लैश फिक्शन' जकाँ चित्रण।

क्र. ८ - खदीर बाबू

रचना: 'हमर चित्रकला गुरु' - संस्मरणात्मक कथा

समानान्तर इतिहास (वैकल्पिक शिक्षा/ज्ञान-न्याय): संस्थागत शिक्षा आ श्रमिक वर्गक शिक्षकक अन्तर। 'गलीक शिक्षा' केर माध्यमसँ 'स्कूली शिक्षा' केर लोकतान्त्रिक आलोचना।

भारतीय सिद्धान्त (नव्यन्याय - उपमान/अर्थापत्ति): गलीक शिक्षा केर 'उपमान' सँ औपचारिक शिक्षाक सीमाक 'अर्थापत्ति'।

पाश्चात्य सिद्धान्त (अल्प साहित्य/हाशियाकृत लेखन): गिल्स दिल्यूज आ फेलिक्स ग्वातारी केर 'अल्प साहित्य' - हाशियाकृत समुदाय केर लेखन परम्परा।

क्र. ९ - वेम्पल्ले शरीफ

रचना: 'जुम्मा' - कथा (तेलुगु)

समानान्तर इतिहास (सांस्कृतिक आतंक/उत्तर-औपनिवेशिक स्मृति): मस्जिदमे बमक कगोर - मातृ-व्यथा आ अल्लाहसँ न डरब-क स्थिति

भारतीय सिद्धान्त (नव्यन्याय - शब्द/व्याप्ति): 'कुरान' आ 'सुरक्षा' केर अद्वैत। प्रतिज्ञा: मस्जिद असुरक्षित अछि; हेतु: बम विस्फोट; निगमन: अतः अल्लाक प्रति नहि, अपन अस्तित्वक रक्षा मुख्य अछि।

पाश्चात्य सिद्धान्त (प्राच्यवाद/उत्तर-औपनिवेशिक): एडवर्ड सईद केर 'प्राच्यवाद' केर प्रतिक्रिया। धार्मिक आतंक पर उत्तर-औपनिवेशिक पुनर्वाचन।

क्र. १० - रामा राव वी.वी.बी.

रचना: 'अभिशप्त' - पद्य (तेलुगु)

समानान्तर इतिहास (स्मृति-राजनीति): समय, स्मृति, मृत्यु, शहर - उत्तर-अर्वाचीन कोलाज

भारतीय सिद्धान्त (नव्यन्याय - अनुमान): 'काले जादू' सँ 'राजनीति' केर व्याप्ति। कोलकाताक पोस्टमाडर्न कोलाज।

पाश्चात्य सिद्धान्त (उत्तर-अर्वाचीनतावाद/जीवन-राजनीति): ज्याँ बौद्रिलार केर सङ्केतात्मकता। मानसिक रोगीक शारीरिक शक्ति लेल जैव-शक्ति प्रयोग।

२. तेलुगु (आ अन्य) दलित/स्त्री कविता खण्ड (व्यापक समूह)

दलित पुरुष स्वर - बोयी भीमन्ना

रचनासभ: 'जरैत खोपड़ी', 'हमर पैतृक अधिकार'

भारतीय सिद्धान्त (नव्यन्याय - अभाव प्रमाण/प्रत्यक्ष): दलित खोपड़ीक प्रत्यक्ष भयावहता। 'जरैत खोपड़ी' - दलित इतिहास केर 'अन्त्येष्टि' केर नै, वरन् 'अधजरा प्रमाण' (half-burnt evidence) छी, जे ब्राह्मण्यवाद केर उपमान केर खण्डन करैत अछि।

पाश्चात्य सिद्धान्त (दलित सौन्दर्यशास्त्र/अधीनस्थ-स्वर): 'हमर पैतृक अधिकार' शीर्षक कब्रिस्तान - दलितकेर 'अस्मिताक इतिहास-लेखन' (historiography of the oppressed) केर दुर्लभ उदाहरण। गायत्री स्पिवाक केर अधीनस्थ: 'की अधीनस्थ बाजि सकैत अछि?' - दलित मौन आ रक्त-लेखन केर द्वारा बाजैत अछि।

तेलुगु दलित महिला स्वर - जे. सुभद्रा

रचनासभ: 'लोढ़ब', 'लाण्डा', 'साडीक कोर', 'अव्वा'

१. 'लोढ़ब' (श्रम याचना):

भारतीय (नव्यन्याय - उपमान): गर्भवती मजदूर केर अभाव केर उपमा श्मशान सँ तुलना - जीवित देह लाश जका काज करैत अछि।

पाश्चात्य (स्त्रीवादी-मार्क्सवादी): बासी भात आ खरडा सँ मारि - फेमिनिस्ट-मार्क्सवादी श्रम विभाजन केर सूक्ष्म चित्रण।

२. 'लाण्डा' (चमड़ा सानिक कुण्ड):

भारतीय (नव्यन्याय - अभाव): 'लाण्डा' - अशुद्ध श्रम केर हाशियाकृत स्थान। चमड़ा उद्योग मे श्रम स्त्रीक देह केर सीमा।

पाश्चात्य (बटलर/भौतिकीकरण): जुडिथ बटलर केर 'भौतिकीकरण' - चर्म-शोधन उद्योग मे अशुद्ध श्रम केर मार्जिनलिया शरीरक सीमा (लेदर) सभ्य समाज केर बहिष्कृत अंग। ढोलक ताल केर प्रतीक - दलित स्त्रीक श्रम लोकगीत सँ गाढ़ एक।

३. 'साडीक कोर' (पल्लु):

भारतीय (नव्यन्याय - शब्द-वृत्ति): कपडा नहि, हृदयक परत - ई अर्थापत्ति सँ देह केर पवित्रता आ अशुद्धता केर बीचक झूठी सीमा तोड़ल।

पाश्चात्य (बटलर/पारिस्थितिकीय-स्त्रीवादी): साडी केर आँचर बहु-प्रतीक - कभी थैला, कभी पोंछा, कभी पाखर। विदेह ढाँचाक बहु-अर्थता केर उत्कृष्ट उदाहरण।

४. 'अव्वा' (माताक दुख):

भारतीय (नव्यन्याय - अर्थापत्ति): माताकें देवी सँ दलित दासी धरि यात्रा - मातृ-देवित्व सँ दासीत्व केर अर्थापत्ति।

पाश्चात्य (आघात अध्ययन - कैरुथ/स्पिवाक): माताकें देवी सँ दलित दासी धरि यात्रा - मातृ-व्यथा केर अन्तर-पीढ़ीगत आख्यान, चौखट पीडाक विस्मृतिक चिह्न। स्पिवाक: दुख जमा करैत चौखटि माताक मौन एकटा क्रिया (speech act) छी, मुदा बाजबाक अनुमति नै।

चल्लपल्लि स्वरूपरानी

रचनासभ: 'मान्केनापुव्वु' (काँट-फंसल चिड़ै), 'माटि-भेल हाथ'

१. 'मान्केनापुव्वु':

भारतीय (नव्यन्याय - साध्य-साधन): ठीक जखन आन्दी रग बहैत अछि - नारी-शरीर पर लिखल साध्य-साधन सम्बन्ध केर दर्शन।

पाश्चात्य (जाति-पितृसत्ताक दोहरो उपनिवेश): काँट (जाति) आ गुलामी बेड़ी (पितृसत्ता) केर द्वन्द्वात्मक बिम्ब।

२. 'माटि-भेल हाथ':

भारतीय (नव्यन्याय - उपमान): पशु-उपमान (गाय, बछड़ा) - देह केर जैविक पूँजी केर मार्क्सवादी व्याख्या।

पाश्चात्य (जीवन-राजनीति - फूको): गर्भवती मजदूर केर हाथ मे माटि - जीवन-शक्ति आ श्रम-शक्ति केर अद्वैत। जैव-शक्ति शरीर पर अङ्कित।

दरिशे शिशिरनिर्मला

रचनासभ: 'हमही छी जे सभ किछु हारि देलौं', 'हम रजस्वला कपड़ा', 'एक दलित स्त्री'

१. 'हमही छी जे सभ किछु हारि देलौं':

भारतीय (नव्यन्याय - विपरीतव्यभिचारी हेतु): हारि देब केर अभिव्यक्ति एकटा प्रदर्शनात्मक कमजोरी, मुदा एही सँ स्त्री अस्वीकार-शक्ति बटोरैत।

पाश्चात्य (बटलर/बिगोइङ्ग): 'हारि देब' केर अभिव्यक्ति - एक प्रदर्शनात्मक कमजोरी जे स्त्रीकेँ 'उत्पीड़ित केर शक्ति' दैत अछि।

२. 'हम रजस्वला कपड़ा':

भारतीय (नव्यन्याय - असत कारण): स्त्रीकें अशुद्धता घोषित करैत अपराधक आधार उत्पन्न करबाक तन्त्र।

पाश्चात्य (यौन आतंकवाद/जीवन-राजनीति): रजस्वला अवस्था मे बलात्कारक धमकी - यौन आतंकवाद केर अर्थापत्ति।

३. 'एक दलित स्त्री':

भारतीय (नव्यन्याय - उपमान): मिट्टी, खाइ, बकरी जका उपमान - स्त्रीक वस्तुीकरण केर तुलनात्मक विश्लेषण।

पाश्चात्य (बटलर/वस्तुीकरण): स्त्रीक वस्तुीकरण केर बटलरीय विश्लेषण।

एम. गौरी

रचना: 'मेहदी लागल हाथ'

भारतीय (नव्यन्याय - विरोधाभासी व्याप्ति): मेहदी (शृङ्गार) आ हाथ (श्रम) केर विरोधाभासी व्याप्ति - पुरुष आख्यानक विध्वंस।

पाश्चात्य (पारिस्थितिकीय-स्त्रीवादी - वैन्डा वारेन): मेहदीक लाली शोषित शरीर केर 'प्रकृति-स्त्री' अखण्डता केर कोड।

मद्दुरी विजयश्री

रचना: 'अलिसम्माक स्राप'

भारतीय (नव्यन्याय - अभिशाप प्रमाण): अलिसम्मा (न्याय-प्रतीक) रामद्वारा अपमानित - राज्य-हिंसा केर अभिशप्त श्राप।

पाश्चात्य (स्पिवाक/उत्तर-औपनिवेशिक स्त्रीवाद): 'की अधीनस्थ बाजि सकैत अछि?' केर नकार। अलिसम्माक स्राप बाजैत नहि, किएक तँ अधीनस्थ केर प्रतिशोध अश्राव्य (inaudible) अछि।

१. 'लोक, जमि जाए':

भारतीय (नव्यन्याय - स्थिरता-प्रवाह द्वन्द्व): माटि मे जमि जाइब - प्रतिरोध केर मार्क्सवादी कार्बनिकता।

पाश्चात्य (प्रतिरोध सौन्दर्यशास्त्र): भूमि सँ जुड़ब प्रतिरोध केर आधार।

२. 'खरडाक डाँट सभ':

भारतीय (नव्यन्याय - विध्वंस/पुनःस्थापना): गांधीक प्रतिमा पर शराब उँडेलनाइ - 'प्रतिमाक विध्वंस' (iconoclasm) उत्तर-औपनिवेशिक नारी-दलित प्रतिरोध केर बटलरीय 'पुनरुक्ति'। स्वच्छ डाँट बहिष्कृतक भाषा - गांधीक निष्क्रिय प्रतिरोध केर सक्रिय उपहास।

पाश्चात्य (बटलर/प्रदर्शनात्मकता - फानन): प्रतिमा विध्वंस - उपनिवेशी चिह्न केर विनाश केर प्रदर्शनात्मक कार्य।

४. कन्नड, उडिया, भोजपुरी, कश्मीरी खण्ड

अशोक हेगडे

रचना: 'अन्हार' (कन्नड)

समानान्तर इतिहास (शहरी संकट): मध्यमवर्गीय पुरुषक 'अन्हार' (internal darkness) - शहरी एकान्त केर चित्रण।

पाश्चात्य (व्यङ्ग्यपूर्ण यथार्थवाद/अस्तित्ववादी): 'सिनिकल रियलिज्म' (व्यङ्ग्यपूर्ण यथार्थवाद) - बच्चीक कथा पढ़ि काल 'दुर्घटना' प्रति 'उदासीनता'।

हाइडेगरिय 'चिन्ता' केर शहरी रूप।

सैलेन राउत्रे (अनुवाद) + बासुदेव सुनानी

रचनासभ: 'फूसस', 'प्रतीक्षा' (उडिया)

समानान्तर इतिहास (दलित जीवनक प्रतीक्षा): दलित जीवनक 'प्रतीक्षा' - पहुँच केर अभाव।

भारतीय (नव्यन्याय - अभाव): 'नाप' (पाँच फुट) सँ 'पहुँच' केर अभाव। 'फूसस' (मजाक) - पहुँच आ नाप केर अभाव केर व्यंग्यात्मक तर्क।

पाश्चात्य (दलित सौन्दर्यशास्त्र): शबनम भौजी केर 'फूसस' (मजाक) - मार्जिनलिया केर व्यंग्यात्मक तर्क।

इप्सिता सारंगी

रचनासभ: 'गप, निलकोर, बुति, बमिया' (उडिया)

समानान्तर इतिहास (स्त्री-युद्ध-आघात): युद्ध-विनाश आ स्त्री देह केर ट्रामा।

पाश्चात्य (स्त्रीवादी/बटलर/पारिस्थितिकीय-स्त्रीवादी): जुडिथ बटलर केर 'लैङ्गिकता' केर विघटन। पारिस्थितिकीय-स्त्रीवादी - प्रकृति, 'किरी', 'छोट बुच्ची' सँ नारी मन। 'बमिया' - बम विस्फोट केर स्त्री-दृष्टि। कैथी कैरुथ केर आघात सिद्धान्त - युद्ध केर मानसिक क्षति केर चित्रण।

भिखारी ठाकुर

रचना: 'निरहुआ' (वृद्धाश्रम) - भोजपुरी

समानान्तर इतिहास (लोक चेतना/बहुस्वरता): वृद्धाश्रमक सामूहिक पुकार - बूढ़-बूढ़ीक सामूहिक आवाज।

भारतीय (लोक-रस/बहुस्वरता): बूढ़-बूढ़ीक सामूहिक पुकार। विदेह ढाँचाक बहुस्वरता (पॉलीफनी) - अनेक स्वर एक साथ।

पाश्चात्य (बाख्तिन/उत्सवी-लोकधर्मी): बाख्तिन केर बहुस्वरता (polyphony) - वृद्धाश्रमक सामूहिक आवाज एक साथ बजैत अछि।

विदेह ढाँचा (अन्तर-भाषिक सेतु): मैथिली-भोजपुरी सीमान्तक पुल - दू हाशियाकृत भाषा सभक संवाद।

रहमान राही

रचना: 'छाह सभ' (कश्मीरी)

समानान्तर इतिहास (अस्मिता संकट/ट्रामा): स्वप्न आ विनाशक बीचक 'छाह' (छाया) - कश्मीर केर द्वन्द्व केर काव्य।

भारतीय (ध्वनि/करुण रस): 'छाह' (छाया) - स्मृति, प्रियक उपस्थिति-अनुपस्थिति। करुण रसक चरमोत्कर्ष।

पाश्चात्य (आघात अध्ययन - कैरुथ/उत्तर-औपनिवेशिक): युद्ध, भूकंप, 'घाटी' केर व्यथा - 'बोन-मियां' रचना (bone-sowing/हड्डी-बोबाई)। कश्मीर केर युद्धकालीन आघात केर साहित्यिक अभिलेख।

ग्रन्थसूची / पाठाधार

• विदेह: सदेह: ३७ — समीक्षा (साहित्यिक समीक्षा)